CENTRAL LIBRARY

শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান



# Thesis Approved for the Degree of Doctor of Philosophy

# শ্রীচৈতন্যচরিতের উপাদান

শ্রীবিমানবিহারী মজুমদার, এম.এ., পি এচ্ ডি., ভাগবভরত্ব প্রেমটাদ রায়টাদ বৃত্তি, মোয়াট্ পদক ও গ্রিফিণ্-স্বতি-প্রস্তার প্রাপ্ত, পাটনা বি. এন. কলেজের অধ্যাপক এবং পাটনা বিশ্ববিভালয়ের ফেলো



কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয় কর্তৃক প্রকাশিত ১৯৩৯ BCU 1264

PRINTED IN INDIA

PRINTED AND PUBLISHED BY BHUPENDRALAL BANERJEE AT THE CALCUTTA UNIVERSITY PRESS, SENATE HOUSE, CALCUTTA,

AND

APPENDIX (PP. 1-119) PRINTED BY SAILENDRANATH GUHA RAY, B.A.
AT THE SREE SARASWATY PRESS LTD., 1, RAMANATH
MAJUMDAR STREET, CALCUITA.

Gcs 3690

Reg. No. 1107B-March, 1939-E.



বাঁহার পদতলে বসিয়া
তুলনামূলক ঐতিহাসিক বিচারপ্রণালীতে
অনুসন্ধান করিবার অনুপ্রেরণা পাইয়াছি
সেই

দেশবিশ্রুত মনীধী ও আদর্শ অধ্যাপক

শ্রীস্থাক্ত প্রস্থানাথ বাস্ক্রোপাপ্র্যাস্থা, এম্.এ., বি.এল ,
ব্যারিস্টার-এট্-ল, এম্.এল্.এ.
মহোদয়ের করকমলে
এই গ্রন্থ
শ্রন্ধা ও কৃতজ্ঞতার নিদর্শন-স্ক্রপ

অপিত হইল।



# न्द्रिड

# ভূমিকা (১/০-১।৭০)

# প্রমাণপঞ্জী ও প্রমাণ-উদ্ধারের সঙ্গেত-ব্যাখ্যা (১/১/০-২৭০)

# প্রথম অধ্যায়

# শ্রীচেতল্যের জীবনী-আলোচনার তিনটি থারা (১-১৬)

| विवय                             |                 |     | शहे।     |
|----------------------------------|-----------------|-----|----------|
| ভক্তদের লালা-আস্বাদনের রীতি      | E overe         | *** | 2        |
| নবাৰক্ষে শ্ৰীচৈতত্ত-কথা          | ***             | 100 | 6        |
| ঐতিভন্ত-সম্বন্ধে আধুনিক গবেষকগণে | র বিচার-প্রণালী | *** | <b>b</b> |
| তুলনামূলক ঐতিহাসিক প্রণালী       |                 | 1   | >>       |
| কি প্রকার অলৌকিক ঘটনার বর্ণনা ত  | ।বিশ্বাস্থ      | *** | 30       |
|                                  |                 |     |          |

# দ্বিতীয় অধ্যায়

# জীতৈতক্যের জীবনের প্রধান প্রধান ঘটনার কাল-নির্গর (১৭-৩৮)

| শ্রীচৈতত্ত্বের | জন্মকাল    | 1000              | The second of the | 22.67      | 39 |
|----------------|------------|-------------------|-------------------|------------|----|
| শ্রীচৈতত্তের   | জীবনকাল    | (*****            | ***               | 200        | 33 |
| শ্রীতৈতগ্রের গ | त्याय शमन, | সন্ধার্ত্ন-প্রচার | ও সন্মান-গ্রহণের  | काल-निर्नय | २० |
|                |            |                   | টনার কাল-নির্গয়  |            | 29 |
| ঐাহৈততে হার    |            | MANUEL SELECTION  |                   | ***        | 95 |



# শ্রীতৈভয়চরিতের উপাদান

lie.

# তৃতীয় অধ্যায়

# সমসাময়িক পদকর্তাদের চোখে জীচৈতন্য (৩৯-৬৪)

| বিষয়                  |          |                   | A CANTO | शहा |
|------------------------|----------|-------------------|---------|-----|
| পদরচনায় অমুপ্রেরণা    | ***      | ***               | ***     | 60  |
| জাবনা-লেখার পূর্বের পদ | -রচনা    | ***               | ,,,     |     |
| গোড়ীয় পদকভাদের সহি   |          | त शास्त्रामो(मत १ | ার্থক্য | 82  |
| নরহরি সরকার            | 544      | 444               | 3448    | 88  |
| গৌরনাগরী ভাব           | ***      |                   | 27.0    | 42  |
| মুরারি গুপ্তের পদ      |          | ****              | ***     | 28  |
| শিবানন্দ সেনের পদ      | ***      | 100               |         | 00  |
| বাহু ঘোষের পদ          |          | 40000             | ***     | 23  |
| গোবিন্দ ঘোষের পদ       | 1000     | 244               | ****    | હર  |
| মাধব ঘোষের পদ          | 14.44    | ***               | +4%     | ಅಲ  |
| वःनीवमरमद्र शम         | (t.t.t.  | ***               | 12.55   | 40  |
| পরমানন্দ সেনের পদ      | 100 BOOK |                   | 10100   | 90  |
|                        |          |                   |         |     |

# চতুর্থ অধ্যায়

# মুরারি গুলের কড়চা (১৫৮১)

| আদিম শ্রীচৈতগুগোষ্ঠীতে মুরারির স্থান | -     | 1222 | 90 |
|--------------------------------------|-------|------|----|
| মুরারির গ্রন্থের প্রামাণা-বিচার      | 54442 | 1444 | 92 |
| মুরারির নিকট কবিকর্ণপূরের ঋণ         | ***   | ***  | 99 |
| মুরারির লীলাবর্ণনের ভঙ্গী ···        | 160   | 1.00 | 92 |

|      | 30 | 9 | 40 | N  |
|------|----|---|----|----|
| 6    | 65 | 4 | O  |    |
| ren  | Ēρ | ò | O. | ŭ, |
| lal. | ĒΫ | ټ | 31 | ü  |
| 11   | O  | 1 | 30 | Ø  |
| M    | œ, | - | æ  | g  |
|      |    |   |    |    |

সৃচি

11/0

|  | 9                   | াঞ্চম অধ        | ্যায়    |  |         |
|--|---------------------|-----------------|----------|--|---------|
| 5 TE   | কর্ণপুরের প্র       |                 | 35       | m ( ) >  | 17050   |
| E-176  | किनार्चेदशस्य हा    | इनन्यूटर व      | AICO 9-  | 0 (85-208  |         |
| विषय   | 1001                |                 |          |  | शृष्टी  |
| শ্রীচৈতগুচ   | প্রাদয় নাটক        |                 | ***      | ***  | 45      |
|  | লেখকের নাম ও        | পরিচয়          | ***      | ***  | 60      |
|  | নাটকের রচনাক        | াল              | TANKE .  | ***  | 56      |
| শ্রীচৈতগুচনি   | রতামূত মহাকাব্য     | গ্রন্থের পরিচয  | II.      | The same of the sa | 24      |
| গৌরগণোদে   | দশদীপিকা            |                 |          | 7.00   | 29      |
| শ্রীচৈতহের   | তত্ত্ব- ও মত-সম্ববে | র<br>কবিকর্ণপূর |          | 1000   | 200     |
| A STATE OF THE PARTY OF THE PAR | জে কবিকর্ণপূরের     | 1750            | ****     | ***  | >.5     |
|  |                     | ষষ্ঠ অধ্য       | ায়      |  |         |
| श्र-मा   | বনের পাঁচ গে        | গাস্বামা ও      | ত্রীতৈ   | 5 <del>न्</del> य ( ५०७-५७   | (80     |
| রঘুনাথদাস  | গোঁস্বামী           |                 | 1202     | 220  | >00     |
| সনাতন গো   | 1975                |                 |          | 222  | 226     |
| 194  | রূপ-সনাতনের ই       | জীতি            | E        |  | 255     |
| SEE  | সনাতনের গুরু        | Milde.          | 101      |  | 326     |
| 205  | স্নাতনের রচিত       | San San         | ***      |  | 205     |
|  | "গীতাবলী"র রা       |                 | 2        | My Might had   | 500     |
|  | শ্রীচৈতগুতর-সং      |                 |          | -  | 3:0     |
| শ্রীরূপ গো   |                     |                 |          | the Parties  | 200     |
| Callairi Call  | ্রীক্রপের রচিত      | अव्यक्ति        |          |  | >: >: > |
|  | শ্রীচৈতন্তের লী     |                 |          |  | >80     |
| Salar III  |                     |                 | ***      | 93.00  | 385     |
|  | ात्रामो<br>         |                 |          | The Hadan Core   | >000    |
| 264  | শ্ৰীক্ষীৰ ও মধুসূ   |                 |          | ***  | 202     |
| <b>新</b> 尼斯  | ঞ্জীজীবের রচিত      |                 |          |  | 200     |
| USE V  | . ব্রীচৈতগুতব-রি    | युरय जाकाव      | Marie Co | The state of the s | 340     |
| В  |                     |                 |          |  |         |

| 11do 31                      | চতন্যচরিতে         | র উপাদান       |       |           |
|------------------------------|--------------------|----------------|-------|-----------|
| विषय                         |                    |                |       | श्रुष्टे। |
| গোপাল ভট্ট গোস্বামী          |                    | ***            |       | >00       |
| হরিভক্তিবিলার                | সের রচয়িতা        | (本?            | 1244  | 200       |
| হরিভক্তিবিলা                 | দ ও বাঙ্গাল        | ার বৈঞ্চব সমাজ |       | 365       |
| 2022-0-2-00/200              |                    |                |       |           |
|                              | সপ্তম ত            | <b>যি</b>      |       |           |
| জী চৈত-                      | <b>গচন্দ্রা</b> মূ | ड ( ५७७-५१८    | )     |           |
| প্রবোধানন্দের পরিচয়         | ***                | ***            | ***   | 264       |
| ত্রীচৈততা ও প্রবোধানন্দ      | 5558               | ***            | ***   | 590       |
| গৌর-পারম্যবাদ                | ***                | 4.4            | ***   | 290       |
|                              |                    |                |       |           |
|                              | অফ্টম ত            | भवग्रञ         |       |           |
| ত্রী চৈত ন্যা                | ভাগবত              | (590-222)      |       |           |
| শ্রীতৈভাভাগবতের লেথকের       | ৰ পরিচয়           | ***            | ***   | 390       |
| শ্রীচৈতশ্রভাগবতের রচনা-ক     | <b>া</b> ল         | ***            | ***   | 2000      |
| গ্রীচৈতকভাগবতের প্রামাণি     | কতা-বিচার          | ***            | ***   | >25       |
| মুরারি গুপ্ত ও বৃন্দাবনদাস   | ***                | ***            | ***   | 203       |
| দিখিজয়ি-পরাভব-প্রসঙ্গ       | ***                | ***            | ***   | २०७       |
| শ্রীচৈতত্ত্বের সন্যাস-জীবন-স | াপকে বৃন্দাব       | নদাস           | 22.5  | २००       |
| ত্রীচৈতত্তের গৌড়ভ্রমণ       | ***                | ***            |       | 220       |
| শ্রীদৈতগুভাগবতের ঐতিহা       | সিক মূলা           | ***            | ***   | 552       |
| ALC: NO.                     | -                  |                |       |           |
|                              | নবম অ              | <b>বি</b> গার  |       |           |
| জয়ানন্দের                   | চৈত্ৰ্য            | মজল (২২২       | (485- |           |
| গ্রন্থ ও গ্রন্থকারের পরিচয়  | -                  | ***            | ***   | 220       |
| বৈষ্ণব সমাজে জয়ানন্দের ও    | গ্ৰন্থ অনাদৃত      | হইবার কারণ     | ***   | 220       |
| চৈতভামজল-রচনার কাল           |                    |                | ***   | ২৩০       |



| मूर्ग                                   | 5              |          | 100  |
|---|----------------|----------|------|
| বিষয়                                   |                |          | পুঠা |
| চৈতত্তমন্দলে ভুল থবর                    | 222            |          | 202  |
| চৈত্তখনদলে নৃতন তথ্য                    | 19202          | 1222     | 200  |
| জয়ানন্দ-বৰ্ণিত শ্ৰীচৈতত্যের ভ্ৰমণপথ    |                |          | 282  |
| জয়ানন্দ-কর্তৃক অন্ধিত শ্রীচৈত্র-চরিত্র | -444           | ***      | 289  |
| দশম অ                                   | ধ্যায়         |          |      |
| লোচনের "গ্রীচৈতন্য                      |                | 200-260) |      |
| গ্রন্থকারের পরিচয়                      | 1989           |          | 200  |
| গ্রন্থের রচনাকাল                        | U.S.S.         |          | 208  |
| হৈতভামকল ও হৈতভাভাগৰত                   | 7,944          |          | 200  |
| শ্রীচৈতত্তমঙ্গল-লেখার উদ্দেশ্য          | ***            | ***      | २७ऽ  |
| মুরারির সহিত লোচনের বিবরণের পার্থ-      | का •••         | ***      | 206  |
| রুদাবনদাসের সহিত লোচনের বর্ণনার         | পার্থক্য       |          | 290  |
| লোচনের বর্ণিত নৃতন তথ্য                 | ***            |          | 296  |
| শ্রীতৈতত্তার তিরোভাবের বিবরণ            | 2.1            | ***      | 295  |
| লোচনের গ্রন্থের ঐতিহাসিক মূল্য          |                | ***      | 298  |
| একাদশ                                   | অধ্যায়        |          |      |
| মাধবের "চৈত্সবি                         | লাস" (২        | (OK5-CH  |      |
| माधव एक १                               | ***            | ***      | 547  |
| মাধব ও লোচন · · ·                       | 100            | ***      | २४२  |
| মাধবের গ্রন্থে মূল্যবান্ সংবাদ          | •••            | **       | २७२  |
| দ্বাদশ অ                                | <b>থ্যা</b> য় |          |      |
| <u> </u>                                | S ( 2 28-      | 852)     |      |
| গ্রন্থের প্রভাব ও পরিচয় · · ·          | ***            | (444)    | 228  |



# ঐতিতগুচরিতের উপাদান

| विवद                            |               |  |        | शृंहा |
|---------------------------------|---------------|--|--------|-------|
| কৃষ্ণকর্ণামূতের একটি শ্লোক · ·  |               | 111  | ***    | રજ્ઞ8 |
| কৃষ্ণদাস কবিরাজের পরিচয় -      |               | areas and a second   | ***    | 500   |
| কবিরাজ গোস্বামীতে আরোগি         | াত গ্ৰন্থসমূহ | ***  | ***    | 909   |
| কুঞ্চদাস কবিরাজের পাণ্ডিতা.     |               | ***  | ***    | 0) •  |
| কবিরাজ গোপামীর চরিত্র •         | ***           | Week   | •••    | 070   |
| গ্রন্থের রচনাকাল •              | **            | •••  | 200    | ৩২৽   |
| ক্ৰিরাজ গোস্বামী কি আত্মহত      | ত্যা করিয়াছি | लम १   | ***    | •२७   |
| চৈতভাচরিতামতের উপাদান-স         | :গ্ৰহ         | ***  | (9/22) | 0.6   |
| স্বরূপ-দামোদরের কড়চা •         |               | ***  | ***    | ७२४   |
| কবিকর্ণপূরের নাটক ও মহাক        | ব্যের নিকট    | চরিতামৃতের ঋণ  | 9      | 995   |
| আদি লালার ঐতিহাসিক বিচা         |               | •••  | ***    | 983   |
| প্রকাশানন্দ-উদ্ধার-কাহিনীর বি   | বচার          | -44  |        | 385   |
| কৰিৱাজ গোস্বামি-অন্ধিত শ্ৰীট    | চতগ্রের বাল্য | क्रोवनो  | 122    | :30   |
| বিশ্বস্তরের বিভাশিক্ষা •        | **            | ***  | 18.5.5 | 089   |
| মধ্যলীলার বিচার                 | **            | ****   | ***    | 000   |
| বিশ্বস্তরের সন্মাসগ্রহণ ও পুরী  | <u>থাতা</u>   | atta:  | 446    | 003   |
| সার্বভৌম-উন্ধার-কাহিনীর বি      | চার           | 12000  | 122    | car   |
| প্রভুর দক্ষিণাপথ-ভ্রমণ •        | AFRICA DES    | 1200   | ***    | 0,0   |
| প্রতাপরুদ্র-উদ্ধার-কাহিনীর বি   | <b>চার</b>    | 444  | ***)   | 294   |
| ত্রীচৈতত্তের গৌড়-ভ্রমণের পূর্ব | वं शर्याख नोल | াচল-লীলা   | ***    | 040   |
| গ্রীচৈতভার গৌড়ে আগমন           | 100           | ***  | **     | 044   |
| গোপাল বিগ্রহের বিবরণ            | TOTAL .       | ***  | - 10   | ৩৯১   |
| সনাতন-শিক্ষা                    |               | The state of the s |        | 924   |
| অস্তালীলার বিচার                | ***           | ***  | 3440   | 800   |
| বিদ্যমাধ্ব ও ললিতমাধ্ব না       | টকের রচনা-ব   | शंल  | 1588   | 800   |
| হরিদাস ঠাকুরের কাহিনী           | •••           |  | ***    | 8 . 8 |
| বল্লভ ভটের বিবরণ                | ***           | ***  |        | 800   |

No



| সূৰ্য                                 | 6               |                | w/o    |
|---------------------------------------|-----------------|----------------|--------|
| বিষয়                                 |                 |                | পৃষ্ঠা |
| প্রভুর সমুদ্রপতন-লালা                 |                 | ***            | 804    |
| চরিতামূত-বিচারের সার-নিকর্ষণ          | ***             | ***            | 87.    |
| ত্রয়োদশ                              | অধ্যায়         |                |        |
| গোবিন্দদাসের ব                        | হেচা (৪১        | o-858)         |        |
| কড়চা-সম্বন্ধে আন্দোলনের ইতিহাস       | ***             | ***            | 828    |
| কড়চার অকৃত্রিমতায় সন্দেহের কারণ     | 201             |                | 875    |
| জয়গোপাল গোস্বামীর কি কোন স্বাথ       | হিল 📍           |                | 82.    |
| গোবিন্দ কে ?                          | 222             | 5000           | 825    |
| কড়চা কি একেবারে কাল্লনিক ?           | ***             | 3444           | 820    |
| চতুৰ্দ্দশ                             | অধ্যায়         |                |        |
| আর কয়েকখানি নাতিঃ                    | প্রামাণিক       | গ্রন্থ (৪২৫-৫  | (0,50  |
| প্রভান্ন মিশ্রের "শ্রীকৃষ্ণতৈতভোদয়াব | নী" ···         | •••            | 824    |
| গ্রন্থের প্রামাণ্য-বিচার              |                 | 151            | 829    |
| ঈশান নাগরের "অবৈতপ্রকাশ"              | 1994            | 144            | 800    |
| গ্রন্থের অকৃত্রিমতায় সং              | <b>박</b> 캠      | 101            | 889    |
| গৌরমন্তের আন্দোলন                     | 244             | 444            | 842    |
| হরিচরণ দাদের "অবৈতমকল"                | 444             | ***            | 850    |
| লাউড়িয়া কৃঞ্জদাসের "বালালালা-সূত্র  | IA"             | ***            | 890    |
| "সীতাগুণ কদম্ব"                       | 3.55            | ***            | 86.0   |
| লোকনাথ দাসের "সীতাচরিত্র"             | ***             | ****           | 848    |
| <u> </u>                              | গুলি-সম্বন্ধে স | নাধারণ মন্তব্য | 820    |
| জগদানদের "প্রেমবিবর্ত"                | 300             | ***            | 895    |
| "मूत्रलो-विलाम" ও "वःनी-शिका"         | ***             | 101            | 824    |
| "প্রেমবিলাস"                          | 10 THE 18       | PART SE PERT   | 600    |

| vido                      | শ্রীচৈতন্যচরিতে    | ার উপাদান       |            |       |
|---------------------------|--------------------|-----------------|------------|-------|
| বিষয়                     |                    |                 |            | शृहे1 |
| "ভক্তিরত্বাকর" ও "নরে     | াত্তম-বিলাস"       | fa              | 1222       | 000   |
| "অভিরাম-লীলামৃত"          | ***                | 121             | Sec.       | 924   |
|                           | পঞ্চদশ             | অধ্যায়         |            |       |
| উড়িয়া ভক্তদে            | র মুখে 🔊           | रेटिडमा-कः      | था ८०३ ३-० | CECO  |
| প্রাক্-চৈততা যুগে উড়িয়া | ায় বৈষ্ণৰ ধৰ্ম্মে | র ভুইটি ধারা    | 1444       | 4.2   |
| পঞ্সখা                    | ***                | +#+             | CHARGE.    | ०२७   |
| ঈশরদাসের চৈততভাগব         | 3                  | ***             | 2555       | वर्ष  |
| দিবাকরদাসের জগরাপচ        | রিভায়ত            | 1975            | 555        | asa   |
| গৌরকৃষ্ণোদয়কাব্যম্       | estes MAIN         | 133             | 199991     | 609   |
|                           | ষোড়শ ৰ            | <b>অধ্যা</b> য় |            |       |
|                           |                    | চৈতন্য ও        |            |       |
| পরিব                      | চরগণের ব           | kst (080-0      | 92)        |       |
| শঙ্করদেবের সহিত অধৈ       | 11110              |                 | ***        | 48.   |
| শ্রীচৈতন্মের কথা আছে      | এমন অসমীয়া        | গ্রন্থের কালনিণ | यि         | 488   |
| শ্রীচৈতগ্রের সহিত শঙ্ক    | রর মিলন            | (888)           | *** *      | ¢85   |
| শ্রীচৈততের আসাম-ভ্রমণ     | ٩                  | 1949            | ***        | 000   |
| কবির ও ঐীচৈতগ্য           | 110                | ***             |            | 019   |
| রূপ-সনাতন-সন্বন্ধে নৃত    | ন কথা              |                 | ***        | 445   |
|                           | সপ্তদশ             | অধ্যায়         |            |       |
| সতীক হিন্দী               | ও বাজাল            | া ভক্তমাল       | (000-0     | くんと   |
| নাভাঞ্চা ও প্রিয়াদাসজ    | i                  | 1922            | ***        | 400   |
| লালদাসের ভক্তমাল          |                    | 255             |            | 459   |
| পাঞ্চাব, মূলতান ও গুল     | রাতে ত্রীচৈত       | ন্যর প্রভার     | 2555E      | CAP   |



# অফাদশ অধ্যায়

|         | 8       | St       |       |   |         |   |
|---------|---------|----------|-------|---|---------|---|
| अझतरञाव | Salte M | -বাষ্ণাম | 國才西西司 | ( | 090-093 | ) |

| विवड                  |            |           |       | 24  |
|-----------------------|------------|-----------|-------|-----|
| পরমেশ্বর মোদকের কথা   | 3350 T     | ***       | ***   | 293 |
| ভোট হরিদাসের বিবরণ    | 12/2/20    | 1244      | 52041 | 492 |
| গোবিন্দের সতর্কতা     | 200        | 18.69     | +++   | 498 |
| কড়চার সহিত চরিতামূতে | হর বর্ণনার | বিরোধ     | ***   | 298 |
|                       | 5.6        | শ অধ্যায় |       |     |

# গৌড়ীয় বৈষ্ণব ধর্মের আদিযুগ-সম্বন্ধে বিবিধ তথ্য (৫৭৬-৬০০)

| শ্রীচৈতক্মের ভাষাবেশের পূর্বের ভত্ত    | লগোষ্ঠ <u>ি</u> | 444       | 490        |
|--|-----------------|-----------|------------|
| ত্রীতৈতভার সম্প্রদায়-নির্ণয           | +++             | ***       | abs        |
| শ্রীচৈতত্ত্বের ভগবতা-ঘোষণা             | ***             | ***       | 20         |
| ঈশরভাবে আবেশ                           | ****            | ***       | 220        |
| ভক্তগণ-কর্তৃক ঈশ্বরর                   | পে পূজা         | 100       | <b>¢≥8</b> |
| ভক্তগণ কর্ত্তক ঈশ্বরর                  | TE.             |           | 00         |
| সর্বসাধারণের নিকট                      | ঐাচৈতভের ঈশর    | ত্ব-ঘোষণা | 634        |
| শ্রীচৈতত্ত্যের বিগ্রহ-স্থাপনা ও মর্চ্চ | ना              | ***       | 6.0        |
| শ্রীতৈতন্ম ও কীর্ত্তন-গান              | ***             | ***       | e-a        |
| শ্রীচৈতব্যের ভক্তগণ ···                | ****            | 1990      | 10 · b     |
| ভক্তদের জাতি ···                       |                 | ***       | 6.0        |
| সন্ন্যাসি-পরিকরগণ                      | ***             | 1444      | 600        |
| ভক্তগণের পাণ্ডিত্য ও কবিত্ব            |                 | ***       | 67.        |
| পরিকরগণের বাসন্থান বা শ্রীপাট          |                 |           | . 638      |
| वाकालारम्य                             | Service Control |           | 658        |
|  |                 |           |            |

ত্রীচৈতহাচরিতের উপাদান

| बिदग   |                |                   | 100                          |              | नृके। |
|--|----------------|-------------------|------------------------------|--------------|-------|
|  | আসাম           | 241               | 0222                         | 9225E        | 656   |
|  | উৎকল ও         | অভাভ প্রদেশ       |                              | 10 1949E     | 626   |
| পঞ্চতত্ব, হাদ  | न जाशान,       | চৌষট্ট মহাস্ত     | প্রভৃতি                      | ***          | 629   |
|  | चांनन जांन     |                   | COLUMN TO THE REAL PROPERTY. | 1 Sec. 753   | 65.   |
|  | চৌষট্র মহা     | 3                 | ***                          | 10000        | ७२०   |
|  | ছয় চক্রবর্তী  | ও অফ কবির         | ांक<br>र                     | See 1        | 459   |
| শ্রীতৈতন্য-পরি   | করগণের ভ       | জন- প্রণালীর      | বিভিন্নতা                    | 3000 See 1   | 650   |
| নকল অবতার  |                |                   | (600)                        | 1417         | ७७२   |
| উপাধি-বিজ্ঞা   |                | ***               | 111                          | 455          | 400   |
|  |                | পরিশি             |                              | vSaine 13    |       |
|  |                | ।।। ১ হইতে বত     |                              |              |       |
| ACCOUNT OF ANDREAST AND A STATE OF   |                | চৈতত্যের সমসা     |                              |              | >     |
| (थ) ८य भव उ  | চন্ত্রে উল্লেখ | গাওয়া যায়       | অথচ কোন                      | পুৰি পাওয়া  |       |
| যায়   | না ভাহাদে      | র তালিকা          | 255                          | State .      | 20    |
| The state of the s |                | ার সংস্কৃতসূচক    |                              |              | 20    |
| (ঘ) ঐতৈতভ  | চরিতামূত-      | ্ত শ্লোকমালা      | ও পূৰ্বাচাৰ্য                | ্যগণ-কর্তৃক  |       |
|  | তাহাদের ব      |                   | 844                          | 1944         | 25    |
|  |                | আরোপিত বৈ         |                              | 7 ( *** TATE | >->   |
| (ह) देवक्षव म  | াময়িক পতি     | কার ইতিহাস        | ও সংগ্ৰহ                     | ****         | 220   |
|  | f              | नर्घ•ढे ( ১       | 2>->80)                      |              |       |
| (ক) প্রীচৈত  | ग्रद्ध कोवनीत  | প্রধান প্রধান     | । ঘটনার কা                   | ালামুযায়ী   |       |
|  | <b>मृ</b> ि    | ites.             | ***                          | 444          | 252   |
| (খ) সাধারণ   | নির্ঘণ্ট       | 1011              | (44)41                       | 1000         | >22   |
|  |                | नारमत्र निर्घन्डे |                              |              | 308   |



# ভূমিকা

ভারতবর্ধের বিশ্ববিচ্চালয়-সমূহে ডক্টরেট্ পরীক্ষার জন্ম ইংরেজী ভাষায় নিবন্ধ লিথিবার বিধিই এতাবং প্রচলিত ছিল। কিন্তু বক্ষভাষার প্রতি কলিকাতা বিশ্ববিচ্চালয়ের অন্যতম কর্ণধার প্রজেয় ডক্টর শ্রামাপ্রসাদ মুখোপাধ্যায় মহোদয়ের স্থগভীর প্রীতি দেখিয়া আমি আমার এই গ্রন্থ মাতৃভাষায় লিখিতে উৎসাহিত হই। ১৯৩৬ খুফাব্দে ২৬এ জুন, কলিকাতা বিশ্ববিচ্চালয়ের তদানীন্তন ভাইস্-চান্সেলর প্রীযুক্ত মুখোপাধ্যায় মহোদয় ও সিগুকেট্ আমাকে ডক্টরেট্ পরীক্ষার নিবন্ধ বক্ষভাষায় লিপিবন্ধ করিবার অনুমতি দিয়া ভারতীয় গবেষণার ইতিহাসে এক নৃতন অধ্যায়ের সূচনা করেন। তাহার ফলেই এই গ্রন্থ বর্ত্তমান আকারে প্রকাশিত হইবার স্থযোগ পাইল।

বাঙ্গালা দেশে বৃটিশ অধিকার স্থাপিত হওয়ার পূর্বের সংস্কৃত, বাঙ্গালা, উড়িয়া, হিন্দী ও অসমীয়া ভাষায় ঐতিচতত ও তাঁহার সমসাময়িক পরিকরগণ-সম্বন্ধে যাহা কিছু লিখিত হইয়াছে, তাহাদের তুলনামূলক ঐতিহাসিক বিচার করাই এই প্রস্তের উদ্দেশ্য। ঐতিচততকে কেন্দ্রকরিয়া যে বিপুল সাহিত্য গড়িয়া উঠিয়াছে, তাহা আজ্ব পর্যান্ত সমগ্র দৃষ্টিতে পর্য্যালোচনা করা হয় নাই। আধুনিক যুগে ঘাঁহারা ঐতিচততের চরিতপ্রস্ত লিখিয়াছেন, তাঁহারা কোন ঘটনা-সম্বন্ধে যখন বিভিন্ন আকর-প্রস্তে বিভিন্ন বিবরণ পাইয়াছেন, তখন যেটি তাঁহাদের মনে ভাল লাগিয়াছে সেইটি গ্রহণ করিয়াছেন, অথবা পরম্পার-বিরোধী বিবরণগুলির প্রত্যেকটিকেই সত্য বলিয়া মানিয়া লইয়াছেন। তাঁহারা কেহই উক্ত আকর-গ্রন্থগুলির প্রতি ঐতিহাসিক বিচার-প্রণালী প্রয়োগ করিয়া ভাহাদের প্রামাণ্য এবং অপ্রামাণ্য অংশের বিশ্লেষণ করেন নাই।

বৃদ্ধিমচন্দ্র যে রীতিতে "কৃঞ্চরিত্র" লিখিয়াছেন, তাহার সহিত আমার অবলম্বিত রীতির ছুইটি মূলগত পার্থক্য রহিয়াছে: বৃদ্ধিমচন্দ্র

### শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

20/0

কোমৎ-দর্শনের ছারা অনুপ্রাণিত হইয়া কৃষ্ণচরিত্র অন্ধন করিয়াছেন। त्रवो<del>ख</del>नाथं वत्न त्य विक्रमहस्त "त्य-कृत्यन व्यवस्थ नियुक्त हिलन সে-কৃষ্ণ তাঁহার নিজের মনের আকাজ্যাজাত। সমস্ত চিত্ত-বৃত্তির সমাক্ অনুশীলনে সম্পূর্ণতা-প্রাপ্ত একটি আদর্শ তিনি ব্যাকুল চিত্তে সন্ধান করিতেছিলেন — তাঁহার ধর্মতত্ত্বে যাহাকে তত্ত্তাবে পাইয়াছিলেন ইতিহাসে তাহাকেই সঞ্জীব সশরীরভাবে প্রতাক করিবার জন্ম নিঃসন্দেহ তাঁহার নিরতিশয় আগ্রহ ছিল" (আধুনিক সাহিত্য, পু<sup>°</sup> ৭৭)। আমি কোন প্রাচ্য বা পাশ্চান্তা মতবাদের (খিয়োরির) দ্বারা পরিচালিত হইয় শ্রীচৈতত্যের চরিতের বিচার করি নাই। একটি ঘটনা-সম্বন্ধে যে সকল বিবরণ পাওয়া যায় সেগুলি তুলনা করিয়া পড়িয়া, ঘটনাটি সম্বন্ধে যে লেথকের সর্বাপেকা অধিকতর বিখাসযোগ্য বিবরণ জানিবার সম্ভাবনা তাঁহারই মত গ্রহণ করিয়াছি; যথা—শ্রীচৈতন্মের নবদ্বীপলীলা-সম্বন্ধে মুরারি গুপ্তের বর্ণনার সহিত অন্য কাহারও যদি বিরোধ দেখা যায়, তাহা হইলে মুরারির বিবরণকেই সভ্য বলিয়া মানিয়া লইয়াছি; কেন-না মুরারি নবছীপলীলার প্রত্যক্ষদ্রষ্টা। সেইরূপ নিত্যানন্দ-সম্বন্ধে বৃন্দাবনদাসের উক্তি এবং রূপ, সনাতন ও রঘুনাথদাস গোস্বামি-সম্বন্ধে কুফ্দাস কবিরাজের উল্কি অধিকতর প্রামাণিক।

বিশ্বমচন্দ্রের "কৃষ্ণচরিত্রের" সহিত বক্ষ্যমাণ গ্রন্থের দ্বিতীয় পার্থক্য এই বে সাহিত্যের মন্দিরে বন্ধিমচন্দ্র শিল্পী, আর আমি দিনমজুর মাত্র। বন্ধিমচন্দ্র নিজের ভাব ও আদর্শ-অনুসারে শ্রীকৃষ্ণের চরিত্র পরিস্ফুটরূপে অন্ধন করিয়া পাঠকের মানস-চক্ষুর সমক্ষে একটি সমগ্র চিত্র ধরিয়াছেন; আর আমি ভবিশ্বৎ শিল্পীর আগমন-প্রতীক্ষায় শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান মাত্র সংগ্রহ করিলাম।

একুশ বৎসর ধরিয়া আমি এই সংগ্রহকার্য্যে ব্যাপৃত আছি।
১৯১৫ খৃফাব্দে শ্রীচৈতন্ম-সন্ধন্ধ আমার প্রথম রচনা "বিফুপ্রিয়া ও
আনন্দবাজার" পত্রিকায় প্রকাশিত হয়। ১৯২০ খুফাব্দের শেষ ভাগে
পুণাল্লোক ক্তর আশুতোষ মুখোপাধ্যায় মহোদ্যের নিকট হইতে অনুপ্রেরণা
ও কাশিমবাজারের মহারাজ ক্তর মণীক্রচক্র নন্দী বাহাছরের নিকট



হইতে অর্থ-সাহায্য লাভ করিয়া আমি এটিচতন্ত-সম্বন্ধীয় পুথি অয়েবণ করিবার জন্ম উড়িয়ার বহু পল্লীতে ভ্রমণ করি। সেই সময় হইতে আরম্ভ করিয়া প্রতি বংসর গ্রীম ও শারদীয় অবকাশের সময় বৃন্দাবন, নবদ্বীপ, কাটোয়া, ত্রীথণ্ড, শান্তিপুর, গুল্তিপাড়া, দেমুড়, কাঁচড়াপাড়া, হালিসহর, আড়িয়াদহ, বরাহনগর প্রভৃতি বৈষ্ণব-তার্থে পুণি ও তথাের অনুসন্ধানে বাহির হইতাম। আমি স্থাসিক বৈঞ্ব-পণ্ডিত ও কার্ডনীয়া অদৈতদাস পণ্ডিত বাবাজী মহোদয়ের দৌহিত্র বলিয়া বৈঞ্বের আখড়ায় ও গোস্বামীদের বাটাতে অবাধে পুথি প্রভৃতির অনুসন্ধান করিবার স্থ্যোগ পাইয়াছি। অনেক মুদ্রিত গ্রন্থও এইভাবে দেশে দেশে বুরিলা সংগ্রহ করিতে হইয়াছে; কেন-না কলিকাতা, বৃন্দাবন, নবন্ধীপ ও পুরীর কোথাও এমন কোন গ্রন্থাগার নাই যেখানে সকল প্রকার বৈঞ্ব গ্রন্থ ও মাসিক পত্রিকা সংগৃহীত রহিয়াছে। কলিকাতার শ্রীযুক্ত মূণালকান্তি ঘোষ মহাশয়, সিউড়ির ৺ কুলদাপ্রসাদ মলিক ভাগবতরত্ব, নবগীপের শ্রীযুক্ত হরিদাস গোস্বামী এবং পাটনার প্রীযুক্ত প্রফুল্লরঞ্জন দাস (Mr. P. R. Das) মহোদয় তাঁহাদের নিজেদের সংগৃহীত যাবতীয় গ্রন্থ আমাকে বাবহার করিতে দিয়াছেন। দমদমার শ্রীযুক্ত ত্রিদিবনাথ রায় এবং পাটনার শ্রীযুক্ত স্থরেন্দ্রমোহন দাস ও শ্রীমান্ মণি সমাদ্দারের সৌজত্যে তাঁহাদের পিতৃদেব নিখিলনাথ রায়, ব্রজেক্সমোহন দাস ( সুপ্রসিদ্ধ ভক্ত ) ও যোগীজনাথ সমাদ্দারের সংগৃহীত পুথিপত্র ব্যবহার করিবার স্থ্যোগ পাইয়াছি। এতঘাতীত রায় বাহাছর ডা° দীনেশচন্দ্র সেন, রায় বাহাছর শ্রীযুত থগেন্দ্রনাথ মিত্র, ডা° সুশীলকুমার দে, শ্রীযুক্ত অমূলাচরণ ঘোষ বিছাভূষণ, ত্রীযুক্ত হরেকৃষ্ণ মুখোপাধ্যায় প্রভৃতি খ্যাতনামা গ্রন্থকার ও অনেক নাতিপরিচিত লেখক তাঁহাদের প্রকাশিত গ্রন্থ ও প্রবন্ধাদি উপহার দিয়া এবং উপদেশাদি প্রদান করিয়া আমাকে গবেষণা-কার্য্যে অশেষবিধ সাহায্য করিয়াছেন। বঙ্গীয় সাহিত্য-পরিষদের পুথিশালায় ও বরাহনগরের গ্রন্থ-মন্দিরে দীর্ঘকাল ধরিয়া অধ্যয়ন করিবার স্থযোগ দিয়া ঐ তুই প্রতিষ্ঠানের কর্তৃপক্ষ আমাকে কৃতজ্ঞতাপাশে বন্ধ করিয়াছেন। উড়িয়া সাহিত্য হইতে উপক্রণ-সংগ্রহ-বিষয়ে কটক-নিবাসী অধ্যাপক রায় সাহেব

# শ্রীচৈতহাচরিতের উপাদান

310

শ্রীযুক্ত আর্ত্তবল্লভ মহান্তি মহাশয় ও ক্ষেহভাজন শ্রীমান প্রভাতকুমার মুখোপাধ্যায় আমাকে যথেক সাহায্য করিয়াছেন।

এইরূপ ভাবে তথা সংগ্রহ করিয়া যে সকল বিষয়ে কিছু আলোক-সম্পাত করিতে পারিয়াছি বলিয়া মনে হয়, তাহাদের মধ্যে কয়েকটির মাত্র উল্লেখ করিতেছি:-->। জীচৈতত্তের জীবনের প্রধান প্রধান ঘটনার কাল সূক্ষ্মভাবে নির্ণীত হইয়াছে। :। বৈঞ্বের আথড়া হইতে আরম্ভ করিয়া বিশ্ববিদ্যালয়ের সর্বেনিচ্চ শ্রেণীতে শ্রীচৈতন্মভাগবত, শ্রীচৈতন্মসল, ত্রীতৈভয়চরিতামূত প্রভৃতি যে সকল গ্রন্থের পঠন-পাঠন হইয়া থাকে, সেই সকল গ্রন্থের মধ্যে কোন্থানির কভটা সংস্কৃতের অনুবাদ, কভটা বিবরণ গ্রন্থকারের নিজের সংগৃহীত তথ্যের উপর প্রতিষ্ঠিত, আর কতটা বা কল্লনা মাত্র, তাহার বিচার করিয়াছি। ৩। ঐীচৈতত্তের সহিত তাঁহার সমসাময়িক ধর্মা-সংস্কারকগণের কোন প্রকার সম্বন্ধ ছিল কি না সে সম্বন্ধে কোন ঐতিহাসিক আলোচনা এ প্রান্ত হয় নাই। আমি কবির, নানক, বল্লভাচার্যা, শক্ষর দেব, ও উড়িয়ার পঞ্চসথার সহিত শ্রীচৈতন্মের সম্পর্কের বিষয়ে যে সকল বিবরণ পাইয়াছি সেগুলির ঐতিহাসিক বিচার করিয়াছি। ৪। ত্রীচৈতত্তের সমসাময়িক পরিকরগণের সংখ্যা, জাতি, বাসস্থান ও মহিমার বিষয়ে সম্পূর্ণ বিবরণ লিখিবার উপাদান একস্থানে সঙ্কলন করিয়া দিয়াছি। পরিকরগণের জীবনের উপর শীচৈততের অলৌকিক প্রেম কিরূপ প্রভাব বিস্তার করিয়াছিল ভাহা উক্ত বিবরণ হইতে জানা যাইবে। ৫। গৌড়ীয় বৈষ্ণব সম্প্রদায়ের আদিম যুগের ইতিহাস-রচনার উপাদানও ইহাতে কিয়ৎপরিমাণে সংগৃহীত হইয়াছে। আমি সর্বত্ত ঐতিহাসিক বিচারের প্রণালী অনুসরণ করিতে চেফী করিয়াছি। তবে ইহাতে যে সম্পূর্ণ কৃতকার্য্য হইতে পারিয়াছি, এমন ভরসা করি না।

ইচ্ছা সত্ত্বেও এই প্রন্থের কতকগুলি ক্রটি পরিহার করিতে পারি নাই। ঐ ক্রটিগুলি ও উহাদের সংশোধনের অক্ষমতার কারণ-নির্দ্ধেশ করিতেছি।—

১। এই গ্রন্থে উদ্ভ অংশের প্রাচ্য্য পরিলক্ষিত হইবে। প্রাচীন গ্রন্থকারদের উক্তি এত বেশী উদ্ধৃত হইবার কারণ এই যে আলোচ্য গ্রন্থগুলির মধ্যে অনেকগুলিই ছুপ্রাপ্য এবং লেখকদের কথা ভাঁহাদের



নিজের নিজের ভাষায় যথাযথভাবে উদ্বত না হইলে তুলনামূলক বিচারের স্থবিধা হয় না।

- ২। উদ্ধৃত অংশ-সমূহের মধ্যে ছন্দো- ও ব্যাকরণ-গত অনেক ভুল রহিয়াছে। তাহার কারণ এই যে ছাপা বা হাতে-লেগা পুথিতে আমি যেমন পাঠ পাইয়াছি, ঠিক তেমনি ভাবেই তুলিয়া দিবার চেন্টা করিয়াছি।
- ৩। কোন কোন খলে একই যুক্তির পুনরাবৃত্তি করিতে হইয়াতে। সাধারণ পাঠক যাহাতে প্রত্যেক ক্ষেত্রে আমার সিদ্ধান্তের পোষক সমস্ত যুক্তি এক স্থানে দেখিতে পান, সেই উদ্দেশ্যে এইরূপ পুনরাবৃত্তি করিয়াছি।
- ৪। নবদীপলালা-প্রসঙ্গে যেখানে ত্রীচৈতল্যের নাম করিয়াছি. সেথানে বিশ্বস্তর মিশ্র নামে তাঁহাকে উল্লেখ করিয়াছি, কারণ নবখীপে বাস করার সময় তিনি ঐ নামেই পরিচিত ছিলেন। কোন কোন স্থানে ঐতিতভাকে প্রভু বলিয়া উল্লেখ করিয়াছি, ভাহার কারণ ঐতিহাসিক গ্রন্থ লিখিতে বসিয়াও আমি জন্মগত অভ্যাস ও আবেষ্টনীর প্রভাব একেবারে বর্জন করিতে পারি নাই।
- ৫। যথাসাধা চেন্টা সত্ত্বে নিম্নলিখিত ক্ষেক্টি গুরুত্র ছাপার ভুল রহিয়া গিয়াছে। আশা করি, পাঠকগণ অনুগ্রহপূর্বক এইগুলি मः भाषन कतिया लहेरवन। श्री ४२, शङ्कि ४, ১৪०१+३ ऋल ১৪০৭+৯৪ হইবে; পু ৯০, পঙ্ক্তি ১৯, ১৫৪০ স্থলে ১৫৪২ হইবে; পু ১০১, শেষ গছক্তি, যুক্তি স্থলে মুক্তি হইবে; পু ১৫৩, গছক্তি ৯, হভিন্নৰ স্থলে হভিন্নৰা হইবে।

আমার সহধর্মিণী শ্রীমতী স্থচিত্রা দেবী টাইপ করাইবার জন্ম সমগ্র গ্রন্থের পাণ্ডলিপি ও নির্ঘণ্ট প্রস্তুত করিয়া দিয়াছেন। কলিকাতার ১২।১, ওল্ড পোষ্ট অফিস ব্লীটের শ্রীযুক্ত ভবানীপ্রসাদ সান্যাল, বি.এ., মহাশয় যথাসাধ্য যত্ন লইয়া এই গ্রন্থ টাইপ করিয়া দিয়াছিলেন। আমার সহকর্ম্মী বন্ধু, অধ্যাপক স্থরেক্সনাথ ভট্টাচার্য্য এবং ভূপতিভূষণ মুখোপাধ্যায় ও তাঁহার সহধর্মিণী শ্রীমতী অমলা দেবা তর্ক-বিতর্ক করিয়া ও উপদেশ দিয়া সত্য-নির্ণয়ে যথেষ্ট সাহায্য করিয়াছেন। ইহাদের সকলের নিকট আমি কৃতজ্ঞ।

2100

## শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

কলিকাতা বিশ্ববিভালয়ের অক্লান্তকর্মা রেজিস্টার শ্রীযুক্ত যোগেশচক্স
চক্রবর্তী মহোদয়ের যত্নে ও চেফায় প্রায় আটশত পৃষ্ঠার এই গ্রন্থ এক
বৎসরের মধ্যে প্রকাশ করা সম্ভব হইল। ইহার নিকটে আমার সশ্রদ্ধ
কৃতজ্ঞতা ভাষায় প্রকাশ করা যায় না। বিশ্ববিভালয়-প্রেসের তত্তাবধায়ক
শ্রীযুক্ত দীনবন্ধ গঙ্গোপাধ্যায়, মুদ্রাকর শ্রীযুক্ত ভূপেক্রলাল বন্দ্যোপাধ্যায়
এবং বাঙ্গালা গ্রন্থমালা-প্রকাশবিভাগের সম্পাদক শ্রীযুক্ত অমরেক্রনাথ রায়
মহাশয় নানারূপ সাহায়্য করিয়া আমাকে কৃতজ্ঞতাপাশে বন্ধ করিয়াছেন।
বিশ্ববিভালয়ের অধ্যাপক শ্রীযুক্ত প্রিয়রঞ্জন সেন মহাশয় পঞ্চদশ অধ্যায়ের
ও অধ্যাপক শ্রীযুক্ত মণীক্রমোহন বন্ধ মহাশয় যোড্শ অধ্যায়ের প্রফ
দেখিয়া দিয়া আমার কৃতজ্ঞতাভাজন ইইয়াছেন।

পরিশেষে বক্তব্য এই যে বৃন্দাবনদাস, লোচন, কৃষ্ণদাস কবিরাজ প্রভৃতি প্রেমিক কবিজন ঐতিচতত্যের যে চরিতস্থা পরিবেষণ করিয়াছেন তাহা পান করিয়া বহু সাধু-হৃদয় ভক্ত, বৈক্ষব ও সাহিত্যরসিক মুগ মুগ ধরিয়া অপার আনন্দ লাভ করিয়া আসিতেছেন। আর আমি শুক ঐতিহাসিক, অরসজ্ঞ কাকের তায় ঐতিচতত্যের বহিরজ জীবনের খুটিনাটি ঘটনারূপ নিস্কল আস্বাদন করিয়া বলিতেছি—এ-ঘটনা এইরূপে ঘটেনাই, ও-ঘটনা একেবারেই ঘটে নাই।

ঐতিহাসিকের অভিযোগ আশস্কা করিয়া রবীক্রনাথ লিখিয়াছেন—
নারদ কহিলা হাসি, "সেই সত্য, যা রচিবে তুমি,
ঘটে যা, তা সব সত্য নহে। কবি, তব মনোভূমি,
রামের জনম-স্থান, অযোধ্যার চেয়ে সত্য জেনো॥"

—ভাষা ও ছন্দ

ভক্ত কবির মনোভূমিতে যে প্রীচৈতত্তের জন্ম হইয়াছে, তিনি ভক্তজ্পনের নিকট ঐতিহাসিক প্রীচৈতত্ত অপেক্ষা অধিকতর সত্য।

শ্রীধাম নবছীপ শ্রীগোর-পূর্ণিমা ২১এ ফাস্কন, ১৩৪৫

ঐবিমানবিহারী মজুমদার

# GENTRAL LIERAR

# প্রমাণপঞ্জী ও প্রমাণ-উদ্ধারের সঙ্কেত-ব্যাখ্য।

[ যে সকল গ্রন্থ হইতে বহুবার প্রমাণ উদ্ধার করা হইয়াছে, সেই সকল গ্রন্থের কোন্ কোন্ সংস্করণ ব্যবহার করিয়াছি ও প্রমাণ-উদ্ধারের সময় কিরূপ সঙ্কেত ব্যবহার করিয়াছি তাহার নির্দ্ধেশও লিখিত হইল।]

# ক। অপ্রকাশিত হাতে-লেথা পুথি

১। অজাত (সংস্কৃত) কৃষ্ণপ্রেমরসচন্দ্রতবভক্তিলহরী বা শ্রীচৈতন্তসার্কভৌম-সংবাদ:। পুরীর মুক্তিমণ্ডণ গ্রন্থাগারে রক্ষিত। ১০:• সালের সাহিত্য-পরিবং প্রিকার চতুর্থ সংখ্যার আমি ইহার বিবরণ প্রকাশ করি।

২। **উখ**র দাস (উড়িয়া) চৈতন্তভাগৰত। কটকের প্রাচীগ্রন্থশালার রক্ষিত।

৩। গোপান গুরু (সংস্কৃত) বক্রেশ্বরাষ্ট্রকম্। বরাহনগর গ্রন্থ-মন্দিরে রক্ষিত—
পুলি সংখ্যা ১৪০ ও ৬৭৭।

৪। জীব গোস্বামী (সংস্কৃত) বৈক্ষববন্দনম্। একথানি পুথি আমার নিকট, আর একথানি পুথি বরাহনগর গ্রন্থ-মন্দিরে (সংখ্যা ৪৪০) আছে।

( वाक्रीनमन( वाक्रीना )

বৈক্ষববন্দনা। অতুলক্ক গোন্থামী মহাশর ছালিয়াছেন। কিন্তু ছালা বইছের সঙ্গে প্রাচীন পুথির বছ স্থলে পাঠান্তর দৃষ্ট হয়। আমি সাহিত্য-পরিষদে রক্ষিত ৪৬৩-৪৭২, ১৪৮১-১৪৯১, ১৭৮৫, ১৮১৪, ২০৬৮, ২১০৭, ২১০৮ ও ২০৮৪ সংখ্যক পুথির সহিত মুদ্রিত পুথির পাঠ মিলাইয়া সিদ্ধান্ত উপস্থিত করিয়াছি।



# ১॥০ ত্রীচৈতশুচরিতের উপাদান

७। (एवकी नसन বুহৎ বৈষ্ণব-বন্দনা। ব্যাহনগর গ্রন্থ-মন্দিরে রক্ষিত (बाजाना) ( शरका ४०)। স্বৰ্মজ্ব। অধিকা-কালনার পাট বাড়ীতে রক্ষিত। ণ। নটবর দাস (বাঙ্গালা) বিখনাথ চক্রবন্তী গৌরগণস্বরপতভাচ ক্রিকা। বরাহনগর গ্রন্থ-মন্দিরে রক্ষিত ( সংখ্যা ৪৩০ )। ( 개:종명 ) ন। বিফাদাস সীতাগুণকদম। বন্ধীয় সাহিত্য-পরিষদে রক্ষিত। (वाञाना) পুথির সংখ্যা প্রদত্ত হইবার পূর্বেই আমি এই গ্রন্থ ব্যবহার করিরাছি বলিয়া সংখ্যা দিতে পারিলাম না। বৈক্ষব-বন্দনা। বহাহনগর প্রস্থ-মন্দিরে রক্ষিত ১ • ৷ বুলাবনদাস (वाकाना) (সংখ্যা ৮৪৭)। এই বই অতুলকুষ্ণ গোস্বামী ছাপিয়াছেন। কিন্তু উক্ত পুথিতে গ্রন্থকারের নাম দেওয়া ইইয়াছে আচাৰ্য্য মাধব। চৈতপ্রবিলাস। এই পুথির বিবরণ আমি সাহিত্য-**>>। माधव** (উডিয়া) পরিষৎ-পত্রিকায় ১৩৩০ সালে প্রকাশ করি। সম্রতি পুথিথানি প্রকাশ করিবার জন্ত কটকের অব্যাপক রায় সাহেব আর্ত্রন্নভ মহাস্তিকে नियाछि । ১২। রঘুনাগদাস গোস্থামী দানকেলী চিন্তামণি। বরাহনগর গ্রন্থ-মন্দিরে রক্ষিত (সংস্কৃত) ( সংখ্যা ৩৯৬ )। সম্প্রতি হাপা হইয়াছে। ১৩। স্থদর্শন দাস চৌরাশী আঞা। রায় সাহেব আর্ত্তবল্লভ মহান্তির (উডিয়া) নিকট ব্ৰফিত। অহৈত্যক্ষ। সাহিত্য-পরিষদে রক্ষিত (সংখ্যা ১৪ ৷ হরিচরণ দাস

থ। গৌড়ীয় বৈক্ষব সম্প্রদায়ের সংস্কৃত গ্রন্থ

266)1

১৫। কবিকর্ণপুর আনলবুলাবনচম্পু:।

(বাজালা)

# প্রমাণপঞ্জী ও প্রমাণ-উদ্ধারের সঙ্কেত-ব্যাখ্যা

311/0

| 201  | কবিকৰ্ণপূৱ       | গৌরগণোদেশদীপিকা। কোন গ্লোকের পর কোন<br>সংখ্যা থাকিলে বুঝিতে হইবে যে উহা বছর্মপুর  |
|------|------------------|---|
|      |                  | সংস্করণে প্রদত্ত প্লোক-সংখ্যা।  |
| 55.1 | \$               | চৈতভচজোদয়নাটকম্। বহরমপুর ও নির্ণয়সাগর প্রেস এই উভয় সংস্করণ হইতে প্রমাণ দেওয়া হইয়ছে। বথাস্থানে সংস্করণ উল্লিখিত হইয়ছে। ৮।২ বলিলে বৃথিতে হইবে অইম অফ, ষিতীয় সংখ্যা। শুধু নাটক বলিলে এই গ্রন্থকে বৃথাইবে। |
| -    |                  |   |
| 261  |                  | চৈতভাচরিতামৃতমহাকাবান্। বহরমপুর সংকরণ। ৮।২ বলিলে অটম সর্গ, দিতীয় লোক বৃথিতে হইবে। তথু মহাকাবা বলিলে এই গ্রন্থকে বৃথাইবে।   |
| >>1  | কুফদাস কৰিবাজ    | গোবিন্দ্ৰীলামুভম্ ৷   |
| 201  | কুঞ্ <b>লা</b> স | বাল্যলীলা-স্ত্ৰন্।  |
| 231  | গোপাৰ ভট্ট       | হরিভজিবিলাসম্, বহরমপুর সংভরণ।   |
| 22   | গোবিন্দ          | গৌরকুফোদয়কাব্যম্।  |
| 201  | জীব গোস্বামী     | গোপালচম্পৃঃ, নিত্যস্তরপ ব্রন্ধচারীর সংস্করণ।  |
| 281  | ži .             | লঘুতোৰণী নামক ভাগৰতের টাকা।   |
| 201  | 3                | ব্রদ্ধ-সংহিতার টাকা।  |
| २७।  | à                | বট্সন্দৰ্ভঃ। প্ৰাৰগোপাৰ গোস্বামি-সম্পাদিত কৃষ্ণ<br>ও প্ৰীতি সন্দৰ্ভ। সত্যানন্দ গোস্বামি-সম্পাদিত  |
|      |                  | তৰ, ভাগৰত ও পরমান্ধা সন্দর্ভ।   |
| 211  | B                | স্ক্সিংবাদিনী, সাহিত্য-পরিষৎ সংস্করণ।   |
| 341  | নরহরি সরকার      | ञीकृष्णक्षनागृष्ठम्।  |
| 221  | প্রছায় মিশ্র    | শ্রিক্ষাটেতভোগমাবলী।  |
| 00 1 | প্রবোধানন        | ८६७कारचार्न् ७र्न् ।  |
| 031  | 3                | নব্ধীপশতক ম্ ৷  |
| ०२ । | বলদেব বিভাভূষণ   | গোবিনভাশ্যম্।   |
| 991  | à                | अदमस्त्रष्टावनी ।   |

# 2110/0

# শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

| 98 1 | বিশ্বনাধ চক্রবর্ত্তী | ভাগবভের টাকা।   |
|------|----------------------|---|
| 941  | ম্রারি শুগু          | প্রীক্লণতৈ ভ্রুচরি তম্—সাধারণত: করচা বা কড়চা নামে প্রচলিত। মুণালকান্তি ঘোষ-সম্পাদিত তৃতীয় সংস্করণ। ৩১/৪ বলিলে তৃতীয় প্রক্রম, প্রথম সর্গ, চতুর্ব শ্লোক বৃস্বাইবে। |
| 001  | যছনাৰ দাস            | শাথানিবঁরামৃতম্।  |
| 091  | রখুনাথ দাস           | মুক্তাচরিত্রম্। নিভাশরণ একচারীর সংস্করণ, ৪২২<br>চৈত্রাক।  |
| OF 1 | 4                    | ভবাবলী। বহরমপুর সংশ্বরণ, ৪০২ চৈতভাবা।   |
| 02   | রামানক রায           | জগরাধবল্লভনাটকম্, নিতাখরপ ব্রহ্মচাতীর সংক্ষরণ।  |
| 8-1  | রূপ গোস্বাদী         | উष्धनभीनमनिः, वर्त्रमभूद मश्यद्भ ।  |
| 85 1 | <u>ক</u>             | मानदक्षिदकोमुमीकांषिकां, थे ।   |
| 85 1 | 4                    | পভাষনী, ভা° স্থশীলকুমার দের সংস্করণ।  |
| 801  | 4                    | বিদ্যমাধ্বনাটক্ষ্, বহর্ষপুর সংস্করণ।  |
| 881  | à                    | ভক্তিরসামৃতসিদ্ধা, ঐ ।  |
| 81   | 4                    | লগুভাগবভাযুতম্, বলাইটাদ গোস্বামীর সংস্করণ।  |
| 801  | 3                    | ললিত্যাধ্বনাট্কুম্, বহর্মপুর সংস্করণ।   |
| 891  | 3                    | खबराना, खे ।  |
| 871  | লোকনাথাচার্য্য       | ভক্তিচক্ৰিকা।   |
| 85   | সনাতন গোস্বামী       | রুগ্রাগবতামৃত্যু, নিতাপ্তপ ব্লচারীর সংখ্রণ।   |
| 201  | 4                    | বৃহবৈক্ষৰতোষণী, ভাগৰতের টাকা।   |
|      |                      |   |

# গ। অক্যান্য সংস্কৃত গ্রন্থ

| 231  | বিষ্মঞ্জ                              | কুষ্ণকর্ণামৃত্য ।       |
|------|---------------------------------------|-------------------------|
| 421  | ভরতমল্লিক                             | ठ <del>ल</del> शका ।    |
| 100  | শশিভ্যণ গোশামী                        | হৈতভ্ৰতবদীশিকা।         |
| ¢8   | (***                                  | <b>काटमाट</b> शाशनियर । |
| 44 1 | द्रधूनसम                              | জ্যোতিষতথম্।            |
| 401  | 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | শিলগছন:পুরুম্।          |



# প্রমাণপঞ্জী ও প্রমাণ-উদ্ধারের সঙ্কেত-ব্যাখ্যা

| 491   | द्रण्नसन   | প্রাণতোবিণীতন্ত্রম্।            |
|-------|--|---------------------------------|
| er I  | ***  | वक्षदेववर्खभूवानम् ।            |
| 491   |  | ব্রহ্মাওপুরাণম্।                |
| -     | 1,44   | বাচপ্ৰত্যভিধানম্।               |
| 95 1  | প্রকাশানন  | বেদান্তসিদ্ধান্তমূক্তাবলী।      |
| 421   |  | ভাগৰতম্।                        |
| 901   | শ্রীধর স্বামী  | ভাবার্থদীপিকা।                  |
| 68    | পশ্বনাভ  | মাধ্বসিদ্ধান্তসারম্।            |
| Se    | বোপদেব   | মুক্তাফলম্, জ্বীকেশ লাহা সিরিজ। |
| 991   | 10 No.  | <b>अंक्</b> रब्रक्षम् ।         |
| 691   | A CAMPAGE AND A STATE OF THE PARTY OF THE PA | সাহিত্যদৰ্শণম্।                 |
| 951   | বলভাচার্য্য  | স্থবোধিনী-টাকা।                 |
| 400 1 | স্থাকর বিবেদী  | স্থাসিছান্ত টাকা।               |
|       |  |                                 |

# ঘ। বাঙ্গালা ভাষায় গৌড়ীয় বৈষ্ণব সম্প্রদায়ের গ্রন্থ

| ৭০। অভিরামদাস         | পাট-পর্যাটন।  |
|-----------------------|---|
| ৭১। ঈশান নাগর         | অহৈতপ্ৰকাশ।   |
| ৭২। কৃঞ্চলাস কৰিবান্ধ | চৈতজ্ঞচরিতামৃত। অনেক হলে শুধু চরিতামৃত<br>বলিয়া প্রমাণ উল্লেখ করিয়াছি। রাধা-<br>গোবিন্দ নাথ-সম্পাদিত ছিতীয় সংস্করণ<br>হইতে প্রমাণ উদ্ধৃত হইয়াছে। ১০০৪                 |
|                       | বলিলে আদি লীলা, তৃতীয় পরিচ্ছেদ, চতুর্ব পরার বুঝাইবে। কালনা, গৌড়ীয় মঠ ও রাধিকানাথ গোস্বামীর সংকরণ হইতে বেখানে কোন প্রমাণ উদ্ধৃত হইরাছে সেখানে সংক্ষরণের নাম করা হইরাছে। |

৭০। কুঞ্চাস কুঞ্মজন। ৭৪। থগেন্দ্রনাথ মিত্র-সম্পাদিত পদামৃত-মাধুরী। ৭৫। গোপীজনবল্লভ দাস রসিক্মজন।

#### 240

## শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

৭৬। গোবিন্দ কর্মকার

গোবিন্দদাসের করচা, ভা° দীনেশচক্র সেনের সংস্করণ।

৭৭। জগদানন্দ

প্রেমবিবর্ত্ত।

৭৮। জগবদ্ধ ভদ্র-সম্পাদিত

গৌরপদতর দিনী। মৃণালকান্তি ঘোষ-সম্পাদিত ছিতীয় সংস্করণের পৃষ্ঠা বা পদ-সংখ্যা ধরিয়া প্রমাণ দেওয়া হইয়াছে। যেখানে ভজ মহাশয়ের সংস্করণ হইতে প্রমাণ দিয়াছি সেখানে তাহা উল্লেখ করিয়াছি। যেখানে কোন গ্রন্থের নাম না লিখিয়া ভধু জগদদ্ধবাবু বা মৃণালবাবুর মত বলিয়া কোন কথা লিখিয়াছি, সেখানে বুঝিতে হইবে এই গ্রন্থের ভূমিকায় ঐ মত বাক্ত করা হইয়াছে।

१३। सम्रह्म मान

৮-। अश्रानन

৮১। নরহরি চক্রবর্ত্তী

४२। खे

৮৩। নরোত্তম ঠাকুর

৮৪। নিভানন দাস

ত্রীচৈতভাপারিবদ-জন্মস্থান-নির্ণয়।

চৈত্রখন্তল।

নরোত্তমবিলাস।

ভক্তিরত্বাকর।

প্রার্থনা।

প্রেমবিলাস, বশোদানন্দন তালুকদারের সংস্করণ। সাহিত্য-পরিষদে রক্ষিত পুথি-সমূহের পাঠ

মিলাইরা সিদ্ধান্ত স্থির করিয়াছি।

৮৫। প্রসরকুমার গোস্বামি-সম্পাদিত

৮৬ প্রেমদাস

৮৭। বাস্থ্যোব

४४। वृत्सायनमाम

অভিরামলীলামৃত।

বংশীশিকা, ভা" ভাগবতকুমার গোস্বামীর সংস্করণ। চৈতভাসভাসের পালা।

শ্রীচৈতগুভাগবত। অতুলক্ক গোস্বামি-সম্পাদিত
বিতীয় সংস্করণ। ৩৮৪০২ অর্থে অস্তাথত,
অন্তম পরিছেদ, ৪০২ পৃষ্ঠা। ঐ সংস্করণে
পরারের সংখ্যা না দেওয়া থাকায় পৃষ্ঠা
উল্লেখ করিয়াছি। গৌড়ীয় মঠ সংস্করণে
পরারের সংখ্যা দেওয়া আছে।

# প্রমাণপঞ্জী ও প্রমাণ-উদ্ধারের সঙ্কেত-ব্যাখ্যা

34/0

| >> । देवस्थय माम-भरशृङ्खिल | माम-भरगृशीक |
|----------------------------|-------------|
|----------------------------|-------------|

পদক্ষতক, সাহিত্য-পরিষৎ সংস্করণ; সতীশচক্র রায় মহাশ্যের মত বেখানে উল্লেখ করা হইয়াছে, সেখানে বৃথিতে হইবে, এই প্রন্থের প্রক্রম গতে উহা ব্যক্ত করা হইয়াছে।

| a . I | মনোহর দাস            | অন্তরাগবল্লী।  |
|-------|----------------------|--|
| 221   | मूक्न                | व्यानसङ्ख्रावनी ।  |
| 251   | <b>A</b>             | সিদাস্তচন্দ্রেস  |
| 106   | যহনক্ষম দাস          | कर्गानम ।  |
| ≥8    | à                    | গোবিন্দলীলামৃত।  |
| 201   | রঘুনাথ ভাগৰতাচার্য্য | কুকুর্প্রেমতরঞ্জিণী।   |
| 261   | রাজবল্লভ             | মুরলীবিলাস।  |
| 291   | রামগোপাল দাস         | শাখাবৰ্ণন ।  |
| 201   | রামপ্রসর ঘোষ-সঙ্গলিত | ৰংশীলীৰামৃত।   |
| >> 1  | লালদাস বা কুফদাস     | উপাসনাচন্দ্রামৃত।  |
| >001  | <b>এ</b>             | বালাকা ভক্তমাল।  |
| 3051  | লোকনাথদাস            | সীভাচরিত্র।  |
| > > 1 | বোচন                 | চৈত্ত্যকল, মৃণালকান্তি ঘোষ-সম্পাদিত দিতীয়<br>সংস্করণ, পৃষ্ঠা উল্লেখ করিয়া প্রমাণ |

## ঙ। অভাত বাঙ্গালা গ্ৰন্থ ,

তুলিয়াছি।

| 1000  | অচ্যুত্তরণ তত্তনিধি | ত্রীগোরাঙ্গের পূর্বাঞ্ল-ভ্রমণ।                           |
|-------|---------------------|--|
| > 8 1 | অধিকাচরণ ব্রন্সচারী | বলরত্ব।  |
| 3001  | অম্লাধন রায় ভট     | দাদশ গোপাল।  |
| 3001  | 4                   | বুহৎ প্রীবৈঞ্চৰ চরিত অভিধান ( চ পর্যান্ত)।               |
| 3091  | অমৃতলাল পাল         | বক্রেশ্ব-চরিত।   |
| 2041  | ***                 | অষ্ট্ৰম বলীয় সাহিত্য-<br>সন্মিলনের বিবরণ।               |
| 1600  | কালীপ্রসর সেনগুর    | বঙ্গীয় কবি।   |
| 2201  | 3444                | কাশিমবাজার বঙ্গীয় সাহিত্য-<br>সন্মিলনের সম্পূর্ণ বিবরণ। |
|       |                     |  |



#### ত্রীচৈতগুচরিতের উপাদান sho/0 3331 कुरधमान বীরভন্ত মূল কড়চা। è >>21 স্তরপ-বর্ণন। গৌরগুণানন ঠাকুর শ্রীথতের প্রাচীন বৈক্ষব। 1000 **हाक्**डल खिगानि প্রীচৈতভাদেবের দক্ষিণ-ভ্রমণ, প্রথম ও বিভীয় থও। 1866 বঙ্গভাষা ও সাহিত্য, প্রথম ও পঞ্চম সংস্করণ। मोदनमहस दमन 1366 3 বলসাহিত্য-পরিচয়। 1966 উত্তর রাচীয় কায়স্থকাও। 3391 নগেন্দ্রনাথ বস্থ è বারেন্দ্র ব্রাক্ষণকাও। 3361 3 বিশ্বকোষ অভিধান। 1666 প্রভাগচন্দ্র সেন বগুড়ার ইতিহাস। 1050 **>२>। अयथ कोयु**द्री नाना हक्ता। ১২২। ফণিভূষণ দন্ত প্ৰীচৈতন্ত্ৰ-জাতক। ১২৩। বিশ্বাপতি भगवनी, नरशक्तनाथ खरश्तत्र मरस्त्रम । বিপিনবিহারী গোসামী म्भागनवम् । 2581 ১२৫। विश्रमाम निनमाहे মনসামঞ্চল। ১২৬। বিশ্বস্তর বাবাজী রসরাজ গৌরাজস্বভাব। देवक्षवाहात-मर्भन। 1656 ভূবনেশ্বর সাধু হরিনাম-মঞ্জ। 2551 ভোগমালা। 2551 देवक्षव मिश्रमिनी। মুরারিলাল অধিকারী 5001 মূণালকান্তি ঘোষ গোবিন্দদাসের কড়চা-রহন্ত। 2001 রবীজনাথ ঠাকুর চয়নিকা। 1505 রাখালদাস বন্দ্যোপাধ্যায় বালালার ইতিহাস। 1001 অবৈভসিদ্ধি (ভূমিকা)। রাজেন্দ্রনাথ ঘোষ 208 1 বুহন্ত জিত জ্বপার। ৱাধানাথ কাৰাসী 1 200 বলভাষা ও সাহিত্য-বিষয়ক প্রস্তাব। রামগতি ভাররত 1001 কীর্ত্তিলতা ( ভূমিকা )। হরপ্রসাদ শাস্ত্রী 1000 द्योष गान ७ (मारा। ক্র 300 1 হরিমোহন মুখোপাধ্যায়- বলভাষার লেখক। 1 606 সম্বলিত देवका देखिहान। व्यवनान क्रिशामाय



# প্রমাণপঞ্জী ও প্রমাণ-উদ্ধারের সঙ্কেত-ব্যাখ্যা

shelo

| 1686 | হরেকুক্ত মুখোপাধ্যায় | कवि अग्रदमव छ | প্রীগীতগোবিন্দ। |
|------|-----------------------|---------------|-----------------|
|------|-----------------------|---------------|-----------------|

১৪२। श्रीमनान श्रीवामी श्रीवञ्चनत्र।

১৪৩। ফিতীশচন্দ্র সরকার সন্ধীর্তন-রীতিচিন্তামণি।

## চ। উড়িয়া ভাষায় লিখিত গ্ৰন্থ

অনাকার-সংহিতা। ১৪৪। অচ্যত শুক্ত-সংহিতা। ঐ 584 1 জগরাথ দাস দাক্তক। 3841 3 রাসক্রীড়া। 389 | ১৪৮। দিবাকর দাস জগরাপচরিতামৃত। ১৪৯। নিরাকার দাস ঝুমুর-সংহিতা। বট অবকাশ। ১৫০। বলরামদাস বিরাট্ গীতা। 3 5051 शिवखद्वाम्य । ১৫२। यटगांवस मान

### চ। অসমীয়া ভাষায় লিখিত গ্রন্থ

मोशिकाठाना। 1001 সৎ-সম্প্রদায়-কর্পা। **खप्टेरम** व 548 1 শ্রীশঙ্কর দেব, হুর্গাধর বরকটকী-সম্পাদিত। ভূষণ ছিজ কৰি seel শন্তর-চরিত, হলিরাম মহস্তের সংস্করণ। রামচরণ ঠাকুর >241 শহর দেব। मणीनाथ विश्ववक्रया 1 826 श्रीभंद्रद दमव जाक माधवरमव। ক্র 5001 কার্তন-ঘোষা। শহর দেব 1 426

# জ। হিন্দী ভাষায় লিখিত গ্ৰন্থ

১৬০। প্রপৃষ্টিমার্গীয় প্রিমার্গাজী মহাপ্রভূনকে নিজ সেবক চৌরালী বৈক্ষবনকী বার্তা, লক্ষ্মী বেছটেখর প্রেস সংস্করণ। ১৬১। নাজাজী ভক্তমাল—প্রিয়াদাসজীর টাকা-কবিছ সহিত, নবলকিশোর প্রেস সংস্করণ।

# ত্রীচৈতহাচরিতের উপাদান

# ঝ। জার্মান ভাষায় লিখিত গ্রন্থ

| 162. | Von Glasenapp | Die Lehre Vallabhacaryas, Z. D. M. G | ., |
|------|---------------|--------------------------------------|----|
|      |               | 1934.                                |    |

163. Festehrift Moriz Winternitz, 1933 ( জা<sup>o</sup> সুশীলকুমার দে-লিখিড ইংরাজী প্রবন্ধ )।

## ইংবাকী ভাষায় লিখিত গ্রন্থ

|          | Ch. 1 4/412  | el oldia lellao era                             |  |
|----------|--|---|--|
| 164.     | Allahabad University Studies, Vol. XI, 1935.   |   |  |
| 165.     | Banerjee, R. D.  | Age of the Imperial Guptas.                     |  |
| 166.     | Do.  | Eastern Indian School of Mediæval<br>Sculpture, |  |
| 167.     | Do.  | History of Orissa.                              |  |
| 168.     | Basu, Manindramohan  | Post-Chaitanya Sahajia Cult.                    |  |
| 169.     | Bhandarkar,  | 40.00   |  |
|          | Sir R. G.  | Vaisnavism, Saivism, etc.                       |  |
| 170.     | Bhattasali,  |   |  |
| MITTERS. | Dr. N. K.  | Early Independent Sultans of Bengal.            |  |
| 171.     | Catalogue of Sanskrit Manuscripts in the Asiatic Society of<br>Bengal, Vols. IV and V.   |   |  |
| 172.     | Eggling  | India Office Catalogue, Vol. VII.               |  |
| 173.     | Gait   | History of Assam.                               |  |
| 174.     | Ghate  | The Vedanta.                                    |  |
| 175.     | Growse   | History of Muttra.                              |  |
| 176.     | Hamilton, Buchanan   | Purnea Report.                                  |  |
| 177.     | Hunter   | Statistical Account of Bengal, Vol. IV.         |  |
| 178.     |  |   |  |
| 179.     |  |   |  |
| 180.     | The state of the s | History of the Dharma Shastra.                  |  |
| 181.     | The state of the s | Saraswata Bhawan Studies, Vol. IV.              |  |
| 182.     | MANUFACTURE OF THE PROPERTY OF | History of Vishnupur Raj.                       |  |
| 183.     |  | Chaitanya's Life and Teachings.                 |  |
| 184.     |  | History of Bengali Language and<br>Literature   |  |
| 185.     | Do.  | Vaishnava Literature.                           |  |

185.



# প্রমাণপঞ্জী ও প্রমাণ-উদ্ধারের সঙ্কেত-ব্যাখ্যা

186. Singh, Shyamnarayan History of Tirbut.

187. Vasu, Nagendranath Archæological Survey of Mayurbhanja.

188. Ward History of the Hindus.

## ট। সাময়িক ইংরাজী পত্রিকা

189. Bengal: Past and Present, 1924.

190. Calcutta Review, 1898.

191. Dacca Review, 1913.

192. Epigraphica Indica, Vols. XV, XVII.

193. Indian Culture, 1935.

19+. Indian Historical Quarterly, 1927, 1933.

195. India and the World, 1934.

196. Journal of the Asiatic Society, Bengal = J. A. S. B., 1873,

197. Journal of the Behar and Orissa Research Society

= J. B. O. R. S., Vols. V, VI, XII.

198. Journal of the Royal Asiatic Society = J. R. A. S., 1909.

# ঠ। বাঙ্গালা সাময়িক পত্রিকা

>>>। উद्यासन, ১৩৩०, ১৩৩१।

২০০। কিশোরগঞ্জ বার্ত্তাবহ, ১৩৩৩।

२०)। (शोदालमाधुदी, ১००१।

২০২। গৌড়ভূমি, ১৩০৮।

২ - ৩। গৌড়ীয়, তৃতীয় বর্ষ।

२०४। टिज्यम्बद्याविनी, १०१-१० टेज्यांन।

२०६। खबामी, २०२१, २०२३, २००७।

२०७। वज्रवानी ( मानिक ), २०२३।

२०१। यस्त्री, १७८१।

২-৮। ৰত্মতী (মাসিক), ১৩৪২।

২০৯। বিফুপ্রিয়া পত্রিকা, প্রথম হইতে অষ্টম বর্ষ।

২১-। বিফুপ্রিয়া-গৌরাঙ্গ পত্রিকা, পঞ্চম হইতে সপ্তম বর্ষ।

२>>। वीद्रज्भि, ১०००।

২১২। ব্ৰদ্ধবিষ্ণা, ১৩৪২, ১৩৪৩।



### 20/0

# ত্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

२५०। ভারতবর্ষ, ১৩২৪, ১৩৪०-১৩৪२।

২১৪। ভজিপ্রভা, ২২, ২৩ বর্ষ।

২১৫। ব্ৰহ্মপুর সাহিত্য-পরিষৎ পত্রিকা, ১৩১৪-১৩২১।

২১৬। সাহিত্য, ১৩৽৬, ১৩১৭।

২১৭। বন্ধীয় সাহিত্য-পরিবৎ পত্রিকা।

२३४। दमवा, ३००६।

২১৯। সোনার গৌরাঙ্গ, ১৩৩২।

# ড। অসমীয়া সাময়িক পত্রিকা

২২-। আসাম বান্ধব, ১৩১৭, ১৩১৮।

२२३। दिखना, ३७२८।

# GENTRAL LIBRARY

# প্রীটেভতন্যভরিতের উপাদান প্রথম অধ্যায়

# শ্রীচৈতন্মের জীবনী-আলোচনার তিনটি ধারা

St. Francis of Assisia জীবনবৃত্তান্ত আলোগনা করিতে যাইয়া G. K. Chesterton বলিয়াছেন যে সেন্ট্ ফ্রান্সিদ্কে তিনটি বিভিন্ন রূপে দেখা যাইতে পারে। প্রথমতঃ, তাঁহাকে আধুনিকদের চোখ দিয়া দেখিয়া তাঁহার নিস্গ্প্রীতি, পশুপ্রীতি, সামাজিক উন্নতির পরিকল্পনা ও গণতান্ত্রিকতার প্রশংসা করা যাইতে পারে। ম্যাথু আর্নল্ড ও রেনান্ এই ভাবে তাঁহাকে দেখিয়াছেন। ইহাদের আলোচনা-প্রণালী-সম্বন্ধে চেফ্টারটন্ বলেন—

"They were content to follow Francis with their praises until they were stopped by their prejudices, the stubborn prejudices of the sceptic. The moment Francis began to do something they did not like, they did not try to understand it, still less to like it, they simply turned with their backs on the whole business and walked no more with him."

বিতীয়তঃ, সেণ্ট্ ফ্রান্সিসের ধর্ম্মতকে যাঁহারা সম্পূর্ণভাবে মানিয়া লাইয়াছেন তাঁহারা তাঁহার সম্বন্ধে মধ্যযুগে যাহা কিছু লিখিত হইয়াছিল সব নির্বিচারে স্বাকার করিয়া জাবনা লিখিতে পারেন। তৃতীয়তঃ, ঐতিহাসিক ও মনস্তত্ববিদের দৃষ্টি লাইয়া কোন লেখক মধ্যযুগের ভাবধারা আন্তরিক সহামুভূতির সহিত আলোচনা করিয়া সেণ্ট্ ফ্রান্সিসের জীবনা লিখিতে পারেন। চেন্টারটন্ এই তৃতীয় পদ্বা অবলম্বন করিয়া উক্ত গ্রন্থ রচনা করিয়াছেন। আমার মনে হয়, মধ্যযুগের প্রত্যেক



### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

2

ধর্মপ্রচারক ও সংস্কারকের জীবনই এই তিন প্রণালীতে আলোচিত হইতে পারে।

ভারতবর্ষে শ্রীচৈতভাদেবকে কেন্দ্র করিয়া যত গ্রন্থ রচিত হইয়াছে, এত আর অভা কোন বাক্তির সম্বন্ধে লিখিত হয় নাই। শ্রীচৈতভার জীবনকাল হইতে আরম্ভ করিয়া আঞ্চ পর্যান্ত তাঁহার যত জীবনী বা জীবনের কোন ঘটনা লইয়া ন্তব, পদ বা কাহিনী রচিত হইয়াছে, সেগুলি একত্র সংগ্রহ করিলে বেশ একটি লাইব্রেরী হইতে পারে। তিনি ১৫৩০ গৃক্টান্দে তিরোহিত হয়েন। ১৭৫৮ গৃক্টান্দের ' মধ্যে অর্থাৎ বাঙ্গালাদেশে ব্রিটিশ অধিকার স্থাপিত হওয়ার পূর্বেব তাঁহার সম্বন্ধে সংস্কৃত, বাঙ্গালা, ওড়িয়া, অসমীয়া ও হিন্দী ভাষায় শতাধিক লেখক গ্রন্থ ও পদ রচনা করিয়াছেন। শ্রীচৈতভা ব্যতীত পঞ্চদশ শতাব্দীতে বা তাহার পূর্বের্ব পৃথিবার কোখাও এমন কোন ধর্মপ্রচারক, রাজনৈতিক, সাহিত্যিক, শিল্পী বা দার্শনিক জন্মগ্রহণ করেন নাই ঘাঁহার সম্বন্ধে তাঁহার পরলোক-গমনের সওয়া ভূই শত বংসরের মধ্যে শতাধিক লেখক গ্রন্থাদি রচনা করিয়াছেন।

# ভক্তদের লীলা-আস্বাদনের রীতি

চেন্টারটন্ সেণ্ট্ ফ্রান্সিসের চরিত-লেখকদের মধ্যে বাঁহাদিগকে ছিতীয় শ্রেণীতে ফেলিয়াছেন, প্রাক্-ব্রিটিশ যুগের প্রীচৈতন্তের চরিত-লেখকগণ সেই শ্রেণীর অন্তর্ভুক্ত। ইহারা কেহ-বা প্রীচৈতন্তের লীলা লিখিয়াছেন, কেহ-বা তত্ত্ব লিখিয়াছেন। ইহাদের মধ্যে অনেকেরই প্রীচৈতন্ত-সম্বন্ধে প্রত্যক্ষ জ্ঞান ছিল না। বাঁহাদের সহিত প্রীচৈতন্তের ব্যক্তিগত পরিচ্য ছিল, তাঁহারাও যে তাঁহার জীবনের সকল ঘটনা পুখানুপুখরূপে জানিয়া বা অনুসন্ধান করিয়া উহা লিপিবন্ধ করিয়াছেন তাহাও নহে। উদাহরণদ্বরূপ বলা বাইতে পারে যে মুরারি গুপ্ত প্রীচৈতন্তের

১ ১৭৫৭ খুৱাজের ২০এ জুন পলালির বৃদ্ধ ঘটলেও, গোবিন্দ দেব-কৃত "গৌরকুকোন্ধরকাব।"কে বিচারের অন্ত কুক্ত করার অন্ত, ১৭৫৮ খুটান্দ পর্যন্ত আলোচনার দীমারেখা টানিয়ছি।



## শ্রীচৈতত্তের জাবনী-আলোচনার তিনটি ধারা

নগৰাপ-লালার সকল বা অধিকাংশ ঘটনাই জানিতেন; কিন্তু ঐতিতত্তের ভাগৰ কাহিনী বা নালাচলে ভাবোন্মাদ-সম্বন্ধে তাঁহার প্রত্যক্ষ জ্ঞান অতি অল্ল ছিল। ঐকিপ ও রবুনাথদাস গোস্বামী কেবলনাত্র প্রভুর নালাচল লালা দর্শন করিয়াছিলেন। তাঁহারা নিজে যতটুকু দেখিয়াছিলেন, শুধু সেইটুকুই স্তবাকারে উল্লেখ করিয়াছেন।

প্রাক্-ব্রিটিশ যুগের শ্রীচৈতগ্যকথার লেখকগণ সকলেই পরম ভক্ত।
তাঁহারা শ্রীচৈতগ্যের বহিরত্ব জাবনের খুটিনাটি ঘটনাকে বিশেষ প্রয়োজনীয়
মনে করিতেন না। তাঁহার অন্তরত্ব ভাবজাবনই তাঁহাদের আস্বান্থ ছিল।
এই সব লেখক শ্রীচৈতগ্য-লালার নিতাহে বিশ্বাস করিতেন। বুন্দাবনদাস লিখিয়াছেন—

অছাপিহ সেই লীলা করে গৌররায়। কোন কোন ভাগ্যবান্ দেখিবারে পায়।

এই সব ভাবরাজ্যের ভাগাবান্ ব্যক্তিরা ঐচিতত্তের প্রকটলীলা ও নিতালীলার মধ্যে পার্থকাও বজায় রাখিতে সব স্থানে পারেন নাই— প্রয়োজনও মনে করেন নাই।

প্রাক্তনাতিশ যুগের এই ধারা আজও চলিতেছে। গুরুপরম্পরাগত বা লৌকিক কাহিনার উপর প্রতিষ্ঠিত ঘটনাসমূহ অন্তরের শ্রন্ধা ও ভক্তির সহিত মানিয়া লইয়া এই সব ঘটনার অমুকরণে নিজেদের জীবনগঠন করিবার চেন্টা বাঙ্গালায় শত-সহস্র বৈশ্বব সাধুর মধ্যে দেখা যায়। "বিখাসে মিলয়ে বস্তু, তর্কে বহুদূর" নীতি ইহারা সর্বতোভাবে পালন করিতে চেন্টা করেন। যদি বৈশ্বব আচার্য্যাণের সিদ্ধান্তও রসশাস্ত্রের বিরোধী না হয়, তবে যে কোন ঘটনা ইহাদের সত্য বলিয়া মানিতে আপত্তি নাই। কেন-না ইতিহাস জাগতিক ঘটনার সত্য-মিথ্যার যে ভেদ নির্দেশ করে, ইহাদের মতে ভগবান্-সন্তন্ধে তাহা প্রয়োগ করা চলে না। শীকৈতন্ত স্বয়ং ভগবান্, অতএব তাহার দ্বারা সব কার্য্যই হওয়া সম্ভব। আর যাহা সম্ভব তাহা যদি ভক্তের হৃদয়ে লীলারূপে ক্রেতি হয়, তবে আর তাহাতে অবিশ্বাস করিবার কারণ নাই।

# শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

ভক্তগণের লীলা-আস্বাদনের রীতি কিরূপ তাহা আধুনিক জনের উপযোগী ভাষায় ৺কুলদাপ্রসাদ মলিক মহাশয় তাঁহার "ভাগবতধর্ম" নামক গ্রন্থের দ্বিতীয় ভাগে নিম্নলিখিতরূপে ব্যাখ্যা করিয়াছেন— "শ্রীচৈত্র মহাপ্রভুর উপদেশানুযায়ী যাঁহারা শ্রীবৃন্দাবন লালা উপলব্ধি করেন, তাঁহাদের এই মত যে শ্রীকৃষ্ণ অস্থর সংহার করেন না।" "বিষ্ণুত্বারে কৃষ্ণ করে অন্থর সংহারে।" বিষ্ণু ভগবানের একটি বিশেষ প্রকাশ, বিশ্বপ্রকাশ তাঁহার উদ্দেশ্য-এখানে ভগবানের স্বরূপের প্রকাশ নাই-এখানে অর্থাৎ বিষ্ণুতে তাঁহার যেন একটি আত্মকৃত বা স্বেচ্ছাকৃত সীমাব্দতা আছে। বেমন একজন- মানুষ ব্দুগণ-সঙ্গে যখন আমোদ-আহলাদ করে, অথবা স্ত্রী-পুত্র লইয়া প্রেমের সংসার পাতিয়া জীবনের রস-আস্বাদনে মন্ত থাকে, তখন সে প্রাণ খুলিয়া হাসে, কিন্তু সেই লোক আবার যথন কর্মকেত্রে যাইয়া বিচারাসনে উপবেশন করে, তথন তাহার আর এক ভাব প্রকাশিত হয়। তথন তাহার প্রাণ যদি হাসিতেও চায়, তাহা হইলে তাহাকে জোর করিয়া সেই হাসি চাণা দিয়া গঞ্জীরভাবে বিচারকার্য্য চালাইতে হইবে। ইহারই নাম স্বেচ্ছাকৃত সীমাবদ্ধতা।

বিশ্বের ও মানবের অসংখ্য প্রয়োজনের মধ্যে আমরা ভগবান্কে দেখিতে শিথিয়াছি বলিয়া তাঁহার স্বরূপের মাধ্যালীলা আস্বাদন করিতে পারি না—এই জন্মই স্তীর্ন্দাবনের অনেক ব্যাপার আমাদের দুর্বেবাধ্য হয়।

জগতের দিক্ হইতে ভগবান্কে দেখা, আর ভগবানের দিক্ হইতে জগৎকে দেখা, এ চুইয়ের মধ্যে অনেক তফাৎ। 'ভগবানের দিক্ হইতে যে জগৎ দেখা' তাহাতে জগৎ নিতাস্ত গৌণ হইয়া পড়ে। ইহারই নাম ভগবানের স্বরূপ দেখা। স্বরূপ দেখাকে "As He is in His own nature" বলা যায়; আর জগতের দিক্ হইতে দেখাকে "As He seems to us when inferred from the manifested universe of ours" বলা যায়। প্রিব্লাবনতত্ত্ব ও তাহার উপসংহার প্রিটতভালীলা আমাদের এই গৌড়মগুল-ভূমির ভক্ত আচার্যাগণের



## শ্রীতৈতভার জীবনী-আলোচনার তিনটি ধারা

মতামুসারে বুঝিতে হইলে এভগবান্কে তাঁহার সরূপে দেখিতে হইবে। এই স্বরূপে দেখার অভ্যাস না থাকিলে কিছুতেই প্রীরুন্দাবন-রহস্ত হৃদয়স্বম হইবে না।

স্বরূপে বাঁহার। শ্রীভগবানের আনন্দভাব ধারণার চেন্টা করিয়াছেন, তাঁহারাও শ্রীরুন্দাবনে তাঁহার ভিথারীভাবের পরিপূর্ণতা দেখিয়াছেন। শ্রীরুন্দাবনে যেন এই ভিথারীভাবের কিছু গোপন ছিল, সেই জন্ম শ্রীনবদ্বীপে শ্রীগৌরাজ-লীলা।

শ্রীগোরার মহাপ্রভূকে ভক্তগণ 'স্বয়ং ভগবান্' বলিয়াছেন। 'ভগবান্' ও 'স্বয়ং ভগবান্' এই তুইয়ের মধ্যে কিছু প্রভেদ আছে। স্বরূপ দর্শন করিলেই স্বয়ং ভগবান্কে পাওয়া যায়। ব্রক্ষ যাঁহার অন্ধকান্তি, প্রমাত্মা যাহার অংশবিভব, তিনি ষড়ৈশ্বর্যো পূর্ণ ভগবান্—আর শ্রীগোরান্ধ মহাপ্রভূ

শীর্গোরাক্স মহাপ্রভুকে বাঁহারা ভগবান্ বলিলেন, তাঁহারা ভগবান্কে কোথায় কি ভাবে দেখিলেন—আজ জগৎ যদি তাহা চিন্তা করিতে পারিত, তাহা হইলে এই মুহুর্টেই জগতের যুদ্ধ-কোলাহল, জীবন-সংগ্রামের ভীষণ ও তাঁত্র প্রতিযোগিতা থামিয়া যাইত। আমরা দেখিতাম, ভগবান্ আমাদের দুয়ারে ভিথারী-বেশে দাঁড়াইয়া রহিয়াছেন, অশুসিক্তনেত্রে পথে পথে কাঁদিয়া বেড়াইতেছেন। তাঁহার এই ভাব প্রত্যক্ষ করিলে আর কি কেহ শক্তি লইয়া ঘরে বিসিয়া স্বার্থসাধন করিতে পারিত ? শক্তির কি অপব্যবহার হইত ? তাহা হইলে বলবানের বল দুর্বলকে সবলতায় উন্নীত করিবার জন্মই নিযুক্ত হইত—জ্ঞানী অজ্ঞানের কুটিরে কুটিরে ঘুরিয়া ডাকিয়া বলিতেন, "তুমি আমার সেবা গ্রহণ কর, নতুবা আমার জীবন বিফল হইয়া যাইতেছে;" ধনী ধন লইয়া দরিদ্রের দুয়ারে দুয়ারে ঘুরিয়া "সেবা লও" বলিয়া অন্মরোধ করিত। মানবের হুদারে অন্ধকার দুরীভূত হইলে মানব স্বয়ং ভগবান্কে ভিথারীর বেশে দেখিতে পায়।

ভিথারী-ভাবের মধ্য দিয়া শ্রীরন্দাবন-লীলার তাৎপথ্য হৃদয়ত্বম করিতে হইবে, ইহা আমরা জানিতাম না। শ্রীগৌরাত্ব মহাপ্রভূকে দেখিয়া



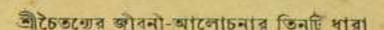
#### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

এই রহস্ত আমরা উপলব্ধি করিলাম। কেবল যে ভগবান্ ভিথারী ভাষা নহে, যাঁহাগ ভগবানের স্বগণ—তাঁহারা সকলেই ভিথারী। আবার তাঁহাদের শিক্ষাও এক আশ্চর্যা ব্যাপার, বামনদেবের ভিক্ষার মত—ভিক্ষা দিতে কেহ অগ্রসর হইলে নিজেকেই ভিক্ষা দিয়া ফেলেন; রন্দাবনে ঠিক তাহাই হইয়াছিল—অজগোপীগণের নিকট তিনি ঝণী হইয়াছিলেন। গোপিকাগণ দৃশ্যতঃ অনেক হইলেও তাঁহারা শ্রীরাধিকার গণ। শ্রীমতী রাধিকার নিকট ভগবান্ ঝণী হইয়াছিলেন, সেই ঝণ পরিশোধের জন্মই তাঁহার শ্রীগোরাপ্রক্রপে আবির্ভাব, ইহা গোড়ায় বৈষ্ণব আচার্য্যগণের অভিমত।

ভক্তগণ প্রীচেতগুদেবকে ঐতিহাসিক ব্যক্তিরূপে দেখেন না, তাঁহাকে স্বয়ং ভগবান্ রূপে পূজা করেন। তাঁহাদের ভাব-আস্বাদনের প্রণালীর সহিত বক্ষামাণ প্রস্থের আলোচনা-প্রণালীর গুরুতর প্রভেদ আছে বলিয়া তাঁহাদের মূল বক্তবাের সারাংশ আমার গুরুত্বানীয় মরমা পণ্ডিত কুলদাপ্রসাদের ভাষায় এখানে উদ্ধৃত করিলাম। ভক্তগণের লীলা-আস্বাদনের রীতি তাঁহাদের সাধনার অনুকূল, আর আমি যে রীতিতে প্রীচৈতগুচরিতের আকর-গ্রন্থগুলি বিশ্লেষণ করিব, তাহাতে হয়ত ঐতিহাসিক সভার সন্ধান পাওয়া যাইবে, কিন্তু তাহাতে কোন পারমাথিক উপকার হইবে না।

## নব্যবঙ্গে প্রীচৈতত্ত-কথা

ভনবিংশ শতাকার প্রথম দিকে যাহার। ইংরাজি শিথিয়াছিলেন, তাহাদের মধ্যে অনেকেই শ্রীচৈতত্তের প্রবর্তিত ধর্মের প্রতি অন্ধারিত ছিলেন না। রাজা রামমোহন রায়ের মাতা বৈশ্ববধর্মের প্রতি অন্ধরকা থাকিলেও, রাজা প্রচলিত বৈশ্ববধর্মকে প্রতির চোথে দেখেন নাই। কতকগুলি খুফান মিশনারীও প্রচার করিতেন যে বৈশ্ববধর্ম জুনীতির প্রশ্রেষ্ম দেয়। জনপ্রিয় পাঁচালি-গায়ক দাশর্মি রায় তথাক্থিত বৈশ্ববদের উপর যথেষ্ট বিজ্ঞপ্রাণ বর্ষণ করিয়াছিলেন।



কিন্তু উনবিংশ শতাকীর মধ্যভাগ হইতে আবার হাওয়া ফিরিল। রাজা রামনোহন প্রচলিত বৈক্ষবধর্মের প্রতি পক্ষপাতী না হইলেও তাঁহার প্রবৃত্তিত ধর্ম-সম্প্রদায়ে প্রীচৈতত্যের প্রভাব পড়িতে দেরী হয় নাই। অহৈতপ্রভুর বংশধর বিজয়ক্তক গোস্বামী মহাশয়ের পরামর্শ-অনুসারে রক্ষানন্দ কেশবচন্দ্র রাক্ষাভজন-প্রণালীর মধ্যে খোলকরতালের আমদানী করিলেন। ত্রক্ষানন্দ তাঁহার বক্তৃতাসমূহে ঘীশুও বুদ্ধের সঙ্গে প্রীচৈতত্যের নাম উল্লেখ করিতে লাগিলেন। এ দিকে পরমহংসদেবের ভক্তিবাদ-প্রচারের ফলেও প্রীচৈতত্যের প্রতি ইংরাজিশিক্ষত ব্যক্তিদের প্রকাভক্তি জন্মিল। তৎপরে মহাত্মা শিশিরকুমার ঘোষ ও মহাত্মা কেদারনাথ দত্ত ভক্তিবিনোদ ঠাকুর এই শ্রেণীর ব্যক্তিদের মধ্যে প্রবল অনুরাগের সহিত প্রচারকার্য্য চালাইলেন। ফলে প্রীচৈত্যদেব শুধু বৈক্ষবের আখড়া ও গোস্বামীদের মন্দিরেই নিবন্ধ রহিলেন না, তিনি কলিকাতার নব্যশিক্ষিত দলেও পৃঞ্জিত হইতে লাগিলেন।

চেন্টারটন্-কথিত দিতীয় ধারা অবলম্বন করিয়া ব্রিটেশযুগে শ্রীচৈতন্তের বহুসংথাক জ্ঞাবনা রচিত হইল। এই সমস্ত প্রন্থের মধ্যে মহাত্মা শিশিরকুমার ঘোষের "অমিয় নিমাই-চরিত" ও "Lord Gauranga" শীর্ষম্বানীয়। ব্রহ্মানন্দ কেশবচন্দ্রের সহকর্মী গৌরগোবিন্দ উপাধ্যায় মহাশয় "শ্রীকৃষ্ণচৈতত্য এবং তাঁহার স্বভাবনিষ্ঠ যোগ" নামক গ্রন্থ লিথিয়া শ্রীচৈতন্তের প্রতি শিক্ষিত সমাজ্লের দৃষ্টি আকর্ষণ করেন। ৺চিরঞ্জীব শর্মা, ৺ব্রজনাথ বিভারত্ব, ৺রাম্যাদব বাগ্চি, ৺গিরিশচন্দ্র ঘোষ, ৺শ্রামলাল গোস্বামা, শ্রীযুক্ত অচ্যুত্চরণ তত্ত্বনিধি, শ্রীযুক্ত রিদকমোহন বিভাত্ব্যণ, শ্রীযুক্ত হরিদাস গোস্বামা, শ্রীযুক্ত প্রকৃরকুমার সরকার, শ্রীযুক্ত নিশিকান্ত সাত্যাল প্রভৃতি বহু লেথক এই প্রণালীতে শ্রীচৈতন্তের লীলা আস্বাদন করিয়া নিজেরা ধত্য ইয়াছেন এবং বঙ্গবাসীকে ভক্তিরসে আগ্রুত করিয়াছেন। 'চ' পরিশিক্টে প্রদন্ত বৈক্ষব সাময়িক পত্রগুলিতেও শ্রীচৈতন্ত্য-সম্বন্ধে যে সব আলোচনা হইয়াছে, সেগুলিও ঐ দ্বিতীয় ধারা অবলম্বনে।

# GENTRAL LIBRARY

#### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

প্রাক্-ব্রিটিশ যুগে কোন কোন অসহিষ্ণু শাক্ত-লেখক ও ব্রিটিশযুগে কোন কোন ইংরাজি-শিক্ষিত সন্দেহবাদী শ্রীচৈতত্যের বিরুদ্ধে
ত্রইচারি কথা লিখিয়াছেন। কিন্তু তাঁহাদের রচনার মধ্যে যুক্তি
ও প্রমাণ অপেকা উন্না প্রকাশ পাইয়াছে বেশী। শ্রীচৈতত্যের
বিরুদ্ধবাদীরা কোন দিনই এমন প্রবল হইতে পারেন নাই যে তাঁহারা
শ্রীচৈতত্য-সাহিত্যের একটি স্বতন্ত্র ধারা ক্ষতি করিবেন। স্তত্তরাং
শ্রীচৈতত্যের শত্রুপক্ষের লেখাকে একটি স্বতন্ত্র ধারা বলিয়া নির্দ্দেশ
করিলাম না।

## শ্রীচৈতত্য-সন্ধরে আধুনিক গবেষকগণের বিচার-প্রণালী

কলিকাতার শিক্ষিতসমাজে শ্রীচৈতত্তের প্রতিষ্ঠার পর তাঁহার জীবনী লইয়া সমালোচনাত্মক বিচার আরক্ষ হইল। কলিকাতা বিশ্ববিভালয়, বঙ্গায় সাহিত্য-পরিষদ্ ও ঢাকা বিশ্ববিভালয়—এই তিনটি প্রতিষ্ঠানকে কেন্দ্র করিয়া এই বিচার আরক্ষ হইয়াছে। এইরূপ বিচারের প্রথম



#### শ্রীচৈতত্তের জীবনী-আলোচনার তিনটি ধারা

পথপ্রদর্শক রায় বাহাত্র ডক্টর দীনেশচন্দ্র সেন। ইঁহার রচিত গ্রন্থাদির ভ্রম-প্রমাদ এইন অনেক গবেষকেই দেখাইতেছেন, কিন্তু যে-কোন ক্ষেত্রে অগ্রনীর ভূল-ভ্রান্তি হইবেই। সেই সব ভূল-ভ্রান্তি সংশোধন করিয়া লওয়া কঠিন নহে। কিন্তু অগ্রনীরা বিচারের যে ধারাটি দেখাইয়া যায়েন, ও তাহার অনুবর্ত্তন করিয়া যখন অনেকে সত্য আবিকার করিতে সমর্থ হয়েন, তখন অগ্রনীদের প্রতি শ্রন্ধান্তি না হইলে ঘোরতর কুতল্পতা হয়।

ভক্তর সেন লিখিয়াছেন—"তাঁহার (প্রীচৈতক্তের) জীবনে যে সমস্ত অলোকিক ঘটনা আন্তোলিত হইয়াছে, তন্মধ্যে তাঁহার নয়নাশ্রুর ছায় কোনটিই অলোকিক নহে। যে প্রেমে তাঁহার শরীর কদম্বকোরকের ছায় কন্টকিত হইয়াছে ও অর্দ্ধনিমীলিত চক্ষ্ঃপুট হইতে অজ্ঞ প্রশ্রুণিক হইয়াছে, সেই প্রেমের ছায় তাঁহার জীবনে কিছুই অপূর্বর কি মনোহর হয় নাই।" এই উক্তি হইতে বুঝা যায় যে ম্যাপু আর্নজ ও রেনান্কর্ভক অবলম্বিত নীতির অনুসরণ করিয়া ডক্তর সেনও থানিক দূর পর্যান্ত মধ্যযুগের শ্রীচৈতক্তের সহিত যাইয়া "walked no more with him."

ভক্তর সেনের পদাভিষিক্ত রায় বাহাছর শ্রীযুক্ত থগেক্রনাথ মিত্র
মহাশয় মধায়ুগের ভাবধারায় অবগাহন করিয়াছেন। তাঁহার সাধনার
য়ারা তিনি মধায়ুগ ও আধুনিক য়ুগের মধ্যে মানসিক সেতু নির্মাণ
করিয়াছেন। সেই জন্ম এক দিকে তিনি শ্রীচৈতন্তের পাণ্ডিত্যের প্রতি
কটাক্ষকারী গবেষককে মধায়ুগের বৈষ্ণব সাহিত্যের উক্তি-য়ারা খণ্ডন
করিয়াছেন, ' আবার অন্ম দিকে নিজের বিচারবুদ্ধির মাপকাঠি দিয়া
য়াধুনিক প্রণালীতে শ্রীচৈতন্তের মানসিক ক্রমবিকাশের ধারা নির্গয়
করিয়াছেন। তিনি ১৩৪১ সালের "উদয়ন" পত্রিকায় একটি প্রবদ্ধে
প্রমাণ করিতে চেন্টা করিয়াছেন যে রায় রামানন্দের নিকট হইতেই
শ্রীচৈতন্ত রাধাভাবের আস্বাদন পাইয়াছিলেন।

<sup>&</sup>gt; "বঙ্গভাষা ও সাহিত্য," পঞ্ম সংস্করণ, পু" ২০০-০৬

২ ভারতবর্গ, কার্তিক, ১০৪২—"জীতৈতক্ষের বিভাশিকা" নামক প্রবন্ধ।

ঢাকা বিশ্ববিভালয়ের অধ্যাপক ডক্টর স্থশীলকুমার দে মহাশয়ও স্বাধীনভাবে আলোচনা করিয়া "পভাবলী"র ভূমিকায় লিথিয়াছেন—

"It is, however, possible that the influence of Ramananda operated in the way in which Radha came to occupy a prominent place in: the thoughts and sentiments of Caitanya."

পূর্বোক্ত ছই অধ্যাপকের ভায় ইনিও ঐতিভত্তের জীবনীসমূহে লিখিত প্রত্যেকটি কথায় আহা স্থাপন করিতে পারেন নাই। তিনি এক স্থলে লিখিয়াছেন—

"Vrndavana Dasa retaliates by making Caitanya denounce Prakasananda in unmeasured language and afflict the uncompromising Vedantist scholar with leprosy and damnation."

ভক্তর কালিদাস নাগ বৈঞ্চব সাহিত্য লইয়া গবেষণা না করিলেও চেফ্টারটন্-কথিত প্রথম ধারার অনুসরণ করিয়া লিখিয়াছেন—

"It has been demonstrated that Chaitanya-worship as a cult developed much later. His spiritual comrades like Nityananda and Advaita as well as his learned colleagues like Rupa, Sanatana and Jiva Goswami loved Chaitanya with all their soul and adored him. But in their voluminous writings they never identify Chaitanya with Krishna."

ভক্তর নাগ যদি সনাতন গোস্বামীর "বৃহদ্বাগবতামৃতের" মন্সলাচরণের প্রথম ও তৃতীয় শ্লোক, শ্রীরূপ গোস্বামীর তিনটি শ্রীচৈতকাইটক, "ভক্তিরসামৃতসিদ্ধু"র দিতীয় শ্লোক ( যাহার তৃতীয় ও চতুর্থ পদে আছে—

#### তত্ত হয়েঃ পদকমলং বন্দে চৈতত্তদেবস্থা। )

এবং শ্রীক্ষীব গোস্বামীর "ক্রমসন্দর্ভ" নামক ভাগবতের টাকার প্রারম্ভ

a "India and the World," December, 1934, p. 370.

<sup>5</sup> Sonder druck Aus Festschrift Fur M. Winternitz zum Siebjzigsten Geburtstage-G "Pre-Caitanya Vaisnavism in Bengal."



#### শ্রীচৈতত্তের জাবনা-আলোচনার তিনটি ধারা

(যাহাতে ঐতিচত্তক 'সসম্প্রদায়সহস্রাধিদৈবতং" বলা হইয়াছে) দেখিতেন তাহা হইলে এরূপ উক্তি করিতেন না।

ডক্টর সেন, রায় বাহাত্র মিত্র, ডক্টর দে-প্রমুখ গবেষকগণের ঐতিহাসিক আলোচনার ফলে অনেক সত্য আবিষ্কৃত হইয়াছে। এটিচতগ্র-সম্বন্ধে বিচারাত্মক গবেষণায় যে ইঁহারা পথপ্রদর্শক তাহা অস্বীকার করিবার উপায় নাই। তবে ইঁহারা আধুনিক যুগের লোকের মনোরুত্তি লইয়া মধাযুগের ঘটনা বুঝিতে চাহিয়াছেন, ইহাই ইহাদের আলোচনার প্রধান ক্রটী। মধ্যযুগের কোন ঘটনা বুঝিতে হইলে আমাদিগকে মধ্যযুগের ভাবধারায় অবগাহন করিতে হইবে। সে যুগের লোকের বিশাস, অবিখাস, আলোচনা-প্রণালী এ যুগের মাপকাঠি দিয়া বিচার করিলে সত্যের একদেশ মাত্র দর্শন করা হইবে। ভগবান্ স্বয়ং সশরীরে অবতার্ণ হইয়াছিলেন, এ কথা এ যুগের লোকের পক্ষে বিশ্বাস করা পুবই কঠিন; কিন্তু মধ্যযুগের লোকে ইহা সহজেই মানিয়া লইতেন। মধ্যযুগে যে যুক্তিবিচারের প্রয়োগ ছিল না তাহা নহে, তবে সে যুক্তিবিচারের ধারা আমাদের ধারা হইতে পৃথক ছিল। সনাতন গোস্বামী ভূসেন শাহের মন্ত্রী ছিলেন। "ভক্তিরত্নাকরের" মতে তিনি স্থায়শাল্রে পারদর্শিতা লাভ করিয়াছিলেন। কিন্তু ভগবান্ কাহাকে বলে তাহা তিনি বৃহস্তাগবতামৃতের শেষ গ্রোকের টাকায় বলিয়াছেন-

> আয়তিং নিয়তিং চৈব ভূতানামাগতিং গতিং বেক্তি বিভামবিভাঞ্চ স বাচ্যো ভগবানিতি॥

## তুলনামূলক ঐতিহাসিক প্রণালী

এ যুগের গবেষকগণ শ্রীচৈতত্তের জাবনে অলোকিক ঘটনা একেবারেই স্বীকার করিতে চাহেন না। কিন্তু আমাদের এই দেশে এখনও ত এমন লোক বিরল নহেন, যিনি সামাত্ত ছই-চার পয়সায় অলোকিক ঘটনা দেখাইয়া থাকেন। আমাদের সমকানীন এবং বোধ হয় খুব বেশী উচ্চন্তবের সাধক নহেন এমন সব লোক যদি বিভৃতি প্রকাশ করিতে

পারেন, তবে প্রয়োজন-অনুসারে বা অজ্ঞাতসারে ঐটেডগ্রের পক্ষে কোন সময়ে অলৌকিকতা দেখান যে একেবারে অসম্বত তাহা মনে হয় না।

প্রীচৈতন্তের পক্ষে অলৌকিকতা-প্রকাশ করা অসম্ভব না হইতে পারে, কিন্তু তাই বলিয়া যে সকল অলৌকিকতা তাঁহাতে আরোপিত হইয়াছে, তাহার সবই যে ঐতিহাসিক সত্য তাহাও নহে। 'ঐতিহাসিক সত্য' বাকাটি প্রয়োগ করিবার একটি কারণ আছে। পূর্বেই বলিয়াছি যে প্রীচৈতত্যকে ভগবান্ বলিয়া ভক্তগণ মানিয়া লইয়াছেন, স্ভরাং ভক্তমণয়ে তাঁহার যে লীলা ক্ষুরিত হইয়াছে তাহাই সত্য। এইরূপ সত্যকে আমরা পারমার্থিক সত্য বলিব — ঐতিহাসিক সত্য বলিব না। বৈষ্ণবেরা ভগবানের লীলাকে নিত্য ও প্রকট—এই চুই ভাগে বিভক্ত করিয়াছেন। ঐতিহাসিকের অধিকার কেবল প্রকট্ লীলার ঘটনাবিচারে—নিত্যলালা তাঁহার jurisdictionএর বাহিরে। আমাদের প্রদন্ত সংজ্ঞায় পারমার্থিক সত্য নিত্যলীলার অন্ত ভক্ত বলা যাইতে পারে। কিন্তু প্রকট লীলায় ক্যি ঘটিয়াছিল, ক্যুক্তে বলা যাইতে পারে। কিন্তু প্রকট লীলায় ক্যি ঘটিয়াছিল, ক্যুক্তে প্রলাশীতে করিয়া সত্যনির্দ্ধারণ করিতে পারি।

এইরূপভাবে সত্য-নির্দ্ধারণের চেফ্টাকে চেফ্টারটন্-লিখিত তৃতীয় প্রণালী বলা যাইতে পারে। এই প্রণালীর বিচারে লেখক নিজের ব্যক্তিগত বিশ্বাস-অবিশ্বাসের ঘারা পরিচালিত হইবেন না, কেবল মাত্র ঘটনার প্রত্যক্ষদর্শীর বা তাহার অভাবে প্রত্যক্ষদশার নিকটে প্রত বর্ণনার উপর নির্ভর করিবেন। প্রত্যক্ষদর্শীর দর্শন ঠিক ঠিক হইয়াছিল কি না তাহার বিচার করিবের প্রয়োজন নাই। এই শ্রেণীর লেখক ইহা বিচার করিবেন যে প্রীচৈতভাকে তাহার সমসাময়িক বাক্তিরা, বিশেষতঃ তাহার অনুগত লোকেরা, কি ভাবে দেখিয়াছিলেন। কোন্ ঘটনা সত্য, কোন্ বর্ণনা অতিরঞ্জিত, কোন্ ঘটনা একেবারেই ঘটে নাই—তাহার বিচার হইবে তুলনামূলক আলোচনা-পদ্ধতিতে। প্রাক্-ব্রিটিশযুগের লেখকদের পরস্পরের উক্তির মধ্যে সর্ববদা মিল নাই। প্রীচৈতভারে জীবনের প্রত্যেকটি ঘটনা



#### শ্রীচৈতত্তের জীবনী-আলোচনার তিনটি ধারা

লইয়া বিচার করিবার সময় দেখিতে হইবে যে ঐ ঘটনা-সম্বন্ধে কোন্
লেখক কি বলিয়াছেন—তাঁহাদের উক্তির মধ্যে অসামঞ্জ থাকিলে কাহার
কথা অধিক বিখাসযোগ্য তাহা নির্ণয় করিতে হইবে এবং দেখাইতে
হইবে কি কারণে পরবর্তা লেথকেরা সত্যকে বিকৃত করিয়াছেন।
এইরূপ তুলনামূলক বিচারপ্রণালীতে ঐতিহাসিক জ্ঞান, সমাজবিজ্ঞানের
ধারা-সম্বন্ধে অভিজ্ঞতা ও মধ্যযুগের মনোরতি-বিষয়ে স্থাপট ধারণা
থাকা প্রয়োজন। এই পদ্ধতিতে শ্রীচৈতত্যের জীবনী এ পর্যন্ত আলোচিত
হয় নাই।

এই পদ্ধতির সহিত প্রাক্-ব্রিটিশযুগের ও ব্রিটিশযুগের ভক্তগণের আলোচনা-প্রণালীর পার্থক্য স্থাপ্টে। এই সব লেখক প্রধানতঃ ভক্ত, তাঁহাদের উদ্দেশ্য লীলামাধুর্য্য-আস্বাদন। তাঁহাদের আস্বাদনে নিতালীলা ও প্রকটলীলা এবং ঐতিহাসিক ও পারমার্থিক সত্য নির্বিচারে একসঙ্গে সমান স্থান পাইয়াছে। প্রাচীন লেখকগণের মধ্যে কোন বিষয়ে বর্ণনার পার্থকা থাকিলে আধুনিক ভক্তগণ সবকয়টি বিবরণই সত্য বলিয়া মানিয়ালয়েন এবং বলেন যে প্রভুর অনন্তলীলা—স্থতরাং সবই সত্য হওয়ায় বাধানাই। প্রীক্তাব পোস্থামী শ্রীকৃষ্ণলীলার বিচার করিতে বসিয়া যখন শ্রীকৃষ্ণের জাবন-সম্বন্ধে একটি ঘটনার বিভিন্ন বিবরণ বিভিন্ন পুরাণে পাইয়াছেন, তথন তাহার সমাধান করিয়াছেন কল্প- বা ময়ন্তর-ভেদ স্বাকার করিয়া; অর্থাৎ এক কল্পে বা ময়ন্তরে এক বিবরণ সত্য, অন্ত কল্পে বা ময়ন্তরে অন্ত বিবরণ সত্য, আন্ত কল্পে বা ময়ন্তরে অন্ত বিবরণ সত্য। শ্রীকৈতন্ত-সম্বন্ধেও ভক্তদের ধারণা অনেকটা সেইরূপ, যদিও তিনি ১৪৮৬ গুট্টান্দে অর্থাৎ ৪৫২ বংসর পুর্বের জন্মিয়াছিলেন। ছইটি দৃন্টান্ত দিয়া বিষয়টি পরিকার করিয়া বলিবার বেন্টা করা য়াউক।

ধরুন, ঐতিততা সন্নাস গ্রহণ করিয়া শান্তিপুর হইতে নীলাচল যাইতেছেন, তাঁহার সঙ্গে কে কে গিয়াছিলেন ? মুরারি গুপু বলেন, আগে আগে নিত্যানন্দ, এবং ঐতিচততার সঙ্গে মুকুন্দ, ও গদাধরাদি ছিজসভ্জন। প কবিকর্ণপুর "ঐতিততাচন্দ্রোদয়" নাটকে বলেন,

১ সুবারি ভণ্ডের কড়চা, ভালা১

নিত্যানন্দ, জগদানন্দ, দামোদর ও মুকুন্দ সঙ্গে গোলেন। এই বিবরণে গদাধরের নাম পাওয়া গোল না। এ কবিই "জীতৈতভাচরিতামত" মহাকাব্যে বলেন, নিত্যানন্দ, গদাধর, মুকুন্দ প্রভৃতি সঙ্গে গোলেন। বই বিবরণের সহিত মুরারির বর্ণনার মিল আছে, কিন্তু নাটকের বর্ণনার সহিত অসামঞ্জন্ত রহিয়াছে। বুন্দাবনদাস বলেন—

নিত্যানন্দ, গদাধর, মুকুন্দ, গোবিন্দ। সংহতি জগদানন্দ আর ব্রহ্মানন্দ॥ °

কুফদাস কবিরাজ বলেন—

নিত্যানন্দ গোসাঞি, পণ্ডিত জগদানন্দ। দামোদর পণ্ডিত আর দত্ত মুকুন্দ॥ এই চারি জনে আচার্য্য দিল প্রভুসনে। "

ক্রম্বদাস কবিরাজ কবিকর্ণপুরের নাটককে মানিয়া লইয়া ঐতিচতত্তের সঙ্গী চার জন বলিতেছেন। বৃন্দাবনদাস ছয় জনের নাম করিয়াছেন। বিভিন্ন জীবনী-লেখকের বিবরণ হইতে আমরা পাইতেছি যে নিত্যানন্দ, মুকুন্দ, গদাধর, জগদানন্দ, দামোদর, গোবিন্দ, ব্রহ্মানন্দ – এই সাত জন ঐতিচতত্তের সঙ্গে নীলাচলে গিয়াছিলেন। ভক্তেরা সকলের কথা মানিয়া লইয়া বলিবেন সাত জনই ঐতিচতত্তের সঙ্গে ছিলেন। কিন্তু কবিকর্ণপুর ঐতিচতত্তিচন্দোদয় নাটকে ও ক্রম্বদাস কবিরাজ চরিতায়তে স্পর্যতঃ বলিতেছেন চার জন সজা হইয়াছিলেন। শান্তিপুর হইতে যাত্রা করার পরে পথের মধ্যে যে আর কেহ সঙ্গী হইয়াছিলেন, তাহা কবিরাজ গোস্বামী স্বীকার করেন না; কেন-না তিনি নীলাচলে মাত্র চার জনেরই উপস্থিতি বর্ণনা করিয়াছেন। উক্ত লেখকগণের মধ্যে মুরারি ঐতিচতত্তকে শান্তিপুর

- ১ জীতৈভভাচস্ৰোদৰ নাটক, ১০১৪
- ২ জীতৈতভাৱিতামূত মহাকাব্য, ১১।৭৬
- ০ শীচৈতস্বভাগৰত, ৩৷২
- ৪ ঐতিতভাচরিতামৃত, ২০০২-৬
- € औ, शापा**०**२

## শ্রীচৈতত্ত্বের জীবনী-আলোচনার তিনটি ধারা

হইতে নীলাচলে যাইতে স্বয়ং দেখিয়াছেন। স্ত্রাং তাঁহার কথাই অধিক বিশাস্ত। কিন্তু এ ক্ষেত্রে তিনি "গদাধরাদি" বলিয়াছেন বলিয়া মুকুন্দ, নিত্যানন্দ ও গদাধর বাতাঁত আর কে কে সঙ্গে ছিলেন তাহা জানিবার উপায় নাই। উক্ত ঘটনা ঘটিবার সময় কবিকর্ণপূর জন্মগ্রহণ করেন নাই। কৃষণাস কবিরাজ রঘুনাথদাস ও প্রীরূপের মুখে শুনিয়া ও সম্ভবতঃ স্বরূপদামাদরের কড়চা দেখিয়া চরিতামৃত লিখিয়াছেন। কিন্তু ঐ তিন জনের এক জনও প্রীচৈতত্যের নীলাচল-গমনের সময়ে উপস্থিত ছিলেন না। বুন্দাবনদাস নিত্যানন্দ প্রভুর মুখে শুনিয়া অনেক ঘটনা বর্ণনা করিয়াছেন। স্থতরাং এ সম্বন্ধে বুন্দাবনদাসের উক্তি মুরারির পরই সর্ব্বাপেক্ষা প্রামাণ্য মনে করিতে হইবে। তাহা হইলে দামোদরের সন্ধা হইবার দাবী টে কৈ না। '

কি প্রকার অলোকিক ঘটনার বর্ণনা অবিশ্বাস্থ

ভক্তদের লালাস্বাদনের সহিত আমার অবলম্বিত প্রণালীর পার্থক্য-সম্বন্ধে আর একটি দৃষ্টান্ত দেওয়া যাউক। মুরারি গুপ্ত লিখিতেছেন যে একদিন শ্রীচৈতন্য তাঁহার দেবগৃহে উপস্থিত হইয়া

> জাপুভাাং ভূমিমালম্ব্য কর্যুগোন স এজন্। বর্ত্ত্বাম্মনেত্রেণ জ্বারেণামুনাদয়ন্। দধার দশনাত্রেণ গৈতলং জলপাত্রকম্॥ \*

ইহাই ঐতিভত্তের বরাহভাবের আবেশ। রন্দাবনদাস এই ঘটনার বর্ণনায় লিথিতেছেন—

> বিফ্গৃহে প্রবিষ্ট হইয়া বিশ্বন্তর। সম্মুখে দেখিলা জলভাজন স্থন্দর॥ বরাহ আকার প্রভু হইলা সেইক্ষণে। স্বামুভাবে গাড়ু প্রভু তুলিলা দশনে॥

১ প্ৰীচৈডভাৱাগৰত, ৩০০

२ मुवादि श्रस्तव कड़ता, शरावर-३०

315

#### শ্রীচৈতন্মচরিতের উপাদান

গর্জে যজ্ঞ বরাহ প্রকাশে কুর চারি। প্রভূবলে "মোর স্তুতি বোলহ মুরারি॥" ১

মুরারি নিজের গ্রন্থে প্রীচৈতন্মের চারখানি ক্র-প্রকাশের কথা লেখেন নাই। ভক্তেরা বলিবেন, ইচ্ছা করিয়াই লেখেন নাই। মুরারি গুপ্ত যদি নিজে বিশ্বস্তরের চারখানি ক্রুর দেখিয়াও নিজের গ্রন্থে না লিখিয়া ধাকেন, তাহা হইলে তিনি যে মুথে এই কথা কাহারও নিকট প্রকাশ করিয়াছিলেন তাহাও সম্ভব নহে। আর ঐ ঘটনা মুরারির দেবগৃহে ঘটিয়াছিল বলিয়া উহার অন্ত এমন কোন সাক্ষী ছিল না, যাহার মুখে শুনিয়া বুন্দাবনদাস উহার বর্ণনা লিখিতে পারেন।

এইরূপ তুলনামূলক ঐতিহাসিক প্রণালী ধরিয়া ঐতিচততার জীবনী আলোচনা করিতে হইলে যেরূপ শান্তজ্ঞান এবং মনোবিজ্ঞানের ও সমাজ-বিজ্ঞানের সহিত ঘনিষ্ঠ পরিচয় থাকা প্রয়োজন, আমার তাহা নাই। আর বিজ্ঞান-সত্মত ইতিহাস লিখিতে হইলে লেখকের বাক্তিগত সংকার ও আবেইনীর প্রভাব হইতে যেরূপ মুক্ত হওয়া প্রয়োজন, সেরূপ নৈর্ব্যক্তিক ভারও আমি সর্বত্র অনুসরণ করিতে পারি নাই। স্থতরাং আমি এরূপ প্রণালীতে যদি বিচারে অগ্রসর হই, তাহা হইলে আমার ভুলভ্রান্তি অবশ্রস্থাবা। ইহা জানিয়াও এ পথে অগ্রসর হইতে চাই, কেন-না ঐতিচততাদেবের জীবনীর এরূপ আলোচনা এ পর্যান্ত কেহই করেন নাই। ঐতিচততাদেবে আমার উপাত্যদেবতা বলিয়া তাহার কথা আলোচনা করিতে আমার ভাল লাগে। চেকটারটনের ভাষাতেই বলি—

"Nobody knows better than I do know that it is a road upon which angels might fear to tread; but though I am certain of failure, I am not altogether overcome by fear, for he suffered fools gladly."

G. K. Chestertonএর 'he' হইতেছেন St. Francis of Assisi, আর আমার শ্রীকৃষ্ণটৈতভামহাপ্রভূ।



# দ্বিতীয় অধ্যায়

## শ্রীচৈতন্যের জীবনের প্রধান প্রধান ঘটনার কাল-নির্ণয়

শ্রীতৈতত্তার জীবনচরিতের আকর-গ্রন্থগুলির মধ্যে প্রত্যেকখানির ঐতিহাসিক প্রামাণিকতা-বিচারের পূর্বের, প্রভুর জীবনের প্রধান প্রধান ঘটনার কাল-নিরূপণ করিতে পারিলে পরবর্তী আলোচনার স্থবিধা হইবে। ঠাহার জাবনী লইয়া চার শত বৎসর কাল আলোচনা চলিতেছে। কিন্তু আকর-গ্রন্থগুলির তুলনামূলক বিচার এ পর্য্যস্ত হয় নাই বলিয়া, খ্রীতৈতন্য কত দিন জীবিত ছিলেন, কত দিন গমনাগমনে অতিবাহিত করিয়াছিলেন, কত দিন পুরীতে ছিলেন প্রভৃতি অত্যন্ত প্রয়োজনীয় বিষয়েও আমাদের জ্ঞান অসম্পূর্ণ রহিয়াছে। আমার পূর্বববর্তী লেখকগণ এই সব বিষয়ে কুফাদাস কবিরাজের মতই নির্বিচারে মানিয়া লইয়াছেন। কিন্তু কুফাদাস ক্বিরাজের শ্রীচৈতন্যচরিতামৃত রচনার বহুপূর্বের লিখিত ক্বিকর্ণপূরের শ্রীচৈতন্যচরিতামত মহাকাব্যে অন্য প্রকার কাল-নির্দ্দেশ আছে। এরূপ ক্ষেত্রে এই দুই জন চরিতকারের উক্তির মধ্যে কোনরূপ সামঞ্জশু-বিধান করা সম্ভব কি না দেখা যাউক। যেখানে সামগ্রুত করা সম্ভব নহে, সেখানে মুরারি গুপু, বাস্থ্ ঘোষ, বৃন্দাবনদাস প্রভৃতি লেখকদের বণনার সাহায্যে ও জ্যোতিষিক (astronomical) গণনার দারা সত্য-নির্ণয়ের ८६को कदिव।

## জীতৈতভোৱ জন্মকাল

শ্রীতৈত ১৪০৭ শকে ফান্তনী পূর্ণিমা তিথিতে জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন, এ কথা সকল চরিতকারই লিথিয়াছেন। কিন্তু তিনি গ্রহণের সময়ে কিংবা গ্রহণের পূর্বের জন্মিয়াছিলেন তাহা লইয়া মতভেদ আছে। আবার



#### শ্রীচৈ হল্যচরিতের উপাদান

১৪০৭ শকে ফাল্পনা পূর্ণিমার দিন কোন্ তারিখ, কি বার ছিল তাহা লইয়াও বিভিন্ন মত দেখা যায়। বৃন্দাবনদাসের মতে এটিচততা গ্রহণের সময় জন্মিয়াছিলেন, যথা—

> ঈশরের কর্মা বুঝিবার শক্তি কার। চন্দ্র আচ্ছাদিল রাজ্ ঈশর-ইচ্ছায়॥

হেনই সময়ে সর্ব্য জগত-জীবন। অবতার্গ হইলেন শ্রীশচীনন্দন। ১।২।২২-২৩

এই বর্ণনা দেখিয়া প্রথমে কৃষ্ণদাস কবিরাজ লিখিলেন—

ফান্তন-পূর্ণিমা সন্ধ্যায় প্রভুর জন্মোদয়। সেই কালে দৈব যোগে চন্দ্রগ্রহণ হয়॥

পরে তিনি নিজের ও রুন্দাবনদাসের ভ্রম-সংশোধন করিয়া বলিয়াছেন যে প্রথমে সন্ধ্যা-যোগে ঐতিচততার জন্ম এবং পরে গ্রহণ হয়। রুন্দাবন-দাসের মত বিশ্বনাথ চক্রবর্তী ও ভক্তিরত্নাকর-প্রণেতা নরহরি চক্রবর্তী গ্রহণ করিয়াছেন। বিশ্বনাথ চক্রবর্তী বলেন—

পূর্ণেন্দৌ রাহুণা প্রস্তে সন্ধ্যায়াং সিংহলগ্নকে।
নক্ষত্রে পূর্বকাল্পতাং রাশৌ চ পশুরাক্ষকে॥
সর্বসলক্ষণে পূর্ণে সপ্তকে বাসরে তথা।
মিশ্রপত্নীশচীগর্ভাছদিতো ভগবান্ হরিঃ॥

—রামপ্রসন্ন ঘোষ-সঙ্কলিত বংশীলীলামূতে ধৃত।

নরহরি চক্রবর্তী বলেন—

22

আজু পূর্ণিম, দাঝ সময়ে, রাহু শশী গরাসি। গৌরচন্দ্র উদয়ে তবহি, তাপতম বিনাশি॥

কিন্তু শ্রীযুক্ত যোগেশচন্দ্র রায় বিভানিধি মহাশয় জ্যোতিষিক গণনা করিয়া বলেন যে ১৪০৭ শকে ফাস্তুন মাসে "পূর্ণিমা নবদ্বীপে প্রায় ৪০ দণ্ড। শ্রীচৈতত্যের জীবনের প্রধান প্রধান ঘটনার কাল-নির্ণয়

36

দিবামান ২৯ দণ্ড। রাত্রি ৮ দণ্ডের সময় চন্দ্রগ্রহণ আরম্ভ হইয়াছিল, গ্রাস প্রায় ১১ অঙ্গুলি" (প্রবাসী, পৌষ, ১০০৬—"কবি শশান্ধ" প্রবন্ধ)। চৈত্য যদি "সাঝা সময়ে" জন্মগ্রহণ করেন তাহা হইলে সে সময় "পূর্ণেন্দুরাত্ত্রপ্র" হইতে পারে না, কেন-না রাত্রি ৮ দণ্ডের সময় গ্রহণ আরম্ভ। স্থতরাং বিশ্বনাথ ও নরহরি চক্রবর্ত্তী ভুল করিয়াছেন, প্রমাণিত হইল। বিশ্বনাথ চক্রবর্ত্তীর জ্যোতিষে জ্ঞান থাকিলে তিনি এরূপ ভুল করিতেন না; কেন-না তিনি জন্মের সময় ঠিকভাবে দিয়াছেন। যোগেশচন্দ্র রায় মহাশয়ের গণনা-অনুসারে জানা যাইতেছে যে ঐ তারিখে দিবামান ছিল ২৯ দণ্ড; আর বিশ্বনাথ চক্রবর্ত্তী বলেন—"দণ্ডাফবিংশতেঃ পঞ্চপঞ্চাশৎ পলগে ক্ষণে" অর্থাৎ ২৮ দণ্ড ৫৫ পলে ঠিক সন্ধা লাগার পূর্বের জন্ম হইয়াছিল।

শ্রীচৈতত্যের সমসাময়িক তৃই জন লেথকের বর্ণনা পড়িয়া মনে হয় গ্রহণের পূর্বের শ্রীচৈতত্য জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন। মুরারি গুপু লিখিয়াছেন—

> তক্ত জন্মসময়েংকু শশাস্কং রাহুরগ্রসদলং ত্রপথৈর । কৃষ্ণপদ্মবদনেন নিজ্জিতঃ প্রাবিশৎ স্থররিপোমুখং বিধুঃ ॥ ১।৫।২৩

কৃষ্ণ-স্বরূপ ঐতিচততার মুখ দেখিয়া লঙ্জা পাইয়া যদি চক্র রাহতে মুখ লুকান, তাহা হইলে আগে চৈততার জন্ম এবং পরে গ্রহণ হয়। বাস্তু ঘোষও সেইরূপ বলেন—

নদীয়া-আকাশে আসি উদিল গৌরাপ্দ-শশী
ভাসিল সকলে কুতৃহলে।
লাজেতে গগন-শশী মাথিল বদনে মসি
কাল পেয়ে গ্রহণের ছলে॥

—গো॰ প॰ ত॰, পৃ° ৩৬, ২য় সং।



## ত্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

20

কবিকর্ণপূর শ্রীচৈতভাচরিতায়ত মহাকাব্যে শ্রীচৈতভার জন্মরাশি, নক্ষত্র প্রভৃতি দিয়াছেন। তিনিও বলেন গ্রহণের পূর্বের শ্রীচৈতভার জন্ম—

> স্থানিধিং তৎসময়ে বিধুপ্তদ-স্ততোদ সানন্দমরুদ্ধদো ভূশম্। অলং হয়া সংপ্রতি শীতদীধিতিঃ সমুদ্ধতোহন্যোহস্তি ভূবীতি ভাবয়ন্॥

অর্থাৎ তথন রাহু এই বলিয়া চক্সকে গ্রাস করিতে লাগিল—হে নিশানাথ! তুমি আর কেন রুথা উদয় হইতেছ। ঐ দেথ অপর চক্রমা পৃথিবীতে উদিত হইয়াছেন। কবিকর্ণপূর আরও জানাইয়াছেন—

> প্রকাশমাত্রেণ স্থদক্ষিণা গ্রহা বভূবুরক্ত প্রথমং স্থতুক্ষকাঃ। বভূব রাশিঃ স তু সিংহসংজ্ঞিতো নক্ষত্রমুখ্যাপি চ পূর্ববফাল্পনী॥ ২।৪৪

মুরারি ও কবিকর্ণপূরের উপমাটি পর্যান্ত গ্রহণ করিয়া কবিরাজ গোস্বামী লিখিলেন—

সিংহরাশি সিংহলগ় উচ্চ গ্রহগণ

বড়বর্গ অফ্টবর্গ সর্বর স্থলক্ষণ ॥

অকলন্ধ গৌরচন্দ্র দিলা দরশন ।

সকলঙ্কে চন্দ্রে আর কোন্ প্রয়োজন ।

এত জানি রাহু কৈল চন্দ্রের গ্রহণ ॥ ১।১৩।৯০-৯২

কবিরাজ গোস্বামী আদিলীলায় রন্দাবনদাসের বর্ণিত ঘটনার সূত্রমাত্র করিতেছেন বলিলেও এখানে শ্রীচৈতত্যের জন্ম-সময়-বিষয়ে তিনি রন্দাবন-দাসের মত ভুল জানিয়া মুরারি, বাস্থ ঘোষ ও কবিকর্ণপুরের মত গ্রহণ করিলেন। তিনি বলিলেন যে আগে অকলঙ্ক গৌরচন্দ্র দর্শন দিলেন, পরে রাহ চন্দ্রকে গ্রাস করিল। কৃষ্ণদাস কবিরাজ গোস্থামী রাশি ও লগ্ন লিখিলেও নক্ষত্রটি লিখেন নাই। তাই তাঁহার গ্রন্থের অন্যতম শ্রীচৈতত্তের জীবনের প্রধান প্রধান ঘটনার কাল-নির্ণয় ২১
সম্পাদক শ্রীযুক্ত রাধাগোবিন্দ নাথ মহাশয়কে জ্যোতিষিক গণনা করিয়া
বাহির করিতে হইল বে ঐ সময় পূর্বকান্তনা নক্ষত্র ছিল (পরিশিন্ত,
৫১০ পৃ<sup>2</sup>)। কিন্তু কবিকর্ণপূর ঐ সংবাদ শ্রীচৈতত্তের তিরোভাবের নয়
বৎসর পরেই দিয়াছিলেন।

দেখা গেল, এীচৈতত্য ফান্তনী পূর্ণিমার দিন চন্দ্রগ্রহণের পূর্বের সন্ধ্যা-কালে জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন; কিন্তু ঐ দিন ফান্তনের কত তারিব এবং কি বার ? "নিত্যানন্দ-চরিত" নামক গ্রন্থে (২য় খণ্ড, ২১ পৃ°) ১৯এ ফায়ন শুক্রবার, শ্রামলাল গোস্বামীর "শ্রীগৌরস্থন্দর" এস্থে (১২ পু<sup>০</sup>) ২০এ ফান্তন শুক্রবার, "শ্রীচৈতগ্রসঙ্গীতায়" ২২এ ফান্তন, এবং "প্রবাদীতে" (১৩২৭, জ্যৈষ্ঠ, ১৭২ পৃ<sup>০</sup>) ২৫এ ফান্তন, ১৯৮৬ খুফাব্দের ১৯এ ফেব্রুয়ারী তারিখ দেওয়া হইয়াছে। নবদ্বীপ-নিবাসী বন্ধুবর শ্রীযুক্ত ফণিভূষণ দত্ত মহাশয় "শ্রীচৈতগুঞ্জাতক" নামক পুস্তিকায় বিশদভাবে গণনা করিয়া দেখাইয়াছেন যে ঐ দিন ১৪-৭ শক ২৩এ ফান্তুন শনিবার, জুলিয়ান্ ক্যালেণ্ডার-অনুসারে ১৪৮৬ খুফ্টাব্দের ১৮ই ফেব্রুয়ারী এবং অধুনা-প্রচলিত গ্রেগরিয়ান্ ক্যালেণ্ডার-অনুসারে ১৪৮৬ খুফ্টাব্দের ২৭এ ফেব্রুয়ারী। তাঁছার গণনায় প্রাপ্ত তারিখের সহিত বিশ্বনার্থ চক্রবর্ত্তি-উক্ত "ফায়নে মাসি সংক্রান্তে ত্রয়োবিংশতি-বাসরে" কথার মিল আছে। শ্রীযুক্ত রাধাগোবিন্দ নাথ মহাশুয়ও গণনা করিয়া ঐ তারিখ পাইয়াছেন (পরিশিষ্ট, ৫% পু)। "সীতাগুণকদম্ব" নামক পুথির ৬ পত্রাঙ্কে আছে যে শ্রীচৈতত্যের জন্ম ২৩এ ফান্তুন রাত্রি একদণ্ড গতে।

#### बोरेहजरगत कोवनकान

শ্রীচৈততা কত দিন জীবিত ছিলেন তাহা এই বার নির্ণয় করিতে চেফা করা যাউক। কবিকর্ণপূর বলেন, তিনি সাতচলিশ বংসর ধরাধানে ছিলেন, যথা—

> ইথং চরারিংশতা সপ্তভাজা শ্রীগোরাঙ্গো হায়নানাং ক্রমেণ।

Ges 3690

নানা-লালা-লাভমাসাদ্য ভূমো জ্ৰাড়ন্ ধাম সং তভোগসোঁ জগাম ॥

20185

অধাৎ উগোরাজ এইজণে সাতচলিশ বংসরে নানা লীলা-নৃত্য বিধান-পূর্বক পৃথিবীতে জ্রীড়া করিয়া অধামে গমন করিয়াছিলেন।

कुकशाम कवित्राक रत्न-

জীকৃষ্ণ চৈতন্য নবৰীপে অবতরি। অন্টচরিশ বংসর প্রকট বিহরি। চৌত্ম শত সাত শকে অন্মের প্রমাণ। চৌত্ম শত পঞালে হইল অন্তর্জান।

লোচনের "চৈতভামঞ্চল" হইতে জানা যায় যে, প্রীচৈতভা

আয়াড় মাসের তিথি সপ্তমী দিবসে। নিবেদন করে প্রভু ছাড়িয়া নিশাসে।

\*\*\*\*\*\*

তৃতীয় প্রহর বেলা রবিবার দিনে। জগন্নাথে লীন প্রাভূ হইলা আপনে॥

—শেষ খণ্ড, পু<sup>©</sup> ১১৬-:৭ I

লোচনের বর্ণনা হইতে জানা যায় না যে, ঐ দিন শুক্লা কি কুফা সপ্তমী ছিল। কিন্তু জয়ানন্দ আমাদের এই অভাব পূরণ করিয়াছেন, যথা—

> আষাঢ় সপ্তমী তিথি শুক্লা অম্বীকার করি। রথ পাঠাইহ যাব নৈকুঠপুরী ।

লোচনের মতে তৃতীয় প্রহর বেলায় তিরোধান, জয়ানন্দের মতে "কালি দশ দশু রাত্রে চলিব সর্ববি।" (উত্তর শশু, পৃ° ৫০)। শ্রীযুক্ত ফণিভূষণ দশু মহাশয় গণনা করিয়া বাহির করিয়াছেন যে ঐ দিন ১৪৫৫ শক, ৩১এ আযাঢ়, বা ১৫৩০ গুফীব্দ, ২৯এ জুন ছিল (শ্রীচৈতভজাতক, পৃ° ১৮)।

# GENTRALLIBRARY

## শ্রীচৈতভ্যের জীবনের প্রধান প্রধান ঘটনার কাল-নির্বয়

শ্রীচৈতত্তের তিরোভার ১৫০০াজাত জুলিয়ান্ ক্যালেগ্রার

১৫০০াণা৯ গ্রেগরিয়ান্ ক্যালেণ্ডার

শ্রীচৈতব্যের জন্ম ১৪৮৬।২।২৭ এেগরিয়ান্ ক্যালেণ্ডার

औरे6७एग्रत कोयन काल 8918122 मिन।

আরও সূক্ষ হিসাবে দিন গণনা করিলে—

শক ১৪৫৫।০০১ ( বৈশাখ, জৈঠি, আয়াড় ৯০ দিন ছিল ) ৩১৫ + ৯৩ = ৪৫৮

শক ১৪০৭।১১।২০ (২০এ ফাল্লন প্রাপ্ত ৩২৮ দিন হইয়াছিল) ৪৭ বৎসর ১০০ দিন (প্রিশ দিনে মাস ধরিলে, চার মাস দশ দিন)।

এইরূপ গণনার থারা পাওয়া গেল যে নীচৈতক্ত সাতচল্লিশ বংসর চার মাস দশ বা বার দিন জীবিত ছিলেন। এই সময়কে কবিকর্ণপুর ৪৭ এবং কুফ্রদাস কবিরাজ ৪৮ বংসর বলিয়াছেন।

> শ্রীটেতত্যের গয়ায় গমন, সঙ্গার্জন-প্রচার ও সন্ম্যাস-গ্রহণের কাল-নির্ণয়

কবিরাজ গোস্বামী একবার বলিয়াছেন -

(ক) চবিবশ বৎসর ছিলা গৃহত্ব আত্রামে। পঞ্চবিংশতি বর্ষে কৈলা যতি ধর্মো । ১।৭।০২

#### আবার অন্যত্র বলিয়াছেন—

(খ) শ্রীকুক্টেডেন্ড নবছাপে অবতরি।
অইচিন্নিশ বংসর প্রকট বিহরি। ১০০৭
চিকিন্শ বংসর শেষে যেই মাথ মাল।
ভার শুকু পক্ষে প্রভু করিলা সন্মাস।
সন্মাস করিয়া চকিন্শ বংসর অবস্থান।
ভাষা যেই লীলা ভার শেষ লীলা নাম। ২০০০ ২২

#### শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

₹8

আপাতদৃষ্টিতে (ক) ও (খ) চিহ্নিত উক্তি পরস্পরবিরোধী বোধ হয়; কেন-না ঐচিত্ত যদি ২৫ বংসর বয়সে যতিধর্ম অবলম্বন করিয়া থাকেন ও ২৪ বংসর সন্মাস করিয়া অবস্থান করেন তবে তাঁহার আয়ু হয় ৪৯ বংসর। কিন্তু যে হেতু কবিরাঙ্গ গোপ্ধামী নিজেই ১৪০৭ হইতে ১৪৫৫ শক তাঁহার জীবন-কাল বলিয়াছেন সেই হেতু ৪৯ বংসর হইতে পারে না। স্তরাং উক্ত হুই উক্তির সামঞ্জ্য এইরূপে করিতে হইবে যে চবিবশ বংসর প্রায় যখন শেষ হয় তখন তিনি সন্মাস গ্রহণ করিলেন—পঞ্চবিংশতি বর্ষে পা দিতে না দিতে তিনি যতি হইলেন। ঐচিত্তত্তের জীবনকাল-আলোচনায় দেখাইয়াছি যে, কৃষ্ণদাস কবিরাজ বাঙ্গালাদেশের প্রচলিত গণনা-প্রণানী ধরিয়া ৪৭ বংসর ৪ মাসকে ৪৮ বংসর বলিয়াছেন। এই প্রণালী-অনুসারে ৪৭০০০ দিন হইতেই ৪৮ আরম্ভ। এ সূত্র ধরিয়া আলোচনা করিলে "চবিবশ বংসর শেষে যেই মাঘ মাস" মানে ঐচিত্তত্তের জন্ম কান্তনে হওয়ায় ২৩০০ মাস সময়ে সন্ধ্যাস লওয়া হয়। এই সময় ঠিক কি না দেখা যাউক।

মুরারি গুপ্ত বলেন যে ঐতিচতন্য

ততঃ শুভে সংক্রমণে রবেঃ কণে কুন্তং প্রয়াতি মকরান্মনীধী

সন্ন্যাস গ্রহণ করেন (ভাষা ০)। লোচন মুরারির শ্লোক অনুবাদ করিয়া লিথিয়াছেন—

> মকর লেউটে কুন্ত আইসে যেই বেলে। সন্মাসের মন্ত গুরু কহে হেন কালে॥

অর্থাৎ মাঘ মাসের সংক্রান্তির দিন সন্নাস-গ্রহণ। কৃঞ্চদাস কবিরাজ বলিয়াছেন সংক্রান্তির দিন শুক্র পক্ষ ছিল। ইহা হইতে গণনা করিয়া শ্রীযুক্ত রাধাগোবিন্দ নাথ মহাশয় দেখাইয়াছেন যে ১৪৩৩ শকের মাঘ মাসের সংক্রান্তি পড়িয়াছিল ২৯এ তারিথ শনিবারে। ঐ দিন প্রায় চার দণ্ড পর্যান্ত পূর্ণিমা ছিল। তাহা হইলে দেখা যাইতেছে যে,



শ্রীচৈতন্মের জীবনের প্রধান প্রধান ঘটনার কাল-নির্ণয় ২৫ শ্রীচৈতন্মের সন্ন্যাস--->৪০১ শকে। মাঘ, ১০ মাসে। ২৯ দিনে, শ্রীচৈতন্মের জন্ম-->৪০৭ শকে। ফান্তন, ১১ মাসে। ২৩ দিনে, শ্রীচৈতন্ম গৃহে ছিলেন---২০১১১৬ দিন।

## পূর্বেব দেখাইয়াছি-

শ্রীচৈতত্তের তিরোভাব···১৪৫৫ শকে। আঘাঢ়, ৩ মাসে। ৩১ দিনে, শ্রীচৈতত্তের সন্ন্যাস-গ্রহণ···১৪৩১ শকে। মাঘ, ১০ মাসে। ২৯ দিনে, শ্রীচৈতত্তের সন্মাস-জীবন···২৩।৫।২ দিন।

কিন্ত ১৯এ মাঘ সংক্রান্তি ছিল, সেই জন্ম সূক্ষা হিসাবে ঐ সময় হইবে ২৩৫। দিন। সন্ন্যাসের সময় শ্রীচৈতন্তের বয়স্ ২৩।১১। দিন হওয়ায় কৃষণাস উহাকে "চবিবশ বৎসর শেষে" বলিয়াছেন। আর ২৪ দিন পরেই তিনি ২৫ বৎসরে পড়িবেন বলিয়া কবিরাজ গোস্বামী লিখিয়াছেন— "পঞ্চবিংশতি বর্ষে কৈলা যতি ধর্মা।"

শ্রীচৈতন্য গয়া হইতে ফিরিয়া আসিবার কত দিন পরে সয়্যাস এহণ করিয়াছিলেন তাহার স্পান্ট উল্লেখ কবিকর্ণপূর ছাড়া আর কোন চরিতকার করেন নাই। তিনি বলেন যে বিশ্বস্তর পৌষের অস্তে গয়া হইতে গৃহে আসিলেন (মহাকাবা, ৪।৭৬)। তারপর মাঘ মাস হইতে কার্ত্তন ও ভাবপ্রকাশ আরক্ষ হয়, য়ধা—

ততো মাঘস্তাদৌ নিরবধি নিজেঃ কীর্ত্নরসৈঃ প্রকাশং চাবেশং ভূবি বিকিরতি স্মানুদিবসম্ দুমহাকাবা, ৪।৭৬

মাঘ মাস হইতে চার মাস অর্থাৎ বৈশাথ পর্যাস্ত তিনি সম্বিপ্রদিগকে পড়াইতেন (মহাকাবা, ৫।২৪)। বৈশাথের পর হইতে আর পড়াইতে পারেন নাই। তারপর জ্যৈষ্ঠ হইতে পৌষের শেষ পর্যাস্ত আট মাস নৃত্যরসে অতিবাহিত করিলেন।

ইত্যেবং প্রচুরকুপামৃতং বিতম্বঞ্ জ্যৈষ্ঠাভাষ্টভিরতি-সন্মদেন মাসৈ:।



24

#### শ্রীচৈতশুচরিতের উপাদান

পোষান্তং নটনরলৈনিদাঘবর্ধৈ-হৈনন্তং সহ শরদা নিনায় নাথঃ ॥ ঐ, ৫।১২৫

শ্রীচৈতন্ত ১৪৩১ শকের ২৯এ মাঘ সন্নাস লইয়াছিলেন, স্তুতরাং ১৪৩০ শকের পৌষান্তে গয়া হইতে প্রত্যাগমন করিয়া ১৩ মাস কাল তিনি নবদ্বীপে সঙ্কীর্ত্তন ও ভাবপ্রকাশ করিয়াছিলেন। বুন্দাবনদাস ঐ সময়ের ইঞ্চিত করিয়া বলিয়াছেন—

মধ্য খণ্ড কথা ভাই শুন একচিতে। বৎসরেক কীর্ত্তন করিলা যেন মতে॥ চৈ ভা , ২।২।১৭১

কুফদাস কবিরাজও ইহার প্রতিধানি করিয়া বলিয়াছেন—

তবে প্রভু শ্রীবাদের গৃহে নিরন্তর। রাত্রে সঙ্কীর্তন কৈল এক সংবৎসর॥ ১।১৭।৩০

শ্রীযুক্ত রাধাগোবিন্দ নাথ মহাশয় বলেন—"শ্রীময়হাপ্রভু ১৪০১ শকের ২৮শে মাঘ শুক্রবার পূর্ণিমা রাত্রিতে সন্ন্যাসার্থ গৃহত্যাগ করেন এবং ২৯শে মাঘ শনিবার মাঘী সংক্রান্তিতে সন্মাস গ্রহণ করেন।" এই উক্তি বিচারসহ নহে; কেন-না বুন্দাবনদাস বলেন যে বিশ্বস্তর "দশুচারি রাত্রি আছে" জানিয়া শয়্যা ত্যাগপূর্বক মাকে প্রণাম করিয়া নবদ্বীপ ত্যাগ করিলেন (২।২৬০৬১)। মুরারিও বলেন—"মুয়ং নিনায় রঞ্জনীং চ তত্বিতোহগাৎ" (৩০০৬)। রাত্রির চার দশু ও পূর্ণিমার চার দশু—এই আট দশ্রের মধ্যে নবদ্বীপ হইতে কাটোয়া যাওয়া, মন্তক-মুগুন, সন্মাসের আয়োজন প্রভৃতি করিয়া সন্মাসের মন্ত-গ্রহণের অবসর থাকে না। পূর্ণিমা থাকিতে থাকিতে মন্ত্র না, লইলে কৃষ্ণ পক্ষ পক্ষ পড়ে, এবং সে সময় সন্মাস্থাকতে থাকিতে মন্ত্র না, লইলে কৃষ্ণ পক্ষ হইবে, সংক্রান্তিও হইবে—এমন দিনে শ্রীচৈতত্য সন্মাস গ্রহণ করিয়াছিলেন। তাহা হইলে নিম্নলিখিতরপ কাল-নির্ণয় করিলে মুরারি-উক্ত সংক্রান্তির মহিত কৃষ্ণদাস কবিরাজ্ঞাভ শুক্র পক্ষের ও বুন্দাবনদাসের বর্ণনার মিল হয়। ২৬এ মাঘ বুধবার

শ্রীচৈতত্তের জীবনের প্রধান প্রধান ঘটনার কাল-নির্ণয় ২৭ শেষ রাত্রিতে প্রভুর গৃহত্তাগ। ২৭এ মাঘ বৃহস্পতিবার কোন সময়ে কাটোয়ায় পৌছান। তারপর সেই দিনের অবশিষ্ট অংশ

> এই মত কৃষ্ণকথা আনন্দ-প্রসঙ্গে। বঞ্চিলেন সে নিশা ঠাকুর সভাসঙ্গে॥

> > —टेंह° चि°. शरकात्रक

পর দিন অর্থাৎ ২৮এ মাঘ শুক্রবার সকাল হইতে সন্ন্যাসের আয়োজন চলিতে লাগিল। বৃন্দাবনদাস বলেন—

> কথং কথমপি সর্ব্ব দিন অবশেষে। ক্লোরকর্ম্ম নির্ব্বাহ হইল প্রেমরসে। ২।২৬।৩৬৬

মুরারি গুপ্ত বলেন—

ভথাপরাহে নৃহরেরবাক্তা ভাসোক্তকর্মাণি চকার শুদ্ধঃ।

২৮এ মাঘ অপরাত্নে বা "দিন অবশেষে" পূর্ণিমা ছিল, কিন্তু সে দিন সংক্রান্তি নহে। স্কুরাং অনুমান করিতে হইবে যে ক্ষোরকর্মাদি করিয়া গৌরচন্দ্র সে দিন "সংকল্প" করিয়া থাকিলেন ও শনিবার ২৯এ মাঘ সংক্রান্তি-দিনে ৪ দণ্ডের মধ্যে পূর্ণিমা থাকিতে থাকিতে সন্নাস-মন্ত্র গ্রহণ করিলেন।

সন্ন্যাস-গ্রহণ হইতে পুরীগমন পর্য্যন্ত ঘটনার কাল-নির্ণয়

এই মত সর্বব রাত্রি গুরুর সংহতি। নৃত্য করিলেন বৈকুঠের অধিপতি।

—হৈত ভাত, তাসত৭o



#### শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

১লা ফান্ত্ৰন প্ৰাতঃকালে বনে গাইবেন বলিয়া

25

চলিলা পশ্চিম মুখে করি হরিধ্বনি। ১।১।১৭১

বক্রেশ্বর যাইতে আর ক্রোশ চারেক পথ আছে এমন সময় তিনি পূর্ববমুখে ফিরিলেন—"গঙ্গামুখ হইয়া চলিলা গৌরচন্দ্র" (৩)১)৩৭৩)। যাইতে যাইতে এক রাখালের মুখে হরিনাম শুনিলেন। সেই সময়ে তিনি বলিলেন—

দিন তিন চারি যত দেখিলাঙ গ্রাম।
কাহারো মুখেতে না শুনিতু হরিনাম।
আচন্ধিতে শিশুমুখে শুনি হরিধ্বনি।
কি হে চু ইহার সভে কহ দেখি শুনি॥
প্রভু বোলে "গল্পা কত দূরে এখা হৈতে।"
সভে বোলিলেন "এক প্রহরের পথে॥"

এই বিবরণ হইতে পাওয়া গেল যে ১লা. ২রা, ৽রা ও ৪ঠা ফাল্পন ঐীচৈতভা রাঢ়দেশ ভ্রমণ করিয়া গঙ্গাতীরে পৌছিয়াছিলেন। মুরারি গুপু (৩।৩।১৮) এবং কবিকর্ণপূর (মহাকাব্য, ১১।৬১) বলেন, প্রভু রাঢ়ে ভ্রমণ করার সময় তিন দিন ভাবাবেশে আত্মবিশ্বত হইয়াছিলেন। কৃষ্ণদাস কবিরাজ্বও লিখিয়াছেন, "রাঢ় দেশে তিন দিন করিলা ভ্রমণ" (১।৩।৩)। তিনি তিন দিন ভ্রমণ করেন ও চতুর্থ দিনে গঙ্গার তারে পৌছান। গঙ্গাতীরের কোন্ গ্রামে পৌছিয়াছিলেন তাহা জানা যায় না। যাহা হউক

নিত্যানন্দ সংহতি সে নিশা সেই গ্রামে। আছিলেন কোন পুণ্যবন্তের আশ্রমে।

— চৈ° ভা°, তাগত৭৪

৫ই ফাল্লন সকালে নিত্যানন্দকে নবদীপে পাঠাইবার-সময়ে বলিলেন যে তিনি নবদীপের ভক্তর্ন্দের জন্ম শান্তিপুরে অপেকা করিবেন। নিত্যানন্দ কতক পথ হাটিয়া, কতক পথ গদায় সাতরাইয়া নবদীপে শ্রীচৈতত্তের জীবনের প্রধান প্রধান ঘটনার কাল-নির্ণয় ২৯ পৌছিলেন। নিত্যানন্দ ভাবের মানুষ, শুধু পথ-চলা তাঁহার পোষায় না। তিনি

ক্ষণেক কদন্ব বৃক্ষে করি আরোহণ।
বাজায় মোহন বেণু ত্রিভঙ্গ-মোহন॥
ক্ষণেকে দেখিয়া গোঠে গড়াগড়ি যায়।
বৎস প্রায় হইয়া গাভীর তথ্য খায়॥

কথন নাচেন, কথন হাসেন, "কথন বা পথে বিস করেন রোদন।" এইরূপভাবে চলিয়াছিলেন বলিয়াই বোধ হয় নবন্ধীপে পোঁছিতে তাঁহার চার দিন লাগিয়াছিল। তাঁহার যদি নবন্ধীপে আসিতে এও দিন না লাগে, তাহা হইলে তিনি নবন্ধীপে "আসি দেখে আইর হাদশ উপবাস" কিরূপে সম্ভব হয় ? ২৭এ মাঘ হইতে ৫ই ফাল্পন ৮ দিন হয়, আর নিত্যানন্দের নবন্ধীপে পোঁছিতে ৪ দিন—এই ১২ দিন অর্থাৎ ২৭এ মাঘ হইতে ৯ই ফাল্পন নিত্যানন্দ নবন্ধীপে না-পোঁছান পর্যান্ত শচীমাতা অল্পল ত্যাগ করিয়াছিলেন।

যে দিবসে গেলা প্রভু করিতে সন্নাস।
সে দিবস অবধি আইর উপবাস॥
দাদশ উপাস তান নাহিক ভোজন।
চৈতন্ত-প্রভাবে সবে আছয়ে জীবন॥

—হৈত ভা<sup>ত</sup>, আসাত৭৫

এ দিকে ঐতিচতন্ম ফুলিয়া নগরে আসিয়া হয়ত সেখানে দিন ছই ছিলেন এবং নবন্ধীপ হইতে শচীমাতা, নিত্যানন্দ প্রভৃতি পৌছিবার পূর্বেই শান্তিপুরে পৌছিয়াছিলেন; কেন-না যখন তিনি শিশু অচ্যুতকে আদর করিতেছিলেন,

> হেনই সময়ে শ্রীঅনন্ত নিত্যানন্দ। আইলা নদায়া হৈতে সঙ্গে ভক্তবৃন্দ।

#### শ্রীচৈততাচরিতের উপাদান

মুরারি বলেন, নবনীপে পৌছানর পর দিন অর্থাৎ ১০ই ফাস্কুন নিত্যানন্দ ভক্তগণ-সহ শাস্তিপুর পৌছিয়াছিলেন (৩।৪।১)।

মুরারির বর্ণনায় দেখা যায়, অদৈতের গৃহে চতুর্বিধ অন্ন ভোজন করিয়া পর দিন প্রভাতে জাগরিত হইয়াই তিনি বলিলেন —"আমি পুরুষোত্তম-দর্শনে যাইব" (৬।৪।২৬)। কিন্তু সেই দিনই তিনি চলিয়া গেলেন কি না তাহা স্পষ্ট করিয়া লেখা নাই। বুন্দাবনদাস বলেন অদৈত-গৃহে

> বহুবিধ আপন রহস্ত-কথা-রঙ্গে। সুথে প্রভু রাত্রি গোঙাইল ভক্ত-সঙ্গে॥

পর দিন প্রভাতে উঠিয়া তিনি নীলাচলে যাইবেন বলিলেন। অধৈত তাঁহাকে দিন কয়েক রাখিতে চাহিলেন, কিন্তু প্রভূ বলিলেন, "যে উৎপাতই পথে থাকুক, আমি নিশ্চয় যাইব।" অধৈত তখন বলিলেন—

> যথনে করিয়াছ চিত্ত নীলাচলে। তথনে চলিবা প্রভু মহা কুতৃহলে॥

ইহা শুনিয়া মহাপ্রভু সম্ভুট হইলেন এবং

00

সেই ক্ষণে মহাপ্রভু মন্তসিংহগতি। চলিলেন শুভ করি নীলাচল প্রতি॥

—হৈ° ভা°, ভাহাত৮১

যদিও এই বিবরণ পড়িয়া মনে হয়, অদৈত-গৃহে প্রভু মাত্র এক দিনই ছিলেন, তথাপি

> হেন মতে শ্রীগোরস্থন্দর শান্তিপুরে। করিলা অশেষ রম্প অধৈতের ঘরে॥

> > —ঐ, তাহাত৮০

দেখিয়া ধারণা জন্মে যে, কয়েক দিন হয়ত প্রভু অবৈত-গৃহে ছিলেন শচীমাতা যে তাঁহাকে এক দিনেই ছাড়িয়া দিবেন ইহা কিছুতেই সম্ভব শ্রীচৈতত্তের জীবনের প্রধান প্রধান ঘটনার কাল-নির্ণয় ৩১
মনে হয় না। কবিকর্ণপূর মহাকাব্যে স্পষ্ট করিয়া বলিয়াছেন যে
শ্রীচৈতত্ত কয়েক দিন অবৈত-গৃহে ছিলেন, যথা—

ততোহবৈতপ্রীতা। প্রণতহরিদাসক্ত চ মৃদ। জগন্নাথকেতঃ জিগমিবুরপি স্বপ্রিয়বশঃ। শচীদেবা। তৎপাচিতমতুলমন্নং নিজন্ধনৈঃ সমং তৈ ভূঞানঃ কতি চ গমগ্রামাস দিবসান্।

—মহাকাব্য, ১১।৭৪

কুঞ্জদাস কবিরাজ এই শ্লোকের ভাব লইয়া লিথিয়াছেন—
এই মত অদ্বৈত-গৃহে ভক্তগণ মেলে।
বঞ্জিল কথোক দিন নানা কুতৃহলে॥ ২০১২০

কিন্তু ইহার পূর্বেই তিনি কাল নির্দ্দিন্ট করিয়া বলিয়াছেন—
এই মত দশ দিন ভোজন কীর্ত্তন।
একরূপ করি কৈল প্রভুর সেবন ॥ ২।৩১১৩

শ্রীচৈতন্মের শান্তিপুরে দশ দিন থাকার কথা কবিরাজ্ঞ গোস্বামী কোথায় পাইলেন জানা যায় না।

কবিকর্ণপূর নাটকে ঐতিচততার তিন দিন শান্তিপুরে বাসের কথা বলিয়াছেন, যথা—"ততাে জনতা তেষাং চ প্রমোদার্থং ত্রীন্ দিবসান্ তত্র ছিয়া পূর্ববিমিব ভগবতা। জনতা অচ্যতানন্দজনতা চ পাচিতমনং সর্বৈশ্ব সহ ভূজা তানসূরজা চহুর্থে দিবসে গল্পং প্রবৃত্তে সর্বৈর্মপ্রয়িতা নিত্যানন্দ-জগদানন্দ দামোদর-মূক্ননাঃ সঙ্গে দত্তাঃ" (৬০৫, নির্গ্রসাগর সং)।

যাহা হউক কবিবাজ গোস্বামীর কথা মানিয়া লইলে বলিতে হয় যে আমুমানিক •ই ফাল্লন হইতে ১৯এ ফাল্লন পর্যন্ত শ্রীচৈতত্ত শান্তিপুরে ছিলেন। তিনি বলেন—

> মাঘ শুক্লপক্ষে প্রভু করিলা সন্ন্যাস। ফান্তনে আসিয়া কৈল নীলাচলে বাস॥

93

#### শ্রীচৈতগচরিতের উপাদান

ফাল্পনের শেষে দোলযাত্রা সে দেখিল। প্রেমাবেশে তাঁহা বহু নৃত্যগীত কৈল। ২।৭।১-৪

১৯এ ফান্ত্রন শান্তিপুর হইতে বাহির হইয়া ফান্তনের মধ্যে পুরীতে পৌছান কঠিন। তবে প্রভু ভাবোদ্মন্তভাবে চলিয়াছিলেন বলিয়া সম্ভব হইতেও পারে। আমার ধারণা, বৃন্দাবনদাসের বর্ণিত "আইর ঘাদশ উপবাস" অথবা কৃষ্ণদাস কবিরাজ-বর্ণিত প্রভুর শান্তিপুরে দশ দিন বাসের মধ্যে কয়েক দিন বাদ না দিলে "ফান্তনে আসিয়া কৈল নীলাচলে বাস" সম্ভব হয় না। কবিকর্ণপুরের চৈতভাচক্রোদয় নাটকের মত, অর্থাৎ শান্তিপুরে তিন দিন বাস, ধরিলে ১০ই ফান্তন শ্রীচৈতভার নীলাচলযাত্রা হয় এবং ফান্তনের মধ্যেই পুরীতে পৌছান সম্ভব হয়। কবিকর্ণপুর মহাকাব্যে বলেন, নীলাচলে আঠার দিন বাস করিয়া প্রভু দাক্ষিণাত্যজমণে বাহির হয়েন (১২১৪)। কৃষ্ণদাস কবিরাজ বলেন যে শ্রীচৈতভার

বৈশাগ প্রথমে দক্ষিণ যাইতে হৈল মন। ২।৭।৫

১৪০২ শকের বৈশাখে ঐতিচতত্ত ভ্রমণে বাহির হইলেন।

## শ্রীচৈতত্তার তার্থভ্রমণের কাল-নির্ণয়

এইবার প্রভুর তার্থজিমণের কাল-সম্বন্ধে আলোচনা করিব। কৃষ্ণদাস কবিরাজ বলেন—

> তার মধ্যে ছয় বৎসর গমনাগমন। নীলাচল গৌড় সেতুবন্ধ বৃন্দাবন॥ ২।১।১৪

কিন্তু কবিকর্ণপূর মহাকাব্যে বলেন যে তিনি তিন বংসর গমনাগমন করিয়াছিলেন, যথা—

চতুর্বিংশে তাবৎ প্রকটিতনিজপ্রেমবিবশঃ প্রকামং সন্মাসং সমক্ত-নবদ্বীপ-তলতঃ।



## শ্রীচৈতত্যের জীগনের প্রধান প্রধান ঘটনার কাল-নির্ণয় ৩০ ত্রিবর্ধক ক্ষেত্রাদপি তত ইতো যানগময়-তথা দৃষ্টা যাত্রা ব্যনয়দখিলা বিংশতিসমাঃ॥

—মহাকাব্য, ২০।৪০

অর্থাৎ ঐতিততা চতুর্বিংশতি বৎসর নিজ প্রেম প্রকট করিয়া বিবশ হইয়া নবদ্বীপ হইতে সন্ন্যাস গ্রহণ করিয়াছিলেন এবং ঐক্যেত হইতে ইতন্ততঃ গমনাগমন করিয়া তিন বৎসর যাপন করিয়াছিলেন এবং সমূহ যাত্রা (উৎসব) দর্শন করিয়া বিশ বৎসর যাপন করিয়াছিলেন। আপাত-দৃষ্টিতে কবিকর্ণপূরের উক্তির সহিত কৃষ্ণদাস কবিরাজ্বের উক্তির ঘোরতর বিরোধ দেখা গেলেও উভয়ের মধ্যে নিম্নলিখিতভাবে সামঞ্জ্য করা যায়।

প্রথমে গমনাগমনের কথা ধরা যাউক। কৃষ্ণদাস কবিরাজ (২।১।১৪) ছয় বৎসর গমনাগমন লিখিলেও পুনরায় (২।১।৪১-৪২) লিখিয়াছেন—

> প্রথম বংসর অধৈতাদি ভক্তগণ। প্রভুরে দেখিতে কৈল নীলাদ্রিগমন॥ রথযাত্রা দেখি তাঁহা রহিলা চার মাস। প্রভু সঙ্গে নৃত্য গাঁত পরম উল্লাস॥

তিনি আরও (২০১৪৫) বলিয়াছেন—

বিংশতি বৎসর ঐছে করে গতাগতি। অন্যোক্ত দোঁহার দোঁহা বিনা নাহি স্থিতি।

মহাপ্রভু যদি নীলাচলে চবিবশ বৎসর বাস করেন এবং গৌড়ীয় ভক্তগণ যদি বিশ বৎসর তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ করেন, তবে প্রভুর গমনাগমন চার বৎসর হয়। ইহার মধ্যে "দক্ষিণ যাঞা"-আসিতে ছই বৎসর লাগিল (২০৬৮০)। প্রভু সন্নাসের পঞ্চম বর্ষে (২০৬৮৫) রথের পর বিজয়া দশমীর দিন (২০৬৯০) গৌড়দেশে যাত্রা করেন ও বর্ষার পূর্বের তথা রথের পূর্বের নীলাচলে প্রত্যাবর্ত্তন করেন (২০৬২৭৯) অর্থাৎ প্রায় আট-নয় মাস জ্মণ করেন। গৌড় হইতে ফিরিবার বৎসরেই

#### শ্রীতৈতভাচরিতের উপাদান

98

অর্থাৎ সন্ন্যাসের ষষ্ঠ বর্ষে শরংকালে তিনি বৃন্দাবন-অভিমুখে যাত্রা করেন (২।১৭।২)। বৃন্দাবনে "লোকের সক্রট, নিমন্ত্রণের জ্ঞাল" ও "নিরন্তর আবেশ প্রভুর" জন্ম (২।১৮।১৩১) বেশী দিন থাকা হয় নাই। মাঘ মাসের প্রথম দিকে প্রয়াগ-অভিমুখে যাত্রা করেন (২।১৮।১৩৫)। প্রয়াগে "দশ দিন ত্রিবেণীতে মকর স্নান কৈলা" (২।১৮।২১২)।

এই মত দশ দিন প্রয়াগ রহিয়া। শ্রীরূপে শিক্ষা দিল শক্তি সঞ্চারিয়া॥ ২।১৯।১২২

তংপরে কাশীতে চুই মাস সনাতন-শিক্ষা (২।২৫।২) অর্থাৎ কাশীতে চৈত্র মাস পর্যান্ত স্থিতি। তারপর ধরিয়া লওয়া যাউক রথের পরই মহাপ্রভু নীলাচলে ফিরিলেন। মোটের উপর

প্রায় সাড়ে তিন বৎসর গমনাগমন হয়। কৃষ্ণদাস কবিরাজ্ঞ মোটের উপর ছয় বৎসর গমনাগমন বলিলেও তিনি সূক্ষম হিসাবে প্রায় সাড়ে তিন বৎসর গমনাগমন-কাল বর্ণনা করিয়াছেন। ইহার মধ্যে দাক্ষিণাত্য-যাতায়াতের দক্ষন ছই বৎসর ও বৃন্দাবনে যাতায়াতের দক্ষন এক বৎসর (রথ দেখিয়া শরৎকালে গিয়াছিলেন এবং অনুমান করা যাইতেছে, রথের পর ফিরিয়াছিলেন)। এই তিন বার রথয়াত্রার সময় প্রভু পুরীতে ছিলেন না। কবিকর্ণপুরও তাহাই বলেন। মহাপ্রভু চবিবশ বৎসর সয়াস-জীবন যাপন করিয়া তিন বার রথের সময় বাহিরে থাকিলে, গৌড়ীয় ভলগণ একুশ বার রথের সময় না য়াইয়া বিশ বার গেলেন কেন ?

গৌড়ীয় ভক্তগণ একুশ বার না যাইয়া বিশ বার কেন গেলেন তাহার উত্তর শ্রীচৈতক্যচরিতামূতের ৩২।০৯-৪১ হইতে গাওয়া শ্রীতৈতত্ত্বের জাবনের প্রধান প্রধান ঘটনার কাল-নির্ণয় ৩৫ যায়। এক বংসর শ্রীতৈতত্ত শিবানন্দের ভাগিনেয় শ্রীকান্ত সেনকে বলিয়াছিলেন—

ভ ৫গণে নিষেধিহ এথাকে আসিতে॥ এ বংসর তাঁহা আমি যাইব আপনে। তাঁহাই মিলিব সব অবৈতাদি সনে॥

সেই বংসরেই প্রভু আবির্ভাব-রূপে নৃসিংহানন্দের ভোগ গ্রহণ করিয়া-ছিলেন। সে বংসর গোড়ীয় ভক্তগণ রথ দেখিতে যান নাই।

> বর্ষান্তরে শিবানন্দ লঞা ভক্তগণ। নীলাচলে গিয়া দেখিল প্রভুর চরণ॥ ৩।৭৪

এই হিসাবে কৃঞ্চদাস কবিরাজের উক্ত গৌড়ীয় ভক্তগণের

বিংশতি বৎসর ঐছে করে গতাগতি, ২০১৪৫

বিবরণের যাথার্থা প্রমাণিত হইল; কিন্তু প্রভুর "ছয় বংসর গমনাগমন" (২।১।১৪) যে ঠিক নহে তাহাও বুঝা গেল। কবিরাজ গোস্বামীর "বিংশতি বংসর ঐছে করে গতাগতি"র সহিত মহাকাব্যের

ইতি বিংশতি হায়নৈঃ প্রভু-র্বলদেবস্থা রথাগ্রতো মৃতঃ (:৮/৬১) নৃত্য

করিয়াছিলেন ইহার সামঞ্জ হইল।

গমনাগমন-সম্বন্ধে কবিকর্ণপূরের বিবরণ এই—

- (ক) সন্নাসের পর পুরীতে গিয়া আঠার দিন মাত্র স্থিতি (মহাকাব্য, ১২১৯৪)।
- (খ) তৎপরে দাক্ষিণাত্য-যাত্রা। চাতুর্মান্তের পূর্বেই শ্রীরন্ধক্ষেত্র পৌছান ও তথায় চাতুর্মান্ত যাপন (ঐ, ১৩৫)।
- (গ) শ্রীরক্ত হইতে সেতৃবন্ধ পর্যান্ত যাত্রা এবং সেই পথেই গোদাবরী-তারে প্রত্যাবর্তন।

34

#### ঐতিচতহাচরিতের উপাদান

## জগাম তদেখানি শীতরশ্মি-রিবোদয়াদ্রিং জলদাগমান্তে (এ, ১৩।২৫)।

অনুমান করা যায় বর্ধা-অন্তে এক বৎসর পরে গোদাবরী-তীরে ফিরিলেন। কবিকর্ণপূরের মতে এই ফেরার পথে রামানন্দের সহিত প্রথম মিলন। কৃষ্ণদাস কবিরাজের মতে যাওগার পথে প্রথম মিলন।

(ঘ) স্নান্ধাত্রার পূর্বের নীলাচলে প্রত্যাবর্ত্তন (ঐ, ১৩৫০)।
এই বিবরণ হইতে পাওয়া গেল যে ১৪৩২ শকের বৈশাথ মাসে পুরী
হইতে যাত্রা করিয়া ১৪৩৩ শকের বর্ধা-অন্তে গোদাবরী তীরে প্রত্যাবর্ত্তন ও
১৪৩৪ শকের জ্যৈষ্ঠ-পূর্নিমা বা স্নান্ধাত্রার পূর্বের পুরীতে ফিরিয়া আসা।
এই হিসাবে ১৪৩২ ও ১৪৩৩ শকের রথযাত্রার সময় প্রভু অনুপস্থিত
ছিলেন।

(৩) প্রভূ ১৪৩৪ শকের স্নান্যাত্রার সময় জগলাথ-দর্শন করিলেন। স্নান্যাত্রা হইতে রথযাত্রার পূর্বে পর্যান্ত জগলাথ গুড়ভাবে থাকেন। সেই সময়ে প্রীচৈতন্ম তাঁহার দর্শন না পাইয়া "বভূব ছঃখী কৃতবাষ্পামোক্ষঃ" (১০)৫৭)। তিনি মনের ছঃখে গোদাবরী-তীরে চলিয়া গেলেন ও রামানন্দের সহিত পুনরায় মিলিত হইলেন।

তেনৈব সার্জং প্রিয়ভাষণেন নিনায় মাসাংশচতুরোহপরাংশচ॥ ঐ, ১৩।৬০

তৎপরে হেমস্তকালে শ্রীচৈতগু রামানন্দের সহিত ক্ষেত্রে প্রতণবর্ত্তন করিলেন।

হেমন্তকালেহথ তথৈব তেন
সমং সমস্তাৎ করুণাং বিতথন।
সমাযযৌ ক্ষেত্রবরং বরীয়ান্
জানাতু কস্তচ্চরিতং বিচিত্রম্ ॥ ঐ, ১৩/৬১

শ্রীটেতক্য দাক্ষিণাত্য হইতে ফিরিয়া আসিয়া পুনর্বরে রামানন্দের নিকট গোদাবরী-তারে গিয়াছিলেন, এ কথা স্বীকার করিলে প্রভুর মহিমা থর্ব হয়



## শ্রীচৈতত্যের জীবনের প্রধান প্রধান ঘটনার কাল-নির্ণয়

মনে করিয়া পরবর্তী কোন লেখক এ বিষয়ে কিছু লেখেন নাই। "প্রীচৈতন্ত-ভাগবতে" ত দাক্ষিণাত্য-জ্রমণ-প্রসঙ্গই নাই। ইহা হইতে যেমন সিন্ধান্ত করা যায় না যে প্রভু দাক্ষিণাত্যে যান নাই, তেমনি কবিকর্ণপূরের পরবর্তী অন্যান্ত লেখকগণ প্রভুর দ্বিতীয় বার রামানন্দ-মিলনের জন্ম যাতায়াতের কথা না লিখিলেও এ সন্বন্ধে শিবানন্দ সেনের পুত্রের কথা অবিশ্বাস করিতে পারলাম না। যাহা হউক পূর্বের যেমন দেখাইয়াছি ১৪৩২ ও ১৪৩০ শকে প্রভু রথযাত্রা দেখেন নাই, তেমনি ১৪৩৪ শকেও তাঁহার রথযাত্রা দেখা হইল না। এইরূপে তিন বার তাঁহার রথ দেখা বাদ গেল।

- (চ) ১৪০৪ শকের হেমন্তকালে প্রভুর পুরীতে প্রত্যাবর্তনের সংবাদ গোড়দেশে পৌছিল। অনুমান হয়, ১৪০৫ শকের প্রথমে কোন কোন গোড়ায় ভক্ত মহাপ্রভুকে দর্শন করিতে নালাচল গিয়াছিলেন। কবিকর্ণ-পুরের মতে শিবানন্দের সহিত মিলন হওয়ার পর "বছ তীর্থভ্রমণকারী, স্থমহান্ পুণাপয়োনিধি" গোবিন্দ আসিয়া প্রভুর পরিচর্যায় নিয়েজিত হইলেন (ঐ, ১৩১৩০-৩২)। পুরুষোন্তম আচার্যা বা স্বরূপ-দামোদরও শিবানন্দের পর প্রীচৈতন্তের চরণ দর্শন করেন (১৩১৩৭-১৪৪)।
- (ছ) এই ঘটনার পর মহাকাব্যের ১৯।৫ হইতে জানা যায় যে প্রভ্ বিজয়া দশমীর দিন গোড়াভিম্থে যাত্রা করিয়াছিলেন। মহাকাব্যের ১৯।৬ হইতে ২০।৩৪ পর্যান্ত গোড়ে যাতায়াত বণিত হইয়াছে, কিন্তু বর্ণনা পাঠ করিয়া বুঝিবার উপায় নাই ঠিক কত দিন ভ্রমণে লাগিয়াছিল। কবিকর্ণপূরের মহাকাব্যে ২০।৩৫ শ্লোকে প্রভুর রুন্দাবনে গমন ও ২০।৩৭ শ্লোকে নীলাচলে প্রত্যাবর্ত্তন কথিত হইয়াছে। এরূপ সংক্ষেপে এ লীলার বর্ণনার কারণ এই যে পূর্বেই নাটকে (৯।৩৯-৪৮) এ বিষয়ে বিশদরূপে বর্ণনা করা হইয়াছে। বিশ বৎসর রথ-দর্শন-সম্বন্ধে কবিকর্ণপূর ও কৃষ্ণদাস কবিরাজ্ব এক মত। কবিকর্ণপূরের মতে গোড়- ও রুন্দাবন-ভ্রমণ-জ্ব্যু মহা-প্রভুর রথ দেখা বাদ যায় নাই। কবিরাজ্ব গোস্বামীও বলেন যে গোড়ে গমনাগমন-জ্ব্যু রথ দেখা বাদ যায় নাই। বৃন্দাবন-গমনাগমন-জ্ব্যু প্রভুর রথ দেখা বাদ গিয়াছিল কি না সে বিষয়ে তিনি স্পাষ্ট কিছু বলেন নাই; আমি তাঁহার ২৪ বৎসর নালাচলে স্থিতি ও ২০ বার গোড়ীয় ভক্তদের

### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

26

রথ দেখিতে আগমনের মধ্যে সামঞ্জ করিবার জন্য অনুমান করিয়াছি যে তাঁহার মতে হয়ত রুন্দাবনে গমনাগমন-জন্ম এক বার রথ-দর্শন বাদ পড়িয়াছিল। এ পর্যান্ত কবিকর্ণপূরের ও রুক্ষদাস কবিরাজের বিরোধ নাই, কেবল গমনাগমনের কাল লইয়া অতি সূক্ষম পার্থক্য। ছয় বংসর গমনাগমনের কথা ছাড়িয়া দিলে রুক্ষদাস কবিরাজ সূক্ষমভাবে তিন বংসরের কিছু বেশী কাল ভ্রমণের বিবরণ দিয়াছেন। কবিকর্ণপূর সে স্থানে হয়ত ৪।৫ মাস ছাড়িয়া দিয়া মোটাম্টি তিন বংসর ভ্রমণ বলিয়াছেন। এ পার্থক্য বিশেষ গুরুত্বর নহে।

কালের পরিমাপ-হিসাবে না ধরিয়া শক-হিসাবে ধরিলে কবিরাজ গোস্বামীর ছয় বৎসর গমনাগমন বলার একটা মানে বাহির করা যায়।

১। ১৪৩১ শকের ২৯এ মাঘ সল্লাস-গ্রহণ, ঐ শকে রাঢ়, শান্তিপুর প্রভৃতি হইয়া নীলাচলে আগমন।

২-৩। ১৪৩২ এবং ১৪৩৩ শকে দাক্ষিণাত্য-ভ্ৰমণ।

- ৪। : ৪৩৫ শকে সন্নাসের পঞ্চম বর্ষে ( চৈ চ চ , ২।১৬৮৫ ) বিজয়া দশমীর পর গোড়ে যাত্রা ( ঐ, ২।১৬৯৩ )।
- ে। ১৭০৬ শকে বর্ষার পূর্বের (ঐ, ২০১৬২৭৯) প্রত্যাবর্ত্তন। ১৪০৬ শকের শরৎকালে রন্দাবন-যাত্রা এবং রন্দাবন, প্রয়াগ প্রভৃতি দর্শন করিয়া কাশীতে ঐ শকের চৈত্র মাস পর্যান্ত স্থিতি (ঐ, ২০১৮২ ২ ও ২০২৫২)।
- ৬। ১৪৩৭ শকের প্রথম দিকে নীলাচলে প্রত্যাবর্ত্তন, অর্থাৎ কাল-হিসাবে প্রায় সাড়ে তিন বৎসর গমনাগমন করিলেও, প্রীচৈতগ্র ১৪৩১, ৪৩২, ৪৩২, ১৪৩৫, ১৪৬৬ ও ১৪৩৭ শকে যাতায়াত করিয়াছিলেন বলিয়া কৃষ্ণদাস কবিরাজ হয় বৎসর গমনাগমন লিখিয়াছেন।



## তৃতীয় অধ্যায়

### সমসাময়িক পদক্তাদের চোখে ঐচিত্স

#### পদরচনায় অনুপ্রেরণা

সংস্কৃত বা বাপালা ভাষায় শ্রীচৈতভাের কোন জীবনচরিত রচিত ছইবার পূর্বে তাঁহার সম্বন্ধে কতকগুলি পদ রচিত হইয়াছিল। বিশ্বস্তর মিশ্র অপূর্বব ভাবসম্পদ্ লইয়া গয়া হইতে নবন্ধীপে ফিরিয়া আসিলেন। তাঁহার অলোকসামান্ত রূপ ও অন্তসাধারণ প্রতিভা পূর্নেবই অনেককে আকৃষ্ট করিয়াছিল। ১৪৩০ শকের মাঘ হইতে ১৪৩১ শকের বৈশাখ মাস —১৫০৯ খুফ্টাব্দের জানুয়ারী হইতে এপ্রিল মাস—পর্য্যন্ত তিনি অভাস্ত অধ্যাপনাদি কার্য্যের সহিত আধ্যান্ত্রিক জাগরণসঞ্জাত ভাববিকারের কোনরূপে সামঞ্জন্ত করিয়াছিলেন। কিন্তু ১৪৩১ শকের জ্যৈষ্ঠ মাস হইতে মাঘ মাস প্রান্ত যত দিন তিনি নবদীপে ছিলেন, তত দিন সঙ্কীর্তন ও ভক্তগণের সহিত ভাব-আস্বাদন ছাড়া আর কিছু করিতে পারেন নাই। তাঁহার ভাবাবেশ, মধুর নর্ত্তন ও কীর্ত্তন এবং তাঁহার ব্যক্তিখের অসাধারণ আকর্ষণী শক্তি প্রথমে নবদ্বাপের ও তাহার নিকটবর্ত্তী কাটোয়া, শীখণ্ড, কাঞ্চনপল্লী, কুলানগ্রাম প্রভৃতি স্থানের এবং পরে চট্টগ্রামের স্থায় স্তুদুর স্থানের ভক্তগণকে টানিয়া আনিল। ইহারা নবছীপে আসিয়া কীর্ত্তনে যোগ দিলেন। বিশ্বস্তরের সহিত সহিত খনিষ্ঠতা যতই বাড়িতে লাগিল ততই ইহাদের বিশাস দৃঢ়তর হইতে লাগিল বে একৃষ্ণই শ্রীগৌরাক্ত হইয়া জন্মিয়াছেন। এই সময়ের ঘটনাসমূহ ইহাদের হৃদয়ের ভাবকে এরূপ উদ্বেলিত করিয়াছিল যে ইহাদের মধ্যে কেহ কেহ পদ লিখিয়া সেই ভাব প্রকাশ कत्रियारहम ।

#### ঐীচৈতগুচরিতের উপাদান

80

নরহরি সরকার ঠাকুরের একটি পদ হইতে স্পান্ট প্রমাণ পাওয়া যায় যে বিশ্বস্তরের নবদ্বীপ-লীলার ভক্তবৃন্দ দৃষ্ট ঘটনা ও অন্মভূত ভাব লইয়া পদরচনায় প্রবৃত্ত হইয়াছিলেন এবং ঐরূপ পদ শ্রীচৈতত্তের জীবনচরিত লিখিত হইবার পূর্বের রচিত হইয়াছিল।

গৌর-লীলা দরশনে ইচ্ছা বড় হয় মনে
ভাষায় লিখিয়া সব রাখি।

মুক্তি অভি অধম লিখিতে না জানি ক্রম

কেমন করিয়া তাহা লিখি॥

এ গ্ৰন্থ লিখিবে যে এখনো জন্ম নাই সে জন্মিতে বিলম্ব আছে বহু। ভাষায় রচনা হৈলে বুঝিবে লোক সকলে

কবে বাঞ্চা পূরাবেন প**হ**ঁ॥

গৌর-গদাধর-লীলা আদ্রব করয়ে শিলা কার সাধ্য করিবে বর্ণন।

সারদা লিখেন যদি নিরন্তর নিরবধি আর সদাশিব পঞানন ॥

কিছু কিছু পদ লিখি যদি ইহা কেহ দেখি প্রকাশ করয়ে প্রভু-লীলা। নরহরি পাবে স্থুখ যুচিবে মনের ছুখ

—গোরপদতরঙ্গিণী, পৃ<sup>o</sup> ৮

## জীবনী-লেখার পূর্বের পদ-রচনা

এই পদটির মধ্যে 'ভাষায়' লেথার কথা ছই বার উল্লেখ করা হইয়াছে। ইহার কারণ বোধ হয় যে বিশ্বস্তরের অলৌকিক ভাব প্রকাশ পাইবার কিছুদিন পরেই ভক্তবৃন্দ স্থির করিয়াছিলেন যে মুরারি গুপু প্রভুর লীলা



### সমসাময়িক পদক র্ত্তাদের চোথে শ্রীচৈতত্ত

সংস্কৃতে লিখিবেন। মুরারি গুপু নিজের কড়চায় ( শ্রীকৃষ্ণচৈতগুচরিতম্ ) তাহাই বলিয়াছেন, যথা—নারায়ণ গুপু প্রভুর নিকট প্রার্থনা করিলেন—

যথা তবাবতারোহয়ং বক্তুমুহতি সাম্প্রতম্।
তথাজ্ঞাং কুরু দেবেশ, তচ্ছুকা সন্মিতাননঃ॥
প্রাহ তং ভগবানস্থ তথৈব সম্ববিশ্বতি।
যদ্বদিশ্বতাসোঁ বৈশ্বস্তৎ স্থসতাং ভবিশ্বতি॥
২।৪।২৪

প্রীচৈতত্তের তিরোভাবের মাত্র নয় বৎসর পরে রচিত প্রীচৈতত্তচরিতামৃত মহাকাব্যেও কবিকর্ণপূর অনুরূপ বর্ণনা করিয়াছেন (৬৪৪-৪৫)।
মুরারিগুপ্ত জীবনী লিখিবেন স্থিরীকৃত হইলেও নরহরি সরকার বিশ্বাস
করিতেন যে এ লীলা এরূপ অগাধ ও গন্তার যে তাঁহার সমসাময়িকদের
মধ্যে কেহ ইহা যথোচিতরূপে বর্ণনা করিতে পারিবেন না। তাই তিনি
বলিয়াছেন—"এ গ্রন্থ লিখিবে যে, এখনও জন্মে নাই সে।"

শ্রীগণ্ডের নরহরি সরকার বাতীত শ্রীচৈতত্যের সমসাময়িকগণের মধ্যে নবদ্বীপের মুরারি গুপ্ত ও বংশীবদন, কাঞ্চনপল্লীর শিবানন্দ সেন ও তাঁহার পুত্র কবিকর্ণপূর পরমানন্দ দাস, কাটোয়ার নিকটবর্তী কুলাই প্রামের বাস্থ ঘোষ, গোবিন্দ ঘোষ ও মাধ্ব ঘোষ এবং কুলান গ্রামের বস্থ রামানন্দ দৃষ্ট ঘটনা-সম্বন্ধে পদ রচনা করিয়া বিখ্যাত হইয়াছেন। অভাভ সমসাময়িক পদকর্তাদের মধ্যে অনন্ত আচার্য্য, অনন্তদাস, উদ্ধবদাস, কামু ঠাকুর, গোপাল ভট্ট, গোবিন্দ আচার্য্য, গোরীদাস, চক্রশেণর, ধনপ্রয় পণ্ডিত, নয়ন মিশ্র, পরমানন্দ গুপ্ত, পরমেশ্রদাস, পুরুষোত্তমদাস,

#### > (भवकीनम्मरनद देवकव वन्तवीय-

বোবিন্দ আচাৰ্যা বলো সৰ্ব্ব গুণশালী। যে করিল ধাধাকুকের বিচিত্র গামালী।

কিন্ত ইহার কোন পদ উক্ত ছুই গ্রন্থে স্থান পার নাই।

২ ইনি পরমানন্দরান কবিকর্ণপুর হইতে ভিন্ন ব্যক্তি। ইহার কোন পদ পাওলা নাল নাই। কিন্তু জয়ানন্দ (৩ পুঠা) বলেন—

> সংক্ষেপে করিলেন তি হো পরমানন্দ ওও। গৌরাক-বিজয় গীত শুনিতে অভুত।

#### ত্রীচৈতহাচরিতের উপাদান

83

বলরামদাস, বৃন্দাবনদাস, যতু, যতুনাথ চক্রবর্ত্তী, যতুনাথ, রযুনাথদাস, রামানন্দ রায়, শক্ষর ঘোষ, স্থলোচন ও হরিদাস দিক্ষের পদ পদক্ষনতক্র ও গৌরপদতরক্ষিণীতে ধৃত হইয়াছে বা অভ্যাভ্য বৈষণ্ধর প্রত্মে উলিখিত হইয়াছে। আমি এখানে কেবল প্রথমে উলিখিত নরহরি প্রভৃতি নয় জন পদক্রার গৌর-পদ-সম্বন্ধে আলোচনা করিব; কেন-না উহাঙাই পদক্রাদের মধ্যে প্রাধাভ্য লাভ করিয়াছিলেন এবং উহারা যে সব দৃষ্ট ঘটনা-সম্বন্ধে পদ লিখিতেছেন তাহাদের স্পষ্ট প্রমাণ আছে; কিন্তু অভ্যাভ্য লেখক দৃষ্ট ঘটনা-সম্বন্ধে লিখিতেছেন কি না তাহা নিঃসন্দিগ্ধভাবে জানা যায় না।

নরহরি প্রভৃতির পদের মধ্যে ঘটনা-বর্ণনা অপেক্ষা শ্রীটেতত্তের রূপ-ও ভাব-বর্ণনার দিকে অধিক কৌক দেখা যায়। তথাপি যে সামাত্ত সামাত্ত ঘটনার ইপ্লিত আমরা পদগুলির মধ্যে পাই সেগুলির ঐতিহাসিক মূল্য খুব বেশী, কেন-না ইহারা প্রত্যক্ষদশীর রচনা। উপরস্ত কয়েকটি পদের মধ্যে শ্রীটেতত্তের ভাবজীবনের এমন তথ্য পাওয়া যায় যাহা কোন জীবনচরিতে বর্ণিত হয় নাই। সমসাময়িক পদকর্তাদের ভাবোচ্ছাসও ঐতিহাসিকের নিকট তুচ্ছ নহে, কেন-না উহা হইতে গৌড়ীয় বৈশ্ববধর্ষের উহপত্তি ও বিকাশের বিবরণ পাওয়া যায়।

## গৌড়ীয় পদকর্তাদের সহিত রন্দাবনের গোস্বামীদের পার্থক্য

ইহাদের পদ পড়িয়া বেশ বুঝা যায় যে বৃন্দাবনে বসিয়া পাঁচগোস্বামী ১ ও কুল্দাস কবিরাজ জীচৈতভার সাধনা ও ধর্মমতের যে ব্যাখা

১ উক্ত পদক্রতাদের পরিচয় গ্রন্থতি "বীতৈতাক্তর সমসাময়িক পরিকরবৃদ্দ" অব্যায়ে এইবা।

২ সনাতন, কপ, ভীব, গোগান ভট, রখুনাখণার ও রখুনাথ ভটকে ছব গোখামী বলা হয়। কিন্তু পোগোল গোগামী কোন প্রস্থ লেখেন নাই বলিয়া আমি গোগানে লেখক-হিসাবে গোখামীদের কথা ব্যবহাছি দেখানে কথ্যোক্ত গাঁচ জনকে গোগামী বলিয়া উল্লেখ করিয়াছি।



করিয়াছেন, এবং যাহা জীনিবাস আচার্য্য ও নরোত্তম ঠাকুরের প্রচারের ফলে এখন বাঙ্গালার অধিকাংশ বৈক্ষব মানিতেছেন, তাহা নবদীপ হইতে উত্তত আদিম মত নছে। গোপামীদের শান্ত্র- ও অনুভব-অনুসারে শ্রীচৈতত্তার ভাবকে আদর্শ করিয়া শ্রীকৃষ্ণের উপাসনা করিতে হইবে। আর সমসাময়িক পদকর্তাদের মতে বিশ্বস্থরই যথন ঐক্সঞ্জ, তথন তাঁহাকেই স্থা বা মধুরভাবে ভজন করিতে হইবে। গৌড়দেশে রচিত পদ ও জাবনীতে (যথা-মুরারি কবিকর্ণপূর, বৃন্দাবনদাস, লোচন ও জয়ানন্দের চৈত্যুচরিতে ) নবদ্বীপ-লালারই প্রাধান্য—নবদ্বীপের গৌরাক্সই তাঁহাদের উপাস্ত : তাঁহারা কেহই সেই জন্ম ঐতিভিন্তলীলার শেষ দ্বাদশ বংসরের বিরহোগ্রাদ বিস্তৃতভাবে বর্ণনা করেন নাই। আর বুন্দাবনবাদী সনাতন, শীরূপ ও রখুনাথদাসের স্তব ও মঙ্গলাচরণ-শ্লোকে এবং কৃঞ্চদাস কবিরাজের শ্রীচৈত গুচরিতামূতে নালাচল-লালার, বিশেষতঃ ভাবোন্মাদের, প্রাধান্য। এক কথায় বলিতে গেলে গোড়ে রচিত পদে ও গ্রন্থে শ্রীগোরাঙ্গ উপেয় এবং বৃন্দাবনে রাটত শ্লোকে ও গ্রন্থে ত্রীচৈতন্য উপায় মাত্র। এই সূত্রটি বিভিন্ন পদকর্তার পদ-আলোচনার সময় দৃষ্টান্ত-দারা ব্যাখ্যা করিব।

বুন্দাবনে উদ্ভূত মতের সহিত গৌড়দেশে জাত মতবাদের পার্থকার বুনিতে হইলে স্মরণ রাখা প্রয়োজন যে মুরারি কবিকর্ণপূর, বুন্দাবনদাস, জয়ানন্দ ও লোচনের জীবনীগ্রন্থে ছয় গোস্থামীর কথা নাই। ইঁহারা সকলেই রূপসনাতনের নাম করিয়াছেন। কিন্তু রঘুনাথ ভট্ট, গোপাল ভট্ট ও শ্রীজ্ঞাব-সম্বন্ধে কোন তথা দেন নাই ও ইঁহাদিগের বন্দনা করেন নাই। মুরারি বালক রঘুনাথ ভট্টের প্রতি শ্রীচৈতন্মের রূপার কথা উল্লেখ করিয়াছেন (৪০০০)। কবিকর্ণপূর রঘুনাথদাসের বৈরাগ্যের কথা শ্রীচৈতন্মচন্দ্রোদয় নাটকে (১০০০-৪, বহরমপুর সং) উল্লেখ করিয়াছেন।

১ পৌরসংগাদেশদীলিকায় দেখা যায় যে নবছীপ-লীলার সজিগণ স্থা ও স্থী, আর গাঁহারা বৃন্ধাবনে য়াইয় ভলন করিয়াছেন গাঁহারা মঞ্জী।



### শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

#### নরহরি সরকার

নরহরি সরকার ঠাকুরই যে সর্ববিপ্রথমে গৌরগীতি রচনা করেন তাহা অহাতম সমসাময়িক পদকর্তা বাহু ঘোষের নিম্নলিখিত উক্তি হইতে বুঝা যায়।—

## শ্রীসরকার ঠাকুরের পদায়ত পানে। পভা প্রকাশিব বলি ইচ্ছা কৈল মনে॥

লোচনের ঐতিচতভামকল ছাড়া অভ কোন চরিতগ্রন্থে নবদ্বাপ-লীলা-বর্ণনা-প্রসঙ্গে নরহরির নাম নাই। মুরারি গুপু নরহরির নাম প্রথম বার উল্লেখ করিয়াছেন—চতুর্থ প্রক্রমে। এক বার "গগুন্থিতা ঐরঘুনন্দনাদয়ো গৌরাক্ষভাবেন বিভাবিতান্তরাঃ" (৪।১।৫) বলিয়া পরে অন্ধৈতের সহিত গৌড়ীয় ভক্তগণের নীলাচল-গমন-প্রসঙ্গে "ঐমুকুন্দ-নরহরি চিরঞ্জীব-স্থলোচনাঃ" (৪।১৭) ও প্রভৃতি যাত্রীদের মধ্যে নরহরির নাম স্পান্ট করিয়া লিখিয়াছেন। কবিকর্ণপূরের মহাকাব্যে নরহরির নামটির পর্যন্ত উল্লেখ নাই। ঐ কবি ঐতিচতভাচক্রোদেয় নাটকে লিখিয়াছেন—

ততন্তেষ্ গৌড়ীয়াঃ প্রিয়া গৌড়ীয়ানাং মধ্যে যেহতিপ্রিয়াঃ শতশো দৃষ্টবন্তন্তেহপি শুভাদৃষ্টবন্তো যথামী। নরহরিরঘূনন্দনপ্রধানাঃ কতিচন থগুভূবোহপ্যথগুভাগ্যাঃ প্রথমমিমমদৃষ্টবন্ত এতে প্রতিশরদং পুরুষোত্তমং লভন্তে। ১।১

এই উক্তি হইতে কেহ কেহ মনে করেন যে নরহরি প্রভৃতি শীখণ্ডবাসী ভক্তগণ পূর্বের শীচৈতভাকে দর্শন করেন নাই,—এই প্রথম দেখিলেন। শীযুক্ত মণীক্রচন্দ্র রায় মহাশয় "শতশঃ" শব্দটি শত শত ব্যক্তি অর্থে ব্যাখ্যা না করিয়া শত শত বার অর্থে ধরিয়াছেন এবং "প্রথমন্" শব্দটি ছাড়িয়া দিয়াছেন। তিনি বলেন, "প্রথম দর্শনের সময়-নির্দ্ধারণের পক্ষে ইহা প্রমাণ-স্বরূপ নহে এবং গ্রন্থকারের সে উদ্দেশ্যও এথানে ব্যক্ত হয় নাই" (শ্রীগৌরাঙ্গমাধুরী পত্রিকা, ২য় বর্ষ, চৈত্র, পূত ২৮২)। তাঁহার এ ব্যাখ্যা সঙ্গত মনে হয়। "প্রথমন্" শব্দটিকে কালবাচক না ধরিয়া



#### সমসাময়িক পদকর্ত্তাদের চোথে খ্রীচৈতত্ত

পুরুষোত্তমের বিশেষণ বলিয়া ধরিতে হইবে। তাহা হইলে অর্থ হয় এই যে নরহরি প্রভৃতি শ্রীচৈতভাকে প্রথম ব: প্রাঠ পুরুষোত্তম মনে করিতেন।

বৃন্দাবনদাস ঐতিচতগুভাগবতে এক বারও নরহরির নাম করেন নাই। বৃন্দাবনদাস ঐতিগারাঙ্গের নাগরভাবের উপাসনাকে অসঞ্চত ও অশাস্ত্রীয় বিবেচনা করিতেন বলিয়া নাগরভাবের প্রবর্ত্তক নরহরির নাম উল্লেখ করেন নাই। কোন কোন ভক্ত বলেন যে তিনি—

> ছত্র ধরিলেন শিরে নিত্যানন্দ রায়। কোন কোন ভাগ্যবান্ চামর চুলায়॥

এই পয়ারে প্রকারান্তরে সরকার ঠাকুরের উল্লেখ করিয়াছেন। কিন্তু এ স্থলে নরহরি সরকার ঠাকুরকেই যে ইন্সিতে উল্লেখ করা হইয়াছে তাহা মনে করিবার কোন সম্বত কারণ দেখি না, কেন-না ঐ পদ মুরারি গুপ্তের অনুবাদ মাত্র। মুরারি লিখিয়াছেন—

নিত্যানন্দো মহাতেজাশ্চতং শিরস্থারয়ৎ।
গদাধরশ্চ তামূলং দদাতি শ্রীমুখোপরি॥
কেচিৎ সেবস্থে তং দেবং চামরব্যজনাদিভিঃ।

2132130-36

লোচনের চৈত্তমঙ্গল ব্যতীত অভাত জীবনচরিতে নরহরির নাম না পাইয়া মহামহোপাধ্যায় হরপ্রসাদ শান্তী মহাশয় লিথিয়াছেন—

"Shortly after Chaitanya's death, the headship of the Church fell to Nityananda and the personal followers of Chaitanya were at a discount. The standard works were all composed by men belonging to the dominant party; and

১ নাটকের দশমাকে আছে যে এক উড়িয়া অমাতা শিবানল সেনকে জিলাসা করিলেন, "অগলাখ-হৈতললোঃ কো মহান্ঃ" শিবানল বলিলেন, "মম তু কুক্তৈতক এব মহান্।"

২ জগম্বজু ভত্ত গৌরপদতর ক্লিটার উপক্রমণিকার ১০১ পৃঠার ঐরপ মত ব্যক্ত করিয়াছেন।

this party was so bold as to ignore the existence of venerable followers of Chaitanya like Narahari Sarkar" (Calcutta Review, 1898, pp. 79-80).

এই অনুমান যথার্থ বলিয়া মনে হয় না, কেন-না মুরারি গুপ্ত ও কবিকর্ণপুর ঐতিচতগুশাখাভুক্ত। তাহারাও নবদ্বাপ-লালা-বর্ণনা-উপলক্ষ্যে নরহরির নাম করেন নাই।

শীচৈতত্তের জীবনীতে নরহরির কথা বিশেষ না থাকিলেও, সমসাময়িক পদকর্ত্তাদের পদে তাঁহার কথা আছে; যেমন শিবানন্দ সেন লিখিয়াছেন—

> ব্রজরস গায়ত নরহরি সঙ্গে। মুকুন্দ মুরারি বাস্থ নাচত রঙ্গে॥

> > —ভক্তিরহাকর, পৃ° ৯৪৪-৪৫

বাস্থ ঘোষ বলেন-

কাঁচা-কাক্ষন মণি গোরারূপ তাহে জিনি ডগমগি প্রেমের তরক। ও নব-কুত্ম-দাম গলে দোলে অনুপাম হিলন নরহরি-অক্স॥

—গৌরপদতরন্দিণী, : য় সং, পু<sup>া</sup> ১৮০

গোবিন্দ ঘোষ বলেন-

ভোজন সমাপি গোরা, করিলেন আচমন, অবৈত তামূল দিল মুখে।
নরহরি পাশে থাকি, তিন রূপ নিরখিছে, চামর চুলায় অঙ্গে সুখে॥
— ঐ, ১ম সং, পৃ° ২৪০

১৫৭৬ খুফীব্দে লেখা গৌরগণোদ্দেশ-দীপিকায় নরহরিকে "প্রভাঃ প্রিয়ঃ" বলিয়া "মধুমতী"-তত্ত্বরূপে নিরূপিত করা হইয়াছে (১৭৭ শ্লোক)। এই সব দেখিয়া সিদ্ধান্ত করা যাইতেছে যে বিশ্বস্তবের পরিকরদের মধ্যে প্রাধান্ত লাভ করেন নাই বলিয়াই মুরারি ও কবিকর্ণপুর ঐাচৈতন্তের



#### সমসাময়িক পদকর্তাদের চোথে এটেচতত

নবদ্বীপ-লীলা-বর্ণনায় নরহরির নাম উল্লেখ করেন নাই; কিন্তু তিনি গান গাহিয়া ও সেবা করিয়া প্রভুর প্রিয় হইয়াছিলেন।

নরহরি বিশ্বস্তর অপেক্ষা বয়সে ছোট কিংবা বড়, সে সম্বন্ধে লোচন কোন কথা লেখেন নাই। গৌরগুণানন্দ ঠাকুর মহাশয় "শ্রীখণ্ডের প্রাচীন বৈষ্ণব" নামক গ্রন্থে লিখিয়াছেন—"আমরা গুরুপরম্পরা শুনিয়া আসিতেছি যে ঠাকুর নরহরি শ্রীমন্মহাপ্রভুর আবির্ভাব-সময়ের ৮া৫ বৎসর পূর্বের অবতীর্ণ হয়েন" (পৃত ২-৩)। কিন্তু নরহরির জাতুপ্পুত্র রঘুনন্দনের শিশ্র রায়শেখর লিখিয়াছেন—

গৌরাক্স জন্মের আগে, বিবিধ রাগিণী রাগে, ব্রজরস করিলেন গান।
হেন নরছরি-সন্ধ, পাঞা পছ শ্রীগৌরান্ধ, বড় হুথে জুড়াইলা প্রাণ॥
—গৌরণদতরন্ধিণী, পৃত ৪৫৬

গৌরাঙ্গের জন্মের আগে যিনি ব্রজরস গান করিলেন তিনি ঐাচৈতন্ত অপেকা অস্ততঃ যোল বৎসরের বড় না হইয়া পারেন না।

'বিষ্ণুপ্রিয়া" পত্রিকায় (২য় বর্ষ, তৃতীয় সংখ্যা, পৃত ৫৮) ও "প্রীথণ্ডের প্রাচীন বৈষ্ণব" প্রন্থে (পৃত ১৫) নরহরিকে আকুমার ব্রহ্মচারী বলা হইয়াছে। কিন্তু ১৬৭৫ খুফীবেদ ভরত মল্লিক "চক্রপ্রভায়" (পৃত ৩৫৫) লিখিয়াছেন যে নরহরি গরুড়ধ্বজ্ব সেনের কল্যাকে বিবাহ করেন এবং তাঁহার চারটি কল্যা হয়। ঐ কল্যা-চতৃষ্টয়ের যথাক্রমে মালকবাসী তৃপ্রভাত সেন, থানাগ্রামবাদী মাধব মল্লিক ও বিষ্ণু মল্লিক এবং বরাহনগরবাসী রমাকান্ত সেনের সঙ্গে বিবাহ হয়।

শ্রীরূপ ও রখুনাথদাস গোস্বামী সংস্কৃত স্তবে যেমন নীলাগলের শ্রীচৈতত্ত্বের ভাবাস্থাদনের পরিচয় দিয়াছেন ও তাঁহার রূপ বর্ণনা করিয়া স্ত্রতি করিয়াছেন, নরহরি সরকারও তেমনি বন্ধীপ-লালা দেখিয়া লিথিয়াছেন—

> গৌরাঙ্গ ঠেকিলা পাকে। ভাবের আবেশে রাধা রাধা বলি ডাকে॥



#### শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

স্থরধুনী দেখি পছ যমুনার ভনে।
ফুলবন দেখি বৃন্দাবন পড়ে মনে॥
পূরব আবেশেতে ত্রিভঙ্গ হৈয়া রহে।
পীতবসন আর সে মুবলী চাহে॥
প্রিয় গদাধরে ধরিয়া নিজ কোলে।
কোথা ছিলা কোথা ছিলা গদ্গদ বোলে।
ভাব বুঝি পণ্ডিত রহয়ে বাম পাশে।
না বুঝায়ে এহ রক্ষ নরহরিদাসে॥

—ভক্তিরত্বাকর, পৃ<sup>০</sup> ৯২৪

এই পদটি গৌরপদতরিদ্বনীর দ্বিতীয় সংস্করণের সূচীপত্রে ভ্রম কমে নরহরি চক্রবর্ত্তীতে আরোপিত হইয়াছে, কিন্তু এটি যে সরকার ঠাকুরের রচনা তাহা নরহরি চক্রবর্ত্তী নিজেই বলিয়াছেন। চক্রবর্ত্তী পদটি তুলিয়া তলায় লিখিয়াছেন, "শ্রীনরহরি-সরকার ঠকুরস্থ গীতমিদম্।"

স্থপুনা দেখিয়া যমুনা ভ্রম হওয়ার কথা চৈত্যচক্রোদয় নাটকে (৫।৯-১৪) ও কৃষ্ণদাস কবিরাজের শ্রীতৈত্যচরিতামৃতে (২।৩)২৪) আছে। ফুলবন দেখিয়া বৃন্দাবন মনে পড়ার কথা শ্রীরূপ গোস্বামী লিখিয়াছেন।—

> পয়োরাশেস্তীরে ক্রছপরনালিকলন্যা মৃত্রু ন্দারণ্যস্মরণ-জনিত-প্রেমবিবশঃ। কচিৎ ক্ঞার্তিপ্রচলরসনো ভক্তিরসিকঃ স চৈত্যঃ কিং মে পুনরপি দুশোর্যাস্থতি পদম্॥

> > —স্তবমালা, চৈতগ্যাফক, ১া৬

কুঞ্চদাস কবিরাজ এই শ্লোকের ভাব লইয়া অন্তালীলার পঞ্চদশ পরিচ্ছেদ লিখিয়াছেন। তিনি বলেন—

> একদিন মহাপ্রভূ সমুদ্রতীরে যাইতে। পুপ্রের উভান তাঁহা দেখি আচ্ছিতে॥



## সমসাময়িক পদকর্তাদের চোথে ঐতিচতত বুন্দাবন ভ্রমে তাঁহা পশিল ধাইয়া। প্রেমাবেশে বুলে তাঁহা কৃষ্ণ-অন্বেষিয়া॥

- =।>७।२७-२१

নরহরি সরকার ও শ্রীরূপ শ্রীচৈতত্তের একইরূপ ভাষাবেশে ভ্রম বর্ণনা করিয়াছেন। একজন স্থরধূনী-তারে অপরে সমৃদ্রের তারে এই প্রকার ভ্রম দেখিয়াছিলেন। কিন্তু এই ভ্রমের ব্যাখ্যায় উভয়ের মধ্যে ঘোরতর পার্থক্য। শ্রীরূপ ও তদমুগত কবিরাজ গোস্বামীর মতে শ্রীচৈতত্ত ফুলবনে কৃষণকে অন্বেষণ করিতেছিলেন, আর নরহরি সরকার বলেন যে বিশ্বস্তর—

> পূরব আবেশেতে ত্রিভঙ্গ হৈয়া রছে। পীতবসন আর সে মুরলী চাহে।

নরহরি সরকার-বর্ণিত ভাবটি শিবানন্দ সেন আরও স্থন্দররূপে ফুটাইয়াছেন।—

সোনার বরণ গোরা প্রেম বিনোদিয়া।
প্রেমজলে ভাসাওল নগর নদীয়া॥
পরিসর বুক বাহি পড়ে প্রেমধারা।
নাহি জানে দিবানিশি প্রেমে মাতোয়ারা॥
গোবিন্দের অন্দে পত্ত অন্ধ হেলাইয়া।
রন্দাবন-গুণ শুনে মগন হইয়া॥
রাধা রাধা বলি পত্ত পড়ে মূরছিয়া।
শিবানন্দ কাঁদে পত্ত র ভাব না বুঝিয়া॥

—লোরপদতরঞ্জিণী, ২য় সং, পৃ<sup>০</sup> ১৮০

এই সমস্ত পদকর্তাদের অমুভব-অমুসারে ।বশ্বস্তরই শ্রীকৃষণ; যখন বৃন্দাবনের কথা তাঁহার মনে পড়ে তখন তিনি রাধার জন্ম আকুল হন; রাধাভাবভাবিত গদাধরকে দেখিয়া কথঞিৎ সান্তনা পান। বাহ্ ঘোষেরও বিশ্বস্থরের লীলা-আস্বাদন ঐরূপ—

#### শ্রীচৈতন্যচরিতের উপাদান

আরে মোর গোরা দ্বিজ্বমণি।
রাধা রাধা বলি কাঁদে লোটায় ধরণী॥
রাধা নাম জপে গোরা পরম যতনে।
কত হরধুনী বহে অরুণ-নয়নে॥
কণে কণে গোরা-অঙ্গ ভূমে গড়ি যায়।
রাধা নাম বলি কণে কণে মুরছায়।
পুলকে পুরল তন্ম গদ্গদ বোল।
বাহ্য কহে গোরা কেনে এত উতরোল॥

—গৌরপদতরঞ্বিণী, ২য় সং, পৃ<sup>০</sup> ১৯১

মুরারি গুপ্ত লিখিয়াছেন—

গদাধর অঙ্গে পত্ত অঙ্গ মিলাইয়া। বুন্দাবন-গুণ গান বিভোর হইয়া।

—ভক্তিরত্নাকর, পৃ<sup>০</sup> ৯২২

এই ভাবের অনুরূপ বর্ণনা মুরারির কড়চায় আছে (২।৩)১০-১৭)। সেধানেও গদাধরকে রাধার সঙ্গে তুলনা করা হইয়াছে।

নরহরি, মুরারি, শিবানন্দ প্রভৃতি পদকর্তাদের বর্ণনাভঙ্গী দেখিয়া মনে হয় ঐতিচতত্যের ধর্মমতের প্রথম অভিব্যক্তি হইয়াছিল গৌর-গদাধরের প্রতি আমুগত্যে। গৌরীদাস পণ্ডিতের ত্যায় নিত্যানন্দ প্রভুর ভক্তেরা গৌরনিত্যানন্দের উপাসনা প্রবর্তন করেন। অবৈত-ভক্তদের মধ্যে একদল ব্যক্তি ঐতিচতত্যকে না মানিয়া অবৈতকেই স্বতন্ত ঈশ্বর বলিয়া ঘোষণা করেন। বুন্দাবনদাস ইহাদিগকে লক্ষ্য করিয়া লিখিয়াছেন—

অবৈতরে ভঞ্জে, গৌরচন্দ্রে করে হেলা। পুত্র হউ অবৈতের, তভু তিঁহ গেলা।

-181800

কবিকর্ণপূর গৌরগণোদ্দেশ-দীপিকায় (১৭) লিখিয়াছেন যে স্বরূপ-দামোদর গৌরাস্প, নিত্যানন্দ, অবৈত, গদাধর ও শ্রীবাসকে পঞ্চতত্ত বলিয়া



#### সমসাময়িক পদকর্ত্তাদের চোথে শ্রীচৈততা

নিরূপণ করেন। এই পঞ্চতত্ব-নিরূপণের মধ্যে অবৈত ও শ্রীবাসের দাবী স্থাকার করিয়া গোড়ায় বৈষ্ণব সম্প্রদায়ে সংহতি আনিবার চেফা দেখা যায়। সনাতন গোস্থামী বৈষ্ণবতোষণীর মঙ্গলাচরণে পঞ্চতত্ত্বের উল্লেখনা করিলেও, একসঙ্গে শ্রীচৈততা ব্যতীত অত চার জনের নাম করিয়াছেন। তিনি প্রথমে মদনগোপাল, পরে গোবিন্দ, শ্রীকৃষণ্টেততা, মাধবেন্দ্রপুরী, শ্রীধরস্বামী, সার্বভৌম ভট্টাচার্য্য, বিভাবাচম্পতি, বিভাভূষণ, শ্রীপরমানন্দ ভট্টাচার্য্য, রামভত্র এবং বাণীবিলাসকে বন্দনা করিয়াছেন। এই সব বন্দনার পর তিনি লিখিয়াছেন—

## ন্যামি শ্রীমদক্ষৈতাচার্যাং শ্রীবাসপণ্ডিতন্। নিত্যানন্দাবধৃতঞ্জ শ্রীগদাধরপণ্ডিতম্॥

সমসাময়িক পদকর্তাদের পদ হইতে ঐতিচততের ধর্ম্মের যে রূপটি পাওয়া যায় তাহার সম্বন্ধে আর একটি কথা বলা প্রয়োজন। বৃন্দাবনের ও গৌড়ের উভয় দলেরই ভক্তেরা স্বাকার করিতেন যে ঐতিচতত স্বয়ং ঐকৃষ্ণ, তবে বৃন্দাবনের ভক্তেরা তাহাকে ঐরাধার ভাব-আস্বাদনের জত অবতার্ণ ঐকৃষ্ণরূপে মানিতেন বলিয়া তাহাদের লেখায় ঐতিচততের রাধাভাব-ভাবিত বিরহের কথাই বেশী। গৌড়ীয় ভক্তেরা যে ঐতিচততের রাধাভাবের বিরহ স্বাকার করিতেন না, তাহা নহে। নরহরি সরকার লিখিয়াছেন—

গৌরস্কর মোর।

কি লাগি একলে বসিয়া বিরলে, নয়নে গলয়ে লোর॥

হরি-অনুরাগে, আকুল অন্তর, গদ্গদ মৃত্ন কহে।

সকলি অকাজ করে মনসিজ এত কি পরাণে সহে॥

অবলা নারীরে করে জরজর, বুকের মাঝারে পশি।

কহিতে এছন, পূরব বচন, অবনত মুখশশী॥

প্রলাপের পারা, কিবা কহে গোরা, মরম কেহ না জানে।

পূরব চরিত সদা বিভাসিত, দাস নরহরি ভণে॥

—গৌরপদতরজিণী, পৃত্ব ১৮৭-৮৮

#### শ্রীতৈতন্যচরিতের উপাদান

42

নরহরির পদ ও প্রীরূপ গোস্বামীর পূর্ব্বান্ধৃত শ্লোক মিলাইয়া পড়িলে বুঝা যায় যে নবদ্বাপে বিশ্বন্তর কৃষ্ণভাবে এবং নালাচলে প্রীচৈত্ত্য কথন কৃষ্ণভাবে ও কথন রাধাভাবে ভাবিত হইতেন। নরহরি, শিবানন্দ, বাস্থ ঘোষ প্রভৃতি ভক্তেরা তাঁহার প্রীকৃষ্ণ-ভাবকে অবলম্বন করিয়া ও নিজেরা গোরনাগরী-ভাবে আবিন্ট হইয়া তাঁহার মাধুর্য্য আস্বাদন করিয়াছেন; আর বুন্দাবনবাসী ভক্তগণ তাঁহার রাধা-ভাবেকে অবলম্বন করিয়া ও আপনাদিগকে মঞ্জরী-ভাবে ভাবিত করিয়া প্রীকৃষ্ণের উপাসনা করিয়াছেন।

#### গোরনাগরী-ভাব

গৌরনাগরী-রূপে উপাসনার প্রবর্তক খুব সম্ভব নরহরি সরকার। তিনি লিখিয়াছেন—

মো মেনে মন্তু গোরাচাঁদেরে দেখিয়া।
অপরূপ রূপ কাঁচা-কাঞ্চন জ্বিনিয়া॥
কণে শীত্রগতি চলে মারে মালসাট।
কণে থির হৈয়া চলে সুরধুনী-পাট॥
অরুণ-নয়ানে ঘন চাহে অনিবার।
হানিল নয়ান-বাণ হিয়ার মাঝার॥
আজাত্মলন্ধিত ভুজ দোলে ছই দিগে।
যুবতী যৌবন দিতে চাহে অত্মরাগে॥
কণে মন্দ মন্দ হাসে কণে উতরোল।
না বুঝিয়া নরহরি হইল বিহেবাল॥

—গৌরপদতরঞ্বিণী, পু<sup>০</sup> ১১০

এই ভাবের পদ মুরারি গুপ্ত এবং বাস্থ্যোয়ও লিখিয়াছেন। মুরারি গুপ্ত বলেন—

সথি হে কেন গোরা নিঠুরাই মোহে।
জগতে করিল দয়া দিয়া সেই পদছায়া
বঞ্চল এ অভাগীরে কাহে।



## সমসাময়িক পদকর্তাদের চোখে শ্রীচৈত্ত

গৌর-প্রেমে সঁপি প্রাণ ক্সিউ করে আনচান

স্থির হৈয়া রইতে নারি ঘরে।

আগে যদি জানিতাম পীরীতি না করিতাম

যাচিঞা না দিতু প্রাণ পরে।

আমি ঝুরি যার তবে সে যদি না চায় ফিরে

এমন পীরীতে কিবা স্থা।

চাতক সলিল চাহে বজর ক্ষেপিলে তাহে

यात्र कांत्रि यात्र किना तुक ॥

মুরারি গুপত কয়

পীরীতি সহজ নয়

বিশেষে গৌরান্ধ-প্রেমের ছালা।

কুল মান সব ছাড়

চরণ আশ্রয় কর

তবে সে পাইবা শচীর বালা।

—এ, পৃ° ১১৪

গোপীরা কৃষ্ণের সহিত প্রেম করিয়া প্রতিদান পাইয়াছিলেন। কিন্তু নদীয়া-নাগরীরা যদিও গৌরান্ধের রূপে-গুণে আরুষ্ট, তথাপি তিনি তাহাদের ভাবের প্রতিদান দেন না। নদীয়া-নাগরী-ভাবের এই প্রথম রূপ। বাস্থ ঘোষও লিখিয়াছেন—

> যখন দেখিতু গোরাচাঁদে। তথনি পড়িতু প্রেমফাঁদে॥ তমু-মন তাঁহারে সঁপিলু। কুল-ভয়ে তিলাঞ্চলি দিলুঁ॥ গোরা-বিন্মু না রহে জীবন। গৌরান্স হইল প্রাণধন॥ ধৈরজ না বাঁধে মোর মনে। বাহুদেব ঘোষ রস জানে॥

— खे, मु<sup>0</sup> ১ . ४

নাগরীভাবের এই বিশুদ্ধ রূপকে কৃষ্ণলীলার পদের ধাঁচে সাঞ্চাইতে গিয়া পরবর্ত্তী কোন কোন লেখক শ্রীচৈতত্তের চরিত্রকে বিকৃত করিয়া আঁকিয়াছেন। যেমন কামুক লোকে অশ্লীল বই লিখিয়া অভ্যের নামে প্রকাশ করে, সেইরূপ কেহ কেহ আধুনিককালে অনেক নাগরীভাবের

### ৫৪ ত্রীচৈততাচরিতের উপাদান

পদ রচনা করিয়া নরছরি সরকার ও বাস্থ ঘোষের নামে চালাইয়া দিয়াছেন।

পূর্বেই নরহরি সরকারে আরোপিত শাশুড়ী, ননদ ও বধুর বিবল্লা হইয়া গৌরাপ্লদর্শনের পদটি প্রথম অধ্যায়ে উদ্ধৃত করিয়াছি। ঠিক ঐ ভাষায় সই বা ননদিনার সহিত রসিকতা করিয়া বা স্বামী, শশুর, শাশুড়ী এবং কখনও বা ননদিনীর প্রতি ক্রোধ করিয়া কোন নাগরীর উক্তিরপ পদ নরহরি সরকারের নামে গৌরপদতরঙ্গির নাগরীর উচ্ছাস-পর্যায় ৮৭ হইতে ১১০ ও ১২০ হইতে ১৮৭ পর্যায় সংখ্যায় ধৃত হইয়া মুদ্রিত হইয়াছে। ইহাদের মধ্যে আবার কয়েকটিতে স্বপ্লে সম্বোগের রসোদগার আছে।

"শ্রীখণ্ডের প্রাচীন বৈষ্ণব" গ্রন্থে যে পদগুলি নরহরি সরকার ঠাকুরের বলিয়া উদ্ধৃত হইয়াছে তাহার সব কয়টিই অকৃত্রিম মনে হয় না। নরহরির সাদা বাঙ্গালা ভাষার ছাপ নিম্নলিখিত পদে নাই বলিয়া আমার ধারণা।—

পতিক সোহাগ আগ সম লাগই

ধৈর্য ভেল উদাস।

নিশি দিশি গোই গোই কত রোয়ব

কহতঁহি নরহরিদাস॥ —পৃ০ ৩৭

নরহরি সরকারের কোন্ গদটি আসল আর কোন্টি নকল তাহা চিনিতে হইলে নিম্নলিখিত সূত্রগুলি মনে রাখা প্রয়োজন।—তিনি ব্রজবুলি ব্যবহার করেন নাই। অত্যন্ত সরল বাঙ্গালা ব্যবহার করিয়াছেন। তাহার পদে নরহরি চক্রবর্তীর পদের ভাষ উপমা ও অনুপ্রাসের বাহুলা নাই। তাহার পদে ছন্দঃপতন হয় নাই। সম্ভোগ বা উহার আনুষ্ঠিক বিষয়ে তিনি পদ লেখেন নাই বলিয়া মনে হয়।

## মুরারি ওপ্রের পদ

মুরারি গুপ্তের নামে নয়ট পদ গৌরপদতরজিণীতে ধৃত হইয়াছে। তন্মধ্যে একটির ভণিতা দাস্থ মুরারি (২য় সং, পৃ<sup>০</sup>৩০)। তাহাতে



#### সমসাময়িক পদকর্তাদের চোথে ঐতিচতভ

আছে যে নিতাই, গৌর বাজারে নাচিতেছেন, কুলবধ্রা বাজারের পথ দিয়া জল ভরিতে যাইতেছেন ও জল ভরা ছাড়িয়া বাজারে দাঁড়াইয়া নৃত্য দেখিতেছেন। এই পদ মুরারি গুপ্তের লেখা নয় বলিয়া আমার বিশাস। ৫।৩।৯০ সংখ্যক পদটি কোথাও মুরারির ভণিতায়, কোথাও বা বাস্থ ঘোষের ভণিতায় চলে। বাকী ৭টির মধ্যে:টি অনুরাগের পদ; আর ৫টিতে যে সব ঘটনার ইন্ধিত আছে তাহা মুরারি গুপ্ত তাহার কড়চায় লিখিয়াছেন বলিয়া তাহাতে কোন নৃতন তথ্য পাওয়া যায় না।

#### शिवानन रमरनत शम

শিবানন্দ সেনের ছয়টি পদ গৌরপদতরক্ষিণীতে আছে। সব কয়টিই অকৃত্রিম। মুরারি গুপু ও কবিকর্ণপূর (মহাকাব্যে) জগাই-মাধাই উদ্ধারের কাহিনী লেখেন নাই। কিন্তু কবিকর্ণপূরের পিতা শিবানন্দ ১৷৩৷২৫ সংখ্যক পদে লিখিয়াছেন—

জগাই মাধাই ছিল তারা প্রেমে উদ্ধারিল হেন জীবে বিলাওল দয়া।

৫।৩।৫২ পদটি শিবানন্দ যেমন ভাবে লিখিয়াছেন তাহাতে দৃঢ় ধারণা জন্মে যে শ্রীচৈতগ্র সন্নাসের পর শান্তিপুর হইতে যথন নীলাচলে যাত্রা করেন তথন তিনি উপস্থিত ছিলেন—

> গৌড়ীয় যাত্রিক-সনে বৎসরান্তে দরশনে কহিলা যাইতে নীলাচলে। কিরূপে সহিয়া রব সম্বৎসর কাটাইব যুগ শত জ্ঞান করি তিলে।

—পৃ<sup>০</sup> ২৪৯

কৃষ্ণদাস কবিরাজ লিখিয়াছেন যে এটিচতত্ত যখন নীলাচল হইতে বৃন্দাবন যাইবেন বলিয়া গৌড়ে আসেন তখন গদাধর, পণ্ডিত গোণীনাথের



#### শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

সেবা ছাড়িয়া, তাঁহার সঙ্গে আসিতে চাহিয়াছিলেন। এ কথা অভ্য কোন চরিতকার বলেন নাই; কিন্তু শিবানন্দ সেন একটি পদে ইহার উল্লেখ করিয়াছেন : যথা-

> হেন সে গৌরাঙ্গচন্দ্রে যাহার পিরীতি। গদাধর-প্রাণনাথ যাহে লাগে খ্যাতি ॥ গৌর-গত-প্রাণ প্রেম কে বুঝিতে পারে। ক্ষেত্র-বাস কৃষ্ণ-সেবা যার লাগি ছাডে ।

#### বান্ত ঘোষের পদ

বাস্তু ঘোষ ঐীচৈতন্য-সম্বন্ধে অনেকগুলি পদ লিখিয়াছেন। গৌর-পদতরঙ্গিণীতে তাঁহার নামে ১৩৭টি পদ ধৃত হইয়াছে। উহাদের মধ্যে কয়েকটিতে ঐতিহাসিক ঘটনার এত বেশী বিকৃত চিত্র আছে যে সেগুলিকে তাঁহার রচনা বলিয়া কিছতেই স্বীকার করা যায় না। এটিচতগ্য-ভাগবতের বর্ণনা দেখিয়া অনুমান হয় বাস্থু ঘোষ, গোবিন্দ ঘোষ ও মাধব ঘোষ—এই তিন ভাই গয়াপ্রত্যাগত বিশ্বস্তরের ভাব-প্রকাশ ও কীর্তনারম্ভ হইবার পরই নবদ্বীপে উপস্থিত হয়েন। খ্রীচৈতভাচরিতামতেও আছে-

> গোবিন্দ মাধব বাহুদেব তিন ভাই। যাঁ সবার কীর্ত্তনে নাচে গৌরাক্স নিতাই ॥

> > ->120120

#### इँहात প्रायुरे नीलाहरल गारेएक।

বান্থ ঘোষের ভায় শ্রীচৈতভের অন্তরপ্প সঞ্জী যে লিখিবেন শ্রীখণ্ডে নরহরি মহোৎসবের আয়োজন করিলে গৌরাক এবং "বাদশ গোপাল আর চৌষটা মহান্ত সাথ, আর ক্রমে ছয়টি গোসাই" (গৌরপদতরক্রিণী, প্ত ৩৫৩) উপস্থিত হইয়াছিলেন তাহা সম্ভব মনে হয় না; কেন-না ছয় গোসাই এককালে কোন সময়েই বৃন্দাবন ত্যাগ করেন নাই;

60



### সমসাময়িক পদকর্তাদের চোবে ত্রীচৈতত্ত

এবং তাঁহাদের মধ্যে কেহ কথনও প্রীগণ্ডে আসিয়াছিলেন বলিয়া কোন কিংবদন্তী পর্যান্ত নাই। সেইরূপ নিম্নলিখিত পদটিও তাঁহার দ্বারা লিখিত হইয়াছে বলিয়া মনে হয় না—

চল রে স্বরূপ চল যাই স্থরধুনী-জ্বল

এ সকল দেই ভাসাইয়া।
গোল যাক কুলমান আর না রাখিব প্রাণ
ভেজিব সলিলে কাঁপ দিয়া॥

— ঐ, পৃ<sup>০</sup> ১২৭

স্বরূপ-দামোদর প্রীচৈতত্যের নীলাচলের সঙ্গী;—যদি বাস্থু ঘোষ গঙ্গাভারের ঘটনার সহিত তাঁহার নাম একসঙ্গে যোগ করিতেন, তাহা হইলে
পুরুষোত্তম আচার্যা নাম লিখিতেন। আর একটি পদে (ঐ, পৃ° ১৮৬)
যমুনার তটে স্বরূপের সহিত প্রীচৈতত্যের কথোপকথন বর্ণিত হইয়াছে।
স্বরূপ শ্রীচৈতত্যের সঙ্গে বৃন্দাবনে যায়েন নাই। সেই জন্ম এই পদটিকেও
বাস্থু ঘোষের রচনা বলিয়া স্বীকার করা যায় না। সমসাময়িক লেখক
ভারাস্বাদন হিসাকেও যাহা ঘটে নাই বা ঘটা সম্বব নহে তাহা লিখেন না।

বাস্থ ঘোষের নামে এমন কয়েকটি পদ আছে যেগুলি দেখিলেই মনে হয় কৃষ্ণ-লীলার স্থপ্রসিদ্ধ পদ ভাঙ্গিয়া তাঁহার নামে চালাইয়া দেওয়া হইয়াছে; যথা—

নিশি-শেষে ছিমু ঘূমের ঘোরে।
গোর নাগর পরিরম্ভিল মোরে।
গণ্ডে কয়ল সোই চুম্বন-দান।
কয়ল অধরে অধর রস পান।
ভাত্তল নিদ নাগর চলি গেল।
অচেতনে ছিমু চেতনা ভেল।
লাজে তেয়াগিমু শ্যন-গেহ।
বাস্থ কহে তুয়া কপট লেহ।

— ঐ, পৃ<sup>০</sup> ১৩১

#### শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

no

সম্ভোগাত্মক নাগরীভাবের প্রাচীনত্ব-স্থাপনের জন্ম এইরূপ পদ বাস্থ ঘোষে আরোপিত হইয়াছে বলিয়া সন্দেহ হয়।

গৌরপদতরজিণীতে ধৃত হয় নাই বাস্থ ঘোষের এমন অনেক পদ ভক্তিবত্বাকরে আছে। মুন্সী আবছল করিম চট্টগ্রামে বাস্থ ঘোষকৃত শ্রীচৈতন্ম-সন্ন্যাসের এক পালাগানের বই আবিন্ধার করিয়াছেন। বাস্থ ঘোষ বিশ্বস্তরের জন্ম হইতে সন্ন্যাস পর্যান্ত ঘটনার উপর ধারাবাহিকভাবে পদ রচনা করিয়াছিলেন। সেই জন্মই কৃষণদাস কবিরাজ বলিয়াছেন—

কাষ্ঠ পাষাণ জবে যাহার শ্রবণে ॥

বাস্থ ঘোষ বিশ্বস্তরের বাল্যলীলা এমনভাবে বর্ণনা করিয়াছেন যে মনে হয় বিশ্বস্তর বুঝি ভূমিষ্ঠ হইয়াই বৈক্ষব-ভক্ত হইয়াছিলেন। রাধা-কৃষ্ণের চিত্রপট দেখিয়া ক্রন্দনের নির্ত্তি (ঐ, পৃ° ৪৫), বালকদের সাথে হরিবোল বলিয়া খেলা (ঐ, পৃ° ৪৪) প্রভৃতি ঘটনা তিনি বির্ত্ত করিয়াছেন। কিন্তু মুরারি বিশ্বস্তরকে আশৈশব জানিতেন; গয়া হইতে প্রত্যাবর্ত্তনের পূর্বের বিশ্বস্তরের এরূপ ভক্তিভাব তিনি বর্ণনা করেন নাই বলিয়া বাহ্ন ঘোষের ঐ বর্ণনাকে ঐতিহাসিক সত্যরূপে গ্রহণ করিতে পারিলাম না।

শ্রীবাসগৃহে বিশ্বস্তরের যে দিন অভিষেক হয়, সেই দিন হইতেই তাঁহার ভগবতা স্থাতিষ্ঠিত হইয়াছিল। অভিষেকের ঘটনা মুরারি (২।১২।২-১৭), কবিকর্ণপূর (মহাকাবা, ৫।৩৮, ১২৫), রুদ্দাবনদাস (মধ্য ৯-১০) প্রভৃতি সকল চরিতকারই লিখিয়াছেন। বাহ্য ঘোষও সে দিন ঘটনাস্থলে উপস্থিত ছিলেন। তাঁহার বর্ণনায় শচী- ও মালিনী-সম্বন্ধে কিছু নৃতন সংবাদ পাওয়া যায়।

তাত্বল ভক্ষণ করি বসিলা আসনে।
শচী দেবী আইলেন মালিনীর সনে॥
পঞ্চ দীপ জালি তেঁহ আরতি করিলা।
নিরক্ষন করি শিরে ধান্তদূর্ববা দিলা।

সমসাময়িক পদকর্ত্তাদের চোথে ঐতিচতত্ত ভক্তগণ করে সবে পুষ্পা-বরিষণ। অবৈত আচার্য্য দেই তুলসী চন্দন।

—લે, જુ<sup>⇒</sup> ১৫∘

অবৈত আচার্য্য কি ভাবে ঐ দিন বিশ্বস্তরকে পূজা করিয়াছিলেন তাহা গোবিন্দ ঘোষ বলিয়াছেন—

> সচন্দন তুলসীপত্র গোরার চরণে দিয়া আচার্য্য "কুঞায় নমঃ" বলে।

> > —এ, পৃ : a •

63

বৃন্দাবনদাস লিথিয়াছেন যে ঐ দিন বিশ্বস্তরকে
আদ্বৈত শ্রীবাস আদি যতেক প্রধান।
পড়িয়া পুরুষসূক্ত করায়েন স্নান॥

ভারপর

দশাক্ষর গোপাল মন্ত্র বিধিমতে। পূজা করি সভে স্তব লাগিলা পড়িতে॥

- (5" of, 2121222-20

যাঁহার। এটিতেন্মের স্বতন্ত মন্ত্র স্বীকার করেন না, তাঁহারা এই বর্ণনার উপর জ্বোর দিয়া বলেন যে যখন অন্তৈত প্রভৃতি ভক্তগণ মহাভিষেকের দিনে দশাক্ষর গোপাল মন্ত্রে তাঁহার পূজা করিয়াছিলেন, তখন এটিতেন্সের অন্য মন্ত্র মানা অশান্ত্রীয়।

গৌরাদাস পণ্ডিতের সঙ্গে বিশ্বস্তরের অন্তরক্ষতার কথা কোন চরিত-কার সবিশেষ বর্ণনা করেন নাই; অথন তিনি যে একজন প্রিয়পার্যদ ছিলেন তাহা বৈশ্ববন্দনা প্রভৃতি হইতে জানা যায়। বাস্থু ঘোষ ছইটি পদে গৌরীদাসের সঙ্গে বিশ্বস্তরের অন্তরক্ষতার পরিচয় দিয়াছেন (গৌরপদতরক্ষিণী, ১৮৭ পূ', ৪৯ ও ৫০ সংখ্যক পদ)। নিত্যানন্দ ও তাঁহার অন্তরক্ষ সন্ধারা গোপবেশ ধারণ করিয়া স্থ্যভাবে বিভোর থাকিতেন; অথচ কোন চরিতকার বিশ্বস্তরের স্থাভাবের কোন ঘটনা

#### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

40

বর্ণনা করেন নাই। পদকর্তাদের মধ্যে বাহ্ন ঘোষ (ঐ, ২১২ পূ°, ২৮ ও ২৯ সংখ্যক পদ), গোবিন্দ ঘোষ (১৮০ পূ°, ১০৫ সংখ্যক পদ) ও বংশীবদন (২১১ পূ°, ২৭ সংখ্যক পদ) ঐ সম্বন্ধে পদ লিখিয়াছেন। এরূপ পদের মধ্যে কিছু ঐতিহাসিক সত্য আছে—এগুলি নিছক ভাব-আস্থাদন নহে। নিছক ভাবাস্থাদন হইলে অভিরাম, গৌরীদাস প্রভৃতির স্থান বৈষ্ণব সমাজে এত উচ্চ হইত না। তাঁহারা শ্রীচৈতত্যের অন্তর্ম্প সঙ্গী ছিলেন বলিয়াই বৈষ্ণব সমাজে উচ্চ সম্মান পাইয়াছেন।

বাস্থ ঘোষের শ্রীচৈতত্তের সন্ন্যাস-বর্ণনা অত্যন্ত হৃদয়গ্রাহী। তাঁহার বর্ণিত প্রায় সমস্ত ঘটনাই চরিতকারগণ ব্যবহার করিয়াছেন। বাস্থ ঘোষ শ্রীচৈতত্তের গৃহত্যাগের পর বিষ্ণুপ্রিয়ার ছঃখ বর্ণনা করিয়া একটি পদ লিখিয়াছেন। উহাতে বিশ্বুপ্রিয়া বলিতেছেন—

> আর কে সহিবে আমার যৌবনের ভার। বিরহ-অনলে পুড়ি হব ছারখার॥

> > —এ, পৃ° ২৫৩

"যৌবনের ভার" বহিবার লোকের জন্ম কোন ভদ্রমহিলা ডাক ছাড়িয়া ক্রন্দন করেন না। হয় এই পদটি প্রক্রিপ্ত, না হয় ঘটনার বহু পরে বাস্তু ঘোষের কল্পনা-ছারা অনুরঞ্জিত।

কবিকর্ণপূর, রুন্দাবনদাস, জয়ানন্দ, রুঞ্দাস কবিরাজ প্রভৃতি চরিত-কারগণ সন্মাসী ঐতিচতত্যের নবদীপে পুনরাগমনের কথা লেখেন নাই। কিন্তু মুরারি (৪।১৪।৩-১১) বলেন যে তিনি একবার নবদ্বীপে আসিয়া-ছিলেন। লোচন ঐ অংশের ভাবানুবাদ করিয়াছেন।—

> মায়ের বচনে পুত্র গেলা নবছাপে। বারকোণা ঘাট নিজ বাড়ীর সমীপে।

> > —শেষ থণ্ড

বাহু ঘোষ ঐ ঘটনা-বর্ণনায় বলিয়াছেন---

আওল নদীয়ার লোক গৌরাঙ্গ দেখিতে। আনন্দে আকুল চিত না পারে চলিতে।



#### সমসাময়িক পদকর্তাদের চোখে ঐতিচতত

চিরদিনে গোরাচাঁদের বদন দেখিয়া। ভথিল চকোর আঁথি রহয়ে মাতিয়া॥ আনন্দে ভকতগণ হেরিয়া বিভার। জননী ধাইয়া গোরাচাঁদে করে কোর॥ মরণ শরীরে যেন পাইল পরাণ। গৌরাঞ্চ নদীয়া পুরে বাস্থ খোষ গান॥

—গো<sup>্</sup>প<sup>্</sup>ড°, পু<sup>°</sup> ২৭১

মুরারি ও বাস্থ ঘোষের বর্ণনা হইতে বুঝা যায় যে ঐতিচতন্ত গৌড়ভ্রমণের সময়ে এক বার নবন্ধীপে আসিয়াছিলেন। যে সমস্ত ঘটনা বর্ণনা করিলে ঐতিচতন্তের সন্ন্যাসনিষ্ঠা বা মর্য্যাদার হানি হইতে পারে, সেগুলি পরবর্তী চরিতকারগণ বাদ দিয়াছেন। ইহার অনেক দৃষ্টান্ত পরে দিতেছি।

গোড়দেশের চরিতকারগণ (মুরারি, কবিকর্গপূর, রুন্দাবনদাস, লোচন ও জ্বয়ানন্দ) ঐতিচতগ্রের গস্তারা-লালা সবিশেষ লেখেন নাই। রূপ ও রবুনাথ গোস্বামীর মতন নরহরি ও বাস্থদেব ঐ লালা-সম্বন্ধে তুইটি মধুর পদ রচনা করিয়াছেন। অনেকের ধারণা যে কুফাদাস কবিরাজ সর্ব-প্রথমে ঐতিচতগ্রের ভাবোন্মাদ বর্ণনা করিয়াছেন। গ সেই ধারণা যে ভূল ভাহা দেখাইবার জন্ম ঐ পদ তুইটি উদ্ধার করিতেছি। নরহরি সরকার ঠাকুর লিথিয়াছেন—

গঞ্জীরা ভিতরে গোরা রায়।
জাগিয়া রক্ষনী পোহায়॥
থেনে থেনে করুয়ে বিলাপ।
থেনে থেনে রোয়ত থেনে থেনে কাঁপ।
থেনে ভিতে মুখ শির ঘষে।
কোন নাহি রহু পহঁ পাশে॥

শ্রুক কুরুষার সেন শিবিয়াছেন—" অসময় চেপ্তা সদা প্রলাপময় বাপাএর সর্ম জানাইতে
 ক কুক্ষাস করিরালই সাহস করিয়াছিলেন এবং তাহাতে সক্সকাম হইয়াছিলেন; এই কাণ্য অন্ত
কাহারও সাধ্যাতীত ছিল।" —বল্লী, ১৩৪১, অগ্রহারণ, শৃত ০০১

CENTRAL LIBRARY

42

#### ত্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

খন কাঁদে তুলি ছই হাত। কোথায় আমার প্রাণনাথ। নরহরি কহে মোর গোরা। রাই-প্রেমে হইয়াছে ভোরা।

— এ, পু° ২০১

#### বাহু ঘোষ লিখিয়াছেন—

সিংহছার ত্যক্তি গোরা সমুদ্র-আড়ে ধায়।
কোথা কৃষ্ণ কোথা কৃষ্ণ সভারে স্থায়॥
কৌদিকে ভকতগণ হরিগুণ গায়।
মাঝে কনয়াগিরি ধূলায় লোটায়॥
আছাড়িয়া পড়ি আছে ভূমে গড়ি যায়।
দীঘল শরীরে গোরা পড়ি মূরছায়॥
উত্তান শয়ন মুখে ফেন বহি যায়।
বাস্থদেব ঘোষের হিয়া বিদরিয়া যায়॥

\_d, d

### গোবিন্দ ঘোষের পদ

গোবিন্দ ঘোষের সাতটি পদ গৌরপদতরঙ্গিণীতে আছে। একটি পদে (পৃ ৬৪) তিনি বিশ্বস্তরের পূর্ববন্ধ গমন বর্ণনা করিয়াছেন। ভণিতার ধরণ দেখিয়া মনে হয় ভাবপ্রকাশের পূর্বেই বিশ্বস্তরের সঙ্গে তাঁহার অন্তরন্ধতা ছিল। তিনি মাঝে মাঝে নববীপে আসিতেন। কিন্তু এরপ অনুমানের সমর্থক প্রমাণান্তরের অভাব। তিনি লিখিয়াছেন—

ন্থরধুনী-তীরে যাইতে দেখিব গৌরাঙ্গ পথে
কত দিনে হইবে শুভ দিন।

চাঁদমুখের বাণী শুনি জুড়াবে তাপিত প্রাণী

গোবিন্দ ঘোষের দেহ ক্ষীণ॥

—এ, পৃ<sup>°</sup> ৬৪



# সমসাময়িক পদকর্তাদের চোখে প্রীচৈত্য

#### गांधव ट्यांट्यंत्र शन

মাধব ঘোষের পাঁচটি পদ গোঁরপদতরক্সিণীতে আছে। সব কয়টিই ভাবমূলক। তাহাদের বিচার নিপ্তায়োজন।

#### वःशीवमरमञ् श्रम

বংশীবদন নবন্ধীপের অপর পারস্থিত কুলিয়া গ্রামের ছকড়ি চট্টোপাধ্যায়ের পুত্র। বাঘনাপাড়ার গোস্বামীরা তাঁহার বংশধর। "মুরলী-বিলাস" ও "বংশীশিক্ষা"র বিচারে তাঁহার কথা আলোচনা করিব। তাঁহার নামে ছয়টি পদ গৌরপদতরন্ধিণীতে আছে। কিন্তু একটি পদে (পৃ॰ ৪) শ্রীনিবাস আচার্য্যের নাম "আচার্য্য ঠাকুর" নামে উল্লিখিত হইয়াকে বলিয়া উহা বংশীবদনের লেখা হইতে পারে না। একটি পদে মহোৎসবের অধিবাস বর্ণিত হইয়াছে। অপর চারটিতে শ্রীচৈতক্মের প্রতি সখ্যভাব প্রকাশ করা হইয়াছে। এই কয়টি অক্বুত্রিম।

#### পরমানন্দ সেনের পদ

গৌরপদতরন্ধিণীতে পরমানন্দ সেন কবিকর্ণপূরের দশটি পদ গণনা করা হইয়াছে; কিন্তু ১০০া২৫ (পৃ° ২৪) ও ৪০০া৬ (পৃ° ১৭৮) পদ সামাত্য পাঠান্তরযুক্ত একই পদ। ১০০০ পদটি (পৃ° ৪) কবিছাংশে হীন ও তাহাতে

## রূপ সনাতন মোর প্রাণ সনাতন। কুপা করি দেহ মোরে যুগল চরণ॥

থাকায় ইহা কবিকর্ণপূরের রচিত কি না সন্দেহ হয়। কবিকর্ণপূরের একটি কবিতা প্রীরূপ গোস্বামী পত্যাবলীতে উক্ত করিয়াছেন। কবিকর্ণপূর তাঁহাদের অপেক্ষা বয়সে ছোট হইলেও গ্রন্থকর্তা হিসাবে প্রীরূপের সমকালীন। কবিকর্ণপূরের জীবদ্দশায় রূপ-সনাতনের গ্রন্থাদি গৌড়দেশে আসিয়াছিল কি না সন্দেহ। ৬।৪।২৪ পদ-সম্বন্ধে (পৃত্তত) অমুরূপ সংশয় করা যাইতে পারে। অধিকস্ত ঐ পদে শ্রীজীবের নামও আছে।

#### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

অত্যাত্ত পদগুলি যে শিবানন্দ সেনের পুত্র কবিকর্ণপূরের রচিত সে বিষয়ে সন্দেহ নাই। ১।১।২০ পদটিতে (পৃ ১১) আছে—

> গোর। অবতারে যার না হৈল ভকতিরস আর তার না দেখি উপায়। রবির কিরণে যার আঁখি পরসঙ্গ নৈল বিধাতা বঞ্চিত ভেল তায়॥

১।৩।২৬ পদটিতে ( পৃ<sup>০</sup> ২৪ ) ভাবোন্মত গৌরাঙ্গের বর্ণনা। ৪।৪।৪ পদটি গৌরাঙ্গের

> নব অনুরাগ ভেল ভোর। অনুখন কঞ্চ নয়নে বহে লোর॥

৫।৪।৭ পদে ( পৃ ২৫১ ) গৌরাঙ্গের সন্মাসে ভক্তগণের ছঃখবর্ণনা। ৫।৫।৫ পদে ( পৃ ২৬৪ ) গৌর-গদাধর-উপাসনার ইঙ্গিত আছে।—

> বামে গদাধর রাজত রঙ্গী। চৌদিশে উপনীত শোভিত সঙ্গী॥

শীতৈতত্তের ভাব-আস্বাদনের যে আলেখা সমসাময়িক পদকর্তাদের রচনায় পাওয়া যায় তাহা যেমন জীবন্ত, তেমনি হৃদয়গ্রাহী। শ্রীতৈত্তকে তাঁহার সমসাময়িক ভক্তেরা কি ভাবে দেখিতেন তাহা জানিতে হইলে এই পদগুলি বিশেষ মনোযোগের সহিত আলোচনা করা কর্তবা।



## চতুর্থ অধ্যায়

## মুরারি গুপ্তের কড়চা আদিম শ্রীচৈত্যগোষ্ঠীতে মুরারির স্থান

মুরারি গুপ্ত প্রীচৈতভার নববাপ-লালার একজন প্রধান পরিকর।
প্রীচৈতভাচন্দ্রাদয় নাটকে (১।৭৬-৭৯) বর্ণিত আছে যে একদিন
প্রীচৈতভা ঐশ্বর্যাভাবে অবৈত-প্রীবাসাদি ভক্তগণকে কুপা করিতেছেন, এমন
সময়ে অবৈত, মুরারি ও মুক্লের দান্তভাবের প্রশংসা করিলেন। তাহা
শুনিয়া মহাপ্রভু মুরারির সন্থকে বলিলেন, "মুরারির মনে ভক্তিরস
সিদ্ধ হয় না; কেন-না রন্থনের হুর্গদ্ধের ভায় অতিকটু অধ্যান্ম ভাবনায়
ইহার আগ্রহ রহিয়াছে। অভাপি অনুক্ষণ বাশিষ্ঠ-বিষয়ে (যোগবাশিষ্ঠ)
ইহার অতান্ত উৎসাহ রহিয়াছে।" অবৈত জিজ্ঞাসা করিলেন, "অধ্যান্ম
যোগের দোষ কি?" মহাপ্রভু উত্তর দিলেন, "যাহার নিংশ্রেয়সেশর
ভগবান্ হরিতে ভক্তি আছে, সে যেন অমৃতের সাগ্রে ক্রীড়া
করে; তাহার পক্ষে আবার খালের জলের প্রয়োজন কি?" তৎপরে
মুক্লের অপরাধ-সন্থকে আলোচনা হইবার পর অবৈত বলিলেন,
"ইহারা ছইজন গুরুতর অপরাধ-হতু বড়ই কন্ট পাইতেছেন, মুতরাং
আপনি ইহাদের মন্তকে চরণ-কমল ভান্ত করুন।" মহাপ্রভু তাহাই
করিলেন।

প্রায় অনুরূপ ঘটনা মুরারি গুপ্ত তাঁহার "কড়চায়" (২০১৪ ২-২০) বর্ণনা করিয়াছেন। কিন্তু তথায় অবৈতের উপস্থিতির বর্ণনা নাই। ফলতঃ মুরারি ২০১৫ সর্গে অর্থাৎ মুকুন্দ ও নিজের প্রতি উপদেশ-দানের পর অবৈতের সহিত বিশ্বস্তর মিশ্রের মিলন বর্ণনা করিয়াছেন। মুরারির প্রস্তে মুরারির প্রতি প্রভুর নাটক-বর্ণিত ক্রোধ-সম্বন্ধে কিছু লেখা



#### শ্রীচৈতন্মচরিতের উপাদান

66

নাই। মুকুন্দকে উপদেশ দিবার পর মুরারিকে মহাপ্রভু মাত্র এই বলিয়াছিলেন—

কথং হং কৃতবান্ বৈছা গীতমধ্যাত্ম-তংপরম্।
জীবিতে যদি বাঞ্চান্তি প্রেল্লি বা তে হরে: স্পৃহা।
তদা গীতম্ পরিভাজ্য কুরু শ্লোকং হরে: স্বয়ম্॥
—মুরারি, :۱১৪।২২-২৩

এই ঘটনা-বর্ণনার পূর্বের মুরারি নিজগৃহে প্রভুর বরাহ ভাবের আবেশ বর্ণনা করিয়াছেন (২।২)। বরাহ-ভাব-প্রকাশের পর একদিন প্রিগোরাক্স শ্রীবাসাদি ভক্তগণকে অধ্যাত্ম ব্যাখ্যা করিতে নিষেধ করিলে মুরারি বলিয়াছিলেন, "আমি অধ্যাত্ম জানি না ত প্রভু।" তাহার উত্তরে প্রভু বলিলেন, "তং প্রাহ দেবো জানাসি কমলাক্ষাভহু,তং হি তং।" অধ্যাত্মবাদের মূলস্তম্ভ ছিলেন কমলাক্ষ বা অধৈত; স্কুরাং অধৈতকে ছাড়িয়া মুরারি ও মুকুন্দের প্রতি অধ্যাত্মভাব-প্রচারের জন্ম ক্রো সক্ষত মনে হয় না। যাহা হউক এই বিচার হইতে মুরারির সম্বন্ধে একটি তথ্য পাওয়া গেল। সেটি এই যে তিনি মহাপ্রভুর শ্রীচরণাশ্রয় গ্রহণ করার পূর্বের অধ্যাত্মবাদী ছিলেন।

কবিকর্পপূর তাঁহার "এটেতভাচরিতায়ত মহাকাব্যে" নিম্নলিখিত ঘটনাটি বর্ণনা করিয়াছেন। একবার মুরারি অদ্বৈতের সহিত পুরীতে গিয়াছিলেন। তিনি নরেন্দ্র-সরোবর পর্যান্ত যাইয়া বসিয়া পড়িলেন ও বলিলেন, 'ভাপনাদের দয়ায় এতদূর আসিয়াছি, কিন্তু আর আমার ক্ষমতা নাই। জগরাথ-দর্শন করিবার সাহসও নাই; কেন-না আমি দীনছঃখী—তৃপামর। আপনারা এই কথা প্রভুকে জানাইবেন; পরে আমার যাইবার ক্ষমতা হয়ত হইবে।" ইহা বলিয়া তিনি সেই স্থানেই স্থির হইয়া বসিয়া রহিলেন (১৪।৭৭।৮৪)। ভক্তগণ যখন জীটেতভার আদেশে জগরাথ-দর্শন করিবার পর মহাপ্রভুকে দর্শন করিলেন, তখন তিনি "মুরারি কই, মুরারি কই" জিজ্ঞাসা করিলেন। তখন ভক্তগণ যাইয়া নরেন্দ্র-সরোবরে মুরারিকে খবর দিলেন। মুরারি নয়নজলে আপ্লত হইয়া ধূলি-ধুসররূপে



## মুরারি গুপ্তের কড়চা

শীতৈততের নিকট আসিলেন ও পরিছিত বন্তের অর্জাঞ্চল গলে বাঁধিয়া তাঁছাকে দীর্ঘকাল ধরিয়া দর্শন করিতে লাগিলেন, মুখ দিয়া তাঁছার কোন কথাই বাহির হইল না। শীতৈততাও নয়নবারি-ছারা মুরারির পৃষ্ঠদেশ সিক্ত করিতে লাগিলেন ও মুরারির অস্পষ্ট কাকুবাদ ও রোদন শুনিয়া বিকল হইয়া পড়িলেন (১৪০০০-১১২)।

এই ঘটনা হইতে মুরারির সহিত শ্রীচৈতত্তের সম্বন্ধ কিরূপ ঘনিষ্ঠ ছিল তাহা জানা যাইতেছে। আর একটি তব এই ঘটনার ছার। বলা হইয়াছে। মুরারি রঘুনাথের উপাসনা করিলেও ঐীচৈতভকে প্রারামের সহিত একাভূতভাবে দেখিতেন। শিবানন্দ সেন গৌর-গোপাল মন্তের উপাসক ছিলেন (কর্ণপূর নাটক, ৯৮৮ চৈ চ , এ২।৩ )। মুরারি গুপ্তই প্রথমে তাঁহাকে পুরীতে লইয়া যাইয়া শ্রীচৈতত্ত্বের সহিত সাক্ষাৎ করাইয়া দেন ( মহাকাবা, ১ 1) ২৭ )। প্রবাদ, শ্রীপণ্ডের নরহরি সরকার গৌরমন্ত্রে দীক্ষিত ছিলেন। তাঁহার বংশধরেরা আমাকে বলিয়াছেন যে, তাঁহারা পুরুষাতু ক্রমে গৌরমল্লে দীক্ষা দিয়া আসিতেছেন। শ্রীমন্নরছরি-কথিত ও লোকানন্দ-গ্রথিত গৌরমন্ত-বিষয়ক একখানি সংস্কৃত পুস্তকও তাঁহারা প্রকাশ করিয়াছেন। কাঁচড়াপাড়ার শিবানন্দ সেন, নবছাপের মুরারি গুপ্ত ও ত্রীথণ্ডের নরহরি সরকার—এই তিন জ্বন খাঁটি বাঙ্গালী বৈছ গোর-পারমাবাদের প্রথম প্রবর্ত্তক। উল্লিখিত ঘটনার ছারা এই গোর পারমাবাদ সূচিত হইয়াছে। অভাভ ভক্ত মহাপ্রভুর ক্থামত আগে জগন্ন থ-দর্শন করিয়া পরে শ্রীচৈতত্ত-দর্শন করিলেও মুরারি দৃঢ়চিত্তে আগে জগন্নাথ-দর্শন করিতে অস্বীকার করিলেন। তিনি সর্ববাগ্রে শ্রীতৈত্ত-দর্শন করিবেন সঙ্কল্ল করিলেন এবং মহাপ্রভূ তাঁহার বাসনা পূর্ণ করিলেন। শ্রীপাদ কৃষ্ণদাস কবিরাজ শ্রীচৈতন্য-চরিতামূতে (২।১১। ৩৭-8 ) নিজম ভঙ্গীতে উক্ত ঘটনা বর্ণনা করিয়াছেন।

শ্রীচৈত্যভাগবতে মুরারি গুপ্ত-সম্বন্ধে কয়েকটি নূতন তথ্য পাওয়া যায় – যথা, মুরারির জন্ম হয় শ্রীহট্টে (অতুলক্ষা গোস্বামীর ২য় সংস্করণ, ১৷২৷৩১); তিনি গঙ্গাদাস পণ্ডিতের টোলে পড়িতেন (১৷৬৷৬৮); তিনি নিবিবরোধ ভাল মানুষ ছিলেন; বিশ্বস্তবের "আটোপটকার" শুনিয়াও



#### শ্রী চৈতভাচরিতের উপাদান

কোন জবাব দিতেন না (১।৭।১৯-২০)। বিশ্বস্তর অন্য সকল পড়্যাকে সহজেই হারাইয়া দিতেন; কিন্তু মুরারির বেলায় "প্রভুভূতো কেহ কারে নারে জিনিবারে।"

> প্রভুর প্রভাবে গুপু পরম পণ্ডিত। মুরারির ব্যাখ্যা শুনি হন হর্ষিত॥

> > -->191: 2-:0

মুরারি গুপ্ত প্রভু অপেক্ষা বয়সে বড় সহাধাায়ী ছিলেন, প্রভুর প্রিয়পাত্ররূপে নবলীপ-লীলার অধিকাংশ ঘটনা জানিতেন। তাঁহার গৃহেই সর্বপ্রথমে প্রীচৈতত্যের আবেশ হয়। তিনি কবিছ-গুণসম্পন্ন ছিলেন বলিয়া প্রভুর নবলীপ-লীলার সময়েই ভক্তগণ স্থির করিয়াছিলেন যে মুরারিই প্রভুর লীলা বর্ণনা করিবেন। মুরারি নিজেই এ বিষয়ে ইন্সিত করিয়াছেন—কড়চা ২া৪া২৪-২৬।

কবিকর্ণপুরের মহাকাব্যে নারায়ণ গুপ্ত বলিয়াছেন—

কারুণ্যমীশ্বর বিধেহি মুরারিগুপ্তে বক্তুং যথাইতি তথৈব চরিত্রমেষঃ।

-4188

ইহা শুনিয়া মহাপ্রভু বলিলেন—

40

যদ্ যথদিয়াতি তদেব সমস্তমেব শুদ্ধং ভবিয়াতি ভবিয়াতি শক্তিরুগ্রা।

-4180

বৃন্দাবনদাসের প্রীচৈতভাভাগবত হইতে জানা যায় যে আদিম প্রীচৈতভা গোষ্ঠীতে মুরারির স্থান কত উচ্চে; তিনি মুরারির সম্বন্ধে লিথিয়াছেন—

> মুরারির প্রতি সর্ব্ব বৈষ্ণবের প্রীত। সর্বভূতে কুপালুতা মুরারির চরিত॥ যেতে স্থানে মুরারির যদি সঙ্গ হয়। সেই স্থানে সর্বতীর্থ শ্রীবৈক্ঠময়॥



## মুরারি গুপ্তের কড়চা

### মুরারির গ্রন্থের প্রামাণ্য-বিচার

## পূর্ববপক্ষ

মুরারি গুপু মহাপ্রভুর খুব অন্তরঙ্গ ভক্ত ছিলেন, প্রমাণিত হইল। কিন্তু ইহা হইতে তাঁহার নামে যে সংস্কৃত বই "অমৃতবাজার" কার্যালয় হইতে ছাপা হইয়াছে তাহার অকুত্রিমতা প্রমাণিত হয় নাই। মহাস্থা শিশিরকুমার ঘোষ ঐ প্রস্তের একখণ্ড পুঁথি ঢাকা উথলী-নিবাসী শ্রীঅন্তৈতবংশীয় ৺মধুসূদন গোস্বামীর নিকট পাইয়াছিলেন। অন্য একখানি পুথি রুন্দাবন হইতে পাওয়া যায়। কিন্তু কাহার নিকট হইতে পাওয়া যায় তাহা প্রকাশ নাই। এই ছই পুঁথি মিলাইয়া ৺শ্যামলাল গোস্বামী মহাশয় ১৩০৩ সালে শ্রীকৃষ্ণচৈতন্ত-চরিত প্রকাশ করেন। ১৩১৭ সালে ইহার ২য় ও ১৩৩৭ সালে সাহিত্যে স্থপণ্ডিত শ্রীযুক্ত মুণালকান্তি ঘোষের ঘারা ইহার ৩য় সংস্করণ প্রকাশিত হয়।

গ্রন্থানির তিনটি সংস্করণ প্রকাশিত হইলেও ইহাতে অজস্র ভুল রহিয়াছে। কতকগুলি ভুল এমন মারাত্মক যে অর্থগ্রহ করা কঠিন। একটি মাত্র দৃষ্টান্ত দিতেছি। —পূর্বের যে ২।১।২৪-২৬ শ্লোক উদ্ধৃত করিয়াছি, তাহার : ৫ শ্লোকের পূর্বার্দ্ধ নিম্নরূপে ছাপা আছে—

"তথাজাং গুরু দেবেশ তচ্ছত্বা সন্মিতাননঃ।"

মুরারির গ্রন্থবিচারের পক্ষে শ্লোকটির মানে বুঝা অতান্ত প্রয়োজন। আমি কবিকর্ণপূরের মহাকাব্যের সঙ্গে মিলাইয়া উহার পাঠোদ্ধার করিলাম—

''তথাজ্ঞাং কুরু দেবেশ তজু তা সম্মিতাননঃ।''

এইরূপ ভুল পাঠ থাকায় ও বাঙ্গলা অমুবাদ না থাকায় সাধারণ পাঠকের পক্ষে বইথানি বুঝা স্থানে স্থানে কঠিন হইলেও ভুল পাঠ থাকাতেই বইখানির মূল্য ঐতিহাসিকের নিকট থুব বেশী বিবেচিত হওয়া উচিত। মহাত্মা শিশিরকুমার বা মুণালবাবু ইচ্ছা করিলেই বইখানি পণ্ডিতের দ্বারা আছোপান্ত সংশোধন করাইয়া লইতে পারিতেন। কিন্তু এরূপ সংশোধনের উপদ্রবে অনেক সময়েই মূল গ্রন্থের অথ বিকৃত

#### শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

হয়। "অমৃতবাজারের" কর্তৃপক্ষ যে গ্রন্থখানির উপর হস্তক্ষেপ করেন নাই তাহার প্রকৃষ্ট প্রমাণ ভুল ছাপা। গ্রন্থের প্রথম চুই সংকরণের শেষে নিম্ন লিখিত শ্লোকটি ছিল—

"চতুর্দশশতাব্দান্তে পঞ্চ-বিংশতিবৎসরে। আবাঢ়সিতসপ্তম্যাং গ্রন্থোহয়ং পূর্ণতাং গতঃ ॥"

শ্রীচৈতন্তের জন্ম ১৪০৭ শকে। ১৪২৫ শকে গ্রন্থ শেষ হইলে ইহাতে শ্রীচৈতন্তের জাবনের প্রথম আঠার বৎসরের কথা মাত্র থাকা উচিত। ডক্টর দানেশচন্দ্র সেন সিন্ধান্ত করেন যে আঠার বৎসরের পরবর্ত্তী যে সমস্ত ঘটনা লিখিত আছে তাহা প্রক্রিপ্ত। আমি ১৩০০ সালের সাহিত্যাপরিষদ-পত্রিকার ৪র্থ সংখ্যায় বলি যে বিষ্ণুপ্রিয়া-পত্রিকার অন্টমবর্ষে ২৬৮ পৃষ্ঠায় ঐ তারিখের পাঠ পঞ্চবিংশতি স্থানে পঞ্চত্রিংশতি দেখা যায়, ১৩০৭ সালে মুক্রিত মুরারির গ্রন্থের তৃতীয় সংস্করণে পঞ্চত্রিংশতি ছাপা হইয়াছে। শ্রন্থের শ্রিপুক্ত মুণালকান্তি ঘোষ মহাশয় ঐ সংস্করণের ভূমিকায় লিখিয়াছেন, "শ্রীগোরাঙ্গ ৪৯১ শকে সন্ন্যাস গ্রহণ করেন। ইহার চারি বৎসর পরে অর্থাৎ ১৪৪৫ শকে তিনি জননী জন্মভূমি ও জাহ্ণবী দেখিবার জন্ম শ্রীনবনীপে গমন করেন। তাহা হইলে এই সম্য পর্যান্ত প্রভুর লীলা গ্রন্থে থাকিবার কথা। কিন্তু প্রকৃত পক্ষে শ্রীপ্রভুর শেষ ঘদশ বর্ষের গঞ্জীরা লীলার কথাও এই গ্রন্থে আছে। ইহাতে বোধ হয় ১০৪৫ শকে এই গ্রন্থ সমাপ্ত হয় নাই, তাহার বহুবৎসর পরে মুরারি ইহার শেষ করেন।"

গ্রন্থথে শুধু গন্তীরা লীলার বর্ণনা (৪।২৪) নাই, মহাপ্রভুর তিরোধানের উল্লেখও আছে (২।২।১২-১৪)। ১৩৩৭ সালে লিখিত ভূমিকায় মৃণালনাবু উপরি-উদ্ধৃত মত প্রকাশ করিলেও ১৩৪১ সালের ভাদ্র মাসের "বন্ধ শ্রী" পত্রিকায় শ্রীযুক্ত স্কুমার সেন বলেন যে গ্রন্থখানি "আকুমানিক ১৫২০ গুফাব্দের দিকে রচিত হইয়াছিল।" ১৪৮৬ গুফাব্দে মহাপ্রভুর জন্ম, ১৫১৪ গুফাব্দে তাহার ২৮ বৎসর পূর্ণ হয়; গ্রন্থের শেষে উল্লিখিত ১৪৩৫ শক আবাঢ় মাস ১৫১০ গুফাব্দ হয়। ১৪৩৫ শক্কে গ্রন্থরনার কাল বলিয়া স্বাকার না করিয়া আর ৭ বৎসর পরে গ্রন্থরনার সময়



### মুরারি গুপ্তের কড়চা

নির্দ্দেশ করিলে ৪।১৪র ঘটনার সহিত কোনরূপে সামঞ্জন্ম বিধান করা যায় বটে, কিন্তু আমি যে তিরোভাবের কাল উল্লেখ করিয়াছি (১।২।১২-১৪) তাহার সহিত ১৫২০ গুটাবদ মিলে না, কেন-না শ্রীচৈতন্মের তিরোভাব ১৫৩৩ গুটাবদ ঘটিয়াছিল।

প্রত্যের রচনাকাল-সম্বন্ধে এইরূপ বিজ্ঞাট দেখিয়া স্বতঃই সন্দেহ হয় যে প্রস্থগানির আভোপাস্ত বোধ হয় অকৃতিম নয়। এই সমস্তা-সমাধানের জ্বল্য তিনগানি প্রস্থের সাহায়। লওয়া যাইতে পারে।

প্রথম "ভক্তিরত্নাকর"। এই প্রস্থ বিখনাথ চক্রবর্তীর শিশ্য বিপ্র জগন্নাথের পুত্র নরহরি চক্রবর্তী বা ঘনখ্যামদাস-কর্তৃক রচিত (ভক্তিরত্রাকর, পৃত ১০৬৭-৬৮); স্তরাং উহা অন্টাদশ শতাব্দীর প্রথমে রচিত। ভক্তিরত্নাকরে মুরারির বইয়ের শ্লোক উদ্ধৃত থাকিলে সিদ্ধান্ত করিতে হইবে যে অন্টাদশ শতাব্দীর প্রথম ভাগে মুরারির বই প্রচলিত ছিল। অবশ্য এইরূপ সন্দেহ করা যাইতে পারে যে অমূতবাঞ্চার কার্য্যালয়ের ছাপাবই দেখিয়া ভক্তিরত্রাকরে প্রক্রম অধ্যায়াদি বসাইয়া দেওয়া হইয়ছে। এ ক্ষেত্রে কিন্তু এরূপ সন্দেহের অবকাশ নাই, কেন-না ভ্রামনারায়ণ বিজ্ঞারত্র ১২৯৫ সালে ভক্তিরত্রাকর ছাপেন ও তাহার ৮ বংসর পরে ১০০৩ সালে শিশিরকুমার মুরারির বই প্রকাশ করেন।

- (১) আদশ তরক ৭১১ পৃষ্ঠায় ১৷১৷ ৬-:৮ মুরারি
- (२) खे १७०-७० शृ ।।२।०-० खे
- (०) खे १५० कु २११-२२ खे
- (8) खे १७३ शृः अवार्य

ভক্তিরত্বাকরে "তেজদারিতিমিরং" পাঠ মুরারিতে "তেজদারিতিমিরা"

- (৫) ভক্তিরত্বাকর ৭৭০ পু? ১াডা মুরারি
- (७) खे वम०-मा भू भागा खे
- (৭) ঐ ৮৪৮-৪৯ পৃ :।জা: এ



#### শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান 92

মুরারি "মুখম্" পাঠ, ভ° র° "সুখম্" পাঠ।

(৮) ভক্তিরত্নাকর ৮৮৮ পৃ ২।৭।৮-১৮ মুরারি

(२) जे २४८-४० भुः ४१२१५-७ जे

(>0) खे २०० भु ४१००१) खे

তাহা হইলে ভক্তিরত্নাকর হইতে পাওয়া গেল যে মুরারির গ্রন্থ অন্ততঃ ৪৷১০ সর্গ প্রয়িত্ত অথাৎ মহাপ্রভুর বৃন্দাবন-দর্শন প্রয়িত অফীদশ শতাব্দার প্রথম ভাগে প্রচলিত ছিল (১।১৫।১৪)। িনি আদি ল'লা বলিতে সন্ন্যাস পর্যাস্ত বুঝিয়াছেন। তাঁহার উক্তি দেখিয়া সন্দেহ হয় যে মুরারি বুঝি শুধু নবদ্বীপ-লীলাই লিথিয়'ছেন। এই সন্দেহ আর চুইটি কারণে দৃঢ় হয়। প্রথম হইতেছে এই যে "চৈতন্ত-চরিতের" বক্তা মুরারি ও শোতা দামোদর পণ্ডিত। বৃন্দাবনদাস লিখিয়াছেন যে নালাচলে দামোদর-স্বরূপের সহিত মহাপ্রভুর মিলনের পর

### দামোদর পণ্ডিত শ্রীশঙ্কর পণ্ডিত। কথোদিনে আসিয়া হইলা উপনীত॥

-USISIS->

কুষ্ণদাস পণ্ডিত শান্তিপুর হইতে নীলাচলে যাইবার সময় প্রীচৈতলের চারজন সঙ্গীর মধ্যে দামোদর পণ্ডিতকে সঙ্গী বলিয়াছেন (২।৩)২০৬)। কবিকর্ণপুর মহাকাবো নীলাচল লীলা-উপলক্ষে দামোদর পণ্ডিতের নাম ভল্লেখ করিয়াছেন (১৫।১০:); নবদ্বীপ-লীলা-উপলক্ষে মুরারি বা কবিকর্ণপুর কেহই দামোদর পণ্ডিতের নাম উল্লেখ করেন নাই। স্থতরাং আমরা বুন্দাবনদাদের উক্তিই ঠিক বলিয়া ধরিয়া লইলাম। দামোদর পণ্ডিত যদি লীলা স্বচক্ষে দেখিয়া থাকেন, তবে আর মুরারির নিকট শুনিবার প্রয়োজন কি ? মুরারি মাঝে মাঝে নীলাচলে আসিতেন আর দামোদর পণ্ডিত প্রায় সর্বদা নীলাচলে থাকিতেন। এ ক্ষেত্রে মুরারির নিকট দামোদর পণ্ডিতের নীলাচল-লীলা শ্রবণ করিতে উৎস্ক হওয়া একটু অপাভাবিক নয় কি ?



### মুরারি গুপ্তের কড়চা

মুবারির প্রন্থের নবরাপ-লালার পরবর্তী ঘটনার বর্ণনায় সন্দিয় হইবার বিতায় কারণ হইতেছে কবিকর্পপুরের মহাকারা। কবিকর্পপুর মহাকারে। (২০।৪২) বলিতেছেন যে যিনি আবৈশব প্রভুর চরিত্র- ও বিলাস-বিষয়ে বিজ্ঞা, সেই মপ্লকর নামধারী মুরারি নামক কোন বাক্তি যে বিলাস লালিতা সমাক লিখিয়াছেন, এই আমি শিশু তাহাই দেখিয়া লিখিতেছি। কবিকর্পপুর মহাকাব্যের একারশ সর্গ পর্যান্ত বর্ণনায় অত্যন্ত নিষ্ঠার সহিত মুরারির গ্রন্থ অত্সরণ করিলাছেন। কিন্তু একাদশ সর্গের পর আর তিনি তেমনভাবে মুরারিকে অত্সরণ করেন নাই। ইহাতে নালাচল-লালা-বর্ণনা-বিষয়ে মুরণরির গ্রন্থের অক্রিমতায় সন্দেহ দৃঢ় হয়।

এ বিষয়ে সংশয়-সমাধানের পক্ষে লোচনের চৈতভামক্সল সাহায়।
করে। লোচন তাঁহার গ্রন্থের উপাদান যে মুরারির গ্রন্থ হইতে
লইয়াছেন তাহা সূত্রথণ্ডের ৭ পূঠায় (মুণালকান্তি ঘোষ-সংশ্বরণ),
আদিথণ্ডের ২৭ পূঠায় মধাথণ্ডের ৮০ ও ৮৬ পূঠায় এবং শেষথণ্ডের
১১৮ পূঠায় স্বাকার করিয়াছেন। নালাচল হইতে মহাপ্রভুর রুদাবনদর্শন ও নীলাচলে প্রত্যাবর্তনের পর বিভাষণের সহিত সাক্ষাৎকারবিষয়ে লোচন মুরারির গ্রন্থের প্রায় আক্ষরিক অনুবাদ করিয়াছেন।
ক্যেকটি দৃষ্টাপ্ত দিতেছি।

১। মুরারি— রাজগ্রামং ততো গন্ধা গোকুলং প্রেক্ষ্য বিহবলম্।

-81210

লোচন-

রাজগ্রাম গিয়া পরে দেখয়ে গোকুল। সম্বরিতে নারে হিয়া ভৈগেল আকুল॥

—শেষথণ্ড, পৃ° ৯৫

২। মুরারি—

ছাদশৈতহুনং রুমাং শ্রীকৃষ্ণগ্রীতিদং সদা। মাহাত্মামেষাং জানস্তি ভক্তা নায়ে কদাচন॥

-- 81015

লোচন-

কৃষ্ণের বিহার এই ছাদশ বনে। ভক্ত বিনে কেহ ইহার মরম না জানে॥ শে°, পু° ৯৬

৩। মুরারি—

রাজবাটীং নৈ কতে স্থালানারত্ববিভূষিতাম।
পূর্বেবান্তরাভ্যাং ঘারৈশ্চ রত্বজৈঃ সমবিতাম্।
—81810-8

লোচন-

কংসের আবাস দেখ পুরীর নৈ ক্তে। পুরুবে উত্তরে ছই ছয়ার ভাহাতে॥ শে°, পৃ° ৯৬

৪। মুরারি—

বিভাষণো নামাশ্মাহমিত্যক্রা প্রথমো স চ। বিপ্রোহপি তেন সার্জক যথো সোভাগ্যপর্বতম্॥

-81:3139

লোচন-

CHO. 9" >>8

এই তুলনামূলক বিচারের দারা প্রমাণিত হইল যে মুরারির বইয়ের ৪।২১ অধ্যায় পর্যান্ত অর্থাৎ ৪।২২, ২৩, ২৪ অধ্যান্ত ছাড়া অন্যান্ত অংশ লোচনের জানা ছিল। পূর্বের দেখান হইয়াছে যে ভক্তিরত্বাকরে বিপ্রক্রমের দশম সর্গ পর্যান্ত উদ্ধৃত হইয়াছে।



## মুরারি গুপ্তের কড়চা

এইবার মুরারির গ্রন্থের অন্তর্মান্তার বিরুদ্ধে পূর্বের যে সংশ্বর
উথাপন করিয়াছি বা পূর্বরপক্ষ করিয়াতি তাহার উত্তর দিতেছি। দামাদর
পণ্ডিতের নালাচল-লালা-সম্বন্ধে অনুসন্ধিৎসার অযৌক্তিকতার উত্তরে
বলা যাইতে পারে যে মহাপ্রভুর বিরহে যখন ভক্তগণ কাতর
তথন শ্রীবাস ও দামোদর মুরারিকে প্রভুর লীলা বর্ণনা করিতে
অনুরোধ করিলেন। মুরারি স্বভাবকরি ছিলেন, লালাবর্ণন-বিষয়ে প্রভুর
কুপাশক্তি হয়ত পূর্বেই লাভ করিয়াছিলেন, এবং বাল্যাবিধি প্রভুকে
জানিতেন, সেই জন্ম তাঁহাকে লালা বর্ণন করিতে অনুরোধ করা
স্বাভাবিক। মুরারি প্রভুকে যুগাবতার বলিয়া বিশ্বাস করিতেন (১৪৪১৭২৬), সেই জন্ম তাঁহার লালা বর্ণনা করিতে যাইয়া পৌরাণিক রাতিতে
শুক্-পরীক্ষিত্ত- এবং শিব-পার্ববতী-সংবাদের ন্যায় মুরারি-দামোদর-সংবাদ
ভাবে গ্রন্থ লিখিয়াছেন। মহাপ্রভুর নবনীপের বা নীলাচলের অপর
কোন স্থায়া সঙ্গী যখন লীলা-বর্ণনে ক্ষপ্রসর হইলেন না, তখন মুরারির
পক্ষে সমগ্র লীলা-বর্ণনিই স্বাভাবিক।

কবিকর্ণপূর মহাকাব্যে একাদশ সর্গের পর মুরারির গ্রন্থ দৃড়ভাবে অমুসরণ করেন নাই; তাহার কারণ এই যে, তিনি পিতার নিকট ও অগ্যাগ্য ভক্তপের নিকট (যথা স্থগ্রামবাসী বাস্থ্যেব দত্ত, নিকটবর্ত্তী কুমারহট্ট-গ্রামবাসী শ্রীবাস, তাহার ভাইয়েপের বা শ্রীবাসের বাড়ার অগ্যাগ্য লোকের নিকট) নালাচল-লালা শুনিয়াছিলেন, তভ্তগ্র মুরারির গ্রন্থকে তাদৃশ নিতার সহিত অনুসরণ করেন নাই। তবে মুরারি যেনন শ্রীচৈতত্যের বুন্দাবন হইতে প্রস্তাগ্যমনের পর ছই চারটি ঘটনা বর্ণনা করিয়াই গ্রন্থ শেষ করিয়াছেন কবিকর্ণপূর্ত তাহাই করিয়াছেন।

মুরারি লীলা-বর্ণনার যে রীতি প্রবর্তন করেন, পরবর্তী সকল চৈত্যা-থায়কই তাহা মানিয়া লইয়াছেন। রক্ষাবনদাস যে ওড়ন যতীর ঘটনা-প্রসঙ্গে পুণ্ডরীক বিভানিধির চরিত্র বর্ণনা করিয়াই গ্রন্থ শেষ করিলেন তাহাও বোধ হয় মুরারি-প্রবর্ত্তিত রীতিরই অনুসরণ। মুরারি যেমন নিতানিক্দ প্রভুর গৌড়-শ্রমণ বর্ণনা করিয়াছেন, রক্ষাবনদাসও তাহাই করিয়াছেন। মুরারির ৪া২৪ যদি অকৃতিম হয়, তথে কৃষ্ণদাস

#### শ্রীচৈতগ্রচরিতের উপাদান

93

কবিরাজ তাহাই বিশদরূপে ব্যাখ্যা করিয়া অন্ত্যুখণ্ডের ১৪ হইতে ২০ পরিচ্ছেদ লিখিয়াছেন। কবিরাজ গোস্বামী ১।১৩।১৪ পয়ারে মুরারির আদিলীলার সূত্রের মাত্র উল্লেখ করিলেও ১।১৩।৪৪ পয়ারে বলিতেছেন—

## দামোদর সরূপ আর গুপু মুরারি। মুখ্য মুখ্য লীলাসূত্র লিখিয়াছে বিচারি॥

ইহা হইতে অনুমান করা যাইতে পারে যে কবিরাজ গোস্বামী জানিতেন যে মুরারি প্রভুর সকল প্রধান প্রধান লীলারই সূত্র করিয়াছিলেন।

তাহা হইলে সিদ্ধান্ত করা যাইতেছে যে মুরারির গ্রন্থ যাহা অমৃত-বাজার কার্যালয় হইতে ছাপা হইয়াছে তাহা মোটের উপর অকৃত্রিম ও নির্ভরযোগ্য। বৈশ্বব সমাজে এমন লীলাগ্রন্থ থুবই কম আছে যাহাতে পরবর্ত্তী কালে কোন পরিবর্ত্তনই হয় নাই। সে হিসাবে ছই-চারটি প্লোক মুরারির গ্রন্থে প্রক্রিপ্ত হইতেও পারে। তবে বিশিষ্ট প্রমাণ বাতিরেকে কোন প্লোকই আমি প্রক্রিপ্ত বলিতে রাজি নহি।

মুরারির গ্রন্থ যে ১৪৩৫ শকে, এমন কি ১৫০০ থুন্টান্দের কাছাকাছিও, রচিত হইতে পারে না তাহার প্রমাণ পূর্বের দিয়াছি। এই গ্রন্থ শ্রীচৈতন্তের লীলাবসানের পর রচিত হইয়াছিল। ১৫৪২ থুন্টান্দে কবিকর্ণপূর শ্রীচৈতন্ত-চরিতামূত মহাকার। শেষ করিবার সময়ে লিখিয়াছেন যে তিনি মুরারির গ্রন্থ ১৫৩০ হইতে ১৫৪২ থুন্টান্দের মধ্যে লিখিত হইয়াছিল, মহাপ্রভুর তিরোভাবের অল্পরালের মধ্যে তাহার প্রধান প্রধান পরিবারগণ লীলা সংবরণ করেন বলিয়া প্রবাদ। শ্রীবাদ ও দামোদর পণ্ডিতের জীবনকালেই মুরারির গ্রন্থ লিখিত হইয়াছিল। অনুমান হয় মহাপ্রভুর তিরোধানের তুই বৎসরের মধ্যে গ্রন্থ-লেখা শেষ হয়। এরপ অনুমানের কারণ এই যে মুরারির গ্রান্থ গ্রন্থ-লেখা শেষ হয়। এরপ অনুমানের কারণ এই যে মুরারির গ্রান্থ অন্তরন্থ ভক্তের পক্ষে শোক সামলাইতে এক বৎসর ও গ্রন্থ রচনা করিতে এক বংসর লাগিতে পারে। সেকালে রেল ও ছাপাখানা না থাকায় গ্রন্থ প্রচারিত হইতে অন্তরঃ তুই-এক বংসর লাগিত।



## মুরারি গুপ্তের কড়চা

সেই জ্ব্য মুরারির গ্রন্থ শ্রীতৈত্যচন্দ্রোদয় নাটকের পূর্বের রচিত হইলেও উহা কবিকর্ণপূরের হাতে পৌছায় নাই।

মুরারির মুদ্রিত প্রন্তের শেষকালে বালক শ্লোকটি পরবর্তী কালে কেহ বসাইয়া দিয়াছেন। হয়ত তিনি ভাবিয়াছিলেন ১৪৩৫ শকে প্রস্থ রিতিত হইয়াছিল বলিলে উহার প্রামাণ্য বাড়িয়া যাইবে। আমি এই প্রবন্ধটি প্রন্ধেয় ডক্টর দীনেশচন্দ্র সেন মহাশয়কে পড়িয়া শুনাইলে তিনি বলেন যে, হয়ত মুরারি ১৪৩৫ শক পর্যন্ত কালের লীলাই লিখিয়াছিলেন। পরে মুরারির পরিবারভুক্ত কোন ব্যক্তি হয়ত অবশিষ্ট অংশ ও ভূমিকা প্রভূতি যোগ করিয়া দিয়াছিলেন। এ অনুমানের গুরুত্ব আমি স্বীকার করি। তবে মুরারির পরবর্তী কোন ব্যক্তি যদি কিছু যোগ করিয়া থাকেন তাহা হইলে সে কার্য্য লোচনের চৈতত্তা-মঙ্গল-রচনার পূর্বেবই হইয়াছিল বলিতে হয়। কেন-না লোচন মুরারির গ্রন্থের বৃন্দাবন-ভ্রমণাদির অনুবাদ করিয়াছেন, মুরারির কাল হইতে লোচনের গ্রন্থরচনার কালের ব্যবধান ৫০।১০ বৎসরের বেশী হইবে না। অত অল্ল সময়ের মধ্যে মুরারির মত স্থপ্রসিদ্ধ ভক্তের গ্রন্থে অপর কেহ কিছু সংযোজনা করিবেন ইহা বিশ্বাস করিতে প্রবৃত্তি হয় না।

# মুরারির নি + ট কবিকর্ণপূরের ঋণ

কবিকর্ণপূর নবদ্বীপ-লীলা বিষয়ে মুরারির গ্রন্থকে এমন প্রামাণ্য মনে করিয়াছেন যে অধিকাংশ স্থলে পূর্বেরাক্ত গ্রন্থের কয়েকটি শব্দ ও ছন্দ মাত্র বদলাইয়াছেন। নিম্নে কয়েকটি উদাহরণ দিতেছি।

### ( ) মুরারি—

অথ প্রভাতে বিমলেহরুণেহর্কে
স্বয়ঃ কৃতস্নানবিধির্যথাবং।
হরিং সমভার্চ্চা পিতৃন্ স্থরাদীন্
নান্দীমুথশ্রাদ্ধমধাকরোদ্ধিক্ষঃ॥ ১।১০।০



96

### শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

## কবিকর্ণপূরের মহাকাব্য—

অথ প্রভাতে বিমলার্কভূষিতে
শ্বয়ং কৃতস্নানবিধির্যথাবিধি।
প্রভুঃ পিতৃনর্কয়িতুং যথাতথা
নান্দীমুখশ্রাশ্বমথাকরোদসৌ॥ ৩।৭৮

#### (३) भूताति—

গুরো স ভক্তিং পরিদর্শয়ন্ স্বয়ং
ফল্লমু চক্রে পিতৃদেবতার্জনম্।
প্রেতাদিশৃদ্ধে পিতৃপিগুদানং
ব্রহ্মাঙ্গলীরেণুমুতেমু কুহা॥ ১।৬১।১

# কবিকর্ণপূর—

অথ স ফল্লনদী-প্লাবনে যথাবিধিবিধয়ে পিতৃন্ সমতপ্রৎ।
শবমহীভৃতি পিওমদাদ্যো
করুণতোহরুণতোহপারুণেক্ষণঃ॥ ৪।৬২

## (৩) মুরারি--

স দদর্শ ততো রূপং কৃষ্ণজ্ঞ যড়্ভুজং মহং।
ক্ষণাচচ হুভুজং রূপং বিভুজ্ঞ ততঃ ক্ষণাং॥ ২৮৮।২৭
(সঃ অর্থাৎ নিত্যানন্দ।)

#### কবিকর্ণপূর —

পুর: বড়্ভির্দোর্ভি: পরমরুচিরং ততা চ পুন\*চতুর্ণা: বাহুনাং পরমললিতকেন মধুরম্
ভদীয়ং তদ্রপ: সপদি পরিলোচ্যান্ত সহসা
ভদাশ্চর্যাং ভূয়ো বিভূজমধ ভূয়োহপাকলয়ৎ ॥ ৬৷১২২

আর উদাহরণ দিব না। ইহা হইতেই কবিকর্ণপূর যে কি ভাবে মুরারিকে অনুসরণ করিয়াছেন তাহা বুঝা যাইবে।



# মুরারি গুপ্তের কড়চা

### মুরারির লীলাবর্ণনের ভঙ্গী

মুরারি পরম ভক্ত। তিনি নবদ্বীপ-লীলার অধিকাংশ ঘটনা স্বচক্ষে দর্শন করিয়াছিলেন। বিশ্বস্তরের ক্রিয়াকলাপ দেখিয়া তাঁহার ধারণা প্রদায়ছিল যে তিনি ঈশরের অবতার। মুরারি অবতারের তুই প্রকার ভেদ করিয়াছেন: যুগাবতার ও কার্যাবতার। সত্যযুগে শুরু, ব্রেভায় যজ্ঞ, দ্বাপরে পূঞ্ ও কলিতে শীচৈতত্য (১৪৪১৮-২৭)। মংস্থ, কূর্ম্ম, বরাহ, নৃসিংহ, বামন, ভার্গব, রাম, কৃষ্ণ, বুল্ল, কল্কী—এই দর্শক্ষন বিশেষ বিশেষ কার্যাসাধনার্থ অবতার হইয়াছিলেন (১৪৪২৮-২০)। মুরারি অবশেষে বলিয়াছেন যে এইরূপ আরও বহু কার্যাবতার আছেন। শীরূপ গোস্বামী অবতার-তব্বের অত্যরূপ বিভাগ করিয়াছেন। তিনি লঘু-ভাগবতামতে সত্যাদিযুগে যথাক্রমে শুরু, রক্ত, শ্রাম ও কৃষ্ণ অবতারকে যুগাবতার বলা হইয়াছে (১০৮০ ০)। শীরূপ গোস্বামী লঘু-ভাগবতামতে প্রুষাবতার, গুণাবতার, লীলাবতার, মন্বস্তরাবতার বা যুগাবতারের মধ্যে ধরেন নাই; কেবল মঙ্গলাচরণে "কৃষ্ণবর্গং দ্বিষা কৃষ্ণং" ইত্যাদি ভাগবতের ১৯৫০ ক্রেয়াক উদ্ধৃত করিয়াছেন ও চতুর্থ প্রোকে

শ্রীচৈতন্য-মুখোলগীর্ণা হরেকুফোতি বর্ণকাঃ। মত্তরত্তা জগৎ প্রেম্বি বিজয়স্তাং তদাহবয়াঃ॥

প্রভৃতি বলিয়াছেন। শ্রীজীব গোস্বামীও বট্সন্দর্ভের প্রারম্ভে "কৃষ্ণবর্ণং বিষা কৃষ্ণং" বলিয়া মঙ্গলাচরণ করিয়া

অন্তঃকৃষ্ণং বহিগে রিং দর্শিতাকাদিবৈভবন্। কলো সঙ্কীর্তনাজ্যে স্মঃ কৃষ্ণচৈতভামাশ্রিতা:॥

প্রভৃতি বলিয়াছেন। কিন্তু "শ্রীকৃষ্ণসন্দর্ভে" শ্রীকৃষ্ণ যে শ্রীচৈত্য ও বলরাম যে নিত্যানন্দ এ কথা তিনি স্পান্ট করিয়া বলেন নাই।

অন্টাদশ শতাব্দীর প্রথমে বলদেব বিভাভূষণ "কুফাবর্ণং হিষা কৃষ্ণং" শ্রোকের টাকায় "অথ কুফাবিভাবতা স্বসাক্ষাৎকৃত-পাদাস্কতা শ্রীকৃষ্ণ-চৈততাতা বিজয়বাঞ্জনং মঙ্গলম্" বলিয়াছেন এবং "অঙ্গেতি নিত্যানন্দাছৈতে)

#### শ্রীচৈত গুচরিতের উপাদান

60

উপাত্তেতি শ্রীবাসপণ্ডিতাদয়ঃ"-রূপে ব্যাখ্যা করিয়াছেন। শ্রীঅবৈত-বংশাবতংস পণ্ডিতবর মধনগোপাল গোস্বামী উহার বাঙ্গালা অমুবাদ এইরূপ করিয়াছেন —"যিনি সাধারণ দৃষ্টিতে গৌরকান্তি হইয়াও ভক্ত-বিশেষের দৃষ্টিতে শ্যামন্ত্রন্দররূপে বিভাত, অবৈত নিত্যানন্দ বাঁহার অন্ত, শ্রীবাসাদি বাঁহার উপান্দ, হবিনাম বাঁহার অন্ত, এবং গদাধর, গোবিন্দ প্রভৃতি বাঁহার পার্যদ, স্বিরবৃদ্ধি সাধুগণ সকীর্তন-যজ্বারা সেই ভগবান্ শ্রীকৃক্ষচৈত্র মহাপ্রভৃতে অর্জনা করিয়া থাকেন।"

মুরারি গুপু শ্রীচৈতভাকে যুগাবতার ও ১1৫1৪ শ্রোকে "হরেরংশং" বলিহাছেন। তিনি ১1১২1:৯-এ শ্রীচৈতভাকে "ভগবান স্বয়ম্," এবং ১1১৫1: ও অভাভা বছ স্থানে হরি বলিয়া বর্ণনা করিয়াছেন। ২1১1: শ্রোকে তিনি ছঃখ করিয়া বলিয়াছেন—

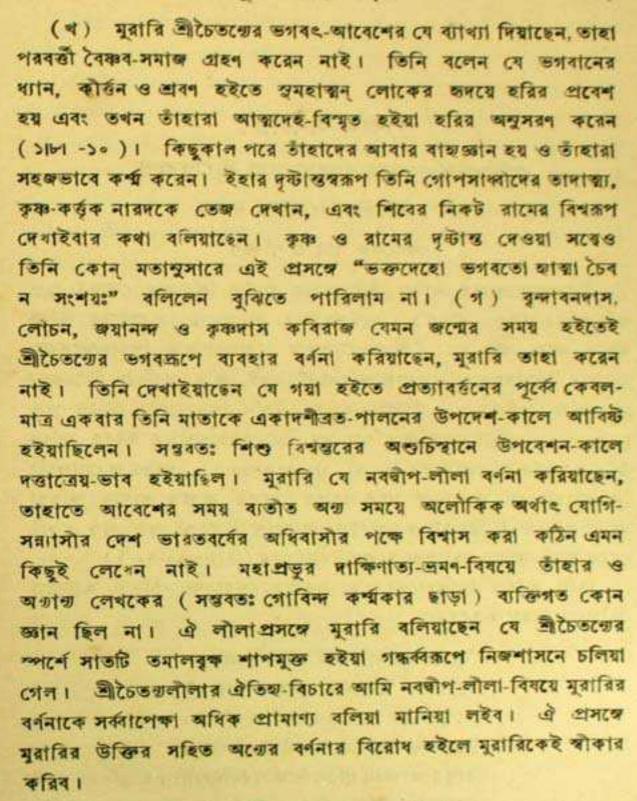
চৈত্রচন্দ্র তব পাদসরোজযুগ্যং
দৃষ্টাপি যে ব্যা বিভো ন পরেশবুদ্ধিন্।
কুর্ববিত্ত মোহবশগা রসভাবহীনাতে মোহিতা বিত্তবৈভ্বনায়য়া॥

"হে চৈত্যচন্দ্র তোমার পাদপদ্ম দর্শন করিয়াও যাহারা তোমাতে পরেশ-বৃদ্ধি করে না, তাহারা তোমার বৈভবমায়ায় মোহিত।"

মুরারি গুপ্ত ঐতিতভাকে যুগাবতার বলিলেও রন্দাবনদাস, কৃষ্ণদাস কবিরাজ প্রভৃতি পরবর্ত্তী লীলা-লেথকের সহিত তাঁহার তিনটি বিষয়ে পার্থকা দেখা যায়। (ক) মুরারি ঐতিতভাকে চতুভূজি-বিফুরূপে প্রণাম করিয়াছেন। যথা—

> নমামি চৈত্য্যমঞ্জং পুরাতনং চতুত্ব জং শব্দ-গদান্ত চক্রিণন্। শ্রীবংস-লক্ষাক্ষিতবক্ষসং হরিং সন্তালসংলগ্নমণিং সুবাসসন্॥ ১।১।১৪

স্থারপ দামোদর, রন্দাবনদাস হইতে আরম্ভ করিয়া বলদেব বিভাভূষণ পর্যান্ত বৈষ্ণবগণ শ্রীচৈতভাকে স্বয়ং ভগবান্ শ্রীকৃঞের আবির্ভাবস্থারণ দেখিয়াছেন।





# পঞ্চম অধ্যায়

# কবিকর্ণপুরের গ্রন্থসমূহে ঐটেচতস্য ক। ঐটিচতম্যচন্দ্রোপয় নাটক

লেখকের নাম ও পরিচয়

শ্রীচৈতভাচক্রোদয় নাটক শ্রীচৈতভার পার্ষদ শিবানন্দ সেনের পুত্র কবিকর্পপুর-কর্তৃক রচিত। নাটকথানির নান্দান্তে সূত্রধারের উক্তি হইতে জ্বানা যায় যে "শ্রীকৃষ্ণ-চৈতভাভা প্রিয়পার্ষদভা শিবানন্দসেনভা তমুজেন নির্ম্মিতং পরমানন্দদাস-কবিনা।" এই কবি স্বরচিত শ্রীচৈতভাচরিতায়ত মহাকাব্যে বলিয়াছেন যে তিনি শিবানন্দের কনিষ্ঠ পুত্র (২০।৪৬)। শ্রীল কৃষ্ণদাস কবিরাজের শ্রীচৈতভাচরিতায়ত হইতে কবির উক্তির সমর্থন পাওয়া যায় ( চৈ চ ৢ, ১।১০।৫৯-৬০ )। কবিরাজ গোস্বামী লিখিয়াছেন যে পরমানন্দ সাত বৎসর বয়সেই সংস্কৃত ভাষায় কবিতা রচনা করিতে পারিতেন ও মহাপ্রভুর আদেশে শ্রীকৃষ্ণের স্তব-মূলক একটি প্রোক রচনা করিয়া মহাপ্রভুকে শুনাইয়াছিলেন ( গ্রহাড০-৭০ )।

তিনি আরও লিখিয়াছেন যে একবার শিবানন্দ পুরীতে আসিলে শ্রীচৈত্য তাঁহাকে বলেন—

"এবার তোমার যেই হইবে কুমার।
'পুরীদাস' বলি নাম ধরিহ তাহার॥"
তবে মায়ের গর্ভে হয় সেই ত কুমার।
শিবানন্দ ঘরে গেলে জন্ম হৈল তার॥
প্রভুর আজ্ঞায় ধরিল নাম প্রমানন্দদাস।
'পুরীদাস' করি প্রভু করে উপহাস॥

- ₹5° 5°, «1>2184-89



## কবিকর্ণপূরের গ্রন্থসমূহে শ্রীচৈতত

শ্রীচৈততা যদি সতাসতাই পরমানন্দের নাম জন্মের পূর্বব হইতেই পুরীদাস রাখিতেন, তাহা হইলে শিবানন্দ সেই নাম অবহেলা করিয়া অভ নাম রাখিতেন না। কবিকর্ণপুর তাঁহার গ্রন্থসমূহে একবারও 'পুরীদাস' নাম ব্যবহার করেন নাই বা শ্রীমন্মহা এভূ-কর্তৃক যে ভাঁহার নাম ঐরূপ রাখা হইয়াছিল তাহাও উল্লেখ করেন নাই। ঐতিভয়ের চরিতাখ্যায়কের পক্ষে শ্রীচৈতত্য-প্রদত্ত নাম অপেকা গৌরবের বস্তু আর কিছু হইতে পারে না। অর্থচ সেই নাম যদি সতাই দেওয়া হইত তাহা হইলে উহা চাপিয়া যাইবারই-বা কি কারণ হইতে পারে ? বৈক্ষব সমাজের ধারণা যে কৃষ্ণদাস কবিরাজের "'পুরীদাস' করি প্রভু করে উপহাস"—এই উক্তির মধ্যে কবিকর্ণপূরের জন্ম-সম্বন্ধে একটি প্রচ্ছন্ন শ্লেষ আছে। সেটি হইতেছে এই যে গৌড়ীয় ভক্তগণ রথযাত্রার পূর্বের আসিয়া পুরীতে চাতুর্মাশ্যত্তত অবলম্বন করিয়া থাকিতেন; সে সময়ে জীসহবাস নিষিদ্ধ। শিবানন্দ সন্ত্রাক পুরীতে আসিতেন এবং ঐ চাতুর্মান্তের ভিতরই তাঁহার দ্রীর গর্ভসঞ্চার হয়। মহাপ্রভু ইহা জানিতে পারিয়া শিবানন্দকে পুত্রের নাম 'পুরীদাস' রাখিও বলিয়া উপহাস করিয়াছেন। কুমিলা ভিক্তোরিয়া কলেজের অধ্যক্ষ শ্রীযুক্ত রাধাগোবিন্দ নাথ মহাশয় কৃঞ্চদাস কবিরাজের চরিতামতের যে সংক্ষরণ প্রকাশ করিয়াছেন, তাহার ঝাখ্যায় বলিয়াছেন – "সম্বতঃ পুরীতে গর্ভসঞার হইবে বলিয়াই প্রভু পুরীদাস নাম রাখিলেন।" > কিন্তু নাথ মহাশয় সাধন-ভল্লন-পরায়ণ বাক্তি, এই কথা লিখিয়া হয়ত তাঁহার মনে কিছু খট্কা বাধিয়াছিল, তাই পরপৃষ্ঠায় বলিলেন—"সেন শিবানন্দ ও তাঁহার পত্নী নিতাসিদ্ধ ভগবৎ-পরিবার; প্রকৃত জাবের তায় ইন্দ্রিয়-তৃত্তির বাসনায় তাঁহাদের গ্রামাব্যবহার সম্ভব নহে।....ভাই শিবানন্দের পক্ষে কেবলমাত্র লীলার সহায়তা-নিমিত্ত প্রাকৃত-নর নারাবৎ ব্যবহার।" পুরীতে স্ত্রীসহবাস-খারা কিরুপে লীলার সহায়তা হইতে পারে তাহা বুঝিতে পারিলাম না। কৃষ্ণদাস কবিরাজের প্রত্যেক উক্তিকে বেদবাক্য বলিয়া মানিয়া লইয়া উহার ব্যাখ্যা করিতে যাইলে এইরূপ বিপজ্জনক অবস্থায় পড়িতে হয়।

<sup>&</sup>gt; विटेह डक्क विकायक (२४ मा असा, ७०५ पूर), बाबादगाविन्य नाटमंद्र माध्यस

68

### ত্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

আমার নিজের ধারণা, ঐতিচতত্তের 'পুরীদাস' নাম দেওয়া ঘটনাটি ঐতিহাসিক সত্য নহে। সম্ভবতঃ বৈষ্ণবদের মনে কবিকর্ণপূরের নাম পুরীদাস বলিয়া ধারণা জন্মিবার কারণ এইরূপ—

শ্রীচৈতভাচক্রোদয় নাটকে (দশমাস্ক) আছে যে শিবানন্দের ভাগিনেয় শ্রীকান্ত গৌড়ীয়দের নিকট হইতে আগাইয়া আসিয়া মহাপ্রভুর সহিত মিলিত হয়েন। প্রভু পুরীশ্বরের (পরমানন্দ পুরীর) সহিত স্থথোপবিষ্ট হইয়া শ্রীকান্তের সহিত কথোপকথন করিতে লাগিলেন। কোন্ কোন্ ভক্ত আসিতেছেন প্রভু জিজ্ঞাসা করিলেন।

শ্রীকান্ত—বাহুদেবাপতাং মাতুলতা পুজো।
মহাপ্রভু — তৌ দৃষ্টপূর্বেরী।
শ্রীকান্ত—কনীয়াংস্ত যঃ সোহদৃষ্টশ্রীচরণঃ।
মহা গ্রভু — (পুরীশ্বরং প্রতি) স্বামিন্, তব দাসঃ।
শ্রীকান্ত — প্রত্যে, এবমেব।
মহাপ্রভু—ততন্ততঃ 
የ

ব্যাপারটি এই যে শ্রীকান্ত বলিলেন, "বাহুদেবের ছেলে ও মামার ছই ছেলে আসিতেছে।" মহাপ্রভু বলিলেন, "সে ছই জনকে পূর্বের দেখিয়াছি।" শ্রীকান্ত বলিলেন, "ছোট ছেলেটি প্রভুর শ্রীচরণ-দর্শন করে নাই।" এমন সময়ে মহাপ্রভু শ্রীকান্তকে পুরীশ্বরের সহিত পরিচয় করাইয়া দিয়া বলিলেন, "স্বামিন, এ (শ্রীকান্ত) আপনার দাস।" শ্রীকান্ত বলিলেন, "প্রভু, তাই সত্য।" মহাপ্রভু তারপর অক্যান্ত কে আসিতেছেন জানিতে চাহিলেন। জোট ছেলেটির কথা বলার পরই পরমানন্দ পুরীকে "এ আপনার দাস" বলায় কোন কোন বৈক্ষব মনে করিয়াছিলেন শিবানন্দের ছোট ছেলের নাম বুঝি প্রভু 'পুরীদাস' রাখিলেন।

পরবর্ত্তী বিচারে দেখাইব যে ঐতিচতত্যের সাম্প্রদায়িক ধর্ম স্থাপন ও প্রচার করিবার জন্য তাঁহার প্রাচীনতম চরিতাখ্যায়ক কবিকর্ণপূর ও মুরারি গুপ্তের গ্রন্থগুলি চাপা দেওয়া প্রয়োজন হইয়াছিল। এই ছই জন লেখকের জীবনীর সহিত ঐতিচতত্যের জীবনী অচ্ছেছভাবে সংশ্লিষ্ট;



শ্রীতৈতত্তের জাবনী লিখিতে গেলে এই ছই জনের সম্পর্কিত ঘটনা বা ইহাদের গ্রন্থকে বাদ দেওয়া খুব কঠিন কাজ। সেই জত্তা কোন কোন বৈষ্ণব এরূপ ছই-একটি কাহিনার স্বপ্তি করিয়াছিলেন, যাহাতে ইহাদের প্রতি লোকের শ্রন্ধার কিছু হ্রাস হয়। 'পুরীদাস' নাম এইরূপ একটি কাহিনী। অপর কাহিনী হইতেছে কৃষ্ণদাস-ক্বিরাজ্প-বর্ণিত পুরীদাসের 'কৃষ্ণ' না বলা।

'কৃষ্ণ কহ' বলি প্রভু বোলে বার বার।
তভু কৃষ্ণ নাম বালক না করে উচ্চার॥
শিবানন্দ বালকেরে বহু যত্ন কৈলা।
তভু সে বালক কৃষ্ণ নাম না কহিলা॥
প্রভু কহে আমি নাম জগতে লওয়াইল।
স্থাবর পর্যান্ত কৃষ্ণ নাম কহাইলে॥
ইহারে নারিল কৃষ্ণ নাম কহাইলে।
শুনিয়া স্বরূপ গোসাঞি কহেন হাসিতে॥
তুমি কৃষ্ণ-নাম-মন্ত্র কৈলে উপদেশ।
মন্ত্র পাঞা কারো আগে না করে প্রকাশ॥
মনে মনে জপে —মুখে না করে আখ্যান।
এই ইহার মনঃকথা করি অনুমান॥

— চৈ চ°, ভা১৬।৬২-৬৭

কৃষ্ণদাস কবিরাজ গোস্বামী স্বরূপ-দামোদরের একটি সন্মান জুড়িয়া দিয়া বৈষ্ণবগণের পূর্বেবালিখিত প্রচেষ্টার সঙ্গে কবিকর্ণপূরের আদিম শ্রীচৈত্তগুসম্প্রদায়ে উচ্চস্থানের একরূপ সামগ্রস্থ বিধান করিলেন।

আদিম এটিচতভাগোষ্ঠীতে শিবানন্দ সেনের স্থান কিরূপ উচ্চ ছিল তাহা মুরারি গুপ্তের কড়চায়, ' কবিকর্ণপূর-কৃত নাটকে, ' এটিচতভাচরিতায়ত

<sup>&</sup>gt; भूतावि कटखब कड़डा, हा>१।०

২ জীতৈভজ্ঞচলোগর নাউক, ৮/৫৭, ৯/৯, ৯/০১-০২, ১٠/১, ১٠/০, ১٠/০

### ঐীতৈতগুচরিতের উপাদান

মহাকাব্যে, বন্দাবনদাসের প্রীচৈতগুভাগবতে, জ্যানন্দের প্রীচৈতগুভাগবতে, জ্যানন্দের প্রীচৈতগুভাগবতে, জ্যানন্দের প্রীচৈতগুভাগবতে, জ্যানন্দের প্রীচেতগুভাগবতে,

শ্রীচৈতভাচন্দ্রাদয় নাটকের প্রামাণ্য-বিচার শ্রীচৈতভালীলার ঐতিছ্য-বিচারের জভা দাক্ষিণাত্য-ভ্রমণের পর হইতে গল্পীরা-লীলা পর্যন্ত কাল-বিষয়ে শ্রীচৈতভাচন্দ্রোদয় নাটকের প্রমাণ বিশেষ মূল্যবান্। ইহার কারণ ছইটি। প্রথমতঃ এই গ্রন্থ বৈষ্ণব সমাজে সাধারণতঃ আদৃত ও প্রামাণ্য-রূপে গৃহীত হয় এবং কবিকর্ণপূরের পরবর্তী চৈতভাচরিত-লেখকেরা ইহার প্রমাণ উদ্ধার করিয়াছেন। কৃষ্ণদাস কবিরাজের শ্রীচৈতভাচরিতামূতে নিম্নলিখিত চোদ্দটি শ্লোক নাটক হইতে উদ্ধৃত হইয়াছে—

- (১) সার্ব্যভৌমের সহিত বিচার—নাটক, ৬।৬৭; চৈ° চ°, ২।৬।১৩৩-এর পর
- (২) স্বরূপ দামোদরের ঐটেচতত্ত-ন্তব—নাটক, ৮।১৪; চৈ০ চ০, ২।১০।১১৬র পর
- (৩) প্রতাপরুদ্রের সহিত মিলন নাটক, ৮৷২৭, ২৮, ৩৪ ; চৈ চ**্**, ২৷১১৷৬, ৮, ৩৭-এর পর
- (৪) শিবানন্দের সহিত মিলন—নাটক, ৮/৫৭; চৈ°চ°, ২/৯/১৩৬-এর পর
- (৫) শ্রীরূপের সহিত শ্রীচৈতন্মের মিলন—নাটক, ৯।৪৮, ৯।৪২, ৯।৪৩, চৈ চ , ২।১৯।১০৯-এর পর

শিবানন্দ সেনের পুক্র কবিকর্ণপূর। রূপের মিলন গ্রন্থে লিখিয়াছেন প্রচুর॥

(৬) রূপ-সনাতনের প্রতি রূপা—নাটক, ৯৷৪৫-৪৬-৪৮ ; চৈ চ চ, ২৷২৪৷২৫৯-এর পর

নিজ গ্রন্থে কর্ণপূর বিস্তার করিয়া। সনাতনে প্রভুর প্রসাদ রাথিয়াছে লিথিয়া॥

- ১ ঐতৈহলচরিতামৃত মহাকাবা, ১০৷১২৭, ১৪৷১০০-১০২, ২০৷১৭
- तृत्वावनवादमञ्ज्ञीदेव उत्तर्भाव क्रिक्ट व्याप्त क्र क्रिक्ट व्याप्त क्रिक्ट व्याप्त क्रिक्ट व्याप्त क्रिक्ट व्याप्त क्र क्रिक्ट व्याप्त क्रिक्ट व्याप्त क्र क्र व्याप्त क्र क्र व्याप्त क्र क्र व्याप्त क्र व्याप्त
- ৩ অপ্নাদনের চৈতজনপ্রল, পু" ১৪২
- # 25" 5", otoloz-zw, o o 1000, otoloo, otoles, otole+



# কবিকর্ণপূরের গ্রন্থসমূহে ঐাচৈতন্য

(৭) রঘুনাথের মহিমা—নাটক, ১০০০-৪; চৈত চত, তাভাহ৫৯-এর পর
এই ত প্রস্তাবে শ্রীকবিকর্নপূর।
রঘুনাথের মহিমা গ্রন্থে লিখিয়াছে প্রচুর॥
শিবানন্দ ঘৈছে সেই মসুদ্রে কহিল।
কর্নপূর সেইরূপ শ্লোক বণিল॥

যে কয়টি ঘটনা-উপলক্ষে। কবিরাজ মহোদয় কবিকর্ণপূরের শ্লোক তুলিয়াছেন, সে কয়টি ঘটনাই প্রীচৈতগুলীলার অগুতম প্রধান বিষয়। অথচ কবিরাজ গোস্বামী যখন স্বগ্রন্থবর্ণিত লীলার প্রমাণ-পঞ্জীর উল্লেখ করিয়াছেন, তথন কবিকর্ণপূরের নাম করেন নাই; যথা—১৮৮১৯-৪৫ ও ১৮৮৭৬ পয়ারে কেবলমাত্র বৃন্দাবনদাসের নাম; ১১১৩১৪ মুরারি গুপ্তের নাম; ১১১৩১৫ স্বরূপ-দামোদরের নাম; ১১১৩৪৪-৪৮ স্বরূপ-দামোদর, মুরারি ও বৃন্দাবনদাসের নাম; ১১১৭১২ বৃন্দাবনদাসের নাম; ২২১৭৩ স্বরূপ ও রুত্বনাথদাস গোস্বামীর নাম; ২১১৪৭৮

রবুনাথদাসের সদা প্রভু-সঙ্গে স্থিতি। তার মুখে শুনি লিখি করিয়া প্রতীতি॥

কবিকর্ণপুরের নাটকের শ্লোক যে স্থানে উল্লেখ না করিয়া পারা যায় না,
মাত্র সেই স্থানেই কবিরাজ গোস্থানী তাহার উদ্ধার করিয়াছেন, অক্যান্ত
স্থানে তাহার নাম উল্লেখ না করিয়া তাহার গ্রন্থের ভাবানুবাদ বা স্থানে
স্থানে আক্ষরিক অনুবাদ করিয়াছেন। ইহার উদাহরণ এই অধ্যায়েই পরে
দিতেছি। কবিরাজ গোস্থানীর পক্ষে কবিকর্ণপুরকে রক্ষাবনদাস, স্বরূপদানোদর ও রমুনাথদাস গোস্থানীর সহিত প্রামাণ্য বলিয়া উল্লেখ করা
কেন সম্বর্পর হয় নাই, তাহা প্রীচৈত্তচরিতায়তের বিচারে উল্লেখ করিব।

ভক্তিরত্নাকরে কবিকর্ণপূরের নাটকের কয়েকটি শ্লোক উদ্ভ হইয়াছে ও কাটোয়ার মহোৎসবে তাঁহার উপস্থিতি বর্ণনা করা হইয়াছে (পৃ<sup>°</sup> ৫৮৮)।

১৬৩৪ শকে অর্থাৎ ১৭১২ গুর্ফাব্দে কুলনগর-নিবাসী পুরুষোত্তম বা প্রেমদাস সিদ্ধান্তবাগীশ শ্রীচৈতভাচক্রোদয় নাটকের অনুবাদ বাঙ্গালা



#### ৮৮ - ত্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

পছে করেন। প্রেমদাস ঐতিচততার সমসাময়িক জগরাথ নামক আক্ষণের প্রপোক্র এবং বাগনাপাড়ার রামাই ঠাকুরের শিশু বলিয়া নিজের পরিচয় দিয়াছেন।

পদকর্তা উদ্ধবদাস লিখিয়াছেন—

শ্রীচৈতভাচন্দ্রোদয়, স্তবাবলী গ্রন্থচয়
রচিলেন কবিকর্ণপূর।
যা শুনি ভক্তি উদয় নাস্তিকতা নফ্ট হয়
অবৈঞ্চব ভাব হয় দূর।
কর্ণপূর গুণ যত একমুখে কব কত
চৈতভার বর পুত্র বেঁহ।
উদ্ধবেরে দয়া করি জ্ঞানচক্ষ্ দান করি
কবিহু লওয়ায় জ্ঞানি তেঁহ।

শীযুক্ত মৃণালকান্তি ঘোষ মহাশয় এই উদ্ধবদাসকে রাধামোহন ঠাকুরের শিশ্ব বলিয়া নির্ণয় করিয়াছেন এবং ইনি গদাধর পণ্ডিতের শিশ্ব উদ্ধবদাস নহেন এরপ প্রমাণ করিতে চেক্টা করিয়াছেন। শীযুক্ত হরেকৃষ্ণ মুখোপাধ্যায় মহাশয় গদাধর পণ্ডিতের শিশ্ব উদ্ধবদাসের একটি পদ উদ্ধার করিয়াছেন। শামার উদ্ধৃত পদের শেষ তিন চরণ দেখিলে মনে হয় ঐ পদের লেখক কবিকর্ণপূরের ব্যক্তিগত সংস্পর্শে আসিয়াছিলেন।

#### নাটকের রচনাকাল

শ্রীচৈতত্যচ স্রাদয় নাটকের রচনাকাল ঠিকভাবে নির্ণীত হইলে ইহা শ্রীচৈতত্যের জীবনী সম্বন্ধে কতদূর প্রামাণিক, তাহা স্থির করা সহজ

- s সৌরপদ চরলিনী, ৬০০ ৪৭
- २ वे २६ मध्यत्रम, जूबिका, भुः १८-१८
- ত ভারতবর্গ, কার্দ্রিক, ১০৪১

64



## কবিকর্ণপূরের গ্রন্থসমূহে শ্রীচৈতন্য

হইবে। এই নাটকের রামনারায়ণ বিভারত্বের সংস্করণে ও নির্ণয়সাগর প্রেসের সংস্করণের শেষে নিম্নলিখিত শ্লোকটি আছে—

> শাকে চতুর্দ্দশশতে রবিবাজিযুক্তে গোরোহরির্ধরণিমগুল আবিরাসীৎ। তক্মিংশ্চতুর্নবতিভাজি তদীয়-লীলা-গ্রন্থোহয়মাবিরভবৎ কতমস্থ বক্তাৎ।

এই শ্লোক দেখিয়া পূর্বব পূর্বব আলোচনাকারিগণ স্থির করিয়াছেন যে গ্রন্থানি হয় ১৪৯৪ শকে অর্থাৎ ১৫৭২ ৭৩ খুফ্টাব্দে, নয় ১৪০৭ + ৯ = ১৫০১ শকে বা ১৫৭৯-৮০ খুফ্টাব্দে রচিত হয় থিয়োডর অফ্রেট্ কোনরূপ কারণ না দেখাইয়া নাটক-রচনার কাল ১৫৪০ খুফ্টাব্দ বলিয়াছেন। ১

- (ক) এই তিনটি সিন্ধান্তের কোনটিই নাটক-রচনার কাল বলিয়া গ্রহণ করিতে পারা যায় না; কারণ, সংস্কৃত নাটকের প্রস্তাবনায় যে রাজার বা ঘটনার উল্লেখ করিয়া নাটক অভিনীত হইতেছে বলিয়া বর্ণনা করা হয়, তাহাকে সাধারণতঃ ঐতিহাসিক সত্য বলিয়া মানিয়া লওয়া হয়। শ্রীচৈতভাচন্দ্রোদয় নাটকের প্রস্তাবনায় আছে যে মহারাজ্প প্রতাপ-রুদ্র শ্রীচৈতভাবিরহে শোকাকুল হইয়াছিলেন। তাহার শোক অপনোদন করিবার জভ্য এই নাটকের অভিনয়ের ব্যবস্থা করা হয় (নাটক, ১া৪-৫)। এই প্রসঙ্গে প্রতাপরুদ্রের পরাক্রম ও ভগবদ্ধক্রির উচ্চুসিত প্রশংসা আছে। প্রতাপরুদ্রের শোক-অপনোদনের জভ্য নাটক রচিত হইলে, কবিকর্ণপুর উহা ১৫৪০-৪১ থুফান্বের পূর্বেই রচনা করিয়াছিলেন। কেন-না বহু ঐতিহাসিকের মতেই প্রতাপরুদ্র ১৫৪০-৪১ থুফান্বের মধ্যে পরলোক-গমন করেন।
- (খ) নাটকে বর্ণিত আছে যে রথযাত্রা উপস্থিত হইবার সময়ে কতিপয় শ্রীচৈতন্মভক্ত নিম্নলিখিতরূপ বিলাপ করিয়াছিলেন—

অহো সোহয়ং নীলাচলতিলক-যাত্রাবিধিরিয়ং নবোছানশ্রেণী রথবিজয়বত্মাপি তদিদম্।

২ Catalogus Catalogorum, প্রথম বত, পৃ\* ৮৬

#### শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

দহত্যুকৈঃ পিত্তত্বর ইব দৃশোঁ কৃত্ততি মনঃ খলানাং বাণীব ব্যথয়তি তত্ত্বং হুছুণ ইব॥

20

ভাবার্থ—অহা ! এখন সেই নীলাচলতিলক জগরাথের রথযাতা উপস্থিত, সেই উপবনসকল বিরাজমান, রপের বিজয়পর্থও এই, কিন্তু এই সকল পিতত্তরের ভায় চক্ষুর দাহ করিতেছে এবং খলের বাণীর ভায় ও হৃদয়-রণের ভায় বেদনা দিতেছে।—শ্রীচৈতভার তিরোভাবের প্রায় চল্লিশ বংসর পরে এই নাটক লিখিত হইলে ভক্তগণের ছঃখের এরূপ মর্ম্মপ্রশী বর্ণনা থাকিত কি না সন্দেহ।

কবিকর্ণপূর তাঁহার নাটকথানিকে সতা ও বাস্তব ঘটনার উপর প্রতিষ্ঠিত বলিয়া প্রমাণ করার জন্ম ব্যাগ্র ছিলেন। তিনি গ্রন্থশোধে "ইহা কল্লিত বলিয়া যেন স্থাগিণ বিবেচনা না করেন" বলিয়াছেন। যদি তিনি ১৫৭২ খুফাব্দে এই নাটক লিখিতেন এবং প্রস্তাবনায় প্রতাপরুদ্র-সম্বন্ধে যাহা বলিয়াছেন তাহা বলিতেন তবে গ্রন্থের প্রথমেই ত উহা কাল্লনিক বলিয়া প্রমাণিত হইত।

আমার মনে হয়, প্রতাপরুদ্রের মৃত্যুর পূর্বের ও শ্রীচৈতন্মের তিরোভাবের পরে এই প্রস্থ রচিত হইয়াছে। শ্রীচৈতন্মের তিরোভাবের বেশী পরে প্রস্থ-রচনার কাল ধরিতে পারি না, কেন-না এই নাটকে মুরারির কড়চার উল্লেখ নাই; অথচ মুরারির কড়চা শ্রীবাস ও দামোদর পণ্ডিতের জীবনকালে রচিত হইয়াছিল এবং ১৫৪০ গ্রুষ্টাব্দে রচিত কবিকর্ণপূরের মহাকাব্যের উপাদান যোগাইয়াছিল। হয় নবদ্বীপে মুরারি শুপ্ত ও কাঁচড়াপাড়ায় পরমানন্দ গুপ্ত একই সময়ে বসিয়া নিজ নিজ প্রস্থ লিখিতেছিলেন, অথবা মুরারির গ্রন্থ কবিকর্ণপূরের নাটকের কিছু পূর্বের রচিত হইয়াছিল অথচ কবিকর্ণপূরের হাতে আসিয়া পৌছায় নাই। ফল কথা, শ্রীচৈতন্মের তিরোভাবের ছই-এক বৎসরের মধ্যে শ্রীচৈতন্মচন্দ্রোদয় নাটক রচিত হইয়াছিল।

গ) নাটক-শেষে কবিকর্ণপুর বলিতেছেন—
 শ্রীচৈতন্তকগা যথামতি যথাদৃষ্টং যথাকর্ণিতং
জগ্রন্থে কিয়তী তদীয়কৃপয়া বালেন যেয়ং য়য়া।



# কবিকর্ণপূরের গ্রন্থসমূহে ঐতিচতত এতাং তৎপ্রিয়মগুলে শিব-শিব-স্ট্রাকশেষং গতে কো জানাতু শূণোতু বা তদনয়া কুষ্ণঃ সমুং প্রীয়তাম্।

শ্লোকোক্ত 'বালেন' শব্দ বিশেষভাবে লক্ষ্য করা কর্ত্তরা। প্রীচৈতন্ত্যচল্রোদয় নাটকে লিখিত আছে যে প্রভুর বৃন্দাবন হইতে আসার পর কবিকর্ণপূর প্রভুকে প্রথম দেখিলেন (১০।১৮)। কৃষ্ণদাস কবিরাক্ষ অন্ত্যলালায় কবিকর্ণপূরের সাত বংসর বয়স্ বলিয়া বর্ণনা করিয়াছেন (১৮০
চালায় কবিরণপূরের সাত বংসর বয়স্ বলিয়া বর্ণনা করিয়াছেন (১৮০
চালায় কবিরণ লিখিবেন বলিয়া প্রকাশ করিয়াছেন (২।২।২)। ইহা
হইতে মোটামুটি ধারণা করা যাইতে পারে যে প্রীচৈতন্তের তিরোভাবের
কালে কবিকর্ণপূরের বয়স্ ১৯ বংসর হইয়াছিল। এই হিসাব স্ক্রম
নহে, কেন-না কৃষ্ণদাস কবিরাজ্বের গ্রন্থে ক্রমভঙ্গের ও কালানোচিত্যের বহু
দূল্টান্ত আছে। যাহা হউক, ১৫৭২ খুল্টান্দে কবিকর্ণপূরের বয়স্ ৫৮।৫৯
বংসর হয়। বৈষণ্ডবায় দীনতা-প্রকাশের নানাভঙ্গী আছে বটে, কিন্তু ঐ
বয়সের লোক নিজেকে 'বালক' বলেন না।

যদি "বালেন ময়া যথাদৃষ্টং যথাকনিতং" অহ্বয় করিয়া ব্যাথ্যা করা যায় যে "বালককালে আমি যাহা দেখিয়াছিলাম যাহা শুনিয়াছিলাম তাহাই এখন লিখিলাম" তাহাতেও দোষ আসে: কবি কি বালককালের পর আর শ্রীচৈতত্যলীলার কোন থোঁজ্ব-খবর রাখিতেন না ? ১৫৭২ খুষ্টান্দের মধ্যে শ্রীচৈতত্য-সম্বন্ধে বহু সংস্কৃত ও বাঙ্গালা গ্রন্থ, গীত ও স্তব্ধ রচিত হইয়াছিল; স্কৃতরাং নাটক সে সময়ে লিখিত হইলে 'কো জানাতু' গদ ব্যবহার করিবেন কেন ? এটিকে অতিশয়োক্তি ধরিলেও, ৫৭২ খুষ্টান্দে শ্রীকৈতত্যলীলা শুনিবার আগ্রহ যে দেশমধ্যে প্রবল হইয়াছিল, তাহা কবিকর্ণপূরের অজ্ঞাত থাকার কথা নহে; স্কৃতরাং 'কো শৃণােতু' গদ-প্রয়োগের সার্থকতা দেখা যায় না। শ্রীচৈতত্যের তিরোভাবের অল্ল পরে যথন শ্রীচৈতত্যলীলা-বিষয়ক গ্রন্থাদি রচিত হয় নাই এবং দেশবাসী শ্রীচৈতত্যলীলা কি ভাবে গ্রহণ করিবে জানা নাই, তথন এরণ উক্তিকরিলে স্থাক্সত হয়।



#### শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

24

- (ঘ) ঐতিচতভাচন্দ্রোদয় নাটকে শ্রোভাদের মনে ঐতিচতভার ঈশরহ-সম্বন্ধে ধারণা জন্মাইবার আপ্রাণ চেফা দেখা যায়। যেখানেই জনসাধারণের পক্ষে বিশাস করা কঠিন এমন কোন ঘটনা বলা হইয়াজে, সেখানেই তাহার পক্ষে অনুকৃল যুক্তি দেখান হইয়াছে। দৃষ্টান্তম্বরূপ প্রথম অঙ্কের সূত্রধার ও পারিপার্থিকের এবং কলি ও অধর্যোর কথোপকথন উল্লেখ করা যাইতে পারে। পরবর্ত্তী লীলাগ্রন্থে এরপ যুক্তিতর্ক-ছারা লীলার সত্যতা-প্রকাশের চেফা দেখা যায় না। পরবর্তী গ্রন্থকারগণ হয় লীলার প্রামাণ্যকে স্বতঃ-সিক্ষরণে গ্রহণ করিয়াছেন, নয় "অলৌকিক বিষয়ে তর্ক করিও না" বলিয়া উপদেশ দিয়াছেন। বুন্দাবনদাস "এত পরিহারেও যে পাপী নিন্দা করে। তবে লাখি মারো তার শিরের উপরে॥" বলিয়া পাপীকে বৈষ্ণব পদরেণু-ছারা উদ্ধার করিয়াছেন। ঐতিচতত্যের বিরুদ্ধবাদী দল যেমন নবদ্বীপে তেমনি পুরীতে প্রবল ছিল। ব্রাক্ষণেরা এই দলের নেতা ছিলেন। পুরীর স্থাসিক পণ্ডিত মহামহোপাধ্যায় সদাশিব মিত্রা মহাশয় আমাকে বলিয়াছিলেন যে শ্রীচৈততা প্রতাপরুদ্রকে ম্যাঞ্জিক দেখাইয়া বশ করিয়াছিলেন ও উড়িয়ার স্বাধীনতা-লোপের কারণ হইয়াছিলেন। এই পুরীধামে ঐীচৈতত্তার তিরোভাবের পর ঐীচৈতত্ত-বিরুদ্ধবাদীরা পুবই প্রবল হইয়াছিল। যদি সতাই অভিনয়ের জন্ম নাটকথানি রচিত হইয়া থাকে, তবে যুক্তিতর্কের দ্বারা শ্রোতৃরুন্দকে লীলা-রহত বুঝান খুবই প্রয়োজন ছিল। এই প্রয়োজনীয়তা ১৫৩৪-৩৫ খুষ্টাব্দে যত বেশী ছিল, ১৫৭২ খুষ্টাব্দে তত নহে, কেন-না প্রীচৈতভারে তিরোভাবের পর যতই দিন যাইতে লাগিল, ততই শ্রীচৈতত্তের ধর্ম উড়িক্সায় প্রসার লাভ করিতে লাগিল।
- (৩) পূর্বেই বলিয়াছি, কনিকর্ণপূর ১৫৪২ খৃফীব্দে শ্রীচৈতগুচরিতামূত মহাকান্য রচনা করেন। শ্রীচৈতগুচন্দ্রোদয় নাটকের সহিত মহাকাব্যের তুলনা করিয়া দেখা যাউক কোন্ গ্রন্থখানি আগে লেখা হইয়াছিল। মহাকাব্যে বর্ণিত আছে যে মুরারি-সহ শিবানন্দ সেন নীলাচলে যাইয়া প্রথমে শ্রীচৈতগু-দর্শন করিলেন (১৩১২৭), এবং মহাপ্রস্থ শিবানন্দের মন্তকে বারবার চরণাঙ্গুষ্ঠ ছোয়াইয়া বলিলেন, "নমু জানামি ভবস্তম্"



# কবিকর্ণপূরের গ্রন্থসমূহে ঐটেডভা

(১০)১২৮)। আর একবার শিবানন্দ ও বাহুদেব দত্ত তুই পাত্র গলাজল লইয়া পুরা গিয়াছিলেন (মহাকাবা, ১৪।১০০-১০২)। প্রত্যেক পাত্রের অর্দ্ধেক জল জগনাথকে ও অর্দ্ধেক মহাপ্রভুকে দেওয়া হয়। মহাপ্রভু যখন শ্রীবাস-গৃহে আসেন, তখন একদিন এক চোর শিবানন্দের গৃহে আসিয়াছিল (ঐ, ২০।১৭)। মহাপ্রভু একরাত্রি শিবানন্দেগৃহে বাপন করিয়াছিলেন (২০।১৮)। এই কয়টি ঘটনা ছাড়া মহাকাব্যে শিবানন্দ ও তাঁহার পরিবার-সম্বন্ধে অন্য কোনও কথা নাই। শ্রীচৈতন্মের সহিত তাঁহার পিতার ও মানাত ভাই শ্রীকান্ত সেনের মিলন্ঘটিত অন্যান্ত কথা যে তাঁহার জানা ছিল না, এরূপ হইতে পারে না। আর জানা থাকিলে সে সম্বন্ধে নারব থাকারও বিশেষ কোন কারণ দেখা যায় না।

কবিকর্ণপূর শ্রীচৈতভাচন্দ্রোদয় নাটকে শিবানন্দ যে শ্লোক বলিয়া প্রথম মহাপ্রভুর শ্রীচরণদর্শন করিয়াছিলেন (৮।৫৭), তিনি কিরুপে "ঘট্টনালানাং ঘট্টদেয়াদি-নিম্নবিম্ননিবারক"-রূপে গৌড়ীয় ভক্তদিগকে নালাচলে লইয়া যাইতেন (১০।১), তাঁহার কুকুরের ঘটনা (১০।৩), কিরুপে তিনি কারারুদ্ধ হইয়াছিলেন (১০।৬), আবির্ভাব-রূপে শ্রীচৈতভা-কর্তৃক নৃসিংহানন্দ ব্রহ্মচারীর অন্নভোজন (৯।৯-১২) ও শিবানন্দের নিকট সে বিষয়ের উল্লেখ এবং শিবানন্দ-গৃহে শ্রীচৈতভার আগমন—বর্ণনা করিয়াছেন (৯।৩১)। ছই প্রস্তের শিবানন্দর্ঘটিত বিবরণ পড়িয়া মনে হয় নাটক পূর্বের লেখা। নাটকে এইসর ঘটনা বিস্তৃতরূপে বর্ণনা করা হইয়াছে বলিয়াই কবি মহাকাব্যে সংক্ষেপে ছই-একটি কথা উল্লেখ করিয়াছেন মাত্র।

শ্রীচৈতগাচন্দ্রোদয় নাটকে বর্ণিত আছে যে সন্ন্যাসের পর নিতানন্দ্র আছৈতের বাড়ীতে শ্রীচৈতগ্য-সহ আসেন এবং অদৈতকে জিজ্ঞাসা করেন, "ভো অদ্বৈত! নবদ্বীপে কশ্চিৎ প্রহিতোহস্তি ?"—নবদ্বীপে কাহাকেও পাঠান হইয়াছে কি ? (নাটক, ৫০০); মুরারির গ্রন্থে আছে শ্রীচৈতগ্য নিতানন্দকে নবদ্বীপে সংবাদ দেওয়ার জন্ম পাঠাইয়াছিলেন এবং নিত্যানন্দ্র আসিয়া শচীগৃহে ভোজনাদি করিয়া পর দিন সকলকে লইয়া শান্তিপরে গিয়াছিলেন (৩৪৪৪-১০)। মুরারির এ সম্বন্ধে ভুল হউবার কোন সম্ভাবনা নাই। বৃন্দাবনদাস নিত্যানন্দ-সম্বন্ধে যে সমস্ত সংবাদ দিগাছেন, তাহার অধিকাংশই সত্য, কেন-না তিনি নিত্যানন্দের নিকট সব শুনিয়াছিলেন। তিনিও নিত্যানন্দের নবরাপে আগমন-বৃত্তান্ত লিথিয়াছেন (চৈ ভা , তাত্তাত্তমন্ত লিথিয়াছেন (চৈ ভা , তাত্তাত্তমন্ত লিথিয়াছেন এ বিষয়ে ত্রীচৈতভাচন্দ্রোদয়ের বিবরণ ভাল্ত। কবিকর্পপুর মহাকাব্য লিথিবার আগে মুরারির গ্রন্থ পড়িয়া নিজের ভূল বুঝিতে পারেন। সেই জন্ত মহাকাব্যে নিত্যানন্দের নবন্ধাপ-গমন ও শচীসহ ভক্তগণকে শান্তিপুরে আনমন বর্ণনা করিয়াছেন (১১।৬০-৬৪)। মহাকাব্য ১৫৪২ খুটান্দে লিথিত হইয়াছিল। নাটক যদি ১৫৭২ খুটান্দে লিথিত হইত তাহা হইলে প্রথমে সত্য বিবরণ বলিয়া ৩০ বংসর পরে কবিকর্পপুর তাহার বিরুদ্ধে বিনা কারণে মিখা। বর্ণনা করিতেন না। সেই জন্ত বলিতে হয় প্রীচৈতভাচন্দ্রোদয় নাটক ত্রীচৈতভাচরিতায়ত মহাকাব্যের পূর্বের লেখা এবং মুরারির গ্রন্থ পড়িবার পূর্বেরর রচনা।

প্রীচৈতনাচন্দ্রাদয় নাটকে প্রীচৈতন্যের সন্ন্যাসের পূর্বকাবনের একটা মোটামুটি বিবরণ দেওয়া হইয়াছে। তাহা পড়িলেই মনে হয় যে লেখকের ঐ বিষয়ে জ্ঞান অল। হয়ত এই ক্রটা-সংশোধনের জনাই তিনি মুরারির গ্রন্থ অবলম্বন করিয়া মহাকাব্য লিথিয়াছেন।

নাটকের রচনাকাল-সম্বন্ধে আমার মনে হয় যে গ্রন্থ-শেষের কালবাচক প্লোকটি প্রস্থকারের রচিত নহে; কেন-না, গ্রন্থকার সাধারণতঃ
'কতমত বক্তাহ' (কোন ব্যক্তির মুখ হইতে) এরপ বাক্য প্রয়োগ
করেন না। উক্ত প্লোকের 'আবিরভবং' শব্দের মুখার্থ 'প্রকাশিত
হইয়াছিল,' 'রচিত হইয়াছিল' নহে। সেই জত্ত অনুমান হয়, ভরতবাক্য
বা মঙ্গলাচরণ প্লোকের তায় এই প্লোকটি অভিনেতৃবর্গের পক্ষ হইতে
প্রথম কথিত হইয়াছিল এবং পরবর্তী কালে উহা নাটকের অন্তর্ভুক্ত
হইয়া গিয়াছে।' এই সব কারণে আপাততঃ সিদ্ধান্ত করিতেছি যে
শ্রীতৈভভচক্রোদয় নাটক ১৫৪০ খুক্টাব্দের পূর্বের রচিত হইয়াছিল।

<sup>্</sup> এই প্ৰসংগ তীবৃক্ত চিন্তাহরণ চক্রবর্ত্তী-কৃত ভরতবাক্য-বিবহক আলোচনা ক্রইবা—Indian Historical Quarterly, «ম বঙ, গু" এচ»



## কবিকর্ণপুরের প্রন্তসমূহে শ্রীচৈতন্ত

# থ। ঐীতিভভারিতামূত মহাকাব্য এত্থের পরিচয়

১২৯১ সালে চৈত্র মাসে অর্থাৎ ১৮৮৪ খৃন্টান্দে রামনারায়ণ বিছারত্ব,
মহাত্মা শিশিরকুমার ঘোষ, কেদারনাথ দত্ত ও তুর্গাদাস দত্তের অন্মুরোধে
এই গ্রন্থ প্রকাশ করেন। অন্টাদশ শতাক্দার প্রথম ভাগে নরহরি চক্রবর্ত্তী
"ভক্তিরত্বাকরে" এই গ্রন্থের প্রোক উদ্ধৃত করিয়াছেন।" "সক্তনতোষিণী" পত্রিকার দিতীয় বর্ষে এই গ্রন্থ শ্রীচৈতক্যদাস গোস্বামী
লিথিয়াছেন বলিয়া প্রকাশিত হইয়াছিল, এবং প্রভুপাদ শ্রীয়ুক্ত অতুলকুম্ব
গোস্বামী স্বসম্পাদিত শ্রীচৈতক্যভাগবতের দিতীয় সংস্করণে এই ভাবেই
সক্তনতোষিণীর উক্তি উদ্ধৃত করিয়াছেন। কিন্তু এই উক্তি ঠিক নহে।
কৃষণাস কবিরাক্ব লিথিয়াছেন—

চৈতত্যদাস রামদাস আর কর্ণপূর। তিন পুত্র শিবানন্দের প্রভুর ভক্তশূর॥ ১৷১০৷৩০

ইহার দ্বারা জ্বানা যায় যে কবিকর্ণপুর শিবানন্দের কনিষ্ঠ পুত্র। আর মহাকাব্যে আছে—

> ইহ প্রমকৃপালোগে রিচক্রস্থ কোহপি প্রণয়-রসশরীরঃ শ্রীশিবানন্দ-সেনঃ। ভূবি নিবসতি তত্তাপতামেকং কনীয়-স্বকৃতপ্রমমৌগ্রাচ্চিত্রমেতং প্রবন্ধম্॥ ২০।৪৬

শিবানন্দ সেনের কনিষ্ঠ পুত্র এই গ্রন্থ রচনা করিয়াছিলেন এবং সেই কনিষ্ঠ পুত্রের নাম পরমানন্দ গুপু, কবিকর্ণপুর পরমানন্দ সেন বা গুপু। মহাকাব্যের ২০।৪৯ শ্লোকে আছে ১৪৬৪ শকের আধাঢ় মাসে অর্থাৎ ১৫৪২ খৃষ্টাব্দে ইহা লিখিত হয়। এই তারিখ সন্দেহ করিবার কোন কারণ নাই।

১ অক্তিরপ্রাকরের ৭৬১ পুরার মহাকাব্যের ২।২৪ এবং ৮৪৯ পুরার ৫।১২৮ ও ১২৯ লোক বৃত হইরাছে।

২ অতুলকুক গোখামীৰ নীতৈতকভাগৰত, পৰিশিষ্ট, পু" ৪১

#### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

26

মহাকাব্য বিশটি সর্গে বিভক্ত। ইহাতে এক হাজার নয় শত এগারটি প্লোক আছে। তন্মধ্যে প্রথম সর্গের উনত্রিশটি প্লোকে শ্রীগোরাঙ্গ-বিরহে ভক্তগণের অবস্থার বর্ণন। নবম সর্গের ৯৫টি প্লোক ও দশম সর্গের ৮০টি প্লোক কৃষ্ণলীলা-বিষয়ক। অবশিষ্ট ১০০৭ প্লোকে গৌরাঙ্গলীলা বর্ণিত হইয়াছে।

পূর্বেই বলিয়াছি গ্রন্থের প্রথম আট সর্গ ও একাদশ সর্গ মুরারি গুপ্ত-বর্ণিত লীলার অনুসরণ করিয়া লেখা। মূলতঃ মুরারিকে অনুসরণ করিলেও স্থানে স্থানে মুরারির সহিত মহাকাব্যের পার্থকা দেখা যায়। এই পার্থকা ছইটি কারণে ঐতিহাসিকের নিকট অত্যন্ত মূল্যবান্। প্রথমতঃ মুরারির কিছু অপ্পার্টতা বা ভুলক্রটী থাকিলে তাঁহার গ্রন্থরচনার অত্যন্তকাল পরেই কবিকর্ণপূর সেগুলি-সম্বন্ধে অনুসন্ধান করিয়া যথার্থ বিবরণ দিয়াছেন। মুরারিকে দৃঢ়ভাবে অনুসরণ করিতে করিতে তিনি কোখাও তাঁহার উক্তির বিরুদ্ধে যাইলে মনে করিতে হইবে বিশেষ কোন কারণবশতঃ মুরারির মত কবিকর্ণপূর গ্রহণ করিতে পারেন নাই। যে শ্লোকগুলিতে কবিকর্ণপূর মুরারির প্রতিধ্বনি করিয়াছেন, সেগুলির বর্ণিত ঘটনা-সম্বন্ধে কোন প্রকার আগতি থাকিতে পারে না।

কবিকর্ণপূরের মহাকাব্যের ঐতিহাসিক মূল্যের দ্বিতীয় কারণ এই যে কবি কোন কোন স্থানে অলৌকিক ঘটনার যোগ করায় বা নবভাব সংযোগ করায় শ্রীচৈতত্ত-সম্প্রদায় কি করিয়া বিকসিত ও গঠিত হইতেছে তাহার ধারা বুঝিতে পারা যায়।

প্রথমাক্ত ঐতিহাসিক গুরুত্বের দৃষ্টান্ত দিতেছি। মুরারির গ্রন্থ পড়িয়া মনে হয় যে অগৈতের সহিত বালাকালে বুঝি বিশ্বস্তরের পরিচয় ছিল না ও গয়া হইতে প্রত্যাবর্তনের কিছু পরে শ্রীবাসাদি-সহ শান্তিপুরে যাইয়া বিশ্বস্তর অগৈতের সহিত সাক্ষাৎ করেন (কড়চা, হালাচ-৩০)। কবিকর্ণপূর মহাকাব্যে বলিয়াছেন অগৈতই প্রথম শ্রীবাসের বাড়ীতে বিশ্বস্তরের সহিত সাক্ষাৎ করিতে আসেন (লাহ৪৩১)। বুন্দাবনদাস বলেন যে বিশ্বরূপ অগৈতের নবদীপন্থ ভবনে প্রায়ই যাইতেন ও শিশু-বিশ্বস্তর একদিন দাদাকে ডাকিতে তথায় গিয়াছিলেন। পরে অগৈতের



# কবিকর্ণপূরের গ্রন্থসমূহে শ্রীচৈতগ্র

সহিত পড়্যা বিশ্বস্তরের বছবার দেখা হইয়াছিল। এ স্থলে বৃঝিতে হইবে যে মুরারি অছৈতের সহিত বিশ্বস্তরের পরিচয় অপ্রয়োজনীয়-বোধে বর্ণনা করেন নাই, কেন-না ভাবের মানুষ বিশ্বস্তরের সহিত যে পরিচয় সেই ত সতা পরিচয়।

#### ग। त्योदगत्यात्म्भनोशिका

কবিকর্ণপুর গৌরগণোদ্দেশদীপিকায় ঐতিত্ততের সমসাময়িক ভক্তরন্দের তর্বনিরূপণ করিয়াছেন। উক্ত প্রস্তের পঞ্চম সংখ্যক প্রাকে
পাওয়া যায় যে ঐপরমানন্দদাস নামক এক ব্যক্তি কতিপয় মহামুভব সাধু
ব্যক্তির অনুরোধে এই প্রস্ত লিখিলেন। প্রস্থকার স্বরূপদামোদরাদির
প্রস্ত দেখিয়া, মথুরা, উড়িয়া ও গৌড়দেশের ভক্তদের মুখে শুনিয়া এবং
স্ব-মনীয়ার দ্বারা বিচার করিয়া এই তর্থনিরূপণ করিয়াছেন। প্রস্তের
শেব প্রোক হইতে জানা যায় যে ইহা ১৫৭৬ গুরুটান্দে সমাপ্ত হয়।
ইহাতে ঐতিত্তিচরিতামূত মহাকাব্যের ও ঐতিত্তিতচন্দ্রোদয় নাটকের
প্রোক প্রত হইয়াছে। আর মঙ্গলাচরণে "অলরার কৌস্তভের" মঙ্গলাচরণপ্রোক প্রদত্ত হইয়াছে। কেই জন্ম অনুমান হয় কবির রচনার মধ্যে বোধ
হয় ইহাই শেব গ্রন্থ। কেহ কেহ সন্দেহ করেন যে গৌরগণোদ্দেশদীপিকা কবিকর্ণপূরের রচনা নহে। '

তাঁহাদের আপত্তি এই যে (ক) কৃষ্ণদাস কবিরাজ ঐ গ্রন্থের নাম-উল্লেখ করেন নাই বা উহার কোন শ্লোক-উদ্ধার করেন নাই। (খ) গ্রন্থে ব্রজের ও তৎপূর্ববলীলার পার্যদগণের সহিত যে ভাবে প্রীচৈতগুলীলার পার্যদগণের তত্ত্ব মিলান হইয়াছে তাহা ছয় গোস্বামীর অনুমোদিত নহে।

<sup>&</sup>gt; রাদ্বিহারী দাখ্য **টার্থ—"**বৈক্ষক সাহিত্য", কাশিষ্যালার সাহিত্য-সম্মিলনীর দাণ্ড্র বিবরণ, পু" ১২০

শ্বীতৈতভ্রমতবোধিনী পত্রিকা, ৪০৭ হৈতভাগ দোনার গৌরাঙ্গ পত্রিকা, ১৩০২, তৃতীয় বর্গ, ১১ সংখ্যা, পু° ৬৮৪ মাসিক বহুমতী, ১৩৪২, পৌষ, পু° ৪৫৫

#### ৯৮ - ত্রীচৈতন্মচরিতের উপাদান

(গ) যে হেতু ইহাতে ঐতিচতভাকে মাধ্ব সম্প্রদায়ের অন্তর্ভুক্ত বলা হইয়াছে, সেই হেতু ইহা কবিকর্ণপূরের লেখা নহে।

প্রথম আপত্তি সম্বন্ধে বক্তব্য এই যে কবিরাজ গোস্বামী কবিকর্ণপুর-রচিত শ্রীচৈতক্যচরিতামূত মহাকাব্যের নাম-উল্লেখ বা শ্লোক-উদ্ধার করেন নাই। আমি কবিকর্ণপুরের মহাকাব্যের বিচারে দেখাইয়াছি যে তৎসত্ত্বেও তিনি যে ঐ গ্রন্থ সমত্বে পড়িয়াছিলেন ও ছাই-এক স্থানে ইহার ভাবামুবাদ করিয়াছেন তাহার বিশিষ্ট প্রমাণ আছে। কবিরাজ গোস্বামী প্রবোধানন্দ সরস্বতীর শ্রীচৈতক্যচন্দ্রামূতের একটি শ্লোকও উদ্ধৃত করেন নাই। সে জ্বল্ল কবিকর্ণপুরের মহাকাব্য বা প্রবোধানন্দের শ্রীচৈতক্যচন্দ্রামূতকে কেহ জাল বলেন না।

বিতীয় আপত্তির উত্তর এই যে কবিকর্ণপূরের তত্ত্বিচারের সঞ্চে গোস্বামিগণের তত্ত্ব-ও ভাব-বিচারের পার্থকা স্থাপ্সই। বিশেষতঃ স্বরূপ গোস্বামীর মত তুলিয়া কবিকর্ণপূর তাহা খণ্ডন করিয়াছেন। গোড়মণ্ডলে এক প্রকার মতবাদ ও বুন্দাবনমণ্ডলে অন্য প্রকার মতবাদ স্থাপিত হইয়াছিল। সেই জন্মই কবিকর্ণপূরের গণোদ্দেশের প্রতিধ্বনি পাঁচ গোস্বামীর লিখিত গ্রন্থে পাওয়া যায় না। আরও অনুমান হয়, এই জন্মই কবিরাজ গোস্বামী গণোদ্দেশের শ্লোক তুলেন নাই।

এইবার গৌরগণোদ্দেশদীপিকা যে কবিকর্ণপূরেরই লেখা তাহার কয়েকটি প্রমাণ উপস্থিত করিতেছি। (ক) শিবানন্দ সেনের পুত্র ছাড়া অন্য কাহারও এত সাহস হইতে পারে না যে স্বরূপ-দামোদরের মত তুলিয়া তাহা খণ্ডনপূর্বক স্বমত স্থাপন করেন। (খ) আলোচ্য গ্রন্থের তৃতীয় শ্রোকে শ্রীনাথকে গুরু বলিয়া প্রণাম করা হইয়াছে। কবিকর্ণপূর-কৃত "আনন্দ-রুন্দাবন-চম্পুর" মঙ্গলাচরণেও শ্রীনাথ নামক গুরুকে প্রণাম আছে। গণোদ্দেশে আছে—

> পিতরং শীশিবানন্দং সেনবংশ-প্রদীপক্ম্ বন্দেহহং পরয়া ভক্তা পার্মদাগ্রাং মহাপ্রভাঃ॥ १

১ গৌরগণোদ্দেশদীপিকার ১৪৭-১৫৩ য়োকে বঙলের মত বঙ্গ করা হইলাতে।

व वे ठकुर्न दशांक



# কবিকর্ণপূরের গ্রন্থসমূহে ঐতিচততা

বইখানি জ্ঞাল হইলে জ্ঞালকারী শিবানন্দকে পিতা বলিয়া এরূপভাবে উল্লেখ করিতেন না। প্রস্তের প্রথম শ্লোকে আছে প্রমানন্দদাস কর্তৃক প্রস্ত লিখিত হইল। প্রমানন্দ কবিকর্ণপূরেরই নাম। ৬৩ শ্লোকে আছে ৫ নিত্যানন্দের মহিমা বলিয়া

देखि अन्तन् दम कनदका नगर्छ।

১৪৫ শ্লোকে চৈত্তাদাস ও রামদাসকে "মজ্জোষ্ঠো" বলিয়া বর্ণনা করা হইয়াছে। কৃষণদাস কবিরাজও বলিয়াছেন—

> চৈত্রদাস, রামদাস, আর কর্ণপূর। তিন পুত্র শিবানন্দের—প্রভুর ভক্তশ্র॥ ১১১০।১০

১৭৬ শ্লোকে কবিকর্ণপুর নিজের পিতা ও মাতার তত্ত্বনিরূপণ করিয়াছেন। ১৭২ শ্লোকে সারত্ব ঠকুরের তত্ত্বনিরূপণে গ্রন্থকার বলিতেছেন—

প্রহলাদো মন্ততে কৈশ্চিমংপিত্রা স ন মন্ততে।

শিবানন্দের পুত্র ব্যতিরেকে আর কেহ গ্রন্থ লিখিলে "আমার পিতার এই মত নহে"—এরপ লিখিতেন না। শিবানন্দ সেন যে শ্রীচৈতত্ত-সম্প্রদায়-গঠনে একজন প্রধান উদেঘাক্তা ছিলেন তাহার বহু প্রমাণ পূর্বের দিয়াছি এবং এই ১৭২ সংখ্যক শ্লোকটিই তাহার অন্যতম শ্রেষ্ঠ প্রমাণ।

গৌরগণোদ্দেশদীপিকার অকৃত্রিমতায় সন্দিহান ব্যক্তিদের তৃতীয় যুক্তি-সম্বন্ধে এইবার আলোচনা করা যাউক। বিরুদ্ধবাদীরা বলেন যে বলদেব বিভাভূষণ এই গ্রন্থ লিখিয়া কবিকর্গপূরের নামে চালাইয়া দেন। এইরূপ সন্দেহ যুক্তিসম্বত মনে হয় না; কারণ প্রথমতঃ বলদেব বিভাভূষণ ১৬৮৬ শকে বা ১৭৬৪ গুফাব্দে স্তবাবলীর টাকা লেখেন। ইহার বহু পূর্বে হইতেই মাধ্ব সম্প্রদায়ের গুরুপ্রণালী শ্রীচৈতভাসম্প্রদায়ে প্রচলিত ছিল। ১৬৯৮ গুফাব্দে মনোহরদাস "অনুরাগবলী" প্রস্তে ঐ প্রকার গুরুপ্রণালী দিয়াছেন। তিনি আবার গোপাল গুরুর লেখা গুরুপ্রণালী উদ্ধার করিয়াছেন। বিশ্বনাথ চক্রবর্তী বলদেব বিভাভূষণের পূর্ববর্তী ব্যক্তি। বিশ্বনাথের নিজের দেওয়া তারিখ হইতে জানা

#### শ্রীচৈততাচরিতের উপাদান

200

যায় যে তিনি ১৬০১ শকের ফান্তনী পূর্ণিমায় অর্থাৎ ১৬৮০ গুন্টাব্দে "প্রীকৃষ্ণ-ভজনামৃত," ১৬৯৬ গুন্টাব্দে "উজ্জ্বলনীলমণি"র "আনন্দচন্দ্রিকা" টাকা ও ১৬২৬ শকের মাঘ মাসে অর্থাৎ ১৭০৫ গুন্টাব্দে ভাগবতের টাকা সমাপ্ত করেন। প্রবাদ যে তাঁহার শিশ্য কৃষ্ণদেব সার্বভৌমের সহিত বলদেব বিভাভ্ষণ জ্বয়পুরে বিচার করিতে যান। এ ক্ষেত্রে যথন বিশ্বনাথের "গৌরগণস্বরূপতত্তিকায়" মাধ্ব গুরুপ্রণালী পাওয়া যায় তথন উহা সর্ববিপ্রথমে বলদেব বিভাভ্ষণ "গৌরগণোদ্দেশদাপিকা" জাল করিয়া চালাইলেন ইহা কিরূপে স্বীকার করা যায় ?

দিতীয়তঃ "গৌরগণোদ্দেশদীপিকা" যে কবিকর্ণপুরেরই রচনা তাহা বলদেবের কিঞ্চিং পূর্ববর্তী বা সমসাময়িক চ্ইজন প্রসিদ্ধ লেখকের উক্তি হইতে জানা যায়। এই চ্ইজনের মধ্যে একজন হইতেছেন "ভক্তিরত্নাকর" প্রণেতা নরহরি চক্রবর্তী। তিনি ৭৭, ১৪২, ১৫০, ৭৩৭, ৮৩০, ১০১৬ ও ১০৩৭ পৃষ্ঠায় "গৌরগণোদ্দেশদীপিকা"র শ্লোক উদ্ধার করিয়াছেন। তিনি ৩১১ পৃষ্ঠায় মাধ্য গুরুপ্রণালী লিখিবার সময় বলিয়াছেন — "তথাহি শ্রীক্বিকর্ণপুর-কৃত-শ্রীমন্গৌর-গণোদ্দেশ-দীপিকায়াম্"। অত্য লেখক হইতেছেন বাদ্ধালা ভক্তমালের লেখক লালদাস বা কৃঞ্চদাস। তিনিও উক্ত গুরুপ্রণালী কবিকর্ণপুর-কৃত বলিয়াছেন (প্রা ২৬-২৭)।

এই সকল প্রমাণ-বলে আমি সিদ্ধান্ত করিতেছি যে এই গ্রন্থ শিবানন্দ সেনের পুত্র কবিকর্ণপূরেরই রচনা।

# শ্রীচৈতত্তের তত্ত্ব- ও মত-সম্বন্ধে কবিকর্ণপূর

নাটকের ও মুরারির কড়চার তারিথ-সন্থন্ধে আমার সিন্ধান্ত সকলে
না মানিতে পারেন। কিন্তু কবিকর্ণপূরের ঐতিচতগুচরিতামূত মহাকাব্যের
তারিথ (১৪৬৪ শক, মহাপ্রভুর তিরোভাবের নয় বংসর পরে) ও উহার
অক্তিমতা-সন্থন্ধে সন্দেহ করিবার কোন কারণ নাই। এই মহাকাব্য
হইতে ঐতিচতগু-সন্থন্ধে দার্শনিক তত্তসমূহের প্রথম মুগের অভিব্যক্তির
নিদর্শন পাওয়া যায়।



# কবিকর্ণপূরের গ্রন্থসমূহে শ্রীচৈত্য

মহাকাব্য লিখিবার সময় স্থির হইয়া গিয়াছে যে ঐতৈত্য "ঐমহ্রুক্তবর-বধু-প্রাণনাথ" (১৮৮)। তাঁহার আবির্ভাবের যে কারণ স্বরূপ-দামাদর নির্ণয় করিয়াছেন ও কৃষ্ণদাস কবিরাজ অনুসরণ করিয়াছেন তাহার কোন উল্লেখ কবির্ণাল্ডর পাওয়া যায় না। "ঐরাধার প্রণয়মহিনা" কিরপ প্রভৃতি বাঞ্চাত্রয় পরিপূরণার্থ ঐতিত্ত্য অবতার্ণ ইইয়াছিলেন, এ কথার ইন্দিত কবিকর্ণপূরে নাই। বরং তিনি মহাকাব্যে বলিয়াছেন যে ঐতিত্ত্য "ত্রিবিধ তাপতপনে" ক্লিফ্ট জীবের উদ্ধার-জন্ম পৃথিবীতে আসিয়াছিলেন (১৭।৭)। ঐতিত্ত্যাচন্দ্রোদয় নাটকেও প্রভুর অবতার গ্রহণের কারণ সম্বন্ধে বলা হইয়াছে যে তিনি নির্বির্ণাশপর অভৈত্বাদ থণ্ডন করিয়া "ভগবান্ ঐকৃষ্ণ এব স্বিশেষণ প্রক্ষেতি তত্ত্ম, তত্যোপাসনং সনন্দনাত্রাপগীতমবিগীতমবিকলঃ পুরুষার্থঃ। তক্ত সাধনং নাম নামসন্ধার্তন-প্রধানম্, বিবিধভক্তিযোগমাবির্ভাবায়িত্বং ঐতিত্ত্যরূপী ভগবানাবিরাসীৎ" (১৭৭)। আবার ঐতিত্ত্য যে "হরিভক্তিযোগ" শিক্ষা দিবার জন্ম অবতীর্ণ হইয়াছেন তাহাও বলা ইইয়াছে (নাটক, ১০৯৮)।

শ্রীচৈত গ্রহণ ব্যাং ভগবান্ তাহা কিরূপে নিরূপিত হইল, তৎসম্বন্ধে শ্রীচৈত গ্রচন্দ্রোদয় নাটক হইতে জানা যায় (নাটক, ১০৩-৩৫)। আনন্দময় পুরুষই সকল লোককে আনন্দিত করিতে পারেন, যেমন ধনবান্ ব্যক্তিই অপরকে ঋণী করিতে পারে। শ্রীকৈত গ্রাণ্ডির গ্রহণ করিছে পারে। শ্রীকৈত গ্রহণ করিছে শারী করিছে পারে। শ্রীকৈত গ্রহণ করিছে শারী করিছে পারে। শ্রহণ প্রাণ্ডির শারী, রিগ্ধতা প্রভৃতি অহা পুরুষেও ত বিহামান থাকিতে পারে প্রতার উত্তরে কবি কলির মুখ দিয়া বলাইয়াছেন যে গীতায় (১০৪১) আছে, "যে যে বিভৃতিযুক্ত বস্তুসমূহ শ্রীবিশিষ্ট হয় তুমি তৎসমূদ্য আমার তেজ এবং অংশ হইতে এতজ্ঞপে সমূৎপন্ন বলিয়া জানিবে।" শ্রীকৈতত্তর ভগবত্তা-নিরূপণের এই যুক্তিমূলক প্রণালী (rationalistic theory) মুরারি গুপ্তের আবেশ-ব্যাখ্যার অনুরূপ। এই যুক্তিমূলক বাদ পরবর্তী শ্রীচৈতত্যলীলা ও তর্বলেখকগণ স্বীকার করেন নাই।

শ্রীচৈতত্তার মত-সম্বন্ধে কবিকর্ণপূরের মহাকাব্য হইতে জানা যায় যে তিনি যুক্তিকে চরম সাধাবস্ত বলিয়া স্বীকার করিতেন না (১২১৯২)।

#### শ্রীচৈতহাচরিতের উপাদান

502

শ্রীচৈতত্তচন্দ্রাদয় নাটকেও অনুরূপ উক্তি করা হইয়াছে (১।১৮-১৯)। তথায় শ্রীচৈতত্ত বলিতেছেন, "মৃক্তিশব্দোহত্র পার্যদম্বরূপপরঃ।" শ্রীজীব গোস্বামী যে তত্ত্বসন্দর্ভে "অবিভাধ্যন্তমজ্ঞহাদিকং হিবা স্বরূপেণ ব্যবস্থিতিঃ মৃক্তিঃ" বলিয়াছেন (৫৭), তাহার মূল-ব্যাখ্যাতা যে শ্রীচৈতত্ত তাহা পাওয়া গেল।

কবিকর্ণপূর ঐতিচত্যচন্দ্রোদয় নাটকে বৈধী ও রাগানুগা ভক্তির বিচার করিয়াছেন (৩১৯)। সেধানে বলা হইয়াছে যে শান্ত্রীয় মার্গ ও অতুরাগের মার্গ পৃথক। অতুরাগের পথ নিয়ম মানে না। "প্রেমভক্তি"র (নাট্যোক্ত পাত্রী) এই সিদ্ধান্তে "মৈত্রী" বলেন "অনিয়মিত পথে গমন করিলে গমাস্থানে পৌছিতে অতি বিলম্ব হইতে পারে।" তাহার উত্তরে প্রেমভক্তি বলেন, "তাহার নিশ্চয়তা নাই। যেমন জলপ্লাবনের সময় বয়ার কোন নিদ্দিন্ট পথ না থাকিলেও নৌকারোহিগণ অতি সম্বর নির্মাত স্থানে উপস্থিত হইতে পারে, কিন্তু স্বভাবতঃ অতি কুটিল নদীর প্রবাহে পতিত হইলে নিদ্দিন্ট পথেও বিলম্ব ঘটিয়া থাকে।"

# বৈষ্ণৰ সমাজে কৰিকৰ্ণপূৱের স্থান

গৌড়ায় বৈঞ্চৰ সমাজে কৰিকৰ্পপুরের স্থান দেখিয়া আমি বড়ই বিশ্বয় বোধ করি। ১৫৩২ গুট্টান্দ (বিদ্যমাধৰ-রচনার কল) হইতে ১৫৭৬ ( শ্রীজাবের লঘুতোবণী-রচনার কাল) গুট্টান্দের মধ্যে গৌড়দেশে বসিয়া কৰিকর্পপুর যে যে শ্রোটার বই লিখিয়াছেন, শ্রীজপ ও শ্রীজাবও সেই সেই শ্রেণীর বই লিখিয়াছেন। কৰিকর্পপুর শ্রীমন্তাগবতের টাকা লিখিয়াছেন, কিন্তু তাহা প্রকাশিত হয় নাই। শ্রীজপ যেমন উজ্জ্বলনালমণি লিখিয়াছেন, কৰিকর্পপুর তেমনি অল্বয়ারকৌন্তভ লিখিয়াছেন। শ্রীজপ কৃষ্ণগালা লইয়া তিনথানি নাটক লিখিয়ছেন, কৰিকর্পপুর শ্রীগোরাঙ্গলালা লইয়া একথানি নাটক ও একথানি মহাকার্য লিখিয়াছেন। শ্রীজপ কৃষ্ণগণোদ্দেশদাপিকা ও কৰিকর্পপুর গৌরগণোদ্দেশদাপিকা রচনা করিয়াছেন। শ্রীমন্তাগবত অবলম্বন করিয়া শ্রীজাব গোপাল-চম্পু লিখিয়াছেন, কৰিকর্পপুর "আনন্দর্ন্দাবন-চম্পু" লিখিয়াছেন।



শীরূপ ও শীক্ষাবের গ্রন্থাদি কবিকর্ণপুরের জাবনকালে গৌড়দেশে আদিবার কোন প্রমাণ পাই নাই, যদিও শ্রীনিবাস আচার্য্যের পূর্বের তাহা আসা অসম্ভব নহে; কিন্তু কবিকর্ণপুরের কোন কোন কবিতা শীরূপের হাতে পৌছিয়াছিল, তাহা না হইলে তিনি "পত্যাবলী"তে কবিকর্ণপুরের একটি কবিতা (৩০ সংখ্যক) উদ্ধৃত করিতে পারিতেন না।

দেখা যাইতেছে যে একই কালে বৃন্দাবনে ও গোড়ে গোড়ীয় বৈষ্ণব ধর্মের কাব্য, নাটক, অলঙ্কার ও ভাগবতের টীকায় দর্শন শান্ত্র লিখিত হইতেছিল। কৃষ্ণদাস কবিরাঞ্জের গ্রন্থে, নরোন্তম ঠাকুর মহাশয়ের প্রার্থনায় ও শ্রীনিবাস আচার্য্যের স্তবে আমরা ছয় গোস্বামীর নাম পাই। বৃন্দাবনের বৈষ্ণবেরা যে ছয় গোস্বামী নিরূপণ করিয়াছিলেন, তাহার মধ্যে কবিকর্ণপূর মহাপ্রভুর সাক্ষাৎ কৃপাপার হইয়াও এবং অভগুলি গ্রন্থ লিখিয়াও স্থান পাইলেন না; অথচ শ্রীক্ষার গোস্বামী শ্রীচৈতত্যের ঘনিষ্ঠ সম্পর্কে না আসিয়া এবং রঘুনাথ ভট্ট কোন গ্রন্থ না লিখিয়াও স্থান পাইলেন!

কবিকর্ণপুর বৈছা ছিলেন বলিয়া যে স্থান পাইলেন না তাহা নহে, কেননা কায়স্থ রঘুনাথদাস ছয় গোস্থানীর এক গোস্থানী। ছয় গোস্থানীর মধ্যে স্থান না পাওয়ার এক কারণ হয়ত তিনি বুন্দাবনে বাস করেন নাই। অহ্য কারণ হয়ত এই যে মুরারি গুপু, কবিকর্ণপুর ও নরহরি সরকার শ্রীগোরাস্থকেই পরম উপাস্থ-রূপে নিরূপণ করিয়াছিলেন; তাঁহারা শ্রীকৃষ্ণকে পরম-দৈবত-রূপে মানিলেও শ্রীতৈতহা যে শুধু রাধাভাব আস্থাদনের জহাই অবতার্গ হইয়াছিলেন ইহা স্থাকার করিতেন না। গোড়ীয় বৈষ্ণবগণকে বুন্দাবনে প্রবর্ত্তিত উপাসনা-অনুসারে শ্রীতৈতহাের ভাবকে অবলম্বন করিয়া শ্রীকৃষ্ণকে উপাসনা করিতে হয়। আর শিবানন্দ সেন, নরহরি সরকার ও সম্ভবতঃ মুরারি গৌরমন্ত-নারা রাধাকৃষ্ণের সন্মিলিত-রূপ গৌরাস্থেরই উপাসনা প্রবর্ত্তন করেন। বুন্দাবনে ও গৌড়দেশে উন্থিত ছই মতবাদে শ্রীতৈতহাের স্থান-সম্বন্ধে বলা যাইতে পারে যে বুন্দাবনের গোস্থানীদের নিকট গৌরান্ধ হইতেছেন উপায়্মাত্র (means to an end) আর গৌড়ে উন্থিত মতবাদে তিনি স্বয়ং উপেয় (end in itself)। প্রসিদ্ধ ধর্মব্যাখাতা

#### শ্রীচৈতন্যচরিতের উপাদান

308

কুলদাপ্রসাদ মলিক ভাগবতরত্ব মহাশয় কথা-প্রসঙ্গে আমাকে বলেন যে বৃদ্দাবনে ছয় গোস্বামী যে মতবাদ স্থাপন করিতেছিলেন, তাহার উদ্দেশ্য ছিল নিখিল ভারতে প্রচার। প্রীকৃষ্ণ সে সময়ে প্রায় সর্ববাদিণত্মত হইয়াছেন। তাহাকে পুরোভাগে রাখিলে প্রীচৈতন্তের মতবাদ প্রচারের হৃবিধা হয়। কিন্তু গাঁটা গৌড়বাসারা নিখিল ভারতের অপেক্ষা না রাখিয়া শ্রীচৈতন্তের উপাসনাই প্রবর্তন করেন। এই মত যদি গৃহীত হয়, তাহা হইলে কবিকর্ণপূর কেন ছয় গোস্বামী বা সাত গোস্বামীর মধ্যে স্থান পায়েন নাই তাহার হেতু পাওয়া যায়।

# CENTRAL LIBRARY

# ষষ্ঠ অধ্যায়

# রন্দাবনের পাঁচ গোফানী ও ঐতৈতন্য ১। রঘুনাথদাস গোফানী

রঘুনাথদাস গোস্বামী এতিতত্তের যতটা ঘনিষ্ঠ সম্পর্কে আসিয়া-ছিলেন, ছয় গোস্বামীর মধ্যে অত কেহ সেরপ সৌভাগা লাভ করেন নাই। ছয় গোস্বামীর মধ্যে তিনিই একমাত্র বাক্ষণেতর ব্যক্তি। তিনি সপ্তগ্রামের জমীদারের পুত্র। তাঁহার জীবনী এতিত্তিচরিতামূতের অন্তলীলার যন্ত পরিচ্ছেদে বর্ণিত হইয়াছে। পণ্ডিতবর রসিকমোহন বিছাভূষণ তাঁহার "শ্রীমদাস গোস্বামী" গ্রন্থে রঘুনাথের জীবনী-ও মতবাদ-সম্বন্ধে আলোচনা করিয়াছেন।

রঘুনাথদাস গোস্বামি-সম্বন্ধে তাঁহার নিজের উক্তি হইতে যাহা জানা যায় তাহা নিম্নে আলোচনা করিতেছি। "গৌরাঙ্গন্তবকরতরু"র ১১ সংখ্যক শ্লোকটি ঐতিতভাচরিতামূতে উদ্ধৃত হইয়াছে। ঐ শ্লোকটি ইতৈে জানা যায় যে ঐতিচতভা তাঁহাকে মহাসম্পৎ ও কলতাদি হইতে জনার করিয়াছিলেন; তাঁহাকে স্বরূপ-দামোদরের নিকট অর্পণ করিয়াছিলেন এবং বক্ষের গুঞ্জাহার ও প্রিয় গোবর্দ্ধনশিলা দান করিয়াছিলেন। উক্ত শ্লোকের পাঠ রাধাগোবিন্দ নাথ মহাশয়-সম্পাদিত ঐতিচতভাচরিতামূতে "মহাসম্পদাবাদপি" আছে এবং তিনি বাাখাকোলে বলিয়াছেন, "বিপুল সম্পত্তিকে দাবানল তুলা" বলা হইয়াছে। কিন্তু ১৬৭৪ শক অর্থাৎ ১৭৫২ গুষ্ঠান্দে লিখিত বন্ধবিহারী বিভালকারের টাকায় "মহাসম্পদারাদপি" পাঠ দেখা যায়। উক্ত বিভালকার "ঐগোপালভট্ট-গোস্বামি-প্রিয়াম্ব্রুচর শিত্বাচার্যাঠক্রাম্বয় - শ্রিযুত মধুস্দন-প্রভূবরচর্ব্যাম্ব্রুচর" বলিয়া নিজের পরিচয় দিয়াছেন। তিনি ঐ পদের ব্যাখ্যায় লিখিয়াছেন, "মহাসম্পদশ্চ দারাশ্চ তেয়াং সমাহারঃ যহা মহাসম্পন্তিঃ সহিতো দার ইতি তৃতীয়া-সমাসঃ।" "গুরুদারে চ পুত্রেরু

### ১০৬ ত্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

গুরুবদ্ তিমাচরেদিতি প্রয়োগাদেকবচনাস্তোহপি দারশব্দঃ।" "দার" পাঠই ঠিক। ইহা হইতে জানা গেল যে বিবাহের পর রঘুনাথদাস গোস্বামী গৃহত্যাগ করেন। কৃষ্ণদাস কবিরাজও ইহার ইপিত করিয়াছেন—

ইক্রসম ঐশ্বর্যা, স্ত্রী অপ্সরাসম। এ সব বান্ধিতে যার নারিলেক মন॥ এডা১৮

মহাপ্রভু কায়ত্ব রঘুনাথদাসকে নিজের পৃজিত গোবর্জনশিলা দিয়াছিলেন। ঐতিততা যে ভক্ত বৈঞ্চবের ক্ষেত্রে স্মার্ত্রপথ অনুসরণ করা প্রয়োজন মনে করিতেন না, ইহাই তাহার সর্বেবাংকৃষ্ট দৃষ্টান্ত। "ঐহরিভক্তিবিলাসে" কোন প্রাচীন মত উদ্ধার না করিয়াই সিদ্ধান্ত করা হইয়াছে যে শালগ্রামশিলা পূজায় সকলেরই অধিকার আছে। ঐতিতভ্যের বাবহারই বোধ হয় এ বিধির প্রমাণ যোগাইয়াছিল। কিন্তু পরবর্ত্তী কালে "হরিভক্তিবিলাসের" এই উদার মত বৈঞ্চব সমাজের আচারে গৃহীত হয় নাই।

রঘুনাথদার গোস্বামী স্বরূপ-দামোদরের নিকট শ্রীমন্মহাপ্রভু-কর্ভৃক অন্ত হইয়াও এবং বহুদিন তাঁহার সংসর্গে থাকিয়াও নিম্নলিখিত শ্লোক কেন লিখিলেন বৃঝিতে পারিলাম না।—

> যদযত্তঃ শমদমাত্মবিবেকযোগৈ-রধ্যাত্ম-লগ্নমবিকারমভূন্মনো মে। রূপক্ত তৎস্মিতস্থাং সদয়াবলোক-মাসাভ মাভতি হরেশ্চরিতৈরিদানীম্॥

> > —অভীষ্টসূচনম্, ২য় শ্লোক।

"শীরূপের যত্তে আমার যে মন শম, দম, বিধেক এবং যোগ ছারা বিকারশৃত্ত হইয়া ভগবতত্ত্ব সংলগ্ন হইয়াছিল, সেই মন শীরূপ গোস্বামীর কুপা দৃষ্টি প্রাপ্ত হইয়া এক্ষণে হরিচরিত্রসমূহে মত হইতেছে।" শীঠৈতত্ত্য-চন্দ্রেয় নাটক হইতে জ্ঞানা যায় যে রঘুনাথদাস গোপ্সামী নীলাচলেও "স্বরূপানুগ্র" ছিলেন ও "বৈরাগাত্ত নিধি" বলিয়া পরিচিত হইয়াছিলেন। ঐ নাটকে ও শীঠৈতত্যচরিতায়তে লিখিত আছে যে রঘুনাথের দীক্ষাগুরু ছিলেন



যত্রনন্দন আচার্যা। রঘুনাথ "মনঃশিক্ষার" ১১, "স্বনিয়মদশকের" ১০ ও "শ্রীরাধাকুফোজ্জলকুন্তম-কেলির" ৪৭ শ্রোকে শ্রীরূপকে শিক্ষাগুরুরূপে উল্লেখ করিয়াছেন। কবিকর্ণপূর "গৌরগণোদ্দেশদাপিকায়" স্বরূপ গোস্বামীকে বিশাখা বলিয়াছেন (১৬০)। রঘুনাথ ১৬৪টি শ্লোকে "বিশাখানন্দ-স্তোত্র" লিখিয়াছেন। ঐ বর্ণনা পড়িলে স্থানে স্থানে মনে হয় বুঝি বা স্বরূপই এ স্থানে লক্ষিত হইতেছেন। কিন্তু স্তোত্ত-শেষে আছে—

শ্রীমজপপদাস্তোজ-ধূলীমাত্রৈক সেবিনা। কেনচিদ্ গ্রাথতা পত্তৈ মালাত্রেয়া তদাশ্রায়ঃ।

"প্রীমংরূপের পাদপদ্মধূলিমাত্রের সেবনকারী কোন ব্যক্তি পভ-দ্বারা এই মালা প্রন্থন করিলেন, তদাশ্রম ব্যক্তিগণ ইহা আত্রাণ করন।" রঘুনাথ অভ্যত্র স্বরূপকে স্বলের সহিত তুলনা করিয়াছেন। তাহার "অভাইট-স্চনের" শেষ প্লোকে "মাং পুনরহো শ্রীমান্ স্বরূপোহবতু" আছে; এ স্থানে স্বরূপ-দামোদরকেই লক্ষ্য করা হইয়াছে বলিয়া আমার মনে হয়; কিস্ত প্রাচীন টীকাকার বিভালন্ধার বলেন, "অহো হে ব্রন্ধবাসিনঃ স শ্রীমান্ রূপো মাং পুনরবতু রক্ষতু।"

রঘুনাথদাস গোস্বামী দার্ঘকাল স্বরূপ-দামোদরের সঙ্গ পাইয়াও শ্রীরূপের প্রতি কিরূপ ঐকান্তিক অনুরাগ প্রকাশ করিয়াছেন, তাহা "প্রার্থনাশ্রয় চতুর্দ্দশকে" প্রকাশিত হইয়াজে—

অপূর্ববপ্রেমারেঃ পরিমলপয়ঃফেননিবহৈঃ
সদা যো জীবাতুর্যমিহ কপয়াসিধাদতুলন্।
ইদানীং তুর্দ্দিবাৎ প্রতিপদবিপদাববলিতা
নিরালম্বঃ সোহয়ং কমিহ তমতে যাতু শরণন্॥
শূভায়তে মহাগোষ্ঠং গিরীক্রোহজগরায়তে।
বাাম্রতুগ্রাতে কুণ্ডং জীবাতুরহিতভা মে॥

—প্রার্থনা শ্রায়-চতুর্দিশক, ১=-১১

১ তথানারৈ: শীম্ফলপথাজোলানারৈ: ইতি টাক।

२ (भौतात्रखन-कसटक, ३०

#### ঐতিচভভচরিতের উপাদান

200

বিছালন্ধারের টীকা-অনুসারে অনুবাদ এইরপ—"(এরপ) অপূর্ব প্রেম-সমূদ্রের পরিমলন্ধলের ফেনসমূহ-দারা সর্বদা আমাকে বে প্রকার সিক্ত করিয়াছেন তাহার তুলনা নাই; সম্প্রতি ছুর্দ্দেববশতঃ ক্ষণে ক্ষণে বিপদ্রূপ দাবানলগ্রন্থ হওয়ায় আশ্রয়শ্য হইয়াছি; অতএব পূর্বকুপাসিক্ত মন্থিন্ধন এখন উক্ত শ্রীরূপ বাতিরেকে আর কাহাকে আশ্রয় করিবে? এখন মহাগোষ্ঠ শ্রের হ্যায়, গিরিরান্ধ গোবর্দ্ধন অন্ধ্যারের ন্যায় এবং শ্রীকুও ব্যান্থের বদনের ন্যায় বোধ হইতেছে।" শ্রীরূপের বিরহেই এরূপ শোক করা সম্ভব।

"ব্রজবিলাসস্তবের" দিতীয় শ্লোক হইতে রঘুনাথদাস গোস্বামীর বার্দ্ধক্যদশার চিত্র পাওয়া যায়—

> দশ্ধং বার্ক্ষকাবভাবজিভিরলং দফ্টং ভ্রাক্ষ্যাহিনা। বিকং মামতিপারবভাবিশিথৈঃ ক্রোধাদিসিংহৈর্তন্॥

"আমি বার্ককারপ দাবানলে অতিশয় দক্ষ হইতেছি ও ভয়ানক অন্ধতারূপ কালসর্প আমাকে দংশন করিতেছে, এবং পরাধীনতারূপ শাণিত শরে ও ক্রোধাদিরূপ সিংহসমূহে আরুত হইয়াছি।"

দাস গোস্বামি-কর্তৃক রচিত "দানকেলিচিন্তামণি" নামক একখানি সংস্কৃত কাব্যের পুঁথি আমি বরাহনগর গ্রন্থমন্দিরে পাইয়াছি। পুঁথির ক্রেমিক সংখ্যা ৩৯৬। এই গ্রন্থের আর এক খণ্ড বৃন্দাবনের রাধারমনমন্দিরে মদনমোহন গোস্বামী মহাশয়ের নিকট আছে। কুমিলা ভিক্টোরিয়া কলেজের ভূতপূর্বর অধ্যাপক হরেক্রনাথ চক্রবর্ত্তী (বর্ত্তমান নাম হরিদাস বাবাজী) মহাশয় এই গ্রন্থের বঙ্গান্থবাদ করিয়াছেন ও মূলসহ তাহা প্রকাশ করিতেছেন। বরাহনগরের পুঁথির শেষে লিখিত আছে—"সম্বং ১৭৫৩, ১৬১৮ শাকে শ্রন্তাব গোস্বামী কুঞ্জন্ত শ্রন্থাদনিদ্দাস লিপ্যাদর্শং দুক্রী এবক ১৯১৪ সম্বতি শ্রীকৃক্ষচরণ দাস লিপ্যাদর্শং দর্শক লিখিতং শ্রীআনন্দনারায়ণ ভাগবতভূষণেন নিধুবনান্তিকে ১৭৮৮ শাকে।"



#### বুন্দাবনের পাঁচ গোস্বামী ও ঐতিভক্ত

ভক্তিরব্লাকরে এই গ্রন্থের নাম "দানচরিত" বলিয়া উল্লেখ করা হইয়াছে—

> রঘুনাথদাস গোস্বামীর গ্রন্থতায়। স্তবমালা নাম স্তবাবলী যারে কয়। শ্রীদানচরিত মুক্তাচরিত মধুর। যাহার শ্রবণে মহাতৃঃখ হয় দূর॥ ৫৯ পৃ

"মুক্তাচরিতের" সহিত মিলাইতে যাইয়া "দানকেলিচিন্তামণি"কে "দানচরিত" বলা অসম্ভব নহে।

"দানকেলিচিন্তামণি"র মঙ্গলাচরণে বা অত্তে শ্রীচৈতগ্যকে প্রণাম বা नमक्तियामृहक दकान द्याक नारे। जीक्रण शायामोव "मानटकलिटकोम्मो", "পভাবলী", "হংসদূত"ও "উদ্ধবদূতে"ও ঐ প্রকার নমক্রিয়া নাই। শ্রীচৈতত্তের প্রতি নমজিয়া আছে কি না দেখিয়া গ্রন্থরচনার কাল শ্রীচৈতত্তের সহিত গ্রন্থকারের সাক্ষাতের পূর্বের নির্দেশ করিলে অনেক সময় ভাত হইতে হয়। "দানকেলিকৌমুদী" বুন্দাবনের আবহাওয়ায় রচিত এবং শ্রীরূপ শ্রীটেডভের কুপা পাইবার পূর্বের বুন্দাবনে বাস করেন নাই। "পছাবলী"তে ত্রীচৈতন্যের রচিত শ্লোক "ভগবত:" বলিয়া উল্লেখ আছে; উহাতে কবিকর্ণপূরের ও রঘুনাথদাসের শ্লোকও ধৃত হইয়াছে। সেই জনা "পভাবলী"তে ঐীচৈতভার প্রতি নমজিয়া না থাকিলেও উহা শ্রীচৈতন্যের কুপা পাইবার পরে শ্রীরূপ গোস্বামী রচনা করিয়াছিলেন, সন্দেহ নাই। গৌড়ীয় বৈষ্ণবগণের নিকট শ্রীকৃষ্ণ ও শ্রীচৈতন্ম তত্তঃ অভিন বলিয়া একুফের নমজিয়ার ছারা এটিচতত্তের প্রণামও করা হয়। রঘুনাথদাসের "দানকেলিচিন্তামণি"তে ঐতিচততের প্রতি নমজিয়া না থাকিলেও ইহা দাসগোস্বামীর বৃদ্ধ বয়সের রচনা। পূর্বের "ব্রজবিলাস" স্তব হইতে আমরা দেখাইয়াছি যে ইনি বৃদ্ধ বয়সে অন্ধ হইয়াছিলেন। কিন্তু অন্ধতা ও বাৰ্দ্ধকা ইহার কদয়ের কাবারসকে শুক্ষ করিতে পারে নাই। ইনি যে অন্ধ অবস্থাতেই "দানকেলিচিস্তামণি" রচনা করেন,

১১০ ঐতিতভাচরিতের উপাদান

তাহার প্রমাণ ঐ গ্রন্থের ২ ও ১৭২ সংখ্যক শ্লোক হইতে পাওয়া যায়—

> উদ্দাম-নশ্মরসরপতরপ্রকান্ত-রাধাসরিদিগরিধরার্ণব-সপ্রমোক্ষম্। শ্রীরূপচারুচরণাজরজ্ঞপ্রভাবা-দক্ষাহিপি দানকেলিমণিং চিনোমি॥ ২ দধ্যাদিদাননবকেলি-রুসান্ধিমধ্যে মগ্রং নবীনযুবরত্বযুগং ব্রজ্প । নশ্মাণি ক্তম্দিত্তাতি-গৌরনীল-মঙ্গোহিপি লুক ইহ লোকিতুমুৎস্থকোহিশ্ম॥ ১৭২

শীপাদ কৃষ্ণদাস কবিরাজ লিখিয়াছেন যে রঘুনাথ নিত্যানন্দ প্রভুর বিশেষ কৃপা পাইয়াছিলেন। পানিহাটা গ্রামে তিনি নিতাইয়ের শ্রীচরণ দর্শন করিয়াছিলেন (চৈ চ , তাডা৪১-৪২)। রঘুনাথ নিত্যানন্দ-গণকে দধি-চিড়ার মহোৎসব দিয়াছিলেন। তিনি নিত্যানন্দের নিকট প্রার্থনা করেন—

মোর শিরে পদ ধরি করহ প্রসাদ।

নির্বিদ্নে চৈতন্ত পাঁও কর আশীর্বাদ ॥ চৈত চত, তাভাততং
নিত্যানন্দ স্ব-গণ-সহ রবুনাথকে আশীর্বাদ করিয়াছিলেন। রবুনাথদাস
গোস্বামীর স্থবাবলীর বিভিন্ন স্তবে কোথাও শ্রীমন্নিত্যানন্দ প্রভুর উল্লেখ
না দেখিয়া বড়ই বিশ্বয় বোধ করিতেছি। রবুনাথ শ্রীচৈতন্তাইকৈ
ঈশ্বরপুরার, গোবিন্দের ও স্বরূপের নাম করিয়াছেন। গৌরাক্সস্তবকল্লতকতে কাশী মিশ্রের, স্বরূপের, গোবিন্দের ও ঈশ্বরপুরীর নাম উল্লেখ
করিয়াছেন। শ্রীমদ্দাসগোস্থামা "মনঃ শিক্ষায়"—

গুরৌ গোঠে গোঠালয়িয় স্থজনে ভূস্রগণে স্বমন্তে শ্রীনালি বজনবযুবদক্ষারণে

মনের অনুরাগ প্রার্থনা করিয়াছেন। "স্বনিয়মদশকে" গুরো মল্লে নান্ধি প্রভূবর-শচী-গর্ভজপদে স্বরূপে শীরূপে গণযুক্তি তদায়-প্রথমকে।



#### বুন্দাবনের পাঁচ গোস্বামী ও শ্রীচৈতত্ত

অনুরাগ যাজ্ঞা করিয়াছেন। তাঁহার জীটেতত্ত-ন্তব পড়িয়া মনে হয় নালাচলের জীটেতত্তেই তাঁহার অনুরাগ—নবহাপের গোরাঙ্গে নছে। মুরারি, শিবানন্দ, কবিকর্ণপূর, নরহরি, বাস্থু ঘোষ প্রভৃতি ভক্তগণ নবদীপের জীগোরাঙ্গকেই উপাসনা ও আস্বাদন করিয়াছেন। নরহরি সরকার ঠাকুর যেমন চরম নবহাপ-লালাবাদা, রত্নাথদাস গোস্বামা তেমনি চরম বৃন্দাবন-লালাবাদা। দাস গোস্বামা "সনিয়া দশকে" বলিয়াছেন—

ন চাত্তত্র ক্ষেত্রে হরিতমু-সনাথোহপি স্ক্রনা-দ্রসাস্বাদং প্রেম্ণা দধদপি বসামি ক্ষণমপি। সমং ক্রেতন্গ্রাম্যাবলিভিরভিত্বরূপি কথাং বিধান্তে সংবাসং ব্রজভূবন এব প্রতিভবম্॥

অর্থাৎ "সবৈষ্ণবের মৃথক্ষরিত রস সপ্রেম-আস্বাদনপূর্বক শ্রীকৃষ্ণবিগ্রহযুক্ত হইলেও অন্ন স্থানে কণকালও বাস করিব না, কিন্তু এই ব্রজভূমিতে গ্রামাঞ্জনের সহিত গ্রাম্যালাপ করিতে করিতে জন্মে জন্মে বাস করিব।"

রঘুনাথদাস গোস্বামীর কুপায় আমরা শ্রীচৈতত্তের নীলাচল-লীলার শেষ কয় বংসরের অতি উজ্জ্ব ও মনোহর বর্ণনা পাইয়াছি। মুরারি, কবিকর্ণপূর, রুদ্দাবনদাস, জয়ানন্দ ও লোচন এ লীলার মধুররস বর্ণনা করেন নাই। কৃষ্ণদাস কবিরাজ মূলতঃ দাস গোস্বামীর শ্রীচৈততাত্তিক ও শ্রীগোরাজস্তবকল্পতক অবলম্বন করিয়া অন্তালীলার চতুর্দ্দশ হইতে উনবিংশ পরিচ্ছেদ লিখিয়াছেন।

গোরাপস্তবকলতকর চতুর্থ লোকে আছে একদিন কাশী মিশ্রের গৃহে ব্রজপতি-স্থতের উৎকট বিরহে অপের শোভা ও সন্ধি সকল শ্লথ হওয়ায় যাঁহার হস্ত ও পদ অধিক দার্ঘ হইয়াছিল এবং সেই অবস্থায় ভূলুন্তিত হইয়া অত্যন্ত কাতরতার সহিত যিনি গদগদ বাক্যে রোদন

বৃশ্বান কৰিবান্ধ গৌরাক্স্তবক্ষতক্রর চতুর্ব লোক অ১৪১৮ র পর, অটার লোক অ১৪১১৩-র পর, সপ্তম লোক অ১৯৮৮-র পর, পঞ্চম লোক অ১৭১৮-র পর, বর্ত লোক অ১৯৮১-র পর, এবং একাদেশ লোক অ৬০১৯-র পর উদ্ধার করিবাহেন। প্রথমোক্ত পাঁচটি লোক অবলঘন করিবা চতুর্দশ মেডেশ, সপ্তমশ শু উনবিংশ পরিচ্ছেদ রচিত হইবাছে।

#### শ্রীচৈতহাচরিতের উপাদান

225

করিয়াছিলেন, সেই শ্রীগোরাক্স আমার ক্রদয়ে উদিত হইয়া আমাকে আনন্দিত করিতেছেন। "শ্লথশ্রী-সন্ধিকাদধিক দৈর্ঘ্যং ভুজপদোঃ;" সন্ধিশ্লপ হওয়ায় হস্তপদের দৈর্ঘ্য বাড়িয়া গিয়াছিল; কিন্তু কতটা বাড়িয়াছিল তাহা দাস গোস্বামী বলেন নাই। কবিরাক্স গোস্বামী ঐ পদের বাাখ্যায় বলিয়াছেন—

প্রভুর (१) পড়ি আছে দৌর্য—হাত পাঁচ ছয়।
অচেতন দেহ, নাসায় খাস নাহি বয়॥
একেক হস্তপদ—দৌর্য তিন তিন হাত।
অস্থি প্রস্থি ভিন্ন চর্মা আছে মাত্র তাত॥
হস্ত পদ গ্রীবা কটি অস্থি সন্ধি যত।
একেক বিতস্থি ভিন্ন হইয়াছে তত॥
চর্মা মাত্র উপরে সন্ধির আছে দীর্য হঞা।
ছঃখিত হইলা সভে প্রভুকে দেখিয়া॥

— চৈ চ°, তা১৪i৬০-১৩

এ স্থানে বেমন দাস গোস্বামীর "অধিকদৈর্ঘাং" পদের বিস্তৃত ব্যাখ্যা করিয়াজ গোস্থামী করিয়াছেন, তেমনি দাস গোস্বামীর "গৌরাজস্তব-কল্লতকর" পঞ্চম শোকের ব্যাখ্যায় কয়েকটি শব্দ অমুবাদ না করিয়া সংক্রেপে লীলা-বর্ণনা করিয়াছেন। পঞ্চম শ্লোকে আছে—

অনুদ্যাট্য দারত্রয়মুক চ ভিত্তিত্রয়মহো বিলজ্যোক্তিঃ কালিঞ্চিক-স্তরভিমধ্যে নিপতিতঃ। তনুভংসঙ্কোচাৎ কমঠ ইব ক্ষোক-বিরহাৎ বিরাজন গৌরাজো হৃদয় উদয়ন্মাং মৃদয়তি।

অর্থাৎ "যিনি বহির্গমনের তিনটি দ্বার উদ্ঘাটন না করিয়া অতি উচ্চ প্রাচীরত্রয় উল্লেখনপূর্বক কলিছদেশীয় গাভীগণ-মধ্যে নিপতিত হইয়াছিলেন, এবং শ্রীকুষ্ণের গুরু বিরহে দেহের সঙ্কোচ হওয়ায় যিনি কৃশ্মের আকৃতি

১ বিভালভার-কৃত টাকা—"নদংতি হগনতি, চকুবে'রপোচরহাং নপরতীতি বেতি দর্ববেশয়য় ।"
রাধাপোবিন্দ নাথ নহালয় ব্যাখ্যা করিয়ছেন "নদয়তি—উয়ত করিতেছেন।"

# বৃন্দাবনের পাঁচ গোস্বামী ও শ্রীচৈত্য

220

ধারণ করিয়াছিলেন, সেই শ্রীগৌরাঙ্গ আমার হৃদয়ে উদিত হইয়া আমাকে আনন্দিত করিতেছেন।

কৃষ্ণদাস কবিরাজ ঐ শ্লোকের ব্যাখ্যা করিতেছেন—

তিন বার কপাট তৈছে আছে ত লাগিয়া।
ভাবাবেশে প্রভু গেলা বাহির হইয়া॥
সিংহ্বারের দক্ষিণে রহে তেলেঙ্গা গাভীগণ।
তাঁহা যাই পড়িলা প্রভু হৈয়া অচেতন॥
এথা গোবিন্দ মহাপ্রভুর শব্দ না পাইয়া।
স্বরূপেরে বোলাইল কপাট থোলিয়া॥
তবে স্বরূপ গোসাঞি সঙ্গে লৈয়া ভক্তগণ।
দীয়টী জালিয়া করে প্রভুর অব্বেশণ॥
ইতি উতি অব্বেষিয়া সিংহ্বারে গেলা।
গাভীগণ মধ্যে যাই প্রভুরে পাইলা॥
পেটের ভিতর হস্তপদ কূর্ম্মের আকার।
মূথে ফেন পুলকাঙ্গ নেত্রে অশ্রুধার॥

- (5° 5°, 5159150-50

কবিরাজ গোস্বামী এতগুলি শব্দ ব্যবহার করিয়াও "মুরু চ ভিত্তিত্রয়মহো বিলভেয়াচৈচঃ" কথা কয়টির অনুবাদ কেন করিলেন না জিজ্ঞাসা করা যাইতে পারে। উক্ত শ্লোক-অবলম্বন করিয়াই যে তিনি লীলাটি বর্ণনা করিয়াছেন তাহা তিনি স্বীকার করিয়াছেন—

> এই লালা স্বগ্রন্থে রঘুনাথদাস। গৌরাত্ম স্তবকল্লবৃক্ষে করিয়াছে প্রকাশ॥

> > —₹5° 5°, 0139.69

"অনুক্ষাটা দারত্রয়ন্" কথা কয়টি তাঁহার থ্ব ভাল লাগিয়াছিল। তাই পূর্বোক্ত শ্লোকের (অর্থাৎ চতুর্থ শ্লোকের) ব্যাখ্যায়ও উহা লাগাইয়াছেন।

> প্রভুর শব্দ না পাঞা স্বরূপ কথাট কৈল দূরে। তিন দার দেওয়া আছে প্রভু নাহি ঘরে।



228

## ঐতিতক্তরিতের উপাদান

চিন্তিত হই সভে প্রভু না দেখিয়া। প্রভু চাহি বুলে সভে দীয়টা কালিয়া॥ সিংহ্বারের উত্তর দিশায় আছে এক ঠাঞি। তার মধ্যে পড়ি আছেন চৈত্ত গোসাঞি॥

-0138104-0F

তৎপরে কবিরাজ গোস্বামীর ব্যাখ্যা আমরা চতুর্থ শ্লোক-প্রসঙ্গে (১)১৪।৬০-৬০ প্রার) পূর্বের উদ্ধার করিয়াছি। কবিরাজ গোস্বামীর "অনুদ্ঘাটা ছারত্রয়ম্"-প্রীতির ফলে দাঁড়াইয়াছে এই যে, যে লীলা (দৈর্ঘা অধিক হওয়ার) রবুনাথদাস গোস্বামী "কচিন্মি শ্রাবাসে" ঘটিয়াছিল বলিয়া বর্ণনা করিয়াছেন, তাহা কবিরাজ গোস্বামী "সিংহলারের উত্তর" দিশায় ঘটাইয়াছেন। রঘুনাথদাস গোস্বামীর চতুর্থ শ্লোক-বর্ণিত লীলা-অবলম্বনেই যে কবিরাজ গোস্বামী ৩১৯।৫৬-৫৭ প্রার লিথিয়াছেন, তাহা তিনি নিজেই স্বীকার করিয়াছেন (চৈ'চ', ৩১৪।৬৮)। স্থতরাং এ কথা বলা চলিবে না যে প্রীচৈতব্যের দেহ এক দিন রবুনাথদাস-বর্ণত মিপ্রাবাসে, অন্ত দিন কবিরাজ গোস্বামি-বর্ণিত "সিংহলারের উত্তর দিশায়" দীর্ঘহ প্রাপ্ত হইয়াছিল।

এখন রঘুনাথদাস গোসামী শ্রীচৈতত্তত্ত্বকে কি ভাবে প্রকাশ করিয়াছেন তৎসম্বন্ধে একটু আলোচনা করিব। শ্রীচৈতত্তাউকের প্রথম শ্রোকে তিনি বলিয়াছেন, "যে হরি দর্পণগত আপনার নিরুপম শরীর দর্শন করিয়া প্রেয়নী সধী শ্রীমতী রাধিকার তায় আস্মাধ্র্য্যকে সর্বতোভাবে আপনাতে অনুভব করিবার জত্ত গোড়দেশে জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন, অহাে! যে প্রভু শ্রীমতী রাধিকার গৌরকান্তি-ছারা স্বয়ং নিজ শরীবের ফুলর গৌরবর্গর স্বীকার করিয়াছেন, সেই শচীনন্দন কি পুনর্বার আমার নয়নপথ প্রাপ্ত হইবেন ?" প্রোকটিতে স্বরূপ-দামোদরের তিনটি বাঞ্চার মধ্যে একটি বাঞ্চার কথা স্পান্টরূপে প্রতিধ্বনিত হইয়াছে। শ্রক্ষই যে শ্রীগৌরাঙ্গ তাহা তিনি দৃঢ়ভাবে ঘোষণা করিয়াছেন। "মহাপ্রভু শ্রুতিসমূহে গৃঢ়, পূর্বব পূর্বব ভক্তিনিপুণ মুনিগণ-কর্ত্বক অজ্ঞাত ভক্তিলতা—



যাহার ফল প্রেমোজ্জল রস—তাহা কৃপা করিয়া গৌড়ে বিস্তার করিয়াছেন।" ও গৌড়দেশ-জাত রবুনাধদাস গোস্বামীর বিশেষ আনন্দের কারণ এই যে প্রভু গৌড়ীয়দিগকে নিজকে অর্থাৎ আত্মীয়রূপে স্বীকার করিয়াছেন।" <sup>২</sup>

শ্রীমদাস গোস্বামী "মুক্তাচরিতের" মঙ্গলাচরণে শ্রীচৈতত্তের ঈশরর নিম্নলিখিতভাবে ব্যাখ্যা করিয়াছেন—

নিজামুজ্জলিতাং ভক্তিস্থধামর্পয়িতুং কিতৌ উদিতং তং শচীগর্ভব্যোদ্মি পূর্ণং বিধুং ভজে। \*

অর্থাং যিনি এই সংসারে নিজের উজ্জ্বল ভক্তিওধা সমর্পণ করিবার অভিলাষে শ্রীশচীর গর্ভরূপ আকাশে পূর্ণচন্দ্রের ন্যায় উদিত হইয়াছেন, তাঁহাকে আমি ভজনা করি। "নিজাম্ উজ্জ্বলিতাং ভক্তিত্বধাং"—নিজাম্ শন্দে তাঁহার নিজের প্রতি ভক্তি নিজেই প্রচার করিতে আসিয়াছেন, ইহা বলা হইয়াছে। শ্রীচৈতন্যচন্দ্রোদয় নাটক-ধৃত সার্বভৌম-কৃত্ত স্থেও "নিজভক্তি যোগ" শিকা দিবার জন্ম পুরাণপুরুষ শ্রীকৃষ্ণচৈতন্যের আবির্ভাব হইয়াছে বলা হইয়াছে (নাটক, ৬।৭৪)।

প্রদক্ষত্রমে উল্লেখ করা ঘাইতে পারে যে মুক্তাচরিত্রের চহুর্থ শ্লোকে দাস গোসামী নিজের গুরুকে (যত্তনন্দন আচার্য্যকে) প্রণাম-উপলক্ষেবলিয়াছেন, "বাঁহার স্থবিখ্যাত কৃপায় নাম-শ্রেষ্ঠ হরিনাম শচীপুত্র, স্বরূপ, রূপ, সনাতন, মথুরাপুরা, গোষ্ঠবাটা, রাধাকুণ্ড, গিরিবর গোবর্জন ও শ্রীরাধামাধ্বের আশা পাইয়াছি সেই গুরুদেবকে প্রণাম।" গ্রন্থশেরে তিনি প্রার্থনা করিয়াছেন, "শ্রীমজ্রপপদাস্তোজ-ধূলিঃ স্থাং জন্মজন্মনি।" শ্রীরূপের শিক্ষাতে ও "মদেকজীবিত্তমু" শ্রীক্রাপের আদেশে এই গ্রন্থ প্রণায়ন করিলেন এবং "শ্রীমজ্রপগণ" শ্রীরূপের অন্তর্গত ভক্তগণ উহা আস্বাদন করুন, এই কথাও বলিয়াছেন। "মুক্তাচরিত্রে", "দানকেলিচিন্তামণিতে" ও "স্তবাবলীতে" নিত্যানন্দ প্রভূব কোন উল্লেখ পাইলাম

রনুনাগদান-কৃত জীতৈতভাইকের চতুর্ব লোক

২ ঐ পঞ্ম লোক

মুজাচরিক, তৃতীর রোক

## শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

না, এবং নিত্যানন্দের পরম ভক্ত বৃন্দাবনদাস ঠাকুরের প্রস্থের বৃদাধদাসের নাম পাইলাম না। ঐতিচতগুভাগবতে বণিত আছে যে যখন
নিত্যানন্দ পাণিহাটীতে রাঘবের মন্দিরে আসেন তখন—

"রবুনাথ বৈভ আইলেন ততকণে" (০)৫।১৪৯), "রবুনাথ বেজওঝা ভক্তিরসময়" ও "রবুনাথ বৈভ-উপাধ্যায় মহামতি" (পৃ ৪৫২), ০)৬।৪৭৪ পৃষ্ঠায় শেষোক্ত পদ, এবং ৩)৯।৪৯০ পৃষ্ঠায় রবুনাথ বৈভের নাম আছে। কুঞ্চাস কবিরাজও নিত্যানন্দ-শাখা-বর্ণনায় বলিয়াছেন—

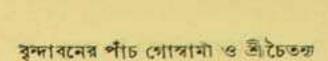
> রঘুনাথ বৈছা উপাধ্যায় মহাশয়, যাঁহার দর্শনে কৃষ্ণপ্রেমভক্তি হয় ৷ ১৷১১৷১৯

স্তরাং রখুনাথদাসকে বৃন্দাবনদাস ভুলক্রমে রখুনাথ বৈছ বলেন নাই, তিনি ইচ্ছা করিয়াই রখুনাথদাসের নাম বাদ দিয়াছেন।

## ২। সনাতন গোস্বামী

শ্রীপাদ সনাতন গোস্বামীকে কবিকর্ণপুর "গৌরাভিন্নতমু: সর্বারাধ্য" বলিয়া গৌরগণোদ্দেশ-দীপিকায় বর্ণনা করিয়াছেন (১৮২)। সনাতন গোস্বামী শ্রীচৈতত্যের কোন লীলা বর্ণনা করিয়া কোন গ্রন্থ, এমন কি অফুকাদিও লেখেন নাই। কিন্তু তাঁহার গ্রন্থাদিতে শ্রীচৈতত্যের লীলা-ও তত্ত্ব-বিষয়ে কিছু কিছু তথ্য পাওয়া যায়। সেই সব তথ্যের গুরুষ বুঝিতে হইলে, প্রথমে শ্রীচৈত্যগোষ্ঠীতে তাঁহার স্থান-সম্বন্ধে কিছু আলোচনা করা প্রয়োজন।

মুরারি গুপ্ত রামকেলি গ্রামে শ্রীটেতক্সের সহিত সামুজ সনাতনের প্রথম মিলন বর্ণনা করিয়াছেন (৩١১৮)। ঐ বর্ণনা-পাঠে মনে হয় যে সনাতন শ্রীটেতক্সের রূপা পাইবার পূর্বেই সাধনরাজ্যের উচ্চ স্তরে অধিরুত্ হইয়াছিলেন। শ্রীটৈতক্স রামকেলিতে আসিয়াছেন শুনিয়াই সনাতন তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ করিতে আসিলেন। তিনি বৈষ্ণবোচিত দৈক্য-সহকারে শ্রীটৈতক্সের নিকট আত্মসমর্পণ করিলেন। শ্রীটৈতক্স বলিলেন,



" গৃমি নিশ্চয়ই বৃন্দাবনের লোক। আমি তোমার সাধে মপুরা যাইতে ইছা করি। তুমি বৃন্দাবনের লুপ্ত তীর্থ প্রকট করিবে" (তা১৮।৪-৬)। সনাতন তাঁহাকে বলিলেন, "নির্জ্জন বৃন্দাবনে জনসংঘট্টের সহিত যাইয়া কি হইবে ?" তিনি প্রার্থনা করিলেন যে প্রীচৈততা কুপারূপ শস্ত্রের দ্বারা তাঁহার সংসারশৃথল ছিল্ল করুন। শ্রীচৈততা বলিলেন, "কুফ্ক তোমার মনোর্থ পূর্ণ করিলেন।" সনাতনের কথা শুনিয়াই শ্রীচৈততা বৃন্দাবন যাওয়ার সংকল্প ত্যাগ করিয়া গোড়দেশ-ভ্রমণান্তে নীলাচলে ফ্রিয়া গোলেন (তা১৮)১১)।

কবিকর্ণপূর ঐতিভয়তক্রোদয় নাটকে বা ঐতিভয়তরিতায়ত মহাকার্যে রামকেলিতে সনাতনের সহিত ঐতিভয়ের মিলন বর্ণনা করেন নাই। কাশীতে সনাতনের প্রতি ঐতিচতগ্রের কুপার কথা তিনি নাটকে লিখিয়াছেন (৯৪৬)। তিনি সনাতনকে "গৌড়েক্রক্স সভাবিভূষণমণি" বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন (৯৪৫) ও লিখিয়াছেন যে ঐতিচত্ত অবধৃতাকৃতি সনাতনকে দেখিয়াই আলিন্ধন করিয়াছিলেন। নাটকে বর্ণিত হইয়াছে যে ঐতিচত্ত বুন্দাবন হইতে ফিরিবার পথে প্রয়াগে ঐকপের প্রতি কুপা করেন; তৎপরে তিনি বারাণসীতে আসেন ও সনাতনের সহিত মিলিত হয়েন। কিন্তু বারাণসীর ঘটনা বলিবার সময় বার্তাহারী প্রতাপক্রতক বলিতেছে—

কালেন বৃন্দাবন-কেলিবার্ত্ত। লুপ্তেতি তাং খ্যাপয়িতুং বিশিশ্ব। কুপায়তে নাভিষিষেত দেব-স্তাঠৈব রূপক সনাতনক ॥ ১১১৮

অর্থাৎ কালক্রমে বৃন্দাবন-সম্বন্ধীয় শ্রীকৃঞ্জলালাকথা বিলুপ্ত হইলে.
শ্রীচৈতন্য পুনরায় তাহা বিশেষরূপে প্রকাশ করিবার অভিপ্রায়ে রূপ
ও সনাতনকে তথায় কুপায়ত ছারা অভিষিক্ত করিলেন। শ্লোকের
চতুর্থ চরণের "তত্রৈব" শন্দের অর্থ কি ? নাটকের বর্ণনার ক্রম দেখিয়া
মনে হয়, "তত্রেব" মানে বারাণসীতে। ১০০৭ বল্পান্দে অলৈতবংশীয়
প্রভূপাদ রাধিকানাথ গোস্বামী বৃন্দাবন হইতে শ্রীচৈতনাচরিতায়তের যে

## শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

সংস্করণ বাহির করেন, তাহার সংস্কৃত টীকায় "তত্রৈর বৃন্দাবন এব" ব্যাখ্যা করিয়াছেন। রাধাগোবিন্দ নাথ মহাশয় "তত্রের প্রয়াগে কাশী-পুর্যাঞ্চ যদা বৃন্দাবনে" বলিয়া পাঠককে বড়ই মুন্ধিলে ফেলিয়াছেন। কৃষ্ণদাস করিরাজ বলেন যে প্রয়াগে শ্রীরূপের ও অনুপমের সহিত শ্রীচৈতনার সাক্ষাৎ হয়। শ্রীরূপকে উপদেশ দিবার পর শ্রীচৈতনা যথন কাশীতে যাইবার জন্ম বাহির হইলেন, তথন শ্রীরূপ তাঁহার সহিত যাইতে চাহিলেন। শ্রীচৈতন্ম তাঁহাকে বৃন্দাবনে পাঠাইয়া দিলেন (চৈ চ চ , ২০৯০ ১৯৫-২০১)। কাশীতে যথন সনাতনের সহিত তাঁহার সাক্ষাৎ হইল তথন শ্রীরূপ সেখানে ছিলেন না। স্থতরাং এক স্থানে তুই ভাইকে কুপা করা সন্ধর হয় না। রূপ-সনাতনের সম্বন্ধে কোন ঘটনা-বর্ণনায় কৃষ্ণদাস করিরাজ্বের সহিত ক্রিকর্পপুরের বিরোধ থাকিলে, করিরাজ্ব গোস্থানীর কথাই অধিকতর নির্ভরযোগ্য মনে করিতে হইবে, কেন-না কৃষ্ণদাস করিরাজ্ব শ্রীরূপের সঙ্গে দ্বীর্কাল বাস করিয়াছিলেন। করিকর্পপুরের সঙ্গে শ্রীরূপের ঘনিষ্ঠতার কথা জানা যায় না। স্থতরাং নাটকের "তত্রৈব" শন্দে এক সঙ্গে শ্রীচৈতন্ম রূপ-সনাতনকে কুপা করিয়াছিলেন, বলা ভুল।

কবিকর্ণপুর রূপ-সনাতন-সপ্তক্ষে আর একটি ভুল সংবাদ তাঁহার মহাকাব্যে দিয়াছেন বলিয়া মনে হয়। তিনি লিখিয়াছেন যে সনাতন, অনুপম, রূপ—এই তিন ভাই একত্র শ্রীচৈতন্যকে নালাচলে দর্শন করিয়া-ছিলেন ও শ্রীমন্তাগবতোক্ত ব্রহ্মস্ততি-দারা তাঁহাকে স্তব করিয়াছিলেন (মহাকাবা, ১৭৯-২৪)। কৃষ্ণদাস কবিরাজ বলেন শ্রীরূপ ও অনুপম বুন্দাবন হইতে গোঁড়ে ফিরিয়া আসিতেছেন।

> এই মত দুই ভাই গৌড় দেশে আইলা। গৌড়ে আসি অনুপনের গলা প্রাপ্তি হৈলা। তৈ চ°, অসাতং

শ্রীরূপ একা নালাচলে যাইয়া শ্রীচেতত্যের শ্রীচরণে উপস্থিত হইলেন।

সনাতনের বার্তা যবে গোসাঞি পুছিল। রূপ কহে তাঁর সঙ্গে দেখা না হইল।

## বৃন্দাৰনের পাঁচ গোস্বামী ও শ্রীচৈত্ত

222

আমি গঙ্গাপথে আইলাম তেঁহো রাজ্বপথে। অতএব আমার দেখা নহিল তাঁর সাথে॥ প্রয়াগে শুনিল তেঁহো গেলা রুদ্দাবন। অমুপমের গঙ্গা প্রাপ্তি কৈল নিবেদন॥

- 25° 5°, c13184-89

শ্রীরূপ দোল্যাত্রা পর্যান্ত অর্থাৎ দশ মাস পুরীতে থাকিয়া বৃন্দাবনে ফিরিয়া গেলেন ( চৈ চ , তা৪।২৫, তা১।১৬০ )।

> নীলাচল হইতে রূপ গোড়ে যবে গেলা। মথুরা হইতে সনাতন নীলাচলে আইলা॥ ৩.৪।২

প্রভু কহে ইঁহা রূপ ছিলা দশমাস। ইঁহা হৈতে গৌড়ে োলা দিনদশ ॥ ৩৪।২৫

এ কেত্রেও কৃষ্ণদাস কবিরাজের প্রদত্ত বিবরণ কবিকর্ণপূরের বর্ণিত বিবরণ অপেক্ষা অধিকতর বিশাসযোগ্য বোধ হয়। এই ছই ঘটনা-সম্বন্ধেই লক্ষ্য করিবার বিষয় এই যে কবিরাজ গোস্বামী কবিকর্ণপূরের নাটকের ৮।৪৫, ৯।৪৬, ৯।৪৮ শ্লোক উদ্ধৃত করিয়া লিখিয়াছেন—

নিজ গ্রন্থে কবিকর্ণপূর বিস্তার করিয়া। সনাতনে প্রভুর প্রসাদ রাখিয়াছে লিখিয়া॥ ২।২৪।২৫৯

৯।৪৮ শ্লোক পুনরায় ২।১৯।১০৯এর পর উদ্ধার করিয়া তিনি লিখিয়াছেন— শিবানন্দ সেনের পুত্র কবিকর্ণপূর। রূপের মিলন গ্রন্থে লিখিয়াছেন প্রচুর॥

কবিকর্ণপূর নাটকে ছইটি শ্লোকে সনাতনের প্রতি কৃপা ও একটি শ্লোকে রূপের প্রতি কৃপা বর্ণনা করিয়াছেন। ছইটি বা একটি শ্লোককে "বিস্তার করিয়া" ও "লিখিয়াছিলেন প্রচুর" বলা কতদূর সন্ধত স্থগাগণ বিবেচনা করিবেন। কবিরাজ গোস্বামী কবিকর্ণপূর-বর্ণিত ঘটনাকে গীকার করেন নাই, তথাচ নিজের বর্ণিত ঘটনার বিপরীত ঘটনামূলক শ্লোক উদ্ধার করিয়াছেন। হয়ত প্রবাচার্যাকে প্রতিবাদ না করাই বৈঞ্জবীয় রীতি

## ১২০ - শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

অথবা এই ঘটনাকে বৈষ্ণব লেখকগণ বিশেষ প্রয়োজনীয় মনে করেন নাই—তাই সে সম্বন্ধে কোন উচ্চবাচ্য করেন নাই।

বৃন্দাবনদাস ঠাকুর প্রীচৈতন্ত ভাগবতের মধাথণ্ডের ধর্প অধ্যায়ের ও একাদশ অধ্যায়ের প্রথমে প্রীচৈতন্তকে "জয় রূপ-সনাতন-প্রিয়-মহাশয়" বলিয়া বন্দনা করিয়াছেন। কিন্তু রূপসনাতন-সম্বন্ধে তিনি যে সংবাদ দিয়াছেন তাহা কবিকর্ণপূরের প্রদন্ত তথ্যের ন্তায় ভ্রান্তিমূলক। তিনি অন্তাগণ্ডের নবম অধ্যায়ে লিখিয়াছেন যে নীলাচলে রূপ-সনাতন একই সময়ে অবস্থান করিতেছিলেন (চৈ ভা প্রত্ ৪৯৩)। অধৈতের নিকট ইহাদের পরিচয় দিবার সময় প্রীচৈতন্ত বলিতেছেন—

রাজ্যত্থ ছাড়ি কাঁথা করন্স লইয়া। মথুরায় গাকেন ক্ষের নাম লৈয়া॥ অমায়ায় কৃষ্ণ ভক্তি দেহ এ ছুই রে॥ চৈ° ভা°, পৃ° ৫০৮

পূর্বের ঐতিচতভাচবিতামৃত হইতে দেখাইয়াছি যে রূপ নীলাচল হইতে চলিয়া যাইবার দশ দিন পরে সনাতন তথায় আগমন করেন এবং নীলাচলে আসার পূর্বের ছই ভাইয়ের মধুবায় সাক্ষাৎ হয় নাই; যথা—

> সনাতনের বার্তা যবে গোসাঞি পুছিল। রূপ কহে তাঁর সঙ্গে দেখা না হইল॥ চৈ চ চ, তাচা৪৫

জয়ানন্দ রূপ-সনাতনের কথা অতি অল্লই জানিতেন। তিনি লিখিয়াছেন—

শীর ফাটেতর রহিলেন কুতৃহলে।
দবিরথাস ছই ভাই গেলা নীলাচলে।
দবিরখাসে ঘুচাইলা সংসার বন্ধন।
ছই ভাইর নাম হইল রূপ সনাতন ॥ জয়ানন্দ, পূত ১৪৯

রন্দাবনদাসের মতে রূপের উপাধি বা পদ ছিল দবিরখাস অর্থাৎ থাস মুস্সী (private secretary); জয়ানন্দ ফার্সী ভাষায় একেবারে অজ্ঞ



## বৃন্দাবনের পাঁচ গোস্বামী ও ছীচৈতত

ছিলেন, তাই দবিরখাস উপাধিকে 'দবির' ও 'থাস' এই তুই পদে বিভক্ত করিয়া তাহা রূপ ও সনাতনের নাম ভাবিয়াছেন।

লোচনদাস ঐতিচতন্তমন্তলের প্রারম্ভে রূপ-সনাতনকে বন্দনা করিয়াছেন, কিন্তু গ্রন্থমধ্যে কোথাও তাঁহাদের প্রসন্থ বর্ণনা করেন নাই। "শেষথণ্ডে" ঐতিচতন্তের গুঞ্জাবাড়ীর মধ্যে অদর্শন হওয়া বর্ণনা করার পর তিনি লিখিয়াছেন—

> কাশীমিশ্র সনাতন আর হরিদাস। উৎকলের সভে কান্দি ছাড়য়ে নিখাস॥

> > —লোচন, পৃ<sup>০</sup> ১১৭

শ্রীচৈতত্যের তিরোধানের সময় সনাতন নীলাচলে ছিলেন, এ কথা অহা কোন গ্রন্থে পাওয়া যায় না। লোচন এ ক্ষেত্রে ভ্রান্ত হইয়াছিলেন বলিয়া মনে হয়।

উল্লিখিত আলোচনা হইতে দেখা যাইতেছে যে ঐতিচতভাচরিতামৃত রচিত হইবার পূর্বের গৌড়মগুলে রচিত ঐতিচতভার জীবনীসমূহে রূপ-সনাতনের কথা বিশেষ কিছু নাই; অধচ সকল গ্রন্থেই তাঁহাদিগের নাম সসন্মান উল্লেখ করা হইয়াছে।

কৃষণাস কবিরাজ গোস্বামী শ্রীচৈতগুচরিতামতের মধালীলার প্রথম পরিচেছদের ২৬-৩৬, ৫৩-৭৫, ১৬৫-২১০, ২২৭-২০১ ও উনবিংশ হইতে পঞ্চবিংশ পরিচেছদে এবং অস্তাথণ্ডের প্রথম ও চতুর্থ পরিচেছদে রূপ-সনাতনের কথা বর্ণনা করিয়াছেন।

প্রধানতঃ এই বিবরণ অবলম্বন করিয়া রায় বাহাত্তর ভক্তর দীনেশচন্দ্র সেন তাঁহার "Chaitanya and his Companions" প্রন্থের তৃতীয় অধ্যায় রচনা করিয়াছেন। ঐ অধ্যায়ের একটি উক্তি সংশোধিত করিয়া পাঠ করা প্রয়োজন। ভক্তর সেন লিখিয়াছেন, "Rupa met Chaitanya at Benares where the latter took pains to instruct him in the cardinal points of the Vaisnava religion." "

Dr. D. C. Sen, Chaitanya and his Companions, ?" >>

## শ্রীতৈতনাচরিতের উপাদান

কৃষ্ণদাস কবিরাজের মতে প্রীচৈতন্য রূপকে প্রয়াগে শিকা দিয়াছিলেন; যথা—

> এই মত দশ দিন প্রয়াগে রহিয়া। শ্রীরূপে শিক্ষা দিল শক্তি সঞ্চারিয়া॥

255

ভক্তর সুশীলকুমার দে "পভাবলীর" যে পাণ্ডিত্যপূর্ণ গবেষণামূলক সংস্করণ প্রকাশ করিয়াছেন তাহার ভূমিকায় লিখিয়াছেন যে কাশীতে রূপ, অমুপম ও শ্রীচৈতত্যের সহিত সনাতনের সাক্ষাৎ হয়। ও উল্ফিক্ষদাস করিরাজ্বের বর্ণিত ঘটনার বিরুদ্ধ। বোধ হয় ভক্তর দে শ্রীচৈতত্য-চন্দ্রোদয় নাটকের পূর্বেরালিখিত "তত্তৈব" শব্দ অনুসরণ করিয়া ঐরূপ লিখিয়াছেন।

ভক্ত ভূমিকায় ডক্তর দে বলিয়াছেন, "No doubt, Chaitanya is represented as commissioning Sanatana and Rupa to prepare these learned texts as the doctrinal foundations of the faith and suggesting to them elaborate outlines and schemes; but these outlines and schemes are so suspiciously faithful to the actual and much later products of the Gosvamins themselves that this fact takes away whatever truth there might have been in the representation. ...... But to hold Chaitanya responsible for every fine point of dogma and doctrine elaborated by Sanatana and Rupa and Jiva would indicate an undoubtedly pious but entirely unhistorical imagination." তাহার এই ভক্তি অযোক্তিক মনে হয় না।

#### রূপ-সনাতনের জাতি

কৃষণাস কবিরাজ রূপ-সনাতনের মুখ দিয়া বলাইয়াছেন—

"নীচ জাতি নীচ সঙ্গী করি নীচ কাজ।
তোমার অগ্রেতে প্রভু! কহিতে বাসি লাজ।

- (5° 5°, 21)1)92

<sup>3</sup> Dr. S. K. De, Padyavali, Introduction, p. xlvii

ৰ ঐ ভূষিকা, pp. xxxv-vii

## বুন্দাবনের পাঁচ গোস্বামী ও ঐতিচত্ত

250

মেচ্ছ জাতি মেচ্ছসেবী করি মেচ্ছকর্ম।
গোত্রাক্ষণদোহী সঙ্গে আমার সন্ধন ॥" চৈ চ , ২।১।১৮৬
সনাতন কহে—"নীচ বংশে মোর জন্ম।
অধর্ম অস্তায় যত আমার কুলধর্ম ॥
হেন বংশে দ্বণা ছাড়ি কৈলে অন্বীকার।
তোমার কুপাতে বংশে মন্ধল আমার ॥"

এই সব উক্তি দেখিয়া, বিশেষতঃ "নীচ জাতি" ও "নীচ বংশ" শব্দ দেখিয়া কোন কোন গবেষক সিদ্ধান্ত করিয়াছেন যে রূপ-সনাতন অথবা তাঁহাদের পিতা কুমারদেব মুসলমান হইয়া গিয়াছিলেন। স্থপণ্ডিত বসন্তকুমার চট্টোপাধ্যায় লিখিয়াছেন, "রূপ-সনাতনের আবির্ভাবের কিছুকাল পূর্বের পিরালি থা নামক একজন মুসলমান পীরধর্ম্ম প্রচারার্থে যশোহর জেলায় আসেন। রূপ-সনাতনের পিতা ঐ সময় যশোহর জেলায় বাস করিতেন। সম্ভবতঃ তিনি পিরালি ধর্ম গ্রহণ করিয়াছিলেন।" '

শ্রীপাদ কৃষ্ণদাস কবিরাজ সনাতনের মুখ দিয়া বৈশ্ববীয় দীনতা প্রকাশ করাইতে যাইয়া সনাতনের বংশকে নীচ ও অন্যায়পরায়ণ বলাইয়াছেন। তাঁহার অন্যান্য উক্তি দেখিয়া কিন্তু মনে হয় না যে রূপ-সনাতন সত্য সত্যই স্বধর্মদ্রই হইয়াছিলেন বলা তাঁহার অভিপ্রেত। তিনি লিখিয়াছেন যে রামকেলিতে শ্রীচৈতন্মের সহিত সাক্ষাৎ করার পর—

ছুই ভাই বিষয় ত্যাগের উপায় স্বজ্ঞিল।
বছ ধন দিয়া ছুই ব্রাহ্মণ বরিল ॥
কুষ্ণ মন্ত্রে করাইল ছুই পুরশ্চরণ।
অচিরাতে পাইবারে চৈতগুচরণ॥ চৈ° চ°, ২০১১।৩-৪

সনাতন রাজসভায় উপস্থিত না হইয়া

ভট্টাচাৰ্য্য পণ্ডিত বিশ ত্রিশ লঞা। ভাগৰত বিচার করে সভাতে বসিয়া।

—टेंड° ह°, २१३৯१३७

> आत्रक्वर्व, आदग, ১७৪১, मृ° ১११-१৮

## শ্রীচৈতশুচরিতের উপাদান

>28

যদি রূপ-সনাতন বা তাঁহাদের পিতা সতাই মুসলমান হইয়া যাইতেন, তাহা হইলে তাঁহাদের পঞ্চে পুরশ্চরণের জন্ম ও ভাগবত বিচারের জন্ম ব্রাক্ষণ পাওয়া সম্ভব হইত না। ব্রাক্ষণ-সমাজের অন্তঃশাসন তথন খুব প্রবল ছিল।

রূপ-সনাতন মুসলমান হইলে সে কথা কুঞ্চদাস কবিরাজের পূর্ববিক্তী সকল লেখক একযোগে চাপিয়া যাইবেন, ইহাও সম্ভব মনে হয় না।

ঐতিহাসিক বিচারের একটি মূল সূত্র হইতেছে এই যে যাহার সম্বন্ধে কথা তাহার নিজের উক্তি পাওয়া গেলে তাহাই সাধারণতঃ সর্বনাপেকা অধিক বিশাসযোগ্য বলিয়া গ্রহণ করিতে হইবে। অবশ্য সেই ব্যক্তির যদি সত্য গোপন করা অভ্যাস থাকে বা শৃতিভংশ হইয়াছিল প্রমাণিত হয় তবে তাহার কথা বিশ্বাস করা যায় না। রূপ-সনাতনের ক্ষেত্রে শৃতিভংশের কথা উঠিতেই পারে না। তাহারা যে স্বেচ্ছায় পিতার বা নিজেদের ধর্ম্মান্তর-গ্রহণ-বৃত্তান্ত গোপন করিয়া যাইবেন, এ কথাও বিশ্বাস্থ মনে হয় না। তাহারা রাজ্মজী-হিসাবে যথেন্ট মান-সম্মান পাইয়াছিলেন —লোকনিন্দার ভয়ে আত্মপরিচয় গোপন করিয়া গাত্র তাহারা নহেন। মহন্তর জীবনের আহ্বানে রাজ-ঐশ্বর্য ত্যাগ করিয়া তাহারা ইচ্ছাপূর্বক সত্যগোপন বা মিখ্যাভাষণ করিবেন, ইহা বিশ্বাস করিতে প্রবৃত্তি হয় না।

সনাতন গোস্বামী বৃহত্তাগবতামৃতের তৃতীয় শ্লোকের সকৃত টীকায় লিখিয়াছেন, "পক্ষে চ ভক্তঃ স্বপ্রিয়ন্থতো যো রূপঃ কর্ণাটদেশবিখ্যাত-বিপ্রকুলাচার্য্য-শ্রীন্ধগন্তরুবংশন্ধাত-শ্রীকুমারাত্মজা গৌড়দেশী যঃ শ্রীরূপনামা বৈষ্ণব্ররস্তেন সহেত্যর্থ:।" এখানে সনাতন রূপকে বিপ্রবংশ-জাত বলিতেছেন।

শ্রীরূপ গোস্বামী "সনাতনাফকে" লিখিয়াছেন—

স্দাক্ষিণাত্য-ভূমিদেবভূপবংশ-ভ্যণং
মুকুন্দদেব-পৌত্রকং কুমারদেব-নন্দনম্।
সঞ্জীব-ভাতবল্লভাগ্রজন্মরূপকাগ্রজং
ভজাম্যহং মহাশয়ং কুপাসুধিং সনাতনম্॥



## বুন্দাবনের পাঁচ গোস্বামী ও শ্রীচৈতত্ত

এ স্থলেও রূপ সনাতনকে প্রাক্ষণবংশভূষণ বলিয়া বন্দনা করিয়াছেন।
প্রীক্ষীব গোস্বামী ভাগবতের লযুতোষণীর অন্তে রূপ-সনাতনের বংশপরিচয় দিয়াছেন। তাহাতেও জানা যায় যে তাঁহারা প্রাক্ষণ ছিলেন।
উক্ত পরিচয়ে আছে—

জাতস্তত্র মৃকুন্দতো বিজবরঃ শ্রীমান্ কুমারাভিধঃ কঞ্চিদ্রোহমবাপ্য সংকুলজনির্বস্থালয়ং সঙ্গতঃ। তংপুত্রের মহিষ্ঠবৈঞ্বগণপ্রেষ্ঠান্তয়ো জজ্জিরে যে সং গোত্রমমূত্র চেহ চ পুনশ্চকুস্তরাম্জিতম্॥

এই শ্লোকের "দ্রোহ" শব্দ দেখিয়া বসন্তকুমার চট্টোপাধ্যায় মহাশয় সন্দেহ করেন যে কুমারদেব জাতিচ্যুত হইয়াছিলেন। ' কিন্তু "ভক্তি-রত্নাকরে" ঐ শ্লোকটির মর্ম্ম লইয়া লেখা হইয়াছে—

শ্রীমুকুন্দ দেবের নন্দন শ্রীকুমার।
বিপ্রকুলপ্রদীপ পরম শুদ্ধাচার॥
সদা যজ্ঞাদিক ক্রিয়া নিভূতে করয়।
কদাচার জনস্পর্শে অতি ভীত হয়॥
যদি অকস্মাৎ কভু দেখয়ে যবন।
করে প্রায়শ্চিন্ত অন্ন না করে গ্রহণ॥
জ্ঞাতিবর্গ হইতে উল্বেগ হৈল মনে।
ছাড়িলেন নবহট্ট গ্রাম সেই ক্ণণে॥
নিজ্ঞগণ সহ বন্দদেশে শীত্র গেলা।
বাকলা চন্দ্রদীপ গ্রামেতে বাস কৈলা॥ পৃত্ত ৮০০

ঐ গ্রন্থে আরও লিখিত আছে—

সনাতন-রূপ নিজ দেশস্থ ব্রাক্ষণে। বাসস্থান দিলা সবে গলা সন্নিধানে॥ পু° ৪৩

১ বন্ধনী, পেৰি, ১০৪২, "আলোচন।"

#### 320

## ঐতিভক্তরিভের উপাদান

ইহাতেও সনাতনের প্রাক্ষণত্ব সৃচিত হয়। তবে এ কথা অস্বীকার করিবার উপায় নাই যে মুসলমান সরকারে চাকুরী করার জন্ম রূপ-সনাতনের পাতিত্য দোষ ঘটিয়াছিল। সনাতন গোস্বামী ইহার ইপ্নিতও করিয়াছেন। তিনি বৃহস্তাগ্রতামূতে লিখিয়াছেন—

> আন্তামাধুনিকীং বার্জাং স্বধর্মাভনপেক্যা সাক্ষাজ্ঞীভগবদ্বুজ্ঞা ভজতাং কুত্রিমামপি। ন পাতিত্যাদিদোবঃ স্থাদ্ গুণ এব মহান্ মতঃ সৈবোত্তমা মতা ভক্তিঃ ফলং যা পরমং মহৎ। াণা২০৮-৯

অর্থাৎ বাঁহারা স্বধর্মাদির অপেকা না রাধিয়া পুরাতনী বা আধুনিকী প্রতিমা ভজনা করেন, তাঁহাদের পাতিত্যাদি দোষ হয় না; প্রত্যুত তাঁহারা মহান্ গুণ সক্ষয়ই করিয়া থাকেন; কারণ ভগবৎ-সেবাই উত্থা ভক্তি এবং এই সেবাই পরম মহৎ ফল।

#### সনাতনের গুরু কে ?

প্রিরুপ ও সনাতন গোস্বামী তাঁহাদের গ্রন্থসমূহে অসাধারণ পাণ্ডিত্যের পরিচয় দিয়াছেন। তাঁহারা যদি প্রীচৈতন্তের সহিত সাক্ষাতের পূর্বের শাস্ত্রচর্চা না করিতেন, তাহা হইলে এরূপ পাণ্ডিত্য-অর্চ্ছন করিতে পারিতেন কি না সন্দেহ। জীজীব গোস্বামী লঘুতোষণীর অন্তে লিখিয়াছেন—

যে শ্রীভাগবতং প্রাপা স্বগ্নে প্রাতশ্চ জাগরে।
স্বপ্রদৃষ্টাদের বিপ্রাৎ প্রথমে বয়সি স্থিতাঃ।
মমজ্যু: শ্রীভগবতঃ প্রেমায়তমহাস্থুধৌ।
তেষামের হি লেখে।
হয়: শ্রীসনাতননামিনাম্॥

ঐ শ্লোকের ভাবাসুবাদ ভক্তিরত্নাকরে এইরূপ আছে—

শ্রীসনাতনের অতি অদুত চরিত। শ্রীমন্তাগবতে যার অতিশয় প্রীত॥



## বৃন্দাবনের পাঁচ গোস্বামী ও ঐতিচত্য

প্রথম বয়সে স্বপ্নে এক বিপ্রবর।
শ্রীমন্তাগবত দেই আনন্দ অন্তর॥
স্বপ্রভঙ্গে সনাতন ব্যাকুল হইলা।
প্রাতে সেই শ্রীমন্তাগবত দিলা॥
পাইয়া শ্রীভাগবত মহা হর্ষ চিতে।
মগ্র হৈলা প্রভু প্রেমায়ত সমুদ্রেতে॥
শ্রীমন্তাগবত অর্থ থৈছে আস্বাদিল।
তাহা শ্রীবৈঞ্চব তোবণীতে প্রকাশিল॥ পূ<sup>o</sup> ৩৮

নরহরি চক্রবর্ত্তী "ভক্তিরত্নাকরে" আরও সংবাদ দিয়াছেন যে ঐচৈতত্তের সহিত মিলনের পূর্বের রূপ-সনাতন সর্ববদা "সর্ববশান্ত চর্চ্চা" করিতেন। কেহ ভায়সূত্রের ব্যাখ্যা করিলে ভাহাদিগকে শুনাইতে আসিতেন। সনাতন গোস্বামী বৃহৎ বৈষ্ণব-তোষণীর প্রারম্ভে নিজের শিক্ষা-গুরুদের বন্দনা নিম্নলিখিতভাবে করিয়াছেন—

> ভট্টাচার্য্যং সার্ববভৌমং বিভাবাচস্পতীন্ গুরুন্। বন্দে বিভাভ্যণক গৌড়দেশবিভ্যণম্। বন্দে শ্রীপরমানন্দ-ভট্টাচার্য্যং রসপ্রিয়ম্। রামভদ্রং তথা বাণীবিলাসং চোপদেশকম্॥

উদ্ধৃত শ্লোকে যখন "গুরুন্" শব্দের প্রয়োগ আছে, তখন উলিখিত ব্যক্তিদের মধ্যে কোন একজনকে সনাতনের দীক্ষাগুরু মনে করিবার কারণ নাই। ইহারা সকলেই সনাতনের অধ্যাপক ছিলেন মনে হয়। ভক্তিরতাকরে আছে—

> শ্রীসনাতনের গুরু বিছা বাচস্পতি। মধ্যে মধ্যে রামকেলি গ্রামে তাঁর স্থিতি।

এই স্থানে নরহরি চক্রবর্ত্তী যদি গুরু অর্থে দীক্ষাগুরু বুঝিয়া থাকেন তবে তিনি ভুল করিয়াছেন বলিতে হইবে; কেন-না আমরা সনাতন



## ঐতিচতন্মচরিতের উপাদান

গোস্বামীর নিজের সাক্ষ্য পাইয়াছি যে তাঁহার গুরু শ্রীতৈতন্ত। তিনি বৃহস্তাগ্বতামূতের মঙ্গলাচরণে লিখিয়াছেন—

254

নমঃ শ্রীগুরুকৃষ্ণায় নিরুপাধি-কুপাকৃতে।

যঃ শ্রীচৈতভারপোহভূৎ তম্বন্ প্রেমরসং কলো।
ভগবন্ধক্তি-শাস্ত্রাণাময়ং সারস্ত সংগ্রহঃ
অমুভূতস্ত চৈতভাদেবে তৎপ্রিয়র্রপতঃ। ১০-১১

সনাতন স্বকৃত টাকায় লিখিয়াছেন, "শ্রীগুরুবরং প্রণমতি। চৈতভাদেবে চিত্তাধিষ্ঠাতৃ-শ্রীবাস্থদেবে। যদ্ধা চৈতভাদেবেতি খ্যাতে শ্রীশচীনন্দনে। ততশ্চ তত্ম যং প্রিয়ং রূপং যতিবেশ-প্রকাণ্ড-গৌরশীমৃত্তিস্থাতদমুভাব-বিশেষেণেতার্থঃ। পকে তম্ম প্রিয়ো রূপনামা মহাশয়স্তম্মাদিতি পূর্ববং।" উক্ত শ্লোকের ভাবার্থ—যিনি ত্রীচৈতগুরূপ পরিগ্রহ করিয়াছেন, অহেতুক করুণাকারী সেই শ্রীকৃষ্ণ-রূপ শ্রীগুরুকে নমস্কার। চৈতভাদেবের প্রিয় রূপ হইতে তাঁহাতে অনুভূত যে ভগবন্ধক্তি শান্তসমূহের সার, ইহা তাহারই সংগ্রহ। একাদশ শ্লোকের টীকায় "প্রিয়রূপত:" শব্দের ব্যাখ্যায় দুইটি বিষয় লক্ষ্য করিতে হইবে। প্রথমতঃ সনাতন গোস্বামীর মতে এটিচতভের প্রিয় রূপ হইতেছে যতিবেশ। গৌড়মগুলের শিবানন্দ সেন, নরহরি সরকার, বাস্থ ঘোষ প্রভৃতি গৌরগোপাল অর্থাৎ নবদ্বীপের কিশোর গৌরান্ত মৃর্ত্তিকেই জীচৈতত্যের শ্রেষ্ঠরূপ মনে করেন। জীকৃষ্ণ-সম্বন্ধে যেমন বলা হয় বৃন্দাবনের প্রাক্তম পূর্ণতম, মধুরার পূর্ণতর এবং ভারকার ও কুরুকেত্রের পূর্ণ; তেমনি গৌরপারম্যবাদিগণ নবদ্বীপের কিশোর গৌরাঙ্গকে পূর্ণতম, গয়া হইতে প্রত্যাগত ভাবোন্মন্ত বিশ্বস্তরকে পূর্ণতর ও যতিবেশধারী শ্রীচৈতত্তকে পূর্ণ মনে করিতেন এবং এখনও করেন। ব্রজমণ্ডলে শ্রীচৈতন্মের ধর্মা-সম্বন্ধে যে সমস্ত গ্রন্থাদি রচিত হইয়াছিল তাহাতে দেখা যায় যে ঐাচৈততা মূলতঃ উপায়—উপেয় নহেন। সেই জন্মই ব্রজমগুলের সাধকদের নিকট শ্রীচৈতভার যতিবেশ, যে বেশে তিনি শ্রীরাধার ভাবমাধুর্য্য আস্বাদন করিয়াছিলেন, তাহাই প্রিয়রূপ।



#### রন্দাবনের পাঁচ গোস্বামী ও শ্রীচৈত্যা

উদ্ধৃত টীকাংশে লক্ষ্য করিবার থিতীয় বিষয় এই যে সনাতন নিজের অমুজ শ্রীরূপকে কিরূপ সন্মানের সহিত উল্লেখ করিতেছেন। ইহাতে এক দিকে যেমন সনাতনের চরিত্রের মহত্ব ও উদারতা প্রকাশ পাইতেছে, অগ্র দিকে তেমনি ব্রজমণ্ডলে শ্রীরূপের অসাধারণ মর্য্যাদা দেখা যাইতেছে। ব্রজমণ্ডলের ভজন-প্রণালীর প্রবর্তক শ্রীরূপ—সনাতন নহেন। রঘুনাধদাস ও কৃষ্ণদাস করিরাজের গ্রন্থাদি পাঠেও এই ধারণা জন্মে। বর্ত্তমান কালে গৌড়ায় বৈক্ষবধর্ম্মের সংকারকামা গৌড়ায় মঠও "রূপানুগত ভজন-প্রণালী"র পুনরুজ্জাবন আকাজ্যা করিতেছেন। শ্রীরূপ গোস্বামা কিন্তু সকল গ্রন্থেই সনাতনকে বহু সন্মানের সহিত গুরু বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন; যথা—

বিশ্রামনন্দিরতয়া তথ্য সনাতনতনোর্মদীশস্থ। ভক্তিরসায়তসিকুর্ভবতু সদায়ং প্রমোদায়।

—ভক্তিরসাম্তসিকু, পূর্ব ১ম লহরী ৩

লঘুভাগবতামূতের মঞ্চলাচরণের পঞ্চম শ্লোকেও তিনি সনাতনকে লক। করিয়া বলিয়াছেন—

> শ্রীমৎপ্রভূপদাস্তোজৈঃ শ্রীমন্তাগবতামূতম্। যদ্ ব্যতানি তদেবেদং সংক্ষেপেণ নিষেব্যতে॥

এই বার সনাতন গোস্বামীর গুরু কে, সেই বিচারে ফিরিয়া আসা যাউক। বৃহস্তাগবতামতের দশম ও একাদশ শ্লোক হইতে জানা যায় যে ঐতিচতন্তকেই তিনি গুরুবর বলিয়া প্রণাম করিয়াছেন। ঐ গ্রন্থগানি Pilgrim's Progress-এর ন্যায় সনাতন গোস্বামীর আধ্যাত্মিক অনুভূতির রূপক। গ্রন্থের বিতীয় থণ্ডের নায়ক সত্যানুসন্ধিৎত গোপকুমার স্বয়ং সনাতন। বিতীয় খণ্ডের প্রথম অধ্যায়ের ৩ সংখাক শ্লোকে আছে যে কামাখ্যা দেবী স্বথ্ন উক্ত গোপকুমারকে দশাক্ষর গোপালমন্ত উপদেশ করিয়াছিলেন। এই দশাক্ষর গোপালমন্ত মাধ্বেক্রপুরীর, ঈশ্বরপুরীর ও শ্রীচৈতন্তদেবেরও যে উপাসিত মন্ত্র, এ কথা শ্বরণ রাখিতে হইবে। ভগবৎ-পার্যদেগ গোপকুমারকে বলিলেন—

গৌড়ে গঙ্গাতটে জাতো মাথুর-ব্রাক্সণোত্তমঃ। জয়ন্তনামা কৃষ্ণকাবভারতে মহান্ গুরুঃ॥ ২০০১২। অর্থাৎ গৌড়দেশে গলাতীরে জয়ন্ত নামে এক মাথুর ব্রাহ্মণ আছেন।
তিনি কুফের অবতার এবং তিনিই তোমার মহান্ গুরু। গৌড়দেশে
গলাতীরে ত্রীচৈতক্ত বাতীত অক্ত কোনও কুফের অবতার আবিভূতি
হইয়াছিলেন বলিয়া জানা যায় না। সেই জন্ম উক্ত জয়ন্ত ত্রীচৈতক্তের
কপকাকারে গৃহীত নাম।

এই সকল প্রমাণ-বলে আমি অনুমান করিতেছি যে প্রীচৈতগ্যই সনাতনের গুরু। অব্যা এই অনুমান বৈষ্ণব-সম্প্রদায়ের সিদ্ধান্তের বিরোধা। রাধাগোবিন্দ নাথ মহাশয় লিখিয়াছেন, "বৈঞ্ব শাদ্রাপুসারে শ্রীমশাহাপ্রভু হইলেন স্বয়ং ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ। শ্রীকৃষ্ণ তত্তঃ সমষ্টিগুরু হইলেও বাষ্টিগুরুর কাজ তিনি করেন না; তিনি নিজে কাহাকেও দীকা দেন না। যোগা ভক্ত-ছারা দীকা দান করাইয়া থাকেন।" > তিনি ছুইটি প্রমাণ-বলে সিদ্ধান্ত করিয়াছেন যে সনাতনের গুরু শ্রীচৈতন্ত নছেন। প্রথমতঃ শ্রীচৈতন্তচরিতামূতে আছে যে রামকেলিতে শ্রীচৈতভ্যের চরণ-দর্শন করিয়া শ্রীরূপ-সনাতন স্বগৃহে গেলেন ও শ্রীচৈতগ্রচরণ-প্রাপ্তির আশায় দুইটি পুরশ্চরণ করাইলেন। নাথ মহাশয় হরিভক্তিবিলাসের ৭৷০ শ্লোকের বিধি-অনুসারে বলেন যে দীক্ষার পরে পুরশ্চরণ হয়, পূর্বের নহে। অতএব শ্রীচৈতত্তের সহিত সাক্ষাৎ হইবার পূর্বেই রূপ-সনাতনের দীকা হইয়াছিল। সনাতনের নিজের উক্তির সহিত বিরোধ-হেতু নাথ মহাশয়ের এই অনুমান যুক্তিসহ বলিয়া মনে হয় না। নাথ মহাশয়ের প্রদত্ত ছিতীয় প্রমাণ বৈষ্ণবতোষণীর মঞ্চলাচরণে ভক্ত "ভট্টাচার্যাং বাস্থদেবং বিভাবাচস্পতীন্ গুরুন্।" । পূর্বেই বলিয়াছি যেখানে গুরু শব্দের বছবচন প্রয়োগ হয় সেখানে শিকাগুরুই বুঝায়; কেন-না দীক্ষাগুরু একজন এবং শিক্ষাগুরু বত হইতে বাধা নাই।

আলোচ্য মন্থলাচরণে সনাতন, সার্ববভৌম ভট্টাচার্য্য, বিভাবাচস্পতি, বিভাভূষণ, পরমানন্দ ভট্টাচার্য্য, রামভদ্র ও বাণীবিলাসকে বন্দনা

রাখাগোবিন্দ নাথ-দলাদিত ইটিভক্ষভরিতামৃত, অস্তা, পরিশিষ্ট ২০+

২ নাথ মহাৰত "বাহুদেবং" পাঠ কোখাত পাইলেন আনি না। ভ্তিরস্থাকরের ১০ পৃঠাত উদ্ধৃত পাঠ ও বামনারাখণ বিভারত-সম্পাধিত বৈক্ষবতোহনীর পাঠ,"সার্ধান্তৌদং"



করা হইয়াছে। ইঁহাদের মধ্যে প্রথমোক্ত তুইজন ছাড়া অপর চারজ্বনের নাম প্রীচৈতগুগোন্ঠীতে পাওয়া যায় না। কোন বৈঞ্ববন্দনায় ঐ চারজনের নাম-উল্লেখ নাই। স্থতরাং অনুমান হয় যে শ্রীচৈতগ্যের সহিত সাক্ষাৎ হইবাব পূর্বের ঐ ছয়জনের নিকট সনাতন শিক্ষালাভ করিয়া-ছিলেন। এই অনুমানের সমর্থনকল্লে তুইটি ঘটনার উল্লেখ করিব। (১) সনাতন নীলাচলে বাসকালে সার্ববভৌমের নিকট যে শিক্ষালাভ করিয়াছিলেন, এরূপ কোন প্রমাণ নাই। অতএব যখন সার্বভৌম গৌড়নদেশে থাকিয়া ছাত্রদিগকে গ্রায়শান্তাদি শিক্ষা দিতেন সেই সময়ে হয়ত সনাতন তাহার নিকট পড়িয়াছিলেন। (২) ভক্তিরত্রাকরের মতে—

# ভাষসূত্র ব্যাখ্যা নিজকৃত যে করয়। সনাতন রূপ শুনিলে সে দৃঢ় হয়। পু<sup>©</sup> ৪২

অর্থাৎ সনাতন স্তায়শাত্রে পাণ্ডিতা লাভ করিয়াছিলেন। সনাতন রুহুটাগবতায়তে স্তায়শাত্রের জ্ঞানের পরিচয় দিয়াছেন; যথা — "তুমি কুঞাবিই ইইয়া পানাদি মন্তের স্তায় অথবা উন্মন্তের স্তায় কথনও নৃত্যা করিয়া, কথন গান করিয়া, কথন কম্পমান ইইয়া, কখন বা রোদন করিয়া স্তায়শাত্রোক্ত জন্মমরণাদি একবিংশতি প্রকার সংসার ছঃখ ইইতে লোক সকলকে উদ্ধার করিয়া কেবল যে তাহাদিগের ছঃখমোচন করিয়াছ তাহা নছে, কিন্তু সর্বত্র হরিভক্তি বিস্তার করিয়া তাহাদিগকে পরম স্থবী করিয়াছ।" সার্বভোমাদি ছয়জন গুরুর নিকট সনাতন শ্রীটেতক্তের কুপালাভ করিবার পূর্বের স্তায়শাত্র পাঠ করিয়াছিলেন, মনে হয়। Eggling সাহেব বলেন যে সনাতন গোস্বামি-কৃত তাৎপর্যান্দীকা নামে মেঘদুতের একখানি টাকা India Office Libraryতে আছে। ' ঐ টাকা আমাদের সনাতন গোস্বামীর রচনা ইইলে উহা নিশ্চয়ই খ্রীটেতক্তের রুপাপ্রাপ্তির পূর্বের লেখা।

১ বৃহস্তাগৰতামৃত, ১(০)৬ মৃল ও তাহার টীকার বঙ্গালুবাদ

<sup>₹</sup> Indis Office Catalogue, VII, pp. 1422-23



205

# শ্রীতৈততচরিতের উপাদান সনাতনের রচিত গ্রন্থাদি

প্রীক্ষীব গোস্বামী লঘুতোষণীর অস্তে সনাতনের রচিত বলিয়া চারি-খানি গ্রন্থের নাম উল্লেখ করিয়াছেন: (১) ছই খণ্ডে সম্পূর্ণ ভাগবতামৃত, (২) হরিভক্তিবিলাস ও তাহার টাকা দিক্ প্রদর্শিনী, (৩) লীলাস্তব, (৪) বৈক্ষৰভোষণী। ইহাদের মধ্যে প্রথম ও চতুর্থখানির সম্বন্ধে কোন গওগোল নাই। হরিভক্তিবিলাস নাম দিয়া যে গ্রন্থ রামনারায়ণ বিভারত্ ছাপিয়াছেন তাহা গোপাল ভটু কৃত। তিনি গ্রন্থশৈষে লিখিয়াছেন— "গোপাল ভট্টের ভগবন্ধক্তিবিলাসকে প্রায়শঃই লোকে 'হরিভক্তিবিলাস' বলিয়া থাকে, স্তরাং এই গ্রন্থ 'হরিভক্তিবিলাস' নামেই অভিহিত হইল।" বিভারত্ব মহাশয় ঐ গ্রন্থের যে টীকা ছাপিয়াছেন তাহা সনাতন গোস্বামীর লেখা বলিয়া নিঃসন্দেহে গ্রহণ করা যাইতে পারে। গোপাল ভট্ট মঙ্গলাচরণের দ্বিতীয় শ্লোকে লিথিয়াছেন যে তিনি রূপ, সনাতন ও রবুনাথদাসের সস্তোষ-বিধানার্থ গ্রন্থ লিখিতেছেন। টাকায় রবুনাথ-দাসের পরিচয়দান-প্রসঙ্গে লিখিত হইয়াছে—"এীরবুনাথদাসো নাম গৌড়-কায়ত্বলভাকর: পরমভাগবত: শ্রীমপুরাশ্রিতভদাদীন্ নিজস্পিনঃ সন্তোষ্যিতুমিতার্থ:।" এ হলে রঘুনাথাদির সন্ধা বলিয়া রূপ-সনাতনের কথা টাকায় অনুবিধিত রহিয়া গেল। ঐ টাকা যে সনাতন গোস্বামীরই লেখা, ইহা তাহার একটি প্রমাণ। অপর প্রমাণ হইতেছে এই যে প্রীক্ষাব লিখিয়াছেন যে সনাতন হরিভক্তিবিলাসের দিক্ প্রদর্শিনী টাকা রচনা করিয়াছেন। আলোচা মুদ্রিত টাকায় আছে---

> লিখাতে ভগৰতজৈ-বিলাসত যথামতি। টাকা দিগ্দশিনী নাম তদেকাংশার্থবোধিনী॥

"দিক্প্রদর্শিনা" ও "দিগদর্শিনীর" মধ্যে বিশেষ কোন প্রভেদ নাই। কিন্তু প্রশ্ন হইতেছে এই যে সনাতন কি একবার স্বকৃত হরিভক্তিবিলাসের টাকা করিয়াছিলেন, আবার গোপাল ভট্টের "ভগবদ্ধক্তিবিলাসের" টাকা করিয়াছিলেন ? অথবা গোপাল ভট্টের বইয়েরই টাকা লিখিয়াছিলেন, নিজের বইয়ের টাকা লিখেন নাই ? সনাতন-কৃত "হরিভক্তিবিলাসের"



## বুন্দাবনের পাঁচ গোস্বামী ও ত্রীচৈতগ্র

কয়েকথানি পুঁথি না পাওয়া পর্যন্ত এ সমস্তার সমাধান করা যাইবে না।
৺রামনারায়ণ বিতারত্ব সনাতনের "হরিভক্তিবিলাসের" টাকা দেখেন
নাই বলিয়া মনে হয়; কেন-না তিনি গোপাল ভট্টের বইয়ের শেষে
লিখিগাছেন, "কোন কোন স্থানে কেবল সনাতন-রচিত মূল সংক্ষিপ্ত
হরিভক্তিবিলাস দেখিতে পাওয়া যায়।" অধ্যাপক চিন্তাহরণ চক্রবর্তী
মহাশয় আনাকে জানাইয়াছেন যে এসিয়াটিক সোসাইটীতে বা
সাহিত্য-পরিষদে সনাতনের হরিভক্তিবিলাসের পুঁথি নাই—গোপাল
ভট্টের "ভগবছক্তিবিলাসের" পুঁথি আছে।

## "গীতাবলী"র রচয়িতা কে ?

সনাতন গোস্বামীর "লীলাস্তব" নামক গ্রন্থ স্বতন্ত্রাকারে প্রকাশিত হয় নাই। "ভক্তিরত্রাকরের" মতে "লীলাস্তবের" অপর নাম "দশম চরিত"। যথা—

> লীলান্তব দশম চরিত যারে কয়। সনাতন গোস্বামীর এই চতুষ্টয়॥ ভ°র°, পৃ° ৫৭

কৃষ্ণদাস কবিরাজ লিখিয়াছেন—

হরিভলিবিলাস আর ভাগবতামৃত।
দশম টিপ্লনী আর দশম চবিত॥
এই সব গ্রন্থ কৈল গোসাঞি সনাতন।

—रेह° ह°, शांश००००

"দশম চরিত" বা "লীলান্তব" নামে কোন গ্রন্থই মুক্তিত হয় নাই। ৺রামনারায়ণ বিভারত শ্রীরূপ গোস্বামীর "শুবমালায়" "নন্দোৎস্বাদি-চরিতং" হইতে আরম্ভ করিয়া "রম্বস্থল-ক্রীড়া" নামক ২৩টি লীলাবর্ণন-মূলক কবিতা ছাপিয়াছেন। 'নন্দোৎস্বাদি চরিতং"-এর টীকায় বলদেব বিভাভূষণ বলিতেছেন যে ইহা শ্রীরূপ গোস্বামীর রচনা। যথা— "ভগবলীলাং বর্ণয়িশ্বন্ শ্রীরূপো ভগবলামোৎকর্ষং মন্ত্রলমাচরতি জীয়াদিতি।" বৈশ্ববাচার্য্য রসিক্মোহন বিভাভূষণ "দশম চরিত"-সম্বর্মে

## শ্রীচৈতন্মচরিতের উপাদান

268

লিখিয়াছেন, "শ্রীমদ্ বলদেব বিভাভূষণ গীতাবলী ও দশম চরিতকে
শ্রীপাদ রূপ-বিরচিত বলিয়াই তদায় টীকা-প্রারম্ভে বিঘোষিত করিয়াছেন।
কিন্তু আমরা তিরদিন হইতেই শুনিয়া আসিতেছি যে এই কাব্যও শ্রীপাদ
সনাতনের রচিত। শ্রীপাদ কবিরাজ যে শ্রীপাদ সনাতন-লিখিত দশম
চরিত গ্রন্থের নামোল্লেখ করিয়াছেন উহা এই স্তবমালাভূক্ত দশম চরিত
ভিন্ন অন্য কোন কাব্য নহে বলিয়াই আমার ধারণা।" '

বলদেব বিভাভ্যণ অফাদশ শতাবার লোক; রূপ-সনাতনের গ্রন্থ-বা-সম্বন্ধে তাঁহার উক্তি থুব বেশী নির্ভরযোগ্য নহে সত্য। কিন্তু তাঁহার উক্তি আনাদের সমসাময়িক রিসকমোহন বিভাভ্যণের শোনাকথা অপেকা অনেক বেশী প্রামাণ্য। অন্যান্য প্রমাণ-বলেও মনে হয় যে আলোচ্য ২০টি পছা শ্রীরূপেরই রচনা। শ্রীক্ষীব গোস্বামী লয়্তোষণীতে শ্রীরূপের গ্রন্থসমূহের মধ্যে "ছল্দোহন্টাদশকং" নামে একগানি গ্রন্থের নাম করিয়াছেন। স্তবমালার "অথ নন্দোৎসবাদিচরিতং" প্রের দ্বিতীয় শ্লোকে আছে—

নন্দোৎসবাদয়স্তাঃ কংসবধাস্তা হরের্মহালীলাঃ। ছন্দোভিললিতাকৈরফীদশভিনিরূপ্যন্তে।

তাহা হইলে বুঝা যাইতেছে যে এজীব-কথিত "ছন্দোহফীদশকং" গ্রন্থই "স্তবমালা"র আলোচ্য পভগুলি।

শ্রীক্রীব গোস্থানী, কৃষ্ণদাস কবিরাজ, নরহরি চক্রবর্তী বা বলদেব বিছাভূষণ সনাতনের রচিত বলিয়া "গীতাবলী" নামক কোনও সতন্ত প্রস্তের নাম উল্লেখ করেন নাই। অথচ "স্তবনালা"র অন্তর্ভুক্ত "গীতাবলী" নামক ৪১টি গীতের প্রত্যেকটিতেই সনাতনের নাম কোন না কোন প্রকারে উল্লিখিত হইয়াছে। এরূপ ভণিতা দেখিয়া মনে হয়

১ তীৰংলগদনাতৰ শিকাস্চ, গু° sas

২ বল্পের বিভাত্যন গীতাবলীর টাকার শেবে ০১টি গীতেরই নাম করিয়াছেন—যথা গাথাক্যারিংশ-কোমিকা যো বাচ্টে নীকপানিটাঃ প্রবৃহার। পরামনারাজ্য বিভারত ২২ সংখ্যক গীতের পর ভূল করিয়া ২০ সংখ্যা বিহা গীতসংখ্যা ৩২ করিয়ালেন। রসিকামান্তন বিভাত্যন মহাশ্র ইলা লক্ষা না করিয়া ভিজ্ঞিছেন—"ইহাতে ৯২টা গীত আছে।" কপ্ননাত্য-শিকামুত, পু' ৪৮৮

বৃন্দাবনের পাঁচ গোস্বামী ও ঐতিচত্ত ১০৫ এগুলি •সনাতন গোস্বামীরই রচনা। পদকর্তা গোপীকান্তদাস লিখিয়াছেন—

> শ্রীল সনাতন কয়ল গীতাবলী বিবিধ ভকতরঙ্গী॥" '

গৌরস্থন্দরদাসও লিখিয়াছেন—

গোসাঞি সনাতন কয়ল গীতাবলী শুনইতে উনমিত চিত। \*

রসিকমোহন বিভাভূষণ মহাশয় গীতাবলা সনাতনের রচিত বলিয়া সিদ্ধান্ত করিয়াছেন। অথচ শ্রীকীবাদি পূর্বেবালিখিত চারজন বৈষ্ণবাচার্য্য সনাতনের গ্রন্থ-তালিকায় "গীতাবলী"র নাম দেন নাই। পদকল্লভকতে "গীতাবলী"র অনেকগুলি গীত ধৃত হইয়াছে, কিন্তু সতীশচক্র রায় মহাশয় সেগুলি শীরূপের রচনা বলিয়া নির্দ্দেশ করিয়াছেন। ° তিনি লিখিয়াছেন যে শ্রীরূপ "বিনয়বশতঃ নিজ নামের ভণিতা না দিয়া স্থকৌশলে তাঁহার পূজনীয় অগ্রজ সনাতনের নাম সংযুক্ত করিয়াছেন।" ৩ সংখ্যক গীতে "ফুলং সনাতন", ১০ সংখ্যক গীতে "সনকসনাতন-বৰ্ণিত চরিতে", ২০ সংগ্ৰুক গীতে "গিরিশ সনাতন সনকসনন্দন" প্রভৃতি বাকা দেখিয়া মনে হয় ইহা এরপেরই লেখা; কেন-না এরপ ললিত-মাধবের প্রথম অঙ্কের সপ্তম শ্লোকে সনাতনকে "সনকাদীনাং তৃতীয়ঃ পুরা" বলিয়াছেন। সনাতন নিজে গীতাবলী লিখিলে সনকাদির সহিত নিজের নাম ভণিতাচ্ছলে উল্লেখ করিতেন না। আমার মনে হয় এরপ গীতাবলীতে তাঁহার গুরু সনাতনকে শ্রীকুঞ্জের সহিত অভেদভাবে দর্শন করিয়া "মুক্তসনাতন সদ্বতিকামং" প্রভৃতি পদ লিখিয়াছেন। তাহা হইলে দেখা যাইতেছে যে সনাতন গোস্বামীর "দশমচরিত" বা "লীলান্তব" গ্ৰন্থ অভাবধি পাওয়া যায় নাই।

<sup>)</sup> कोर्शनानल, पृ° २৮ २ कोर्शनानल, पृ° २৮ ७ शनकत्र उत्त, १४ वछ, पृ° २०३



305

## শ্রীচৈতক্রচরিতের উপাদান

# শ্রীচৈত্ততত্ত্ব-সম্বদ্ধে সনাতন

শ্রীপাদ সনাতন গোস্বামী শ্রীচৈতভাকে ভগবান্ বলিয়া স্বীকার করিয়াছেন। বৃহত্তাগবতামতের মঙ্গলাচরণের প্রথম ও তৃতীয় শ্লোকে তিনি শ্রীচৈতভাকে শ্রীকৃষ্ণের সহিত অভেদ তত্ত্বরূপে বর্ণনা করিয়াছেন। প্রথম শ্লোকের টীকায় শ্রীচৈতভারে আবির্ভাবের কারণ নিম্নলিখিতভাবে প্রকাশ করিয়াছেন—"যভাপি শ্রীচৈতভাদেবাে ভগবদবতার এব তথাপি প্রেমভক্তি-বিশেষপ্রকাশনার্থং স্বয়মবতীর্ণহাত্তেন তদর্থং স্বয়ং গোপী-ভাবােছপি বাঞ্চাতে।" তৃতীয় শ্লোকটি এই—

স্বদয়িত-নিজভাবং যে। বিভাব্য স্বভাবাৎ। স্মধ্রমবতীর্ণো ভক্তরূপেণ লোভাৎ॥ জয়তি কনকধানা কৃষ্ণচৈতন্তনানা। হরিরিহ যতিবেশঃ শ্রীশচীসূমুরেষঃ॥

"স্বদয়িত নিজভাবং" পদের টীকায় সনাতন লিখিয়াছেন, "স্বস্থ হরের্ভাবং নিজভক্তজনেয় যং প্রেমা, তত্মাৎ সকাশাৎ স্বদয়িতানাং ভক্তানাং ভাবং।" শ্লোকটির বাঙ্গালা অর্থ এই—"নিজ ভাব হইতে স্বীয় ভক্তবর্গের নিজের প্রতি ভাব আলোচনা করিয়া, সেই ভাবের প্রতি লোভবশতঃ যিনি ভক্তরূপে এই স্থানে অবতার্গ হইয়াছেন, সেই কনককান্তি যতিবেশধারী শ্রীনন্দন, শ্রীকৃষ্ণতৈত্য নামক শ্রীহরি সর্বোৎকর্ষে বিরাজ করিতেছেন। গ্রোকের টীকায় "উক্তং সার্বভৌম-ভট্টাচার্য্য-পাদৈঃ" বলিয়া—

কালানকং ভক্তিযোগং নিজং যঃ প্রাত্তকর্ত্তু: কৃষ্ণচৈতগুনামা। আবিভূতিস্তস্ত পাদারবিদ্দে গাঢ়ং গাঢ়ং লীয়তাং চিত্তভুকঃ॥

শ্লোকটি সনাতন উদ্ধার করিয়াছেন। এ স্থানে শ্রীরাধার ভাবমাধুর্য্য আধাদনের বাঞ্চায় শ্রীচৈতন্মের আবির্ভাবের কথা স্পাই করিয়া বলা হয় নাই।



## বুন্দাবনের পাঁচ গোস্বামা ও ঐতিভন্ত

সনাতন গোস্বামী ঐীচৈতভোর যে অপূর্ব্ব প্রেম দর্শন করিয়াছিলেন, তাহাতে তাঁহার আর কোন সন্দেহ ছিল না যে প্রয়: একুঞ্চ বা এরাধাই শ্রীচৈত্যারূপে অবতার্ণ হইয়াছেন। "বৃহস্তাগবভায়তে" নারদ গোপ-কুমারকে বলিতেছেন, "সেই প্রেম নিরূপিতই হইতে পারে না; যদি বা কোন ক্রমে নিরূপিত হয়, তথাপি অধুনা তোমার প্রতীতির বিষয় হইবে না। যদি তাদৃশ প্রেমবিশিষ্ট লোকের সাক্ষাৎ দর্শন হয়, তবেই সেই প্রেমতত্ত্ব সাক্ষাৎ অবগত হওয়া যায়। গোপীগণ-মধ্যে স্থাসিকা পর্ম-প্রেমভরবতী শ্রীরাধিকা যদি প্রতাকীভূতা হয়েন, তবেই সেই মূর্ত্তিমান্ প্রেম সাকাৎ অনুভূত হইতে পারে। সেই ভগবতীই সেই প্রেম ব্যাখ্যা করিতে পারেন। এথানে যদি বা কাহারও প্রেমতত্ব-শ্রবণে শক্তি হয়, তথাপি সে ব্যক্ত করিতে পারে না; কারণ উপযুগপরি প্রেমাবিভাবে সর্বদা সকলে মহোন্মত্তের ভায় হইয়া থাকে। অপর শ্রোতাও তাদুশ প্রেমরোগগ্রস্ত হইয়া থাকে। কেবল সেই ভগবতীর দর্শন হইলেই, তাঁহাতে প্রাত্তুত মহাথেমলকণ সাকাৎ দৃষ্ট হইয়া থাকে এবং সেই প্রেম যথার্থতঃ বিজ্ঞাতও হইয়া থাকে। তাদুশ নিজপ্রেম-বিস্তারকারী কুষ্ণচন্দ্রের যদি কোন অবতার হয়, অথবা শ্রীরাধিকার যদি কোন অবতার হয়, তাহা হইলেই সেই প্রেম অনুভূত হইতে পারে।"

—বৃ° ভা°, ২া৫া২৩৩-৩৪

বৃহৎ বৈষ্ণবতোষণীর মন্দলাচরণে সনাতন গোস্বামী লিথিয়াছেন—
বন্দে শ্রীকৃষ্ণচৈততাং ভগবন্তং কুপার্ণবম্।
প্রেমভক্তি-বিতানার্থং গৌড়েববততার যঃ॥

এ স্থলেও প্রেমন্ডক্তি প্রচার করাই শ্রীচৈতন্য-অবতারের মুখ্য উদ্দেশ্য বলিয়া কথিত হইয়াছে।

সনাতন গোস্বামী ঐতিচতক্তকে পুনঃ পুনঃ ভগবান বলিয়াছেন; কিন্তু বৃহদ্যাগবভায়তের টীকার শেষে 'ভগবান' শব্দের নিম্নলিখিত ব্যাখ্যা করিয়াছেন—"তত্ত্ব ভগবানিতি—

> আয়তিং নিয়তিকৈব ভূতানাক গতাগতিম। বেক্তি বিভামবিভাক স বাচো ভগবানিতি॥

200

## শ্রীচৈতক্যচরিতের উপাদান

—ইতাজিপ্রায়েণেতিদিক্।" এই হিসাবে ত যে কোন জানী ব্যক্তিকে জগবান্ বলা যায়। আমি কাঞ্চার বর্ত্তমান শঙ্করাচার্য্যকে জিজ্ঞাসা করিয়াছিলাম যে তাঁহার সম্প্রদায়ে 'ভগবান্ শঙ্করাচার্য্য' বাক্যে ভগবান্ শঙ্কে কি বুঝায়। তিনি ঠিক এই গ্রোকটি আর্ত্তি করিয়াছিলেন। গৌড়ীয় বৈফ্ ব শাজে 'ভগবান্' শঙ্কের এইরূপ ব্যাখ্যা আর কোথাও দেওয়া হয় নাই।

## ৩। গ্রীরূপ গোপামী

শ্রীকৃষ্ণটৈতত্ত-প্রবর্ত্তিত ধর্ম্মসম্প্রদায়ে যে সাধন-ভঙ্কন-রাতি অধিকাংশ বাক্তি অনুসরণ করেন তাহার প্রবর্ত্তক হইতেছেন শ্রীরূপ গোস্বামী। শ্রীল নরোত্তম ঠাকুর মহাশয় "শ্রীশ্রীপ্রার্থনা"য় ২৯, ৪১, ৪২, ৪০ পদে শ্রীরূপের আনুগতা করিয়া শ্রীরাধাক্ষের ভঙ্কন করিবার প্রার্থনা করিয়াছেন। ৪১ সংখ্যক প্রার্থনাট তুলিয়া দিতেছি—

শুনিয়াছি সাধুমুখে বলে সর্বজন।
শ্রীরূপ কুপায় মিলে যুগল চরণ॥
হাহা প্রভু সনাতন গৌর-পরিবার।
সবে মিলি বাঞ্চা পূর্ণ করহ আমার॥
শ্রীরূপের কুপা যেন আমা প্রতি হয়।
সে পদ আশ্রয় যার সেই মহাশয়॥
প্রভু লোকনাথ কবে সঙ্গে লয়ে যাবে।
শ্রীরূপের পাদপল্যে মোরে সমর্পিবে॥
হেন কি হইবে মোর নর্ম্ম-স্থীগণে।
অনুগত নরোত্তমে করিবে শাসনে॥

শ্রীরূপ নিজে "ভক্তিরসায়তসিন্ধু"তে বলিয়াঙেন যে শ্রীচৈতগুই ভাঁহার জদয়ে প্রেরণা দিয়াছেন—

> হৃদি যক্ত প্রেরণয়া প্রবর্ত্তিভোহহং বরাকরূপোহপি। তক্ত হরেঃ পদক্ষলং বন্দে চৈতক্তদেবক্ত॥



# রুদাবনের পাঁচ গোস্বামী ও ঐতিচতর জীরাপের রচিত গ্রন্থাদি

শ্রীজীব গোস্বামী লগুতোষণীর শেষে শ্রীরূপের রচিত গ্রন্থাদির নিম্ন-লিখিত বিবরণ দিয়াছেন—

তয়োরপুজন্দেশ হলোহন্টাদশকং তথা।
শ্রীমন্থজনসন্দেশং হলোহন্টাদশকং তথা।
স্তবস্থোৎকলিকাবলী গোনিন্দবিক্ষদাবলী।
প্রেমেন্দুসাগরাভশ্চ বহবঃ ত্প্রতিষ্ঠিতাঃ।
বিদ্যাললিতাগ্রাখ্য-মাধবং নাটক্ষয়ম্।
ভানিকা দানকেলাখ্যা রসায়তযুগং পুনঃ।
মথুরামহিমা প্রভাবলী নাটকচন্দ্রিকা।
সংক্ষিপ্ত-শ্রীভাগবতায়তমেতে চ সংগ্রহাঃ।

এই তালিকায় লিখিত উৎকলিকাবল্লা, গোবিন্দবিরুদাবলা ও প্রেমেন্দুসাগর স্তবমালার অন্তর্ভুক্ত হইয়া প্রকাশিত হইয়াছে। লঘুতোষণী
১৫০৪ শকে বা ১৫৮২ ৩ খুটোন্দে রচিত হয়। ঐ সময়ের মধ্যে শ্রীরূপ
(১) হংসদৃত, (২) উদ্ধবসন্দেশ, (৩) স্তবমালার অন্তর্ভুক্ত ছন্দোহন্টাদশকম,
উৎকলিকাবল্লা, গোবিন্দবিরুদাবলা ও প্রেমেন্দু-সাগরাদি স্তব, (٠) বিদম্মনাধব, (৫) ললিতমাধব, (৬) দানকেলিকোম্দা, (৭) ভক্তিরসামৃতসিন্দু,
(৮) উজ্জ্বলনীলমণি, (৯) মথুরামহিমা, (১০) প্রভাবলা, (১১) নাটকচন্দ্রিকা,
(১২) সংক্ষিপ্ত ভাগবতামৃত রচনা করেন। কিন্তু "ভক্তিরহ্লাকরে" আছে—

শ্রীরূপ গোস্বামী গ্রন্থ ষোড়শ করিল। লীলাসহ সিন্ধান্তের সীমা প্রকাশিল॥

এই উক্তির পোষকতা করিবার জত্য 'তথাহি' বলিয়া নিম্নলিখিত শ্লোকগুলি নরহরি চক্রবর্তী উদ্ধার করিয়াছেন—

> তথ্যোরত্বস্থেষ্ট্যু কাব্যং শ্রীহংসদূতকম্। শ্রীমত্ব্যবসন্দেশঃ কৃষ্ণজন্মতিথেবিধিঃ॥

380

#### শ্রীচৈতক্সচরিতের উপাদান

বৃহল্পত্যাখ্যাতা শ্রীগণোদ্দেশদীপিকা।
শ্রীকৃষ্ণস্থ প্রিয়াণাঞ্চ স্তব্যালা মনোহরা॥
বিদশ্বমাধবঃ খ্যাতস্তথা ললিতমাধবঃ।
দানলীলাকৌমূদী চ তথা ভক্তিরসায়তম্॥
উজ্জ্বলাঝ্যো নীলমণিঃ প্রযুক্তাখ্যাতচক্রিকা।
মথুরামহিমা পছাবলী নাটকচক্রিকা।
সংক্রিপ্রশ্রীভাগবতায়তমেতে চ সংগ্রহাঃ॥

এই তালিতায় "কৃষ্ণজন্মতিথি-বিধি" "বৃহৎ ও লঘু গণোদ্দেশদীপিকা" এবং "প্রযুক্তাখাতেচক্রিকা" এই চারখানি গ্রন্থের নাম নৃতন সন্নিবিষ্ট হইয়াছে। আর উৎকলিকাবলী প্রভৃতি স্তবের পরিবর্তে স্তবমালার নাম লেখা হইয়াছে। শ্রীরূপ গোস্বামা কতকগুলি স্তব ও অফক রচনা করিয়াছিলেন, কিন্তু সেগুলি স্তবমালা নাম দিয়াকোন একখানি গ্রন্থে সন্নিবিষ্ট করেন নাই। ঐগুলি সংগ্রহ করিয়া শ্রীজীব উহার নাম স্তবমালা দেন; যথা—

শ্রীমদীশ্বরূপেণ রসামৃতকৃতা কৃতা। স্তবমালাপুজীবেন জীবেন সমগৃহত॥

'তথাহি' বলিয়া "ভক্তিরত্রাকরে" উদ্ধৃত ঘিতীয় তালিকাটি কাহার রচিত গ্ নরহরি চক্রবর্ত্তী লঘুতোষণীর তালিকা উদ্ধৃত করার পর লিখিতেছেন—

এই ত কহিল গোস্বামীর গ্রন্থগণ।
পূন: বিবরিয়া কহি করহ শ্রবণ॥
শ্রীজীবের শিশু কুষ্ণদাস অধিকারী।
তেঁহে। নিজ গ্রন্থে ইহা কহিল বিস্তারি॥

তাহা হইলে বুঝা যাইতেছে যে দ্বিতীয় তালিকাটি প্রীজীবের শিশ্ব কৃষণাস অধিকারার রচনা। চারখানি নৃতন গ্রন্থ প্রীজীব-প্রদন্ত তালিকায় যোগ করার ছই প্রকার অর্থ হইতে পারে,—হয় প্রীরূপ ঐ চারখানি বই ১৫৮২-৮০ গুন্টাব্দের পর, অর্থাৎ লযুতোযণী-রচনার পর লিথিয়াছিলেন; না হয় অত্য কেহ চারখানি গ্রন্থ রচনা করিয়া প্রীরূপের



নামে চালাইয়া দিয়াছেন। আমার মনে হয় প্রথমোক্ত অনুমানই সঞ্জত, কেন-মা প্রীক্ষাবের শিয়্যের তালিকায় প্রাক্ষিপ্ত গ্রন্থ স্থান পাওয়ার সম্ভাবনা কম। কিন্তু এই মত মানিলে শ্রক্ষাগণোদ্দেশ-দীপিকা লইয়া কিছু গোলযোগ উপস্থিত হয়। "মাধুকরী" পত্রিকার ১৩২৯ ফাল্পন হইতে ১৩৩০ প্রাবণ সংখ্যায় ঐ গ্রন্থ প্রকাশিত হইয়াছিল। উহার শেষ শ্লোক হইতে জানা যায় যে ঐ গ্রন্থ ১৪৭২ শকে বা ১৫৫০-৫১ প্রক্টাব্দে লিখিত হয়; ৰথা—

শাকে দৃগখণজে নভসি
নভোমণিদিনে যঠ্যাম্।
ব্রহ্মপতিসন্মনি শ্রীমতী রাধাকৃষ্ণগণোদ্দেশদীপিকাদীপি । ২৫৩ শ্লোক

১৫ ০ গৃষ্টাব্দে গ্রন্থথানি লিখিত হইলে ১ ৮২ গৃষ্টাব্দে সঞ্চলিত তালিকায় প্রীজীব উহার নাম উল্লেখ করিলেন না কেন ? এই গ্রন্থে ২৪৬ সংখাক প্রোকের পর 'সম্মোহনতন্ত্র' হইতে রাধিকার স্থাদের নাম উদ্ধৃত হইয়াছে। শ্রীত্রপ অপর কোন গ্রন্থে কোন তন্ত্রের মত উল্লেখ করেন নাই। শ্রীজীবের প্রদত্ত তালিকার ১২খানি গ্রন্থের মধ্যে কোথাও শ্রীত্রপ স্পাইতঃ নিত্যানন্দের বন্দনা করেন নাই। শ্রীকৃষ্ণগণোদ্দেশ-দীপিকার মঙ্গলাচরণে আছে—

বন্দে গুরুপদঘন্দং ভক্তবৃন্দসমন্বিতম্। শ্রীচৈতন্মপ্রভুং বন্দে নিত্যানন্দসহোদিতম্॥

রাধাবিনোদ দাস বাবাজী-কর্তৃক সম্পাদিত "নিত্যানন্দদায়িনা পত্রিকা"র ১২৭৯ সালের চতুর্থ ভাগে ও ১২৮০ সালের প্রথম ভাগে "শ্রীমজ্রপ গোস্বামীকৃত শ্রীশ্রীকৃষ্ণচৈত্য সহস্র নাম" গ্রন্থ প্রকাশিত হইয়াছিল। উহাতে লিখিত আছে—

"নমঃ অক্স ঐতিতকাদিবাসহস্রনামস্তোত্রমন্তক ঐ রূপমঞ্জরী ঋষিরকুইপ্ ছন্দঃ। বিষ্ণুপ্রিয়া শক্তির্মহাপ্রভূদেবতা মনোমোহনকামবীজন্। ঐতিবকুণ্ঠ-নাথকীলকং ঐতিচতকায় নমঃ ইতি মন্তম্। ঐক্সাচৈতকাপ্রসাদেভা-

## শ্রীচৈতন্মচরিতের উপাদান

শৈতভানামসহস্রকন্ পাঠমহং করিন্তো ইতি সংকল্প:।" এই বইয়ের নাম উলিখিত দুইটি তালিকায় না থাকায় এবং উদ্ধৃত অংশটি থাকায় ইহা শ্রীরূপ গোস্বামীর রচনা বলিয়া স্বীকার করিতে পারিলাম না। ঐ পত্রিকার ১৬/০ পৃষ্ঠায় "শ্রীরূপ-গোস্বামি-বিনিশ্মিতং শ্রীশ্রীগদাধর পত্তিতাইকন্" প্রকাশিত ইইয়াছিল। ঐ অইকে ১১টি শ্লোক আছে ও একটি অইক-মাহাত্মাসূচক শ্লোক আছে। শ্রীরূপ সংখ্যাগণনায় এরূপ ভূল করিবেন মনে হয় না।

উক্ত পত্রিকার ১২৮০ সালের দিতীয় ও তৃতীয় ভাগে শ্রীমজপ-গোস্বামিবিরচিতং "গ্রীহরি নামাউকন্", "শ্রীশ্রীযুগলকিশোর ধ্যানন্", "শ্রীমদ্বলাবনেশ্বরী রাধিকার আনন্দচক্রিকাণ্য সটাক দশনাম স্তোত্রন্", "শ্রীশ্রীমতী রাধিকার প্রেমস্থাসত্রাখ্য সটাক অফোত্তর-শতনাম", "শ্রীমন্বদ্বীপাইকন্" ও "শ্রীশ্রীমদ্বলাবনধামাইকন্" ছাপা হইয়াছিল। এগুলি শ্রীরূপের রচিত কি না বলা কঠিন।

শ্রীটেডন্সচরিতায়তের মতে শ্রীরূপ শ্রীটেতন্সের সহিত তিন বার মিলিত হইয়াছিলেন। প্রথম রামকেলি গ্রামে সামান্স কিছুক্ষণের জন্ম (২।১।১৭২-২১২), তারপর প্রয়াগে দশ দিন (২।১৯।১২২) এবং নীলাচলে দশ মাস (৩।৪।২৫)। তিনি প্রতিবারই শ্রীটেতন্সের যতিবেশ দর্শন করিয়াছেন।

শ্রীরূপ শ্রীচৈতত্যের জীবনী-সম্বন্ধে বিস্তৃত কোন বিবরণ লেখেন
নাই। তিনি কেবলমাত্র তিনটি শ্রীচৈত্যাইক লিখিয়া গিয়াছেন। শ্রীরূপ
নবদীপ-লালা দর্শন করেন নাই; সেই জন্ম সেই লালার বিষয়ে বিশেষ কিছু
লেখেন নাই। তিনি শ্রীচৈতত্যের পার্যদর্গণের মধ্যে প্রথমাইকের তৃতীয়
গ্রোকে স্বরূপ, অছৈত, শ্রীবাস, পরমানন্দ পুরী ও গঞ্জপতি প্রতাপরূদ্রের, এবং তৃতীয়াইকের দ্বিতীয় গ্রোকে স্থমবুদ্ধি সার্বভৌমের । শ্রীপাদ কৃষ্ণদাস কবিরাজ লিখিয়াছেন যে রামকেলি

১ জীৱপ-কৃত শীচৈতভাষ্টক, ৩া২

285

ন বৰ্ণিভুমীশতে ওজতভাৰতার্থিতা। ভবস্তম্কর্ভয়ো ন কলু সাক্তিমাদলা:।



## বুন্দাবনের পাঁচ গোস্বামী ও প্রীচৈতন্ত

গ্রামে যথন রূপ-সনাতন শ্রীতৈতত্তের চরণ-দর্শনের জত্ত উপস্থিত হইলেন, তথন প্রথমে নিত্যানন্দ ও হরিদাসের সহিত তাঁহারা দেখা করিলেন—

> অর্দ্ধরাত্রে ছই ভাই আইলা প্রাভু-স্থানে। প্রথমে মিলিয়া নিত্যানন্দ হরিদাস সনে॥ তারা ছইজন জানাইলা প্রাভুর গোচরে। রূপ-সাকর মল্লিক আইলা তোমা দেখিবারে॥

- ¿60 60, 213139:-8

তারপর নীলাচলেও শ্রীরূপের সহিত নিত্যানন্দের সাক্ষাৎকার হইয়াছিল; যথা—

> অধৈত নিত্যানন্দাদি সব ভক্তগণ। কুপা করি রূপে সভে কৈলা আলিম্বন॥ ৩০১১৫২

গৌড়ীয় বৈষ্ণবধর্মে শ্রীচৈত্য "মহাপ্রভু" এবং অদৈত ও নিত্যানন্দ "প্রভু" বলিয়া পূজিত হয়েন। শর্মিক নিত্যানন্দের কুপা পাইয়াছিলেন বলিয়া কুষ্ণদাস কবিরাজ লিখিয়াছেন। অর্থচ শ্রীরূপ অছৈতের নাম উল্লেখ করিলেন কিন্তু নিত্যানন্দের নাম কেন করিলেন না অনুসন্ধান করা কর্ত্ব্য। পূর্বের দেখাইয়াছি যে শ্রীরূপের একান্ত অনুগত বন্ধু রঘুনাথদাসও নিত্যানন্দের নাম কোথাও করেন নাই। এই বিষয়ে অনুসন্ধান করিবার সময় স্মরণ রাখিতে হইবে যে সনাতন গোস্বামী বৃহৎ বৈষ্ণবতোষণীর মঞ্চলাচরণে লিখিয়াছেন—

নমামি শ্রীমদদৈতাচার্যাং শ্রীবাসপণ্ডিতম্। নিত্যানন্দাবধৃতক শ্রীগদাধরপণ্ডিতম্।

# প্রীটেডন্ড লীলাসম্বন্ধে এরপ

শ্রীটেতত্তার যতিবেশ-সম্বন্ধে শ্রীরূপ একটি মূল্যবান্ সংবাদ দিয়াছেন—
"কটিলসংকরম্বালন্ধার।" ব তাঁহার কটিদেশে করম্বরূপ অলম্বার শোভা

১ ধৌরগণোজেশ-পাশিকায় সক্রণ-সামোদরের মত বলিয়া উলিখিত ১২-১৩

२ शिरेष्ठकाष्ट्रेक, शा

>88

#### শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

পাইত। বলদেব বিছাভূষণ করস্ক শব্দের টাকা করিয়াছেন—"নারিকেল-ফলান্তিরচিত্মস্থাত্রম্।"

শ্রীচৈতত্যের ভজনপ্রণালী-সম্বন্ধে শ্রীরূপ লিখিয়াছেন—
হরেকৃষ্ণেত্যুকৈঃক্ষুরিতরসনো নামগণনাকৃতগ্রন্থিশ্রেণী স্কুভগকটিস্ত্রোজ্ঞলকরঃ।
বিশালাকো দীর্ঘার্গলখেলাঞ্চিতভূজঃ
স চৈতন্তঃ কিং মে পুনরপি দুশোর্যান্ততি পদম্॥ '

"উচ্চৈঃম্বরে হরেক্ষ্ণ নাম উচ্চারণ করিতে ঘাঁহার রসনা নৃত্য করিতে থাকে ও উচ্চারিত নামের গণনার নিমিত্ত গ্রন্থীকৃত কটিসূত্রে ঘাঁহার ফুন্দর বামহন্ত স্থােভিত, যিনি বিশাল-নয়ন ও আজামুলম্বিত-বাহু, সেই চৈতন্তাদেব কি পুনর্বার আমার নয়নপথের পথিক হইবেন ?" শ্রিক্ষণ-নাম গ্রহণ করিতে করিতে শ্রীমন্মহাপ্রভুর ভাব-বিকার উপস্থিত হইত। কিন্তু যখন তিনি "হরেক্ষ্ণ" মহামন্ত্র জপ করিতেন তখন রীতিমত গণনা করিতেন ভুইজন প্রত্যক্ষদশীর উক্তি হইতে ইহা গ্রমাণিত হইতেছে। ভাবোন্মন্ত শ্রীচৈতন্তের পক্ষে এইরূপ গণনা করিতে পারা কম সংযমের পরিচায়ক নহে।

শীরূপ গোস্বামী স্বচক্ষে শীচৈতত্যের যে সব লীলা দর্শন করিয়াছিলেন, ভাহাদের মধ্যে ক্যেকটি বিশেষ লীলা তাঁহার স্মৃতিপটে গভীরভাবে অঙ্কিত হইয়া গিয়াছিল। তাই তিনি শ্রীচৈতত্যের স্তব করিতে যাইয়া প্রভুর সমুদ্রতীরের উপবনসমূহ-দর্শনে রন্দাবন-স্মরণ, রথাগ্রে ভাবাবেশে নর্তুন, কৃষ্ণ নাম করিতে করিতে অনবরত অশ্রুপতন প্রভৃতি লীলা বিশেষভাবে স্মরণ করিয়াছেন। শ্রীরূপের বর্ণিত লালাসূত্র অবলম্বন করিয়া কৃষ্ণদাস করিরাজ মহাশ্য শ্রীচৈতগুচরিতায়তে মহাপ্রভুর অন্তঃলালার অপূর্বে আলেথ্য অঙ্কন করিয়াছেন।

শ্রীচৈতত্যের প্রচারিত অপূর্বব প্রেমধর্ম্ম এক দিকে যেমন শতসহস্র ধর্মপিপাত্ ব্যক্তিকে আশা ও সাত্তনার বাণী শুনাইয়াছিল অঞ দিকে

>80



## বন্দাবনের পাঁচ গোস্বামী ও প্রীচৈতভা

তাঁহার বিরুদ্ধবাদীদের সংখ্যাও নিতান্ত কম ছিল না। বাঁহারা শ্রীচৈতন্তকে স্বয়ং ভগবান্ বলিয়া আরাধনা করেন নাই, শ্রীরূপ তাঁহাদিগকে অস্তর-ভাবান্থিত বলিয়াছেন। এইরূপ আস্তরী প্রকৃতির লোকদের বিপক্ষতা ভক্তদের মনকে বিচলিত করিতে পারে নাই। শ্রীরূপ স্পান্ট বলিয়াছেন যে শরণাগত ব্যক্তিগণ শ্রীচৈতন্তকেই ত্রিজগতে "অধিদৈব" বা পরমদেবতারূপে উপাসনা করেন।

শ্রীরূপ গোস্বামী শ্রীচৈতগুকে শিবাদি দেবগণের "সদোপাশ্রু", উপনিযদ্সমূহের লক্ষ্যস্থান, মুনিগণের সর্বস্ব বলিয়া স্তব করিয়াছেন। ইহা সত্ত্বেও যদি কেহ বলেন যে শ্রীচৈতগু জীবদ্দশায় ভগবান্ বলিয়া উপাসিত হয়েন নাই, তাহা হইলে তাঁহাকে কুপার্হ বলা যাইতে পারে।

শীরূপ গোস্বামী প্রেমধর্ম্মের প্রাচীনত্ব প্রতিষ্ঠা করিবার জন্ম "লবু ভাগবতামৃত" রচনা ও "পত্যাবলী" সংগ্রহ করিয়াছেন। কিন্তু তিনি জ্বানিতেন যে শ্রীচৈতন্ম যে মহাভাব প্রকাশ করিয়াছেন, তাহা জগতের ইতিহাসে অতুলনীয়। শ্রীচৈতন্ম নিজে আস্বাদন করিয়া যে প্রেমভাব প্রচার করিলেন, তাহার আভাস পূর্ববর্গে পাওয়া গেলেও, তাহার বিকাশ কথনও হয় নাই। শ্রীচৈতন্মের প্রবর্ত্তিত ধর্ম্ম এই জন্মই একেবারে মৌলিক। শ্রীরূপ বলিতেছেন—

ন যৎ কথমপি শ্রুতাবুপনিষন্তিরপ্যাহিতং স্বয়ঞ্চ বিবৃতং ন যদ গুরুতরাবতারান্তরে। ক্লিপল্লসি রসাম্বুধে তদিহ ভক্তিরত্নং ক্লিতে। শচীস্তুত ময়ি প্রভো কুরু মুকুন্দ মন্দে কুপাম্॥

অর্থাৎ হে রসরত্নাকর! যাহা বেদে নাই. উপনিষদে নাই এবং অন্যাক্ত অবতারে প্রকাশিত হয় নাই, সেই ভক্তিরত্ব তুমি ধরাতলে বিতরণ করিতেছ। অতএব হে শচীনন্দন! এই অধমজনে কুপা কর।

> অনারাধ্য ঐত্যা চিরমত্রভাবপ্রণয়িনাং প্রপল্লানাং দৈবীং প্রকৃতিমধিদৈবং তিমগতি।

> > দিতীয় অষ্টক, ার্থ লোক

385

## শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

## ৪। প্রীজীব গোস্বামা

গৌড়ীয় বৈষ্ণবধর্ম্মের রসশাস্ত্র যেমন শ্রীরূপ গোন্ধামীর স্বজনী প্রতিভার নিদর্শন, প্রীচৈতভ্য-সম্প্রদায়ের দার্শনিক মতবাদ তেমনি প্রীঞ্জীব গোস্বামীর বাক্তিছ-দারা অনুপ্রাণিত। বাঙ্গালা দেশে ব্রজমগুলের সিদ্ধান্ত-প্রচারের প্রধান উদেয়াকা শ্রীক্ষীব গোস্বামী; শ্রীনিবাস আচার্য্য, নরোত্তম ঠাকুর মহাশয় ও শ্রামানন্দ শ্রীজীবের নিকট শাস্ত্র অধায়ন করেন ও তাঁহারই আদেশে গোস্বামি-গ্রন্থসমূহ বাঙ্গালা দেশে আনিয়া তাহাদের পঠন-পাঠন প্রচলন করেন। যোড়শ শতাব্দার শেষে ও সপ্তদশ শতাব্দার প্রথম ভাগে শ্রীচৈতত্ত্বের অনুগত সম্প্রদায়ের অধিতীয় নেতা ছিলেন শ্রীন্ধীব। ভক্তি-রত্নাকরের শেষে শ্রীজীবের চারখানি পত্র উদ্ধৃত হইয়াছে। ঐ পত্র ক্ষুখানি হইতে জানা যায় যে বাঙ্গালার বৈঞ্বগণের মনে যখন যে সন্দেহ উঠিয়াছে, প্রীক্ষীব বুন্দাবন হইতে তাহার সমাধান করিয়া দিয়াছেন। প্রত্যেক পত্রে নিজের গ্রন্থ-রচনার বা গ্রন্থ-সংশোধনের কথা আছে—এইরূপ উল্লেখ তাঁহার জ্ঞানানুরাগের প্রকৃষ্ট পরিচয়। ষোড়শ শতাব্দীর ভারতীয় পণ্ডিতের চিঠিপত্র আর কোথাও সংগৃহীত আছে বলিয়া আমার জানা নাই; সে হিসাবেও এই চিঠিওলির বিশেষ ঐতিহাসিক মূল্য আছে। এক দিকে সাধন-রাজ্যের নিগৃঢ় তত্ত্বসমূহের আলোচনায় নিযুক্ত জ্ঞানগম্ভীর ভক্তের, অপর দিকে শ্রীনিবাসের ও বীর হাম্বীরের পুতাদির কুশল সংবাদ পাইবার জভ্য ব্যাকুল স্নেহশীল গুরুর চরিত্র উদঘাটন করিয়াছে বলিয়া এই পত্র কয়খানি আমাদের নিকট পরম আদরের সামগ্রী।

মুরারি গুপ্তের গ্রন্থে, কবিকর্ণপূরের ঐতিচতগাচন্দ্রোদয় নাটকে এবং শ্রীচৈতগাচরিতায়ত মহাকাবো শ্রীজীবের নাম নাই। বৃন্দাবনদাস, লোচন এবং জয়ানন্দও শ্রীজীবের নামোল্লেখ করেন নাই। কিন্তু কবিকর্ণপূরের গোরগণোদ্দেশ-দীপিকায় শ্রীজীব গোস্বামীকে "থেতমঞ্জরী"-তত্ত্বপ্রেপির করিয়া বলা হইয়াছে—

"সুশীলঃ পণ্ডিতঃ শ্রীঞ্জীবঃ শ্রীবল্লভাত্মজঃ।" > > গৌরগণোন্দেশ-দীলকা, ২০০



# বৃন্দাবনের পাঁচ গোস্বামী ও ঐতিভুক্ত

ইহা হইতে বুঝা যায় যে ১৫৭৬ খুফান্দের পূর্বেই শ্রীক্ষাব পাণ্ডিত্যের জন্ম খ্যাতি লাভ করিয়াছিলেন।

বরাহনগর গ্রন্থ-মন্দিরের ৪০০ সংখ্যক পুঁথিখানি শ্রীজীব গোস্বামীর মাধব-মহোৎসব মহাকাবা। এই অপ্রকাশিত মহাকাবোর পুশিকা হইতে জানা যায় যে ইহা ১৫৫৫ খুফ্টাব্দে রচিত; যথা—

> সপ্তসপ্তমনো শাকে, কশ্চিষ্দাবনে বসন্। স্বমনোরথবক্তব্যং কাব্যমেতদপূর্যুৎ॥

শ্রীক্ষীব গোস্বামীর অন্ত কোন তারিখযুক্ত গ্রন্থে ইহার পূর্বের তারিখ নাই। তাঁহার গোপালচপ্পূ উত্তরখণ্ড ১৬৪৯ সংবং, ১৫১৪ শকে বা ১৫৯২ খুন্টাব্দে বৈশাখ নাদে সমাপ্ত হয়। ইহা হইতে জানা যাইতেছে যে, অন্ততঃ ১৫৫৫ হইতে ১৫৯২ খুন্টাব্দ পর্যান্ত ৩৭ বংসর কাল ধরিয়া তিনি ক্রমাণত গ্রন্থাদি রচনা করিয়াছেন। শ্রীক্ষীব একবার কোন গ্রন্থ লিখিয়াই নিরন্ত হইতেন না; পুনঃ পুনঃ তাহার সংশোধন ও পরিবর্ত্তন করিতেন। উল্লিখিত পত্রের প্রথমখানিতে তিনি শ্রীনিবাস আচার্যাকে লিখিয়াছিলেন — শ্রীরসায়ত-সিক্ট্-শ্রীমাধ্যমহোৎস্বোত্রচম্পূহরিনামাম্ভানাং শোধনানি কিকিদ্বশিক্তানি বর্ত্ততে।" মাধ্য-মহোৎস্ব ও উত্তরচম্পূর সমাপ্তির ব্যবধানকাল ৩৭ বংসর। এত দীর্ঘ ব্যবধানের পরপ্ত তিনি "মাধ্য-মহোৎস্ব" সংশোধনে প্রন্ত হইয়াছিলেন।

তিনি শ্রীশামহাপ্রভুর শ্রীচরণ দর্শন করিয়াছিলেন বলিয়া নরহরি চক্রবর্তী একটি প্রবাদের উল্লেখ করিয়াছেন। নরহরি লিখিয়াছেন যে শ্রীচৈত্ত যথন বুন্দাবনে যাইবার পথে রামকেলি গ্রামে আগমন করেন তখন—

সনাতন রূপ শ্রীবন্নভ তিন ভাই।

যে স্থাথ ভাসিল তা কহিতে সাধ্য নাই।

কেশব ছত্রীন আদি যত বিজ্ঞগণ।

হইল কৃতার্থ পাই প্রভুর দর্শন।

শ্রীজীবাদি সপ্লোপনে প্রভুরে দেখিল।

অতি প্রাচীনের মুখে এ সব শুনিল। ভ' র', পৃত ৪৫

э द्रशालालकल् . उत्रवहल्ल् . ०१ शृहन, २०२, २००



## ১৪৮ এীতৈভয়চরিতের উপাদান

শ্রীরূপ ও সনাতনকে শ্রীচৈতত যথন রামকেলিতে কুপা করেন, তথন বল্লভ বা অনুপম এবং তাঁহার পুত্র শ্রীক্ষাব উপস্থিত ছিলেন—এ কথা নরহরি চক্রবর্তীর পূর্ববর্ত্তা শ্রীভৈতত্তের কোন চরিতাখ্যায়ক লেখেন নাই।

শ্রীপাদ কৃষ্ণদাস কবিরাজ রূপ-সনাতনের প্রসঙ্গে শ্রীজীব-সম্বন্ধে মাত্র ছই স্থানে লিখিয়াছেন; যখা—

তার ভাতুপ্তা নাম শ্রীজাব গোসাঞি।

যত ভক্তিগ্রন্থ কৈল তার অন্ত নাই ॥

শ্রীভাগবত-সন্দর্ভ নাম গ্রন্থ বিস্তার।
ভক্তিসিন্ধান্তের তাতে দেখাইয়াছেন পার॥
গোপালচম্পু নামে গ্রন্থ মহাশূর।
নিতালীলা-স্থাপন যাহে ব্রজ্বসপূর॥

—रेंक° क°, शांश्वन-७३

অপর স্থানে নিত্যানন্দের আজ্ঞা লইয়া শ্রীক্ষীবের রন্দাবনে আগমন-কাহিনী বর্ণিত হইয়াছে ( হৈ° চ°, অগ্না২১৮-২৬ )।

শ্রীচৈত্য সন্ন্যাসের পঞ্চন বর্ষে ১৪৩৫ শকে বা ১৫১৩ খ্রফীব্দে রামকেলি প্রামে আগমন করেন। সেই সময়ে যদি শ্রীক্ষীবের বয়স্ পাঁচ বৎসরও হয়, তাহা হইলে ১৫৩৩ খ্রফীব্দে শ্রীচৈতন্তের তিরোধানের সময় তাঁহার বয়স্ হয় পাঁচিশ বৎসর। "ভক্তিরত্নাকর" বলেন যে শ্রীক্ষীব অল্ল বয়সেই "শ্রীকৃষ্ণচৈত্য বলি হইলা মূর্চ্ছিত" (পৃ° ৪৯), তাহা হইলে তিনি যে শ্রীমন্মহাপ্রভুকে দর্শন করিতে একবারও নীলাচলে যাইবেন না, ইহা বিশ্বায়ের বিষয়।

প্রথম যৌবনেই শ্রীক্রীবের মনে হয়ত ভক্তিভাব সঞ্চারিত হয়
নাই। রূপ, সনাতন ও বল্লভের অভান্ত ভাই শ্রীচৈতন্তের চরণ আশ্রয়
করেন নাই; সেইরূপ শ্রীক্রাবিও হয়ত তরুণ বয়সে শুধু বিভাচর্চ্চাতেই
মগ্র ছিলেন; এবং শ্রীচৈতন্তের তিরোভাবের পরে নিত্যানন্দের রূপা
পাইয়া বৃন্দাবনে গমন করেন। ১৫১৪ প্রফীন্দের শেষভাগে শ্রীচৈতন্ত
বৃন্দাবনে গমন করেন ও ১৫১৫ প্রফীন্দের প্রথমে প্রয়াগে রূপ



ও বল্লভের সহিত তাঁহার দেখা হয়। তংগরে রূপ ও বল্লভ বৃদ্দাবন দর্শন করিয়া গোড়ে ফিরিয়া আসেন ও তাহার অল্লদিন পরেই বল্লভ পরলোকে গমন করেন (চৈ চ, এ)। বল্লভের বৃদ্দাবন-যাত্রার পূর্বের অর্থাৎ ১৫১৫ থুফান্দের পূর্বের দ্বীজীবের জন্মগ্রহণ স্বীকার করিতেই হইবে। সেই জন্ম নিতান্ত শৈশবকালে শ্রীজীবের পক্ষে শ্রীচৈতন্মকে রামকেলিতে দর্শন করা অসম্ভব নহে। অতএব অনুমান হয় ১৫ ৮ খুফান্দের কাছাকাছি কোন সময়ে শ্রীজীব জন্মগ্রহণ করেন।

মুরারিলাল অধিকারী মহাশয় "বৈঞ্চব দিগ্দর্শনী" প্রন্থে ১৪৩৯ শকে বা ১৫১৭ খৃফীব্দে শ্রীক্ষীবের আবির্ভাব হইয়াছিল লিখিয়াছেন। কিন্তু শ্রীচৈতন্মচরিতামূত-পাঠে মনে হয় না বে ১৫১৫ খৃফীব্দে শ্রীচৈতন্মের সহিত প্রয়াগে সাক্ষাৎকারের পর বল্লভ গৃহে আসিয়া পুজ্রোৎপাদন করিয়াছিলেন। উক্ত গ্রন্থে আছে—

এই মতে ছই ভাই গৌড়দেশে আইলা।
গৌড়ে আসি অনুপমের গঙ্গাপ্রাপ্তি হইলা॥
রূপ গোসাঞি প্রভূপাশ করিলা গমন।
প্রভূকে দেখিতে তাঁর উৎক্ষিত মন॥
অনুপম লাগি তাঁর কিছু বিলম্ব হৈল। তৈ চ০, আসাংহ-১৪

পণ্ডিতবর রাজেন্দ্রনাথ ঘোষ মহাশয় "অছৈতসিদ্ধি"র ভূমিকায় লিখিয়াছেন যে "ভক্তিরত্নাকরের মতে মহাপ্রভুর রামকেলি গমনের সময় অর্থাৎ ১৫১৪ খুফ্টাব্দের ২।০ বৎসর পূর্বের ইহার জন্ম হয়।" মহাপ্রভু ১৫১৪ খুফ্টাব্দে নহে, ১৫১০ খুফ্টাব্দে রামকেলিতে গমন করেন এবং ভক্তিরত্বাকরে এমন কোন কথা নাই যাহাতে মনে করা যাইতে পারে যে প্রীঞ্জীবের বয়স্ তখন মাত্র ২।০ বৎসর। বরং "সঙ্গোপনে দেখার" সম্পতি বাহির করার জন্ম অন্ততঃ তাহার বয়স্ পাঁচ বৎসর ধরা উচিত।

রাজেন্দ্রনাথ ঘোষ-সম্পাধিত "অবৈতসিজি"র ভূমিকা, পৃ" <<</li>



### ত্রীচৈতনাচরিতের উপাদান

# শ্রীজীব ও মধুসূদন সরস্বতী

ঘোষ মহাশয় উক্ত ভূমিকায় আরও লিখিয়াছেন "১২।১৩ বংসরের বয়োজার্চ জ্রীজীব মধুসূদনের (অঘৈতসিদ্ধির গ্রন্থকার মধুসূদন সরস্বতীর) ৩০ বংসর বয়সে অর্থাৎ ১৫৫৫ খৃষ্টান্দে মধুসূদনের নিকট অঘৈতবাদ শিক্ষা করিয়াছিলেন।" ' মধুসূদন সরস্বতী এক দিকে যেমন অঘৈতবাদের পুনঃ প্রতিষ্ঠাতা, অন্য দিকে তেমনি দাসীভাব-ভাবিত রসিক ভক্ত। তিনি লিখিয়াছেন—

অবৈতসামাজ্যপথাধির ঢ়াস্থণীকৃতাথ ওলবৈভবাশ্চ। শঠেন কেনাপি বয়ং হঠেন দাসীকৃতা গোপবধ্বিটেন॥

অর্থাৎ আমরা অছৈত সামাজ্যের পথে অধিকঢ় হইলেও এবং ইন্দ্রের বৈভব তৃণের স্থায় তুচ্ছ জ্ঞান করিলেও কোন এক গোপবধ্লম্পট শঠের দ্বারা বলপূর্বক দাসীকৃত হইয়াছি। এই মায়াবাদী সন্মাসীর মুথ দিয়া বাহির হইয়াছে—

> বংশীবিভূষিত-করায়বনীরদাভাৎ পীতাম্বরাদর-পবিদ্বফলাধরোষ্ঠাৎ। পূর্ণেন্দুস্থন্দরমুখাদরবিন্দনেত্রাৎ কুষ্ণাৎ পরং কিমপি তত্তমহং ন জানে॥

এরপ রসিক ভক্তের নিকট শ্রীক্ষীব গোস্বামীর বেদান্ত শাস্ত্র অধ্যয়ন করা অসম্ভব নহে। বাঙ্গালার চুইজন শ্রেষ্ঠ দার্শনিক পরস্পরের সহিত ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধে আবদ্ধ ছিলেন ভাবিতেও আনন্দ হয়, কিন্তু কাল-বিচার করিলে এই গুরুশিয়া-সম্বন্ধ-বিষয়ে সন্দেহ উপস্থিত হয়। ঘোষ মহাশয়ের অনুমান যে ১৫৫ গুন্টান্দে শ্রীক্ষীব মধুণুদনের নিকট বেদান্ত অধ্যয়ন করিতেছিলেন, কিন্তু আমরা পূর্বেই দেখাইয়াছি যে ঐ বৎসর তিনি বৃন্দাবনে বাস করিয়া "মাধ্ব-মহোৎসব" কাব্য রচনা করিয়াছিলেন। উপরস্তু বিশেষ লক্ষ্য করিবার বিষয় এই যে

১ রাজেলনাথ খোষ-সম্পাদিত "অছৈত্সি দ্ব"র ভূমিকা, পূ" ১০১



# বৃন্দাবনের পাঁচ গোস্বামী ও প্রীচৈতত্ত

ভক্তিরত্বাকরের মতে শ্রীজীবের বেদান্তাধ্যাপক মধুসূদন বাচস্পতি—মধুসূদন সরস্বতী নহেন; যথা—

নবদ্বীপ হইতে পরমানন্দ মনে।

ক্রীজীব গোস্বামা কাশী গেলা কতো দিনে॥
তাহা রহে শ্রীমধুশদন বাচস্পতি।
সর্ববশান্তে অধ্যাপক যেন রহস্পতি॥
তেঁহো শ্রীজীবেরে দেখি অতি স্নেহ কৈলা।
কতো দিন রাখি বেদান্তাদি পঢ়াইলা॥
শ্রীজীবের বিভাবল দেখি বাচস্পতি।
যে আনন্দ হৈল তাহা কহি কি শকতি॥
কাশীতে শ্রীজীবেরে প্রশংসে সর্বব ঠাই।
ন্যায় বেদান্তাদি শান্তে এছে কেহো নাই॥

এই বর্ণনা পড়িয়া, বিশেষতঃ "এজাবেরে দেখি অতি ত্রেছ কৈলা" দেখিয়া মনে হয় না কি যে, মধুসূদন বাচস্পতি এজাবের অপেক্ষা বয়সে বড় ছিলেন ? অথচ ঘোষ মহাশয় প্রমাণ করিয়াছেন যে মধুসূদন সরস্বতী ১৫২৫ ছইতে ১৫৩০ খুফ্টাব্দের মধ্যে জন্মগ্রহণ করেন। মধুসূদন সরস্বতী ও এজাবের সম্বন্ধ-বিষয়ে কোন স্থির সিদ্ধান্তে আসা ফুক্টিন; কোন-না মধুসূদন সরস্বতীর উপাধিও খুব সম্ভব বাচস্পতি ছিল, কারণ একটি প্রবাদমূলক শ্লোকে আছে—

নবদ্বীপে সমায়াতে মধুসূদন-বাক্পতৌ। চকস্পে তর্কবাগীশঃ কাতরোহভূদ্ গদাধরঃ।

অর্থাৎ, মধুসূদন বাক্পতি নবদ্বীপে আসিলে তর্কবাগীশ কম্পিত ও গদাধর কাতর হইয়াছিলেন।

# প্রীজীবের রচিত গ্রন্থাদি

"ভক্তিরতাকরে" শ্রীজীবের গ্রন্থসমূহের যে তালিকা আছে তাহা হইতে নিম্নলিখিত পঁচিশখানি গ্রন্থের নাম পাওয়া যায়:—(১) হরিনামাস্ত

# শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

বাকিরণ, (২) সূত্রমালিকা, (৩) ধাতুসংগ্রহ, (৪) কৃষ্যার্চ্চাদীপিকা, (৫) গোপালবিরুদাবলা, (৬) রসামৃতশেষ, (৭) শ্রীমাধব-মহোৎসব, (৮) শ্রীসঙ্কলকলবৃক্ষ, (৯) ভাবার্থসূচকচম্পু, (১০) গোপাল-তাপনীর টীকা, (১১) ভক্তিরসায়তসিদ্ধর টাকা, (১২) উচ্ছলনালমণির টাকা, (১৩) যোগসার-স্তবের টাকা, (১৪) অগ্নিপুরাণস্থ শ্রীগায়ত্রীভাষ্মের টাকা, (১৫) পদ্মপুরাণোক্ত শ্রীক্ষের পদচিহ্ন ও শ্রীরাধিকাকরপদস্থিত চিহ্ন, (১৬) ত্রন্ধা-সংহিতার টাকা, (১৭) গোপালচম্পু—পূর্ববিভাগ, (১৮) গোপালচম্পু— উত্তরবিভাগ, (১৯-২৪) ষট্সন্দর্ভ এবং (২৫) ক্রম-সন্দর্ভ নামক ভাগবতের টীকা। নরহরি চক্রবর্ত্তী যে সংস্কৃত শ্লোক অবলম্বন করিয়া এই তালিক। দিয়াছেন, তাহার শেষে "ইত্যাদয়:" আছে। এই তালিকা হইতে "সর্বসংবাদিনী"র ভায় হুপ্রসিদ্ধ দার্শনিক গ্রন্থ বাদ পড়িয়াছে। রামনারায়ণ বিভারত "দানকেলি-কৌমুদা" নাটকের প্রচ্ছদপটে জানাইয়াছেন যে, উহার টীকা শ্রীজীব গোস্বামীর রচনা। ঐ টীকা যে এক্সীর গোস্বামীরই লেখা তাহার কোন আভ্যন্তরীণ প্রমাণ নাই। বিভারত মহাশয় "ললিতমাধৰ নাটক" ও তাহার টীকা প্রকাশ করিয়াছেন, কিন্তু টাকাটি কাহার রচিত তাহা বলেন নাই। ঐ টাকার প্রথমে "শ্রীকৃষ্ণচৈতত্ত-কুপাধরে: শ্রীমজপগোস্বামি-চরণৈর্মদেক-শরণৈ:" পাঠ দেখিয়া মনে হয় যে উহা শ্রীঞ্জীবের দারা রচিত। এতদ্বিন্ন শ্রীরূপ গোস্বামীর কতকগুলি স্তব সংগ্রহ করিয়া শ্রীক্ষীব "স্তবমালা" নামে প্রকাশ করেন। আমি আমার গুরুদেব নিতাধামগত শ্রীল অধৈতদাস পণ্ডিত বাবাজী মহোদয়ের গ্রন্থাগারে তাঁহার নিজের হাতে নকল করা সংস্কৃত ভাষায় শ্রীজীব গোস্বামীর রচিত "বৈষ্ণববন্দনা" নামে একখানি পুত্তিকা পাইয়াছি। বরাহনগর গ্রন্থ-মন্দিরে ৪৪০ সংখ্যক পুঁথিও ঐ গ্রন্থের অনুলিপি। শুনিয়াছি যে পদকর্ত্তা জ্ঞানদাসের শ্রীপাট কাদড়ায় আর একথণ্ড অনুলিপি আছে। ঐ গ্রন্থে নিত্যানন্দের ভক্তদের যে বিশদ বিবরণ আছে তাহা দেখিয়া মনে হয় যে শ্রীঞ্জীব নিত্যানন্দের বিশেষ কুপা লাভ করিয়াছিলেন।



# বুন্দাবনের পাঁচ গোস্বামী ও প্রীচৈতত

# শ্রীতৈভয়তত্ত্ব-বিষয়ে শ্রীজাব

প্রীক্তাব গোস্বামী প্রীচৈতত্যের কোন লীলা বর্ণনা করেন নাই। তিনি প্রীক্তাবন্দর্ভ লিখিয়াছেন, কিন্তু প্রীচৈতত্যসন্দর্ভ লেখেন নাই। তবে যখন তিনি ক্রমসন্দর্ভ নামক প্রীমন্তাগবতের টাকা লেখেন, তখন প্রীচৈতত্যের সম্প্রদায় সঞ্জ্যবন্ধভাবে স্প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। তাই তিনি প্রীচৈতত্যকে "সম্প্রদায়-সহস্রাধিদৈবং" বলিয়া বর্ণনা করিয়াছেন। গোপালচম্পূর মঙ্গলাচরণে তিনি প্রীকৃষ্ণচৈতত্যকে "সর্ববন্ধাদকীর্ভত্ত" অর্থাৎ সর্ববন্ধপ্রদা ব্যক্তিগণের কীর্ভনযোগ্যা, "সর্বব্রপ্রকাশক্" এবং "ভক্তাবতার তাদান্মাপন্নতিয়াবতার্ণ" অর্থাৎ ভক্তাবতার বলিয়া তদান্ধ বা ভক্তম্বরূপে অবতার্ণ অর্থবা ভক্তম্বরূপে অবতার্ণ অর্থবা ভক্তম্বরূপে অবতার্ণ অর্থবা ভক্তম্বরূপে অবতার্ণ অর্থবা

শ্রীজীব সর্বত্ত শ্রীতৈত্যকে শ্রীকৃষ্ণ হইতে অভিন্নরূপে দেখিয়াছেন।

বট্সন্দর্ভের অন্তে শ্রীতির বিচার করিয়া তিনি লিথিয়াছেন, "তাদৃশ ভাবময়ী
ভক্তি বিস্তার করিবার জন্ম জগতে যে অবতার আগমন করিয়াছেন, যিনি

ফুর্জ্জন পর্যান্ত সকলের আশ্রয়, সেই চৈতন্য-বিগ্রহ ক্ষুষ্ণের জয়।"

"সর্বসংবাদিনা"তে শীঞ্জীব প্রীচৈতন্তের ভগবতা সপ্রমাণ করিবার জন্য নিম্নলিখিত যুক্তিসমূহের আশ্রয় গ্রহণ করিয়াছেন: (ক) শ্রীমন্তাগবতে শ্রীকৃষ্ণচৈতন্ত নামধেয় শ্রীভগবান্ই কলিযুগে বৈক্ষবগণের উপান্ত বলিয়া নিণীত হইয়াছেন। শ্রীমন্তাগবতে যে শ্রীকৃষণচৈতন্তকেই কলিযুগের উপান্ত বলা হইয়াছে তাহা সপ্রমাণ করিবার জন্য দুইটি শ্লোক উদ্ধার করা হইয়াছে।

আসন্ বর্ণান্ত্রয়ো হাস্ত গৃহুতোহসুযুগং তন্ঃ। শুক্রো রক্তত্তথা পীত ইদানীং কৃষ্ণতাং গতঃ।

—ভাগৰত, ১০৮৮৩

শ্রীক্ষার ইহার ব্যাখ্যায় বলেন যে সত্যযুগে ভগবানের শুক্রবর্ণ, ত্রেতায় রক্তবর্ণ, দ্বাপরে কৃষ্ণবর্ণ, স্তরাং পরিশেষ প্রমাণে কলিযুগে এই উপাস্থাদেব

১ প্রীপ্রকৃষ্টেড অর্থের নামানং শীভগবন্ধং কলিবুগেছ দিন্ বৈক্ষর হানাপাক্তার তথাবিশেবা-লিকিতেন প্রীভাগব ভ-পঞ্জাবাদেশ জৌতি।— লগ্ধসংবাদিনা



শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

308

যে পীতবর্ণ ধারণ করেন তাহা প্রতিপন্ন হইল। অপর শ্লোকটি এই:—

> কৃষ্ণবর্ণং থিষাকৃষ্ণং সাম্বোপান্ধান্ত-পার্বদম্। যক্তৈঃ সন্ধার্তন-প্রায়ের্বজন্তি হি প্রমেধসঃ॥

> > — ভাগবত, ১১া৫।৩২

"কৃষ্ণবর্ণ" শব্দের দুইটি অর্থ: প্রথমতঃ বাহার পূর্ণ নামে "কৃষ্ণ" এই দুইটি বর্ণ আছে, তিনিই কৃষ্ণবর্ণ অর্থাৎ কৃষ্ণটেততা নামে কৃষ্ণ এই বর্ণদ্বয় আছে। দ্বিতীয়তঃ যিনি শ্রীকৃষ্ণের বর্ণনা করেন এবং সকল জীবের প্রতি করণাবশতঃ সকল লোকের প্রতিই শ্রীকৃষ্ণের বিষয়ে উপদেশ দেন। "বিষাকৃষ্ণং" শব্দের অর্থ এই যে যিনি সমং শক্ষণ অর্থাৎ গৌরকান্তি ধারণ কথিয়া কৃষ্ণ-সম্বন্ধে উপদেশ দেন এবং বাঁহাকে দর্শন করিয়া সকলের ক্রদয়ে শ্রীকৃষ্ণ-ক্রুর্ত্তি হয়; অথবা যিনি জনসাধারণের দৃষ্টিতে অকৃষ্ণ অর্থাৎ গৌররূপে প্রতিভাত হয়েন; ভক্তবিশেষের দৃষ্টিতে শ্রামস্থানর বলিয়া প্রতীত হয়েন। ফলতঃ ইহাতে সর্ব্যপ্রকারেই শ্রীকৃষ্ণ-কর্পের প্রকাশ-নিবন্ধন এই শ্রীকৃষ্ণটেততা সাক্ষাৎ শ্রীকৃষ্ণেরই আবির্তাব-বিশেষ। "তম্মাৎ তম্মিন্ সর্বথা শ্রীকৃষ্ণরূপকৈর প্রকাশাৎ তম্মেব সাক্ষাদাবির্ভাবঃ স ইতি ভাবঃ।"—সর্বব্যবাদিনী।

"আবির্ভাব" শব্দটি পারিভাষিক। এরপ গোস্বামী লঘুভাগবতামতে উহার ব্যাথায়ে বলিয়াছেন যে এরিঞ্চ মথুরায় চলিয়া যাইবার পর ব্রজ্ঞবাসিগণ বিরহে আকুল হইয়া পাড়িয়াছিলেন; তাঁহাদের বিরহজনিত ক্লান্তি দেখিয়া এরিঞ্চ বাত্র হইয়া হঠাৎ তাঁহাদিগের সমক্ষে আবির্ভূত হয়েন। এইরপ আবির্ভাবের পর হইতে ব্রজ্ঞবাসিগণ মনে করেন যে এর্ক্ট আমাদিগকে পরিত্যাগ করিয়া কখনই অত্যত্র গমন করেন নাই; তবে যে শুনিতে পাই, ভিনি মথুরায় গিয়াছেন, সে আমাদের স্বপ্নমাত্র। এজীব গোস্থামী যদি "লঘুভাগবতামূতের" অর্থে এটিচতত্তকে প্রিক্তাকে আবির্ভাব

কথাতে বর্ণনামত্যাং ওক্ত বলেন—
কথাতে বর্ণনামত্যাং ওক্ত: সভাবুগে হরি:।
বজ্জামক্রমাং কুক্তরেভারাং ছাগতে কলে।



# বৃন্দাবনের পাঁচ গোস্বামী ও ত্রীচৈতত

বলিয়া থাকেন তাহা হইলে ভক্তহদয়ের অনুভূতিই ঐীচৈতভার ভগবতার মূল প্রমাণ হয়।

(থ) বিষদস্ভবের উপর জাের দিয়া আজাব বলিতেছেন যে বহু বহু মহাসুভব বহু বার তাঁহার ভগবতাসূচক অল্প-উপাল্প-অন্ত পার্বদ সমন্বিভরপে আচৈততাকে দর্শন করিয়া তাঁহাকে স্বয়ং ভগবান্ বলিয়া বুঝিয়াহেন। সর্বসংবাদিনার প্রথমেই তিনি লিখিয়াছেন যে "কােটি কােটি মহাভাগবত বহিদ্ধি ও অর্ন্তদ্ধি-ছারা বাঁহার ভগবতা বিনিশ্চয় করিয়াছেন, ভগবতাই বাঁহার নিজস্বরূপ, যে স্বয়ং ভগবানের আপাদপলকে অবলম্বন করিয়া অত্যত্ত ভর্লভ সহস্র সহস্র প্রেম-পীযুষময় জাহ্ণবীধারা তলীয় নিজ অবতার-প্রকটনে এচারিত হইয়াছে, সেই আক্রম্বটততত্তানামধেয় আভগবান্কেই আমন্ভাগবতশান্ত এই কলিমুগে বৈক্ষবগণের উপাত্ত বলিয়া নির্ণয় করিয়াছেন।"

কোন্ কোন্ দেশের মহামুভবর্গণ ঐতিতত্যের ভর্গবন্তার একাধিক বার প্রমাণ পাইয়াছেন ? তাহার উত্তরে ঐজীব বলিতেছেন—"গৌড়বরেন্দ্র বঙ্গপ্রকাৎ কলিপাদি দেশীয়ানাং মহাপ্রসিন্ধেং" অর্থাৎ গৌড়, বরেন্দ্র, বঙ্গ, স্থন্ধ ও উৎকলদেশবাসী মহামুভবর্গণের মধ্যে তাঁহার এই ভর্গবন্তা মহাপ্রসিক। ঐতিতত্যের ভর্গবন্তা যথন এইরূপে বাঙ্গালা ও উড়িয়ায় প্রসিদ্ধি লাভ করিয়াছে, তখন ঐজীব তাঁহাকে "স্বসম্প্রদায় সহস্রাধিদৈবং" বলিয়া বন্দনা করিয়াছেন।

(গা) শ্রিকাব "বিষ্ণুধর্ণ্মোন্তরের" শ্রীচৈতন্মের ভগবতার বিরুক্তরণে প্রতায়দান বচনসমূহেরও বিচার করিয়াছেন। বিষ্ণুধর্ণ্মোন্তর বলেন যে দ্বাপর যুগের অবতারের বর্গ শুকপক্ষবর্গ এবং কলির নালঘন। শ্রীক্ষাব বলেন, "যে দ্বাপরে কৃষ্ণ অবতার না হয়েন, উহা সেই দ্বাপর অবতারের বর্ণসূচক প্রমাণ-বচন বলিয়া মনে করিতে হইবে। অপিচ, যে দ্বাপরে শ্রীকৃষ্ণ অবতার্গ হইয়া থাকেন, সেই কলিতেই শ্রীচৈতন্ম অবতার্গ হয়েন। শ্রীকৃষ্ণাবতার ও শ্রীগোরা তার একই রসসম্বন্ধসূত্রে সম্বন্ধ। ইহা হইতে ইহাই জ্বানা যায় যে শ্রীগোর শ্রীকৃষ্ণের আবির্ভাবনিশেষ।" বিষ্ণুধর্ণান্তরে আরও আতে যে কলিতে হরি কোন প্রত্যক্ষ রূপ ধারণ করিয়া অবতার্গ হয়েন না এ জন্ম হরিকে "ত্রিয়ুগ্য" বলা হয়। ইহার উত্রে



শ্রীতৈভক্তরিভের উপাদান

প্রীঙ্গীব বলেন যে প্রীকৃষ্ণের ঐশ্বর্যা অসীম, ভাহাতেই সময়ে সময়ে আর্থ-বচন-প্রমাণের অতিক্রম দৃষ্ট হয় এবং কলিকালেও প্রীভগবান্ আত্মদেহ প্রকট করিয়া অবতীর্ণ হয়েন। এই যুক্তির মধ্যে অনেকথানি তুর্বলতা দেখা যায়। যাহা হউক প্রীঞ্জীব নিজে প্রীচৈতত্যের ভগবতা দৃঢ়ভাবে ঘোষণা করিয়া তত্ত্বসন্দর্ভের মঞ্চলাচরণে লিখিয়াছেন—

অন্তঃকৃষ্ণ: বহির্গে রিং দর্শিতাঙ্গাদিবৈভবম্। কলো সন্ধার্তনাজৈঃ শ্বঃ কৃষ্ণচৈতভামাত্রিতাঃ॥

অর্থাৎ যাঁহার বাহিরে গৌরবর্ণ, অন্তরে কৃষ্ণবর্ণ, যিনি স্থীয় অঙ্গাদির বৈভব জনসমাজে প্রকটিত করিয়াছেন, আমরা কলিযুগে সন্ধীর্তনাদি-দারা তাঁহার উপাসনা করি।

# ৫। গোপাল ভট্ট গোস্বামী

শ্রীপাদ গোপাল ভট্ট ছয় গোস্বামীর অগ্যতম। কিন্তু তাঁহার জীবনী ও কার্যাবলী রংগ্রজালে আবৃত। তিনি ত্রিমল ভট্টের অথবা বেন্ধট ভট্টের পুত্র তাহা লইয়া মতভেদ আছে। "ভক্তিরত্নাকরের" মঙ্গলাচরণের বিতীয় লোকেও গোপাল ভট্টের সূচকে তাঁহাকে শ্রীমন্বেন্ধট ভট্টনন্দন বলা হইয়াছে। অথচ ১৬৯৬ গুট্টাব্দে লিখিত "অনুরাগবল্লী" গ্রন্থে তাঁহাকে "ত্রিমলের বালক গোপালভট্ট নাম" বলিয়া উল্লেখ করা হইয়াছে। এইরূপ মতভেদের কারণ বোধ হয় শ্রীপাদ ক্ষ্পাস কবিরাজ্ব গোস্থামীর অনবধানতা। তিনি শ্রীচৈত্যাচরিতামূতের মধ্যখণ্ডের প্রথম পরিচেছনে লিখিয়াছেন যে শ্রীচৈত্যা শ্রীরঙ্গক্ষেত্রে উপস্থিত হইয়া—

ত্রিমল্লভট্টের ঘরে কৈল প্রভু বাস। তাহাঞি রহিলা প্রভু বর্ধা চারি মাস॥

- ¿€° €°, 213188

কিন্তু মধ্যলীলার নবম পরিচ্ছেদে লিখিয়াছেন যে ভিনি শ্রীরগক্ষেত্রে বেশ্বট ভট্টের গৃহে চাতুর্মান্ত যাপন করেন (২।২।৭৬-৮০)।



# বুন্দাবনের পাঁচ গোপামা ও ঐটেচতত

কবিরাজ গোস্বামীর এই অনবধানতা "অথুরাগবল্লী"র গ্রন্থকার মনোহর দাসের চোখ এড়ায় নাই। তিনি লিখিয়াছেন—

সেধানে ত্রিমন্ন ভট্টের ঘরে ভিক্ষা লইলা।
ভট্টের প্রার্থনা মতে চাতুর্ম্মাস্ত রৈলা ॥
নবম পরিচ্ছেদে সেই সূত্র বিস্তারিল।
ভাহে তার ছোট ভাই বেক্কট লিখিল॥
তিমন্ন ভট্টের পুজাদি আত্মসাৎ পরিপাটা।
রহি গেল তে কারণে লিখনের ত্রুটা॥

—প্রথম মঞ্জরী

কবিরাজ গোস্বামী গোপাল ভটুকে অন্য পাঁচ গোস্বামীর সহিত উল্লেখ করিয়াছেন এবং শাখানির্ণয়ে কেবলমাত্র লিখিয়াছেন যে —

> শ্রীগোপাল ভট্ট এক শাখা সর্বোত্তম। রূপ-সনাতন সঙ্গে গাঁর প্রেম আলাপন।

> > -31:01300

ইহা ছাড়া তাঁহার প্রন্তে গোপাল ভট্ট-সম্বন্ধে আর কোন কথা নাই।
অন্থ পাঁচ গোস্বামীর জীবনর্ত্তান্ত শ্রীচৈতন্মচরিতামূতে প্রদন্ত হইয়াছে।
গোপাল ভট্ট-সম্বন্ধে তাঁহার নীরবতা দেখিয়া পরবর্ত্তী কালে বৈষ্ণবদের
মনে নানারূপ সন্দেহ উপস্থিত হয়। "ভক্তিরতাকরে" এই সন্দেহের
কথা নিম্নলিখিতরূপে ইন্সিত করা হইয়াছে—

শ্রীগোপাল ভট্টের এসব বিবরণ।
কেহো কিছু বর্ণে কেহো না করে বর্ণন।
না বুঝিয়া মর্ম্ম ইথে কুতর্ক যে করে।
অপরাধ বীঞ্চ তার হৃদয়ে সঞ্চারে॥ পৃত ১৫

নরহরি চক্রবর্তী কবিরাজ গোস্বামীর নারবতার ছইটি কারণ নির্দেশ করিয়াছেন। প্রথমতঃ বৃন্দাবনদাস যেমন হাটেতত্যের দক্ষিণ-ভ্রমণ-প্রসক্ষ একেবারে বাদ দিয়াছেন, তেমনি কবিরাজ গোস্বামীও গোপাল ভটের বিবরণ বাদ দিয়াছেন। উভয়েরই উদ্দেশ্য ভবিশ্যতের কবিদের বর্ণনা

# শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

করিবার জ্বন্স কিছু অবশিষ্ট রাখা। দ্বিতীয়ত: কবিরাজ গোস্বামী চরিতামত লিখিবার অসুমতি প্রার্থনা করিলে—

> শ্রীগোপালভট্ট হুফ হৈয়া আজ্ঞা দিল। গ্রন্থে নিজ প্রসঙ্গ বর্ণিতে নিষেধিল।

নরহরি চ ক্রবর্তীর প্রথম যুক্তি-সম্বন্ধে বক্তব্য এই যে শ্রীজীবের সহিত শ্রীচৈতন্তের সাক্ষাৎকার সন্দেহের বিষয় হইলেও তাঁহার কথা তিনি লিখিতে পারিলেন, অথচ গোপাল ভট্টের কথা বাদ দিলেন—ইহার কারণ হয়ত কিছু গুরুতর। দ্বিতীয় যুক্তি সমর্থন করা আরও কঠিন; কেন-না চরিতামৃত আরম্ভ করিবার পূর্বের যদি গোপাল ভট্টের আজা লওয়া হইত, তাহা হইলে আদি লালার অন্টম পরিচ্ছেদে সে কথা তিনি গৌরব করিয়া লিখিতেন।

গোপাল ভট্টের নাম কবিকর্ণপূরের "ঐটি তেল্যচন্দ্রের নাটকে" ও "ঐটি তেল্যচরিতামূত মহাকাবো" নাই। বৃন্দাবনদাস, লোচন ও জ্বয়ানন্দও তাঁহার সম্বন্ধে নারব। কিন্তু ঐটিচতল্যের প্রথম চরিতাখ্যায়ক মুরারি গুপ্ত তাঁহার সম্বন্ধে লিখিয়াছেন –

তথাসীনং জগন্নাথং ত্রিমল্লাখ্যো বিজোতমঃ।
ত্রীপুত্রস্বজনৈঃ সার্জং সিষেব প্রেমনির্ভরঃ।
গোপালনামা বালোহস্ত প্রভোঃ পার্বে স্থিতন্তদা।
তং দৃষ্টা তস্ত শিরসি পাদপদ্মং দয়ার্দ্রধীঃ।
দত্তা বদ হবিং চেতি সোহপি হর্ষসমান্বিতম্।
বাল্যক্রীড়াং পরিত্যজ্ঞা কৃষ্ণং গায়ন্ ননর্ত্ত চ॥

-0120128-20

বিশিষ্ট প্রমাণ ব্যতিরেকে মুরারির উক্তির সত্যতায় সন্দেহ করা যায় না। সেই জন্ম গোপাল ভট্টের পিতার নাম ক্রিমল্ল ভট্ট বলিয়াই আমরা সিক্ষান্ত করিলাম। গোপাল কবিকর্ণপূরের ন্যায় বাল্যকালেই ক্রীটেতন্মের কুপা পাইয়াছিলেন, এই সংবাদন্ত মুরারি গুপ্তের নিকট হই পাওয়া গেল।

বাল্যকালেই গোপাল ভটু ত্রীচৈতব্যের চরণে আত্মসমর্পণ করিয়াছিলে:



# বৃন্দাবনের পাঁচ গোস্বামী ও শ্রীচৈতগ্য

অথচ এই প্রথম সাক্ষাৎকারের পর মহাপ্রভূ বাইশ বৎসর কাল পুরীতে থাকিলেও গোপাল ভট্ট আর কথনও তাঁহার প্রীচরণ দর্শন করিতে চেন্টা করিয়াছিলেন বলিয়া জানা যায় না। "অমুরাগবল্লী"র মতে গোপাল ভট্ট পিতা ত্রিমল্ল, গুরু ও পিতৃব্য প্রবোধানন্দ ও পিতৃব্য বেস্কটের পরলোক-গমনের পর বৃন্দাবনে আসেন।

আসিয়া পাইলা রূপ-সনাতন-সন্ধ।
ছই রঘুনাথ-সহ প্রেমার তরক।
শ্রীজীবে বাৎসলা কোটি প্রাণের অধিক।
সদা-স্বাদ রাধা-কৃষ্ণ-বিলাস-মাধ্বীক।

রঘুনাথদাস শ্রীমন্মহাপ্রভুর তিরোধানের পর বৃন্দাবনে আসেন।
গোপাল ভট্টও কি তবে শ্রীচৈতত্যের তিরোভাবের পর বৃন্দাবনে গমন
করেন ? নরহরি চক্রবর্ত্তী গোপাল ভট্টর সূচকে লিখিয়াছেন যে রূপসনাতন যখন বৃন্দাবনে আসিলেন, তখন গোপাল ভট্ট তাঁহাদের সহিত
দেখা করিলেন অর্থাৎ গোপাল ভট্ট রূপ-সনাতনের পূর্বেই বৃন্দাবনে বাস
করিতে আরম্ভ করেন; যথা—

রূপ আর সনাতন যবে আইলা বৃন্দাবন ভটুগোসাঞি মিনিলা সবায়।

আবার এই লেখকই "ভক্তিরব্রাকরে" বলিতেছেন যে

লিখিলেন পত্রীতে শ্রীরূপ-সনাতন। গোপাল ভট্টের বৃদ্দাবন আগমন।

ফারতঃ ২৫২২ ছইতে ১৫৩৪ গুর্ফান্দের মধ্যে গোপাল ভট্ট রুন্দাবনে আগমন করেন; এই ঘটনার দেড় শত বংসরের অধিক কাল পরে "অমুরাগণল্লী" ও "ভক্তিরতাকর" লিখিত হয়। এই চুই গ্রন্থ রচনার সময়ে লেখকগণ জনশতি ব্যতাত অন্য কোন উপাদান পায়েন নাই। সেই জন্মই তাঁহাদের জন্মের উক্তির মধ্যেই পরস্পর-বিরোধ ও অসামঞ্জন্ম রহিয়া গিয়াছে।

শ নরহরি চ কবর্ত্তীর মতে শ্রীচৈতত গোপাল ভট্টের জত্ম নীলাচল হইতে



#### ঐতিতগুচরিতের উপাদান

ডোর ও কৌণীন বৃন্দাবনে পাঠাইয়া দিয়াছিলেন। গোপাল ভটু সাধারণতঃ পশ্চিমাদিগকে শিশু করিতেন; যথা—

> গোপাল ভট্টের সেবক পশ্চিমা মাত্র। গৌড়িয়া আইলে রথুনাথ কুপাপাত্র॥ °

কিন্তু তাঁহার এই রাতি উল্লেখন করিয়া তিনি শ্রীনিবাস আচার্য্যকে শিশ্বতে বৃত করেন।

আমি বরাহনগর গ্রন্থমন্দিরে কবিকর্ণপূর-কবিরাজ-কৃত গোপাল ভট্টের একটি বন্দনা পাইয়াছি। তাহাতে আছে যে গোপাল ভট্ট নাট্য ও সঙ্গীতে নিপুণ ও আলাপে-আলোচনায় রসিক ছিলেন; যথা —

> জিতবর-গতিভিন্দির্নাট্যসন্ধীত-রন্ধী তমুভূত-জমু-চিন্তানন্দ-বর্দ্ধি-স্থাশঃ। চরিত-তথবিলাসন্চিত্রচাতুর্য্য-ভাষঃ পরম-পতিতমীশঃ পাতু গোপালভট্টঃ॥

# হরিভক্তিবিলাদের রচয়িতা কে ?

১২৮৯ বলান্দে রামনারায়ণ বিভারত্ব মহাশয় "হরিভক্তিবিলাস" এত্ব
প্রকাশ করেন। ঐ প্রস্থ গোপাল ভট্টগোস্বামীর রচনা বলিয়া তিনি
প্রচার করেন। তিনি প্রস্তের শেষে গোপাল ভট্টর যে সংক্রিপ্ত জীবনচরিত লিথিয়াছেন, তাহাতে বলিয়াছেন যে, গোপাল ভট্ট সনাতন গোস্বামীর
"হরিভক্তিবিলাস"কে মূল সূত্ররূপে পরিগণিত করিয়া ব্রতাদির মাহাক্সা,
নিতাতা ও বিবিধ মতামত নানা পুরাণ ও সংহিতাদি হইতে সংগ্রহপূর্বক একথানি স্তব্যহৎ প্রস্ত করত "ভগবছক্তিবিলাস" নামে জনসমাজে
প্রচারিত করেন। কিন্তু সটাক ও সংক্রিপ্ত হরিভক্তিবিলাস যে সনাতনের
রচিত তাহার ভূরি ভূরি প্রমাণ পাওয়া যায়; কোন কোন স্থলে কেবল
সনাতনের রচিত মূল সংক্রিপ্ত "হরিভক্তিবিলাস গ্রন্থ আমি বল অনুসন্ধান
সনাতন গোস্বামীর দ্বারা লিখিত হরিভক্তিবিলাস গ্রন্থ আমি বল অনুসন্ধান

340

<sup>&</sup>gt; অভুৱাগৰলী, বিতীয় মন্ত্রী

<sup>&</sup>lt; বরাহনগর গ্রন্থমন্দির, পুলি-সংগ্যা ৬৩৮



### বৃন্দাবনের পাঁচ গোস্বামী ও ঐীচৈতহ্য

করিয়াও কোঝাও দেখিতে পাই নাই। গোপাল ভট্টের গ্রন্থের নাম যে "ভগবছক্তিবিলাস." "হরিভক্তিবিলাস" নহে, তাহা রামনারায়ণ বিঞারত্ত মহাশয়ও স্বাকার করিয়াছেন। তাঁহার মতে ছইথানি বৈঞ্চবশ্বতি রচিত হইয়াছিল —একথানি সংক্ষিপ্ত, সনাতন-কৃত; অন্তথানি বিশদ, গোপাল ভট্ট-কৃত।

কিন্তু মুদ্রিত হরিভক্তিবিলাসের সহিত ঐতিতভাচরিতামূতের মধ্য-লালার ২৪ পরিচ্ছেদের মিল দেখিয়া মনে হয় বৈষ্ণবস্থতি মাত্র একথানিই রচিত হইয়াছিল—ছুইখানি নহে। গ মনোহরদাসও বলেন—

> শ্রীসনাতন গোসাঞি গ্রন্থ করিল। সর্ববত্র আভোগ ভটুগোসাঞির দিল॥

> > — अनुदांशवती, প্রথম মঞ্জরী

ভক্তিরত্নাকরেও দেখা যায়---

করিতে বৈষ্ণবশ্বতি হৈল ভট্ট মনে।
সনাতন গোস্বামী জানিলা সেইক্ষণে॥
গোপালের নামে শ্রীগোস্বামী সনাতন।
করিল শ্রীহরিভক্তিবিলাস-বর্ণন॥ পৃ° ১৪

এই চুই গ্রন্থই শ্রীনিবাস আচার্যোর পরিবারের লোকের লেখা এবং গোপাল ভট্ট শ্রীনিবাস আচার্য্যের গুরু। গোপাল ভট্ট স্বয়ং গ্রন্থ লিখিলে ইঁহারা সে কথা ইচ্ছা করিয়া গোপন করিতেন না।

কিন্তু গ্রন্থথানি সনাতনের লেখা হইলে মঙ্গলাচরণের শ্লোক লইয়া কিছু মুস্কিল বাধে। দ্বিতীয় শ্লোকে আছে—

> ভক্তেবিলাসাংশ্চিমুতে প্রবোধা-নন্দক্ত শিক্ষো ভগবংপ্রিয়ক্ত। গোপালভটো রঘুনাথদাসং সস্তোধয়ন্ রূপ-সনাতনৌ চ॥

১ ভা' ফ্লীলকুমার দে আমাকে পতা লিখিয় আনাইয়ছেন—'ছরিভজিবিলাম' ও 'ভগবন্ধতি বিলাম'
ছইগানি পৃথক্ এছের নাম ধরিবার কোনও কারণ নাই। একই পৃথিতে ছই নামই পাওয়া বায়।"

#### শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

অর্থাৎ "ভগবৎপ্রিয় প্রবোধানন্দের শিশ্য গোপালভট্টনামা ব্যক্তি রঘুনাথ-দাস তথা রূপ-সনাতনকে সন্তুফ্ট করিবার নিমিত্ত ভক্তির বিলাস সমাগ্রূপে আহরণ করিতেছে।" এই শ্লোক কিছুতেই সনাতনের রচিত হইতে পারে না—কেন-না তিনি নিজে একথা জাহির করিবেন না যে, তাঁহার সন্তোষের জন্ম গোপাল ভট্ট গ্রন্থ লিখিতেছেন।

আমার মনে হয় গোপাল ভট্ট ও সনাতন গোপামীর সমবেত চেম্টার ফলে গ্রন্থথানি রচিত হইয়াছে। সনাতন গোপামী গ্রন্থের মালমশলা জোগাড় করিয়া দিয়াছিলেন, গোপাল ভট্ট গ্রন্থ রচনা করিয়াছিলেন।

### হরিভক্তিবিলাস ও বাংলার বৈফবসমাজ

"হরিভক্তিবিলাসের" মতামত লইয়া গোড়ীয় বৈষ্ণবধর্মের আচারঅমুষ্ঠান সম্পন্ন হয় এই ধারণা জনসাধারণ-মধ্যে প্রচলিত। কিন্তু প্রকৃত
পক্ষে কয়েকটি প্রধান বিষয়ে "হরিভক্তিবিলাসের" সিদ্ধান্ত শ্রীগৌরাঙ্কের
প্রবিত্তি ধর্ম্মসম্প্রদায়ে গৃহীত হয় নাই। শ্রীচৈতক্তদেব কায়ন্ত রঘুনাথ
দাসকে নিজের পৃজিত গোবর্দ্ধনশিলা প্রদান করিয়াছিলেন। সেই
সার্বজনীন আদর্শে অমুপ্রাণিত হইয়া গোপাল ভট্ট বিধান দিয়াছেন—

এবং শ্রীভগবান্ সবৈরঃ শালগ্রামশিলাত্মকঃ। বিজৈঃ ব্রীভিশ্চ শুদ্রৈশ্চ পূজ্যো ভগবতঃ পরে:॥

অর্থাৎ কি দ্বিজ (ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্য ) কি ন্ত্রী, কি শুদ্র সকলেই নিরত হইয়া শালগ্রামশিলা-রূপী ভগবানের পূজা করিবেন। সনাতন গোস্বামা ঐ শ্লোকের টাকায় লিখিয়াছেন—"ভগবদ্দীক্ষা-প্রভাবেণ শূদ্রাদীনামপি বিপ্রসামাং সিন্ধমেব," কিন্তু বান্ধালাদেশে শূদ্র শালগ্রাম-পূজার অধিকার পায় নাই।

"হরিভক্তিবিলাসের" অফাদশ বিলাসে শ্রীমৃত্তি-নির্মাণের রীতি গণিত হইয়াছে। ইহাতে গোপাল, মহাবরাহ, নৃসিংহ, ত্রিবিক্রম, মংশু, কৃর্মা, মহাবিষ্ণু, লোকপালবিষ্ণু, চতুভুজ বাস্তদেব, সন্ধ্রণ, প্রভাল্প, অনিরুদ্ধ, বামন, বুদ্ধ, নরনারায়ণ, হয়প্রীব, জামদগ্যা ও দাশর্থি রাম প্রভৃতি মৃত্তি-



গঠনের বিধান লিখিত আছে। কিন্তু আশ্চর্যোর বিষয় এই যে লক্ষ্মীনারায়ণ ও কৃষ্ণরুগ্রিণীর মূর্ত্তির কথা থাকিলেও, রাধাকুষ্ণের মূর্ত্তির কথা কিছুই নাই। কৃষ্ণের যে মূর্ত্তির বর্ণনা আছে, তাহা বাঙ্গালার বৈষ্ণবের ধাানের বস্তু নহে। বাঙ্গালী বৈষ্ণব বিভুক্ত মুরলীধর কৃষ্ণকে ভক্তনা করেন। আর বিষ্ণুধর্মোত্তর হইতে "হরিভক্তিবিলাসে" ধৃত হইয়াছে—

> কুক্তক্রপরঃ কার্য্যো নীলোৎপলদলচ্ছবি:। ইন্দীবরধরা কার্য্যা তম্ম সাক্ষাচ্চ কুরিণী॥

লক্ষার মূর্ত্তি কিরূপে নির্মাণ করিতে হইবে তাহার বিধান আছে, কিন্তু রাধামূর্ত্তির কোন ইঙ্গিত পর্যান্ত নাই। পঞ্চমবিলাসে শ্রীনন্দনন্দন-বর্ণনা-প্রসঙ্গে গোপীগণসহ শ্রীকৃষ্ণের ধ্যান করিবার উপদেশ দেওয়া হইয়াছে, কিন্তু শ্রীরাধার ধ্যান নাই। গৌড়ীয় বৈষ্ণবধর্মের প্রথম ও সর্বশ্রেষ্ঠ শ্বতিগ্রন্থে এইরূপ অনুল্লেখ অত্যন্ত বিশ্বয়ের বিষয়।

গ্রন্থের শেষে গোপালভট্ট লিখিতেছেন—

"কুত্যান্তেতানি তু প্রায়ো গৃহিণাং ধনিনাং সতাম্।"

অর্থাৎ সক্ষন ধনী গৃহস্বদিগের প্রায় সমস্ত কৃত্য ইহাতে লিখিত হইল। শ্রীরাধার মহাভাবের আসাদনই যদি শ্রীচৈতক্তমহাপ্রভুর প্রবর্ত্তিত সাধনার শ্রেষ্ঠ দান হয়, তাহা হইলে ধনাদের তাহা হইতে বঞ্চিত করিবার কোন সঙ্গত কারণ দেখিতে পাই না।

গোপাল ভট্ট শ্রীকৃষ্ণকর্ণামৃতের শ্রীকৃষ্ণবল্লভা টীকা রচনা করিয়াছেন। '
ঐ টীকার মঞ্চলাচরণে শ্রীচৈতন্তের প্রতি নমন্ধার নাই। আমার সন্দেহ
হয় ঐ টীকা ছয় গোস্বামীর অত্যতম গোপাল ভট্টের রচিত নহে; কেন-না
ঐ টীকাতে গোপাল ভট্ট নিজের পিতার নাম জাবিড় হরিবংশ ভট্ট ও
পিতামহের নাম নৃসিংহ লিখিয়াছেন। উক্ত টীকাকারের রচিত কালকৌমুদী ও রিসকরঞ্জনী টীকাতেও ঐ পরিচয় পাওয়া যায়।

গোপাল ভট্টের দার্শনিক জ্ঞানের পরিচয় শ্রীক্ষাব গোপামী শ্রীভাগবত-সন্দর্ভের মঞ্চলাচরণে দিয়াছেন। শ্রীক্ষাব স্বীকার করিয়াছেন যে গোপাল

১ বজার সাহিত্য-পরিবং ২৮০ সংখ্যক পুলি। ভা" ত্লীলতুমার দেকয়েকখানি পুলি নিলাইয় স্টাক কুলকণায়ত অকাশ করিতেছেন।



# শ্রীচৈতন্যচরিতের উপাদান

368

ভটু শ্রীমন্তাগবতের সিদ্ধান্তসমূহ সংগ্রহ করিয়া একথানি সন্দর্ভগ্রন্থ রচনা করেন। কিন্তু ঐ গ্রন্থে ক্রম-ও পর্য্যায়-অনুসারে সিদ্ধান্তাদির বিচার হয় নাই বলিয়া শ্রীজীব ষট্সন্দর্ভ-রচনায় মনোনিবেশ করেন।

গোপালভট্ট শ্রীচৈতন্তের কোন লীলা বর্ণনা করেন নাই। তবে "হরিভক্তিবিলাসের" প্রত্যেক বিলাসের প্রথমে শ্রীচৈতত্যকে বন্দনা করা হইয়াছে। গ্রন্থকার শ্রীচৈতত্যকে ভগবান্ ', গুরুত্তর ', জগৎগুরু ' প্রভৃতি আখায় স্তৃতি করিয়াছেন। তিনি বারবার স্বীকার করিয়াছেন যে শ্রীচৈতত্যের কুপাতেই এই গ্রন্থ লিখিবার ক্ষমতা তিনি প্রাপ্ত হইয়াছেন। কিন্তু শ্রীচৈতত্যের মূর্ত্তি, ধ্যান ও উপাসনা-সম্বন্ধে এই গ্রন্থে কিছুই লিখিত হয় নাই।

১ হরিভজিবিলাস, ১৮।১

e 2 3100

<sup>0 2 213</sup> 



# সপ্তম অধ্যায়

### ত্রিকৈত্রভারত

"প্রীচৈতভাচন্দ্রায়ত" ভক্তিরসে ভরপুর একথানি সংস্কৃত স্তোত্রকারা। ইহার শ্লোকসংখ্যা ১১৩। স্তুতি, নতি, আশিস্, প্রীচৈতভাভক্তমহিমা, প্রীচৈতভার অভক্তদের নিন্দা, দৈত্য, উপাত্যনিষ্ঠা, প্রীচৈতভার উৎকর্ম, প্রীচৈতভা অবতারের মহিমা, লোকশিক্ষা, রূপোল্লাস, শোচন—এই বাদশটি প্রকরণে গ্রন্থথানি বিভক্ত। ইহাতে অমুফ্রুপ্, ইন্দ্রবন্ধা, উপেক্রবন্ধা, উপঙ্গাতি, বসন্তুতিলক, মালিনী, শিখরিণী, পৃথী, মন্দাক্রান্তা, শার্দ্ধল-বিক্রীড়িত, প্রশ্নরা, শালিনী ও রথোন্ধতা হন্দ ব্যবহৃত হইয়াছে। শুধু ছন্দে নহে, শন্দসম্পদ্ ও ভাবসম্পদেও কাবাখানি অপুর্ব্ব। প্রীচৈতভার প্রতি ঐকান্তিক নিষ্ঠা ও অমুরাগ গ্রন্থের ছত্রে ছত্রে কৃটিয়া উঠিয়াছে। শ্রীন্দ্রহাপ্রভুর সাক্ষাৎ কৃপাপাত্র না হইলে এ ধরনের কাব্য লেখা কঠিন। লেখকের সহিত প্রীচৈতভারে ব্যক্তিগত পরিচয় ও অন্তরন্ধতার ছাপ লেখার মধ্যে স্কুম্পন্ট।

#### প্রবোধানন্দের পরিচয়

শ্রীতৈত ছাত্র প্রায়তের রচিয়তার নাম প্রবোধানন্দ সরস্বতী বলিয়া প্রসিদ্ধ। কিন্তু এই প্রবোধানন্দের সবিশেষ পরিচয়-নির্ণয় করা ছ্রহ। কাব্যখানি যে ১৫৭৬ খৃফ্টাব্দের পূর্বের রচিত সে বিষয়ে সন্দেহ নাই; কেন-না কবিকর্ণপূর গৌরগণোদ্দেশদীপিকায় লিখিয়াছেন—

তৃত্ববিভা ত্রজে যাসীৎ সর্বশান্তবিশারদা। সা প্রবোধানন্দযতিগৌরোদগানসরস্বতী ॥ ১৬৩

অর্থাৎ ব্রজে যিনি সর্বশাস্ত্রবিশারদা তুন্ধবিছা ছিলেন, তিনি গৌরোদগান সরস্বতী প্রবোধানন্দ যতি।



# ত্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

আমি শ্রীক্ষার গোস্বামীর রচিত বলিয়া কথিত যে সংস্কৃত বৈক্ষববন্দনা পাইয়াছি, তাহাতে আছে—

> প্রবোধানন্দসরস্বতীং বন্দে বিমলাং যয়া মুদা। চন্দ্রামৃতং রচিতং যৎশিয়ো গোপালভট্টঃ।

দেবকীনন্দন সেনের বৈষ্ণববন্দনায় আছে—
প্রবোধানন্দ গোসাঞি বন্দো করিয়া যতন।
যে করিল মহাপ্রভুর গুণের বর্ণন॥
ক্রিতীয় রন্দাবনদাস "বৈষ্ণববন্দনা"য় লিখিয়াছেন—
বন্দো করিয়া ভক্তি প্রবোধানন্দ সরস্বতী
পরম মহত্ব গুণধাম।

শ্রীতৈত্যচন্দ্রায়ত পুস্তক যাঁহার কৃত এই পুথি ভক্ত-ধন-প্রাণ॥

অতান্ত বিশ্বয়ের বিষয় এই যে প্রবোধানন্দের নাম শ্রীপাদ কৃষ্ণদাস কবিরাজের শ্রীচৈতগ্রচরিতামতের দশম পরিচেছদে শ্রীচৈতগ্রের শাখা-বর্ণনার মধ্যে নাই। গোপালভট্ট নিজে "ভগবন্তজিবিলাস" গ্রন্থের মঞ্চলাচরণে লিখিয়াছেন যে তিনি প্রবোধানন্দের শিশ্ব। ওই পরিচয়

- বরাহনগরের পৃথিতে পাঠান্তর 'বিদলয়া মূলা'
- কজবিলাগাংকিছতে প্রবোধানকত শিব্যা ভগবংপ্রিছত।
   শেশত শিব্যা ভগবংপ্রিছত।
   শেশালভটো রঘুনাগদাসং
   শভোবয়ন্ জপদনাতনৌ চ ঃ

স্নাত্ন গোপানী এই লোকের টাকায় লিপিয়াছেন—"ভগবংপ্রিয়ণ্ডেতি বছরীছিল। তৎপুরুষেণ বা স্মানেন তত মাহালাতঃ প্রতিপাদিত্য। এবং তজ্ছিবাতা শীগোপালট্ডতাপি তাদৃক্ বোদ্ধবান্।" অপুরাগবনীতে মনোহরশান ঐ টাকার বাঙ্গালা ব্যাব্যায় লিপিয়াছেন—

এছকর্ত্র। নাম শীগোপালভট কর।
দে প্রবোধানন্দ বা কাহার পিরা হয়।
প্রবান্ পদে কহে শীকুণাচৈত্তর।
শীক্ষপদনতন-কুত-প্রস্তুত্তর।

প্রবোধানন্দের শিবা তাহাতেই হয়।
কগবানের প্রিয় ইহা জানিহ নিশ্চর ।
তাহার করুণা-পাত্র অতত্তব বল্ল ।
তাতে যে স্থানে প্রয়োগ নহাগ্রভুর হর ।



### <u> বী</u>চৈতন্যচন্দ্রামৃত

সত্ত্বেও কৃষ্ণদাস কবিরাজ প্রবোধানন্দের নাম কেন যে উল্লেখ করিলেন না তাহা অনুসন্ধেয়।

শীতৈততার তিরোভাবের দেও শত বংসরের অধিক কাল পরে লেখা ছইখানি বাঙ্গালা বইয়ে এক প্রবোধানন্দের পরিচয় আছে। মনোহরদাস "অনুরাগবল্লী"তে লিখিয়াছেন যে ত্রিমল্ল ও বেক্কট ভট্টের কনিষ্ঠ জাতার নাম প্রবোধানন্দ। তিনিই গোপাল ভট্টের পূর্বিগুরু। মনোহরদাসের মতে এই গুরু দাক্ষাগুরু নহেন—শিক্ষাগুরু মাত্র; যথা—

অধ্যয়ন উপনয়ন যোগা আচরণে।
পূর্বেতে সকল শিক্ষা পিতৃব্যের স্থানে॥
তারপরে মহাপ্রভুর চরণ-দর্শন।
সভারি হইল পূর্বে করিল লিখন॥
অত্যাদরে বিছ্যাওর লিখেন জানিঞা।
যৎকিঞিৎ সম্বন্ধ অধিক মানিঞা॥

—অন্থরাগবল্লী, পৃ<sup>০</sup> ৪

উক্ত গ্রন্থকার বলেন যে শ্রীমন্মহাপ্রত্ন গ্রন্থ হইতে বিদায় লইবার কিছুকাল পরে ভটুগোষ্ঠী তীর্থভ্রমণে বাহির হয়েন। তারপর তাঁহারা পুরাধামে আসিয়া শ্রীচৈতভ্যের চরণপ্রান্তে পতিত হয়েন। মহাপ্রভু গৃহে প্রত্যাবর্ত্তন করিয়া তাঁহাদিগকে ভজন-সাধন করিতে উপদেশ দেন।

ক্রমে ক্রমে তিন ভাইয়ের সিদ্ধি প্রাপ্তি হৈল।
তা সভার ঘরনী অগ্রপশ্চাৎ পাইল॥
সর্বে সমাধান করি উদাসীন হঞা।
বুন্দাবনে আইলেন প্রেমে মত্ত হঞা॥ অমুরাগবরী, পৃত প

দক্ষত্ৰ জগৰৎ শব্দ কর্মে লিখন।
দেবিজেন গোপাল ভট কাম্বাকামনে।
ইহাতে প্ৰযোধানল প্ৰভূপান্ত হয়।
অপি শব্দের অৰ্থ এই ত নিদ্ধার।

পরং ভগবান্ জানি জীকুজটেতক । তে কারণে মহাপ্রভুব কুশার ভাজনে । তেমতি খোপাল ভট জানিহ নিশ্চয় । স্নাতন-মুখোধিত সিভাজের সার ।

প্রবোধানন্দ প্রভুর হিরপান্দ বলিয়া থীকৃত হইলেও কুলগান কবিরাজ ভাহার নাম একবারও করিলেন না কেন ?



### শ্রীচৈতন্মচরিতের উপাদান

336

এই বিবরণ হইতে বুঝা যায় যে প্রবোধানন্দের পরলোকগমনের পর গোপাল-ভট্ট বৃন্দাবনে বাস করিতে আরম্ভ করেন।

"ভক্তিরত্নাকর"ও বলেন যে প্রবোধানন গোপাল-ভট্টের পিতৃব্য ও শিকাগুরু। তিনি শ্রীচৈতভ্যের অতিশয় প্রিয়পাত্র ছিলেন; যথা—

কেছ কছে প্রীপ্রবোধানন্দ যত্ন কৈল।
অল্লকাল হৈতে অধ্যয়ন করাইল ॥
পিতৃবা-কুপায় সর্বকাজে হৈল জ্ঞান।
গোপালের সম এথা নাই বিভাবান্ ॥
কেছ কছে প্রবোধানন্দের গুণ অতি।
সর্বত্র হইল যার খ্যাতি সরস্বতী॥
পূর্ণব্রক্ষ প্রীকৃষণতৈতন্ত ভগবান্।
তার প্রিয় তা বিনা স্বপনে নাহি আন॥ পৃ০ ১১

শ্রীচৈতন্তের সহিত মিলনের পর প্রবোধানন্দের কি হইল তাহা আর নরহার চক্রবর্তা বর্ণনা করেন নাই। "অপুরাগবল্লী" ও "ভক্তিরত্বাকরের" বর্ণনা পাঠ করিয়া মনে হয় প্রবোধানন্দ-সম্বন্ধে একটি গুরুতর সমস্যা অমামাংসিত রহিয়া যাইতেছে। শ্রীতৈত্ত্য ত্রিমল্ল ভট্টের গৃহে প্রবোধানন্দকে কুপা করিয়াছিলেন। সে সময়ে তিনি নিশ্চয়ই গৃহী ছিলেন, কেন-না সন্ন্যাসী হইয়া ভাইয়েদের সহিত এক বাড়ীতে বাস করা নিয়ম নহে। তারপর "অপুরাগবল্লী" ত্রিমল্লাদি তিন ভাইয়ের তিন ঘরনীরও উল্লেখ করিয়াছেন। তৎপরে কোন সময়ে হয়ত তিনি "সরস্বত্তী"-সম্প্রদায়ভুক্ত সন্ম্যাসা ইইয়াছিলেন। রামচন্দ্র, পরমানন্দ, দামোদর, স্থানন্দ, গোবিন্দানন্দ, ব্রক্ষানন্দ প্রভৃতি পুরী, নরসিংহ, পুরুষোত্ত্যম, রথুনাথ প্রভৃতি তীর্থ ও সত্যানন্দাদি ভারতী, দশনামী সন্ন্যাসি-সম্প্রদায়ভুক্ত হইবার পর ত্রীচৈতন্তের কুপা লাভ করিয়াছিলেন। কিন্তু শ্রীচৈতন্তের প্রিয়পাত্র হইবার পর রূপ-সনাতন প্রভৃতির তায় গোড়ীয় বৈক্ষবসম্প্রদায়ে যোগ না দিয়া প্রবোধানন্দ সরস্বতী-সম্প্রদায়ে যোগ দিবেন কেন ? শ্রীচৈতন্তের চরণাশ্রয় গ্রহণ



# শ্রীচৈতগুচন্দ্রামৃত

করিবার পূর্বের প্রবোধানন্দ "মায়াবাদী" ছিলেন। তিনি উক্ত গ্রন্থের ১৯ সংখ্যক প্রোকে বলিয়াছেন—'বে পর্যান্ত প্রীচৈতন্তের চরণকমলের প্রিয় ভক্তজন দৃষ্টিগোচর না হয়েন, সেই পর্যান্তই ব্রহ্মকথা ও মুক্তিমার্গ তিক্ত বোধ হয় না, সেই পর্যান্তই লোকমর্যাাদা ও বেদমর্য্যাদা বিশৃঞ্জল বোধ হয় না, এবং সেই পর্যান্তই বহিরপ্র-মার্গ-পতিত বেদান্তাদি শাস্তজ্জনিগের পরস্পর কলহ হইবার সম্ভাবনা।" ৩২ শ্লোকে তিনি ব্রহ্মজ্ঞান-লাভে উৎফুলম্থ জড়মতি ব্যক্তিদিগকে ধিকার দিয়াছেন—"ধিগস্ত ব্রহ্মাহং-বদনপরিফুলান্ জড়মতান্।" ৪২ শ্লোকে তিনি লিবিয়াছেন যে শ্রীচৈতন্তের বিবিধ ভাববিকার ও লালাকটাক্ষ দর্শন করিয়া সকল লোকের মনে মোক্ষাদির তুচ্ছতাবোধক প্রেমানন্দ উৎপন্ন হয়।

যদি অনুমান করা যায় যে প্রবোধানন্দ শ্রীচৈতন্তের সহিত সাক্ষাৎকারের পূর্বের অবৈত-বেদান্তচর্চায় নিমগ্ন জ্ঞানী গৃহস্থ ছিলেন, তাহা হইলেও মহাপ্রভুর কুপা পাইবার পর তিনি সরস্বতী-সম্প্রদায়ভুক্ত সন্ন্যাসী হইবেন ইহা কল্লনা করা কঠিন। সেই জ্ব্যু সিন্ধান্ত করিতে হয় যে শ্রীচৈতন্তের শ্রাচরণদর্শন করিবার পূর্বেই তিনি সন্ন্যাস অবলম্বন করিয়াছিলেন ও পরে স্বরূপ-দামোদরের তায় গৌরপ্রেমসিকুতে নিমজ্জ্বিত হয়। এই সিদ্ধান্ত যদি যুক্তিসহ বলিয়া বিবেচিত হয়, তাহা হইলে শ্রীচৈতন্তের তিরোভাবের ১৬০ বৎসর পরের লেখা "অনুরাগবল্লী"র বিবরণ লান্ত বলিতে হয়। মোটের উপর "ভক্তিরভাকর" ও "অনুরাগবল্লী" হইতে প্রবোধানন্দের জীবনচরিত-সম্বন্ধে সঠিক বিবরণ পাওয়া গেল না।

অনেকে মনে করেন ঐতিচতত্তার কুপালাভের পূর্বের প্রবোধানদের নাম ছিল প্রকাশানদ এবং ঐতিচতত্তাই তাঁহাকে প্রবোধানদে নামে অভিহিত করেন। কিন্তু এরূপ ধারণার সমর্থক কোন উল্লি আমি কোন সমসাময়িক বা প্রামাণিক বৈষ্ণবগ্রন্থে পাইলাম না। শ্রীপাদ কৃষ্ণদাস কবিরাজ প্রকাশানদের কথা ঐতিচতত্তচরিতামূতের আদি লীলার সপ্তম পরিচেছদে ও মধ্য লীলার সপ্তদশ ও পঞ্চবিংশ পরিচেছদে লিখিয়াছেন, কিন্তু কোথাও প্রকাশানদের নাম প্রবোধানদ হইল এরূপ উল্লিকরেন নাই। আরও আশ্চর্যোর বিষয় এই যে শ্রীচৈতত্যচরিতামূতের

#### শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

390

কোথাও "প্রীচৈতভাচন্দ্রায়তের" একটি শ্লোকও উদ্বত হয় নাই প্রকাশানন্দই যদি প্রবোধানন্দ হইতেন তাহা হইলে প্রকাশানন্দের ভক্তিভাব দেখাইবার জভ কৃষ্ণদাস কবিরাজ গোস্বামী "চক্রায়তের" অন্ততঃ দুই-একটি শ্লোক উদ্বত করিতেন।

### ত্রীচৈত্র ও প্রবোধানন্দ

"প্রীচৈতভাচন্দ্রায়তের" আভান্তরীণ প্রমাণ হইতে জানা যায় যে প্রবোধানন্দ নীলাচলে আসিয়া প্রীচৈতভার শ্রীচরণদর্শন করিয়াছিলেন। তিনি ৭৯ প্রোকে লিখিয়াছেন—"যিনি যমুনাতীরবর্ত্তী স্থর্ম্য রুন্দাবন পরিত্যাগ করিয়া লবণসমূদ্রের তীরস্থ পূপ্পাবাটিকায় গমন করিয়াছেন, যিনি পীতবসন পরিত্যাগ করিয়া রক্তবসন ধারণ করিয়াছেন এবং যিনি নিজ্ঞ ইন্দ্রনীলমণি-বিভাগ্ননী কান্তি পরিত্যাগ করিয়া গৌরণান্তি ধারণ করিয়াছেন, সেই শ্রীগৌরহরিই আমার গতি।" ৮৬ প্রোকেও "সন্মাসিকপটং নটন্তং গৌরাঙ্গং নিজ্ঞরসমদাদমূধিতটে" বলিয়াছেন। লবণসমূদ্রের তটে নর্তনশীল শ্রীচৈতভাকে ১২৯ ও ১৩১ প্রোকেও শ্মরণ করা হইয়াছে। ১৩৫ ও ১৩১ সংখাক প্রোক ছইটি পাঠ করিলে সন্দেহ থাকে না যে লেখক স্বয়ং শ্রীচৈতভকে দর্শন করিয়া তাঁহার রূপ-বর্ণনা করিয়াছেন। প্রোক ছইটির বাঙ্গালা অমুবাদ দিতেছি—

"স্বয়ং শ্রীকৃষ্ণ গৌরান্ধ হইয়া সমুদ্রতারে উপবেশনপূর্বক, করতলে বদরফলের ন্যায় পাণ্ড্বর্ণ কপোলদেশ অর্পণ করিচা, নয়নজলে সম্মুখস্থ ভূমি পঙ্কিল করিতেছেন এবং মনোহর অরুণ-বসন পরিধান করিয়া শ্রীরাধার পাদপলে রতি বিস্তার কহিতেছেন।" 'বিনি পদধ্বনিতে দিক্সকল মুখরিত, নয়নবারি-ধারায় পৃথাতল পঙ্কিল এবং অট অট হাস্ত-প্রকাশে নভোমগুল শুরুবর্ণ করিতেছেন, সেই, চন্দ্রকান্তি শ্রীগৌরদেব কটিতটে আলম্বমান রক্তবসনে স্থাভিত ইইয়া সমুদ্রতীরবর্তী পুপ্পোভানে নৃত্য করিতেছেন।"

প্রবোধানন্দ নীলাচলে শ্রীচৈতক্তের সহিত কতিপয় শ্রেষ্ঠ ভক্তকেও নৃত্য করিতে দেখিয়াছিলেন। ২৭ শ্লোকে অধৈতের ও ৪৪ শ্লোকে



# শ্রীচৈতগচন্দ্রামূত

বক্রেশ্বরের নাম উল্লিখিত হইয়াছে। এই সব ভক্তদেব দর্শনলাভ করিয়াছিলেন বলিয়াই তিনি "এটিচতগ্রভক্তমহিমা" ও "এটিচতগ্রভক্ত নিন্দা" নামক প্রকরণ আবেগভরে লিখিতে পারিয়াছিলেন। গৌরভক্ত-গণের চরিত্রের মাধুর্য্য তিনি একটি প্লোকে অতি স্থন্দররূপে বর্ণনা করিয়াছেন; যথা—

তৃণাদপি চ নীচতা সহজসৌমা-মুগ্ধাকৃতিঃ
তৃধামধুরভাষিতা বিষয়গন্ধ-যুগ্ৎকৃতিঃ।
হরিপ্রণয়বিহবলা কিমপি ধীরনালম্বিতা
ভবত্তি কিল সদ্গুণা জগতি গৌরভাজামমী॥

প্রবোধানদ নীলাচলে এটিচতত ও তাঁহার ভক্তগণকে দর্শন করিলেও, এটিচততের তিরোভাবের কিছুদিন পরে "এটিচততচন্দ্রাত্ত" লেখেন। অনুমান হয় এটিচততের তিরোভাবের পাঁচ বৎসরের মধ্যে ঐ গ্রন্থ রচিত হইয়াছিল; কেন-না ৩৮ গ্লোকে প্রবোধানদ লিখিতেছেন—

"হা শ্রীচৈততা! কোধায় গমন করিলে? তোমার সেই নির্মাল পরমোজ্জলরস ভক্তিমার্গ আর কোন স্থানে দৃষ্ট হইতেছে না; বরং কোন সম্প্রদায়ে কর্মাজড়তা, কোন সম্প্রদায়ে জ্ঞপ তপ যোগাদি, কোন সম্প্রদায়ে শ্রীগোবিন্দার্জনে বিকার, কোন স্থানে বা জ্ঞান-বিষয়ে অভিমান এবং কোথাও বা পরমোজ্জল ভক্তি বাগ্রাত্রে অবস্থান করিতেছেন এরপ দেখিতে পাওয়া যায়।" এইরপ উক্তি সেই সময়েই করা সম্ভব যথন শ্রীচৈতত্তার তিরোভাবের অল্প দিন পরে অত্তরক্ষ ভক্তগণও লোকান্তরিত হইয়াছেন, অথচ গোড়মগুলে বা ব্রজ্মগুলে সাধকমগুলী সক্ষরক্ষ হইয়া শক্তিশালী হইতে পারেন নাই।

"শ্রীচৈত্যচন্দ্রায়ত" হইতে শ্রীচৈত্যের অপরূপ ভাবমাধুর্যার আস্বাদন পাওয়া যায়। ১০ লোকে তাঁহার নৃত্যাবেশে হরিসন্ধীর্তনের, ১৪ শ্লোকে নবান মেন, ময়রপুদ্ধ ও গুঞ্জাবলী-দর্শনে ব্যাকুল হওয়ার, ১৬ শ্লোকে কটিডোর প্রস্থি বন্ধনপূর্বক সংখ্যা-গণনা-ছার। নাম-জপ ও নয়নজ্বলে সিক্ত হইয়া জগলাখদর্শন করার, ১৮ শ্লোকে হরেক্ষণ নাম করিতে করিতে



### ঐতিতভাচরিতের উপাদান

বিবশ ও খালিতগাত্র হওয়ার, ৬৯ শ্লোকে দামনক-পুষ্পের মালা ধারণ করার, এবং ৭ গ্লোকে অঞ ও রোমাঞ্চ-দারা শোভিত মনোহর রূপের কথা বর্ণিত হইয়াছে। শ্রীচৈতত্তের ভাববিকাশের প্রত্যক্ষদশীর বর্ণনা-হিসাবে উক্ত শ্লোকগুলির ঐতিহাসিক মূল্য পুব বেশী।

শ্রীচৈতত্ত কি ভাবে প্রেমভক্তি প্রচার করিতেন তাহারও ইঙ্গিত প্রবোধানন্দ দিয়াছেন। শ্রীমন্মহাপ্রভু যুক্তিতর্কের আশ্রয় গ্রহণ করিয়া বিমুখ জনকে ভক্তিপথে আনয়ন করিতেছেন এরূপ বর্ণনা কোধাও "শ্রীচৈতত্যচক্রায়তে" নাই। প্রবোধানন্দ বলেন –

> দৃষ্টঃ স্পৃষ্টঃ কীর্ন্তিতঃ সংস্থতো বা দ্রকৈরপ্যানতো বাদৃতো বা। প্রেম্নঃ সারং দাতুমীশো য একঃ শ্রীচৈতভাং নৌমি দেবং দয়ালুম্॥

অর্থাৎ যিনি একমাত্র দৃষ্ট, স্পৃষ্ট, কীর্ত্তিত বা স্মরণের বিষয়ীভূত হইলে বা দূরস্থ ব্যক্তিগণ কর্তৃক নমস্কৃত বা বহুমানিত হইলে প্রেমের গৃঢ় তত্ত্ব প্রকাশ করেন, সেই দয়ালুদেব প্রীচৈত্যকে নমস্কার করি।

প্রবোধানন্দ পূর্বের মায়াবাদী সন্ন্যাসী ছিলেন; আর প্রীগৌরাঙ্গের কুপাপ্রাপ্তির পর তিনি একেবারে গৌরপ্রেমসিন্ধৃতে নিমজ্জিত হইয়ছিলেন। ৬০ শ্লোকে তিনি লিখিয়ছেন যে গৌরন্ত্তি কোন চোর তাঁহার নিষ্ঠাপ্রপ্ত লৌকিক ও বৈদিক ব্যবহারকে হরণ করিয়াছে, কীর্ত্তনে ও নর্তনে লজ্জাকে দূর করিয়াছে এবং প্রাণ ও দেহাদির কারণস্বরূপ ধর্মকেও অপহরণ করিয়াছে। প্রবোধানন্দ প্রীচৈতত্তকে 'স্বয়ং ভগবান্-রূপে উপাসনা করিতেন। ১



# ত্রীতৈতগুচন্দ্রামূত

# গৌর-পারম্যবাদ

তিনি শ্রীকৃষ্ণ ও শ্রীচৈতথকে এক অভিন্ন তত্ত্বরূপে জানিয়াছিলেন। তথাপি শ্রীকৃষ্ণকে উপাসনা করা অপেকা শ্রীচৈতথকে উপাসনা করিয়া তিনি অধিকতর আনন্দ পাইতেন। তিনি ৫৮ শ্লোকে লিখিয়াছেন—

"যদি কোন মুরারিভক্ত শ্রীকৃষ্ণের শ্রবণ-কীর্তনাদি নববিধ সাধন-ভক্তি-দারা পরমপুরুষার্থ প্রেম সাধন করেন, তবে মঞ্চল বটে, তিনি তাহা সাধন করুন; কিন্তু আমার পক্ষে অপার-প্রেমগুধাসিকু-স্বরূপ শ্রীগোরহরির ভক্তিরসে যে অতিরহক্ত প্রেমবস্তু আছে তাহাই আদরের সহিত ভক্তনীয়।"

ইহাই গৌর-পারম্যবাদ। নরহরি সরকার ও শিবানন্দ সেন এই পথেরই পথিক। প্রবোধানন্দ এইরূপ মতবাদ পোষণ করিতেন বলিয়াই কি, প্রীপাদ কৃষণাস কবিরাজ "প্রীচৈত্যাচরিতামতে" তাঁহার নাম উল্লেখ বা তাঁহার গ্রন্থের কোন গ্রোক উদ্ধার করেন নাই ?

র্ন্দাবনদাস ঠাকুর লিথিয়াছেন-

অতএব যত মহামহিম সকলে। "গৌরান্ধ-নাগর" হেন স্তব নাহি বোলে॥

—হৈ ভা°, পু° ১১ °

কিন্তু প্রবোধানন্দ ১৩২ শ্লোকে "গৌরনাগরবর"কে ধ্যান করিয়াছেন। এই ধ্যানের মৃর্ত্তির সহিত নীলাচলবাসী সন্ন্যাসী জ্রীচৈতত্ত্যের কোন সাদৃশ্য নাই।

> কোহয়ং পট্রধটা-বিরাজিত-কটাদেশঃ করে কল্পং হারং বক্ষসি কুণ্ডলং শ্রবণয়োবিশ্রহ পদে নৃপুরম্। উর্জীকৃত্য নিবদ্ধ কুণ্ডলভর-প্রোহকুরমলীপ্রগা-পীড়ঃ ক্রীড়তি গৌরনাগরবরো নৃত্যলিকৈর্নামভিঃ॥

অর্থাৎ যিনি কটিদেশে পট্রবন্ত্র, করে কন্ধণ, বক্ষঃত্বলে হার, কর্ণছয়ে কুগুল, চরণে নৃপুর, উদ্ধীকৃত নিবদ্ধ কেশসমূহে প্রকুল মলিকামালা



# ঐতিভগচবিভের উপাদান •

ধারণ করিয়াছেন. সেই কোন নাগরবর ঐাগৌরহরি নিজনাম কার্ত্তন-সহকারে নৃত্য করিতে করিতে ক্রাড়া করিতেছেন।

নরহরি সরকার ও লোচনের উপাসনা-প্রণালীর সহিত এই ভাবের সম্পূর্ণ সাদৃশ্য রহিয়াছে। আরও লক্ষ্য করিবার বিষয় এই যে, নক্ষীপে "মহাপ্রভুর বাড়ীতে" প্রবোধানন্দ-বর্ণিত মৃক্তিই পূক্ষিত হইতেছেন। প্রবোধানন্দ "গৌরনাগর"-মূর্ত্তি ধ্যান করিয়াছেন বলিয়াই কি, কৃষ্ণদাস কবিরাজ "শ্রীচৈতন্যচরিতামৃতে" "চন্দ্রামৃতের" কোন শ্লোক উদ্ধার করেন নাই ?

398



# অফ্টম অধ্যায়

### <u>জীচৈত ন্যভাগৰত</u>

# শ্রীতৈ এন্ডাগবতের লেখকের পরিচয়

বাঙ্গালার বৈষ্ণবসনাজে "গ্রীচৈতভাভাগবত" অপেকা অধিকতর জনপ্রিয় ও আদরণীয় গ্রন্থ আর নাই। "গ্রীচৈতভাচরিতামূত" পণ্ডিতের গ্রন্থ— আপানর জনসাধারণের নহে। শ্রীপাদ বৃন্দাবনদাস ঠাকুর সহজ ও সরল ভাষায় গ্রীচৈতভা ও নিত্যানন্দের লীলা বর্ণনা করিয়াছেন। তাঁহার রচনা প্রগাঢ় প্রেমভক্তির দ্বারা অন্মগ্রাণিত এবং সেই জন্মই হৃদয়গ্রাহা। "গ্রীচৈতভাভাগবতের" যত অধিক সংগ্যক হাতেলেখা পুথি পাওয়া যায়, এত আর অন্ম কোন বৈষ্ণবগ্রন্থের পাওয়া যায় না।

এরপ জনপ্রিয় গ্রন্থের গ্রন্থকার-সম্বন্ধে আমর। কিছুই জানি না বলিলে অত্যক্তি হয় না। প্রাচীন বৈশুবসাহিত্যের অনেক লেখক গ্রন্থমধ্যে নিজের বংশপরিচয় ও বাসস্থানের বিবরণ লিপিবন্ধ করিয়া গিয়াছেন। বৈশ্ব গ্রন্থ-কারদের মধ্যে কবিকর্পপূর, জয়ানন্দ, লোচন প্রভৃতি নিজের নিজের পরিচয় দিয়াছেন। কিন্তু ইহারা সকলেই ছিলেন গৃহী। রূপ, সনাতন, রয়ুনাথদাস, গোপাল ভট্ট, ক্ষাদাস কবিরাজ প্রভৃতি গাহস্যাশ্রম তাগে করিয়াছিলেন বলিয়া নিজেদের কোন পরিচয় দেন নাই। অবশ্য শ্রীজীব গোস্বামী রূপ-সনাতনের বংশ-বিবরণ লিখিয়াছেন; কিন্তু তাহা গুরুর গৌরবর্ত্তির জন্ম, নিজের মহিমা ঘোষণার জন্ম নহে। রন্দাবনদাস যে নিজের কোন লোকিক পরিচয় দেন নাই, বৈরাগ্য-অবলম্বন তাহার কারণ হইতে পারে।

তিনি বহু স্থলে নারায়ণীর কথা লিখিয়াছেন; যথা ১।১।১১, ।। ১৭০, ১।১০।১৪০, গভা৪৭৫। 'কিন্তু একবার মাত্র বলিয়াছেন যে

> সর্বশেষ ভৃত্য তান বৃন্দাবনদাস। অবশেষ পাত্র নারায়ণী-গর্ভজাত। ৩৬/৪৭৫

<sup>&</sup>gt; অভূপাদ অভূপকৃষ্ণ গোপামি-সম্পাদিত দিতীয় সংস্করণ। পরের পৃঠাক্ষণ্ডিও ঐ সংস্করণ হইতে বেওয়া কইবে।

### শ্রীচৈত গুচরিতের উপাদান

শীতৈতত্তের কুপাপাত্রী নারায়ণীর পুক্র বলিয়া নিজেকে পরিচিত করা, আর লৌকিক জীবনের পরিচয় প্রদান করা এক কথা নহে। কবির মনে নিজের লৌকিক পরিচয় দিবার বিন্দুমাত্র ইচ্ছা থাকিলে অন্ততঃ তিনি নিজের নাতামহের নাম করিতেন। তিনি শুধু নারায়ণীকে শ্রীবাসের লাতৃত্বতা বলিয়াছেন (২।২০।১৭০); কিন্তু কোন্ লাতার কত্তা, তাহা লেখেন নাই। কবিকর্ণপূর বলেন যে শ্রীবাসের চার ভাই এবং চারজনকেই মহাপ্রভু কুপা করিয়াছিলেন (শ্রীচৈত্ত্রচরিতামূত মহাকারা, ৫।৯৩), বুন্দাবনদাস শুধু শ্রীবাস ও শ্রীরামের কথা লিখিয়াছেন—কবিকর্ণপূর শ্রীপতি নামে আর এক ভাইয়ের বিবরণ দিয়াছেন (ঐ ৫।২৯)। শ্রম্কিকাচরণ ব্রক্ষচারী মহাণয় লিখিয়াছেন যে নারায়ণী শ্রীবাস ঠাকুরের লাতা শ্রীনবাস আচার্য্যের কত্যা" (রক্ষরত্ব, দিত্রীয় ভাগ)। কিন্তু বুন্দাবনদাস বলেন শ্রীবাস ও শ্রীনবাস একই ব্যক্তির নাম; যথা—

প্রাকৃ বোলে শুন শুন শ্রীবাস পণ্ডিত।
আমি নিতানিক চুই নক্ষন তোমার।
শ্রীনিবাস-চরণে রতক নমস্কার।
গ্রোর ক্র নিতানিক নক্ষন যাহার।

—চৈ° ভা°, ২া২৫।৩৪৯

অতএব স্মরণ রাখা প্রয়োজন যে, শীনিবাস-নামের দহিত যখন আচার্য্যান্তিপাধি যোগ করা হয় তখন গোপাল ভট্টের শিশ্ব, নরোভ্রম ঠাকুরের সমকালীন যাজিগ্রামের শীনিবাস আচার্য্যকে বুঝায়। শীযুক্ত স্থকুমার সেন বলেন যে শীবাস পণ্ডিতের অভতম জাতা শীরামের কভা নারায়ণী (বক্তমী, আশ্বিন ৩৪১, পূত্র ২৬)। এই উক্তির পোষক কোন প্রমাণ নাই, বরং স্তক্ষারবাবু যে-প্রেমবিলাসের ১ংশ বিলাসের মত এই উক্তির অব্যবহিতপূর্বের মানিয়া লইয়াছেন, তাহাতে নলিন পণ্ডিত নাম আছে। "প্রেমবিলাসের" তায়াবিংশ বিলাসে আছে—শীবাস, শীরাম, শীপতি ও শীকান্ত—এই চার ভাই। নারায়ণী শীবাসের মৃত জ্যেষ্ঠ জাতা নলিন পণ্ডিতের কভা (প্রেমবিলাস, পূত্র ২২১-২, যশোদানন্দন তালুকদারের



#### শ্রীচৈতগুভাগবত

সংস্করণ)। প্রভূপাদ অতুলক্ষ গোস্বামী ভক্তিরত্নাকর ও নরোত্তমবিলাসের মত গ্রহণ করিয়া বলেন যে শ্রীবাসের আর তিন জন ভাইয়ের নাম
শ্রীরাম, শ্রীপতি ও শ্রীনিধি। শ্রীনিধি নাম হইতে বুঝা যায় যে গোস্বামী
মহাশয় প্রেমবিলাসের বিবরণ বিশ্বাস করেন নাই। বস্তুতঃ নারায়ণী
শ্রীবাসের কোন্ ভাতার কন্তা, তাহা জানিবার উপায় নাই। শ্রীবাসের
সকল ভাতাই যখন মহাপ্রভূর কুপাপাত্র ছিলেন, তখন রুন্দাবনদাস
মাতামহের নাম উল্লেখ করিলেন না কেন ? ইহার কারণ এই হইতে পারে
যে বিধবার গর্ভে জন্মগ্রহণ করার জন্ম রুন্দাবনদাস ও তাঁহার মাতার
সহিত শ্রীবাসের পরিবারস্থ ব্যক্তিগণ কোন সম্পর্ক স্বীকার করিতেন না।

বৃন্দাবনদাস যে বিধবার গর্ভে জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন, তাহা জগদ্বন্ধু ভদ্র (গৌরপদতরঙ্গিনী, প্রথম সংস্করণ—উপক্রমণিকা, পৃ ১২৮), অম্বিকাচরণ ব্রন্দচারী (বঙ্গরত্ব, দিতীয় ভাগ) ও ডা° দীনেশচন্দ্র সেন (বঙ্গভাষা ও সাহিত্য, ৫ম সং, পৃ ৩১২) স্বীকার করিয়াছেন। কিন্তু "প্রেমবিলাসের" ক্রয়োবিংশ বিলাসের মতে—

বৃন্দাবনদাস যবে আছিলেন গর্ভে। তাঁর পিতা বৈকুণ্ঠদাস চলি গেল স্বর্গে॥ পৃ° ২২২

"প্রেমবিলাসের" এই অংশ প্রক্ষিপ্ত—আধুনিকী সংযোজনা মাত্র। অতুলকৃষ্ণ গোস্বামী মহাশয় প্রেমবিলাসে প্রদন্ত বুন্দাবনদাসের কাহিনী বিশাস না করিলেও উদ্ধৃত মত স্বীকার করিয়া লিথিয়াছেন যে "নারায়ণী গর্ভবতী হইলে তিনি বিধবা হন" (চৈতন্সভাগবত, পরিশিন্ট, পৃ° ৪৪)। মূণালকান্তি ঘোষ মহাশয় গোস্বামী মহাশয়ের এই মত মানিয়া লইয়াছেন (গোরপদতরঙ্গিণী, ২য় সং, ভূমিকা, পৃ° ২১৬)। শ্রীবাসের জাতৃতনয়া, মহাপ্রভুর সাক্ষাৎ কুপাপাত্রী নারায়ণী দেবী বিধবা অবস্থায় গর্ভবতী হইয়াছিলেন, এ কথা মানিয়া লইতে বৈষ্ণব লেখকগণের মনে কট্ট হয়, তাই তাঁহারা প্রমাণ করিতে ব্যস্ত যে বুন্দাবনদাস বৈধ-বিবাহের ফলে জাত। অতুলকৃষ্ণ গোস্বামী মহাশয় লিখিয়াছেন— "যদি ঐ সকল প্রবাদ শুদ্ধ বৈষ্ণবগণের মধ্যে প্রচলিত থাকিত, তাহা

হইলে কোন না কোন মহাজনের গ্রন্থে অবশ্য উলিখিত হইত। হয়ত কোন সময়ে কোন চৃষ্টমতাবলম্বী ব্যক্তি বৈষ্ণব ধর্মের অমম্বলের চেন্টায় ঐ সকল প্রবাদ স্থিতি করে এবং তৎপরে অতব্যক্ত বৈষ্ণব-দিগের মধ্যে তাহা স্বীকৃত হইয়া পরম্পর কর্ণাকর্ণী হইয়া আসিতেছে।" কিন্তু প্রাচীন মহাজনের গ্রন্থে যে নারায়ণীর বালবৈধব্যের কথা নাই, তাহা নহে। কবিকর্ণপূর ও বুল্লাবনদাসের মতে বিশ্বপ্তর মি্তা গ্রা হইতে প্রত্যাবর্ত্তন করিয়া এক বৎসর সংসারাজ্যমে ছিলেন। বিশ্বপ্তরের ২৩ বৎসর বয়সের সময়ে অর্থাৎ ১৪০০ শকে শ্রীবাস-গৃহে নারায়ণী বিশ্বস্তরের প্রসাদ খাইয়া কাঁদিয়াছিলেন। বুন্দাবনদাস বলেন, ঐ সময়ে নারায়ণীর বয়স্ চার বৎসর—

চারি বৎসরের সেই উন্নত চরিত। 'হা কুঞ্চ' বলিয়া কান্দে নাহিক।সন্থিত॥ ২৷২৷১৭০

এই ঘটনা-প্রসঙ্গে মুরারি গুপু লিথিয়াছেন-

শ্ৰীবাসভাত্তনয়াভর্ক। মধুরহ্যতি:।

প্রাপা হরে: প্রসাদক রৌতি নারায়ণী শুভা ॥ ২।৭।২৬ অতুলকৃষ্ণ গোস্বামী মহাশয় এই প্লোক উদ্ধার করিবার সময়ে পাঠ লিখিয়াছেন—

শ্রীবাসভাত্তনয়াহজাত্কা মধুরহাতি:। হরে: প্রাপ্য প্রসাদক রৌতি নারায়ণী শুভা॥

— চৈ ভা , পরিশিষ্ট, পৃ ৪০ কোন মেয়ের পরিচয় দিতে হইলে তাহার স্বামী আছে কি না বলা, ভাই আছে কি না বলা অপেকা অনেক বেশী প্রয়োজনীয়। সেই জগু মনে হয় অমৃতবাজার-কার্য্যালয়ের চাপা বইয়ের "অভর্ত্কা" পাঠই ঠিক। প্রাচীন পদক্রা উদ্ধবদাস লিখিয়াছেন—

প্রভূর চর্বিত পাণ স্লেহবশে কৈলা দান নারায়ণী ঠাকুরাণী-হাতে। শৈশবে বিধবা ধনী সাধ্বীসতী-শিরোমণি সেবন করিল সে চর্বিতে॥



### শ্রীচৈতগাভাগবত

আমার মনে হয়, নারায়ণী শিশুকালে অর্থাৎ চার বৎসর বয়সের পূর্বের বিধবা হইয়াছিলেন এবং যৌবনপ্রাপ্তির পর তাঁহার গর্ভ-সঞ্চার হইয়াছিল। প্রভুর প্রসাদ খাইয়া কাঁদিবার সময়ে নারায়ণীর বয়স্ যে মাত্র চার বৎসর ছিল, বৃন্দাবনদাস তাহা লিখিয়া গিয়াছেন; কিন্তু অগবন্ধ ভদ্র প্রভৃতি লেখকগণ তাহা লক্ষ্য না করিয়া ১৪২৭ শকে নারায়ণীর বয়স্ নয় দশ বৎসর বলিয়া অনুমান করিয়াছেন (গৌরপদতরজিণী, প্রথম সং, পূর্ণ ১২৮)।

নারায়ণীর কত বৎসর বয়সে রুদাবনদাস জন্মগ্রহণ করেন, তাহা
ঠিকভাবে জানিবার উপায় নাই। তবে রুদাবনদাসের ক্ষেকটি
ইঙ্গিতের সাহায়ে তাঁহার জন্মকাল-সম্বন্ধে একটা মোটামুটি ধারণা করা
যাইতে পারে। ১৪০০ শকে যদি নারায়ণীর বয়স্ চার বৎসর হয়, তাহা
হইলে ১৩১৪ বৎসর বয়সের পূর্বের তাঁহার সন্তান-সন্তাবনা হইতে পারে
না; অর্থাৎ ১৪৪০ শক বা ১৫১৮ গৃন্টান্দের পূর্বের রুদাবনদাসের জন্ম
হয় নাই। ঐ সময়ে ঐতিত্তা নীলাচলে অবস্থান করিতেছিলেন।
বুন্দাবনদাস ঐতিত্তার নবয়াপ লালা বর্ণনা-প্রসঙ্গে বারংবার বলিয়াছেন যে

হইল পাপিষ্ঠ জন্ম নহিল তথনে। হইয়াও বঞ্চিত সে-সুখ দরশনে। ১৮৮৯২

কবি এই উক্তি বিশ্বস্তবের অধ্যাপক-জীবনের সমাগুকিল-বর্ণনা-উপলক্ষেও করিয়াছেন (২।১।১৫৫)। বৃন্দাবনদাস মধ্যথণ্ডে বিশ্বস্তবের গয়া হইতে প্রভ্যাবর্ত্তন আরম্ভ করিয়া সন্নাস-গ্রহণ পর্যান্ত ঘটনা বর্ণনা করিয়াছেন। এই সমস্ত ঘটনা এক বৎসরকাল মাত্র হইয়াছিল; যথা—

> মধ্যথণ্ড কথা ভাই শুন একচিত্তে। বৎসরেক কীর্ত্তন করিলা যেই মতে॥ ২।১।১৭১

কবিকর্ণপূরও বলেন যে পৌষ মাসের শেষে গয়া হইতে ফিরিয়া বিশ্বস্তর
মিশ্র গ্রীষ্মকাল পর্যান্ত অধ্যাপনা করিয়াছিলেন ( শ্রীচৈতক্সচরিতায়ত
মহাকারা ৫।০০-৩৫)। তারপর আট মাসকাল কার্ত্তনে ও নর্তনে
অতিবাহিত করার পর তিনি সন্ন্যাস-গ্রহণ করেন।

वृन्नायनमाम ও कविकर्गशृद्धत्र উक्ति इहेट वृक्षा याहेटहरू त्य



### শ্রীচৈতন্যচরিতের উপাদান

300

১৪৩১ শকের গ্রীমকালে যথন শ্রীচৈতন্য অধ্যাপনা বন্ধ করেন, তথ বন্দাবনদাসের জন্ম হয় নাই।

১৪৪০ শকে বা ১৫১৮ খুফীন্দে রন্দাবনদাস যদি জন্মগ্রহণ করিয়া থাকেন তবে ১৫৩৩ খুফীন্দে শ্রীচৈতন্তের তিরোভাবের সময়ে চাঁহার বয়স্ মাত্র ১৫ বৎসর হয়। ঐ বয়সের বালকের পক্ষে পুরীতে যাইয়া শ্রীচৈতত্তদর্শন সম্ভব নহে। রন্দাবনদাসও কোথাও এমন আভাস দেন নাই যে তিনি শ্রীচৈতত্তকে দর্শন করিয়াছেন। ১৪৪০ শকের পূর্বের যেমন রন্দাবনদাসের জন্ম হইতে পারে না, তেমনি ঐ সময়ের বেশী পরেও তাঁহার জন্মগ্রহণ সম্ভব নহে; কেন-না তিনি নিত্যানন্দ প্রভুর অন্তরপ্প সন্দ পাইয়াছিলেন এবং নিত্যানন্দপ্রভু শ্রীচৈতত্তের তিরোভাবের পর দীর্ঘকাল ধরাধামে ছিলেন না।

"এটিতত্তভাগবতের" আভ্যন্তরীণ সাক্ষ্য-বিচারপূর্বক আমি বৃন্দাবনদাসের জন্মকাল ১৪৪০ শকের বা ১৫১৮ খৃট্টাব্দের কাছাকাছি স্থির
করিতে চাহি। বৈশ্ববদাহিতা লইয়া যাঁহারা আলোচনা করিয়াছেন,
তাঁহারা সাধারণতঃ কোন শোনা কথার উপর বিশ্বাস করিয়া বা অধিকাংশ
ক্ষেত্রে দৈববাণী শুনিয়া সন ও তারিধ লিথিয়াছেন। কি প্রমাণ-বলে ঐরপ
সন ও তারিধ তাঁহারা নির্ণয় করিলেন সে বিষয়ে পাঠকদিগকে কিছুই
বলেন নাই। বৃন্দাবনদাসের জন্মসময়-সম্বন্ধে এইরূপ জনশ্রুতিমূলক
ক্ষেক্টি মতবাদের উল্লেখ করিতেছি।—

C时刘本 প্রায় **बुन्ताबन्दारमब** জন্মকাল গৌরপদতরঙ্গিণী, ১ম সং, ১৪২৯ শক, বৈশাখা ১। জগদ্বৰু ভদ্ৰ উপক্রমণিকা, পূ ১২৮ কুফা ঘাদশী অন্বিকাচরণ ত্রন্সচারী বন্ধরত্ব, ২য় ভাগ, পৃত ৯ B বিকৃপ্ৰিয়া পত্ৰিকা, ৮০১২।৫৪০ পৃ অচ্যতচরণ চৌধুরী ঐ বৈক্ষৰ ইতিহাস, পৃ° ৪০ र्वतिलाल हरद्वाशाधाय ঐ D হরিমোহন মুখোপাধ্যায় বঙ্গভাষার লেখক, পৃত ৯৬ মুরারিলাল অধিকারী देवक्षव निश्-मिनी, भुः ৯० D



#### শ্রীচৈতগুভাগবত

১৪০৭ শকে ঐতিতভার জন্ম, ১৪২৯ শকে তাঁহার বয়স্ ২২ বংসর।
বন্দাবনদাসের মতে ঐতিতভার ২০ বংসর বয়সের সময়ে নারায়ণীর বয়স্
৪ বংসর। উলিথিত ব্যক্তিগণের মত মানিয়া লইতে হইলে বলিতে
হয় যে নারায়ণীর তিন বংসর বয়সে ছেলে হইয়াছিল।

২। ক্ষীরোদচন্দ্র রায়চৌধুরী মহাশয় বলেন—বৃন্দাবনদাস ১৪৫৯ শকে অর্থাৎ ১৫০৭ খৃফীন্দে জন্মগ্রহণ করেন। ঐ সময়ে তাঁহার জন্ম হইলে অন্ততঃ বোল বৎসরের পূর্বের তাঁহার দীক্ষা হইতে পারে না। ১৪৭৫ শক পর্যান্ত অর্থাৎ ত্রীচৈতত্যের তিরোভাবের প্রায় ত্রিশ বৎসর পরেও নিত্যানন্দ বাঁচিয়া ছিলেন, এমন কোন প্রমাণ নাই। নিত্যানন্দ বার বৎসর বয়সে সন্ন্যাসীর সহিত গৃহত্যাগ করেন।—

হেন মতে দ্বাদশ বৎসর থাকি ঘরে।
নিত্যানন্দ চলিলেন তীর্থ করিবারে॥
তীর্থযাত্রা করিলেন বিংশতি বৎসর।
তবে শেষে আইলেন চৈতন্ত-গোচর॥ ১।৬।৬৬

অর্থাৎ নিত্যানন্দের বয়স্ যখন ৩২, বিশ্বস্তরের বয়স্ তখন ২৩ বৎসর; ১৪৩০ শকে নিত্যানন্দের বয়স্ ৩২ বৎসর হইলে, ১৪৭৫ শকে তাঁহার বয়স্ হয় ৭৭। এত বৃদ্ধকাল পর্যান্ত নিত্যানন্দ জীবিত ছিলেন না বলিয়া জীরোদবাবুর নির্দ্ধিষ্ট কাল গ্রহণ করা যায় না।

- ৩। ডক্টর দীনেশচন্দ্র সেন—বঙ্গভাষা ও সাহিত্য (১ম সং, পৃ° ১৯৩)

  —১৪২৯ শক; (৫ম সং, পৃ° ৩০৯) ১৪৫৭ শক। প্রথম ও বিতীয়
  শ্রেণীর লেথকগণের মতের বিরুদ্ধে যাহা বলিয়াছি, ডক্টর সেনের উভয়
  মত-সম্বন্ধেও তাহা প্রযোজ্য।
- 8। ঐত্রুমার সেন—("বঙ্গ শ্রী", আখিন, ১৩৪১, পৃত ৩২৬)— বোড়শ শতকের প্রথম দশকের শেষভাগে অথবা বিতীয় শতকের প্রারম্ভে অর্থাৎ তাঁছার মতে ১৫০৭ হইতে ১৫১৫ খৃষ্টাব্দের মধ্যে। ১৫০৭ গৃষ্টাব্দে নারায়ণীর বয়স্ তিন বংসর; ১৫১৫ গৃষ্টাব্দে ১১ বংসর। অতএব উভয় তারিথই অসম্ভব।

৫। প্রভূপাদ অভূলকৃষ্ণ গোস্বামী বলেন, "মহাপ্রভূর সন্মাস গ্রহণ করার তিন-চারি বংসর পরে ঠাকুরের জন্ম হয়।" তাহা হইলে ৮৯ বংসর বংসে নারায়ণীর সন্তান হওয়া স্বীকার করিতে হয়।

বর্তমান নবছাপ রেল-ফৌশন ছইতে তিন মাইল ও নবছাপের মালকপাড়া ছইতে তই মাইল উত্তর-পশ্চিমে মামগাছী প্রাম। সেইখানে নারায়ণীর সেবা পাট আছে। জনপ্রবাদ যে, ঐ সেবা বাহুদেব দত্তর স্থাপিত। অনুমান হয়, বাহুদেব দত্ত নারায়ণীর উপর সেবার ভার অপ্পক্রিয়া সমাজ-পরিত্যক্তা বিধবার ভরণপোষণের উপায় করিয়া দেন। বুন্দাবনদাস বাহুদেব দত্তের কারুণ্যের যেরূপ প্রশংসা করিয়াছেন, এরূপ আর অন্য কোন ভক্তের করেন নাই। ঐতিত্যের গৌড়-ভ্রমণপ্রসঙ্গে বুন্দাবনদাস বাহুদেব দত্তের প্রশংসা সবিস্তারে উচ্চুসিতস্বরে করিয়াছেন; যথা—

জগতের হিতকারী বাহুদেব দত্ত। সর্বভূতে কুপালু চৈতগু-রসে মস্ত। গুণগ্রাহী অদোধ-দরশী সভা প্রতি। উপ্তরে বৈশ্ববৈ যথাযোগ্য রতি মতি॥ তারা৪৪৬

"জগতের হিতকারী" ও "অদোষ-দরশী" বিশেষণ দেখিয়া অনুমান হয়, বৃন্দাবনদাস এখানে ব্যক্তিগত কৃতজ্ঞতা জ্ঞাপন করিতেছেন। মামগাছীতে বৃন্দাবনদাসের বাল্যকাল অতিবাহিত হইয়াছিল। এই স্থানে বাস করিবার সময়ে তিনি নিত্যানন্দ প্রভুর কুপা পাইয়াছিলেন। নিত্যানন্দ অনেক সময়ে বড়গাছীতে কাটাইতেন।

বিশেষ স্কৃতি অতি বড়গাছী গ্রাম।
নিত্যানন্দ স্বরূপের বিহারের স্থান। ৩৬ ৪৭৩
বড়গাছী-নিবাসী স্কৃতি কৃঞ্চদাস।
ভাঁহার মন্দিরে নিত্যানন্দের বিলাস। ৩৬ ৪৭৪

"ভক্তি-রত্রাকরের" মতে (হাদশ তরঞ্জ, পূ° ৯৯ - ৯২) কুফদাসের অগ্রহ্ধ সূর্যাদাসের ছই ক্যাকে নিত্যানন্দ বিবাহ করেন। বিশেষ লক্ষ্য করিবার বিষয় এই যে রন্দাবনদাস স্থ্যদাস, বন্তথা, জাজবী বা বীরভদ্রের নামও উল্লেখ করেন নাই। যাহা হউক মামগাছী হইতে বড়গাছী মাত্র তিন মাইল দ্রে, সেই জন্ম মনে হয়, বাল্যকালেই রন্দাবনদাস নিত্যানন্দের সঙ্গ পাইয়াছিলেন।

বৃন্দাবনদাস যে বিশেষ পাণ্ডিত। অর্জন করিয়াছিলেন সে বিষয়ে সন্দেহ নাই। শ্রীমন্তাগবত বোধ হয় তাঁহার কণ্ঠস্থ ছিল, তাহা না হইলে অনেক স্থলে ভাগবতের আক্ষরিক অনুবাদ প্রত্যমধ্যে সয়িবেশ করিতেন না। গীতা ও ভাগবত ছাড়া নিম্নলিখিত গ্রন্থগুলি হইতেও তিনি শ্লোক উদ্ধার করিয়াছেন—১। যামুন মুনির স্তোত্ররত্ব, পৃ° ৫; ২। পদ্মপুরাণ, পৃ° ২৬০, ০০৮, ৪০৭; ০। মন্মুসংহিতা, পৃ° ১০২; ৪। নারদীয়-সংহিতা, পৃ° ১২৯, ১৮৮, ০০৮; ৫। বরাহপুরাণ, পৃ° ১০০, ৪৮১; ৬। জৈমিনিভারত, পৃ° ১৪৭; ৭। বিষ্ণুপুরাণ, পৃ° ১৬২, ২৬৯, ৫০০; ৮। শব্ধরভাষ্য, পৃ° ২৮১; ৯। মহাভারত, পৃ° ০৬৭, ৫০ন; ১০। শব্ধরাচার্য্যের বট্পদী স্তোত্ত, পৃ° ৪০২; ১১। মুরারি গুপ্তের কড়চা, পৃ° ১, ৪০৬; ১২। স্বন্দ্রণাণ, পৃ° ৪৪০; ১০। শ্রীহরিভক্তি-স্থাদেয়, পৃ° ৪৮১।

বৃন্দাবনদাস যে শুধু পাশুতাই অর্জন করিয়াছিলেন, তাহা নহে। সঙ্গীত-বিভাতেও তিনি পারদর্শী ছিলেন। তিনি সঙ্গীত রচনা করিয়া তাহাতে রাগরাগিণী যোগ করিয়াছেন।

বৃন্দাবনদাস দেপুড়ে বসিয়া ঐচৈতগুভাগৰত লিখিয়াছিলেন বলিয়া প্রবাদ আছে। সেইখানে তাঁহার প্রীপাট বর্তমান।

# প্রীচৈতভাভাগবতের রচনা-কাল

শ্রীচৈতগুভাগবত কবে রচিত হইয়াছিল তাহা ঠিকভাবে বলা যায় না। প্রস্থের মঙ্গলাচরণের থিতীয় শ্লোকটি মুরারি ওপ্তের কড়চা হইতে উদ্ধৃত। মুরারি ওপ্তের রামাফকের পঞ্চম ও সপ্তম শ্লোকও বৃন্দাবনদাস উদ্ধার করিয়াছেন (এ৪।৪৩৫-৩৭)। ইহা হইতে অনুমান করা যায় যে মুরারির প্রস্থ-রচনার পর শ্রীচৈতগুভাগবত রচিত হইয়াছিল।



১৮৪ শ্রীচৈতব্যচরিতের উপাদান

এই অনুমান কৃষ্ণদাস কবিরাজের নিম্নলিখিত উক্তি-দারা সমর্থিত হয়—

দামোদর স্বরূপ আর গুপ্ত মুরারি।
মুখ্য মুখ্য লীলাসূত্র লিখিয়াছে বিচারি।
সেই অনুসারে লিখি লীলাসূত্রগণ।
বিস্তারি বর্ণিয়াছেন দাস বুন্দাবন। ১।১৩।৪৪

অধাৎ মুরারির সূত্র রুন্দাবনদাস বিস্তার করিয়া লিখিয়াছেন।
১৫৭৬ খৃষ্টাব্দে গৌরগণোদ্দেশ-দীপিকা লিখিত হয়। তাহাতে আছে—
বেদব্যাসো য এবাসীদ্দাসো রুন্দাবনোহধুনা।
সথা যঃ কুন্থুমাপীড়ঃ কার্য্যতন্তঃ সমাবিশৎ॥

১৫৭৬ খুকীব্দে শ্রীচৈতভাতাগবতের খ্যাতি এত দূর স্থপ্রতিষ্ঠিত হইয়াছিল যে তাঁহাকে বেদব্যাসের অবতার বলা হইয়াছে। আরও লক্ষ্য করিবার বিষয় এই যে পাণ্ডিত্যের গুণে শ্রীক্ষাব গোস্বামা যেমন শ্রীচৈতভাের ঘনিষ্ঠ সংসর্গে না আসিয়াও গোরগণের মধ্যে স্থান পাইয়াছেন, তেমনি বৃন্দাবনদাসও গৌরগণের মধ্যে সাদরে উল্লিখিত হইয়াছেন। শ্রীচৈতভাতাগবত রচিত হইবার পর অন্ততঃ একপুরুষের জ্বাবনকাল অতিক্রান্ত হইলে গৌরগণোদ্দেশ-দীপিকা রচিত হইয়াছিল মনে হয়। এরূপ মনে করিবার কারণ এই যে বৃন্দাবনদাস ভাবিয়াছিলেন, তাঁহার অপেক্ষা অধিকতর শক্তিসম্পার বছ কবি পুরাণাকারে শ্রীচৈতভারে জ্বাবনী লিখিবেন এবং তাঁহারা বেদব্যাস আখ্যা পাইবেন; যথা—

মধ্যথণ্ডে আছে আর কত কোটি লীলা।
বেদব্যাস বর্ণিবেন সে সকল খেলা॥ চৈ ভা , ১।১।১১
দৈবে ইহা কোটি কোটি মূনি বেদব্যাসে।
বর্ণিবেন নানামতে অশেষ বিশেষে॥ ঐ, ২।২৬।৩৬৮

তিনি নিজে বেদব্যাসত্বের দাবী করেন নাই। কিন্তু গৌরগণোদ্দেশ-দীপিকা রচিত হইবার সময়েই স্থির হইয়াছিল যে, যে হেতু শ্রীমন্তাগবতে



#### শ্রীচৈতন্যভাগবত

কুন্দলালার বর্ণনা করিয়াছেন বেদবাাস, সেই হেতু প্রীচৈতভালালা বর্ণনা যিনি করিয়াছেন তিনিই বেদবাাস। প্রীচৈতভাভাগবত রচনার পর অন্ততঃ ২৫।৩০ বৎসর গত না হইলে বুন্দাবনদাস বেদবাাসরূপে পূজিত হইতেন কি-না সন্দেহ। তুই থানি গ্রন্থ রচনাকালের মধ্যে এইরূপ ব্যবধান অনুমান করিবার আর একটি কারণ এই যে গৌরগণোদ্দেশ-দীপিকায় সকল ভক্তের তত্ত্ব বা কুঞ্জলীলার নাম লিখিত হইয়াছে, কিন্তু বুন্দাবনদাস বলিতেছেন যে—

নিত্যানন্দ স্বরূপের নিষেধ লাগিয়া। পূর্ববনাম না লিখিল বিদিত করিয়া॥ ৩৮।৪৭৩

২৫।৩০ বংসর গত না হইলে নিত্যানন্দের আদেশ এরপভাবে বিশ্বত হওয়ার সঙ্গত কারণ খুঁজিয়া পাওয়া যায় না। শ্রীচৈতভাভাগবত-রচনার সময়ে সকল ভক্তের তত্ত্বও কুম্পাইকপে নিণীত হয় নাই; যথা—

> ভাগবতরূপে জন্ম হইল সভার। কুফা সে জানেন যার অংশে জন্ম যার॥ ১।২।১৬

এইরূপ যুক্তিবলে বলা যাইতে পারে যে ১৫৪৬ হইতে ১৫৫০ খুফীব্দের মধ্যে প্রীচৈত্যভাগবত রচিত হইয়াছিল। রন্দাবনদাসের জন্ম যদি ১৫১৮ খুফীব্দে হয়, তাহা হইলে প্রীচৈত্যভাগবতের রচনার সময়ে তাঁহার বয়স্ হয় :৮ হইতে ৩৩ বংসর।

শ্রীচৈত্যভাগবত যে যুবকের রচনা তাহাতে কোন সন্দেহ নাই। প্রস্তের বর্ণনায় অসহিঞ্তা ও যুবজনোচিত তেজস্বিতার যথেক পরিচয় পাওয়া যায়। নিত্যানন্দের তত্তকে যাহারা মানেন না, কবি তাঁহাদের প্রতি বিন্দুমাত্র সহিঞ্তা দেখান নাই।

> এত পরিহারেও যে পাপী নিন্দা করে। তবে লাথি মারো তার শিরের উপরে॥

এই উক্তি তিনি পুনঃপুনঃ করিয়াছেন (পূ ৭১, ১৩৭, ২৪৩, ৩৪১ ও ৪৮৩)। কবি যদি যৌবনের মধ্য বা শেষভাগে গ্রন্থ লিখিতেন তাহা হইলে অধিকতর ধৈর্যা ও ক্ষান্তি প্রদর্শন করিতেন।

### শ্রীচৈতন্যচরিতের উপাদান

জগদদু ভদ্র ও অচ্যুত্তরণ চৌধুরীর মতে শ্রীকৈত্যভাগবত ১৪৫৭ শকে বা ১৫৩৫ থুন্টাব্দে রচিত হয়। শ্রীযুক্ত সুকুমার সেন মনে করেন যে উহারও পূর্বের ইহার রচনা আরম্ভ হয়। তিনি বলেন, "সম্ভবতঃ শ্রীকৈত্যের তিরোভাবের পূর্বেই গ্রন্থের পশুন হইয়াছিল এবং নিত্যানন্দ প্রভুর পূক্র বীরচন্দ্র গোস্বামীর জন্মের পূর্বেই গ্রন্থটি পরিসমাপ্ত ইইয়াছিল।" বৃন্দাবনদাস যখন নিজে বলিয়াছেন যে বিশ্বস্তরের ২৩ বংসর বয়সের সময়ে নারায়ণীর বয়স চার বংসর তখন, সে কথা অবিশাস করিবার উপায় নাই। বৃন্দাবনদাস যদি ১৫১৮ থুন্টাব্দে জন্মগ্রহণ করিয়া থাকেন, তাহা ইইলে ১৫৩৩ ও ১৫৩৫ থুন্টাব্দে তাহার বয়স্ হয় যথাক্রমে ১৫ ও ১৭ বংসর। ঐ বয়সের বালক যে অত গভার শান্তজ্ঞানের ও সঙ্গীত-বিভার পরিচয় দিয়াছেন ইহা ধারণা করা অসম্ভব।

শ্রীচৈতগুভাগবতের কতকগুলি আভান্তরীণ প্রমাণ হইতেও বুঝা যায় যে শ্রীচৈতগু ও নিত্যানন্দের তিরোভাবের অন্ততঃ ১০১৫ বৎসর পরে বৃন্দাবনদাস এই গ্রন্থ রচনা করেন।

(ক) তৈথিক ত্রাহ্মণকে শিশু বিশ্বস্তর বলিতেছেন —

যাবত থাকয়ে মোর এই অবতার। তাবত কহিলে কারে করিব সংহার॥ ১।৩।৩৯

আবার দিখিজয়ি-পরাভব-প্রসঙ্গে পণ্ডিত বিশ্বস্তর বলিতেছেন—

যে কিছু তোমারে কহিলেন সরস্বতী। তাহা পাছে বিপ্রা! আর কহ কাছো প্রতি॥ ১৯১১০০

শ্রীচৈতন্মের তিরোভাবের পর এরপ কাহিনীর প্রচলন এবং এই ধরণের লেখা সম্ভব।

(থ) সর্বশেষ ভূতা তান রন্দাবনদাস। অবশেষ পাত্র নারায়ণী-গর্ভজাত॥ তাণ।৪৭৫

নিত্যানন্দ প্রভু ধরাধামে বর্তমান থাকিলে বৃন্দাবনদাস নিজেকে সর্বশেষ ভূতা বলিয়া অভিহিত করিতেন না। দলে দলে ভক্তগণ যেমন



#### শ্রীচৈতগুভাগবত

নিত্যানন্দের শিশ্য হইয়াছিলেন, তাহাতে প্রভুর জীবদ্দশায় লিখিত প্রস্থে রন্দাবনদাস নিজেকে সর্বশেষ ভূতা বলিতে সাহসী হইতেন না।

> (গ) অভাপিহ বৈঞ্বমণ্ডলে যাঁর ধ্বনি। তৈতভার অবশেষ গাত্র নারায়ণী॥ তাণ।৪৭৫

নারায়ণী জীবিত থাকিলে "অভাপিছ" শব্দ ব্যবহৃত হইত না মনে হয়। শ্রীচৈতত্ত-নিতানন্দের তিরোভাবের ১০৷১৫ বৎসর পরে রচিত না হইলে "অভাপিছ" শব্দ প্রয়োগের কোন সার্থকতা দেখা যায় না।

(খ) ঐতিভত্তভাগবত লিখিবার সময়ে গৌড়ীয় বৈঞ্চবগণ কয়েকটি উপশাখায় বিভক্ত হইয়াছিলেন। প্রথমতঃ, গৌরাক্স-নাগরবাদিগণ, বাঁহাদিগকে কটাক্ষ করিয়া বৃন্দাবনদাস লিখিয়াছেন—

> অতএব যত মহামহিম সকলে। গৌরাজ-নাগর হেন স্তব নাহি বোলে॥ ১৷১০৷১১০

দ্বিতীয়তঃ, অদ্বৈত-সম্প্রদায়—

এই মত অধৈতের চিত্ত না বুঝিয়া।
বোলায় 'অধৈতভক্ত' চৈততা নিন্দিয়া। ২।১০।২০৪
অধৈতরে ভজে গৌরচন্দ্রে করে হেলা।
পুত্র হউ অধৈতের তভু তি হ গেলা। ৩।৪।৪৬০

তৃতীয়তঃ, গদাধর-সম্প্রদায়—

অঘৈতের পক্ষ হৈয়া নিন্দে গদাধর। সে অধন কভো নহে অধৈত-কিষ্কর।

চতুর্থতঃ, নিত্যানন্দ-বিদ্বেষী সম্প্রদায়, যাহাদের মত-খণ্ডন ও নিত্যানন্দের মহিমা-ঘোষণা-উদ্দেশ্যে শ্রীচৈতগুভাগবত লিখিত হইয়াছে—

> এই অবতারে কেহো গোরচন্দ্র গায়। নিত্যানন্দ নাম শুনি উঠিয়া পালায়॥ ২০০১ ৭৮

#### শ্রীচৈততাচরিতের উপাদান

366

শীচৈতভার তিরোভাবের পর ১০।১৫ বংসর অতীত না হইলে অতগুলি পরস্পর বিবদমান উপশাধার স্থাই হইতে পারিত না। প্রসঙ্গক্রমে বলা যাইতে পারে যে বাংলা দেশে যোড়শ শতাক্ষীতে বৈষ্ণবধর্মের ইতিহাসে যাহা ঘটিয়াছিল, উনবিংশ শতাক্ষীতে ব্রাহ্মসমাজের ইতিহাসে পুনরারত্তি ঘটিয়াছে।

৬। মুরারি গুপ্ত, শিবানন্দ সেন, স্বরূপ-দামোদর প্রভৃতি ঐতিচততের পার্ষদগণ ঐতিচততকে কৃষ্ণ বলিয়া ঘোষণা করিয়াছিলেন সত্য, কিন্তু ঐতিচততের জাবনীকে একেবারে কৃষ্ণলীলার ছাচে ফেলিবার চেষ্টা তাঁহারা করেন নাই। এরূপ চেন্টা বৃন্দাবনদাসই প্রথম করেন এবং সেই জত্তই তাঁহার গ্রন্থের নাম ঐতিচততভাগবত। অশুচি স্থানে বসিয়া কথা বলার সময়ে বিশ্বস্তরের দত্তাত্রেয়-ভাব, উপনয়ন-সময়ে বামন-ভাব, সাপের উপর শয়ন করিয়া অনন্তলীলা এবং পিতৃবিয়োগে ক্রন্দনের সময়ে রাম-ভাব দেখাইয়া কবি প্রমাণ করিতে চাহেন যে ঐতিচততে সকল অবতার বর্তমান। বিশেষ করিয়া তিনি ঐকৃষ্ণ। গঙ্গার ঘাটে তাঁহার ব্যবহার দেখিয়া সকলে জগরাথ মিশ্রকে বলেন—

পূরবে শুনিলা যেন নদের কুমার। সেই মত সব করে নিমাই তোমার। ১।৪।৪২

বিশ্বস্তর নবদ্বীপের মাঝে ভ্রমণকালে রজক, গন্ধবণিক্, মালাকার প্রভৃতির বাড়ীতে যান ; কবি তাহা বর্ণনা করিয়া বলেন—

> পূর্বের যেন মধুপুরী করিলা ভ্রমণ। সেই লীলা করে এবে গ্রীশচীনন্দন॥

এইরপ বহু দৃষ্টান্ত দেওয়া যাইতে পারে। ঐতিচত্যভাগবতে অনেক অলোকিক ঘটনাও স্থান পাইয়াছে। মুরারি গুপু নিজের প্রন্থে এমন কথা বলেন নাই যে তিনি বরাহভাবাবিষ্ট বিশ্বস্তরের কুর দেখিয়াছিলেন, কিন্তু রুন্দাবনদাস বলেন—

গর্জে যজ্জ-বরাহ প্রকাশে কুর চারি।



শীচৈতত্যের জীবনী এই ভাবে রূপান্তরিত হইতে তাঁহার তিরোভাবের পর অন্তত: ১৫ বৎসর অতিক্রান্ত হওয়া প্রয়োজন বলিয়া বিবেচনা করি। শীচৈতত্যভাগবভ যে শীচৈতত্যের তিরোভাবের ছই-এক বৎসরের মধ্যে লিখিত হইতে পারে না তাহা দেখান হইল। ঐ গ্রন্থ যে তাঁহার তিরোভাবের ৪০।৪২ বৎসর পরেও রচিত হইতে পারে না তাহা দেখাইতেছি।

ডক্টর দীনেশচন্দ্র সেন মহাশয় অনুমান করেন যে প্রীচৈতন্মভাগবত ১৫৭০ খুফীন্দে রচিত হইয়াছিল। অন্ধিকাচরণ ব্রক্ষানী ও মুরারিলাল অধিকারীর মতে ১৪৯৭ শকে বা ১৫৭৫ খুফীন্দে ঐ গ্রন্থ লিখিত হয়। কিন্তু ১৫৭০ বা ১৫৭৫ খুফীন্দে শ্রীচৈতন্মভাগবত লিখিত হইলে, ১৫৭৬ খুফীন্দে অর্থাৎ তিন বা এক বৎসরের মধ্যে বৃন্দাবনদাস বেদবাাস বলিয়া পূজা পাইতেন না।

১৫৭৩ বা ১৭৭৫ খৃটাব্দে নিত্যানন্দের ভগবতা স্থপতিষ্ঠিত হইয়াছে—
অন্ততঃ তাঁহার নিন্দাকারীর দল ঐ সময়ের মধ্যে নারব হইয়াছে। কিন্তু
শ্রীতৈতগুভাগবতে দেখা যায় যে নিত্যানন্দের বিরুদ্ধবাদিগণ অত্যন্ত প্রবল; যথা—

নিত্যানন্দে যাহার তিলেক দ্বেষ রহে।
ভক্ত হইলেও সে কৃষ্ণের প্রিয় নহে। ১।৬।৬৯
না জানিয়া নিন্দে তাঁর চরিত্র অগাধ।
পাইয়াও বিষ্ণুভক্তি হয় তার বাধ।

—পৃত ১৭৮, ১৮২, ১৮৭, ১৯৬
ভাগবত পড়িয়াও কারো বৃদ্ধিনাশ।
নিত্যানন্দ নিন্দা করে যাইবেক নাশ। ২১৯১২৭
শাস্ত্র পড়িয়াও কারো কারো বৃদ্ধিনাশ।
নিত্যানন্দ নিন্দা করে হবে সর্বনাশ। ২১০১৪৯
গ্রন্থ পড়ি মুগু মুড়ি কারো বৃদ্ধিনাশ।
নিত্যানন্দ নিন্দে বৃথা ঘাইবার নাশ। ২৬১৯৭

## শ্রীচৈতত্ত্বচরিতের উপাদান

320

এই বিরুদ্ধবাদীদিগকে নীরব করিবার জন্ম শ্রীচৈতনাভাগবতের প্রারম্ভে বলরামের রাসলীলার কথা শাত্রে আছে কি না বিচার করা হইয়াছে। শ্রীচৈতন্মের জীবনী লিখিতে যাইয়া কবি বিংশ সংখ্যক প্রারেই আরম্ভ করিলেন—

যে জ্রীসন্ধ মুনিগণে করেন নিন্দন। তানাও রামের রাসে করেন স্তবন ।

বলরামের রাস যদি শাস্ত্রীয় বলিয়া প্রমাণিত হয়, তাহা হইলে নিত্যানন্দের সহিত বতুধা ও জাহুবীর লীলার সমর্থন পাওয়া যায়; কেন-না

> দ্বিজ বিপ্র আকাণ যে হেন নাম-ভেদ। এই মত নিত্যানন্দ অনন্ত বলদেব॥ ১।১।৮

নিত্যানন্দের তিরোধানের অল দিন পরে তাঁহার ভক্ত ও বিরুদ্ধবাদী দলের মধ্যে তুমুল বিতর্ক হওয়া সম্বব। দিন যতই অতাত হয়, কুৎসা ততই চাপা পড়ে। এই জন্ম শ্রীচৈতন্তের তিরোভাবের ৪০ বা ৪২ বৎসর পরে শ্রীচৈতন্তভাগবতের রচনা হয় নাই বলিয়া মনে হয়।

আর একটি কারণেও মনে হয় যে অত পরে ঐটিচতগুভাগবত রচিত হয় নাই। ঐটিচতগুভাগবতে একবার মাত্র বিফুপ্রিয়ার নাম করা হইয়াছে; যথা—

> যেন কৃষ্ণ করিণীতে অক্যোক্ত উচিত। সেই মত বিষ্ণুপ্রিয়া নিমাই পশুত ॥ ১।১০।১১১

অন্যান্য সকল স্থানে বিষ্ণুপ্রিয়াকে তত্ত-হিসাবে লক্ষ্মী বলিয়া উল্লেখ করা হইয়াছে। ইহা হইতে মনে করা যাইতে পারে যে এন্থরচনার সময় বিষ্ণুপ্রিয়া দেবা জীবিত ছিলেন, এবং তাঁহার প্রতি সম্রমবশতংই কবি বার বার তাঁহার নাম করেন নাই।

এই সব যুক্তিবলে আমি মনে করি যে ঐটচতত্তভাগবত ঐটচতত্ত্বর তিরোভাবের আতুমানিক ১৫ বৎসর পরে রচিত হইয়াছিল। রামগতি ভাষরত্ব মহাশয় যে ১৫৪৮ থুফাব্দে শ্রীতৈভগুভাগবতের রচনা-কাল-নির্দ্দেশ করিয়াছিলেন তাহাই যুক্তিসঞ্জ মনে হয়।

এই প্রকার কাল-নির্দেশের বিরুদ্ধে ছুইটি যুক্তি উপস্থিত করা যাইতে পারে। প্রথমতঃ, কবি বলিতেছেন যে—

অন্তর্যামী নিজানন্দ বলিলা কৌতুকে।

চৈত্যুচরিত্র কিছু লিখিতে পুস্তকে। ৮ ও ১৩৬ পৃণ্
নিত্যানন্দ স্থরূপের আজ্ঞা করি শিরে।

সূত্রমাত্র লিখি আমি কুপা অনুসারে। ১৷১১৷১১৭
তাঁহার আজ্ঞায় আমি কুপা অনুরূপে।
কিছুমাত্র সূত্র আমি লিখিল পুস্তকে। ২৷১৬৷৩১৮
সেই প্রভু কলিযুগে অবধৃত রায়।

সূত্র মাত্র লিখি আমি তাহান আজ্ঞায়। ৩১৷১৩৫

নিত্যানন্দের আদেশে যে গ্রন্থ রচনার প্রবৃত্তি, তাহা শ্রীতৈ গ্রের তিরোভাবের ১৫ বংসর পরে লিখিত হইতে পারে কি ? আমার মনে হয় তাহা অসম্ভব নহে। নিত্যানন্দ প্রভুর বৃদ্ধ-বয়সে বৃন্দাবনদাস তাহার শিশ্র হয়েন। তিনি নিত্যানন্দের নিকট সব বিবরণ শুনিয়াছিলেন। কিন্তু গ্রন্থ-রচনা শেষ করিবার সময় নিত্যানন্দের তিরোভাব ঘটিয়াছিল। ১৫৪২ গুন্টাব্দে কবিকর্ণপূর শ্রীচৈতগ্রচরিতামূত মহাকাব্য রচনা করেন; তাহাতে বৃন্দাবনদাসের নাম বা শ্রীচৈতগ্রভাগবতের কোন প্রভাব নাই। স্বতরাং ঐ গ্রন্থ রচনার পাঁচ-ছয় বংসর পরে শ্রীচৈতগ্রভাগবত লিখিত হইয়াছিল অনুমান করায় কোন দোষ হয় না।

ষিতীয়তঃ, বুন্দাবনদাস লিখিয়াছেন যে-

অভাপিহ শ্রীবাসেরে চৈতগু-কুপায়। দ্বারে সব উপসন্ন হইতেছে লীলায়। ৩৫।৪৪৮

আপাতদৃষ্টিতে মনে হয় যে এই পথার লিখিবার সময় শ্রীবাস জীবিত ছিলেন। কিন্তু ইছার অর্থ এরূপও ছইতে পারে যে শ্রীবাসের প্রতি

# শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

শ্রীচৈতত্তের বরদান-হেতু আজও অর্থাৎ শ্রীবাদের তিরোভাবের পরও সমস্ত দ্রবা তাঁহার গৃহে আসিয়া উপস্থিত হয়। শ্রীচৈতত বর দিয়াছিলেন যে—

> স্থাবে জীনিবাস তুমি বসি থাক ঘরে। আপনি আসিবে সব তোমার ছয়ারে॥

শ্রীবাসের জীবদ্দশায় যে দ্রব্যসামগ্রী মাসিবে তাহাতে আর বিশ্বয়ের কথা কি ? "অভাপিহ" শব্দের অর্থ যে শ্রীবাসের তিরোধানের পরও।

পূর্বর পক্ষের যুক্তি খণ্ডন করিয়া আপাততঃ সিদ্ধান্ত করা যাইতেছে যে ১৫৪৮ খুন্টাব্দে শ্রীচৈতভাভাগবত রচিত হইয়াছিল।

# ত্রীতৈভভাগৰতের প্রামাণিকতা-বিচার

শ্রীতৈতন্তর জীবনের ঘটনা-সম্বন্ধে শ্রীতৈতন্তভাগবতের বর্ণনা কতটা নির্ভরযোগ্য তাহা বিচার করা প্রয়োজন। এই বিচার-কালে প্রথমে দেখিতে হইবে রন্দাবনদাস কিরূপে তথ্য-সংগ্রহ করিয়াছিলেন। তিনি নিজে শ্রীতৈতন্তকে দর্শন করেন নাই। তবে যাহারা শ্রীতৈতন্তের অন্তরন্ধ সন্ধ-লাভ করিয়া ধন্ত হইয়াছিলেন, তাহাদের মধ্যে অনেকের নিকট হইতে প্রভূব লীলাকাহিনী শুনিবার সৌভাগ্য তাহার হইয়াছিল।

বৃন্দাবনদাস শ্রীবাসের জাতুপুজ্রার পুজ্র। সন্নাস-গ্রহণের এক বংসর পূর্বের প্রভু যে অপূর্বের প্রেমভক্তি প্রদর্শন করিয়াছিলেন, ভাহার কেন্দ্র ছিল শ্রীবাসের বাড়া। কিন্তু কবি কোথাও এরূপ ইন্ধিত করেন নাই যে তিনি শ্রীবাস, শ্রীরাম বা নিজের জননা নারায়ণীর নিকট লীলাকাহিনী শুনিয়াছেন। যদি শ্রীবাসের বাড়ীর লোকে তাঁহাকে দৌহিত্র বলিয়া স্বীকার না করিয়া থাকেন ও কবির বাল্যাবস্থায় নারায়ণীর পরলোক্র গমন ঘটিয়া থাকে তাহা হইলে এরূপ নারবতার অর্থ বুঝা যায়। কবি সাধারণভাবে উল্লেখ করিয়াছেন যে—

বেদগুহা চৈতন্যচরিত কেবা জ্বানে। তাহা লিখি যাহা শুনিয়াছি ভক্ত-স্থানে। পৃ৽৮



#### শ্রীচৈতগুভাগবত

এই ভক্তগণ-মধ্যে শ্রীবাসের বাড়ীর কেছ ছিলেন কি না নিশ্চয় করিয়া বলা যায় না। বৃন্দাবনদাসের বর্ণনার প্রধান উপজ্জীব্য ছিল নিত্যানন্দ প্রভুর উক্তি।

> নিতানন্দ প্রভু-মুখে বৈষ্ণবের তত্ত্ব। কিছু কিছু শুনিলাভ সবার মহত্ত্ব। ২।২০।৩০৯

নিত্যানন্দ প্রভু রন্দাবনদাস ঠাকুরকে ঐতিচতগুলীলার বিস্তৃত বর্ণনা দিয়াছিলেন এবং কি ভাবে গ্রন্থ লিখিতে হইবে তাহাও বলিয়াছিলেন মনে হয়; কেন-না নিত্যানন্দ ভক্তগণের পূর্বব-নাম লিখিতে নিষেধ করিয়া-ছিলেন (পৃত্ত ৪৭৩)।

নিত্যানন্দ বাতীত ঐতিচতত্যের প্রধান পার্যদগণের মধ্যে গদাধর গোস্বামীর নিকটও তিনি অনেক ঘটনার বিবরণ শুনিয়াছিলেন; যথা—

> যেরূপ কুষ্ণের প্রিয় পাত্র বিচ্চানিধি। গদাধর শ্রীমুখের কথা কিছু লিখি॥ ৩।১১।৫১৭

কেহ কেহ অনুমান করেন যে বুন্দাবনদাস অধৈত প্রভুর নিকট কোন কোন কথা শুনিয়াছিলেন। কিন্তু যে ভাবে অধৈতের কথা গ্রন্থমধ্যে আছে তাহাতে নিঃসন্দেহ হওয়া যায় না।

> সভার ঈশ্বর প্রভূ গোরাক্সফুন্দর। এ কথায় অধৈতের প্রীত বহুতর॥ অধৈতের শ্রীমুখের এ সকল কথা। ইহাতে সন্দেহ কিছু না কর সর্ববধা॥ ২।১০।২৩৪

ইহা হইতে বুঝা যায় না যে বৃদ্ধাবনদাস নিজে ঐরপ উক্তি অধৈতের নিকট শুনিয়াছিলেন। ভক্ত-মহিমা-বর্ণনা-উপলক্ষে কবি লিখিয়াছেন—

> শ্রীমুখে অধৈতচন্দ্র বারবার কহে। এ সব বৈফাব দেবতারো দৃশ্য নহে।

১ প্রাবৃক্ত প্রকৃষার দেন—বল্পী, আখিন ১০৪১, পু" ৩২৬, পাষ্টীকা



## শ্রীচৈতন্যচরিতের উপাদান

ক্রন্দন করিয়া কহে চৈতত্ত-চরণে। বৈষ্ণবে দেখিল প্রভু তোমার কারণে। তা৯।৪৯৭

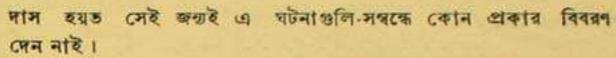
এই বর্ণনা-সম্বন্ধেও উপরের মন্তব্য প্রযোজ্য।

নিত্যানন্দ প্রভু ভাবের মানুষ। বৃন্দাবনদাস তাঁহার ভাবোন্মাদনার যে অপূর্বৰ আলেখা অন্ধন করিয়াছেন ভাছাতে বিশেষ অভিরঞ্জন নাই বলিয়া মনে হয়। গিনি পরনের কাপড় সামলাইয়া উঠিতে পারেন না, এক পথ ধরিতে অন্য পথে চলিয়া যান, তিনি যে রুদ্ধবয়সে শ্রীচৈতন্তের বহিরক জীবনের ঘটনার প্রান্পুর বর্ণনা যথায়পভাবে দিয়াছেন তাহা সম্ভব মনে হয় না। তবে যে সব ঘটনা ঘটবার সময়ে নিত্যানন্দ প্রভু উপস্থিত ছিলেন সেগুলির সম্বন্ধে বৃন্দাবনদাসের বর্ণনা মোটামুটিভাবে সত্য বলিয়াই মানিয়া লইতে হইবে। বিশ্বস্তুর মিশ্রের গয়া হইতে ফিরিয়া আসার পর অর্থাৎ তেইশ বৎসর বয়সের সময়ে নিত্যানন্দের সহিত তাঁহার মিলন হয়। শীচৈত্যভাগবতের মধাণণ্ডের তৃতীয় অধ্যায় হইতে প্রস্থের শেষ অধায় পর্যান্ত বর্ণিত ঘটনার মধ্যে অধিকাংশগুলির সহিত নিতাানন্দ ঘনিষ্ঠভাবে সংশ্লিষ্ট ছিলেন। শ্রীচৈতত্তের জীবনের যে সকল ঘটনার সহিত নিত্যানদের বিশেষ সম্পর্ক ভিল না, কবি সেগুলি হয় বাদ দিয়াছেন, না হয় অতি সংক্ষেপে বর্ণনা করিয়াছেন। উদাহরণস্বরূপ বলা যাইতে পারে যে তিনি গ্রন্থের প্রারম্ভে সূত্ররূপে নিম্নলিখিত লীলার উল্লেখ করিয়াছেন, কিন্তু গ্রন্থমধ্যে তাহার বর্ণনা করেন নাই ৷—

> শেষথণ্ডে সেতৃবন্ধে গেলা গৌর রায়। ঝাড়িথণ্ড দিয়া পুন গেলা মণুরায়॥

শেষথণ্ডে গৌরচন্দ্র গেলা বারাণসী।
না পাইল দেখা যত নিন্দুক সন্মাসী॥
শেষথণ্ডে পুন নীলাচলে আগমন।
অহর্নিশ করিলেন হরি সঙ্কীর্তন॥

নিত্যানন্দ প্রভু উল্লিখিত একটি ঘটনাও প্রত্যক্ষ করেন নাই; বৃন্দাবন-



শ্রীচৈতগুভাগবত যে অসমাপ্ত গ্রন্থ সে বিষয়ে সন্দেহ নাই। এই গ্রন্থ বৈষ্ণবসমাজে এত আদৃত হইয়াছিল যে লোকে যে ইহার শেষের অধ্যায়ত্রয় বাদ দিয়া পুথি নকল করিবে তাহা সম্ভব নহে। সেই জগ্র অম্বিকাচরণ ত্রন্থাচারি-কর্তৃক প্রকাশিত শ্রীচৈতগুভাগবতের পরিশিক্ট বলিয়া কথিত অধ্যায়ত্রয়কে অকৃত্রিম বলিয়া গ্রহণ করা যায় না।

সে যাহা হউক, ক্রম অনুসারে যেখানে ক্রীচৈতত্তের দাক্ষিণাত্তাভ্রমণ, রন্দাবন-গমন ও বারাণসীতে উপস্থিতি বর্ণনা করা উচিত ছিল সে
সব স্থানে রন্দাবনদাস কোন প্রকার বিবরণ লিপিবদ্ধ করেন নাই।
হয়ত কবির ভারাবেশে এরূপ ঘটিয়াছে; কিন্তু অধিকতর সম্ভাব্য অনুমান
যে তিনি নিত্যানন্দ প্রভুর নিকট এ সব কথা শুনেন নাই বলিয়াই কিছু
লেখেন নাই। শেষোক্ত অনুমান যদি যথার্থ বিবেচিত হয়, তাহা হইলে
বলিতে হইবে যে কবি বিশিষ্ট সাক্ষীর নিকট না শুনিলে কোন ঘটনা
লিখিতে রাজী ছিলেন না।

বৃদ্ধাবনদাসের বর্ণনার ঐতিহাসিক মূল্য কিন্তু চারটি কারণে কিছু শুধ হইয়াছে। প্রথমতঃ, তিনি নিত্যানন্দের ভাবে অমুপ্রাণিত হইয়া ঐচিতত্য-লীলা বর্ণনা করিয়াছেন। প্রত্যেক জাবনচরিত-লেখক নিজের অজ্ঞাতসারে আলোচা জীবনীতে ব্যক্তিগত আদর্শের ছায়াপাত করেন। নিজের ব্যক্তিশকে সম্পূর্ণরূপে বিলুপ্ত করিয়া নৈর্ব্যক্তিক ভাবে জীবনী লেখা এই বৈজ্ঞানিক যুগেও সম্ভবপর হয় নাই। যোড়শ শতাব্দীতে এরূপ রচনার কল্পনা কাহারও মনে উদিত হয় নাই। নিত্যানন্দের চরিত্রে উদ্দামতার একটি ধারা বিভ্যমান ছিল। নিত্যানন্দ-ভক্ত বৃদ্ধাবনদাসের লেখায় ঐচিতত্যের চরিত্রে সেই উদ্দামতা কিছু সংক্রামিত হইয়াছে মনে হয়। ছুইটি উদাহরণ দিতেছি। অবৈত ভক্তি হইতে জ্ঞানকে বড় বলায়

পি'ড়া হৈতে অঘৈতেরে ধরিয়া আনিয়া। স্বহস্তে কিলায় প্রভু উঠানে পাড়িয়া॥ ২।১৯।২৯৭

কাজীদলন-প্রসঙ্গে—

ভাঙ্গিলেন সব যত বাহিরের ঘর।
প্রভু বোলে অগ্নি দেহ বাড়ীর ভিতর॥
পুড়িয়া মরুক সর্ববগণের সহিতে।
সর্ববাড়ী বেড়ি অগ্নি দেহ চারি ভিতে॥

শ্রীটৈতন্তের সমসাময়িক অন্তান্ত চরিতকার ও পদকর্তৃগণ যদি তাঁহার চরিত্র-বর্ণনায় অনুরূপ কোন ইন্সিত করিতেন তাহা হইলে উলিখিত ছুইটি বর্ণনাকে ঐতিহাসিক সত্য বলিয়া মানিয়া লইতাম। কিন্তু শ্রীটৈতন্তের চরিত্রের সঙ্গে ঐরপ ঘটনার এতই গভীর বিরোধ যে উহাকে বৃন্দাবনদাসের ব্যক্তিগত আদর্শের ছাপ বলিয়া ধরিয়া লওয়াই অধিকতর সঙ্গত।

শ্রীচৈততভাগবতের ঐতিহাসিক মূল্য আর একটি কারণে ক্ষুর হইয়াছে। রুন্দাবনদাস যথন প্রস্তু-রচনায় প্রস্তুত্ত হয়েন, তথন শ্রীচৈতত্তর সহিত শ্রীক্রকের অভিন্নত্ব দৃঢ়ভাবে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছিল। কবি নিমাইকে রুক্ষরণে স্বীকার করিয়া লইয়া বাল্যলীলা বর্ণনা করিয়াছেন। সন্ন্যাসী শ্রীচৈতত্ত সহস্র সহস্র লোকের নিকট পরিচিত—তাহার সন্ন্যাস-জীবনের ভাব ও ঘটনা-সম্বন্ধে সমসাম্যিক অনেক ব্যক্তিই অল্লাধিক থবর রাখিতেন; ঐ সময়ে তাহার বহিরক্স জীবনের কোন কোন ঘটনার সহিত শ্রীমন্তাগবত-বর্ণিত শ্রীক্রক্ষ-লীলার সাদৃশ্য পাওয়া কঠিন। ভাবের দিক্ দিয়া দেখিতে গেলে বিরহ-কাতরা শ্রীরাধার সহিত শ্রীচৈতত্ত্যের সাদৃশ্য স্থাপ্রন্থটা। এই হিসাবে স্বরূপ-দামোদর যে প্রকারে শ্রীচৈতত্ত্যের তত্ত্ব নিরূপণ করিয়াছিলেন এবং রুন্দাবনের গোস্থামিগণের রচিত সাহিত্যে যাহা প্রচারিত হইয়াছিল তাহার সহিত ঐতিহাসিক শ্রীচৈতত্ত্যের অনেকটা মিল আছে। রুন্দাবনদাসও ছই-এক স্থলে শ্রীচৈতত্ত্যের জীবনে গোপীদের বিরহ ফুটাইয়া তুলিয়াছেন। যেমন গয়া হইতে প্রত্যাগত বিশ্বস্তর মিশ্র গোপীভাবে বিভার হইয়া বলিতেছেন—

প্রভু বোলে দহ্য কৃষ্ণ কোন্ জন ভজে। কৃত্য হইয়া বলি মারে দোষ বিনে। জীজিত হইয়া কাটে জীর নাক-কাণে।



### শ্রীচৈতগুভাগবত

সর্বস্থ লইয়া 'বলি' পাঠায় পাতালে। কি হইবে আমার তাহার নাম লৈলে॥ ২।২৫।৩৫৩

এই অংশ শ্রীমন্তাগবতের ভ্রমরগীতার একটি শ্লোকের (১০।৪৭।১৫) ভাবান্মবাদ।

কিন্তু গ্যাগমনের পূর্বে বিশ্বস্তর মিশ্রের জীবনী বৃন্দাবনদাস কৃষ্ণলীলার ছাঁচে ঢালিয়া বর্ণনা করিয়াছেন। ঐ সময়ে নিতাানন্দের সহিত বিশ্বস্তরের সাক্ষাৎকার ঘটে নাই। বিশ্বস্তরের ভবিশ্বং খ্যাতি এবং অলৌকিক প্রেমভাব-প্রকাশের কথা তথন কেহ বৃথিয়া তাঁহার জীবনের খুঁটিনাটি ঘটনা লিখিয়া রাখেন নাই নিশ্চয়ই; বাঁহারা বালক বিশ্বস্তরকে জানিতেন তাঁহাদের মধ্যে মাত্র মুরারি গুপু শ্রীটেতত্যের জীবনী লিখিয়াছেন। মুরারির "শ্রীকৃষ্ণ-টৈতত্যভরিতের" সহিত বৃন্দাবনদাসের শ্রীটেতত্যভাগবতে বর্ণিত আদি বা বালা লীলার তুলনামূলক বিচার করিলে দেখা যাইবে যে কি করিয়া বিশ্বস্তরের জীবনীতে শ্রীকৃষ্ণলীলার ছাণ পড়িতেছে।

এই তুলনামূলক বিচারের প্রথমেই বলা প্রয়োজন যে মুরারি গুপ্তের প্রস্থে বিশ্বস্তরের বালালীলা-বর্ণনা-উপলক্ষে শ্রীকৃঞ্জীলার সহিত তুলনার যে ইন্সিত আছে বৃন্দাবনদাস তাহাই বিস্তৃত করিয়া বলিয়াছেন। একটি উদাহরণ দেওয়া যাইতেছে। মুরারি লিখিয়াছেন—

> তীর্থভ্রমণশীলস্থ বিজ্ঞারং জনাদিনঃ। ভুজুণ তং স্মরয়ামাস নন্দগেহ-কুতৃহলম্॥ ১।৬।৮

বুন্দাবনদাস মুরারির এই একটি হোকের ঘটনা লইয়া আদিখণ্ডের তৃতীয় অধ্যায়ের ৩৪ হইতে ৪০ পৃষ্ঠা পর্যান্ত লিখিয়াছেন। তৈর্থিক আন্ধাণের অন্ন থাওয়ায় যখন নারীরা নিমাইকে বলিলেন—

> কোথাকার ব্রাহ্মণ কোন্ কুল কেবা চিনে। তার ভাত খাই জ্বাতি রাখিব কেমনে।

GENTRAL LIBRARY

794

### শ্রীচৈতন্মচরিতের উপাদান

তাহার উত্তরে—

হাসিয়া কহেন প্রভূ আমি যে গোয়াল। ব্রাহ্মণের অলে কি গোপের জাতি যায়ে॥

তৃতীয় বার ব্রাহ্মণের অল নষ্ট করার পর নিমাই তাঁহার নিকট উপস্থিত হইয়া বলিলেন—

> আর জন্মে এইরূপ নন্দগৃহে আমি। দেখা দিলাঙ তোমারে না শ্মর তাহা তুমি॥ ১।৩।৩৯

এই পয়ারটি মুরারির পূর্বোন্ধত শ্লোকের ভাবান্থবাদ। কিন্তু ইহার পরই বৃন্দাবনদাসের নিমাই বলিতেছেন—

যাবত থাকয়ে মোর এই অবতার।
তাবত কহিলে কারে করিব সংহার॥
সঙ্কীর্ত্তন আরম্ভে আমার অবতার।
করাইমু সর্ব্বদেশে কীর্ত্তন-প্রচার॥
ত্রহ্মাদি যে প্রেমভক্তিযোগ বাঞ্ছা করে।
তাহা বিলাইমু সর্ব্ব প্রতি ঘরে ঘরে॥
কথোদিন থাক তুমি অনেক দেখিবা।
এ সব আখ্যান এবে কারো না কহিবা॥ ১।০।০৯

মুরারির নিমাই কদাচিৎ ভাবাবেশে নিজেকে ঈশর বলিয়া ঘোষণা করেন, আর রন্দাবনদাসের নিমাই শিশুকাল হইতেই লীলার উদ্দেশ্য কোন কোন ভক্তকে—যথা তৈথিক ত্রাহ্মণকে, পরাভূত দিখিজয়ীকে (১০১১০০) ও তপন মিশ্রকে (১০১০১০৬)—বলিয়াছিলেন।

মুরারি গুপ্ত বিশ্বস্তরকে শিশুকাল হইতেই বৈঞ্বরূপে **অঙ্কন করেন** নাই। বুন্দাবনদাস লিখিয়াছেন—

(ক) যত যত প্রবোধ করেন নারীগণ। প্রভূ পুনঃ পুনঃ করি করয়ে রোদন॥



#### **এটিচতগুভাগবত**

হরি হরি বলি যদি ভাকে সর্বজনে। তবে প্রভু হাসি চান শ্রীচন্দ্রবদনে। ১।গ২৯

- (খ) নামকরণ-সময়ে—
  - সকল ছাড়িয়া প্রভু শ্রীশচীনন্দন। ভাগবত ধরিয়া দিলেন আলিছন॥ ১৷৩৷১১
- (গ) দিন ছুই ভিনে লিখিলেন সর্বব ফলা। নিরস্তর লিখেন কুফোর নামমালা॥ ১।৪।৪০
- (ঘ) ছাত্র বিশ্বস্তর—

যথাবিধি করি প্রভু শ্রীবিষ্-পূজন। তুলসীরে জল দিয়া করেন ভোজন॥ ১।১।৫৭

কবি বিশ্বস্তরকে বাল্যকাল হইতেই এইরূপ ভক্ত করিয়া অন্ধন করা সত্ত্বেও তিনি বৈষ্ণবদের মুখ দিয়া আক্ষেপ করাইয়াছেন—

হেন দিব্যশরীরে না হয় কৃষ্ণ রস।

কি করিব বিভায় হইলে কাল-বশ ॥ ১।৭।৭৭

মানুষের এমন পাণ্ডিত্য দেখি নাই।

কৃষ্ণ না ভজেন সবে এই দুঃখ পাই॥ ১।৮।৮৩

পূর্বের উদ্ধৃত চারটি বর্ণনার সহিত উল্লিখিত তুইটি উক্তির সামঞ্জত করা কঠিন। মুরারি ও কবিকর্ণপূর বলেন না যে গয়া হইতে প্রত্যাগমনের পূর্বের বিশ্বস্তারের ভক্তির কোন লক্ষণ দেখা গিয়াছিল। সেই জন্ম মনে হয় যে বৃন্দাবনদাস ভক্তিভাবের আতিশ্যাবশতঃ শিশু নিমাইকে ভক্তরূপে অঙ্কন করিয়াছেন।

শ্রীচৈত্তগুভাগবতের ঐতিহাসিক মূল্য ক্ষু হইবার তৃতীয় কারণ ক্রমভন্দ দোষ। কবি নিজেই বলিয়াছেন—

> এ সব কথার নাহি জানি অমুক্রম। যে তে মতে গাই মাত্র কৃষ্ণের বিক্রম। ২০১৯০০২



### শ্রীচৈতহাচরিতের উপাদান

এ সব কথার অনুক্রম নাহি জানি। যে তে মতে চৈতল্যের বল সে বাথানি॥ তা৫।৪৪৪

এইরপ ক্রমভন্দ হইবার কারণ এই যে কবি ঐতিহাসিক পারপ্পর্য্য বা ক্রমের দিকে দৃষ্টি রাখিবার প্রয়োজন বোধ করেন নাই। তাঁহার নিকট প্রত্যেকটি লীলাই নিত্য। আর কালের যে বোধ ঐতিহাসিকের ঘটনা-বর্ণনার ভিত্তি, তাহা ভক্ত-কবির নিকট অসমগ্র দৃষ্টির পরিচায়ক। কবি বলেন—

বৎসরেক নাম মাত্র কত যুগ গেল।

চৈতত্য-আনন্দে কেহ কিছু না জানিল।
বেন মহারাস-ক্রীড়া কত যুগ গেল।
ভিলার্দ্ধেক হেন সব গোপিকা জানিল। ২৮৮২১৬

শ্রীচৈতভাগবতের ক্রমভঙ্গের কয়েকটি উদাহরণ দিতেছি। পূর্বেই বলিয়াছি যে তিনি সূত্রাকারে প্রভুর দক্ষিণদেশ-গমন ও মধুরা, বারাণসী ভ্রমণ উল্লেখ করিলেও প্রত্নমধ্যে ঐ ঘটনাগুলি একেবারে ছাড়িয়া দিয়াছেন। গৌড়ীয় ভক্তগণের নীলাচল-গমন প্রভুর দক্ষিণদেশ হইতে কিরিবার পর হইলেও, কবি শ্রীচৈতভার গৌড়দেশ-ভ্রমণের পর উহা বর্ণনা করিয়াছেন। মুরারি গুপু কড়চায় বলিয়াছেন যে তিনি নবছীপে শ্রীবাসের অন্ধনে রামাইক পাঠ করিয়াছিলেন (২।৭)। রন্দাবনদাস লিথিয়াছেন যে শ্রীচৈতভা যখন নীলাচল হইতে গৌড়ে আগমন করেন, তখন শান্তিপুরে অবৈতগৃহে মুরারি রামস্তব পাঠ করিয়াছিলেন (২।৪)। শ্রীচৈতভাগগরতে বর্ণিত লৌকিক ঘটনা প্রায়শ্বাই ঐতিহাসিক বটে, কিন্তু ঐ গ্রন্থকে অবলম্বন করিয়া শ্রীচৈতভার জাবনীর ঘটনার ক্রমনিশ্ব করা নিরাপদ্ নহে।

ইতিহাস-হিসাবে ঐতিচতগুভাগবতের চতুর্থ দোষ কবির বর্ণনায় পৌরাণিক রীতির অবলম্বন। জগাই-মাধাইয়ের উদ্ধার-কাহিনী লিথিবার পর বৃন্দাবনদাস যম-চিত্রগুপ্ত-সংবাদ লিথিয়াছেন (২০১৪)। যম



### শ্রীচৈতগুভাগবত

শীটেতত্যের মহিমা দেখিয়া নৃত্য করিতে লাগিলেন। দেবগণও তাঁহার সঙ্গে সঞ্চে নৃত্য করিলেন।

# भूबांति खल ७ वृन्नावनमाम

শ্রীচৈতন্তের নবদ্বীপ-লালার অনেক ঘটনা বৃন্দাবনদাস মুরারির প্রস্থ ছইতে সংগ্রহ করিয়াছেন। কিন্তু তিনি লোচনের ভায়ে মুরারির প্রস্থ সামনে রাখিয়া অনুবাদ করেন নাই। মুরারি যেমন ভাবে শ্রীতৈতন্তের জীবনীকে বিভক্ত করিয়াছেন, বৃন্দাবনদাসও অনেকটা তেমনি করিয়াছেন। গয়া হইতে প্রভাবর্ত্তন পর্যান্ত মুরারির প্রথম প্রক্রম, বৃন্দাবনদাসের আদিখণ্ড। মুরারির দ্বিতীয় প্রক্রমে ও বৃন্দাবনদাসের মধ্যখণ্ডে গয়া হইতে প্রভাবর্ত্তন ও নবদ্বীপে ভাব-প্রকাশ। মুরারির তৃতীয় প্রক্রমের ঘটনা লইয়া শ্রীচৈতভাভাগবতের অন্তাখণ্ড লিখিত হইয়ছে। মুরারির চতুর্থ প্রক্রমে শ্রীচৈতভাভাগবতের বৃন্দাবন-দর্শন। বৃন্দাবনদাস উহা বাদ দিয়াছেন। মুরারি-কর্ত্তক লিখিত ঘটনাগুলিকে বৃন্দাবনদাস নিজের ভাবের রসে মজাইয়৷ মৌলিকরূপে বর্ণনা করিয়াছেন। আক্ররিক অনুবাদকে তিনি বিশেষ প্রীতির চোখে দেখিতেন না। শ্রীমন্তাগবতের যে সকল শ্রোক তিনি উদ্ধার করিয়াছেন তাহার অনুবাদেও তাহার এই স্বাধীন রীতির পরিচয়্ব পাওয়৷ যায়; যথা—শ্রীমন্তাগবত ১০৷৫২৷৩৭-এর সহিত শ্রীচৈতভভাগবতের ২৷১৮৷২৮৬ তুলনীয়।

মুরারি গুপ্তের রামাউকের ছইটি শ্লোক বুন্দাবনদাস উদ্ধার করিয়াছেন। উহার অনুবাদেও এইরূপ স্বাধীনতা দেখা যায়। ঐতিচতগুভাগবতে মুরারির অহ্য কোন শ্লোক উদ্ধৃত না হইলেও বুন্দাবনদাস নিম্নলিখিত ঘটনাগুলি মুরারির গ্রন্থ হইতে লইয়াছিলেন মনে হয়। নিম্নে ঘটনাটি উল্লেখ করিয়া প্রথমে ঐতিচতগুভাগবতের, পরে মুরারির ও শেয়ে কবিকর্পপূরের মহাকাব্যের অধ্যায় ও শ্লোকাদির নির্দেশ করিতেছি। ইহাতে প্রমাণিত হইবে যে ঐ ঘটনাগুলি ঐতিচতগুভাগবত, ক° = কবি-কর্পপূরের মহাকাব্য)

#### শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

(১) উচ্ছিট হাঁড়ির উপর শ্রীচৈতত্তের উপবেশন এবং তদবস্থায় শচীমাতার প্রতি দত্তাত্রেয়ভাবে তত্তোপদেশ—

মৃ ১।৬।১৩-২১; ভা ১।৫।৫৩, ক ২।৭০-৭৬

(২) জগরাথ মিত্রের গৃহে শিশু নিমাইয়ের গমন-সময়ে নূপুর-ধ্বনি—
মু
 ১৷৬৷৩৪-৩৫; ভা
 ১৷৩৷৩৩, ২৮৭-৮৯; বৃন্দাবনদাস নূপুরধ্বনি
শোনার কথা বলিয়াই কান্ত হন নাই, নিমাইয়ের ভগবতার চাকুষ
প্রমাণও দিয়াছেন—

সব গৃহে দেখে অপরূপ পদচিহন। ধ্যজবজ্ঞ পতাকা অনুশ ভিন্ন ভিন্ন ॥ ১।১।৩৩

মুরারি বা কবিকর্ণপূর এরূপ চিচ্ছের কথা লেখেন নাই।

(৩) লক্ষ্মীর সহিত বিবাহের প্রস্তাব— মৃ ১৯ ; ভা ১।৭ ; ক ৩।৫-৪৪

এই ঘটনাটির বর্ণনায় বৃন্দবনদাস মুরারির লেখার অনুবাদ করিয়াছেন; যথা—

এবমুক্তে ততঃ প্রাহাচার্য্যঃ শৃণু বচো মম।

মিশ্রঃ পুরন্দর-সূতঃ শ্রীবিশ্বস্তর-পণ্ডিতঃ ॥
স এব তব কল্লায়া যোগ্যাং সদ্গুণসংশ্রয়ঃ।
পতিস্তেন বদামাল দেহি তল্মৈ স্থতাং শুভাম্॥
তচ্ছ লা বচনং তল্প মিশ্রঃ কার্য্যং বিচার্য্য চ।
উবাচ শ্রেয়তাং ভাগ্যবশাদেতদ্ববিশ্বতি॥
ময়া ধনবিহীনেন কিঞ্চিদ্ধাতুং ন শক্যতে।
কল্লাকৈব প্রদাতবা৷ তত্রাজ্ঞাং কর্ত্ব্যহিসি।

#### বৃন্দাবনদাস—

আচার্য্য বোলেন শুন আমার বচন। কন্যা-বিবাহের এক কর স্থলগন॥



### <u>শী</u>হৈতগুভাগবভ

মিশ্র পুরন্দর-পুত্র নাম বিশ্বস্তর।
পরম পণ্ডিত সর্ববিশুণের সাগর॥
তোমার কন্মার যোগ্য সেই মহাশয়।
কহিলাম এই কর যদি চিত্তে লয়॥
শুনিয়া বল্লভাচার্য্য বোলেন হরিষে।
সে হেন কন্মার পতি মিলে ভাগাবশে॥

সবে এক বচন বলিতে লজ্জা পাই। আমি সে নিধ্ন, কিছু দিতে শক্তি নাই॥ কল্মামাত্র দিব পঞ্চ হরীতকী দিয়া। এই আজ্ঞা সবে তুমি আনিবে মাগিয়া॥

# (৪) পূৰ্ববৰত ভ্ৰমণ—

মূ ১।১.।৫-১৬, ভা ১।১০।১০৩, ক আদ্ব-৯৫
মুরারি বলেন, বিশ্বস্তর "ধনার্থং প্রথমো দিশি" (১।১:।৫)। বুন্দাবনদাস
ভগবানের এরূপ উদ্দেশ্যে গমন স্বীকার করিতে চাহেন না। তিনি
বলেন—

তবে কথো দিনে ইচ্ছাময় ভগবান্। বঙ্গদেশ দেখিতে হইল ইচ্ছা তান।

মুরারি গুপ্ত শ্রীচৈতন্মের সহিত এক টোলে পড়িতেন। শ্রীচৈতন্ম ব্যাকরণের কোন টিপ্লনী লিখিলে তিনি তাহা উল্লেখ করিতেন, ঐ টিপ্লনী ভক্তগণ সাদরে রক্ষা করিতেন এবং আমরা উহা দেখিতে পাইতাম। বক্ষ-ভ্রমণ-উপলক্ষে মুরারি ও কবিকর্ণপূর শ্রীচৈতন্মের কোন টিপ্লনীর পঠন-পাঠনের উল্লেখ করেন নাই। অথচ বৃন্দাবনদাস লিখিতেছেন যে বক্ষদেশের ব্রাক্ষণেরা আসিয়া বিশ্বস্তরকে বলিলেন—

> উদ্দেশে আমরা সভে তোমার টিপ্লনী। লই পঢ়ি পঢ়াই শুনহ বিজ্ঞমণি॥

### শ্রীচৈতন্যচরিতের উপাদান

ক্রিরপুরীর নিকট বিশ্বস্তরের দীক্ষা-গ্রহণ

মৃ
১।১৫, ভা
১।১২, ক
৪।৫৬-৬৮
বৃন্দাবনদাস বিশ্বস্তরের দীক্ষা-প্রার্থনাটিতে মুরারির আক্ষরিক অনুবাদ
করিয়াছেন।

(৬) মুরারি-গৃহে বরাহ-ভাব-প্রকাশ—

মৃ ২া২া১১-২৬, ভা ২াগ্য ৭২, ক ৫।১৫-২১
বুন্দাবনদাস কি প্রকারে বিশ্বস্তরের ক্র-প্রকাশের অলৌকিক কাহিনীর
অবতারণা করিয়াছেন তাহা পূর্বেই বলিয়াছি।

- (৭) শ্রীবাসের প্রতি বিশ্বস্তরের রুপা— মৃ° ২।৩১-৪, ভা° ২।১৩।২৬২
- (৮) শুক্লাম্বর ব্রহ্মচারীর প্রতি কৃপা— মৃ° ২াতা৫-৯, ভা° ২া১৬া২৭৫, ক° ডা৮া১১
- (৯) মহা অভিষেক ও একাদশ-প্রহরিয়া ভাব— মু° ২৷১২:২-১৭, ভা° ২৷৯৷২১৮
- (১০) মুরারির রামন্তব ও কৃপা-লাভ— মু<sup>°</sup> ২াণাণ-২৫, ভা<sup>°</sup> ২া১০া২২৮ ও গা৪া৪৩৫, ক<sup>°</sup> ৬া৯৯ .: ০
- (১১) নিত্যানন্দের পাদোদক পান— মৃ ২১১০।২০-২১, ভা° ২১১২।২৪৬, ক° ৭১৬৮-৬৯
- (১২) শিবের গায়নের প্রতি রূপা— মৃ<sup>০</sup> ২৷১১৷১৪ ২০, ভা<sup>০</sup> ২৷৮৷২০৮, ক<sup>০</sup> ৭৷৮৬-৯০
- (১৩) বিশ্বস্তরের বলভদ্র-ভাবে মছা চাওয়া ও গঞ্চাজল খাইয়া মন্ত হওয়া—

মৃত ২।১৪।১-২৬, ভাত ২।৩।১৭৭ ও ২।৫।১৮৪, কত ৮।১৯-৫०

(১৪) অভিনয়—

মৃ০ ২া১৫।৭-১৯, ২া১৬৷১-২৩ ও ২া১৭৷১-৩, ভা<sup>০</sup> ২া১৮৷২৮২ প্রভৃতি, ক<sup>০</sup> ১১৷২-২৮

এই তালিকায় সর্বজনবিদিত ঘটনা-ছিসাবে বিশ্বস্তারের জন্ম, বিবাহ, গয়াযাত্রা, সন্ন্যাস-গ্রহণ প্রভৃতি ঘটনার উল্লেখ করিলাম না। কয়েকটি



## শ্রীচৈতন্মভাগবত

ঘটনা মুরারি লিখিলেও রুলাবনদাস বাদ দিয়াছেন; যথা—শিশু নিমাই অশুচিস্থানে বসিয়া মাকে থাপরা ছুড়িয়া প্রহার করিলেন। বুলাবনদাস এই ঘটনাকে অস্বীকার করিয়া লিখিয়াছেন:—

> ধর্ম-সংস্থাপক প্রভূ ধর্ম-সনাতন। জননীরে হস্ত নাহি তোলেন কখন। ১। ।৬০

মুরারি গুপ্ত বিশ্বস্তারের প্রথম আবেশের কথা (:191>৯-২৫) লিখিয়া কেন আবেশ হয় তাহা বলিয়াছেন। তাঁহার উক্তি যুক্তির উপর প্রতিষ্ঠিত। কিন্তু বৃন্দাবনদাসের নিমাই জন্মকাল হইতেই সজ্ঞানে বিভূতি-প্রকাশে তৎপর; স্তরাং এইরূপ আবেশের কথা উল্লেখ করার কোন প্রয়োজন তিনি দেখেন নাই।

বৃন্দাবনদাস বিশ্বস্তারের মহিমা ও অলৌকিক ঐশ্ব্যাছোতক এমন কতকগুলি ঘটনা স্ব্যপ্রথমে বর্ণনা করিয়াছেন যেগুলির সত্যতা বিশেষভাবে পরীক্ষা করিয়া লওয়া প্রয়োজন।

(১) (ক) চৌরবয়ের বৃত্তান্ত ; (গ) ঘরে কিছুই সম্বল নাই—মাতার মুখে এই কথা শুনিয়া মাতৃহন্তে ছুই তোলা স্বর্ণদান—

> যেই মাত্র সম্বল সন্ধোচ হয় ঘরে। সেই এই মত সোণা আনে বারে বারে। পৃ<sup>০</sup>৬১

- (গ) শ্রীবাসের মৃত পুত্রের সহিত বিশ্বস্তরের কথোপকথন (পৃত্র ৪৭)।
  এই তিনটি ঘটনার অলোকিকত্ব এত বেশী যে সেগুলি বিশ্বাস করা কঠিন।
  ত্বিতীয়তঃ এরূপ অলোকিক ঘটনা ঘটিলে প্রত্যক্ষদশা মুরারি নীরব থাকিবেন কেন ? যোগবিভৃতি প্রকাশ করিয়া সোণা আনার সঙ্গে বিশ্বস্তরের উন্নত-চরিত্রের সামঞ্জন্ত নাই।
- (২) মুরারি গুপ্ত প্রেমবশে ঐতিচতত্তের উদ্দেশে অন্ন নিবেদন করিলেন; তাহা থাইয়া ঐতিচতত্তের অজীর্ণ হইল ও মুরারির জল খাইয়া অজীর্ণ সারিল। মুরারি গরুড়-ভাবে চতুর্জ বিশ্বস্তরকে স্বন্ধে করিলেন। এই চুইটি ঘটনা বৃন্দাবনদাস বর্ণনা করিয়াছেন (২।২০।৩০৫-৬)।



## ২০৬ শ্রীচৈতক্মচরিতের উপাদান

মুরারির জীবনে এমন অহুত অভিজ্ঞতা ঘটিলে তিনি নিশ্চয়ই উহা উল্লেখ করিতেন।

### দিখিজয়ি পরাভব-প্রসঞ্চ

(৩) দিখিজয়ি-পরাভব-প্রসঙ্গে (১৯ অধ্যায়) বৃন্দাবনদাস লিখিতেছেন যে একজন দিখিজয়ী পণ্ডিত সমগ্র ভারতের পণ্ডিতদিগকে হারাইয়া দিয়া নবছাপে আসিলেন। নবদ্বীপের পণ্ডিতেরা ভয়ে অস্থির। বিশ্বস্তর মিশ্র গোপনে তাঁগকে পরাজিত করিলেন; গোপনে পরাজয়ের উদ্দেশ্য এই যে

> সভা-মধ্যে জয় যদি করিয়ে ইহারে। মৃততৃল্য হইবেক সংসার-ভিতরে॥

কিন্তু গদাতীরে যথন দিখিজয়ী গলার মহিমা বর্ণনা করিতে লাগিলেন, তখন

> সহস্র সহস্র যত প্রভুর শিশ্বগণ। অবাক্য হইলা সভে শুনিঞা বর্ণন॥

প্রভু দিখিজয়ীর শব্দালক্ষারের দোষ ধরিলেন। পরাঞ্জিত হইবার পর রাত্রিকালে দিখিজয়ী স্বথ্নে সরস্বতীর নিকট শুনিলেন যে বিশ্বস্তর স্বয়ং ভগবান্। পর দিন দিখিজয়ী বিশ্বস্তরের নিকট আক্সমর্পণ করিলেন। বিশ্বস্তর তাঁহাকে কুপা করিলেন ও বলিলেন—

> যে কিছু তোমারে কহিলেন সরস্বতী। তাহা পাছে বিপ্র আর কহ কাহা প্রতি॥ বেদ গুফু কহিলে হয় পরমায়ু ক্ষয়। পরলোকে তার মন্দ জানিহ নিশ্চয়॥

### দিখিজয়ী তারপর

হস্তী ঘোড়া দোলা ধন যতেক সম্ভার। পাত্রসাৎ করিয়া সর্ববন্ধ আপনার॥



निःमञ्र ভাবে চলিয়া গেলেন।

দিখিজয়ী জিনিলেন শ্রীগৌরস্থদরে। শুনিলেন ইহা সব নদীয়া নগরে॥ সকল লোকে হৈল মহাশ্চর্যা জ্ঞান। নিমাই পণ্ডিত হয় বড় বিছাবান্॥

ঘটনাটির বর্ণনার মধ্যে পরস্পার-বিরোধী অনেক উক্তি আছে। প্রভুর व्याप्तर्भ विधिक्यो यनि अश-वृद्यास कार्याक्य ना विधिक्यो थारकन, ज्र বুন্দাবনদাস উহা জানিলেন কিরূপে ? ত্রীচৈততা যদি গোপনে দিখিজয়ীর গর্বব চূর্ণ করিবার সম্বল্প করিয়া থাকেন, তাহা হইলে নদীয়ার সকল লোকে দিখিজ্বি-পরাভবের কথা শুনিলেন কিরূপে ? হাতী, ঘোড়া বিলাইয়া দেওয়া হইল, নবরীপে সোরগোল পড়িয়া গেল, অথচ মুরারি গুপু বা সমসাময়িক কোন পদকর্তা তাহা জানিলেন না। জানিয়াও কি তাঁহারা প্রভুর এ ছেন গৌরব-কাহিনী-সম্বন্ধে নীরব রহিলেন ? কবিকর্ণপূর ১৫৪২ খুষ্টাব্দে যখন প্রীচৈত্যচরিতামূত মহাকাবা লেখেন তখনও কি তাঁহার পিতা শিবানন্দ সেনের নিকট বা অন্ত কোন ভক্তের নিকট প্রভুর অসাধারণ পাণ্ডিত্যের এ হেন নিদর্শন-কাহিনী শুনিতে পায়েন নাই ? আরও আশ্চর্য্যের কথা এই যে অত্বড় একজন পণ্ডিত পরাজিত হইয়া চলিয়া গেলেন, অথচ তাঁহার নাম বুনদাবনদাস কাহারও নিকট শুনিতে পাইলেন না। আমার মনে হয় ঐীচৈতত্তের তিরোভাবের পর তাঁহার সম্বন্ধে যে সকল কিংবদন্তা প্রচলিত হয়, তাহারই একটিকে অবলম্বন করিয়া কবি এখানে দিখিজয়ি-পরাভবের কাহিনী লিখিয়াছেন।

১৬১৫ খুটাব্দে কৃষ্ণদাস কবিরাজ এই ঘটনা-বর্ণনা-উপলক্ষে লিখিয়াছেন—

> বৃন্দাবনদাস ইহা করিয়াছেন বিস্তার। কুট নাহি করে দোষ গুণের বিচার॥

> > - (5° 5°, 2126128

### শ্রীচৈতন্মচরিতের উপাদান

তিনি বিশদভাবে বর্ণনা করিতে যাইয়া রুন্দাবনদাসের সহিত ক্যেক্টি বিষয়ে পার্থক্য আনিয়া ফেলিয়াছেন।

(ক) শ্রীচৈতগ্রভাগবতের মতে দিখিজয়ী প্রভুর কাছে আসিয়াই ভয় খাইয়া গেলেন।

> পরম নিঃশঙ্ক সেই দিখিজয়ী আর। তভো প্রভু দেখিয়া সাধাস হৈল তার॥ ৯৫ পৃ

শ্রীচৈতগাচরিতামতের মতে দিখিজয়া প্রভুর নিকট আসিয়া দম্ভরে তাঁহার প্রতি অবজ্ঞা প্রকাশ করিলেন।

> বাকিরণ পড়াহ নিমাই পণ্ডিত খোমার নাম। বাল্যশান্তে লোকে তোমার কহে গুণগ্রাম॥ — চৈ চ , ১।১৬।২৮

(খ) ঐতৈভভাগবতে—

205

এই মত প্রহর খানেক দিখিজয়ী। পড়ে ক্রত বর্ণনা ভথাপি অন্ত নাহি॥

চরিভায়তে—"ঘটা একে শত শ্লোক গপার বর্ণিলা।"

- (গ) ঐতিচত্তভাগবতে আছে প্রভু দিখিজয়ীকে ব্যাখ্যা করিয়া যাইতে বলিলেন এবং ব্যাখ্যার দোষ ধরিলেন। চরিতায়তে বিশ্বস্তরকে শ্রুতিধররূপে অঙ্কন করা হইয়াছে। এক শত শ্লোকের মধ্যে তিনি একটি নির্বাচন করিয়া লইয়া, তাহা আর্ডি করিয়া পাঁচটি দোষ দেখাইলেন।
- ্ঘ) শ্রীকৈতভাভাগবতে কোন শ্লোকের উল্লেখ নাই; কিন্তু চরিতামতে "মহরং গলায়াঃ সতত্মিদমাভাতি নিতরাম্" শ্লোকটি আছে। ঐ শ্লোকের একটি চরণে আছে "ভবানীভর্ষা শিরসি বিভবতামুতগুণা।" এই "ভবানীভর্তা"-সম্বন্ধে কৃষ্ণদাস কবিরাজের মতে বিশ্বস্তর বলিশেন—

ভবানী শব্দে কহে মহাদেবের গৃহিণী। তার ভর্তা কহিলে দ্বিতীয় ভর্তা জানি॥



### শ্রীচৈতগুভাগবত

# শিবপত্নীর ভর্তা ইহা শুনিতে বিরুদ্ধ। বিরুদ্ধমতিকুৎ শব্দ শাল্লে নহে শুদ্ধ॥

"সাহিত্যদর্পণে" ঠিক এই দৃষ্টান্তটি দিয়াই বিরুদ্ধনতিকৃৎ দোষ দেখান হইয়াছে; যথা—"ভূতয়েহন্ত ভবানীশঃ" অত্র ভবানীশঃশশালা ভবাভাঃ পতান্তর-প্রতীতিকারিরাদ্বিরুদ্ধনবগনয়তি" (সপ্তম পরিছেদ)। সাহিত্যদর্পণ প্রাক্তিতভা যুগের বই। কোন দিখিল্লয়ী পণ্ডিতের যে সাহিত্যদর্পণের ভায় স্থপ্রসিদ্ধ অলক্ষারের প্রন্থও পড়া ছিল না ইহা বিশাস করা কঠিন। "গোবিন্দলীলায়তের" গ্রন্থকার কৃষ্ণদাস কবিরাজ্বের পক্ষে পঞ্চদোয-যুক্ত একটি শ্লোক রচনা করিয়া দেওয়া কিছুই কঠিন নহে।

শ্রীচৈতভাচরিতামূত-রচনার প্রায় এক শত বৎসর পরে নরহরি চক্রবর্ত্তী :"ভক্তিরত্বাকরে" এই ঘটনা বণনা করিয়াছেন ( ঘাদশ তরত্ব, পূ° ৮৬:-৬০)। তিনি ঐতিচত্যচরিতায়ত অনুসরণ না করিয়া ঐতিচত্যভাগবতের বর্ণনা মানিয়া লইয়াছেন। নরহরি চক্রবর্তী ঐ দিখিজয়ীর নাম স্থির করিয়াছেন কেশব কাশ্মীরী। তিনি কেশব কাশ্মীরীর গুরু-প্রণালীও উল্লেখ করিয়াছেন। কেশব কাশ্মীরী নিম্বার্ক-সম্প্রদায়ভুক্ত স্থপ্রসিদ্ধ বৈদান্তিক। ১৭১৩ খুস্টাব্দে রচিত ভক্তমালের টীকার প্রিয়াদাসজীও উক্ত দিখিজয়ীর নাম কেশব কাশ্মীরী বলিয়াছেন (ভক্তমাল, নয়লকিশোর প্রেস সং, পৃত ৫৬৬-৫৭০)। গদাধর-কৃত "সম্প্রদায় প্রদীপ" হইতে জানা যায় যে মথুরায় বল্লভাচার্য্যের সহিত কেশব কাশ্মীরীর মিলন ঘটিয়াছিল এবং কেশব বল্লভের ভাগবত-ব্যাখ্যা শুনিয়াছিলেন (হরপ্রসাদ শান্তা, Catalogue of Sanskrit Mss. of the Asiatic Society of Bengal, Vol. IV, p. 102 )। "চৌরাশী বৈক্ষবন্কী বার্তা" নামক বল্লভ-সম্প্রদায়ী গ্রন্থে আছে যে কেশব কাশ্মীরী বল্লভাচার্যোর নিকট শিশ্মভাবে ভাগবত শ্রবণ করেন। "জ্ব শ্রীভাগবতকী কথা সম্পূর্ণ ভই, তব কেশব ভট্টনে শ্রীআচার্য্যজী মহাপ্রভুনসেঁ কহা জো কছু গুরুদক্ষীণা লেউ; তব শ্রীআচার্যাঞ্জী মহাপ্রভুননে কহোঁ—জো হম কচ্ছু লেভ নাহী; তব কেশব ভট্টনে কহ্যো

# শ্রীচৈতত্যচরিতের উপাদান

জো মৈ তুমকে এক সেবক সমর্পিতহো, সো মধোভটোজী আচার্যাজী মহাপ্রভুনকো সোপেঁ (চোরাশী বৈক্ষবন্কী বার্তা, ১২২-২৩ পূ<sup>ত</sup>, লক্ষাবেক্ষটেশ্বর প্রেস স<sup>ত</sup>)। এই সব বিবরণ দেখিয়া মনে হয় যে বেড়েশ শতাজার ধর্ম-সম্প্রদায়গুলি কেশব ভটুকে নিজ নিজ সম্প্রদায়ের অন্তর্ভুক্ত করিবার জন্ম বাস্ত ছিল।

# (৪) কাজী-দলন-প্রসঙ্গ---

230

বৃন্দাবনদাস লিখিয়াছেন যে, যে সকীর্ত্তনদল কাজীকে দলন করিতে বাহির হইয়াছিল, ভাহার মধ্যে মুরারি গুপু ছিলেন (২।২৩৩২৫)। মুরারি গুপু কিন্তু স্পাইভাবে কাজী-দলনের কোন ইন্সিত করেন নাই। তিনি শুধু লিখিয়াছেন—

হরিসন্ধার্তনং কৃষা নগরে নগরে প্রভুঃ মেচছাদীমুদ্দধারাসোঁ জগতামীশ্বরো হরিঃ॥ ২।১৭।১১

কৰিকৰ্ণপুর মহাকাব্যে অনুরূপ কোন শ্লোক লেখেন নাই বা কাজীর সম্বন্ধে কোন কথা বলেন নাই।

রুন্দাবনদাসের কাজী-দলন-বর্ণনায় আতিশয্য-দোষ দেখা যায়; যথা—

> চলিলেন মহাপ্রভু নাচিতে নাচিতে। লক্ষ কোটি লোক ধায় প্রভুরে দেখিতে॥ কোটি কোটি মহাতাপ ছলিতে লাগিল। চন্দ্রের কিরণ সর্বব শরীরে হইল॥

জীব মাত্ৰ চতুত্ব হইল সকল। না জানিল কেহ কৃষ্ণ আনন্দে বিহবল।

কীর্ত্তনানন্দে কোন কোন ভক্ত বলিতেছেন—

ভজ বিশ্বন্তর নহে করিমু সংহার।

-21201050



### শ্রীচৈতন্যভাগবত

#### বুন্দাবন্দাস লিথিয়াছেন-

কোধে বোলে প্রভু আরে কাজিবেটা কোথা।
বাট আন ধরিয়া কাটিয়া ফেলো মাথা।
নির্ধবন করোঁ আজি সকল ভূবন।
পূর্বের যেন বধ কৈলুঁ সে কাল্যবন।
প্রাণ লঞা কোথা কাজি গেল দিয়া দার।
ঘর ভাল ভাল প্রভু বোলে বার বার॥

-21201000

তাঁহার আদেশে ভক্তগণ কাজীর ঘর ভাঙ্গিলেন ও ফুলের বাগানের গাছ উপাড়িয়া ছারখার করিলেন। তারপর বিশ্বস্তর যখন বলিলেন, "অগ্রি দেহ ঘরে তোরা না করিহ, ভয়," তখন ভক্তেরাই তাঁহাকে বুঝাইয়া-স্থাইয়া শান্ত করিলেন।

> হাসে মহাপ্রভু সর্বদাসের বচনে। হরি বলি নৃতারসে চলিলা তথনে॥ পৃত ৩৩৭

# কুষ্ণদাস কবিরাজ বলেন—

উন্ধত লোক ভাঙ্গে কাঞ্চীর ঘর পুপ্পবন।
বিস্তারি বর্ণিলা ইহা দাস বৃন্দাবন॥
তবে মহাপ্রভু তার ঘারেতে বঙ্গিলা।
ভবালোক পাঠাইয়া কাঞ্জারে বোলাইলা॥
দূর হৈতে আইলা কাঞ্জা মাথা নোয়াইয়!।
কাঞ্জারে বসাইলা প্রভু সম্মান করিয়া॥
প্রভু বোলে আমি তোমার আইলাম অভ্যাগত।
আমা দেখি লুকাইলা এ ধর্ম্ম কি মত।

—टेंह ह°, ऽ।ऽ१।ऽ७७-ऽ००

বৃন্দাবনদাসের মতে বিশ্বস্তর নিজে আদেশ দিয়া কাজীর ঘর-বাগান ভাঙ্গাইলেন; কৃষ্ণদাস কবিরাজ দেখিলেন এইরূপ ব্যবহার করিলে,

### ত্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

বিশেষতঃ ঘর পুড়াইবার আদেশ দিলে শ্রীচৈতন্ত-চরিত্রের মহিমা ক্ষুর হয়।
ভাই তিনি বৃন্দাবনদাসের বর্ণনাকে একটু চ্ণকাম করিয়া দিলেন।
বিশ্বস্তর অভাগিত বা অতিথিরূপে কাজীর গাড়ীতে উপস্থিত হইলে,
কাজীর ঘর-পোড়ানর আদেশ দেওয়া তাহার পক্ষে কিছুতেই সম্পত
হয় না।

কৃষ্ণদাস কবিরাজের মতে বিশ্বস্তরের সহিত কাজীর গোবধ লইয়া বিচার হইল। কাজী পরাজিত হইয়া স্বীকার করিলেন যে

> তুমি যে কহিলে পণ্ডিত সেই সত্য হয়। আধুনিক আমার শান্ত বিচারসহ নয়॥ কল্লিত আমার শান্ত আমি সব জানি। জাতি অনুরোধে তবু সেই শান্ত মানি॥

#### অবশেষে কাজা-

222

প্রভুর চরণ ছুঁই কহে প্রিয় বাণা।
ভোমার প্রসাদে মোর ঘূচিল কুমতি।
এই কুপা কর যে ভোমাতে রহে ভক্তি। চরিতায়ত, ১০১৭

মুরারি গুপ্ত শুধু নগর-সন্ধার্তনের উলেখ করিয়াছেন—বুন্দাবনদাস নগর-সন্ধার্তনের মধ্যে কাজীকে দণ্ডদানের কথা লিখিয়াছেন। কৃষ্ণদাস করিয়জ এমন করিয়া ঘটনা বর্ণনা করিয়াছেন যে কাজীকে দণ্ডদান নছে, উদ্ধার করাই প্রভুর নগর-সন্ধার্তনের প্রধান উদ্দেশ্য। নগর-সন্ধার্তন প্রধান উদ্দেশ্য হইলে তাহার মধ্যে কাজীর বাড়াতে বসিয়া বিচার-বিতর্ক করিবার অবসর ও প্রবৃত্তি হয় না। জয়ানন্দ গ্রন্থমধ্যে কাজী-দলন বর্ণনা করেন নাই; তবে গ্রন্থের শেষে সূত্রাকারে বলিয়াছেন—

সিম্বলিয়া গ্রামেতে কাজীর ঘর ভাঙ্গি। সাত প্রহরিরা ভাবে হৈলা বড় রঙ্গী। সিম্বলিয়া গ্রাম ছাড়ি পলাইল যবন। পৃ° ১৪৭

সিম্বলিয়া বা সিমলিয়া গ্রাম ছাড়িয়া মুসলমানগণ অবশ্য পলায়ন করেন



#### শ্রীচৈতন্যভাগবত

নাই, কেন-না এখনও সেধানে মুসলমানদের প্রাচীন সমাধি আছে ও বসবাস আছে।

বৃন্দাবনদাসের বর্ণনাকে যদি থাটি সত্য বলিয়া মানিয়া লওয়া যায়, তাহা হইলে বলিতে হয় যে হুসেন সাহের প্রতিনিধিস্থানীয় কান্ধীর ঘরবাড়ী ভান্ধিয়া ফোলিলেও তাহার কোন প্রতিক্রিয়া হয় নাই। মুরারি ও কবিকর্ণপূরের নীরবতা এ ক্ষেত্রে সন্দেহজনক। আমার মনে হয় যে কোন কোন মুসলমান নগর সন্ধীর্তনে বাধা দেওয়ায় বিশ্বস্তর নগর-সন্ধীর্তনে বাহির হইয়াছিলেন, সন্ধীর্তন-বিরোধিগণের বাড়ীর পাশ দিয়া সজোরে কার্তন করিয়া চলিয়া গিয়াছিলেন—তাহার দলের কোন কোন লোক বিরোধী মুসলমানদের গাছপালা নই করিয়াছিলেন, তাহা সব্বেও কীর্তনের মাধুর্য্যে আরুষ্ট হইয়া বিরোধী দলের প্রধান বাক্তি ভক্তিধর্ম্ম গ্রহণ করিয়াছিলেন।

# শ্রীচৈতভার সন্নাস-জীবন-সম্বদ্ধে রন্দাবনদাস

বৃদ্দাবনদাস ঠাকুর প্রীচৈততভাগবতের অন্তাথণ্ড লিখিবার সময়ে মুখাতঃ
নিতানন্দ প্রভুর সহিত সংশ্লিফ ঘটনাগুলি লিখিয়াছেন। তাঁহার দৃষ্টি
ছিল গোঁড়ীয় ভক্তগণের সহিত সন্ন্যাসী প্রীচৈতত্তের সম্বন্ধ দেখানোর দিকে
এবং বাংলাদেশে কি ভাবে বৈক্ষবধর্ম প্রচারিত হইল তাহার বিবরণ
লিপিবন্ধ করার দিকে। কাব্য-হিসাবে এইরপভাবে অন্তাথণ্ড লিখিলে
বিষয়বস্তর ঐক্য বন্ধায় থাকে। আদিখণ্ডে যে বিষয়ের অবতারণা করা
হইয়াছে, মধ্যথণ্ডে যাহার বিকাশ দেখানো হইয়াছে, অন্তাথণ্ডে তাহারই
পরিগতিমাত্র বর্ণনা করিয়া কবি কাব্যরসকে কেন্দ্রীভূত করিয়াছেন।
আদিখণ্ডে ভক্তগণের নবন্ধীপে সমাবেশ ও জনসাধারণের ভক্তিহীনতা
দেখিয়া আক্ষেপ ও ভগবৎকৃপার জন্ম প্রার্থনা। মধ্যথণ্ডে ভক্তগণের
মধ্যে ভাবমাধুরী-শোভিত শ্রভগবানের প্রকাশ এবং নবন্ধীপে বিভিন্ন
ভক্তের প্রতি কৃপা। অন্তাথণ্ডে সন্ন্যাসী হইয়া শ্রভগবানের দেশান্তরে
গমন; তথা হইতে আদিয়া পশ্চিম-বন্ধে পূর্ববতন ভক্তদের সহিত মিলন,

নিত্যানন্দ প্রভুর দারা প্রচারের হ্বাবস্থা, বিরহ-কাতর ভক্তদের সহিত নীলাচলে প্রভুর বিবিধ লালা-বর্ণনা। বাংলাদেশের ভক্তমগুলীকে কেন্দ্র করিয়া প্রীচৈতগুভাগবত লিখিত হইয়াছে। বাংলার ভক্তমগুলী যেখানে মূল বিষয়, সেখানে প্রভুর দাক্ষিণাত্য-জ্রমণ, রামানন্দের সহিত মিলন, উড়িয়া ভক্তদের সহিত ঘনিষ্ঠতা, রন্দাবন-গমন এবং রন্দাবনের বৈষ্ণব-মগুলীর প্রতিষ্ঠাতাদের বিস্তৃত বিবরণ দেওয়া অবাস্তর বিষয়রূপে গণা হইতে পারে। সেই জগুই হয়ত রন্দাবনদাস উক্ত ঘটনাগুলি-সম্বন্ধে বিশেষ কিছু লেখেন নাই। প্রীচৈতগ্রের জীবনচরিত ও ইতিহাসের দিক্ দিয়া দেখিতে গেলে এইরূপ অনুরেখহেতু প্রীচৈতগ্রভাগবতকে আংশিক একদেশদলী গ্রন্থ বলা যাইতে পারে। কিন্তু ঠিক এই জগুই কাব্য-হিসাবে প্রীচৈতগ্রভাগবত প্রীচৈতগ্রভাগবত প্রাচিতগ্রভাগবত বিষয়া আছে।

শ্রীচৈতভাভাগবতের আদি ও মধাধণ্ডে যে সকল ভক্তদের কথা বলা হয় নাই, এমন ভক্তদের বিবরণ অন্তাখণ্ডে খুব অল্লই দেওয়া হইয়াছে। যাহা কিছু আছে তাহার অধিকাংশ নিত্যানন্দ-ভক্তদের কথা। ঐীচৈতন্ম বিংশতিবর্ষকাল পুরীধামে অবস্থান করিলেন। সেই কালের মধ্যে বহু সহত্র লোক পুরীতে তাঁহার ভক্ত হইলেন। তাঁহাদের মধ্যে বৃন্দাবনদাস মাত্র সার্বভৌম, পরমানন্দ পুরা, দামোদরস্বরূপ, প্রভান্ন মিতা, পরমানন্দ, রামানন্দ, দামোদর পণ্ডিত, শক্ষর পণ্ডিত, ভগবান আচার্য্য (ং।৩।৪০০-৯), প্রভাপরত্র (৩।৫।৪৫০-৫৩), রূপ-স্নাতন (৩)১০।৫০১-২) ও শিখি মাহাতীর (৩।৯।৪৯৩) কথা উল্লেখ করিয়াছেন। অতুলকৃষ্ণ গোস্বামি-সম্পাদিত ত্রীচৈতগুভাগবভের ৩৬৯ হইতে ৫২০ পৃষ্ঠায় অর্থাৎ ১৫১ পৃষ্ঠায় অন্তাখণ্ড ছাপা ছইয়াছে। তন্মধ্যে এ সকল ভক্তের কথা মাত্র ১৯টি পৃষ্ঠায় বর্ণিত হইয়াজে। প্রভুর নীলাচল-লীলা বর্ণনা করিবার জন্ম ঐতিচতন্মচরিতামূত লেখার প্রয়োজন ছিল। ঐ গ্রন্থের আলোচনা-কালে উক্ত ভক্তদের সম্বন্ধে বুন্দাবনদাসের বর্ণনার ঐতিহাসিকতা বিচার করিব। এই স্থানে শুধু বলিয়া রাখি যে বৃন্দাবনদাস ত্রজমগুলের রযুনাথদাস, গোপাল ভট্ট ও রঘুনাথ ভট্ট-সম্বন্ধে একটি কথাও বলেন



### গ্রীচৈতগুভাগবত

নাই, এমন কি তাঁহাদিগের বন্দনা পর্যান্ত করেন নাই। নরহরি সরকার, রবুনাথ ঠাকুর প্রভৃতি নাগরীভাবের ভক্ত-সম্বন্ধেও তিনি নারব। উড়িয়ার সর্বপ্রধান ভক্ত রায় রামানন্দের কথা তাঁহার প্রন্থ হইতে বিশেষ কিছু জানা যায় না। জগরাথদাস, বলরামদাস, অচ্তানন্দ, কানাই খুঁটিয়া, মাধবী দেবী প্রভৃতি উড়িয়া ভক্তদের বিষয়েও তিনি কিছু লেখেন নাই।

# শ্রীচৈতক্তের গৌড়ভ্রমণ

বুন্দাবনদাস ঐতিতন্তের গৌড়স্রমণ বিশেষ বিস্তারিতভাবে উল্লেখ করিয়াছেন। অভাভ বর্ণনার সহিত ইহার তুলনামূলক বিচার করা যাউক। বুন্দাবনদাস বলেন যে নীলাচলে কিছুকাল বাস করার পর শ্রীচৈতভা

> গঞ্চা প্রতি মহা অন্তরাগ বাড়াইয়া। অতি শীত্র গৌড় দেশে আইলা চলিয়া॥ তাগ৪১২

- (১) তিনি সার্বভৌমের জাতা বিভাবাচস্পতির গৃহে আসিলেন। তাঁহার বর্ণনা পড়িয়া মনে হয় যে নবছাপ হইতে বনজঙ্গল ভাঙ্গিয়া থানিক দূর গিয়া, গঙ্গা পার হইয়া বিভাবাচস্পতির বাড়ীতে যাইতে হয়। বিভাবাচস্পতির গ্রামে বহু লোকের সংঘট্ট হইতেছে দেখিয়া "নিত্যানন্দ-আদি জনকথো সঙ্গে লৈয়া" প্রভু গোপনে কুলিয়া নগরে যাইলেন।
- (২) কিন্তু কুলিয়াতেও লোকে তাঁহাকে পু'ঞ্জিয়া বাহির করিল। নবদ্বীপ হইতে দলে দলে লোক তাঁহাকে দেখিতে আসিল।

থেয়ারির কত বা হইল উপার্জ্জন। কত কত হাট বা বসিল সেই ক্ষণ॥

কুলিয়াতে বৈষ্ণব-নিন্দক একজন ত্রাহ্মণকে ও বক্রেশরের কৃপাপ্রাপ্ত দেবানন্দ পণ্ডিতকে প্রভু কৃপা করিলেন।

(৩) কুলিয়া হইতে গলার তীরে তীরে চলিয়া তিনি গোঁড়ের নিকট রামকেলি গ্রামে যাইলেন। রামকেলি গ্রাম বর্তমান মালদহ জেলার

### ২১৬ - ত্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

ইংরাজবাজার হইতে প্রায় সাড়ে আট মাইল দক্ষিণে অবস্থিত। সেইখানে ছসেন শাহ বহু সহস্র ভক্তের সহিত ঐতিচতভকে যাইতে দেখেন। হসেন শাহের প্রধান প্রধান কর্মচারীর মধ্যে রূপ, সনাতন, কেশব ছত্রী, শ্রীথণ্ডের মুকুন্দ সরকার প্রভৃতি ছিলেন। প্রভুর রামকেলি-গমন-প্রসঙ্গে কিন্তু বুন্দাবনদাস রূপ-সনাতনের সহিত সাক্ষাতের কথা উল্লেখ করেন নাই।

(৪) শ্রীচৈত রামকেলি হইতে মথুরায় না যাইয়া শান্তিপুরে গমন করিলেন। তিনি শান্তিপুরে পৌছিলে লোকে শচীমাতার নিকট বলিল—

> শান্তিপুরে আইলেন শ্রীগৌরহুন্দর। চল আই ঝাট আসি দেখহ সহর। এ৪।৪৬২

শ্রীদেবী মুরারি গুপ্ত প্রভৃতি ভক্তগণ-সঙ্গে শান্তিপুরে গেলেন এবং শ্রীতৈত্যকে নিজের হাতে রাধিয়া খাওয়াইলেন।

(৫) কথোদিন থাকি প্রভু অহৈতের ঘরে। আইলা কুমারহট্ট শ্রীবাস-মন্দিরে॥ তার।৪৪৫

# কুমারহট্টের বর্তমান নাম হালিসহর।

- (৬) কথোদিন থাকি প্রভূ শ্রীবাসের ঘরে। তবে গেলা পানিহাটা রাঘব-মন্দিরে। এর।৪৪৮
- (৭) তবে প্রভু আইলেন বরাহনগরে।
  নহাভাগাবন্ত এক ব্রাক্সণের ঘরে॥ ৩৫।৪৪৯
  এই মত প্রতি গ্রামে গ্রামে গঙ্গাতীরে।
  রহিয়া রহিয়া প্রভু ভক্তের মন্দিরে॥
  সভারি করিয়া মনোরথ পৃণকাম।
  পুন আইলেন প্রভু নীলাচল ধাম। ৩৫।৪৫০

বৃন্দাবনদাসের এই বর্ণনার সঙ্গে মুরারি গুপ্তের বর্ণনার মোটামুটি মিল আছে। ঐতিহততের গৌড়-ভ্রমণ-বর্ণনার অত্তে মুরারি গুপ্ত লিখিতেছেন—

> এবং শ্রীভক্তবর্গাণাং গ্রামে গ্রামে গৃহে গৃহে। ভুক্তা পীকা হুবং কুকা যথোঁ শ্রীপুরুষোত্তমম্॥ ১০১৮।২১



### শ্রীচৈতগুভাগবত

রুন্দাবনদাসের "এই মত প্রতি গ্রামে গ্রামে গঙ্গাতীরে" প্রভৃতি ইহারই অনুবাদ মনে হয়। স্কুতরাং অনুমান করা যাইতে পারে যে রুন্দাবনদাস নিত্যানন্দ প্রভুর নিকট শুনিয়া ও মুরারি গুপ্তের বর্ণনা পড়িয়া আলোচা ভ্রমণ-বিবরণ লিখিয়াছেন। মুরারি গুপ্ত বলেন যে প্রভু নীলাচল হইতে বাহির হইয়া বাচস্পতি-গৃহে আসিলেন। সেখানে নবন্ধীপের লোকেরা তাঁহাকে দর্শন করিয়া পরমানন্দলাভ করেন (৩)১৭১৫)। তাঁহার বর্ণিত দেবানন্দ-উদ্ধার-কাহিনীর সহিত বুন্দাবনদাসের বর্ণনার মিল আছে।

মুরারি গুপ্ত এবং বৃন্দাবনদাসের বর্ণনা অনুসরণ করিয়া জয়ানন্দ শ্রীচৈতন্মের গৌড়-শ্রমণ লিথিয়াছেন। বেশীর ভাগ তিনি খবর দিয়াছেন যে—

> রেমুনা বাঁশদা দিয়া দাঁতনে রহিলা গিয়া জলেশ্বরে রহিল শর্বরী। ছাড়িয়া দেবশরণ প্রবেশিলা মন্দারণ বর্দ্ধমানে দিলা দরশন॥ পৃত ১৪০

অর্থাৎ জয়ানন্দের মতে ঐতিচতত কটক হইতে মেদিনীপুর জেলা—মন্দারণ পরগনা—বর্দ্ধমান হইয়া নবদ্বাপে আসিলেন। বর্দ্ধমানের নিকট আমাইপুরা গ্রামে জয়ানন্দের মা রোদনীর হাতের রালা খাইয়া—

> রোদনী ভোজন করি চলিলা নদীয়া পুরী বায়ড়ার উত্তরিলা গিয়া।

বিত্যাবাচস্পতির গ্রামের নাম অন্য কোন লেখক দেন নাই। কিন্তু জয়ানন্দ বলিতেছেন যে নবদ্বীপের অন্তর্গত বায়ড়া গ্রামে বিভাবাচস্পতির গৃহ। সেথানে মাত্র একরাত্রি তিনি বাস করিলেন। তারপর লোকের ভিড় দেখিয়া কুলিয়া গেলেন। সেখানে

> উচ্চ দেখি মঞ্চ রহিলা পূর্ববমূথে। অর্ববুদ অর্ববৃদ লোক দেখে ইৎসা স্থাে।

#### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

রুদ্ধ বাল্য যুবা জত নবন্ধীপে বসে। ধাইল অর্ব্যদ লোক আউদর কোণে॥ আই ঠাকুরাণী বিফুপ্রিয়া স্থলোচনা। মুরারি গুপু গোপীনাথ বৃদ্ধিমন্তথানা॥

গন্ধার অপর পার হইতে শচী ও বিষ্ণুপ্রিয়া শ্রীচৈতগ্যকে দর্শন করিলেন।

আই ঠাকুরাণী মৃচ্ছা গেল বিফুপ্রিয়া।

চৈতত্য দেখিয়া কান্দে সকল নদীয়া॥

মায়েরে দেখিয়া প্রভু হৈল নমসার।

বধু লঞা ঘরে যাহ ন হইহ গঙ্গাপার॥

বায়ড়া হইতে ঐতিত্যা রামকেলি গেলেন; কিন্তু জয়ানন্দ রামকেলির নাম কৃষ্ণকেলি লিখিয়াছেন। প্রভুর শান্তিপুর-প্রবাস-কাহিনী জয়ানন্দ প্রাপ্রি রন্দাবনদাস হইতে লইয়াছেন। শান্তিপুর হইতে কুমারহট্ট, পানিহাটী ও বরাহনগর গমন।

এই তিনজন লেথকের বর্ণনায় ঐতিচতত্তের ভ্রমণের যে ক্রম দেওয়া হইয়াছে তাহা কবিকর্ণপুর ও কুফদাস কবিরাজ স্বীকার করেন নাই।

কবিকর্ণপূর প্রীচৈতভাচন্দ্রাদয় নাটকে লিথিয়াছেন যে প্রতাপরুদ্রের রাজ্যের উৎকলের সীমান্ত হইতে নৌকায় চড়িয়া প্রভু সর্বব্রথমে পানিয়হাটা গ্রামে রাঘব পণ্ডিতের নিকট গোলেন। সেথানে একরাত্রি থাকিয়া কুমারহট্টে প্রীবাসের বাড়ী গোলেন। তথা হইতে কাঞ্চনপল্লী বা কাঁচড়াপাড়ায় কবির পিতা শিবানন্দ সেনের বাড়ী গোলেন। সেথানে "মুহূর্ত্তং স্থিয়া" বাস্থদেবদন্তের গৃহে। তারপর শান্তিপুরে অবৈতের বাড়ী। তথা হইতে নৌকাতেই "নবন্ধীপতা পারে কুলিয়া-নাম-গ্রামে মাধবদাস-বাট্যামুন্তীর্ণবান্। নবন্ধীপলোকামুগ্রহহেতোঃ সপ্ত দিনানি তত্র স্থিতবান্।" নবন্ধীপ হইতে গৌড়ে গমন এবং মথুরায় না যাইয়া নীলাচলে প্রত্যাবর্ত্তন (৯০১) প্রভৃতি)।

কবিকর্ণপূর মহাকাব্যের বিংশসর্গে ঐতিচতত্যের গৌড়ভ্রমণ-বর্ণনার সময়ে মুরারির মতকে পরিত্যাগ করিয়া নাটকে যেমন বর্ণনা করিয়াছেন তেমনি



লিখিয়াছেন। কেবল পানিহাটাতে একরাত্রি থাকার পরিবর্তে ৫।৬ দিন (২০।১৩), তথা হইতে নিত্যানন্দকে নবদ্বীপে থবর দিতে পাঠান (২০।১৫), শ্রীবাসের বাড়ী ২।০ দিন, শিবানন্দের বাড়ী একরাত্রি (২০।১৮), শান্তিপুরে ৬ দিন (২০।২৪) এবং নবদ্বীপের পশ্চিম পাড়ে ৫।৬ দিন থাকিয়া (২০।০০) পশ্চিম দিকে কোন স্থানে গমন করিলেন; পরে গম্বাতীরে আগমন করিলেন (২০।০০)।

কবিকর্ণপূর-বর্ণিত ভ্রমণক্রম অধিকতর সন্ধৃত মনে হয়; কারণ ভৌগোলিক হিসাবে তাঁহার বর্ণিত পথেই আসা সহজ। উড়িয়ার সীমানা হইতে নৌকায় চড়িয়া পানিহাটা আসা স্বাভাবিক। রেনেলের মাপে হইতে অনুমান হয় যোড়শ শতাকীতে মেদিনীপুর জেলার কাঁসাই নদীর তারবর্তী পিছলদা হইতে পানিহাটা আসিবার জলপথ থাকা অসম্ভব ছিল না। রাস্তাঘাট-সম্বন্ধে ভাবোন্মত নিত্যানন্দ অপেকা গোড়ীয় যাত্রিগণের পর্ধ-প্রদর্শক শিবানন্দ সেনের পুত্রের কথা অধিক নির্ভরযোগ্য। পানিহাটা হইতে বরাহনগর, হালিসহর, কাঁচড়াপাড়া হইয়া শান্তিপুরে যাওয়াই স্বাভাবিক।

কৃষ্ণদাস কবিরাজ মধ্যলীলার সূত্র লেখার সময় বৃন্দাবনদাসের ভ্রমণক্রম মানিয়া লইয়াছেন, অবচ গৌড়ভ্রমণ-বর্ণনার সময় থানিকটা কবিকর্ণপূরের ক্রম গ্রহণ করিয়া উভয় ক্রনের মধ্যে সামঞ্জভ-স্থাপনের চেন্টা করিয়াছেন। মধ্যলীলার প্রথম পরিচ্ছেদে আছে যে প্রভূপ্রথমে বিভাবাচস্পতির গৃহে এবং পরে কুলিয়ায় যান (২০০১৪০-১)। কুলিয়া হইতে রামকেলি গমন (২০০১৫৬); রামকেলি হইতে কানাইয়ের নাটশালা (২০০২০) পর্যান্ত অগ্রসর হইয়া অত লোকের সঙ্গে বৃন্দাবন যাইবেন না বলিয়া শান্তিপুরে আসিলেন (২০০২৮)। শান্তিপুর হইতে নীলাচলে ফিরিলেন। এই বর্ণনায় বৃন্দাবনদাস অনুসতে হইয়াছে বটে, কিন্তু প্রভুর কুমারহট্ট, পানিহাটী ও বরাহনগর যাইবার কথা ইহাতে নাই।

কবিরাজ গোস্বামী মধালীলার যোড়শ পরিচ্ছেদে প্রভুর গৌড়-জমণ-বর্ণনার সময় কবিকর্ণপূরকে অসুসরণ করিয়া লিখিয়াছেন যে



### শ্রীতৈতগুচরিতের উপাদান

ওড়ুদেশের সীমা পর্যান্ত আসার পর (২৷১৬৷১৪৪) একজন যবন নৌকায় করিয়া

মল্লেশ্বর দুফ্টনদ পার করাইল। পিছলদা পর্যান্ত সেই যবন আইল। ২।১৬।১৯৬

ভারপর

220

সেই নৌকা চড়ি প্রভু আইলা পানিহাটী।

পানিহাটী হইতে কুমারহট, তথা হইতে বিভাবাচম্পতির গৃহ এবং কুলিয়া হইয়া শান্তিপুর; শান্তিপুর হইতে রামকেলি। রামকেলি ও কানাইয়ের নাটশালা হইতে ফিরিয়া

> শান্তিপুরে পুন কৈল দশ দিন বাস। বিস্তারি বর্ণিয়াছেন বৃন্দাবনদাস॥ ২।১৬।২১২

কিন্তু বৃন্দাবনদাস ঐতিচতভের গৌড়ভ্রমণ-বর্ণনায় প্রভুর ছই বার শান্তিপুরে আসার কথা লেখেন নাই।

বুন্দাবনদাসের বর্ণনা পড়িয়া একটি অমীমাংসিত সমস্তার কথা মনে পড়ে। ঐতিচতন্ত প্রথমেই যদি নীলাচল হইতে নবদ্ধীপে আসিয়া পাকেন, তবে তিনি কোন পথে আসিয়াছিলেন ? মন্তেশ্বর নদ দিয়া জলপথে আসিয়া নিশ্চয়ই পানিহাটীতে নামেন নাই—কেন-না বুন্দাবনদাসের মতে প্রুভূ সর্ববশেষে কুমারহট্ট, পানিহাটী প্রভৃতি গমন করেন। যদি জয়ানন্দের মত অনুসরণ করিয়া ধরিয়া লওয়া যায় যে প্রভু জলেশ্বর ও দাতন হইয়া, মন্দারণ পরগনা এবং বর্জমানের মধ্য দিয়া নবদ্ধীপে উপস্থিত হইয়া থাকেন, তাহা হইলে অবশ্য মুরারি গুপ্ত ও বুন্দাবনদাস কেন প্রথমেই ঐতিচতন্তের নবদীপের অপর পারে আসার কথা বলিলেন তাহার কারণ বুঝা যায়। কিন্ত ওভুদেশের সীমা হইতে জলপথে পানিহাটীতে না আসিয়া ঐতিচতন্ত কি স্থলপথে—অতান্ত ঘোরা পথে—নবদীপের নিকটে আসিয়াছিলেন ? কবিকর্ণপূর ও কবিরাজ গোস্বামী ঐতিচতন্তের স্থলপথে আসা স্বীকার করেন না।



এক দিকে কবিকর্ণপূর ও কৃষ্ণদাস কবিরাজ, অন্ত দিকে বৃন্দাবনদাস ও জয়ানন্দের মধ্যে গৌড়-ভ্রমণ-বিষয়ে মতভেদ পুব গুরুতর নহে, কিন্তু এই সম্বন্ধে আমি যে বিস্তৃত আলোচনা করিলাম তাহার উদ্দেশ্য এই যে বাঙ্গালী লেথকেরা প্রীচৈতন্মের বাংলাদেশ-পরিভ্রমণ-বিষয়েই যথন এক মত হইতে পারেন নাই, তথন তাহার দাক্ষিণাত্য-ভ্রমণ-বর্ণনায় যে তাহাদের মধ্যে গুরুতর মতভেদ থাকিবে তাহাতে কোন সন্দেহ নাই।

এই প্রসঙ্গে সন্নাসী ঐতিচততার সহিত শচীমাতার কয় বার দেখা হইয়াছিল আলোচনা করা যাইতে পারে। মুরারি গুপু বলেন যে বৃন্দাবন হইতে ফিরিবার পথে প্রভু কুলিয়ায় আসেন। তিনি ভক্তগণের প্রার্থনায় কুলিয়া হইতে নবদ্বীপে আসেন এবং বিক্রুপ্রিয়া দেবীকে নিজমুর্ত্তি-ভাপনের অমুমতি দেন। নবদ্বীপ হইতে তিনি গৌরীদাস পণ্ডিতের গৃহে অম্বিকা-কালনায় গমন করেন এবং তথা হইতে শান্তিপুরে যান। শান্তিপুরে শচীমাতাও গিয়া কয়েক দিন বাস করেন (৪।১৪ ও ৪।১৫ সর্গ)। লোচন এই অংশ অবলম্বন করিয়া লিখিয়াছেন—

মায়ের বচনে পুন গেলা নবদীপ। বারকোণা ঘাট নিজ বাড়ীর সমাপ॥ শুক্লাম্বর ব্রহ্মচারি-ঘরে ভিক্লা কৈল। মায়ে নমস্বারি প্রভু প্রভাতে চলিল॥

কবিকর্ণপূর, বৃন্দাবনদাস, জয়ানন্দ ও কৃষ্ণদাস কবিরাজ এই লালাট বাদ দিয়াছেন। সন্ন্যাস-গ্রহণের পর সন্ন্যাসী একবার মাত্র জন্মস্থানে আসিতে পারেন বলিয়া লোকাচার আছে। তাহা সত্তেও প্রভুর নবদীপে আসায় পাছে কোন দোষ-স্পর্শে ভাবিয়া কি উহারা এ ঘটনা বর্ণনা করেন নাই ?

## শ্রীচৈতত্তভাগবতের ঐতিহাসিক মূল্য

বুন্দাবনদাস ঠাকুরের রচনায় ক্রমভন্ন, অতিশয়োক্তি ও অলৌকিক ঘটনা-সংযোজনার প্রবৃত্তি থাকিলেও সমগ্রভাবে দেখিতে গেলে তাঁহার গ্রন্থ ঐতিহাসিকের নিকট বিশেষ মূল্যবান্। ঐতিচতভ্যচরণাশ্রিত বৈঞ্চবদের



#### ত্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

মধ্যে মতভেদ, নিত্যানন্দ প্রভুর বিবিধ কার্য্যকলাপ ও গৌড়দেশে প্রেমধর্মপ্রচার-সন্থকে তাঁহার গ্রন্থই আমাদের একমাত্র উপঞ্জীব্য। গয়াপ্রতাগত বিশ্বস্তরের নবদীপ-লালার যে চিত্র বুন্দাবনদাস ঠাকুর অঙ্কন করিয়াছেন তাহা হইতে আমরা বিশ্বস্তরের ভাবজীবন-সন্থকে যতটা জ্ঞানলাভ করি, তাঁহার বহিরত্ব জীবনের শত শত খুঁটিনাটি ঘটনা যথায়থ ভাবে বর্ণনা করিলেও আমরা তাহার শতাংশের একাংশও জানিতে পারিতাম না। বুন্দাবনদাসের কবিত্বশক্তি অতুলনীয়। কবির অন্তদ্ধি লইয়া তিনি শ্রীচৈতগ্রের অলৌকিক প্রেমের যে আলেখ্য অঙ্কন করিয়াছেন তাহা রসিকজনের পরম আদরের ধন। ঐতিহাসিকের বহির্ম্বি দৃষ্টির নিকট খুঁটিনাটি ঘটনায় বুন্দাবনদাসের সামান্য ক্রটিবিচ্নতি ধরা পড়িলেও, যোড়শ শতান্ধীর বাংলার ধর্ম্ম, সমাক্ত ও সংস্কৃতি-বিষয়ে শ্রীচৈতগ্রভাগবত ঐতিহাসিক তথ্যের আকরম্বরূপ।

# CENTRAL LIBRARY

## নবম অধ্যায়

### জয়ানন্দের চৈত্ন্যমঞ্জ

#### গ্রন্থ ও গ্রন্থকারের পরিচয়

জ্বানন্দের ঐতিতভাগলল নিষ্ঠাবান্ বৈষ্ণবদের নিকট সম্পূর্ণ অপরিচিত ছিল। ১০০৪ ও ১০০৫ সালের সাহিত্য-পরিষৎ-পত্রিকায় প্রাচ্য-বিভাগহার্ণব নগেন্দ্রনাথ বহু মহাশয় সর্বপ্রথমে এই গ্রন্থের পরিচয় প্রদান করেন। তিনি কালিদাস নাথ মহাশয়ের সহযোগিতায় সাহিত্য-পরিষদ্ হইতে ইহা সম্পাদন করিয়া ১৩১২ সালে গ্রন্থখনি প্রকাশ করেন।

জয়ানন্দ বলেন যে ঐতিচততা যখন নীলাচল হইতে মথুরা-গমনের উদ্দেশ্যে গৌড়ে প্রত্যাবর্ত্তন করেন, তথন তিনি বর্জমানের অন্তর্গত আমাইপুরা গ্রামে জয়ানন্দের পিতা সুবুজি মিপ্রোর আতিথ্য গ্রহণ করিয়াছিলেন। জয়ানন্দের মাতা রোদনী দেবী ঐতিচততকে রাধিয়া খাওয়াইয়াছিলেন (পূ°১৪০)। পূর্ব্ব অধ্যায়ে দেখাইয়াছি যে ঐতিচততের জলপথে গৌড়ে আসাই অধিক সম্ভব। তাহা হইলে জয়ানন্দের বিবরণ ভ্রাম্ত বলিতে হয়। কিন্তু জয়ানন্দ যেরূপ ভাবে স্থবুজি মিশ্রের বাড়ীতে ঐতিচততের আগমন কথা লিথিয়াছেন তাহাতে মনে হয় না যে তিনি সর্বেব মিধ্যা কথা বলিতেছেন। হয়ত তাহার ঐতিচততের আগমনকালসম্বন্ধে ভুল হইয়াছিল। এরূপ ভুল হওয়া বিচিত্র নহে; কেন-না এ সময়ে জয়ানন্দ অত্যন্ত শিশু; নিজেই বলিয়াছেন "রোদনী রাজিল তার লঞা।" গৌড় হইতে নীলাচলে ফিরিবার সময় ঐতিচতত কোন্ পথে গিয়াছিলেন তাহার কোন বর্ণনা কোন গ্রন্থে নাই। সেই জন্ত মনে হয় গৌড়ে আসার সময় আগেজন গৌড় হইতে ফেরার সময় ঐতিচততের আমাইপুরা যাওয়া অধিকতর সম্ভব। বর্জমান হইয়া নীলাচলে যাওয়ার

একটি মাত্র পথ ছিল। ঐ পথেই জ্বানন্দ শ্রীতৈতগ্যকে নীলাচল হইতে তাঁহার বাড়ীতে আনিয়াছেন; যথা—

> তুক্ষনা ভদ্রথপাড়া ছাড়িয়া অস্থ্র গড়া সরো নগরে বাসা করি। রেমুনা বাঁশদা দিয়া দাতনে রহিলা গিয়া জলেখরে রহিলা শর্বরী॥° ছাড়িয়া দেবশরণ প্রবেশিলা মান্দারণ ° বর্জমানে দিলা দরশন। পৃ° ১৪০

জয়ানদের পিতা স্বৃত্তি মিশ্র "গোসাঞির পূর্বে শিশ্র" অর্থাৎ গদাধর গোস্থামীর শিশ্র ছিলেন। গ্রন্থের ভণিতা দেখিয়া মনে হয় জয়ানন্দ নিজেও গদাধর গোস্থামীর নিকট দীকা লইয়াছিলেন।

তিনি প্রায়শঃ নিম্নলিখিত ভণিতা দিয়াছেন—

চিন্তিয়া চৈতন্ত-গদাধর-পদঘন্ত।

আদিখণ্ড জয়ানন্দ করিল প্রবন্ধ ॥ পৃ° ৪

বৃন্দাবনদাস নিত্যানন্দের শিশু বলিয়া ভণিতা দিয়াছেন— শ্রীকৃষ্ণতৈতগ্য-নিত্যানন্দ চান্দ জান। বৃন্দবনদাস তছু পদযুগে গান॥

নগেল্ডনাথ বহু নহাশয়ও লিখিয়াছেন, "যহুনাথ দাস-কৃত শাখা-নিৰ্ণয়ামূত পাঠে জানিতে পারি যে তিনি গদাধর পণ্ডিতের শাখাভুক্ত

"The Orissa trunk read from Kols on the Rupnarayan through Midnapore to Danton on the frontier of Orissa and the pilgrim road from Midnapore to Raniganj."

—Imperial Gazetteer of Bengal, page 307.

সংখ্য এই ক্রম ভূল। পুরী হইতে বংলা বেশে আনার পথে প্রথমে অলেখর ও তাহার পরে পাত্র পড়ে।

Raniganj, along the Damedar to above Burdwan, and thence from there over Khand Ghoah, Jebanabad, Chandrokona (western Hughli district) to Mandalghat, at the mouth of the Rupuarayan river." Blochman's Note on Ain-i-Akbari, Vol. II, page 141.

ছিলেন।" কিন্তু বহু মহাশয় অগ্যত্র লিখিয়াছেন, "তবে অভিরাম গোসাঞির পাদোদক-প্রসাদে—এই ভণিতা-অনুসারে যেন অভিরাম গোসামিকে তাহার মন্ত্রগুকু বলিয়া বোধ হয়" (চৈতত্তমঙ্গল, মুখবন্ধ পূ০ ১০)। ডক্টর দীনেশচন্দ্র সেন (বঙ্গভাষা ও সাহিত্য, পঞ্চম সং পূ০ ১০৭) ও শ্রীয়ুক্ত হুকুমার সেন (বঙ্গশ্রী, ১০৪১ পৌষ, পূ০ ৭৫৬) বহু মহাশয়ের শেষোক্ত মত গ্রহণ করিয়াছেন। কিন্তু গ্রন্থের ভণিতা, যহনাথ দাসের শাখা-নির্গয় ও গ্রন্থমধ্যে গদাধরের বন্দনা দেখিয়া আমার মনে হয় যে জয়ানন্দ গদাধরেরই শিয়া।

## বৈক্ষবসমাজে জয়ানন্দের গ্রন্থ অনাদৃত হইবার কারণ

যিনি গদাধর গোস্বামীর শিশ্য ও বাঁহাকে শ্রীচৈতন্য কুপা করিয়াছিলেন তাঁহার গ্রন্থ বৈঞ্চবসমাজে আদৃত হইল না কেন ? আমার মনে হয় নিম্নলিখিত তিনটি কারণে বাংলার বৈঞ্চবসমাজ তাঁহার গ্রন্থের সাদর করেন নাই:—

(১) জয়ানন্দ গ্রন্থরচনায় বৈঞ্চবীয় রীতি অবলম্বন করেন নাই এবং গোস্বামি-শাল্রে প্রদত্ত ঐতিচতত্তের ধর্ম্মত ব্যাখ্যা করেন নাই। তিনি বাংলা পয়ারের প্রথমেই রাধাকৃষ্ণ, ঐতিচতত বা গুরুদেবকে বন্দনা না করিয়া প্রচলিত হিন্দুরীতি-অনুসরণ করিয়া লিখিয়াছেন—

> প্রথমে বন্দিব দেব শিবের নন্দনে। জাঁহার স্মরণে বিল্প না রহে ভূবনে॥

নলেপ্রবাব্ বছ্লাথের অভ্যের লোক উদ্ধার করেন নাই। কোকটি এই
বন্দে ভৈতজ্ঞহানাথাং অলানন্দ নহাশহন্।
প্রকাশিতং বেন বছাং গীতৈতজ্ঞবিলানকন্।

-- শ্রীরেড়ামি পরিকা, ১০০৮ দাল : ১ম **ব**ত, পু<sup>\*</sup> বত

२ किल्लामकरणव आंदरण-

শীগণিতত গোলাকি বংশ'। বংশ'। নিরম্বর। জার কোমে পূর্ণ হৈল লক্ষম স্থাবর।

२५ पृष्ठीय त्रशबद्वत काळ वानामा व्याद्ध । अधनावत्वत् व्यक्तिवाद्यत् वन्यना नाहे ।

#### ২২৬ - 🗐 ভৈত্তভারিতের উপাদান

বৈশ্বৰ কবিগণ বলেন যে ঐতিচতত্তের লীলা প্রবণ করিলে ভক্তিলাভ হয় বা কুল্ককুপা বা ঐতিচতত্তকুপা লাভ হয়। কিন্তু জ্যানন্দ বলেন চৈতত্ত্বমঙ্গল শুনিলে তীর্থযাত্রা, অন্যদান, ক্তাদান, তুলাপুরুষাদির ফল পাওয়া যায় (পৃত ৮৪)। জ্যানন্দ ঐতিচতত্ত্বের ছারা যোগ-সাধনার উপদেশ করাইয়াছেন; যথা—

আউট হাত গর থানি তাহে দশ দার।
তার মধ্যে আছে ছয় রসের ভাগুরে॥
একাদশ চোর তাহে দক্র পাঁচজন।
গঙ্গাযমূনা নদী বহে সর্বক্ষণ॥
হংস ক্রীড়া করে তাহে চরে দশাস্থলে।
ইঙ্গলা পিক্সলা নাড়ী সুযুদ্ধার মূলে॥ পুত ৭৭

এই বর্ণনা বেন বাউলদের দেহতত্ত্বর গানের মতন শোনায়। প্রীচৈতত্ত্বের তিরোভাবের পঞ্চাশ বৎসরের মধ্যে একদল ভক্ত শ্রীচৈতত্ত্যের মুখ দিয়া শুরারাদ, একদল যৌগিক বা তান্ত্রিক সাধনা, একদল ক্ষভাব, একদল গোপীভাবের কথা বলাইয়াছেন। উড়িয়ার অচ্যুতানন্দ ও শ্রীবণ্ডের নরহরি রূপ-সনাতন অপেকা শ্রীচৈতত্ত্যের কম অন্তর্গ ছিলেন না; জ্যানন্দও শ্রীচৈতত্ত্যের বেশী পরবর্ত্তী নহেন। এরূপ ক্ষেত্রে ঐতিহাসিকের পক্ষে অচ্যুতানন্দ, নরহরি, জ্যানন্দ প্রভৃতির মত শ্রীচৈতত্ত্যের মত নহে, রূপ-সনাতন এবং কুক্ষদাস করিরাজ-বর্ণিত মতই সত্য মত এরূপ নির্দেশ করা নিরাপদ্ নহে। তবে রূপ-সনাতনের মতই গৌড়বঙ্গে বৈক্ষবদের মধ্যে সর্ব্রাপেকা বহুলভাবে প্রচারিত ইইয়াছে। ঐ মতের সহিত জ্যানন্দের মতের পার্থক্য এরূপ প্রস্পান্ট বলিয়া তাহার বই বৈঞ্চবসমাজে আদৃত হয় নাই।

জয়ানন্দ বলেন যে জালিন্দ্র নামে এক মহাশ্র ইন্দ্রপদ-প্রাপ্তির আশায় ইন্দ্রের সহিত যুক্ত আরম্ভ করেন। জালিন্দ্রের স্ত্রী বৃন্দা পুর সতা ছিলেন বলিয়া ইন্দ্র তাহাকে পরাজিত করিতে পারিতেছিলেন না। ইন্দ্রকে জয়ী করিবার জয়্য জনার্দ্রন জালিন্দ্রের রূপ ধরিয়া বৃন্দার সহিত বিহার করিলেন। বৃন্দার সতীয় এইরূপে নয়্ট হওয়ায় জালিন্দ্র ইন্দ্র-কর্তৃক



#### জ্যানন্দের চৈত্ত্যমগল

নিহত হইল। রুন্দা জনার্দ্ধনের প্রবঞ্জনা বুঝিতে পারিয়া তাঁহাকে শাপ দিলেন "পাষাণ শরীর হউক সে দেহ ছাড়িঞা।" কুফ বলিলেন—

> আমি দেহ ছাড়ি হব শালগ্রাম শিলা। তুমি তুলসী বৃন্দা পূর্বের লক্ষ্মী আছিলা॥ মথুরা যে বৃন্দা তোমার বনস্থলী। সেই বৃন্দাবনে সে করিব রসকেলি॥

তারপর

শালগ্ৰাম শিলা হৈলা গণ্ডকা-নিবাসী। দেহ ছাড়িয়া বৃন্দা হইলা তুলসী॥ পৃ°১৩১-৩৩

কোন নিষ্ঠাবান্ বৈষ্ণব এরূপ কাহিনী শ্রন্ধার সহিত পড়িতে পারেন না।

(২) জ্যানন্দ-বৰ্ণিত জীচেত্তলালা-বৰ্ণনা-মধ্যে ঐতিহাসিক ক্ৰম বিন্দুমাত্র নাই। তাহার ফলে শ্রীচৈতত্তের প্রেম-ভক্তির ক্রমবিকাশ লক্তিত্য না। তিনি শ্রীচৈতগুলালাকে নয় খণ্ডে বিভক্ত করিয়াছেন। আদিখণ্ডে পাপভারাক্রান্ত পৃথিবার ছঃগ দেখিয়া হরি চৈতঃরূপে অবতীর্ণ হইবার সঙ্কল করিলেন। অনন্তর নদীয়াখণ্ডে ত্রীচৈতভার জন্ম, বাল্যলীলা, অধায়ন, অধ্যাপনা, পিত্বিয়োগ, গয়াগমন, ছইবার বিবাহ, ভক্তগণ-সঙ্গে কার্ত্তন ও জগাই-মাধাই-উদ্ধার বর্ণিত হইয়াছে। জয়ানন্দ বিশ্বস্তরের পিতৃবিয়োগের পরই তাঁহার গয়াগমন ও ঈশর পুরীর নিকট দীকা-গ্রহণ বর্ণনা করিয়াছেন; তারপর একে একে তাঁহার ছই বিবাহের কথা লিখিয়াছেন। ইহাতে ঐতিহতব্যের মনে যে কিরূপে প্রেমভক্তির উদয় হইল তাহা বর্ণিত হইল না। খ্রীচৈতগুলীলার মাধুর্যোর সর্বপ্রধান এইরূপে অকথিত রহিয়া গেল। অতঃপর বৈরাগাখও। জয়ানন্দের মতে ত্রীচৈততের মনে সহসা বৈরাগ্যের উদয় হইল। তিনি সংসারের অসারতা-সম্বন্ধে সকলকে উপদেশ দিতে লাগিলেন। বৈরাগাখণ্ডে এইরূপ উপদেশ-প্রদান ছাড়া আর বিশেষ কোন ঘটনার উল্লেখ নাই। তারপর সন্ন্যাসবত্তে কাটোয়া ও শান্তিপুরের ঘটনা। পঞ্ম, উৎকলখণ্ড—শান্তিপুর হইতে পুরা-যাতা ও প্রতাপ রুদ্রের প্রতি কৃপা। শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

226

যঠ, তীর্থখণ্ড, দক্ষিণাপথ-ভ্রমণ (পূর্ত ১৪); সেতৃবন্ধ-দর্শন বর্ণনা করিয়া কবি লিখিতেছেন—

> সঞ্জীত উৎকল থগু অক্ষ অমৃত কুণ্ড কর্ণরন্ধে জগজন পিয়ে।

পরে রামানন্দ মিলনের সময় লিখিতেছেন-

চিন্তিয়া তৈতত্ত-গদাধর পদম্বন্দ। আনন্দেতে তীর্থথণ্ড গাঞ জয়ানন্দ॥ পৃ° ১০৫

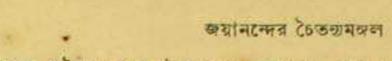
১০৫ হইতে ১০৯ পৃষ্ঠা পর্যান্ত প্রত্যেক অন্যচ্ছেদের পর এইরূপ ভণিতা আছে। তারপর ১০৯ হইতে ১৩৫ পৃষ্ঠা পর্যান্ত প্রকাশগণ্ড। কিন্তু ১৩৫ পৃষ্ঠায় কবি আবার লিখিতেছেন—

> এই অবধি প্রকাশখণ্ড হৈল সাজ। তীর্থযাত্রা করিলেন ঠাকুর গৌরাজ।

কবির মনে শ্রীটেতত্যের তীর্থভ্রমণ-সন্ধন্ধে সুস্পান্ট ধারণা ছিল না। যন্ত, তীর্থপণ্ডে, রায় রামানন্দ-মিলন, রামানন্দের পুরীতে আগমন, রামানন্দের প্রতি উপদেশ। তারপর সপ্তম, প্রকাশখণ্ডে শ্রীটেতত্য-কর্তৃক জগরাথের মহিমার বর্ণনা, সার্বভৌম-উদ্ধার, প্রতাপ কদ্রের প্রতি কৃপা ও শ্রীটেতত্যের মূথ দিয়া বৃন্দা-জালিন্দ্রের কাহিনীর তায় কতকগুলি কাহিনীর বর্ণনা। তারপর আবার সপ্তম নাম দিয়া তীর্থবণ্ডে বৃন্দাবন-দর্শন এবং

মথুরা দেখিয়া তবে গেলা সেতৃবন্ধ। শিবকাঞ্চি বিফুকাঞ্চি মধ্যে মহারণ্য। দ্রাবিড় ডাহিনে থুঞা চলিলা চৈতন্ত॥ পৃত ১৩৬

অফন, বিজয় খণ্ড—ইহাতে প্রীচৈতত্যের গৌড়যাত্রা ও তিরোধান-বর্ণনা। কবি উত্তরখণ্ডে সব ভুল সামলাইয়া লইয়াছেন। উত্তরখণ্ডের ১৪৫ হইতে ১৪৯ পৃষ্ঠা মুখ্যতঃ প্রীচৈত্যভাগবতের সংক্ষিপ্তসার। প্রীচৈত্যভাগবতে যে সকল ঘটনার বর্ণনা আছে, অথচ জ্বহানন্দের চৈত্যামন্থলে নাই, সে



সকল ঘটনার সূত্র উত্তরখণ্ডে আছে। এরূপ কয়েকটি ঘটনার উল্লেখ করিতেছি—নিমাইকে চোরে লইয়া যাওয়া, জগদীশ হিরণাের ঘরে নৈবেছ খাওয়া, তৈথিক বিভার কাহিনী, দিখিজয়ীর পরাভব, বিশ্বস্তরের বঞ্চদেশে গমন। জয়ানক বুকাবনদাসের এটচতভাভাগ্যত পাড়য়াছিলেন সন্দেহ নাই; তবে লীলা-বর্ণনার সময়ে শ্রীচৈতভাগবৃত দেখিয়া ट्लायन नार्छ।

জয়ানন্দের চৈত্যমললে ঐতিহাসিক ঘটনার ক্রম-বিপর্যায় ঘটিবার অখ্যতম কারণ হয়ত এই যে তিনি ক্রম-সম্বন্ধ সম্পূর্ণ গ্রন্থ লিখিতে বসেন নাই। তিনি নয়টি গানের পালা বাঁধিয়াছিলেন। এক একটি পালা-রচনার সময় মূল ঘটনার আত্মস্থিক যত ঘটনা সব দিয়াছেন। তাই জগলাথ মিশ্রের মৃত্যুর পরই বিশ্বস্তরের গ্রায় গমন-বর্ণনা— কেন-না মৃত্যু, শ্রাদ্ধ, গয়ায় পিওদান প্রভৃতি পরস্পর সংশ্লিউ। সেই জন্মই উৎকল-থণ্ডে একবার শ্রীটেভগ্যের তীর্থন্তমণ-বর্ণনা, আবার তীর্থগণ্ডে আর একবার তাহারই বর্ণনা। জয়ানন্দ নিজেই স্বাকার করিয়াছেন যে তাঁহার বই পালাগানের বই: যথা-

> ইবে শব্দ চামর সঞ্চীত বাহ্যরসে। জয়ানন চৈতন্তমঙ্গল গাএ শেষে। পুত ৩

পালাগান করিয়া গৃহস্থ জনসাধারণের মনোরঞ্জন করাই তাঁহার উদ্দেশ্য ছিল। তাঁহার পালাগান শুনিবার জন্ম অনেক ত্রীলোক উপস্থিত হইত: যথা—

> अर्वव ट्लाक इतिरवाल क्यांनम वटल। জয় জয় দেহ তবে দ্ৰীলোক সকলে॥ পৃ<sup>০</sup>৮৩

লোকে যাহাতে চৈতলুমজল পালা গান করায় তাহার জলু কবি আশীব্রাদ করিয়াছেন যে তৈভয়মজল পালা দিলে মনের মতন ছেলে হইবে (পু° ১৫:)। গৃহস্থ-ঘরে যে পালা গান হইবে তাহাতে শুধু ঐীচৈতনা ও তাঁহার ভক্তর্নের কথা থাকিলে চলিবে কেন ? নানারূপ পৌরাণিক

#### 200

#### ঐতিভভাচরিতের উপাদান

কাহিনা গাহিয়া শ্রোতৃর্দের মনোরঞ্জন করা দরকার। তাই ছাপা ১৫২ পৃষ্ঠার বইয়ে প্রবচরিত্র (পৃত ৬০-৭০), জড়ভরত (পৃত ৭:-৭৬), রুফ-লীলার সংক্ষিপ্তসার (পৃত ১০-৭৮), জগলাগক্ষেত্র-মহিনা (পৃত ১০৯-২০), সত্যবতী-কাহিনা (পৃত ১২৭-২৮), জুয়াড়ীর কাহিনী (পৃত ৩১-৩০), অজ্ঞানিল উপাখ্যান প্রভৃতির দারা তিনি প্রায় ৪৪ পৃষ্ঠা ভর্ত্তি করিয়াছেন, আর দশ-বার পাতায় আছে সংসারের অনিত্যতা ও বৈরাগ্য-বিষয়ে শ্রীচৈত্তক্তের উপদেশ।

(৩) বৈক্ষবসমাজে জয়ানন্দের গ্রন্থ আদৃত না হইবার তৃতীয় কারণ এই যে তিনি বিশেষ অনুসন্ধান না করিয়া এমন অনেক সংবাদ লিখিয়াছেন যাহা ভাস্ত। ইহার দৃষ্টান্ত পরে দিব।

#### চতঅমগল-রচনার কাল

জ্যানন্দ বলেন যে তাঁহার গ্রন্থ রচনার পূর্বের সার্বভাম চৈত্ত সহস্রেনাম, রন্দাবনদাস চৈত্তভাগবত, গোপাল বস্তু চৈত্তভাগল ও পরমানন্দ গুপ্ত গৌরাঙ্গবিজয়-গীত লিখিয়াছিলেন (পূত্ত)। পরমানন্দ গুপ্ত যদি শিবানন্দ সেনের পুত্র পরমানন্দ সেন কবিকর্ণপূর হয়েন, তবে "গৌরাঙ্গ-বিজয়" গীত বলিতে চৈত্তভচজোদয় নাটক বা চৈত্তচরিতামূত মহাকাব্য ব্যাইতে পারে। কিন্তু সন্তবতঃ জ্যানন্দের পরমানন্দ গুপ্ত ব্নদাবনদাস-ক্ষিত—

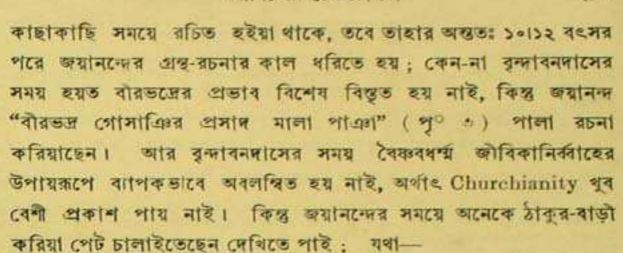
প্রসিদ্ধ পরমানক গুপ্ত মহাশয়। পূর্বের যাঁর ঘরে নিত্যানকের আলয়।

— চৈ ভা°, াভা৪৭৫

গোপাল বহুর "চৈতভামন্দল"-এর কোন খবর পাওয়া যায় নাই।

জয়ানন্দ কোন্ সময়ে চৈতন্তমঞ্জল রচনা করিয়াছিলেন তাহা নিশ্চয় করিয়া বলা যায় না। তবে বুনদাবনদাসের গ্রন্থ যদি ১৫৪৮ থুইটাবের

<sup>&</sup>gt; मणा---- ७५, ४०, ११ १२, ५-७-१, ५२०-२८, ५२० ७ ५०५ पृशेष छेपरम



কোন দেশলয়ে কেহু সেই বৃত্তি করি। পরিবার পুষিবেক বৈফান রূপ ধরি॥ পৃত ৭১

বৈষ্ণৰ নেতৃরন্দের ঐশ্বর্য ইইয়াছে !

নানা অলঙ্কারে কেহ দিবা পরিচ্ছদে। দোলাএ ঘোড়াএ জাব কেহো মহান্ত সপদে॥ পূ<sup>°</sup> ৭১

শ্রীতৈত্যচরিতঃমৃতের মতে সন্নাসের পঞ্চমণর্যে বিজয়াদশনীর পর (২০১৮৫, ১০) শ্রীতৈত্য গৌড়দেশে আসেন। ঐ সময় ১৪০৬ শক, ১৫১৪ খৃফীব্দ। ১৫১৪ খৃফীব্দে জয়ানন্দকে কোলে করিয়া রোদনীকেরাধিতে হইয়াছিল, শুভরাং তখন জয়ানন্দের বয়স্ এক বৎসরেরও কম; অর্থাৎ ১৫১০ খুফীব্দে জয়ানন্দের জয়। ১৫৬০ খুফীব্দের কাছাকাছি তিনি পালা রচনা শেষ করিয়াছিলেন ধরিলে, ঐ সময় তাহার বয়স্ হয় ৪৭ বৎসর। শ্রীতৈতন্যের তিরোভাবের ছই বৎসর পরে বারভদ্যের জয় ধরিলে ১৫৬০ খুফীব্দে তাহার বয়স্ হয় ২৫ বৎসর। ঐ সময়ে তাহার ঝাতি-প্রতিপত্তি প্রতিতিত হইতে পারে। ১৫৬০ খুফীব্দের বেশী পরে চৈতন্মগল রচিত হইলে বন্দাবনের গোস্বামীদের রচিত শাত্রের ছাপা তাহার উপর পড়িত।

জয়ান দ শোনা কথার উপর নির্ভর করিয়া অনেক ঘটনা লিখিয়াছেন বলিয়া তাঁহার গ্রন্থে এই সব মারাত্মক ভুল থবরগুলি রহিয়া গিয়াছে।— GENTRALLIBRARY

२७३

#### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

## জয়ানদের চৈতত্যমঙ্গলে ভুল থবর

(১) জয়ানন্দ জগয়াথ মিত্রকে খ্ব বড় লোক করিয়া আঁকিয়াছেন; যথা—

> লিখিতে না পারি দাস দাসী যত মিশ্রের মন্দিরে ঘাটে। পৃ° ১০

তাঁহার মতে নিমাইয়ের গায়ে "মণিমুক্তা প্রবালহার" ছিল (পূ° ১৯)।
মুরারি গুপ্ত দাসদাসী বা ঐশ্বর্যোর কথা কিছুই লেখেন নাই। বৃন্দাবনদাস স্পায়ই বলিয়াছেন—

শুনি জগন্নাথ মিশ্র পুত্রের আথ্যান।
আনন্দে বিহবল বিপ্রে দিতে চাহে দান॥
কিছু নাই স্থদরিজ তথাপি আনন্দে।
বিপ্রের চরণ ধরি মিশ্রচান্দ কান্দে॥ ১৷২৷১৬

( ।) জয়ান দ বলেন যে নিত্যান দ "অফীদশ বংসরে ছাড়িল গৃহবাস।" নিত্যান-দের প্রিয়শিয় রুদাবনদাস ংলেন—

হেন মতে ছাদশ বংসর থাকি বরে।
 নিত্যানন্দ চলিলেন তীর্থ করিবারে॥ ১।৬।৬৬

নিতানদের জীবনী-সম্বন্ধে জয়ানদ অপেকা বৃদ্ধাবনদাসের উক্তি ঢের বেশী নির্ভরযোগ্য। জয়ানদে নিত্যানদকে ঈশ্বরপুরীর শিশু বলিয়া বর্ণনা করিয়াছেন (পূ° ১১); কিন্তু বৃদ্ধাবনদাস বলেন নিত্যানদের সহিত মাধবেন্দ্রপুরীর সাক্ষাংকার হইয়াছিল এবং তাঁহার

> ঈশ্বরপুরী ত্রন্ধান-দপুরী আদি যত। সর্ববশিশ্য হইলেন নিত্যানন্দে রত॥ ১।৬।৬৯

(৩) জয়ানজ লিখিয়াছেন যে বিশ্বস্তব পড়ুয়া অবস্থাতেই কীর্ত্তনে উন্মন্ত হইয়াছিলেন (পূ ২৫); কিন্তু অভ্যাভ্য সকল চরিত-লেখকই



#### জয়ানন্দের চৈতগুমঞ্চল

বলেন যে কদাচিৎ ভাব প্রকাশ করিলেও গয়া হইতে ফিরিবার পূর্বের শ্রীচৈতত্ত-কীর্তনে বিশেষ রত ছিলেন না।

(৪) জয়ানন্দ বলেন যে জগরাথ মিশ্রের পরলোক-গমনের পরেই বিশ্বস্তর গয়ায় প্রাক্ত করিতে গিয়াছিলেন। গয়া হইতে ফিরিবার পর লক্ষ্মীকে বিবাহ, পূর্ববঙ্গে গমন, লক্ষ্মীর দেহ-ত্যাগ ও বিশ্বপ্রিয়াকে বিবাহ—এরূপ ঘটনাক্রম আর কোন চৈত্রচরিতে নাই। জয়ানন্দ লিথিয়াছেন যে মুরারি গুপু নিমাইয়ের সহিত গয়ায় গিয়াছিলেন। এই মুরারি গুপু তাঁহার কড়চায় বলেন যে বিশ্বপ্রিয়ার সহিত বিবাহের পর অধ্যাপক অবস্থায় নিমাই পণ্ডিত গয়ায় গিয়াছিলেন এবং গয়া হইতে ফিরিবার পর তাঁহার ভাব-প্রকাশ আরম্ভ হয় (১০০ সর্গা)। জয়ানন্দ আরপ্ত বলেন যে

হরিদাস ঠাকুর পণ্ডিত গদাধর।
গোপীনাথ মুরারি মুকুন্দ বজেশর॥
জগদানন্দ গোবিন্দ আচার্যারত্ব সঙ্গে।
গয়া যাতা করিলেন নবধীপ-খণ্ডে॥ পৃ° ৩২

জয়ানন্দ বাতীত অতাতা চৈতত্তারিত লেখক যখন বলিতেছেন যে গয়া
যাইবার পূর্বের নিমাই ভক্ত হয়েন নাই, তখন হরিদাস ঠাকুর বা বজ্রেশরের
ত্যায় প্রেমােন্সত্ত ব্যক্তি যে তাহার সঙ্গে গয়ায় গিয়াছিলেন তাহা সত্তব
মনে হয় না। মুরারি গুপু কোন সঙ্গার নাম দেন নাই। কবিকর্ণপূর
মহাকাবাে লিখিয়াছেন যে বিশ্বস্তরের সহিত তাহার মেসাে আচার্যারত্র
গিয়াছিলেন (৪।২১)। বৃন্দাবনদাস বলেন "য়াতা করি চলিলা অনেক
শিষ্য লইয়া" (১৷১২৷১৩১)। সন্তবতঃ গোপীনাথ, আচার্যারত্র এবং
কয়েকজন ছাত্র তাহার সহিত গয়ায় গিয়াছিলেন।

( a ) জ্বানন্দ লিথিয়াছেন —

তুর্গম পথ পরিহরি মগধে প্রবেশ করি

রাজগিরি ঈশরপুরী বৈসে।

রোপাল মন্ত দশাক্ষর প্রেমভক্তি শক্তিধর

ঈশরপুরী কহিল উদ্দেশে॥ পৃ° ৩৩

মুরারি গুপ্ত (১।:৫।:২৬), কবিকর্ণপূর (৪।৫৬) ও রুন্দাবনদাস (১)১২।১৩৩) বলেন যে এটিচতক্সের দাক্ষা গ্যায় হইয়াছিল। জয়ান দ যখন ইহাদের পরে বই লিখিয়াছেন তথন তাঁহার পক্ষে যে ইহাদের চেয়ে বেশী থবর পাওয়ার স্থবিধা হইয়াছিল তাহা মনে হয় না। এটিচতক্সের কোথায় দাক্ষা হইয়াছিল তাহা মুরারি নিশ্চয়ই জানিতেন।

- (৬) জয়ানন্দের মতে গয়ায় বিশ্বস্তরের সহিত মাধবেক্রপুরীর সাক্ষাৎকার হইয়াছিল। কিন্তু রন্দাবনদাস ও রুয়দাস কবিরাজ্ব নিত্যানন্দ ও অবৈতের সহিত মাধবেক্রের মিলন বর্ণনা করিলেও জীচৈতক্সের সহিত মাধবেক্রের দেখা-সাক্ষাতের কথা লেখেন নাই। খুব সম্ভব বিশ্বস্তরের গয়া-গমনের পুর্বেই মাধবেক্রপুরী পরলোক-গমন করিয়াছিলেন।
  - ( ৭ ) জয়ানন্দের মতে বিশ্বস্তর—
    লক্ষ্মীর বিয়োগ-কথা লোক-মূথে শুনি।
    প্রেমানন্দে কীর্তনে নাচেন দ্বিজমণি॥ পৃ°৫০

वृत्सावनमाभ वटलन-

পত্নীর বিজয় শুনি গৌরাঞ্চ শ্রীহরি। কণেক রহিলা কিছু হেট মাথা করি॥ প্রিয়ার বিরহ-তঃখ করিয়া স্বীকার। তৃঞ্জী হই রহিলেন সর্ববেদ-সার॥ ১।১০।১০৮

(৮) জয়ানদের মতে বিশ্বস্তর বিশ বৎসর বয়সে সয়াস গ্রহণ করেন ও আটাশ বৎসর সয়াস-জাবন যাপন করেন (পৃত ১৮৭)। কিন্তু প্রীচৈতত্যের তিরোধানের মাত্র নয় বৎসর পরে লেখা কবিকর্পপুরের মহাকাব্যে পাওয়া যায় যে প্রীচৈতত্য ২৪ বৎসর বয়সে সয়াস লইয়া, তিন বৎসর তীর্থ-প্রমণাদি করেন ও বিশ বৎসর নালাচলে বাস করেন। কবিকর্পপুরের উক্তি জয়ানদের বর্ণনা অপেকা অনেক বেশা নির্ভরযোগা। যে লেখক প্রীচৈতত্য কত বৎসর বয়সে সয়াসে গ্রহণ করিয়াছিলেন, কত দিন নালাচলে ছিলেন, তাহার পোঁজ-খবর রাখিতেন না, তাহার প্রত্যেকটি করা বিশেষভাবে যাচাই করিয়া দেখা প্রয়োজন।



#### জন্মানন্দের চৈত্যামগল

- (৯) সন্নাস গ্রহণ করিতে যাইবার সময়ে বিশ্বস্তর নাকি
  আগম নিগম গীতা গোবিন্দের কান্ধে।
  করন্ধ কৌপীন কটিসূত্র তাহে বান্ধে। পৃত ৮৬
  প্রেমাবেগে যিনি প্রেহময়া জননা ও প্রেমময়া পত্নীকে ছাড়িয়া চলিয়াছেন,
  তিনি আগম নিগম গীতা সংগ্রহ করিয়া লইয়া ঘাইবেন ইহা বিশ্বাস
  করা কঠিন।
  - (১০) জয়ানন্দের মতে সন্ন্যাসের সময়ে
    শান্তিপুরে গেলা গোবিন্দানন্দ আনন্দিত হৈঞা।
    নবদ্বীপে মুকুন্দেরে দিলা পাঠাইঞা॥ পৃ ৯০

মুরারি গুপ্ত ( ৩।৪।৩ ) ও বৃন্দাবনদাস ( ৩।১।৩৭৪ ) বলেন যে ঐতিতত্ত নিত্যানন্দকে নবদ্বীপে পাঠাইয়াছিলেন।

(১১) মুরারি, কবিকর্ণপূর, নিত্যানন্দ-শিশু বৃন্দাবনদাস ও কৃষ্ণদাস কবিরাজের মতে নিত্যানন্দ শীতৈতথ্যের সজে সজে শান্তিপুর হইতে নীলাচলে গিয়াছিলেন, কিন্তু জ্বানন্দ লিখিয়াছেন যে শীতৈতশু নিত্যানন্দকে আগে যাইয়া পুরীতে বাস করিতে বলিলেন—

তুমি আগে রহ গিয়া জগন্নাথ-ক্ষেত্রে। আমি সর্বব পারিয়দে যাব তোমার পত্রে॥ নিত্যানন মহাপ্রভু শ্রীরামদাস সঙ্গে। পরমেশ্বর স্থানরানদ্দ গেলা নিজ রঙ্গে॥ পৃ° ১০

পরে আবার সূত্র লেখার সময়ে তিনি বলিয়াছেন—

নিত্যানন্দ আগে পলাইল নীলাচলে। নিভূতে রহিল কেহ দেখিতে না পারে॥ পৃ° ১৪৮

(১২) জ্বানন্দ বলেন মুরারি গুপ্ত এটিচতত্তের সঙ্গে শান্তিপুর ২ইতে নীলাচলে গিয়াছিলেন।

> মল্লেশ্বর কুলে বিফু হরি দেখিঞা কহিলা মুরারি গুপ্তে। পৃ<sup>০</sup> ৯৬

মুরারি গুপু নিজে কিন্তু বলেন নাই যে তিনি শ্রীচৈতগ্যের সঙ্গে গিয়াছিলেন। অন্য কোন চরিতকারও মুরারি গুপুকে শ্রীচৈতগ্যের সঙ্গী বলিয়া উল্লেখ করেন নাই।

(১৩) জয়ানন্দ লিখিয়াছেন যে প্রীচৈততা জগলাথের আদেশে কটকে গিয়া প্রতাপরতাকে কৃপা করেন। প্রীচৈততার তায় প্রেমোন্মন্ত সল্লাসী রাজার সহিত সাক্ষাৎ করিতে কটকে যাইবেন, ইহা অসম্ভব। জয়ানন্দের মতে রাজা সদলবলে দিব্য পরিচছদে হাতীতে চড়িয়া যাইতেছেন। রাজার পাট-হাতী প্রীচৈততাকে দেখিয়া মাধা নোয়াইল।

দেখিয়া রাজার বড় বিশায় জশাল। হস্তী হইতে লাফ দিঞা ভূমিতে পড়িল। পৃ°১০৩

শ্রীটেততা ভাঁহাকে কুপা করিলেন। ভারপর

রাজার শতেক স্ত্রী প্রধান চন্দ্রকলা। গৌরচন্দ্র দিলা তাঁরে গলার দিব্য মালা॥ পৃ৽ ১০৩

যাঁহার। "গোবিন্দদাসের কড়চা"য় বর্ণিত বারমুখী বেশার উদ্ধার-কাহিনী লইয়া খোর আন্দোলন করিয়াছিলেন, তাঁহারা জয়ানন্দকে ছাড়িয়া দিলেন কেন ?

জয়ানন্দ আর এক বার জন্ম স্থানে (পূণ ১২৬) প্রতাপরুদ্র-উদ্ধার-কাহিনী অক্স ভাবে বর্ণনা করিয়াছেন। এ বারে রাজ্ঞাই ঐীচৈতক্তের কাছে পুরীতে আসেন।

> সার্ব্বভৌম-মুখে রাজা শুনিয়া সকল। চৈত্তা ভেটিতে রাজা যায় নীলাচল॥ পু ১২৫

শ্রীচৈত্য যদি আগেই রাজাকে কুপা করিয়া থাকেন, তবে আর রাজার পক্ষে সার্বভোমের নিকট সকল কথা শুনিয়া শ্রীচৈত্য দেখিতে আসিবার প্রয়োজন কি ছিল ? যাহা হউক জয়ানন্দ বলেন, জ্যৈষ্ঠ মাসের "সান্যাত্রা পৌর্নমানী দিনে শ্রীচৈত্য প্রতাপরত্র"কে অফবান্ত রূপ দেখাইলেন। শ্রীচৈত্য যদি রাজপণ্ডিত সার্বভোমকে যড়ভুজ মৃত্তি দেখাইয়া থাকেন, তাহা হইলে স্বয়ং রাজাকে আর তইখানি বেশী হাত না দেখাইলে রাজসন্মান বজায় থাকে কিরূপে ? তাই বোধ হয় জয়ানন্দ শ্রীচৈতন্তের

অফবাহুর কথা লিখিয়াছেন। প্রতাপরুদ্রের উদ্ধার-কাহিনীর ঐতিহাসিকতা শ্রীচৈতগুচরিতামূতের বিচার-প্রসঙ্গে আলোচনা করিব।

(১৪) জয়ানন লিবিয়াছেন যে শ্রীচৈততা রামানন্দকে কৃষ্ণভক্ত না হওয়ার জতা অনেক ভংগনা করিলেন। পু<sup>০</sup> ১০৪

শ্রীচৈতন্ম বলিতেছেন—

শৃকর কৃটিরে তুমি হৈয়াছ বিভোর। হেন দেহে না পাইলে বৈফবের কোল।

রায় রামানন্দ শ্রীচৈতত্তের সহিত সাক্ষাৎকারের পূর্বেই "জগরাধবল্পভ নাটক" লিখিয়াছিলেন। যিনি ঐরূপ নাটক লিখিতে পারেন তাঁহাকে যে শ্রীচৈতত্ত ঐ ভাবে ভংসনা করিলেন ইহা অসম্ভব। রায় রামানন্দের সহিত শ্রীচৈতত্তের যেরূপ কৃষ্ণ কথার আলোচনা হইয়াছিল বলিয়া অত্যাত্ত লেখক বর্ণনা করিয়াছেন, জয়ানন্দ তাহার ইপ্তিতও করেন নাই।

(১৫) জ্যানন্দ বলেন যে ঐাচৈত্য যথন বৃদ্ধাবন-ভ্রমণ করিতেছিলেন তথন রূপ ও সনাতনের সহিত তাঁহার দেখা হয়।

> হেন কালে দবির থাস ভাই তুইজনে। দেখিয়া চৈতন্ত চিনিলেন ততক্ষণে॥ পৃ° ১৩৬

রূপ-সনাতনের জীবনী-সম্বন্ধে কৃষ্ণদাস কবিরাজের উক্তি সর্বাপেকা অধিক প্রামাণা; কেন না তিনি উহাদের সম্প পাইয়াছিলেন। তিনি বলেন যে শ্রীচৈত্র বৃন্দাবন হইতে যখন ফিরিতেছেন, তখন প্রয়াগে শ্রীরূপের সহিত ও কাশীতে সনাতনের সহিত তাঁহার দেখা হয়।

(১৬) জয়ানদ্দ জগলাথ মিশ্রের পিতার নাম লিখিয়াছেন জনার্দন
(পৃ ৮৮)। কিন্তু কবিকর্ণপূর গৌরগণোদ্দেশ-দীপিকায় (৩৫ শ্লোক) ও
কৃষ্ণদাস কবিরাজ চরিতায়তে (:।১৩।৫৪) তাঁহার নাম লিখিয়াছেন উপেন্দ্র
মিশ্র। চরিতায়তের মতে জনার্দ্দন জগলাথের ভাইয়ের নাম, হতরাং উহা
উপেন্দ্র মিশ্রের নামান্তরও হইতে পারে না।



#### শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

## প্রীচৈতভামগলে নৃতন তথ্য

জয়াননদ এমন অনেক নৃতন সংবাদ দিয়াছেন, বাহা বোড়শ শতাব্দীর অন্য কোন বইয়ে পাওয়া যায় না। দেশের রাজনৈতিক ও অর্থ নৈতিক অবস্থা-সম্বদ্ধে তাঁহার বর্ণনা সমসাময়িকের উল্লি-হিসাবে খুবই মূল্যবান্। কিন্তু প্রীচৈত্য বা তাঁহার সন্ধিগণের সম্বদ্ধে তাঁহার প্রদন্ত এই প্রকার নৃতন তথা কত দূর সত্য তাহা বাচাই করিয়া লইবার উপায় নাই। তিনি জনপ্রবাদ যেমন ভাবে শুনিয়াছিলেন তেমনি লিখিয়াছেন। অন্য কোন চরিতকার অন্তর্জপ কোন ঘটনা বা কাহিনী লিপিবদ্ধ করেন নাই। জয়ানন্দ-প্রদন্ত এইরূপ কতকগুলি তথা নিম্নে লিখিতেছি।

#### (3) क्यांनन तत्वन (य

চৈতন্য গোসাঞির পূর্ববপুরুষ আছিলা যাজপুরে। শ্রীহট্ট দেশেরে পালাঞা গেল রাজা ভ্রমরের ডরে॥ পু<sup>o</sup> ৯৬

নগেন্দ্রনাথ বস্তু মহাশয় বলেন যে এই "ভ্রমর" কপিলেন্দ্র দেব, কেন-না তাঁহার গোপীনাথপুর শিলালিপিতে "ভ্রমর" উপাধি দেখা যায়। কিন্তু কপিলেন্দ্র ১৪০৪-৩৫ গুটাব্দে অগাৎ প্রীচৈতক্তের জন্মের ৫১।৫২ বৎসর পূর্বের রাজ্যাধিরোহণ করেন। যদি ধরিয়া লওয়া যায় যে কপিলেন্দ্র রাজ্যা হওয়ার পরেই প্রীচৈতক্তের পূর্বেপুরুষ যাজপুর ইইতে প্রীহট্টে পলায়ন করেন, তাহা হইলে পঞ্চাশ বৎসরের মধ্যে মিশ্র-বংশের তিন বার (যাজপুর, প্রীহট্ট, নবজীপ) বাসস্থান-পরিবর্তনের কথা স্বীকার করিতে হয়। জয়ানন্দের কথায় বিখাস করিয়া উড়িয়া লেখকেরা প্রীচৈতক্তকে উড়িয়া বলিয়া দাবী করিতেছেন। কিন্তু প্রীচৈতক্ত পাশ্চান্তা বৈদিক-

#### তারিণীচরণ রথ লিপিয়াভেন—

<sup>&</sup>quot;Chaitanya himself emerged from a highly learned and respectable Oriya Brahmin family of Orissa and had migrated for a time to Bengal owing to disagreement with the king of Orissa." J. B. O. R. S., Vol. VI, pt. III, p. 446.



কুলে বাংতাগোত্রে জন্মগ্রহণ করিয়াজিলেন বলিয়া মুরারি গুপ্তের কড়চা এবং ঐটিতত্তের আজায় ও কুটুন্থের বংশধরদের নিকট হইতে জানা যায়; আমি আমার উড়িয়া বন্ধুদিগকে জিজ্ঞাসা করিয়াছিলাম—উড়িয়ার রাক্ষণদের মধ্যে পাশ্চান্ত্য বৈদিক শ্রেণী বলিয়া কোন শ্রেণী আছে কি না; তাহারা বলিলেন এরূপ শ্রেণী উড়িয়ায় নাই। সেই জন্ম ঐটিতত্তের পূর্বপুরুষ যাজগ্রামে বাস করিয়াছিলেন, এ কথা তর্কের থাতিরে বীকার করিলেও, তাঁহারা যে উড়িয়া ছিলেন তাহা মানিয়া লইতে পারিলাম না।

(২) জয়ানদের মতে শ্রীঠাকুরাণী গদাধর পণ্ডিতের নিকট দীকা লইয়াছিলেন।

> আই ঠাকুরাণী বন্দে। চৈতক্সের মাতা। পণ্ডিত গোসাঞি গাঁর দীক্ষামন্ত্র-দাতা॥ পৃ° ২

(৩) সূর্য্যদাস সারথেলের কল্যা বস্থা ও জাহ্নবীর নাম অল্যান্ত প্রস্থে পাওয়া যায়। জয়ানন্দ চক্দমুখা নামে অল্য একটি কল্যার নাম এমন ভাবে লিখিয়াছেন যে মনে হয় তিনিও নিত্যানন্দ-প্রভুর কৃপাপাত্রী ছিলেন।

> সূর্যাদাস-মন্দিনী শ্রীমতী চক্রমুখী। নিত্যানন্দ-প্রেমময়া শ্রীবস্তজাহাবী॥ পৃত ৩

(৪) নিতানিক প্রভু একচাকা গ্রামে জন্মিয়াছিলেন। জয়ানক বলেন একচাকা থলকপুর (পৃত ৮)। তাঁহার মতে নিতানিকের গাহস্থাপ্রমের নাম ছিল বোধ হয় অনস্ত।

> একচাকা থলকপুর পন্মাবতী ককে। জন্মিলা অনন্ত মাঘমাস শুরুপকে। পৃ<sup>০</sup> ১১

বুন্দাবনদাস বহু বার 'অনন্ত' নাম উল্লেখ করিয়া বন্দনা করিয়াছেন। তবে তাহার লেখা হইতে স্পন্ট বুঝা যায় না যে তিনি নিত্যানন্দকে অনন্ত-তব্রুপে স্তৃতি করিয়াছেন কি না।

কুলাৰন্থান শীতিভভভাগৰতে লিখিয়াছেন—

দ্বিদ্ধ বিপ্ৰা প্ৰাণ্ডল যে হেল নাম-কেল। এই মত নিত্যানৰ অনস্ত বলদেব। পু" =>

भीटिक सम्राज्य विकास समि १६, ६०, ६०, ६०, ६०, ६०, ६०, ६२, ३२४, ३०४, ३६६ ७ ३६५ शृहीय व्यादक ।

#### শ্রীভৈতগুচরিতের উপাদান

280

- (৫) মুরারি গুপ্ত লিখিয়াছেন যে জগলাথ মিশ্র রঘুনাথের উপাসক ছিলেন। কিন্তু জয়ান-দ বলেন যে জগলাথ মিশ্র "শ্রীভাগবত পাঠ করেন গোবিন্দ-সমীপে" (পৃ ১১)।
- (৬) ঐতিত্য ১৪৮৬ খৃষ্টাব্দে জন্মগ্রহণ করেন; বিশ্বরূপ তাঁহার অপেকা বোধ হয় ৭৮ বংসরের বড়; কেন-না জয়ানন্দ বলেন যে নিমাইয়ের চূড়ামঞ্চলিয়া (কর্ণবেধ) ও বিশ্বরূপের উপনয়ন একই সময়ে হইয়াছিল (পৃ ১৭)। ১৪৭৮-৭৯ খৃষ্টাব্দে, বাপ্লালায় একপ্রকার অরাজকতা চলিতেছিল। জয়ানন্দ লিখিতেছেন যে বিশ্বরূপের জন্মের পর "আচ্থিতে নবদ্বীপে হৈল রাজভয়।"

পিরল্যা গ্রামেতে বৈসে যতেক যবন। উচ্ছেদ করিল নবদ্বীপের ব্রাহ্মণ॥

পিরলার বর্ত্তনান নাম পারুলিয়া; নবছীপ ও পূর্ববস্থলীর মাঝখানে এই গ্রাম। ঐ অভ্যাচারের সময়ে—

> বিশারদ-হত সার্বভৌম ভট্টাচার্য। সবংশে উৎকলে গেলা ছাড়ি গৌড়রাঞ্চ।

(৭) জয়ানদের মতে নিমাইয়ের ধাত্রীমাতার নাম নারায়ণী। ধাত্রী-মাতা নারায়ণীর কথা বা নাম অন্ত কোন চৈত্তচরিতে নাই। দৈবকী-নন্দনের বৈষ্ণব-বন্দনায় পাওয়া যায়—

> শ্রীনারায়ণী দেবী বন্দিব সাবধানে। আলবাটী প্রভু বাঁকে কহিলা আপনে॥

(৮) হরিদাস ঠাকুরের পরিচয়-প্রদান-প্রসঙ্গে জয়ানন্দ লিথিয়াছেন যে তাঁহার বাড়া ভাটকলাগাছি আমে এবং

উজ্জ্বলা মায়ের নাম বাপ মনোহর।

(৯) বিশ্বস্তারের সহিত মিলিত হইবার জগু নিত্যান দ বারাণসা হইতে নবজীপে আসিলেন (পৃ° ৫৪)। নবজীপে আগমনের অব্যবহিত পূর্বের নিত্যান দ কোথায় ছিলেন তাহা অগ্ন কোন গ্রন্থ হইতে জানা যায় না।



- (১০) বিশ্বস্তরের সন্ন্যাস-গ্রহণ-বর্ণনা-উপলক্ষে জয়ানন্দ ঐীচৈতন্তের বংশতালিকা নিম্নলিখিতভাবে দিয়াছেন—
  - (১) কীরচন্দ্র (২) বিরূপাক (৩) রামকৃষ্ণ দিখিজয়
  - (৪) ধনপ্রয় মিত্রা (৫) জনাদিন (৬) জগরাথ মিতা। পৃ ৮৮
- (১১) विश्व दिव महामि- श्र हाण मार्य दिन विश्व व
  - (১২) জয়ানন্দ লিথিয়াছেন যে ঐটচতত বলিলেন—
    নিত্যানন্দ গোসাঞি তোমার গৌড়দেশ।
    আজি হৈতে ছাড়াবে।ঞি অবধূতবেশ।
    গোসাঞির মন বুঝি প্রতাপক্তর রাজা।
    নানা ধন দিয়া নিত্যানন্দে করে পূজা। পু" ১৩৯

কিন্তু বৃন্দাবনদাসের বর্ণনা দেখিয়া মনে হয়, নিত্যান দ প্রভু অবধৃত-বেশে গৌড়দেশে প্রত্যাবর্ত্তনের পর অলক্ষারাদি ধারণ করিতে আরম্ভ করেন।

(১০) জ্বানন্দের মতে প্রতাপক্ত এক বার অছৈত প্রভুকে নীলাচলে লইয়া গিয়াছিলেন ও তিন মাস ধরিয়া তাঁহাকে বঙ্গিধ সম্মান দেখাইয়াছিলেন। অধৈতকে

> রাজমহিষী সব প্রদক্ষিণ করে। প্রভুর আজ্ঞায় কনকছত ধরে শিরে॥ পৃত ১৩১

(১৪) নিত্যানন্দ গৌড়দেশের কোন্ কোন্ গ্রামে ধর্মপ্রচার ৩১ করিয়াছিলেন তাহার একটি বিস্তৃত তালিকা জয়ানন্দ দিয়াছেন (পু° ১৪৩-৪৪)। বারভদ্রের প্রসাদমালা পাইয়া জয়ানন্দের গ্রন্থ লেখার কথা সতা হইলে, এই তালিকা যথার্থ বলিয়া গ্রহণ করা যাইতে পারে।

জয়ানন্দ যে সমস্ত নৃতন কথা বলিয়াছেন, তাহা সর্বাংশে সত্য বলিয়া গ্রহণ করা যায় না; কেন-না পূর্বের দেখাইয়াছি যে ঐতিহাসিক ঘটনা বা কালাকুক্রমে ঘটনা-বর্ণনায় তিনি অত্যন্ত অসাবধান ছিলেন।

## জয়ানন্দ-বর্ণিত ঐীতৈতত্ত্বের ভ্রমণপথ

জয়ানন্দের চৈতভামন্ধলে শ্রীকৈতভার ভ্রমণপথের যেরূপ বিস্তৃত বর্ণনা আছে, এমন আর অভ্য কোন চরিত-গ্রন্থে নাই। জয়ানন্দ-বর্ণিত পথেই শ্রীকৈতভা ভ্রমণ করিয়াছিলেন কি না বলা কঠিন; তবে যোড়শ শতাব্দীতে ঐ পথ ছিল এবং লোক উহাতে যাতায়াত করিত এই তথা জয়ানন্দ হইতে পাওয়া যায়।

#### (ক) নবদাপ হইতে গয়া—

মুরারি গুপ্ত বলেন, বিশ্বস্তর নবলাপ হইতে যাত্রা করিয়া চোরাদ্ধয়ক নদে স্নান করেন; তারপর মলারে (ভাগলপুর জেলা) মধুসূদন দর্শন করিয়া, নদা পার হইয়া রাজগিরে উপস্থিত হয়েন; রাজগির হইতে গয়ায় যান (১١১৫)। কবিকর্ণপূর্ব্ত মহাকারো ঠিক এই বিবরণ লিথিয়াছেন, কেবল চোরাদ্ধয়ককে চীর নদ বলিয়াছেন (৪০৫০)। রন্দাবনদাস কিন্তু লিথিয়াছেন যে বিশ্বস্তর মন্দার দেথিয়া পুন্পুন আদেন (১১২১৩২) এবং পুন্পুন হইতে গয়ায় গমন করেন। তিনি বিশ্বস্তরের রাজগির-গমনের কথা উল্লেখ করেন নাই। রাজগির হইতে গয়ায় যাওয়ার সোজা পথ আছে ওছিল। পুন্পুন পাটনার নিকটবর্তী। সেই জ্ব্যু রাজগির হইতে পুন্পুন আসিয়া তারপর গয়ায় যাওয়া কন্টসাধা। লোচন কিন্তু মুরারি ওর্ণাবনদাসের মধ্যে সামগ্রুক্ত আনিতে যাইয়া লিথিয়াছেন যে মন্দারে মধুসূদন-দর্শনের পর প্রান্থ পুন্পুনে আসিলেন, পুন্পুনে স্থান ও আক্ষাদি



#### জয়ানদের চৈত্তখনঞ্চল

সারিয়া তিনি রাজগিরে যাইলেন। তথায় ত্রকারুতে সানদান সারিয়া গয়ায় গমন করিলেন। জয়ান দ পুন্পুনে যাওয়ার কথা লেখেন নাই। তাঁহার বর্ণিত পথ এই—

> অনেক সেবক সঙ্গে হাস পরিহাস রঙ্গে ইন্দ্রাণী নৈহাটী করি বানে। অজয় নদী পার হয়। আলকোণা ডাহিনে পুঞা উত্তরিলা তিলপুর গ্রামে॥

> ডাহিনে বামে রাউতড়া একতালা গ্রৌড়পাড়া বাহিয়া কানাঞির নাটমালে।

\*\*\* \*\*\* \*\*\* \*\*\*

পড়িলা পর্নত তলে গন্ধার দক্ষিণ কুলে তপ্তসিকতা রবিছালে।

জয়ঢাক বীরঢাক পর্বত লাথে লাখ মহারণা কর্কট কর্কশে।

ছুর্গন পথ পরিহরি নগধে প্রবেশ করি রাজগিরি ঈশরপুরী বৈসে।

গোপালমন্ত দশাক্ষর প্রেমভক্তি শক্তিধর ঈশ্বরপুরী কহিল উদ্দেশে॥

পথতামে হার আইল বিপ্র-পাদোদক লইল সভারে কহিল হাসি হাসি।

গয়ায়াত্রীদের মধ্যে এখনও অনেকে পুন্পুনে স্নানতর্পণ সারিয়া গয়ায় য়ান। সেই হিসাবে বৃন্দাবনদাসের কথা সতা হইতে পারে। রাজগির হইতে সোজা গয়ায় য়াওয়ার য়েমন রাস্তা আছে, তেমনি পুন্পুন হইতেও সোজা গয়ায় য়াওয়া য়ায়। পুন্পুন ও রাজগির ছই স্থান দেখিয়াই গয়া য়াইতে হইলে, অনেক পথ মুরিয়া য়াইতে হয়। মুরারি, কবিকর্ণপুর ও জয়ানক যথন পুন্পুনের কথা লেখেন নাই —সোজা রাজগির ইইতে গয়াযাতা বর্ণনা করিয়াছেন, তখন বৃন্দাবনদাস ও লোচনের বর্ণিত পথ কন্টকলিত মনে হয়।

বিশ্বস্তর মিশ্র গয়া হইতে কোন্ পথে ফিরিলেন, তাহা জয়ানন্দ বাতীত অন্য কেছ লেখেন নাই। সেই জন্ম জয়ানন্দের বর্ণনার সত্যাসত্য যাচাই করিয়া লওয়ার উপায় নাই। জয়ানন্দ বলেন, বিশ্বস্তর গয়া হইতে ফিরিবার পথে মন্দারে যান। তথা হইতে হরিড়াযোড়ি, কংসন্দ ও বৈজনাথ দিয়া গলাপার হইয়া নবলীপে আসেন (পৃত ০৬)। এইরপ একটি পথ অতি প্রাচীনকাল হইতে বর্তমান আছে।

## (খ) কাটোয়া হইতে শান্তিপুর-

মুরারি গুপ্ত ও অক্যাক্স চরিতকার লিখিয়াছেন যে ঐটিচতক্স সন্ন্যাসগ্রহণ করার পর ব্রজে বাইবার উদ্দেশ্যে রাঢ়ে ভ্রমণ করিয়াছিলেন ( মু ২।০।১ )। কিন্তু জয়ানন্দ বলেন—

কাটোয়ারে গৌরান্স ভারতী গৃহবাসে।
শান্তিপুরে চলিলেন অবৈত সম্ভাবে।
অনেক পারিষদ সন্দে গলাতীরে তীরে।
সমুদ্রগড়ি পার হৈঞা গেলা শান্তিপুরে॥ পৃত ৯৩

সমুদ্রগড়ি নবদ্বীপের ৫ মাইল দক্ষিণে আর কাটোয়া নবদ্বীপের ২৪ মাইল উত্তরে। কাটোয়া হইতে সমুদ্রগড়ি বা সমুদ্রগড় আসিতে হইলে নবদ্বীপের নিকট দিয়া যাইতে হয়। নবদ্বীপের নিকট দিয়া যাইলে শচীমাতার বা নবদ্বীপের ভক্তবৃন্দ যে শ্রীচৈতভ্যের সহিত সাক্ষাৎ করিবার চেন্টা করিতেন না ইহা অসম্ভব। জ্বয়ানন্দ এ স্থলে

-Oldham-'Routes Old and New' in Bengal Post and Present, July, 1924, pp 21-36).

There had long been at least two routes across this hilly country (Jharkhand), one leading from Benares and Gaya to the Midnapure district through the Hazaribagh and Manbhum districts and the other through the Monghyr, Santal Parganas, Birbhum and Bankura districts via Deeghar, Baidyanath, Sarath and Vishnupur, followed by Hindu pilgrims to their sucred shrines at Benares, Gaya, Baidyanath and Jaggernath."



স্পান্টতঃই কল্লিত কথা লিখিয়াছেন। গ্রন্থ-শেষে সূত্র লিখিবার সময়ে তিনি নিজেও ইহা বুঝিয়াছিলেন। তাই সূত্রে বলিয়াছেন-

> বক্রেশ্বর যাইতে পুন নিবর্ত্ত হইল। ঘাদশ দিবস শান্তিপুরেতে রহিল। পু<sup>০</sup> ১৪৮

জয়ানন্দ ৯০ পৃষ্ঠায় লিখিলেন যে শ্রীচৈততা কাটোয়া হইতে গঙাতীর ধরিয়া সম্জগড়ে আসিয়া শান্তিপুরে গেলেন; আর ১৪৮ পৃষ্ঠায় কাটোয়া হইতে বক্রেশর যাওয়া বর্ণনা করিলেন। গঙ্গার তীরে তীরে যাইয়া কোন প্রকারে সিউড়ির নিকটবর্তী বক্রেখরে পৌছান যায় না।

রুন্দাবনদাস ত্রীটেভতের সল্লাস-গ্রহণের পরে যে ভ্রমণ বর্ণনা করিয়াছেন, তাহা তিনি নিত্যানন্দ প্রভুর নিকট শুনিয়া লিখিয়াছেন। নিত্যানন্দ শীঠেতত্যের সঙ্গে ছিলেন। ঐ বর্ণনা জ্যানন্দের বর্ণনা অপেকা অনেক বেশী নির্ভরযোগ। তিনি বলেন শ্রীচৈতগু কাটোয়া হইতে পশ্চিমমূথে যাইয়া রাড়ে প্রবেশ করিলেন (৩)১।৩৭১)। বক্তেশ্বের চার ক্রোশ দূর হইতে এটেচতত আবার পূর্ববমুখে ফিরিলেন (তা১।১৭২)। তারপর তিনি গঙ্গাতীরে আদেন, সেখানে একরাত্রি যাপন করেন। বারভূম হইতে পূর্বদিকে ফিরিয়া প্রথমে শ্রীচৈততা কোথায় গঞ্চা দেখিয়াছিলেন, তাহা নির্ণথ করা কঠিন। যাহা হউক, সেই স্থান হইতে তিনি নিত্যানন্দকে নবছাপে পাঠাইয়া দিলেন। নিত্যানন্দ গলায় ভাসিয়া নবছীপে আসিলেন। ত্রীচৈততা ফুলিয়ায় হরিদাসের নিকটে গেলেন।

## (গ) শান্তিশুর হইতে পুরী--

মুরারি গুপ্ত, কবিকর্ণপূর, লোচন ও কৃষ্ণদাস কবিরাজ শ্রীচৈতক্সের শান্তিপুর হইতে রেমুনা পর্যন্ত আসার পথের কোন বিবরণ দেন নাই। মুরারি ও লোচন বলেন, ঐতিচতত তমলুক হইতে রেমুনা গিয়াছিলেন। বুন্দাবনদাস, জয়ানন্দ ও গোবিন্দদাস এই তিন জন লেথক তিনটি বিভিন্ন পথের বিবরণ দিয়াছেন। বুন্দাবনদাস বলেন যে ঐটচতত্য শান্তিপুর হইতে আটিসারায় যান। প্রভুপাদ অতুলক্ষ গোসামী অনুমান করেন যে আটিসারা ২৭ পরগনার অন্তর্গত বারুইপুরের নিকটবর্তী আটঘরা গ্রাম। আটিসারা হইতে প্রভু ছত্রভোগ যান। ছত্রভোগ ২৪ পরগনা জেলার জয়নগর-মজিলপুর হইতে ২।৩ ত্রোশ দক্ষিণে। ছত্রভোগ হইতে নৌকায় চড়িয়া প্রভু উৎকলের সীমানায় প্রয়াগ-ঘাটে পৌছিলেন। প্রয়াগ-ঘাট ডায়মণ্ড হারবারের নিকট মল্লেখর নদের কোন ঘাট হওয়া সম্ভব।

> এই মত মহাপ্রভু চলিয়া আসিতে। কথোদিনে উত্তরিলা স্থবর্ণরেখাতে॥

শ্রীচৈতন্ত স্থবর্ণরেখার তীর হইতে জলেখর, বাঁশদা, রেমুনা হইয়া যাজপুরে উপস্থিত হইলেন। এই বর্ণনায় দেখা যায় যে প্রভু শান্তিপুর হইতে বাহির হইয়া, গঙ্গাকে ডাহিনে রাখিয়া ভ্রমণ করিতে করিতে জয়নগর-মজিলপুরের নিকট আসেন।

জয়ানন্দ বলেন, প্রভু -

নানা মহোৎসবে - রজনী বঞিঞা

স্থরনদী করিএগ বামে।

কাচমনি বেভঢ়া ডাহিনে পুইঞা

উত্তরিলা কুলীন গ্রামে ॥

4 4 4

দেব নদ পার হত্রা সেয়াথালি দিত্রা

উত্তরিলা তমলিপ্তে।

মল্লেশ্বর-কুলে বিষ্ণু হরি দেখিঞা

কহিল মুরারি গুপ্তে। পু<sup>্</sup> ৯৬

অবশ্য মুরারি গুপ্ত ঐিচৈতত্যের সঙ্গে ছিলেন না। তারপর

রজনী প্রভাতে স্বর্ণরেখা নদী

পার হৈঞা উত্তরিলা বারাসতে।

দাতন জলেখর

পার হঞা

উত্তরিলা আমরদাতে ॥



#### জয়ানন্দের চৈত্ত্যমন্ত্রল

বাঁশদা ছাড়িঞা রামচন্দ্রপুর দিঞা
রেমুনাএ গোপীনাথ দেখি।
সরো নগরের দেউলের ভিতরে
সিকেশ্বর লিম্ন করি সাক্ষী॥
রক্ষনী প্রভাতে চৈতন্ত গোসাঞি
বাদালপুরের মাঝ দিয়া।
অস্থরগড় ডাহিনে করিঞা
ভদ্রকে উত্তরিলা গিঞা॥

ভদ্রক হইতে যাজপুর। যাজপুর হইতে "মন্দাকিনী" নদী পার হইয়া পুরুষোত্তমপুর এবং পরে আমরালে পৌছিলেন। তংপরে কটকে "সাক্ষী-গোশীনাথ" দেখিয়া একামবনে যাইলেন (পৃ ৯৫-৯৭)।

গোবিন্দদাদের মতে প্রীচৈত্য শান্তিপুর হইতে বর্জমান —দামোদর—
হাজিপুর—মেদিনীপুর—নারায়ণগঞ্জ—স্থবর্গরেখা —হরিহরপুর —বালেশর—
নালগড়—বৈতরণী —সাক্ষাগোপাল দেখিয়া পুরীতে আসেন। এরূপ একটি
রাস্তা রেনেলের মাাপে দেখা যায়। কিন্তু এইটি সহজ্ব পথ নহে।
সব চাইতে সোজা রাস্তা হইতেছে বৃদ্দাবনদাস-বর্ণিত পথ। ঐ পথেই
শ্রীতৈত্য পুরীতে গিয়াছিলেন বলিয়া মনে হয়।

## (ঘ) পুরী হইতে রন্দাবন-

এই পথের কোন বিন্তৃত বিবরণ জয়ানন্দ দেন নাই। তিনি শুধু
লিথিয়াছেন যে প্রীচৈত্য অযোধ্যা হইতে দক্ষিণাভিমুখে যাইয়া মধুরায়
পৌছিলেন (পৃ° ১৩৬ ও ১৪৯)। জয়ানন্দের লিখিত তীর্থপথের
বিবরণ পড়িয়া মনে হয়, তিনি নিজে পশ্চিমে গয়া পর্যান্ত ও দক্ষিণে পুরী
পর্যান্ত ভ্রমণ করিয়াছিলেন। তিনি যে সকল অখ্যাত গ্রামের নাম
করিয়াছেন, তাহা এই ভ্রমণের অভিজ্ঞতার ফল।

# জ্যানন্দ-কর্ত্ক অক্ষিত শ্রীচৈতভা-চরিত্র

গুরারি গুপু, কবিকর্ণপূর, বুন্দাবনদাস ও কুফাদাস কবিরাজ্বের রচনায় শ্রীচৈতত্তের চরিত্রে যে অপরূপ সৌন্দর্য্য ফুটিয়া উঠিয়াছে, তাহার কোন আভাসও জ্য়ানন্দের চৈতল্যমজলে পাওয়া যায় না। জ্য়ানন্দের ঐটিচতল্য বাল্যকাল হইতেই পরম ভক্ত। তিনি প্রথমা পত্নীর মৃত্যু-সংবাদ শুনিয়া আনন্দে নৃত্যু করেন—

> লক্ষ্মীর বিয়োগ-কথা লোক-মূথে শুনি। প্রেমানন্দে কীর্ত্তনে নাচেন বিজমণি॥ পৃত ৫০

তিনি মাতাকে সংসারের অনিতাতা বুঝাইয়া দিয়া বৈরাগ্য উপদেশ দেন। কিন্তু অতি অল্লদিন পরেই যখন বিষ্ণুপ্রিয়ার সহিত বিবাহের সম্বন্ধ উপস্থিত হইল তখন তিনি সানন্দে শ্বিতীয় বার বিবাহ করেন।

বুন্দাবনদাস ও অলাল চরিতকার বিশ্বয়রের সন্নাস-গ্রহণের পূর্বের
এক বৎসর কালের ভাব-বিকাশ এমন ভাবে নানা ঘটনার মধ্য দিয়া
ফুটাইয়া তুলিয়াছেন যে স্পন্টতঃই বুঝা যায় যে তাঁহার পক্ষে আর ঘরে
থাকা সম্ভব নহে। কুঞ্চ-প্রেমে আকুল হইয়া তিনি সংসার তাাগ করিলেন।
কিন্তু জ্বয়ানন্দ এমন ভাবে শ্রীচৈতন্তের চরিত্র আকিয়াছেন যে বিশ্বস্তর
সাধারণ মানুষের মতন সংসারের অসারতা বুঝিয়া সন্নাসী হইলেন।
জ্বয়ানন্দের "বৈরাগাখণ্ডে" আছে শুরু শুক্ষ বৈরাগোর উপদেশ।
জ্ব্যানন্দের নিমাই পশ্বিত বৈরাগোর প্রয়োজনীয়তা প্রচার করিলেও তিনি
মনে মনে জ্বানন যে তিনি স্বয়ং ভগবান্। তিনি সন্নাস-গ্রহণের পূর্বের
বিষ্ণুপ্রিয়াকে বুঝাইতেছেন—

শ্রীরামদাস জগদানন্দ বজেশ্বর।

ভাদশ বিগ্রহ মূই সভাকার পর॥

আমি জদি বৈরাগ্য না করিব সংসারে।

বেদনিন্দা কলিযুগে ধর্ম না প্রচারে॥

কুলধর্ম যুগধর্ম আমি না পালিব।

কেমতে সংসারে লোকধর্ম প্রচারিব॥ পূত ৮২

অন্যান্য চরিতকার বলেন যে সন্নাসের পূর্বের ভাবাবেশে কথনও কথনও বিশ্বর নিজেকে রাম, বরাহ, নৃসিংহ বলিয়া প্রচার করিলেও সন্নাসের পর আর কথনও এরূপ করেন নাই, বরং ভক্তগণ তাঁহাকে



#### জয়ানন্দের চৈতত্যমঙ্গল

ভগবান্ বলিয়া ঘোষণা করিলে তিনি যথাসাথা তাঁহাদিগকে নিবারণ করিতে চেষ্টা করিতেন। কিন্তু জয়ানন্দের মতে তিনি ভক্তবৃন্ধকে বলেন—

> আমি কৃষ্ণচৈত্য চৈত্য জগরাথ। যুগাবতার হেতু ব্রহ্মকুলে জাত॥ পৃ° ১২০

জয়ানন্দ ঐতিচতত্ত্বের মুখ দিয়া যে ভাবে ভবিত্য বর্ণন করাইয়াছেন, তাহা শুধু ঐতিচতত্ত্বের পক্ষে অসম্ভব নহে, যে কোন বৈষ্ণব ভক্তের পক্ষে অশোভন (পু<sup>০</sup>১৬৮)।

জীবনচরিত-লেথক যদি ঘটনার প্রত্যক্ষদর্শী বা সমসাময়িক না হন, তাঁহার সত্যামুস দ্বংসা যদি প্রবল না হয়, এবং লোকরঞ্জনই তাঁহার মুখা উদ্দেশ্য হয়, তাহা হইলে তাঁহার লিখিত জীবনচরিত উপন্যাসের পর্যায়ে পড়ে। জয়ান দ চৈতনামঙ্গল লিখিতে যাইয়া ঐতিহাসিক অনুসন্ধান অপেক্ষা নিজের বিগ্রাবৃদ্ধি ও কল্পনা-শক্তির উপর নির্ভর করিয়াছেন। তিনি নিজের ধারণা-অনুযায়ী শ্রীচৈতক্যের মুখ দিয়া পৌরাণিক কাহিনীর বিকৃত উপাখ্যান ও বৈরাগোর উপদেশ বলাইয়াছেন। এই জন্ম আমার মনে হয় যে যোড়শ শতাব্দীর মধ্যভাগের সামাজিক ও রাজনৈতিক অবস্থার কিছু বিবরণ তাঁহার বই-এ পাওয়া গেলেও, শ্রীচৈতন্যের জীবনের ঘটনা- বা মর্ম্মোদ্যাটন-সম্বন্ধে তাঁহার উক্তি নির্ভরযোগ্য নহে।

# CENTRAL LIBRAR

### দশম অধ্যায়

#### লোচনের "এটিডতন্যমঙ্গল"

গ্রন্থ কারের পরিচয়

লোচন ঐতিচত অমঙ্গলের শেষে নিজের পরিচয় দিয়াছেন। তিনি কোগ্রামনিবাসী কমলাকরদাস ও সদানন্দীর পুত্র ।। তাঁহার মাতামহের নাম পুরুষোত্তম গুপ্ত; তিনি কবিকে লেখাপণ শিখাইয়াছিলেন। লোচন শীখণ্ডের নরহরি সরকার ঠাকুরের শিশ্য। যথা -

> শ্রীনরহরিদাস ঠাকুর আমার। বিশেষ কহিব কিছু চরিত্র তাঁহার॥ — সূত্রগণ্ড, পু<sup>০</sup> ৬৪; শেষথণ্ড, পু<sup>০</sup> ১৭

রামগোপালদাস নরহরি-রখুনন্দনের শাখা-নির্ণতে লিখিয়াছেন--

আর এক শাখা বৈত লোচনদাস নাম।
পূর্বের লোচনা সখী যার অভিমান॥
শ্রীচৈততালীলা যেহ করিলা বর্ণন।
গুরুর অর্থে বিকাইলা ফিবিজি সদন॥

শেষ চরণের অর্থ অস্পন্ট। গুরুর জন্ম (অর্থে) ফিরিজিদের নিকট তিনি প্রতিভূ ছিলেন, এইরূপ অর্থ করিলে বলিতে হয় যে নরহরি সরকার ফিরিজিদের সহিত কোনরূপ ব্যবসা করিতেন।

মূণালকান্তি খোল-সম্পাদিত মুদ্রিত প্রত্নে আছে—

"মাত মোর পুণাবতী স্থানন্দী নাম"।

১০-৪ বস্থানের চতুর্ব দংখ্যা, সাহিত্য-পরিষৎ-পতিকায় প্রকাশিত ১১-৬ দনের এক ভৈতক্রমস্থলের পুলির বিবরণে উদ্ধৃত হইয়াতে—

"মতা সতী প্রপতি অঞ্জতি নাম"



### লোচনের শ্রীচৈততামক্ল

লোচন সংস্কৃতভাষা আয়ত করিয়া শান্ত পাঠ করিয়াছিলেন। তিনি যে শ্রীমন্তাগবতের দশম স্বন্ধ পুব ভাল করিয়াই পণ্ডিয়াছিলেন তাহা তাঁহার বর্ণনায় ভাগবতের শ্লোকের স্পন্ট প্রভাব দেখিয়া বুঝা বায়; যথা—

#### "কোন তপ কৈল এই কোন ত্রতদান"

প্রভৃতি (আদিবত, পু<sup>্</sup>০৯) শ্রীমন্তাগবতের ১০1:৪1১৪ প্রোকের ভাব লইয়া লেখা। সেইরূপ "স্থায়াগণ কেন রাত্রে কুঞ্জ মাঝে" প্রভৃতি (শেষখণ্ড, পু<sup>০</sup>০২) ভাগবতের ০1২৯1:৮-২৯এর ভারামুরাদ। "তুলসী মালতী যুখী তোমাকে স্থাই" প্রভৃতি (শেষখণ্ড, পু<sup>০</sup>১০০) ভাগবতের ১৯০০।৭-৮ প্লোকের অমুবাদ।

শ্রীমন্তাগবত ও মুরারি গুপ্তের কড়চা ছাড়া নিম্নলিখিত গ্রন্থ হইতে লোচন শ্লোক উন্ধার করিয়াছেন:—(:) রহৎ সহস্রনাম স্তোত্র, (২) মহাভারত, শান্তিপর্বর, (৩) ব্রহ্মসংহিতা, (৪) ভবিশ্বপুরাণ, (৫) জৈমিনিভারত, (৬) নারদপঞ্চরাত্র, (৭) শান্তিশতক, (৮) বরাহসংহিতা, (৯) গৌতমীয়তন্ত্র, (০) সনৎকুমারসংহিতা। লোচন রাধা-সম্বন্ধে লিখিয়াছেন, "র্যভানুস্থতা নাম মূল যে প্রকৃতি" (মধার্থণ্ড, পূর্ব ); ইহা এবং শেষ্থণ্ডে (পূর্ব ৯৯) "রাধাকে দেখিয়া নন্দ কহিল উত্তর" প্রভৃতি পড়িয়া মনে হয় যে তিনি ব্রহ্মবৈর্তপুরাণ অনুসরণ করিয়াছেন।

উল্লিখিত গ্রন্থগুলি বাতীত বিভাপতির প্রভাবও লোচনের উপর যথেন্ট পরিলক্ষিত হয়। বিভাপতি লিখিয়াছেন —

সথি হে অপক্রব চাতুরি গোরি।
সব জন তেজি অগুরি সঞ্চরি
আঢ় বদনে তহি ফেরি॥
তহি পুন মতিহার টুটি ফেকল
কহইত হার টুটি গেল।
সবজন এক এক চুনি সঞ্চরণ।
শাম দরশ ধনি লেল।

THE WAY TO

病毒。15.00m

#### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

ইহার অনুকরণ করিয়া লোচন বিশ্বস্তরের প্রতি লক্ষ্মীর পূর্বরাগের বর্ণনায় লিখিয়াছেন—

গঞ্জমতি হার ছিল গলায় তাহার।
ছিঁ ড়িয়া ফেলিল ভূমে পড়িল অপার॥
বামকর বক্ষে রাখি সেই মুক্তা তোলে।
কোখা পাব কোখা পাব এই বাক্য বোলে॥
সকল সন্ধিনী মুক্তা চাহে হেট মুখে।
গৌড়চন্দ্র লক্ষ্মী প্রতি চাহে এক দিঠে॥

– আদিখণ্ড, পৃ<sup>০</sup> ৩•

লোচন যে এখানে নিতান্তই অনুকরণ-স্পৃহায় এরপ লিখিয়াছেন তাহা তাঁহার অন্য একটি বর্ণনা হইতে বুঝা যায়। যাহার মেয়ের গলায় গক্ষমতি হার থাকে, তিনি কখনও বলেন না

আমি ধনহীন কিছু দিবারে না পারি।
কলা মাত্র আছে মাের পরম স্থন্দরী।
ইহা জানি আজা যদি করেন আপনে।
কলা দিব বিশ্বস্তর জামাতা রতনে। আদিখণ্ড, পৃত ৩২

গজমতি হারের ঘটনা বিস্থাপতির প্রভাবে উদ্দীপ্ত লোচনের কল্পনার ফল; আর বল্লভাচার্য্যের "আমি ধনহীন" প্রভৃতি বাক্য মুরারির নিম্নলিখিত বাক্যের অনুবাদ,—অতএব সত্যের উপর প্রতিষ্ঠিত—

ময়া ধনবিহীনেন কিঞ্চিদ্দাতুং ন শক্যতে। কল্যকৈব প্রদাতব্যা ততাজাং কর্তুমর্হসি॥ ১৯১১

ভাবামুবাদে লোচনের ভায় নিপুণ কবি বাংলাসাহিত্যে খুব অল্লই আছেন। মুরারি গুপ্তের কড়চার ভাব লইয়া তিনি চৈতভ্যমন্তল লিখিয়াছেন। তিনি বারংবার মুরারির নিকট ঋণ স্বীকার করিয়াছেন। সূত্রখণ্ড, পৃত ৪; মধ্যখণ্ড, পৃত ৮৬; শেষখণ্ড, পৃত ১৮)। লোচন রামানন্দ রায়ের জগলাধবল্লভ নাটকেরও ভাবামুবাদ করিয়াছেন। মুরারি বা রামানন্দ যে ভাব অতি

202



## লোচনের ঐতিভয়দপল

অল্প কথায় প্রকাশ করিয়াছেন, লোচন তাহা বিশ্ববিভালয়ে পাঠা ইংরাজি কাব্যের ভারতীয় নোট-লেথকের মত ফেনাইয়া ফেনাইয়া ব্যাপ্যা করিয়াছেন। একটি উদাহরণ দিতেছি। রায় রামানন্দ লিখিয়াছেন—

কলয়তি নয়নং দিশি দিশি বলিতম্।
পদ্ধদিব মৃত্-মারুত-চলিতম্ ॥
কেলি বিপিনং প্রবিশতি রাধা।
প্রতিপদ-সমুদিত মনসিজ-বাধা॥
বিনিদধতী মৃত্মন্তর-পাদম্।
রচয়তি কুঞ্জর-গতিমন্ত্রাদম্॥
জনয়তু রুজ-গজাধিপ-মুদিতম্।
রামানন্দ-রায়-কবি-গদিতম্॥

#### লোচনের ভাবান্থবাদ —

চললি ব্রজমোহিনা ধনা কুঞ্জরবর-গমনা।
কেলি-বিপিনে সাঞ্চলি রঙ্গে সঞ্জে বরজ-রমণা॥
মদন-আতঙ্গে পুলক অন্ধ, নব অনুরাগে প্রেমতরত্ম, চক্ষলমূগনয়নী।
ক্বরী-মণ্ডিত মালতা-মাল, নবজলধর-তরিতজ্ঞাল,

স্থগিত চকিত অমনি॥ বদন-মণ্ডল শরদচন্দ্র, মদনের মনে লাগল ধন্দ,

निश्चिल जूरनस्याहिनौ।

নালবসন রতনভূষণ, মণিময় হার দোলায় সঘন,

কটিতটে বাজে কিন্ধিণী

চরণকমলে মাতল ভুল, মধুপান করি না ছাড়ে সল,

সদা করে গুনগুন ধ্বনি॥

চকিত যুগল নয়নপদা, খঞ্জন মনে লাগল ধনদ

ठम्श्रक-काश्रम-वत्र<u>नी</u>।

হেলিয়া ছলিয়া যখনি রঞে, নব নব নব নাগরীসঞ্চে,

ट्लांहन-यनदक्षनो ॥



#### ২৫৪ - ত্রীতৈভয়চরিতের উপাদান

লোচনের শব্দচয়নের ক্ষমতা অসাধারণ, পদবিয়াস অতি হৃন্দর; কিন্তু নব অভিসারিকা রাধার এত বিশদ বর্ণনা দিতে যাইয়া তিনি মূলের ভাবগান্তীয়া বজায় রাখিতে পারেন নাই।

#### গ্রন্থের রচনাকাল

লোচন মুখাতঃ মুরারি গুপ্তের কড়চা অবলম্বন করিয়া গ্রন্থ লিখিলেও অত্যাত্ত ব্যক্তির মুখে শুনিয়া বা রচনা পড়িয়া কোন কোন ঘটনা সংযোজিত করিয়াছেন। তাঁহার গুরু নরহরি সরকারের নিকট তিনি কোন কোন ঘটনা শুনিয়াছিলেন। যথা—

> তাহার প্রসাদে যেবা শুনিল প্রকাশ। আনন্দে গাইল গুণ এ লোচনদাস।

শ্রীচৈতত্ত-মন্তলের পূর্বের যে শ্রীচৈততা গাগবত রচিত হইয়াছিল, তাহ। লোচনের নিম্নোদ্ধত বাক্য হইতে বুঝা যায—

> শ্রীরন্দাবনদাস বন্দিব একচিতে। জগতমোহিত যার ভাগবত গীতে॥ সূত্রথণ্ড, পৃ° ৩

লোচনের পূর্বের যে যে লেখক ঐ চৈতগুলীলা অথবা খ্রেমধর্ম্ম-বিষয়ে কিছু লিথিয়াছিলেন তাঁহাদের নাম কবি এইরূপে লইয়াছেন—

পরমেশ্রদাস আর বৃন্দাবনদাস।
কাশীশ্বর রূপ সনাতন পরকাশ॥
গোবিন্দ মাধব ঘোষ বাঞ্ঘোষ আর।
সবে মিলি আসি কৈল ভক্তি প্রচার॥ পূ° ৩৪

লোচনের গ্রন্থ "গৌরগণোদ্দেশ-দীপিকা"র পূর্বের রচিত হইয়াছিল বলিয়।
মনে হয়। ১৫৭৬ খুন্টাব্দে ঐ গ্রন্থে ঐটিচততের পরিকরগণের তত্ত্ব বা
পূর্বেলীলার নাম লিখিত হইয়াছিল। কিন্তু লোচন যখন চৈততামন্ত্রল
লোখন, তথন ঐরপভাবে তত্ত্ব নির্ণাত হইলেও, উহ। অন্তর্মক্ষনের



#### লোচনের ত্রীচৈতভামকল

মধোই ানবন্ধ ভিল, সর্বসাধারণে প্রকাশিত হয় নাই। সেইজন্ম লোচন বলিয়াছেন—

আমি অতি অল্পবৃদ্ধি কি বলিতে জানি।

অবতার-নির্ণয়-কথা কেমনে বাখানি॥

মহাণের মুখে যেই শুনিয়াছি কাণে।

তাহা কহিবারে নারি সন্ধোচ পরাণে॥ সূত্রবন্ধ, পৃ° ৩০

.৫৭৬ গৃষ্টাব্দের পর লোচন "চৈতন্তমঙ্গল" লিখিতে বসিলে এত "সংক্ষাচ পরাণে" বোধ করিতেন না।

কালীপ্রসন্ন গুপ্ত "বঙ্গীয় কবি" নামক গ্রন্থে (পু ৮৬) লিখিয়াছেন যে ২৫২০ খুট্টাব্দে লোচন জন্মগ্রহণ করেন ও চৌদ্ধবংসর বয়সের সময়ে ১৫০৭ খুট্টাব্দে "চৈতন্যমপ্রল" রচনা করেন। শ্রীযুক্ত যুণালকান্তি ঘোষ মহাশয় এই প্রবাদে আন্তা স্থাপন করিতে পারেন নাই। চৌদ্ধবংসর বয়সের বালকের পক্ষে আদিরসের অত নিগৃঢ় কথা জানা এবং বিভিন্ন শাস্ত্রের ঘনিষ্ঠ পরিচয় লাভ করা অসম্ভব। ডা॰ দীনেশচক্র সেন লিখিয়াছেন, "কথিত আছে বে তিনি ১৫৭৫ খুট্টাব্দে তাহার গুরুন নহরি সরকারের আদেশে এই গ্রন্থ রচনা করেন (বক্ষভাষা ও সাহিত্য, পঞ্চম সং, পৃত ৩২৪)। ১৫৭২ খুট্টাব্দে যখন গৌরগণোদ্দেশ-দীপিকা লিখিত হয়, তথন তাহার ২০০১৫ বংসর পূর্বের শ্রীচৈতগ্রমন্তলের রচনাকাল অনুমান করাই অধিকতর যুক্তিসম্প্রত মনে হয়। ১৫২০ ইইতে ১৫৬৬ খুট্টাব্দের মধ্যে কোন সময়ে শ্রীচৈতন্যমন্তল রচিত ইইয়াছিল বলিয়া আমি বিবেচনা করি।

লোচনের চৈত্তামঙ্গল সূত্রথন্ত, আদিখন্ত, মধাথন্ত ও শেষণত্তে বিভক্ত।
সূত্রথন্তে এটিচতনার অবতার-গ্রহণের কারণ ও তাঁহার অবতারত্বের শ্রমাণ
লিখিত হইয়াছে। এই থন্তে মুরারি ওপ্তের কড়চার বিশেষ কোন প্রভাব
দেখা যায় না। মুরারি ওপ্ত লিখিয়াছেন যে নারদ মুনি পৃথিবীতে বৈক্ষব
দেখিতে না পাইয়া বৈকুঠে হরির নিকট যাইয়া কলিকালদফ্ট জনগণের
উদ্ধার প্রার্থনা করিলেন। ভগবান্ তাঁহার প্রার্থনা শুনিয়া বাৎস্থাগোত্তে



200

#### শ্রীচৈতন্যচরিতের উপাদান

জগন্নাথ-স্ত হইয়া জন্মগ্রহণ করিবেন বলিলেন। এই ঘটনাটুকুকে অবলম্বন করিয়া লোচন ং৭ পৃষ্ঠাব্যাপী ক্ষা-ক্রিনী, শিব-পার্বতী, নারদ-ব্রহ্মা সংবাদ লিখিয়াভেন।

মুরারি জীচৈতন্যকে যুগাবভার বলিয়াছেন (১।৪)। লোচন বলেন-

যুগ অবতার কৃষ্ণ এ বড় অশক্য ॥ আর যুগে অবতার অংশ কলা লখি। আপনে সে ভগবান্ ভাগবতে সাক্ষী॥ সূত্রখণ্ড, পৃ<sup>ত</sup> ২২

লোচনের মতে দ্বাগরে ও কলিতে পূর্ণ অবতার প্রকটিত হইয়াছিলেন। এই প্রসঙ্গে লোচন শ্রীমন্তাগবতের "এতে চাংশকলাঃ পুংসঃ", "আসন্ বর্ণারায়ে হাল্য", "কৃষ্ণবর্ণং দ্বিধাকৃষ্ণম্" শ্লোক উদ্ধার ও ব্যাখ্যা করিয়াছেন। মহাভারতের শান্তিপর্বের "প্রবর্ণবর্ণো হেমান্সো" শ্লোকও শ্রীচৈতন্যের ভগবতার পোষকরূপে উদ্ধার করা হইয়াছে। আর এই সব প্রাচীন শ্লোকের সঙ্গে সঙ্গে ভবিশ্বপুরাণের অর্বাচীন শ্লোকও স্থান পাইয়াছে, লোচন লিখিয়াছেন—

ভবিষ্যপুরাণে আর ক্ষণের প্রতিজ্ঞা। কলি জনমিব তিনবার এই আজ্ঞা॥

তথাহি ভবিশ্বপুরাণে—

অজায়ধ্বমজায়ধ্বমজায়ধ্বং ন সংশয়ঃ।
কলৌ সন্ধার্তনারত্তে ভবিয়ামি শচী-৫৩ঃ॥
—সূত্রধণ্ড, পৃণ ২৭১

১ এই অংশ প্রক্রির বলিয়া সলের হয়। কেন-ন "অয়ায়য়ন্" পদের অর্থ এতাতে আপনারা য়য়িয়য়িলেন। ইয়ার সহিত য়িতীয় পর্জির কোন সমজ নাই। য়ীয়ৈতজ্ঞায়তের আনন্দা টাকায়—

> দিবিজ। ভূবি জাহকাং জাহজাং ভক্তকপিণঃ। কলৌ দঙ্গীওঁনারজে ভবিছামি শচী-স্তঃ ।

লোকটি নার্বার-প্রাণের অভর্গত বলিলা উজ্ত হইছাতে। বস্তত: ভবিশ্ব বা নার্বার-প্রাণে এটক" কোন লোক নাই।



### লোচনের শ্রীচৈতগ্যমঞ্চল

জৈমিনি-ভারতের দোহাই দিয়া লোচন লিখিয়াছেন যে, জ্রীকৃষ্ণ রুরিণীকে বলিলেন তিনি কলিকালে অবতীর্ণ হইয়া "ভূঞিব প্রেমার স্থখ ভূঞাইব লোকে"

> কহিতে কহিতে প্রভু গৌরতমু হৈলা। নিজ প্রেমা বিলাসিব প্রতিজ্ঞা করিলা॥

> > —সূত্রখণ্ড, পৃ<sup>০</sup> ১৩

লোচন ত্রহ্মপুরাণ হইতে ঐতিচত্ত-অবতারের প্রমাণ বাহির করিয়াছেন, তবে ত্রহ্মপুরাণের ঐ অংশ বোধ হয় প্রতাপকদের সময়ে লিখিত হইয়াছিল। যথা—

বিষ্ণু কাতা।য়নী-সনে সংবাদ ব্রহ্মপুরাণে উৎকলখণ্ডেতে পরকাশ। রাজা সে প্রতাপরুদ্র সর্বগুণের সমুদ্র ব্যক্ত কৈল পরম উল্লাস॥

—সূত্রখণ্ড, পূত ১৮

ভবিগ্রপুরাণ, জৈমিনি-ভারত ও ব্রহ্মপুরাণের প্রমাণ মুরারি গুপ্তের সময়ে কল্লিত হয় নাই। কবিকর্ণপূর বা বৃন্দাবনদাস এগুলির কথা লেখেন নাই, যদিও তাহারা ঐটেতত্যের ভগবতা প্রমাণ করিবার জন্ম লোচন অপেক্ষা কম আগ্রহণীল ছিলেন না। সনাতন গোস্বামী সমস্ত পুরাণের পুথি ও অন্যান্য শাস্ত্রগ্রহ সংগ্রহ করিয়াছিলেন। সেই সমস্ত গ্রন্থের সাহায্যে শ্রিজীব গোস্বামী ঘট্সন্দর্ভ লেখেন। শ্রীজীবের নাায় পণ্ডিত এ সমস্ত শ্রোক খ্রিয়া যখন পান নাই, তখন মনে হয় এগুলি পরবর্তী কালে রচিত হইয়াছে।

লোচনের আদিখণ্ডে বিশ্বস্থরের জন্ম হইতে আরম্ভ করিয়া গয়া হইতে প্রত্যাবর্ত্তন পর্যান্ত বিবরণ আছে। মুরারি গুপ্তের প্রথম প্রক্রমের ও বৃন্দাবনদাসের আদিলীলারও বিষয়বস্ত ঐরূপ। লোচনের মধাপণ্ডের বর্ণিতব্য বিষয় গয়া-প্রত্যাগত বিশ্বস্তুরের ভাববিকার, সন্ধাস-গ্রহণ,

### শ্রীতৈভয়চরিতের উপাদান

200

পুরী-যাত্রা ও সার্বভৌয-উদ্ধার-কাহিনী। বৃন্দাবনদাসের মধাণতে সন্ধাসগ্রহণ পর্যন্ত বর্ণিত হইয়াছে। এইরূপ বিষয়বিভাগ অধিকতর যুক্তিসপত
(logical) মনে হয়। সার্বভৌয-উদ্ধারের দ্বারা প্রীচৈতত্যের জীবনে
তেমন কোন পরিবর্ত্তন আসে নাই, সেইজেন্স এই ঘটনা দিয়া প্রস্থের
একথণ্ড শেষ করার কোন সার্থকতা নাই। লোচনের শেষখণ্ড নিতান্ত
অসম্পূর্ণ। প্রীচৈতনাের ভাবজীবনের কোন বিশেষ পরিচয় ইহাতে নাই।
শেষণতে মুরারিকেই প্রধানতঃ অবলম্বন করা হইয়াছে। বৃন্দাবনদাস বা
ক্রিকর্ণপুরের লেখার কোন ছাপ ইহাতে পড়ে নাই।

## চৈত্যমঙ্গল ও চৈত্যভাগৰত

লোচনের প্রস্থের নাম চৈতত্তমকল কিরুপে হইল সে সম্বন্ধে অনেক কিংবদন্তী আছে। "শ্রিগণ্ডের প্রাচীন বৈষ্ণব" নামক প্রস্থে আছে— "কিছুদিনের মধ্যেই শ্রীচৈতনামকল গ্রন্থরচনা সমাপ্ত করিয়া লোচন শ্রীগণ্ডে প্রত্যাগমন করত শ্রীনরহরির করে গ্রন্থ অর্পণ করিলেন। নরহরি গ্রন্থ দেখিয়া বলিলেন, পূর্বেই শ্রিবুন্দাবনদাস শ্রীচৈতত্তমক্ষল নামে গ্রন্থ রচনা করিয়াছেন, অতএব এই গ্রন্থ-প্রচারের জত্ম তোমার শ্রীবুন্দাবনদাসের অনুমতি লওয়া আবশ্যক। নরহরির আজ্ঞায় লোচন বুন্দাবনদাসের নিকট গমন করিলেন এবং ভাহাকে এই গ্রন্থ অর্পণ করিয়া সমস্ত কথা বলিলেন। অতঃপর বুন্দাবনদাস গ্রন্থ পড়িতে পড়িতে প্রথমেই নিম্নলিখিত প্রারটি দেখিয়া প্রেমমূর্চ্ছিত হইলেন।

# অভিন্ন চৈততা দে ঠাকুর অবধৃত। শ্রীনিত্যানন্দ বন্দ রোহিণীর হুত॥

শীরন্দাবনদাস বলিলেন—'লোচন! তুমি নরহরির অনুগ্রহে শ্রীনিত্যানন্দ-তত্ত্ব যথার্থই উপলব্ধি করিয়াছ, কারণ গৌর-নিত্যানন্দকে তুমি অভেদ মূর্ত্তিতে বর্ণনা করিয়াছ। অন্ত হইতে তোমার প্রস্তের নাম শ্রীচৈতভামক্সল ও আমার শ্রীচৈতভামক্সলের নাম শ্রীচৈতভাজারত হইল।' যথন এই



ঘটনা হয় তথন শীরন্দাবনদাসের শীঠেততামন্তল বৈশ্ববসমাজে প্রপ্রচারিত হইয়াছে এবং ইহার সৌরভ শীরন্দাবনবাসী বৈশ্ববগণের নিকট প্রভিষ্কাছে। এই জন্ম কুষণাস কবিরাজ গোস্বামী শীরন্দাবনদাসের গ্রন্থকে 'চৈততামন্তল' বলিয়া বর্ণনা করিয়াছেন। কিন্তু গৌরনিত্যানন্দকে অভেদ মূর্ত্তিতে বর্ণনা করায় লোচনের নিকট নিত্যানন্দ-গতপ্রাণ রন্দাবনদাসের আর কুতজ্ঞতার সীমা নাই। এই জন্ম তিনি এক ব্যবস্থাপত্র প্রস্তুত করিলেন যে আমি প্রভুর ভগবতা বর্ণনা করিয়াছি এবং লোচন মাধুর্যা বর্ণন করিয়াছে। অতএব আমার প্রস্তুর নাম শীরেততাভাগবত হইল। বুন্দাবনদাসের এই ব্যবস্থাপত্র দেখিয়া শীরন্দাবনবাসী গোস্বামিগণ বড়ই সন্তুক্ত হইলেন।" (শীবণ্ডের প্রাচীন বৈশ্বব, পূণ্ড)। প্রেমবিলাসের উনবিংশ বিলাসেও আছে,

"ঐতিচতগুভাগবতের নাম চৈতগুমকল ছিল। বুন্দাবনের মহান্তগণে ভাগবত আখ্যা দিল।"

এই কিংবদন্তা কয়েকটা কারণে অবিশান্ত। (১) বোড়শ শতাব্দীতে কপিরাইটের আইন ছিল না। মনসামন্তল, বিছাস্থল্যর প্রভৃতি নাম দিয়া একাধিক লেখক বই লিখিয়াছেন। জয়ানন্দের বইয়ের নামও চৈতত্তমন্তল। সেই জত্ত বুল্দাবনদাসের অনুমতি লইয়া লোচনের প্রস্থলপ্রচারের কোন প্রয়োজন ছিল না। নরহরির উপাসনা-প্রণালীকে বে বুল্দাবনদাস অপ্নীকার করিয়াছেন, নরহরি যে তাহার শিক্তকে সেই বুল্দাবনদাসের অনুমতি লইতে বলিবেন তাহাও সম্ভব মনে হয় না। (২) বুল্দাবনদাস নাগর গোরাঙ্গের উপাসনা-প্রণালী স্বীকার করেন না; স্থতরাং তিনি যে লোচনের চৈতত্তমন্তলের প্রচারে সহায়তা করিবেন তাহাও বিশ্বাস করা যায় না। (৩) বুল্দাবনদাস শ্রীচৈতত্তের ভগবন্তা বা ঐশ্বর্যাভাব লিখিয়াছেন বলিয়া তাহার বইয়ের নাম শ্রীচৈতত্ত্বভাগবত হারত হইবে কেন ও ভাগবতে কি শুধু শ্রীক্রক্ষের ঐশ্বর্যাভাব আছে ও বুল্দাবনদাসের বাবস্থা ও বুল্দাবনের গোস্থামিগণের মত অনুসারে যদি বুল্দাবনদাসের বাবস্থা ও বুল্দাবনের গোস্থামিগণের মত অনুসারে যদি বুল্দাবনদাসের বাবস্থা কি বুল্দাবনের গোস্থামিগণের মত অনুসারে যদি বুল্দাবনদাসের বাবস্থা কি বুল্দাবন্ধ কিছেই

প্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

জানিতেন না ? তিনি লোচনের প্রস্তরচনার অনেক পরে লিখিয়াছেন—

200

বৃন্দাবনদাস কৈল চৈত্য্যমন্তল। যাহার ভাবণে নাশে সর্বব অমন্তল॥

(৫) লোচন নিজের প্রস্থে স্বীকার করিয়াছেন যে, রন্দাবনদাসের বইয়ের নাম শ্রীচৈতক্সভাগবত ছিল। যথা—

> শ্রীবৃন্দাবনদাস বন্দিব এক চিতে। জগত মোহিত যার ভাগবত-গীতে।

শীযুক্ত মুণালকান্তি ঘোষ মহাশয় অনুমান করেন—"প্রন্থের নাম পরিবর্ত্তিত হইবার পরও লোচন ঐ চরণদ্বয় লিপিবদ্ধ করিতে পারেন" (গৌরপদতরঙ্গিণীর ২য় সংকরণের ভূমিকা, পূ<sup>2</sup> ২৪১)। উল্লিখিত পাঁচটী যুক্তির পর এই অনুমান সঙ্গত হয় না।

আমার মনে হয় বৃন্দাবনদাসের গ্রন্থের নাম প্রথম হইতেই চৈত্রভাগবত ছিল—কিন্তু চণ্ডীর মাহাত্মাসূচক গান যেমন চণ্ডীমন্থল, মনসার মাহাত্মাসূচক গান মনসামন্থল, তেমনি ঐতিচতত্ত্যের মাহাত্মাসূচক বাঙ্গালা বইকে চৈত্রভাগল নামে অভিহিত করা যায়। এই জ্বভাই ক্রান্সাস কবিরাজ বৃন্দাবনদাসের বইয়ের নাম চৈত্রভাগলল বলিয়াছেন।

লোচনের চৈতভাগজল-সম্বন্ধে আর একটি কিংবদন্তী এই যে বৃন্দাবনদাস যেমন লোচনের গুরু নরহরির নাম উল্লেখ করেন নাই, লোচনও
তেমনি বৃন্দাবনদাসের গুরু নিত্যানন্দের নাম উল্লেখ না করিয়া গ্রন্থ
লিখিয়াছিলেন। অবশেষে গুরুর মনোরপ্তন করিবার জন্য লোচন
লিখিয়াছেন—

"অভিন্ন-চৈতন্ত সে ঠাকুর অবধৃত।"

এই প্রবাদটি কালীপ্রসর সেনগুগু "বঙ্গীয় কবি" নামক গ্রন্থে (পূর্ণ ৮৭-৮৮) উল্লেখ করিয়াছেন; কিন্তু তিনি নিজেও ইহার উপর আস্থা



## লোচনের প্রীচৈতগুসকল

স্থাপন করিতে পারেন নাই। লোচনের চৈত্রমঞ্জলের নানাস্থানে নিত্যানন্দের নাম, মহিমা ও স্ততি আছে (সূত্রথণ্ড ২, পৃ° ৩০; আদি-থণ্ড ১, পৃ° ২৮; মধ্যথণ্ড ৭০-৭°, পৃ° ৭৫)। বস্ততঃ নিত্যানন্দকে বাদ দিয়া গৌরাঙ্গলীলা লেখা একেবারে অসম্ভব।

# শ্রীচৈতভামগল-লেখার উদ্দেশ্য

লোচনদাস বলিয়াছেন যে মুরারি গুপ্তের সংস্কৃতে লিখিত ঐতিতক্সচরিত পাঠ করিয়া পাঁচালা-প্রবন্ধে চৈতক্সলালা লিখিবার লোভ তাঁহার
মনে জাগিয়াছিল। তাই তিনি ঐতিতক্সমঙ্গল লিখিলেন। কিন্তু কেবলমাত্র সংস্কৃত গ্রন্থের স্বাধীন অমুবাদ করিয়া জনসাধারণকে ঐতিচতক্সলালা
শুনানই তাঁহার একমাত্র উদ্দেশ্য ছিল না। লোচন স্পষ্ট করিয়া না
বলিলেও, তাঁহার গ্রন্থ-পাঠে মনে হয় যে, ঐতিতক্তমঞ্চল লেখায় তাঁহার
আরও তিনটি উদ্দেশ্য ছিল।

প্রথমতঃ, তাঁহার গুরু নরহরি সরকারের সহিত বিশ্বস্তরের ঘনিষ্ঠতার পরিচয় দেওয়া। দ্বিতীয়তঃ, নরহরিকে পক্তত্ত্বের মধ্যে স্থান দেওয়া। তৃতীয়তঃ, নাগরীভাবের উপাসনাকে জনপ্রিয় করা।

পূর্বের দেখাইয়াছি যে নবলীপ-লালা-প্রসঙ্গে লোচন বাতীত অন্ত কোন চরিতকার নরহরির নাম করেন নাই। তাঁহাদের এই ফ্রটা সংশোধন করা লোচনের অভিপ্রায় ছিল। তিনি নবলীপলালা-বর্ণনা উপলক্ষে বছস্থানে নরহরির উপস্থিতি ও তাঁহার প্রতি বিশ্বস্তরের প্রতির কথা লিথিয়াছেন। তাঁহার মতে, বিশ্বস্তরের গ্রা হইতে প্রত্যাবর্তনের পর নরহরি তাঁহার সহিত মিলিত হন। লোচন আদিখণ্ডের কোন লালায় নরহরির নাম করেন নাই। তিনি মধ্যথণ্ডে লিথিয়াছেন—

- (ক) মিলিলেন গদাধর পণ্ডিত গোসাঞি। নরহরি মিলিয়া রহিলা তায় ঠাঞি॥ পু<sup>০</sup> ০
- (খ) নরহরি ভুজে আর ভুজ আরোপিয়া। শ্রীবাসের ঘরে নাচে রাসবিনোদিয়া।

२७२

# শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

গোরদেহে শ্রামতমু দেথে ভক্তগণ।
গদাধর রাধারূপ হইলা তথন।
মধুমতি নরহরি হইলা সেই কালে।
দেথিয়া বৈঞ্চব সব হরি হরি বোলে। পৃ° প

- (গ) জীনিবাস ভূজে এক ভূজ আরোগিয়া।
  গদাধর করে ধরি বাম কর দিয়া॥
  নরহরি অঙ্গে প্রভূ শীঅঙ্গ হেলিয়া।
  শীরগুনন্দন মুখ কান্দায়ে হেরিয়া॥ পৃত ১৩
- (ঘ) শ্রীবাসের বাড়ী একদিন অছৈত আসিয়া দেখিলেন—
  গদাধর নরহরি ছইদিগে রহে।
  শ্রীরঘুনন্দন যে শ্রীমুখচন্দ্র চাহে। পু° ২১
- (%) গদাধর নরহরি বৈসে ছই পাশে। শ্রীরঘুনন্দন পদ নিকটে বিলাসে॥ পৃ° ২৫
- (চ) বিশ্বস্তর বলিতেছেন-

শ্রীনিবাস নরহরি আদি ভক্তগণ। তো সভারে লঞা মোর যজের স্থাপন॥ পৃ<sup>©</sup> ৪২

লোচন নববীপ-লীলা বর্ণনা করিতে ঘাইয়া নরহরি-সম্বন্ধে যে সকল কথা বলিয়াছেন, তাহা অতা কোন লীলা-প্রস্থে পাওয়া যায় না। এরপ অনুরেখের নানা কারণ হইতে পারে। হয়তো নরহরি নবদীপে ভাব-প্রকাশের এক বৎসর কালের মধ্যে সব সময়ে কাছে থাকিতেন না। সে সময়ে কত ভক্ত আসিতেন ঘাইতেন; সকলের কথা মুরারির পক্ষে লেখা সম্ভব হয় নাই; হয়তো নরহরির সহিত মতের পার্থকাহেত্ তাঁহার নাম মুরারি, কবিকর্ণপূর ও রুলাবনদাস বাদ দিয়াছেন। কিন্তু মুরারি ও কবিকর্ণপূর জীচৈততের নীলাচল-লীলা প্রসঙ্গে নরহরির নাম করিয়াছেন দেখিয়া মনে হয়, ইহাদের মনে সরকার ঠাকুরের প্রতি কোন বিরুদ্ধভাব



## লোচনের ঐতিত্তমঙ্গল

ছিল না। নিত্যানন্দ, অধৈত, গদাধর, শ্রীবাস প্রভৃতি নবছীপ-লীলায় যেরূপ প্রধান স্থান অধিকার করিয়াছিলেন, নরহরি সেরূপ প্রাধান্ত লাভ করেন নাই বলিয়াই হয়তে। মুরারি ও কবিকর্ণপুর তাঁহার নাম নবদ্বীপের লীলাবর্ণনায় উল্লেখ করেন নাই।

লোচন লিখিয়াছেন যে বিশ্বস্তর সন্নাস-গ্রহণ-মানসে নবনীপ হইতে কাটোয়ায় যাইবার পর ভক্তগণ তাঁহাকে পুঁজিতে বাহির হইবার যুক্তি করিলেন। ভক্তেরা কেশব ভারতীর আশ্রমে যাওয়া স্থির করিলেন। নিতাানন্দ চক্রশেখরাচার্য্য, দামোদর পণ্ডিত, বক্রেশ্বর প্রভৃতিকে লইয়া কাটোয়ায় আসিলেন। পরে

> নবদ্বীপ হইতে গদাধর নরহরি। আসিয়া মিলিলা তাহা বলি হরি হরি। পু<sup>©</sup> ৬০

শ্রীচৈত্ত রাচ্দেশ ভ্রমণ করিয়া শান্তিপুরে আসিলেন। লোচনের মতে সেথানেও নরহরি উপস্থিত ছিলেন। যথা—

> গদাধর নরহরি নাচে তারা পাশে। বাহুদেব ঘোষ নাচে গদাধর দাসে॥ পৃ<sup>০</sup> ৭২

শ্রীচৈততা শান্তিপুর হইতে যখন পুরী যাত্রা করিলেন তখনও নরহরি তাহার সঙ্গে ছিলেন; যথা—

পণ্ডিত শ্রীগদাধর অবধৃত রায়।
নরহরি আদি করি সঙ্গে চলি যায়॥
শ্রীনিবাস মুরারি মুকুন্দ দামোদর।
এই নিজ্ঞ জন সঙ্গে চলিলা ঈশ্বর॥ পৃত ৭৪

শ্রীচৈততা পুরীতে পৌ ছিয়া বাস্থদেব সাধ্যভৌমের ঘরে গেলেন ও সার্ব-ভৌমের পুনকে সঙ্গে লইয়া জগলাথ-দর্শনে গমন করিলেন। শ্রীচৈততা যখন জগলাথকে আলিন্তন করিয়া আনন্দে হরি হরি বলিয়া নাচিতেছেন, তখন—

> গদাধর নাচে নরহরি নিত্যানন্দ। শ্রীনিবাস দামোদর মুরারি মুকুন্দ।। পৃ<sup>০</sup> ৮৩

লোচনের লিখিত এই বিবরণে দেখা যায় যে সন্নাস-গ্রহণের সময় হইতে আরম্ভ করিয়া নীলাচলে জগন্নাথ-দর্শন পর্য্যন্ত সময় বরাবর নরহরি প্রীচৈতত্যের সম্পে ছিলেন। শ্রীযুক্ত গৌরগুণানন্দ ঠাকুর বলেন—"প্রস্থ কণ্টক-নগরে গমন করিলে নরহরি সে সময়ে পুত্র-বিরহ-কাতরা শ্রীশটী মাতাকে সান্ত্রনা করিবার নিমিন্ত নবদ্বীপেই ছিলেন:। প্রভুর সহগামী হইতে পারেন নাই" (শ্রীখণ্ডের প্রাচীন বৈষ্ণব, পূ ২০)। অত্য কোন চরিতকারও বলেন না যে নরহরি শ্রীচৈতত্যের সম্পে রাঢ়ে জমণ করিয়া-ছিলেন বা নীলাচলে গিয়াছিলেন। লোচন বলেন মুরারি শ্রীচৈতত্যের সহিত নীলাচলে গিয়াছিলেন। মুরারি নিজ্ফের গ্রন্থে এরপ কথা বলেন নাই; যদি তিনি সত্যই যাইতেন তাহা হইলে সে কথা গোপন করিবার কোন সম্পত কারণ থাকিত না। মনে হয় শ্রীচৈতত্যের সম্পে মুরারির ও নরহরির নীলাচলে গমন লোচনের কল্পনামাত্র।

নরহরি শ্রীচৈতভ্যের সঙ্গে নীলাচলে গিয়া থাকিলে সে সম্বন্ধে শ্রীখণ্ডে কোন না কোন কিংবদন্তী প্রচলিত থাকিত। শ্রীযুক্ত গৌরগুণানন্দ ঠাকুর এরপ কোন প্রবাদের উল্লেখ করেন নাই, বরং তিনি লিখিয়াছেন "শ্রীমন্মহাপ্রভু শান্তিপুরে ভক্তবৃন্দের সহিত কয়েকদিন অবস্থিতি করিয়া যখন কয়েকটি মাত্র ভক্ত সঙ্গে লইয়া শ্রীনীলাচলে যাইবার মানস করিলেন, তখন নরহরিও তাঁহার সঙ্গে যাইবার ইচ্ছা প্রকাশ করিলেন; কিন্তু প্রভু নরহরির সে কার্যাে বাধা দিয়া বলিলেন, মুকুন্দপুত্র রঘুনন্দন তোমা ভিন্ন অন্ম কাহারও স্বারা সমাক্রপে পালিত হইবেন না। আরও বলিলেন যে আমি যে জন্ম অবতীর্ন, তাহার নিগুঢ় তত্ত্ব তুমি জান। স্ক্রোং তুমি আমার সহিত গমন করিলে এদেশে আর সে ধর্ম্ম প্রচারিত হইবে না। অতএব তোমাকে শ্রীখণ্ডেই অবস্থান করিতে হইবে।…… প্রভুর আজ্ঞায় বাধা হইয়া নরহরিকে শ্রীথণ্ড আসিতে হইল।" নরহরি যে শ্রীচৈতন্তের সঙ্গে নীলাচলে গিয়াছিলেন লোচনের এই কথা শ্রীথণ্ডের ঠাকুর মহাশয়েরাণ্ড বিশাস করেন নাই।

ভাহা হইলে প্রশ্ন উঠে এই যে লোচনের গ্রন্থ নরহরি সরকার ঠাকুর দেখিয়াছিলেন কি ? যদি তিনি দেখিয়া থাকেন, ভাহা হইলে ভাঁহার



### লোচনের প্রীচৈতগুমঞ্চল

নিজের সম্বন্ধে যে তুল সংবাদ তাঁহার শিয়া দিয়াছেন তাহা সংশোধন করিয়া দিলেন না কেন ? তিনি নিশ্চয়ই শিয়োর হারা গ্রন্থ লেখাইয়া নিজের সম্বন্ধে জনসাধারণের মনে ভ্রান্ত ধারণা জন্মাইতে রাজী ছিলেন না। সেইজন্য সিন্ধান্ত করিতে হয় যে নরহরি সরকার ঠাকুরের তিরোভাবের পর লোচন "চৈতল্তমম্বল" লিখিয়াছিলেন। তিনি নরহরির সহিত শ্রীচৈতক্তের ঘনিষ্ঠতার পরিচয় দিতে যাইয়া ঐতিহাসিক সত্য অপেকা কল্লিত ঘটনার উপর অধিকতর আন্তা স্থাপন করিয়াছেন।

শীচৈতত্যমন্তল লিখিবার ছিতায় উদ্দেশ্য হইতেছে নরহরিকে পঞ্চতত্ত্বর মধ্যে স্থান দেওয়া। স্বরূপ-দামোদর তত্ত্বনিরূপণে বলিয়াছেন যে গৌরচন্দ্র, নিতানিন্দ, অছৈত, শীনিবাস ও গদাধর পণ্ডিত এই পাঁচ জনকে লইয়া পঞ্চত্ত্ব। কবিকর্ণপূর গৌরগণোদ্দেশ-দীপিকায় স্বরূপ-দামোদরের নাম উল্লেখ করিয়া তাঁহার মতামুসারে পঞ্চতত্ত্বের ব্যাখ্যা করিয়াছেন। ইহার মধ্যে নরহরির স্থান নাই। লোচন স্পষ্টতঃ স্বরূপ দামোদরের মতের বিরুদ্ধে যাইতে সাহসী না হইলেও প্রকারান্তরে অত্য ভাবে পঞ্চতত্ত্বের ব্যাখ্যা করিয়াছেন। তিনি মঙ্গাচরণাংশে ও অত্যান্ত স্থানে লিখিয়াছেন—

জয় জয় শ্রীকৃষ্ণ চৈততা নিত্যানন্দ। জয়াবৈত চন্দ্র জয় গৌরভক্তবৃন্দ॥ জয় নরহরি গদাধর প্রাণনাথ। কৃপা করি কর প্রভু শুভদৃষ্টিপাত। সূত্রখণ্ড, পৃ° ২

পুন\*চ আদিখণ্ডের প্রথমেই—

জয় জয় গদাধর গৌরাপ্স নরহরি। জয় জয় নিত্যানন্দ সর্বাশক্তিধারী॥ জয় জয় অধৈত আচার্য্য মহেশর। জয় জয় গৌরাপ্সের ভক্ত মহাবর॥

এইরণ বন্দনায় শ্রীনিবাস বা শ্রীবাস প্রধান স্থান হইতে চাত হইয়াছেন, এবং সেই স্থান নরহরি অধিকার করিয়াছেন।



266

### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

শ্রী চৈতত্মগরল-রচনার তৃতীয় উদ্দেশ্য ছিল নাগরীভাবের উপাসনা-পদ্ধতি প্রচলন করা। বৃন্দাবন দাস লিখিয়াছেন—

> অতএব মহামহিম সকলে। গৌরাপ্ত নাগর ছেন স্তব নাহি বলে॥

কিন্তু লোচনদাস লালাবর্ণনা উপলক্ষে হুযোগ্যত গোরাঞ্চের নাগরভাব প্রচার করিয়াছেন। গোরাঞ্চের রূপগুণ দেখিয়া নদীয়া-নাগরীরা তাঁহাকে দেহমন সমর্পণ করিবার জন্ম ব্যাকুল হইয়াছেন; গোরাঞ্চ কচিৎ কদাচিৎ তাঁহাদের ভাবের কিঞ্ছিৎ প্রতিদান দিতেছেন, ইহাই হইতেছে লোচনের অঞ্চিত নাগরীভাবের উপাসনার মূল সূত্র। লোচনের মতে নিমাইয়ের জন্ম-সময় হইতেই নাগরীভাবের আরম্ভ হইয়াছে।

> গৌর নাগরিয়া গন্ধে ভরিল ব্রহ্মাণ্ড। প্রতি অঙ্গে রসরাশি অমৃত অথণ্ড। আদি থণ্ড, পৃত ৩

নবজাত শিশুর রূপবর্ণনায় লোচন লিখিয়াছেন-

বিশাল নিতম্ব উরু কদলীর যেন। এ, পৃ° ৩

এই শিশু দেখিয়া নদীয়া-নাগরীদের "অলসল অক্সভার শ্লথ নীবিবন্ধ" (পৃত্ত)। এরূপ বর্ণনা করিতে ঘাইয়া লোচন সাধারণ ও ঐতিহাসিক বৃদ্ধির সীমা উল্লেখন করিয়াছেন। বিশ্বস্তরের প্রথম বিবাহে জল সাধার সময়ের বর্ণনা—

"গৌরাঙ্গের নয়ন-সন্ধান শরঘাতে। মানিনীর মান মৃগ পলায় বিপথে॥ অথির নাগরীগণ শিথিল বসন। মাতল ভুজ্ঞকুল থগেন্দ্র বেমন॥ পৃ০ ৩৪

অন্ত-উত্বর্তনের সময়ে পুরনারীদের—

হেরইতে পহুমূথ কি ভাব উঠিল। মরমে মদনজরে ঢলিয়া পড়িল॥



### লোচনের ঐাচৈতত্যমন্ত্রল

কেহ কেহ বাহু ধরি অধির হইয়া।
কেহ রহে উম্বর্তন শ্রীঅঙ্গে লেপিয়া॥
কেহ বুকে পদযুগ ধরিয়া আনন্দে।
ভূজলতা দিয়া সে বান্ধিল পরবন্ধে॥ আদি, পৃ° ৩৪

# বাসরঘরে কুলবধুদের—

বসন বচন সব ঋলিত হইল।
নিয়ান অলস্মৃত কাহারো হইল॥
কেহ অঙ্গ পরশে অনন্ধ-রক্ষভরে।
চুলিয়া পড়িলা রসে বিশ্বস্তর-কোলে॥ ঐ, পৃত ৬৮

বিষ্ণুপ্রিয়ার বিবাহের সময়ে—

পরম হুন্দরী যত সভে হৈল উনমত বেকত মনের নাহি কথা। রসে রসে আবেশে লোলিপরে গোরা পাশে গর গর কামে উনমতা॥ ঐ, পৃত ৫৪

নদায়া-নাগরীর ভাব লইয়া রচিত ১৮০টি পদ গৌরপদতরিস্থিতি প্রকাশিত হইয়াছে। তাহার মধ্যে সকলগুলি যে প্রাচীন পদকর্ত্তাদের রচিত তাহা নহে। তবে অনেকগুলি পদ বাত্রঘোষ, নরহরি সরকার, শেখর প্রভৃতি মহাজ্ঞানের রচিত সন্দেহ নাই। নাগরী-ভাবের উপাসনা নরহরি প্রবর্তন করিয়াছেন; লোচনদাস তাহা প্রচার করিবার উদ্দেশ্যে শ্রীচৈত্য্যমন্ত্রল রচনা করেন। গৌরপদতরিস্থিণীর ভূমিকায় জগত্বকু ভত্র মহাশয় "গৌর বিষ্ণুপ্রিয়া পত্রিকার" ষষ্ঠ সংখ্যায় প্রকাশিত রাজীবলোচন দাসের এক প্রবন্ধ উদ্ধার করিয়া নাগরীভাবের ব্যাখ্যা করিয়াছেন। দাস মহাশয় লিখিয়াছিলেন "গৌরাস্থ না দেখিলে নাগরীদের প্রাণ ছটফট করে, আনচান করে; এমন কি তাহারা সোয়ান্তি পান না। গৌরহরি কিন্ত নারীদের পানে অপান্ধদৃষ্টিও করেন না। নাগরীসমূহ গৌরাস্থকে দেখিয়াই হথী। গৌর নাগরীদের পানে চান, আদপে তাহাদের মনে

শ্রমেও এ বাসনার ছায়াপাত হয় নাই। ইহাই নাগরীভাবের গৃঢ় রহত্ত"
(গৌরপদতরক্ষিণী, ১ সং, উপক্রমণিকা, পৃ ১৫৭)। এই বাগিন
লোচনের নাগরীভাব-সথক্ষে সতা নহে; কেন-না লোচনের মতে গৌরাপ
"নয়ন সন্ধান শরাঘাত" করেন; যুবতীরা তাঁহার পদযুগে নিজেদের বুক
দিলে এবং তাঁহাকে ভুজলতা দিয়া বান্ধিলে বা তাঁহার কোলে ঢলিয়া
পড়িলে তিনি বাধা দেন না।

# মুরারির সহিত লোচনের বিংরণের পার্থকা

লোচন মুরারির কড়চা অবলম্বন করিয়া চৈততামপ্রল লিখিলেও, তাঁহার বর্ণনার সহিত মুরারির প্রদন্ত বিবরণের কতকগুলি পার্থক্য দৃষ্ট হয়। ঐ পার্থক্য আলোচনা করিলে দেখা যাইনে কিরুপে কালক্রমে ঐটিচতত্তের জীবনীর উপর ভক্তি ও কল্পনার রশ্মি-সম্পাত হওয়ার অলৌকিক ঘটনার উদ্ভব ১ইয়াছে।

- (ক) নিমাই যখন শচীদেবীর গর্ভে ছিলেন, তখন অভৈত আচার্য্য শচীর গর্ভ বন্দনা করিয়াছিলেন এইরূপ কথা লোচন লিখিয়াছেন (আদিখণ্ড, পৃত ১-২)। মুরারি এরূপ কোন ঘটনার উল্লেখ করেন নাই, তিনি লিখিয়াছেন যে দেবগণ শচীর গর্ভ বন্দনা করিয়াছিলেন (১০)। দেবগণের স্তবকে ভক্তের অহ্যুক্তি বলিয়া গ্রহণ করা যায়, কিন্তু অভৈত স্তব করিয়াছিলেন শুনিলে মনে হয় জীচৈততা যে স্বয়ং ভগবান্ এ কথা অভৈত জীচৈততাের জন্মের পূর্বেই জানিতে পারিয়াছিলেন।
- (খ) নিমাই শিশুকালে এক কুকুরের বাচ্চা পুযিয়াছিলেন একথা জয়ানন্দ ও লোচন লিথিয়াছেন। লোচন বলেন --

গৌরান্ধ-পরশে সে কুরুর ভাগাবান্। স্বভাব ছাড়িয়া তার হৈল দিব্যজ্ঞান॥ রাধাকৃষ্ণ গৌরান্দ বলিয়া হাসে নাচে। নদীয়ার লোক সব ধায় পাছে পাছে। আদি, পৃত ১৪

মুরারিতে এরূপ কোন বিবরণ নাই।



## লোচনের ত্রীতৈতগুমগুল

(গ) মুরারি কোথাও এরুপ বলেন নাই যে নিমাই বাল্যকালে হরিসকীন্তন করিতেন। কিন্তু লোচন লিখিয়াছেন –

> বয়ক্ত নালক সব করি এক মেলা। হরিগুণ-কার্ত্তনে ভাল পাতিয়াছি খেলা। চৌদিকে বেঢ়িয়া বালক হরি হরি বোলে। আনন্দে বিহবল গোরা ভূমে গঢ়ি বুলে।

লোচন নালাচলে হরিনামোন্মও ত্রীচৈতত্তের লালা বালক নিমাইয়ে আরোপ করিয়া ত্রীচৈতত্তের ভগবতা প্রমাণ করিতে চাহেন।

্ঘ) মুরারি গুপু লিখিয়াছেন যে শচাদেনীর আটট কলা মৃত হইবার পর বিশ্বরূপের জন্ম হয় ও তারপর বিশ্বপ্তর জন্মেন, অর্থাৎ বিশ্বপ্তর শচীর দশম গর্ভের সন্তান (১৷৷৫-৮)। কিন্তু লে'চন বশ্বপ্তরকে কুষ্ণের গ্রায় অইটম গর্ভে জাত প্রমাণ করিতে চান। তিনি শচীর মৃথ দিয়া বলাইয়াছেন—

> সাত কলা মরি মোর এইটি ছাওয়াল। ইহা হৈতে কিছু হৈলে নাহি জীব আর। আদি, পূ<sup>্</sup> ৭

এই পয়ারটি লিথিবার সময়ে লোচন ভুলিয়া গিয়াছিলেন যে বিশ্বরূপ বিশ্বস্তুরের বড় ভাই, স্তরা: শচার সাত কল্যার পর ছেলে হইলেও বিশ্বস্তুর নবম গর্ভে জাত হয়েন।

(৩) লোচন লিখিয়াছেন যে শচী যঠীপূজা করিতে যাইবার জন্য নৈবেল্ল সাজাইয়াছেন; নিমাই বলিলেন "আমার বড় ক্ষুধা লাগিয়াছে, আমি নৈবেল্ল খাইব।" ইহা বলিগা তিনি নৈবেল্ল মুখে প্রিলেন। শচী রাগিয়া তাঁহাকে অনেক বকিলেন। তখন নিমাই বলিলেন—

> শুন অবোধিনী আমি সব জানি আমি তিন লোক সার। যত যত দেখ আমি মাত্র এক ত্রিজগতে নাহি আর॥ আদি, পৃ<sup>০</sup> ১৬

মুরারি বা অন্ত কোন লেখক এরপ বর্ণনা করেন নাই। শিশুকালেই বিশ্বস্তুর জানিতেন যে তিনি ভগবান্, ইহাই প্রমাণ করিবার জন্য এই কাহিনীর স্থি। কিন্তু কোন শিশু গালি খাইয়া নিজের ভগবতা প্রকাশ করিলে, তাহার মহিমা কতদূর রুদ্ধি পায় লোচন তাহা ভাবিয়া দেখেন নাই।

(চ) লোচন মুরারির ভক্তি ও মাহাত্মা-সম্বন্ধে অনেক ভাল ভাল কথা বলিলেও, শিশু নিমাইয়ের নিকট মুরারির ভীষণ লাঞ্চনার এক গল্ল ফাদিয়া বসিয়াছেন। তিনি বলেন বিশ্বস্তর শিশুদের সাথে থেলাধূলা করিতেছেন এমন সময়ে মুরারি গুপু পথ দিয়া চলিয়া যাইতেছেন। বিশ্বস্তর তাঁহাকে ভাাংচাইলেন। মুরারি রাগ করিয়া বলিলেন।—

এ ছারে কে বোলে ভাল, দেখিল ত ছাওয়াল মিশ্র পুরন্দর হুত এই।

এই গালি শুনিয়া বিশ্বস্তুর চটিয়া গেলেন ও থাওয়ার সময়ে প্রতিশোধ লইবেন বলিয়া মুরারিকে শাসাইলেন। মুরারি থাইতে বসিয়াছেন—

> হেন কালে গৌরহরি কি কর কি কর বলি সেইখানে হৈল উপনীত।

> তরস্ত না হয়। তুমি এইখানে আছি আমি ভোজন করহ বাণী বৈল।

> মধ্য ভোজন বেলা ধীরে ধারে নিয়ড়ে গেলা ধাল ভরি এমৃতি মৃতিল॥

> কি কি বলি ছি ছি করি উঠিলা সে মুরারি করতালি দিয়া বলে গোরা।

> কর শির নাড়িয়া ভক্তিযোগ ছাড়িয়া ভর্জা বোল এই অভিপারা॥

জ্ঞান কর্ম্ম উপে ক্ষয়। কৃষ্ণ ভঞ্জ মন দিয়া রসিক বিদগ্ধ তিদানন্দ ॥ আদি, পূত ১৭



এই উপদেশ দিয়া বিশ্বস্তর পলায়ন করিলেন। সেই দিন হইতে মুরারির বিখাস জন্মিল যে "বিশ্বস্তর প্রভু ভগবান্।" কোন অলৌকিক ঘটনা হইতে কাহারও প্রতি প্রথম ভগবদুদ্ধি জন্মিলে সে কথা কেহ চাপিয়া রাখেন না। মুরারির জীবনে এমন কিছু ঘটিলে তিনি নিশ্চয়ই তাহার ইন্সিত করিতেন। কোন ভদ্রলোকের ছেলের পক্ষে প্রতিবেশীর বাড়াতে যাইয়া ভাতের থালায় প্রসাব করা সম্ভবপর নহে। অবশ্য বলা যাইতে পারে নিমাই স্বয়: ভগবান্ — সুতরাং তাঁহার দারা সবই সম্ব।

(ছ) লোচন বলেন বিশ্বস্তর উপবীত-গ্রহণ-সময়ে -

যুগধর্ম সন্নাস করিতে মন ছিল। মুগুনের কালে তাহা মনেরে পড়িল। এই মন হইব বলি হইল আবেশ। 

বিশ্বস্তুর জাবনে কি কি করিবেন তাহা বাল্যকাল হইতেই জানিতেন। ইহাই প্রমাণ করা লোচনের উদ্দেশ্য। মুরারির গ্রন্থে এরূপ কোন কথা নাই।

- (জ) বিশ্বস্তুর পিতার পিও দিবার জ্ঞ গ্রায় ঘাইবার সময়ে শচীদেবা তাঁহাকে বলিলেন – "মোর নামে এক পিও দিস্রে তথাই" ( আদি, পু ৫৫)। মুরারিতে বা অন্ত কোন গ্রন্থে এরূপ কথা নাই। লোচন এখানে শচীদেবীতে স্ব্রিজ্ঞতা আরোপ করিয়াছেন। ছেলে পরে সন্ন্যাসী হইয়া যাইবে, সেই জন্ম গয়ায় তাঁহার পিও পড়িবে না – অতএব এখনই জীবিতকালে এক পিণ্ডের জন্ম শচীদেবী ছেলেকে অনুরোধ করিলেন।
- (ঝ) বিশ্বস্তরের বরাহ-ভাবের আবেশ বর্ণনা করিতে যাইয়া লোচন (মধ্য পু ৪) মুরারির প্রায় আক্রিক অনুবাদ করিয়াছেন (২।।। প্রতি প্রতি । কিন্তু লোচনের মতে বিশ্বর মুরারিকে রাধাক্ষ্য ভজনা করিতে উপদেশ দিলেন যথা-

ভঞ্জিবে পরম ব্রহ্ম নরাকৃতি তমু। मधा, भुः व ইন্দ্রনাল বরণ ত্রিভঙ্গ করে বেনু॥

292

## শ্রীচৈত্যচরিতের উপাদান

কিন্তু মুরারি নিজে লিখিয়াছেন যে শীতৈতত তাঁহাকে রামচন্দ্রের উপাসনাতেই রত থাকিতে উপদেশ দিয়াছিলেন ( ২।৭।১৮ )।

(এঃ) মুরারি লিখিয়াছেন যে বিশ্বত্তরের আদেশে তিনি রামাষ্ট্রক পাঠ করিলে প্রভু তাহার প্রতি প্রতি হইয়া তাঁহার ললাটে "রামদাস" শব্দ লিখিয়া দিলেন। লোচন তাহার উপর রং চড়াইয়া লিখিলেন -

> রঘুনাথ বিনে তুমি তিলেক না জীয়। মুক্তি তোর রঘুনাথ জানিহ নিশ্চয়॥ ইহা বলি রামরূপ দেখাইল তারে। জানকী সহিত সাজোপাল সব মেলে " মধ্য, পু<sup>্</sup> ১৭

মুরারি বিশ্বস্তরের রামরূপ দেখিলা থাকিলে তাহ। নিশ্চয়ই লিপিবদ্ধ করিতেন। আর যদি তর্ক উপস্থিত করা যায় যে ইন্টমূর্ত্তি দর্শন করার কথা প্রকাশ করিতে নাই বলিয়া তিনি তাহা লেখেন নাই, তাহার উত্তরে বলা যাইতে পারে যে, যে কথা তিনি লেখেন নাই তাহা যে কাহারও কাছে প্রকাশ করিয়াছেন ইহাও সম্বাপর নহে। আর যিনি একমাত্র দ্রষ্টা, তিনি তাহা প্রকাশ না করিলে, অন্যে সে সম্বন্ধে কিছু বলিলে তাহা বিশ্বাস कड़ा याय ना।

(ট) মুরারি লিখিয়াছেন যে, এক কুন্ঠরোগ-গ্রন্ত ব্যক্তি বিশ্বস্তরের কুপা প্রার্থনা করিলে তিনি বলিলেন যে, বৈক্ষবদ্বেষীকে তিনি উদ্ধার করেন না। ঐ ব্যক্তির শ্রীবাসের নিকট অপরাধ হইয়াছিল। প্রভুর মুখে এই বিবরণ শুনিয়া শ্রীবাস বলিলেন যে, "আমার প্রতি যে অপরাধ করে তাহাকে আপনি উদ্ধার করুন" (২০১৩-১৭)। লোচন এই ঘটনা লিখিবার পার যোগ করিয়াছেন যে, শীবাসের পাদোদক কুষ্ঠীর গায়ে দেওয়ার পর-

> স্বৰ্ণকান্তি জিনি দেহ বিজ্ঞাধি পালায়। পালাইল বাাধি দেহ নিৰ্মাল হইল। হরি হরি বলি ব্যাধি নাচিতে লাগিল। মধ্য, পুত ৩৭



# লোচ্চনর প্রীচৈতভামঞ্চল

উদ্বাংশের শেষ চরণে "ব্যাধি" শব্দে রোগ না রোগী বুঝাইতেছে ? প্রত্যেক ধর্মমণ্ডলীতেই এইরূপে কালক্রমে অলৌকিক ঘটনার উৎপত্তি হয়।

(ঠ) সন্নাদের পূর্বের বিশ্বস্তরের বিশ্বপ্রিয়ার সহিত বিলাস-সম্বন্ধে মুরারি কিছুই লেখেন নাই। লোচন ঐ সম্বন্ধে অতি বিস্তৃত বর্ণনা দিয়াছেন। পরবর্তী অধ্যায় "মাধ্বের চৈত্ত্য-বিলাস" আলোচনার সময়ে উহার বিচার করিব।

# রুন্দাবনদাদের সহিত লোচনের বর্ণনার পাথকা

লোচন মঞ্চলাচরণে বৃন্দাবনদাসকে ভক্তিভরে বন্দনা করিয়াছেন।
তাহা দেখিয়া মনে হইতে পারে যে, তিনি শ্রীচৈত্যভাগবত হইতে কিছু
কিছু ভাব ও ঘটনা লইয়াছেন। কিন্তু আশ্চর্য্যের বিষয় এই যে তিনি
বৃন্দাবনদাস-কর্তৃক বর্ণিত মুখ্য মুখ্য কয়েকটি ঘটনার একেবারেই উল্লেখ
করেন নাই। উদাহরণ-স্বরূপ বলা যাইতে পারে যে, দিখিজ্বী-পরাভব,
কাজীদলন, হরিদাস ঠাকুরের কাহিনী, পুএরীক বিজ্ঞানিধির কথা, ছসেন
শাহের কথা, অধৈত রচিত চৈত্য-গীতি প্রভৃতি সম্বন্ধে লোচন একেবারে
নীরব রহিয়া গিয়াছেন।

লোচন যে বৃন্দাবনদাসের ঐতিত্যভাগবত পড়িয়াছিলেন সে সম্বন্ধে কোন সন্দেহ নাই। বিশ্বস্তরের গয়া যাইবার রাজার বর্ণনায় মুরারি বলেন তিনি মন্দার হইতে রাজগির দিয়া গয়ায় যান। বৃন্দাবনদাস বলেন তিনি পুন্পুন্ দিয়া গয়ায় গিয়াছিলেন। লোচনও লিখিয়াছেন যে মন্দার দর্শন করার পর বিশ্বস্তর—

# "পুনপুনা নদাতীর্থে উত্তরিলা গিয়া"

এবং তথা হ'ইতে গয়ায় গেলেন। এ ক্ষেত্রে লোচন মুরারিকে অনুসরণ না করিয়া বুন্দাবনদাসের মত গ্রহণ করিয়াছেন।

কিন্তু আশ্চর্যোর বিষয় এই যে, লোচন নিত্যানন্দের কথা বলিতে যাইয়া নিত্যানন্দের প্রিয় শিশু বৃন্দাবনদাসের বর্ণনাকে প্রামাণ্য বলিয়া স্বীকার করেন নাই। তিনি জগাই-মাধাইর উদ্ধার-কাহিনী-সম্বদ্ধে মুরারি গুপ্তের বইয়ে একটি ইক্লিড (২০১৩০১৭) ছাড়া কোন বর্ণনা পান নাই। কৰিকৰ্ণপুরও এ বিষয়ে নাটকে বা মহাকাব্যে কিছু **(लारथन नारे।** (लाठन कुन्नावननारमत वहे हहेरड मूल घटेना लहेगा অনেক বিষয়ে আকর-গ্রন্থ হইতে পৃথক্ বর্ণনা দিয়াছেন। বৃন্দাবনদাস বলেন যে একদিন নিত্যানন্দ রাত্রিকালে জগাই-মাধাইয়ের বাড়ীর নিকট দিয়া যাইভেছিলেন, তিনি "অবধৃত" এই কথা শুনিয়া মাধাই ভাঁহার মাধায় মুটুকী দিয়া মারিল; ভাঁহার মাধা দিয়া রক্ত পড়িতেছে দেখিয়া জগাইয়ের দয়া হইল; সে মাধাইকে আর মারিতে निरम्ध कविल। এদিকে লোকে যাইয়া বিশ্বস্তবকে এই খবর দিল। বিশ্বস্তর সাক্ষোপাত্র-সহ আসিয়া জগাই-মাধাইকে শান্তি দিতে উছত হইলেন। নিতাানন তাহাকে কোন মতে নিরস্ত করিয়া বলিলেন যে "মাধাই মারিতে প্রভু! রাখিল জগাই"। জগাই নিবারণ করিয়াছে শুনিয়া প্রভু ত'াহাকে আলিজন করিলেন। জগাইয়ের মনে প্রেমভক্তির উদয় হইল। তাহা দেখিয়া মাধাইও উদ্ধার প্রাথনা করিল নিতাননদ ভাহাকে কুপা করিলেন। লোচন বলেন যে নিত্যানক একা যান নাই। বিশ্বস্তব জগাই মাধাইকে উদ্ধার করিবেন বলিয়া কার্চনের দল লইয়া বাহির হইয়াছিলেন। কার্তনের শব্দে উহাদের নিদ্রা ভল্প হওয়ায় উহারা কুদ্ধ হইয়া বাহির হইয়া আসিল। মাধাই কলসার কানা ছুঁড়িয়া নিত্যানন্দের মাধায় মারিল। নিত্যানন্দ বলিলেন-

# মেরেছিস মেরেছিস তোরা তাহে কৃতি নাই। স্থুমধুর হরিনাম মুখে বল ভাই॥

বিশ্বস্তব জগাই-মাধাইকে শান্তি দিতে উত্তত হইলেন। নিত্যানন্দ তাঁহাকে নিরস্ত করিলেন। "ঘরে গেলা মহাপ্রস্তু নিজ জন লঞা", অর্থাৎ বুন্দাবন-দাসের বর্ণনা অনুসারে নিত্যানন্দকে আঘাত করা ও জগাই-মাধাইয়ের উদ্ধার একই স্থানে একই কালে হইয়াছিল। লোচনের বর্ণনায় এক স্থানে আঘাত, অহা স্থানে উদ্ধার। লোচন লিখিয়াছেন যে বিশ্বস্তব দলবল-সহ



বাড়ী চলিয়া গেলে জগাই-মাধাইয়ের মনে অনুশোচনা হইল। তাহারা প্রভুর বাড়ীতে যাইয়া আল্ল-সমর্পণ করিল। প্রভু তাহাদের প্রতি করুণা করিলেন ও বলিলেন—

> তোর পাপ পরিগ্রহ করিব রে আমি। আপন সকল পাপ উৎসর্গহ তুমি। ইহা বলি কর পাতে তুলসার তরে। তুলসা না দেই তারা ছই ভাই ডরে।

অনেক ইতন্ততঃ করিয়া তাহারা প্রভুর হাতে পাপের বোঝা-যুক তুলসী দিল। তাহারা উদ্ধার পাইল।

জয়ানন্দ এই ঘটনার বর্ণনা উপলক্ষে বৃন্দাবনদাসকে অনুসরণ করিয়াছেন; অর্থাৎ তাঁহার মতে নিত্যানন্দ যখন একা যাইতেছিলেন, তখন তাঁহাকে মাধাই মারিয়াছিল এবং "গৌরচক্রে দূত সব জানাইল গিএল"। এই অংশে লোচনের সহিত জয়ানন্দের মিল নাই। কিন্তু বিশ্বস্তরের হাতে তুলসী-পত্র দিয়া জগাই-মাধাইয়ের পাপ-সমর্পণের বর্ণনায় লোচন ও জয়ানন্দের মিল আছে। জয়ানন্দ ঘটনাটিকে আর একটু অলৌকিক করিয়াছেন। তিনি বলেন —

জগাই মাধাই পাপ উৎসর্গিল হাতে। প্রভুও অঞ্জলি গলাজল দিল মাথে॥ কুফারর্গ মুখ হৈল দেখে লোকে তাস। নিমেষেকে হেম চান্দ মুখের প্রকাশ॥ জয়ানন্দ, পৃত ৫৮

এই ঘটনাটির সহিত নিত্যানন্দের ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধ ছিল বলিয়া বৃন্দাবনদাসের বর্ণনা লোচন ও জয়ানন্দ অপেক্ষা অধিক বিশাস্ত।

লোচনের বর্ণিত সার্বভৌনের সহিত বিচার ও প্রতাপরুদ্রের উদ্ধার-কাহিনীর সহিত্ত বুন্দাবনদাসের বর্ণনার মিল নাই। শ্রীচৈতভা-চরিতামৃত আলোচনার সময়ে ঐ ছুই ঘটনার বিশদ বিচার করিব।



295

## জীচৈতভাচরিতের উপাদান

# লোচনের বণিত নৃতন তথ্য

লোচন এমন কয়েকটি নৃতন সংবাদ দিয়াছেন যাহা মুরারি, বৃন্দাবনদাস বা অন্য কোন লেখক বলেন নাই, অথচ যাহা সত্য বলিয়া না
মানিবার কোন কারণ দেখিতে পাওয়া যায় না। নিতানন্দের
গাহস্যাশ্রমের নাম যে কুবের ছিল একথা একমাত্র লোচনই বলিয়াছেন।
লোচন রাড়ের লোক, শুতরাং একচাকা-গ্রামনিবাসী হাড়ো ওঝার পুত্রের
নাম জানা তাঁহার পক্ষে সম্ভব। লোচন বলেন

মা বাপে থুইল নাম কুবের পণ্ডিত। সন্মাস আশ্রমে নিত্যানন্দ স্ক্রিত। স্তথ্ও, পৃত্তু

# জীতৈতভাৱে তিরোভাবের বিবরণ

লোচন শীতৈতত্তার তিরোভাবের নিম্নলিখিত বিবরণ দিয়াছেন। শীতৈতত্ত আঘাঢ় মাসের তিথি সপ্তমী দিবসে গুঞ্জাবাড়ীর মধে।—

> তৃতীয় প্রহর বেলা রবিবার দিনে। জগরাথে লীন প্রভূ হইলা আপনে॥

> > —শেষগণ্ড, পৃ<sup>্</sup> ১১৬-১৭

#### জয়ানন্দ বলেন—

নীলাচলে নিশাএ চৈতন্ত টোটাগ্রামে। বৈকুণ্ঠ যাইতে নিবেদিল ক্রমে ক্রমে॥ আবাঢ় সপ্তমী তিথি শুক্লা অঙ্গীকার করি। রথ পাঠাইহ যাব বৈকুণ্ঠপুরী॥

আবাঢ় বঞ্চিত রথ বিজয়া নাচিতে। ইটল বাজিল বাম পাত্র আচ্দিতে॥

聯



# লোচনের ঐতিভয়মঞ্চল

চরণ বেদনা বড় ষষ্ঠার দিবসে।
সেই লক্ষ্যে টোটায় শরণ অবশেষে।
পণ্ডিত গোসাঞ্জিকে কহিল সর্ববর্ধা।
কালি দশ দণ্ড রাত্রে চলিব সর্ববর্ধা। জয়ানন্দ, পৃত ১৫০

নির্দিষ্ট সময়ের সামাত বিরোধ থাকিলেও জয়ানন্দ ও লোচনের মধ্যে তিথি ও তারিথের মিল আছে। কিন্তু তিরোভাব-স্থানের মিল নাই। লোচনের মতে গুঞ্জাবাড়ীতে তিরোভাব, জয়ানন্দের মতে টোটা গোপীনাথের মন্দিরে। শ্রীকৈতত্ত যে সমুদ্রে তিরোহিত হন নাই তাহা ডা॰ দীনেশচন্দ্র সেন মহাশয় স্বষ্ঠভাবে সপ্রমাণ করিয়াছেন। ও "অদৈতপ্রকাশে" আছে যে অদৈত জগদানন্দের হাত দিয়া নিম্নলিখিত "তরজা-প্রহেলী" নালাচলে প্রেরণ করিয়াছিলেন—

বাউলকে কহিও লোক হইল আউল। বাউলকে কহিও হাটে না বিকায় চাউল॥ বাউলকে কহিও কাজে নাহিক আউল। বাউলকে কহিও ইহা কহিছে বাউল॥

শ্রীচৈতক্যচরিতামতের অন্তালীলার উনবিংশ পরিচ্ছেদেও ঐ ঘটনা ও তরজা লিখিত হইয়াছে, কেবল তৃতীয় চরণে "কাজে" স্থলে "কামে" আছে। করিরাজ গোস্বামী লিখিয়াছেন যে মহাপ্রভু তরজা পড়িয়া একটু হাসিয়াছিলেন এবং স্বরূপ-দামোদরকে বলিয়াছিলেন—

পূজা নির্বাহন হৈলে পাছে করে বিসর্জন। তরজার না জানি অর্থ কিবা তার মন॥

তরজা পাইবার পর হইতেই মহাপ্রভুর বিরহদশা বৃদ্ধি পাইল। ইহার পর কি ঘটল তাহা আর কবিরাজ গোস্বামী বর্ণনা করেন নাই। তবে ঈশান নাগরের "অদ্বৈত-প্রকাশে" লিখিত আছে যে তরজা পাইবার কয়েক দিন পরে প্রভু "হা নাথ!" বলিয়া একদিন জগন্নাথ-মন্দিরে প্রবেশ করিলে. মন্দিরের দরজা আপনা-আপনি বন্ধ হইয়া গেল; কিছুক্ষণ পরে আবার

১ ছারতবর্ধ, ফাল্পন, ১৩০৫, ডা° দানেশচন্দ্র দেন "শ্রীগৌরাকের নালাবনান" প্রবচ্চে শ্রীচ চল্লের তিরোভাব-সম্বন্ধে বিভিন্ন কিংবদন্তীর ঐতিহাসিক মূল্য নিজপণ করিয়াছেন।

দরজা থুলিলে সকলে অমুমান করিলেন যে প্রভু অপ্রকট হইয়াছেন। (অবৈত-প্রকাশ, একবিংশ অধ্যায়, পূ<sup>°</sup> ৯৫)

ঈশান নাগরের বইয়ে ঐতিভত্তের ভিরোভাবের কাল-সম্বন্ধে কোন কথ। নাই; তাঁহার মতে জগলাথের মন্দিরেই তিরোভাব ঘটিয়াছিল. গুঞ্জাবাড়ীতে নহে। শ্রীচৈতন্য টোটা গোপীনাথের মন্দিরে তিরোহিত হইয়াছিলেন বলিয়া জয়ানন্দ লিখিয়াছিলেন বটে, কিন্তু কবিরাজ গোস্বামী বলেন যে মহাপ্রভু শেষ ছাদশ বংসর গভীরায় বাস করিয়াছিলেন; গভীরা হইতে টোটা গোপীনাথ অনেকটা দূরে; আর নবদীপ-লালায় গদাধর গোপামীর সহিত ঐতিতব্যের যথেক কছতা थाकित्व अञ्चीदाय वाम-कात्व जिनि ताय तामानम ७ यत्रभ-मारमामरतत সঙ্গেই অন্তরপ্রভাবে রসাম্বাদন করিতেন। জ্যানন্দের অনেক কথাই বিশ্বাসযোগ্য নতে পূর্বের দেখাইয়াছি, সেই জন্ম কেবলমাত্র জয়ানন্দের কথার উপর নির্ভর করিয়া টোটা গোপীনাথে শ্রীচৈতত্তের তিরোভাব হইয়াছিল বলিয়া স্বীকার করিতে পারিলাম না। আমি যে রীতিতে শ্রীচৈতব্যের জীবনী-সমূহের বিচার করিতেছি তাহাতে সমসাময়িক প্রাঞ্জদর্শীর কথা অলৌকিক হইলেও স্বীকার করিয়া লইয়াছি। এই জন্ম ্রীটেডভের সমসাময়িক লেখক ও ত্রীটেডভের কুপাপাত অচ্যতানদের প্রদত্ত তিরোভাবের বিবরণকেই সর্ব্বাপেক্ষা অধিক বিখাসযোগ্য না হইলেও সর্বাপেকা অধিক প্রামাণা বলিতে হয়। অচাতানন্দ বলেন-

এমন্তে কেতেহে দিন বহি গেলা শুনিমা অপূর্বরস।
প্রতাপরুদ্র রাজন বিজে কলে কলারাত্রটর পাশ।
এমন্ত সময়ে গোরাপ্সচক্রমা বেড়া প্রদক্ষিণ করি।
দেউলে পশিলে সখাগণ সঙ্গে দণ্ড কমগুলু ধরি।
মহাপ্রতাপ দেব রাজা ঘেণিন পাত্র মন্ত্রীমান সঙ্গে।
হরি-ধ্বনিয়ে দেউল উছুলই শ্রীমুধ দর্শন রঙ্গে।
চৈতন্ত ঠাকুর মহানৃত্যকার রাধা রাধা ধ্বনি কলে।
জগন্নাথ মহাপ্রভু শ্রীজন্পরে বিদ্যুৎপ্রায় মিশি গলে।

—শ্রসংহিতা, প্রথম অধ্যায়



# লোচনের প্রীচৈতগ্রমঞ্চল

অচ্তানন্দ প্রভ্র তিরোভাবের কালসম্বন্ধে স্পান্ট করিয়া কিছু বলেন নাই। তবে তিনি বলেন যে প্রতাপরুদ্র প্রভূর তিরোভাবের পর মাধবা পূর্নিমা বা বৈশাখা পূর্ণিমা হইতে এক মাস কাল মহোৎসব করিয়াছিলেন। রাজা যে ঐতিত্যের তিরোভাবের অব্যবহিত পরেই মহোৎসব করিয়াছিলেন এরূপ কথা অচ্যতানন্দ বলেন নাই। পরবর্তী যুগের লেখক দিবাকরদাসও (সম্ভবতঃ সপ্তদশ শতকের মধ্যভাগ) অচ্যতানন্দের অনুরূপ বিবরণ লিখিয়াছেন—

এমন্ত কহি প্রীচৈতগ্য
গোপন হইলে সদেহে
না দেখি প্রীচৈতগ্যরূপ
রাজা হোইলে মনে ছন্ন
পূর্বের যহিরুঁ আসিথিলে

শ্রীজগন্নাথ অন্দে লীন।
দেখি কাহার দৃষ্টি মোহে॥
সর্বামনরে ছথ তাপ।
হে প্রভু হেলে অন্তর্জান॥
লেউটি তহিঁ প্রবেশিলে॥

দিবাকরদাদেরও পরের যুগের লেখক ঈশ্বরদাস বলেন যে ঐতিচতন্য জগন্নাথ-অত্যে চন্দন লেপন করিতে করিতে প্রতাপরুদ্রের সমক্ষে বৈশাথের তৃতীয় দিবসে জগন্নাথ বিগ্রহে লান হয়েন (ঈশ্বরদাসের চৈতন্য-ভাগবত, অধ্যায় ৬)। প্রভুর তিরোভাবের কাল-সম্বন্ধে জয়ানন্দের সাহত ঈশ্বরদাসের বিহোধ দেখা যাইতেছে। জয়ানন্দ ঈশ্বর দাসের অনেক পূর্ববর্তী বলিয়া এ বিষয়ে তাহার মতই অধিক প্রামাণিক। কিন্তু পূর্বের উল্লিখিত অচ্যতানন্দের ইঞ্চিতের সহিত ঈশ্বরদাসের বর্ণনা মিলাইয়া পড়িলে দৃঢ় ধারণা জন্মে যে উড়িয়া ভক্তদের মতে বৈশাথমাসেই প্রভুর তিরোভাব। অচ্যতানন্দ ও জয়ানন্দের মধ্যে কাহার উক্তি অধিক প্রামাণিক তাহা নির্ণয় করা ছকর।

# লোচনের অন্তের ঐতিহাসিক মূল্য

শ্রীচৈতত্যের জীবনী হিসাবে লোচনের শ্রীচৈতত্যমন্তলের ঐতিহাসিক মূল্য বেশী নছে। তিনি যে কয়েকটি নূতন সংবাদ দিয়াছেন তাহা সত্য

### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

250

হওয়াই সম্ভব। কিন্তু ঘটনার বিবরণ দেওয়া অপেকা ভাববর্ণনায় তাঁহার অধিক আবেশ ছিল। তিনি নাগরাভাবের উপাসক। সেই জন্ম : ০৯ পৃষ্ঠার বইয়ে (য়ণালকান্তি ঘোষ সম্পাদিত, ৩য় সংকরণ) ১৫৪ পৃষ্ঠা ধরিয়া তিনি নবছাপ-লালাই বর্গনা করিয়াছেন। তাঁহার প্রস্তে অস্তালালা নোটেই কুটে নাই। লোচনের প্রস্তে উচ্ছল-নালমণির ও "কুফবর্ণং বিষাকৃষ্ণম্" শ্লোকের ব্যাখ্যায় শ্রীজীবের ষট্সন্দর্ভের প্রভাব দেখিতে পাওয়া যায়। কিন্তু রন্দাবনের গোম্বামীদের মতের সহিত তাঁহার মতের পার্থক্য বিস্তর। তাঁহার মতে শ্রীগোরাক্তরন্দর উপেয়, কেবল উপায়-মাত্র নহেন। বৈষ্ণব-ধর্মের ইতিহাসে লোচনের প্রস্ত খুব মূল্যবান্—কেন-না গোড়ায় বৈক্ষর ধর্মের একটি শাখার উপাসনা ও ভাব-সাধনা-প্রণালার বিশদ ও অকৃত্রিম বিবরণ ইহাতে পাওয়া যায়।



# একাদশ অধ্যায়

# মাধবের "চৈত্যবিলাস"

১৯২০ খৃন্টাব্দে আমি পুরীর মার্কণ্ডেশ্বরসাহীর অধিবাসী তুর্গাচরণ জ্বগদ্দেবরায়ের গৃহে উড়িয়া ভাষায় লিখিত মাধবের চৈত্যবিলাসের একথানি পুঁথি পাই। ইহারা রাধাকান্ত মঠের শিশু। তুর্গাবাবুর মাতাঠাকুরাণী শ্রীমতী মাতা নামে একজন বৈশ্ববীর নিকট দীক্ষা লন এবং এই গ্রন্থ পান। শ্রীমতী মাতার অপর শিশু। রাধা মাতার নিকট "চৈত্যাবিলাসের" একথানি প্রাচীন পুঁথি ছিল দেখিয়াছিলাম। আমি ১০০০ সালের সাহিত্য-পরিষৎ-পত্রিকার চতুর্থ সংখ্যায় "উৎকলে নবাবিক্ষত শ্রীতৈত্যা-সম্বন্ধীয় পুঁথি" নামক প্রবন্ধে এই গ্রন্থের পরিচয় দিই। সম্প্রতি প্রাচী অনুসন্ধান সমিতি" হইতে প্রকাশ করিবার জন্ম আমার সংগৃহীত পুঁথিথানি রায় সাহের অধ্যাপক আর্ত্রন্ত মহান্তি মহাশয় কটকে লইয়া গিয়াছেন।

### মাধব কে ?

ৈ তৈত ক্যবিলাদের গ্রন্থকারের নাম মাধব। তিনি নিজের কোন পরিচয় দেন নাই। তবে তাঁহার গুরু যে গদাধর দে কথা বলিয়াছেন; যথা—

সে হি ঐতিতত্তকথা কিছিহি বর্ণিবি।
এহি মনকু মোহর স্থকল করিবি যে॥
বন্দই যে গদাধর গুরু মহেশ্বর।
সে পাদ কমলে চিত্ত রহু মাধবর॥ প্রথম ছান্দ, ৪৬-৪৭

তিনখানি বৈঞ্ব-বন্দনাতেই : মাধব পট্টনায়ক নামে একজন ভজের

১ বেরকীনন্দনের ও বিতীয় বৃন্ধাবনলাসের বৈহন্ত-বন্দনা প্রভুপার অতুলকৃষ্ণ গোপামী প্রকাশ করিয়াছেল। আমি এজীর গোপামীর লেবা দক্ষেত বৈহন্ত-বন্দনা পাইয়াছি। নাম পাওয়া যায়। তাহা হইতে বুঝা যায় যে ঐ নামের একজন ভক্ত শ্রীকৈতক্তের প্রায় সমসাময়িক ছিলেন ও ভক্তদলের মধ্যে কোন কারণে প্রাধান্ত লাভ করিয়াছিলেন। কিন্তু কোন চরিত-গ্রন্থে উড়িয়া মাধ্বের নাম নাই—অনেক উড়িয়া ভক্তের নামই বাঞ্চালা চরিত-গ্রন্থসমূহে নাই। মাধ্বের গুরু গদাধর শ্রীকৈতক্তের প্রিয় গুজুদ্ গদাধর পণ্ডিত গোস্বামী হইতে পারেন; কেন না গ্রন্থশেষে মাধ্ব বলিতেছেন যে তিনি ঠাকুরের শ্রীমুখে যাহা শুনিয়াছেন, তাহাই উড়িয়া ভাষায় ভাষাগুরিত করিয়া বলিতেছেন; যথা—

বৈতে চরিত গৌরর ব্রহ্মাশিবে অগোচর
ঠাকুর শ্রীমুখে এহা কলে প্রকাশ।
তাহান্ধ ভাষার মুহি
তহিল প্রভু সন্ন্যাস রসবিলাস।
সাধুজনে ন খেন দোষ।
কহই মাধব তুম্ব পাদরে আশ্। দশম ছান্দ, ১৭

ঠাকুর-শদ গুরু অর্থে বাবজত হয়। লোচন নিজের গুরুকে ঠাকুর বলিয়াছেন; যথা—"শ্রীনরহরিদাস ঠাকুর আমার" (সূত্রথণ্ড, পৃ'৬৪)। মাধবের ঠাকুর নিশ্চয়ই বাজালী ছিলেন; তাহা না হইলে ভাষাগুরিত করার কথা উঠে না। গদাধর পণ্ডিত গোঁসাইয়ের নিকট যদি মাধব কোন কথা শুনিয়া তাহার অবিকল অনুবাদ প্রকাশ করেন, তাহা হইলে উহা খুবই প্রামাণিক হয়।

## गांधव ও लांहन

কিন্তু উদ্ধৃত পদ্যাংশের অর্থ এরপও হইতে পারে যে লোচনদাস ঠাকুর বাঙ্গালা ভাষায় যাহা প্রকাশ করিয়াছেন, তাহাই মাধব উড়িয়া ভাষায় অনুবাদ করিলেন। এরপ অনুমানের কারণ এই যে "চৈতন্তবিলাসের" দশটি ছান্দের মধ্যে প্রথম ও শেষ ছান্দ বাতীত অপর আটটি ছান্দের সহিত লোচনের চৈতন্তমন্তলের—মধাথণ্ডে নবদ্বীপে কেশব ভারতীর আগমন হইতে



# মাধবের চৈতভাবিলাস

আরম্ভ করিয়া (পৃ° ৪৭) শান্তিপুরে অহৈতের গৃহ হইতে ঐতিচতত্তর নীলাচল-যাত্রা পর্যান্ত (পৃ° ৭০)—বর্ণনার ভাব ও ভাষার সহিত মাধবের চৈতত্তবিলাসের অনেক মিল আছে। এইরূপ মিল দেখিয়া মনে হয় মাধব লোচনের বর্ণনার অমুবাদ করিয়া লিখিয়াছেন—

# তাহান্ধ ভাষার মুহি উৎকল ভাষারে বঁহি কহিলি প্রভু সন্মাস রসবিলাস।

কিন্তু এইরূপ ব্যাখ্যা করার পক্ষে কয়েকটি বাধা আছে। প্রথম বাধা এই যে কাহারও গ্রন্থ দেখিয়া কেহ অনুবাদ করিলে, উপজাবা গ্রন্থ-সম্বন্ধে অনুবাদক "শ্রীমুখে প্রকাশ" করা বলেন না।

বিতীয় বাধা এই যে লোচনদাস একজন স্থাসিক অনুবাদক। তিনি রায় রামানন্দের "জগরাথবল্লভ নাটক" ও মুরারি গুপ্তের কড়চার ভাবানুবাদ করিয়াছেন। লোচন এই সন্ন্যাস-গ্রহণের ঘটনাটি ছাড়া আর সব অংশেরই মূল উপাদান উক্ত কড়চা হইতে লইয়া চৈতল্পমঞ্চল লিখিয়াছেন। সন্ন্যাস-গ্রহণ অংশটির উপাদান লোচন কোথা হইতে পাইলেন ? তিনি কোথাও এমন কথা বলেন নাই যে তিনি নরহরি সরকার ঠাকুরের মূথে একথা শুনিয়াছেন।

সন্নাসের পূর্বের বিশ্বস্তর বিষ্ণুপ্রিয়ার সহিত বিহারাদি করিয়াছেন—
এ কথা লোচন কোথায় পাইলেন, তাহার সম্বন্ধে এক কিংবদন্তী আছে।
উহা এইরূপ—"এই সময়ে লোচনের গ্রন্থ পাঠ করিয়া বন্দাবনদাসের মনে
একটা সন্দেহ উপস্থিত হয়। লোচনের গ্রন্থে এইরূপ বর্ণিত আছে যে
প্রভু সন্নাসের পূর্বেরাত্রিতে বিষ্ণুপ্রিয়া দেবীকে ভূণন্মোহিনীরূপে
সাজাইয়া এবং তাহাকে শেষ-আলিঙ্গন-প্রদানপূর্বেক গৃহত্যাগ করেন।
বুন্দাবনদাস এই ঘটনা অবগত ছিলেন না। স্থতরাং শ্রীচৈতভাভাগণতে
উহার উল্লেখ নাই। লোচনের এই বর্ণনা দেখিয়া বুন্দাবনদাস সন্দিম্মিটিতে
তাহার মাতা নারায়্বী দেবার নিকট জিজ্ঞাসা করেন। তাহার উত্তরে
নারায়্বী বলেন যে লোচনের একটি কথাও অত্যক্তি নহে, কারণ এ
রাত্রিতে তিনি প্রভুর বাটাতে ছিলেন।"

128

এই কিংবদন্তা ছুইটি কারণে অবিখান্ত। প্রথমতঃ এ কথা সর্বজন-বিদিত যে লোচন বৃন্দাবনদাসের পর চৈতন্তমঙ্গল লেখেন। এটি তন্ত-ভাগবত লেখার সময়ে নারায়ণী জাবিত ছিলেন না, কেন-না বৃদাবন-দাস বলেন—

> অভাপিহ বৈশুবমগুলে বার ধ্বনি। চৈতন্মের অবশেষ পাত্র নারায়ণী॥ পৃত ৪৭৫

নারায়ণী জীবিত থাকিলে "অভাপিহ" লেথার সার্থকতা কি ? বিতীয়তঃ বৃন্দাবনদাসের নিজের উক্তি হইতে বৃঝা যায় যে সল্লাস-গ্রহণের সময়ে নারায়ণীর বয়স পাঁচ বৎসর মাত্র ছিল। নারায়ণী শ্রীচৈতভার অবশেষ ভোজন করিয়াছিলেন, এই কথা বর্ণনা করিতে যাইয়া বৃন্দাবনদাস লিখিয়াছেন—

চারি বৎসরের সেই উন্মন্তচরিত। হা কৃষ্ণ ব'লয়া কান্দে নাহিক সন্ধিৎ॥

—হৈ ভা°, পৃ° ১৭°

এই ঘটনা মধালীলার অন্তর্গত এবং মধালীলা গয়া হইতে প্রত্যাবর্তনের পর এক বংসর কালের ঘটনাসমূহ লইয়া লেখা; যথা—

> মধ্যথণ্ড কথা ভাই শুন একচিতে। বংসরেক কীর্ত্তন করিলা যেন মতে।

> > ' —हें कि का , साराप्रवि

গয়া হইতে প্রত্যাবর্তনের এক বংসর পরে, চবিবশ বংসর বয়সে, বিশ্বস্তুর সন্মাস গ্রহণ করেন। স্থতরাং সন্মাস-গ্রহণ-সময়ে নারায়ণীর বয়স্ পাঁচ বংসর মাত্র। পাঁচ বংসরের মেয়ে আড়ি পাতিয়া লোচন-বর্ণিত বিলাস-লীলা দেখিয়াছিল, এ কথা বিশ্বাস করা যায় না।

লোচন একজন অনুবাদক; রামানন্দ পট্নায়কের বই তিনি অনুবাদ করিয়াছেন; অতএব উড়িয়ায় লিখিত বই তাঁহার অজ্ঞাত ছিল না। মাধব পট্নায়ক গদাধরের শিশ্য; গুরুর মুখে শুনিয়া তিনি চৈত্যুবিলাস লিখিয়াছেন। চৈতভাবিলাসের সহিত চৈতভামগ্রলের বর্ণনার পুব মিল আছে। এতগুলি ঘটনাগত প্রমাণ (circumstantial evidence) লোচনের মৌলিকতা ও তাহা হইতে মাধরের অনুবাদ করার অনুমানের বিরুদ্ধে।

তৃতীয়তঃ লোচন ও মাধবের বই মিলাইয়া পড়িলে যেমন অধিকাংশ স্থলেই মনে হয়, একে অপরের আক্ষরিক অনুবাদ করিতেছেন, তেমনি ইহাও সন্দেহ হয় যে লোচনই মাধবের অনুবাদ করিতেছেন। এইরূপ সন্দেহ কি কারণে উঠে তাহা বুঝাইবার জভ লোচন, মাধব ও মুরারি গুপ্তের কড়চার কিছু তুলনামূলক সমালোচনা করিতেছি।

### লোচন লিখিয়াছেন-

শুন শুন অহে দ্বিজ্ব প্রিয় জ্রীনিবাস।

এক কথা কহি যদি না পাও তরাস॥

প্রেম উপার্চ্জনে আমি যাব দেশান্তর।

তো সভারে আনি দিব শুন দিজবর॥

সাধু যেন নৌকা চড়ি যায় দূর দেশ।

ধন উপার্চ্জন লাগি করে নানা ক্রেশ॥

আনিঞা বান্ধবজনে করয়ে পোষণ।

আমিহ ঐছন আনি দিব প্রেমধন॥

এ বোধে শুনিয়া কহে জ্রীবাস পণ্ডিত।

তোমা না দেখিয়া প্রভু কি কাজ জ্রীবিত॥

জ্রীবিত শরীরে বন্ধু করয়ে পোষণ।

দেহান্তরে করে তার প্রাদ্ধ তর্পণ॥

যে জ্রীয়ে তাহারে তুমি দিও প্রেমধন।

তোমা না দেখিলে হৈবে সভার মরণ॥

মধ্যথণ্ড, পু॰ ৪৮

#### মাধব লিখিয়াছেন-

শুন শুন দ্বিজ্ঞপ্রিয় হে শ্রীনিবাস। কহিবা কথাএ মনে ন পাও ত্রাস।



263

## শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

প্রেমধন অর্জনকু যিবি বিদেশ।
আনিন তুত্তকু দেবি এছি মানস।
কহে শ্রীনিবাস যার থিব জীবন।
তাঙ্গু তুত্তে দেব আনি সে প্রেমধন।
কণে তুত্তকু ন দেখি জীব ন থিব।
আন্তমানস্থ মারি সন্ন্যাস করিব।

— খিতীয় ছান্দ, ১৭-২০

# মুরারি গুপ্ত লিখিয়াছেন —

ততঃ প্রোবাচ ভগবাঞ্ শ্রীবাসন্বিজপুরবন্।
ভবতামেব প্রেমার্থে গমিশ্বামি দিগন্তরন্।
সাধুভির্নাবমারত যথা গন্ধা দিগন্তরন্।
অর্থমানীয় বন্ধুভ্যো দীয়তে তদহং পুনঃ ॥
দিগন্তরাৎ সমানীয় দাস্থামি প্রেমসন্ততিন্।
যয়া সর্বস্থারাধাং শ্রীকৃষ্ণং পরিপশ্যসি ॥
পুনঃ প্রোবাচ তচ্ছুদা শ্রীবাসঃ শ্রীহরিং প্রভুন্।
হয়া বিরহিতো নাথ কথং স্বাস্থামি জীবিতঃ ॥

-- 3156138-22

লোচন নিজে বলিয়াছেন যে তিনি মুরারি গুপ্তের বইকে উপজীব্য করিয়া চৈতক্তমঙ্গল লিবিয়াছেন। মুরারির প্রস্থে লোচন-কর্তৃক কথিত "জীবিত শরীরে বন্ধু করয়ে পোষণ" প্রভৃতি চারি চরণের কোন ইন্ধিত নাই। মাধবের প্রস্থে ১৯ সংখ্যক পয়ার ঐ ভাবের। মাধব যদি লোচন হইতে অমুবাদ করিতেন, তাহা হইলে তিনি কি মুরারি ও লোচনের "সাধু যেন নৌকা চড়ি যায় দূর দেশে" ও "জীবিত শরীরে বন্ধু করয়ে পোষণ" এই ছইটি উপমা বাদ দিতেন ? লোচনের বর্ণনা দেখিয়া মনে হয় যে তিনি মুরারির ও মাধবের লেখা দৈ অবলম্বন করিয়া নিজস্ব কবিত্ব-শক্তির পরিচয় দিয়াছেন।

আর একটি দৃষ্টান্ত লওয়া যাক। সন্নাস-গ্রহণের পর কাটোয়া



## মাধবের চৈতগুবিলাস

হইতে প্রভু রাড় দেশে যাইতেছেন, তাহার বর্ণনা করিয়া মুরারি লিখিয়াছেন—

মন্ত-করীন্দ্রবৎ কাপি তেজসা বরুধে কচিৎ।
কচিদ্ গায়তি গোবিন্দ কৃষ্ণ কৃষ্ণেতি সাদরম্।
তত্র দেশে হরেনাম শ্রুণা চাতাব বিহবলঃ।
প্রবিশ্যাহং জলে ক্ষিপ্রং তাজামি দেহমান্মারঃ॥
ন শৃণোমি হরেনাম কথং ত্রাক্ষণসংস্থিতিঃ।
ইতি নিশ্চিত্য তোয়স্ত সমীপং স ব্রন্ধন্ প্রভুঃ॥
দদর্শ বালকাংস্তত্র গবাং সঙ্গ-বিহারিণঃ।
নিত্যানন্দাবধূতেন শিক্ষিতান্ হরিকার্ত্তনম্॥
তত্রৈকো বালকোহত্যুকৈর্হরিং বদ হরিং বদ।
ইতি প্রোবাচ হর্ষেণ পুনঃপুনরুদারধীঃ॥
তচ্ছ ুয়া হ্যিতো দেবঃ সংরক্ষন্ দেহমান্মারঃ।
তত্রিব প্রক্রোদার্টো বিহ্বলশ্চাপ্তভুবি॥

CIO17 :=

### লোচন লিখিয়াছেন-

কদম কেশব জিনি একটা পুলক।
কণ্টকিত সব অল আপাদ-মস্তক।
মস্তকরিবর যেন রলে চলি যায়।
নির্ভর প্রেমায় ক্ষণে রুফগুণ গায়॥
ক্ষণেকে পড়েয়ে ভূমি রহে স্তর্ক হঞা।
ক্ষণে লক্ষ দিয়া উঠে হরিবোল বলিয়া॥
ক্ষণে গোপিকার ভাব ক্ষণে দাশুভাব।
ক্ষণে ধারে ধারে চলে ক্ষণে শীঘ্র ধাব॥
এই মনে দিবারাত্র না জানে আনন্দে।
রাচ্দেশে না শুনিল রুফনাম-গদ্ধে॥
কৃষ্ণনাম না শুনিঞা খেদ ইঠে চিতে।
নিশ্চয় করিল প্রভু জ্বলে প্রবেশিতে॥



266

## ঐতিচভন্মচরিতের উপাদান

দেখি সব ভক্তগণ করে অনুতাপ। গৌরান্ধ গোলোকে যায় কি হবেরে বাপ॥ তবে নিত্যানন্দ প্রভু বলে বীরদাপে। রাখিব চৈত্ত আমি আপন প্রতাপে ॥ সেহি খানে শিশুগণ গোধন চরায়। নিত্যানন্দ প্রভু তার প্রবেশে হিয়ায়॥ যে কালে গেলেন প্রভু জলের সমীপে। হরি বলি ডাকে সব শিশু আচন্দিতে॥ তাহা শুনি লেউটি আইলা গৌরহরি। বোল বোল বোলে তার শিরে হস্ত ধরি॥ তোমারে করুন কুপা প্রভু ভগবান্। কুতার্থ করিলি রে শুনাইয়া হরিনাম।

मधाथ छ

এখানে লক্ষ্য করার বিষয় এই যে মুরারির বর্ণনায় পাওয়া যায় না যে (১) শ্রীচৈতভার দেহ কদমকেশরের ভাষ দেখাইতেছিল; মাধবে ঐ উপমা আছে। (২) নিত্যানন্দ বলিয়াছেন যে তিনি আপন প্রতাপে শ্রীচৈতত্ত্যের জাবন রক্ষা করিবেন; (৩) শ্রীচৈতত্ত্য কোন শিশুর মাধায় হাত রাখিয়া তাহাকে আশীর্বাদ করিয়াছিলেন। যদি সব শিশু হরিনাম উচ্চারণ করিয়া থাকে তবে প্রভু কেবলমাত্র এক জনকে আশীর্বাদ করিলেন কেন ? পূর্বব অধ্যায়ে দেখাইয়াছি যে জগলাপবলভের অমুবাদ করিতে যাইয়া লোচন নিজে অনেক কথা সংযোজনা করিয়াছেন-এথানেও তাহাই দেখা যায়।

गांधव के घरेना-वर्गना-क्षत्रक लिथियारहन-

কদম্বকেশরপ্রায় পুলক। রোমাঞ্চ অন্ন আপাদ-মন্তক। মন্তকরিবরপ্রায় চলই। আনন্দে কৃষ্ণ কৃষ্ণ বলি গাই।

> পড়ই ভূমিরে। রহই কণ স্থকিত শরীরে॥



## মাধবের চৈত্তাবিলাস

কণে আস্বাদই গোপী ভাবরে। কণে আস্বাদই দাসভাবরে॥ কেতে বেলে ধীরে ধীরে গমই। কেতে বেলরে তুরিতে ধামই॥

तुष्ट्या जित्रम ।

ন জানই প্রভু হোই হরস ॥

প্রবেশ হেলে গৌড় দেশরে। কৃষ্ণনাম না শুনিলে কর্ণরে॥ বহুত চিন্তা লভিলে মনর।

কেমন্তে এ জনে হেবে নিস্তার॥

আচন্বিতে কুষ্ণ। কোহিন বোলন্ত হোইলে তৃষ্ণ।

— व्यक्ति इन्मि, ३७-३४

হরিনাম না শুনিতে পাইয়া শ্রীচৈতত্তের জীবন-ত্যাগের সংকল্প একটি অতি স্থন্দর ও প্রেমোদ্দীপক বর্ণনা। মাধব যদি লোচন হইতে অমুবাদ করিবেন তবে তিনি কদম্বকেশরের উপমাটি গ্রহণ করিয়া এমন একটি ঘটনা বৰ্জন করিবেন কেন ? যদি লোচন হইতে মাধব অনুবাদ করিতেন ভাহা হইলে রাঢ়দেশকে গৌড়দেশ বলিতেন না। গদাধরের মুখে শুনিয়া মাধব গৌড় ও রাঢ়ের পার্থক্য বুঝিতে পারেন নাই বলিয়া ঐরপ করিয়াছেন মনে হয়।

লোচনের গ্রন্থে আছে যে সন্নাসের অব্যবহিত পূর্বে-

নবদ্বীপ হইতে গদাধর নরহরি।

আসিয়া মিলিলা ভারা বলি হরি হরি॥ মধাত, পৃত ৬৩ অতৈত-ভবনেও নরহরি নিত্যানন্দাদির সহিত নাচিয়াছিলেন (মধ্যু পু ৭১); অবৈত-ভবন হইতে নালাচল-যাত্রার সময়ে শ্রীচৈতত্ত্বের সহিত নরহরি ছিলেন (পৃ<sup>০</sup> ৭৪)। মুরারির মতে চক্রশেথর আতার্য্য নবদাপ হইতে বিশ্বস্তরের সঙ্গেই কাটোয়া গিয়াছিলেন ( ৩):৮)। লোচনও তাহাই বলেন। কিন্তু মাধব বলেন যে কাটোয়াতে বিশ্বর যখন কেশব ভারতার সহিত কথোপ-ক্ষন ক্রিতেছিলেন, তথন চক্রশেথর তথায় উপস্থিত হইলেন ; যথা—

এহি মতে ছহি জন ছন্তি যেঁউ ঠারে। চন্দ্রশেখর আচার্য্য গলে সে কালরে॥ সন্নাসকু নমি মহা প্রভুকু বন্দিলে। আইলা উত্তম হেলা হসিন বোইলে॥ সপ্তম ছান্দ

### ঐতিভত্তচরিতের উপাদান

220

বিশ্বস্তর সন্নাস করিতে যাইবার সময়ে একা চলিয়া গিয়াছিলেন, ইহাই সম্ভব মনে হয়। বুন্দাবনদাসও তাহাই বলিয়াছেন; যথা—

> প্রভূ বোলে "আমার নাহিক কারো সঙ্গ। এক অদিতীয় সে আমার সর্বর রঙ্গ।" ২।২৬।৩৬২

তাঁহার মতে চক্রশেখরাদি ভক্তগণ পরে কাটোয়া গিয়াছিলেন। মাধব গদাধর ও নরহরির কাটোয়া যাওয়া-সম্বন্ধে কিছুই লেখেন নাই। অদৈত-ভবনে ঐটিচতভ্যের অবস্থান বর্ণনা করিতে যাইয়া মাধব হরিদাস, মুরারি, মুকুন্দ দত্ত ও শীনিবাসের নাম করিয়াছেন; যথা—

তেজ দেখি আনন্দ সে হরিদাস।

মুরারি মুকুন্দ দত্ত শ্রীনিবাস যে॥

দণ্ড প্রণাম করি পড়ি ভূমিরে।
বদন দেখি অশ্রুপূর্ণ নেত্ররে॥ নবম ছান্দ, ২৮

এ স্থলেও মাধব নরহরির নাম করেন নাই। অদৈত-ভবন হইতে নীলাচলে যাতার সময়ে মাধবের মতে—

> সঙ্গে অথৈত গদাধর পণ্ডিত। নিত্যানন্দাদি আর যেতে ভকত যে। নবম ছান্দ, ৫০

व्यदिक थानिकछ। ११थ याहेशा कितिया आस्मिन ( मन्य हान्म, १ )।

তাহা হইলে দেখা যাইতেছে যে, যে যে প্রসঙ্গে লোচন নরহরির নাম করিয়াছেন, সেই সব ঘটনা-বর্ণনা-উপলক্ষে বা অন্ত কোথাও মাধব নরহরির নাম করেন নাই। লোচনের বইকে আদর করিয়া তাহার অনুবাদ করিতে বসিলে, মাধব বাছিয়া বাছিয়া লোচনের গুরু নরহরির নামটি বাদ দিবেন কেন, তাহা বুঝা যায় না।

আর এক দিক্ দিয়া আলোচনা করিলেও মনে হয় মাধব লোচনের পূর্বের গ্রন্থ লিখিয়াছেন। ধর্ম্ম-সম্প্রদায়ের ইতিহাস আলোচনা করিলে দেখা যায় যে যতই দিন যাইতে থাকে ততই অলোকিক ঘটনার সংখ্যা রৃদ্ধি পায়।

ম।ধব লিখিয়াছেন যে শচীদেবী বিশ্বস্তরের সল্লাস-গ্রহণের সংকল্প



### মাধবের চৈতক্তবিলাস

শুনিয়া আকুল হইলেন; বিশ্বস্তৱ তাঁহাকে নানারূপ তত্ত্বৰা বলিয়া প্রবোধ দিলেন। তথ্য—

> গৌরাঙ্গ-বাণী শুনিন জননা বদস্তি নোহ তু মনুয়া। জানিলি সাক্ষাৎ নন্দ-নন্দন তু এরূপে হউছ প্রকাশ।

লোচন এই ঘটনা বর্ণনা করিতে যাইয়া লিখিয়াছেন-

সেই ক্ষণে বিশ্বস্তবে কৃষ্ণবুদ্ধি হৈল।
আপনার পুত্র বলি মায়া দূরে গেল।
নবমেঘ জিনি ছাতি খ্যাম কলেবর।
ত্রিভঙ্গ মুরলীধর বর পীতাম্বর॥
গোপ গোপী গো গোপাল সনে বৃন্দাবনে।
দেখিল আপন পুত্র চকিত তথনে॥

মাধব লোচন হইতে অসুবাদ করিলে বিশ্বস্তরের দেহে শচীর কৃষ্ণদর্শন বাদ দিতেন না।

মাধব বলেন বিশ্বস্তর বিষ্ণুপ্রিয়াকে প্রবোধ দিলে বিষ্ণুপ্রিয়া মনে করিলেন যে বিশ্বস্তর সাক্ষাৎ নন্দ-নন্দন; যথা—

এতে কহিন গৌরান্ন হরি।
সেত্র বিফুপ্রিয়া মনোহারি॥
সাক্ষাৎ নন্দ-নন্দন এ।
এমন্ত সত্যকরি মনে অবধারি সে॥ চতুর্থ ছান্দ, ২৬

লোচন এ স্থলে লিখিয়াছেন—

আপনে ঈশ্বর হঞা দূর করে নিজ মায়া
বিষ্ণুপ্রিয়া পরসর চিত।
দূরে গেল ছখ শোক আনন্দ ভরল বুক
চতু ভুজ দেখে আচন্দিত॥
ভবে দেবী বিষ্ণুপ্রিয়া চহু ভুজ দেখিয়া
পতিবুদ্ধি নাহি ছাড়ে ভড়। মধা°, পৃ° ৫৬

এই সব দেখিয়া আমার অনুমান হয় যে লোচনদাস মাধবের গ্রন্থকে অবলম্বন করিয়া ভৈতক্তমঙ্গলের জীতৈতক্তের সন্মাস-সম্পক্তি ঘটনা বর্ণনা করিয়াছেন—কিন্ত ইহা অনুমানমাত্র। এ সম্বন্ধে স্থির সিন্ধান্তে আসিতে হইলে দৃঢ়তর প্রমাণ আবশ্যক।

# মাধবের গ্রন্থে মূল্যবান্ সংবাদ

বিশ্বস্তুর সন্ন্যাস-গ্রহণের অব্যবহিত পূর্বে বিফুপ্রিয়ার সহিত বিহারাদি করিয়াছিলেন কি না, তাহার সত্যতা নির্ভর করে মাধ্বের বই সত্যই গদাধর পণ্ডিতের নিকট শুনিয়া লেখা কি না তাহার উপর। যে ব্যক্তি শেষরাত্রিতে চিরতরে গৃহত্যাগ করিবেন তাঁহার পক্ষে বিলাস করা সম্ভব কি না, তাহা কেবল মনস্তত্তে শুনিপুণ পণ্ডিত ব্যক্তিরাই বলিতে পারেন।

মাধবের প্রথম ও দশম ছান্দের বর্ণনার সহিত লোচনের তৈতন্ত্রমঙ্গলের কোনরূপ মিল নাই। মাধব প্রথম ছান্দে প্রীচৈতন্ত্রের তত্ত্ব ও
ভক্তির প্রয়োজনীয়তা বর্ণনা করিয়াছেন। ঐ বর্ণনা হইতে জানা যায়
যে শ্রীমন্ত্রাগবতে তাঁহার যথেন্ট পাণ্ডিতা ছিল। দশম ছান্দে সংক্ষেপে
শ্রীতৈতন্তের শান্তিপুর হইতে যাত্রা, নীলাচলে গমন, জগলাও-দর্শন,
সার্বভৌম-উদ্ধার, দক্ষিণাপথ-ভ্রমণ, নীলাচলে প্রত্যাগমন, রন্দাবন দর্শন
করিয়া পুরীতে কিরিয়া আসা বর্ণিত হইয়াছে। মাধবের মতে পুরীতে
পৌছিয়া শ্রীতৈতন্ত প্রথমেই জগলাথ দর্শন করেন। জগলাথ-মন্দিরে মৃত্তিত
হইয়া পড়ায় সার্বভৌম তাঁহাকে নিজের বাড়ীতে লইয়া যান; যথা—

প্রভু শ্রীকুষাটেততা অধনকু করি ধতা
আসি প্রবেশিলে নীল হুন্দর গিরি ।
জগলাপ দেখিন প্রেমে হোই অচেতন
বিকচ কঞ্জ নয়ন্ত বহুই বারি ॥
সার্বভৌম দেখিলে আসি ।
কাঁছ আসিছন্তি অপরূপ সল্লাসী ॥
নেই আপনা সদনে রাখিলে দিবা ভুবনে
এমন্তে মিলিলে সন্ত ভক্তগণ ।



### মাধবের চৈত্তত্বিলাস

ত্রিযাম হেইছি দিন প্রভু আবেশিত মন প্রভুর সমীপে কলে নাম কীর্ত্রন । মহাপ্রভু হোই সচেত। বোলে বেগে দেখি আস জগলাধ ॥

কবিকর্ণপূর ও লোচনের মতে ত্রীচৈতত প্রথমে সার্বভৌম-গৃহে যাইয়া, পরে সার্বভৌম-পুদ্র-সহ জগরাপ-দর্শনে যান। কৃষ্ণদাস কবিরাজ এ কথা স্থাকার করেন নাই। মাধব যদি সত্যই গদাধর পণ্ডিত গোস্বামীর নিকট শুনিয়া বিবরণ লিখিয়া থাকেন তাহা হইলে তাহার কথাই সত্য বলিয়া মানিয়া লইতে হয়; কেন-না গদাধর ত্রীচৈতত্তের অনুগামা হইয়াছিলেন। মাধব বলেন যে ত্রীচৈতত্ত রায় রামানন্দকে উৎকল-রাজ্যের প্রাশ্ত সীমা

ছাড়িয়া পুরীতে যাইতে আদেশ দেন; যথা-

তাঙ্ক ঠারু মেলানি কালে। কহে এহ ছাড়ি যাও সে নীলাচলে॥

বৃন্দাবন হইতে পুরাতে ফিরিয়া আসিয়া ঐচৈতত নীলাওলে বাস করিতেছেন, এই পর্যান্ত বর্ণনা করিয়া মাধ্য গ্রন্থ শেষ করিয়াছেন।

ভকতকু ঘেনি সঙ্গে বঞ্চন্তি ভাবতরকে তহুঁ নেউটি আইলা শ্রীনীলাচল ॥ কৃষ্ণ সুখে বঞ্চন্তি দিন। পরম হর্ষ ভক্তজনক মন॥

গ্রন্থের প্রথম ছান্দেও মাধব বলিয়াছেন যে ঐতিচতত "এইবানে" অর্থাৎ নালাচলে বাস করিতেছেন; যথা—

> চৈতত্তরপরে এহা কৃষ্ণ ভগবান্। প্রকাশ করিঅছন্তি কহি শান্ত মান যে।

"বঞ্চান্তি" ও "করিঅছন্তি" (Present Progressive Tense বা লট্ )
এইরূপ কালব্যবহারকে ঐতিহাসিক সত্যরূপে অর্থাৎ শীতৈতক্তের নালাচলবাস সময়েই প্রন্থ লেখা হইয়াছিল মনে করা যায় কি না বলিতে পারি না;
ক্রেন-না ভক্তগণের নিকট প্রভুর লীলামাত্রই নিতা।

# দ্বাদশ অধ্যায়

# প্রতিত্যচরিতায়ত প্রস্থের প্রভাব ও পরিচয়

শ্রীচৈতলাচরিতামতে কবিহ ও পাণ্ডিতোর অপূর্বব ও বিচিত্র সমাবেশ হইয়াছে। দার্শনিক চিন্তার গভারতায় ও আধাাল্লিক অমুভূতির নিবিভৃতায় ইহার সমকক গ্রন্থ বঙ্গসাহিতে। আজও রচিত হয় নাই। নিছক কাবা-হিসাবে বিচার করিলেও কৃষ্ণদাস কবিরাজ কত শ্রীচৈতত্যের ভাবোল্মাদ-বর্ণনা রবাল্রনাথের যে কোন শ্রেষ্ঠ কবিতার অপোক্ষা কোনও অংশে হান বলিয়া বিবেচিত হইবে না। অবশ্য শ্রীচৈতত্যচরিতামৃতকে কাবারূপে আলোচনা করিবার সময়ে শ্ররণ রাখিতে হইবে যে কৃষ্ণদাস কবিরাজের মূগে নিজস্ব ও ব্যক্তিগত ভাবের বিশ্লেষণ করার রাভি শ্রচলিত হয় নাই। কোন সংস্কৃত কাব্য, দেবদেবীর কাহিনী বা কোন মহাপুরুষের জীবনীকে অবলম্বন করিয়া কবিকে কবিত্ব শক্তির পরিচয় দিতে হইত। শ্রীমন্তাগ্রত, কৃষ্ণকর্ণামৃত প্রভৃতির শ্লোককে অবলম্বন করিয়া কৃষ্ণদাস কবিরাজ নিজের অমুপম কবি-প্রতিভার পরিচয় দিয়াছেন। একটি উদাহরণ লওয়া য়াক—

# কুষ্ণকর্ণামতের একটি শ্লোক

কিমিত কুণুমঃ কন্ত ক্রমঃ কৃতং কৃতমাশ্যা কথ্যত কথামন্তাং ধ্যামতো ক্রময়েশয়ঃ। মধুর-মধুর-স্বোকারে মনো-ময়নোৎসবে কুপণ-কুপণা কুষ্ণে তৃষ্ণা চিরং বত লম্বতে॥

ইহার বাঙ্গালা অর্থ-আমি এখন কি করিব ? কাহাকেই বা বলিব ?



### <u> এটেডক্সচরিতায়ত</u>

শীকৃষ্ণকে পাইবার আশা যখন নাই, তখন তাঁহার কথা ছাড়িয়া অহা ভাল কথা বল। কিন্তু তিনি যে আমার ছদয়ে শয়ন করিয়া আছেন; তাঁহার মধুর মধুর ঈষৎ হাত্তযুক্ত মূর্ত্তিখানি আমার মন ও নয়নের উৎসব-স্বরূপ। তাঁহাকে পাইবার উৎক্তা-হেতু আমার দীনা তৃষ্ণা চিরকাল বর্দ্ধিত হইতেছে।

কৃষ্ণদাস কবিরাপ ইহার ভাবাত্বাদ এইরূপে করিয়াছেন—

এই কৃষ্ণের বিবহে উথেগে মন স্থির নহে প্রাপ্তাৃপায় চিস্তন না যায়।

যেবা তৃমি সখীগণ বিষাদে বাউল মন কারে পুছোঁ কে কহে উপায়।

হা হা সথী ! কি করি উপায়। কাঁহা করো কাঁহা যাও কাঁহা গেলে কৃষ্ণ পাও কৃষ্ণ বিন্দু প্রাণ মোর যায়॥

কণে মন স্থির হয় তবে মনে বিচারয় বলিতে হইল মতি ভাবোদগম।

পিঙ্গলার বচন শৃতি করাইল ভাব মতি তাতে করে অর্থ নির্দ্ধারণ ॥

দেখি এক উপায়ে কুন্ধের আশা ছাড়ি দিয়ে আশা ছাড়িলে স্থী হয় মন।

ছাড় কৃষ্ণ-কথা অধন্য কহ অন্য কথা ধন্য যাতে কৃষ্ণের হয় বিশারণ॥

বলিতেই হইল শৃতি চিতে হইল ক্ষ-ক্রি স্থাকে কহে হইয়া বিশ্বিতে।

যারে চাহি ছাড়িতে সেই শুঞা আছে চিতে কোন রীতে না পারি ছাড়িতে। 200

### ত্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

রাধাভাবের স্বভাব আন কৃষ্ণে করায় কাম-জান কাম জ্ঞানে ত্রাস হৈল চিতে। কহে যে স্কগত মারে সে পশিল অস্তরে

এই বৈরী না দেয় পাসরিতে।

উৎস্কোর প্রাবীণো ক্ষিতি অক্স ভাব সৈক্সে উদয় কৈল নিক্স রাজ্য মনে।

মনে হৈল লালস না হয় আপন বশ স্থাপে মনে করেন ভ ৎসনে॥

মন মোর বাম দীন জল বিন্দু যেন মীন কৃষ্ণ বিন্দু ক্ষণে মরি যায়।

মধুর হাস্থ বদনে মনোনেএ রসায়নে কৃষ্ণ-তৃষ্ণা বিগুণ বাড়ায়।

হা হা কৃষ্ণ প্রাণধন হা হা প্রলোচন হা হা দিব্য সদ্গুণ-সাগর।

হা হা শ্রামজন্দর হা হা পীতাম্বর-ধর হা হা রাসবিলাস-নাগর॥

কাঁহা গেলে তোমা পাই তুমি কহ তাঁহা যাই এত কহি চলিল ধাইয়া।

স্বরূপ উঠি কোলে করি প্রভূরে আনিল ধরি নিজ স্থানে বসাইল লইয়া॥ তা১ ৭।১৮-৫ ৭

উদ্ধৃতাংশ কৃষ্ণকর্ণামূতের শ্লোক অবলম্বন করিয়া লিখিত হইলেও, ভাষার মাধুর্যো, ভাব-বিশ্লেষণের চাতুর্যো ও নাটকোচিত ঘটনার সমাবেশে ইহা অত্যুৎকৃষ্ট মৌলিক কবিতার স্থান গ্রহণ করিয়াছে।

কুফলাস কবিরাজের উচ্চ শ্রেণীর কবি-প্রতিভার জ্বন্য শ্রীচৈতন্য-চরিতামৃত আজ শিক্ষিত জনগণ মধ্যে আদৃত হইতেছে। বৈফ্রবর্গণ কিন্তু কেবলমাত্র কবিবের জন্ম এই প্রস্তের পূজা করেন না,—তাঁহারা প্রধানতঃ তিনটি কারণে এই প্রস্তুকে বেদের স্থায় প্রামাণ্য মনে করেন।



### <u>ী</u>চৈত্তত্তিবিভায়ত

প্রথমতঃ ইহাতে বৃন্দাবনের পাঁচ গোস্বামি-রচিত বৈক্ষব শাল্পের সিক্ষান্ত-দম্হ অতিশ্য স্কৌশলে বিশ্বস্ত হইয়াছে। বিতীয়তঃ ইহাতে সন্নাসী শ্রীচৈতত্তার বহিরজ-জীবনের এমন অনেক ঘটনা বর্ণিত হইয়াছে যেগুলি वृत्मायनमात्र, अयानन ও लाहत्वद अत्य शाख्या यात्र ना। अत्नक चल কবিরাজ গোস্বামী এরূপ ঘটনাও বর্ণনা করিয়াছেন যাহা সংস্কৃত ভাষায় লিখিত মুরারি গুপ্তের কড়চা, রঘুনাধদাস গোস্বামীর স্তবাবলী, রূপ গোস্বামার স্তবমালা, কবিকর্ণপূরের প্রীচেতগুচন্দ্রোদয় নাটক ও প্রীকৃষ্ণ-চৈত্যুচরিতামূত মহাকাব্যেও নাই। আবার যে সব ঘটনা মুরারি, কবিকর্ণপূর, রুন্দাবনদাস প্রভৃতি লেখকগণ বর্ণনা করিয়াছেন সেগুলিরও তিনি অনেক সময়ে পরিবর্তন ও পরিবর্জন করিয়াছেন। পরবর্তী বিচারে এই সব সূত্রের ভূরি ভূরি দৃষ্টান্ত দেখাইব। তৃতীয়তঃ শ্রীচৈতক্সের অন্তরত্ব জাবনের ভাবাম্বাদনের আলেখ্য কৃঞ্চদাস কবিরাঞ্জ এমন স্থুন্দরভাবে আঁকিয়াছেন যে তাহাতে আধ্যান্থিক সাধনায় যথেষ্ট অনুপ্রেরণা পাওয়া শীতৈতভার যে মূর্ত্তি আমাদের মানস-পটে অন্ধিত রহিয়াছে ভাহাতে রেখা সম্পাত করিয়াছেন রূপ, রঘুনাথ, মুরারি, কবিকর্ণপুর, বুন্দাবনদাস প্রভৃতি; কিন্তু বর্ণবিন্তাস করিয়া তাহাকে ভাসর ও জীবন্ত করিয়া তুলিয়াঙেন কৃষ্ণদাস কবিরাজ। ইহাই ঐীচৈতশুচরিতামূতের আদরের প্রধান কারণ।

পূর্বের যে ভারানুবাদ উদ্ধৃত করিয়াছি তাহা হইতেই এই তিনটি সূত্রের দৃষ্টান্ত দেওয়া যাইতে পারে। কৃষ্ণদাস করিরাঙ্ক কৃষ্ণকর্ণায়তের শ্লোকটির অনুবাদ করিতে যাইয়া উজ্জ্বনীল্মণির রস-সিদ্ধান্তের একটি প্রধান অংশ প্রাকৃট করিয়াছেন। শ্রীক্রপ গোস্বামী উজ্জ্বনীল্মণির উদ্ধাস্থর-প্রকরণে বিলাপের উলাহরণ দিতে যাইয়া শ্রীমন্তাগবতেব নিল্পলিখিত শ্লোকটি উদ্ধার করিয়াছেন—

> পরং সৌধ্যং হি নৈরাশ্যং স্বৈরিণাপণাহ পিছলা। ভজ্জানতীনাং নঃ কুষ্ণে তথাপ্যাশা সূরত্যয়া॥ ভা° ১০।৪৭।৪৬

অর্থাৎ শীকুষ্ণের সহিত মিলন ঘটিবার নহে, অর্থচ তাহাই আমাদিগকে

### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

225

আকুল করিতেছে; অতএব আমাদের পক্ষে নৈরাগ্রই শ্রেয়। সৈরিণী পিঙ্গলাও কহিয়াছে নৈরাগ্রে পরম হৃথ; আমরা যদিও তাহা জানি তথাপি শ্রীকৃষ্ণের প্রতি আমাদের এ আশা ত্যাগ করিতে পারিতেছি না।

কৃষ্ণকর্ণায়তের শ্লোকের সঙ্গে এই শ্লোক মিলাইয়া কবিরাজ গোস্বামী "পিঙ্গলার বচন স্মৃতি" প্রভৃতি পদ লিখিয়াছেন। এই শ্লোকটি উদ্ধাবের অব্যবহিত পূর্বের তিনি লিখিয়াছেন—

কবি এই অনুবাদের সাহায্যে ব্যভিচারি-ভাবের দৃষ্টান্ত দিলেন। ভক্তি-রসামৃতসিকুতে নির্বেদ, বিষাদ, দৈন্য, গ্লানি, শ্রম, মদ, গর্বব, শঙ্কা, ত্রাস, আবেগ, উন্মাদ, অপশ্বতি, ব্যাধি, মোহ, মৃত্যু, আলম্ম, জাডা, ব্রীড়া, অকারণ গোপন, শ্বতি, বিতর্ক, চিন্তা, মতি, ধৃতি, হর্ষ, উৎস্কৃতা, উগ্রতা, অমর্ব, অস্থা, চপলতা, নিদ্রা, স্থপ্তি ও বোধ এই তেত্রিশটি ভাবকে ব্যভিচারী বলা হইয়াছে। উজ্জ্বনীলমণির মতে অভীষ্ট বস্তুর অপ্রাপ্তিতে মনে যে অন্তিরতা জন্মে তাহাকে উদ্বেগ বলে—

হা হা স্থী ! কি করি উপায়। কাঁহা করো কাঁহা যাও কাঁহা গেলে কৃষ্ণ পাও

—এই হইল ঐতিতত্যের উদ্বেগের দৃষ্টান্ত। "কৃষ্ণ বিন্দু প্রাণ মোর যায়"
—বিষাদের দৃষ্টান্ত। 'মতি' শব্দের অর্থ শাল্রাদি বিচার করিয়া অর্থনির্দ্ধারণ (ভক্তিরসায়তসিন্ধ, দক্ষিণ, চতুর্থ লহরী, ৭২)। এখানে
কবিরাজ গোল্পামী 'মতি' শব্দ শাল্প বিচার করিয়া মনকে স্থির করা অর্থে
ব্যবহার করিয়াছেন; কিন্তু প্রাক্তণ গোল্পামী বলেন যে মতিতে সংশয় ও
অমের ছেদন-হেতু কর্তবা-করণ, শিশ্যদিগকে উপদেশ ও তর্ক-বিতর্ক প্রভৃতি
হইয়া থাকে। কবিরাজ গোল্পামী লিথিয়াছেন—

পিল্লার বচন শৃতি করাইল ভাব মতি

ইহা 'মডি'র দৃষ্টান্ত নতে, পরস্ত উজ্জ্বনীলমণির মতে বিলাপের উদাহরণ।



# শ্রীটেভক্তরিভাম্ভ

ভক্তিরসাম্তসিকু-মতে (দক্ষিণ, ৪।৭৯) অভীকী বস্তর দর্শনের ও প্রাপ্তির জন্ম কালবিলন্দের অসহিঞ্চাকে উংস্থক্য কহে।

> উৎ করের প্রাবাণ্যে জিতি অত ভাব সৈতে উদয় কৈল নিজ রাজ্য মনে। মনে হৈল লালস না হয় আপন বশ ভূঃথে মনে করেন ভূৎসনে॥

ইহাই শ্রীচৈতত্যের উৎস্থক্যের উদাহরণ সহসা যে ভয় মনে জাগে ভাহাকে ত্রাস কহে।

রাধা ভাবের স্বভাব আন ক্ষেক্ত করায় কাম-জ্ঞান কাম-জ্ঞানে ত্রাস হৈল চিতে॥

ত্রাস, কেন-না শ্রীকৃষ্ণ কাম বা মদন-স্বরূপ; সেই মদন যে জগত মারে সে পশিল অন্তরে॥

সদৃশ বস্তু-দর্শনের অথবা দৃঢ় অভ্যাসজনিত পূর্বামুভূত অর্থের প্রতীতির নাম স্মৃতি (ভক্তিরসামৃতসিন্ধু, দক্ষিণ, ৪।৬৫)। শ্রীরূপ স্মৃতির দৃষ্টান্ত দিতে যাইয়া বলিয়াছেন, "আমি প্রমাদবশতঃ মনোযোগ না করিলেও কোথাও কোন সময়ে হরিপাদপল্লযুগল আমার ক্রদয়ে ক্রিশীল হয়।" কুঞ্চদাস কবিরাজ লিখিয়াছেন যে শ্রীচৈত্ত কুঞ্চের আশা ছাড়িয়া দিবেন মনে করিতেই

বলিতেই হৈল শ্বৃতি চিতে হৈল কফ-স্ফৃর্ত্তি স্থাকৈ কহে হইয়া বিস্মিতে। যারে চাহি ছাড়িতে সেই শুঞা আছে চিতে কোন রীতে না পারি ছাড়িতে।

এইরপে অধিকাংশ স্থলে প্রীচৈতত্মের ভাব বিশ্লেষণ-উপলক্ষে কৃষ্ণদাস কবিরাজ বৃন্দাবনস্থ গোস্বামিগণের শাস্তার্থ প্রকট করিয়াছেন। শ্রীরূপ গোস্বামী প্রেমভাবের দৃষ্টান্ত রাধাকুক্-লালা হইতে দিয়াছেন, আর কবিরাজ গোস্বামী শ্রীচৈত্য লালা হইতে সংগ্রহ করিয়াছেন।



# ৬০১ ত্রীচৈতন্মচরিতের উপাদান

উদ্ধৃত ভাবামুবাদে শ্রীচৈতত্তের বহিরক্স-জীবনের এই সংবাদ দেওয়া হইল যে, যে কৃষ্ণকর্ণামৃত গ্রন্থ শ্রীচৈতত্ত দাক্ষিণাতা হইতে আনিয়াছিলেন, তাহা তিনি স্বরূপদামোদরের সহিত আন্বাদন করিয়া ভাবসমূদ্রে নিমগ্র হইতেন। এই সংবাদ অত্য কোন গ্রন্থে নাই। শ্রীচৈতত্তের অন্তরক্ষ-জীবনের যে বর্ণনা এখানে দেওয়া হইল তাহা ভক্তক্ষনের আদর্শ। তাহারা নিজ্ঞ নিজ্ঞ জীবনে ঐরূপ ভাব পাইবার ক্ষত্ত সাধনা করিবেন।

শ্রীচৈত্যচরিতামৃত বাঙ্গালায় বৈষ্ণবীয় ভাব ও সংস্কৃতি প্রচারে যতটা সাহায্য করিয়াছে অন্য কোন গ্রন্থ তাহা করিতে পারে নাই। এই গ্রন্থের সম্বন্ধে নরোত্তম ঠাকুর মহাশয় লিখিয়াছেন—

> কৃষ্ণদাস কবিরাজ রসিক ভকত মাঝ বেঁহো কৈল চৈতন্মচরিত। গৌর-গোবিন্দ-লীলা শুনিতে গলয়ে শিলা ভাহাতে না হৈল মোর চিত।

> > -প্রার্থনা

কুঞ্চদাস কবিরাজের শিশ্য বলিয়া খাত মুকুন্দ তাঁহার সিন্ধান্তচন্দ্রোদয় গ্রন্থে লিখিয়াছেন—

জন্ম জন্ম প্রভু মোর কবিরাজ গোসাঞি।
তাঁহার তুলনা দিতে ত্রিভুবনে নাই॥
সর্ববিজ্ঞ সর্ববিজ্ঞ বিজ্ঞ শিরোমণি।
শিলা দ্রবীভূত হয় তাঁর গুণ শুনি॥
কৃষ্ণলালা গোঁরলালা একত্র বর্ণন।
চৈতগুচরিতায়তে গোসাঞির লিখন॥

১ অবাপক স্কুমার দেন লিখিলছেন, "আনকে মনে করিয়া থাকেন এবং বলিয়াও থাকেন বে, কুক্ষান করিয়াল আকৈলের নালার নহিত শীকুফোর এলগীলার ঐক্য কেবাইবার জ্ঞাই চরিতামূত রচনা করিয়ারিলেন। এই বারণা ও উজি সম্পূর্ণজ্পে এমায়ক।" (বঙ্গনী, অগ্রহায়ণ, ১০৪১, পু" ৬-১)। কিন্ত কুক্ষানের নিজের শিক্ষের বিলারবৃদ্ধি বেগা হছ স্কুমারবাব্র অপেকা বেশী নির্ভরবোগা।



### শ্রীচৈতগুচরিতামৃত

ভাৰতত্ত্ব প্ৰেমতত্ত্ব রসতত্ত্ব আর । ক্রমে ক্রমে লিখিয়াছেন করিয়া বিচার॥ জ্ঞান যোগ বিধিভক্তি রাগ নিরূপণ। কাঁছ নাহি দেখি শুনি এমন বৰ্ণন ॥ পু<sup>o</sup> খ

প্রাচীন পদকর্তা উদ্ধবদাস কৃষ্ণদাস কবিরাজের সূচক লিখিয়াছেন—

जग्र क्कामां जग्र

কবিরাজ মহাশয়

স্থকবি পণ্ডিত অগ্রগণ্য।

ভক্তিশান্ত্র-স্থনিপুণ

অপার অসীম গুণ

भट्य यादत करत ४७ ४७॥

গ্রীগৌরাঙ্গের লীলাগণ বলিলেন বৃন্দাবন

व्यवस्थित या भव तिहल।

সে সকল কৃষ্ণদাস করিলেন সুপ্রকাশ

জগমাঝে ব্যাপিত হইল।

কবিরাজের পথার ভাবের সমুদ্রাগর

অল্ল লোকে বৃঝিবারে পারে।

কাব্য নাটক কত

পুরাণাদি শত শত

পড়িলেন বিবিধ প্রকারে ॥

চৈতভাচরিতামৃত শান্ত-সিন্ধু মধি কত

लिए। कवित्रांक कृष्णमान।

পাষণ্ডী নান্তিকান্ত্র লভয়ে ভক্তি প্রচুর

নাস্তিকতা সমূলে বিনাশ।

শান্তের প্রমাণ যার লোকে মানে চমৎকার

যুক্তিমার্গে সব হারি মানে।

উদ্ধৰ মৃঢ় মতি কি হবে তাহার গতি

কবিরাঞ্জ রাখহ চরণে॥

— গো<sup>০</sup> প<sup>০</sup> ত<sup>০</sup>, ২য় সং, পৃ<sup>০</sup> ৩১০ ৪

### শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

### কুষ্ণদাস কবিরাজের পরিচয়

কুঞ্জান কৰিবাজ "গোবিন্দনীলামূত" নামক ২০৮৮ প্লোকময় সংস্কৃত কাব্য রচনা করিয়া অসাধারণ কবি-প্রতিভার পরিচয় দিয়াছেন। প্রীজীব গোস্বামীর গোপালচম্পূ খানিকটা গছে, খানিকটা পছে লেখা। স্থতরাং "গোবিন্দলীলামূত"কেই সর্বাপেক্ষা বৃহৎ বৈষ্ণব কাব্য বলিয়া মানিয়া লওয়া যায়। সংস্কৃত বা বাপালা ভাষায় ইহার অপেক্ষা আকারে বড় কাব্য আছে বলিয়া আমার জানা নাই। "গোবিন্দলালামূত" কেবল আকারেই বড় নহে, ইহার সূক্ষা কারিগরিও আশ্চর্যান্ধনক। ইহাতে নানারূপ ছন্দ ও অলঙ্কার ব্যবহৃত হইয়াছে। তিনি এই গ্রন্থ লিখিয়াই "কবিরাজ" উপাধি পাইয়াছিলেন মনে হয়। রঘুনাথদাস গোস্বামী তাহার "মুক্তাচরিত্রের" শেষ গ্লোকে ইহাকেই "কবিভূপতি"-রূপে উল্লেখ করিয়াছেন; যথা—

যক্ত সম্বৰলতোহমুতাশয়া, মুক্তিকোত্তম-কথা প্রচারিতা। তক্ত কৃষ্ণকবিভূপতের্বস্থৈ সম্বতির্ভবতু মে ভবে ভবে॥

অর্থাৎ বাঁহার সঞ্চ-বলে আমার ঘারা এই উত্তম মুক্তাকথা প্রচারিত হইল সেই কবিভূপতি ক্ষের সঙ্গ আমার জন্ম জন্ম হউক। "কবিভূপতি ক্ষের" অর্থ ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ এবং কৃষণাস কবিরাজ। এই স্লোকের ঘারা প্রমাণিত হয় যে "মুক্তাচরিত্রের" পূর্বের "গোবিন্দলীলামূত" লিখিত হইয়াছিল; তাহা না হইলে কৃষণাসকে রখুনাথদাস গোস্বামী কবিভূপতি বলিতেন না। "মুক্তাচরিত্রের" শ্লোক "উজ্জলনীলমণির" ৫২৭ পৃষ্ঠায় উদ্ধৃত হইয়াছে। সেই জন্ম সিদ্ধান্ত করিতে হয় যে প্রথমে "গোবিন্দলীলামূত", তৎপরে "মুক্তাচরিত্র" এবং তাহার পরে শ্রীক্রপের "উজ্জলনীলমণি" রচিত হয়।

১ ১১।১৮ সমাধিনাম অলভার, ১৯।২২ সল্লেখাপ্রস্তগ্রশংসা, ১২।০৯ বাতিরেকাতিপরোজি, ১১:৪২ প্রোপনা ও কাবালিস, ১১।৫১ সভাবোজা্থগ্রেকা-জপক প্রেবে সাভ্যা, ১।৫১ লগক, বিবোধ, বাতিরেকা লেখ অভ্যতি বহু অলভার ব্যবস্ত হইয়াছে। ত্রেয়েশে সর্গের ৭০ হইতে ১৪৬ লোকে বিবিধ ছলো উদাহরণ মেওয়া হইয়াছে।

2101202-06



### শী চৈত্যচরিতামৃত

ডক্টর দীনেশচন্দ্র সেন মহাশয় মৃক্নের "আনন্দরত্বাবলী"র প্রমাণ-বলে লখিয়াছেন যে ক্ঞাদাস কবিরাজ ১৫১৭ খৃফ্টান্দে জন্মগ্রহণ করেন (বজভাষা ও সাহিত্য, পঞ্চম সং, পৃত ৩১৭)। কিন্তু প্রীচৈত্যাচরিতামূতের আভান্তরীণ প্রমাণ হইতে ধারণা জন্মে যে ১৫১৭ খৃফ্টান্দে ক্ঞাদাস কবিরাজের জন্ম হইতে পারে না। কবিরাজ গোস্বামী লিখিয়াছেন—

অবধৃত গোসাঞির এক ভূত্য প্রেমধাম। মীনকেতন রামদাস হয় তার নাম। আমার আলয়ে অহোরাত্র সন্ধার্তন। ভাহাতে আইল তেঁহো পাঞা নিমন্ত্রণ॥ উৎসবাত্তে গেলা তেঁহো করিয়া প্রসাদ। মোর ভাতা সনে কিছু হৈল বাদ। চৈত্ত গোসাঞিতে তার স্থদ্ বিশ্বাস। নিত্যানন্দ প্রতি তাঁর বিশ্বাস আভাস। ইহা শুনি রামদাসের তুঃখ হৈল মনে। তবে ত ভাতারে আমি করিমু ভ ৎসনে॥ ছুই ভাই এক তনু সমান প্রকাশ। নিত্যানন্দ না মান তোমার হবে স্ক্রিশ । একেতে বিশ্বাস অত্যে না কর সম্মান। অন্ধ-কুকুটা ভায় তোমার প্রমাণ॥ কিংবা ছই না মানিয়া হওত পাষ্ও। একে মানি আর না মানি এই মত ভণ্ড॥ কুদ্ধ হঞা বংশী ভাঙ্গি চলে রামদাস। তৎকালে আমার ভাতার হৈল সর্বনাশ।

নিত্যানন্দকে না মানার জন্ম ভাইকে ভৎসনা করায় নিত্যানন্দ প্রভু তাঁহার প্রতি প্রতি হইয়া—

নৈহাটা নিকটে ঝামটপুর নামে গ্রাম। তাহা স্বথে দেখা দিলা নিত্যানন্দ রায়॥ ১।৫।১৫৯ গ্রীতৈতত্তচরিতের উপাদান

908

নিত্যানন্দ স্বপ্নে তাঁহাকে দেখা দিয়া বলিলেন যে—

অয়ে অয়ে কৃষ্ণদাস না করহ ভয়।

বুন্দাবনে যাহা তাঁহা সর্বি লভ্য হয়॥

এই বিবরণ হইতে মনে হয় যে কৃষ্ণদাস কবিরাক্ত নিত্যানন্দ প্রভুকে সশরীরে ক্ষনও দর্শন করেন নাই। সেরূপ দেখিলে মদনমোহনের প্রসাদমালা পাওয়া ও নিত্যানন্দের স্বগ্নাদেশ পাইয়া বৃন্দাবনে যাওয়ার মতন তিনি তাছাও প্রসঙ্গক্রমে উল্লেখ করিতেন। শ্রীচৈততা ১৫৩৩ খৃট্টাব্দে তিরোধান করেন, নিত্যানন্দ প্রভু ইহারও কয়েক বৎসর পরে তিরোহিত হয়েন। ১৫১৭ খৃট্টাব্দে কৃষ্ণদাস জন্মগ্রহণ করিলে তিনি নিত্যানন্দ প্রভুর সাক্ষাৎ দর্শন পাইতেন। ঝামটপুর কাটোয়ার কাছে। নিত্যানন্দ প্রভুর লালাত্বল খড়দহ হইতে নবছাপ পর্যান্ত ছিল। এত কাছে নিত্যানন্দ ছিলেন আর তরুণ যুবক কৃষ্ণদাস যে তাঁহাকে দর্শন করিতে যাইবেন না ইহা সম্ভব নহে। কিন্তু নিত্যানন্দ প্রভুর প্রকটকালে যদি কৃষ্ণদাস বালক হয়েন, তাহা হইলে তাঁহার পক্ষে নিত্যানন্দ-দর্শন ঘটা অসম্ভব হইতে পারে।

উক্ত বিবরণ পাঠ করিয়া মনে হয় যে বুন্দাবনে যাইবার পূর্বের কৃষ্ণদাস অবস্থাপন গৃহস্থ ছিলেন। তাঁহার বয়স্ অন্ততঃ ত্রিশ বৎসর হইয়াছিল এবং তিনি নিজে তাঁহার অভিভাবক ছিলেন। তাহা না হইলে তিনি "আমার আলয়ে অহোরাত্র সঙ্গীর্ত্তন" লিখিতেন না। তাঁহার বাড়ীতে ঠাকুর-মন্দির ছিল এবং সেই মন্দিরে একজন ব্রাহ্মণ পূজা করিতেন; উক্ত বিবরণে আছে—

> গুণার্ণব মিশ্র নামে এক বিপ্র আর্য্য। শ্রীমূর্ত্তি নিকটে তেঁহো করে সেবা-কার্য্য॥

কুফাদাস খুব সম্ভব জাতিতে বৈছা ছিলেন। হয়ত সেই জন্মই ঠাকুর-পূজা করার জন্ম পূজারী আক্ষণ রাখার দরকার হইয়াছিল। যাঁহার

<sup>&</sup>gt; অবাধ নিত্যানন্দ ১০৪২ গুটাজে আধিন কুফাইনীতে তিরোধান করেন (বৈধাধদিস্কানী, পু<sup>\*</sup>৮৮)



### শীচৈতভাচরিতায়ত

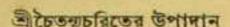
বাড়াতে পূজারী ত্রাক্ষণ থাকে, অহোরাত্র সন্ধার্তন-উপলক্ষে দেশবিদেশ হইতে বৈষ্ণবের আগমন হয়, তিনি অবস্থাপর গৃহস্থ না হইয়া
পারেন না। রন্দাবনে যাইবার পূর্বের কৃষ্ণদাসের বয়স্ যে অন্ততঃ ত্রিশ
বৎসর হইয়াছিল এরূপ ভাবিবার কারণ সৃইটি। প্রথমতঃ ইহার অপেক্ষা
কম বয়সের লোক ছোট ভাইয়ের সঙ্গে তত্ত্ব লইয়া তর্ক-বিতর্ক
করেন ও অহোরাত্র সন্ধার্তন দেন ইহা সাধারণতঃ দেখা যায় না।
বিতীয়তঃ কৃষ্ণদাস বাজালা দেশে থাকিতেই যথেষ্ট পাণ্ডিতা অর্জ্জন
করিয়াছিলেন। রন্দাবনের বৈষ্ণবেরা "উ্বাহতত্ত্ব" ও "একাদশীতত্ত্ব"
পঠন-পাঠন করিতেন না। অথচ কৃষ্ণদাস করিরাজ ১০০০ শ্লোক
উন্নাহতত্ব হইতে ও ১০০১ ব্যাক একাদশীতত্ত্ব হুইতে উন্নত করিয়াছেন।
ইহা হইতে দৃঢ় ধারণা জন্মে যে ঝামটপুরে বাস করার সময়েই তিনি
শ্বতিশাস্ত্র অধ্যয়ন করিয়াছিলেন।

এইরূপ বিচার হইতে বুঝা গোল যে কৃষ্ণদাস কবিরাজ :৫ : ৭ খুফ্টাব্দে জন্মগ্রহণ করিতে পারেন না এবং অন্ততঃ ত্রিশ বৎসর বয়সের পূর্বের বৃন্দাবনে যান নাই। যদি তাঁহার জন্মকাল ১৫১৭ না পরিয়া : বংশ ধরা যায় তাহা হইলে সকল দিক্ দিয়া তুসপ্ততি রক্ষা হয়; যথা—১৫২৭ খুফ্টাব্দে জন্মগ্রহণ করিয়া তিনি ১৫৫৭ খুফ্টাব্দে বৃন্দাবনে গোলেন। সেই সময়ের মধ্যে মুরারি গুপ্তের কড়চা, কবিকর্ণপূরের শ্রীচৈত্লচন্দ্রেয় নাটক ও শ্রীচৈত্লচরিতায়ত মহাকাবা এবং বৃন্দাবনদাসের শ্রীচৈত্লভাগবত রচিত হইয়াছে। তিনি বাঙ্গালার বৈষ্ণবগণের রচিত গ্রন্থাদি পাঠ করিয়া বৃন্দাবনে গোলেন। ১৫৫৭ খুফ্টাব্দে বারভদ্র প্রভাবও ব্যাপ্ত হইয়াছিল। কৃষ্ণদাস কবিরাজ লিখিয়াছেন—

সেই বীরভদ্র গোসাঞির লইনু শরণ। ঘাঁহার প্রসাদে হয় অভীক্ট পূরণ॥ ১।১১।৯

<sup>্</sup>ঠ যোড়শ শতানীতে বৈজের। কি স্থতিশার আলোচনা করিতেন ? নবছীপের টোলে এখনও প্রাশ্ধশেতর আতিকে স্থতিশার পড়ান হয় না।

900



হরিভতিবিলাস-রচনার পূর্বের অর্থাৎ ১৫৪০ খুষ্টাব্দের পূর্বের ' কৃষ্ণদাসের বুন্দাবন বাস ধরিলে বারভদ্রের শরণ লওয়ার সম্ভতি হয় ১৫৫৭ খুট্টাব্দের কাছাকাছি সময়ে তিনি বৃদ্দাবন যাইয়া রূপসনাতন প্রভৃতির সঙ্গ লাভ করিলেন। তাঁহাদের অমুপ্রেরণায় ১৫৬» থু<del>টান্</del>দের কাছাকাছি সময়ে তিনি "গোবিন্দলীলায়ত" রচনা করেন। ঐ গ্রন্থের প্রত্যেক সর্গের শেষে আছে "প্রীচৈতব্যের পদারবিন্দের জ্ঞারম্বরূপ শ্রীরূপ গোস্বামীর সেবার ফলে, শীরঘুনাথদাস গোস্বামি-কর্তৃক প্রেরিত, শীমজ্জীব গোস্বামীর সঙ্গ হেতু সমূদ্ত এবং জীরঘুনাথ ভট্ট গোস্বামীর বর-প্রভাবে জ্রীগোবিন্দলীলামূত কাব্যে· ।" এই শ্লোকে সনাতন গোস্বামীর উল্লেখ কেন নাই বুঝিতে পারিলাম না। গ্রন্থ-লেখার সময়ে সনাতন গোস্বামীর তিরোধান ঘটিয়াছিল কি 

 একটি প্রবাদ-অনুসারে ১৪৮০ শকে (১৫৫৮ খুফীব্দে) সনাতনের তিরোভাব হয়। যাহা হউক সনাতনের নাম কুঞ্চদাস কবিরাজ কেন উল্লেখ করিলেন না, সে সম্বন্ধে আরও অনুসন্ধান করা দরকার। গোপাল ভট্টের নাম না করার কারণ-সম্বন্ধে "অমুরাগ-বলাতে" উল্লিখিত কিংবদন্তী এই যে তিনি কুষ্ণদাস কবিরাজকে তাঁহার নাম বা গুণ বর্ণনা করিতে মানা করিয়াছিলেন।

১৫৬০ খৃট্টাব্দের কাছাকাছি সময়ে গোবিন্দলালায়ত লেখার পর রখুনাখদাস গোস্বামী "মুক্তাচরিত্র" লেখেন এবং তৎপরে প্রারপ "উজ্জ্বল-নীলমণি" রচনা করেন। উজ্জ্বনীলমণি রচনার তারিথ জানা যায় না। তবে এই প্রস্তে "পভাবলী," বিদগ্ধমাধব," "ললিতমাধব" ও "দানকেলী-কৌমুদী"র শ্লোক ধৃত হইয়াছে। অতএব ইহা ঐ সব প্রস্তের এবং "ভক্তি-রসায়তসিল্ধ"র পরে রচিত।

১ ভজিরদান্তদিল ১৪৬০ শকে বা ১৫৪১ গুটাদে রচিত হয়। উহাতে হরিভজিবিলাসের লোক উদ্ধৃত হ'লাছে (পূর্ল বিভাগ, ২য় লহরী, ৪৪ লোক)। অতরাং হরিভজিবিলাস ১৫৪০ গুটাদের পূর্বেল লিখিত ভইলাছে। হরিভজিবিলাসের নজলাচরণে একজন কৃষ্ণাদের বন্দ্রনা আছে।



### শ্রীচৈতভাচরিতামূত

# কবিরাজ গোস্বামীতে আবোপিত গ্রন্থসমূহ

গোবিন্দলীলামূত ও নিচৈতগুচরিতামূত ব্যতীত ক্লাদান কবিরাজ্ব "শীক্ষাকর্ণামূতের" একথানি টাকা লিখিয়াছেন। উক্তর দীনেশচক্র সেন্মহাশয় ক্ষাদাস কবিরাজের রচিত বলিয়া "অহৈত সূত্র কড়চা," "স্বরূপ বর্ণন," "রাগময়া কণা" প্রভৃতি বাজালা প্রস্তের নাম উল্লেখ করিয়াছেন। কিন্তু তিনখানি ছাড়া অগু বই ক্ষাদাসের রচনা বলিয়া বৈক্ষাব সমাজ্ব স্থাকার করেন না। শীনিবাস আচার্য্যের কন্তা হেমলতা ঠাকুরাণীর শিশ্ব বলিয়া কথিত যত্নন্দনদাস গোবিন্দলীলামূতের ভাবানুবাদ করিয়া শেষে লিখিয়াছেন—

প্রাক্ষণাস গোঁসাই কবিরাজ দয়াবান।
কুপা করি লীলা প্রকাশিলা অন্মুপাম॥
চৈতন্তরিতামূত প্রস্থ প্রকাশিয়া।
জীব উদ্ধারিলা অতি করুণা করিয়া॥
শ্রীগোবিন্দলীলামূত নিগৃত ভাগুর।
তাহা উথারিয়া দিলা কি কুপা তোমার॥
কুষ্ণকর্ণামূত ব্যাখ্যা কেবা তাহা জ্ঞানে।
তাহার নিগৃত কথা কৈলা প্রকটনে।
তিন অমৃতে ভাসাইলা এ তিন ভ্রন।
তোমার চরণে তেই করিয়ে স্তবন।

সহজিয়া পরকীয়া-বাদিগণ একজন জাল কৃষ্ণদাস কবিরাজ থাড়া করিয়া তাহার ঘারা "স্বরূপবর্ণনাপ্রকাশ" নামে এক গ্রন্থ প্রচার করাইয়াছেন।' ঐ গ্রন্থে কৃষ্ণদাস কবিরাজের নিম্নলিখিত তথাকথিত আত্মকাহিনী আছে—

> পতিত অধম আমি নীচ নীচাকারে। প্রভু নিত্যানন্দ অতি কুপা কৈলা মোরে॥

১ এই এত্ত্বে পরিচয় ১৩০৮ দালের দাহিত্য পরিষ্ঠ-পত্রিকার প্রথম দংখ্যার দেওছা হইয়াছে। পুথির অধিকারী কান্দি সুলের শিক্ষক বছুবিহারী যোব। পুথির তারিখ ১৬৮৪ শক বা ১৭০২ গুরীস।

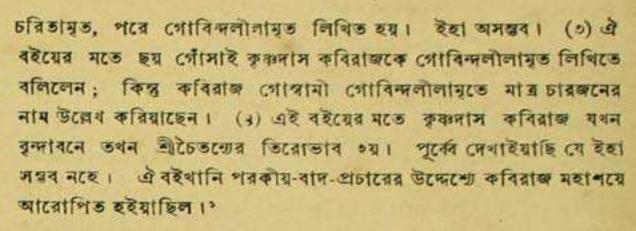


300

### ত্রীতৈতভাচরিতের উপাদান

মস্তকে চরণ দিয়া কহিল আমারে। অবিলপ্তে বন্দাবন কুপা করু তোরে॥ শ্রীনব রথুনাথ ভট্ট পতিত পাবন। ভরসা করিয়া চিতে লইন্থ শরণ ॥ চরণ মাধরী আমি কিছ না জানিল। তথাপি আমারে সত্ত্বে অতি কুপা কৈল। আমার প্রভুর প্রভু গৌরাঙ্গ ফুন্দর। এত শুনি ভরসা মনে বাডে নিরন্তর ॥ তার গুণে লিখি সার লীলারস গুণ। কি লিখিব ভাল মন্দ না জানি সন্ধান ॥ ত্রীগোরাঙ্গলীলায়ত করিলা বিস্তার। লীলা নমে না জানিয়ে মুঞি সারাসার॥ তথাপি নালসা বাড়এ অমুক্ষণ। তবে রাধাকফলীলা করিএ লিখন। একদিন আজা কৈল ছয় মহাশয়। বন্দোহ গোবিন্দলীলামূত রসময়॥ আমার অভাগ্য কথা শুন সর্বজন। প্রাণে ত্যাগ নাহি হয় কহিতে কারণ। সভে মিলি একদিন রহিল নির্জীবে। গৌরলীলা অপ্রকট শুনিলাম কানে॥ শ্রীগোপাল ভট্ট গোসাঞির শিশু আচার্য্য নিবাস। তার স্থানে রহি সদা বুনদাবনে বাস ॥ শ্রীলোকনাথ গোসাঞির শিশ্য কহি তার নাম। ঠাকুর শ্রীনরোত্তম অতি অনুপাম।

এই বিবরণ নিম্নলিখিত কারণে শ্রীটেতভাচরিতামৃত-রচয়িতার লেখা হইতে পারে না: (১) চরিতামৃতে নিত্যানন্দের স্বপ্লাদেশের কথা আছে, ইহাতে প্রত্যক্ষ আদেশের কথা আছে। (২) "স্বরূপবর্ণনাপ্রকাশের" মতে প্রথমে



১ সংক্ষিয়া, সাঁই, বাউল ও দরবেশনপ অনেক পুথি লিখিয়া কুক্সাস কৰিবাজের নামে চালাইয়া বিহালেন। সংশ্লিয়ারা মুক্সানাকে নিজেবের স্প্রেরারের অল্লতম প্রতিষ্ঠাত্ত্তপে সন্মান করেন। মুক্সানাক নিজাপ্তচল্রারে, অনুভ্রন্তারার, রাগরপ্তারনী, আল্লার-ভত্তকারিকা, আন্সান্তর্বারনী, সাধাল্যেমচল্রিকা, উপাননারিন্দু প্রভৃতি বই লিখিয়া সংক্রিয়া মত প্রচার করেন। তিনি কুক্সাস করিবাজকে নিজের ওল বলিয়া বারংবার গোহণা করিবাজেন, সেই জল্ল বোর হর কোন কোন নহিল্লিয়া নীতিবিক্সজ-মত্রার কুক্সানের নাম দিয়া চালাইহাছেন। করিবাজ গোলামী বৈক্ষরস্মানের এজপ ক্লানিত যে তাহার নাম দিয়া লোকনিন্দিত মত্রার প্রচার করিবাজে লোকে তাহা মানিয়া লাইবে এইলেপ বিশাস সংক্রিয়াকের মধ্যে আছে। কিন্ত করিবাজ গোলামীর অভুত্তিম প্রভ্রম্য পুঞ্জির্মে অনুক্রমান করিলেও তাহাতে সংক্রিয়াকের মত্রাকের সমর্থক কোন নিংসন্দিক্ষ প্রমাণ পাওলা যার না। মুক্সমান করিলেও তাহাতে সংক্রিয়াকের মত্রাকের সমর্থক কোন নিংসন্দিক্ষ প্রমাণ পাওলা যার না। মুক্সমান সিজাপ্তচল্লোবরের উপসংহারে লিবিয়াছেন—

জন্ম জন্ম প্রভু মোর কবিরাল গোলাজি।
ভাহা বিনে জিলগতে বাের কেহ নাজি।
এ সকল কহি আমি ভাহার কুপাতে।
ভাহা বিনে মার কেহ নাহি নিভারিতে।
লবাভাগণ মােকে কর আশীর্কাদ।
গোলাজির চরণে থেন নহে অপরাধ।
নিভানন্দপানপর পাব বাহা হৈতে।
আবিচিন্তা শক্তি লোলাজির না পারি বর্ণিতে।
মার কুপালেশে নিভানন্দরত আনি।
সাববানে বন্দি ভার চরণ ছ্থানি।
লক্তানন্দ থেহ মােরে হইরা সদ্য।
নিভানন্দ থেহ মােরে হইরা সদ্য।
নিভানন্দ প্রভুর তত্ত্ব তুমি সব জান।
চৈতভাচরিভাম্বতে ভাহার প্রমাণ।

000



### গ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

# কুফাদাস কবিরাজের পাণ্ডিত্য

কুষ্ণদাস কবিরাজের পাণ্ডিতা অন্সসাধারণ ছিল সন্দেহ নাই। তিনি বালাকালে "সিদ্ধান্ত-কৌমুদ্দী" ব্যাকরণ এবং "বিশ্বপ্রকাশ" ও "অমরকোষ" অভিধান পাঠ করিয়াছিলেন। ত্রীচৈতগ্যচরিতামূতে ব্যাকরণ ও অভিধানের প্রমাণ দিতে যাইয়া তিনি মাত্র এইগুলিই ব্যবহার করিয়াছেন। তিনি অভিজ্ঞান-শকুন্তল, রঘুবংশ, উত্তররামচরিত, নৈষধ ও কিরাতার্জ্নীয় হইতে এক একটি শ্লোক চরিতামতে উদ্ধার করিয়াছেন। গোবিন্দলীলামত দেশিয়া মনে হয় তিনি অলঙ্কারের বহু গ্রন্থ পাঠ করিয়াছিলেন। কিন্তু চৈতভচরিতামূতে সাহিতাদর্পণ ছাড়া আর কোন অলঙ্কার শাস্ত্রের . প্রমাণ তিনি উদ্ধার করেন নাই। "কাব্যপ্রকাশের" "য: কৌমারহর:" শ্লোক চরিতামতে উদ্ধৃত হইয়ানে বটে, কিন্তু ঐ শ্লোক শ্রীরূপ গোপামী পভাবলীতেও ধরিয়াছেন। ভরতের নাট্যসূত্র হইতে একটি পভাংশ চরিতামতে ধৃত হইয়াছে। পূর্বে দেখাইয়াছি যে তিনি স্মৃতিশাস্ত্র অধ্যয়ন করিয়াছিলেন। কাবা, বাাকরণ, অলঙ্কার ও শৃতির কিছু অংশ সে যুগে প্রত্যেক শিক্ষিত লোককেই পড়িতে হইত। ইহাতে অন্যসাধারণতা কিছু নাই। কৃঞ্চদাস কবিরাজের বৈশিষ্টা এই যে তিনি গীতা, ভাগবত, ব্ৰহ্মসংহিতা, যামুনাচাৰ্যান্তোত্ৰ, গীতগোবিন্দ, কৃষ্ণকৰ্ণামূত, গোপীচন্দ্ৰামূত, নামকৌমুদী, হরিভক্তিস্থােদয় জগরাথবল্লভ নাটক, চৈতভচক্রেদয় নাটক, এবং বুন্দাবনের গোস্বামীদের রচিত গ্রন্থাদি উত্তমরূপে আয়ত্ত कत्रिग्राहित्वन ।

শ্রীচৈতগুচরিতামূতের বিভিন্ন সংস্করণের সম্পাদকগণ বোধ হয় জগত্তবু ভদ্র মহাশয়ের পদাঙ্ক অনুসরণ করিয়া চরিতামূতে যে সমস্ত -গ্রন্থ হথতে শ্লোক উদ্ধৃত হইয়াছে তাহাদের এক এক বিরাট্ তালিকা

### শীচৈতগুচরিতামত

দিয়াছেন ও ডক্টর দীনেশচন্দ্র সেন "বপ্রভাষা ও সাহিত্যের" পাদটীকায় সেগুলি উদ্ভ করিয়াছেন (পৃত ৩২০, পঞ্চন সং)। ঐ তালিকা নির্ভুল ও সম্পূর্ণ নহে। উহাতে উদ্বাহতত্ত্ব আর্য্যাশতক, গৌরাম্বস্তবকল্পতক্ষ বা স্তবাবলা প্রস্তৃতির নাম নাই; আবার "লব্ভাগবতায়ত" ও "সংক্ষেপ ভাগবতায়ত" একই বই হইলেও হই নামে হই স্থানে গণনা করা হইয়াছে। চরিতায়তের সম্পাদকদের মধ্যে আধুনিকতম তালিকা করিয়াছেন রাধাগোবিন্দ নাথ মহাশ্য। তাহার তালিকায় ৭৫খানি আকর-প্রস্তের নাম আছে। ঐ তালিকা হইতে "নাটকচন্দ্রিকা"র নাম বাদ গিয়াছে এবং "দিখিজ্যা বাকা," "বঙ্গদেশীয় বিপ্রবাক্য" প্রস্তৃতি এক একধানি গ্রন্থ বলিয়া গণিত হইয়াছে।

চরিতায়তের সম্পাদকগণ আকর-প্রস্তের তালিকা করিবার চেকী করিলেও কোন্ প্রস্তু হইতে কতগুলি প্রোক রফাদাস করিরাজ উন্ধার করিয়াছেন, এবং ঐ সকল প্রোক গৌড়ীয় বৈষ্ণব প্রস্তুর মধ্যে কৃষ্ণদাসের পূর্বের আর কেহ উন্ধার করিয়াছেন কি না তাহা নির্ণয় করেন নাই। অথচ চরিতায়তে ব্যবহৃত প্রোকগুলির বৈজ্ঞানিক প্রণালীতে প্রস্তুত তালিকা না করিতে পারিলে চরিতায়ত ঠিক ভাবে বিচার করা যাইবে না। প্রোকগুলিকে অবলম্বন করিয়াই চরিতায়তের বিচার ও অধিকাংশ স্থলে বিবরণ লিখিত হইয়াছে। বিষ্যটির গুরুত্ব বিবেচনা করিয়া আমি একটি তালিকা প্রস্তুত করিয়াছি, উহার কিয়দংশ পরিশিষ্টে প্রদন্ত হইল।

প্রাচীন পদকর্ত্তা উদ্ধবদাস লিখিয়াছেন যে ক্লালস কবিরাজ কাব্য নাটক কত পুরাণাদি শত শত পড়িলেন বিবিধ প্রকারে॥

কিন্তু পরিশিষ্টে প্রদত্ত তালিকা হইতে দেখা যাইবে যে তিনি অনেক ক্ষেত্রেই গোস্বামিগণ যে সকল পুরাণ-তন্তাদি হইতে যে সকল গ্রোক উদ্ধার ক্রিয়াছেন ঠিক সেই গ্রোকগুলিই তুলিয়াছেন। ইহাতে তিনি সতাই পুরাণাদি শত শত পড়িয়াছিলেন কি না বুঝা যায় না। চরিতামূতে উদ্ধৃত আদি পুরাণের এটি, কৃশ্ম পুরাণের এটি, গরুড় পুরাণের ২টি, বুহয়ারদীয়

#### 032

### প্রীচৈভন্মচরিতের উপাদান

পুরাণের ৩টি, ব্রহ্মাণ্ড পুরাণের ২টি, স্বন্দ পুরাণের ৩টি, রহৎ গৌতমীয় তত্ত্বের ২টি, সাহত তত্ত্বের ১টি কাত্যায়ন সংহিতার ১টি, নারদ পঞ্চরাত্রের ৩টি, বিষ্ণুধর্ম্মান্তরের ১টি, মহাভারতের ৪টি, রামায়ণের ১টি ল্লোকের মধ্যে এমন একটি শ্লোকও নাই যাহা গোস্বামিগণের দ্বারা বা কবিকর্পপুর ও বুন্দাবনদাসের দ্বারা পূর্ণের উদ্ধৃত হয় নাই। তিনি পদ্মপুরাণের ৭টি শ্লোক তুলিয়াছেন, তন্মধ্যে আমি তাহার পূর্ণবর্ত্তী গৌড়ীয় বৈষ্ণবাচার্য্যদের গ্রন্থে ১৩টি শ্লোক পাইয়াছি। ইহার দ্বারা প্রমাণিত হয় যে তিনি পুরাণসমূহের মধ্যে অন্তব্য ভাগবত ও প্রাপুরাণ পাঠ করিয়াছিলেন।

চৈত্যচরিতামূতে সর্বসমেত ১০১: বার সংস্কৃত ও প্রাকৃত প্লোক বা ল্লোকাংশ ধৃত হইয়াছে, কিন্তু কতকগুলি ল্লোক একাধিকবার (কোন কোন শ্লোক ৫।৬ বার ) উদ্ধৃত হইয়াছে। শ্লোকগুলিকে স্বতন্তভাবে এক একবার উল্লেখ ধরিয়া গণনা করিলে সংখ্যায় দাঁড়াইবে ৭৬৩টি। তন্মধ্যে গোবিন্দলীলামূতের ১৮টি ও চরিতামূতের জন্ম বিশেষভাবে রচিত ৮৩টি একনে ১০১টি শ্লোক বাদ দিলে অপর লেখকদের বচিত শ্লোকের সংখ্যা দাঁড়ায় ৬৬২। ভনাধো শীনদ্বাগবত হইতেই ২৬০টি শ্লোক ও ভাগবতের প্রীধর ও সনাতন গোপামীর টীকা হইতে উদ্ধৃত ৯টি শ্লোক — একুনে ২৭২টি ল্লোক। ভাগবভের ঐ ল্লোকসমূহের মধ্যে অনেকগুলি শ্রীরূপ, শ্রীজ্ঞীব ও বৃন্দাবনদাস পূর্বেই উদ্ধার করিয়া জনসমাজে প্রচার করিয়াছিলেন। গীতা হইতে ৩৬টি শ্লোক এবং শ্রীরূপের প্রস্থাবলী হইতে ১৮১টি শ্লোক কবিরাজ গোস্বামী উদ্ধার করিয়াছেন; অর্থাৎ উদ্ধৃত ৬৬২টি শ্লোকের মধ্যে শতকরা ৪১ ভাগ ভাগবত ও তাহার টাকা হইতে, ২৭.৩ শ্রীরূপের গ্রন্থ হইতে, ৫.৪ গীতা হইতে এবং পূর্বের যে সমস্ত পুরাণ, তন্ত্র প্রভৃতির নাম করা হইয়াছে সেই সকল হইতে প্রায় ৭ ভাগ গ্লোক—একুনে শতকরা ৮০.৭ কুফদাস কবিরাজ লইহাছেন। বাকী ১৯.৩ ভাগ শ্লোক ব্রহ্ম-সংহিতা, যামুনাচার্যান্তোত্র, গীতগোবিন্দ, কঞ্চকর্ণামৃত, গোপীচন ামৃত, নাম-



# শ্রীচৈতহাচরিতায়ত

কৌমুদী, হরিভক্তি-ত্থোদয়, জগনাথ-বন্নভ নাটক, চৈতত্য-চন্দ্রোদয় নাটক প্রভৃতি গ্রন্থ হইতে লইয়াছেন। এই গ্রন্থগুলির প্রতিও কুফ্রদাস কবিরাজ্ঞাই যে সর্ববিপ্রথমে আমাদের দৃষ্টি আকর্ষণ করিয়াছেন এ কথা বলা যায় না, কেন-না পূর্বেই গোপামিগণ ঐ সব গ্রন্থ হইতে অত্যাত্ত শ্লোক উদ্ধার করিয়াছেন।

পরিশিষ্টে প্রদত্ত গ্রন্থগুলি ছাড়া আরও কতকগুলি গ্রন্থের নাম ক বিরাঞ্জ গোস্বামী চরিতামূতের পয়ারের মধ্যে উল্লেখ করিয়াছেন। পয়ারে যে সমস্ত প্রস্তের নাম উল্লিখিত হইয়াছে, তাহার একটি তালিকা ডক্টর স্থালকুমার দে মহাশয় প্রস্তুত করিয়াছেন (Indian Historical Quarterly, March, 1933, p. 98)। ঐ তালিকায় আগম ও আগম-শান্ত্র, পাতঞ্জল ও যোগশান্ত্র, ব্যাসসূত্র ও ব্রহ্মসূত্র, পুরাণ ও নিগম-পুরাণ, ভাগবত ও ভ্রমরগীতা প্রভৃতির নাম স্বতন্তভাবে উল্লিখিত হওয়ায় কৃষ্ণদাস কবিরাজের পাণ্ডিতা-বিচারে উহার উপযোগিতা অল। পরিশিষ্টে উদ্ধৃত গ্রন্থ ব্যতীত নিম্ননিথিত গ্রন্থগুলির সহিত কবিরাজ গোস্বামীর পরিচয় ছিল; কেন-না এগুলির নাম তিনি পয়ারে উল্লেখ করিয়াছেন: উপনিষদ, কলাপ ব্যাকরণ, কাব্যপ্রকাশ, গুণরাজ খানের কৃষ্ণবিজয়, কোরান, (शाशालहल्यु . हछोमारमत शमावलो, वन्मावनमारमत हेह्डक्यमञ्चल वा हेहडक्य-ভাগবত, ভায়, পাতঞ্জ-দর্শন বৃহৎ সহস্র নাম, ব্রহ্মপুত্র, স্নাতন গোস্বামীর বৃহৎ ভাগবতামৃত, রূপ গোস্বামীর মধুরা-মাহাকা, বিভাপতির পদাবলা, শারীরক ভাষ্য, সাখ্য, সিদ্ধার্থ-সংহিতা ও হয়শীর্ষপঞ্চরাত। মুরারি গুপ্তের কড়চা এবং কবিকর্ণপূরের ত্রীচৈতগুচরিতামূত মহাকাব্যও তিনি ব্যবহার করিয়াছেন।

### ক্ৰিৱাজ গোস্বামীৰ চ্ৰিত্ৰ

কুঞ্চদাস কবিরাজ অতুলনীয় কবিত্ব ও পাশুতোর অধিকারী হইয়াও যেরূপ বিনয়ের পরা কাঠা দেখাইয়াঙেন তাহা পণ্ডিত-সমাজে একাও দুর্ল্লত। তাহার বিনয়-প্রকাশের ভঙ্গা হইতেই "বৈঞ্ধীয় বিনয়" ত্রী চৈতগুচরিতের উপাদান

938

জন-সমাজে বিখাত হইয়াছে। তিনি লিখিয়াছেন —
জগাই মাধাই হৈতে মুঞি সে পাপিষ্ঠ।
পুরীষের কাট হৈতে মুঞি সে লঘিষ্ঠ॥
মোর নাম শুনে যেই তার পুণাক্ষয়।
মোর নাম লয়ে যেই তার পাপ হয়॥ ১।৫।১৮৩-১৮৪

শ্রীচৈতগুচরিতামূতের মতন এক স্থানর ও বৃহৎ গ্রন্থ রচনা করিয়া তাঁহার মনে একটুও অহঙ্কার জন্মে নাই। পৃথিবীর কোন দেশের কোন লেখক পাঠকদের নিকট এমনভাবে নিবেদন জানান নাই—

সব শ্রোতাগণের করি চরণ বন্দন।

যা সভার চরণকৃপা শুভের কারণ॥

চৈত্মচরিতামৃত যেই জন শুনে।

তাঁহার চরণ ধুঞা করো মৃত্রি পানে॥

শ্রোতার পদরেণু করো মস্তকে ভূষণ।

তোমরা এ অমৃত পীলে সফল হয় শ্রম। তাহনা১৪১-৪০

ডক্টর দীনেশচক্র সেন মহাশয় লিখিয়াছেন, "চৈতন্য-চরিতায়তে", "চৈতন্য-ভাগবতে" ও "চৈতন্য-মন্দলে" স্থলত সাম্প্রাদায়িক বিদ্বেষের চিহ্ন নাই (বন্ধভাষা ও সাহিত্য, পঞ্চম সং, পৃ° ৩১৯)। এই উক্তি যথার্থ হইলে স্থা হইতাম। যাঁহারা শ্রীচৈতন্যকে ঈশ্বর বলিয়া মানেন না তাঁহাদিগকে কৃষ্ণদাস কবিরাজ দৈত্য ও অস্থর বলিয়াও তৃপ্ত হয়েন নাই (১৮৮৯)। তাঁহাদিগকে খল ও শ্করও বলিয়াছেন (২৪৯)।

মুসলমান কাজীর মুখ দিয়া তিনি বলাইয়াছেন—

আধুনিক আমার শাস্ত্র বিচারসহ নয়॥
কল্লিত আমার শাস্ত্র আমি সব জানি।
জাতি অনুরোধ তবু সেই শাস্ত্র মানি॥ ১।:৭।১৬:-৩

কিন্তু কৃষ্ণদাস কবিরাজ শ্রীচৈতত্যের মুখ দিয়া যে প্রক্ষাবৈবর্তের শ্লোক উদ্ধার করাইয়া কাজীকে পরাজিত করাইলেন, তাহা মুসলমানের কোরান ও



### শ্রীচৈতগুচরিতামৃত

হাদিস্ অপেকাও আধুনিক। এইরূপে বৌদ্ধদের (২৯৪৫), শাক্ষর-সম্প্রদায়ের (২।২৫।৭২) ও মাধ্ব-সম্প্রদায়ের (২৯১৪৭-৪৮) মত যে অসার ও কল্লিত তাহা তিনি বার বার বলিয়াছেন। প্রীচৈতন্ত দাকিণাত্যে যাইবার সময়ে

"রাম রাঘব রাম রাঘব রাম রাঘব রক্ষ মাম্।
কৃষ্ণ কেশব কৃষ্ণ কেশব কৃষ্ণ কেশব পাহি মাম্।"

বলিতে বলিতে গিয়াছিলেন, ইহা মুরারি গুপু, কবিকর্ণপুর ও কৃষ্ণদাস কবিরাজ স্বীকার করিয়াছেন, তথাপি চরিতায়তে লিখিত হইয়াছে যে শ্রীচৈত্য মুরারি গুপুকে রামভজন ছাড়াইয়া কুষ্ণের ভজন করাইবার চেষ্টা করিয়াছিলেন ও বলিয়াছিলেন—

> সেই কৃষ্ণ ভক্ত তুমি হও কৃষ্ণাশ্রয়। কৃষ্ণ বিনা উপাসনা মনে নাহি লয়॥ ২।১৫।১৪২

মুরারি গুপু নিজে ঐচিতত্যের এরপ চেফার কোন কথা লেখেন নাই; বরং তিনি লিখিয়াছেন যে ঐচিতত্য তাঁহাকে রাম-উপাসনায় উৎসাহ দিয়াছিলেন (২।৪।১২-১৪)। মধ্যযুগের আবহাওয়াই এমন ছিল যে তথনকার কোন গ্রন্থ সাম্প্রদায়িক না হইয়া পারিত না। অপর সম্প্রদায়ের উপাসনা-প্রণালী ভুল ইহা প্রমাণ না করিতে পারিলে স্ব-সম্প্রদায়ের প্রসার-সাধন করা তখন সম্ভব ছিল না, সেই জন্য কৃষ্ণদাস কবিরাজকেও সাম্প্রদায়িক রীতিনীতি অবলম্বন করিতে হইয়াছে।

মধ্যযুগের ধর্মবোধ যুক্তিবিচারকে সহ্য করিতে পারিত না। কৃষ্ণদাস কবিরাজ সে যুগের অত্যাত্য লেথক অপেকা যুক্তি-বিচার-সম্বন্ধে অধিকতর অসহিষ্ণু ছিলেন। তিনি এমন অনেক ঘটনা লিখিয়াছেন যাহাদের ঐতিহাসিক ভিত্তি একেবারেই নাই। ঐতিচতত্ত্বের জীবনীগুলির তুলনামূলক বিচারের ঘারা ইহার ভূরি ভূরি দৃষ্টান্ত পরে দেখাইব। কিন্তু কবিরাজ গোস্বামী বিচারবুদ্ধির প্রয়োগ করিতে দিতে নারাজ। যে



# ৩১৬ খ্রীতৈভয়চরিতের উপাদান

এরূপ বিচার করিবে তাহার জন্ম তিনি কুন্তাপাক নরকের ব্যবস্থা করিয়াছেন, যথা—

> তর্কে ইহা নাহি মানে যেই ছুরাচার। কুন্তীপাকে পচে তার নাহিক নিস্তার॥ ১০০৭২৯৮

কৃষণদাস কবিরাজের অলোকিক ঘটনা-বর্ণনার প্রতি আসক্তির একটি দৃষ্টান্ত দিতেছি; পরে আরও বহু দৃষ্টান্ত দিব। মুরারি গুপু লিখিয়াছেন—

অথাপরদিনে ভূমাবুপবিশ্যানুনাদয়ন্।
করতালৈদিশ: প্রোচে পশ্য শৈল্যবৈপ্তিতম্॥
পশ্য পশ্যাদুতং বাজং ভূমো সংরোপিতং ময়।
পশ্য পশ্যাদুরো জাতো নিমিষেণ তরুঃ পুনঃ॥
জাতঃ পশ্যান্য পুল্পোঘং পশ্য পশ্য ফলং পুনঃ।
জাতং পশ্য ফলং পরুং তন্ত সংগ্রহণং পুনঃ॥
ফলং রক্ষোহপি নান্ত্যেব ক্ষণান্মায়াকৃতং যতঃ।
প্রান্তরে তু কৃতং ত্যেবং ন কিঞ্চিদপি লভ্যতে॥
ঈশ্বরস্থাগ্রতঃ কৃত্বা ধনং বিপুলমশ্রুতম্।
এবং মায়া-কৃতং কর্ম্ম সর্ববঞ্চেদমনর্থকম্॥
২।৪।৬-১০

এথানে বীজ, বৃক্ষ ও ফলের দৃষ্টান্ত দিয়া বিশ্বস্তুর মিশ্র কর্ম্মফল এবং ঈশ্বরে তাহা অর্পণের প্রয়োজনীয়তা বুঝাইতেছেন।

কবিকর্ণপূর ঐতিতভাচরিতামৃত মহাকাব্যের ৬২৮ হইতে ৬৩০ শ্লোকে ইহার প্রতিধ্বনি করিয়াছেন। লোচন ঐ ফলের নাম করিয়াছেন আম। তিনি উদ্ধৃত শ্লোকের ভাবামুবাদ এইরূপ করিয়াছেন—

> আচন্ধিতে কহে প্রভু দিয়া করতালি। নিজ জনে প্রকাশ করয়ে ঠাকুরালি॥ হের দেখ আমবীজ আরোপিল আমি। আমার অভিত্তত তরু হইল আপনি॥



### শ্রীচৈতহাচরিতামৃত

তথন কহিল সর্বলোক আচন্দিত।

এখনি রুইল বীজ ভেল অঙ্কুরিত॥

দেখিতে দেখিতে ভেল তরু মুঞ্জরিত।

হইল উত্তম শাখা অতি হুললিত॥

দেখ দেখ সর্বলোক অপরূপ আর।

মুকুলিত হৈল দেখ তরুটি আমার॥

তথনি হইল ফল পাকিল সকালে।

অঙ্গুলি লোলাঞা প্রভু দেখায় সভারে॥

পাড়িয়া আনিল ফল দেখে সর্বলোকে।

নিবেদন কৈল আসি ঈশ্বর সম্মুখে॥

তিলেকে তথনি লোক না দেখিয়ে কিছু।

ফলমাত্র আছে রুক্ষ মিথা৷ সব পাছু॥

ঐছে মায়া ঈশ্বরের কহে সর্বলোকে।

এত জানি না করিহ এ সংসার শোকে॥

—रेह° म°, मध्र, शृ° ১०

লোচনের হাতে পড়িয়া মুরারির শ্লোকের কোন ফল, আমে পরিণত ও ভাষা ঈশরে নিবেদিত পর্যান্ত হইল। কিন্তু মূলের কর্মফলের ও সংসারের উপমাটি লোচন নন্ট করেন নাই। কৃষ্ণদাস কবিরাজ উপমার ভাবকে একেবারে নন্ট করিয়া সন্ধার্তনে ক্লান্ত ভক্তদিগকে আম খাওয়াইয়াছেন, যথা—

একদিন প্রভু সব ভক্তগণ লৈয়া।
সঙ্কার্ত্তন করি বৈসে শ্রমযুক্ত হৈয়া।
এক আমবীজ প্রভু অন্তনে রোপিল।
ভৎক্ষণে জন্মিল রক্ষ বাড়িতে লাগিল।
দেখিতে দেখিতে রক্ষ হইল ফলিত।
পাকিল অনেক ফল সভেই বিশ্বিত।



975

### শ্রীতৈভগুচরিভের উপাদান

শতহুই ফল প্রভু শীঘ্র পাড়াইল।
প্রকালন করি কৃষ্ণে ভোগ লাগাইল।
রক্তপীতবর্ণ—নাহি আঠাংশ বন্ধল।
এক জনের উদর পূরে খাইলে এক ফল।
দেখিয়া সন্তুফ্ট হৈল শচীর নন্দন।
সভাকে খাওয়াইল আগে করিয়া ভক্ষণ।
আঠাংশ বন্ধল নাহি অমৃত রসময়।
এক ফল খাইলে রসে উদর পূর্য়।
এই মত প্রতিদিনে ফলে বার মাস।
বৈক্তবে খায়েন ফল প্রভুর উল্লাস। ১০১৭।৭ ৮০

মুরারি গুপু আলোচ্য ঘটনার প্রত্যক্ষদর্শী সাক্ষী ছিলেন। তিনি শ্রীচৈতক্তের অন্তরন্ধ ভক্ত। কবিরাজ গোস্বামি-বর্ণিত ম্যাজিকে আনা ফল ভক্তগণ থাইলে মুরারি নিশ্চয়ই তাহার উল্লেখ করিতেন। অলৌকিক ঘটনার প্রতি প্রীতির জন্মই কৃষ্ণদাস কবিরাজ ঘটনাকে এইভাবে বিকৃত করিয়াছেন।

আম থাওয়ার ঘটনাবর্ণনার মধ্যে আর একটি রহস্ত নিহিত আছে।
কৃষণাস কবিরাজ যেথানেই হুযোগ পাইয়াছেন সেইথানেই আহার্যা বস্তুর
বিরাট্ ফর্ল দিয়াছেন; যথা—সন্নাস-গ্রহণের পর অন্ধৈত-গৃহে প্রীচৈতত্যের
ভক্ষ্য দ্রব্যের বর্ণনা ২০০৪১ হইতে ২০০৫০ পর্যান্ত ১০টি পয়ার, প্রতাপরুদ্রের প্রেরিত জগন্নাথের প্রসাদের বর্ণনা ২০১৪০২ পর্যান্ত
১০টি পয়ার, সার্ববভৌম-গৃহে প্রীচৈতত্যের থাছাদ্রব্যের বর্ণনা ২০০০২ ৫ হইতে
২১২ পর্যান্ত ১৫টি পয়ার। উল্লিখিত ঘটনার সময়ে কোন ভক্ত কাগজ্ঞকলম লইয়া থাওয়ার জিনিথের ফর্দ্দ করিয়া রাখিয়াছিলেন; রঘুনাথদাস
গোস্বানী তাহা নকল করিয়া বৃন্দাবনে আনিয়াছিলেন এবং কৃষ্ণদাস তাহার
নিকট হইতে লইয়া ঐ তালিকা লিখিয়াছেন এরূপ যুক্তি আশা করি
কোন ভক্ত উপস্থিত করিবেন না। কবিরাজ গোস্বানীর গোবিন্দলীলাম্ত ও প্রীচৈতত্যচরিতাম্ত পাঠ করিয়া মনে হয় ভক্ষ্যান্য-বর্ণনা



### শ্রীচৈতগুচরিতামৃত

করার প্রতি তাঁহার ঝোঁক ছিল। ও শুধু ঘটনা-বর্ণনার সময়ে নহে, ভক্তি-সিদ্ধান্ত-স্থাপনের সময়েও কৃষ্ণদাস কবিরাজ্ঞ আহার্যা বিষয় হইতে উপমা সংগ্রহ করিয়াছেন; যথা—

> প্রেমর্ক্ষি-ক্রমে নাম—ক্রেছ, মান, প্রণয়। রাগ, অনুরাগ, ভাব, মহাভাব হয়॥ যৈছে বাজ, ইকু, রস, গুড়, খণ্ড, সার। শর্করা, সিতা, মিশ্রি, উত্তম মিশ্রি আর॥ ২০১১:৫২-৫৫

আবার

সাবিক-বাভিচারী ভাবের মিলনে।
কুষ্ণভক্তি রস হয় অমৃত আস্বাদনে॥
থৈছে দধি, সিতা, যুত, মরীচ, কর্পুর।
মিলনে রসালা হয় অমৃত-মধুর॥ ২১১৯১১৫৫-৫৬

কবিরাজ গোস্বামী লীলার নিত্যত্বে বিশাপ করিতেন। কোন লীলাপরিকর পৃথিবী হইতে তিরোহিত হইয়াছেন এ কথা তিনি মানিতেন না।
একটি দৃষ্টান্ত দেওয়া যাক। ১া৫া১৮০ পয়ারে নিত্যানন্দের কুপা লিখিতে
গিয়া তিনি বলিলেন, "য়াহা হইতে পাইয়ু শ্রীস্বরূপ আশ্রয়।" ইহা
পড়িলে মনে হয় তিনি বৃন্দাবনে আসিয়া স্বরূপ-দামোদরের সঙ্গলাভ
করিয়াছিলেন। কিন্তু ১া১০১১ পয়ারে রঘুনাপদাসের কথা বলিতে
গিয়া লিখিয়াছেন—

যোড়শ বংসর কৈল অন্তরক্ত সেবন। স্বরূপের অন্তর্জানে আইলা বৃন্দাবন॥

এথানে দেখা যায় যে স্বরূপ নীলাচলে বাস কবিতেন ও সেইখানেই তাঁহার অন্তর্জান ঘটে। তাহা হইলে বুঝা যাইতেছে যে কৃঞ্চদাস কবিরাজ

১ নিঠাবান্ বৈক্ষের বলেন বে করিরাজ গোপামী কুকলীলায় কপ্তরিকা মন্থ্য ভিলেন ও জাগার কাল ছিল থারাঘর প্রাবেক্ষণ করা। সেই জন্ম তিনি এই লীলায় থাজনবোর এমন পুঁটিনাটি বর্ণনা কিয়াছেন।

### শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

920

১া৫। ৮০ পরারে তত্ত্বতঃ স্বরূপের আশ্রয় পাওয়ার কথা ব'লয়াছেন। তত্ত্ব ও ঘটনায় এইরূপ নেশানেশি হওয়ায় অনেক স্থলেই তাঁহার উলির ঐতিহাসিকতা বিচার করা কঠিন হয়।

### গ্রন্থের রচনাকাল

শ্রীতৈত্যচরিতামূতের অধিকাংশ পুথি ও মুদ্রিত পুস্তকের শেষে সমাপ্তিকাল-সূচক নিম্নলিখিত শ্লোকটি দেখিতে পাওয়া যায়—

> শাকে সিদ্ধগ্রিবাণেনো জৈতে রুক্রবনান্তরে। সূর্য্যেহজাসিত-পঞ্চমাাং গ্রন্থোহয়ং পূর্ণতাং গতঃ॥

এই পাঠ যাঁহার। স্বাকার করিয়াছেন, তাঁহারা সিন্ধু অর্থে সাত ধরিয়া ১৫০৭ শক জোষ্ঠ মাস রবিবার কৃষ্ণা পঞ্চমী তিথিতে গ্রন্থ সমাপ্ত হইয়াছিল স্থির করিয়াছেন।

কিন্তু সিন্ধু অর্থে সাত না ধরিয়া চার ধরা যাইতে পারে এবং চরিতামতের রচনাকাল ১৫৩৪ শক বা ১৬১২ গৃফীবদ বলিয়া নির্দেশ করা যায়।

১ হ্ৰাক্ব ছিবেনী ক্লানিছান্তের শাষ্টাধিকার প্রকরণের টীকায় লিপিছাছেন, "অকয়: সম্প্রাশ্চরার:
প্রানিছা: ।" পিল্লাছেল:হত্তের "লা সম্প্রা গণঃ" হত্তের টীকায় আছে, "সম্প্রা ইতি চতুঃ-সংখ্যোপলক্ষণার্থম।" বাচন্দতাভিবানে "জলবিশ্চতু:সংখ্যালাং চ" ও আগ্রের অভিধানে সমুদ্র অর্থে চার আছে।
১০০৭ শকের জাৈট্র মান কুলা পঞ্চমী তিথি যে রবিবারে হইলাছিল তাহা রায় বাহাছুর যোগেশচন্দ্র রায়
বিল্লানিধি ও রাধাগো বন্দ নাথ মহাশ্ব গণনা করিলা বাহির করিলাছেন (নাথ—চরিতামৃত, পরিশিষ্ট ৩।•
পু")। এখন প্রথ হইতেছে যে ১০০৪ শকের জাৈট্র মান কুলা পঞ্চমী তিথিও কি রবিবারে পড়িলাছিল ?

এই বিবাহে আমি আমার গণিতবিদ বজু ফণিভূবণ হতের সহিত আলোচনা করিবা রাধাণোবিন্দ নাথ মহাশবকে নিয়লিখিত পত্র পাঠাই। "১০০৭ শকের গৌণ চাল্র কুলা লৈটে রবিবার ৯ই সৌর জৈটে, ইং ১৯১৫, ৭ই মে (পুরাতন প্রণালী)। ১০০৪ শকের গৌণ চাল্র কুলা লৈটে, ইং ১৯১২, ১০ই মে (পুরাতন প্রণালী)। ১০০৭ শকের গৌণ কুলা জাৈট বে রবিবারে তাহা আগনারাও গানা করিয়া ছির করিয়াছেন। ১০০৪ শকের গৌণ কুলা জাৈটত যে রবিবারে ছিল তাহা আয়ায়াসেই বুঝিতে পারা যায়। উভর শকের পার্থকা তিন বৎসরে। এই তিন বৎসরে তিথিট তিন দিন আগাইয়া গিয়াছে এবং তিন বৎসরে বার্টিও তিন দিন আগাইয়া গিয়াছে এবং তিন বৎসরে বার্টিও তিন দিন আগাইয়া গিয়াছে। উভর তারিপের বার ও তিথি টিক রহিয়ছে। ১০০৪ শকের কুলা জাৈট মধন রবিবারে হইতেছে তথন ১০০৪ শককে গ্রন্থ-সমান্তির কাল বলিয়া গ্রহণ করিলে কোন বাধা উপস্থিত হয় না।" ইহার উত্তরে নাথ মহাশর ফণিবাবুকে ২০০০৬ তারিখে লিখিলছেন, "আমি রগনা করিয়া মেথিলাম, আপনার পদানও টিক।"



# শ্রীচৈততাচরিতামৃত

প্রেমবিলাসের চতুর্বিংশ বিলাসে ঐ শ্লোকের নিম্নলিখিত পাঠান্তর ও ব্যাখ্যা দেওয়া হইয়াছে।

শাকেহগিবিন্দু-বাণেন্দে জৈছে বুন্দাবনান্তরে।
সূর্যোহজাসিতপঞ্চমাং প্রস্থাহয়ং পূর্বতাং গতঃ ॥
কুঞ্চদাস কবিরাজ থাকি বুদাবন।
পনর শত তিন শকাব্দে যথন॥
জ্যৈষ্ঠ মাসের রবিবারে কৃষ্ণা পঞ্চমীতে।
পূর্ণ কৈল গ্রন্থ শ্রীচৈতগাচরিতামূতে॥ পৃত ৩০

চারিটি কারণে চরিতামূতের রচনাকাল ১৫৮১ খুন্টাব্দ বলা যায় না।

- ১। শ্রীযুক্ত রাধাগোনিন্দ নাথ ও যোগেশচক্স রায় বিভানিধি জ্যোতিষিক গণনা করিয়া দেখাইয়াছেন যে "১৫০০ শকের জ্যৈষ্ঠ মাসে কৃষ্ণাপঞ্চমী রবিবারে হয় নাই—জৈয়িত মাসকে সৌরমাস ধরিলেও নয়, চাক্সমাস ধরিলেও নয়" ( নাথ - চরিতামৃত-পরিশিষ্ট, পৃত ৩০ )।
  - ২। ড° সুশীলকুমার দে দেথাইয়াছেন যে চরিতায়তে আছে— গোপালচল্পূ করিল গ্রন্থ মহাশ্র। নিতালীলা স্থাপন যাহে ব্রহ্মরস পূর॥ ২।১।৩৯

আবার

গোপালচম্পু নাম গ্রন্থসার কৈল। ব্রজের প্রেমরস লালাসার দেখাইল। া৪।২২১

গোপালচপ্পুর পূর্বভাগ ১৫৮৮ খৃষ্টাব্দেও উত্তরভাগ ১৫৯২ খুষ্টাব্দে শেষ হয়। সেই জন্ম ১৫৯২ খুষ্টাব্দের পর চরিতামুত রচিত হইয়াছিল সিদ্ধান্ত করিতে হয়।

৩। চরিতামতের আভান্তরীণ প্রমাণ হইতে দেখা যায় যে এই প্রস্থ যথন লিখিত হয়, তখন গোস্বামীদের মধ্যে কেহই জীবিত ছিলেন না। কবিরাজ গোস্বামী বলেন যে তিনি গদাধর গোস্বামীর প্রশিশ্য হরিদাস পণ্ডিতের ও চৈত্যাদাসের, কাশীশ্বর গোস্বামীর শিশ্য গোবিন্দ োস্বামীর,

### শ্রীচৈততাচরিতের উপাদান

শীরূপের সঙ্গী যাদবাচার্য্যের, অছৈতের শিশ্য শিবানন্দ চক্রবর্তীর, প্রেমী কৃষণাস ও মুকুন্দচক্রবর্তীর এবং অক্তান্য রন্দাবনবাসী বৈষণ্ডবের অন্মরোধে চরিতামৃত রচনায় প্রবৃত্ত হযেন (:١৮١৫০-২৫)। যদি এই সময়ে ছয় গোস্থামীর মধ্যে কেহ কেহ বাঁচিয়া থাকিতেন, তাহা হইলে কি কৃষণাস কবিরাজ তাঁহার বা তাঁহাদের অম্মতি বা আদেশ লইতেন না ? গোবিন্দলীলামৃতে তিনি চারগন গোস্থামীর আদেশের কথা ত লিখিয়াছেন।

শ্রীজীব ১৫৯২ খুফীন্দে গোপালচম্পূ শেষ করেন।

255

চরিতায়ত যদি :৫৯: থুন্টাব্দের পূর্বের আরম্ভ করা হইত তাহা হইলে অন্ততঃ শ্রীক্ষাব গোস্বামার আদেশের কথা ইহাতে লিখিত থাকিত।

চরিতামতে গোবিন্দ-বিগ্রহের সেবা-সম্বন্ধে লিখিত আছে—

রাজসেবা হয় তাঁহা বিচিত্র প্রকার।
দিবা সামগ্রী দিবা বস্ত্র অলঙ্কার।
সহস্র সেবক সেবা করে অনুক্ষণ।
সহস্র বদনে সেবা না যায় বর্ণন। ১৮৮৮-৪৯

ইহা পড়িয়া মনে হয় যে গোবিদের বিরাট্ মন্দির তথন নির্শ্নিত হইয়াছে। পুরাতন মন্দিরের প্রস্তর-ফলক হইতে জানা যায় যে আকবরের রাজ্ঞহের ৩৪ বর্ষে অর্থাৎ ১৫৯০ খৃফ্টাব্দে গোবিদের মন্দির নির্শ্নিত হয়। সেই জন্ম চরিতায়তের আরম্ভ ১৫৯০ খুফ্টাব্দের পরে হইয়াছিল।

> শীলুক নলিনাশ দাশহল্য মহাশ্য ( বিচিত্রা, ১০৪৫, আবন ) উইল্যুন, প্রাইজ এবং মনিয়ার উইলিয়ান্দের মত সমর্থন করিয়া প্রমান করিতে চেপ্তা করিয়াছেন যে চরিত্রামূত ১০৯০ গুটাকে সমাল্য হব। জাহার বুজি এই যে, শীলাব ভূগর্ভ গোখামার কেংতাগের নংবাদ এবং উত্তরচম্পৃ-সংশোধন বাকী আছে, এই কথা শীনিবাদ লাচার্যাকে পত্র লিখিয়া লানাইয়াছিলেন। উত্তরচম্পু ১৫৯২ গুটাকে শেষ হয়, তাহার পূর্বে ভূগর্ভ সেংতাগে করিয়াছেন; করিয়াল গোখামা ভূগর্ভের আবেশ লইয়া চরিত্যমূত-রচনায় প্রবৃত্ত হয়েন—স্কুরাং ২০৯০ গুটাকে ভূগর্ভের মৃত্যুর পূর্বে চরিত্যমূত দেখা লারজ হয়। এই মতের বিশ্বছে বলা বায় বে চরিত্যমূতে এরপ্রধানে ভূগর্ভ গোখামার উল্লেখ আছে ( ১৮৮০-১৮) বে তাহা পড়িয়া মনে হয় না যে করিয়াল গোখামা ভূগর্ভের আবেশ পাইয়াছিলেন; ভূগর্ভের নিয় গোধিন্দপূলক চৈত্রভাগনের আবেশ পাইয়াছিলেন এইজগ মনে হয়। চৈত্রভান বে প্রমাণিক ব্যক্তি তাহা কেবাইবার জন্ত করিয়াল গোখামা ভূগর্ভ গোখামার নাম করিয়াছেন, যেখন হরিয়াস পত্তিতের নাম করার সময়ে তিনি হরিয়াসের ভ্রম্থ আনত্ত আচাব্যের নাম ও ভূপের উল্লেখ করিয়াছেন। বাশগুরু মহাশ্র মনে করেন যে উইল্যন প্রভূতি ইংরাজ আচাব্যের নাম ও ভূপের উল্লেখ করিয়াছেন। বাশগুরু মহাশ্র মনে করেন যে উইল্যন প্রভূতি ইংরাজ



# শ্রীচৈতগুচরিতায়ত

### কবিরাজ গোস্বামী কি আত্মহত্যা করিয়াছিলেন ?

৪। প্রেমবিলাসের আগাগোড়া সবটা যদি অকুত্রিম বলিয়া স্বীকার করা যায়, তাহা হইলে উহার ত্রয়োদশ বিলাসের ঘটনার সহিত সাড়ে-চবিবশ বিলাসে বণিত ঘটনার বিরোধ বাধে। ত্রয়োদশ বিলাসে আছে যে শ্রীনিবাস অবিবাহিত অবস্থায় যখন বৃন্দাবন হইতে গ্রন্থাদি লইয়া বাঙ্গালায় যাইতেছিলেন, তখন বিষ্ণুপুরে রাজা বার হাস্বার তাহার গ্রন্থ চুরি করাইয়া লয়েন। সেই সংবাদ শুনিয়া কৃষ্ণদাস কবিরাজ রাধাকুণ্ডে ঝাঁপ দেন। তাহার হাত ধরিয়া রঘুনাথদাস গোস্বানা কাঁদিতে লাগিলেন। কৃষ্ণদাস কবিরাজ "মুদিত নয়নে প্রাণ কৈল নিজানণ" (পূ<sup>ত</sup> ৯৪)।

সাড়ে-চবিবশ বিলাসে প্রীক্ষীবের চারখানি পত্র উদ্ধৃত হইয়াছে। ঐ
পত্র কয়খানি ভক্তিবত্রাকরের শেষেও দেওয়া হইয়াছে। চতুর্থ পত্রের
শেষে শ্রীক্ষীব শ্রীনিবাসকে জানাইতেছেন, "ইহ কৃষ্ণদাসত্ত নমস্কারা ইতি।"
প্রেমবিলাস বলেন—

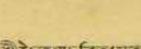
এখানে শ্রীকৃঞ্চদাস কবিরাজ। নমস্বার করিয়াছে তোমাদের সমাজ। পৃত ১০৮

প্রেমবিলাস ও ভক্তিরত্নাকরে উদ্ধৃত প্রীক্ষীবের তৃতীয় পত্র হইতে জানা যায় যে এই সময়ে প্রীনিবাসের "বৃন্দাবনদাসাদি" পুজক্তা হইয়াছে। আববাহিত শ্রীনিবাস বৃন্দাবন হইতে প্রথমবার গ্রন্থ লইয়া যাজিগ্রামে পৌছিবার পূর্বেরই যদি কৃষ্ণদাস কবিরাজ গ্রন্থ-চুরির সংবাদ পাইয়া প্রাণ ত্যাগ করেন, তাহা হইলে যখন শ্রীনিবাস আচার্য্যের পুজক্তা হইয়াছে তখন কি করিয়া সেই কৃষ্ণদাস কবিরাজ শ্রীনিবাসকে নমস্বার জানাইবেন ?

প্রেমবিলাসের এইরূপ পরস্পরবিরোধী বিবরণ হইতে চুইটি সিন্ধান্তে আসা যায়। প্রথমতঃ ত্রয়োদশ বিলাসের রচনার অনেক পরে ভক্তি-লেবক্রের কোন না কোন চরিতামতের পুথিতে ১৫০০ হটালে এর শেব হয়—এরূপ উল্লেখ পাইয়াছিলেন। কিন্ত ঐ তারিধ বেওয়া অস্ততঃ একবানি প্রাচীন পুথি না পাওয়া পর্যান্ত প্রের যে তারিবন্ত লোক উদ্ধার করিয়াছি তাহা প্রক্রিয় বলিতে পারি না। রত্নাকর দেখিয়া তাহা হইতে শ্রীজাবের পত্রগুলি সাড়ে-চবিবশ বিলাসে উদ্ধৃত হইয়াছে। সাড়ে চবিবশ বিলাস হালের কচনা; স্থতরাং তাহাতে প্রদন্ত চারতামূত-সমাপ্তির তারিখ মানিবার প্রয়োজন নাই।

বিভায়তঃ শ্রীজাবের পত্র যখন অকৃত্রিম তখন প্রেমণিলাসের ত্রয়োদশ বিলাসে বণিত ঃফদাস কবিরাজের রাধাকুতে কাঁপ দিয়া আত্মহত্যা করার কথা অবিশ্বাস্থ । এরূপ মনে করার কারণ তিনটি।

- (ক) র লাবনের প্রধান প্রধান ভক্তদের অনুরোধে যে চরিতামৃত লিখিত হইয়াছিল সেই গ্রন্থের কোন একখানি পুথি না রাখিয়াই কি ভক্তগণ মূল গ্রন্থথানি বাঙ্গালাদেশে পাঠাইয়া দিয়াছিলেন ? শীচৈতত্যের শেষ-লীলা শুনিবার জন্ম আগ্রহায়িত হইয়া যাহারা জরাতুর কৃষ্ণদাস করিরাজের ঘারা গ্রন্থ লিখাইলেন, তাঁহারা কি সেই গ্রন্থ রচনার পর উহার একটি অনুলিপিও প্রস্তুত করাইলেন না ? যদি তাঁহারা অনুলিপি রাখিয়া থাকেন, তাহা হইলে শীনিবাসের গ্রন্থ-চুরির সংবাদ পাইয়া কৃষ্ণদাস করিরাজ আগ্রহত্যা করিবেন কেন ?
- (খ) কবিরাজ গোস্বামীর গ্রায় ব্যক্তি গ্রন্থ চুরির সংবাদ পাইয়া আত্মহত্যা-রূপ মহাপাতকে যে লিগু হইবেন এ কথা বিশ্বাস করা কঠিন।
- (গ) শ্রীক্ষাবের পত্রগুলি হইতে জানা যায় যে শ্রীনিবাস এই বারে রন্দাবন হইতে গোস্বামিগণ-রচিত কতকগুলি গ্রন্থ আনিয়াছিলেন সকল গ্রন্থ আনেন নাই। সনাতনের বৃহৎ ভাগবতায়ত পরে শ্রামদাস মার্দ্ধিকরের (খোল-বাজিয়ের) হাতে পাঠান হইয়াছিল। শ্রিযুক্ত রাধাগোবিন্দ নাথ মহাশয় তাঁহার সম্পাদিত চরিতামতের পরিশিষ্টে (পূল্ল তাত্ত্বলাক) দেখাইয়াছেন যে প্রেমবিলাস ও ভক্তিরত্বাকরের বিবরণ হইতে জানা যায় না যে শ্রীনিবাসের সহিত চরিতামত প্রেরিত হইয়াছিল কি না। তাঁহার প্রমাণ নারবতা মূলক (negative evidence), স্কুতরাং প্রবল নহে। "ভক্তিরত্বাকরে" একটি প্রবল প্রমাণ আছে, তাহা নাথ মহাশয়ের দৃষ্টি এড়াইয়া গিয়াছে। সেটি এই যে শ্রীনিবাস যথন খিতায় বার বৃন্দাবনে যান, তথন শ্রীক্রাব তাঁহাকে "শ্রীগোপালচম্পু গ্রন্থারন্ত তনাইলা" (পূল্ল ৫৭০)। চরিতায়তে গোপালচাত্র্যুর উল্লেখ



আছে; স্থতরাং চরিতামৃত গোপালচম্পূর পরে লেখা। শ্রীনিশাস যদি বিতায় বারে বৃন্দাবনে গিয়া গোপালচম্পূর আরম্ভ শুনেন, তাহা হইলে তিনি প্রথম বারে বাঙ্গালাদেশে চরিতামৃত লইয়া যাইতে পারেন না। এই সব প্রমাণ বলে প্রেমবিলাসে বণিত চরিতামৃতের তারিখ ও কবিরাজ গোস্বামীর আত্মহত্যা করার কথা অগ্রাহ্য করিতে হয়।

উক্ত হুইটি বিষয় যহন দনদাসে আরোপিত কর্ণানন্দ প্রস্তেও আছে। কিন্তু কর্ণানন্দেও প্রচুর প্রক্রিপ্তাংশ চুকিয়াছে। কর্ণানন্দের সমাপ্তির তারিখ দেওয়া ইইয়াছে ১৫২৯ শক বা ১৬০৭ রফ্টাব্দ। প্রস্থগানি শ্রীনিবাস আচার্যাের কন্যা হেমলতা ঠাকুরাণীর আদেশে রচিত বলিয়া কথিত। কিন্তু বার হালার কর্তৃক প্রস্ত-চুরি ও তৎপরে শ্রীনিবাসের বিবাহ ঘটনাকে সত্য বলিয়া মানিলে ১৬০৭ রফ্টাব্দে হেমলতার বয়স্ দাক্ষাদানের উপযোগী হইতে পারে না। অপচ কর্ণানন্দে শ্রীনিবাস আচার্যাের পৌল্র, দৌছিত্র প্রস্তুতির নাম আছে। নাথ মহাশয় আরও দেখাইয়াছেন যে কর্ণানন্দের ৫-৬ পৃষ্ঠায় বর্ণনা ভক্তিরতাকরের ৫৬০-৬১ পৃষ্ঠায় বর্ণনা হইতে অবিকল

১ বীর হাজীর ১০৮৭ গুটালের পুর্বের রাজা হয়েন নাই। ১৬০০ গুটালের কাভাকাছি সময়ে তিনি গ্রন্থ চুরি করিয়াছিলেন। তৎপরে শীনিবাস আচার্যোর বিবাহ হয়। তাহা হইলে ১৬০৭ গুটালে হেমলতার বয়স্ ৩া৪ বংসরের বেনী হইতে পাবে না।

বার হাত্বীরের তারিধ কইয়া অনেক কাল ধরিয়া অনেক লেখা-লেখি হইয়াছে। তাহার তারিধ-নিপ্রের মূল গুল হইতেছে মনাধের আরপ্তকাল নির্ণর করা। হাত্বীর (Statistical Account, Vol. IV, p. 235), বিধকোর (বিক্পুর শন) ও ড পানেশচন্দ্র সেন (Vaishnava Literature, p. 108) ব্লেন ৭১৫ গুপ্তানে মনান্দ আরপ্ত হয়। ভত্তর রক একটি মন্দিরে উৎকার্ণ ১০০৪ মনান্দ = ১৯৮০ শক বেশিরা নিজাপ্ত করেন যে ৬৯৪ গুপ্তানে মনান্দ আরপ্ত হয়। হর শ্রনাদ শালী (Indian Historical Quarterly, 1027, pp. 180-1 এবং J. B. O. R. S., 1928, Sept. p. 337) ও নিবিজনাথ বার (বঙ্গবালী, অগ্রহারণ, ১০২৪) তাহার মত মানিয়া লইয়াছেন। O'Maliny (District Gazetteer of Bankura), অভ্যন্দ মনিক (Vishnupur Raj, p. 82) এবং প্রমেশপ্রদান হার (ভারতবর্ণ, আবাঢ়, ১০২৪, পুণ্ডির মনান্দ ৬৯৫ গুপ্তাবের ভার মানে আরপ্ত হয়।

হাতীর সাহেবের মতে বার হাথীর ১৫৭০ বৃষ্টাব্দে রাজা হরেন। কিন্ত এই মত আধুনিক কোন গবেষকই মানেন না। বিশ্বকোৰ ও ড° সেনের মতে বার হাথীর ১৫৯৬ বৃষ্টাব্দে রাজ্য এহণ করেন। O'Mallayর মতে ১৫৯১ বৃষ্টাব্দে উচ্চার রাজ্যাবজ্ঞ। নিবিল্লনাথ রাজ বৃষ্ট্রকণে প্রমাণ করিয়াছেন যে বার হাথীর ১৫৮৭ বৃষ্টাব্দ হইতে ১৬১৯ বৃষ্টাব্দ পদ্ধন্ত রাজ্য করেন ( বলবাণী, ১৬২৯ অগ্রহারণ, ৬৭৫ পূ")। অভয়শত মলিক বলেন যে বার হাথীনের রাজ্যকাল ১৫৮৭ হইতে ১৬২৭ বৃষ্টাব্দ পদ্ধন্ত।



525

### শ্রীচৈতক্রচরিতের উপাদান

চুরি করা হইয়াছে। এইরূপ প্রক্রিপ্ত গ্রন্থের প্রমাণ মোটেই নির্ভরযোগ্য নহে।

এই সব বিবেচনা করিয়া সিদ্ধান্ত করা যাইতেছে যে চরিতামূত ১৬১২ বা ১৬১৫ খুফ্টাব্দে সমাপ্ত হয়।

### চৈতভাচরিতামতের উপাদান-সংগ্রহ

শ্রীতৈত হাচরিতামূতের বর্ণিত বিষয়কে মোটামূটি ছই ভাগে বিভক্ত করা যাইতে পারে। প্রথমতঃ শ্রীতৈত হার লীলা বা জীবনের ঘটনা। বিতীয়তঃ শ্রীতৈত হার তত্ত্ব শ্রীকৃষ্ণ তত্ত্ব, ভক্তিসাধনের ক্রম ও সাধাবস্ত-নির্ণয় এবং শ্রীতৈত হার বারা আম্বাদিত পদ ও শ্লোক। প্রথম অংশকে ঘটনা ও বিতীয় অংশকে তত্ত্ব বলা যায়। এখানে ঘটনাংশের উপাদান করিরাজ গোস্বামী কোথা হইতে সংগ্রহ করিয়াছেন তাহার আলোচনা করিব। তিনি নিজে তিনটি প্রধান আক্রের নাম করিয়াছেন; যথা— স্বরূপ-দামোদর, মুরারি গুপ্ত ও বৃন্দাবনদাস।

দামোদর স্বরূপ আর গুপু মুরারি।
মুখ্য মুখ্য লীলা সূত্র লিখিয়াছে বিচারি॥
সেই অনুসারে লিখি লীলা সূত্রগণ।
বিস্তারি বর্ণিয়াছেন তাহা দাস বুন্দাবন॥
চৈত্যুলীলায় ব্যাস বুন্দাবনদাস।
মধুর করিয়া লীলা করিলা প্রকাশ॥
গ্রন্থ বিস্তারের ভয়ে তেঁহো ছাড়িল যে যে স্থান।
সেই সেই স্থান কিছু করিব ব্যাখ্যান॥
প্রভুর লীলায়ত তেঁহো কৈল আস্বাদন।
তার ভুলে শেষ কিছু করি যে বর্ণন॥ ১।১৩।৪৪

রুদাবনদাস সম্বন্ধে এইরূপ উক্তি তিনি : ।১৮।৪১-৪৫ পয়ারেও করিয়াছেন। তিনি যথার্থ ই বলিয়াছেন—

> নিত্যানন্দ-বর্ণনে হইল আবেশ। চৈতত্তের শেষ-লীলা রহিল অবশেষ॥



### শ্রীচৈতগুচরিতামৃত

র রা নেদাসের এত্রের সহিত শ্রীকৈত্যার হাত্রতের সম্বন্ধ-বিষয়ে ক এবাস কবিরাজ লিখিয়াছেন—

> নিজ্যানন্দ কুপাপাত্র কুলাবনদাস। শ্রীতৈত্ত-লালার তেঁহো হয় আদি বাস। তার আগে যভাগি সব লালার ভাণ্ডার। তথাপি অল্প বার্ণিয়া ছাডিলেন আর ॥ যে কিছু বর্ণিল সেঁছো সংক্ষেপ করিয়া। "লিখিতে না পারি" গ্রন্থে রাখিয়াছে লিখিয়া॥ ৈত ক্রমক্ষলে তেঁহো লিখিয়াছে স্থানে স্থানে। সেই বচন শুন সেই পরম প্রমাণে । সংক্ষেপে কহিল বিস্তার না যায় কথনে। "বিস্তারিয়া বেদবাাস করিব বর্ণনে ॥" চৈতল্যমন্ত্ৰলে ইহা লিখিয়াছে স্থানে স্থানে। সত্য কহে ব্যাস আগে করিব বর্ণনে ।। হৈততালীলায়ত-সিদ্ধ তথাকি সমান। ত্যাকুরূপ ঝারি ভরি তেঁহো কৈল পান। তাঁর ঝারি শেষামৃত কিছু মোরে দিলা। ততেকে ভরিল পেট—তৃষ্ণা মোর গেলা ৷ ৩৷ ৽৷৭৩-৮৽

এই তিনটি উক্ত অংশ হইতে জানা গেল যে (১) নিতাানন্দের লীলা লিখিতে আবেশ হওয়ায় বৃন্দাবনদাস শ্রীচৈতল্যের অন্তালীলা লিখিতে শারেন নাই, কবিরাজ গোস্বামী তাহা লিখিয়াছেন; (২) কোন কোন লীলা বৃন্দাবনদাস বর্গনা করিলেও সংক্রেপে করিয়াছেন; তহ্মগু তাহা কৃষ্ণদাস কবিরাজ বিস্তার করিয়া লিখিয়াছেন। এই দ্বিতীয় উক্তিস্পদ্ধে আমার বক্তবা এই যে কাজা-দলন, শ্রীচৈতল্যের প্রাগমন, সার্ব-ভৌম-উদ্ধার, প্রতাপক্ষের প্রতি কুপা প্রভৃতি অনেকগুলি ঘটনা বৃন্দাবনদাস বিস্তৃতভাবে বর্ণনা করিলেও কৃষ্ণদাস কবিরাজ পুনরায় সেগুলি নৃতন করিয়া লিখিয়াছেন। এইরূপ লেখার উদ্দেশ্য—বৃন্দাবনদাসের শ্রম

সংশোধন করা ছাড়া আর কিছুই নহে। এইরূপ তথাকথিত ভ্রম-সংশোধন বাাপারে কাহার উক্তি অধিকতর বিশাপ্ত তাহা পরে বিচার করিব। কাজা দলন-বর্ণনায় যে ক্রুদাস কবিরাজ স্পেইতঃ বুন্দাবন-দাসের বর্ণনার উপর চূণকাম করিয়াছেন তাহা প্রীচৈত্যভাগণতের বিচারে দেখাইয়াছি। মুরারি গুপ্তের কড়চাকে ক্রুদাস কবিরাজ কি ভাবে বাবহার করিয়াছেন তাহা পরবর্তী বিচারে দেখা যাইবে।

### প্ররূপ-দামোদবের কড়চা'

স্বরূপ-দামোদরের কড়চা লইয়া কিছু গোলযোগ আছে। এই কড়চা পাওয়া যায় না। শ্রীচৈতগুচরিতায়তের মুদ্রিত সংস্করণগুলিতে আদি লীলার প্রথম অধ্যায়ের পঞ্চম হইতে চতুর্দ্দণ শ্রোক "তথাহি শ্রীস্বরূপ-গোস্বামি কড়চায়াম্" বলিয়া উল্লিখিত আছে। ডক্টর স্থশীলকুমার দে বলেন

ুত্ব প্রকাশনাকর যে প্রভাব কত প্রিয় ছিলেন তাহা রুগুনাগরান গোখামী "প্রবাবনী"তে বর্ণনা করিবাছেন। স্থাতৈ জ্ঞাইকের দ্বিতার লোকে মহাপ্রান্তকে তিনি "প্রকাশন প্রাণানুপ্রক্ষানীরাজিত মুখ্য" ও "গৌরাক প্র-ব্যক্তর্গার কাটকে প্রকাশ লোকে "প্রপে গাং প্রেইং গিডিগর ইব শীস-প্রকে" বলিরাছেন। করিবর্ণপূর স্থাতৈ জ্ঞানাল নাটকে প্রকাশনাকরের সহিত স্থাতিতক্তের প্রথম সাক্ষার বর্ণনা-প্রসাদ্ধ কিবিয়াছেন যে প্রকাশ তৈজ্ঞানাল নামক জ্ঞার শিল্প এবং তিনি জ্ঞাক-কর্ত্তক আবিষ্ট হইয়াও বেলাল প্রভাইতে রাজী হয়েন নাই। স্থাতিতজ্ঞানিত মহাকাবো (১০০১০৮-১৯২) প্রবাহ্যের আচার্যা নামে জাহার কথা উল্লেখ করিবাছিলেন। স্থাতিতজ্ঞানিত স্থাতে (১০০১৪০) লিখিত আছে ভাগারান্ প্রধান্তম আচার্যা স্থানা প্রথম করিবাছিলেন ও রুগ্রক্ষতা প্রস্তাহিলেন বলিয়া প্রপ্রশাস্থাকর নামে ক্ষিত্ত হুইলেন। করি বলেন (১৯০১) যে নুতাকালে স্থল্প-সামোলর প্রভুর সহিত একাল হুইছা যাবেন। প্রভুর সহিত প্রকাশর মন্ধিরে গ্রমন, হবিনাম-ক্ষিত্র প্রভৃতি করি (১৮০২১-২২) বর্ণনা করিবাছেন।

শীকণ পোথামী পভাবদাতে সামোলরের একটি, পুরুষোত্তম দেবের গাঁচটি ও পুরুষোত্তম আচাটোর একটি লোক উদ্ধৃত করিচাছেন। ইহার মধ্যে লামোলর-নামোজ লোক গোল হয় লামোলর পতিতের ও পুরুষোত্তম-নামোজ লোক প্রভাগরাজের পিতার বহনা। পুরুষোত্তম আচাটা খুব সন্তব বর্ষণ দামোলর। তাঁহার লোকটি হইতে তাঁহার পুর্বে মারাবাদী নহাানী থাকার আহাস পাওয়া যার : যথা—

পুরতঃ ক্ষুত্র বিমৃতি শিরমিং রাজাং করোড় বৈরাজান্। শতপালবালকপতেঃ দেশামেবাভিবালামি।

কুন্দাবনবাদ জীচৈতজ্ঞভাগৰতে (পু' ০১৫ ) লিখিবাছেন যে খামোখরখকণ দ্লীতর্দময় ছিলেন ও ভাহার কাজ ছিল কাউন কয়। তিনি আহও বলেন, "পুলাজমে পুরবোত্তম আচাইা নাম তান। প্রিয়



# <u>ব্রী</u>চৈতভাচরিতামৃত

(Indian Historical Quarterly, March, 1933) বে তিনি ঢাকা বিশ্ববিভালয়ে সংগৃহীত চরিতামূতের পুথিগুলিতে "শ্রীম্বরূপ-গোম্বামি-কড়চায়াম্" উক্তি দেখিতে পান নাই। ঐ দশটি শ্লোক স্বরূপ-দামোদরের রচনা কি না জানিবার জন্ম আমি বঙ্গীয় সাহিত্য-পরিষদের পুথিশালায় চরিতামতের ২৩৭ সংখ্যক পুথি (১৬৮০ শকের অনুলিপি), ২৩৮ সং ( ১१०৮ मॅंटक ), २८० मः ( ১১৯৯ वक्राट्स्त ). ১७८० मः ( ১ ৫२ শকাব্দের ) এবং ১৬३৭ সংখ্যক (১১৬১ বঙ্গাব্দের ) পুথি খুলিয়া দেখি যে ঐ সমস্ত পুথিতে উক্ত দশটি শ্লোকের প্রথমে কেবলমাত্র "তথাহি" লেখা আছে। ঐতিতভাচরিতামত-ধৃত "শ্লোকমালা" নামের আটখানি পুথিতেও শ্লোকগুলি কেবলমাত্র "তথাহি" বলিয়া লিখিত "ভক্তিরত্নাকরের" ৭১৯ পৃষ্ঠায় ও মুরলীবিলাদের ৩৬ পৃষ্ঠায় "শ্রীরাধায়াঃ প্রণয়-মহিমা" ইত্যাদি প্রসিদ্ধ শ্লোকটি কেবলমাত্র "তথাহি শ্রীচৈতশ্র-চরিতামূতে" বলিয়া ধৃত হইয়াছে। এই সব দেখিয়া মনে হয়, ঐ শ্লোক प्रभाषि कृष्णपात्र कवितारक्षत्रहे त्यथा। किन्नु प्रहेषि श्रमाण-वर्ता आमि সিকান্ত করিতে চাই যে ঐ প্লোক কয়টি স্বরূপ-দামোদরের রচনা হউক বা না হউক উহাদের অন্তনিহিত তত্ত্ব পরপ-দামোদরের ছারাই নির্ণীত। প্রথমতঃ "ত্রীরাধায়াঃ প্রণয়-মহিমা" ল্লোকের ব্যাখ্যা-প্রসঙ্গে কবিরাজ গোস্বামী বলিয়াছেন-

অতি গৃঢ় হেতু সেই ত্রিবিধ প্রকার।
দামোদর-স্বরূপ হৈতে যাহার প্রচার॥
স্বরূপ গোসাঞি প্রভূর অতি অন্তরক্ষ।
তাহাতে জানেন প্রভূর এ সব প্রসক্ষ॥ ১।৪।৯১-৯২

নথা পুঞ্জীক বিজ্ঞানিবি নাম। "পুঞ্জীক বিজ্ঞানিধি গদাধর পণ্ডিতের মন্ত্রুক এবং প্রভু জীহাকে "বাণ" বলিল ডাকিতেন, প্রত্তরাং মনে করা নাংতে পারে যে প্রশ-দামোদর জীহার বন্ধু-হিসাবে প্রতিভঞ্জ অপেকা বয়নে অনেক বড় ছিলেন। কবিরাজ গোপোনাই স্পাগ্রণমে আমাদিগকে বলিলেন—

পুরুষাত্রম কাচারা তাঁহার নাম স্বাজ্ঞান। নববাশে ছিলা তেঁহো প্রভুর চরণে।
প্রভুর সন্থান কেবি উপার হইল। সন্থান গ্রহণ কৈল বারাণনী সিয়া। ২০১-১১-২
নবদ্বীপ্রাসী সুহারি গুল্প কিন্তু নবদ্বীপ-লীলা-বর্ণনা-প্রসংক পুরুষোত্তম আচাংগার নাম কোবাও উল্লেখ করেন
নাই। ক্রিকর্ণপুর, রমুনাধ্বাস বোধামী এবং কুলাবন্ধানও তাঁহার নবদীশে বাড়ার কথা লেখেন নাই।



230

### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

পুনরায়

অতান্ত নিগৃঢ় এই রসের সিদ্ধান্ত। স্বরূপ গোসাঞি মাত্র জানেন একান্ত॥ যোগ কহো অন্য জানে—সেহো তাঁহা হৈতে। চৈত্র্য গোসাঞির তেঁহো অত্যন্ত মর্ম্ম যাতে॥ ১।৪।১৩৭-৮

ভাহা হইলে দেখা যাইতেছে এই তহুটি স্বরূপ-দামোদর প্রচার করিয়াছেন। বিভীয়তঃ কবিকর্ণপূর গৌরগণোদ্দেশদীপিকায় উদ্ধৃত :৩০,৭ ও ১৪৯ সংখ্যক প্রোক স্বরূপ গোস্থামীর রচিত বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন। গগৌরগণোদ্দেশ-দালিকার ত্রয়াদশ প্রোক হইতে জ্ঞানা যায় যে স্বরূপ-দামোদর প্রীচৈতগুকে মহাপ্রভু ও অবৈত নিত্যানন্দকে প্রভু বলিয়াছেন। সপ্তদশ প্রোক হইতে জ্ঞানা যায় যে তিনি পক্ষতত্ত্ব নিরূপণ করিয়াছিলেন। চরিতায়তের ক্লোকেও (১০১৪) পক্ষতত্ত্বর উল্লেখ আছে। গৌরগণোদ্দেশদীপিকায় ১৪৯ প্রোকে গদাধরকে স্বরূপ গোস্থামী "পুরা রুদ্ধাবন-লক্ষ্মীঃ শ্যামস্থাদর-বল্লভা" বলিয়াছেন।

গৌরগণোদ্দেশদীপিকায়, শ্রীচৈতন্ম-চরিতামতে ও ভক্তিরত্বাকরে সরূপ-দানোদরের যে শ্রোক বা যে মত উদ্ধৃত হইয়াছে তাহা হইতে বুঝা যায় যে তিনি তত্ত্ব নিরূপণ করিয়াছেন। কিন্তু কবিরাজ গোসামী লিখিয়াছেন—

- প্রভুর যে শেষ লীলা স্বরূপ-দামোদর।
   সূত্র করি গাঁথিলেন গ্রন্থের ভিতর॥ ১০১৬।১৫
- ২। দামোদর-স্বরূপ আর গুপ্ত মুরারি। মুখা মুখা লীলাসূত্র লিখিয়াছে বিচারি॥ ১।১৩।৪৪
- ১ জীবুজ পুরুষার দেন নহাপর লিখিবাছেন, "১০০জচরিতামূতে উদ্ত করেকটি লোক এবং করি-কর্নপুরের বৌধগবেদেশনী পাকার উদ্ধৃত একটি লোক ছাড়া এই কড়চার বিধরে আর কিছুই জানা বার না" (বল্পজী, ১০০১, অগ্রহাংশ)। কিছু তিনি ভাল করিয়া অনুস্থান করিলে খেবিতে পাইতেন যে গৌরগবোদেশনী নিকার বল্পপ গোলামীর একটি নকে, তিনটি লোক উদ্ধৃত হইরাছে। ভাজিরপ্রাক্তর (বল্পজন) বল্পজন মানেবরে আর একটি লোক উদ্ধৃত হইরাছে। দেটির অনুজিমতার আনার সংশ্র আহছে।



## শীচৈতভাচরিতমাত

- ১। চৈতন্যলীলারত্ব-সার স্বরূপের ভাগ্তার
  তেঁহো থুইলা রঘুনাথের কঠে।
   তাহা কিছু যে শুনিল তাহা ইহ বিবরিল
  ভক্তগণে দিল এই ভেটে॥ ২।২।৭০
- ৪। সরূপ গোসাঞি আর রঘুনাথদাস।

  এই ছই কড়চাতে এ লীলা প্রকাশ।

  সে কালে এই ছই রহে মহাপ্রভুর পাশে।

  আর সব কড়চা-কর্তা রহে দুর দেশে।

  কণে কণে অনুভবি এই ছই জন।

  সংক্ষেপে বাহুলা করে কড়চা-গ্রন্থন।

  সরূপ সূত্র্কা রঘুনাথ র্ত্তিকার।

  তার বাহুলা বুণি পাজিটিকা বাবহার।

  ১০১৪।৬ ৯

ক্ষণাস কবিরাজ বলিতেছেন যে স্বরূপ সংক্ষেপে ও রঘুনাথ বিস্তার করিয়া লীলা লিথিয়াছেন। রঘুনাথদাস স্তবাবলীতে শ্রীচৈতভাইক ও বারটি প্রোক সময়িত গৌরাক্ষন্তবকল্লতক ব্যতীত অর্থাৎ সর্বসমেত বিশটি প্রোক ছাড়া প্রীচৈতভালীলা-সম্বন্ধে আর কিছু লেখেন নাই। কবিরাজ গোস্বামী এই বিশটি প্রোকের মধ্যে একটি প্রোক অন্তা যন্ত পরিচ্ছেদে ও পাঁচটি প্রোক অন্তা লীলার চতুর্দশ হইতে উনবিংশ পরিচ্ছেদে ও পাঁচটি প্রোক অন্তা লীলার চতুর্দশ হইতে উনবিংশ পরিচ্ছেদে প্রভুর ভাবোন্মাদ কর্বরাজ অন্তাের ত্রয়াদশ হইতে উনবিংশ পরিচ্ছেদে প্রভুর ভাবোন্মাদ কর্বনা করিয়াছেন। লালার প্রমাণস্বরূপ শ্রীরূপ গোস্বামীর শ্রীচৈতভাইক ও রঘুনাথদাস গোস্বামীর শ্রীগোরাক্ষ-স্তব-কল্লতক উদ্ভূত করিয়াছেন। স্বরূপ-দামোদর যদি অন্তালীলা লিখিতেন তবে কবিরাজ গোস্বামী তাহার একটি প্রোক্ত উন্ধার করিলেন না কেন ? রঘুনাথদাস গোস্বামীর শ্রীচৈতভালীলা বিষয়ক ২০টি প্রোক্তেক কবিরাজ গোস্বামী যথন "বাহুলার্রূপে বর্ণন" বলিয়াছেন, তথন স্বরূপ-দামোদরের ভন্তসূচক প্রোক কয়্মটিকে "সংক্ষেপ লেখা" বলায় দোষ হয় না। কেহ কেহ আপত্তি তুলিতে পারেন যে রঘুনাথদাস গোস্বামী লীলা-বিষয় আরও বিস্তার করিয়া

### শ্রীচৈতহাচরিতের উপাদান

500

লিখিয়াছিলেন; তাহা আমরা পাই নাই। কিন্তু এ তর্ক বিচার-সহ নহে। কেন-না রঘুনাথ অন্ত কিছু লিখিলে তাহা হইতে কবিরাজ গোস্বামী কিছুই উদ্ধৃত করিলেন না কেন? উপরস্তু ভক্তিরত্বাকরে প্রদত্ত রঘুনাথের গ্রন্থভালিকা হইতেও জানা যায় যে খ্রীচৈতন্তবিষয়ে তিনি আর কিছু লেখেন নাই।

এখন প্রশ্ন হইতেছে এই যে, স্বরূপ-দামোদর শ্রীচৈতন্য-তত্ত্বিষয়ক ১০০১টি শ্লোক লিখিলে কবিরাজ গোস্বামী তাহাকে লীলা বলিলেন কেন ? ইহার উত্তর এই যে, সপ্তদশ শতাব্দীতে শ্রীচৈতন্যের ঈশ্বরত্ব এরপ ওদৃঢ়ভাবে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছিল যে ভক্তগণের নিকট লীলা ও তত্ত্বের ভেদ বিশেষ কিছু ছিল না। ইহা ছাড়া আরও বলা যাইতে পারে যে স্বরূপ-দামোদরের নির্নীত তত্ত্বসমূহ লীলাসূত্রও বটে। "শ্রীচৈতন্য রাধাভাবদ্যতি-স্থবলিত ও রাধাক্ষের সন্মিলিত মূর্ত্তি"— এই উক্তি তত্ত্ব ও লীলা স্থই-ই। ইহা লীলাসূত্র এই জন্ম যে, ইহার আলোকে শ্রীচৈতন্যের লীলা উপলব্ধি করা যায়।

ক্বিক্পপুরের নাটক ও মহাকাব্যের নিক্ট চ্রিতামূতের ঋণ

আমরা যাহাকে তর বলি স্বরূপ-দামোদর তাহাই লিখিয়াছেন, এই সিন্ধান্তের বিরুদ্ধে একটি যুক্তি উপস্থিত করা যায়। কবিরাজ গোস্বামী লিখিয়াছেন—

বজপ-থামোৰর নীতৈতক্তের তিরোভাবের পর বেশী দিন নীবিত ছিলেন না। কুগলাস কৰিবাল
বলেন, স্বরূপের অন্তর্জানের পর রগুনাখলাস গোধামী কুলাবনে আনেন। স্বরূপ শীতৈতক্তের প্রকটকালেই
তত্ত্ব নিরূপের করিরাছিলেন কি না নিশ্চিতরূপে জানা যায় না। ছাবন্দশার না হইলেও, মহাপ্রভূর
তিরোধানের অতি অল কাল পরেই যে স্বরূপ দামোররের লোকগুলি রতিত হইলাছিল, সে বিষয়ে সন্দেহ
নাই। শীতৈতক্তারিতামুক্ত ও গৌরগগোবেশনা পিকার উদ্ধৃত স্বরূপের লোকগুলি হইতে জানা যায় যে
স্বরূপ-দামোদ্বর শীতিতক্ত-প্রবৃত্তি ধর্মনপ্রেলারের স্বস্তুত্ব প্রতিভাতা (Church Pather)।

মালবহ জেলার কাননাট্রাম নিবাস। হারাবনবাস বৈক্ষর "আত্রহ-সিদ্ধান্তচ ক্রোবর" বা অরুপথামোধর গোলামীর কড়চা নামে একগানি বাঙ্গালা গ্যারের বই চারপতে প্রকাশ করেন। বইথানি জাল প্রমাণ করার জন্ত কোন কট্ট সীকার করিতে হয় না; কেন না বইরের মধ্যে আছে—

> মাগ্ৰহ অন্ত:পাতি পোষ্ট কান্সাট। তথা নিবসতি মম, তথার শ্রীপাট।



## <u> ত্রীচৈতক্মচরিভায়ত</u>

দানোদর স্বরূপের কড়চা অনুসারে। রামানন্দ-মিলন-লীলা করিল প্রচারে॥ ২৮৮২৬:

কিন্ত তিনি রামানন্দ রায়-মিলন-সম্বন্ধীয় অধিকাংশ বিষয় লইয়াছেন ক বকর্ণপূরের শ্রীচৈতভাচক্রোদয় নাটক ও শ্রীচৈতভাচরিতামৃত মহাকাব্য হইতে; যথা—শ্রীচৈতভাচরিতামৃত মহাকাব্যে মহাপ্রভু বলিলেন—

> উবাচ কিঞ্চিৎ স্তনয়িত্ব ধীরং সকৈতবং ভোঃ কবিতাং পঠেতি। তদা তদাকর্ণা মহারসজঃ পপাঠ বৈরাগ্যরসাঢ্যপত্মম্॥

বৈরাগাং চেজ্জনয়তিতরাং পাপমেবাস্ত যন্মাৎ সাক্রং রাগং জনয়তি ন চেং পুণামন্মাস্ত ভূয়াৎ। বৈরাগ্যেণ প্রমুদিতমনোর্ডিরভ্যেতি রাগং রাগেণ জীজঠরকুহরে তামাতি ব্রাহ্মণোহপি।

ইতীদমাকর্ণা স গৌরচক্রো
বাহাতিবাহুং বত বাহুমেতং।
ইতিকুরদ্বাধিভবোগ্থ-তাপোদগমান্তকুর্রাতিমুদং প্রপেদে॥
তত্তক সংশুদ্ধমতিঃ স রামানন্দো মহানন্দ-পরিপ্রতাঙ্গঃ।
পপাঠ ভক্তেঃ প্রতিপাদয়িত্রীমেকান্তকান্তাং কবিতাং স্বকীয়াম্॥
নানোপচারকৃত-পূজনমার্ভবন্ধোঃ
প্রেম্বৈর ভক্ত-হৃদয়ং স্থবিক্রতং স্থাৎ।

শ্রীকুফটেডজলবে লইয়া শরণ। আশ্রম-সিদ্ধান্ত কহে দীন হারাধন।



শ্রীচৈতন্মচরিতের উপাদান যাবং ক্ষুদস্তি জঠরে জরঠা পিপাসা ভাবং কুখায় ভবতো নমু ভক্ষ্যপেয়ে।

ইথাং চ সংশ্রুত্য তথৈব বাহাং বাহাং তদেতচ্চ পরং পঠেতি। জগাদ নাথোহথ কচৈঃ স্থুদীর্যৈঃ সংবেষ্ট্য নাথত্য পদৌ পপাত॥

নিকামসম্মোহ-ভরালসালো গালেয়-গৌরং তমনজরম্যম্। প্রভুং প্রণম্যাথ পদাক্ষমূলে নিপত্য সংপ্রোথিত আননন্দ।

ততঃ স গীতং সরসালি-পীতং বিদময়োনাগরয়োঃ পরস্থ। প্রেম্ণোহতিকান্তা-প্রতিপাদনেন ঘয়োঃ পরৈক্য-প্রতিপান্থবাদীৎ।

ভৈর্বীরাগ:

পহিলহি রাগ নয়নভন্পভেল।
অনুদিন বাঢ়ল অবধি না গেল॥
না সো রমণ না হাম রমণী।
ছ'ত মন মনোভব পেশল জানি॥
এ সথি সো সব প্রেমকাহিনী।
কানুঠামে কহবি বিছুরল জানি॥
না গোঁজলু দূতী না গোঁজলু আন।
ছ'তকেরি মিলনে মধত পাঁচ বাণ॥
অবসোই বিরাগ তু'ত ভোল দূতী।
হপুরুখ প্রেমক এছন রীতি॥
বর্জনরুজ্ঞ নরাধিপমান।
রামানন্দ রায় কবি ভাগ॥



### শ্রীচৈ চন্ডচরিতামূত

ততন্তদাকর্ণা পরাৎপরং স প্রভুঃ প্রকুরেক্ষণপদ্মযুগাঃ। প্রেম-প্রভাব-প্রচলান্তরাত্মা গাঢ়প্রমোদান্তমথালিলিক। ১৩৩৮-৪৭

কৃষণাস কবিরাজ্ব এই বর্ণনা হইতেই তিনটি বিষয় লইয়াছেন:
(১) ক্রম-অনুসারে সাধ্য-নির্ণয়; (২) "নানোপচার-কৃত-পূজনং" শ্লোক
এবং শ্রীচৈতত্যের ইহ বাহ্ন উক্তি; (৩) "পহিলহি রাগ" পদটি। কবিকর্ণপূরের এই বর্ণনা শ্রীচৈতত্যের তিরোভাবের মাত্র নয় বৎসর পরে
লিখিত হইয়াছিল। কবিকর্ণপূর সম্ভবতঃ তাঁহার পিতা শিবানন্দ সেনের
নিকট এই ঘটনার একটি সংক্ষিপ্ত বিবরণ শুনিয়াছিলেন। তিনি যদি স্বরূপদামোদরের কড়চা হইতে এই ঘটনা লইতেন তাহা ইইলে যেমন প্রস্তের
প্রথমে ও শেষে মুরারির নিকট খণ স্বীকার করিয়াছেন, তেমনি স্বরূপদামোদরের নিকট খণ স্বাকার করিতেন। ঐরূপ ঋণ স্বীকার যে
তিনি গৌরগণোদ্দেশদাপিকায় করিয়াছেন তাহা পূর্বের দেখাইয়াছি।
মহাকারে প্রদন্ত "পহিলহি রাগ" গানের শেষে প্রতাপক্রতের নামসমন্বিত ভণিতা আছে। কিন্তু কৃষ্ণদাস করিয়াজ্ব রামানন্দকে পরম
ভক্তরূপে আঁকিয়াছেন বলিয়া রাজার নাম-যুক্ত ভণিতা বাদ দিয়াছেন।

ক্ৰিরাজ গোস্থানা উক্ত তিনটি বিষয় যেমন শ্রীচৈতভাচরিতামূত মহাকাব্য হইতে লইয়াছেন, তেমনি শ্রীচৈতভা-রামান-দ-প্রশ্নোত্র-সমূহ লিখিতে যাইয়া শ্রীচৈতভাচক্রোদয়ের অবিকল অনুবাদ করিয়াছেন; যথা—

ভগবান্—কা বিভা ? (নাটকে)

রামানন্দঃ — হরিভক্তিরেব ন পুনর্বেদাদিনিফাততা। (নাটকে) প্রভু কহে কোন্ বিভা বিভাগধ্যে সার। রায় কহে কৃষ্ণভক্তি বিনা বিভা নাহি আর॥ (চরিতামূতে)

ভ-কাৰ্ত্তি: কা ?

রা—ভগবৎপরোহয়মিতি যা খ্যাতির্ন দানাদিকা।
কীর্ত্তিগণমধ্যে জীবের কোন্ বড় কীর্ত্তি।
কৃষ্ণপ্রেম-ভক্ত বলি যার হয় খ্যাতি॥

000

### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

ভ-কা ত্রীঃ ?

রা—তংপ্রিয়ত। ন বা ধনজন-গ্রামাদি-ভূয়িষ্ঠতা। সম্পত্তিমধ্যে জীবের কোন্ সম্পত্তি গণি। রাধাকৃষ্ণপ্রেম যার সেই বড় ধনী।

ভ-কিং চঃখম্ ?

রা—ভগবৎপ্রিয়স্ত বিরহো, নো হৃত্ব ণাদিবাথা। ভঃখমধো কোন্ ডঃখ হয় গুরুতর। কৃষণভক্তবিরহ বিনু ডঃখ নাহি আর॥

ভ –ভদ্রম্, কে মৃক্তাঃ ?

রা-—প্রত্যাসন্তিইরিচরণয়োঃ সান্মরাগে ন রাগে।
প্রীতিঃ প্রেমাতিশয়িনি হরেউক্তি-যোগে ন যোগে।
আহা তত প্রণয়রভসত্যোপদেহে ন দেহে
যেষাং তে হি প্রকৃতি-সরসা হন্ত মুক্তা ন মুক্তাং॥
মুক্তমধ্যে কোন্ জীব মুক্ত করি মানি।
কৃষ্ণপ্রেম যার সেই মুক্ত-শিরোমণি॥

ভ-ভবতু, কিং গেয়ম্ ?

রা—ব্রভকেলি-কর্ম।

ভ - কিমিহ ভোয়ঃ ?

রা—সতাং সংগতিঃ।

শ্রেয়োমধ্যে কোন শ্রেয়ঃ জীবের হয় সার। কৃষ্ণভক্ত-সঙ্গ বিনা শ্রেয়ঃ নাহি আর॥

ভ-কিং স্মার্তবাম ?

রা-অঘারি-নাম।

কাহার স্মরণ জীব করে অনুক্ষণ। কুঞ্চনাম গুণলীলা প্রধান স্মরণ॥

ज-किमन्द्रशायम् ?



## শ্রীচৈতন্যচরিতায়ত

রা—মুরারেঃ পদম্।
ধ্যেয়মধ্যে জীবের কর্ত্তব্য কোন্ ধ্যান।
রাধাকৃঞ-পদান্ত্রজ-ধ্যান প্রধান॥

ভ – ক স্থেমন্ ? রা – ব্রজ এব। সর্ববিত্যাগী জীবের কর্ত্তব্য কাঁহা বাস। ব্রজভূমি বৃন্দাবন যাঁহা লালারাস॥

—नांचेक, वाध->o; टेठ<sup>o</sup> ठ<sup>o</sup>, राषाका-३क

এই প্রশোত্তর কবিকর্ণপূরের মহাকাব্যে নাই। ঐতিতত্ত যথন দাকিণাত্যে গোদাবরী তাঁরে রামানন্দের সহিত মিলিত হয়েন তথন স্বরূপ-দামাদর বা শিবানন্দ কেহই সঙ্গে ছিলেন না। তাঁহারা ঐতিতত্ত্যের মুখে রামানন্দের সহিত কথোপকথনের সংক্ষিপ্ত-সার শুনিয়া থাকিবেন। তাহাই শুনিয়া কবিকর্ণপূর নাটক ও মহাকাব্যে ঐ প্রসন্থ লিখিয়াছেন। যদি তিনি স্বরূপ-দামোদরের লিখিত কড়চা দেখিয়া বিষয়টি লিখিতেন তাহা হইলে তাহার বর্ণনায় রামানন্দ-কর্তৃক কথিত বৈরাগাস্চক শ্লোকটি নাটক ও মহাকাব্যে একরূপ থাকিত। কিন্তু নাটকে রামানন্দ-কথিত প্রথম শ্লোক—

মনো যদি ন নিৰ্জিতং কিমধুনা তপজাদিনা
কথং স মনসো জয়ো যদি ন চিন্তাতে মাধবঃ।
কিমল্য চ বিচিন্তনং যদি ন হস্ত চেতোদ্রবঃ
স বা কথমহো ভবেদ্ যদি ন বাসনাকালনম্। নাটক, ৭া৭

আর মহাকাব্যের প্রথম শ্লোক—

"বৈরাগাং চেজ্জনয়তিতরাং" ইত্যাদি একরূপ নহে।

তাহা হইলে প্রমাণিত হইল যে কবিকর্ণপুর ও কৃষ্ণদাস একটি সাধারণ আকর (স্বরূপ-দামোদরের কড়চা) হইতে এই প্রসঙ্গ লয়েন নাই। কৃষ্ণদাস কবিরাজ কবিকর্ণপুরের তুইটি গ্রন্থে ইহার ইন্সিত পাইয়া গোস্বামি-শাজের সিকান্ত-সন্মত প্রণালীতে ক্রমবন্ধভাবে সাধ্য-সাধন নির্ণয় করিয়াছেন। রামানন্দ রসিক ভক্ত ছিলেন। তিনি রাজপুরুষ, তাঁহার কাওজ্ঞানেরও

### ত্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

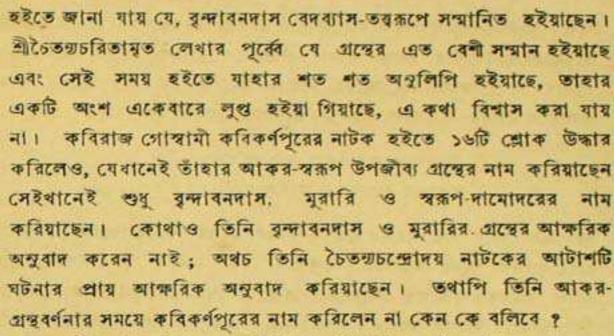
936

অভাব ছিল না, তিনি যে চৈতত্তের তায় প্রেমোন্মন্ত সন্ন্যাসীর সাধা-বিষয়ক প্রশ্নের উত্তরে "বর্ণাশ্রম ধর্ম পালন" বলিবেন ইহা সম্ভব নহে। কুল্ফদাস কবিরাজ এই প্রসঙ্গে কান্তাপ্রেম যে কত উচ্চ বস্তু, সাধনার কত স্তরের পরে যে ইহা আস্বাদন করা যায় তাহাই নাটকীয়ভাবে বর্ণনা করিয়াছেন।

তিনি রামানন্দের মুখ দিয়া "ভক্তিরসামৃতসিন্ধু"র সিন্ধান্তের তবত অনুবাদ করাইয়াছেন (২।৮।৬৪-৬৯)। "উজ্জ্বলনীলমণি"র "অহেরিব গতিঃ প্রেম্ণঃ"র ভাব লইয়া "রাধার কৃটিল প্রেম হইল বামতা" উক্তিও রামানন্দের দারা বলাইয়াছেন। তব্-উদ্যাটন হিসাবে কৃষ্ণদাস করিরাজের রামানন্দ-সংবাদ অতি উচ্চন্তরের দার্শনিক রচনা সন্দেহ নাই; ঐ প্রসঞ্চের মূল বক্তব্য ঐতিহাসিক ভিত্তিতে প্রতিষ্ঠিত; কিন্তু ইহার অনেকথানি করিরাজ গোস্বামীর সংযোজনা। তিনি করিকর্ণপুর হইতে এই ঘটনার অনেকথানি লইয়াও স্বরূপ-দামোদরের দোহাই দিলেন কেন বলা কঠিন। আর এক স্থানেও তিনি মূল ঘটনা করিকর্ণপুরের নাটক হইতে লইয়া বৃন্দাবনদাসের নাম করিয়াছেন; যথা—করিকর্ণপুর প্রীচৈতত্যের গুণ্ডিচা-মার্জ্জন ও অবৈত আচার্য্যের পুক্র গোপালের নৃত্য করিতে করিতে মূর্জ্য যাওয়া নাটকের ১০।৪৯-৫১ অংশে বর্ণনা করিয়াছেন; করিরাজ গোস্বামী ঐ ঘটনা চরিতায়তের ২।১১।৭৭-১৪৬ পয়ারে লিবিয়া বলিতেছেন—

এই লীলা বর্ণিয়াছেন দাস বৃন্দাবন। অভএব সংক্ষেপ করি করিল বর্ণন॥

শ্রীযুক্ত অতুলকৃষ্ণ গোস্বামী এই প্যার-সম্বন্ধে বলেন, "আমাদের অবলম্বিত কি মুদ্রিত, কি হস্তলিখিত, কোন একখানি চৈতগুভাগবতেও এই লীলার উদ্দেশমাত্রও দেখিতে পাওয়া যায় নাই। স্বতরাং বলিতে হয় শ্রীচৈতগুভাগবতের কিয়দংশ লুপ্ত হইয়া গিয়াছে।" কিন্তু ক্ষাদাস কবিরাজ্বের পূর্বে লোচন, জয়ানন্দ প্রভৃতি অনেকে রুন্দাবনদাসের বইয়ের কথা বলিয়াছেন। ১৫৭৬ খুফাল্বের গৌরগণোদ্দেশদীপিক।



মুরারি, ক বকর্ণপূর, রঘুনাথদাস গোস্বামী, বৃন্দাবনদাস ও সন্তবতঃ সরূপ দামোদরের গ্রন্থ ছাড়া কৃঞ্চদাস কবিরাজ শ্রীরূপ গোস্বামি-কৃত তিনটি চৈত্যাইকের মধ্যে প্রথমটির ষষ্ঠ শ্রোক অবলম্বন করিয়া এ১৫ অধ্যায় এবং সপ্তম শ্রোক অবলম্বন করিয়া ২১১০ অধ্যায় লিখিয়াছেন। প্রথমোক্ত স্থলে কবিরাজ গোস্বামী বলিয়াছেন—

প্রলাপ সহিত এই উন্মাদ বর্ণন। শ্রীরূপ গোসাঞি ইহা করিয়াছে বর্ণন॥ তা>৫৮৪

দ্বিতীয় স্থানে লিখিয়াছেন—

রথাত্যে মহাপ্রভুর নৃত্য বিবরণ।

চৈতভাষ্টকে রূপ গোসাঞি করিয়াছে বর্ণন ॥ ২।১৩।১৯৮ রবুনাথদাস গোস্বামীর "শ্রীগোরাস্বস্তবকল্লতরু" ও "শ্রীচৈতভাষ্টক" ছাড়া তাঁহার নিকট শ্রুত বিবরণ হইতেও কৃঞ্চদাস কবিরাজ অনেক তথ্যসংগ্রহ করিয়াছিলেন; যথা—

> স্বরূপ গোসাঞি কড়চায় যে লীলা লিখিল। রঘুনাথদাস মুখে যে গব শুনিল॥ সেই সব লীলা লেখি সংক্ষেপ করিয়া। এতাং৫৬-৭

## ৩৪০ - ত্রীচৈতহাচরিতের উপাদান

কিন্তু রঘুনাথদাস গোস্বামীর প্রদন্ত মৌখিক বিবরণের দোহাই দিয়া কবিরাজ গোস্বামীর সমস্ত বর্ণনা নির্বিচারে মানিয়া লওয়া যায় না। রঘুনাথদাস গোস্বামী প্রীচৈতত্তের সল্লাস-গ্রহণের আট-নয় বংসর পরে নালাচলে যায়েন—এ কথা কৃষ্ণদাস কবিরাজ নিজেই বলিয়াছেন; যথা—

> ষোড়শ বৎসর কৈল অন্তরন্প সেবন। স্বরূপের অন্তর্জানে আইলা বৃন্দাবন॥ ১।১০।৯১

শ্রীচৈততা প্রায় ২৪ বংসর সন্ন্যাস-জাবন যাপন করিয়াছিলেন; তাঁহার ভিরোধানের পূর্বের স্বরূপের অন্তর্জান হয় নাই। রঘুনাথদাস যদি যোল বংসর স্বরূপের অন্তরন্ধ সেবা করিয়া থাকেন তাহা হইলে শ্রীভৈত্যের সন্ন্যাস-জাবনের আট-নয় বৎসরের ঘটনা-সম্বন্ধে তাঁহার প্রত্যক জ্ঞান ছিল না। রখুনাথদাসের শিক্ষাগুরু স্বরূপ-দামোদরের সহিতও ঐতৈতক্তের মিলন ঘটে তাঁহার দাকিণাত্য-ভ্রমণের পর; অর্থাৎ প্রীচৈতবাচরিতামতের মধ্যলালার যোড়ণ পরিচ্ছেদে বর্ণিত ঘটনার পুর্বের রঘুনাথের সহিত এবং মধা দশম পরিচেছদে বর্ণিত ঘটনার পূর্বের স্বরূপ-দামোদরের সহিত সন্ন্যাসী ঐীচৈতভার মিলন হয় নাই। অথচ কবিকর্ণপুরের পিতা শিবানন্দ সেন সল্লাসের তৃতীয় वर्धि नीलाहरू व्यास्त्र । शिवानरमत्र এकि भन इटेर्ड ब्याना याग्र যে সল্লাস-গ্রহণের পূর্বেই তাঁহার সহিত ঐাচৈতক্তের অন্তরম্বতা ছিল ( গৌরপদতরক্ষিণী, পৃ° ২৭৮-৪৯)। শিবানন্দের পুত্র এবং মহাপ্রভুর সাক্ষাৎ কুপাপাত্র কবিকর্ণপূরের বার্ণত ঘটনার সহিত যথন কৃষ্ণদাস ক্রিরাজের বর্ণনার অসামঞ্জ দেখা ঘাইবে, তখন ক্রিকর্ণপূরের কথা না মানিয়া কবিরাজ গোস্বামীর কথা মানা কঠিন। আরও মনে রাখিতে হইবে যে কবিকর্ণপুর ঐতিভাগ্যের ভিরোভাবের নয় বৎসর পরে মহাকাব্য লিখিয়াছিলেন, আর কৃষ্ণদাস কবিরাজ প্রায় বিরাশী বৎসর পরে চরিতামৃত निविद्याहित्नन। প্রত্যেক দেশের প্রত্যেক মহাপুরুষের জীবনীতেই কালক্রমে অলৌকিক ঘটনা সংযোজিত হইতে থাকে। প্রীচৈতত্তের कोवनी व्यात्नाहना कतिए यारेया तम कथा ७ व्यनित्न हिन्दि ना।



# শীচৈতভারিতায়ত

শ্রীতৈতত্তের সমসাময়িক বাস্ত খোষের পদের সহিতও কৃষ্ণাস কবিরাজ পরিচিত ছিলেন। তিনি লিখিয়াছেন—

> বাস্থদের গীতে করে প্রভুর বর্ণনে। কান্ঠ-পাযাণ জবে যাহার প্রবণে॥ ।১১১১৬

তাই সমস্ত উপাদান লইয়া কৃঞ্চাস কবিরাজ শ্রীচৈত্যাচন্দ্রের চরিত লিথিয়াছেন। ভক্তপণ সেই চরিতামৃত পান করিয়া যুগ যুগ ধরিয়া অপার আনন্দ লাভ করিতেছেন।

### অ।দিলীলার ঐতিহাসিক বিচার

শীতি হল্যচিরিতামূতের আদিলীলার প্রথম নয়টি পরিছেদে প্রথমতঃ
গৌড়ীয় বৈক্ষবধর্ম্মের মূল তত্ত্ব আলোচিত হইয়াছে। তত্ত্ব-সম্বন্ধে বিচার
করা এই প্রস্তের উদ্দেশ্য নহে, সেই জল্ম ঐ কয়টি পরিছেদ-সম্বন্ধে
এখানে কিছু আলোচনা করিব না। পক্ষম পরিছেদে প্রস্তুকারের প্রতি
মধ্যে নিত্যানন্দের রূপা ও তাহার বুন্দাবনে গমন এবং অক্টম পরিছেদে
প্রস্তের উৎপত্তি-বিবরণ লিখিত হইয়াছে। ঐ সম্বন্ধে বিচার পূর্বেই
করিয়াছি। সপ্তম পরিছেদে কবিরাজ গোস্বামী পঞ্চতত্ত্ব-নিরূপণ করিয়া
মহাপ্রভু-কর্তৃক প্রেমদান বর্ণনা করিয়াছেন।

## প্রকাশানন্দ-উদ্ধার-কাহিনীর বিচার

ঐ প্রসঙ্গে তিনি সহসা তব হইতে লীলায় আসিয়া পড়িয়াছেন।

ত্রীতিতত্যের জীবনের ঘটনাবলীর কোনরূপ পৌর্বাপর্য্য না রাখিয়া কাশীর
প্রকাশানন্দ-উদ্ধার-কাহিনী লিখিয়াছেন। আবার অস্ট্রম পরিছেদে
তব বর্ননা করিয়াছেন। এইরূপভাবে প্রকাশানন্দ-কাহিনী লেখার
কারণ কি হইতে পারে বিচার করা যাউক। মুরারি ওপ্তের কড়চায়
প্রকাশানন্দ-উদ্ধারের কাহিনী নাই।

### শ্রীচৈতহাচরিতের উপাদান

কড়চার ৪া১৷১৮ ও ৪া১৩৷২০ শ্লোকে

₾82

"কাশীবাসি-জনান্ কুব্বন্ হরিভক্তিরতান্ কিল" ও "কাশীবাসি-জনান্ স্ব্যান্ ক্ষভক্তি-প্রদানতঃ"

উক্তি আছে। ঐতিচতত প্রকাশানদের তায় দশ সহস্র সন্ন্যাসীর গুরুকে উদ্ধার করিয়া থাকিলে মুরারি গুপ্ত সে সম্বন্ধে নীরব থাকিবেন কেন ?

কবিকর্ণপুর ঐতিচতগুচন্দোদয় নাটকে লিখিয়াছেন—

ব্রক্ষচারি-গৃহিভিক্বনস্থা যাজ্ঞিকা ব্রতপরাশ্চ তমীয়ুঃ মৎসরৈঃ ক্তিপয়ৈর্যতিমুখ্যেরেব তত্র ন গতং ন স দৃষ্টঃ॥

– ৯৷৩২, নির্ণয়সাগর সংকরণ

নাটকের কোথাও প্রকাশানদের উদ্ধার-কাহিনী বা নাম নাই। বরং আছে যে কতিপয় প্রধান প্রধান যতি মাৎসর্য্যবশতঃ শ্রীচৈতক্তকে দেখিতে যায়েন নাই।

প্রীচৈতন্ম এই সকল সন্ন্যাসীদের উদ্ধার করিতে পারিলেন না বলিয়া প্রতাপরুদ্র ও সার্বভোমের মনে ক্ষোভ রহিয়া গেল। দশম অক্ষেদেখিতে পাই—সার্বভোম প্রীচৈতন্মের অসমাপ্ত কার্য্য সমাপ্ত করিবার জন্ম বারাণসা যাইতেছেন। তিনি স্বগতোক্তি করিতেছেন—"যন্তপি ভগবতোহিস্মিন্নর্থে নামুমতির্জাতা, তথাপি হঠাদেবাহং বারাণসাং গণা ভগবমতং গ্রাহয়ামীতি হঠাদেব তত্র গছেরাস্মি। ন জ্ঞানে কিং ভবতি" (১০০০)। সার্বভোম সভ্য সভ্যই বারাণসী গিয়াছিলেন কি না এবং গিয়া থাকিলে তাঁহার উদ্দেশ্য কতদূর সকল হইয়াছিল সে বিষয়ে কবিকর্পপুর কোন সংবাদ দেন নাই। পরবর্ত্তী কোন গ্রন্থকারও এ সম্বন্ধে কিছু বলেন নাই। যাহা হউক ইহা স্পান্ট প্রতীত হইতেছে যে প্রীচৈত্য যদি তৎকালের প্রোষ্ঠ বৈদান্তিক প্রকাশানন্দকে ভক্তিপথে আন্মন করিতেন, তাহা হইলে আর সার্বভোমের বারাণসী-যাত্রার কথা কবিকর্পপুর উল্লেখ করিতেন না।

ক্বিক্র্র ঐতিচত চরিতায়ত মহাকাবোও কোন স্থানে প্রকাশানন্দের নাম উল্লেখ করেন নাই। রুন্দাবনদাসের চৈত্রভাগ্রত



## শ্রীতৈভয়চরিতামৃত

পড়িয়াও মনে হয় না যে শ্রীমন্মহাপ্রভু প্রকাশানন্দকে উদ্ধার করিয়াছিলেন। তিনি নবদ্বীপ-লীলা-বর্ণনা-প্রসঙ্গে ভাবাবিষ্ট বিশ্বস্তর মিশ্রের দারা মুরারির নিকট ছুইবার প্রকাশানন্দের নাম উল্লেখ করাইয়াছেন (পূ ১৭৬, ৩০৪)। বরাহ-ভাবাবিষ্ট বিশ্বস্তর বলিতেছেন—

কাশীতে পড়ায় বেটা পরকাশানক।
সেই বেটা করে মোর অঙ্গ থণ্ড থণ্ড ॥
বাধানত্ম বেদ মোর বিগ্রহ না মানে।
সর্বান্ধে হইল কুষ্ঠ তবু নাহি জানে॥

বিতায় বারের উল্লেখন ঠিক এইরূপ। ইহা পাঠ করিয়া মনে হয়,
প্রকাশানন্দ প্রীচৈত্য অপেক্ষা বয়সে অনেক বড়, কেন-না বিশ্বস্তরের বয়স্
যখন ২০, তখন প্রকাশানন্দ এত প্রসিদ্ধি লাভ করিয়াছেন যে তাঁহার
কথা লইয়া নবন্ধীপেও আলোচনা চলিতেছিল। লোচনদাস প্রকাশানন্দের
নাম কোথাও উল্লেখ করেন নাই। প্রীচৈত্যের কাশী-গমন-সম্বন্ধে মাত্র
লিখিয়াছেন—

ক্রমে ক্রমে উত্তরিলা তীর্থ বারাণসী। অনেক বৈসয়ে তথা পরম সন্ন্যাসী॥ পৃ°৯৫, শেষ গণ্ড

জয়ানন্দ এ সম্বন্ধে লিথিয়াছেন—

গৌরচন্দ্র তীর্থযাত্রা গেলা বারাণসী। বিধিমতে বিড়ম্বিলা পাষণ্ড সন্মাসী॥ পৃ° ১৪৯

তংপূর্বে ১৩৫ পৃষ্ঠায় বারাণসার সন্ন্যাসীদের সহিত নীলাচলস্থ শ্রীচৈতত্তের চিঠি কাটাকাটির বিবরণ আছে। শ্রীচৈতত্ত সিংহ ও পারাবতের তুলনা করিয়া পত্র লিখিলে

> এই পত্র শুনি যত প্রাচীন সন্নাসী। নীলাচল গেলা সভে ছাড়ি বারাণসী॥

কিন্তু প্রকাশানন্দের নাম নাই।



**088** 

### শ্রীতৈভয়চরিতের উপাদান

গৌরপদতরক্ষিণীতে প্রকাশানন্দের গুণ-বর্ণনামূলক কোন সূচক ত নাই-ই, এমন কি ত্রীচৈতভার কৃপা ও লালা-কাহিনা-বর্ণনা-উপলক্ষেও কোখাও ইহাদের নাম করা হয় নাই। কবিকর্ণপূর লিখিয়াছেন যে নাৎসর্যাবশতঃ কভিপয় যতি ত্রীচৈতভাকে দর্শন করিতে আসেন নাই। কিন্তু কবিরাজ্ঞ গোস্বামা বলেন—

> প্রভুকে দেখিতে আইল যতেক সন্ন্যাসী। প্রভুর প্রশংসা করে সর্বব বারাণসী॥ ১।৭।:৪৭

পুনশ্চ

এক বারাণসা ছিল তোমাতে বিমুখ। তাহা নিস্তারিয়া কৈলে আমা সবার স্থা। ২।২৫/১২৫

আদিলীলার সপ্তম পরিচ্ছেদে ক্রমভন্ন করিয়া কবিরাজ গোস্বামী কেন প্রকাশানন্দের কাহিনী লিখিলেন বুঝা কঠিন। যদি এরূপ ব্যাপার নাই ঘটিয়া থাকে, অথচ সপ্তদশ শতাব্দীর প্রথম ভাগে বৈক্ষর-সমার প্রীচৈতন্তের মহিনা-খ্যাপনের জন্ম এরূপ ঘটনার সংযোজন করা প্রধোজন মনে করিয়া থাকেন, তাহা হইলে বুদ্ধ কবিরাজ গোস্বামী—যিনি লিখিতে লিখিতে পরলোকগমনের আশহা করিতেছিলেন—আগ্রহাতিশ্যাবশতঃ শ্রীচৈতন্তের তত্ত্ব নির্ণয় করিয়াই ক্রমভন্ন করিয়া এরূপ লীলা লিখিয়াছেন অনুমান করিতে হয়।

্দ৯৮ খুফীব্দে আর্থার ভেনিস সাহেব বারাণসী হইতে প্রকাশানদ যতির "বেদান্ত-সিন্ধান্তমূক্রাবলী" নামে একথানি প্রন্থ ইংরাজী অনুবাদ-সহ প্রকাশ করেন। উক্ত প্রন্থের পুষ্পিকা হইতে জ্ঞানা যায় যে প্রকাশানদ জ্ঞানানদের শিশ্য। লেথকের নিম্নলিখিত উক্তি হইতে বুঝা যায় যে তিনি দান্তিক প্রকৃতির লোক ছিলেন—

> শৃণু প্রকাশ-রচিতাং সবৈত-তিমিরাপহাম্ বাদীভকুত্তনির্ভেদে সিংহদংট্রাধরীকৃতাম্।



## শ্রী চৈত্যচনি ভাষত

# বেদান্তসারসর্বস্থমহের্মধুনাতনৈঃ অশেষেণ ময়োক্তং তৎ পুরুষোত্তময়তুতঃ ॥

রুঞ্চাস কবিরাঞ্জও প্রকাশানন্দকে দান্তিকরূপে চিত্রিত করিয়াছেন। "বেদান্তিসিদ্ধান্তসূক্তাবলী"র গ্রন্থকারই কবিরাজ গোস্বামীর লক্ষা কি 
না বলা কঠিন। বেদান্তসিদ্ধান্তমূক্তাবলীর বাক্য রামতীর্থ ও অপ্পয় 
দীক্ষিত উদ্ধৃত করিয়াছেন। অভএব প্রকাশানন্দ উহাদের পূর্ববর্তী। 
অপ্পয় দীক্ষিতের কাল ১৫২০-১৫৯ পু<sup>০</sup> অ০০ এবং রামতীর্থের কাল ১৪৯০ 
হইতে ১৫২০ পূ<sup>০</sup> অ০। সেই জন্ম প্রকাশানন্দ ১৯৮৬-১৯৩০ পৃষ্টাব্দের 
মধ্যে অর্থাৎ প্রীচৈতন্তের সমকালে জীবিত ছিলেন মনে করা যাইতে পারে 
(রাজেন্দ্রনাথ ঘোষ—অন্তৈতসিদ্ধির ভূমিকা, পূ০০৮)।

# কবিরাজ গোস্বামি-অন্ধিত প্রীচৈতন্মের বালাজীবনী

আদিলীলার নবম পরিচ্ছেদে ভক্তিকল্পতক বর্ণিত হইয়াছে এবং দশম, একাদশ ও ঘাদশে যথাক্রমে শ্রীচৈততের, নিভাানন্দের ও অছৈতের শাখা বা পরিকরবর্গের নাম ও অতি সংক্ষিপ্ত বিবরণ লিখিত হইয়াছে। এয়োদশ পরিচ্ছেদে শ্রীচৈততের জাবনের লালাসূত্র বর্ণনার পর কৃষ্ণদাস কবিরাজ্ব প্রভুর জন্মগ্রহণের বিবরণ লিখিয়াছেন। তিনি যদিও বলিয়াছেন যে মুরারি গুপ্তের ও বৃন্দাবনদাসের বর্ণনা-অনুসারে আদিলীলা লিখিত হইল, তথাপি ঐ তুই লেখক এ কথা বলেন নাই যে শ্রীচৈতত দশ মাসের অধিক কাল গর্ভে ছিলেন। কবিকর্ণপূর মহাকাব্যে ( হাং৪ ) লিখিয়াছেন যে শ্রীচৈতত তের মাস গর্ভে ছিলেন। তাঁহাকে অনুসরণ করিয়া কৃষ্ণদাস কবিরাজ বলেন যে ১৪০৬ শকের মাঘ মাসে গর্ভে আসিয়া ১৪০৭ শকের ফালনে শ্রীচৈতত ভূমিষ্ঠ হইলেন ( ১০০৭৮-৭৮ )। লোচন লিখিয়াছেন—

দশ মাস পূর্ণ গর্ভ ভেল দিশে দিশে। আপনা পাসরে শচা মনের হরিষে॥ আদি, পৃ<sup>০</sup> ২

৬° প্রশালকুমার দের মতে অয়য় দাকিতের কাল ১০৪৪-১৬১৩ গৃষ্টাক। উংহার এই মত কেহ কেছ গওল করিয়াছেল। মোটের উপর অয়য় দীকিত বাড়েশ শতাকীর শেষভাগে ভ্রীবিত ছিলেন।



## ৩৪৬ শ্রীচৈতন্যচরিতের উপাদান

তের মাস গর্ভবাসরূপ অলোকিক কোন ঘটনা ঘটলে তাহা একমাত্র মুরারির পক্ষেই জানার সম্ভাবনা। কিন্তু তিনি এ বিষয়ে নীরব।

কবিরাজ গোস্থানী জগন্ধাথ নিত্রকে বেশ সঙ্গতিসম্পন্ন বাক্তিরূপে চিত্রিত করিয়াছেন। শ্রীচৈতভার জন্মের পর জগন্ধাথ

> বৌতুক পাইল যত ঘরে বা আছিল কত সব ধন বিপ্রো দিল দান। যত নর্ত্তক গায়ন ভাট অকিঞ্চন জন ধন দিয়া কৈল সভার মান॥ ।১৩/১০৮

মুরারি গুপু বলেন বিজ্ঞাতিকে জগরাথ মিশ্র তামূল, চন্দন ও মাল্য দিয়াছিলেন –ধন দেওয়ার কথা তিনি লেখেন নাই। বুন্দাবনদাস বলেন যে জ্যোতিষী বিপ্র নবজাত নিমাইয়ের ভবিশ্যৎ বলিলেন, জগরাথ মিশ্র

> আনন্দে বিহবল বিপ্রে দিতে চাহে দান ॥ কিছু নাহি স্থদরিদ্র তথাপি আনন্দে। বিপ্রের চরণ ধরি মিশ্রচক্স কান্দে॥ চৈ° ভা°, ২।১।২৬

আবার অহাত্র

দেখি শচী জগন্নাথ বড়ই বিশ্মিত। নিৰ্ধন তথাপি দোঁহে মহা আনন্দিত॥ ১।৩।•১

কৃষণাস কবিরাজ লিখিয়াছেন যে একদিন শচী নিমাইকে থৈ-সন্দেশ খাইতে দিয়া গৃহক'র করিতে গেলে, নিমাই মাটি খাইতে লাগিলেন। ভাহা দেখিয়া শচী আসিয়া মাটি কাড়িয়া লইলেন। ভাহাতে নিমাই বলিতেছেন—

> থৈ সন্দেশ অল যত মাটীর বিকার। এহো মাটী, সেহো মাটী, কি ভেদ বিচার॥ মাটী দেহ, মাটী ভক্ষ্য, দেখহ বিচারি। অবিচারি দেহ দোয, কি বলিতে পারি॥



# <u>্রী</u>তৈতভাচরিতায়ত

অন্তরে বিশ্বিতাইশটা বলিল তাঁহারে।
মাটা থাইতে জান যোগ কে শিথাইল তোরে।
মাটার বিকার অন্ন থাইলে দেহ পুষ্ট হয়।
মাটা গাইলে রোগ হয় দেহ যায় ক্ষয়।
মাটার বিকার ঘটে পানি ভরি আনি।
মাটা পিণ্ডে ধরি যবে শোষি যায় পানি।
আত্ম লুকাইতে প্রভু কহিল তাঁহারে।
আগে কেনে ইহা মাতা না শিথাইলে মোরে।
এবে তো জানিত্ব আর মাটা না থাইব।
স্থালাগিলে তোমার স্তনত্থ পিব। ১০১৪।২৫-৩১

কবিকর্ণপূর ও বৃন্দাবনদাস ৬।৭ বৎসরের শিশু নিমাইয়ের মুখ দিয়া শুচি-অশুচির তত্ত্ব বলাইয়াছেন। কিন্তু কৃঞ্চদাস কবিরাজ্ঞ একেবারে ছুধের ছেলের মুখ দিয়া সংকার্যাবাদ ও অসংকার্য্যবাদ উপদেশ করাইয়াছেন।

গঙ্গার ঘাটে নিমাই লক্ষার সহিত "বাল্যভাব ছলে" হাল্য-পরিহাস করিতেছেন, এমন সময়েও কৃষ্ণদাস কবিরাজ তাঁহার ঘারা ভাগবতের (১০২২২৫) শ্লোক বলাইয়াছেন। "শ্লোক পঢ়ি তাঁর ভাব অঙ্গীকার কৈল" (১১১৪৬৫)। তখনও নিমাইয়ের হাতেখড়ি হয় নাই।

### বিশস্তবের বিচ্যাশিকা

কবিরাক্ত গোস্থামী পঞ্চদশ পরিচেছদে বিশ্বস্তরের অধ্যয়ন, বিশ্বরূপের সন্নাস ও বিশ্বস্তরের বিবাহ বর্ণনা করিয়াছেন। তিনি বলেন যে অল্ল কালেই ঐতিচতন্ত ব্যাক্তরণ শাস্ত্রে প্রবাণ হইলেন। তাঁহার মতে দিখিজ্যী পণ্ডিত নিমাইকে বলিয়াছিলেন

> বাাকরণ পড়াহ নিমাই পণ্ডিত তোমার নাম। বাল্য শাস্ত্রে লোক তোমার কহে গুণগ্রাম। ১১১৬১২৯

ইহা হইতে মনে হয় ঐচিততা কাব্য, অলন্ধার ও ব্যাকরণ ছাড়া আর বিশেষ কিছু পড়েন নাই। সেই জন্মই ড° দে লিখিয়াছেন,

"His studies, however, appear to have been chiefly confined to Sanskrit Grammar, especially Kalapa Grammar, and possibly to some literature and rhetoric to which allusion is made (Padyāvali, Introduction, p. xviii).

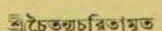
এই উক্তির প্রতিবাদ করিয়া সম্প্রতি অধ্যাপক শ্রীযুক্ত থগেন্দ্রনাথ মিত্র মহাশয় "ভারতবর্ষে" একটি প্রবন্ধ প্রকাশ করিয়াছেন। কিন্তু অধ্যাপক মিত্রও মুরারির প্রন্থ ব্যবহার করেন নাই। মুরারি বলেন যে বিশ্বস্তর কাব্য ও "লৌকিক সং ক্রিয়া বিধি" পড়াইতেন (১।১৫।১-২)। লোচনও তাহাই বলেন (আদি ৫৫ পৃত)। বিশ্বস্তরের অধ্যয়ন-অধ্যাপনা-সম্বন্ধে মুরারির উক্তি সর্ব্বাপেক্ষা প্রামাণ্য, কেন-না তিনি শ্রীচৈতত্যকে ছাত্র-হিসাবে ক্লানিতেন।

শ্রীচৈতন্ম গার্হস্থ জীবনে খৃতিশার পড়াইতেন ইহা বৈন্ধবর্গণ স্বীকার করিতে ইচ্ছা করেন নাই। তাই তাঁহার ব্যাকরণ অধ্যয়ন-অধ্যাপনার উপরই তাঁহারা জোর দিয়াছেন। বৃন্দাবনদাসের বর্ণনা পড়িয়া মনে হয় শ্রীচৈতন্ম ন্থায়শান্তের কিছু অংশও পড়িয়াছিলেন। শ্রীচৈতনভাগবতে গদাধরের সহিত বিশ্বস্তরের ন্থায়ের বিচারের উল্লেখ আছে (পৃত ৮৬)। জয়ানন্দের মতে—

শৃতি তর্ক সাহিত্য পঢ়িল একে একে ( পৃ০ ১৮ )।

কৃষণাস কবিরাজ-কর্তৃক যোড়শ পরিচ্ছেদে বর্ণিত দিখিজয়ি-পরাভবের বিচার ঐতিত্যভাগবতের বিচার-প্রসঙ্গে আলোচনা করিয়াছি। কবিরাজ গোস্বামী গোবিন্দ-লীলায়তে অলম্বার শাস্ত্রে যে অপূর্বর পারদর্শিতা দেখাইয়াছেন তাহারই কিঞ্চিৎ নিদর্শন এই পরিচ্ছেদে দিয়াছেন। সপ্রদশ পরিচ্ছেদে করিরাজ গোস্বামী বলেন—

> তবে শুক্লাম্বরের কৈল তণুল ভক্ষণ। "হরেনাম" শ্লোকের কৈল অর্থ বিবরণ॥ ১।১৭।১৮



তিনি বলেন এই সময়ে বিশ্ব র "তৃণাদপি তুনীচেন" শ্লোকের ভাবানুবাদও করিয়াছিলেন। বুন্দাবনদাস "শুক্রাম্বরের ততুল ভক্ষণ" লীলা লিখিয়াছেন, কিন্তু "হরেনাম" শ্লোকের বা "তৃণাদপি" শ্লোকের উল্লেখ করেন নাই। মুরারি গুপু বলেন শ্রীবাস-গৃহে বিশ্বরর হরেনাম শ্লোকের বাাখন করেন। চরিতামতের প্রদন্ত ব্যাখ্যা (১০০৭১) মরারির (২০০০) ব্যাখ্যার প্রায় আক্ষরিক অনুবাদ। কিন্তু মুরারি এই প্রসঙ্গে "তৃণাদপি তুনীচেন" শ্লোকের অবতারণা করেন নাই। সন্নাস-গ্রহণের পর প্রভু উহা রচনা করিয়াছিলেন বলিয়া মনে হয়।

ক্রিরাজ গোস্বামী আদিলীলাতেও তৈত্যচন্দ্রেমাটক বাবহার ক্রিয়াছেন। তিনি নাটকের ২৷২২ (বছরমপুর সংকরণ) লইয়া লিখিয়াছেন—

> শ্রীবাসের বস্ত্র সিঁয়ে দরজী যবন। প্রভূ তারে নিজ রূপ করাইল দর্শন॥ দেখিমু দেখিমু বলি হৈল পাগল। প্রেমে নৃত্য করে হৈল বৈষ্ণব আগল॥ ১।১৭।২২৪-১৫

এই ঘটনা অত্য কোন চরিতগ্রন্থে নাই।

এই ঘটনা-বর্ণনার পর কবিরাজ গোস্বামী লিখিয়াছেন—
আবেশে শ্রীবাসে প্রভু বংশিকা মাগিল।
শ্রীবাস কছে—গোপীগণ বংশী হরি নিল।
শুনি প্রভু বোল বোল কছেন আবেশে।
শ্রীবাস বর্ণেন বৃন্দাবনলীলা রসে।

তারপর ১০০ পাহত হইতে ২০২ পর্যন্ত ক্ষণলীলা-বর্ণন। মুরারি গুপু লিখিয়াছেন যে বিশ্বস্তর বেণু কোথায় জিজ্ঞাসা করিলে, শ্রীবাস বলিলেন, "ভাষাত্মজ্ঞয়া পরিরক্ষিতোহন্তি সং (২০০০-৪)। লোচন তাহার অনুবাদ করিয়াছেন, 'রাখিল ভাষক-কল্পা মুরলী তোনার" (মধ্য, পৃ<sup>2</sup> ৪১)। বৃন্দাবনদাস এ ঘটনা লেখেন নাই। কবিরাজ গোস্বামী এ স্থানে মুরারি গুপ্তের মত ছাড়িয়া দিয়া কবিকর্ণপ্রের মহাকাব্যের মত অনুসরণ

### ৩৫০ - ত্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

করিয়াছেন। তিনি রুদ্দাবন-লীলার যে বর্ণনা দিয়াছেন, তাহা কবিকর্ণপূর মহাকাব্যে বিশদ করিয়া ৮।৫১ হইতে ১০।৮০ ল্লোকে বর্ণনা করিয়াছেন। কবিকর্ণপূরের নিম্নলিখিত শ্লোকের

ততশ্চাতিশয়াবিটো জফীরোমা মহা প্রভুঃ
ক্রিছি ক্রিছি সততমুক্তৈতঃ নিজগাদ সঃ। মহাকাব্য ৮।৫৯
অমুবাদ করিয়া কুফাদাস কবিরাজ লিখিয়াছেন
"শুনি প্রভু বোল বোল কহেন আবেশে।"

#### মধালীলার বিচার

কৃষ্ণদাস কবিরাজ শ্রীচৈতভার সন্ন্যাস-জ্ঞীবনের ভ্রমণ-র্তান্ত লইয়া মধ্যলীলা লিখিয়াছেন; যথা—

তার মধ্যে ছয় বংসর গমনাগমন।
নীলাচল গোড় সেতৃবন্ধ বৃন্দাবন॥
তাহা যেই লীলা তার মধ্যলীলা নাম।
তার পাছে লীলা—অস্তালীলা অভিধান॥ ২।১।১৪-.৫

বৃন্দাবনদাসের মধ্যথণ্ড গয়া-প্রত্যাগত বিশ্বস্তরের জীবনের তের মাসের ঘটনা লইয়া লিখিত। তাঁহার প্রন্থে সন্মাস হইতে শেষ থণ্ডের আঙ্ম। ঘটনার স্থান ও কাল-হিসাবে বিভাগ করিতে গেলে কুক্রদাস কবিরাজের বিভাগ বৃন্দাবনদাসের অপেক্ষা উৎকুষ্টতর। নবদীপের ঘটনাকেই আদি ও মধ্য নামে বিভক্ত না করিয়া, নবদ্বীপের লীলাকে আদি, নানা স্থানে ভ্রমণকে মধ্য এবং নীলাচলে শেষ-জীবন-যাগনকে অন্ত্যলীলা বলার মধ্যে স্থায়সম্পতভাবে বিষয়বস্তর বিশ্বাস দেখা যায়।

প্রীচৈত ভাচরিতামৃতের মধালীলায় ২০টি পরিছেদ আছে। তথাধা প্রথম ছই পরিছেদে লীলাসূত্র-বর্ণন। তৃতীয় ইইতে যোড়শ পরিছেদের ঘটনা প্রধানতঃ কবিকর্ণপুরের নাটক ও মহাকাব্যকে অবলম্বন করিয়া লেখা। সপ্তদশ ইইতে পঞ্চবিংশ পরিছেদে ঘটনাংশ খুব কম। ঐ পরিছেদ ক্য়টিতে রূপ ও সনাতনের জীবন-সম্বন্ধে যে তথা দেওয়া



### শ্রীচৈতগুচরিতামৃত

হইয়াছে তাহার ঐতিহাসিক মূল্য খুব বেশী, কেন-না কবিরাজ গোস্বামী তাহাদের সঙ্গলাও করিয়াছিলেন। অত কোন গ্রন্থ হইতে আমরা রূপ-সনাতন-সম্বন্ধে এত তথ্য জানিতে পারি না।

মধালীলার ঘটনাংশ কৃঞ্দাস কবিরাজ কোথা হইতে পাইলেন তাহা বলেন নাই। তিনি মাত্র বলিয়াছেন –

চৈতভাগললে যাহা করিলা বর্ণন।
সূত্ররূপে সেই লীলা করিয়ে সূচন ॥
তাঁর সূত্র আছে তেঁহো না কৈল বর্ণন।
যথা কথঞ্চিত করিল লীলা কথন ॥
অতএব তাঁর পায়ে করি নমস্বার।
তাঁর পায়ে অপরাধ নছক আমার॥ ২।৪।৬-৮

ইহা পড়িয়া মনে হয় যে যাহা ঐতিচতভাগবতে নাই, তাহা কৃষ্ণ-দাস কবিরাজ রঘুনাথদাস প্রভৃতির নিকট শুনিয়া লিথিয়াছেন। কিন্তু প্রকৃতপক্ষে তিনি কবিকর্ণপূরের এন্থাদি অবলম্বন করিয়া রন্দাবনদাস যে লীলা লেথেন নাই তাহা লিথিয়াছেন, বা রন্দাবনদাস যাহা লিথিয়াছেন তাহার খণ্ডন করিয়াছেন। উদাহরণ-দারা এই সূত্রক স্পান্ট করিতে চেটা করা যাউক।

# বিশন্তরের সন্ন্যাস-গ্রহণ ও পুরীয়াতা

১। সন্ন্যাস-গ্রহণাত্তে রাঢ় জ্রমণ করিয়া আদিয়া ই চৈত্ত যথন গলা দেখিতে পাইলেন, তথন তিনি ভাবাবেশে তাহাকে যমুনা বলিয়া জ্রম করিয়াছিলেন, কিন্তু বৃন্দাবনদাসের মতে এরূপ জ্রম তাহার হয় নাই। তিনি এক রাখালের মুখে হরিনাম শুনিয়া জিজ্ঞাসা করিলেন গলা কত দূরে ? গলা এক প্রগরের পথে আছে শুনিয়া বলিলেন, "এ মহিমা কেবল গলার।" তারপর সন্ধ্যা বেলা নি গ্রানন্দের সঙ্গে গলাতীরে আসিয়া গলায় প্রান করিলেন ও "গলা গলা বলি বহু করিলা ক্রন্দন" (চৈ ভাত্যান্ত্রত)।

৩৫২ শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

কুঞ্চদাস কবিরাজ বলেন যে নিত্যানন্দ গোপবালকদিগকৈ শিখাইছা দিয়াছিলেন যে প্রভু যদি ভোমাদিগকৈ বৃন্দাবনের পথ জিজ্ঞাসা করেন ত তোমরা গঙ্গাতীরের পথ দেখাইয়া দিও (২০০১৪-১৫)। তারপর প্রভুকে গঙ্গাতীরে আনিয়া নিত্যানন্দ বলিলেন, "কর এই যমুনা দর্শন।"

> এত বলি তাঁরে নিল গঞা-সন্নিধানে। আনেশে প্রভুর হৈল গঙ্গায় যমুনা জ্ঞানে।

তিনি যমুনার স্তব করিতে লাগিলেন।

এই ঘটনাটি কবিকর্ণপূরের চৈতভাচক্রোদয় নাটক হইতে লওয়া (নাটক, ৫।৯ হইতে ৫। ৪, বহরমপুর সংস্করণ)। একটি স্থানে আক্রিক অনুবাদ আছে।

কুফাদাস কবিরাজ-

প্রভু কহে শ্রীপাদ তোমার কোথাকো গমন। শ্রীপাদ কহে ভোমার সঙ্গে যাব বুন্দাবন।

নাটক —

ভগবান্—শ্রীপাদ, কথয় কুতো ভবন্তঃ ? নিত্যানন্দঃ –দেবস্থা রুন্দাবন-জিগমিধামাশ্রিত্য ময়াপি তদ্দিদৃক্ষয়। চলতা ভবৎসঙ্গো গৃহীতঃ।

নিতানিক প্রভু ঐতিতত্তের সঙ্গে ছিলেন; তিনি এ বিষয়ে বুকাবনদাসকে যাহা বলিছেন ও বুকাবনদাস যাহা লিখিয়াছেন তাহা কবিকর্ণপূর ও কুন্তদাস কবিরাজের উক্তি মপেকা অধিক বিশাস্ত বলিয়া মনে হয়।

২। রেমুণার গোপীনাথ-মন্দিরে শ্রীচৈতত্তার কোন অলোকিক বিভূতির কথা বুন্দাবন্দাস লেখেন নাই। কবিকর্ণপুর বলেন—

> দণ্ডবদুবি নিপত্য ববদে তাং স সাপি তমপূজ্যসূচকৈ:। অস্থ মূর্দ্ধি পততালমকস্মাচেছগরেণ শিবসঃ স্থালিতেন॥ —নাটক, ৬১৯, নি° স°

[ অনুরূপ শ্লোক—ম াকাব্য, ১১৭৮ ]



চরিতামতে-

রেমুণাতে গোপীনাথ পরম মোহন। ভক্তি করি কৈল প্রভু তাঁর দরশন। তাঁর পাদপদ্ম নিকট প্রণাম করিতে। তাঁর পূপ্প চূড়া পড়িল প্রভুর মাথাতে। ২া৪ ১২-১৩

ইহার পর কবিরাজ গোস্বামী জীরচোরা গোপীনাথের কাহিনী বলিতে যাইয়া গোবর্জনে গোপালের প্রকাশ-কথা বলিয়াছেন।

কুঞ্চদাস কবিরাজ কারচোরা গোপীনাথের বিবরণটি (২।৪।১২২-১০৫)
প্রবাদ-অবলম্বনে লিথিয়া থাকিবেন। তিনি লিথিয়াছেন যে শ্রীতৈত্ত
নাধবেন্দ্রপুরী-রচিত 'অয়ি দানদয়ার্দ্রনাথ' প্রোকটি আর্ত্তি করিয়া
ভাবাবিষ্ট হইয়াছিলেন। ঐ প্রোকটি শ্রীরূপ গোপামী প্রভাবলীতে সঙ্কলন
করিয়াছেন।

 ৃ বুন্দাবনদাস সাক্ষীগোপালের কাহিনা লেখেন নাই। কবি-কর্ণপুর ঐতিভয়্তচক্রোদয়নাটকে (৬০২) সংক্ষেপে সাক্ষীগোপালের কথা বিলয়ছেন।

কবিকণপূরের বিবরণ ও স্থানীয় প্রবাদ সংগ্রহ করিয়া কবিরাজ গোস্বামী পঞ্চম পরিচেছদের ৯ হইতে ১৩২ পয়ার লিখিয়াছেন। পুরুষোত্তম দেব কাঞ্চিকাবেরী-বিজয়-কালে সাক্ষীগোপালকে লইয়া আসিয়া সত্যবাদীতে স্থাপন করেন ইহা ঐতিহাসিক ঘটনা।

\_J. B. O. R. S., Vol. V, Pt. I, p. 148.

তারপর কবিরাজ গোস্বামা লিথিয়াছেন-

গোপালের আগে যবে প্রভুর হয় স্থিতি।
ভক্তগণ দেখে যেন দৌহে এক মূর্ত্তি ॥
দৌহে এক বর্ণ দৌহে প্রকাণ্ড শরীর।
দৌহে রক্তান্বর দৌহার সভাব গল্পীর॥
মহা তেজাময় দৌহে কমলনয়ন।
দৌহার ভাবাবেশ মন চন্দ্র বদন ॥ ২া৫।১৩৪-১৩৬

ইহার মূল কবিকর্ণপূরের মহাকাব্যের লোকার্জ:

উভৌ গৌরতামছাতিকত-বিভেদৌ ন তু মহা-প্রভাবাতৈভিল্লো সপদি দদৃশাতে জনচথ্যৈ: ॥ (১১।৭৯)

কৰিরাজ গোসামী বলেন, "দোহে একবর্ণ," কৰিকর্ণপূর বলেন, সাকা

৪। বৃন্দাবনদাস বলেন যে জলেখরে পৌছিবার আগেই নিত্যানন্দ শ্রীচৈতক্তের দণ্ড ভাঙ্গিয়া ফেলেন। দণ্ডভঙ্গের পর প্রভু আর সঙ্গাদের সজে থাকিতে চাহিলেন না

> মৃহুর্ত্তেকে গেলা প্রভু জলেশ্বর গ্রামে। বরাবর গেলা জলেশ্বর দেব স্থানে॥ চৈ০ ভা০, তাহাত৮৯

ক্ষণাস বলেন যে ভ্রনেশ্বরে আসিয়া নিত্যানন্দ "তিন খণ্ড করি দণ্ড দিল ভাসাইয়া" (২া৫।১৪০-১৭২)। এখানেও নিত্যানন্দ-শিয়্যের বিবরণ না মানিয়া কৃষ্ণদাস কবিরাজ চৈত্রচন্দ্রোদয়ের অনুকরণ করিয়াছেন (৬। ৫, নি° স°)।

বুন্দাবন্দাসের মতে—

আরে রে দণ্ড! আমি যারে বহিয়ে হৃদয়ে। সে তোমারে বহিবেক এত যুক্তি নহে।

বলিয়া নিত্যানন্দ দণ্ড ভাঙ্গিয়া তিন থান করিলেন। পরে শ্রীচৈতন্ম যথন নিত্যানন্দকে জিজাসা করিলেন

কি লাগি ভাঙ্গিলা দণ্ড কহ দেখি শুনি ?

তখন নিত্যানক নির্ভয়ে কোন চাতুরী বা রসিকতা না করিয়া বলিলেন—

ভাঙ্গিয়াছি বাঁশ খান। না পার কমিতে, কর যে শান্তি প্রমাণ । তাহাতদ্ঞ কুফদাস কবিরাজ বলেন, নিত্যানন্দকে দণ্ডের কথা জিজ্ঞাসা করিলে নিত্যানন্দ উত্তর দিলেন—

প্রেমাবেশে পড়িলে তুমি তোমারে ধরিলু।
তোমা সহ সেই দণ্ড উপরে পড়িলু।
তুই জনার ভরে দণ্ড খণ্ড খণ্ড হৈল।
সেই খণ্ড কাহা পড়িল কিছু না জানিল।
মোর অপরাধে তোমার দণ্ড হৈল খণ্ড।
যেই যুক্তি হয় মোর কর তার দণ্ড॥

দও-ভত্তের পর নিত্যান দ ঐতিভত্তকে কি বলিয়াছিলেন তাহা চৈতত্ত-চন্দ্রোদয়নাটকে নাই, কিন্তু মুরারির কড়চায় ও মহাকাব্যে আছে। নিত্যানন্দ বলিলেন. "মাটিতে হঠাং পা পিছলাইয়া যাওয়ায় দও ভাঞ্চিয়া গিয়াছে, আমি তাহার কি করিব" (মুরারি, ৩১১৫; মহাকাব্য ১১৮১)।

এই ঘটনা-বর্ণনায় মুরারি, কবিকর্ণপুর বা কৃষ্ণদাস কবিরাজের হাতে
নিত্যানন্দ-চরিত্র ভাল ফোটে নাই। মুরারি শ্রীটেতত্যের সঙ্গে ছিলেন না,
কিন্তু বুদাবনদাসের বর্ণিত নিতানেন্দের নির্ভীক উক্তি সতা বলিয়া মনে
হয়। কবিকর্ণপুর বা কৃষ্ণদাস কবিরাজের পক্ষে নিত্যানন্দের কার্যাকলাপ
বৃন্দাবনদাস অপেকা বেশী জানা সম্ভব নয়। গঙ্গাকে যমুনা বলায় এবং
দশু-ভত্তের ব্যাপারে দেখা গেল কৃষ্ণদাস কবিরাজ নিত্যানন্দ প্রভুকে
কুতুকি-রূপে চিত্রিত করিতে চাহেন।

৫। উল্লিখিত চারিটি ঘটনার মধ্যে তিনটির বর্ণনায় কৃঞ্চদাস কবিরাজ র লাবনদাসের প্রদত্ত বিবরণ অগ্রাহ্ম করিয়া কবিকর্ণপূরের বর্ণনার অনুসরণ করিয়াছেন। কিন্তু শীতৈ চন্দ্রের প্রথম জগলাখ-দর্শন লিখিতে যাইয়া তিনি মুরারি ও কবিকর্ণপূরের প্রদত্ত বিবরণ না মানিয়া রন্দাবনদাসকে অনুসরণ করিয়াছেন। রন্দাবনদাস বলেন প্রভু নীলাচলে পৌছিয়াই জগলাখ-দর্শনে চলিলেন। জগলাথের শীম্থ-দর্শনে আনন্দে বিহবল ইইয়া তিনি শীবিগ্রহকে আলিঞ্চন করিতে ছুটিলেন। যাইতে যাইতে প্রভু ভাবাবেশে মৃক্তিত হইয়া পড়িলেন। জগলাথের সেবকগণ তাঁহাকে

মারিতে উন্নত হইল। সার্বভৌম সেই সময়ে দর্শন করিতে গিয়াছিলেন।
তিনি তাহাদিগকে নিরস্ত করিয়া লোক দিয়া প্রভুকে কাঁধে করাইয়া ঘরে
আনিলেন। সেই সময়ে নিত্যানন্দাদি সন্ধিগণ সিংহছারে আসিয়া উপস্থিত
হইলেন। তাহারা আর জগরাখ-দর্শন না করিয়া সার্বভৌম-গৃহে
চলিলেন। পরে সার্বভৌমের লোকের সহিত তাহারা শ্রীবিগ্রহ দর্শন
করিতে গেলেন।

কৃষ্ণদাস কবিরাজ ঠিক এইরূপই বর্ণনা করিয়াছেন; কেবল মাত্র পার্থকা এই যে তাঁহার মতে ঐটিচতন্মকে স্বিভৌমগৃহে বহন করিয়া লইয়া যাওয়ার পর নিতানেন্দাদি সিংহ্ছারে আসিয়া শুনিলেন যে একজন স্থানীকৈ ধরাধরি করিয়া লইয়া যাওয়া হইয়াছে। তাঁহারা ইহা শুনিয়া গোপীনাথ আগর্যোর সহিত সার্বভৌমের গৃহে উপস্থিত হইলেন (২াজহ-৩২)।

মুরারির কড়চায় ছই বার ছই রকম কথা দেওয়া হইয়াছে। এক বার বলা হইয়াছে যে তিনি ভুবনেশ্বর হইতে সোজা যাইয়া পুরুষোত্তম দর্শন করিলেন (৩।১০।১৭)। আবার পর অধ্যায়ে মুরারি বলেন যে আগে সার্বভৌমের গৃহে যাইয়া ভাঁহার "অনুজের" সহিত জগরাথ-দশনে গমন করেন (৩।১১।৪-১৬)। কবিকর্ণপুরের মহাকাব্যেও ঠিক এইরূপ গোলমাল রহিয়াছে। ১১৮৫-৮৬ লোকে ঐতিভ্যের বরাবর জগ্মাথ-মন্দিরে গমন ও দর্শন বর্ণনার পর, আবার পরের অধ্যায়ে কবিকর্ণপুর বলিতেছেন যে খ্রীকেত্রে প্রবেশ করিয়া তিনি সার্বভৌম-গুহে গেলেন (১২৷১) এবং সার্বভৌম স্বপুদ্রকে পাঠাইয়া ঐীচৈতগুকে জগলাপ-দর্শন করাইয়া আনিলেন (১২।৫-৬)। শ্রীচৈতন্য জ্যোদয় নাটকে কিন্তু স্পেষ্ট করিয়া লেখা আছে যে প্রীচৈত্যা প্রথমে জগরাথ-দর্শন না করিয়া সাক্ষভৌমের গৃহেই গিয়াছিলেন। যিনি জগরাথকে দর্শন করিবার জন্ম বাাকুল হইয়া আবেগে শান্তিপুর হইতে ছুটিয়া আসিতেছেন, তিনি যে আগে শীমৃত্তি দর্শন না করিয়া সার্বভৌমের বাড়ীতে যাইবেন ইহা বিশ্বাস করিতে প্রবৃত্তি হয় না। কিন্তু কবি-কর্ণপুর বিখাস করার পক্ষে একটি যুক্তি দিয়াছেন। নাটকে শ্রীচৈতত্যের



সঙ্গীরা বলিতেছেন "ভগবতো নীলাচলচক্ষণ্ঠ বিলোকনং পরিচারকাণামের ওল গং নাগ্রেষাম্; বিশেষতঃ পরদেশীকানামপ্রাকং ছল্লভমেব, বিনারাঞ্জপুরুষসাহায়েন স্থলভং ন ভবতি (৬৪৯. ব স)।" তথন মুকুদ বলিলেন এক উপায় আছে: এখানে সার্বভৌমের ভগিনীপতি প্রভুর নবন্ধীপলীলার সঙ্গী গোপীনাথাচার্য্য আছেন। তাঁহার দ্বারা সার্বভৌমের সাহায়া লইয়া জগন্নাথ-দর্শন করা যাইতে পারে। গোপীনাথ ঠিক সেই সময়েই দর্শন করিতে যাইতেছিলেন। প্রীচৈতত্তের সন্ধিগণ তাঁহাকে বলিলেন এবং তাঁহার সঙ্গে সার্বভৌমের গৃহে গেলেন। সার্বভৌম শীতিতত্তের পরিচয় জানিতে পারিয়া স্বপুত্র চন্দনেশ্বরকে সঙ্গে দিয়া তাঁহাকে মন্দিরে পাঠাইলেন। ১৪০১ শক—১৫ : গুল্টাব্দের ফালুন মাসে হুসেন সাহের সঙ্গে প্রতাপর্কন্তের যুদ্ধ চলিতেছিল। সে সময়ে অপরিচিত বিদেশী লোককে মন্দিরে যাইতে দেওয়া নিরাপদ নহে বলিয়াই হয়ত শীক্ষেত্রে পৌছিয়াই সর্বব

সনাতন গোস্বামী বৃহত্তাগ্ৰতামূতে লিখিয়াছেন—

যশ্চক্রবর্তী তত্রতাঃ স প্রভামুখ্যসেবকঃ।

ত্রীমুখং বীক্ষিতুং ক্ষেত্রে যদা যাতি মহোৎসবে॥
সজ্জনোপদ্রবোভানভন্নাদৌ বারিতেহপাধ।
মাদৃশোহকিকানাঃ সৈরং প্রভুং দ্রষ্টুং ন শর্মুঃ॥

(বৃহস্তাগবতায়ত, ২য় খণ্ড, ম অধ্যায়, ১৮২-১৮০ শ্লোক; নিতাশ্বরূপ বেলারী— দেবনাগর স'।) এই উক্তি হইতে জানা যাইতেছে যে প্রচাপরুদ্রের রাজহকালে কোন কোন সময়ে কোন কোন কোন বিশেষ কারণবশতঃ জগনাপ মন্দিরে যাওয়া সর্বসাধারণের পক্ষে নিষিদ্ধ হইত। ১৪০০ শকে ফাল্পন মাসে যুদ্ধ বিগ্রহ চলায় অতিরিক্ত সতর্কতা অবলম্বিত হইয়াছিল। তবে সমসাময়িক চরিতকার মুরারি ও ক্বিকর্ণপূর যে বিষয়ে স্থিব সিদ্ধান্তে উপনীত হইতে না পারিয়া ছই জায়গায় ছই রক্ম কথা বলিয়াছেন, সে বিষয়ে জোর ক্রিয়া কোন কথা বলা সমীচীন নহে।

300

### ত্রীতৈতনাচরিতের উপাদান

# সাক্তোম-উলাব-কাহিনীর বিচার

(১) সার্বভৌম-উদ্ধার-বর্ণনায় কবিরাজ গোপামী বৃন্দাবনদাসের বর্ণনা একেবারেই গ্রাছ করেন নাই। বৃন্দাবনদাসের মতে সার্বভৌম-উদ্ধার এক দিনেই হইয়াছিল। চরিতায়ত-অনুসারে উহা অন্ততঃ ১২ দিনের ঘটনা। বৃন্দাবনদাসের বর্ণনায় ঐতিচতত্যের কৃপা পাইবার পূর্বেই সার্বভৌম ভক্ত এবং ঈশ্বরে দাশ্য-বৃদ্ধিসম্পন্ন। তিনি শ্রীচৈতত্যের সন্ন্যাস-গ্রহণের অনৌচিত্য দেখাইবার জন্ম বলিলেন—

তাহারে সে বলি ধর্ম কর্ম সদাচার।

ঈশ্বরে যে প্রীতি জন্ম সম্মত সভার।

তাগারে সে বলি বিভা মন্ত্র অধ্যয়ন।

কৃষ্ণ-পাদপদ্মতে করায় স্থির মন।

সভার জীবন কৃষ্ণ জনক সভার।

হেন কৃষ্ণ যে না ভঞ্জে সর্বর বার্থ তার॥

যদি বোল শঙ্করের মত সেহ নহে।

তার অভিপ্রায় দাপ্ত তারি মুখে কহে।

৩ার অভিপ্রায় দাপ্ত তারি মুখে কহে।

এই সব শুনিয়া ঐতিভয় সার্বভৌমের নিকট উপদেশ লইবার ছলে "আত্মারামাশ্চ মৃনুয়ো" (ভা°, ১।৭।১৯) প্রোকের ব্যাথাা জিজ্ঞাসা করিলেন। সার্বভৌম উহার তের প্রকার অর্থ করিলেন। ঐতিভয় তথন

লোক ব্যাখ্যা করে প্রভু করিয়া হন্ধার। আত্ম-ভাবে লইলা যড় ভুজ অবতার॥

সার্বভৌম যড়ভুক্ত মৃত্তি দেখিয়া মৃষ্টা গেলেন। শ্রীচৈততা "পাদপদ্ম দিলা তার হৃদয় উপর।" তথন সার্বভৌম শ্রীচৈতত্তের স্তব করিতে লাগিলেন। শ্রীচৈততা সম্ভত্ত হইয়া বলিলেন —

> শত শ্লোক করি তুমি যে কৈলে স্তথন। যে জন করয়ে ইহা আন্দুপঠন।



### <u> এটে তত্ত বিভাগত</u>

আমাতে তাহার ভক্তি হইবে নিশ্চয়। "সার্বভৌম শতক" বলি লোকে যেন কয়। এগ৪০৭

বৃন্দাবনদাসের প্রদন্ত এই বিবরণ কুফাদাস কবিরাজ গ্রহণ না করিয়া স্থবুদ্ধির পরিচয় দিয়াছেন। নৈয়ায়িক সার্বভৌম যদি পূর্বর হইতেই ভক্তি পথের পথিক হইবেন, তবে আর তাঁহাকে ভক্ত করায় শ্রীচৈতক্যের মহিমা কোথায় ? একজন হপ্রসিদ্ধ পণ্ডিতের মত পরিবর্তন করার পক্ষে এক দিনের ঘটনা যথেও নহে। সার্বভৌম-উদ্ধারের সময় নিত্যানন্দ প্রভু কাছে বসিয়া ছিলেন না; স্থভরাং এ বিষয়ে বৃন্দাবনদাসের বর্ণনা সত্য বলিয়া স্বাকার করিবার প্রয়োজন নাই।

ক্রিরাজ গোস্বামী ছয়টি ঘটনা বর্ণনা ক্রিয়া সার্বভৌম-উন্ধার-কাহিনী লিখিয়াছেন:

- ১। সার্বভৌম-কর্তৃক শ্রীচৈতত্যের পরিচয়-গ্রহণ এবং শ্রীচৈতত্যের বেদান্তে পাঠ-লওয়া-সম্বন্ধে অনুরোধ (২া৬া৪৭-৬২)।
- ২। ঐতিহতত ঈশ্বর কি না তাহা লইয়া গোপীনাথ আচার্য্যের সহিত সার্বভৌন ও তাঁহার শিশুদের বিচার (২।৬।৬৬-১০৫)।
- ৩। সার্বভোমের নিকট সাত দিন পর্যন্ত ইটেতত্তার বেদান্ত প্রবণ ও অবশেষে বেদান্ত-বিচার এবং "আত্মারামাশ্চ মৃনয়ো" প্রোকের ব্যাখ্যা (২।৬)১১০-১৯৫)। তারপর ঐটিচতত্ত সার্বভোমকে চতুর্জ মৃর্ত্তি দেখান ও সার্বভোম শত প্রোকে তাঁহার স্তব করেন।
- ৪। অয় দিন সার্বভৌম মুখ না ধুইয়াই ঐীচেতয়-প্রদত্ত প্রসাদ ভক্ষণ
   করিলেন (২।৬।১৯৬-২১৫)।
- ৫। অগু দিন সার্বভৌম ছুইটি প্লোকে এটিচতগ্রের স্তব লিখিয়া পাঠাইলেন (২০৩২১৬-২৩০)।
- ৬। আর একদিন সার্বভৌম ভাগবতের একটি শ্লোকের "মুক্তি পদে"র স্থানে "ভক্তি পদে" পরিবর্ত্তন করিয়া উহা পাঠ করিলেন (২।৬।২০৩-২৫০)।

এই ছয়টি ঘটনা কৃষ্ণদাস কবিরাজ কবিকর্ণপূরের চৈত্যচন্দ্রেদয় নাটকের ঘঠাক ও নহাকাব্যের দাদশ সর্গ হইতে লইয়াছেন। নাটকে

### শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

বেদান্ত ও ভাগবত-বিচারের কথাই নাই এবং সার্বভৌমের মৃত্তি শব্দে বিভীষিকার কথাও নাই। শেষোক্ত ঘটনাট সম্পূর্ণভাবে চৈত্যচরিতামূত মহাকারা হইতে লওয়া। বিচারের ঘটনাট করিরাজ গোপামী মহাকারা ও নাটকোক্ত সার্বভৌমের কথা যোগ করিয়া দিয়া বর্ণনা করিয়াছেন। অন্য চারিটি ঘটনা প্রাপ্রি নাটক হইতে অন্দিত। দৃন্টাও দিতেছি। নাটকে আছে— আটিতত্য সার্বভৌম-গৃহে আসিলে,

সার্বভৌম-ভট্টাচার্য: —নমো নারায়ণায়। (ইতি প্রণমতি)
ভগবান্ —কুফে রতিঃ, কুফে মতিঃ।
সার্বভৌম-ভট্টাচার্য: —(স্বগতম্) অহো, অপূর্বমিদমাশংসনম্। তইায়ং
পূর্ববাশ্রমে বৈফগো বা ভবিশ্বতি।

তৈ চ°—"নমো নারায়ণ" বলি নমস্বার কৈল।
"কুন্তে মতিরস্তু" বলি গোসাঞি কহিল॥
শুনি সার্বভৌম মনে বিচার করিল।
বৈক্তব সন্ন্যাসী ইঁহো বচনে জানিল॥ ২।১।৪৭-৪৮

নাটক -

500

সার্বভৌম-ভট্টাচার্যা: আচার্য্য, অয়ং পূর্বাশ্রমে গৌড়ীয়ো বা।
গোপীনাধাচার্য্য: —ভট্টাচার্য্য, পূর্বাশ্রমে নবদ্বীপবর্ত্তিনে। নীলাম্বরচক্রবর্ত্তিনো গৌহিত্রো জগল্লাথমিশ্রপুরন্দবস্থ তমুজঃ।
সা—(সম্বেহাদরম্) অহা, নীলাম্বরচক্রবর্ত্তিনো হি মন্তাতসতীর্থাঃ।
মিশ্রপুরন্দরশ্চ মন্তাতপাদানামতিয়ায়ঃ।

চৈ° চ°—গোপীনাথ আচার্যােরে কহে সার্বভৌম।
গোসাঞির জানিতে চাহি পূর্বাশ্রম॥
গোপীনাথ আচার্য্য কহে নবছীপে গর।
জগরাথ নাম পদবী মিশ্র পুরন্দর॥
বিশ্বস্তর নাম ইহার তার ইহাে পুজ।
নীলাম্বর চক্রবন্ধীর হয়েন দৌহিত্র।



## <u>ী</u>চৈতগুচরিতামৃত

সার্বভৌম কহে নীলাম্বর চক্রবর্তী। বিশারদের সমাধ্যায়ী এই তাঁর খ্যাতি॥ মিশ্র পুরন্দর তাঁর মাক্ত হেন জানি। পিতার সম্বন্ধে দোঁহা পূজা হেন মানি॥

নাটক---

সার্বভৌম —তন্মধ্যৈবং ভণাতে ভদ্রতরসাম্প্রদায়িকভিক্ষোঃ পুনর্যোগপট্টং গ্রাহয়িকা বেদান্তশ্রবণেনায়ং সংস্করণীয়ঃ।

চৈ° চ°—নিরন্তর ইহারে আমি বেদান্ত শুনাইব।
বৈরাগ্য অধৈত নার্গে প্রবেশ করাইব॥
কহেন যদি পুনরপি যোগ পটু দিয়া।
সংস্কার করিয়ে উত্তম সম্প্রদায় আনিয়া॥

নাটক--

গোপীনাথ: — ( সাস্যামিব ) ভট্টাচার্য্য, ন জ্ঞায়তেহক্ত মহিমা ভবদ্ধি:।

ময়া তু যগুদৃষ্টমস্তি তেনাকুমিতময়নীখর এবেতি।

চৈ° চ°—শুনি গোপীনাথ মুকুন্দ দোঁহে ছঃখী হৈলা।
গোপীনাথ আচাথ্য কিছু কহিতে লাগিলা॥
ভট্টাচাৰ্য্য তুমি হঁহার না জান মহিমা।
ভগবন্তা লক্ষণের হঁহাতেই সীমা॥
তাহাতে বিখ্যাত হঁহো পরম ঈশ্বর।
অজ্ঞস্থানে কিছু নহে বিজ্ঞের গোচর॥

নাটক-

শিশ্যাঃ—কেন প্রমাণেন ঈশবোহয়মিতি জ্ঞাতম্ ভবতা १
গোপীনাথঃ—ভগবদমুগ্রহজগ্রজানবিশেষেণ ফলৌকিকেন প্রমাণেন।
ভগবতত্ত্বং লৌকিকেন প্রমাণেন প্রমাত্বং ন শকাতে,
অলৌকিকস্বাৎ।

শিখাঃ—নাখং শাস্তার্থঃ। অনুমানেন ন কথমীখরঃ সাধাতে ? ৪৬ ৩৬২

### জ্রীচৈতন্যচরিতের উপাদান

গোণীনাথ: — ঈশরস্তেন সাধ্যতাং নাম। ন থলু তত্ত্তং সাধ্যিতুং শক্যতে। তত্ত্তদমুগ্রহজ্ঞজানেনৈব, তত্ত প্রমাকরণভাৎ।

শিক্যা: —ক দৃষ্টং তক্ত প্রমাকরণত্বম্ ? গোপীনাথ: —পুরাণবাক্য এব। শিক্যা: —পঠ্যতাম্।

গোপীনাথ: —তথাপি তে দেব পদাস্ক্ষয়-

প্রসাদলেশামুগৃহীত এব হি। জানাতি তথং ভগবদ্মহিদ্যো ন চান্য একোহপি চিরং বিচিম্বন্ ইতি শাস্ত্রাদিবর্ত্ম ॥

শিক্ষা:—তহি শাজৈঃ কিং তদসুগ্ৰহো ন ভবতি গোপীনাথ:—অথ কিম্, কথমঅথা বিচিন্নিত্যক্তম্ ? চৈত চত—

শিশুগণ কহে—ঈশ্বর কহ কোন প্রমাণে।
আচার্যা কহে—বিজ্ঞ মত ঈশ্বর লক্ষণে।
শিশু কহে—ঈশ্বর-তত্ত্ব সাধি অনুমানে।
আচার্যা কহে—অনুমানে নহে ঈশ্বর জ্ঞানে।
ঈশ্বের কুপালেশ হয় ত যাহারে।
সেই ত ঈশ্বর-তত্ত্ব জ্ঞানিবারে পারে।

তথাহি—'তথাপি তে দেব পদামুক্তবয়-' প্রভৃতি।

(২) বেদান্ত বিচারের কথা মহাকাব্যে আছে, নাটকে নাই। মহাকাব্যের নিম্নলখিত শ্লোক কৃষ্ণদাস কবিরাজ অমুবাদ করিয়াছেন।

> অসৌ বিতণ্ডাজ্লনিগ্রহাট্ড-নিরস্তধীরপ্যথ পূর্ববপক্ষম্। চকার বিপ্রঃ প্রভূগা স চাশু স্বসিদ্ধসিদ্ধান্থবতা নিরস্তঃ। মহাকাবা, ১২।২৬



# শ্রীচৈতভাচরিতামৃত

ভট্টাচার্যা পূর্ববপক্ষ অপার করিল। বিভণ্ডা ছল নিগ্রহাদি অনেক উঠাইল। সব খণ্ডি প্রভু নিজ মত সে স্থাপিল।

মহাকাব্য-অনুসারে ভাগবতের শ্লোক লইয়া কোন বিচার হয় নাই। বেদান্ত বিচারের পর সার্বভৌম একাদশ ক্ষত্তের ছইটি শ্লোকের ব্যাখ্যা জিজ্ঞাসা করিলে, শ্রীচৈত্ত্য

> পৃথক পৃথক্ষারবধা চকার ব্যাখ্যাং স প্রছিত্যক্ত শব্ধ । অফীদশার্থাকুভয়োনিশ্যা মহাবিমুগ্রোহভবদেষ বিপ্রঃ ॥ ১২৮১

শীতৈত তা এক এক ট শ্লোকের নয় প্রকার বাাখা। করিলেন এবং সার্বভৌম উভয় শ্লোকের অফাদশ প্রকার অর্থ শুনিয়া বিমুদ্ধ হইলেন। নাটকে ভাগবতের শ্লোক-ব্যাখার কথাই নাই। বৃন্দাবনদাস "আত্মারামাশ্চ মুন্য়ো" শ্লোকের ব্যাখার কথা বলিয়াছেন। ঐ শ্লোক প্রথম ক্ষের,— একাদশ ক্ষের নহে। কবিরাজ গোস্বামা কবিকর্ণপূরের একাদশ ক্ষ ভাগবতের শ্লোক-ব্যাখ্যার কথা না লইয়া বৃন্দাবনদাসোক্ত "আত্মারাম" শ্লোক লইয়াছেন। বৃন্দাবনদাস কিন্তু বলেন যে সার্বভৌম নিজে

ত্রয়োদশ প্রকার গ্রোকার্থ বাখানিয়া। কহিলেন আর শক্তি নাহিক বলিয়া।

ভারপর শ্রীতৈততা শ্লোক ব্যাখ্যা করিলেন। কয় প্রকারের ব্যাখ্যা করিলেন ভাষা বৃন্দাবনদাস বলেন নাই। কৃষ্ণদাস কবিরাজ বলেন শ্রীতৈতত ভট্টাচার্য্য-কৃত "নব অর্থ মধ্যে এক না ছুঁইল" এবং শ্লোকের অফীদশ অর্থ করিলেন।

শ্রীচৈতত্তের তিরোভাবের পর দিন যতই যাইতে লাগিল ততই শ্রীচৈতত্ত-কৃত ভাগবতের শ্লোক-বিশেষের বিভিন্নপ্রকার ব্যাখ্যার সংখ্যা বাড়িতে লাগিল। কবিকর্ণপূর বলিলেন নয় প্রকার, বৃন্দাবনদাস ত্রয়োদশাধিক প্রকার, কৃঞ্জদাস কবিরাজ এই প্রসঙ্গে আঠার প্রকার এবং সনাতন গোস্বামীকে শিক্ষাদান-প্রসঙ্গে একষট্ট প্রকার ব্যাখ্যার কথা উল্লেখ করিলেন ( মধ্যলীলা, ২৪ পরিচ্ছেদ )।

কুষণাস কবিরাজ বেদান্ত-বিচার-প্রসঙ্গে যে সব কথা ঐতিচতত্ত্বর মুখ দিয়া বলাইয়াছেন, তাহার অনেকগুলি কবিকর্ণপূর নাটকে সার্বভৌমের মুখ দিয়া বলাইয়াছেন। চৈতভাচক্রোদয় নাটকে আছে যে সার্বভৌম ঐতিচতভা-প্রদত্ত জগন্নাথের প্রসাদ মুখ না ধুইয়াই খাওয়ার পর, একদিন ঐতিচতভার নিকটে আসিয়া তাঁহাকে ভগবান বলিয়া তব করিলেন। ঐতিচতভা কাণে হাত দিলেন। তারপর সার্বভৌম নিজেই নানা যুক্তির ছারা অবৈত-মত গণ্ডন করিলেন। কুঞ্চদাস কবিরাজ সার্বভৌমের উক্তির অনেকগুলি ঐতিচতভার মুখ দিয়া বলাইয়া সার্বভৌমের যুক্তিকে খণ্ডন করাইয়াছেন। দৃষ্টান্ত দেওয়া যাক। নিম্নে নাটকের যন্ঠ অন্ধ হইতে উদ্ধৃত প্রত্যেকটি অংশ সার্বভিমের উক্তি এবং চরিতামত হইতে উদ্ধৃত প্রত্যেকটি অংশ ঐতিচতভার উক্তি।

নাটক-

যশ্মিন্ রহরাদধ বংহণদামুখ্যার্থবিত্তে সবিশেষতায়াম্। যে নিবিশেষত্বমুদীরয়ন্তি তে নৈব তং সাধ্যিতুং সমর্থাঃ॥

তথাহি—হয়শীর্ষপঞ্জাত্রন্

যা যা শ্রুতির্জনত নির্বিশেষ:, সা সাভিধতে স্বিশেষ্মের। বিচার্যোগে সতি হন্ত তাসাং, প্রায়ো বলীয়ঃ স্বিশেষ্মের ॥

চৈ চ — বেদ পুরাণে কহে এক বৃহত্ত ঈশ্বর লক্ষণ ॥
সবৈধিখা পরিপূর্ণ স্বয়ং ভগবান্।
তারে নিরাকার করি করহ ব্যাখ্যান ॥
নিবিশেষ তারে কহে যেই শ্রুতিগণ।
প্রাকৃত নিষেধি অপ্রাকৃত কর্মে স্থাপন॥

তথাহি-যা যা শতজভ্বতি নিম্ববশেষ



# শ্রীতৈতগুচরিতামৃত

নাটক—তথাহি, 'আনন্দাদ্ধ্যেব খলিমানি ভূতানি জায়ন্তে। আনন্দেনৈব জাতানি জীবন্তি। আনন্দং প্রযন্ত্যভিসংবিশন্তি।' ইত্যাদিক্যা শ্রুতা অপাদানকরণকর্মাদিকারক্ত্রেন বিশেষব্রাপত্তে:।

চৈ° চ°— ত্রক্ষ হইতে জন্মে ত্রক্ষেতে জীবয়।
সেই ত্রক্ষে পুনরপি হয়ে যায় লয়॥
অপাদান করণাধিকরণ কারক তিন।
ভগবানের সবিশেষ এই তিন চিন্॥

শ্রতিতে "আনন্দং প্রযন্ত।ভিসংবিশন্তি" থাকায় নাটকে কর্মকারকের কথা আছে; কিন্তু কৃঞ্দাস কবিরাজ যে হেতু উহার অমুবাদ করিয়াছেন—
"সেই ত্রক্ষে পুনরপি হয়ে যায় লয়" সেই হেতু অধিকরণ কারক লিখিয়াছেন।

নাটক---

"তথা চ একোতি পর্যাত্মেতি ভগবানিতি শব্দাতে" স্বপক্ষরকণগ্রহ গ্রহিলাস্ত মুখ্যার্থাভাবাভাবেংপি লক্ষণয়া নিরূপয়িতুমশক্যমপি নির্বিশেষস্থং যে প্রতিপাদয়ন্তি তেয়াং ছরাগ্রহমাত্রম্।

তৈ চ স্ত্রের মুখ্যার্থ তুমি না কর ব্যাখ্যান।
করনা অর্থেতে তাহা কর আচ্ছাদন॥
উপনিষদ শব্দের সেই মুখ্য অর্থ হয়।
সেই মুখ্য অর্থ ব্যাস সূত্রে সব কয়॥
মুখ্যার্থ ছাড়িয়া কর গৌণার্থ করনা।
অভিধা রস্তি ছাড়ি শব্দের করহ লক্ষণা।

- (৩) সার্বভৌম মৃথ না ধুইয়া প্রসাদ খাইলেন, এ ঘটনা কবিকর্ণপূরের নাটকে ও মহাকাব্যে (১২।৭১) আছে; কবিরাজ গোস্বামী উভয়েরই ভাব লইয়া স্বগ্রন্থে বর্ণনা করিয়াছেন।
- (৪) "বৈরাগাবিছা নিজভক্তিথোগে" প্রভৃতি ছইটি শ্লোক লিখিয়া পাঠানোর কথাও কবিকর্ণপূরের উভয় গ্রন্থেই আছে। কৃষ্ণদাস কবিরাজের

# শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

প্রভু শ্লোক পঢ়ি পত্র চিরিয়া ফেলিল। ভিত্তে দেখি ভক্ত সব শ্লোক কণ্ঠে কৈল।

—ইহা মহাকাব্যের নিম্নলিখিত শ্লোকের অনুবাদ:
ইতি প্রপঠ্যেব বিহন্ত দোর্ভ্যাং
বিদার্য্যামাস কুপাব্ধস্তাম্।
ভিত্তৌ বিলোক্যাথ সমন্তলোকশুকার কঠে মণিবভূদৈব ॥ ১২৮৮

(৫) ভাগবতের শ্লোকের মধ্যে "মৃক্তি পদে" শব্দ "ভক্তি পদে" পরিবর্ত্তন করার কথা মহাকাব্যের ১২৷৯১ শ্লোকে আছে। কৃষ্ণদাস কবিরাজ লিখিয়াছেন যে মহাপ্রভু মৃক্তি শব্দের অল্ল অর্থ করিলেও সার্ববভৌম বলিলেন—

> যন্তপি তোমার অর্থ এই শব্দে কয়। তথাপি অশ্লীল দোষে কহনে না যায়॥

এটি কবিকর্ণপূরের ভাবানুবাদ ; যথা—
তথাপাসভাগৃতিহেতুবন্ধাদল্লীলদোধোহয়মিতি ব্রবীমি। মহাকাব্য, ১২।৯৩

# প্রভুর দক্ষিণাপথ-ভ্রমণ

কবিরাজ গোস্বামী ঐতিচতত্যের দক্ষিণাপথ-ভ্রমণ লিখিতে যাইয়া সপ্তম, অন্তম ও নবম পরিচ্ছেদে নিম্নলিখিত কয়েকটি ঘটনার বর্ণনা করিয়াছেন। এইগুলির মধ্যে ছুইটি ছাড়া আর সবগুলিই হয় কবিকর্ণপূরের গ্রন্থময়ে, না হয় মুরারির কড়চায় আছে। কবিরাজ গোস্বামী ঐ সব ঘটনা লইয়া কোন কোন স্থলে উহাদের উপর একটু অলোকিকতার রং চড়াইয়াছেন।

(ক) দাক্ষিণাত্য-ভ্রমণকালে ঐতিভত্তের প্রেম-প্রচারের প্রণালী সম্বন্ধে মুরারি বলেন—

> কঞ্চিৎ পথি জনং দৃষ্টমালিজৎ শক্তিসকরে:। স তত্র প্রেমবিবশো নৃত্যন্ গায়শুদৈব চ।



# শ্রীচৈতগুচরিতামৃত

নিজগেহং জগাম স প্রেমধারাশতপ্লৃতঃ। অভাঞামজনান্ দৃষ্টা প্রেমালিক্সম কারয়ং॥ তে পুনঃ প্রেমবিশ্রান্তঃ গায়ন্তি চ রমন্তি চ। এবং পরম্পরা যেযু তান্ সর্বান্ সমকারয়ং॥ ১০১৪।১৮-২০

८६० ६०-

কথো দূরে বহি প্রভূ তারে আলিজিয়া।
বিদায় করেন তারে শক্তি সঞ্চারিয়া॥
সেই জন নিজ গ্রামে করয়ে গমন।
কৃষ্ণ বোলে হাসে কান্দে নাচে অপুক্ষণ॥
যারে দেখে তারে কহে কহ কৃষ্ণ নাম।
এই মত বৈষ্ণব কৈল সব নিজ গ্রাম॥
গ্রামান্তর হৈতে দৈবে আইসে যত জন।
তাহার দর্শন-কৃপায় হয় তার সম॥
সেই যাই নিজ গ্রাম বৈষ্ণব করয়।
অন্যগ্রামী আসি তাঁরে দেখি বৈষ্ণব হয়॥ ২াণা৯৬-১০০

- (খ) শ্রীচৈততা যথন দাক্ষিণাতো যাত্রা করেন, তথন সার্বভৌম তাঁহাকে রামানন্দের সহিত দেখা করিতে অন্মরোধ করেন। — চৈ০ চ০, ২।৭।১১-৬২; মহাকাব্য, ১২।১২০
  - (গ) কুর্ম্ম নামক ব্রাহ্মণ-গৃহে ঐীচৈতক্সের ভিক্ষা-গ্রহণ।
     ১৮০ চ০, ২া৭১১৮-১৩২; মহাকাব্য, ২১১০২-১০৫
  - (घ) कुछी वाष्ट्रपादवत्र काहिनो। महाकावा, ১২।১०৮-১১২

কুষ্ণনাস কবিরাজ-পুত ভাগবতের শ্লোক "কাহং দরিদ্রং পাণীয়ান্" — উভয় প্রস্তেই আছে (চৈ° চ°, ২।৭।১৩৩-১৪৪)।



# শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

এই কয়টি ঘটনাই কবিরাজ গোস্বামী তাঁহার পূর্ববর্তীদের লিখিত এত্তে পাইয়াছেন কিন্তু অধাায়ের (৭ম) শেষে বলিয়াছেন—

> চৈত্যলীলার আদি অন্ত নাহি জানি। সেই লিখি যেই মহান্তের মুখে শুনি॥ ২।৭।১৪৯

শ্রীচৈতত তাঁহার ভ্রাতা বিশ্বরূপকে থুঁজিতে দক্ষিণ-ভ্রমণে যাইতেছেন এই কথাটি কোন লিখিত গ্রন্থে নাই—কবিরাজ গোস্বামী কোন লোকের মুখে শুনিয়া থাকিবেন।

- (৩) রামানন্দ-মিলন-সংবাদ লইয়া অন্টম পরিচ্ছেদ লিখিত হইয়াছে। ইহার মূলসূত্র যে কবিকর্গপুরের গ্রন্থ হইতে লওয়া তাহা পূর্বের বিলিয়াছি। কবিরাজ গোস্বামী ভক্তিরসায়তসিক্-বর্ণিত সাধন ও উজ্জ্বলনীলমণি-বর্ণিত সাধাত্র কবিকর্গপুরের বর্ণনার সহিত যোগ করিয়া এই অধ্যায় লিখিয়াছেন। চরিতায়তে লিখিত শ্রীচৈত্যা-রামানন্দ-সংবাদ যে প্রকৃত কথোপকখনের রিপোর্ট নহে, তাহা প্রকারান্তরে কবিরাজ্প গোস্বামী নিজেই বলিয়াছেন। তিনি স্বকৃত গোবিন্দলীলায়তের প্রোক (চৈ চ , হাচা৪০ ও ৪৪-৫৫ প্লোক) রামানন্দের মুখ দিয়া বলাইয়াছেন। তিনি রামানন্দের মুখ দিয়া বলাইয়াছেন। তিনি রামানন্দের মুখ দিয়া বলাইয়াছেন, কিন্তু পরবর্তী অধ্যায়ে কবিরাজ্প নিজেই বলিয়াছেন যে রামানন্দ-মিলনের বহুপরে ক্রুবেগাতার হইতে মহাপ্রভু ব্রক্ত্যাসংহিতা ও কৃক্ত্বর্ণায়ত সংগ্রহ করিয়া আনিয়াছিলেন এবং রামানন্দ তাহা লিখিয়া লইয়াছিলেন।
- (চ) নবম পরিচেছদের প্রথমে কৃষ্ণদাস কবিরাজ দক্ষিণাপথের ধর্ম্মের অবস্থা বর্ণনা করিয়াছেন এবং শ্রীচৈতত্যের প্রচারের ফলে কিরূপে বিভিন্ন মতাবলম্বী কৃষ্ণভজ্জনপরায়ণ হইলেন তাহা বলিয়াছেন। নাটকের সপ্তমাধ্যে আছে, "বপোত্তরমেব দক্ষিণভাং দিশি কিয়ন্তঃ কর্ম্মনিষ্ঠাঃ, কতিচিদেক-জ্ঞাননিষ্ঠা, বিরলা এব সাহতাঃ প্রচুরতরাঃ পাশুপতাঃ, প্রচুরতমাঃ পাষ্ঠিনঃ। ……আক্ষ্মিকপ্রবেশমাত্রেণৈর তন্ত যতিপতেদিশি বিদিশি সানন্দচমৎকারং সমৃঢ়েখাবালর্ম্বতরুণের লোকের দিদৃক্ষযোগনতের পশ্বিত-



# শ্রীচৈতহাচরিতায়ত

মণ্ডলেমণি প্রমন্যনমূভগ্যা বপুল কৈন্যব প্রকটাকৃতং মহিমান্মসূভ্য বিনোপদেশেনাপি কেহোবং স্থাম" ইতি তৎকালসমূদিররবাসনা বশেষেণ জাতপুলকাশ্রবঃ সর্বব এব স্ব-স্ব-মত-প্রচ্যাবেন তৎপথ-প্রবিদ্যা বভূবঃ।"

কবিরাজ গোস্বামী লিখিয়াছেন-

দক্ষিণাদেশের লোক অনেক প্রকার।
কেহো জ্ঞানী কেহো কন্মী পাষণ্ডী অপার॥
সেই সব লোক প্রভুর দর্শন প্রভাবে।
নিজ নিজ মত ছাড়ি হইল বৈঞ্বে॥

- (ছ) ঐতিচতন্ত যাইবার পথে এক ব্রাহ্মণকে রামনাম করিতে দেখেন, ফিরিবার পথে দেখেন যে তিনি কৃষ্ণনাম করিতেছেন। এই ঘটনাটি নাটক হইতে অনুবাদ করিয়া চরিতামতে লিখিত হইয়াছে। এই প্রসঙ্গে করিরাজ গোস্বামী "রমন্তে যোগিনোহনত্তে" "কৃষিভূরিচকঃ শব্দঃ" "সহস্রনামভিস্তল্যম্" এই তিনটি শ্লোক উদ্ধার করিয়াছেন—ঐ তিনটি শ্লোকই নাটকে আছে।
- (জ) চরিতামতে বর্ণিত শীচৈতত্তের বিরুদ্ধে গৌদ্ধদের ষড়যন্ত্রের কাহিনীও নাটক হইতে লওয়া। তবে এই ঘটনা বর্ণনা করিতে যাইয়া কুফাদাস কবিরাজ অলৌকিক ঘটনার অবতারণা করিয়াছেন।

নাটকে আছে—পাষণ্ডিনো 'বৈশ্ববোহয়ং ভবতি ভিক্তগবং-প্রসাদনালৈবেদং গ্রহীয়াতি। তদেতদর্মেনমাশয়ামঃ' ইতি শভোজনয়োগামশুচিতরারং স্থালাাং নিধায় পুরো গলা, স্থামিন্ ভগবং-প্রসাদমিমং গৃহাণেতি
প্রাবিয়িরা সম্চিরেছচিরেণ। ভগবান্ সর্বজ্ঞোহপি ভগবংপ্রসাদনালা
তন্ত্যাগমসহমান এব পাণো গৃহীয়া তৎসহিতমেব পাণিমুভ্যমা চলিতবান্।
সমনন্তরমেব মহতা কেনাপি বিহগেন চঞ্পুটে কুলা তদরং ভগবংকরতলতঃ
সমাদায় সমুভনীনম্। (সপ্তম অন্ধ)

চরিভায়তে ইহার অমুবাদ

প্রভুকে বৈষ্ণব জ্ঞানি বৌদ্ধ ঘর গেলা। সর্ববৌদ্ধ মিলি তবে কুমন্ত্রণা কৈলা। CENTRAL LIBRARY

090

# শ্রীচৈতন্যচরিতের উপাদান

অপবিত্র অন্ন থালিতে করিয়া।
প্রভূ আগে আনিল বিফুপ্রসাদ করিয়া।
হেন কালে মহাকায় এক পক্ষা আইল।
ঠোটে করি অন্ন সহ থালি লঞা গেল॥

কিন্ত এই ঘটনার পূর্বের কৃঞ্চদাস করিরাঞ্জ বর্ণনা করিয়াছেন যে শ্রীচৈতত্তের সহিত দার্শনিক বিচারে বৌদ্ধ পণ্ডিতগণ পরাজিত হইলেন। পূর্বের নাটকের ও তদমুগত চরিতায়তের উক্তি উদ্ধৃত করিয়া দেখাইয়াছি যে অন্যান্য ধর্ম্ম-সম্প্রদায়ের লোকে "বিনোপদেশেন" শ্রীচৈতত্যকে দেখিয়াই বৈশ্বব হইয়ছিলেন। শ্রীচৈতত্যকে তর্কপ্রিয়ন্ধপে অন্ধন করিবার স্কুযোগ জুটিলে, করিরাজ গোস্বামী তাহা ছাড়েন নাই। যাহা হউক নাটকে পাখীতে থালিশুদ্ধ অন্ধ লইয়া যাইবার কথা পর্যান্ত আছে। অত্য কিছু নাই। কিন্তু কৃঞ্চদাস করিরাজ লিখিয়াছেন যে সেই থালি তেরছা ভাবে বৌদ্ধাচার্যাের মাধায় পড়িল, তাহার "মাধা কাটা গেল"। তাহার শিশ্রেরা হাহাকার করিয়া কাদিতে লাগিল এবং প্রভুর পদে শরণ লইল। প্রভু তথন বলিলেন, "গুরুকর্ণে কহুক্ষনাম উচ্চ করি।" কৃষ্ণনাম শুনিয়া বৌদ্ধাচার্য্যের মূর্ছ্ছাভন্ধ হইল এবং "কৃষ্ণ বলি আচার্য্য প্রভুকে করয়ের বিনয়।"

- (ঝ) চরিতামতের বেশ্বট্ট ভট্টের সহিত মিলন-প্রসঙ্গ কবিকর্ণপূরের নাটকে নাই, মহাকাব্যে আছে (১৩।৪—৫)। কবিরাঞ্জ গোস্বামী মহাকাব্যের সূত্র লইয়া ঐ ঘটনা বর্ণনা করিয়াছেন, কিন্তু গোপাল ভট্টের নাম করেন নাই।
- (এঃ) শ্রীরক্ষকেত্রে যেখানে বেন্ধট্ট ভট্ট থাকিতেন সেইথানে এক প্রাহ্মণ অশুক্ষরূপে গীতাপাঠ করিতেন। এই বিপ্রের কাহিনী নাটকে নিম্নলিখিত-রূপে আছে: "এবং কচন স্থলে কমপি প্রাহ্মণমতিমূর্থতয়া শব্দার্থাববাধবিরহেণ শুদ্ধিবর্জিতং ভগবলগীতাং পঠন্তং প্রায়শঃ সর্বৈরের বিহস্তমানমথ চ যাবৎপাঠং তাবদেব পুলকাশ্রুবিবশং বিলোক্য, অহে অয়মুন্তমোহধিকারীতি ভগবাংস্তমবাদীৎ বিশান, যথ পঠাতে তক্ত কোহর্থঃ' ইতি। স প্রত্যুচে



# শ্রীচৈতগুচরিতামৃত

'স্বামিন্ নাহমর্থং কিমপি বেলি, অপি তু পার্থরথন্থং তোত্রপাণিং তমালশ্যামং
শ্রীকৃষ্ণং যাবং পঠামি তাবদেব বিলোক্যামি ইতি। তদা ভগবতোক্তম্
'উত্তমোহধিকারী ভবান্ গীতাপাঠক্ত' ইতি তমালিলিক্ষ। তদমু স খলু
গীতাপাঠজাদানন্দাদপি প্রচুরতরমানন্দমাসাল, 'স্বামিন্ স এব হম্' ইতি
ভূমৌ নিপতা প্রণময়তিশয়-বিহবলো বভ্ব।"

চরিতামূতে ইহার অবিকল অনুবাদ প্রদত্ত হইয়াছে; কেবল বেশীর ভাগ বলা হইয়াছে যে এ ঘটনা শ্রীরক্ষক্ষেত্রে ঘটিয়াছিল; যথা—

> সেই ক্ষেত্রে রহে এক বৈন্ধব ভ্রাহ্মণ। দেবালয়ে বসি করে গীতা আবর্ত্তন ॥ অফ্টাদশাধ্যায় পঢ়ে আনন্দ আবেশে। অশুদ্ধ পঢ়েন—লোকে করে উপহাসে॥ কেহো হাসে, কেহো নিন্দে, তাহা নাহি মানে। আবিষ্ট হইয়া গীতা পঢ়ে আনন্দিত মনে। পুলকারা কম্প সেদ যাবং পঠন। দেখি আনন্দিত হৈল মহাপ্রভুর মন॥ মহপ্রভূ পুছিলা তাঁরে শুন মহাশয়। কোন অর্থ জানি তোমার এত স্থুখ হয়। বিপ্র কছে মূর্থ আমি শব্দার্থ না জানি। শুদ্ধাশুদ্ধ গীত। পঢ়ি গুরু আজা মানি॥ আর্ছনের রথে কৃষ্ণ হঞা রঙ্ভ্ধর। বসিয়াছে হাতে তোত্র শ্যামল স্থলর॥ অভ্রনেরে কহিতেছেন হিত-উপদেশ। ভাছা দেখি হয় মোর আনন্দ অশেষ॥ যাবৎ পঢ়ো তাবৎ পাও তার দরশন। এই লাগি গীতা পাঠ না ছাড়ে মোর মন॥ প্রভু কছে গীতা পাঠে তোমারি অধিকার। ভূমি সে জানহ এই গীতার অর্থসার॥

GENTRAL LIBRARY

500

### গ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

এত বলি সেই বিপ্লে করেন স্তবন ॥ তোমা দেখি তাহা হৈতে বিগুণ ত্থ হয়॥ সেই কৃষ্ণ তুমি হেন মোর মনে লয়॥

- (ট) চরিতামতে তারপর ঝ্যন্ত পর্বতে (মান্ত্রা জেলায়) প্রমানন্দ পুরীর সহিত ঐচিতন্তের সাক্ষাৎকারের কথা বর্ণিত আছে। মুরারির কড়চায় (৩।১৫।১৯-২৫) এবং মহাকাব্যেও ঠিক ঐ ঘটনা আছে (১৩)১৪-১৬); কিন্তু কোথায় ঐ মিলন ঘটিয়াছিল তাহা মুরারির প্রস্থে বা ঐটিচতন্তের তিরোভাবের নয় বৎসর পরে মাত্র লিখিত মহাকাব্যে কথিত হয় নাই।
- (ঠ) সীতাকে রাবণ হরণ করিয়া লইয়া গিয়াছেন বলিয়া রামভক্ত এক-জন ব্রাঙ্গণ থাওয়া দাওয়া ছাড়িয়াছিলেন। ঐতিচত্ত তাঁহাকে কৃশ্মপুরাণের শ্লোক দেখাইয়া প্রবোধ দিলেন যে রাবণ ছায়া সাতা মাত্র লইয়াছিল। এই ঘটনা মহাকাব্যে (১০৯-১০) বর্ণিত হইয়াছে, কৃষ্ণদাস করিরাজ্প তাহাই অবলম্বন করিয়া ঐ বিবরণ চরিতামূতে লিখিয়াছেন। মহাকাব্যে চরিতামূত-ধৃত

"সীত্যারাধিতো বহিং ও

"পরীক্ষাসময়ে বহিং" এই চুইটি শ্লোকও আছে।

চরিতায়তে আছে যে এটিচততা রামেশ্বর আসিয়া কৃর্মপুরাণ শুনেন এবং সেইখানে উক্ত ছইটি শ্লোক-সমন্বিত পুথির পুরাতন পাতাটি আনিয়া সেই বিপ্রকে দেখান। ঐ পাতা দেখিয়া বিপ্র আনন্দিত হইয়া এটিচততাকে বলিলেন, "তুমি সাক্ষাং শ্রীরঘুনন্দন।" মহাকাব্যে কিন্তু আছে যে প্রীটৈততা

> পুরাণপছদয়মিত্যকন্মা-দদর্শৎ স্বাঞ্চলতো বিকৃষ্য ॥

এই ঘটনা কোথায় ঘটিয়াছিল তাহার সন্ধান মহাকাব্যে পাওয়া যায় না; চরিতামূত বলেন উহা দক্ষিণ মথুরায় ঘটিয়াছিল।



- (ড) রক্ষদাস কবিরাজগোস্বামা শ্রীচৈতত্যের অসুচর কৃষ্ণদাসের কাহিনীও মহাকাব্য হইতে লইয়া কিঞ্চিৎ অলৌকিকর যোগ করিয়া বর্ণনা করিয়াছেন। মহাকাব্যের (১৬)২৩-০০) প্রদন্ত বর্ণনার সহিত কবিরাজ-গোস্বামীর প্রদন্ত বিবরণের তিনটি পার্থক। আছে।
- ১। কবিকর্ণপূর বলেন পার্যাণ্ডগণ রুফ্রদাসকে সশরীরে স্বর্গে লইয়া যাইবার লোভ দেখাইয়াছিল। কবিরাজ বলেন "জ্রীধন দেখাইয়া তাঁহার লোভ জন্মাইল।"
- ২। কবিকর্ণপূর বলেন শ্রীচৈতন্য ভটুমারিদিগকে বুঝাইয়া "কথং-কথঞ্চিষ্ম্থীচকার।" কবিরাজগোস্বামী বলেন যে শ্রীচৈতন্মের কথা—

শুনি সব ভট্টমারি উঠে অস্ত্র লঞা।
মারিবারে আইসে সব চারিদিকে ধাঞা॥
তার অস্ত্র তার অঙ্গে পড়ে হাথ হৈতে।
যও খণ্ড হৈল ভট্টমারি পলায় চারিদিকে॥

০। কবিকর্ণপূর বলেন যে ঐতিতত্ত কৃষ্ণদাসকে ছাড়িয়া চলিয়া গেলেন। কবিরাজগোস্বামী বলেন "কেশে ধরি বি প্র লঞা করিলা গমন।" কবিকর্ণপূরও বলেন যে ঐতিচতত্ত কৃষ্ণদাসকে একেবারে ছাড়েন নাই, কেন-না নীলাচলে পৌছিয়া ঐতিচতত সর্বজন সমক্ষে কৃষ্ণদাসকে বর্জন করিলেন; যথা—

অথৈষ নাথঃ পুরতো হামীষাং
সাক্ষিত্রমাধায় চ কৃষ্ণদাসম্।
তং ক্ষেত্রমানীতমতিপ্রথক্তাদগজ্ভেতি সমাধিসসর্জ তত্র ॥ ১৩।৫৪

(b) তারপর কৃষ্ণদাস কবিরাজ সপ্ততাল-বিমোচনরূপ অলোকিক ঘটনাটি (চি° চ°, ২৯)২৮০-২৮৭) মুরারির কড়চা (৩)১৬)১-২) এবং কবিকর্ণপূরের মহাকাব্য (১৩)১৭-১৯) হইতে লইয়াছেন। কোন্ স্থানে ঐ ঘটনা ঘটিয়াছিল তাহা মুরারি বা কবিকর্ণপূর বলেন নাই। কৃষ্ণদাস কবিরাজ বলেন উহা দণ্ডকারণ্যে ঘটিয়াছিল। চরিতামতে শ্রীকৈতক্যের দাক্ষিণাতা-শ্রমণ-শ্রসঞ্চে সর্বসমেত ১৭টি ঘটনা আছে। তন্মধ্যে উল্লিখিত ১৪টি কবিকর্ণপূর ও মুরারির নিকট হইতে লওয়া। বাকী তিনটির মধ্যে একটি হইতেছে শ্রীকৈতক্যের ব্রহ্ম-সংহিতা ও কৃষ্ণকর্ণামত সংগ্রহ করা। কবিরাজ গোস্বামী কর্ণামতের টাকা লিখিয়াছেন, স্তরাং ঐ গ্রন্থ কিরূপে উত্তর-ভারতে আসিল তাহা তাহার জানাই বিশেষ সম্বব।

কৃষ্ণদাস কবিরাজ-বর্ণিত পাশুপুরে (পান্চারপুর) শ্রীচৈতত্যের সহিত শ্রীরঙ্গপুরীর মিলন-বৃত্তান্ত অত্য কোন চরিতগ্রন্থে পাশুয়া যায় না।

তত্ত্বাদী বা মাধ্বমতাবলম্বীদের সহিত বিচারও কৃষ্ণদাস কবিরাজ-কর্তৃক সর্বব্যথমে বর্ণিত হইয়াছে।

শীচৈতগুচরিতায়তের মধালীলার সপ্তম, অফীম ও নবম পরিচেছদ আলোচনা করিয়া দেখা গেল যে কৃষ্ণদাস কবিরাজ কবিকর্ণপুর হইতে প্রায় সবগুলি ঘটনা লইয়াছেন। কিন্তু কবিকর্ণপূর (ছ)-বর্ণিত ঘটনায় লিথিয়াছেন "অভ্যেত্যরগ্যত্র," কবিরাজ বলেন ঐ ঘটনা সিদ্ধবট নামক স্থানে ঘটিয়াছিল। (জ)-বর্ণিত ঘটনা কোন্ স্থলে ঘটিয়াছিল তাহা কবিকর্ণপুর বা কবিরাজ কেহই বলেন নাই। (এঃ)-বণিত ঘটনা কোথায় ঘটিয়াছিল ভাষা কবিকর্ণপুর বলেন নাই, কবিরাজ বলেন শ্রীরঙ্গকৈত্রে। ( ট )-বর্ণিত ঘটনা কবিরাজ ঝঘভ পর্বতে ঘটাইয়াছেন, কিন্তু মহাকাব্যে কোন স্থান-নির্দেশ নাই। (ঠ)-বর্ণিত ঘটনা কবিরাজ দক্ষিণ মথুরায় ঘটিয়াছিল বলিয়াছেন, কিন্তু মহাকাবো কোন স্থান-নির্দেশ নাই। ১৫৪২ খুন্টাব্দে कविकर्गभूत त्य द्यात्मत्र नाम সংগ্রহ করিতে পারেন নাই, :७३৫ थुकीत्क ক্ৰিৱাজগোস্বামী তাহা কোথা হইতে পাইলেন ? কোন লোকমুখে হয়ত শুনিয়া থাকিবেন। সরূপ-দামোদরের কড়চায় ঐ সব স্থানে এবং চরিতামত-লিখিত অভাভ স্থানের নাম থাকিলে, কবিকর্ণপুর তাহা ব্যবহার করিতেন। আরও কথা এই যে স্বরূপ-দামোদর সন্মাসী ছিলেন। সে কালে সন্নাসীরা সমস্ত তীর্থ ভ্রমণ করিতেন, যাঁহারা করিতেন না ভাহারাও তার্থের বিবরণ ভাল করিয়া জানিতেন। যদি স্বরূপ-দামোদর শ্রীচৈতন্য-কর্তৃক দৃষ্ট স্থানগুলির নাম লিখিয়া রাখিতেন, তাহা হইলে ভূগোল-ঘটিত এত বেশী গোলমাল চরিতামতের ভ্রমণ-কাহিনীতে থাকিত না। উক্ত গ্রন্থে ভ্রমণের বর্ণনায় নিম্নলিখিত অসম্ববতা দৃষ্ট হয়।

ক। চবিতামতের মতে শ্রীচৈতত গোদাবরী ষ্টেশনের নিকটবর্তী গোত্রমী গলাদর্শন করিয়া "মল্লিকার্জ্ন তার্থে যাই মহেশ দেখিলেন।" মল্লিকার্জ্ন কুর্ণুলের নিকটবর্তী শ্রীশৈলে। আবার শ্রীরল্পক্ষেত্র হইতে মাছরা জেলায় ঝবভ পর্বত দেখিয়া "মহাপ্রভু চলি আইলা শ্রীশৈলে" (৭১৫৯)। তারপর কুর্ণল জেলার শ্রীশেল হইতে (২৬৫" লাটি. উ.) পুনরায় তাজাের জেলার কামকোলী (১০৫৮" লাটি. উ.) আসিলেন। উত্তরে এক স্থান দেখিয়া দক্ষিণে আসিলেন, আবার সেই স্থান দেখিবার জত্য উত্তরে গেলেন এবং পুনরায় দক্ষিণে আসিলেন। এরপভাবে ভ্রমণ করা সম্ভব মনে হয় না।

থ। গজেন্দ্র-মোক্ষণ তার্থে দেখি বিষ্ণুমূর্ত্তি। পানাগড়ি তার্থে আসি দেখে সাতাপতি॥ চামতাপুরে আসি দেখে শ্রীরামলক্ষণ। ২১৯।২০৪-৫

গজেন্দ্র নোক্ষণ তীর্থ ত্রিবাঙ্কুরের স্থচিন্দ্রাম গ্রামে, পানাগড়ি তিনাভেলি জেলায় নয়ত্রিপদী, তিলকাঞ্চী প্রভৃতি দেখিয়া শ্রীচৈত্য ত্রিবাঙ্কুর জেলায় প্রবেশ করিয়াছিলেন। পুনরায় ত্রিবাঙ্কুর হইতে তিনাভেলি আসা ও তিবাঙ্কুরে ফিরিয়া যাওয়া সম্ভব নহে। আবার ত্রিবাঙ্কুর হইতে তিনাভেলির শ্রীবৈকুঠ দেখিতে যাওয়া, তথা হইতে ত্রিবাঙ্কুরের মলয় পর্বত ও কন্তাকুমারী দেখিয়া পুনরায় তিনাভেলির আমলকীতলা, এবং মল্লার দেশে তমাল কার্ত্তিক দেখার মধ্যে কোন ক্রম পাওয়া যায় না। ত্রিবাঙ্কুর, তিনাভেলি ও মালাবারের স্থানগুলির ক্রম লইয়া আরও গোলমাল আছে।

গ। শ্রীচৈততা উদিপিতে তত্ত্বাদীদের গর্বব চূর্ণ করিয়া ত্রিতকূপ বিশালার করি দরশন। পঞ্চাপ্দরা তীর্থ আইলা শচীর নন্দন॥ ২৫১-৫২ দক্ষিণ কানাড়ার উদিপি হইতে অনন্তপুর জেলার ফয়তার্থে আসা
সম্ব। কিন্তু অনন্তপুর জেলা হইতে ফের ত্রিবাঙ্কুরের উত্তরস্থ কোচিন
রাজ্যের ত্রিতক্পে এবং তথা হইতে একেবারে অবস্তার নামান্তর
বিশালায় আসা এবং বিশালা হইতে পুনরায় অনন্তপুর জেলার
পকাপ্সরা তার্থে আসা একেবারে অসম্ব। ত্রীযুক্ত চারুচক্র ত্রীমানী
মহাশয় "প্রীচৈতল্যদেবের দক্ষিণ-অমণ," প্রথম খণ্ড, নামক পুস্তকে
(আযাঢ়, ৩৬২ প্রকাশিত) বিশালাকে মহাশ্রের গিরিবল্প বিলয়া
হির করিয়াছেন। কিন্তু তথায় কোন প্রকার দেবদেবা নাই। ভাগবতের
(১০৷৭৮/১০) বৈক্ষবতোষণী টাকা হইতে বিশালা অবস্তাতে ছিল জানা
যায়। বৃহত্তাগ্রতায়তের ১ম থণ্ডের ৪র্থ অধ্যায়ের টাকায় "বিশালায়াং
বদর্যাং" অর্থাৎ বদরিকাশ্রামে বলা হইয়াছে। কোনটিই এখানে খাটে না।

য। গোকর্ণ শিব দেখি আইলা ছৈপাহনী। সূপারক তার্থে আইলা ভাসী শিরোমণি॥ ২১৯১২৫৩

গোকর্ণ উত্তর কানাড়ায় ও সূর্পারক থানা জেলায়, কিন্তু ছৈপায়নী কোথায় বলা কঠিন। ভাগবতে আছে বলদেব গোকর্ণে শিব এবং ছৈপায়নী-আর্থা দর্শন করিয়া সূর্পারকে গমন করেন (১০।৭৯।১৯, ২০)। প্রীধর ঐ স্থানে আর্থা-ছৈপায়নী শব্দের ব্যাখ্যায় লিখিয়াছেন আর্থার বিশেষণ বৈপায়নী, "ছাপম্ অয়নং যন্তান্তাম্।" প্রীযুক্ত চারুচক্ত শ্রীমানী অমুমান করেন ছৈপায়নী অর্থে কোম্বের মুম্বা দেবা। যাহা হউক এখানে ভাগবত-বলিত বলদেবের প্রমণ-ক্রমের সঙ্গে কৃষ্ণদাস করিরাজের বর্ণনার ক্রমের মিল দেখিয়া সন্দেহ হয় যে চরিতামুতে প্রদত্ত কতকগুলি স্থানের নাম ভাগবত হইতে গৃহাত হইয়াছে।

ভ। চরিতামত-মতে শ্রীতৈত্য থানা জেলার সূর্পারক পণ্যন্ত যাইয়া আবার দক্ষিণে আসিয়া কোলাপুর (২৯:৫%) এবং কোলাপুর হইতে আবার উত্তর দিকে যাইয়া শোলাপুর জেলার পাতৃপর (পান্টারপুর) আসেন, ইহা সম্ভব নহে। তারপর শ্রীচৈত্য তান্তীক্ষান করিয়া নর্মাদার



# শীচৈতগুচবিতামৃত

তীরে আসেন (৭।২৮২)। নর্মাদা পর্যান্ত আসার পর আবার পশ্চিম ফিরিয়া ত্রোচ্ জেলায় যাইয়া ধনু তীর্থ দেখেন।

"ঋষ্যমুখ্য পর্বতে আইলা দণ্ডক অরণ্যে।" হা৯া২৮৩

ঝয়ানুক পর্বত (Kudramukh) পশ্চিমঘাটের একটি চূড়া, আর দণ্ডক-অরণা থান্দেশে। ভারপর—

প্রস্থ আসি কৈলা পক্পা সরোবরে রান।
পঞ্চবটী আসি তাঁহা করিলা িপ্রাম॥
নাসিক ত্রাম্বক দেখি গোলা ব্রহ্মগিরি।
কুশাবর্তে আইলা যাঁহা জন্মিলা গোদাবরী॥
সপ্ত গোদাবরী দেখি তার্থ বছবতর।
পুনরপি আইলা প্রস্থ বিভানগর॥ ২১৯১১৮৮-১০

কৃষ্ণসাস কবিরাজের ভ্রমণ-বর্ণনায় এত গোল আছে বলিয়াই তিনি লিথিয়াছেন —

তার্থ যাত্রায় তার্গ ক্রম করিতে না পারি।
দক্ষিণ বামে তার্থ গমন হয় ফেরাফেরি॥
অতএব নাম মাত্র করিয়ে গণন।
কহিতে না পারি তার যথা অমুক্রম॥ ২১৯।৭-৫ °

মধালীলার দশম পরিচ্ছেদের প্রথমে দেখি সার্কভৌমের নিকট রাজা প্রতাপরুদ্র শ্রীচৈতত্তার কথা জিজাসা করিতেছেন (২০১১) এবং শ্রীচৈতত্তার প্রত্যাবর্ত্তন-আশায় কাশীমিশ্রের গৃহে তাঁহার বাসস্থান নিদ্দিট

ু নাৰ্ভ বিপিনবিহাৰী পাশন্ত iovinda's Kadehā, a black forgery" নামক প্ৰছে Epigraphica Carnatica হইতে নিম্নিবিত তামনিপি উদ্ধাহ কৰিবাছেন: "When the Mahamandalesvara Virapratapa Vira Achynta Deva Maharaja was ruling the kingdom of the world Chennapa, son of Rayapa Vodeyar, the Mahaprabhu of Sigalnadu granted to our holy guru, Chaitanyadena, the two villages of the Annigeballi athala as a guttiage." তাহার মতে উলিখিত তৈতভাগের, জীকুফ্তৈভভাগালাত ও তাহাকে পান্ধিবাতা-সম্প্রান্ধে প্রায় দুইবানি বেওয়া হইয়াছিল। কিন্তু জীতিতভা বিভয়-নগ্রাধিপতি কুফ্পের রাজ্যুকালে (১৫০৯, ১৫০, গু") স্বিশাপ্ত ক্ষম্ব ক্রিয়াহিলেন। অচ্যুক্তের রাজ্যুকাল ১৫০০, ৪২ গু" আ"। মহাক্রান্ত জীলাস্থরণের তিন বংসর পূর্ণে ধান ক্ষম্ব করিয়াহিলেন বলিয়া মনে হয় না।

করিয়া দিতেছেন। এই অংশ শ্রীচৈতন্যচন্দ্রোদয় নাটকের সপ্তমান্ধের প্রথমাংশের অনুবাদ।

চরিতামতে আছে যে কাশীমিতার গৃহে প্রভু উঠিলেন।

প্রভু চতুভূজমূর্ত্তি তাঁরে দেখাইল। আত্মাসাৎ করি তাঁরে আলিম্বন কৈল॥ ২।১০।০১

নাটকে এইরূপ কোন কথা নাই। কবিকর্ণপূর মহাকাব্যে চারিটি শ্লোকে (১০া৬৪-৬৭) কাশীমিশ্রের সৌভাগ্য বর্ণনা করিয়াছেন, কিন্তু চতুভূজমূর্ত্তি-দর্শনের কথা লেখেন নাই। মুরারি বা বৃন্দাবনদাসও এরূপ কথা বলেন নাই।

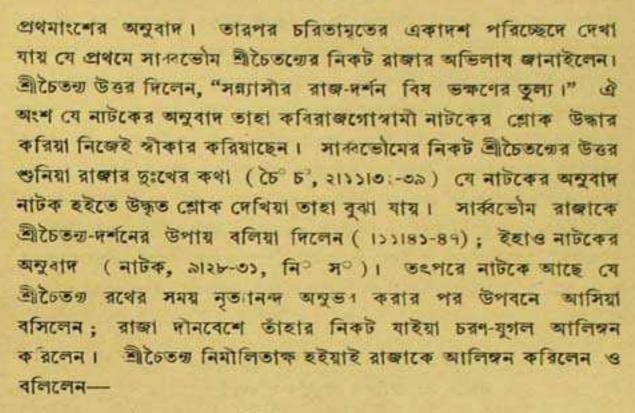
তারপর সার্বভৌম কর্তৃক উৎকলবাসী ভক্তবৃন্দকে ঐীচৈতগ্রের নিকট পরিচয় করাইয়া দেওয়া চরিতামূতে বণিত হইয়াছে (২০০০৯-৮৮)। ঐ অংশ নাটকের অনুবাদ।

চরিতামতে তৎপরে কালাকুঞ্চদাসের বর্জন বর্ণিত হইয়াছে (১০০৬০-৬৪)। উহা মহাকাব্যের ১৩৫৪ শ্লোকের ভাব লইয়া লিখিত। কুঞ্চদাসকে গোড়ে প্রেরণ ও গৌডবাসী ভক্তবৃদ্দের উল্লাস-বর্ণনা কুঞ্চদাস কবিরাজের নিজস্ব।

তারপর চরিতামতে স্বরূপ-দামোদরের, গোবিন্দের ও ব্রহ্মানন্দ ভারতীর সহিত ঐতিচতত্ত্বর প্রথম সাক্ষাৎকার বর্ণিত হইয়াছে। উহা নাটকের (৮١১০-২৩, নি সং) অনুবাদ মাত্র।

# প্রতাপরুদ্র-উদ্ধার-কাহিনীর বিচার

প্রতাপরুদ্র-উন্ধার শ্রীচৈতক্যের জীবনের ও গৌড়ীয় বৈক্ষবধর্ম্মের ইতিহাসের এক প্রধান ঘটনা। ইহা চরিতামূতের মধ্যলীলার একাদশ, ভাদশ, ত্রয়োদশ ও চতুর্দ্দশ পরিচ্ছেদে বর্ণিত হইয়াছে। দশম পরিচ্ছেদের পক্ষম প্রারে রাজা সার্বভাষের নিকট শ্রীচৈতক্যকে দর্শন করিবার অভিলায জানাইয়াছেন। উহা এবং সার্বভৌষের উত্তর, নাটকের সপ্রমাঞ্চের



কো মু রাজনিন্দ্রিয়বাশুক্দ-চরণাখুজন্ ন ভজেৎসর্বতো মৃত্যুরূপাশুমমরোত্তমৈ:। ৮। १৪, নি স

চৈ হল্যচন্দ্রে নাটকের মতে এইখানেই প্রতাপরুদ্রের উদ্ধার হইয়া গেল।
চরিতামতে এই ঘটনার সহিত আরও অনেক কথা যোগ করা
হইয়াছে; যথা—নিত্যানন্দাদি ভক্তগণ ও রামানন্দ রায় প্রতাপরুদ্রকে
দর্শন দিবার জল্ম শ্রীচৈত্যকে অন্মরোধ জানাইলেন; শ্রীচৈত্য রাজদর্শন
সম্পত নহে বলিয়া রাজপুত্রকে দেখা দিতে সম্মত হইলেন; রাজপুত্র
আসিলে প্রভু তাঁহাকে আলিম্বন করিয়া প্রমানন্দ পাইলেন—

তাঁরে দেখি মহাপ্রভুর কৃষ্ণশ্বতি হৈলা।

এবং প্রভাপরুত্র—

পুত্রে আলিম্বন করি প্রেমাবিষ্ট হৈলা।

ভারপর রথযাত্রার সময় শ্রীচৈতন্ম যথন 'মণিমা' বলিয়া উচ্চ ধ্বনি করিতে-ছিলেন তথন রাজা "গুবর্ণমার্জ্জনী লৈয়া করে পথ সম্মার্জ্জন।" "মহাপ্রভূ

# ৩৮০ ত্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

প্রতাপরুদ্রের আগে লাগিলা পড়িতে॥
সম্রমে প্রতাপরুদ্র প্রভুকে ধরিল।
তাঁহাকে দেখিতে প্রভুর বাহুজ্ঞান হৈল॥
রাজা দেখি মহাপ্রভু করেন ধিকার।
ছি ছি বিষয়িস্পর্শ হইল আমার॥

- ¿5° 5°, 213:159:-98

ভক্তের বর্ণনার অতিশয়োক্তির মধ্যে ভগবানের লীলা বুঝা ভার। রাজপুত্রকে আলিজন করিয়া তাঁহার কৃষ্ণস্ত হইল, অথচ আর্ত্ত-ভক্ত রাজাকে অকস্মাৎ স্পর্শ করায় তাঁহার মনে ধিকার জাগিল।

তারপর কবিরাজ গোস্বামী চতুদিশ পরিচ্ছেদে উপবনে রাজার প্রতি শ্রীচৈতভার কুপার কথা লিখিয়াছেন। এ স্থানে মহাকাবোর বর্ণনা তাহার উপজীব্য হইয়াছে। কবিকর্ণপূর মহাকাব্যে লিখিয়াছেন—

> দশুবং ভূবি নিপত্য চ ধুছা পাদপদ্ম-যুগলং গলদশাঃ। অন্তবং সহজমেব মহাত্মা রাসলাত্মমুবর্গ বিশেষম্।



# শ্রীচৈতক্ত রিভায়ত

স স্তব্যাতি তদা সমুদাসে
দোষ যেন দৃঢ়মেব নিবধ্য।
মতবারণকর প্রতিমেন
শ্রীমতা পরমকারণকেন। ১৩৮২-৮৩

# কবিরাজ গোশ্বামী লিখিয়াছেন-

রাসলীলার শ্লোক পড়ি করয়ে স্তবন।
'জয়তি তেথধিকং' অধ্যায় করহ পঠন।
শুনিতে শুনিতে প্রভুর সন্তোষ অপার।
বোল বোল বুলি উচ্চ বোলে বার বার॥
'তব কথামৃতং' শ্লোক রাজা যে পড়িল।
উঠি প্রেমাবেশে প্রভু আলিপন দিল॥

# তারপর কবিরাজ গোস্বামীর নিজম্ব-

তুমি মোরে বহুদিলে অমূল্য রতন।
মোর কিছু দিতে নাহি, দিন্দু আলিঙ্গন।
এতবলি সেই শ্লোক পঢ়ে বার বার।
ছক্ষনার অঞ্চে কম্পা—নেত্রে জলধার॥

-- <138130-53

#### তারপর—

প্রভু কহে—কে তুমি করিলে মোর হিত।
আচন্ধিতে আসি পিয়াও কৃষ্ণ-লীলায়ত।
রাজা কহে—আমি তোমার দাসের অনুদাস।
ভূতোর ভূতা কর মোরে—এই মোর আশ।
তবে মহাপ্রভূ তাঁরে ঐশ্বর্যা দেখাইল।
কাঁহা না কহিও ইহা নিষেধ করিল।

## শ্রীচৈতন্যচরিতের উপাদান

মহাকাব্যের ঐ প্রসঙ্গে আছে---

তং বিহায় নিজগাদ স ভূয়ঃ
কম্বমিতাতিশ্যার্ততনূকঃ।
দাস এষ জন এব তবৈতদেহি দান্তমিতি সোহপি জগাদ॥

কাপি নাহমভিধেয় এব ভো-ভাদৃশেতি নিজগাদ স প্রভুঃ। নির্ভরং প্রমুদিতো ভূশং তথা রুদ্রদেব উদবোচছুৎস্কুকঃ।

সম্বরং তত ইতো মুদিতাত্মা নির্মধাে বহুল-হর্মভারাত্যঃ। ভাগ্যবন্ধিরতিভূরিস্থতেকৈ-দক্ষিণে সতি বিধাে কিমলভাম্॥ ১৩।৮৫-৮৭

কবিকর্ণপূরের এই বর্ণনায় দেখা যায় যে শেষ পর্যান্ত মহাপ্রভু অজ্ঞাতসারেই প্রতাপরুদ্রকে রূপা করিলেন। মহাকাব্যে বা নাটকে কোথাও কবিকর্ণপূর এরূপ লেখেন নাই যে প্রীচৈতন্য প্রতাপরুদ্রকে কোনরূপ ঐশ্বর্যা দেখাইয়া ছিলেন।

মুরারি গুপ্তের বর্ণনায় দেখা যায় যে খ্রীচৈত্য বৃন্দাবন হইতে প্রতাবর্তনের পর প্রতাপরুদ্রকে উদ্ধার করিলেন। মুরারি আবার রাজার (৪।১৬) নিত্যানন্দ-সহ খ্রীচৈত্য্যের কুপা-প্রাপ্তির কথা লিথিয়াছেন। নিত্যানন্দ তাঁহাকে কুপা করিলে বৃন্দাবনদাস তাহা বর্ণনা করিতেন। যাহা হউক মুরারি বলেন খ্রীচৈত্য প্রতাপরুদ্রকে বড়ভুজ্মুর্ত্তি দেখাইয়া-ছিলেন (৪।১৬)২০)।

কৃষণাস কবিরাজ মুরারিগুপ্ত-বর্ণিত প্রতাপরুদ্র-উদ্ধার-লীলার বিবরণ একটুক্ও গ্রহণ করেন নাই, কেবলমাত্র ঐ বড্ভুজমূর্ত্তি প্রদর্শন রূপ ঐথ্যা বর্ণনাটুকু লইলেন। ঐ বিষয়ে বুন্দাবনদাসের ( চৈ ভা , ৩)৫ )



# শ্রীচৈতগ্যচরিতায়ত

বর্ণনারও কোন অংশ তিনি গ্রহণ করেন নাই। বুন্দাবনদাসও প্রতাপ-রুদ্রকে কোনরূপ ঐশ্বর্যা দেখানোর কথা লেখেন নাই।

# ত্রীতৈতত্তের গোড়-ভ্রমণের পূর্ব্ব পর্যান্ত নীলাচল-লীলা

শ্রীচৈত শুচরিতায়তের মধালীলার একাদশ পরিছেদে গোপীনাথ আচার্য্য নীলাচলে আগত গৌড়ীয় ভক্তগণের পরিচয় দিতেছেন। এই বর্ণনা (২০১ ৬০-৯৪) নাটকের (৮০০-৯৪) অপুরাদ। ঐ পরিছেদে বর্ণিত গৌড়ীয় ভক্তগণের সহিত প্রভুর মিলন (২০১১১১২-১৪৫) নাটকের (৩০৮-৪১; নি সা) ভাব লাইয়া লিখিত। মুরারির দৈশ্র (১৮০-৪১; নি সা) ভাব লাইয়া লিখিত। মুরারির দৈশ্র (১৮০-১১২) ছায়া লাইয়া লিখিত। হরিদাসের আগমন মহাকাব্যে বর্ণিত হইয়াছে, কিন্তু তাঁহার দৈশ্র-বর্ণনা ক্রিরাজগোস্বামীর নিজস্ব। তারপর ভক্তগণ-সহ শ্রীচৈতন্তের ক্রিন, নাটকের (৮৪৭-৫০) ব্রিরণ লাইয়া চরিতামূতে লিখিত হইয়াছে।

চরিতামৃতের ঘাদশ পরিচ্ছেদে বর্ণিত গুণ্ডিচামার্জ্জন-লীলা (২।১২।৬৬-১১৭) নাটকের দশমাঙ্কের (৩০-৪০) ভাব লইয়া লিখিত। তুইটি উদাহরণ দিতেছি।

(১) কেচিব্রংগদ-পদ্ধজোপরি ঘটেঃ সিঞ্জি সংতোষত স্তংকেহপঞ্জিলিনা পিবস্তি দদতে কেচিচ্চ মূর্যগ্রপি॥ —না°, ১০।৩৬, নি° স°

> হেনকালে এক গৌড়িয়া সুবৃদ্ধি সরল। প্রভুর চরণযুগে দিল ঘট জল॥ সেই জল লইয়া আপনে পান কৈল। তাহা দেখি প্রভুর মনে দুঃখ রোষ হৈল।

নভিত্বা ক্ষণমেব চারুমধুরং গৌরো হরিনর্ত্যাং-চল্লেহছৈত-তনুজনেকমধুরং গোপালদাসাভিধম্।



S-40

### শ্রীচৈতনাচরিতের উপাদান

নৃত্যন্নের স মুর্চ্ছিতঃ সুখবশাদ্দেহান্তরং যদ্শিব।-দৈতে থিছাতি পাণি-পদ্ম-বলনাদ্দেবঃ স তং প্রাণয়ং ॥

# চৈ° চ°, অনুবাদ—

এইমত কথোক্ষণ নৃত্য করিয়া।
বিশ্রাম করিল প্রভু সময় বুঝিয়া।
আচার্য্য গোসাঞির পুত্র শ্রীগোপাল নাম।
নৃত্য করিতে তারে আজ্ঞা দিলা ভগবান্।
প্রেমাবেশে নৃত্য তেঁহো হইলা মুদ্ভিতে।
অচেতন হঞা তেঁহ পড়িলা ভূমিতে।
আস্তে ব্যাস্তে আচার্য্য গোসাঞি তারে লইল কোণে
শ্বাস রহিত দেখি আচার্য্য হইল বিকলে।

# কৃষ্ণদাস কবিরাজের নিজন্ব—

নৃসিংহের মন্ত্র পঢ়ি মারে জল ঝাঁটি।

হুহুস্কার শব্দে একাণ্ড যায় ফাটি॥

অনেক করিল তবু না হয় চেতন।

আচার্য্য কান্দেন, কান্দেন সব ভক্তগণ॥

তবে মহাপ্রভু তার বুকে হাত দিল।

উঠহ গোপাল বলি উচ্চন্মরে কৈল॥

শুনিতেই গোপালের হইল চেতন।

হরি বলি নৃত্য করে সব ভক্তগণ।

এই লীলা বর্ণিয়াছেন দাসবৃন্দাবন।

অতএব সংক্ষেপ করি করিলা বর্ণন॥

এই লীলা বৃন্দাবনদাস বর্ণন করেন নাই। উদ্ধৃত চুইটি অংশ পড়িয়া কাহারও সন্দেহ থাকিতে পারে না যে বিতীয়টি প্রথমটির অমুবাদ।



# শ্রীচৈতগুচরিতামৃত .

এই পরিজেদে বর্ণিত নিত্যানন্দ-অদ্বৈতের কোন্দল কুঞ্চাস কবিরাজের নিজস। "আর দিন জগলাথের নেত্রোংসব নাম" প্রভৃতি নাটকের দশনাক্ষের সূত্র লইয়া লিখিত।

মধ্যলালার ত্রয়োদশ পরিচ্ছেদে, যাহাতে ঐতিচতত্ত্বের রথাগ্রে নর্তন, সাত সম্প্রদায়ের কার্তন, রাসের প্রক্রিকের তার যুগপৎ প্রীচৈতত্ত্বের "এককালে সাত ঠাঞি করেন বিলাস"—

> সভে কহে প্রভু মাছেন এই সম্প্রদায়। অক্স ঠাঞি নাহি যায় আমার দয়ায়॥

জগন্নাথ "কীর্ত্তন দেখেন রথ করিয়া স্থগিত" প্রভৃতি অলৌকিক ঘটনা কবিরাজ গোস্বামী জনশ্রুতি হইতে লিখিয়াহেন। এরূপ অলৌকিক ঘটনার কথা মুরারি, কবিকর্ণপূর ও বুলাবনদাস কিছুই জানিতেন না। চতুর্দ্ধশ পরিচ্ছেদে প্রতাপরুদ্ধের উদ্ধার বর্ণনার পর কবিরাজ গোস্বামী শ্রীতৈতগ্রের বলগণ্ডিভোগের কথা লিখিয়াছেন। ভোগের বিবিধ আহার্য্য দ্রব্যের তালিকা তাঁহার নিজস্ব। যথন মন্ত হস্তিগণ্ও রথ টানিয়া লইয়া যাইতে পারিতেছে না, তথন শ্রীতৈতগ্র

আপনে রথের পাছে ঠেলে মাথা দিয়া। হড় হড় করি রথ চলিল ধাইয়া॥ ২।১৪।৫৩

এইরূপ ঘটনা মুরারি, কবিকর্ণপুর ও বুন্দাবনদাস বর্ণনা করেন নাই।

শীরূপ গোস্বামী বা রমুনাথদাসও স্তবের মধ্যে এই ঘটনার কোন ইন্সিত
করেন নাই। ভক্তগণ প্রভুকে কিরূপে নিমন্ত্রণ করিয়া খাওয়াইতেন,
ভাহার বর্ণনাও কবিরাজ গোস্বামীর নিজস্ব।

তারপর চরিতামতে ইক্সতাম সরোবরে জলকেলির কথা আছে।



### গ্রীচৈতন্মচরিতের উপাদান

ঐ অংশ মহাকাব্য অবলম্বন করিয়া লিখিত। একটি দৃষ্টাস্ত দিতেছি। মহাকাব্য:

> স্থানিপাত্য রূপানিধিন্তদা প্রভূমবৈতমধোজলান্তরে। তত্তপর্যাপি সালসঃ স্বয়ং পরিস্থায়ঃ স যথো সনিদ্রতাম্॥ ১৮/১৪

হাসি মহাপ্রভু তবে অবৈতে আনিল।
জলের উপরে তাঁরে শেষ শ্যা। কৈল।
আপনে তাহার উপর কবিল শ্যন।
শেষ শায়িলীলা প্রভু কৈল প্রকটন। ২। ৪৮৬-৮৭

চতুর্দশ পরিচ্ছেদের ১১১ হইতে ২৮ প্রার প্রান্ত হোড়া পঞ্চমীর ঘটনা-উপলকে নায়িকা-ভেদের বর্ণনা আছে। ঐ বর্ণনা যে "উজ্জ্বলনীলমণি" হইতে লওয়া সে বিষয়ে কোন সন্দেহ নাই, যদিও স্বরূপ-দামোদরের মুখ দিয়া ধীরা, অধীরা ধীরা-ধীরা, মুগ্ধা, প্রগল্ভা, বামা প্রভূতির লক্ষণ বলান হইয়াছে।

পঞ্চদশ পরিচ্ছেদে বর্ণিত কৃঞ্জন্ম থাতার বিবরণ মহাকাবের ১৮/৪৮-৫১ অবলম্বনে লিখিত ; যথা—

टेंड हें :

তবে লগুড় লৈয়া প্রভু ফিরাইতে লাগিলা। বার বার আকাশে ফেলি লুফিয়া ধরিলা। শিরের উপরে পৃষ্ঠে সম্মুখে ছই পাশে। পাদমধ্যে ফিরায় লগুড়, দেখি লোক হাসে।

মহাকাব্য:

কণমূৎক্ষিপতি কণং পদা ক্ষিপতি ভাময়তি কণন্ত তম্। ভুক্তকক্ষ-তটোরু রামুপাৎ কমলাধোহধ ইতস্ততঃ প্রভুঃ॥ ১৮।৫০

নিত্যানন্দকে গৌড়ে প্রেরণের কাহিনার সূত্র বৃন্দাবনদাস হইতে লওয়া।



# শ্রীচৈতহাচরিতায়ত

কিন্তু শ্রীটেততা যে শচীমাতার জত বস্ত্র-প্রসাদ প্রেরণ করিয়াছিলেন এবং তাঁহাকে বলিয়া পাঠাইয়াছিলেন যে

> নিতা যাই দেখি মুই তাঁহার চরণে। স্কৃত্তি জ্ঞানে তেঁহো তাহা সত্য নাহি মানে।

এবং তিনি নীলাচলে থাকিলেও শচীর রন্ধন আবির্ভাব রূপে ভোজন করেন, এ সব কথা চরিতামত ছাড়া অন্য কোন চরিতগ্রন্থে নাই।

পঞ্চদশ পরিক্ষেদ-বর্ণিত অত্যাত্য ঘটনা কৃষ্ণদাস কবিরাজের নিজের সংগ্রহ। ঐ পরিচ্ছেদের শেষ দিকে একটি অলৌকিক ঘটনা আছে। সার্ববভৌমের জামাতা অমোঘ শ্রীচৈতত্তের ভোজনের পরিমাণ দেখিয়া বলিয়াছিলেন—

> এই অল্লে তৃপ্ত হয় দশ বার জন। একেলা সন্ন্যাসী করে এতেক ভোজন॥ ২০১৫। ৪৫

এই অপরাধে তাঁহার বিস্চিকা হইয়াছিল। শ্রীচৈততা আসিয়া তাঁহার বুকে হাত দিলেন ও কহিলেন—

উঠহ অমোঘ তুমি কহ কৃষ্ণ নাম।
অচিরে তোমাকে কুপা করিবে ভগবান্॥
শুনি "কৃষ্ণ কৃষ্ণ" বলি অমোঘ উঠিলা।
প্রেমোন্মাদে মন্ত হৈয়া নাচিতে লাগিলা॥

মধালালার যোড়শ পরিচ্ছেদের ঘটনা প্রধানতঃ ঐতিচতগুচন্দ্রোদয় নাটকের দশনাক্ষ হইতে গৃহীত। গৌড়ীয় ভক্তদের নীলাচলে আগমন-বর্ণনা নাটকের দশনাক্ষের প্রথম অংশের ভাব লইয়া লিখিত। একটি দৃষ্টান্ত দেওয়া যাউক।

নাউকে—"তেষামভিভাৰকতয়া শিবানন্দনামা কশ্চিত্ততৈর ভগৰতঃ পার্বদো বর্মনঃ কণ্টকায়মানানাং ঘটুপালানাং ঘটুদেয়াদিনিম্বিম নিবারক আচণ্ডালমপি প্রতিপালা নয়তি॥"

# জীচৈতভাচরিতের উপাদান

শিবানন্দ সেন করে সব সমাধানে।
ঘাটিয়াল প্রবোধি দৈন সভারে বাসস্থানে।
ভক্ষ্য দিয়া করেন সভার সর্বত্র পালনে।
পরম আনন্দে যান প্রভুর দর্শনে॥

# গ্রীতৈতভার গৌড়ে আগমন

বোড়শ পরিজেদে শ্রীচৈতত্তের গৌড়ে আগমন বর্ণিত ছইয়াছে। ঐ ঘটনাও নাটক অনুসরণ করিয়া লেখা। কয়েকটি উদাহরণ দিতেছি।

(ক) তুরস্করাজার বা রাজপুরুষের সাহায্যে প্রভুর উড়িয়া সীমানা হইতে পানিহাটা আগমন—

না ৯।২৬-১৯ (বা সা ); চৈ চ ২।১৬।১৫৪-১৯৯। কবিরাজ মূল ঘটনা নাটক হইতে লইলেও কিছু নৃতন কথা বলিয়াছেন—

যথা-

यवन विलल, "विधि स्माद्र हिन्दूक्ल दकन ना अमाहित्ल।"

নাটকে এক নৌকায় প্রভু ও নৌকান্তরে তুর্কীর গমন বর্ণিত আছে। কিন্তু চরিতায়তে আছে "দশনোকা ভরি দৈত সঙ্গে নিল।"

(থ) শ্রীচৈতত্যের গলাতীর হইতে শ্রীবাসের বাড়ী যাইবার পথ প্রভুর চরণধূলি লওয়ার জন্ম গর্ভ হইয়া গেল।

— ना २१०) ; देव व ११८६१३४८-४४

(গ) ভ্সেন সাহ-কর্তৃক কেশব ছত্রীকে ঐাচৈতত্তের সঙ্গে অভ লোক যাওয়ার কথা জিজ্ঞাসা—

—না ৯108; টে° চ° ২151:৫৭-৬৪

গদাধর গোস্বামি-কর্তৃক প্রভুর অনুসরণ এবং প্রভু-কর্তৃক তাঁহার প্রবোধন ও শান্তিপুরে রখুনাথদাসের সহিত ঐচিতভ্যের মিলন-ঘটনা-বর্ণনা কবিরাজ গোস্বামীর নিজস্ব। রখুনাথদাসের কাহিনী-সম্বন্ধে কবিরাজ গোস্বামীর বর্ণনা নির্ভরযোগ্য।



চরিতামতের সগুদশ পরিচ্ছেদে প্রভুর বৃন্দাবন-যাত্রা, প্রকাশানন্দ-কাহিনীর কাহিনী ও বৃন্দাবন-দর্শন বর্ণিত হইয়াছে। প্রকাশানন্দ-কাহিনীর ঐতিহাসিকতা পূর্বেই বিচার করিয়াছি। প্রভুর বৃন্দাবন-যাত্রার কোন বিশদ বিবরণ কৃঞ্জাস কবিরাজের পূর্বের কেছ লেখেন নাই। কবিরাজ গোস্থামী বলেন—

প্রভু কহে 'কৃষ্ণ কৃষ্ণ', ব্যাগ্র উঠিল। কৃষ্ণ কৃষ্ণ কহি ব্যাগ্র নাচিতে লাগিল।

আবার--

কৃষ্ণ কৃষ্ণ কহ করি প্রভু যবে কৈল।
কৃষ্ণ কহি ব্যাত্র মৃগ নাচিতে লাগিল।
নাচে-কুন্দে ব্যাত্রগণ মৃগীগণ সঙ্গে।
বলভদ্র ভট্টাচার্য্য দেখে অপূর্বর রঙ্গে।
ব্যাত্র মৃগ অন্তোল্যে করে আলিজন।
মৃথে মৃথ দিয়া করে অন্তোল্যে চুম্বন।

2129109-02

মুরারি গুপ্ত রুন্দাবন-যাত্রার সংক্ষিপ্ত ও রুন্দাবন-দর্শনের অতি বিশদ বিবরণ দিয়াছেন। তৈতগুচপ্রোদয় নাটকে রুন্দাবন-যাত্রা সংক্ষিপ্তভাবে বণিত হইয়াছে। রুন্দাবন যাত্রা সম্বন্ধে মুরারি গুপ্ত বলেন—

> সোৎকণ্ঠং ধাবতন্তক্ত মন্ত্রসিংহত বৈ প্রভাঃ সন্ধিনো বলদেবাছা ধাবন্তি তমসুত্রতাঃ। ৪।১।১১

কৃষ্ণদাস কবিরাজ বলদেবের নাম বলভদ্র ভট্টাচার্য্য লিণিয়াছেন। নাটকে আছে যে প্রভুর সঙ্গে—

> ভিক্ষাযোগ্যাঃ কিয়ন্তো বিপ্রাঃ প্রেষিতাঃ সন্তি। নবমান্ধ ১৮, নি॰ সং

#### ঐতিতক্তচরিতের উপাদান

900

কুফদাস কবিরাজ লিখিয়াছেন-

এই বিপ্র বহি নিবে বক্তাম্বৃভাজন। ভট্টাচার্য্য ভিকা দিবে করি ভিকাটন॥ ২০১৭১৮

মুরারির বর্ণনায় কাশীতে প্রভুর সহিত তপন মিশ্র ও তৎ পুত্র রঘুনাথের (ভট্ট) মিলন, ও প্রভুর চক্রশেখর বৈছের গৃহে স্থিতির কথা পাওয়া যায়। তিনি বলেন যে প্রভু কাশীবাসিজনকে হরিভক্তরত করিয়া-ছিলেন। প্রকাশানন্দের কথা মুরারি কিছু লেখেন নাই।

মুরারির কড়চায় আছে-

ততঃ প্রয়াগমাসান্ত দৃষ্টা শ্রীমাধবং প্রভু:।
প্রেমানন্দ-স্থাপূর্ণো ননর্ত স্বজনেঃ সহ ॥
শ্রীলাক্ষরবটং দৃষ্টা ত্রিবেণীলানমাচরন্।
যমুনায়াঞ্চ সংমঙ্জা নৃত্যন্ বারেন্দ্রলীলয়া ॥
হস্বারগস্তারারাবৈঃ প্রেমাশ্রুপ্রবিকর্তঃ।
ব্রহ্মন্ ক্রমান্তমূন্তীয়্য বনং চাগ্রং দদর্শ হ ॥ ৪।২।১-৩

# চরিতামতে আছে---

প্রয়াগে আসিয়া প্রভু কৈল ত্রিবেণীরান।
মাধবে দেখিয়া প্রেমে কৈল নৃত্যগান॥
যমুনা দেখিয়া প্রেমে পড়ে কাঁপ দিয়া।
আন্তে বাত্তে ভট্টাচার্য্য উঠায় ধরিয়া॥
এই মত তিন দিন প্রয়াগ রহিলা।
কৃষ্ণনাম প্রেম দিয়া লোক নিস্তারিলা॥
মথুরা চলিতে প্রেমে বাঁহা রহি যায়।
কৃষ্ণনাম প্রেম দিয়া লোকেরে নাচায়॥

মুরারি বলেন এক প্রাক্ষণ শ্রীচৈতভাকে বৃন্দাবনের বিভিন্ন ভান দেখাইয়া ছিলেন। কবিরাজ গোস্বামী সেই প্রাক্ষণের নাম বলেন নাই বটে, কিন্তু তিনি যে মাধ্বেন্দ্র পুরীর শিশু হইয়াছিলেন তাহা জানাইয়াছেন।



# শ্রীচৈতগুচরিতামৃত

রন্দাবন-দর্শনে প্রভুর যে ভাবোন্মাদের চিত্র কবিরাঞ্চ গোস্বামী আঁকিয়াছেন তাহার কিছু উপাদান নাটক হইতে মিলিয়াছিল। এই প্রসঙ্গে কবিরাজ গোস্বামী স্বকৃত গোবিন্দলীলায়তের তিনটি শ্লোক উন্ধার করিয়াছেন।

# গোপাল বিতাহের বিবরণ

মধ্যলালার অফাদশ পরিচ্ছেদে ঐতিতত্তের বৃন্দাবন-দর্শন-বর্ণনা-উপলক্ষে কবিরাজ গোস্বামী গোপাল বিগ্রহের বিবরণ লিপিয়াছেন। তিনি তৎপূর্বের চতুর্থ পরিচ্ছেদে মাধ্বেন্দ্র পুরী-কর্তৃক গোবর্দ্ধন পর্বতে গোপাল বিগ্রহের উদ্ধার ও প্রতিষ্ঠার বর্ণনা করিয়াছেন। এই প্রসক্ষে তিনি লিখিয়াছেন—

গোড় হৈতে আইলা ছই বৈরাগী ব্রাহ্মণ।
পুরী গোঁসাই রাখিল তাঁরে করিয়া যতন॥
সেই ছয়ে শিশ্য করি সেবা সমর্পিল।
রাজ সেবা হয় পুরীর আনন্দ বাড়িল॥ ১

বলভাচারী সম্প্রদায় দাবী করেন যে শ্রীটেতন্মের পরম গুরু মাধবেন্দ্র পুরীকে বলভাচার্যাই গোপাল বা শ্রীনাথের সেবার ভার অর্পণ করিয়া-ছিলেন, অর্থাং মাধবেন্দ্র বলভাচার্য্যের অনুগত ছিলেন। আর চরিতামূতের মতে বল্লভাচার্য্য শ্রীটৈতন্মের অনুগত হইয়াছিলেন। এই দুই পরস্পর বিরোধী উক্তির মধ্যে কোনটি সভা বিচার করা যাউক।

ষোড়শ শতাকীতে বল্লভাচার্যা ও ঐতিচতগুদেব প্রায় একই সময়ে প্রেমধর্ম্ম প্রচার করিয়া ছইটি প্রবল ধর্ম্ম-সম্প্রদায়ের স্বস্থি করেন। বল্লভাচার্যা (১৪°৯-১৫৩১ গু° অ°) বয়সে ঐতিচতগু অপেকা সাত

১ ভা" দীনেশচক্র নেব এট বিবরণ দেখিলা অনুমান করেন যে মাধবেক্র পূরী বাঙ্গালী ভিলেন।
কিন্ত টাওন মহাশয় "শীনাগজীকী আকটা বাঙা" নামক পৃথির উপর নির্ভর করিয়া লিপিয়াছেল—

<sup>&</sup>quot;Vallabhacharya had entrusted Madhavendra Puri, a Tailang Brahman Sannyasi of the Madhva School, with the duty of worshipping Sri Nath on the mount of Govardhan" (Allahabad University Studies, Vol. xi, 1835).

বংসরের বড়। ঐতিচততের সহিত সাক্ষাংকারের পূর্বেই তিনি একটি বৃহৎ
ধর্মা-সম্প্রদায় গঠন ও বছ প্রস্থ রচনা করেন। ঐতিচততের সহিত মিলনের
ফলে শেষ বয়সে তাঁহার ধর্মানতের কিছু পরিবর্তন হইয়াছিল বলিয়া
ঐতিচততিরিতায়তে (অন্তালালা, সপ্তম পরিক্ছেদ) লিখিত আছে।
চরিতায়তের এই বর্ণনা সতা বলিয়া মনে হয়; কেন-না ( . ) বল্লভাচার্যা
ঐামন্তাগবতের প্রবোধিনা টাকায় বা "যোড়শ প্রস্তে" ঐারাধার নাম উল্লেখ
করেন নাই। কিন্তু "কৃষ্ণপ্রেমায়তে" ও "কৃষ্ণস্তবে" রাধার কথা উল্লেখ
করিয়াছেন। হয়ত "যোড়শ প্রন্ত" ঐতিচততের সহিত সাক্ষাংকারের
পূর্বেব লেখা; আর উক্ত স্থোত ছুইটি ঐাতিচততের কুপাপ্রাপ্তির পরে
লেখা। ( ২ ) তিনি পরলোকগমনের পূর্বেব পুক্রদিগকে নিম্নলিখিত
শিক্ষা-শ্রোক বলিয়াছেন—

ময়ি চেদন্তি বিখাস: শ্রীগোণীজনবল্লভে তদা কতাথা যুয়ং হি শোচনীয়ং ন কহিচিৎ। মুক্তিহিতাগুথারূপং স্বরূপেণ ব্যবস্থিতিঃ।

(Von Glasenapp কর্ত্বক Z. D. M. G. ১৯৩৪ রুণ অণ, পৃণ্ড১১) বল্লভাচার্য্য সারাজাবন বালগোপালের উপাসনা প্রচার করিয়াছেন; কিন্তু দেখিতেছি শেষ সময়ে "গোপীজনবল্লভ" আন্তা স্থাপন করিতেছেন। কিলোর-গোপাল সম্বন্ধেই "গোপীজনবল্লভ" বিশেষণ প্রযোজ্য, বালগোপাল-সম্বন্ধে নহে। শ্রীচৈততা বা গদাধর পণ্ডিত গোস্বামীর প্রভাবেই তাহার মতের পরিবর্ত্তন হইয়াছিল বলিয়া মনে হয়। (৩) বল্লভাচার্য্যের পুল্র বিট্ঠলেশ্বর শ্রীরাধাকে বহুস্থানে 'স্বামিনি' বলিয়া সম্বোধন করিয়াছেন। বোধ হয় শেষ বয়সে পিতার মত-পরিবর্ত্তন-হেতু পুল্রের লেয়ায় শ্রীরাধা এরূপ প্রাধাত্য পাইয়াছেন। (৪) কবিকর্গপুর ১৫৭৬ গুটান্দে লিখিত গৌরগণোদ্দেশদীপিকায় বল্লভাচার্য্যকে গৌরাজের পরিকর বলিয়া ধরিয়াছেন এবং শুক্দেব বলিয়া তাহার তত্ত্ব নিরূপণ করিয়াছেন। উক্ত বল্লভাচার্য্য যদি ভাগবতের স্থ্বোধিনী টীকার রচয়িতা না হইতেন, তাহা হইলে তাহাকে "শুক্দেব" বলার কোন অর্থ হইভ

না। যত্নাথ দাস "শাখানির্গায়তে" বল্লভাচান্তি গদাধর-শাখাভুক্ত বলিয়া বর্ণনা করিয়াছেন। এই বিবরণের সহিত চরিতায়তের মিল আছে। শ্রীজীবের "বৈষ্ণব-বন্দনায়" বল্লভাচাগ্যের বন্দনা আছে। পরে যখন শ্রীনাথের বিগ্রহ লইয়া উভয় সম্প্রদায়ের মধ্যে বিবাদ উপস্থিত হয়, তখন হয়ত গৌড়ায় সম্প্রদায় তাঁহার নাম গৌরগণের মধ্যে উল্লেখ করিতে অস্বীকার করেন। তজ্জ্লাই দেবকানন্দনের ও বিতায় বুন্দাবনদাসের বৈষ্ণববন্দনায় ইহার নাম দেওয়া হয় নাই। কিন্তু দেবকানন্দনের বৃহৎ-বৈষ্ণববন্দনার পুথিতে বল্লভাচার্য্যের নাম আছে।

যথন শ্রীচৈততা বুনদাবনে প্রমন করেন তথন — অন্নকৃট নাম গ্রামে গোপালের স্থিতি। রাজপুত লোকের সেই গ্রামেতে বসতি॥

এই সময়ে গৌড়ায়া ব্রাক্ষণই গোপালের সেবাধিকারী ছিলেন কি না জানা যায় না। গোপাল তথন মেচ্ছভয়ে গ্রাম হইতে গ্রামন্তরে পায়ন করিয়া আত্মরক্ষা করিতেছিলেন। শ্রীচৈত্য তাহাকে গাঁঠুলি গ্রামে দর্শন করেন। শ্রীরূপের যখন রুদ্ধরয়স্, তথন তাহার গোপাল-দর্শনের ইচ্ছা হইল। তথন—

> নেক্ছভয়ে আইল গোপাল মথুরা নগরে। এক মাস রহিল বিট্ঠলেশ্বর ঘরে॥ তবে রূপ গোসাঞি সব নিজ্ঞগণ লঞা। এক মাস দর্শন কৈলা মথুরা রহিঞা॥

শ্রীরূপের সঙ্গে গোপাল ভট্ট, রঘুনাথদাস, রঘুনাথ ভট্ট, লোকনাথ, ভূগর্ভ, শ্রীক্ষীব, যাদব আচার্য্য, গোবিন্দ গোসাঞি, উদ্ধবদাস, মাধব, গোপালদাস, নারায়ণদাস, গোবিন্দ ভক্ত, বাণী কৃষ্ণদাস, পুগুরীকাক, ঈশান, লঘু

শ্রীচৈতগ্রচরিতের উপাদান

হরিদাস প্রভৃতি গোপাল দর্শন করিতে গিয়াছিলেন (চরিতামৃত, ২।৭৮।৪১-৪৮)।

এখন সমস্যা হইতেছে এই যে মাধবেন্দ্র পুরী ছই গৌড়ীয়াকে যে গোপালের সেবায় নিয়োজিত করিয়াছিলেন, তিনি কি করিয়া বল্লভাচার্য্যের পুত্র বিট্ঠলেশ্বরের আয়ত্তে আসিলেন। এক সম্প্রদায়ের সেবিত বিগ্রহ অন্য সম্প্রদায়ের অধিকারভুক্ত হইল কি করিয়া? শ্রীরূপ যদি কেবল মাত্র গোপাল দর্শন করিতে যাইবেন তবে অত লোক সঙ্গে করিয়া গেলেন কেন? আর শ্রীরূপের গোপাল-দর্শন করিতে যাওয়া এমনই কি প্রধান ঘটনা যাহা লিখিতে যাইয়া কৃঞ্জদাস কবিরাজ তাঁহার সঙ্গাদের নামের তালিকা দিলেন।

এই সব প্রধ্যের আংশিক সমাবান হয় বল্লভাচারী সম্প্রদায়ের প্রামাণিক প্রস্থ "প্রীপুষ্টিমার্গীয় প্রীআচার্যাক্সী মহাপ্রস্থানক নিজসেবক চৌরাশী বৈষ্ণবন্কী বার্তা" হইতে। এই প্রস্থখানি কাল হিসাবে হিন্দী গছা সাহিত্যের দিতীয় বই বলিয়া গণ্য। এখন যে হিন্দী অপ্রচলিত, সেই ভাষায় লিখিত। শ্রীনাথক্সী কি করিয়া বাঙ্গালীর অধিকার হইতে বল্লভাচারী সম্প্রদায়ের হাতে আসিলেন তাহার বিবরণ ঐ প্রস্থে আছে। শ্রীনাথক্সী গোপালেরই নামান্তর, কেন-না ঐ প্রস্থে আছে যে মানসিংহ গোপালপুরে গোবর্জননাথক্সীর দর্শন করিতে যায়েন—অনেক স্থলে গোবর্জননাথক্সীকে সংক্ষেপে শ্রীনাথক্সী বলা হইয়াছে (পূত ৩২৬-৩৩১)। ঐ প্রস্থের বিবরণ নিম্নে লিখিত হইল। শ্রীনাথক্সীর সেবা প্রথমে বাঙ্গালী করিত ( উর প্রথম সেবা শ্রীনাথক্সীকী বংগালী কর্তে)। যাহা কিছু ভেট আসিত সমস্তই খরচ হইয়া যাইত।

একদিন আচার্যাঞ্জী মহাপ্রভু (বল্লভাচার্যা) কৃষণাসকে আজ্ঞা দেন গে তুমি গোবর্জনে থাকিয়া সেবা টহল কর। এইরূপে কৃষণাস অধিকারী হইনে। একদিন অবধৃত দাস নামক মহাপুরুষ কৃষণাসকে বলিলেন, "শ্রীনাথজীর বৈভব বাড়াইতে হইবে।" "তুম্ বংগালীনকো দূর কেঁভা নেহাঁ কর্ত ?" শ্রীনাথজী আমাকে বলিয়াছেন যে বাঙ্গালী তাঁহাকে খুব কট্ট দেয়। কৃষণাস বলিলেন, "শ্রীগোঁসাইজীর (বিট্ঠলেশ্বর) বিনা



# <u>খ্রী</u>চৈতগুচরিতায়ত

আজ্ঞায় কিরুপে বাঙ্গালীকে তাড়াই ?" অবধৃত দাস তাঁহাকে অডেল যাইয়া আজ্ঞা লইয়া আসিতে বলিলেন। কুঞ্জদাস অডেল যাইয়া গোঁসাই-জাকে বলিলেন—

"বাঙ্গালীরা বড়ই মাথা উঠাইয়াছে। শ্রীনাথজীর যাহা ভেট আসে
সব লইয়া যাইয়া নিজের গুরুকে দেয় (বংগালীনে বছত মাথোঁ উঠায়োঁ
হৈ, জে ভেট আবত হৈ সো লেজতে হৈ, সো সব অপনে গুরুনকো দেও
হৈ)।" গোঁসাইজা এই কথার সমর্থন করিলেন, কিন্তু বলিলেন যে
আচার্য জা মহাপ্রভু যখন বাঙ্গালীকে রাথিয়াছেন, তখন তাহাদিগকে
তাড়ান যায় কি করিয়া।

কুম্ফদাস অধিকারী বলিলেন, "আপনি টোডরমল্ল ও বীরবলের নামে ছইখানি চিঠি দিন, আমি সব ঠিক করিয়া লইব।" কুফদাস বিট্ঠলেখরের পত্র লইয়া ঐ ছই প্রভাবশালী রাজপুরুষের সহিত আগ্রায় দেখা করিলেন। তাঁহাদের নিকট হইতে বিদায় লইয়া কুঞ্চাস শ্রীনাথজীর মন্দিরে আসিলেন। রুদ্রকুণ্ডের উপর বাঙ্গালীরা কুটার বাঁধিয়া থাকিতেন, তিনি উহাতে আগুন লাগাইয়া দিলেন। থুব সোরগোল হইল। বাঙ্গালীরা সেবা ছাড়িয়া পর্বতের নীচে আসিলেন। তখন কুফাদাস পর্বতের উপর নিজের লোক পাঠাইয়া দিলেন। বাঙ্গালীরা যখন দেখিলেন যে কুঞ্জাস কুটারে আগুন লাগাইয়াছেন, তখন তাঁহারা কুঞ্জাসের সহিত লড়াই করিতে প্রবৃত্ত হইলেন। কুফ্রদাস তাহাদিগকে ছই-চার লাঠি মারিলেন, বাঙ্গালীরা সেখান হইতে পলাইয়া মথুরায় আসিয়া রূপসনাতনকে সব কথা বলিলেন (সো বে বাংগালী সব রুদ্রকুণ্ড উপর রহতে, উহা উনকী ঝোঁপরী হুতী। সো কুঞ্চদাসনে জরায় দীনা তব সোর ভয়েউ তব বাংগালী সেবা ছোড়কে পর্বতকে নীচে আইয়। তব কুফ্রদাসনে পর্বত উপর আপনে মনুষ্য পাঠায় দীয়ৈ, তব বাংগালী দের্থে তৌ কুফ্রদাসনে ঝোপরামেঁ আগ লগায় দীনা হৈ, তব সব বাংগালা কুঞ্চাসসোঁ শ্রণ लारेश। তব कृष्णमां महन देव देव हात हात लाठि मवनहरू मोनो। তব বে বাংগালী তাহাঁসে ভাজো সে৷ মথুরা আহৈ তব রূপসনাতনকৈ পাস আয়কেঁ সব বাত কহী )।

কুঞ্চাসও রূপসনাতনের নিক্ট আসিয়া উপস্থিত হইলেন। রূপ-সনাতন বলিলেন, "ভূমি শুদ্র হইয়া আক্ষণকে মারিলে।"

ক্ষণাস বলিলেন, "আমি ত শুদ্র; তোমরাও ত অগ্নিহোত্রী নহ। তোমরাও ত কায়স্থ।" সনাতন বলিলেন, "এই কথা বাদশাহ শুনিলে কি জবাব দিবে ?" কৃষ্ণদাস বলিলেন, "আমি যাহা হয় জবাব দিব, কিন্তু হুমি যে কায়স্থ হইয়া আক্ষণদের প্রণাম লও, তোমারও জবাব দেওয়া মুন্দিল হইবে।" এই কথা শুনিয়া সনাতন চুপ করিয়া গেলেন। এইগানে লক্ষা করিবার বিষয় এই যে জ্ঞানীব গোস্বামী লঘুতোষণী নামক ভাগবতের টীকায় জ্ঞাকপসনাতনকে আক্ষাণ-বংশজাত বলিয়াছেন। রূপসনাতন কায়স্থ নহেন। বল্লভাচারী সম্প্রদায় নিজেদের অভ্যাচারের সম্থনকল্পে সনাতনকে কায়স্থ বলিয়াছেন।

যাহা হউক বাঞ্চালারা মণুরার হাকিমের নিকট নালিশ করিলেন। হাকিমের কাছে ক্ঞালাস বলিলেন, "এরা আমার চাকর ছিল। সেবা ছাড়িয়া যখন চলিয়া আসিয়াছে, তখন আর সেবা পাইতে পারে না। এদের কুটার যদি আগুনে পুড়িয়াই যাইত, আমি নৃতন কুটার বানাইয়া দিতাম। কুটার রক্ষার জন্ম সেবা ছাড়িয়া ইহারা চলিয়া আসিল কেন ?" হাকিম বোধ হয় টোভরমল্ল ও বারবলের নিকট হইতে আগেই ইন্সিত পাইয়াছিলেন। সেই জন্ম তিনি ক্ঞাদাসের এবন্ধিধ অন্যায়ের কোন প্রতীকার করিলেন না।

কৃষ্ণদাস গোঁসাইজাকে সব বিবরণ লিখিয়া প্রার্থনা জানাইলেন যে তিনি একবার আসিলে ভাল হয়। গোঁসাইজা শ্রীনাপজার মন্দিরে আসিলেন। বাম্মালীরা ঘাইয়া তাঁহার নিকট নালিশ করিলেন। তিনিও কৃষ্ণদাসের হায় জবাব দিলেন। তখন বাম্মালীরা বলিলেন, "মহারাজ্ঞ অব হম খায়ক্ষে ক্যা ?" গোঁসাইজা তখন তাঁহাদিগকে মদনমোহনের সেবা সমর্পণ করিলেন। বাম্মালীরা সেই হইতে গোবর্জনবাস ছাড়িয়া দিলেন। শ্রীনাথের সেবায় গুজরাতী ব্রাহ্মণ নিযুক্ত হইল (পূত ১৪০-৩৫০, কল্যাণ, বোম্বে লক্ষ্মীবেক্কটেশ্বর প্রেস সংস্করণ)।

বলভাচারী সম্প্রদায়ের এই বিবরণ হইতে স্পাই বুঝা যায় যে



কৃষ্ণনাস ছল-চাতৃরী, মিগাকথা ও অবৈধ বলপ্রয়োগের ছারা বাজালীকে অধিকারচাত করিয়াছিলেন। ঐতিচত্যচরিতামতের বিবরণের সহিত এই বিবরণ মিলাইয়া পড়িলে মনে হয় ঐরপের সঙ্গিলল সহ গোপাল-দর্শনে যাওয়ার প্রকৃত উদ্দেশ্য ছিল মগুরার ছাকিমের নিকট নালিশ করিতে যাওয়া।

Von Glasenapp বলেন যে প্রীচৈতন্ত ও বল্লভ-সম্প্রদায়ীদের
মধ্যে সন্তাব ছিল। কিন্তু প্রীচৈতন্তের ভক্তদের নিকট হইতে বিট্ঠলেশ্বর
যথন প্রসিদ্ধ শ্রীনাথ-বিগ্রহ কাড়িয়া লইয়া নিজের পূর্ণ অধিকারে
আনিলেন এবং ঐ বিগ্রহ গোবর্দ্ধন হইতে মধুরায় স্থানান্তরিত করিলেন
তথন হইতে উভয় সম্প্রদায়ের মধ্যে বিবাদ আরম্ভ হইল।

অন্টাদশ পরিছেদের সকল ঘটনাই কৃষ্ণদাস কবিরাজের নিজস্ব সংগ্রহ। প্রীযুক্ত প্রমণ চৌধুরা মহাশয় "পাঠান রাজকুমার বিজুলি থাঁ" নামক প্রবন্ধ এই পরিছেদে বর্ণিত একটি ঘটনা যে ঐতিহাসিক সত্যের উপর প্রতিষ্ঠিত তাহা প্রমাণ করিতে চেন্টা করিয়াছেন। 'তবে কৃষ্ণদাস কবিরাজ কাজাদলন এবং প্রীচৈতক্যের গোড়ে আগমনে নৌকা-প্রদানকারী তৃকী রাজপুরুষের প্রতি কৃপা বর্ণনার ভায়, এ স্থানেও প্রীচৈতভ্যের ঘারা মুসলমান শাল থণ্ড থণ্ড করাইয়াছেন ও এক পীরের ঘারা বলাইয়াছেন—

অনেক দেখিকু মুঞি শ্লেচ্ছ শাস্ত্র হইতে। সাধ্য সাধন বস্তু নারি নির্দ্ধারিতে। ২০৮০১৯২

চরিতামূতের উনবিংশ পরিচ্ছেদে রূপ-সনাতনের বিষয়-তাগি ও বৃন্দাবন-গমন বর্ণিত হইয়াছে। ঐ বিবরণ সম্পূর্ণরূপে নির্ভরযোগা; কেন-না কুঞ্চদাস কবিরাজ শ্রীরূপ ও শ্রীঞ্চাবের অন্তরক্ষ সন্ধ লাভ করিয়াছিলেন।

১ প্রমণ চৌধুণী, "নানা চাটা," পু" ১১১-১২৭। উাগার মতে বি**জুলি** থা কালিভর ছুর্গাধিপতি বিহার খান্ আফগানের পালিত পুত্র।



# শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

এই পরিচ্ছেদে শ্রীরূপের প্রতি প্রভুর শিক্ষা বর্ণিত হইয়াছে। কৃষ্ণদাস কবিরাজ ইহাই দেখাইতে চাহিয়াছেন যে শ্রীচৈততা ভক্তি-রসামৃতসিন্ধুর বিষয়বস্তু সমস্ত শ্রীরূপকে বলিয়া দিয়াছিলেন এবং শ্রীরূপ শ্রীচৈততাের প্রদত্ত সূত্রগুলির কেবলমাত্র পরিবর্দ্ধন করিয়াছেন।

#### সনাতন-শিকা

বিংশ পরিচ্ছেদ হইতে পঞ্চবিংশ পরিচ্ছেদের মূলঘটনা সনাতনশিক্ষা। এই কয়টি অধ্যায়ে কবিরাজ গোস্বামী গৌড়ীয় বৈঞ্চবদর্শন—
য়াহা সনাতন গোস্বামী বৃহত্তাগবতায়তে এবং শ্রীজীব গোস্বামী
য়ট্সন্দর্ভ ও সর্বসম্বাদিনীতে ব্যাখ্যা করিয়াছেন—তাহার সংক্ষিপ্তসার
দিয়াছেন। বিংশ পরিচ্ছেদের শেষে (২।২০।২৬৯-৩৩৪) শ্রীরূপ-কৃত লঘুভাগবতায়তের সংক্ষিপ্তসার দেওয়া হইয়াছে।

কবিরাজ গোস্থামী একবিংশ পরিচ্ছেদে বৃহন্তাগবতামূতের অনেক কথা লইয়াছে। কৃষ্ণ ব্রজা সংবাদটি ঐ গ্রন্থেই বিশদরূপে লিখিত হইয়াছে। ছাবিংশ ও ত্রেয়াবিংশ পরিচ্ছেদ ভক্তিরসামূতসিন্ধুর সংক্রিপ্ত-সার। চতুর্বিংশ পরিচ্ছেদে পুনরায় "আত্মারাম" শ্লোকের ব্যাখা। এ বারে একবট্টি প্রকার। যদি সনাতন এরূপ ব্যাখা শ্রীচৈতন্মের নিকট শুনিতেন, তাহা হইলে তিনি নিজে ভাগবতের টীকায় ঐরূপ ভাবের ব্যাখা। করিতেন বা শ্রীজীবের ছারা করাইতেন।

"আত্মারাম" শ্লোক ব্যাখ্যা করার পর কবিরাজ গোস্বামী ঐতিতত্তের

ভারা সনাতনকে বৈষ্ণব শৃতি লেখার উপদেশ দেওয়াইয়াছেন। উনিশ

হইতে পঁচিশ পরিচেছদের উপাদান কি করিয়া কৃষ্ণদাস কবিরাজ

সংগ্রহ করিয়াছিলেন তাহার একটি দৃষ্টান্ত দিতেছি। তিনি যে

বইয়ের সংক্ষিপ্তসার দেওয়ার প্রয়োজন বোধ করিয়াছেন, সেই

বইয়ের মৃথ্য মৃথ্য কথা তিনি ঐতিচতত্তের মৃথ দিয়া বলাইয়াছেন।

যেমন হরিভক্তিবলাসখানি হাতে লইয়া তিনি তাহার সূচীপত্র তৈয়ার



# <u> এটি চত ক্রচরিতামৃত</u>

করিয়াছেন এবং শ্রীচৈতভ্যের ছারা ঐ সূচীপত্র বলাইয়া সনাতনকে আদেশ করা হইল "এই ভাবে বই কর।" যথা—

# (ক) চরিতামূতে—

তথাপি সূত্ররূপ শুন দিগ্দরশন। সর্বব কারণ লিখি আদৌ গুরু আশ্রয়ণ॥ ২০৪১

হরিভক্তি বিলাস—

আদৌ সকারণং লেখাং আগুরবাতারণং ততঃ। ১।৪

- (খ) চৈ° চ°—গুরুলক্ষণ শিয়ালক্ষণ, দোহার পরীক্ষা।
  সেব্য ভগবান্, সব মন্ত্র বিচারণ॥
- হু ভু° বি° গুরুঃ শিশ্যঃ পরীক্ষাদির্ভগবান্ মন্মুরস্ত চ। সেবা ভগবান (১)৫৫-৭৪) সবমন্ত বিচারণ (১)৭৫-৮৯)
- (গ) হৈ চ'—মন্ত্র-অধিকার মন্তগুলাদি শোধন।

  হ ভ বি —মন্তাধিকারী সিন্ধাদিশোধনং মন্তসংশ্রিয়া।
- (ঘ) চৈ চ' দীকা, প্রাতঃশৃতিকৃত্য, শৌচ, আচমন।
  হ'ভ' বি'—দীকা নিতাং ত্রাক্ষকালে শুভোথানং পবিত্রতা।

প্রাতঃকৃত্যাদি কৃষ্ণত বাছাছৈশ্চ প্রবোধনম্ ॥
নির্মাল্যোত্তারণাছাদৌ মন্দলারাত্রিকং ততঃ।

- (%) চৈ° চ°—দন্তধাবন, স্নান, সন্ধাদি বন্দন। গুরুসেবা,, উর্দ্ধ পুণ্ড, চক্রাদি ধারণ।
- হ ত বি মৈত্রাদিকতাং শৌচাচমনং দওত ধাবনম্।
  স্থানং তাত্রিকসন্ধ্যাদি দেবস্থাদিসংগ্রিয়া।

পঞ্চবিংশতি পরিচ্ছেদে পুনরায় প্রকাশানন্দ-কাহিনী। এই পরিচ্ছেদে যে বিচার আছে, তাহা মূলতঃ শ্রীজীব গোস্বামীর তত্ত্বসন্দর্ভ হইতে লওয়া।

### শ্রীতৈভয়চরিতের উপাদান

এখানেও ঐতিতত্যের দারা কবিরাজ গোসামী আবার "আয়ারাম" শোকের ব্যাখ্যা করাইয়াছেন।

### অন্তালীলার বিচার

শ্রীচৈতলচরিতামতে অন্তঃলীলায় প্রধানতঃ শ্রীনন্মহাপ্রভুর ভাবোন্মাদ বর্ণিত হইয়াছে। শ্রীরূপ গোস্বামী ও রঘুনাপদাস গোস্বামীর কয়েকটি তবে যে সামাল উপকরণ গ্রন্থকার পাইয়াছিলেন, তাহারই সন্থাবহার করিয়া তিনি শ্রীচৈতল্যের ভাবজীবনের অপূর্বর আলেখা আকিয়াছেন। শ্রীচৈতল্যের বিরহ ভাবের যে সামাল চিত্র আমরা মুরারি, কবিকর্ণপূর, প্রবোধানন্দ ও বৃন্দাবনদাসের গ্রন্থে পাই, তাহার সহিত এই আলেখাের কোন মূলগত বিরোধ নাই—অথচ অল্ল কোন চরিতকার কবিরাজ গোস্বামীর লায় সজীব চিত্র অন্ধন করিতে পারেন নাই। চরিতামতের অন্তঃলীলা রসিক জনের চিত্তহারী, কবিগণের কল্পলাক ও সাধক-ভক্তের কণ্ঠহার।

প্রথম পরিছেদে শিবানন সেন প্রভৃতি ভক্তের নীলাচলে আগমন এবং শ্রীরূপ গোস্বামীর নাটকের আস্বাদন বর্ণিত হইয়াছে। শিবানন্দের কুকুরের প্রদক্ষটি চৈতল্পচন্দ্রোদয় নাটক (১০০০) হইতে গৃহীত হইয়াছে (চৈ চ ১০১১২-২৮)। নাটকে আছে, "মল্যে তেনৈব শরীরেণ রূপান্তরং লক্ষা লোকান্তরং প্রাপ্তঃ।"

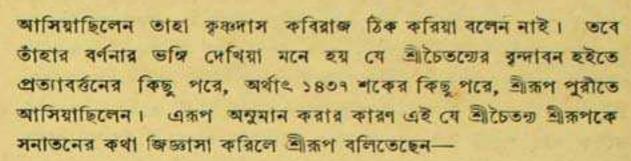
চৈতভাচরিতামূতে আছে—

800

আর দিন কেহো তার দেখা না পাইল। সিদ্ধ দেহ পাঞা কুকুর বৈকুণ্ঠেতে গেল॥

# বিদ্যামাধ্ব ও ললিভ্যাধ্ব নাটকের রচনা-কাল

শ্রীরূপ গোস্বামীর রুদ্দাবন হইতে নীলাচলে আগমন ও তাঁহার "বিদগ্ধ-মাধব" ও "ললিতমাধবের" আলোচনা-বর্ণন কবিরাজ গোস্বামীর নিজস্ব। এই আলোচনাকে ঐতিহাসিক সতারূপে গ্রহণ করিলে উক্ত নাটকদ্যের রচনা-কাল লইয়া কিছু গোল বাধে। শ্রীরূপ কোন্ সময়ে নীলাচলে



আমি গঙ্গাপথে আইলাম তেঁহো রাজপথে। অতএব আমার দেখা নহিল তাঁর সাথে। প্রয়াগে শুনিল তেঁহো গেলা রন্দাবন। অনুপমের গঙ্গাপ্রাপ্তি কৈল নিবেদন। ১০১৪৪-৪৭

অনুপামের গৌড়দেশে আসিয়া গঙ্গাপ্রাপ্তি হইয়াছিল। সেই জন্ম শ্রীরূপের "অনুপাম লাগি তার কিছু বিলম্ব হইল।" ধরা যাউক ১৪০৮ শকে শ্রীরূপ নালাচলে আসিয়াছিলেন। ১৪০৬ শকের চৈত্র মাসে শ্রীচৈতন্ত সনাতনকে উপদেশ দিয়াছিলেন। কৃষ্ণদাস কবিরাজ্ব এই পরিছেদে বিদ্যমাধ্বের প্রথমাঙ্কের ১. ২, ১৩, ১৫, ০৩, ০৬, ৪১, ৪২, ৪৪, ৪৮, ৬০—এই এগারটি, বিতায় অঙ্কের ১৬, ১৯, ২৬, ০০, ৪৮, ৫০, ৫৯, ৬০, ৬৯, ৭০, ৭৮—এই এগারটি, তৃতায় অঙ্কের ২ ও ১৩, চ হূর্থ অঙ্কের ৯ এবং পক্ষম অঙ্কের ৪, ১০, ৩১—একুনে ২৮টি প্রোক উদ্ধার করিয়াছেন। কাবোর প্রোক হইলে, যথন তখন ঘেটি সেটি লিখিয়া পরে যথান্থানে সন্ধিবেশ করিয়া দিলেও চলে, কিন্তু নাটকে ঘটনার ক্রমবিকাশ-অনুসারে পাত্রপাত্রীর উক্তি লিখিতে হয়। সেই জন্ম কবিরাজ্ব গোস্বামীর বর্ণনা দেখিয়া মনে হয় ১৪০৮ শকৈ বিদগ্যমাধ্ব-রচনা শেষ হইয়াছিল, তাহা না হইলে পঞ্চম অঙ্কের পর্যন্ত প্রোকের বিচার ১৪০৮ শকে কিন্তুপে হইবে গুকিন্তু বিদগ্যমাধ্ব নাটকের শেষে আছে—

নক্ষসিকুরবাণেকু-সংখ্যে সংবংসরে গতে। বিদ্যাধারং নাম নাটকং গোকুলে কুতম্॥

नम ৯, मिसूत ४, वांग ৫, हेन्दू > = ३०४३ मघ९ = ३००० श्कीक।

## গ্রীতৈভয়চরিতের উপাদান

802

এই শ্লোকটি অনুলিপির কালবাচক হইতে পারে না, কেন-না ইহাতে "গোকুলে কৃত্ন" উক্তি আছে; আর ইহার অর্থ প্রাচীন টীকাতে করা হইয়াছে। বিদগ্ধনাধন শ্রীচৈতত্যের তিরোভাবের পরেই লিগত হইয়াছিল। শ্রীচৈতত্য ১৫০০ খৃন্টাব্দের আষাত্ নাসে তিরোহিত হয়েন; তাহার কয়েক নাস পরেই এই গ্রন্থ যে রচিত হইয়াছিল তাহার ইপ্লিত সূত্রধারের উক্তি হইতে পাওয়া যায়, য়থা—

"তদিদানীমেতত ভক্তবৃন্দত মুকুন্দ-বিশ্লেষোদ্দীপনেন বহির্ভবন্তঃ প্রাণাঃ কমপি তত্তৈব কেলিহুধাকলোলিনীমুলাসয়তা পরিরক্ষণীয়। ভবতা।"

শ্রীতৈতন্তের সহিত ক্ষের অভিন্নত্ব সকল ভক্তই স্বাকার করিতেন;
শ্রীতৈতন্তের তিরোভাবের পর ভক্তগণের মুকুন্দবিচ্ছেদের উদ্দাপনা
হইয়াছিল; তাই শ্রীকৃষণলালা শুনাইয়া তাঁহাদিগের আনন্দ-বিধানের জন্ত শ্রীরূপগোস্বামা এই নাটক রচনা করিয়াছিলেন। নাটকীয় বাক্যভন্তির দ্বারা শ্রীরূপগোস্বামা এখানে শ্রীতৈতন্তের তিরোভাবে ক্লিফ্ট ভক্তগণের অবস্থার কথা ইন্তিত করিয়াছেন বলিয়া আমার মনে হয়।

যদি ১৫০০ গৃষ্টাব্দে বা ১৭৫৫ শকে বিদয়মাধব-রচনা শেষ হইয়া থাকে, তাহা হইলে ১৪৩৮ শকে রামানন্দের সহিত ইহার আলোচনা কিরুপে হইতে পারে? ক্ষণাস কবিরাজের বর্ণনা ঐতিহাসিক সত্য বলিয়া মানিতে হইলে বলিতে হয় যে ১৪৩৮ শকে বিদয়মাধবের বিভিন্ন অঙ্কের ২৮টি শ্লোক রচনা করিয়া শ্রীরূপ তাহা ছাড়িয়া দিয়াছিলেন, সত্রের বংসর পরে ঐ নাটক তিনি শেষ করেন। কিন্তু পূর্বের বলিয়াছি তাহা হইতে পারে না, কেন-না নাটকের পঞ্চম অঙ্কের পর্যন্ত শ্লোক লইয়া রামানন্দ রায় আলোচনা করিয়াছিলেন বলিয়া ক্ষণাস কবিরাজ বর্ণনা করিয়াছেন। আমার মনে হয়, ভক্তিরসামৃতিস্কু, হরিভক্তিবিলাসাদি প্রস্তের সংক্ষিপ্তসার যেমন কবিরাজ গোস্বামী স্থকৌশলে শ্রীচৈতন্য-সনাতন-সংবাদে দিয়াছেন, এখানে তেমনি তিনি বিদয়মাধব ও ললিত্যাধবের সহিত বৈক্ষবমণ্ডলীকে পরিচিত করাইবার উদ্দেশ্যে ও নিজের গ্রন্থকে গোস্বামি-শাত্রের মঞ্জ্বাস্ক্রপ করার জন্ম ঐর্পভাবে বর্ণনা করিয়াছেন।



## শ্রীচৈতভাচরিতামূত

ললিতমাধবের প্রথম অঙ্কের ১, ৪, ২০, ৪৯, ৫০, ১০২, ১০৬—এই সাতটি, দ্বিতায় অঙ্কের ২২ ও ২৩ এবং চতুর্থ অঙ্কের ২৭ সংখাক শ্লোক— একুনে ০টি শ্লোক আলোচা পরিচ্ছেদে ধৃত হইয়াছে। কিন্তু ললিতমাধব নাটক বিদগ্ধমাধবের চার বংসর পরে অর্থাৎ ১৫৩৭ খুফ্টাব্দে লিখিত হয়; যথা—

নন্দেশু বেদেন্দুমিতে শকাব্দে শুক্রস্থ মাসস্থা তিপৌ চতুর্থাম। দিনে দিনেশস্থা হরিং প্রণম্য সমাপয়ং ভদ্রবনে প্রবন্ধন্॥

এই প্রসঙ্গে একটি কথা বলা প্রয়োজন। ললিতমাধবের টীকাকার লিখিয়াছেন যে শ্রীরূপ উজ্জ্বনীলমণিতে যে সমৃদ্ধিমান্ সম্ভোগের বর্ণনা করিয়াছেন তাহা স্পান্ত করিয়া দেখাইবার জন্ম "ললিতমাধব" নাটক আরম্ভ করিয়াছেন। কিন্তু এ উল্লি ঠিক নহে, কেন-না উজ্জ্বনীলমণিতে ললিতমাধবের নাম করিয়া কৃষ্ণদাস কবিরাজধৃত শ্লোকগুলির মধ্যে তিনটি উদ্ধৃত হইয়াছে।

কৃষ্ণদাস কবিরাজ লিখিয়াছেন যে প্রীচৈতন্য প্রীরূপকে আদেশ করিলেন—

> কুষ্ণকে বাহির নাহি করিহ ব্রন্ধ হৈতে। ব্রন্ধ ছাড়ি কুষ্ণ কভু না যায় কাঁহাতে। এ১।৬১

এই উক্তির সহিত ললিতমাধব-বর্ণিত ঘটনার সামঞ্জ্য করা বড়ই কঠিন।
কেন-না ঐ নাটকের প্রথম ছই অঙ্কে বৃন্দাবনে শ্রীরাধা, চন্দ্রাবলী, ললিতা
প্রভৃতির সহিত শ্রীকৃষ্ণের লীলা বর্ণিত হইয়াছে; তৃতীয় অঙ্কের প্রথমেই
পৌর্নমাসীর উক্তি হইতে জানা যায় যে অক্রুর শীকৃষ্ণকে মথুরায় লইয়া
গিয়াছেন (৩৩)। তৃতীয় অঙ্কে শ্রীরাধার বিরহ বর্ণিত হইয়াছে।
পরবর্তী সাতিটি অঙ্কের ঘটনা ব্রজ্ঞের বাহিরে ঘটে। কবিরাজ গোস্বামি-ক্ষিত শ্রীচৈতন্মের উক্তির সহিত ললিতমাধব নাটকের ঘটনার সামঞ্জ্য

## শ্রীচৈতক্যচরিতের উপাদান

8.8

করিবার জন্য উক্ত পয়ারের ব্যাখ্যায় প্রীয়ুক্ত রাধাগোবিন্দ নাথ মহাশয় লিখিয়াছেন—"প্রীরূপ গোস্থামা তাঁহার পুরলালা-সম্বন্ধায় (ললিতমাধব) নাটকে গত ছাপরের পুরলালা বর্ণনা করেন নাই; অল্য এক কালের লালা বর্ণনা করিয়াছেন। সেই কল্লে নানা ঘটনার ভিতর দিয়া স্বয়ং চন্দ্রাবলী রুক্মিণীরূপে, স্বয়ং প্রীরাধাই সত্যভামারূপে এবং ষোলহাজ্ঞার গোপস্থানরাই ষোলহাজ্ঞার ছারকা-লালার পরিকর হইয়াছিলেন। এই পুরলালাটি যদি বেজলালার সঙ্গে একই নাটকে গ্রাথত হইত, তাহা হইলে সাধারণ পাঠক ইহাকে প্রকট-লালা-সম্বন্ধায় নাটক বৃঝিতে পারিলেও হয়ত মনে করিত যে প্রত্যেক প্রকট লালায়ই বৃঝি স্বয়ং প্রীরাধিকা সত্যভামা, স্বয়ং চন্দ্রালা করিয়া ইত্যাদি হইয়াছারকা-লালা করিয়া থাকেন।" ভাল কথা, কিস্তু লালতমাধ্বের প্রথম তুই অঙ্কে যে ব্রজ্ঞলালা বর্ণিত হইয়াছে, তাহা কোন্ কল্লের লালা, প্রকট কি অপ্রকট লালা, সে সম্বন্ধে নাথ মহাশয় নারব কেন ?

অন্তালীলার দ্বিতীয় পরিচ্ছেদে নকুল ব্রহ্মচারীর ও ছোট হরিদাসের কাহিনী আছে। নকুল ব্রহ্মচারীর বিবরণ নাটক (৯18, নি° স°) হইতে গৃহীত। বৃদ্ধা বৈঞ্চবী মাধবীর নিকট হইতে ভিক্ষা গ্রহণ করার জন্ম ছোট হরিদাসকে বর্জন করার কাহিনী কবিরাজ গোস্বামীর নিজের সংগ্রহ।

## হরিদাস ঠাকুরের কাহিনী

তৃতীয় পরিছেনে হরিদাস ঠাকুরের কথা আছে। এই প্রসঙ্গের অবতারণা করিয়া তিনি বলিয়াছেন—

> বৃন্দাবনদাস যাহা না করেন বর্ণন। হরিদাসের গুণ কিছু শুন ভক্ত জন।

তিনি ৩৩৯৬:৩৫ পর্যান্ত পয়ারে লিখিয়াছেন যে এক বেশ্যা ছরিদাস ঠাকুরকে প্রলুক্ত করিবার জন্ম নিযুক্ত হইয়াছিল। হরিদাস ঠাকুর



## শ্রীচৈততাচরিতায়ত

এক মাসে কোটানাম-গ্রহণ যজ্ঞ করিতেন। বেশ্যা বসিয়া বসিয়া শুনিত। হরিদাস প্রথম দিনের পর বলিলেন—

> কালি ছঃখ পাইলে অপরাধ না লইবে মোর। অবশ্য করিব আমি তোমারে অঙ্গীকার॥ তাবং ইঁহা বসি শুন নাম সংকীর্ত্তন। নাম পূর্ণ হৈলে পূর্ণ হৈবে তোমার মন॥

এইরূপ তিন দিন ঘটিল। শেষে বেশ্যা নাম-শ্রবণের গুণে বৈঞ্চবী হইল।

প্রসিদ্ধ বৈঞ্চবী হৈলা পরম মহান্ত।
বড় বড় বৈঞ্চব তার দর্শনেতে যান ত॥ ৩৩১৩৪

ইহার পূর্বে অধ্যায়ে কবিরাজ গোস্থানী লিখিয়াছেন যে মাধবী দেৰী
বৃদ্ধ তপস্থিনী আর পরম বৈঞ্চবী ॥
প্রভূ লেখা করে রাধাঠাকুরাণীর গণ।
জগতের মধ্যে পাত্র সার্দ্ধ তিন জন ॥
স্বরূপ গোসাঞি আর রায় রামানন্দ।
শিখি মাহিতী আর তাঁর ভগিনী অর্দ্ধ জন ॥ ৩২।১০৩-৫

ছোট ছরিদাস এ হেন মাধবাদেবার নিকট হইতে ভগবান্ আচার্য্যের আদেশে "ওবাইয়া চাউল এক মণ" আনার জন্ম প্রভু-কর্তৃক বিজ্জিত ছইয়াছিলেন। প্রভু বলিয়াছিলেন যে কাষ্ঠের নারী পুতুলও মুনির মন ছরণ করে (৩২১১৭)। কিন্তু যে যে "বড় বড় বৈষ্ণব" হরিদাসের কুণা-প্রাপ্তা পূর্বতন বেশ্যাকে দর্শন করিতে যাইতেন, তাঁহাদের কি কেহ বর্জন করেন নাই ?

যাহা হউক কবিরাজ গোস্বামী পুনরায় ২১৪ হইতে ২৩৯ পয়ারে বেশ্যারূপিণী মায়ার কাহিনী বলিয়াছেন। ঐ বেশ্যাও (প্রকৃত পক্ষে মায়া) হরিদাসের মুখে হরিনাম শুনেন—

> এই মত তিনদিন করে আগমন। নানা ভাব দেখায় যাতে ব্রহ্মার হরে মন॥ ৩৩২৩২

## ১৯৬ শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

পরে তিনি হরিদাসকে বলিলেন যে তিনি মায়া। বােধ হয় পূর্বলিখিত বেশার কাহিনীই পরে রূপান্তরিত হইয়া এই মায়ার কাহিনীতে পরিণ চ হইয়াছিল; তাহা না হইলে ছইটি গল্পের মধ্যে এমন আশ্চর্যা সাদৃশ্য পাওয়া যায় না। কৃঞ্চদাস কবিরাজ ছইটি কাহিনীই শুনিয়াছিলেন এবং ছইটিই লিপিবদ্ধ করিয়াছেন।

এই পরিছেদে হরিদাস-জীচৈতত্ত-সংগাদে হরিদাস তথাক গিত নৃসিংহপুরাণের নিম্নাপ্ত শ্লোক তুলিয়া বলিয়াছেন যে, যে হেতু মুসলমানগণ
বার বার "হারাম, হারাম" বলে, সেই জন্ম রামনামের আভাসের মাহাছ্যো
তাহারা উদ্ধার পাইবে।

দংষ্ট-দংষ্ট্রাহতো মেজে হারামেতি পুনঃ পুনঃ। উক্তাপি মুক্তিমাথোতি কিং পুনঃ শ্রন্ধয়া গুণন্॥

এই শ্লোক অস্ততঃ ত্রয়োদশ শতাব্দীর পূর্বের নৃসিংহপুরাণের মধ্যে প্রবেশ করে নাই। সরল-বিখাসী কবিরাজ গোস্বামী এরূপ শ্লোককেও শান্তীয় প্রমাণ বলিয়া ধরিয়াছেন।

#### বল্লভ ভট্টের বিবরণ

সপ্তম পরিচ্ছেদে বল্লভ ভট্টের সহিত ঐতিচতত্যের দ্বিতীয় বার মিলনের কথা আছে। কৃষ্ণদাস কবিরাজ বলেন যে বল্লভ ভট্ট ঐথরস্বামীর টীকা খণ্ডন করিয়াছিলেন বলায়—

> প্রভূ হাসি কহে স্বামী না মানে যেই জন। বেশ্যার ভিতরে তারে করিয়ে গণন॥

১ হেনালি শীবর খানীর মত বোপাদেব-কৃত "মুকাফলের" টাকা লিখিতে বাইল উদ্ধৃত করিয়াছেন। হেনালি বেবলিরির বাবন বংশীর মহাবাজা মহাবেবের ময়ী ছিলেন ও খুলীর অবোহণ পতান্দীর মধ্যভাগে আছু ভূত হছেন। হংতরাং শীধরের কাল অন্ততঃ অবোহণ পতান্দী। ভাগবতের টাকার শীধর কোখাও মাধ্যাচার্যা, নিথাক বা রামান্ত্রের নাম উল্লেখ করেন নাই; কিন্তু ১/৭০০ ও ০/১২/২ টাকায় বিজ্বানীর মত উদ্ধার করিয়াছেন।



## <u> প্রীচৈতক্মচরিতামূত</u>

কিন্তু শ্রীজীব গোস্থামী শ্রীধরের কয়েকটি প্রধান প্রধান মত যে মানেন নাই তাহার প্রমাণ দিতেছি। শ্রীমন্তাগবতের ২০০০ প্রাকের ব্যাখ্যায় শ্রীধর বলেন, "স্বরূপেণ ব্রহ্মতথা বাবস্থিতিমৃক্তিঃ।" শ্রীজীব বলেন, "মুক্তিরিতি স্বরূপেণ বাবস্থিতির্নাম স্বরূপসাক্ষাৎকার উচ্যতে। স্বরূপং চাত্র মুখ্যং পরমাত্মকক্ষণমেব। রশ্মিপরমাণ্নাং সূর্যা ইব স এব হি জীবানাং পরমোহংশিস্বরূপঃ।" ভাগবতের তাহহাতে প্রোকের ব্যাখ্যাতেও শ্রীধর ও শ্রীজীবে এইরূপ পার্থক্য। ভাগবতের হাহাতেও শ্রোকের ব্যাখ্যায় শ্রীধর বলেন, "জ্ঞানং ভক্তিযোগান্তবতি;" শ্রীজীব বলেন, "ভক্তিযোগান্ত কতিন-স্মরণাদিরূপঃ। তৎসমন্বিতং তেন সমবেতং যজ্জ্ঞানং ভাগবতং তদপি তদধীনং তদবাভিচারিফলমিতার্থঃ॥" শ্রীবিগ্রহ-পূজাস্থক্ষে শ্রীধর ভাগবতের তাহহাহতর ব্যাখ্যায় বলিয়াছেন, "যাবন্ধ বেদ স্বন্ধদি সর্ববৃত্তববস্থিতং" তাবৎকাল মাত্রেই বিগ্রহ-পূজা বিধেয়। শ্রীজীব বলেন কখনও কোন অবস্থায় বিগ্রহ-পূজা তাগ করিবে না।

শ্রীমন্তাগবতের ২।৭।৫২র ব্যাখ্যায় শ্রীধর ভগবানের লীলাকে "মায়াশ্রা" বলেন; কিন্তু শ্রীজীব বলেন, "মায়াময়ং তবৈভবং বিরাদ্রক্রণম প বর্ণয়েত্যমান্ত।" এইরূপ বহু দৃষ্টান্ত আছে। হুতরাং "স্বামী না মানিলে তারে বেশ্যামধ্যে গণি" বাক্য শ্রীচৈতত্যের উক্তি বলিয়া স্বীকার করা গেল না।

চরিতামৃতে প্রদত্ত বল্লভ ভট্ট-কাহিনীর শেষে আছে যে—

বল্লভ ভটের হয় বাল্য উপাসনা।
বালগোপাল মত্ত্রে তেঁহো করেন সেবনা ॥
পণ্ডিতের সনে তাঁর মন ফিরি গেল।
কিশোর গোপাল উপাসনায় মন হৈল ॥
পণ্ডিতের ঠাঞি চাহে মন্ত্রাদি শিখিতে।
পণ্ডিত কহে কর্ম্ম নহে আমা হৈতে॥ ৩৭:১৩২-৪

তারপর বল্লভ ভট্ট শ্রীচৈতত্ত্বের শরণাপর হইলেন এবং গদাধর পণ্ডিত তাঁহাকে দীক্ষা দিলেন। 800

#### শ্রীচৈতহাচরিতের উপাদান

গদাধর পণ্ডিতের নিকট বল্লভ ভট্ট যে, মন্ত্র লইলেন একথা স্পষ্ট করিয়া না বলিয়া কবিরাজ গোস্বামী লিখিয়াছেন—

> দিনাস্তরে পণ্ডিত কৈল প্রভুর নিমন্ত্রণ। প্রভু তাঁহা ভিক্ষা কৈল লঞা নিজগণ॥

এই ঘটনার মধ্যে যে, কিছু সত। নিহিত আছে, তাহা পূর্বেই দেখাইয়াছি।

## প্রভুর সমুদ্রপতন-লীলা

কবিরাক্ষ গোস্থামী অন্টাদশ পরিছেদে এভুর সমুদ্র-পতন, এক ধীবর-কর্তৃক তাঁহার ভাববিরুত দেহ সমুদ্র হইতে উত্তোলন ও প্রভুক্তৃক জলকেলির প্রলাপ-বর্ণন লিথিয়াছেন। অনুরূপ কোন লীলা রঘুনাথদাস গোস্থামী বর্ণনা করেন নাই। কবিরাক্ষ গোস্থামি-বর্ণত লীলার প্রমাণ-স্বরূপ ৩।১৪ পরিছেদে গৌরাক্ষ-স্তবকল্পতরুর চতুর্থ ও অন্টম শ্লোক, ৩।১৫ পরিছেদে শ্রীরূপের শ্রীচৈতভান্টকের ১।৬ শ্লোক ও সকুত গোবিক্লীলামতের তিনটি শ্লোক, ৩।১৬ পরিছেদে কেবল মাত্র গোবিক্লীলামতের শ্লোক, ৩।১৭ পরিছেদে গৌরাক্স-স্তবকল্পতরুর পর্কম শ্লোক, ৩।১৯ পরিছেদে উক্ত স্তবকল্পতরুর যন্ত শ্লোক তা১৯ পরিছেদে উক্ত স্তবকল্পতরুর যন্ত শ্লোক তা১৯ পরিছেদে উক্ত স্তবকল্পতরুর যন্ত শ্লোক উদ্ধৃত করিয়াছেন এবং ৩)১৯।৭০-৯৬ বর্ণিত লালা নবম শ্লোক-অবলম্বনে লিখিয়াছেন। মাঝখানে ৩।১৮ পরিছেদে সমৃদ্রপতন-লালা লিখিতে যাইয়া তিনি কোন প্রমাণ উদ্ধার করেন নাই। অহ্য কোন গ্রন্থেও সমৃদ্রপতন-লীলা নাই। বৃন্দাবনদাস (৩।১১।৫১৫-৫১৬) লিখিয়াছেন—

একদিন মহা প্রভু আবিষ্ট হইয়া।
পড়িলা কুপের মাঝে আছাড় খাইয়া॥
দেখিয়া অথৈত আদি সম্মেহ পাইয়া।
ক্রেন্দন করেন সভে শিরে হাত দিয়া॥
কিছু না জানেন প্রভু প্রেমভক্তিরসে।
বালকের প্রায় যেন কুপে পড়ি ভাসে॥

### শ্রীচৈতগুচরিতায়ত

800

সেই কণ কৃপ হইল নবনীতময়। প্রভুর শ্রীঅঙ্গে কিছু ক্ষত নাহি হয়॥

শ্রীচৈতত্তের ভাবোমাদ বর্ণনা করিতে যাইয়া কৃষ্ণদাস কবিরাজ নিজের লেথা গোবিন্দলীলামতের বহু শ্লোক শ্রীচৈতত্তের মূখ দিয়া বলাইয়াছেন; যথা—

> (ক) কৃষ্ণের বিয়োগে রাধার উৎকৃষ্ঠিত মন। বিশাখারে কহে আপন উৎকৃষ্ঠা-কারণ॥ সেই প্লোক পঢ়ি আপনে করে মনস্তাপ। প্লোকের অর্থ শুনায় দোঁহাকে করিয়া বিলাপ॥

> > -0120127-75

তৎপরে গোবিন্দলীলামূতের ৮া৩ শ্লোকে দেওয়া হইয়াছে—

(খ) বিশাথাকে রাধা থৈছে শ্লোক কহিলা। সেই শ্লোক মহাপ্রভু পঢ়িতে লাগিলা॥ ৩):৫।৫৫

তৎপরে গোবিন্দলীলামতের ৮।৪ শ্লোক ধৃত ইইয়াছে। আবার এ১:
পয়ারের পর গোবিন্দলীলামতের ৮।৭ শ্লোক ও এ১৬৮১০ পয়ারের পর
৮৮ শ্লোক শ্রীচৈতত্যের মৃথ দিয়া বলান ইইয়াছে। কবিরাজ গোস্বামী
নিজ্ঞের কাব্যের অফান সর্গের তৃতীয়, চতুর্থ, সপ্তম ও অফাম শ্লোক ত্রিপদী
ছন্দে ব্যাখ্যা করিয়া চরিতামতের প্রথমেই লিখিত "শ্রীরাধার ভাবকান্তি
অজীকার করিয়া যে শ্রীচৈতত্য অবতার্ণ ইইয়াছিলেন" তাহা প্রমাণ
করিলেন। ইহার ফলে কালানোচিত্য দোষ ঘটয়াছে।

অন্তালীলার বিংশ পরিচ্ছেদে এটিচতত্তের শিক্ষাইটক প্রদত্ত ইইয়াছে। পদ্মাবলীতে যে আটটি প্লোক প্রীরূপ গোস্বামী "প্রী প্রভিগবতঃ" বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন, সেই ক্য়টি একত্র করিয়া এই পরিচ্ছেদে ধৃত এবং বাাথাতি ইইয়াছে। চরিতামূতের বর্ণনা পড়িয়া মনে হয় যে প্রীচৈতন্ত কোন একসময়ে বসিয়া স্বরূপ ও রামানন্দকে এই সব শ্লোক

বলিয়াছিলেন। শিক্ষাফকের সব কয়টি শ্লোক একভাবের নয়; তুতরাং এক সময়ে সব কয়টি রচিত হইয়াছিল বলিয়া মনে হয় না।

## চরিতামৃত-বিচারের সার-নিকর্ষণ

কৃষ্ণদাস কবিরাজ যুগপৎ উচ্চশ্রেণীর কবি ও দার্শনিক। দার্শনিক-রূপে তিনি শ্রীচৈতভার নিতালীলায় বিখাস করিতেন। শ্রীরূপগোস্থামী विषधमाध्य, ललिखमाध्य नांग्रेटक ও मानटकलिटकोमुमोटक ट्यमन औकृरक्षत्र এমন অনেক লীলা লিখিয়াছেন যাহা কোন পুরাণে নাই, তথাপি সেগুলি ভক্ত ও রসিকজনের জৎকর্ণরসায়ন, তেমনি কুফাদাস কবিরাজ কবি ও দার্শনিকের দৃষ্টি লইয়া শ্রীচৈতত্যের এমন অনেক লীলা লিখিয়াছেন যাহা ত্রীচৈতভার প্রকট লীলায় ঘটে নাই; কিন্তু কবিরাজ গোসামীর ভাষ পরমভক্তের হৃদয়ে উহা কৃরিত হওয়ায় স্বীকার করিতে হইবে যে উহা অপ্রকট লীলায় সতা। এই ভাবেই বৈঞ্বগণ এতাবৎ কাল প্রীচৈতভাচরিতামৃতকে আপাদন করিয়া আসিতেছেন। সম্প্রতি গবেষকগণ শ্রীচৈতশাচরিতামূতের ঐতিহাসিকতার বিচার করিতে বসিয়া বলিতেছেন, "চৈতভাচরিত হিসাবে কি ঐতিহাসিকর, কি রসজ্জভা, কি দার্শনিক তব-বিচার, সব দিক্ দিয়া হৈতলচরিতায়ত ভোষ্ঠতম গ্রন্থ।" "কৃষ্ণদাস যথন ইচ্ছা করিয়াই বৃদাবনদাসের বর্ণনা হইতে স্বাতন্ত্য দেখাইয়াছেন তখন মনে হয় যে, কবিরাজ গোপামীয় বর্ণনাটীই সভা" (বল নী, অগ্রহায়ণ ১:৪১, শীযুক্ত হকুমার সেন, বাললা সাহিত্যের ইতিহাস)। এইরূপ উক্তি দেখিয়া সত্য কৃষ্ণদাস কবিরাজের গ্রন্থের ঐতিহাসিক মূল্য যে কত দূর তাহার বিচারে প্রাকৃত হটয়াছিলাম।

এই বিচারে দেখা গেল কৃঞ্চদাস কবিরাজের অলৌকিক ঘটনা-বর্ণনার প্রতি ক্যৌক অতান্ত বেশী। তিনি পূর্ববর্তী কোন গ্রন্থ অনুসর্গ করিতে করিতে সহসা তাহার আনুগতা ছাড়িয়া আলৌকিক ঘটনার সমিবেশ করিয়াছেন; যথা—আদিলীলায় আন্তেজ্ঞণ-লীলা, মধ্যলীলায়



## <u>শী</u>কৈতগুচরিতামৃত

বৌদ্ধ পণ্ডিতের মাথা কাটা যাওয়া ও পুরক্তজ্ঞীবন, কাশীবিল্ল ও প্রভাপ রুদ্রকে চর্ভুক্ত মূর্ত্তি বা ঐথর্য দেখানো, রন্ধায়ে কার্দ্রন করিতে করিতে এক কালে সাভটি সম্প্রদায়ে উপস্থিত, রে রুখ মন্ত হস্তা টানিতে পারিত না ভাষা প্রীচৈত্য-কর্তৃক চালানো, আবির্ভাবরূপে শচীর অল খাওয়া, কৃষ্ণনাম কহিয়া অন্যাদের বিসূচিকা আরাম করা, রুদ্দাবনের পথে যাইতে যাইতে রাঘ-হরিণকে একসঙ্গে হরিনাম বলাবো; অন্তালীলায় ভাবাবেশে প্রীতৈতক্তের এক একখানি হাত দেড় গক্ষ রাহ্ হন্ত্র্যা, তিন ঘারে কপাট লাগানো থাকা সত্ত্বেও প্রভুর কাহির হইয়া যাওয়া প্রভৃতি। দিখিজ্বি-পরাভব, প্রকাশানন্দ-উদ্ধার প্রভৃতি বিষয়ে পণ্ডিতদের সহিত বিচার ও তাঁহাদিগকে পরাভব করার ঐতিহাসিক ভিত্তি নিতান্ত ত্র্বল। এইগুলি ছাড়া আদি ও মধ্য-লালায় বণিত ঘটনা-সমূহের মধ্যে অতি অল্ল অংশই কবিরাজ গোস্বামীর মৌলিক অনুসন্ধানের ফল।

তাঁহার বর্ণনায় অতিশয়োক্তির প্রতি আগ্রহও বেশী। ঐতিতক্তকে তিনি নম ও বিনাতভাবে আঁকিতে যাইয়া কাহারও কাহারও মনে এমন ভাব জ্বাগাইয়াছেন যেন রামানন্দের নিকটই ঐতিতক্ত রাধাতক্ব শিক্ষা করিয়াছিলেন। বাঙ্গালা দেশে রাধাকৃষ্ণতক্ব প্রচারের কিছু অপ্রাচ্ছা ছিল না। ভাগবতের যে সব প্লোক রামানন্দ আর্ত্তি করিয়া রসতক্ব বুঝাইয়াছেন তাহাও ঐতিচতক্তের অজ্ঞাত ছিল না। ইংলণ্ডের শিউরিট্যানগণ যেমন বাইবেলের উক্তি দিয়া নিজ্ঞেদের কথাবার্তা চালাইতেন, পুওরাক বিস্তানিধি এবং নিতানন্দের সহিত ঐতিচতক্তের মিলনের বর্ণনা পড়িয়া জ্বানা যায় নববাপে বিশ্বস্তর মিশ্র ও তাহার অমুগত ভক্তগণও তেমনি ভাগবতের প্লোক দিয়া আলাপ-পরিচয় করিতেন। সনাতনের দৈক্য-বিষয়ে অতিশয়োক্তি করিয়া তিনি এমন ধারণা জ্ব্যাইয়াছেন যে সনাতন সত্যই বুঝি নাচবংশের লোক।

শ্রীচৈতত্যের জাবনের বহিরপ্প ঘটনা বা ঐতিহাসিক তথ্ব আমের আঁঠির ভায় নিতাগুই রসহান। কিন্তু আঁঠি না থাকিলে আন একটুতেই বিকৃত হইয়া যাইত, হাড় না থাকিলেও মানুষ বাঁচিত না। সেই জভ সতা সভাই ভাহার জাবনে কি কি ঘটনা ঘটিয়াছিল তাহা বাহির করিতে



832

### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

যাইয়া শ্রীচৈতগুচরিতামূত-বর্ণিত কতকগুলি ঘটনার প্রতি সংশয় প্রকাশ করিলাম।

শ্রীতৈত তি বিভায়ত বাঙ্গালা সাহিত্যের অভ্রেণী স্তম্বরূপ। ইহাতে কাব্য ও দার্শনিকতার অপূর্বর সমাবেশ হইয়াছে। সংস্কৃত ভাষায় গোস্বামিগণ যে সমস্ত ভ্রমহ তব আনোচনা করিয়াছেন, তাহা কৃষ্ণদাস করিয়াজ যথাসম্ভব সরল করিয়া বাঙ্গালা ভাষায় প্রকাশ করিয়াছেন। ইংরাজী কাবা-সাহিতে পালগ্রেভ যে কান্য করিয়াছেন, গৌড়ায় বৈক্ষর ধর্মের ভিত্তিবরূপ সংস্কৃত গ্রন্থ-সমূহের সম্বন্ধে কৃষ্ণদাস করিয়াজ সেই কার্যা করিয়াছেন। শ্রীতৈত তের ভাবকে আস্বাদন করিয়া যদি সাধন পথে অগ্রসর হইতে হয়, তাহা হইলে শ্রীতৈত তেচরিতামূত ছাড়া আর গতি নাই।

# GENTRAL LIBRARY

## ত্রোদশ অধ্যায়

## গোবিন্দদাসের কড়চা

বাঙ্গালার বৈশ্বৰ সাহিত্যের মধ্যে অনস্ত বতু চণ্ডাদাসের "কুঞ্চকীর্ত্তন" ও গোবিন্দদাসের কড়চা লইয়া যত আলোচনা ও আন্দোলন হইয়াছে, এত আর অহ্য কোন গ্রন্থ লইয়া হয় নাই। গোবিন্দদাসের কড়চার প্রামাণিকতার স্বপক্ষে ডা' দানেশচন্দ্র সেন ও বিপক্ষে প্রীযুক্ত মুণালকান্তি ঘোষ মগশয় এত বিবিধ প্রকারের যুক্তি উপস্থিত করিয়াছেন যে এ সম্বন্ধে কিছু নৃতন কথা বলার চেন্টা তঃসাহসিকতা মাত্র। কিন্তু এই চুইজন স্থবিজ্ঞ ও প্রবাণ গ্রন্থকারের যুক্তিগুলি ঠিক 'যুক্তি' নামে অভিহিত করা যায় কি না, সে সম্বন্ধে আমার খট্কা লাগিয়াছে। ডা' সেন লিথিয়াছেন, "যদি তিনি (জয়গোপাল গোস্বামী) দিতেন এবং অমৃতবাজার পত্রিকা অফিস হইতে পুক্তকথানি বাহির হইত, তবে ইহার বিরুদ্ধে সম্ভবতঃ কোন আন্দোলন হইত না" (করচার হয় সংস্করণের ভূমিকা, পৃত ২২)। অহ্যত্র "গোবিন্দদাসের করচায় প্রামাণিকতাসম্বন্ধে কতিপয় স্বার্থপর লোক ও সংস্কারান্ধ পণ্ডিত একটা ব্যা হৈতৈ ভূলিয়াছিলেন" (বস্বভাষা ও সাহিত্য, পঞ্চম সংস্করণ)।

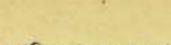
প্রীযুক্ত ঘোষ মহাশয় এইরূপ গালাগালির পাণ্টা জবাব দিয়া লিখিয়াছেন, "এই ত্রিশ বৎসরে বহু পরিপ্রমের ফলে হয়ত তাঁহার (ডা সেনের) সাবেক মন্তিক্ষের পীড়া প্রবল আকার ধারণ করিয়াছিল, এবং সেই জ্বন্তই হয়ত এই ঘটনাটা সম্বন্ধে তিনি বিষম ধার্থায় পড়িয়াছিলেন" (গৌরপদতরজিণীর ২য় সং, ভূমিকা, পৃত ১৩৮)।

আমি বালাকাল হইতে ডা সেনের ও শ্রীযুক্ত মৃণালবাবুর প্রেহ পাইয়া আসিতেছি। এই গ্রন্থ লেখার জন্ম উভয়েই কৃপা করিয়া আমাকে গ্রন্থাদি ও উপদেশ দিয়া সাহায্য করিয়াছেন। ঐতিহাসিক যতই সভ্যানুসন্ধিৎস্থ হউন না কেন, সংসর্গ ও আবেন্টনীর প্রভাব তিনি সম্পূর্ণরূপে অতিক্রম করিতে পারেন না। সেই জন্ম আশক্ষা হয় যে এ সম্বন্ধে আমার বিচার হয়ত নিরপেক্ষ হইবে না। আমি ডা° সেনের ও মৃণালবাবুর ব্যবহৃত যুক্তির পুনরুল্লেখ না করিয়া এই বিষয়টি-সম্বন্ধে আমার মন্তব্য সংক্ষেপে প্রকাশ করিব।

## কড়চা-সম্বন্ধে আন্দোলনের ইতিহাস

কড়চা-সথকে আন্দোলনের বিবরণ ডা° দেন ও ঘোষ মহাশয় লি বিয়াছেন; কিন্তু ইহারা কভকগুলি প্রয়োজনায় সংবাদ দেন নাই। সেই জয় সংক্ষেপে এই আন্দোলনের একটি ধারাবাহিক ইভিহাস দিতেছি। এই ইভিহাস হইতে দেখা যাইবে যে প্রথমে কড়চার অপক্ষের ও বিপক্ষের লেখকগণ স্বীকার করিয়াছিলেন যে উহার থানিকটা অংশ প্রামাণিক নহে—থানিকটা প্রামাণিক। সরে ডা° সেন কড়চার সমগ্র অংশই প্রামাণিক ও প্রীযুক্ত ঘোষ সমগ্র অংশই প্রপ্রামাণিক ছির করিয়াছেন।

- ১। কড়চা-প্রকাশের ছই বৎসর পূর্বের অর্থাৎ ৪০৭ চৈত্যান্দ, ১৮৯৩ গুরুলের ১৬ কার্ত্তিক জারিধের বিফুপ্রিয়া পত্রিকায় (তৃতীয় বর্ব, ১৫ সংব্যা) মহায়া শিশিরকুমার ঘোষ লিখিয়াছিলেন. "প্রীমোবিন্দের করচা বলিয়া প্রকথানি অতি হুন্দর গ্রন্থ আছে। গ্রন্থকার প্রিসৌরাজের সমকালাম লোক, কায়ত্ব, বেশ পয়ায় লিখিতে শায়েন, বর্ণনা শক্তিও স্থানর আছে, সংস্কৃত ভাষায়ও উত্তম অভিজ্ঞতা ছিল স্পান্টই ঘোষ হয়।" পার্ভুলিপি বোভয়া গিয়াছে ও কড়চার অত্য পূথি শাভয়া মাইজেছে না জানিয়ান্ত শিশিরবার সে সম্বন্ধে কোনরূপ উচ্চবাচ্য করেনে নাই।
- ২। ১৮৯৫ খুন্টাব্দে অমগোপাল গোস্থানী নহাশয় সংস্কৃত প্রেস ডিপজিটরি হইতে গোবিন্দদাসের কড়া প্রাক্তাশ করেন। গ্রান্থ-প্রাক্তাশের কয়েক বংসর পূর্বের তিনি শিশিরবারুকে উক্ত গ্রান্থের আনিকটার পাড়লিগি পড়িতে দেন ও পরে তাহা থোক্তয়া যায়। ডা° সেন বলেন যে ডংগরে গোস্থানী নহাশয় "শান্তিপুরবাসী ভ্রমিনার গোস্থানী নহাশয়ের নিকট হইতে প্রাপ্ত আর একথানি গভিত পুলি-দৃষ্টে এবং তাহার নিকক্ত



নোট হইতে বহু কথে লুগু পত্রগুলির পাঠোদ্ধার করিয়াছিলেন।" এরূপভাবে থণ্ডিত পুথি ও নোটের সাহায্যে সঙ্গলিত পুস্তকের আগা-গোড়া সব কথা প্রামাণিক হওয়া সন্তব নহে।

- ০। কড়চা-প্রকাশের অবাবহিত গরেই মতিলাল ঘোষ মহালয় বিষ্ণুপ্রিয়া পত্রিকায় লেখেন যে, "হাঁটু ধরি রাম রায় করেন জন্দন" তক (অর্থাৎ প্রথম সংকরণের ৫০ পৃষ্ঠা তক, ঘিতীয় সংকরণের ২০ পৃষ্ঠার ১০ প্রার পর্যান্ত) প্রক্রিপ্ত (বিষ্ণুপ্রিয়া পত্রিকা ৪০০ হৈতন্তান্ধ, কার্ত্তিক, পৃত ৭০০-৪০৬)। কিন্তু তিনি ইহাও বলেন যে, "ইহার পরে এত্তে যাহা আছে তাহা সমস্তই সত্য।" এই কথা লিখিত হইবার চলিশ বংসর পরে আল মতিবাবুর আতৃস্পুদ্র মুণালবাবু কড়চার পৃথি সংগ্রহ ও তাহার কিয়দংশ হারাইবার ইতিহাস লিখিয়া প্রমাণ করিতে চাহেন যে কড়চার আগোগোড়া সমস্ত অংশই জয়গোপাল গোস্বামীর নিজের রচনা (শীযুক্ত মুণালকান্তি ঘোষ-কৃত "গোবিন্দদানের করচা-রহন্ত," পৃত ১৫১)।
- ৪। কড়চা-প্রকাশের ভিন বংসর পরে অর্থাৎ ১৮৯৮ গুর্টাব্দে মহামহোপাধ্যায় হরপ্রসাদ শাস্ত্রী Calcutta Review পত্রে (Vol. CCXI) The Diary of Govindadasa এবং Topography of Govindadas's Diary নামক তুইটি প্রবন্ধ লোখেন। 'প্রথম প্রবন্ধে শাস্ত্রী মহাশর বলেন যে গ্রন্থখানি মোটাম্টি প্রামাণিক। ভবে প্রীতিভক্তের ভিরোভাবের পর নিত্যানন্দ-শাখাভুক্ত ব্যক্তিগণ সম্প্রদায়ের নেতৃত্ব লাভ করেন এবং তাঁহাদের চক্রান্তেই নরহরি সরকার ও গোবিন্দ কর্মকারের ভায়ে ব্যক্তির নাম বৈক্ষর সাহিত্য হইতে বাদ যায়। এই যুক্তি যে প্রমাণসহ নহে, তাহা প্রথম ক্ষমায়ে দেখাইরাছি।

<sup>্</sup> এ এবল বৃষ্টির নীতে পান্তী মহাপত্তের থাকার নাই। কিন্তু Indian Historical Quarterly ম ব্যপ্তনাধ-স্থৃতি সংবাধ উক্ত প্রবন্ধন পান্তী মহাপত্তের লেখা বাজিলা উলিখিক হইছাছে। ডা' নেনকে আমি এই সংবাধ দিলে তিনি বলেন যে তিনি নিজেও ইক্ত পত্তে গোবিলাবাদের কড়গা-সথলে একটি প্রবন্ধ লিখিলাছিলেন। কিন্তু প্রথমোক্ত প্রবন্ধতির এক স্থানে আছে, 'It has been suggested by Baba Dineschandra Sen that the modern Trimallaghari, near Hydrabad, was ancient Trimalla" (এ, পু" ৯১)। স্কুলাং এই প্রবন্ধটি দীনেশবাদ্ধ কোনা নহে—পান্তী মহাপত্তের স্কুলা।

836

### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

৫। ১৯०० श्रुक्टोटमत ५३ नत्वश्वत त्रविवादत मीरनभवाव वक्रीय সাহিত্য-পরিষদে গোবিন্দদাসের কড়চা-সম্বন্ধে একটি প্রবন্ধ পাঠ করেন। তাহাতে তিনি বলেন, "গ্রন্থের ৫১ পৃষ্ঠা পর্যান্ত প্রামাণ্য কি না সে বিষয়ে মতভেদ আছে। অবশিষ্ট অংশ যে প্রামাণ্য তাহা অনেকেই স্বীকার করেন। তিনি শেষ অংশের উপর নির্ভর করিয়াই প্রবন্ধ লিখিয়াছেন (সাহিত্য-পরিষদের ১৫০৮ সালের ষষ্ঠ মাসিক অধিবেশনের কার্য্যবিবরণী, পু<sup>o</sup> ৪)। এখানে লক্ষ্য করার বিষয় এই যে ১৯০০ খুটাব্দে ডা সেন কড়চার সর্বাংশ প্রামাণিক বলিয়া মনে করেন নাই। কিন্তু কড়চার বিতীয় সংস্করণের ভূমিকায় তিনি লিখিয়াছেন যে, "অপরাপর প্রাচীন পুথি-সম্পাদকগণের ভায় তিনিও (জয়গোপাল গোস্বামী) প্রাচীন বর্ণ-বিভাসের প্রাকৃত রীতি কতকটা বদলাইয়াছেন। তাহা ছাড়া মাঝে মাঝে অপ্রচলিত শব্দও পরিবর্ত্তন করিয়াছেন। এবং প্রার ছন্দের বেখানে কোনরূপ ব্যতিক্রম পাইয়াছেন, সেখানে ছুই-একটি শব্দ ক্মাইয়া-বাড়াইয়া তাহা নিয়মিত করিয়াছেন।------এইরূপ পরিবর্ডন সত্তেও যদি চণ্ডাদাস, কৃত্তিবাস, কবিকল্প ও কাশীদাস প্রভৃতি প্রাচীন কবিদিগকে মানিয়া লওয়া হয়, তবে কড়চা কি দোষে অপাংক্রেয় হইয়া থাকিবে ৽" অর্থাৎ গোস্বামী মহাশয় কড়চার মূল বিষয়ে হত্তকেপ করেন নাই; অতএব ইহার সবটাই প্রামাণিক।

পূর্বেরাক্ত সভার সভাপতি ছিলেন হরপ্রসাদ শারী মহাশয়। তিনি বলেন, "গ্রন্থগানি অতি চমংকার। তবে স্থানে স্থানে সন্দেহ হয়। আশা করা যায় শীঘই আরও পুথি পাওয়া যাইবে।" রামেক্রপুন্দর ক্রিবেদী মহাশয় বলেন, "তিনি এই পুথির আরও সংবাদ পাইয়াছেন, বিশেষ সংবাদ লইবেন।" ত্রিবেদী মহাশয়ের এই উক্লিটি থুব মূল্যবান্। তিনি বিশেষ প্রমাণ ব্যতিরেকে কোন কথা বলিবার পাত্র ছিলেন না। তিনি গোবিন্দদাসের কড়চার অহা পুথি যে আছে সে সংবাদ পাইয়াছিলেন। দীনেশবাবু বাক্লার লক্ষ্মীনারায়ণ তর্কচুড়ামণি মহাশয়ের পত্র উদ্ভূত করিয়া দেখাইয়াছেন যে হুগলীর সন্নিহিত কেওটা গ্রামে গোরাটাদ চক্রবর্তীর নিকট ঐ কড়চার একখানি পুথি ছিল (ভূমিকা, পূত ১৯)।



মৃণালবাবু তর্কচ্ডামণির কথায় আন্থা স্থাপন করিতে পারেন নাই (করচারহন্ত, পৃত ৫১)। ১৯০০ গুরুদ্ধে ত্রিবেদী মহাশয় যে কথা বলিয়াছেন তাহা অবিখাস্ত বলিয়া উড়াইয়া দেওয়া কঠিন। ১৩০৮ সালের আষাত্র মাসের "সাহিত্য" পত্রিকায় সেন মহাশয় লেখেন যে কড়চা প্রীতৈ ত্যের জীবন-চরিতগুলির মধ্যে সর্ব্বাপেকা প্রামাণিক।

- ৬। ১৯০২ থুটান্দে জগবন্ধ ভদ্র মহাশয় গৌরপদতরঙ্গিণীর উপক্রমণিকায় লেখেন, "কাঞ্চননগর-নিবাসী কড়া-লেখক কশ্মকার কুলোন্তব গোবিন্দদাস, ইনি স্ত্রী-ছারা লাঞ্ছিত হইয়া শ্রীগৌরাঙ্গের শরণাপন্ন হয়েন এবং শ্রীগৌরাঙ্গের দাক্ষিণাতো ভ্রমণ-সময়ে ছই বংসর কাল তাঁহার সঙ্গে থাকিয়া োবিন্দদাস যাহা স্বচক্ষে দেখিয়াছিলেন, তাহাই কড়চায় লিপিবন্ধ করেন" (পূ ২৯)। ভদ্র মহাশয়ের ভায় পণ্ডিত ব্যক্তির মনে কড়চার প্রামাণিকতা-সম্বন্ধে কোন সন্দেহের উদয় হয় নাই।
- ৭। ১৯১৩ খুক্টাব্দের এপ্রিল মাসের Dacca Review পত্রিকাতে H. S. Stapleton সাহেব লেখেন যে খ্রীচৈতত্ত্বের জীবনী-সম্বন্ধে গোবিন্দ-দাসের কড়চা একখানি প্রামাণিক গ্রন্থ (পূ° ৩৬)।
- ৮। .০১৭ সালের আষাড় সংখ্যার "সাহিত্য" পত্রিকায় অমৃতলাল শীল মহাশয় প্রমাণ করার চেষ্টা করেন যে গোবিন্দদাসের কড়চায় বর্ণিত দক্ষিণ-ভ্রমণ সত্য নহে।
- ৯। ১৩৩৪ সালের চৈত্র সংখ্যার "সেবা" পত্রিকায় যোগেক্রমোহন ঘোষ মহাশয় কড়চার বিরুদ্ধে তীব্র মন্তব্য প্রকাশ করেন।
- ১০। ১৩৪২ সালের আয়াড় মাসে চারুচক্স শ্রীমানী, বি. ই., মহাশয় "শ্রীচৈতত্মদেবের দক্ষিণ-ভ্রমণ" দ্বিতীয় থণ্ডে কড়চার স্বটাই প্রক্রিপ্ত প্রমাণ করিতে চাহিয়াছেন।
- ১১। ১৩৪৩ সালের প্রাবণ মাসে শ্রীযুক্ত মুণালকান্তি ঘোষ মহাশয়
  "গোবিন্দ দাসের করচা-রহস্ত" প্রকাশ করিয়াছেন। এই গ্রন্থে তিনি
  দেথাইতে চেন্টা করিয়াছেন যে কালিদাস নাথের সহিত কড়চার কোন
  সম্পর্ক ছিল না, এবং কড়চার সবটাই জয়গোপাল গোস্বামীর লেখা।
  - ১২। সম্প্রতি ঢাকা হইতে শ্রীযুক্ত বিপিনবিহারী দাশগুপ্ত

#### ঐতিভক্তচরিতের উপাদান

836

"Govinda's Kadoba: a Black Forgery" নামক গ্রন্থ প্রকাশ করিয়াছেন।

যে রীতিতে আমি ঐতিতত্তের অতাত জাবনীর বিচার করিয়াছি সেই রীতিতে দৃঢ়নিষ্ঠ হইলে কড়চাকে প্রামাণিক বলিয়া স্বীকার করা কঠিন হয়। নিম্নলিধিত কয়েকটি কারণে কড়চার অকুত্রিমতায় সন্দেহ হয়।

## কড়চার অকৃত্রিমতায় সন্দেহের কারণ

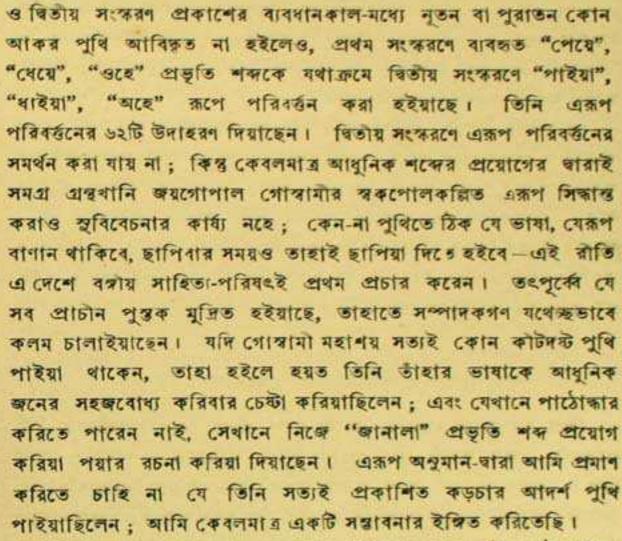
কড়চার মতে "পৌষনাস সংক্রান্তি দিন শেষ রাত্রে" (পূ° ৭) বিশ্বস্তুর মিশ্র গৃহত্যাগ করেন; কিন্তু মুরারি গুপু বলেন যে মাঘের সংক্রান্তি দিনে প্রভু সন্মাস গ্রহণ করেন। নবদীপ-লালা-সম্পর্কিত কোন ঘটনা-সম্বন্ধে গোবিন্দদাস অপেকা মুরারি গুপু অধিক প্রামাণিক।

মুরারি গুপু বিশ্বপ্ররের নবদীপ-লীলার অনেক সঙ্গীর নাম করিয়াছেন। গাঁহাদের নাম তিনি করেন নাই, বা বৃন্দাবনদাস নিত্যানন্দের নিকট শুনেন নাই, তাঁহাদের মধ্যে কেছ যে প্রীচৈতক্তের নীলাচল-গমনের সঙ্গী ছইবেন তাহা সপ্তব মনে হয় না; কেন-না তাঁহার অন্তরঙ্গ ভক্তরাই তাঁহার অনুগমন করিয়াছিলেন। কিন্তু কড়চায় উল্লিখিত "বাণেশ্বর, শভুচক্দ" (পূ০ ১২-১০) প্রভৃতি কাহারও নাম নবদীপ-লীলা-প্রসঙ্গে কোন চরিতকার বা পদক্রতা বলেন নাই।

গোবিনদদাসের কড়চার আভান্তরীণ প্রমাণ বিচার করিয়া ইহাকে জয়গোপাল গোস্বামীর রচনা বলিয়া প্রমাণ করিবার চেন্টা হইয়াছে। শ্রীযুক্ত বিশ্বেশ্বর দাস, শ্রীযুক্ত মৃণালকান্তি ঘোষ ও শ্রীযুক্ত বিপিনবিহারী দাশগুপ্ত মহাশয় এইরূপ চেন্টা করিয়াছেন। কড়চার ৬৬ পৃষ্ঠায় আছে—

## জানালা হইতে দেখি এ সব ব্যাপার। বারমুখী মনে মনে করয়ে বিচার।

উপ্ত পহারে পর্তুগীজ শব্দের অপত্রংশ "জানালা" শব্দের প্রয়োগ নিতান্ত সন্দেহজনক। শ্রীযুক্ত দাশগুপ্ত নহাশয় দেখাইয়াছেন যে কড়চার প্রথম



প্রায়ুক্ত দাশগুপ্ত মহাশয় কড়চায় উল্লিখিত কয়েকটি ভৌগোলিক তথ্যের প্রতি সন্দেহ প্রকাশ করিয়াছেন। তন্মধ্যে কড়চার ৮২ পৃষ্ঠায় উল্লিখিত "রসালকুণ্ডা" ও ৫২ পৃষ্ঠায় উল্লিখিত "পূর্ণনগর"-সম্বন্ধে তাঁহার মন্তব্য ক্ষর যত্নাথ সরকার মহাশয় সমর্থন করিয়াছেন। দাশগুপ্ত মহাশ্রের প্রস্কোয় ক্ষর যত্নাথ লিখিয়াছেন, "Russell-konda is quite a modern town, founded in 1836 and named after a Madras Civil Servant, Mr. George Russell. It had no existence in 1511, in which year Jaygopal Goswami makes our saint visit it." "In 1511 Poona was a very small and obscure village with a scanty population and without any temple to

#### শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

820

attract pilgrims." গোবিন্দদাসের কড়চার প্রামাণিকতার পক্ষেরাসেলকোণ্ডা ও পূর্ণনগরের উল্লেখ মারাত্মক। শ্রীযুক্ত মূণালবাবু ও বিপিনবাবু কড়চায় উল্লিখিত ভৌগোলিক বিবরণ ও ঐতিহাসিক তথ্যের আরও অনেক অসম্পৃতি দেখাইয়াছেন।

যে সকল গ্রন্থের প্রাচীন পুথি পাওয়া গিয়াছে বা য়াহাদের উল্লেখ প্রামাণিক বৈক্ষব প্রন্থে আছে, অথচ যাহাদের বর্ণনার মধ্যে অসম্ভব রক্ষের অসামঞ্জন্ত নাই, সেই সকল গ্রন্থকেই আমি প্রামাণিক বলিয়া স্বীকার করি। গোবিন্দদাসের কড়চার প্রাচীন পুথি পাওয়া যাইতেছে না — কড়চার উল্লেখ বৈক্ষব সাহিত্যের কোথাও নাই এবং মুরারি, কবিকর্পপূর প্রন্থতির বর্ণনার সহিত ইহার অনেক অসামঞ্জন্ত। সেই জন্ম আমার পক্ষে এই কড়চাকে প্রামাণিক বলিয়া স্বীকার করা কঠিন।

## জয়গোপাল গোস্বামীর কি কোন স্বার্থ ছিল ?

কিন্তু যে সকল গ্রন্থকে আমি জাল বলিয়া প্রমাণ করিবার তেন্টা করিয়াছি, সেই সকল গ্রন্থ প্রচার করায় কাহারও-না-কাহারও স্বার্থ ছিল। একথানি বই জাল করার মতন কন্ট স্বীকার করিতে হইলে, লোকে ভাবিয়া দেখে তাহাতে তাহার কি লাভ হইবে। জয়গোপাল গোস্বামী মহাশ্ব কোন্ স্বার্থবশে এরপ একখানি গ্রন্থ জাল করিবেন ? তিনি অবৈতবংশীয় রাক্ষণ —কর্ম্মকার নহেন। গোবিন্দ কর্ম্মকার প্রতিক্তন্তের যে "থড়া ও খরম" লইয়া সঙ্গে সঙ্গে গিয়াছিলেন, তাহা গোস্বামী মহাশ্ব দৈববলে পাইয়াছেন এরপ কথাও তিনি বলেন নাই—বা থড়া-থড়ম দেখাইয়া প্রসা রোজগারের চেন্টাও করেন নাই। প্রীচৈতন্তের সমসামন্বিকের লেখা বলিয়া কবিত বই প্রকাশ করিয়াছিলেন, তাহাও মনে হয় লা; কেন-না তিনি অনেক বই লিখিয়াছিলেন, সোহাও মনে হয় লা; কেন-না তিনি অনেক বই লিখিয়াছিলেন, সেই জন্ম জানিতেন যে কবিতার বই প্রকাশ করিয়া প্রসা পাওয়া যায় না। জয়গোপাল গোস্বামীর যদি চাটার্টনের ন্যায় হালের



### গোবিন্দদাসের কড়চা

লেখা প্রাচীন বলিয়া চালাইয়া দিয়া একটা চাঞ্চল্য ও রহস্তের স্থি করাই উদ্দেশ্য হইত, তাহা হইলে তিনি প্রীচৈতভাকে লইয়া উহা করিতেন না; কেন-না তিনি অবৈত-বংশের লোক ও শান্তিপুরের অধিবাসী; প্রীচৈতভার চরিত্র বিকৃত করিয়া আঁকিয়া তিনি নাম-যশ পাইবার চেন্টা করিতেন না। তারপর আরও বিবেচ্য এই যে দক্ষিণ-দেশ-সম্বন্ধে কড়চায় এমন সব সংবাদ আছে যাহা সাধারণ ভূগোলে, মাাপে বা গেন্দেটিয়ারেও পাওয়া যায় না; যথা —পত্বগুহা, নান্দীশ্বর, নাগ পঞ্চ নদা, দেবলেশ্বর, চোরানন্দাবন প্রভৃতি। গোন্ধামী মহাশ্ব নিজে দক্ষিণ-দেশ জ্বাণ করেন নাই। তাহা হইলে এত সংবাদ তিনি কিরূপে পাইলেন ? যদি তর্কের থাতিরে ধরিয়া লওয়া যায় যে তিনি বহুকাল ধরিয়া পুথিশত্র খুঁজিয়া, লোক মারফ্ছ শুনিয়া ও পত্রাদি লিখিয়া তথা সংগ্রহ করিয়াছিলেন, তাহা হইলেও প্রশ্ন উঠে যে কি স্বার্থ-সাধনের উদ্দেশ্যে তিনি এইরূপ বায়- ও পরিশ্রম-সাধা কার্যা করিয়াছিলেন।

## গোবিন্দ কে ?

ডা সেনের মতে পুরীতে শ্রীচৈতত্যের ভূত্য গোবিন্দদাস ও কড়চাকার এক ব্যক্তি (ভূমিকা, পৃত্ব৬)। মৃণালবাবু বলেন যে উভয় ব্যক্তি এক হইতে পারেন না; কেন-না কবিকর্পপুরের চৈত্যচন্দ্রোদয় নাটকে ও কৃষ্ণদাস কবিরাজের চরিতামতে আছে যে ঈশরপুরীর শিশ্য গোবিন্দ-দাস পুরীতে শ্রীচৈতশ্যের সহিত প্রথম বার মিলিত হয়েন (করচা-রহস্ত, পৃত্ব৮৬-৮৯)।

মৃণালবাবুর যুক্তির উত্তরে বলা যাইতে পারে যে চরিচাম্তের উক্ত বর্ণনা কবিকর্ণপূরের নাটক অবলম্বনে লেখা। কবিকর্ণপূর নাটকে গোবিন্দকে রক্তমকে আনিবার অব্যবহিত পূর্বের স্বরূপ-দামোদরের পরিচয় এরূপ ভাবে দিয়াছেন যে তিনি যেন শ্রীচৈতক্যের সহিত এইখানেই প্রথম বার মিলিত হইলেন। নাটকে কবিকর্ণপূর এমন কথা বলেন নাই

## ৪২২ - ত্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

যে স্বরূপ-দামোদরের সহিত ঐতিত্তেরে পূর্বের কথনও জানা-শুনা ছিল। অথচ ঐতিত্তভাগবতে আছে যে স্বরূপ-দামোদরের গার্হসাশ্রমে নাম ছিল পুরুষোত্তনাচার্যা ( ৩১১।৫১৫ )। চরিতায়তে আছে—

পুরুষোত্তম আচার্য্য তার নাম পূর্ববাশ্রমে।
নবজাপে ছিলা তিঁহো প্রভুর চরণে।
প্রভুর সন্ন্যাস দেখি উন্মন্ত হইয়া।
সন্মাস গ্রহণ কৈল বারাণসী গিয়া॥ ২।১০।১০ -১

যেরপ স্বরূপ-দামোদরের বেলায় সেইরূপ গোবিন্দদাসের বেলায়ও
নাটকীয় রসপরিপুত্তির জন্ম কবিকর্ণপূর এমনভাবে ঘটনার সন্নিবেশ
করিয়াছেন যে মনে হয় গোবিন্দের সঙ্গে শ্রীচৈতন্মের এই প্রথম
সাক্ষাংকার। যদি কবিকর্গপূরের বর্ণনা সম্বেও ভক্তগণ বিশাস করেন যে
স্বরূপ-দামোদরের সহিত শ্রীচৈতন্মের নবন্ধাপেই আলাপ ছিল, তাহা হইলে
গোবিন্দের সহিত পূর্বর ঘনিষ্ঠতা স্বীকার করায় দোষ কি ?

ঈশ্বরপুরার শিশ্ব গোবিন্দ ও কড়চাকার গোবিন্দ অভিন্ন মনে করার পক্ষে আর একটি কথা বলা যায়। ঐতিচতশ্রের তিরোভাবের নয় বংসর পরে কবিকর্ণপূর-কর্তৃক লিখিত "ঐতিচতশ্রচরিতামৃত মহাকাব্যে" গোবিন্দের পরিচয়-প্রদান-প্রসঙ্গে নিম্নলিখিত প্লোকটি আছে—

অথ গুদ্ধমতির্মহাশয়ঃ
স তু গোলিন্দ ইতি প্রকীর্তিতঃ।
বহুতীর্গপরিভ্রমান্বহিঃ
স্থমহান্ পুণাপয়োনিধৌ যধৌ॥ ১৩।১৩০

কবিকর্ণপূর গোবিন্দকে বহু তীর্থ পরিভ্রমণকারী বলিয়াছেন, আর কড়া হইতে জানা যাইতেছে যে কড়চাকার গোবিন্দ বহু তীর্থ ভ্রমণ করিয়াছিলেন।

শ্রীতৈতত্ত্বের দক্ষিণ-শ্রমণে তাঁহার সঙ্গে গোবিন্দ গিয়াছিলেন, এরুণ কোন কথা শ্রীচৈতত্ত্বের কোন চরিতগ্রন্তে, কোন শ্লোকে, স্তবে বা প্রামাণিক



### গোবিন্দদাসের কড়চা

পদে নাই। কিন্তু একজন যে তাঁহার সঙ্গে গিয়াছিলেন এ কথা মুরারি গুপু, কবিকর্ণপূর ও কুঞ্চদাস কবিরাজ বলেন। মুরারি গুপ্তের মতে শ্রীচৈতভারে দক্ষিণ-ভ্রমণের সঙ্গীর নাম বিষ্ণুদাস; যথা—

> শ্রীবিঞ্গাসেন বিজেন সার্দ্ধ-মালালনাথং স জনার্দ্ধনং প্রভঃ। দৃষ্টা প্রণম্য নিবসন্ কিয়দ্দিন-ন্মায়াতি সর্বেশ্বর-নীল-কন্দ্রম্॥ ।১৬।১২

কবিকর্ণপুর ও কবিরাজ গোস্থামীর মতে ঐ ব্যক্তির নাম কৃষ্ণদাস বিজ্ঞ, বা কালা কৃষ্ণদাস। যদি তিন জন চরিতকারের মধ্যে এক জন ঐ ব্যক্তির নাম বিষ্ণুদাস, ও অপর ছই জন কৃষ্ণদাস লেখেন, তাহা হইলে সঙ্গীটির নাম গোবিন্দদাস হওয়া কিছু বিচিত্র নহে। বিষ্ণুদাস, কৃষ্ণদাস, গোবিন্দদাস সমান অর্থবাচক। কবিকর্ণপুর ও কৃষ্ণদাস কবিরাজ্ঞের মতে শ্রীচৈত্তা কালা কৃষ্ণদাসকে বর্জ্জন করিয়াছিলেন। যদি প্রভু তাহার ভ্রমণের সঙ্গীকে বর্জ্জন করিয়া থাকেন, তাহা হইলে চৈতত্তা-চিরতকারগণ তাহার নাম উল্লেখ না করিয়া ঐ নামের সমানার্থবাচক কোন নাম উল্লেখ করিয়াছেন, এরূপ অন্মান করা যাইতে পারে। কিছুদিন পরে ঐ সজী আসিয়া প্রভুকে সেবা করার জন্ত আকৃতি প্রকাশ করিলে প্রভু তাহাকে ক্ষমা করিয়া সেবা-ভার অর্পণ করেন, এরূপ কল্পনা করা যাইতে পারে।

### কড়চা কি একেবারে কাল্লনিক ?

কড়চার স্বপক্ষের ও বিপক্ষের সমস্ত যুক্তি পর্য্যালোচনা করিয়া আমার ধারণা জন্মিয়াছে যে প্রকাশিত গ্রন্থের কোন উক্তিই আপাততঃ শ্রীচৈতশ্রচরিতের ঐতিহাসিক উপাদানরূপে গ্রহণ করা যায় না। কিন্তু



#### শ্রীচৈতন্মচরিতের উপাদান

828

ভাই বলিয়া কড়চার আগাগোড়া সমন্তটাই যে জয়গোপাল গোসামীর কলনাপ্রসূত, ভাহার কোন প্রকার প্রাচীন ভিত্তি নাই, একথা বলাও সকত মনে হয় না। কোন প্রকার নির্ভরযোগ্য প্রমাণ না পাইলেও আমার বিশ্বাস যে গোসামী মহাশয় হয়ত কোন কীটদট্ট প্রাচীন পুথিতে সংক্ষিপ্রভাবে যাহা পাইয়াছিলেন, ভাহাই প্রবিত করিয়া নিজের ভাষায় লিখিয়া "গোনিন্দদাসের করচা" নাম দিয়া প্রকাশ করিয়াছিলেন।

the state to be at the state of the state of

# CENTRAL LIBRARY

## চতুৰ্দশ অধ্যায়

## আর করেকখানি নাতিপ্রামানিক গ্রন্থ প্রভান মিশ্রের "শ্রীকৃষ্ণচৈত্যোদয়াবলী"

৪০৭ শ্রীচৈততাকে, ১৮৯২-৯০ থফাকে, চৈততারেণ দাস নামক এক ব্যক্তি শ্রীহট্রের "নৃতন পরিদর্শক" যন্তে মুদ্রণ করাইয়া "শ্রীক্ষণতৈততােদ্যাবলী" প্রকাশ করেন। আমি নবদাপ-নিবাসী বৈষ্ণব সাহিত্যিক শ্রীযুক্ত হারদাস পােস্বামী মহাশয়ের নিকট ঐ গ্রন্থের প্রথম সংস্করণ দেখিয়াছি। প্রথম সংস্করণের মুদ্রিত পৃষ্ঠা-সংখ্যা ছিল ২৫, আর গ্রন্থের মাঝে মাঝে হাতে লিখিয়া তিনখানি পাতা বা ছয়টি পৃষ্ঠা জুড়িয়া দেওয়া ছইয়াছিল। কয়েকটি শ্লোক ও তাহার বঙ্গান্থবাদ হাতে লিখিয়া দেওয়ার উদ্দেশ্য-সম্বন্ধে প্রকাশক বলেন,—"এই সংস্করণে যে সমস্ত ভোল ছিল, তাহা পৃথক কাগজে লিখিয়া পত্রাঙ্ক রিষ্ণি করিয়া দিলাম।" মুদ্রিত পুস্তকের মলাটের চতুর্থ পৃষ্ঠায় "ফৌজদারী নজীর সংগ্রহের" বিজ্ঞাপন আছে; তাহা হইতে জানা যায় যে "শ্রীকৃষ্ণটৈতভোদয়াবলী"র প্রকাশক "অভিজ্ঞ উকিল"।

ভূমিকায় প্রকাশক বলেন যে তিনি "অতি প্রাচীন একখানা হস্তলিখিত গ্রন্থ (কোথায় পাইলেন, তাহা লেখা নাই) ও প্রসিদ্ধ বৈষ্ণব সাহিত্যিক শ্রীযুক্ত অচ্যতচরণ তত্তনিধির সংগৃহীত একখানি পুথির নকল মিলাইয়া

<sup>3</sup> ১৩৪২ সালের অগ্রহারণ মানের "একবিজা" পতিকার শীবুজ অচ্যত্রেণ চৌধুরী তবনিধি
মহালব উদ্ধৃত অংশের পথকে লিবিয়াছেন, "এইকা কোন উজিই ই কৃষিকাব নাই।" শীবুজ হরিদান
গোরামীর নিকট বে বইবানি আছে তাহাতে ইকা লেব। আছে আমি অচকে দেখিলাছি। হয়
অচ্যত্রাবুর নিকট বে বইবানি আছে তাহা অল্প কোন সংস্করণের অববা তাহার বইবানিতে হাতে
লিবিয়া কিছু মেওয়া হয় নাই, কেন-না তিনি ত প্রকাশকের আগন লোক।

#### শ্রীচৈতগ্রচরিতের উপাদান

গ্রন্থ প্রকাশ করিলেন।" কিন্তু এরপভাবে দুইথানি পুথি মিলাইয়া প্রকাশ করিলেও ৮-২০, ২৪-২৮, ৫৯-৬০ শ্লোক ও গ্রন্থসমান্তি-কালসূচক পুপ্পিকা কি করিয়া বাদ গিয়াছিল, ঐ শ্লোক কয়টি কোথায় পাওয়া গেল, এবং নৃত্ন শ্লোক-যোজনা কিরূপে "যে সমস্ত ভোল ছিল" তন্মধ্যে পরিগণিত হইতে পারে, সে সব সম্বন্ধে প্রকাশক কিছু বলেন নাই।

হাতে লেখা পুষ্পিকায় আছে—

825

শাকে পক্ষাগ্নি-বেদেন্দুমিতে তুলাগতে রবৌ। শ্রীহরিবাসরে শুক্লে গ্রন্থোহয়ং পূর্ণতাং গতঃ।

অর্থাৎ ১৪০২ শকের কার্ত্তিক মাসের শুক্রপক্ষীয় একাদশী দিবসে এই গ্রন্থ-প্রণয়ন-কার্য্য পূণ হইল। গ্রন্থকর্তা প্রত্যন্ন মিশ্র-সম্বন্ধে

১০০২ অন্তর্গণ "একবিভার" অচ্তবাবু বীতৃক্তৈতভোৰ্যাবলীর প্রকাশের ইতিহাস দিয়াছেন। তিনি বলেন যে তক্ষপ্রনাৰ চৌধুরী ঐ পুথি সংগ্রহ করেন; মহান্তা শিশিরকুমার ঘোৰ তরাজীবলোচন লাগকে পত্র লিবিয়া ঐ পুথির নকল লয়েন। ততিতভাচরণ লাস আর একখানি পুথি সংগ্রহ করেন ও প্রথমাক্র পুথির নকলের সহিত মিলাইয়া গ্রন্থ প্রকাশ করেন। কিন্তু অচ্যতবাবু একথা প্রত্ত করিয়া অধীকার করেন নাই বে ৮-১০, ২০-২৮, ০০-৬০ মোক হাতে লিবিয়া ঘোরনা করা হয় নাই। যদি এইয়প ঘোরনা হইয়া খাকে তবে কিয়পে উহা হইল ৷ তৈতভাবাবু ও উভয় পুথি মিলাইয়াই বই ছাপিয়াছিলেন ; এই হাতে লেখা মোকঞালি কোষা হইতে পাওয়া পোল ৷ আর তক্ষপ্রসাধ চৌধুরীর পৃথিবই বা বহস কত গ

আমি শীহরিবাদ গোপামী মহাপারের বইগানিতে হাতে লেখা উদ্ধৃত পুলিকা গেখিয়ছি। কিন্ত আশুনোর বিষয় এই যে অচ্যতবার ঐ পুলিকার দখকে একেবারে কোন প্রকার উচ্চবাচা না করিবা লিখিতেত্বে—"গ্রন্থথানি কত কালের ? প্রত্যের পের প্রোকটীতে এ সম্বাক্ষ দাহায় পাওৱা যায়। ভাহা এই—

#### তদৈবাদেশতঃ কৃষ্ণতৈতক্ষত দ্যানিখেঃ প্রভাষাখ্যেন মিপ্রেণ কৃতেরমুখ্যাবলী ।\*

আমার উদ্ধৃত পুলিকা বৰি ভাঁহার বইখানিতে না থাকিত তাহা হইলে তিনি পাই করিলা সে কথা বলিতে পারিতেন। ঐ পুলিকা থাকাতেই বুঝা বাল যে বইথানি লাল, কেন-না ১৪৩২ শকে অর্থাৎ বীতৈতভাৱে ২০ বংসর বল্পে কোন প্রহায় মিশ্রের সহিত শীতৈতভাৱ সাকাৎকারই হল নাই।

অচ্তিবাৰু আছও লিখিলছেন যে উলিখিত ছুইখানি পুণি ছাড়া তিনি আযুক্ত রামসদর মিশ্র মহাশরের সূহে "কুক্তকে (পিঠাকরা গাছের বন্ধনে ) লিখিত একখানা একুফ্চৈত্লোবলাৰলী পুণি"



#### আর কয়েকখানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

প্রকাশক বলেন—"গ্রন্থকার প্রভান্ন মিশ্র শ্রন্থই-দেশবাসী উপেন্দ্র মিশ্রের বংশসম্ভূত, মহাপ্রভূর সমসাময়িক এবং তাঁহার খুলতাত-ভাতা ছিলেন বলিয়া কথিত হয়। আমি বুরুঞ্গা এবং ঢাকার দক্ষিণের কোন কোন ব্রাহ্মণের নিকট গ্রন্থকারের বিষয় অনুসন্ধান করিয়াছিলাম। সকলেই বলিলেন যে প্রভান্ন মিশ্র তাঁহাদের বংশেরই একজন ছিলেন, কিন্তু কেই তৎসম্বন্ধে বিস্তার বিবরণ বলিতে পারিলেন না। কেই বলিলেন যে প্রভান্ন বিবরণ বলিতে পারিলেন না। কেই বলিলেন যে প্রভান্ন মিশ্রের বংশধর কেই নাই।" "প্রীতৈতগ্রচরিতায়তের অন্তালীলাতে তুইজন প্রভান্ন মিশ্রের উল্লেখ পাওয়া যায়। একজন উৎকলবাসী, অপরজন বিদেশী অপরিচিত লোক। তিনি পুরীতে অন্তাসকলের নিকট অপরিচিত হইলেও মহাপ্রভূর নিকট পরিচিত ছিলেন" কেন-না তাঁহাকে মহাপ্রভূর রায় রামানন্দের নিকট পাঠাইয়াছিলেন।

## গ্রন্থের প্রামাণ্য-বিচার

শ্রীতৈত চরিতায়তে তুইজন প্রত্যান্তর নাম আছে সতা, কিন্তু একজন প্রত্যান্ত বেক্ষচারী, যাঁহার নাম প্রভু নৃসিংহানন্দ রাথিয়াছিলেন, ° অত্য প্রত্যান্ত্র মিশ্র, যাঁহার নাম উৎকলবাসী ভক্তদের সহিত করা হইয়াছে। °

পেৰিয়াছেন। "উহার বহন ৪০০ বংসর (এজবিয়া, ১০৪২ অগ্র", পু" ০৭৯)।" শীবুজ রামসন্ধ মিশ্র উপেক্র নিজের বংশবর বলিয়া নিজের পরিচয় দিয়া থাকেন। "শীকুজচৈ চজ্যোদহাবলী" অকৃত্রিম ও প্রাচীন প্রমাণ করা ওাহার পক্ষে বিশেষ প্রয়োজন। কিন্ত এজপ করিতে হইলে ওাহার পুথিখানি কলিকাভায় "নাছিত্য-পরিষদে" বা "কলিকাভা বিশ্ববিভালয়ে" পাঠানো প্রয়োজন। তাহা হইলে প্রাচীন লিপি-বিশারদ্বণণ উহার কাল-নির্ণয় করিতে পারেন। তাহার বাড়ীর পুথিকে বিনা বৈজ্ঞানিক পরীকায় আমি ৪০০ বংসারের প্রাচীন বলিয়া গ্রহণ করিতে পারিলাম না।

- ১ উদ্ধৃত আংশে লক্ষ্য করিবেন যে বাছারা গ্রন্থান নিজকে নিজেদের বংশের লোক বলিয়া লাবী করিতেছেন জাহারা ভাহার সম্বন্ধে কিছুই "বিস্তার" অর্থাৎ সাঠক সংবাদ বিতে পারিলেন না। আবার কেহ বলিলেন যে জাতার বংশধরই নাই। এজপ পরশার বিরোধী উক্তি হইতে কি কোনজপ ঐতিহাসিক সত্য নিশ্বাল করা যায়?
  - 2 (5" 5", 313 -100 19 313 -144
  - · 35° 5°, 313 •13₹≥

প্রীচৈতগ্যভাগবতে । স্বরূপ দামোদরের সহিত মিলনের পর ছুইজন প্রস্থানের সহিত মহাপ্রভুর মিলন বর্ণিত হুইয়াছে, অর্থাৎ ১৪৩১ শকের মাঘ মাসে সন্ন্যাস করিয়া, ১৪৩২ শকের প্রথমে দাক্ষিণাত্য যাত্রা করিয়া, ১৪৩৪ শকে পুরীতে ফিরিবার পূর্বের ইহানের মধ্যে একজনের সহিত্ত প্রীচৈতগ্যের সাক্ষাৎ হয় নাই। কবিকর্ণপূর প্রীচৈতগ্যাকরিয়ারত মহাকাব্যে । দাক্ষিণাত্য হুইতে প্রত্যাবর্তনের পর প্রীচৈতগ্যাকরিয়ারত মহাকাব্যে । দাক্ষিণাত্য হুইতে প্রত্যাবর্তনের পর প্রীচৈতগ্যার সহিত প্রত্যান্দ্র মাজাৎকার বর্ণনা করিয়াছেন। উৎকলবাসী প্রত্যান্দ্র মিশ্র ও কাক্ষনপল্লীর নিকটবর্ত্তী কোন স্থানবাসী শিবানন্দের বন্ধু প্রত্যান্দ্র প্রকালারী ব্যত্তি, প্রীচৈতগ্যারতির অন্ত্যার্থতের অন্ত্যার্থতে অপর কোন "বিদেশী অপরিচিত প্রত্যান্দ্র মিশ্রের" কথা, যাহা আলোচ্য গ্রন্থের প্রকাশক ভূমিকায় বলিয়াছেন, তাহা পাইলাম না। প্রত্যান্ধ মিশ্র একজনই—ছুইজন নহে—অপর ব্যক্তি প্রত্যান্ধ বেক্ষচারী। প্রত্যান্ধ মিশ্র ১৪০৪ শক্রের পূর্বের মহাপ্রভুর সহিত পরিচিত হয়েন নাই; স্তরাং ১৪০৪ শক্রে গ্রাহার পক্ষে প্রীচৈতগ্যের জীবনী লেখা অসম্ভব।

"প্রীকৃষ্ণতৈতয়োদয়াবলী"তে প্রীতৈতয়ের জীবনা-সম্বন্ধে বিশেষ কোন খবর নাই, কেবল তিনি যে প্রীহট্রের সহিত অতি ঘনিষ্ঠভাবে সংশ্লিষ্ট ছিলেন, ইহাই বর্ণিত হইয়াছে। প্রস্তের তৃতীয় শ্লোকে আছে - মধুকর মিশ্র নামক একজন পাশ্চান্তা বৈদিক (অগ্র পুথিতে পাঠান্তর, দাক্ষিণাত্য বৈদিক ) ব্রাহ্মণ ছিলেন। তাঁহার পাঁচ পুত্রের মধ্যে উপেন্দ্র একজন। উপেন্দ্র বুরুলা ত্যাগ করিয়া ঢাকার দক্ষিণে গিয়া বাস করেন। তাঁহার কংসারি, পরমানন্দ, জগরাথ, সর্বেশ্বর, প্রনাদ্ধ, জনার্দ্ধন এবং তিলোকনাথ

अटेडठळाशांचंड, गृ\* a->

২ নীতিভয়চরিতামূত মহাকাব্য, ১০া৭০

এ প্রছায় মিল যদি গতাই উপেল্ল মিলের বংশগয়ত হইতেন তাহা হইলে কি ওাহার বইয়ের ছইবানি প্রিতে "পাশ্চাতা বৈদিক" ও "দাকিশাতা বৈদিক" লইয়া মতভেদ লাকিত ? প্রছায় মিলা কি নিজের লাতি-স্থক্তেও নিঃসন্বেহ ছিলেন না ?

शक्कोडिक क्लामबावनी, ३१०

নামে সাতটি পুত্র হয়। ' জগয়াথ মিশ্র পড়িবার জন্ম নবন্ধীপে যাইয়া নালাম্বর চক্রবর্তীর কন্মাকে বিবাহ করেন ও তথায় বাস করিতে থাকেন। জগয়াথের আট কন্মা হইয়া মারা যায়। তৎপরে বিশ্বরূপ নামে পুত্র হয়। বিশ্বরূপের বৈষয়িক কর্ম্মে মন নাই দেখিয়া জগয়াথ ভাবিলেন মা-বাপ বাঁচিয়া থাকিতে তাঁহাদিগকে তিনি দেখেন না। এই জন্মই তাঁহার "ঈদৃশী গতিঃ"। এই ভাবিয়া তিনি মা-বাপকে দেখিবার জন্ম "ভার্মার সহিত" সদেশে শীত্র গমন করিলেন। দেখানে যাইয়া কিছু দিন থাকার পর একবার শচী ঝতুসাতা হইলে শচীর শাশুড়া শোভাদেবীর নিকট দৈব শী হইল "আমি পুত্রবধূতে আর্বিভূত হইব। শীত্র তাহাকে নবলাপে পাঠাও।" "অন্মথাচরণান্ধত্রে ভবিশ্বন্তি বিপত্তয়ঃ।" ইহার পর জগয়াথ সন্ত্রীক নবদ্বীপে পুনরাগমন করিলেন। '

এই বিবরণ-সপ্বধ্ধে আমার বক্তব্য এই যে ১৪৮৫ খুফ্টাব্দে সন্ত্রাক নবন্ধীপ হইতে শ্রীহট্টে গমনাগমন এত সহজ ছিল না। তখনও হুসেন সাহ স্থলতান হয়েন নাই। দেশের মধ্যে তখন অরাজকতা প্রবল। সেই সময়ে গর্ভবতা স্ত্রীকে লইয়া জগন্নাথ মিশ্রের নবন্ধীপে আসা কিছু অসম্ভব

> যশোলানন্দন তালুক্ষার-প্রকাশিত প্রেমবিলাশের চতুরিংশ বিলাগে (পু° ২৪২) এই সাতটি নাম আছে ; যথা—

> ক্ষোরি পর্যানল আর লগলাগ। প্রানাভ সংক্ষেত্র জনাদিন তৈলোকানাথ।

গৌরগণোক্ষেপনীপিকার উপেক্রের সাতপুত্রের কথা আছে (৩৫) কিন্ত তাহারের নাম নাই। হার্ব "শ্রেমবিলাদ" ও "শ্রীকুক্ষটেতজ্ঞাবরাবলী"র তালিকা ঠিক হয়, তাহা হইলে অচ্যুতবারু যে বলিতেছেন, "কবি জয়ানন্দের গ্রন্থে উপেক্র বিজ্ঞের নাম জনার্দ্দিশ" (এক্ষবিভা, ১০৯২, পূ" ৩৮১) তাহা জ্ঞানন্দের অজ্ঞতা মনে হয়। উপেক্রের এক পুত্রের নাম যদি জনার্দ্দিন হয় তবে উপেক্রের নামান্তর কিছুতেই জনার্দ্দিন হইতে পারে না। ভক্রের লীলাখাবনের গহিত ঐতিহাদিকের বিচারের তথাৎ এই যে ভক্ত এক বইরে জগন্নাথ বিজ্ঞের পিতার নাম উপেক্র, অক্ত বইরে জনার্দ্দিন ক্ষেত্রিকে উত্তরই সতা মনে করেন। ঐতিহাদিক বলেন যদি নামান্তরের প্রমাণ না থাকে তবে একটি বইরের কথা সত্যা, অপরটির মিধাা।

- २ अकुषरेहळरखावप्रावणी, सारव
- शक्किक्टकाश्यावनो, २१०.

300

মনে হয়। আরও লক্ষ্য করা প্রয়োজন যে কবিকর্ণপূরের গৌরগণোদ্দেশ-দীপিকার মতে ' শচীদেবীর শাশুড়ীর নাম কমলাবতী, শোভা নহে।

তারপর "শ্রীকৃঞ্চটৈতভোদয়াবলী"তে ছাপা ইইয়াছিল যে জগলাথ মিশ্র বিশ্বয়রকে লক্ষ্যার সহিত বিবাহ দিয়া পরলোকগমন করেন। বিশ্বস্তরের পরে ঐ প্রোক হাতে কাটিয়া দিয়া লেখা ইইয়াছে যে বিশ্বস্তরের সমাবর্ত্তন-কর্মান্তে জগলাথ পরলোকে গমন করেন ও তৎপরে লক্ষ্যার সহিত বিশ্বস্তরের বিবাহ হয়, তারপর বিশ্বস্তর বপদেশে গমন করেন ও লক্ষ্যার মৃত্যু হয় (৩১৫)। তারপর বিশ্বস্তরের সল্লাস-গ্রহণ। শান্তিপুরে শচাদেবা শ্রীটৈতভাকে বলেন যে তাহার শাশুড়া শ্রীটৈতভার জন্মের পূর্বের বলিয়াছেন যে "তোমার গর্ভে যে মহাপুরুষ জন্মগ্রহণ করিবেন, তাহাকে শীল্র আমার নিকট পাঠাইয়া দিবে; তাহাকে দেখিতে আমার ইচ্ছা আছে। তথন শ্রীটেতভা প্রপিতামহের স্থান "বরগলায়" যাইলেন। তিন্তু মুদ্রিত ৩২১ শ্লোকটি হাতে কাটিয়া

- > গৌরগণোদেশরীপিকা, ০৬
- २ शिकुक्टेक्टरकानदावनी, शक
- श्रृक्षकेडिखांन्यांन्यों ( शास्त्र त्यया ) अ४-३२

অচ্যতবাৰু (এজৰিয়া ১০৪২, পু" ০৮০) লিখিতেছেৰ যে উাহার বইছে ঐলপ কাটা ৰাই, তাহাতে "হাপার অক্ষরে মুদ্রিত এই লোকটা আছে—

> সমাবর্ত্তনং কর্মান্তং কুতা তপ্ত বিজ্ঞান্তম: । বিবাহং কারহামাস লক্ষ্যা লক্ষ্যবৃত্তরা :"

শীচৈতভের সঙ্গী মুরারি গুল, শিবানন্দ সেনের পূত্র কবিকর্ণপুর, বৃন্ধাবনধাস, কৃষদাস কবিরাজ প্রভৃতি সকলে এত বড় একটা ব্যাপারে ভূল করিবেন, আর প্রভার মিশ্র টিক কথা বলিবেন, ইং। বিখাস করা আমার পক্ষে সঞ্জব নহে। উক্ত সকল প্রস্কোরই বলেন যে জগরাথের পরলোকসমনের পরে বিশ্বপ্রের সহিত লগ্নীর বিবাহ হব। জয়ানন্দ (পু° ৪৬) বলেন যে,

পূর্বে মিল পুরস্থর আচাব্য পুরস্বরে। কুতকুত্য হইয়াছে দম্ম করিবারে।

কিন্তু সংখ্য হওয়া এক কৰা, আৰু "বিবাহং কাৰ্যামান" সম্পূৰ্ণ অন্ত কৰা।

- # 3 0120-2h
- e वी शरक्तरा
- **ब्रिकार**



#### আর কয়েকখানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

তাহার পাশে "ভোল" লেখা হইয়াছে। তৎপরিবর্ত্তে ৩:৪-২৮ শ্লোক হাতে লিখিয়া দেওয়া হইয়াছে। এক ব্রাহ্মণীর অনুরোধে ঐতিচতত "চণ্ডীমেকাং লিখিয়া তু প্রাদান্তলৈ যথেপিলতাম্।" ওৎপরে প্রভুর পিতামহী বলিলেন, "তোমার পিতামহের পৌজেরা কি খাইয়া বাঁচিবে ?" প্রভু বলিলেন, "পালয়ামি ভবৎ-পৌজান সসন্তানানিহ স্থিতঃ।" স্বাধান হইতে প্রভু কৈলাসে বাইয়া অমৃতকুণ্ডে স্নান করিলেন।

থাকে শ্লোকে বলা হইয়াছে যে "যাঁহার মায়ায় ব্রহ্মাদি দেবতা পর্যান্ত মুগ্ধ, আমাদারা তাঁহার লালা বর্ণন করা সম্ভব হয় কি ?" ৩।৬০ প্লোকে গ্রন্থ-শেষ। আর লালা-বর্ণনার প্রয়োজনও ছিল না। শ্রীচৈতন্তের জন্ম না হউক অন্ততঃ গর্ভে আগমন শ্রীহট্টে হইয়াছিল ও সল্লাসের পর আসিয়া তিনি "দ্বয়ীমূর্ত্তি" রাখিয়া গমিশ্র-পরিবার-প্রতিপালনের বাবস্থা করিলেন, ইহা যখন প্রমাণ হইয়া গেল, তখন আর লালাবর্গনে শক্তি-বায় ও ছাপার খরচ স্বীকার করার প্রয়োজন কি ?

গ্রন্থথানিতে "পালে শ্রীভগবদাকা" বলিয়া—

দিবিজা ভূবি জায়ধ্বং জায়ধ্বং হি স্থরেশ্রা:। কলৌ সম্বীর্তনারন্তে ভবিদ্যামি শচীস্থত:। ১।১৫র পর

এবং "তথা চোক্তং বিশ্বসারতল্পে" বলিয়া

গঙ্গায়া দক্ষিণে ভাগে নবদ্বীপে মনোরমে। ফাল্লুনাং পৌর্ণমান্তাং বৈ নিশায়াং গৌরবিগ্রহঃ। আবিরাসীচ্ছচী-গেছে চৈতন্তো রসবিগ্রহঃ।

এই ৩০০। ভাৰোগ্যন্ত শীহৈতক্তের সঙ্গে শান্তিপুর হইতে নীলাচলে ঘাইবার সময় নিজানন্দাদি সজী ছিলেন। তাঁহারা কেছ শীহৈতক্তকে শীহট পর্যান্ত অনুসরণ করিলেন না, ইচা কি বিশ্বাস করা যায় ? আরু সল্লাস-গ্রহণের পর শীহৈতক্তের গেরুপ ভার-বিকাশ হইয়ছিল, তাহাতে যদি বা তিনি শীহটে ঘাইয় থাকেন, তাহা হইলেও নেই অবস্থায় "চত্তী" নকল করিয়। দেওয়া কি তাহার পক্ষে সম্পর ?

a dioles

<sup>0 3 0100</sup> 

উদ্ধৃত হইয়াছে। সনাতন গোস্বামী তাঁহার "বৃহৎ বৈশ্ববতাষ্ণী"র ভূমিকায় লিখিয়াছেন যে তিনি পুরাণাদি সমস্ত শাস্তগ্রন্থ সংগ্রহ করিয়াছেন। তিনি অথবা তাঁহার প্রাতৃপ্যক্র কি পদ্মপুরাণ সংগ্রহ করিতে পারেন নাই পূ শীক্ষাব গোস্বামার ভায় পণ্ডিতের চোথে যদি পদ্মপুরাণে শ্রীচৈতভার অবতারক-সূচক এমন স্কুম্পন্ট প্রমাণ পড়িত, তাহা হইলে তিনি কি তাহা "যট্সন্দর্ভে" বা "সর্বসম্বাদিনী"তে উদ্ধৃত করিতেন না প কবিকর্পপুর কি ঐরপ প্রমাণ পাইলে মহাভারতের ও ভাগবতের তুইটি প্রোক লইয়াই সম্বন্ধ থাকিতেন প বলদেব বিভাভ্যণ অফ্রাদশ শতান্দীর মধ্যভাগে জ্ঞাবিত ছিলেন। তাঁহার পাণ্ডিতা অসাধারণ, আর শ্রীচৈতভার ভগবত্তা-প্রমাণের জন্ম আকৃতি প্রবল ছিল। তিনিও কি "পদ্মপুরাণ" বা "বিশ্বসার তন্তে" ঐ রকম প্রোক দেখিতে পাইলেন না প ফল কথা এই যে অফ্রাদশ শতান্দীর মধ্যভাগ পর্যান্ত ঐ সব জাল প্রোক বৈশ্ববর্গণ রচনা করেন নাই। কোন বইয়ে ঐরপ শ্রোক থাকিলে তাহা যে অফ্রাদশ শতান্দীর মধ্যভাগের পরবর্ধী কালের রচনা তাহা নিঃসন্দেহে বলা যাইতে পারে।

তথাকথিত প্রচায় মিশ্র-লিখিত "শ্রীকৃষ্ণটৈতটোদয়াবলী" যে জাল, তাহা উহার প্রকাশের ও ছাপার ইতিহাস দেখিলেই বুঝা যায়। এই গ্রন্থ করে রচিত হইয়াছিল, বলিতে পারি না; তবে বলদেন বিছাভ্যণের সময়ের পরে রচিত হইয়াছিল নিশ্চয়। অচ্যুতবাবু বলিতেছেন যে "শ্রীকৃষ্ণ- চৈতটোদয়াবলী" অবলম্বন করিয়া বা অমুবাদ করিয়া তিনখানি বাঙ্গালা প্রারের পথি ও বই আছে, যথা—(ক) যোগজীবনমিশ্র-কৃত মনঃসন্তোষিণী, (খ) ১২৮৫ সালে প্রকাশিত রামশরণ দের চৈতভাবিলাস, (গ) রামরত্ন ভট্টাচার্যা-কৃত শ্রীচৈতভারত্বাবলা। কিন্তু প্রশ্ন হইতেছে এই যে এই অমুবাদগুলি কৃত দিনের প্রাচীন গ যে পুথি কোন সাধারণ গ্রন্থালয়ে রক্ষিত নাই তাহার বয়স্-নির্ণয় হইবে কিরূপে গ অচ্যুতবাবুও ক্পায়ট করিয়া কোখাও বলেন নাই যে অমুবাদগুলি থব প্রাচীন।

এজবিলা ১০৪২, পু" ৩৭১-৩৮৫। অচ্যতবাবু "এজবিলাও" ১০৪২ অন্নহাবেদনগোর আমার ঐ
 প্রক্তের প্রতিবাদ বাহির করেন। উহার সমস্ত বৃক্তি গণ্ডন করিলা উক্ত প্রিকার ১০৪৬ বৈশাল-সংখ্যার
 আমি আর একটি প্রবন্ধ প্রকাশ করি। সেই সময় হইতে অচ্যতবাবু নারব আছেন।



#### আর কয়েকথানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

প্রবীণ বৈষ্ণব সাহিত্যিক প্রভুগাদ অভুলকৃষ্ণ গোস্বামী মহাশ্য বীতৈভগুভাগবতের ভূমিকায় লিখিয়াছেন—"অনেক স্বার্থপর লোক হয় নিজের পূর্বপুরুষকে একজন অসাধারণ লোক বলিয়া পরিচিত করিবার নিমিত্ত, নয় কোন অপসিদ্ধান্ত প্রচারের নিমিত্ত, কিংবা কোন সম্মানিত বংশকে অবমানিত করিবার নিমিত্ত, অথবা আপন অধিকারে কোন প্রাচীন নিদর্শনের অন্তিহ-গ্যাপনের নিমিত্ত, প্রীল ঠাকুর বৃন্দাবনদাস প্রভৃতি প্রাচীন প্রতিষ্ঠিত গ্রন্থকারের বা পদকর্ত্তার নামে ঐক্রপ গ্রন্থ বা পদ প্রচার করিয়া থাকে। স্তৃতরাং ঐ প্রোণীর গ্রন্থ বা পদগুলিকে খুর সাবধানেই গ্রহণ করিতে হয়।" বৈষ্ণবগ্রন্থ-বিচারে এই সাবধানবাণী বিশেষভাবে মনে না রাখিলে সত্যনিদ্ধারণ করা অসম্ভব। আলোচ্য গ্রন্থখানির মধ্যে সমগ্র বৈষ্ণব সাহিত্যের বিরোধী এত কথা আছে যে ইহাকে প্রীচৈতভ্যের আদেশে রচিত এবং ভাঁহার অনুগত জ্ঞাতিভ্রাতার লিথিত বলিয়া স্বাকার করিতে পারিলাম না।

## केशान नागरतत "वारेत्रज-धाकांग"

শ্রীযুক্ত অচ্তেচরণ তর্নিধি মহাশ্য ১৩০৩ সালের মাঘ মাসের সাহিত্য-পরিষৎ-পত্রিকায় সর্ববপ্রথমে এই গ্রন্থের পরিচয় প্রদান করেন। ইলা নাগরের অবৈত-প্রকাশ যদি অকৃত্রিম গ্রন্থ হয়, তাহা হইলে শ্রীচৈতন্তের জাবনা ও ধর্মমত-সম্বন্ধে ইহার প্রামাণিকতা মুরারি গুপ্তের কড়চার তুলা, এমন কি কোন কোন বিষয়ে উহার অপেক্ষাও বেশী বিলিয়া বিবেচিত হওয়া উচিত। শ্রীচৈতগ্যকে সচক্ষে দেখিয়া তাহার জাবনা লিখিবাছেন তিনজন—মুরারি, কবিকর্ণপুর ও জয়ানন্দ। কবিকর্ণপুর ও জয়ানন্দ। কবিকর্ণপুর ও জয়ানন্দ উভয়েই বাল্যকালে শ্রীচৈতগ্যকে দর্শন করিয়াছিলেন।

<sup>সাহিত্য-প্রথ-প্রিক। ১০০০, ০০০ ভাগ, পৃ° ২০০, পাষ্ট্রকার তিনি নিবিরাছেন, "আমরা বছ পরিরারে ১৭০০ পরের নিবিত্ত আবৈত-প্রকাশের একগানি প্রতিনিধি সংগ্রহ করিয়ারি। কাকপালে আদি গ্রন্থ আছে, এগানি তদ্ধে নিবিত। 
ক্রেন্ত বিশ্বত ইংলে বাজনার ও বৈক্র সাহিত্যের প্রচুর উপ্রার্থ ইংলে বাজনার ও বৈক্র সাহিত্যের প্রচুর উপরার হইবে। প্রস্তুর সাহিত্য-প্রিবং-প্রিকা (১০১৪ সাল, ২ব ভাগ, ২ব সংখ্যা, পৃ° ৯২) হইতে জানা যার যে পুরুক্রবানি বউত্তনার কুপার ছাপা হইয়াছিল: "কাভের খোলাই ক্রক্রে নেবা।"</sup> 

## শ্রীচৈতন্যচরিতের উপাদান

808

জয়ানদের অনুসঙ্গিৎসা একেবারেই ছিল না, তিনি কতকগুলি প্রবাদমাত্র লিপিবন্ধ করিয়াছেন। কবিকর্ণপূর থুব অনুসঙ্গিৎস্থ ও সন্থিবেচক ছিলেন; কিন্তু প্রীচৈতল্যের নবরীপ-লালা-সম্বন্ধে তাঁহার কোন প্রত্যক্ষ জ্ঞান ছিল না। মুরারি নালাচল-লালা-সম্বন্ধে যাহা লিখিয়াছেন তাহার অধিকাংশই কবিকর্ণপূর, রন্দাবনদাস ও কৃষ্ণদাস কবিরাজ্প প্রামাণিক বলিয়া স্বীকার করেন নাই। কিন্তু ঈশান নাগর নিজে যে বিবরণ দিয়াছেন তাহা সত্য হইলে, তিনি প্রীচৈতল্যের বাল্যকাল হইতে তিরোধান পর্যান্ত সময়ের ঘটনা হয় নিজের চোথে দেখিয়াছেন, না হয় প্রভুর অন্তরক্ষজনের নিকট শুনিয়াছেন, বলিতে হয়।

ঈশান নাগর বলেন যে অভৈতপুত্র অচ্যতের পাঁচ বংসর বয়সে যে দিন হাতে খড়ি হয়, সেই দিন পঞ্চবর্ষবয়ক্ষ ঈশানকে লইয়া তাঁহার মাতা আসিয়া অবৈত-গৃহে উপস্থিত হয়েন (একাদশ অধ্যায়, পৃষ্ঠা ৪৫, তৃতীয় সং )। তাঁহার গ্রন্থে পাওয়া যায় যে ১৪১৪ শকে বৈশাখী পূর্ণিমায় অচাতোর জন্ম (১১ অ°.পু° ৪৫)। তাহা হইলে অচাত ও ঈশান শ্রীতৈত গ অপেকা মাত্র ছয় বৎসর ছই মাসের ছোট। ১৪১৪ শক হইতে ৪৮০ শক, অর্থাৎ অবৈতের তিরোভাব-কাল পণ্যস্ত, তিনি অবৈত-প্রভুর সঙ্গে সঙ্গে থাকিতেন। তিনি কি কাজ করিতেন, কত দূর পড়াশুনা করিয়াছিলেন তাহা স্পষ্ট করিয়া কিছু বলেন নাই; তবে কয়েক স্থলের ইপ্লিত হইতে অনুমান করা যাইতে পারে যে টহলদারী, অর্থাৎ ভোগ রালার জোগান দেওয়ার কাজ, তাঁহাকে করিতে হইত। অবৈত, তাঁহার পত্নী সীতাদেবী ও অচ্যুত তাঁহাকে খুবই ক্লেছ করিতেন। তিনি শ্রীচৈতত্তের জীবনের যে যে ঘটনা প্রত্যক্ষ করিয়াছিলেন তাহার মধ্যে ক্যেক্টির উল্লেখ করিয়াছেন। অছৈত জ্ঞান-ব্যাখ্যা করিতেছিলেন বলিয়া বিশ্বস্তুর ও নিত্যানন্দ যে দিন শান্তিপুরে তাঁহার সহিত বুঝাপড়া করিতে আসেন সে দিন সীতাদেবী অনেক জিনিয় রালা করিয়াছিলেন। ঈশান বলেন-

মুঞি অধন কৈলা তার জলের টহল।



## আর কয়েকখানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

আবার নীলাচলে যে দিন অহৈত শ্রীচৈতগ্যকে নিমন্ত্রণ করিয়াছিলেন, সেই দিন "গৌরের পদ ধৌত লাগি মুঞি কীট গেমু" (১৮ অ<sup>3</sup>, পৃ<sup>3</sup> ৮০)। শ্রীচৈতগ্যের আহারের পর অহৈত তাঁহাকে শ্রীচৈতগ্যের পদসেবা করিতে বলিলেন। শ্রীচৈতগ্য তাঁহাকে উপদেশও দিয়াছিলেন।

তবে মুঞি কীট হর্ষে কহিন্ম চৈততে।

দয়া করি কহ কিছু এই ভক্তিশৃতে॥

সহাতে মধুর ভাষে গৌরাত্ম কহিলা।
শুনহ উশান শান্ত্র যাহা প্রকাশিলা।

— १४ वा<sup>र</sup>, शृ० ४२

ঈশান বলেন যে অথৈত, নিত্যানন্দ, অচ্যুত, পল্মনাভ চক্রবর্তী, শ্যামদাস প্রভৃতি তাঁহাকে অনেক ঘটনা বলিয়াছিলেন; যথা—

(ক) ঐতিচতত্যের জন্মের পূর্বব হইতে অচ্যুতের জ্ঞানোদয় পর্যান্ত ঘটনার অধিকাংশ তিনি অধৈতের নিকট শুনিয়াছিলেন। ঐতিচতত্যের উপবীত-গ্রহণ পর্যান্ত বর্ণনা করিয়া তিনি লিখিতেছেন—

> কুদ্র মৃত্রি অপার গৌরলীলার কিবা জানি। তার সূত্র লিখি যেই প্রভুমুখে শুনি॥

> > —১০ অ°, পৃ° ৪৫

(খ) নিত্যানন্দপ্রভু ঈশানকে নালাচলে শ্রীচৈতক্তের সহিত জল-ক্রীড়ার কথা বলিয়াছিলেন।

> শ্রীপাদ নিত্যানন্দ প্রভুর মুখাজনিঃস্ত। এই লীলারসামৃত পিয়া হইনু পৃত॥

> > —১৫ অ০, পৃ০ ৬৬

(গ) অচাত বিশ্বস্তর মিশ্রের টোলে পড়িয়া আসিয়া শ্রীচৈতভার অধ্যাপক-জীবন, পূর্ববন্ধ-গমন, লক্ষ্মীর তিরোধান ও বিফুপ্রিয়ার সহিত বিবাহের কথা বলিয়াছিলেন। 895

### ঐতৈভভাচরিতের উপাদান

শ্রীঅচ্যুত কহে মোরে এই শুভাখ্যান। তার সূত্র লব মাত্র করিত্ব ব্যাখ্যান।

->0 a0, 90 aa

(ঘ) ঈশান মুরারির কড়চা, বুন্দাবনদাসের ঐতিত্যভাগবত বা কবিকর্ণপুরের কোন বই পড়েন নাই, এমন কি এগুলি যে তাঁহার গ্রন্থ-রচনার পূর্বের লিখিত হইয়াছিল তাহাও তিনি জানিতেন না। তিনি অবৈতের জীবনী-সম্বন্ধে একখানি মাত্র বই পড়িয়াছিলেন; আর সব ঘটনা নিজের চোথে দেখিয়া বা অবৈত, নিত্যানন্দ, অচ্যুত প্রভৃতির ভায় প্রামাণিক ব্যক্তির নিকট শুনিয়া লিখিয়াছেন; যথা—গ্রন্থশেষে আছে:

বিভাবুদ্ধি নাহি মোর কৈছে গ্রন্থ লিখি।
কি লিখিতে কি লিখিত্ব ধরম তার সাক্ষী ॥
লাউড়িয়া কৃষ্ণদাসের বালালালা-সূত।
যে গ্রন্থ পড়িলে হয় ভুবন পবিত্র ॥
যে পড়িত্ব যে শুনিত্ব কৃষ্ণদাস-মূখে।
পদ্মনাভ শ্যামদাস যে কহিলা মোকে ॥
পাপচক্ষে যে লীলা মুঞি করিত্ব দর্শন।
প্রভু আজ্ঞা মতে তাহা করিত্ব গ্রন্থন ॥

—২২ অ°, পৃ° ১°8

তাহা হইলে দেখা যাইতেছে যে এই গ্রন্থ অকৃত্রিম হইলে, ইহার প্রামাণিকতা মুরারির গ্রন্থের তুলা হওয়া উচিত।

কিন্তু এক হিসাবে মুরারির এন্তের অপেকাও ইহা মূল্যবান্। মুরারি কোপাও সন-তারিথ উল্লেখ করেন নাই। কবিকর্ণপূর, বৃন্দাবনদাস ও কৃষণ্দাস কবিরাজ কতকগুলি ঘটনার সময়-নির্দেশ করিয়াছেন। তবু আমরা জানি না যে নিতানিন্দ, অবৈত ও হরিদাস কবে জন্মিয়াছিলেন, শ্রীচৈত্ত অপেকা কত দিনের বড় ছিলেন, শ্রীচৈত্ত কত দিন কি কি বিষয় পড়িয়াছিলেন, অবৈত কবে তিরোধান করিলেন। ঈশান নাগর এ



#### আর কয়েকথানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

সমস্ত ঘটনার তারিথ ত দিয়াছেনই, অবৈতের পুত্রেরা কে কবে জন্মিয়া-ছিলেন তাহাও লিখিয়াছেন; যথা—

ক। হরিদাস ১৩৭২ শক বা ১৪৫০ খৃফ্টাব্দে জন্মিয়াছিলেন:

ত্রয়োদশ শত দ্বিসপ্ততি শকমিতে। প্রকট হইলা ব্রহ্মা বুড়ন গ্রামেতে।

— ৭ অ০, পৃ০ ২৬

খ। অধৈত প্রীচৈতন্য অপেক্ষা ৫২ বংসরের বড় ছিলেন:

অহে বিভূ আজি দ্বিপঞাশ বর্ষ হইল। ভূয়া লাগি ধরাধামে এ দাস আইল।

—১০ অ°, পৃ° ৪৩

**व्यादि** 

সওয়া শত বর্ধ প্রভু রহি ধরাধামে। অনন্ত অর্ববৃদ লীলা কৈলা যথাক্রমে।

—২২ অ°, পৃ° ১০৩

অর্থাৎ অদৈত ১৪০৪ গৃফীব্দে জন্মিয়া ১৫৫৯ গৃফীব্দ পর্যান্ত জীবিত ছিলেন।

গ। ১। গৌরের বয়স যবে পাঁচ বংসর হইল। শুভক্ষণে মিশ্র তার হাতে থড়ি দিল।

—> • আ°, পৃ° 88

এথমে প্রীগঙ্গাদাস পণ্ডিতের স্থানে।
 ছই বর্ষে ব্যাকরণ কৈলা সমাপনে।
 ছই বর্ষে পড়িলা সাহিত্য অলঙ্কার।
 তবে গেলা খ্রীমান্ বিষ্ণু মিশ্রের গোচর॥

806

#### প্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

তাঁহা ছই বর্ষ খৃতি জ্যোতিষ পড়িলা।
হুদর্শন পণ্ডিতের স্থানে তবে গেলা।
তাঁর স্থানে বড়্দর্শন পড়িলা ছই বর্ষে।
তবে গেলা বাহ্নদেব সার্বভৌম পাশে।
তাঁর স্থানে তর্কশান্ত পড়িলা বিবৎসরে।
এবে ভুয়া পাশ আইলা বেদ পড়িবারে।

—১২ অ°, পৃ° ৪৮

"তুয়া" মানে অছৈত। কিন্তু এ বিবরণ হইতে জানা যায় না যে বিশ্বস্তর কত বংসর বয়সে অছৈতের নিকট পড়িতে আসিলেন। তাই ঈশান বলিয়া দিতেছেন যে সে সময়ে অছৈতের ভিতীয় পুত্র কৃষ্ণদাসের বয়স্ পাঁচ বংসর। কৃষ্ণদাস জন্মিয়াছিলেন:

> চৌদ্দশত অদ্যাদশ শক অবশেষে। মধুমাদে কৃষ্ণা ত্ৰয়োদশী নিশি শেষে॥

> > —>২ অ°, পৃ° ৪৬

তাহা হইলে ঐ্রিটেডয়া ১৪২৩ বা ১৪২৪ শকে অর্থাৎ ১৬।১৭ বৎসর বয়সে অথৈতের নিকট পড়িতে আসিয়াছিলেন।

কত দিন তিনি অধৈতের নিকট পড়িয়াছিলেন তাহাও গ্রন্থকার বলিয়াছেন:

> গৌরের এক বর্ষ হৈল অভিক্রম। ভাহে বেদ ভাগবত হইল পঠন॥

#### ঘ। নিত্যানন্দ

তেরশত পঁচানকাই শকে মাঘ মাসে। শুক্রা অয়োদশীতে রামের পরকাশে ।

—>8 W, 7 09



#### আর কয়েকখানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

ঙ। ঈশান অবৈতের পুত্রগণের জন্মের তারিথ নিম্নলিখিতরূপ দিয়াছেন:

बहार, ३९ ८ मक देवनाशे पूर्निमा ( ३० व्ये, ८८ पृ )
क्रक्माम, ३८३৮ मक देठ क्रका क्रद्यामनी ( ३० व्ये, ८५ पृ )
द्यापान, ३८३२ मक कार्तिक छङ्गा वामनी ( ३० व्ये, ८५ पृ )
वनद्राम, ३८३५ मक द्यापाम ( ३८ व्ये, ५० पृ )
वनद्राम, ३८५५ मक द्यापाम ( ३८ व्ये, ५० पृ )

সাভাদেবার চার বছরের আঁজা ছিল, দেখা যাইতেছে। ঈশান যদি তিথির সঙ্গে বারটিও উল্লেখ করিতেন তবে জ্যোতিষিক গণনা করিয়া তাঁহার স্বৃতিশক্তি কতদূর প্রবল ছিল তাহার পরিচয় দেওয়া যাইত। কিন্তু ঈশান নিজে যে সব তারিখ দিয়াছেন ও ঘটনা লিখিয়াছেন তাহার মধ্যে কোথাও পরপার বিরোধ নাই। নিত্যানন্দের জন্মের ও অবৈতের তিরোভাবের তারিখ ছাড়া আর সব তারিখ সত্য কি না যাচাই করিয়া লওয়ারও উপায় নাই, কেন-না অন্য কোন বৈক্ষব গ্রন্থকার তারিখ উল্লেখ করেন নাই।

দাকিণাত্য দেশ-জনণের পর শীতৈত্য যথন পুরীতে ফিরিয়া আসিলেন, তথন কৃষ্ণ মিশ্র তাঁহাকে দর্শন করিতে যাইতে চাহিলেন। সীতাদেশী কৃষ্ণকে বলিলেন, "তোর ভার্যা। শীবিজয়া সহ মন্ত্র লহ" (১৫ অ°)। সন্দেহ হয় যে কৃষ্ণদাসের তথনও বিবাহের বয়স্ হয় নাই। কিন্তু শীতৈত্য ১৫১২ থুটাদে পুরীতে ফিরিয়াছিলেন; এই জ্ঞাত তারিখের সহিত মিলাইয়া দেখিলে, তাঁহার বয়স্ তথন ১৬ বংসর, ততরাং বিবাহ হওয়া অসম্ভব নহে। শীতৈত্য অবৈতকে জ্ঞান শিক্ষা দেওয়ার জ্ঞায়খন বুঝাপড়া করিতে আসিলেন, তথন সাতাদেবা অনেক প্রকার জ্ঞানিষ রীধিয়া তাঁহাকে খাওয়াইলেন। আমার সন্দেহ হয়, সীতাদেবা তথন পূর্বার্ডা বা সম্ভংপ্রস্তা নহেন ত। গ্রয়া হইতে আসার পর এক বংসর কাল বিশ্বস্তর গৃহে ছিলেন। স্কুতরাং এই ঘটনা ১৪৩১ শকের জ্যেন্ত মাসের পর হইয়াছিল, কেন না জ্যেন্ত মাসেই তিনি

# ত্রীচৈতন্মচরিতের উপাদান

880

ভাবাধিক্য-বশতঃ অধ্যাপনা বন্ধ করেন এবং ১৪০১ শকের ২৯ মাঘ সয়াস লয়েন। ১৪০১ শকের জাৈষ্ঠ মাসে সাঁতাদেবার কোলের যমজ ছৈলে ছইটির বয়স্ এক বৎসর। এইরপ পরীক্ষা করিয়া দেখিলাম ঈশানের গণনা নির্ভুল। তিনি কোথাও পরস্পর-বিরোধী উক্তি করেন নাই। ঈশান নাগরের বর্ণনা সূক্ষম গণনা করিয়া লেখা, তাই বােধ হয় গ্রন্থের ভূমিকায় শ্রীয়ুক্ত অচ্যতচরণ তর্বনিধি মহাশয় বলিয়াছেন, "অবৈত-প্রকাশে কিছুমাত্র অসমত উক্তি নাই। তুল দৃষ্টিতে যাহা অসমত বােধ হয় তাহাতে বিচিত্র ঐতিহাসিক তর্বই নিহিত আছে।" উক্ত ভূমিকা-লেথক মহাশয় আরও জানাইয়াছেন যে অবৈত-প্রকাশে "শ্রীমন্মহাপ্রভুর লীলাঘটিত অনেক অভিনব আখ্যান আছে বলিয়া সম্মানিত।" যে সমস্ত ঘটনা মরারি, কবিকর্ণপূর, রন্দাবনদাস, লোচন, জয়ানন্দ, ক্য়দাস কবিরাজ, শ্রীরূপ, রঘুনাথদাস গোসোমী, প্রবোধানন্দ, গোপাল ভট্ট, শ্রীজীব, বাস্থ ঘোষ, নরহরি সরকার প্রভৃতি চরিতকার এবং তব ও পদকর্তারা বলেন নাই বা জানিতেন না, এরপ অনেক ঘটনা অবৈত-প্রকাশে আছে। তাহার মধ্যে কতকগুলি এ স্থলে উল্লেখ করিতেছি।

১। শ্রীতৈত অচরিতামতে দেখা যায় যে শ্রীতৈত অ মাধ্ব বা তহ্বাদীদের সহিত বিচার করিয়াছিলেন, অথচ গৌরগণোদ্দেশদীপিকায় শ্রীতৈত অকে মাধ্ব সম্প্রদায়ভূক বলা হইয়াতে। ঈশান বলিতেছেন, অহৈত তীর্থ-ভ্রমণকালে "মধ্বাচার্য্য স্থানে" মাধ্বেন্দ্র পুরীর সহিত সাক্ষাৎ করিয়াছিলেন ও তাঁহার নিকট শ্রীমন্তাগবত ও মাধ্ব ভাষ্য পাঠ করিয়াছিলেন। ঈশানের কথাকে প্রামাণিক মনে করিলে গৌড়ীয় বৈষ্ণব সম্প্রদায়কে মাধ্ব সম্প্রদায়ের শাধা বলিতেই হইবে। অহৈত ১২ বংসর বয়সের সময় শান্তিপুরে আসিয়াছিলেন (২ অ°, পৃ°৮); তংগরে (ধরা যাক তিন-চার বংসর) বড়দর্শন পড়েন; তারপর "বর্ষন্বয়ে বেদ শান্ত্র পড়ে সমুদ্র" (৩ অ°, পৃ°৯); তারপর পিতামাতার "সেবায় এক বংসর হইল অতীত" (৪ অ°, পৃ°১০)। তথন নকাই বংসর বয়সে তাঁহার পিতা ও মাতা পরলোক-গমন করেন, অর্থাৎ ১৮৷১৯ বংসর বয়সে, ১৪৫২-৫৩ গুন্তাব্দে, অহৈত তীর্থ্যাত্রায় বাহির হয়েন। ছই বংসরের মধ্যে মাধ্বাচার্য্যের স্থানে

#### আর কয়েকগানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

885

পৌছিয়াছিলেন, বোধ হয়। ১৪৫২-৫৩ খুফীব্দে মাধবেক্স পুরীর নিকট অনস্তসংহিতা দেখিয়া অধৈত

তাহা পড়ি প্রভু মহা আনন্দিত হৈলা।
প্রভু কহে নন্দস্তত ষড়ৈশ্বর্য্য পূর্ণ।
গৌররূপে নবন্ধীপে হৈলা অবতার্ণ।
হরি নাম প্রেম দিয়া জগত তারিবে।
মো অধমের বাঞ্ছা তবে অবশ্য পূরিবে।
কহিতেই হৈল প্রভুর প্রেম উদ্দীপন।
প্রহরেক গৌরনামে করে সন্ধীর্তন।
"গৌর মোর প্রাণপতি যাহা তারে পাও।
বেদধর্ম্ম লজ্যি মুই তাহা চলি যাও॥"

—8 অ°, পৃ° ১২

- ২। মিথিলায় অদৈতের সহিত বিছাপতির সাক্ষাৎকার হয়। —পৃ°১৩
- । মাধবেক বৃন্দাবন হইতে পুরী যাইবার পথে শান্তিপুরে
   আসিয়া অবৈতকে বিবাহ করিতে বলেন; কেন-না

কৃষ্ণ কুপায় হৈবে তাঁহার বহুত সন্তান। জীব নিস্তারিবে সভে দিয়া কৃষ্ণ নাম॥

—e অ, পৃ ১৮

৪। হরিদাস ঠাকুর অধৈতের নিকট দর্শনশাস্ত্র ও ভাগবত পড়িয়াছিলেন (৭ অ০, পৃ০ ২৬)। হরিদাস ঠাকুরের নিকট তর্কে যে তর্কচূড়ামণি হারিয়া গিয়া বৈষণ্য হইয়াছিলেন তিনিই চরিতামূতের অধৈত শাখাগণনে উল্লিখিত শ্রীয়ছনন্দনাচার্য্য। কবিকর্ণপূরের নাটক হইতে জানা যায় যে রঘুনাথদাস গোস্বামীর মন্ত্রুক ছিলেন মছনন্দনাচার্য্য। স্থতরাং ঈশান নাগর হইতে জানা যাইতেছে যে চরম অজ্লীলাবাদী রঘুনাথদাস

# শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

অজৈত পরিবারেরই শিশা। হরিদাসের নিকট আসিয়া যথন একজন বেশা কুপ্রস্তাব করিল, তথন হরিদাস তাহাকে বলিলেন:

ইহা হইতে আজি তুত করহ প্রস্থান।

যেজন তুলসা কঠি না করে ধারণ॥

যেই নাহি করে ভালে তিলক রচন।

যার মুখে কৃষ্ণ নাম না হয় ফুরণ॥

সেই সব জন হয় পাষণ্ডী অধম।

নির্যাস জানিহ তারা কৃষ্ণ বহিন্দুখ।

কভু সাধু নাহি দেখে তা সভার মুখ॥

এছৈ সদ বেশ করি যদি কর আগমন।

তবে কৃষ্ণ তোর বাঞ্জা করিবে পূরণ॥

—৯ অ', পূ<sup>°</sup> ৩৪, ৩৫

সেই বেশ্যা বৈক্ষবী হইলে তাহার নাম হইয়াছিল কুফদাসী।

- ৫। অধৈত শতী ও জগরাথকে মন্ত্র দেন। সেই মন্ত্র হইতেছে "চতুরাক্ষর গৌর-গোপাল-মহামন্ত্র"। শচীর দীক্ষার পর বিশ্বরূপের জন্ম হয় (১০ অ°, পৃ° ৪১)।
- ৬। শচী দীকা গ্রহণ করিলেন বটে, কিন্তু হরিনাম লইলেন না, তাই নিমাই জন্মিয়া তাঁহার স্তত্ত পান করিলেন না (১০ অ০, পু০ ৪০)।
- ৭। কোন ভারতী নাকি বিশ্বস্তরকে যজ্ঞসূত্র দেন এবং জগলাথ মিশ্র নাকি তাঁহাকে বিষ্ণুমন্ত্র দেন।

কালে তানে ভারতী দিলেন যজ্ঞসূত্র। শান্ত্রমতে মিশ্ররাজ দিলা বিষ্ণুমন্ত। পৃ° ৪৫

তাহা হইলে গয়ায় ঈশ্বর পুরীর নিকট দীক্ষা লওয়ার পূর্বের শ্রীচৈতল্যের আর একবার দীক্ষা হইয়াছিল।

৮। বিশ্বর কোন্ বিষয় কত দিন কাহার কাছে পড়িয়া িলেন ভাহার বিবরণ অঘৈত-প্রকাশ হইতে লইয়া পূর্বেই দিয়াছি।



#### আর কয়েকথানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

৯। পঞ্চবর্ষবয়ক শিশু কৃষ্ণ মিশ্র একদিন মাকে না বলিয়া "গৌরায় নমঃ" মহামন্ত উচ্চারণ-পূর্বক কলা থাইয়াছিলেন। সে দিন গৌরাজ আর ভাত থান নাই।

> এত কহি তিহোঁ এক ছাড়িলা উদগার। রম্ভার গদ্ধ পাঞা সভে হৈল চমৎকার।

> > —১২ অ°, গৃ° ৪৯

- ১০। অছৈতের নিকট লোকনাথ ও গদাধর ভাগবত পড়িতেন; বিশ্বস্তর তাহা শুনিয়া মুখস্থ করিতেন (ঃ২ অ°, পৃ° ৫০)।
- ১১। অচাতানন্দ নবন্ধীপে গৌরাঙ্গের টোলে ব্যাকরণ ও অলস্কার পড়িয়াছিলেন। ঈশান বোন হয় পাঠের সময় উপস্থিত থাকিতেন। বিশ্বস্তর সামান্ত সামান্ত প্রশ্নের যাহা উত্তর দিতেন, তাহাও ঈশান কড়চা করিয়া রাখিতেন, বোধ হয়; যথা—

একদিন শ্রীঅচ্যুত কহে গৌরচক্রে।
মূখের উপমা ভালি কৈছে হয় চক্রে॥
মূগাঙ্কে কলন্ধ বহু দেখি বিভ্যমান।
অমুজ্জ্বল রৌপাবর্ণ সেহ অপ্রধান॥
তাহা শুনি নিমাই বিভাসাগর আনন্দে।
সম্নেহ প্রশংসি কহে শ্রীঅচ্যুতানন্দে॥
আঞ্লাদের অংশে হয় মূখের উপমা।
কোন বস্তুর সর্বব অংশে না হয় তুলনা॥

—>२ व॰, वृ॰ ৫२

- ১২। বিশ্বস্তর যথন পূর্ববিজে গিয়াছিলেন তথন অচ্যত তাঁহার সঙ্গে গিয়াছিলেন (১৩ অ°, পৃ° ৫৩)।
  - ১:। গয়া-প্রত্যাগত নিমাই---

খাদশ অঙ্গেতে কৈল তিলক ধারণ। সদৰ অঙ্গে হরিনাম করিল লিখন। BRR

#### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

# তুলসী কার্চের মালা কণ্ঠেতে পরিলা। শঅচক্রাকার চিহ্ন কেন বা ধরিলা॥

—১৪ অ°, পৃ° ৫৬

১৪। মুরারি ও লোচন বলেন বিশ্বস্তর "লৌকিক সংক্রিয়া-বিধি" পড়াইতেন। বৃন্দাবনদাস ও কবিরাজ গোস্বামী বলেন যে তিনি ব্যাকরণ পড়াইতেন। ঈশান বলেন তিনি দর্শনশান্তও পড়াইতেন।

কেহ ব্যাকরণ পড়ে কেহ দরশন। —১৪ অ°, পৃ° ৫৬

ুও। অদৈত গীতা ও যোগবাশিষ্ঠের ভাষ্য রচনা করিয়াছিলেন ও উহাতে ভক্তি ব্যাখ্যা করিয়াছিলেন (১৪ অ°, পৃ° ৫:)।

১৬। সীতাদেবী যথন মদনগোপাল বা বিশ্বস্তরের জন্ম রাধিতেন তথন "বক্সে মুখ বান্ধি রান্ধে হরিষ অন্তরে" (১৪ অ০, ৬০ পৃ০)।

১৭। রন্দাবনে যাইবার পথে শ্রীচৈতত ত্রিবেণীর যমুনায় "দিন ব্যাপী গোরা যমুনায় ভূবি রৈলা" (১৬ অ. পু॰ ১৮)।

১৮। শ্রীচৈত্ত পুরী হইতে বৃন্দাবন যাইলে অচ্যুত্ত শান্তিপুর হইতে তথায় যাইয়া মিলিত হইলেন। শ্রীচৈত্ত কয়েক দিন মাত্র বৃন্দাবনে ছিলেন বলিয়া শ্রীচৈত্তচরিতায়ত হইতে জানা যায়। শ্রীচৈত্ত য়িদ সেখানে যাইয়া পত্র লিখিয়া অচ্যুত্তকে লইয়া গিয়াছিলেন—এরূপ কথা ঈশান লিখিতেন, তাহা হইলে চরিতায়তের সহিত অসামঞ্জ্য হইত। সেই জ্লা ঈশান বলেন:

আয় আয় আয় বুলি গোরা কৈলা আকর্ষণ।
যোগী সম তাঁহা আইলা সীতার নন্দন॥
শান্তিপুর হৈতে ব্রজ বহু দিনের পথে।
অচ্যুত আইলা গোরার আজ্ঞা-পুস্পারথে॥
কৃষ্ণ কৃষ্ণভক্তের অচিন্ত্য শক্তি হয়।
সকলি সম্ভবে ইথে নাহিক বিশ্বয়॥

—১৬ অ০, পৃ০ ৬৯, ৭০



অচ্যত যদি এইরপ "আজ্ঞা-পুপারথে" বৃদ্যাবন না আসিতেন, তাহা হইলে ঈশান শ্রীচৈতন্মের বৃদ্যাবন-ভ্রমণ, কাশীতে পণ্ডিতদের সহিত বিচার, রূপ ও সনাতনকে শিক্ষা প্রভৃতি লিখিতে পারিতেন না; কেন-না কেবল মাত্র শ্রীচৈত্যচরিতামুভে এ সব কথা বর্ণিত হইয়াছে, কিন্তু ঐ গ্রন্থ ঈশানের গ্রন্থ-লেখার ৪৭ বংসর পরে লিখিত হয়।

- ১৯। প্রীচৈত্র বৃন্দাবন হইতে প্রত্যাবর্তনের পথে কাশীতে একজন দিগম্বর সন্ন্যাসীকে রুপা করেন (১৭ অ০, পৃ০ ৭৫, ৭৬)।
- ২০। প্রকাশান দই যে চৈত্যচন্দ্রায়ত-প্রণেতা প্রবোধানন্দ, এ কথা ঈশানের নিকটই আমরা প্রথম শুনিলাম। (১৭ অ০, পৃ০ ৭৭)। আর কোন প্রামণিক বৈশ্বব প্রন্থে এ কথা নাই। চরিতায়তের শাধাবর্ণনে প্রবোধানন্দের নাম নাই; যদিও হরিভক্তিবিলাসের প্রথম শ্লোকে গোপাল ভট্ট নিজেকে প্রবোধানন্দের শিশ্য বলিয়াছেন।
- र.। বৃন্দাবনদাস বলেন যে বিশ্বস্তব ব্যাকরণের টিপ্পনী লিথিয়াছিলেন, কিন্তু ঈশান গলেন তিনি তর্কশান্তের এবং ভাগবতের টীকাও লিথিয়াছিলেন। কিন্তু পাছে তাঁহার টীকা পড়িয়া যথাক্রমে রঘুনাথের ও শ্রীধরের টীকার আদর কমিয়া যায়, সেই ভয়ে তিনি উহা নট করিয়া কেলেন (১৯ অ০, পৃ০ ৮৫)।
- ং। থড়দহের শ্রামন্থন্দর-মূর্ত্তি বীরচন্দ্রের স্থাপিত বলিয়া প্রবাদ। ডা দানেশচন্দ্র সেন "বঙ্গবাণী"র একটি প্রবন্ধে ও মুরারিলাল গোস্বামী "বৈষ্ণবিদিগ্দর্শনী"তে এইরূপ কথাই লিখিয়াছেন। কিন্তু ঈশান বলেন নিত্যানন্দপ্রভু ঐ মূর্ত্তি স্থাপন করেন (২০ অাত, পূত ৯১)।
- ২০। শ্রীচৈততা জগন্নাথ-মন্দিরে তিরোধান করেন (২১ অ°, পু°৯৫)।
- ২৭। কুঞ্চ মিশ্রের তুই পুত্র রঘুনাথ ও দোলগোবিন্দ শ্রীগোরাঙ্গ ও নিতাানন্দের অবতার; যথা—

স্বংগ্ন মহাপ্রভু অ'সি কহে অবৈতেরে। 'মো বিচ্ছেদে নাঢ়া ছঃখ না ভাব অন্তরে॥ 886

# শ্রীচৈতগাচরিতের উপাদান

ভো প্রেমাকর্ষণে মুক্তি আইমু তোর ঘরে।
কৃষ্ণ মিশ্রের পুত্ররূপে দেখিবা আমারে
প্রভু নিত্যানন্দ চাঁদে দিন কত পরে।
কৃষ্ণ মিশ্রের পুত্ররূপে পাইবা নিম্ন ঘরে॥

—:> অ°, পৃ° ৯৭

২৫। বারচক্রপ্রভূ বিশ বংসর বয়সে দীক্ষা লয়েন। প্রথমে ।তনি অছৈতের নিকট আসেন, কিন্তু অছৈত তাঁহাকে জাহুবার নিকট দীক্ষা লইতে বলেন (২২ অ°, পু° ১০২)।

৬। অবৈত ১৫৫৯ খৃষ্টাব্দে তিরোধান করেন। ঐ সময় পর্যান্ত দানোদর পণ্ডিত, গৌরীদাস পণ্ডিত ও নরহরি সরকার ঠাকুর জাবিত ছিলেন; কেন-না তাঁহারা অবৈতপ্রভুর তিরোভাবের পূর্বেব শান্তিপুরে আসেন (২২ অ', পূ' ১০০)।

২৭। মুরারি, কবিকর্ণপূর, রুন্দাবনদাস প্রভৃতি কোন চরিতকার এমন কথা লেখেন নাই যে অধৈত ভক্তগণের নিকট চর্ভুজ এবং যড়্ভুজরূপে দেখা দিতেন। ঈশান সে কথা বলেন; যথা —

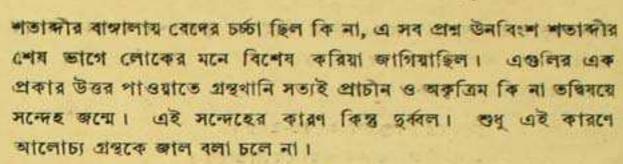
এক দিখিজয়াকে অবৈত "সিক্ষমূর্ত্তি দেখাইলা অতি চমৎকার।" যন্ত অধ্যায়, পূ<sup>°</sup> ২২

নৃসিংহ ভাহড়ী ভাগ্যে প্রভুর চতু ভুজ দোখলা। অন্টম অধ্যায়, পূ<sup>°</sup> ২৯

# গ্রন্থের অকৃত্রিমতায় সংশয়

ক। তারিখের প্রতি অতিরিক্ত গৌক ও আধুনিক সমস্তা-সমাধানের বাহুলা দেখিয়া গ্রন্থথানির প্রতি আমার সন্দেহ জন্মে। অগ্য কোন প্রাচীন বৈষ্ণৰ গ্রন্থে এত তারিখের ছড়াছড়ি নাই।

শ্রীচৈতত মাধ্ব সম্প্রদায়-ভুক্ত ছিলেন কি না, প্রবোধানন্দ ও প্রকাশানন্দ একই ব্যক্তি কি না, শ্রীচৈতত কি ভাবে তিরোহিত হইলেন, যোড়শ



- থ। কিন্তু অত্যাত্ম কয়েকটি কথা বিবেচনা করিলে উক্ত সন্দেহ
  দৃঢ়ীভূত হয়। সন্দেহের বিতীয় কারণ হইতেছে প্রাচীন বৈশুব গ্রন্থের
  বর্ণনার সঙ্গে ও ঐতিহাসিক কয়েকটি ঘটনার সঙ্গে অছৈত-প্রকাশের
  বর্ণনার বিরোধ।
- (১) অবৈত্ত প্রকাশে প্রদত্ত প্রীচৈতত্যের নববাপ-লীনার অধিকাংশ ঘটনা অচ্যুত প্রীচৈতত্যের নিকট পড়িতে যাইয়া দেখিয়াছিলেন। অচ্যুত প্রীচৈতত্যের সঙ্গে পূর্ববিধ্নে ও রুদ্দাবনে গিয়াছিলেন। অচ্যুত্তর নিকট শুনিয়া ঈশান অনেক ঘটনা লিখিতেছেন, বলিয়াছেন। অচ্যুত্ত প্রীচৈতত্য অপেকা মাত্র ছয় বৎসর তুই মাসের ছোট। ঈশান-বর্ণিত এই উক্তি সত্য প্রমাণ করিতে পারিলে, অবৈত-প্রকাশ অনেকটা নির্ভর্যোগ্য হয়। কিন্তু বুদ্দাবনদাস যে তথ্য দিয়াছেন ও কুঞ্চদাস কবিরাজ যাহা সত্য বলিয়া গ্রহণ করিয়াছেন, তাহার বিরুদ্ধে ঈশানের উক্তিকে স্বীকার করা কঠিন।

বৃদ্যাবনদাস বলেন যে খ্রীচৈতত নীলাচল হইতে বৃদ্যাবন যাইবেন বলিয়া শান্তিপুরে আসেন, অর্থাৎ ১৪৩৫ শকের হেমন্ত কালে ১৪১৩ খুন্টাব্দে অচ্যুতের বয়স্ পাঁচ বৎসরের কিছু বেশী; যথা—

> পঞ্চবর্ষ বয়স মধুর দিগন্ধর। থেলা খেলি সর্বব অক ধূলায় ধূসর। চৈ° ভা°, ৩।৪।৪২৯

এই উক্তি যদি সতা হয় তাহা হইলে অচ্যুতের জন্ম হয় ১৪২৯ শকে। সন্নাসের পূর্বের অর্থাৎ ১৪৩০ শকে যখন বিশ্বস্তুর শান্তিপুরে যান তখন—

> অধৈতের তনয় অচ্যুতানন্দ নাম। পরম বালক সেহো কাঁন্দে অবিরাম॥ ২।৬।১৯২

# শ্রীতৈভয়চরিতের উপাদান

885

তখন অচ্যুত এক বংসর বয়সের বলিয়া তাঁহাকে বৃন্দাবনদাস পরম বালক বলিয়াভেন। সন্নাস-গ্রহণ করার পর শ্রীচৈতগু যখন শান্তিপুরে যান, তখন অর্থাৎ ১৪৩১ শকের ফান্ধনে

দিগম্বর শিশুরূপ অবৈত-তনয়।
নাম শ্রীঅচ্যতানন্দ মহা জ্যোতির্ময়॥
পরম সর্বাজ্ঞ তিঁহো অতর্ক্য প্রভাব।
যোগ্য অবৈতের পুত্র সেই মহাভাগ॥ চৈ° ভা°, অচাত৭৭

নীলাচল হইতে গোঁড়ে যখন শ্রীচৈততা আসেন তথন তিনি অবৈতের গৃহে একটি ছোট ছেলেকে দেখেন। রুদ্ধাবনদাস বলেন তাঁহার বয়স্ পাঁচ বংসরের কিছু বেশী। অবশ্য তিনি অচ্যুতের কোন্তী দেখিয়া ঐ বয়স্ বলেন নাই। অচ্যুতের চেহারা দেখিয়া বছর-পাঁচেকের শিশু বলিয়া মনে হইয়াছিল বলিয়া রুদ্ধাবনদাস পঞ্চবর্ষ বয়স্ বলিয়াছেন। ঈশানের মতে ১৪৩৫ শকে অচ্যুতের বয়স্ ২১ বংসর। ছয়-সাত বংসরের ছেলেকে পাঁচ-বছরের বলা যায় ও বলে; কিন্তু ২১ বংসরের পূর্ণ যুবা পুরুষকে কি কেহ পাঁচ-বছরের ছেলে বলিয়া ভুল করিতে পারে গ আঘতের পুত্রদের জন্ম-তারিখ-সন্বন্ধে ঈশানের বর্ণনায় আর একটি অসামঞ্জত্য দেখা যায়। ঈশানের মতে অবৈতের ৫৮ বংসর বয়সে প্রথম সন্তান অচ্যুতেরও ৭৪ বংসর বয়সে শেষ সন্তান-স্বন্ধণ জগদীশের জন্ম। ইহা অসম্ভব না হইলেও অসাধারণ।

অবশ্য সাধারণ ঐতিহাসিক বিচারে এ বিষয়ে ঈশান বৃদ্দাবনদাস
অপেক্ষা বেশী প্রামাণিক; কেন-না ঈশান অচ্যতের সঙ্গে আবাল্য পরিবর্দ্ধিত
এবং বৃদ্দাবনদাস নিত্যানন্দের মুখে শুনিয়া ঘটনা লিথিয়াছিলেন।
কিন্তু এ ক্ষেত্রে এরূপ যুক্তি চলিবে না; কারণ ঈশান যে সত্যই
অবৈতের বাড়ীতে বালাকাল হইতে ছিলেন তাহার সমর্থক প্রমাণ
বৈষ্ণব সাহিত্যে কোথাও নাই।

শ্রীচৈততাচরিতামূতের অভৈত-শাখা-গণনে ঈশানের নাম নাই। ঈশান অভৈত ও নিত্যানন্দের ও সমঃ শ্রীচৈতত্তের কুপা পাইয়াছিলেন



### আর কয়েকথানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

বলিতেছেন; স্তরাং তাঁহার নাম কুঞ্জদাস ক্রিরাজের বা বৈঞ্চববন্দনার লেথকগণের দার। উল্লিখিত হওয়া উচিত ছিল। শ্রীবাসের বাড়ীর জল-জোগানো ঝি ছঃখীর (২া৯া২১৯; ২া২ণা৩৪৬, ৩৪৭) কথা ও গোরাঙ্গের বাড়ীর একজন ভূতা ঈশানের কথা বৃন্দাবনদাস লিখিয়াছেন ( ২া৮/২০৭, ২০৮)। আর তিন প্রভুর প্রিয়পাত্র ঈশানের কথা কেহ লিখিলেন না কেন? আরও ভাবিবার কথা এই যে ঈশানের বর্ণনা-অনুসারে অবৈতের তিরোভাব-সময় অর্থাৎ ১৫৫৯ খুটাবদ পর্যান্ত যখন অচ্যুত বাঁচিয়াছিলেন, তখন বুদাবনদাস নিশ্চয়ই তাঁহাকে দেখিয়াছিলেন। একটি লোককে দেখিলে সে কোন এক নিদ্দিষ্ট সময়ে ৫।৬ বৎসরের, কি ২১ বৎসরের ছিল তাহা বুঝিতে কট্ট হয় না। প্রামাণিক গ্রন্থকার বুন্দাবনদাসের কথা বিখাস করিব, কি অজ্ঞাতকুনশীল ঈশানের কথা মানিয়া লইব ? যদি খ্রীচৈতত্তের গৌড়-ভ্রমণ-কালে অচ্যতের বয়স্ পাঁচের কাছাকাছি হয়, তাহা হইলে তিনি বিশ্বস্তরের টোলে পড়িতে পারেন না; বিশ্বস্তরের সঙ্গে পূর্বিতে যাইতে পারেন না ; তাঁহার সঙ্গে বৃন্দাবনে মিলিত হইতে পারেন না। এক কথায় ঈশানের "অবৈত-প্রকাশ" তাসের ঘরের মত ভাঙ্গিয়া পডে।

কৃষণাস কবিরাজ স্বীকার করিয়াছেন যে ঐতিচততের গৌড়-ভ্রমণ-কালে অচ্যতের বয়স্ রুদাবনদাস বর্ণিত পাঁচ বংসর ছিল; কেন-না পূর্ববপ্ত ঐতিচততভাগবতের অন্তা চতুর্থ অধ্যায়ের ঘটনাকে স্বীকার করিয়া তিনি লিথিয়াছেন—

অচ্যুতানন্দ বড়শাথা আচার্য্যনন্দন।
আজন্ম সেবিলা তিঁহো চৈতন্য-চরণ॥
চৈতন্য গোসাঞির গুরু কেশব ভারতী।
এই পিতার বাকা শুনি ছঃখ পাইল অতি॥
জগদগুরুতে কর ঐছে উপদেশ।
তোমার এই উপদেশে নম্ট হইল দেশ॥
ভৌদ্দভুবনের গুরু চৈতন্য গোসাঞি।
তার গুরু অন্য এই কোন শাস্তে নাই॥

84 .

# শ্রীচৈতক্যচরিতের উপাদান

পক্ষ বর্ষের বালক কহে সিদ্ধান্তের সার। শুনিয়া পাইল আচার্য্য সন্তোষ অপার॥ ১।১২।১১-১৫

(২) ঈশান বলেন অবৈত প্রণাম করায় শচীর আট বার গর্ভপাত হইয়াছিল (পূ ৪০); তারপর অবৈতের নিকট মন্ত্র লইলে বিশ্বরূপের জন্ম হয়। নবছীপ-লীলার ঘটনা-সম্বন্ধে মুরারির কড়চাকে কবিকর্ণপূর, বৃন্দাবনদাস, লোচনদাস, কুঞ্চদাস কবিরাজ প্রভৃতি সকলেই প্রামাণ্য বলিয়া স্বীকার করিয়াছেন।

মুরারি বলেন-

তত্র কালেন কিয়তা তত্মাফৌ কত্মকাঃ শুভাঃ। বভূবুঃ ক্রমশো দৈবাত্তাঃ পঞ্চহং গতাঃ শচী (१) ॥ ১।২।৫

কবিকর্ণপূর বলেন—

ক্রমেণ চাফৌ তন্মুজাঃ পুরোহভবন্
তথৈৰ পঞ্চমুপায়যুশ্চ তাঃ। মহাকাব্য, ২০১৭

নিত্যানন্দ-শিশ্য অভিরাম-সন্বন্ধে পরবর্তী গ্রন্থে লিখিত আছে যে তিনি যাহাকে প্রণাম করিতেন সে মরিয়া যাইত।

(৩) ঈশানের মতে বাহুদেব দত্ত অবৈতের শিশু (পৃ° ৪০)। কিন্তু চরিতামতে বাহুদেব দত্তকে শ্রীচৈত্য-শাখায় গণনা করা হইয়াছে (১١১০।৩৯); যথা—

> বাহ্নদেব দত্ত প্রভূর ভূতা মহাশয়। সহস্র মুখে তাঁর গুণ কহিলে না হয়।

চরিজায়তে আছে যে যত্নন্দনাচার্য্য বাজ্পের দত্তের কুপার ভাজন ছিলেন; যথা—

> শ্রীযন্তনন্দনাচার্য্য অধৈতের শাখা। তাঁহার শাখা উপশাখার নাহি হয় লেখা॥



# আর কয়েকথানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ বাস্থদেব দত্তের তিঁহো কুপার ভাজন। সর্ববভাবে আগ্রিয়াছে চৈতভচরণ॥ ১।১২।৪৫

তিঁহো মানে 'তিনি'—'তাঁহার' নহে।

(৪) ঈশান বলেন বিশ্বস্তর ১৪ হইতে ১৬ বংসর বয়স্ পর্যান্ত সার্বভৌমের নিকট ভায়শান্ত পড়িয়াছিলেন। ছই-তিন বংসর ধরিয়া বাহাকে পড়ানো যায়, ২৪ বংসর বয়সে তাহাকে না চিনিতে পারা বড় আশ্চর্যোর কথা। কবিকর্ণপূর বলেন যে গোপীনাথ আচার্যোর নিকট সার্বভৌম খ্রীটেতভার পরিচয় পাইয়া বলিলেন:

অহো নীলাপর-চক্রবর্ত্তিনো হি মন্তাতসতীর্থাঃ।

মিশ্রপুরন্দরন্চ মন্তাতপাদানামতিমান্তঃ॥ নাটক ৬।৩৬

চরিতামৃত ইহার অনুবাদ করিয়াছেন (২।৬।৭৫-১০৯)। করিকর্ণপূর ও কৃঞ্চদাস করিরাজের বিবরণ পড়িয়াও কি কোন সন্দেহ থাকে যে সার্বভৌমের নিকট শ্রীচৈত্য একেবারে অপরিচিত ছিলেন ?

(৫) ঈশান বলেন নিত্যানন্দ ১৩৯৫ শকের মাঘ মাসে জন্মগ্রহণ করেন। কিন্তু নিত্যানন্দের প্রিয় শিশু বৃন্দাবনদাস বলেন যে—

হেন মতে দ্বাদশ বৎসর থাকি ঘরে।
নিত্যানন্দ চলিলেন তার্থ করিবারে।
তার্থযাত্রা করিলেন বিংশতি বৎসর।
তার শেষে আইলেন চৈতন্ত-গোচর॥ চৈ° ভা°, ১াডাডড

বিশ্বস্তুর গয়া হইতে আসিয়া ভাব প্রকাশ করেন ১৪৩০ শকের পৌষান্তে (ক্রিকর্ণপূর, মহাকারা, ৪।৭৬)। তৎপরে ও ১৪৩১ শকের মাঘের বহু পূর্বের নিত্যানন্দের নবদীপে আগমন ঘটিয়াছিল। ১৪৩১ শকের জ্যৈষ্ঠ মাস পর্যান্ত শ্রীচৈততা ছাত্রদের পড়াইয়াছিলেন; অনুমান হয় তারপর নিত্যানন্দ নবদীপে আসেন। ১৪৩১ শকে বাঁহার ৩২ বংসর বয়স্ ছিল, তাঁহার জন্ম ১৩৯৯, শকে হয়, কিন্তু ১৩৯৫ শকে কিছুতেই হইতে পারে না। এই

প্রসঙ্গে উল্লেখযোগ্য যে ঈশান বলেন নবদীপে যথন নিত্যানন্দ আসিলেন তথন তাঁহার ললাটে তিলক, গলায় তুলসীর মালা (পূ° ৫৮), কিন্তু রন্দাবন-দাস বলেন যে তাঁহার অবধৃত-বেশ, হাতে দণ্ডকমণুলু ছিল (২।১। ৮৫)।

বস্ততঃ শ্রীচৈততা ও নিত্যানন্দ মালাতিলক ধারণ করিয়াছিলেন এরূপ বর্ণনা কোন প্রামাণিক চৈততা-চরিত-গ্রন্থে পাই নাই।

(৬) ঈশান বলেন, ঐতিচতত রুন্দাবনের নিকট রাধাকুও আবিদার করিয়া "রাধাকুতে তুব দিয়া তামকুতে গেলা।" রুঞ্চদাস করিরাজ দীর্ঘকাল রুন্দাবনে বাস করিয়াছিলেন। রাধাকুতের ইতিহাস-সম্বন্ধে তাঁহার কোনরূপ ভ্রম হইতে পারে না। তিনি বলেন, "চুই ধাত্যক্ষেত্রে অল্ল জলে কৈল স্নান" (২০১৮৪)। "ভক্তিরত্বাকর" বলেন যে রঘুনাধদাস গোস্বামী রাধাকুও, তামকুও খনন করাইয়া কুও জলপূর্ণ করিয়া দিয়াছিলেন (পূত ১৯৫-৯৬)। ইহাই হইল প্রামাণা চৈতত্ত-চরিত গ্রন্থগুলির সহিত ঈশানের বিরোধ।

ঈশান যদি অবৈতের সমসাময়িক হয়েন তবে সেই যুগের ইতিহাসঘটিত কোন ভুল তাঁহার হইতে পারে না। তিনি গলেন যে অবৈতের
সহিত বিভাপতির-সাক্ষাৎকার হইয়াছিল। কিন্তু অধুনা (হরপ্রসাদ শার্রা
'কীর্ত্তিলতা'র ভূমিকায় ও Journal of Letters, Vol. XVI, 1927; এবং
'Vidyapati' by Basanta Kumar Chatterjee) স্বষ্টুরূপে প্রমাণিত
হইয়াছে যে বিভাপতি ১৪৪৮ গুর্টান্দের বেশী পরে জীবিত ছিলেন না।
পূর্বের দেখাইয়াছি যে ঈশানের মতামুসারে অবৈত ১৪৫২-৫৩ গুটান্দের
পূর্বের মাধ্বাচার্য্য-স্থানে যায়েন নাই; তাহারও পরে মিথিলায় যায়েন।
বিভাপতি তথন পরলোকে, তাহার সহিত অবৈতের সাক্ষাৎকার কিরূপে
হইতে পারে গ্

ঈশান বলেন যে লাউড়ের রাজা দিব্যসিংহ শান্তিপুরে আসিয়া অহৈতের নিকট দীকা লয়েন ও কৃঞ্চাস নামে পরিচিত হয়েন। তিনি শান্তিপুরের নিকট

বহু পুপোছানে স্থানিভত কৈলা বাটা। ভদবধি গ্রামের নাম হৈল ফুল্লবাটা। ফুলবাটা বলিতে ঈশান ফুলিয়াকে বুঝাইতে চাহিয়াছেন। ফুলিয়ায় কুত্তিবাসের পূর্বপুরুষগণও বাস করিতেন। স্তরাং ফুলিয়া গ্রামের নাম অবৈতের অপেক্ষা অন্ততঃ ১০০।১৫০ বৎসরের প্রাচীন।

গ। ঈশান নাগরের অবৈত-প্রকাশের অকৃত্রিমতায় সন্দেহের তৃতীয় কারণ এই যে ইহাতে চরিতায়তের, এমন কি নরোক্তম ঠাকুর মহাশয়ের, প্রার্থনার ভাষার প্রতিধ্বনি পাইতেছি। ঈশান বলেন, তিনি ১৫৬৮ থুটান্দে বই লিখিয়াছেন, স্তৃত্যাং ইহা চরিতায়তের পূর্ববর্ত্তা। যেমন এ মুগে কোন বন্ধায় করির পক্ষে রবীন্দ্রনাথের প্রভাব এড়াইয়া যাওয়া বড়ই কঠিন, তেমনি চরিতায়তকে অতিক্রম করিয়া শ্রীচৈতত্য-সন্ধন্ধে কিছু লেখাও ছঃসাধা। "অবৈত-প্রকাশ" পাকা হাতের রচনা, উহাতে শুধু যে হিসাবের ভুল নাই তাহা নহে, উহাতে চরিতায়তের একটি সম্পূর্ণ পঙ্কিও পাওয়া যায় না। তবে ক্রুদাস করিরাক্রের প্রকাশ-ভন্সার একটা বৈশিন্টা আছে। "অবৈত-প্রকাশে" সেই বৈশিষ্টোর ছাপ নিম্নলিখিত স্থানে পড়িয়াছে বলিয়া মনে হয়:

(১) চরিতামতে শ্রীচৈতত্তের তার্থবাত্রা-প্রসঙ্গে আছে— তার্থবাত্রায় তার্থক্রম কহিতে না পারি। দক্ষিণ বামে তার্থ গমন হয় ফেরা ফেরি॥

আবৈত-প্রকাশে অবৈতের তীর্থভ্রমণে আছে—
কভুবা দক্ষিণে চলে কভু চলে বামে।
প্রেমে মাতোয়ারা তার নাহি কোন ক্রমে। পৃত ১১

(২) বুন্দাবনদাস বলেন, হরিদাস তিন লক্ষ নাম দিনে করেন গ্রহণ ১৷১১৷১২৪

চৈতগুচরিতামূতে আছে—

well and the second of the sec

কোটানাম গ্রহণ যজ্ঞ করি একমাসে। এই দীক্ষা করিয়াছি হৈল আজি শেষে।

टेड डº. जाजाइडड

808

#### গ্রীচৈতন্যচরিতের উপাদান

অহৈত-প্রকাশে আছে, হরিদাস একমাসে কোটা নাম করয়ে গ্রহণ। পৃত ৩৪

(৩) আবৈত-প্রকাশে দেখি, হরিদাস একজনকে বুঝাইতেছেন—
বস্তুতত্ত্ব ঈশরে জীবেতে নাহি ভেদ।
আগ্রির সন্তা থৈছে সর্ববদীপেতে অভেদ॥
ভথাপি মূল অগ্রির থৈছে হয় প্রাধান্ততা।
তৈছে সর্বেশ্বর হরি সকলের ধাতা॥ পৃত ৩

# চরিতামতে আছে-

দীপ হইতে থৈছে বহু দীপের ছলন।

মূল এক দীপ তাহা করিয়ে গণন॥ ।২।৭৫

ঈশরের তত্ত্ব থেন ছলিত ছলন।

জীবের স্বরূপ থৈছে স্ফুলিস্বের কণ॥ ।৭।:১৬

(৪) অছৈত-প্রকাশে আছে, হরিদাসের রুপা পাইয়া দেখিতে দেখিতে সর্প সিদ্ধ দেহ পাঞা। দিব্য বৃন্দাবনে গেলা চতু ভুজ হঞা॥

চরিতায়তে আছে, শিবানন্দের কুকুর সিন্ধ দেহ পাঞা কুকুর বৈকুঠেতে গেলা। ৩।১।২৭

(৫) লক্ষীকে সাপে কামড়াইয়াছিল, তাহাতেই তাঁহার তিরোধান ঘটে। — মুরারি, ১৷১১৷২১-২৩

তিরোধান-বর্ণনায় ঈশান লিখিয়াছেন :

হেথা শ্রীগোরাজ-বিচ্ছেদ-ভূজজ-দর্শনে। নবদীপে লক্ষ্মী দেবী হৈলা অন্তর্জানে॥

চরিতামতে আছে, "প্রভুর বিরহ-সর্প লক্ষ্মীরে দংশিল।" ১।১৬।১৮

#### আর কয়েকথানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

844

(৬) ঈশান বলেন, ঐীচৈতত্য প্রতাপরুদ্রকে ভক্তবাঞ্চা পূরাইতে ঐশ্বর্যা প্রকাশে।

চরিতামূতে আছে—

তবে মহাপ্রভু তাঁরে ঐশ্বর্য দেখাইল। ২।১৪।১৭

এ স্থলে লক্ষ্য করার বিষয় এই যে কবিকর্ণপূর ও বৃন্দাবনদাস ঐশ্বর্যা-প্রকাশের কথা বলেন নাই।

(৭) অধৈত-প্রকাশে আছে---

প্রেমাবেশে গোরা অবৈতেরে শোয়াইল।
মোর প্রভু জলে শুন্তি ভাসিতে লাগিল।
কিবা ভাবাবেশে গৌর উঠে তান বুকে।
মহাপ্রভু লঞা প্রভু ভাসে অন্মরাগে।
বৈছে মহাবিষ্ণু শুইয়া অনন্তশ্যায়।
তৈছে অবৈভাপ্প শ্যায় গৌর লীলোদয়।

90 33

চরিতায়তে আছে---

আপনে ভাহার উপরে করিল শয়ন। শেষশায়িলালা প্রভু কৈল প্রকটন॥

2128109

কবিকর্ণপূর মহাকাব্যে এই লালা বর্ণনা করিয়াছেন বটে, কিন্তু সেধানে শেষশায়ী বা অনন্তথ্যার সঙ্গে তুলনা করেন নাই। এই তুলনা কবিরাজ গোস্বামীর নিজস্ব, এবং ঈশান-কর্তৃক উহা অনুকৃত হইয়াছে।

(৮) বৃন্দাবনে ঐতিচতন্ম যাইলে চরিতামূত-অনুসারে বাৎসলো গাভী প্রভুর চাটে সব অন্ত। ২০১৭১৮৪

ঈশান বলেন—

হেনকালে গৌরে ঘিরি গাড়া বংসগণ। কুষ্ণগন্ধে গৌর অঙ্গ করয়ে লেহন। পৃ° ৬৯ ৪৫৬ শ্রীচৈতন্মচরিতের উপাদান

(৯) অবৈত-প্রকাশে আছে—

কার্চের পুত্তলী সম জানিহ মোরে। সেই মত নাচো যেই তব ইচ্ছা কুরে। পু<sup>©</sup> ৭১

চরিতামৃতে আছে—

আমার শরীর কাষ্ঠ পুত্তলী সমান। ৩।২০।৮৩

সেই লিখি মদনগোপাল যে লিখায়। কার্ছের পুত্তলী যেন কুছকে নাচায়॥ ১।১৮।৭৪

(১০) অবৈত-প্রকাশে আছে—

রূপ কহে চাতকের ভাগ্য বা কতি। কুষ্ণ মেঘ বিনা নাহি হয় তৃপ্তি। পু<sup>০</sup> ৭৪

চরিতামতে আছে— লীলামত বরিষণে

সিঞ্চে চৌদ্দভূবনে

হেন মেঘ যবে দেখা দিল।

ছদ্দৈৰ ঝঞা পৰনে মেঘ নিল অন্য স্থানে

মৰে চাতক পিতে না পাইয়া॥ ৩১৫।৬•

(১১) অবৈত-প্রকাশ-মতে কাশীর একজন দিগন্ধর সন্ন্যাসী অচ্যুতকে বলিতেছেন:

> শুনিয়াছি তিঁহো ইন্দ্রজাল বিভাগুণে। ভুলাইলা উড়িয়ার জ্ঞানী সার্ববভৌমে॥ পৃত ৭৫

চরিতামৃতে প্রকাশানন্দ বলিতেছেন:

সার্ব্যভৌম ভট্টাচার্য্য পণ্ডিত প্রবল। শুনি চৈতন্মের সঙ্গে হইল পাগল॥ সন্মাসী নাম মাত্র মহা ইন্দ্রজালী। ২০১৭০১৫



# আর কয়েকথানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

(১২) নরোত্তম ঠাকুরের প্রার্থনায় আছে— গৌরাঙ্গ বলিতে হবে পুলক শরীর। হরি হরি বলিতে নয়নে ববে নীর।

#### অধৈত-প্ৰকাশে আছে---

গোরা নাম শুনি যার পুলক উন্থম।
সেই জনে জানো মুঞি সাধক উত্তম।
গৌরাঙ্গ বলিতে যার বহে অশ্রুধার।
সেই জন নিতাসিদ্ধ ভক্ত অবতার। পৃ<sup>০</sup> ৭৮

য। চরিতায়তে এমন কতকগুলি ঘটনার বর্ণনা আছে যেগুলি মুরারি, কবিকর্ণপূর, রুলাবনদাস, জ্রীরূপ, রুলাথদাস প্রভৃতি কোন প্রামাণিক লেখক কৃষ্ণদাস কবিরাজের পূর্বের লেখেন নাই। এরূপ ঘটনার উল্লেখ যদি অহৈছ-প্রকাশে পাওয়া যায় তাহা হইলে সন্দেহ হয় যে উহা চরিতায়ত হইতেই লওয়া হইয়াছে। নিম্নে এইরূপ কতকগুলি ঘটনার উল্লেখ করিতেছি:

চরিতামতের তাতা১৬২-৬৩-এ এই ঘটনা বর্ণিত হইয়াছে।

(২) ঈশান বলেন যে সন্নাসের পর ঐীচৈতত যখন শান্তিপুরের নিকট আসিলেন তখন

> প্রেমাবিষ্ট গৌর অবৈতরে দেখি ভণে। কিবাশ্চন্য আচার্য্য হে আইলা রন্দাবনে। পৃত ৬২

#### চরিতামতে আছে—

ুমি তো অধৈত গোসাঞি হেথা কেনে আইলা। আমি বুন্দাবনে তুমি কি মতে জনিলা॥ ২।৩।১৯

# ৪৫৮ - ত্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

(৩) চরিতায়তের ভায় অদৈত-প্রকাশেও আছে যে শ্রীচৈতভ যখন ঝাড়িখণ্ডের পথে বৃন্দাবনে যান তখন

প্রেমে পশুগণ কৃষ্ণ বলিয়া কাঁদয়। পৃ<sup>০</sup> ৬৭

(৪) বৃন্দাবন হইতে প্রভাগিমনকালে শ্রীচৈতন্ম রূপকে প্রয়াগে ও সনাতনকৈ কাশীতে শিক্ষা, উপদেশ দিয়াছিলেন; এই কথা কৃষ্ণদাস কবিরাজ বর্ণনা করিয়াছেন। অধৈত-প্রকাশে আছে—

তবে গোরা রূপ অনুপম ছুইজনে। সাধা সাধন শিকা দিলা ভক্তানুসন্ধানে॥ পৃ<sup>°</sup> ৭৪ সনাতন শিকার কথাও ঈশান লিথিয়াছেন (পৃ<sup>°</sup> ৭৭)।

(৫) কবিকর্ণপূর যে বালকোলে শ্রীচৈতক্তের কুপা পাইয়াছিলেন ইহা চরিতায়ত হইতেই জানা যায়।

ঈশান বলেন-

গৌর কৃপায় সেন শিবানন্দের নন্দন। অতিবাল্যে সর্বাশান্ত্রে হইল ক্ষুরণ॥ কবিকর্ণপূর নামে হৈলা তিঁহ খ্যাত। পৃ<sup>২</sup> ৮২

কবিকর্ণপূরের খ্যাতি শুনিলেও এবং অদৈতের তিরোভাবের পূর্বের তাঁহাকে দেখিলেও, ঈশান তাঁহার গ্রন্থ পড়িয়াছেন এমন কথা কোথাও বলেন নাই।

(৬) ছোট হরিদাস বর্জন, ত্রন্ম হরিদাসের নির্য্যান, জ্রীরূপের নাটকছয়ের কথা, সনাতনের নীলাচল-আগমন ও গায়ে কণ্ডুরস দেখা দেওয়া,
জগদানন্দকে নবদ্বীপে প্রেরণ, এবং অদৈতের তর্জ্জা পাঠানো চরিতামৃতেই
সর্বব্রথমে বর্ণিত হয়।

ঈশান এই ঘটনাগুলি সংক্ষিপ্তভাবে লিখিয়াছেন। এই ঘটনাগুলি ঈশান অপেকা কৃষণাস কবিরাজের জানার সন্থাবনা অধিক, কেন-না অবৈতপ্রভু সময়ে সময়ে নীলাচলে ঘাইতেন, আর রঘুনাথদাস গোস্বামী বার মাস তথায় বাস করিতেন।



# গৌরমজের আন্দোলন

অবৈত-প্রকাশের অকুত্রিমতায় সংশয়-প্রকাশের পঞ্চম কারণ বলিতে হইলে উনবিংশ শতাকার গৌড়ায় বৈক্ষব সমাঞ্চের একটি দলাদলির ইতিহাস আগে উল্লেখ করা দরকার। অতৈত-প্রকাশের বত তানে গৌর-মজের কথা আছে। গৌরমন্ত নরহরি সরকার ঠাকুরের সময় হইতে চলিয়া আসিতেছে বলিয়া অনেকের বিখাস। শ্রীথণ্ডের ঠাকুরেরা আমাকে বলিয়াছেন যে তাঁহারা বংশানু ক্রমে গৌরমত্ত দিয়া আসিতেছেন। কিন্ত শ্রীগোরাক্ষের স্বতন্ত মত্তের অন্তির কোন দিনই সকল শ্রেণীর লোকের হারা স্বীকৃত হয় নাই। উনবিংশ শতাব্দার মধাভাগ হইতে আরম্ভ করিয়া ১৫৷২০ বৎসর পূর্বব পর্যান্ত গৌরমজ্ঞের স্বাতন্তা লইয়া ভীষণ দলাদলি চলিয়াছিল। আমি যখন ফোর্থ কি থার্ড ক্লাসে পড়ি, অর্থাৎ ১৯১৩/১৪ খুফ্টাব্দে, তখন নবন্বীপের বড় আখড়ার নাটমন্দিরে গৌরমন্ত্র-বিচারের একটি সভায় উপস্থিত ছিলাম, মনে পড়ে। বুন্দাবন, পুরী, কালনা প্রস্তৃতি স্থান হইতে বড় বড় বৈঞ্চব পণ্ডিত সেই সভায় উপস্থিত হইয়াছিলেন। স্বদেশী সভায় লাঠালাঠি হয় পরে দেখিয়াছি, কিন্তু বৈক্ষব সভায় লাঠি চলিতে সেই প্রথম দেখি। সভা আধ ঘণ্টার মধ্যেই ভাক্সিয়া যায়। পর দিন "সোণার গৌরাপের" বাড়ীতে কয়েকজন পণ্ডিত মিলিয়া কি এক সিভাস্ত कत्रियां डिल्मन, मत्न नारे।

সিপাহি-বিদ্রোহের সময় রুন্দাবনে গৌরমন্ত লইয়া প্রবল আন্দোলন উপস্থিত হয়। ঐ সময়ে বৃশাবনের কয়েকজন প্রধান প্রধান গোস্বামী ও বৈঞ্চৰ একখানি ব্যবস্থাপত্ৰ দেন (ত্ৰীচৈতক্তমতবোধিনী পত্ৰিকা, टिज्ज्यांक 809, : म वर्ष, शृ<sup>9</sup> २७०-७५ )।

বুন্দাবনের যে বিণাদের ইক্সিড এই বাবস্থাপত্তে পাওয়া যায়, গত শতাকীর শেষ দশকে আবার তাহা সমগ্র গোড়ীয় বৈদ্ধৰ সমাজে উপস্থিত হইয়াছিল। এ বারে গৌরমস্তের স্বপক্ষে বাহির হইল বাগৰাজার হইতে বিফুপ্রিয়া পত্রিকা, আর তাহার বিপক্ষে রুদাবন হইতে

# ঐতিভন্মচরিতের উপাদান

850

প্রীচৈতল্যমতবোধিনী। বিষ্ণুপ্রিয়া প্রিকায় অবৈতবংশীয় রাধিকানাথ গোস্বামী মহাশয়ের নাম সম্পাদক-হিসাবে ছিল। কিন্তু তিনি রুন্দাবনের ক্ষয়গোপাল মুখোপাধ্যায় মহাশয়কে লিখিলেন, "আমি কিছুর মধ্যে প্রায়ই থাকি না, তথাপি আমার প্রারক্ত দোষে বিষ্ণুপ্রিয়ার সম্পাদক-স্থলে আমার নাম থাকায় ব্যক্তি বিশেষের বিষেষভাজন হইতেছি। শ্রীযুক্ত শিশিরবার প্রৈছনাথে আছেন, তিনি আসিলে তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ করিয়া বিষ্ণুপ্রিয়া প্রিকা হইতে নামটা তুলিয়া লইব।

"মহাপ্রভুর মন্ত কোন প্রামাণিক তন্তে উল্লিখিত নাই এবং প্রধান প্রধান আচার্যান্থলে যেখানে শ্রীমহাপ্রভুর বিগ্রহ-সেবা আছে সেখানে প্রায়ই শ্রীদশাক্ষর গোপাল-মন্তে অর্জন হইয়া থাকে; যথা—শ্রীঅন্বিকা ও খেবুরী প্রভৃতিতে" (গ্রীচৈতভূমতবোধিনী, ৪০৭ চৈ অ, ভাদ, ১৯৯ সংখ্যা, পৃত ২১১-১৩)।

গৌরমজের বিরোধী দলের নেতা ছিলেন অদ্বৈতবংশীয় প্রম পণ্ডিত নীলমণি গোস্বামী মহাশয়। এই সময়ে অদ্বৈতবংশীয় সমস্ত গোস্বামীরা নিম্নলিখিত ব্যবস্থাপত্র প্রচার করেন—

"দশাক্ষর-গোপালমন্ত্রেণৈর শ্রীকৃঞ্চ-চৈতত্য-দেবস্থোপাসনা বিধেয়া নাতেনেতি। চৈতত্যভাগরতাদৌ শ্রীমদধ্যৈতাচার্য্য-পাদানাং তথের তদর্জন-দর্শনাং। চরিতায়তাদারাচার্য্যমত্যপাকৃত্য প্রবর্ত্তমানানাং পাষ্টিত্ব-শ্রবাক্ত। যস্তোপাসনয়া বশীকৃতো ভগরান্ শ্রীকৃঞ্চচৈতত্যদেবঃ কলাব্যাবতীর্ণঃ শ্রীসাতানাথ এব তংগ্রীতি সম্পাদকোপাদানানামভিজ্ঞো নাতঃ। বিশেষতঃ শ্রীমহাপ্রভূপাদানাং দশাক্ষরবিভায়াং প্রীত্যতিশয়ো লক্ষতে, পরমাগ্রহপূর্বকং শ্রীমদীশ্বর-পুরী-মহানুভারতো লোকশিক্ষার্থং তথ্যৈর

কাশীমবালার বলীয় সাহিত্য-সন্মিলনের সম্পূর্ণ বিবরণ, ১৬১॥ বলাঞ্চ, "বেঞ্চবদাহিত্য":
রাসবিহারী সাম্যাতার্থ-লিখিত প্রবঞ্জ আছে—"বলাগড়ির রামরতন বিভালুবণ ও নীলমাধ্ব ভজিভুবণ
প্রভৃতি কৃষ্ণ অপেকা গৌরালকে অধিক ভজি করেন ও অনেকে কুল্মপ্রের পরিবর্তে গৌরময়ে
দীক্ষিত হন। এইমতে শীগৌরাল নহাপ্রভুর পূথক্ ধ্যান ও মত্রে উপাসনা ও তদার জ্ঞাতিথিতে উপবাস-বাবহা আছে।

প্রথম ক্রথম ক্রথম গৌরালবাহ চাকা, শীহট্টাাদ সেশে হান শুলাধি-সধ্যে প্রচারিত হয়।"



দীক্ষিতহাৎ" ( চৈত্তমতবোধিনী, ৪০৭ চৈ অং, জ্যৈষ্ঠ, ১।৬, পৃং ১২০ )। অর্থাৎ দশাক্ষর গোপালমন্তের ঘারাই প্রীক্ষাচৈত্তাদেবের উপাসনা করা কর্ত্ব্য, অতা মত্ত্বের হারা কর্ত্ব্য নহে; কেন-না চৈত্ত্যভাগবতাদি প্রন্থে স্পান্টই দেখা যায় প্রীক্ষাবৈতাচার্য্যপ্রভু তক্ষপেই অর্থাৎ দশাক্ষর মন্তের ঘারাই তাঁহাকে অর্জনা করিয়াছেন। শ্রীক্ষাচার্য্য মতকে অত্যথা করিয়া যাহারা ভিন্ন মতে প্রবৃত্ত হয়, চরিতামৃতাদি প্রন্থে তাহাদিগের পাষত্ত্বিত্ত শুনা যায়। যাহার উপাসনায় বশীভূত হইয়া ভগবান প্রীক্ষাটেত্তাদেব কলিকালেও অবতার্গ হইলেন, সেই শ্রীসাতানাথ প্রভুই তাহার প্রীতিসম্পাদক উপকরণ-সমূহের একমাত্র জ্ঞাতা, অত্যে নহে। বিশেষতঃ দশাক্ষর গোপাল-বিত্তাতেই শ্রীমহাপ্রভুর অতিশয় প্রীতি- লক্ষিত হইতেছে; কেন-না লোকশিক্ষার নিমিত্ত পরমাত্রহেপূর্বক শ্রীক্ষার পুরী মহামুভবের নিকটে ঐ দশাক্ষরা গোপাল-বিত্তাতেই তিনি দ্যাক্ষিত হয়েন। এই ব্যবহাণপত্রে বা অত্যরূপ ব্যবহাপত্রেও শান্তিপুর এবং অত্যান্ত স্থাননিবাসী অক্ষত-বংশীয় প্রায় সমন্ত নেতার স্বাক্ষর ছিল।

উপলা-নিবাসী অবৈভবংশীয় শ্রীনাথ গোস্বামী মহাশয় লাউড় হইতে অবৈত-প্রকাশের পুথি আনাইয়া "বছ যত্নে ইহা সংশোধন করিয়াছেন" বলিয়া শ্রীযুক্ত অচ্যুত্তরণ তল্বনিধি মহাশয় লিখিয়াছেন। কিন্তু উথলীর নেতৃত্বানীয় অবৈভবংশীয় গোস্বামিগণ বাবস্থা দিয়াছিলেন—"প্রচ্ছন্দর্বিগ্রহ শ্রীকৃষ্ণই শ্রীশচীনন্দন মহাপ্রভুকে শ্রীনন্দনন্দনরূপে কৃষ্ণমন্তের দারাই সাধুগণ উপাসনা করেন এবং পূর্ববাচায্যগণের ব্যবহারও তক্ষণ। সাধুগণের ব্যবহাত অর্থাৎ প্রামাণিক কোন তল্পে তাহার পৃথক্ মন্ত্র দেখা যায় না; অতএব কল্লিত মন্ত-ছারা দৌক্ষা-সিদ্ধি হইতে পারে না।"

—হৈততামতবোধিনী, ৪০৭, পৃ ২০৬, ভাজ, ১৯৯ সংখ্যা

এই সুইখানি বাবস্থাপতের ছারা প্রমাণিত হইল যে অবৈতবংশের গোস্বামারা এবং বৈক্ষব সমাজের অভান্ত অনেক ব্যক্তি জানিতেন না ও মানিতেন না যে গৌরাঙ্গের স্বতন্ত মন্ত্র আছে।

"১৬৩ মতবোধিনা"তে গৌরমন্ত্র-সম্বলিত তন্তগুলি-সম্বন্ধে লিখিত হইয়াছিল—"ঈশান-সংহিতা প্রভৃতি তন্ত্র গৌরবাদীরাই কল্পনা করিয়াছে, এইরপ কত তন্ত্র যে কলিত হইয়াছে তাহার ইয়ন্তা নাই। তিন শত বংসরের ভিতরে অন্যন সহস্র তন্ত্র কলিত হইয়াছে। প্রাণক্ষ বিশাসের বৈষ্ণবামৃত নামক তন্ত্র-সংগ্রহে অনেক আধুনিক তন্ত্রের প্রমাণ সংগৃহীত হইয়াছে। শ্রীকৃষ্ণতৈতন্ত্র মহাপ্রভুর অবতারের অনেক পরে যে এই সকল তন্ত্র রচিত হইয়াছে চক্ষুণান্দিগকে তাহা বুঝাইবার প্রয়োজন করে না। প্রাণ্ডান নিবন্ধকারেরা যে সকল তন্ত্রের উদ্দেশ করিয়াছেন, বিশ্বজ্ঞানেরা সেই সকল তন্ত্রেরই প্রামাণ্য স্বীকার করেন। মন্ত্রকোশ, মন্ত্রমহোদিরি, মন্ত্রার্ণর, তন্ত্রসার, ক্রমদীপিকা এবং হরিভক্তিবিলাস প্রভৃতি নিবন্ধগ্রন্থে কোখাও গৌরমন্ত্রের নাম-গন্ধ নাই।"

— চৈতভাগতবোধিনী ৪০৭, পৃত ১৮১, আবাঢ়, ১।৭ সংখা।
সন ১০০০ বলাকের ২১ অগ্রহায়ণ তারিখে নিত্যানন্দ বংশীয়
পণ্ডিতপ্রবর উপেক্রমোহন গোস্বামা লিথিয়াছিলেন, 'ভৌদ্ধায়ায় সংহিতাদি
পৃথক্ গৌরমজ প্রতিপাদক গ্রন্থগুলি কখনও দেখি নাই, প্রাচীন মুখেও
নাম শুনি নাই ও নিবন্ধ গ্রন্থেও বচন প্রাপ্ত হই নাই। কিন্তু গৌরমজের
স্পন্টোল্লেখ আছে শুনিয়াই পুত্তক কয়খানি আধুনিক বলিয়া বোধ করি।
কারণ শাস্তে স্পন্টভাবে প্রীগৌরাজ প্রভুর মন্ত্রধ্যানাদির উল্লেখ থাকিলে
তাঁহার ভগবভা প্রতিপাদন নিমিন্ত প্রীমন্ গোস্থামিগণ সেই প্রমাণগুলির
সংগ্রহ না করিয়া কৃঞ্চবর্ণং গ্রন্থতি ল্লোকের অবশ্রুই কফীর্থ কল্পনা
করিতেন না।" (তৈতভামতবোধিনী, ৪০৮, মাঘ ও ফাল্পন সংখ্যা, পৃত ১২)

উদ্ধৃত উল্লির শেষ অংশে উপেক্সপ্রভূ ঐতিহাসিক বিচারের একটি মূলসূত্র স্থাপন করিয়াছেন। 'অদৈত-প্রকাশ' যথন বাহির হইল তথন তাহাতে ঈশান-সংহিতা, উদ্ধান্তায়-সংহিতা প্রভৃতির দোহাই দেওয়া হইল না, কেন-না ঐগুলির অকৃত্রিমতা-সম্বন্ধে প্রশ্ন উটিয়াছিল। তাই 'অদৈত-প্রকাশে' অনন্ত-সংহিতার দোহাই দেওয়া হইয়াছে; যথা— মাধ্যেক্সপুরী অদৈতকে বলিলেন:

> ধর্ম্মংস্থাপন হেতু এই কলিমুগে। স্বয়ং ভগবান প্রকট হইবেন অগ্রে॥



# আর কয়েকগানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ অনন্ত-সংহিতা তার সাক্ষী শ্রেষ্ঠতম । মধাস্থ শীভাগবত ভারত আগম । ৪ অ°, পৃত ১২

এবং গৌরনত্র আতে কি না প্রশ্ন উঠিয়াছিল। নব আবিষ্ণত 'কবিত-প্রকাশে' পাওয়া গেল যে শুধু যে গৌরমত্র আছে তাহা নহে, ঐ মত্রেই শচী ও জগরাথ মিশ্র অবৈত-কর্তৃক দাক্ষিত হইয়াছিলেন; যথা—

তবে শচী দেবা আসি করিলা প্রণতি।
প্রভু কহে বাছা তুমি হও পুত্রবতী॥
শুনি মহানন্দে কহে মিশ্র বিজ রাজ।
যাহে তুয়া বাক্য রহে কর সেই কাজ॥
প্রভু কহে এক মন্ত্র পাইনু স্বপনে।
ভক্তি করি সেই মন্ত্র লহ তুই জনে॥
সর্বর্ব অমগল তবে অবশ্য খণ্ডিবে।
পরম পণ্ডিত দিব্য তন্য লভিবেঃ
আজ্ঞা শুনি আইলা দোঁহে করিয়া সিনানে।
তবে প্রভু যথাবিধি পূজি নারাহণে॥
দোঁহায় মন্ত্র দিলা শ্রীঅবৈত চন্দ্র।
চতুরাক্ষর শ্রীগোর গোপাল মহামন্ত্র॥ ১০ অং, পৃত ৪১

অতৈ যদি শচী ও জগনাথকৈ দাকা দিতেন এবং গৌরগোপাল-মত্ত্রে দীকা দিতেন, তবে সে সম্বন্ধে কি অতৈত-বংশের গোস্বামীদের মধ্যে কোন প্রবাদ থাকিত না ? উদ্ধৃত ব্যবস্থাপত্রে তাঁহারা স্পান্ট বলিয়াছেন যে গৌরমন্ত্রের কথা তাঁহার। কখনও শোনেন নাই। মুরারি গুপু, রুদ্দাবন-দাস প্রভৃতি কেহ কি এ সম্বন্ধে কিছু বলিতেন না ?

"অতৈত-প্রকাশের" স্বপক্ষীয়গণ হয়ত বলিবেন যে গৌরগোপাল-মহামন্ত্র মানে গৌরমন্ত্র নহে। যদি গৌরমন্ত্র হয় তাহা হইলে পিতামাতার সম্বন্ধ থাকে না, শুদ্ধ বাংসলা ভাবের ব্যাঘাত হয়। অকৈতপ্রভু হেমাভ গোপালের মন্ত্রে শচী-জগন্নাথকে দীক্ষা দিয়াছিলেন। "যদি বল মহাপ্রভুর

#### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

848

পার্যদ শ্রীশিবান-দ সেন চতুরক্ষর বালগোপাল মন্ত্রে দীক্ষিত ছিলেন,
মন্মধবীক্ষ পুটিত রক্ষরপ চতুরক্ষর বালগোপাল মন্তর্কেই চরিতামৃত প্রস্তে
গৌরগোপাল মন্ত্র নামে উক্ত করিয়াছেন। ঐ মন্ত্রের প্রতিপাছ্য শ্রীবাল-গোপাল দেবের ধ্যানে হেমাভ শব্দ থাকাতেই ঐ মন্ত্র গৌরগোপাল মন্ত্র নামে অভিহত হইয়াছে। শ্রীকৃষ্ণতৈত্য মহাপ্রভুর পার্ষদগণের মধ্যে অনেকে বালগোপালের উপাসক ছিলেন।"

— তৈতন্ত্রমতবোধিনা, ৪০৭, আযাঢ়, ১1৭, পৃ° ১৫২ কিন্তু অভৈত-প্রকাশে যে হুকৌশলৈ গৌরমন্ত-প্রচারের ব্যবস্থা করা হইয়াছে সে বিষয়ে সন্দেহ নাই। অভৈতপ্রভুর পুত্র কৃষ্ণদাস

আগে প্রণব মহামন্ত্র করি উচ্চারণ।
গৌরায় নমঃ বলি কৈল নিবেদন ॥ ১২ অ , পৃ ৪৯

"অধৈত-প্রকাশ" যে কৃত্রিম ও প্রক্ষিপ্ত, জোর করিয়া ইছা বলা যায় না। তবে যে পাঁচটি প্রধান কারণে আমার সংশয় উপস্থিত হইয়ছে তাহা প্রকাশ করিলাম। কেহ "অধৈত-প্রকাশের" অন্ততঃ তিনথানি প্রাচীন (অন্ততঃ সপ্তদশ শতাব্দীর শেষভাগের) পুথি দেখাইয়া আমার সন্দেহ-ভঞ্জন করিলে প্রথা হইব। মুরারি ওপ্তের কড়চার প্রাচীন পুথি পাওয়া যায় না বটে, কিন্তু উহা হইতে কবিকর্গপুর ও লোচন যে শব্দান্তর ও ভাষান্তর করিয়াছেন তাহা ভক্তিরয়াকরের উক্ত বহু শ্লোকে পাওয়া য়ায় এবং তাহার সহিত মুদ্রিত প্রস্তের মিল আছে। "আমৈত-প্রকাশের" নাম কোন প্রাচীন প্রস্তে উল্লিখিত হয় নাই। 'অমৈত-প্রকাশের" তায় পুতকে আমরা দেখিতে চাই প্রীচৈততা যখন নীলাচলে বাস করিতে লাগিলেন, তথন কি ভাবে অমৈত গোড়দেশে ধর্মপ্রচার করিলেন। কিন্তু সে সম্বন্ধে একটি কথাও উহাতে নাই। ঈশান অমৈতের বাড়াতে মামুষ হইলেন, সেইখানেই সর্ববদা থাকিতেন, অমৈতের জীবনী লিখিবেন বিলয়া কলম ধরিলেন, অথচ প্রীচৈতত্যের সম্বাস-বর্ণনার পর হইতে বরাবর প্রিটিতত্যের জীবনীই লিখিয়া গোলেন। শ্রীচৈতত্যের জীবনী-সম্বন্ধেও যে

সব ঘটনা ঈশান উল্লেখ করিয়াছেন তাহার প্রত্যেকটি ঐতিচভক্তভাগবতে ও ঐতিচভক্তচরিতামূতে পাওয়া যায়; ঐতিচভক্তের তিরোভাবের পর বিষ্ণুপ্রিয়ার সাধন-প্রণালী যাহা ঈশান স্বচক্ষে দেখিয়া আসিয়াছেন বলিয়া বর্ণনা করিতেছেন, তাহাও জ্বানন্দের চৈতক্তমন্সলে ও প্রেমবিলাসে পাওয়া যায়। ঐ বর্ণনার সহিত অবশ্য জ্বানন্দ অপেকা প্রেমবিলাসের সাদৃশ্য অধিক।

# হরিচরণ দাসের "অহৈত্যজল"

১৩০০ সালে সাহিত্য-পরিষৎ-পত্রিকায় (তৃতীয়-চতুর্থ সংখ্যা) রসিকচন্দ্র বস্তু মহাশয় ১৭:৩ শকের (১৭৯: খৃ° অ°) এক পুথি অবলম্বন করিয়া এই গ্রন্থের পরিচয় প্রদান করেন। সাহিত্য-পরিষদের পুথিশালায় এই বইয়ের যে পুথিখানি আছে ( ২৬৬ নং ) তাহারও অমুলিপির তারিখ ১৭১০ শক। স্তরাং অনুমান করা যাইতে পারে যে রসিকবাবু যে পুথি বাবহার করিয়াছিলেন ভাহাই পরিষদের পুথিশালায় রক্ষিত হইয়াছে। "বন্ধনী" পত্রিকায় ১৩৪০ সালে অধ্যাপক স্তুকুমার সেন মহাশয় ঐ পুথির পরিচয় দিয়া উহার "দানলালা" অংশ উদ্ধৃত করিয়াছেন এবং গ্রন্থানি মুদ্রিত হওয়ার প্রয়োজন বলিয়াছেন। কিন্তু তিনি বোধ হয় জানেন না যে ১৩০৮ সালে বাজসাহীর ব্রজ্ঞস্বর সাক্যাল মহাশয় ঐ গ্রন্থের প্রথম খণ্ড (পু' ১-২৪) সম্পাদন করেন ও ২০১ নং কর্মওয়ালিশ ষ্ট্রীটের গুরুদাস চট্টোপাধ্যায়-কর্তৃক উহা প্রকাশিত হয়। আমি শুধু প্রথম খণ্ডই সংগ্রহ করিতে পারিয়াছি. সান্মাল মহাশয় অন্যান্য থণ্ড প্রকাশ করিয়াছিলেন কি না জানি না। তিনি ঐ সংস্করণে গ্রন্থকারের নাম করেন নাই। কিন্তু সাহিত্য-পরিষদের পুথির সহিত সাতাল মহাশয়ের বইএর প্রায় সকল স্থানেই মিল দেখিয়া সন্দেহ থাকে না যে তিনি হরিচরণ দাসের বই-ই প্রকাশ করিয়াছেন। এটিচতগ্য-চরিতামূতে অবৈত-শাণায় হরিচরণ নামে এক ভক্তের নাম পাওয়া यात्र ( )।>२।७२ )।

865

# ঐতিতভাচরিতের উপাদান

অতৈত্বসঞ্চল-রচনার কারণ-সন্বন্ধে লেখক প্রথম পরিচ্ছেদে বলেন—

ত্রীগুরুচরণপদ্ম মনেতে করিয়া সভ্য

**(य ट्लिशाय शत्रभमित स्माटक ।** 

কুষ্ণের জীবন প্রাণ প্রেমমূক্তি যার নাম

আজ্ঞা মাগি তাঁহার শ্রীমূপে ॥

ভাঁহার যে কুণা বরে পূর্ববাপর দেখায় মোরে

আজ্ঞা অনুসারে মাত্র দেখি।

শ্রীঅবৈত্যকলেতে প্রভুর লীলা প্রকটেতে আজ্ঞা দিলা পূর্ববৃত্ত আগে লেখি॥

আমি কুল জীব হইয়া কি বৰ্ণিতে পারি ইহা শ্রীঅচ্যুতানন্দ আজ্ঞা মানি।

প্রভুর যে পুত্র সব শিশু যত বড় সব

তাথে আমি কুদ্র অভিমানী। শ্রীমবৈত-চরণধূলি মস্তকেতে লই তুলি

হৃদয়েতে করি পাদপদা।

ছাপা বই, পৃত ২-৩

আবার

প্রভূর নন্দন আর শিয়াদি সকলে।
আমারে আজা দিলা হৃদয় প্রবালে॥
আমি প্রভূর ভূতা তাঁহার আজাবলে।
সাহস করিয়া লিখি শ্রীচরণ বলে॥ পৃ° ১২
বন্দে শ্রীঅচ্যুতানন্দ প্রভূর তনয়।

বলের আঅচ্যতানন্দ প্রভুর তনয়। বলরাম ক্লাফ মিশ্র আর যত হয়। তোমার আজায় লিখি যতন করিয়া। পু<sup>০</sup>১৯

বার বার আজ্ঞাবলে লেখার কথায় লেথকের অকৃত্রিমতায় সন্দেহ হয়। গ্রন্থথানি তেইশটি পরিচ্ছেদে সম্পূর্ণ। ইহাতে কি কি বিষয় বর্ণিত

#### আর তেরখানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

829

হইয়াছে তাহা লেখক স্বয়ং গ্রন্থের শেষে বলিয়াছেন। একটু উদ্ভূত করিতেছি।

প্রথম সংখ্যায় হয় গুর্ববাদি বর্ণন।
কৃষ্ণ লালা অন্তক্রম বস্ত নিরূপণ॥
বিভীয় সংখ্যায় পঞ্চ অবস্থার সূত্র।
বিজয়পুরী আগমন পরম চরিত্র॥
তৃতীয় সংখ্যায় বিজয়পুরীর সন্থাদ।
শ্রীভাগবত অর্থ প্রভুর আন্বাদ॥
প্রেমে গদ্গদ পুরী তুর্ববাসা সাক্ষাৎ।
শ্রীমাধবেন্দ্র সতীর্থ হয় যে বিখ্যাত॥

অবৈতের পঞ্চ অবস্থায় কি কি লীলা করিয়াছিলেন তাহা গ্রন্থের থিতী: পরিচ্ছেদে লেখক সংক্ষেপে বলিয়াছেন ; যথা—

বাল্যাবস্থাতে হয় জন্মলীলা আদি।
প্রথম অবস্থা বলি সর্বব কার্য্য সাধি॥
পৌগণ্ড অবস্থাতে শান্তিপুর আইলা।
বিতীয় অবস্থা বলি বর্ণনা হইলা॥
কৈশোর অবস্থাতে তীর্থ পর্যাটন।
বুন্দাবন আগমন গোপাল প্রকট্টন॥
ভক্তিশান্ত ব্যাথ্যা দিখিজয়ী জয়।
অধৈতনাথ প্রকট তাহাতেই হয়॥
তৃতীয় অবস্থা করি বলিয়ে তাহারে।
কৈশোরে শ্রীবৃন্দাবন পর্যাটন করে॥
যৌবনে যতেক লালা করিলা প্রকাশ।
তপত্যাদি আচরণ শান্তিপুরে বাস॥
চতুর্থ অবস্থা সেহি বর্ণনা করিব।
যাহার শ্রবণে লোক পবিত্র হইব॥

CENTRAL LIBRARY

856

# শ্রীতৈভত্তরিভের উপাদান

র্দ্ধ অবস্থাতে লিখিব সীভার পরিণয়। নিত্যানন্দ চৈত্ত অবতার করয়।

এই প্রন্থে শ্রীচৈতভার জন্ম হইতে সন্ন্যাস গ্রহণ করিয়া শান্তিপুরে আগমন ও অছৈত-গৃহে জলকেলি ও দান-লীলার অভিনয় পর্যান্ত বর্ণিত হইয়াছে। গ্রন্থকার শ্রীচৈতভার সন্ন্যাস-জীবন বর্ণনা করেন নাই; তাহার কারণ-সম্বন্ধে তিনি বলেন:

চৈতগুলীলা বর্ণিলা কবিকর্ণপূর।
তাহাতে জানিবা সব রসের প্রচুর॥
অহৈত চৈতগু প্রশ্ন রসের অপার।
বর্ণনা করিলা তেঁহো অনেক প্রকার॥
আমি বর্ণিতে যে হয় পুনরুক্তি।
তাহাতে না বর্ণিল তারে করি ভক্তি॥
শ্রীপ্রভূ মন্সলের আগ্রহ লাগিয়া।
জন্মলীলা কিছু লিখি প্রণতি করিয়া।

—পুথির পাতা ৭৬-৭৭

প্রীচৈতভাচরিতামতের আছেত-শাখায় উল্লিখিত হরিচরণ সতাই এই প্রস্থের রচয়িতা হইতে পারেন কি না তাহা বিচার করিয়া দেখা যাউক। নিম্নলিখিত কারণে মনে হয় প্রীচৈতভার সমসাময়িক ব্যক্তি-কর্তৃক এই প্রস্থ লিখিত হয় নাই:

১। অধৈতমঙ্গলের পুথির ৭৪ পাতায় আছে যে নিত্যানন্দ জন্মিলে হাড়াই পণ্ডিত শান্তিপুরে আসিয়া অধৈতকে একচাকা গ্রামে লইয়া গোলেন। অধৈত নবজাত নিতাইয়ের মাধায় হাত দিয়া আশীর্বাদ করিলেন এবং তাহার নাম নিত্যানন্দ রাখিলেন। অধৈতের সহিত নিত্যানন্দের এরূপ সম্বন্ধের কথা রুন্দাবনদাস লেখেন নাই। নিত্যানন্দের জীবনের এত বড় একটা কথা কি বুন্দাবনদাস জনিতেন নাং জানিলে তাহা লিখিলেন না কেন ং



# আর তেরথানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

২। অদৈতমঙ্গলে বর্ণিত হইয়াছে যে নিত্যানন্দ মাতাপিতার অন্তর্জানের পর উকারণ দত্তের সহিত তীর্থভ্রমণে বহির্গত হয়েন।

বাল্য পৌগণ্ড কৈশোর অবস্থা।
মাতা পিতা অন্তর্জান হছে যথা তথা॥
উদ্ধারণ দত্ত হয় সথা অন্তরন্ধ।
তাহারে লইয়া তার্থ করে · · · ॥ পুথির পাতা ৭৫

বৃন্দাবনদাস বলেন যে একজন সন্নাসী হাড়াই পণ্ডিতের গৃহে অতিথি হইয়া যাইবার সময় নিত্যানন্দকে চাহিয়া লইয়া চলিয়া যান। হাড়াই পণ্ডিতের জীবনকালেই ছাদশ বর্ষ বয়ক্ষ নিত্যানন্দ গৃহত্যাগ করেন।

> নিত্যানন্দ গেলে মাত্র হাড়াই পণ্ডিত। ভূমিতে পড়িলা বিপ্র হইয়া মূর্চ্ছিত॥

তিন মাস না করিলা অন্নের গ্রহণ। তৈতন্য-প্রভাবে সবে রহিল জীবন॥

टेड° डा°, २१७१३ १८

শ্রীচৈ হল্যভাগবতে লিখিত নিতাানন্দের জীবনের কোন ঘটনার বর্ণনার সহিত যদি অল্য কোন প্রস্তের বর্ণনার পার্থক্য দেখা যায়, তাহা হইলে নিতাানন্দের প্রিয় শিল্য রন্দাবনদাসের কথাই বিশ্বাস করিতে হইবে। অবৈত্যক্ষলের রচয়িতা যদি শ্রীচৈতল্যের সমসাময়িক হয়েন, তাহা হইলে তিনি নিশ্চয়ই নিত্যানন্দের জীবনের প্রধান প্রধান ঘটনা শুনিয়াছিলেন, স্বীকার করিতে হয়। কিন্তু এ ক্ষেত্রে অবৈত্যক্ষলে এত বড় ভুল সংবাদ দেওয়া হইয়াছে যে উহা সমসাময়িকের লেখা কি না সন্দেহ হয়।

ত। প্রীচৈতত্তের বালাজীবন-সম্বন্ধে মুরারি গুপ্তের কড়চার প্রামাণিকতা সর্বাঞ্চনস্বীকার্যা। মুরারি বলেন যে শচী-জগন্নাথের আটটি কণ্ডা হইয়া মৃত্যুমুখে পতিত হয়; তৎপরে বিশ্বরূপের জন্ম; তারপর বিশ্বস্তারের জন্ম, অর্থাৎ বিশ্বস্তুর দশম গর্ভজাত (মুরারি, ১।২।৫-১১)।



# ৪৭০ - ত্রীচৈতন্মচরিতের উপাদান

কবিকর্ণপূর শ্রীচৈতভাচরিতামৃত মহাকাব্যে বলেন—
ক্রমেণ চাফৌ তমুঙ্গাঃ পুরোহভবন্। ২।১৭

শ্রীকৃষ্ণ দেবকীর অন্টম গর্ভজাত, হতরাং শ্রীচৈতন্তকেও শচীর অন্টম গর্ভজাত বলিয়া পরবর্তীকালে বর্ণনা করা হইয়াছে।

অধৈতমঙ্গলে এইরূপে শ্রীচৈতক্তকে শচীর অফীম গর্ভজাত বলিয়া বর্ণনা করা হইয়াছে; যথা—

নন্দ যশোদার প্রকাশ শচী জগরাথ।

শ্রীহট্ট দেশে জন্ম পত্নী পুত্র সাত ॥

হয় পুত্র হইল মরিল ক্রমে ক্রমে।

পুত্র-শোকে গঙ্গাবাসে আইলা সন্ত্রসে॥

নবন্ধীপে আসিয়া দোহে গঙ্গাবাস কৈল।

জগরাথ মিশ্রকে সম্মান বহু কৈল॥

গ্রহিরপে কথ দিনে এক পুত্র হইল।

বিশ্বরপ নাম তারে পিতাএ রাখিল॥ পুথির পাতা ৭৭

বিশ্বরূপের সন্নাস-গ্রহণের পর শচী-জগন্নাথ অছৈতের নিক্ট আসিয়া বলিলেন—

প্রথমে পুত্র হইল গেল পরলোক।

এবে এক সন্মাসী হইল ভাহার যে শোক॥
কুপা করি আজ্ঞা দেও তুমি নারায়ণ
শোক ছঃখ যায় দূর পাই ভোমার চরণ॥
প্রভু কহে ছঃখ শোক আর না করিছ।
কুফের ইচ্ছাতে সব এমতি জানিয়।
ভোমাকে দিব এক পুত্র হয় চমৎকার।
সপ্রদিন বাস এপা করহ অক্লীকার॥ পুথির পাতা ৭৭

এথানে লক্ষা করিবার বিষয় এই যে "অবৈতমঙ্গল"-মতে বিশ্বরূপ সন্মাস করিয়া যাওয়ার পর ঐতিচতন্মের জন্ম হয়। কিন্তু মুরারি গুপ্ত



#### আর তেরখানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

বলেন যে বিশ্বরূপ সন্ন্যাস লইয়া চলিয়া গেলে বিশ্বস্তর মাতাপিতাকে সান্ত্রনা দিয়াছিলেন (১।৭।৯)।

কবিকর্ণপূরও ঐ কথা বলেন (মহাকাব্য, ২।১০৫)। ঐচিত্য-ভাগবতে বর্ণিত হইয়াছে যে বিশ্বরূপ অদৈতের গৃহে যাইলে বিশ্বস্তর তাঁহাকে ডাকিতে যাইতেন (১।৫।৪৮) ও বিশ্বরূপ সন্ন্যাস-গ্রহণ করিলে

# ভাইর বিরহে মূর্চ্ছা গেলা গৌররায়। ১।৫।৫৪

অতৈত্বসঙ্গলের বর্ণনা মুরারি, কবিকর্ণপূর ও বৃন্দাবনদাসের বর্ণনার বিরুদ্ধ। স্থতরাং উক্ত তিনজন স্থপ্রসিদ্ধ লেথকের কথা না মানিয়া "অতৈত্বসঙ্গলের" বর্ণনা সত্য বলিয়া স্বীকার করিতে পারি না। "অতৈত্বসঙ্গল" অতৈত্ব বা শ্রীচৈতত্যের সমসাময়িক লোকের লেখা হইলে তাহাতে শ্রীচৈতত্যের জীবন-সন্থদ্ধে এত বেশী ভুল সংবাদ থাকিত না।

হাড়াই পণ্ডিতের নবজাত শিশুকে অবৈত আশীর্বাদ করিয়া তাহার নাম নিত্যানন্দ রাখিলেন ও শ্রীতৈত্য অবৈতের আশীর্বাদে জন্মিলেন— এই সব কথা অবৈত-বংশের লোকেরা বা তাঁহাদের শিয়েরা পরবর্তী কালে অবৈতের মহিমা ঘোষণা করিবার জন্ম রচনা করিয়াছিলেন, মনে হয়। অবৈতের মহিমা ঘোষণা করিবার জন্মই "অবৈতমজ্পলের" লেখককে মুরারি ও বৃদ্ধাবনদাদের বর্ণনার বিরুদ্ধে নূতন ঘটনা বর্ণনা করিতে হইয়াছে।

৪। "অবৈত্তমন্তলে" আছে যে অবৈত সাত দিন হস্কার করার পর বৃন্দাবনের একটি তুলসীমঞ্জরা গলার জলে ভাসিয়া আসিল। তাহার থানিকটা শচাকে ও থানিকটা সীতাকে থাওয়ান হইল। তহারই ফলে শতীগর্ভে প্রীতৈতত্তার ও সীতাগর্ভে অচ্যুতের জন্ম হইল (পুথি, পু'৭৮)। "অবৈত্ত-প্রকাশের" বিচারে দেখাইয়াছি যে বৃন্দাবনদাস ও কৃষ্ণদাস করিরাজের মতে প্রীতিত্তা যখন সন্ন্যাসের পর গোড়ে পুনরাগমন করেন, তাহার কিছু পূর্বের অচ্যুতের বয়স্ গাঁচ বৎসর ছিল, অর্থাৎ অচ্যুত্ত প্রীতৈত্তা অপেকা ২০ বংসরের ছোট। "অবৈত্তমন্তল"-মতে প্রীতিত্তা ও অচ্যুত্ত সমবয়সা এবং "অবৈত্ত-প্রকাশ"-মতে অচ্যুত্ত তৈত্তা অপেকা ছয় বৎসর ছই মাসের ছোট। বৃন্দাবনদাসের



# ঐতিচতন্মচরিতের উপাদান

5.68

উক্তির সহিত বিরোধ বলিয়া "অবৈতমঙ্গলকে" অপ্রামাণিক গ্রন্থ বলিতে চাই।

৫। "অবৈত্যক্ষলে" বর্ণিত হইয়াছে যে অবৈত শচীকে কৃষ্ণমন্ত্র দিলে তবে নিমাই মাতৃত্বতা পান করিলেন (৭৯ পাতা)। "অবৈত-প্রকাশে" আছে যে এটিচততা গর্ভে আসিবার পূর্বেব

> দোহাকারে মন্ত্র দিলা শ্রীঅবৈত চক্স। চতুরাক্ষর শ্রীগোরগোপাল মহামন্ত্র॥ পৃ° ৪১

অতৈতের ছই শিশ্বের বর্ণনার মধ্যে এখানেও গুরুতর পার্থক্য। এরূপ ঘটনা ঐতিচতত্যের কোন জাবনীতে বর্ণিত হয় নাই। রুন্দাবনদাস-লিখিত অবৈতের নিম্নলিখিত উক্তি পড়িলে কি কাহারও মনে হয় যে অবৈত শচীদেবার মন্তগুরু ?

> যে আইর চরণধূলির আমি পাতা। দে আইর প্রভাব না জান তিলমাতা॥

> > —टेंड॰ डा॰, शरशाकाव

- ৬। গৌরগণোদ্দেশদীপিকায় কৰিকর্ণপূর অচ্যতানন্দনকে "শ্রীমৎ-পণ্ডিতগোস্বামিশিক্তঃ" বলিয়াছেন (৮৭)। যত্নাথদাসের শাখা নির্ণয়ে ও শ্রীজাবের বৈক্ষব-বন্দনাতেও ঐরূপ বর্ণনা আছে। কিন্তু "অভৈতন্মললে" অচ্যতকে "সাতার শিশ্য তেঁহো মোহনমঞ্জনী" (পুথির পাতা ৮৫) বলা হইয়াছে। এখানেও সীতার মহিমাঘোষণার জন্য এইরূপ বর্ণনা করা হইয়াছে।
- ৭। "অবৈত্যক্ষলের" ত্রয়োবিংশতি পরিছেদে বর্ণিত হইয়াছে যে শ্রীচৈত্র সন্নাস-গ্রহণের পর শান্তিপুরে আসিয়া দানলীলা অভিনয় করিয়াছিলেন। ঐ সময়ে অভিনয় করার মত মানসিক অবস্থা শ্রীচৈতন্তের ছিল না। ঐরপ ঘটনা ঘটলে মুরারি প্রভৃতি চরিতকার ও শিবানন্দ, বাহুঘোষ প্রভৃতি পদক্ষা উহার উল্লেখ করিতেন।

#### আর তেরখানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

895

৮। "অবৈতমকলে" লিখিত হইয়াছে যে অবৈতপ্রভু শীতৈতভার সাত শত বংসর পূর্বের জন্ম গ্রহণ করিয়াছিলেন; যথা—

> সাত শত বংসর মহাপ্রভুর আগে। অবৈত আচার্যা প্রভু প্রকট এহি যুগে।

"সাত শত"কে "সওয়া শত" পড়িলেও অর্থ-সঙ্গতি হয় না, কেন-না "অবৈত-প্রকাশের" নতে অবৈত শ্রীচৈতত্যের ৫২ বংসর পূর্বের আর্বিভূত হইয়াছিলেন, ও সওয়া শত বংসর জাবিত ছিলেন। সমসাময়িক ব্যক্তি ভ্রমপ্রমাদবশতঃ কথন কথন ভূল সংবাদ দিয়া থাকেন; কিন্তু "অবৈতমন্মলের" এই সংবাদটি এই জাতায় ভূল নহে। এখানে অবৈতকে বিশেষরূপে অলোকিক প্রভাব-সম্পন্ন সপ্রমাণ করিবার জন্ম তাহার ফুদীর্ঘ জাবনকালের কথা বলা হইয়াছে। সাতা ও অবৈতের মহিমার কথা এই প্রন্থে যথেষ্ট আছে। কিন্তু বখন শ্রীচৈত্য নালাচলে বাস করিতেছিলেন তখন সাতা ও অবৈত কি ভাবে গোড়দেশে প্রেমধর্ম প্রচার করিলেন সে কথা নাই। অথচ আমরা অবৈতপ্রভূর জাবনীতে বিশেষ করিয়া সেই কথাই জানিতে চাই। "অবৈতমঙ্গলের" যে পুথি সাহিত্য-পরিষদে আছে তাহা যে ১৪৫ বংসরের প্রাচান সে বিষয়ে সন্দেহ নাই। ফ্তরাং "অবৈতমন্ধল" গ্রন্থ চুই শত কি আড়াই শত বংসরের প্রাচান হওয়া অসম্ভব নহে।

## लां छेड़िया कृष्णनारमद "वालालीला-मृज्य्"

শ্রীযুক্ত অচ্যুত্তরণ তথ্বনিধি মহাশয় ১৩২২ বদান্দে (১৯১৫-১৬ থুন্টান্দে) এই প্রস্থ সক্ত প্যানুবাদ-সহ প্রকাশ করেন। তিনি ভূমিকায় লিখিয়াছেন, "ঢাকা উথলি-নিবাসী অভৈত-বংশীয় শ্রীমৎ শ্রীনাথ গোস্থানী প্রভু লাউড় পরিজ্ঞনণকালে এই প্রস্থ তথাকার এক প্রাক্ষা-গৃহে পাইয়া পরম যত্নে সংগ্রহ করেন। তিনি ইহা গৃহে লইয়া গিয়া নিজ জাতা স্বর্গীয় মধুসুদ্দ গোস্থানী প্রভুকে, তৎপরে শান্তিপুর-নিবাসী অশেষ শান্তাধ্যাপক

ত্বিখ্যাত ৺ মদনগোপাল গোস্বামী প্রভুকে এবং তাহার পরে পাবনানিবাসী স্থপণ্ডিত শ্রীযুক্ত মুরলীমোহন গোস্বামী প্রভুকে প্রদর্শন করেন।
যে গ্রন্থখানা প্রাপ্ত হওয়া যায় তাহা বোধ হয় সংস্কৃত-জ্ঞানহীন ব্যক্তির
লিখিত বলিয়া জ্রমপূর্ণ ছিল। ইঁহারা পাঠকালে অনেকাংশে লিপিকারপ্রমাদ সংশোধন করেন।" অচ্যুতবাবু একখানি পুলি দেখিয়াই গ্রন্থ
সম্পাদন করিয়াছেন। পাবনার মুরলীমোহন গোস্বামীর নিকটে যে পুথি
আছে তাহা ঐ পুথিই। ঐ এক পুথি হইতে তিনজন ব্যক্তি শ্লোক উদ্ধার
করিতে যাইয়া কিরূপ বিভিন্ন বিভিন্ন পাঠ দিয়াছেন তাহা পরে
দেখাইতেছি। উহা হইতে সংশোধনের মাত্রা বুঝা যাইবে।

ডক্টর দীনেশচন্দ্র সেন মহোদয় ১৮৯৬ থুন্টান্দে "বন্ধভাষা ও সাহিত্যের" প্রথম সংস্করণে এই গ্রন্থের নাম উল্লেখ করেন। ১৯২৪ থুন্টান্দে আমি এই গ্রন্থের প্রামাণিকতায় সন্দিহান ইইয়া রাখালদাস বন্দ্যোপাধ্যায়, শ্রীযুক্ত অমূল্যচরণ বিভাভূষণ, নগেন্দ্রনাথ বহু ও উপলীর মুরলীমোহন গোস্বামীর নিকট অনুসন্ধান করি। এই অনুসন্ধানের ফলে আমার সন্দেহ আরও দৃঢ়াভূত হয়। আমি যথাসাধ্য প্রমাণ-প্রয়োগসহকারে বাল্যলীলা-সূত্রের প্রামাণিকতায় সন্দেহ প্রকাশ করিয়া আচার্য্য শ্রাক্তা বিজয়চন্দ্র মজুমদার-সম্পাদিত "বঙ্গবাদী" মাসিক পত্রিকায় "রাজা গণেশ" শীর্ষক একটি প্রবন্ধ লিখি। ঐ প্রবন্ধের ঐতিহাসিক অংশ সমালোচনা করিয়া শ্রীযুক্ত (অধুনা ডক্টর) নলিনাকান্ত ভট্রশালী মহাশয় একটি প্রবন্ধ পর সংখ্যায় "বঙ্গবাদী" পত্রিকায় লেখেন। কিন্তু অচ্যুত্রবাবু বা অন্ত কেহ বাল্যলীলা-সূত্রের প্রামাণিকতার সন্ধন্ধে একটি ক্রথাও এ পর্যান্ত লেখেন নাই।

উক্ত গ্রন্থের অকুত্রিমতায় সন্দিহান হইবার কারণ-নির্দ্দেশ করিতেছি।

১। ১৪৮৭ খুফাব্দে অর্থাৎ ১৪০৯ শকে শ্রীচেতত্যের জন্মের গ্রই বংসর পরে, বাল্যলালা-সূত্র লিখিত হইয়াছে বলিয়া উক্ত গ্রন্থেই প্রকাশ (৮০৮)। শ্রীযুক্ত অমূল্যচরণ বিভাভূষণ মহাশয় আমাকে বলেন যে তিনি পাবনা-নিবাসী মুরলামোহন গোস্বামীর নিকট উহার পুথি নিজে দেখিয়াছেন। এই কথা শুনিয়া আমি উক্ত গ্রন্থের গণেশের রাজ্যাধি-



## আর তেরখানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

রোহণের কালসূচক শ্লোক চারটি গোস্বামী মহাশয়ের নিকট হইতে আনাই। তিনি নিম্নলিখিত চারটি শ্লোক লিখিয়া পাঠান:

> যশঃ-প্রদূনে কৃটিতে নৃসিংহ-নাম্ম: সদা লোক-সুগীত-কার্ত্তে:। তদগন্ধ-সন্দোহ-বিমোহিতাত্মা রাজা গণেশো বহুশান্তদশী॥ **मृटेज्छमानीय खकीय-धान्नि** দীনাজ-পুরাখ্যে বহুসভাযুক্তে। তিমান্ নৃসিংহে নাডুলাভ্যুপাধো সংখ্যাত মন্ত্রিমবাপ ভদ্রম্॥ তদ্যুক্তিচাতুর্য্যবলেন রাজা श्रीमान् गरगरना वदमञ्जलभान्। গোড়স্থ পালান্ যবনাক্মজান্ হি জিবা চ গৌড়েশরতামবাপ ॥ গ্ৰহপকাকিশশধূড্-মতে শাকে স্তবুদ্ধিমান্। গণেশো যবনান্ জিভা গৌড়ৈকচ্ছত্রধ্বগভূৎ ॥

# মুদ্রিত গ্রন্থে এই শ্লোক কয়টির পাঠ:

শ্রীমন্ নৃসিংহত মহাত্মনো বৈ

যশঃ-প্রস্নে কুটিতে মনোজে।
তৎসৌরভবৃাহ-বিমোহিতাত্মা
রাজা গণেশো বহুশান্তদর্শী ॥

সহংশশৈলে বিজরাজকয়ো

বেদজসন্বিপ্র-সমাশ্রয়ো যঃ।

ছফ্টত শাস্তা কিল সাধুণালো

দাতা গুণজো হরিভক্ত-চূড়ঃ॥



ঐ চৈততাচরিতের উপাদান

দূতৈন্তমানীয় চ রাজধান্তাং
দিনাজ-পুরাধ্যে বহুসভাযুক্তে।
তিন্মিন্ নৃসিংহে বহুনীতাভিজ্ঞে
সংক্রম্ম মিল্লিয়েবলৈন রাজা
তীমদগণেশো বরদস্থারূপান্।
গৌড়ক্ত পালান্ যবনাস্ক্রান্ হি
জিরা চ গৌড়েম্বরতামবাপ ॥
গ্রহপক্ষাক্রিশশধৃতিমিতে শাকে সুবৃদ্ধিমান্
গণেশো যবনং জিরা গৌড়েকচ্ছত্রধুগভূৎ॥ ১৪৯-৫২

ছাপা বইয়ের সহিত পুথির পাঠের অনেক প্রভেদ। পুথির সহিত ছাপা বইয়ের প্রথম শ্লোকটির শেষ চরণ ছাড়া অন্য কোন চরণের মিল নাই। ছাপা বইয়ের বিতীয় শ্লোকটি পুথিতে নাই। অছৈত-বংশের মহিমা আর একটু বাড়াইবার জন্ম এইটি সংযোজিত হইয়াছে। ছাপা বইয়ের তৃতীয় শ্লোকের সহিত পুথির ঘিতীয় শ্লোকের মোটামুটি মিল আছে—কেবল পুথির "নাড়ুলীতাুপাধে।" স্থানে "বছনীতাভিজ্ঞে" পাঠ ছাপা হইয়াছে। আর ছইটি শ্লোকে পুথির সহিত ছাপা বইয়ের মোটামুট মিল আছে।

"বালালীলা-পূত্র" মুদ্রিত হইবার ছই বংসর পূর্বের অর্থাৎ ১০২০ সালে প্রীযুক্ত প্রভাসচন্দ্র সেন তাঁহার "বগুড়ার ইতিহাসের" দ্বিতীয় থণ্ডের ৮৪ পৃষ্ঠার পাদটীকায় ঐ গ্রন্থ হইতে উক্ত প্লোকগুলি উদ্ধার করেন। তাহাতে কিন্তু প্লোকসংখ্যা ও পাঠ অক্তরূপ আছে। ছাপা বইয়ে যে প্লোকের সংখ্যা ৪৮ প্রভাসবাবু সেই প্লোকের সংখ্যা দিয়াছেন ৪৬, অর্থাৎ ১০২০ হইতে ১০২২ সালের মধ্যে ছইটি শ্লোকের জন্ম হয়। প্রভাসবাবুর ধৃত পাঠ এই—

যশঃপ্রস্নে ফুটিতে নৃসিংহ-নালঃ সদা মানুষরাজকন্ত। তদ্গক্ষদেশাহ-বিমোহিতাতা রাজা গণেশো বহুশাহদশী॥



#### আর তেরথানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

কায়ন্ববংশাগ্রা-বরগুণজ্ঞো লোকানুকম্পী বরধর্মযুক্তঃ। দাতা হুধীরো জনরঞ্জকশ্চ শ্রীবিক্সুপাদাজযুগানুরক্তঃ॥ দূতৈঃ সমানীয় নিজস্থ ধালো দিনাজপুরে বহুসভাযুক্তে। তশ্মিন্ নৃসিংহঃ লাডুলীত্যুপাধৌ সংগ্রন্থ মন্ত্রিহমবাপ ভদ্রন্॥

পরবর্তী ছইটি প্লোকের সহিত ছাপা বইয়ের মোটামুটি মিল আছে, কেবল ছাপার "শণধ্তিমিতে" স্থানে "শশধ্ত্মতে" ও "যবনং জিলা" স্থানে "যবনান্ জিলা" পাঠ আছে। প্রভাসবাব্র ধৃত দিতীয় প্লোকে রাজা গণেশের গুণগান আছে, ছাপা বইয়ে সে স্থানে নরসিংহ নাড়িয়ালের গুণগান। একখানি পুথি দেখিয়া তিনজন ব্যক্তি এরূপ বিভিন্ন প্লোক কি করিয়া উদ্ধৃত করিলেন তাহা আমার ক্স বৃদ্ধির দ্বারা বৃঝিতে পারিলাম না। হয়ত পুথিখানির লেখা অত্যন্ত অপ্পান্ট; যিনি বাহা বৃঝিয়াছেন বসাইয়া দিয়াছেন; আবার কেহ কেহ নিজ নিজ স্বার্থাসুবায়ী নৃতন প্লোকও যোজনা করিয়াছেন।

এইবার "বাল্যলালা-সূত্রে" প্রদন্ত গণেশের রাজ্যাধিরোহণের কাল কতদুর সত্য দেখা যাউক। গণেশের রাজ্যকাল ফেরিস্তার মতে ১৬৮৬ হইতে ১৩৯২ গুফান্দ পর্যান্ত; রিয়াজ-উস্-সালাতিনের মতে ১৬৮৫ হইতে ১৩৯২ গুফান্দ, রক্ম্যানের মতে ১৪০৭ হইতে ১৪১৪ পর্যান্ত, এবং রাখালদাস বন্দ্যোপাধ্যায় গণেশকে স্বাধীন নূপতি বলিয়া স্বাকার করেন না (প্রবাসী, ফাল্লন, ১৩০৯)। তাঁহার মতে দিতায় সামস্থাদিন ১৪০৬ হইতে ১৪০৯ গুফান্দের মধ্যে স্থলতান ছিলেন। নলিনাকান্ত ভট্টশালী দ্বিতায় সামস্থাদনের অন্তির স্বাকার করেন না। তিনি বলেন ১৪১০ হইতে ১০১ পর্যন্ত গণেশ, নামে না হইলেও কাজে, রাজা ছিলেন ও ১৪১৫-১৮ গুফান্দে নামে ও কাজে রাজা হইয়াছিলেন। ব্রক্ম্যান-লিখিত তারিখের সহিত বাল্যলীলা-সূত্র-নির্দিষ্ট

ঃ ৪০৭ খুন্টাব্দের মিল আছে। কিন্তু আধুনিক গবেষকদের নির্দিন্ট ভারিখের সহিত বাল্যলীলা-পূত্রের তারিখের মিল নাই। অবৈতের বাল্যজীবনী লেখার পক্ষে গণেশের রাজ্যাধিরোহণের তারিখ দেওয়ার কোন প্রয়োজন ছিল না। ১৮৭০ খুন্টাব্দে রক্ম্যানের প্রবন্ধ (J.A.S.B., 1873, p. 234) প্রকশিত হইবার পর হয়ত ঐ সম্বন্ধে কোন খবর শুনিয়া কেহ "বাল্যালা-পূত্রে" উক্ত কাল-নির্বাচক শ্লোকটি ঢুকাইয়া দিয়াছে।

২। "বালালালা-সূত্র" শ্রীচৈতব্যের জন্মের ছই বংসর মাত্র পরে লিখিত বলিয়া প্রকাশ। অথচ এই গ্রন্থে শ্রীচৈতব্যের ভগবতার কথা ও তাহার প্রমাণমূলক শাস্ত্রের উল্লেখ দেখা যায়; যথা—

> নবদ্বীপে শচীগর্ভে যোহবতীর্ণঃ পুরন্দরাহ নংপ্রভাঃ সিদ্ধমন্ত্রেণাকুন্টঃ সন্ জীবমুক্তয়ে। বন্দে শ্রীগৌরগোপালং হরিং তং প্রেমসাগরং অনন্তসংহিতাগ্রন্থে যন্মহন্তঃ স্থবর্ণিতম্ । ১।২-৩

শ্রীচৈতত্তের যথন বয়স্ মাত্র ছই বংসর তথনই কি তাঁহার খ্যাতি এত ব্যাপ্ত হইয়াছিল যে কৃষ্ণদাস প্রস্তের প্রারম্ভে তাঁহাকে বন্দনা করিবেন ? শ্রীচৈতত্তভাগবতে দেখা যায় যে অধৈত প্রভু নানারূপ পরীক্ষার পর তবে বিশ্বস্তরকে ভগবান্ বলিয়া পূজা করিয়াছেন। অধৈত-শিশ্ব কৃষ্ণদাস গৌর-গোপালকে হরি বলিয়া জানিলেন কি করিয়া?

আরও বিবেচা এই যে "অনন্ত-সংহিতায়" ঐচিতত্তের ভগবতার প্রমাণ আছে—এই কথা "বালালীলা-সূত্রে" ও "অন্তৈত-প্রকাশে" লিখিত হইহাছে। "অনন্ত-সংহিতায়" নিত্যানন্দের অনুগত ভাদশ গোপালের নাম, ঐপাট প্রভৃতির কথা আছে। সূত্রাং উক্ত সংহিতা ঐচিতত্তের তিরোভাবের বহু পরে লিখিত হইয়াতে, মনে হয়।

যদি কোন প্রাচীন সংহিতায় ঐতিচতত্তের অবতারত্বের স্পান্ত প্রমাণ পাওয়া যাইত, তাহা হইলে আর কবিকর্ণপূর, ঐজাব, ক্রুদাস কবিরাজ, বলদেব বিভাভ্ষণ প্রভৃতি অশেষশান্তক্ত পণ্ডিতগণ শুধু মহাভারত ও ভাগবতের অস্পান্ত প্রমাণ মাত্র তুলিয়া সন্তুক্ত থাকিতেন মা।



#### আর তেরখানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

"অবৈত-প্রকাশ" (পৃ ৫৬) ও "প্রেমবিলাদের" ২৪ বিলাসে "বাল্য-লীলা-স্ত্রের" উল্লেখ আছে। কিন্তু উক্ত উভয় গ্রন্থই যে আধুনিক জনের রচনা তাহা পূর্বের দেখাইয়াছি।

। অচ্যতবাবু বলেন যে লাউড়ের রাঞা দিবাসিংহ অদৈতের কুপায় ভক্তি লাভ করিয়া কৃষণাস নামে পরিচিত হয়েন ও "বালালীলা-সূত্র" রচনা করেন। যিনি সংসারে বীতরাগ হইয়া রাজ-ঐশর্য ত্যাগ করিয়াছেন, তিনি যে প্রস্থ লিখিতে বসিয়া সামাজিক কুল ≯ার কথা লিখিবেন, এ কথা বিশ্বাস করা কঠিন। অথচ "বালালীলা-সূত্রে" গাঞি, শ্রোত্রীয়, বংশজ, কাপ প্রভৃতির কথা লইয়া প্রথম দুই সর্গ রিচিত হইয়াছে। প্রেমবিাসের চ হুর্বিংশ বিলাস ছাড়া অন্য কোন বৈষ্ণব প্রস্থে এরূপ কুলজী বর্ণিত হয় নাই।

৪। অলৈতের পূর্বে পুরুষদের নাম বালালালা-সূত্রে বাহা দেওয়া হইয়াছে তাহার সহিত অলৈতের বংশের বিভিন্ন শাখায় রক্ষিত নামের তালিকার মিল নাই। নিম্নলিখিত তালিকা হইতে উহা বুঝা যাইবে।

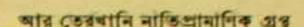
| বাল্যদীলা-সূত্র ও<br>উথলীর গোপ্তামীদের<br>তালিকা  | গ্রেমবিলাধ (পু" ২০৮)<br>ও নগেলনাথ বহুর<br>বারেল্র রাজণ-কাও<br>(পু" ২০৫ ও ২৭০)                             | শান্তিপুরের কবৈত-<br>বংশীয়াকে তালিকা<br>(Dacca Review,<br>March, 1913)                                 | ভা* সেবের History<br>of Bengali<br>Literature, p. 496-<br>প্রবয় তালিকা |
|---|---|---|---|
| ১। আরু ওঝা<br>২। যত<br>৩। শ্রীপতি<br>৪।] কুলপতি<br>৫। শ্রীবভাকর<br>৬। শ্রীপ্রভাকর<br>৭। নরসিংহ<br>৮। কুবের<br>৯। অবৈত | ১। আরু ওঝা ২। বছ ৩। প্রশিতি ৪। কুলপতি ৫। ঈশান ৬। বিভাকর ৭। প্রভাকর ৮। নরসিংহ ১। বিভাধর ১০। ছকরি ১১। কুবের | ১। জটাধর ভারতী ২। বাণীকান্ত সরস্বতী ৩। সাকৃতিনাথ পুনী ৪। সংগশচন্ত্র শাস্ত্রী ৫। নরসিংহ ৬। কুবের ৭। অবৈত | ১। স্থাকর ২। সিদ্ধের ৩। টিকারি ৪। নর্গহে ৫। কুবের ৬। অধৈত               |

"ৰালালীলা-সূত্ৰ" যদি প্ৰামাণিক গ্ৰন্থ হইত তাহা হইলে তাহার বংশতালিকার সহিত শান্তিপুরের গোস্থামীদের বংশ-তালিকার মিল গাকিত।
"প্রেমবিলাসের" চতুর্বিংশ বিলাসে "বাল্যলীলা-সূত্রের" কথা থাকিলেও
উক্ত গ্রন্থে লিখিত তালিকা প্রেমবিলাসে প্রদন্ত হয় নাই। "বঙ্গে প্রাহ্মণ",
"সম্বন্ধ-নির্দয়" এবং নগে গুরাবু-সংগৃহীত কুলজী গ্রন্থসমূহের যদি কিছু মাত্র
প্রামাণিকতা থাকে, তাহা হইলে অবৈত নরসিংহ নাড়িয়ালের পক্ষম অধস্তন
প্রদ্রম্ব হয়েন। কিন্তু "বাল্যলীলা-সূত্রের" মতে অবৈত নরসিংহের পৌত্র।
যদি বাল্যলীলা-সূত্র অপেকা কুলজীগ্রন্থ বেশী প্রামাণিক বলিয়া বিবেচিত
হয়, তাহা হইলে ১৪০৭ গুরীকো নরসিংহ বর্তমান থাকিবেন এশং
১৪০৪ গুরীকো অবৈত জন্মগ্রহণ করিবেন, ইহা সম্ভব হয় না। সূত্র,
তাহেও)। এই সব কারণে এই গ্রন্থের প্রাচীনতায় আন্থা স্থাপন করিতে
পারিলাম না।

## "গীতাগুণ-কদম্ব"

অধ্যাপক এযুক্ত অনুলাচরণ ঘোষ বিভাভ্ষণ মহাশয় আমার জভ এই অজ্ঞাত-পূর্ব ও অপ্রকাশিত পূর্ব গ্রন্থখানি সংগ্রহ করিয়া আনিয়াছেন। ১৯০৬ গুড়ান্দের জুন মাসে আমি পরিষদের পুথিশালায় এই পুথি হইতে আমার প্রয়েজনীয় বিষয় লিবিয়া লই এবং পরিষদে উহার নকল রাধিয়া পুথির অধিকারীকে উহা ফেরৎ দেওয়ার ব্যবস্থা হয়। পুথির শেষে লিখিত আছে, "ইতি সন ১১৯৬ (১৭৮৯ গুট্টান্দে)তে এই ভাত্র রোজ বৃহস্পতিবার, সাক্ষর প্রগোরাক্ত দেবশর্মা সাং দুর্গাপুর।" পুথিখানি যে ১৪৭ বংসরের প্রাচীন তাহা ইহার হস্তাক্ষর ও কাগজের স্বস্থা বেশিলেই বুকা যায়।

এই গ্রন্থের রচয়িতা বিক্ষুদাস। তিনি গ্রন্থের শেষে লিখিয়াছেন—
বিনামূলে বিকাইসু অচ্যত-চরণে।
বৈষ্ণবের পথধূলি করি আভূষণে॥



সীতা সহিত অধৈতের পাদপত্ম আশ। সীতাওণ কদম রচিল বিফুদাস।

এই গ্রন্থের প্রথমে তিনি বলিয়াছেন যে সাতকুলিয়ার নিকট বিফুপুর গ্রামে তাঁহার জন্ম। তাঁহার পিতার নাম মাধ্বেক্ত আচার্য্য।

> বিকৃপুরে মাধবেক্স আচার্য্য আলয়। বুকিহীন মৃঢ় আমি যাহার তনয়। কুিয়া নিকটেতে বিকৃপুর গ্রাম। পূর্বের সপ্ত মুনি বাঁহা করিলা বিশ্রাম।

লেখক বলিতে চান যে তিনি সীতা ও অবৈতের লালা স্বচক্ষে দেখিয়া সমস্ত বিবরণ লিপিবন্ধ করিয়াঙেন। গোবিন্দ নামক প্রাক্ষণ সীতাকে পূপা-বনে প্রাপ্ত হয়েন। সাতা একদিন গলালান করিতে আসিলে অবৈতের সহিত তাহার দেগা হয়। প্রথম দর্শনেই উভয়ের মধ্যে অনুরাগ জন্ম। কেথক বিফুদাস স্বয়ং গো বিন্দের বাড়ীতে গাইয়া অবৈতের সহিত সীতার বিবাহের প্রস্তাব করিলেন; যথা—

> সেই দিন গেলাম আমি গোবিদ্দের ঘরে। দেবার বিবাহ লাগি কহিলাম তাবে । ৩ পাতা

অহৈতের ছয়টা পুত্র হইয়াছিল। বিফুদাসের মতে তাঁহাদের নাম অচ্যুত, কৃষ্ণমিত্র, গোপাল, জগদাশ, বলরাম ও রূপ। জীচৈতভচরিতামূত-মতে পাঁচ পুত্র —অচ্যুত, কৃষ্ণমিত্র, গোপাল এবং

আচার্য্যের আর পুত্র শ্রীবলরাম। আর পুত্র স্বরূপ-সথা জগদীশ নাম॥ ১৷২৷২৫

নগেন্দ্রনাথ বহুর বারেন্দ্র ব্রাক্ষণ-কাণ্ডে (পৃ<sup>ত</sup> ২৮০) ছয় পুল্লের নাম দেওয়া হইয়াছে; যঠ পুল্লের নাম স্বরূপ। সীতাগুণ কদম্বে আছে:

রূপ সধানামে যঠ পুত্রে অচও। সমত শাজের অর্থকের থণ্ড থণ্ড। ৫ পাতা

## শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

845

এই প্রন্থে শ্রীচৈতত্যের আবির্ভাবের সময় লেখা হইয়াছে ১৪০৭ শকে ২০শে ফাল্পন রাত্রি একদণ্ড গতে ছই প্রবেশের ক্ষণে (৬ পাতা)। এই সময়ের সহিত বিশ্বনাথ চক্রবর্ত্তি-কর্তৃক প্রদন্ত সময় ও জ্যোতিষিক গণনা-ছারা প্রাপ্ত সময় আশ্চর্যা রকমে মিলিয়া যাইতেছে। শ্রীচৈতত্যের জন্ম-সময়ে সীতা বলিতেছেন:

আমি আজি দেখিতে পাব চৈতন্যচরণ।

—৬ পাতা

বিশ্বস্তুর অহৈতের নিকট ভাগবত পড়িয়াছিলেন, ইহা এই প্রস্তুর দশ্ম প্রাক্তে বর্ণিত হইয়াছে।

সীতা, অধৈত ও অচ্যতের মহিমা ঘোষণা করিবার জন্ম অন্যান্য অবৈতচরিত গ্রন্থে যেমন সব কথা লিখিত হইয়াছে, এই গ্রন্থেও সেইরূপ
বর্ণনা প্রদন্ত হইয়াছে। উদাহরণ-স্বরূপ একটি ঘটনা উল্লেখ করা যাইতে
পারে। সীতা স্নান করিতে গেলে অচ্যত অবৈতের গৃহে অধ্যয়নকারী
বিশ্বস্তরকে হল্প নিবেদন করিয়া থাইয়া ফেলেন। সীতা ফিরিয়া আসিয়া
দেখিলেন ছেলে হল্প খাইয়াছে। তিনি অচ্যতের গায়ে এক চাপড়
মারিলেন। সেই চাপড়ের দাগ বিশ্বস্তরের গায়ে দেখা গেল
(১১ পাতা)।

"সীতাগুণ-কদম্বে" ঈশান-সম্বন্ধে কয়েকটি কথা আছে। "সীতা-চরিত্রে" যেমন শ্রীচৈতন্তভাগবত-বর্ণিত ঈশানের সহিত শচীর প্রিয় সেবক ঈশানের অভিন্নত্ব দেখাইবার চেন্টা হইয়াছে, এই গ্রন্থেও সেইরূপ কইয়াছে; যথা—

ঈশান অধৈত পদ করিয়া বন্দন।
শচীর মন্দিরে তবে দিলা দরশন॥
শচী কহে কোথা হইতে আইলা কিবা নাম।
ঈশান কহে ঘর মোর শান্তিপুর ধাম॥

—২৫ পাতা



#### আর তেরথানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

"অতৈত-প্রকাশে" ঈশান নাগর বলিয়াছেন যে তাঁহার বয়স্ যথন ৭০ বংসর তথন সীতা ঠাকুরাণী তাঁহাকে বিবাহ করিতে আদেশ দেন।

> বংশ রক্ষা করি প্রভুর আজ্ঞা পালিবারে। বাট চলি আইমু মুই গ্রীধাম লাউড়ে॥ ইঁহা রহি এই এম্ব করিমু লিখন। গুরু আজ্ঞা মাত্র মুই করিমু রক্ষণ॥ পৃ° ১০৪

অচ্যতবাবু "অবৈত- প্রকাশের" ভূমিকায় লিখিয়াছেন যে ১৭৪৪ খুফীব্দে বক্ত থাসিয়া জাতি-কর্তৃক লাউড়-রাজ্ঞা ধ্বংসের পর ঈশানের বংশধরেরা লাউড় ত্যাগ করিয়া গোয়ালন্দের নিকট ঝাটপাল গ্রামে আসিয়া বসবাস করিতে থাকেন।

কিন্তু বিষ্ণুদাস "সীতাগুণ-কদম্বে" বলেন যে সীতাদেবী ঈশানকে "ঝাটপাল" গ্রামে যাইয়া বাস করিতে আদেশ দেন। এখানে "অবৈত-প্রকাশের" সহিত "সীতাগুণ-কদম্বের" বিরোধ এই যে শেষোক্ত গ্রন্থের মতে ঈশান লাউড়ে বাস করেন নাই, তিনি ঝাটপালেই বাস করেন। তাঁহার বংশধরেরা এখনও সেইখানে আছেন। "অবৈত-প্রকাশে" পাওয়া যায় যে ঈশান অচ্যতের পাঁচ বৎসর বয়সের সময়্র অবৈত-গৃহে আসিয়া বাস করিতে থাকেন। আর বিষ্ণুদাস বলেন যে তিনি সীতার বিবাহের ঘটকালা করিয়াছেন। "অবৈত-প্রকাশে" ঈশান বলিতেছেন যে তিনি ১৫৬২ গুর্ফাকের কাছাকাছি সময়ে লাউড়ে যাইয়া বাস করেনও তাঁহার প্রস্তের ভূমিকা-লেখক বলেন যে এই ঘটনার ১৪২ বৎসর পরে ঈশানের বংশধরেরা ঝাটপালে বাস করিতে আরম্ভ করেন। আর বিষ্ণুদাস বলিতেছেন যে প্রথম হইতেই ঈশান ঝাটপালে বাস করেন; ব্যথা—

শুনিয়া ঈশান তবে লাগিলা কান্দিতে। নবান অঙ্কুর যেন ভাঙ্গে বজ্ঞাঘাতে।

<sup>্</sup> প্রাবৃদ্ধ মুণালকান্তি যোগ মহাপর উপানের যে বংশ-বিবংশ অথৈত-প্রকাশের বিভীয় সংস্করণের কৃষিকার বিহাছেন হাঃতে করা যায় যে ঐ বংশের কোন পাগার উপান হউতে বর্ত্তানে নবম পুরুষ, কোন পার্থার দশম ও কোন পাগার একানপ পুরুষ চলিত্রেছে। ১৫৯২ ইউতে ১৯৩২ বৃদ্ধীনের বাবধান ওবং বংগর; ঐতিহানিক গ্রনায় এই সময়ের মধ্যে ১৪/১৫ পুরুষ হওয়ার ক্যা।



848

## শীচৈতগুচরিতের উপাদান

তবে তারে রুপা করি সাতাঠাকুরাণী।
কহিতে লাগিলা তারে মধুর যে বাণী॥
ছঃখ না ভাবিছ মনে তুমি সাধুজন।
জামু সঙ্গে পূর্বদেশে করহ গমন॥
না কর রোদন বাছা স্থির কর মতি।
ঝাটপাল গ্রামে যাইয়া করহ বসতি॥
সেই গ্রামের মধ্যে ভগ্নমন্দিরে।
জগন্নাথ বলরাম তাহার ভিতরে॥
খেত শ্রামল তমু সুরেন্দ্র-বদন।
সঙ্গে ভোমারে দরশন দিব দুই জন॥ ২৭ পাতা

"অবৈত প্রকাশ" ও "সীতাগুণ-কদম্ব" উভয় গ্রন্থই যদি অকৃত্রিম হইত, তাহা হইলে উভয়ের মধ্যে বিরোধের স্থলে সত্য নির্ণয় করা ছরুহ হইত। কিন্তু "অবৈত-প্রকাশ" যে কৃত্রিম তাহার প্রমাণ পূর্বেব দিয়াছি। "সীতাগুণ-কদম্ব"ও যে জাল তাহার বহু প্রমাণের মধ্যে একটি মাত্র

"সীতাগুণ-কদম্ব" পুথির ১০-১৬ পাতায় বিশ্বহরের সন্ন্যাসের পূর্বের বিশ্বপ্রিয়া ও শচীর বিলাপ বর্ণিত হইয়াছে। এ অংশ হুবছ লোচনের চৈতগুমঙ্গল হইতে লওয়া। যে ব্যক্তি সীতার বিবাহে ঘটকালী করিয়াছেন, তিনি অবশ্যই লোচনের পূর্বে গ্রন্থ লিথিয়াছেন—পরে লিথিলেও তিনি লোচনের গ্রন্থ হইতে উক্ত বর্ণনা চুরি করিতেন না। লোচন যে বিফুদাসের গ্রন্থ হইতে ঐ অংশ লইয়াছেন তাহা সম্ভব মনে হয় না, কেন-না লোচনের কবিহগুণের বছ পরিচয় পাওয়া য়ায় এবং বিফুদাস যে কোনরূপে গোড়ান ছন্দে পয়ার লিথিতেন তাহা "সীতাগুণ-কদম্বের" অগ্রাপ্ত বিষয়ের বর্ণনায়্বও দেখা য়ায়।

## লোকনাথ দাসের "সীতা-চরিত্র"

শ্রীযুক্ত অচ্যতচরণ তত্তনিধি মহাশয় ১৩০৪ সালের সাহিত্য-পরিষদ্-পত্রিকার তৃতীয় সংখ্যায় এই প্রন্থের পরিচয় প্রদান করেন। তৎপরে



তিনি "শ্রীবৈষ্ণবদ হিনী" বা "ভক্তি প্রভা" পত্রিকার হাবিংশ বর্ষের প্রথম হইতে চতুর্থ সংখ্যায় ইহা প্রকাশ করেন। ১০০০ সালে আলাটি হুগলি হইতে মধুগুদন দাস ইহা প্রস্থাকারে প্রকাশিত করেন। তর্বনিধি মহাশয় বলেন যে এই লোকনার দাস বৃন্দাবনবাসী নরোক্তম ঠাকুর মহাশয়ের গুরু লোকনাথ দাস। হরিভক্তিবিলাসের মন্তলাচরণ শ্লোকে লোকনাথের নাম মাথুর-মণ্ডলবাসীদের মধ্যে আছে। হরিভক্তিবিলাসের শ্লোক ভক্তিরসামৃতসিন্ধুতে উক্ত হইয়াছে। ভক্তিরসামৃতসিন্ধুতে উক্ত হইয়াছে। ভক্তিরসামৃতসিন্ধুতে উক্ত হইয়াছে। ভক্তিরসামৃতসিন্ধুতে উক্ত হইয়াছে। ভক্তিরসামৃতসিন্ধু ১৯৬০ শকে বা ১৫৪১ খুট্টান্দের বছ পূর্বেই লোকনাথ বৃন্দাবনে গিয়াছিলেন। প্রেমবিলাসের কাহিনী বিশ্বাস করিলে বলিতে হয় তিনি যশোর জ্বোর তালগড়ি গ্রাম হইতে ১৯০১ শকের অগ্রহায়ণ মাসে নবছাপে বিশ্বস্তরের নিকট আসিয়া উপস্থিত হয়েন; যথা—বিশ্বস্তর তাহাকে বলিতেছেন—

মধ্যে পৌষ মাস আছে মাঘ শুক্ল পকে। তৃতীয় দিবসে সন্ন্যাস করিব যেন দেখে।

—সপ্তম বিলাস, পৃ° ৪১

বিশ্বস্তব তাঁহাকে বৃন্দাবনে প্রেরণ করিলেন। যিনি ১৫১০ খুকীন্দের বৃন্দাবনে চলিয়া যাইয়া ভজন করিতে লাগিলেন, বাঁহাকে ছয় গোস্বামী আদর ও সম্মান করিতেন ও বাঁহাকে নরোত্তম ঠাকুর মহাশয় গুরুরূপে নির্বাচন করিয়াছিলেন, তিনি যে "সীতা-চরিত্রের" ভায় গ্রন্থ লিখিবেন নিম্নলিখিত কারণে ইহা সম্ভব মনে হয় না:

১। প্রথমতঃ সীতা-চরিত্র ১৬১। খৃটাব্দের পরে যে লিখিত হয় তাহার প্রমাণ এই গ্রন্থ-মধ্যেই আছে; যথা—

> ইহার অশেষ যত কবিরাজ ঠাকুর। চৈতভাচরিতামতে লিখিয়াছে প্রচুর ॥ পৃত ১০

চৈতত্যচরিতামৃত :৬১৫ খুন্টাব্দে রচিত। লোকনাথ ১৫১০ খুন্টাব্দে অন্ততঃ ২০ বংসর বয়ক্ষ ছিলেন। .৬১৫ খুন্টাব্দে তাঁহার বয়স্ হয় ১২৫ বংসর।



864

## শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

১২৫ বংসর বয়সের পরও তিনি "সীতা-চরিত্র" লিখিতে বসিয়াছিলেন, ইহা অবিশ্বাস্ত।

২। বিতীয়তঃ, "সীতা-চরিত্রে" আছে যে অবৈত-পত্নী সীতার নন্দিনী নামে একজন পুরুষশিশ্ব (প্রকৃত নাম নন্দরাম, পৃ° ১২) নারীর বেশ ধারণ করিয়া স্থীভাবে ভজন করিতেন। তাঁহার নাকি স্ত্রীলোকের মত অতু হইত। তাহা শুনিয়া

অতঃপর নবাব এক উত্তরিলা তথি।
সহস্র লন্ধর সঙ্গে উথ্র ঘোড়া হাতী।
এক গৃহী ব্রাহ্মণ আছিলা সেই গ্রামে।
সকল কহেন গিয়া সাহেবের কানে।
পূ° ২০

নবাব আসিয়া পরীক্ষা করিয়া দেখিলেন যে নন্দিনী সতাই রক্তম্বলা। সীতার অপর পুরুষশিশ্য জন্মলী (নাম—যজেশ্বর, পৃ° ১ )

এক রাখালকে মন্ত্র দিয়া জীবেশ পরাইলেন ও তাঁহার নাম রাখিলেন হরিপ্রিয়া।

> অরণ্যেতে গুরুশিয়্য আনন্দে রহিলা। লক্ষর সহিতে স্থবা তাঁহা প্রবেশিলা। পৃ° ২১

আকবর বাদশাহ ১৫৭৬ খৃটাব্দে বাজালা জয় করিয়া একটি ত্বা স্থাপন করেন। ত্বা শব্দের প্রয়োগ-ছারা ব্ঝা যাইতেছে এ ঘটনা ১৫৭৬ খৃটাব্দের পরে ঘটিয়াছিল। লোকনাথ কি বুন্দাবনে বসিয়া ধ্যান-যোগে এই সব ঘটনা অবগত হইতেছিলেন, না জরাগ্রস্ত অবস্থায় বাজালায় ফিরিয়া আসিয়া "সীতা-চরিত্র" লেখার জন্ম তথ্য-সংগ্রহ করিতেছিলেন ?

#### আর তেরথানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

859

০। লোকনাগ গোস্বামীর ন্যায় সজ্জন নিম্নলিখিত ঘটনার ন্যায় অভ্রোচিত ব্যাপার লিপিবন্ধ করিতে পারেন না। অবৈত-গৃহিণী সীতা পুরুষ নিদনী ও জন্মলীকে মন্ত্র দিয়া বলিতেছেন:

সীতা বলে যে বলিলে সেই সত্য হয়।
প্রকৃতি না হইলে দাসী কেমনেতে হয়।
এই বলি ছই শিয়ে শব্দ দিল হাতে।
ললাটে সিন্দুর দিল বেণা বাব্দে মাথে।
ধাউতের তাড় ছই হাতেতে পড়িল।
কাঁচুলি খাগুরি পরি গোপীবেশ কৈল।

এই রকম বেশ পরাইয়া সীতাদেবার মনে সন্দেহ হইল যে শিশুভয় সভাই নারী হইয়া গিয়াছে কি না। তথন শিশুপ্রবর্ত্বয় কহিলেন—

তাতে রাধা বাজ অতি তেজমস্ত হয়।
পুংবেশ ছাড়াইয়া করে প্রকৃতি উদয়।
হয় কিনা ঠাকুরাণী ইথে দেহমন।
এত বলি ছই জন এড়িল বসন॥
ইহা শুনি শিশ্বপানে চায় ঠাকুরাণী।
প্রকৃতি সভাব দোহার দেখিল তথনি।
পূ<sup>o</sup> ২৪

কোন ভদ্রমহিলা উলম্ব শিশুদ্বয়কে পরীক্ষা করিয়াছিলেন, এ কথা লোকনাথ গোস্বামী কেন, কোন ভদ্রলোক লিখিতে পারেন না।

৪। "সীতা-চরিত্রে" শ্রীচৈতক্সগায়ত্রী ও স্বতন্ত্র গৌরমন্ত্রের কথা আছে। সীতাদেবী শিশ্বাদয়কে বলিতেছেন—

তবে বিশ্বস্তুর-ধানে করিছ মানস।
শ্রীচৈতগু-গায়ত্রী জপিছ বার দশ॥
পাত্ত অর্ঘ্যে পূজিছ তাঁকে নানা উপহারে।
গাঁহার প্রসাদে প্রেম বাড়য়ে বিস্তারে॥ পৃ° ১৩

966

## ত্রীচৈতভাচরিতের উপাদান -

পর সীতাদের তাহাকে দেখিতে গেলেন। তথনকার ঘটনা "সীতা চরি ন"-অনুসারে অতিশয় অনুত:

> তবে সীতাঠাকুরাণী মায়া আচ্ছাদিল। অচেতনরূপে শচীদেবীরে রাখিল।

তবে হাসি মহাপ্রভু চক্ষু মেলি চায়। রাধা বলি সীতাপানে শ্রীভুজ বাড়ায়॥ পৃ° ৩

ঈশান নাগরের "অভৈত- প্রকাশে"র যায় এই বইয়েতেও আছে যে বিশ্বস্তর অভৈতের নিকট অধায়ন করিয়াছিলেন। কিন্তু ঈশানের মতে অচ্যুত বিশ্বস্তরের কাছে প ভ্য়াছিলেন, আর "সাতা-চরিত্রের" মতে অচ্যুত ও বিশ্বস্তর একসঙ্গে অভৈতের নিকট পড়িতেন; যথা—

শান্তিপুরের বিজ পণ্ডিত মহাশ্র।
তথায় পড়িতে আইলা নিমাই ঠাকুর।
দেখিয়া আনন্দে বলে আচার্যা গোঁসাই।
কুপা করি মোর ঘরে চলহ নিমাই।
প্রভু বলে ভাল যুক্তি আমি ইহা চাই।
অচ্যুতের সঙ্গে আমি পড়িব হেথাই।
তোমা বিনা আর কেবা আছয়ে এমন।
কাহার মন্দিরে আমি করিতাম ভোজন।

বিশ্ব হর যথন অবৈতের বাড়াতে পড়িতে আসিলেন তথন সাতাদেরা তাঁহাকে কোলে করি আজিনাতে নাচে আচার্য্যিনা। কৌ চুকে ধারণ করে চরণ তথানি।

উশান নাগর যেমন লিথিয়াছেন কৃষ্ণদাস কলা খাইয়াছিলেন ও বিশ্বস্তর তেঁকুর তুলিয়াছিলেন, তেমনি লোকনাথ দাস বলেন যে অচ্যুত চুধের সর খাইয়াছিলেন এবং চৈতগু উপগার তুলিয়াছিলেন ( পৃ০ ৭ )।



#### আর তেরখানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

842

ঈশানের সহিত লোকনাথ দাসের আর একটি মিল হইতেছে মহাপ্রভুর তিরোধান-সম্বন্ধে। সীতা-চরিত্রে আছে—

একদিন মহাপ্রভু সিংহ্লারে গমন।
আরম্ভিল সংকীর্ত্তন লইগা ভক্তগণ॥
ভাবাবেশে মন্দিরেতে প্রবেশ করিল।
সবে বলে প্রভু সিংহাসনেতে চড়িল॥
মহাপ্রভু না দেখিয়া সব ভক্তগণ।
মৃচ্ছিত হইলা সবে নাহিক চেতন॥
নিশ্চয় করিলা প্রভু লীলা-সম্বরণ।
মহাপ্রভুর বিরহেতে করেন ক্রন্দন॥

90:0

ঈশান নাগরের সঙ্গে লোকনাথ দাসের তফাৎ ঈশান নাগরের জীবনী লইয়াই। ঈশান এমন কথা কোথাও বলেন নাই যে তিনি শচী-দেবীকে সেবা করিবার জন্ম নবখাপে গিয়াছিলেন; কিন্তু "সীতা-চরিত্রে" তাহাই আছে। সম্বতঃ ঐতিতন্মভাগবতের উক্তির সঙ্গে সামগ্রন্থ রাথার জন্ম ঈশান-সম্বন্ধে তথাক্থিত লোকনাথ দাস এরূপ বলিয়াছেন। রন্দাবনদাস বলেন বিশ্বয়র-গৃহে—

ঈশান দিলেন জল ধুইতে চরণ। ২।৮।২০৭
ঈশান কবিল সব গৃহ উপস্বার।
যত ছিল অবশেষ সকল তাঁহার॥
সেবিলেন সর্বকাল আইরে ঈশান।
চতুর্দ্দশ লোক-মধ্যে মহাভাগ্যবান্॥ ২।৮।২০৮

শ্রীচৈতন্মভাগবতোক্ত ঈশান "সর্ববকাল" শচীকে সেবা করিয়াছিলেন, স্থুতরাং তিনি অধৈতের বাড়ীর ঈশান নহেন।

এই প্রসঙ্গে উল্লেখ করা যাইতে পারে যে গৌরগণোদ্দেশদীপিকায় আছে "নন্দিনী জন্মলী জেয়া জয়া চ বিজয়া ক্রমাং" (৮৯)।

#### শ্রীচৈতক্মচরিতের উপাদান

880

যে "ভক্তিপ্ৰভা" পত্ৰিকায় "সীতা-চরিত্র" বাহির ইইয়াছিল, তাহাতেই বাহুদেব দাসমণ্ডল নামক এক ভক্ত লিখিয়াছেন, "লোকনাথ দাস বন্ধদেশী ভেকধারী কোন সহজীয়া বৈঞ্চব ছিলেন।" আমি মণ্ডল মহাশয়ের উক্তি যথার্থ বলিয়া বিবেচনা করি।

## সীতা-ক্ষৈত-চরিত গ্রন্থলি-স্থকে সাধারণ মস্তব্য

আমি সীতা- ও অধৈত-চরিত গ্রন্থসমূহের মধ্যে পাঁচখানির পরিচয় দিলাম। আমার বিচারে পাঁচখানি গ্রন্থই জাল প্রমাণিত হইল। জাল শব্দের অর্থ যে গ্রন্থগুলি যে যে ব্যক্তির হারা লিখিত বলিয়া প্রকাশ, তাঁহারা উহা লেখেন নাই। পাঁচখানি গ্রন্থের প্রত্যেকখানিই সীতা বা অবৈতের কুণাপাত্র ও প্রত্যক্ষদশী লেথকের দারা লিখিত বলিয়া প্রকাশ করা হইয়াছে। "বাল্যলীলা-সূত্রের" গ্রন্থকার কৃষ্ণদাস অধৈতের পিতার সমসাময়িক রাজা দিবাসিংহ: "অহৈত-প্রকাশের" গ্রন্থকার অবৈতের গুহে পালিত ও তাঁহার শিশু ঈশান নাগর : "সীতা-চহিত্রের" গ্রন্থকার প্রীচৈত্ত অপেকা বয়োজ্যেষ্ঠ ও নরোত্তম ঠাকুর মহাশহের গুরু লোকনাথ; "সীতাগুণ-কদম্বের" গ্রন্থকাত সীতার বিবাহের ঘটক বিফুদাস: আর "অবৈতমগলের" লেখক হরিচরণ অবৈতের শিশ্য ও অচ্যতের আদেশে গ্রন্থ-রচনায় প্রবৃত। ইহারা যদি সভাসভাই গ্রন্থগুলির রচয়িতা হইতেন, তাহা হইলে ইহাদের বর্ণনার সহিত মুরারি গুপু, কবিকর্ণপুর ও বুন্দাবনদাসের বর্ণনার গুরুতর বিরোধ দেখা যাইত না। অথচ উক্ত লেখকগণের বর্ণনার সহিত সামঞ্জত রাখিতে গেলে অবৈতকে শচী-জগলাপের মন্তওক বলা যায় না, অভৈতের নিকট বিশ্বভারের ভাগবত-পাঠের কথা বলা যায় না, অচ্যুতকে বিশ্বস্তরের ছাত্র করা যায় না এবং সাতা, অবৈত ও অচ্যতের নানারণ অলোকিক ঐশ্বর্য-প্রদর্শনের কথাও লেখা চলে না। তাই এই সমস্ত গ্রন্থের প্রকৃত রচয়িতারা মুরারি গুপ্ত প্রভৃতি প্রামাণিক লেখকের উক্তির বিরুদ্ধে কথা বলিতে বাধ্য হইয়াছেন। উক্ত পাঁচখানি গ্রন্থের মধ্যে পরস্পার-বিরোধী উক্তি আছে যথেষ্ট। গ্রন্থগুলির বিচারকালে উহাদের উল্লেখ করিয়াছি।



## আর তেরখানি নাতিগ্রামাণিক গ্রন্থ

এখন প্রশ্ন হইতেছে এই যে কোন্ সময়ে এই সমস্ত গ্রন্থ রিজ হইয়াছিল। "বালালীলা-স্ত্রের" পুলি প্রায় দেড় শত বংসরের প্রাচীন। "অবৈত-প্রকাশের" ১৭০০ শকের, ১৭৮০ প্র্টান্দের (১৫৫ বংসরের পূর্বের) পুলি হইতে যে প্রতিলিপি করা হইয়াছিল তাহা হইতে গ্রন্থ-সম্পাদন করা হইয়াছে বলিয়া অচ্যুতবাবু জানাইয়াছেন। "সাতাগুণ-কদম্বের" পুলি ৪৭ বংসরের ও "অবৈতমঙ্গলের" পুলি ১৪৫ বংসরের প্রাচীন। "সাতা-চরিত্রের" কোন প্রাচীন পুলি পাওয়া গিয়াছে বলিয়া প্রমাণ পাই নাই। উক্ত প্রাচীন পুলিগুলিতে যাহা আছে তাহাই যে ছাপা হয় নাই তাহার প্রমাণ "বাল্যলীলা-সূত্র" ও "অবৈত-প্রকাশ" ছাপার সময় সংশোক্ষর নামে অনেক কিছু অলল-বলল ও সংযোজনা করা হইয়াছিল। বইগুলি যে ২৫০ বংসরেরও পূর্বের রচিত হইয়াছিল তাহা জানা গেল। কিন্তু ১৫০ বংসরের কত পূর্বের রচিত হইয়াছিল তাহা নির্গম করা বড় কঠিন।

শ্রীচৈতগুভাগবত হইতে জানা যায় যে অছৈতের কোন কোন
পুত্র প্রীচৈতগুকে ঈশ্বর বলিয়া স্বাকার করেন নাই এবং নিজেদের
পিতাকেই স্বতন্ত্র ঈশ্বর বলিয়া ঘোষণা করিয়াছিলেন। দেবকানন্দনের বৈষ্ণব-বন্দনার প্রাচান পুথিতে (অর্থাৎ ১৬৫৪ খুফ্টান্দের ও
১৭০২ খৃটান্দের) ও বিভায় বৃন্দাবনদাসের বৈষ্ণব-বন্দনায় অচ্যুত
ব্যতীত অগ্য কোন অধৈত-পুত্রের বন্দনা নাই। শ্রীজীবের
"বৈষ্ণব-বন্দনা"য় আছে যে অছৈতের যে সকল পুত্র শ্রীচৈতগুকে
সর্কেশ্বর বলিয়া স্বাকার করেন নাই, তাঁহাদিগকে উপেক্ষা করিয়া
ল্যাগ করা হইল। তিনিও অছৈতের পুত্রগণের মধ্যে কেবলমাত
অচ্যুতকে বন্দনা করিয়াছেন। অচ্যুত ব্রক্ষচারী ছিলেন, তাঁহার
কোন সন্তানাদি হয় নাই। সেই জন্ম অছৈতের বংশধরদের লইয়া
বৈষ্ণব সমাজে কিছু আন্দোলন চলিতেছিল। সম্ভবতঃ সেই
আন্দোলনের গতি প্রতিরোধ করার জন্ম উক্ত পাঁচখানি গ্রন্থ
রিচিত হইয়াছিল।

822

#### শ্রীচৈতক্সচরিতের উপাদান

## জগদানদের "প্রেমবিবর্ত"

গৌড়ীয় মঠ হইতে মহা প্রভুর পার্ষদ জগদানন্দ পণ্ডিছের "প্রেমবিবর্ত্ত" প্রকাশিত হইয়াছে। আমি ১০০৭ বঙ্গান্দে প্রকাশিত ঐ গ্রন্থের চতুর্থ সংকরণ দেখিয়াছি। গ্রন্থথানির ভাষা, ভাব, তব্ব ও ঐতিহাসিক তথ্য দেখিয়া সন্দেহ হয় যে ইহা জগদানন্দ পণ্ডিত লেখেন নাই। ইহাতে শ্রীচৈতক্মের জাবনী-সম্পর্কে এমন খুব কম ঘটনাই আছে যাহা শ্রীতৈ চক্মচরিতামূতে পাওয়া যায় না। লেখক বলেন—

চৈ হত্যের রূপ গুণ সদা পড়ে মনে। পরাণ কাঁদায় দেহ কাঁপায় সঘনে॥

দেখেছি অনেক লীলা থাকি প্রভূ-সঙ্গে।
কিছু কিছু লিখি তাই নিজ মন রঙ্গে॥
মন কাঁদে প্রাণ কাঁদে কাঁদে ছটী আঁখি।
যথন যাহা মনে পড়ে তথন তাহা লিখি।

2 de

## জগদানন্দ নিজের পরিচয়-প্রসঙ্গে বলিয়াছেন-

ধতা কবিকর্ণপূর স্বগ্রাম নিবাসী।
নামের মহিমা কিছু রাখিল প্রকাশি॥
নামের মহিমা কিছু রাখিল প্রকাশি॥
নামের কুপা করে বিশ্বে সেই ধতা।
সপ্তবর্ষ বয়সে হৈল মহাকবি মাতা॥
ধতা শিবানন্দ কবিকর্ণপূর পিতা।
মোরে বাল্যে শিখাইল ভাগবত গীতা॥
নদীয়া লইয়া মোরে রাখে প্রভু-পদে।
শিবানন্দ প্রাতা মোর সম্পদে বিপদে॥
তার ঘরে ভোগ রাখি পাক শিক্ষা হইল।
ভাল পাক করি শ্রীগোরাম্ব সেবা কৈল॥

पृ॰ २७



## আর তেরখানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

অহাত্র তিনি বলেন—

গদাই গোরাঙ্গরূপে গৃঢ় লীলা কৈল।
টোটা গোপীনাথে দেব গদাধর ছিল॥
মোরে দিল গিরিধারী সেবা সিন্ধৃতটে।
গৌড়ীয় ভকত সব আমার নিকটে॥
দামোদর স্বরূপ আমার প্রাণের সমান।
শীক্ষাটেততা যার দেহমন প্রাণ॥

গ্রন্থানিতে চরিতামতে উক্ত ঘটনাবলা ছাড়া কতকগুলি অলোকিক বিষয় স্থান পাইয়াছে; যথা—বাল্যকালে গৌর, গদাধর ও অক্ত একজন গঙ্গাতীরে এক বনে যাইয়া এক শুক পাখী ধরিয়াছিলেন।

গোরাক

শূকে ধরি বলে তুই ব্যাসের নন্দন। রাধাকৃঞ্চ বলি কর আনন্দ বর্জন। পু°১১

গৌরদহ নামক স্থানে এক নক্র ছিল। গৌরাঙ্গের কার্ত্তনে মোহিত হইয়া সে তীরে উঠিয়া আসিল। তখন সে দেবশিশুরূপে কথা কহিতে লাগিল (পৃ° ৪৭-১৮)।

জগদানন্দ বিজ্ঞ ও প্রবাণ সনাতন গোস্বামীর সহিত কিরূপ ব্যবহার করিয়াছিলেন, তাহা নিজেই লিখিয়াছেন—

গেলাম ব্রহ্ম দেখিবারে রহি সনাতনের ঘরে কলহ করিমু তার সন।

রক্তবন্ত্র সন্ম্যাসীর শিরে বাঁধি আইলা ধীর ভাতের হাঁড়ি মারিতে কৈন্তু মন॥ পৃ°১৭

গৌড়ীয় মঠ যে সমস্ত মত প্রচার করিতেছেন তাহাদের নমুনা এই গ্রস্থে পাওয়া যায়। সমস্ত বৈষণ্ গ্রন্থে আছে যে কোনরূপে যাহার তাহার সঙ্গে হরিনাম করিলেই প্রেমলাভ হয়।



888

## ঐতিভক্তচরিতের উপাদান

क्रगमानम वर्णन-

অসাধু সঙ্গে ভাই কৃঞ্নাম নাহি হয়। নামাক্ষর বাহিরায় বটে তভু নাম কভু নয়॥ কভু নামাভাস হয় সদা নাম অপরাধ। পৃ<sup>০</sup> ১৭

গৌড়ীয় মঠ বর্ণাশ্রমের প্রাধান্ত দেন না। প্রেমবিবর্তে আছে—
কিবা বর্ণী কিবা শ্রমী কিবা বর্ণাশ্রমহীন।
কুফবেতা যেই সেই আচার্য্য প্রবাণ ॥
আসল কথা ছেড়ে ভাই বর্ণে যে করে আদর।
অসদ্গুরু করি তার বিনষ্ট পূর্ব্বাপর॥
পৃত ৩৫

শীতৈ তথ্য জন্মস্থান যে মায়াপুরে এ কথা অফীদশ শতাবদীর পূর্বের অর্থাৎ ভক্তিরত্বাকরের পূর্বের লিখিত কোন প্রামাণিক গ্রন্থে পাওয়া যায় না। গৌড়ীয় মঠ-কর্ত্ব প্রকাশিত "নবদীপ-শতকে" ও "প্রেমবিবর্ত্তে" এই কথা পুনঃ পুনঃ লিখিত হইয়াছে। মায়াপুরের যে স্থানে শ্রীগৌরাঙ্গের মন্দির উঠিয়াছে, ঠিক সেই স্থানেই যে জগন্নাথ মিশ্রের বাড়া ছিল তাহা স্থাপ্টভাবে "প্রেমবিবর্ত্তে" লিখিত হইয়াছে:

গৌড়ে নবরীপ ধন্য ছাই ক্রোণ জগৎমান্ত ॥
মধ্যে স্রোভস্বতী ধন্য ভাগীরথা বেগবতী।
তাহাতে মিলেছে আসি শ্রীযমুনা সরস্বতী ॥
তার পূর্বর তীরে সাক্ষাৎ গোলোক মায়াপুর।
তথায় শ্রীশচীগৃহে শোভে গৌরাল ঠাকুর॥

মুরারি ও বৃন্দাবনদাসের বর্ণনা-অনুসারে জগলাথ মিশ্র দরিদ্র ব্যক্তি ছিলেন। গঙ্গাতীরে তাঁহার কাঁচা বাড়ী ছিল, তাহা গঙ্গাগর্ভে বিলুপ্ত

<sup>&</sup>gt; নবছীল-শতকের ৪, ৩, ৮৭ লোকের চতুর্ব চরবে মারাপুরের এবং ৩৬ লোকে গোজন ছালের উল্লেখ আছে।

২ প্রেমবিবর্জের ১২ পৃষ্ঠার ০০শ পঙ্ক্তিতে, ১০ পৃষ্ঠার ৩ছ পঙ্ক্তিতে, ১০ পৃষ্ঠার ২০শ পঙ্ক্তিতে, ৩০ পৃষ্ঠার ০ম পঙ্কিতে, ৪৪ পৃষ্ঠার ১০শ পঙ্কিতে এবং ০০ পৃষ্ঠার ২র পঙ্কিতে মারাপুরের উল্লেখ আছে।



#### আর তেরখানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

হইয়াছে। সেই জন্ম প্রীগৌরাপের জনভিটা ঠিক কোথায় ছিল তাহা নির্ণয় করা এখন কঠিন, এমন কি অসম্ভব বলিয়া মনে হয়। ভক্ত মহাপুদ্ধগণ স্বপ্নে, আকাশবাণীতে বা তুলসীগাছ জন্মানো দেখিয়া যাহা নির্ণয় করেন তাহা ঐতিহাসিক প্রমাণ নহে। এ সম্বন্ধে কোনরূপ বাদবিত্তায় এখানে প্রবৃত্ত হইব না।

জগদানন্দের প্রেমবিবর্ত্ত-সম্বন্ধে আমার সংশয়ের কয়েকটি কারণ এখানে নির্দেশ করিলাম। জগদানন্দের ভায় ঐতিতভারে অন্তরঙ্গ স্থকদ্ ঐতিতভারে লালা লিখিলে তাহা যে কোন বৈষ্ণব লেখকের দৃষ্টি আকর্ষণ করিবে না ইহা সম্বব মনে হয় না। যদি ঐ গ্রন্থের কয়েকখানি প্রাচীন পুথি দেখিতে পাই তাহা হইলে ইহার বিশদ বিচারে প্রের্ভ হইব।

# "गूदली-विलाभ" ७ "वःगी-शिका"

"ম্বলা-বিলাস" ও "বংশী-শিক্ষা" এই ছইখানি গ্রন্থ প্রায় একই সময়ে একই সান হইতে প্রকাশিত হয়। বংশী-শিক্ষা ৪০৭ শ্রীচৈতভাকে, ১২৯৯ সালে এবং ম্বলা-বিলাস ৪০৯ শ্রীচৈতভাকে, ১৩০১ সালে বাঘনাপাড়া হইতে প্রচারিত হয়। উভয় গ্রন্থেরই প্রতিপাত্য বিষয় হইতেছে শ্রীচৈতত্যের সঙ্গা বংশীবদন ঠাকুর ও তাহার পৌজ্র রামাই ঠাকুরের মহিমার কার্ত্তন। ম্বলা-বিলাস প্রধানতঃ জীবনচরিত্ত জাতীয় এবং বংশী-শিক্ষা সাধনতত্ব-প্রকাশক গ্রন্থ। বংশী-শিক্ষার চতুর্থ উল্লাসে ম্বলা-বিলাসের ভাষা ও বর্ণিত বিষয় গৃহীত হইয়াছে বলিয়া প্রথমে ম্বলা-বিলাসের কথাই আলোচনা করিব। প্রকাশের পূর্ণের বোধ হয় "ম্বলা-বিলাস" "বংশী-বিলাস" নামে পরিচিত ছিল, কেন-না "বংশী-শিক্ষা"য় ইহার প্রমাণ "বংশী-বিলাস" নামেই ধৃত হইয়াছে; যথা—

শ্রীরাজবল্লভ কৈলা শ্রীবংশীবিলাস। বংশীর মহিমা যাহে বিস্তার প্রকাশ।

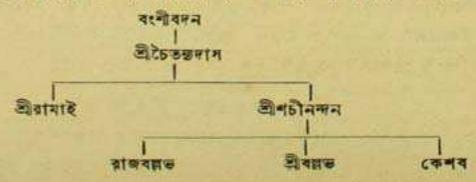
—২য় সং, চতুর্থ উ০, পৃ০ ২৩৫

"মুরলা-বিলাস" অপেকা "বংশী-বিলাস" নামই অধিকতর সম্বত, কেন-না বংশীবদন ঠাকুরের ও তাঁহার অবতারস্বরূপ রামাই ঠাকুরের লীলাকীর্তনই আলোচা গ্রন্থের উদ্দেশ্য। বংশী অপেকা মুরলা নামটি অধিকতর শ্রুতিভখকর বলিয়া বোধ হয় এই পরিবর্তন করা হইয়া থাকিবে। কিন্তু এই পরিবর্তনের ফলে গ্রন্থের নাম দেখিয়া প্রতিপাছা বিষয় ঠিক করা কঠিন হইয়াছে।

মুরারি গুপ্তের কড়চায়, কবিকর্ণপূরের নাটকে ও মহাকাব্যে, ঐতিচতভাল্ডাগবতে, ঐতিচতভ্যমন্তলে বা ঐতিচতভাচরিতায়তে বংশীবদন ঠাকুরের নাম বা প্রসন্ধ একেবারেই নাই। কৃষ্ণদাস কবিরাজ শাখা-বর্ণনাতেও বংশীর নাম করেন নাই। দেবকানন্দন দাসের ও ঘিতীয় রন্দাবনদাসের বৈষ্ণবন্দনাতেও বংশীর নাম উল্লিখিত হয় নাই। "গৌরপদতর্গিণী"তে বংশীর মহিমসূচক যে তিনটি পদ আছে, তাহার মধ্যে তুইটি মুরলা-বিলাস হইতে ও একটি বংশী-শিক্ষা হইতে লওয়া। ইহার ঘারা প্রমাণিত হইতেছে যে বংশীবদন ঐতিচতভার পরিকরগণের মধ্যে বিশেষ প্রাধান্ত লাভ করেন নাই। গৌরগণোদ্দেশদীপিকায় তাহার নাম আছে; যথা—

বংশী কৃষ্ণপ্রিয়া যাসাৎ সা বংশীদাস-ঠাকুরঃ। পৃ° ১৭৯ প্রেমবিলাসে বংশীবদনের সম্বন্ধে মাত্র এই কথা আছে যে শ্রীনিবাস আচার্য্য যথন শ্রীবিষ্ণুপ্রিয়াদেবীকে দর্শন করিতে নবছীপে আসেন, তথন বংশীবদন-সহ তাহার সাক্ষাৎকার হইয়াছিল (চতুর্থ বিলাস, পৃ° ২১)। ভক্তি-রত্তাকরেও অফুরূপ ঘটনা বার্ণত হইয়াছে (চতুর্থ তরক্ত, পৃ° ১২২-১২০)।

মুরলী বিলাসের গ্রন্থকার বংশীবদনের প্রপোত্র ও রামাইয়ের শিশ্ব রাজবল্লভ। গ্রন্থের শেষে সম্পাদক নিম্নলিখিত বংশ তালিকা দিয়াছেন—





#### আর তেরখানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

মুরলী-বিলাসে গ্রন্থকার নিজের কথা বলিতে যাইয়া লিখিয়াছেন যে রামাই যথন বাঘনাপাড়ায় বিগ্রহ-প্রতিষ্ঠা করেন, তথন শচীনন্দন গ্রন্থকারকে লইয়া তথায় গমন করেন। রামাই ছোট ভাই শচীনন্দনকে বলিলেন—

> তব জ্যেষ্ঠ পুত্র মোরে দেহ অকাতরে। সেবা সমর্পণ আমি করিব তাহারে॥ ২০ বি°, পৃ° ৩৯৩

## তারপর একদিন—

প্রভাতে উঠিয়া পিতা আমারে লইয়া।
প্রভুর চরণপল্নে দিলা সমর্পিয়া।
দণ্ডবং কৈলা পিতা তাঁর পদতলে।
দুই ভাইএ কোলাকুলি মহাকুত্হলে।
মোরে প্রভু শিশ্য কৈলা করিয়া করুণা।
সদাচার শিখাইলা করিয়া তাড়না।
সেবা শিখাইলা মোরে হাতে হাতে ধরি।
শাস্তভক্তি শিখাইলা বহু কুপা করি।

প্রভূ-সঙ্গে রহে যেই বৈঞ্চব স্কুজন।
ভিঁহ করিলেন বহু কুপার সেচন।
ভার মুখে যে শুনিমু প্রভুর চরিত।
ভার অল্প মাত্র গ্রন্থে হইল লিখিত। ২০ বি০, পৃ০ ০৯৫

বংশী-শিক্ষার চতুর্থ উল্লাস হইতেও জানা যায় যে রাজ্বলভ শচীনন্দনের পুদ্র (পৃ ২০৫)। অথচ বংশী-শিক্ষার ভূমিকায় মহামহোপাধ্যায় ডাই ভাগবতকুমার শাস্ত্রী রাজবল্লভকে কেন যে শচীনন্দনের পৌদ্র বলিলেন বুঝিলাম না (ভূমিকা পৃ / ; পৃ ৪৪)।

রামাই জাহ্নবীর শিশু, বীরভদ্রের বন্ধু। রামাইএর জাতৃপুত্র ও শিশু রাজবল্লভ যদি কোন গ্রন্থ লেখেন, তবে জাহ্নবী ও বীরভদ্র-সম্পর্কিত ঘটনাসমূহে উহার প্রামাণিকতা "ভক্তিরত্নাকর" অপেকা বেশী হয়।



#### শ্রীতৈভগুচরিতের উপাদান

সেই জন্ম গ্রন্থখানি অকৃত্রিম কি-না তাহা বিশেষ সাবধানতার সহিত পরীক্ষা ক্রিয়া দেখা কর্ত্তব্য।

দশম্লরসে বিপিনবিহারী গোস্বামী লিখিয়াছেন—

পূর্বভক্ত শ্রীরূপ আদি অনুসারে। বংশীলীলায়ত গ্রন্থ হইল প্রচারে॥ তাহার সংক্ষেপ সার মুরলীবিলাস। শ্রীরাঞ্কবল্লভ প্রভু করেন প্রকাশ। পৃ<sup>©</sup> ১০০১

কিন্তু বংশীলালামূতে দেখা যায়:

825

বংশী কৃঞপ্রিয়া যাসীৎ বংশীবদনঠকুরঃ। ইত্যাদি দীপিকাদৌ চ কবিভিগীয়তে পুরা। পু<sup>2</sup> ৭১৪

দীপিকা অর্থে এখানে কবিকর্ণপূরের গৌরগণোদ্দেশদীপিকা। বংশী-বদনের শিক্ষা জগদানন্দ কবিকর্ণপূরের প্রায় সমসাময়িক হইবার কথা। তিনি গ্রন্থ লিখিলে কবিকর্ণপূরের সম্বন্ধে "কবিভিগীয়তে পুরা" লিখিবেন কেন ? যদি মুরলী-বিলাসের পূর্ববর্তী বংশীলীলামূতই প্রক্রিপ্ত হয়, তাহা হইলে মুরলী-বিলাসের অক্তিমতায় সন্দেহ জন্মায়।

আপাতদৃষ্টিতে এই প্রন্থের অরুত্রিমতা-সম্বন্ধে সংশয় করিবার কিছুই নাই। ইহার ভাষা প্রাঞ্জল, হৃদয়প্রাহী ও প্রাচীনপত্নী; গোম্বামিশাস্ত্রের বিরুদ্ধ তবুকথা কিছুই ইহাতে নাই। তারপর প্রন্থকারের বংশের লোক বিনোদবিহারী গোম্বামীর নিকট পুথিখানি পাওয়া গিয়াছে। প্রস্থধানি প্রতিভ্যুচরিতামুতের অমুকরণে লেখা; তাহাতেও সন্দেহের কিছুই নাই; কেন-না চরিতামুত রচিত হইবার পর হইতে প্রত্যেক বৈশ্বব লেখকের উপর উহার প্রভাব পড়িয়াছে। গ্রন্থ-মধ্যে পাণ্ডিত্যের যথেষ্ট পরিত্র পাওয়া যায়। ইহাতে সর্ববস্থেত ১৩০টি প্লোক ধৃত হইয়াছে, কিন্তু চরিতামুতে যেমন প্লোকগুলির সহিত বক্তবা বিষয়ের অচ্ছেছ্য সম্বন্ধ, মুরলী-বিলাসে তাহা নহে, যেন এখানে ক্লোর করিয়া শ্লোক-সংযোজনার জন্মই শ্লোকগুলি উদ্ধৃত হইয়াছে। উক্ত ১৩০টি



শোকের মধ্যে ৬৪টি কৃষণাস কবিরাজ-কর্তৃক পূর্বেই ধৃত হইয়াছে। প্রস্থকার নিজে পদ্ম-পুরাণ ত্রন্ধবৈবর্ত্ত-পুরাণ, ভক্তি-রসামৃত-সিন্ধু, ত্রন্ধা-সংহিতা, গোবিন্দ-লীলামৃত, যামল প্রভৃতি গ্রন্থ পড়িয়া শ্লোক উদ্ধার করিয়াছেন।

প্রস্থের অকুত্রিমতার স্বপক্ষে এতগুলি যুক্তি থাকিলেও নিল্ললিবিত কারণে ইহাকে জাল বই বলিয়া মনে হয়:

বংশীবদন ঠাকুরের বংশোত্তব ডা ভাগবতকুমার শালী মহাশ্রই মুরলা-বিলাসের বিরুক্তে সন্দেহ জাগাইয়া দিয়াছেন। তিনি বংশী-শিকার ভূমিকায় লিখিয়াছেন, 'মুদ্রিত বংশী-শিক্ষা গ্রন্থের অক্যান্য স্থানেও নানারূপ প্রমাদ ও প্রকেপের আশর। হয়। চতুর্ব উল্লাসে মধ্যে মধ্যে মুরলী-বিলাস হইতে প্রায় অবিকল অনেক অংশ উদ্ধৃত হইয়াছে। বিশেষতঃ রামচক্রের জীবনচরিত একরূপ মুরলী-বিলাসের ছাঁচেই ঢালা; এ সকল অংশ মূল পুথিতে ছিল কি-না সন্দেহ হয়। থাকিলেও মুরলী-বিলাস দেখিয়া অনেকাংশ যে পরিবর্ত্তিত হইয়াছে, তাহা বেশ জনয়সম হয়; অবশ্য বংশী-শিক্ষা যখন মুদ্রিত হয় তখন মুরলী-বিলাস মুদ্রিত ও প্রকাশিত হয় নাই বটে; কেন-না বংশী-শিক্ষার প্রকাশ-বর্ষ ৪০৭ চৈতন্তাক এবং মুদ্রিত মুরলী-বিলাসের প্রকাশ-বর্ষ ৪০৯ চৈত্যাব্দ। কিন্তু তাহা হইলেও ঐ সময়ে বংশী-শিক্ষা-সংগ্রাহকের গুরুদেবের গুহে যে মুরলী-বিলাসের প্রাচীন পুথির নকল সংগৃহীত হইয়াছিল তাহা ৺হরেক্ষ দাস বাবাজী মহাশয় নিশ্চয়ই দেখিয়াছিলেন। এই জভাই বংশী-শিক্ষার এই সমস্ত অংশে মুদ্রিত মুরলা-বিলাস অপেকা পূর্বেরাক্ত নকল পুথির পাঠের সহিত যেন অধিক সামঞ্জত দেখা যায়। উদাহরণ-স্বরূপ আবিভাব ও ভিরোভাব-বর্ষের কথা উদ্ধার করা যাইতে পারে।

अम विलाहित ७,८, ৮; २ विलाहित २,८,८,५,२,२३; ८ विलाहित २,०,८,८; ८ विलाहित २; ७ विलाहित २,०,८,८,४,२४; १, ৮ ७ २ विलाहित २ ११८० ८; २० विलाहित ३ ३ १ विलाहित २; ३२ विलाहित २, ८; ३० ७ ३८ विलाहित ३; ३० विलाहित ३ विलाहित ३; ३० विल

#### ত্রীচৈতবাচরিতের উপাদান

400

'মুদ্রিত মুরলা-বিলাসে "চৌদ্দর্শত পঞ্চাঞ্জনে জনম লভিলা। পঞ্চদশ চতুর্বে স্বেচ্ছায় লীলা সংবরিলা" এইটুকু নাই। নকল করা পথিতে আছৈ। তদমুসারেই যেন রচনা একটু পরিবর্ত্তিত করিয়া বংশী-শিক্ষায় ১৪৫৬ শকে জন্ম এবং ১৫০৫ শকে রামের তিরোধান বর্ণিত হইয়াছে। মনে রাধা আবশ্যক কেহ অতীত শকে, কেহ বা বর্তমান শকে বর্ব নির্দেশ করিতেন। যাহা হউক কিন্তু বাঘনাপাড়ার বলরাম মন্দিরের চূড়াতলে কোদিত লিপি হইতে স্পাইত বুঝা যায় রামচন্দ্র ৫৩৮ শকেও জীবিত ছিলেন। এই লিপি বংশীবদনের জীবন চরিতে উদ্ধার করিয়াছি। স্কতরাং বলিতে হয় গ্রন্থকার স্বয়ং মুরলী বিলাস দেখিয়া ভান্ত হইয়াছিলেন, না হয় বংশী-শিক্ষার সংগ্রাহক এই সমস্ত অংশ সংযোজন করিয়াছিলেন। এইরূপে বংশীর তিরোভাবের পূর্বেন পুক্র-বধুর সহিত সংবাদ ও তাঁহাকে আশীবর্বাদ-প্রদানের বিবরণও হয় জম-চৃষ্ট, না হয় প্রক্ষিণ্ড।

'বংশীচবিতে দেখিয়াছি বংশীর পুত্র তগন শিশুমাত্র। প্রকৃত কথা এই, নিজ মুরলী-বিলাসের অনেক অংশ সমগ্র বৈষ্ণব ইতিহাসের বিরুদ্ধ। এমন কি প্রস্তের কোন কোন অংশ পরস্পার অত্যন্ত বিরুদ্ধ। মূল প্রস্থকার রাজবল্লভ গোস্বামীই হউন, আর যিনিই হউন, পরবর্তী কালে ইহাতে অনেক অংশ সংযোজিত হইয়াছে, তাহা নিঃসন্দেহ। বংশী-শিক্ষার প্রস্তুকার বা প্রকাশক অথবা উভয়েই মুরলী-বিলাসের অনুকরণ করিয়াছেন; সেই জন্ম ইতিকৃত-বিষয়ে স্থানে স্বানে বিভ্স্থিত হইয়াছেন; ইহাই আমার ধারণা' (ভূমিকা, পূ ১১, ১/০)।

ডা° ভাগবতকুমার শান্তীর ভূমিকা হইতে স্থদীর্ঘ অংশ উদ্ধার করার কারণ এই যে বৈক্ষব-প্রস্থ-সম্পাদন করিতে যাইয়া এ পর্যস্ত অন্ত কোন সম্পাদক সম্পাদিত গ্রন্থের, পুথির ও তাহা প্রক্রিপ্ত হইবার বিবরণ এমন সাধুতা ও সরলতার সহিত দেন নাই। তাঁহার বর্ণনায় আমরা জানিতে পারিতেছি, কি করিয়া বৈক্ষব পুথি জাল হয়। তাঁহার আর সমস্ত উল্লি মানিয়া লইয়া একটি কথার প্রতিবাদ করা প্রয়োজন মনে করি। তিনি বলেন মুরলী-বিলাসে পরবর্তীকালে অনেক অংশ সংযোজিত ইইয়াছে, আমি দেখাইব যে ইহার সবটাই হালের রচনা।



মুরলী-বিলাসের সবটাই আধুনিক মনে করার কারণ এই যে রাজবল্পতের থারা এই গ্রন্থ লিখিত হ'ইলে বংশীবদনের বংশের ইভিহাস, বিশেষতঃ রামাইয়ের বিবরণ ভাসা-ভাসা রকমে লিখিত হ'ইত না। উদাহরণ দিতেছি—

(क) वः नीत विवाह-अश्वत्क भूतली-विलाभ वरलन-

এক বিপ্র মহাশয় পরম পণ্ডিত। ক্ঞাদান দিব বলি করেন নিশ্চিত॥ পৃ<sup>০</sup>৪৪

রাজবল্পত কি নিজের প্রপিতামহীর কোন থবর রাখিতেন না ? সেকালে প্রপিতামহীর বা তাঁহার পিতার নাম ত আদ্ধাদি করার জন্ম প্রত্যেক হিন্দুর ভেলেকে মুখস্থ করিতে হইত।

- (খ) রামাই গ্রন্থকারের গুরুদেব। তাঁহার জীবনীর প্রধান প্রধান ঘটনা-সম্বন্ধে ভুল সংবাদ মুরলী-বিলাসে থাকা উচিত নয়। অথচ ইহাতে আছে যে রামাই জাহ্রবার সঙ্গে বৃন্দাবন যাইয়া "একক্রমে পঞ্চ বর্ষ তথায় রহিলা" (পৃত্ত ১৮)। তারপরই বাঘনাপাড়ায় আসিয়া মন্দির-স্থাপন করিলেন। বাঘনাপাড়ার মন্দির যে ১৬১৬ খুন্টান্দে স্থানিত হয় তাহার প্রেমাণ মন্দিরের উপরে ক্ষোদিত লিপি। তাহা হইলে রামাই ১৬১০ হইতে ১৬১৫ খুন্টান্দে বৃন্দাবনে ছিলেন। মুরলী বিলাসে আছে যে রামাই জাহ্রবাসহ বৃন্দাবনে যাইয়া ছয় গোস্বামার প্রত্যেকের সহিত্য দেখা-সাক্ষাৎ করিয়াছিলেন। সনাতন ও রূপ যে ১৬১০ খুন্টান্দ পর্যন্ত জীবিত ছিলেন এ কথা কোথাও পাওয়া যায় না এবং অসম্ভব। তাহারা উভয়েই শ্রীচৈতন্য অপেক্ষা বয়সে বড় ছিলেন; স্কুতরাং ১৬১০ খুন্টান্দে তাহাদের বর্ষস্ ১২৫ বৎসরের অনেক বেশী হয়। মুরলী-বিলাসের বর্ণনায় দেখা যায় জাহ্নবার সঙ্গে ছয় গোস্বামী বনে-বনে ভ্রমণ করিতেছেন।
- (গ) মুরলা-বিলাস বলিতেছেন যে রামাই নীলাচলে যাইয়া দেখিলেন যে গদাধর পণ্ডিত, রায় রামানন্দ ও সার্বভৌম ভট্টাচার্য্য জ্ঞাবিত আছেন এবং—

িয় আৰু ত্ৰিষয় ছাড়িয়া ভাবে চৈতন্ত-মূরতি॥ পৃত্যদ্ধ



#### ঐতিতভাচরিতের উপাদান

402

লেখক পূর্বের বলিয়াছেন যে-

চৈত্র গোসাঞি যবে অপ্রকট হৈলা। শুনি মাত্র বংশীদাস লীলা-সম্বরিলা॥ পৃ<sup>্</sup>৪৭

বংশীদাস লীলা সম্বরণের পূর্বের পুত্রবধূকে বলিলেন যে তিনি তাঁহার গর্ভে জ্বিমিবেন। তাহা হইলে দেখা যাইতেছে যে রামাই ১৫০০ গুটাব্দের পরে জ্বায়াছিলেন। তিনি যোল বংসর বয়সের পূর্বের নীলাচলে যান নাই। ৬৪৯ গুটাব্দে প্রতাপ রুদ্র জ্বাবিত ছিলেন না। ইতিহাস হইতে জ্বানা যায় যে তিনি ১৯৪০-৪১ গৃটাব্দের মধ্যে পরলোক-গমন করেন। রামাইয়ের নীলাচল-ভ্রমণকালে প্রতাপ রুদ্রের জ্বাবিত থাকা অসম্ভব।

্ষা মুরলী-বিলাসে রামাইয়ের তীর্থভ্রমণ চরিতামূতের ভাবে ও ভাষায় বিভিন্ন ব্যক্তির সহিত কথোপকথন ও বাঘনা নাড়ায় ম কর-স্থাপন ছাড়া রামাই সম্বন্ধে আর কোন সংবাদ নাই। অন্ততঃ রামাইয়ের তিরোধানের বিবরণ, যাহ। রাজবল্লভ নিজের চোথে দেখিয়াছিলেন, ভাহা অন্তরম্প পরিচয়ের সাক্ষ্যে পরিপূর্ণ থাকা উচিত ছিল। কিন্তু মুরলী-বিলাসে আছে যে রামাই ঠাকুর তিরোধানের পূর্বের শিক্ষান্টকের, কর্ণামূতের ও গোবিন্দলীলামূতের শ্লোক পড়িতেন। একদিন—

> এই শ্লোক পড়ি প্রভু পড়িলা ভূমিতে। অর্দ্ধবাহু দশায় লাগিলা প্রলাশিতে॥

রাধাকৃষ্ণ রাধাকৃষ্ণ কহিতে কহিতে। সিন্ধিপ্রাপ্ত হৈল এই নামের সহিতে॥

—২১ বি°, পৃ° ৪৩৫-৬

এরপ বর্ণনা যে কোন ব্যক্তি যে কোন ভক্ত-সম্বন্ধে লিখিতে পারে। শিষ্য ও ভাতৃস্পুত্রের বর্ণনা এরপ হয় না।

"মুরলী-বিলাস" জাল বলিবার আরও কারণ এই যে ইহাতে প্রেমবিলাসে ও ভক্তিরত্বাকরে প্রদক্ত সমস্ত বিবরণের বিরুদ্ধ কথা বলা



ইইয়াছে। ঐ তুই প্রস্তের মতে শ্রীনিবাস যখন বৃদ্দাবনে যায়েন তথন রূপ ও সনাতন তিরোধান করিয়াছেন। তিনি দেশে ফিরিয়া আসিয়া খেতুরীর মহোৎসবে যোগ দেন। তারপর জাহ্নবাদেবা বৃদ্দাবনে যায়েন। মুরলী-বিলাস বলেন জাহ্নবাদেবা বৃদ্দাবন যাইয়া রূপসনাতনের সহিত আলাপ-আলোচনা করিয়াছিলেন ও কামাবনে গোপীনাথের মন্দিরে তিনি অন্তর্জান হয়েন। প্রেমবিলাস ও ভক্তিরত্বাকরের বিবরণ সম্পূর্ণ ঐতিহাসিক না হইলেও ঐ তুই প্রস্তে বৃদ্দাবনের ও গৌড়ের বৈক্তব নেতাদের সম্বন্ধে অনেক কিংবদন্তী আছে এবং বৈক্তব সমান্ধ তাহা আদরের সহিত গাঁড়্যা আসিতেছেন। এরূপ প্রস্তুব্যের বর্ণনার বিক্তন্ধতা যখন কোন অজ্ঞাত-কুলশীল প্রস্তুকার করেন, তথন সভাবতঃই সেই প্রস্তুর প্রতি সন্দিশ্ধ হইতে হয়।

মুরলী-বিলাসে ঐতিতভা-সম্বন্ধে নৃতন তথ্য কিরূপভাবে প্রকাশিত হইয়াছে তাহার নমুনা দিতেছি—

বংশী জন্মিবামাত্র—

শচী-কুমার দেখি স্কুমার বালক লইয়া কোলে। পুলকিত অঞ্চ অধীর ত্রিভঙ্গ আমার মুরলী বলে॥ পু<sup>9</sup> ৪

মেদিনাপুর জেলার বিশ্বস্তর দাসের 'বংশীবিলাস" নামক গ্রন্থ হইতে জানা যায় যে বংশী প্রীচৈততা অপেকা নয় বংসরের ছোট। নয় বংসরের ছেলে আতুড় ঘরে প্রবেশ করিয়া নবজাত শিশুকে কোলে তুলিয়া বংশী বলিয়া সম্বোধন করিয়াছিলেন এ কথা কাব্য-হিসাবে উত্তম, কিন্তু ইহার কোন ঐতিহাসিক মূল্য নাই। বংশী বিশ্বস্তরের সন্ধার্তনদলের মধ্যে ছিলেন; যথা—

কৈশোর বয়সে আরম্ভিলা সংকার্তন। গৌরাঙ্গের সঙ্গে নাচে ভুবনযোহন। পৃ° ৪৩

## শ্রীচৈতত্মচরিতের উপাদান

408

এই সংবাদ সত্য হওয়ার সপ্তাবনা। বংশীর বিবাহ সময়ে বিশ্বস্তর বংশীকে বলিতেছেন—

> গদাধরদাস সঙ্গে থাকিবে সদাই। জগলাথ রহিব দেখিবে সবে যাই॥ পৃ<sup>2</sup> ৪৬

সন্নাস-গ্রহণের পূর্নের বিশ্বস্তর কোথায় যাইয়া থাকিবেন তাহা স্থির করেন নাই; কেন-না সন্নাসের পর তিনি বৃদ্দাবন-অভিমুখে যাত্রা করিয়াছিলেন।

"বংশী-শিক্ষা"র একথানি মাত্র ছেঁড়া ও কাটদইট পুথি পাওয়া গিয়াছিল; তাহাও হারাইয়া গিয়াছে। ঐতিচতভাচক্রোদয় নাটকের অনুবাদক প্রেমদাস ইহার লেখক।

> শকাদিত্য যোল শত চৌত্রিশ শকেতে। শ্রীটৈতত্মচন্দ্রোদয় নাটক স্থথেতে॥ লৌকিক ভাষাতে মুঞি করিমু লিখন। যোল শত অফত্রিংশ শকের গণন। শ্রীশ্রীবংশীশিক্ষা গ্রন্থ করিমু বর্ণন। বংশী শিক্ষা, পৃ<sup>©</sup> ২৪১

১৬:৮ শক, ১৭১৬ গুটান্দে এই গ্রন্থ লিখিত হয়। শ্রীচৈতক্সের তিরোভাবের ১৮০ বংসর পরে লিখিত গ্রন্থে শ্রীচৈতক্সের জীবনী- ও উপদেশ-সম্বন্ধে নৃতন ঐতিহাসিক তথ্য পাইবার সম্ভবনা কম।

বংশী-শিক্ষার মূল বর্ণনার বিষয় হইতেছে সন্ন্যাসের পূর্বের বংশীর প্রতি
শ্রীচৈতত্যের উপদেশ। ঐ উপদেশে রসরাজ উপাসনা শিক্ষা দেওয়া
হইয়াছে। ঐরূপ উপাসনার মাধুর্যা ও চমৎকারিত্ব কতদূর তাহার বিচার
আমার গ্রন্থের প্রতিপাল বিষয়ের বহিভ্ত। তবে শেমদাসের বর্ণনায়
কালানোচিতা (anachronism) দোষের ভূরি ভূরি দৃষ্টান্ত পাওয়া যায়।
বিশ্বস্তর বংশীকে "কচিত্বপুরাণের" নিম্নলিখিত শ্লোক শুনাইলেন—

কৃষ্ণকরে স্থিত। যা সা দূতিকাবংশিকা তথা। শ্রীবংশীবদনো নাম ভবিশ্বতি কলো যুগে॥



আর কয়েকখানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ প্রভূবাক্য শুনি বংশী শ্রীকৃষ্ণ শ্বরিয়া। কানে হাত দিয়া কন বিনয় করিয়া ওহে প্রভূ বাউলামী করিয়া বর্জন। শুনাও প্রকাশ তথ্য করি কূপেক্ষণ। পৃত ৪২-৪৪

গুরুত্ব-সম্বদ্ধে শ্রীচৈত্তা বংশীকে বলিতেছেন—

রসরাজ কৃষ্ণ লাগি বিপ্র-পত্নাগণ।
আপন আপন স্বামী করেন বর্জন॥
সংসার মোচন আর সন্তাপ হরণ।
করিতে ক্ষমতা যাঁর নাহিক কথন।
তিহিত গুরুর যোগ্য নহে কদাচন।
তাঁরে ত্যাগ করি কর সদ্গুরু গ্রহণ॥

সদ্গুরুর প্রতি কিরূপ বাবহার করিতে হইবে—

সেইকালে কৃষ্ণরূপী সদ্গুরু-চরণে। সর্বাস্থ অর্থণ করি লাইবে শরণে। সর্বাস্থ অর্থণ অর্থে শুদ্ধ অর্থ নয়। প্রাণমন আদি এই বেদাগমে কয়। পৃত ৫৩

প্রেমদাস "বংশীশিকায়" এমন অনেক কথা লিখিয়াছেন যাহা পড়িয়া মনে কোন সন্দেহ থাকে না যে বইখানিতে সহজিয়াদের মত প্রচার করা হইয়াছে। বিপিনবিহারী গোস্বামী মহাশয়ও "দশমূলরস গ্রন্থে" লিখিয়াছেন—

বংশীলানায়ত অনুসারে প্রেমদাস।
সেই সব নিজ গ্রন্থে করিলা প্রকাশ॥
তন্মধ্যে বিরুদ্ধ যাহা হয় দরশন।
সহজ-বাদীর তাহা প্রক্রিপ্ত বর্ণন॥

"বংশীশিক্ষায়" শ্রীমন্মহাপ্রভুর মুখ দিয়া যে সকল সহজিয়া উপদেশ বলান হইয়াছে, সেগুলি নিভান্তই লেখকের স্বক্পোলক ল্লভ। শ্রীচৈতগ্য-



## ৫০৬ খ্রীতৈভয়চরিতের উপাদান

দেব যদি ঐ ধরণের কোন কথা সতাই বলিতেন, তাহা হইলে তাঁহার সমসাময়িক লেখকেরা তাহার ইন্সিত করিতেন। আর শ্রীচৈতন্তের চরিত্রের যে চিত্র আমরা সমসাময়িক লেখকদের বর্ণনা হইতে পাই ভাহার সহিত্ত প্রেমদাসের কথিত উপদেশের কোনরূপ সঙ্গতি থাকিতে পারে না।

## "প্রেমবিলাস"

শ্রীথণ্ডের নিত্যানন্দদাস (বৈছ) প্রেমবিলাস নামক একথানি প্রস্থে শ্রীনিবাস, নরোত্তম ও শ্রামানন্দের চরিত-কথা লিখিয়াছেন। গ্রন্থকার বারংবার বলিয়াছেন—

জয় জয় শ্রীজ্ঞাকনা বীরচন্দ্র জয়।
সেই পাদপদ্ম হয় আমার আশ্রয় ॥
জয় শ্রোতাগণ শুন হৈয়া একমন।
অতি অন্তুত কথা করহ শ্রবণ ॥
যে কিছু লিখিল ইহা সব সতা হয়।
প্রভুর আজ্ঞাতে লিখি আমার আশ্রয় ॥
শ্রীজ্ঞাকনা বীরচন্দ্র আজ্ঞায় লিখি কথা।
শ্রনিয়া এসব কথা না পাইনা ন্যথা॥
শ্রীমতী ঠাকুরাণী যবে পেলা বৃন্দাবন ।
মুক্তি পামর সঙ্গে রহি করিয়াছোঁ দর্শন। পৃত ৪৮

এবে লিখি খণ্ডতে গমন যেন রীতে। দেখিয়াছি আমি যার সেই হইল গ্রীতে॥ পু<sup>০</sup> ১৩

এই ঠাকুরাণী পদ করিয়া আশ্রয়। সেই আজায় লিখি আমি হইয়া নির্ভয়॥



# আর কয়েকথানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ আজাবলে লিখি মোর নাহি অনুভব। পুনঃ পুনঃ কহিলেন লিখিতে এ সব। পৃ° ১১৯

এই সব উক্তি পড়িয়া মনে হয় গ্রন্থানি থুব প্রামাণ্য। কিন্তু যেমন নন্দের আলয়ে কৃষ্ণ দিন দিন বাড়েলে, তেমনি বৈষ্ণবদের আলয়ে "প্রেমবিলাস" দিন দিন বাড়িলেন। কান্দার কিশোরীমোহন সিংহের নিকট যে প্রেমবিলাসের পুথি আছে তাহাতে ইতি "চান্দ রায় নিস্তার নামক ষোড়শ বিলাস" পর্যন্ত বর্ণনা করিয়া গ্রন্থ শেষ করা হইয়াছে (সাহিত্য-পরিষৎ-পত্রিকা, ১০০৮, পু ৫২)। বিষ্ণুপুরের রাণী ধ্বজমণি পট্টমহাদেবী স্বহস্তে যে প্রেমবিলাসের পুথি লিখিয়াছিলেন তাহা সাহিত্য-পরিষদে রক্ষিত আছে। উহাতেও যোল বিলাস পর্যান্ত বর্ণিত ইইয়াছে (বাংলা প্রাচীন পুঁথির বিবরণ, ৩০, পু ৫৯, ৬১)। রামনারায়ণ বিভারত্ব মহাশয় প্রথম বারে এই গ্রন্থ-প্রকাশের সময় অন্টাদশ বিলাস পর্যন্ত করেন। ন্বিতীয় সংক্ষরণে তিনি উনবিংশ ও বিংশ বিলাস যোগ করিয়া দেন। তৎপরে যশোদানন্দন তালুকদার সাড়ে চবিশশ বিলাসযুক্ত এক সংক্ষরণ প্রকাশ করেন। আমি এই সংক্ষরণের পৃষ্ঠাদি উল্লেখ করিয়া প্রমাণাদি বিচার করিব।

"প্রেমবিলাসের" এক পুথির বিলাস- বা পরিচ্ছেদ-বিভাগের সহিত অন্য পৃথিব বিভাগ একরূপ নহে; যথা—ভালুকদারের সংস্করণের যেখানে অফানশ বিলাস সম্পূর্ণ (পৃ° ১৬৮), বিষ্ণপুরের রাণীর লেখা পুথিতে সেই স্থানে যোড়শবিলাস এবং গ্রন্থ সম্পূর্ণ। ভালুকদারের সংস্করণের বিংশ বিলাসে শ্রীনিবাস ও নরোত্তমের শাখা-বর্ণনা ও গ্রন্থকারের নিম্নলিখিত পরিচয় আছে:

> মোর দীক্ষাগুরু হয় জাহ্নবা ঈশ্বরী। যে কুপা করিলা মোরে কহিতে না পারি॥ বীরচন্দ্র প্রভূ মোর শিক্ষাগুরু হয়। আমারে করুণা তিহো কৈলা অভিশয়॥



000

## শ্রীতৈভভাচরিতের উপাদান

মাতা সৌলামিনী পিতা আত্মারাম দাস।
অত্মন্ত কুলেতে জন্ম শ্রীখণ্ডেতে বাস।
আমি এক পুত্র মোরে রাখিয়া বালক।
মাতা পিতা দোঁহে চলি গেলা পরলোক।
অনাধ হইয়া আমি ভাবি অনিবার।
রাত্রিতে স্বপন এক দেখি চমংকার।

বলরামদাস নাম পূর্বের মোর ছিলা।
এবে নিত্যানন্দদাস শ্রীমুখে রাখিলা।
নিজ পরিচয় আমি করিমু প্রচার।
গুরু কৃষ্ণ বৈষ্ণব পদে কোটা নমস্কার॥
শ্রীজাহ্নবা বীরচন্দ্র পদে যার আশ।
প্রেমবিলাস করে নিত্যানন্দ দাস। পৃত ২১০

সাধারণতঃ দেখা যায় আত্মপরিচয় দিয়াই প্রাচীন বৈষ্ণব গ্রন্থ শেষ হয়। ইহার পরও সাড়ে চারি বিলাস কি করিয়া লেখা হইল বুঝা কঠিন। নিত্যানন্দদাস শ্রীনিবাস, নরোত্তম ও শ্রামানন্দের চরিতকথা লিখিবার উদ্দেশ্যে গুরু জাহুবা দেবার আদেশে প্রেমবিলাস লেখেন বলিয়া প্রকাশ। তাহাতে অবৈত, নিতানন্দ, গদাধর প্রভৃতি শ্রীচৈতক্যের সমসাময়িক ভক্তগণের জীবনী ও বংশ-পরিচয় লেখার কোন সম্পত্ত কারণ থাকিতে পারে না। বিশেষতঃ দেখা যায় যে তালুকদারের সংস্করণের শেষ সাড়ে চারি বিলাস কুলজাশান্তে পূর্ণ। বৈষ্ণবগণ কুলজীর প্রতি বিশেষ আকৃষ্ট ছিলেন না। এই সব কারণে "প্রেমবিলাসের" শেষ সাড়ে চারি বিলাস নিত্যানন্দদাসের রচনা বলিয়া স্বীকার করা যায় না।

বিভারত্ব মহাশয়ের বিতীয় সংসরণ প্রকাশিত হইবার অল্ল দিন পরে, ১০০৯ সালের ভাদ্র মাসে, নববীপ, শান্তিপুর, রুন্দাবন, থড়দহ, জীরাট, কলিকাতা প্রভৃতির বৈষ্ণব পণ্ডিতগণ ঐ পুস্তকের শেষ দুই বিলাস জাল প্রমাণ করিয়া একখানি পুস্তিকা প্রকাশ করেন। ঐ পুস্তিকার নাম "জাল



#### আর কয়েকথানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্ত

প্রেমবিলাস।" উহার ভূমিকায় লিখিত হইয়াছে। "মূল গ্রন্থ চবিবশ বিলাসে বিভক্ত ছিল, তাহাকেই সুশুখল করিয়া অফ্টাদশ বিলাসে পরিণত করা হয়।"

মূল গ্রন্থ হয়ত সতাই চবিবশ বিলাসে বিভক্ত ছিল; কেন-না রাসবিহারী সাখ্যতীর্থ মহাশয় "বৈঞ্বসাহিতা," নামক প্রবন্ধে লিখিয়াছেন যে বাঁকুড়া জেলার ইন্দসে নিবাসী মণীন্দ্রনাথ বিভারত্বের গৃহে ১৫৭৯ শক, ১৬৫৭ খুফীবেদর হস্ত-লিখিত সার্দ্ধ চতুর্বিবংশতি বিলাস গ্রন্থ তিনি দেখিয়াছিলেন (কাশিমবাজার সাহিত্য-সন্মিলনের বিবরণ, পূ° ১২)।

আমি তালুকদারের সংস্করণের সহিত বিষ্ণুপুরের রাণীর হাতে লেখা পুথি মিলাইয়াছি। তাহাতে বহু স্থানে মুদ্রিত প্রন্থের সহিত পুথির ওরতর প্রভেদ দেখিতে পাইয়াছি। রামনারায়ণ বিভারত্বের সংস্করণের সহিত অ্যান্য পুথির পার্থক্য কেহ কেহ লক্ষ্য করিয়াছেন। ১৩০৬ সালের "সাহিত্য" পত্রিকায় ঠাকুরদাস দাস মহাশয় লিখিয়াছিলেন, "আমাদের সংগৃহীত প্রেমবিলাসগুলির মধ্যে পরস্পর মিল আছে, কিন্তু (বহরমপুরে) মুদ্রিত গ্রপ্থের সহিত তাহাদের আদে মিল নাই" (পৃত ৬৬৯)। তুপ্রসিদ্ধ বৈষ্ণব সাহিত্যিক হারাধন দত্ত মহাশয় (৪০৮ চৈত্যান্দে, ১৮৯৩ খৃন্টান্দে, ১৬ আশ্বিন তারিখের বিষ্ণুপ্রিয়া পত্রিকায়) লিখিয়াছেন, "আমার বাড়াতে ছইশত বংসরের অধিককালের হস্তলিপি যে একখানি প্রেমবিলাস গ্রন্থ আছে, তাহার সহিত মুদ্রিত পুস্তকের অনেক স্থলে প্রসঙ্গের মিল নাই………। কেবল বর্তুমান কাল বলিয়া নহে, প্রাচীনকাল হইতেই এই প্রেমবিলাসের নানা স্থানে নানা জনের কারিগিরি আছে। অতএব এই গ্রন্থ বিশেষ তলাইয়া পাঠ করা উচিত" (৩৮৯ পৃত)। দত্ত মহাশয়ের এই সতর্ক বাণী বিফল হইয়াছে।

শ্রীনিবাস আচার্য্যের বিতীয় পক্ষের স্ত্রী গৌরপ্রিয়া ঠাকুরাণীর শিশ্ব গুরুচরণ দাস 'প্রেমায়ত'' নামে শ্রীনিবাস আচার্য্যের একথানি জীবনী লেখেন। সেই গ্রাম্বে তিনি লিখিয়াছেন—

> নিত্যানন্দদাসের পদধ্লি শিরে নিল। তার গ্রন্থমতে লালার অনুসার পাইল॥

#### প্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

অহাত্র-

200

জাহ্নবার আজ্ঞাবলে নিত্যানন্দদাস কৈলে
শেষ লীলার বিস্তার বর্ণন।
তার সূত্র মত লয়ে গুরুপদ স্পর্শ পাঞা
গায় কিছু এ গুরুচরণ॥

(সাহিতা-পরিষৎ-পত্রিকা, ১৩০৬, তৃতীয় সংখ্যা, পৃ<sup>০</sup> ২৬০, গ্রন্থের অধিকারী শশিভ্যণ ঠাকুর, দক্ষিণখণ্ড, পো<sup>০</sup> বনোয়ারীআবাদ, মুর্শিদাবাদ )

এই সব বিবরণ পাঠ করিয়া বুঝা যায় যে "প্রেমবিলাস" নামে একথানি প্রাচীন গ্রন্থ ছিল। কিন্তু উহাতে বিস্তর প্রক্রিপ্ত অংশ স্থান পাইয়াছে। গ্রন্থখানি স্বথ্ন বুড়ান্ত ও দৈববাণীতে পরিপূর্ণ। যিনি যথন যাহা স্বপ্রে দেখিয়াছিলেন তাহা কি কড়চা করিয়া লিখিয়া রাখিয়াছিলেন ও নিত্যানন্দদাণ সেই সমস্ত কড়চা সংগ্রহ করিয়া বই লিখিয়াছেন ? যদি এরূপও হইয়া থাকে তাহা হইলেও স্থা-বৃত্তান্ত হইতে ইতিহাসের উপাদান সংগ্রহ করা চলে না। প্রেমবিলাসের প্রথম বিলাসে ৫টি, তৃতীয়ে ২টি, চতুর্থে ৫টি স্বথ্ন ও শ্রীনিবাসের সহিত নিত্যধামগত অধৈতের সাক্ষাৎকার, পঞ্চমে ১টি, যঠে ওটি, নবমে ২টি স্বথ্ন ও দৈববাণী, দশমে ২টি স্বথ্ন, একাদশে ১টি, গ্রেয়াদশে :টি ও চতুর্দ্ধশে ১টি স্বথ্ন-বৃত্তান্ত সবিস্তারে বর্ণিত হইয়াছে।

গ্রন্থথানি পরস্পর বিরোধী বাক্যে পরিপূর্ণ; যথা—প্রথম পৃষ্ঠাতেই:

নিত্যানন্দ প্রভুকে গৌড়ে দিলা পাঠাইয়া।
তেঁহো গৌড় ভাসাইলা প্রেমভক্তি দিয়া॥
গৌড়দেশ হইতে যে যে বৈষ্ণব আইসে।
ক্রিজ্ঞাসিলা মহাপ্রভু অশেষ বিশেষে॥
কেহ কহে গৌড়দেশে নাহি হরিনাম।
(সঙ্গন তুর্জন লোকের নাহি পরিত্রাণ)। (হাপা পুথির পাঠ)
(কেহ কহে গৌর নাহি সঙ্কীর্তন)। (বিষ্ণুপুরের পৃথির পাঠ)



#### আর কয়েকথানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

কেহো কহে ভক্তি ছাড়ি আচাৰ্য্য গোসাঞি।
মূলিকে প্ৰধান করি লওয়াইলা ঠাঞি ঠাঞি॥
কেহো কহে মূক্তি বিনা বাক্য নাহি আর।
মুক্তি কহি কহি গোসাঞি ভাসাইল সংসার॥

যদি নিতানিক গৌড়দেশকে প্রেমে ভাসাইয়া থাকেন, তাহা হইলে আবার অধৈত মুক্তি কহিয়া সংসার ভাসান কিরুপে ?

প্রেমবিলাসের বর্ণনার উপর নির্ভর করিয়া কোন প্রকার কাল নির্দেশ কুরা নিরাপদ নহে। কয়েকটি দৃষ্টান্ত দিতেছি।

(১) প্রেমবিলাসের ছাপা বই ও বিষ্ণুপুরের রাণীর হাতে লেখা পুথিতে আছে যে ক্ষণাস কবিরাজ চরিতামত চুরি গিয়াছে শুনিয়া রাধাকুণ্ডে নাঁপ দিয়া আত্মহতাা করেন। এই বিবরণ যে সতা হইতে পারে না, তাহা চরিতামতের বিচার অধ্যায়ে দেখাইয়াছি। এই স্থানে "প্রেমবিলাসের" বর্ণনায় কালানোচিতা দোষ দেখাইব। চরিতামতে যখন "গোপালচম্পু"র উল্লেখ আছে, তখন ইহা ১৫৯২ গুন্টাব্দের পূর্বের কিছুতেই লেখা হইতে পারে না। ১৫৯২ গুন্টাব্দের পরে লেখা বই সঙ্গে করিয়া শ্রীনিবাস আচার্য্য যদি বছদেশে ফিরিয়া আসেন ও তারপর বিবাহাদি করেন তাহা হইলে ১৬০১ গুন্টাব্দের মধ্যে তাহার তিন পুত্র ও তিন কন্যার কি দাক্ষা মন্ত্র গ্রহণ করার বয়স্ হইতে পারে ও প্রেমবিলাসের চতুর্বিবংশ বিলাসে (৩০১ পুত) লিখিত আছে যে এই গ্রন্থ ১৫২২ শক কান্ত্রন মাসে অর্থাৎ ১৬০১ গুন্টাব্দে সমাপ্ত হয়; আর উহার বিংশ বিলাসে (২৬৪ পৃত) আছে যে—

# আচার্য্যের তিন পুত্রে তিনজনে। মন্ত্র প্রদান করিলেন আনন্দিত মনে।

(২) "প্রেমবিলাস", "অনুরাগবল্লী" ও "ভক্তিরতাকরে" শ্রীনিবাস আচার্য্যের জীবনচরিত লিখিত হইলেও তাঁহার জীবনের প্রধান প্রধান ঘটনার কাল-নির্ণয় করা বড়ই কঠিন। "প্রেমবিলাসের" প্রথম বিলাসে



#### শ্রীচৈতন্যচরিতের উপাদান

625

দেখা যায় যে জ্রীচৈততা পৃথিবীকে চৈততাদাসের গোঁজ জিজাসা করিতেছেন। পৃথিবী তিন দিন পরে অাসিয়া চৈততাকে বলিতেছেন—

> চাকন্দিতে বাস তাঁর অতি শুদ্ধাচার। তাঁর দেহে নাহি কিছু পাপের সকার। পুত্র নিমিতে পুরশ্চরণ আরম্ভিলা। জগন্নাথে রাখি তিহো অল্লকালে গেলা।

এথায় চৈতত্যদাস বিপ্র পুরশ্চরণ করে।
শত পুরশ্চরণ কৈল গঙ্গার সমীপে।
স্বপ্রচ্ছলে আজা হৈল গৌর বর্ণরূপে।

স্বপ্ন-দর্শনের পর চৈততাদাসের পত্নী লক্ষ্মীপ্রিয়া বলিতেছেন — আমার শরীরে দেখ মহাপুরুষ অধিষ্ঠান।

নানারূপ মঞ্চলের সূচনা দেখা গেল। তাহাতে কবি বলিতেছেন "গর্ভেতে প্রবেশ মাত্র এত ফল হৈল।" ইহা পড়িয়া মনে হয় যে শ্রীচৈতত্তের প্রকটকালেই শ্রীনিবাসের জন্ম হয়।

অনুরাগবল্লীর মতে জীনিবাস নীলাচল যাইবার সময়—
পথে যাইতে শুনি মহাপ্রভুর অন্তর্জান।

মুর্চিছতে পড়িয়া ভূমে গড়া গড়ি যান॥ পুত ১৮

ভক্তিরত্বাকরেও অনুরূপ উক্তি পাওয়া যায়—
মনের আনন্দে শ্রীনিবাসের গমন।
কতদুরে শুনিল চৈতত্ত সংগোপন॥ পৃ° ১০০

১৫০০ থুফাব্দে এটিতত্তের তিরোধান; এনিবাসের জন্ম ১৫১৮ খুফাব্দের কাছাকাছি না হইলে তিনি এটিচতত্তের তিরোধানের অব্যবহিত পূর্বের পুরীর পথে একা চলিতে পারেন না। এইকু পুলিনবিহারী দাস



#### আর কয়েকখানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

"বৃন্দাবন কথায়" লিখিয়াছেন যে তিনি শ্রীনিবাস আচার্যাের বংশধরদের গৃহে রক্ষিত পুথি হইতে জানিয়াছেন যে শ্রীনিবাস ১৫১৯ খুফান্দে জন্মগ্রহণ করেন ও ১৬০০ খুফান্দে তিরােহিত হয়েন। জগদ্ধ ভদ্র মহাশয় "গৌরপদ-তর্দ্ধিণীর" ভূমিকায় (পৃত ৪৫) ১৪২৮ শকের, ১৫১৬ খুফান্দে তাঁহার জন্মকাল ধরিয়াছেন।

যদি ১৫১ বা ১৫১৯ খৃটাব্দে শ্রীনিবাস জন্মগ্রহণ করিয়া থাকেন, তাহা হইলে তিনি তরুণ ব্যসে বৃন্দাবনে যাইলে সনাতন, রগুনাথ ভট্ট ও শ্রীরূপের দর্শন পাইলেন না কেন ? শ্রীনিবাস বৃন্দাবনে যাইতেই শুনিলেন—

প্রথমেই সনাতনের হৈল অপ্রকট। তাহা বহি কতকদিন রঘুনাথ ভট্ট॥ শ্রীরূপ গোসাঞি তবে হইলা অপ্রকট। শরীরে না রহে প্রাণ করে ছটফট॥ পঞ্চম বিলাস, পৃত ৩১

অমুরাগবল্লীতে (পৃ॰ ৪৯) ও ভক্তিরত্নাকরে (পৃ॰ ১৩০) অমুরূপ উক্তি
আছে। সনাতন গোস্বামী অন্ততঃ ১৫৫৪ থুফীব্দ পর্যান্ত জীবিত ছিলেন;
কেন-না শ্রীক্ষাব লঘুতোষণীতে বলিয়াছেন যে ১৫৫৪ থুফীব্দে সনাতন
বৃহৎ-বৈশ্ববতোষণী ও ১৫৭৮ খুফীব্দে শ্রীক্ষাব লঘুতোষণী সমাপ্ত
করেন। শ্রীনিবাস তাহা হইলে ১৫৫৪ খুফীব্দের পরে বৃন্দাবনে
গিয়াছিলেন। সেই সময়ে তাহার বয়স্ ৩৬ বৎসরের বেশী হয়। কিন্ত
বৃন্দাবনে যাওয়ার অবাবহিত পূর্বের শ্রীনিবাসকে "বালক" বলিয়া বর্ণনা
করা হইয়াছে (পঞ্চম বিলাস, পৃ৽ ২৭)।

শীনিবাস কতদিন বুন্দাবনে বাস করিয়াছিলেন তাহা জানা যায়
না। তবে তিনি যথন পাঠ সমাপ্ত করিয়া বুন্দাবন হইতে গোস্বামিশাস্ত্র লইয়া বিষ্ণুপুরে আসিতেছিলেন তথন বার হান্বির বিষ্ণুপুরের
রাজা। নিথিলনাথ রায় মহাশয়ের মতে বার হান্বির ১৫৮৭ খুন্টাব্দে
সিংহাসনে অধিরোহণ করেন (বল্পবাণী, ১৩২৯ অগ্রহায়ণ)। হান্টারের

মতে ১৫৭৬ খুদ্টাব্দে বার হান্বিরের রাজ্যাধিরোহণ। কিন্তু এই মত আধুনিক গবেষকেরা গ্রহণ করেন নাই। (রাধাগোবিন্দ নাথ —চরিতামৃত পরিশিক্টে ৪। ত পু , ডা নলিনাকান্ত ভটুশালার মত )। এীনিবাস ১৫১৬ বা ১৫১৯ খুন্টাব্দে জন্মগ্রহণ করিলে বিষ্ণুপুরে গ্রন্থ-চুরির সময় তাঁহার বয়স্ সত্তর বৎসরের উপর হয়। গ্রন্থ-চুরির কয়েক বৎসর পরে শ্রীনিবাসের প্রথম বার বিবাহ হয়, তংপরে দ্বিতীয় বার বিবাহ হয়। সপ্তদশ বিলাস, পৃ ১:৭-১৮)। এত বৃদ্ধ বয়সে জীনিবাস বিবাহ করি।ছিলেন ও তাঁহার ছয়টি পুত্র-কতা হইয়াছিল ইহা বিখাস করা যায় না। ভাহা হইলে খ্রীচৈতত্তের তিরোভাবের পূর্বের খ্রীনিবাস আচার্যোর জন্ম হইয়াছিল এ কথা বিখাস্য নহে তাহা বুঝা যাইতেছে। রাধাগোবিন্দ নাথ মহাশয় অনেক বিঙার করিয়। ত্বির করিয়াছেন শ্রীনিবাদের জন্ম ১৪১৪-১৮ শকে বা ১৫৭২-৭৬ গুরুজান্দে যদি শ্রীনিবাস শ্রীচৈতন্মের প্রায় ৪০ বংসর পরে জন্মগ্রহণ করিয়া থাকেন, তাহা হইলে প্রেম-বিলাসে ও ভক্তিরত্নাকর গ্রন্থে বর্ণিত তাঁহার সহিত গদাধর পণ্ডিত, নরহরি সরকার, বিফুপ্রিয়া, সীতাদেবী প্রভৃতির সাক্ষাৎকার অসম্ভব হয়। ফলতঃ কাল-বিচার করিতে গেলে প্রেমবিলাস, অনুরাগবল্লী ও ভক্তিরত্নাকরের উক্তি অনেক স্থলেই পরস্পর-বিরোধী হয়।

প্রেমবিলাসের মতে সনাতনের অপ্রকটের চার মাস পরে এরিরপের তিরোধান। এ কথাও সত্য নছে; কেন-না এরিন্দাবনে আধাট়া পূর্ণিমায় সনাতনের ও প্রাবণ শুরুণ ছাদশীতে এরিপের তিরোভাব-উৎসব অসুষ্ঠিত হয়।

বুন্দাবনদাস প্রীচৈতগুভাগবতে লিখিয়াছেন যে নিত্যানন্দ বার বংসর বয়সে গৃহত্যাগ করেন, কিন্তু প্রেমবিলাসের মতে "চতুর্দ্দশ বর্ষ কৈল গৃহে গৃহে খেলা" (পুট্টান্ত দেওয়া যাইতে পারে। বন্ততঃ প্রেমবিলাস সপ্তদশ শতাব্দীর মধ্যভাগে অর্থাৎ চরিতায়ত-রচনার পরে লিখিত হইলেও ইহার লেখক নিত্যানন্দদাস বিশেষ অনুসন্ধান না করিয়া অনেক কথা লিখিয়াছেন ও তাহার উপর অনেক দিন ধরিয়া প্রক্ষেপকারীদের অত্যাচার চলিয়াছে।



#### আর কয়েকথানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

অতা প্রামাণিক গ্রন্থের সমর্থন না পাইলে শুধু প্রেমবিলাসের কথার উপর নির্ভর করিয়া কোন সিন্ধান্তে আসা নিরাপদ্ নহে।

#### ভক্তিরতাকর ও নরোভ্যবিলাস

"ভক্তিরতাকর" নিষ্ঠাবান্ ভক্তদের নিষ্ট শ্রন্থা পাইয়াছে। ইহার লেখক নরহরি চক্রবর্তী। তাহার নামান্তর ঘনপ্যাম। তিনি নিজের পরিচয় দিতে যাইয়া লিখিয়াছেন

> বিশ্বনাথ চক্রবর্ত্তী সর্বত্র বিখ্যাত। তার শিশ্য মোর পিতা বিপ্র জগলাথ। না জানি, কি হেতু হৈল মোর ছই নাম। নরহরিদাস আর দাস ঘনশ্যাম।

গ্রন্থানি "অমুরাগবল্লী"র পরে লিখিত; কেন-না ইহাতে (১৪১ ও ১০১৮ পৃষ্ঠায়) অমুরাগবল্লার প্রমাণ উদ্ধৃত হইয়াছে। অমুরাগবল্লা ১৬৯৬ থুফাব্দে লিখিত। বিশ্বনাথ চক্রবর্তী ১৭০৫ থুফাব্দে ভাগবতের টীকা-রচনা সমাপ্ত করেন। সেই জন্ম অমুমান করা যাইতে পারে যে অফাদশ শতাক্ষার প্রথম ভাগে "ভক্তিরত্নাকর" রচিত হইয়াছিল।

"ভক্তিরত্নাকরের" লেখক বৃন্দাবনের গোবিন্দজীর মন্দিরে সৃপকার ছিলেন বলিয়া প্রধাদ। তিনি যে ব্রজমগুলের ভৌগোলিক বিবরণ-সপ্তক্ষে বিশেষজ্ঞ ছিলেন তাহা তাঁহার লিখিত শ্রীনিবাসাদির বৃন্দাবন-পরিক্রমা-বর্ণনা হইতে জানা যায়। তিনি তংকালে ব্রজমগুলের প্রচলিত সমস্ত বৈঞ্চব গ্রন্থ ও পুরাণাদি পাঠ করিয়াছিলেন। ঐ সমস্ত গ্রন্থ হইতে তিনি নানা স্থানে প্রমাণাদি উদ্ধার করিয়াছেন। তিনি এমন

বংহিন্দর এছ মন্দিরে "ভজিবছাকরের" যে পুথি আছে, উহা আনন্দনারাল মৈত লাগ্রতভূষণ মহালয় ১২৬৪ সালের ২৪এ কার্ত্তিক নকল করিতে আরম্ভ করিছ। ২৬এ পেনি -পেন করেন।
আমনারাল বিভারত মহালয় ১২৯৫ সালে এই এছ একাল করেন।

গ্রন্থের নাম করিয়াছেন যাহা এখন পাওয়া যায় না; যথা—(১) গোবিন্দ কবিরাজ-কৃত "সঙ্গাত-মাধব-নাটক" (১৭, ১৯, ২০, ৩০, ১৪ পৃষ্ঠায় উদ্ধৃত), (২) রাধাকৃষ্ণ গোস্বামীর "সাধনদীপিকা" (৮৯, ৯২, ১০৮ পৃষ্ঠায় উদ্ধৃত), (৩) নৃসিংহ কবিরাজ-কৃত "নবপভ" (১০১, ১০৫ পৃষ্ঠায় উদ্ধৃত), (৪) গোপাল গুরু-কৃত "পভ" (১১২ পৃষ্ঠায় উদ্ধৃত), (৫) বেদ-গর্ভাগর্যা-কৃত "পভ" (১২৭ পৃষ্ঠায় উদ্ধৃত)। রন্দাবনের বিশুদ্ধ বৈশ্বব মণ্ডলীতে যে সমস্ত কিংবদন্তা প্রচলিত ছিল তাহাও নরহার চক্রবর্তী সংগ্রহ করিয়াছেন। এই ছই কারণে ভক্তিরয়াকর ঐতিহাসিকের নিকট শ্রদা

কিন্ত যোড়শ শতাব্দীর ঘটনা অফাদশ শতাব্দীতে বর্ণিত হইলে ঐ বর্ণনার পূঝান্দপূঝ তথ্যসমূহ নির্বিচারে সত্য বলিয়া মানা যায় না। নরহরি অনেক স্থলেই এক অজ্ঞাত কুলশীল বৃদ্ধ ব্রাহ্মণের মুখ দিয়া প্রাচীন বিবরণ ] বলাইয়াছেন; যথা—

একাদশ তরক্তে আছে যে জাহ্নবা দেবী তাঁহার পিতৃবা কৃষ্ণদাস সারখেল ও নিতাানন্দ-শিষ্য মুরারি চৈত্ত্যদাস, রঘুপতিবৈছ্য উপাধ্যায় প্রভৃতির সহিত একচাকা গ্রামে যাইয়া একশতাধিক বর্ষ বয়ক রক্তের সাক্ষাৎ পাইলেন। তিনি নিতাানন্দের বালাজাবন বর্ণনা করিলেন। ঐ বৃদ্ধ নিতাানন্দের পিতামহ, অর্থাৎ হাড়ো পণ্ডিতের পিতার নাম স্মরণ করিতে পারিলেন না; যথা—

> এই গ্রামে ছিলা এক বিপ্র পুণাবান্। ওঝা খ্যাতি জানি মনে নাই তান নাম॥ পৃ' ১৮৪

ঐ ব্রাক্ষণ বলিতেছেন যে তিনি বালাকালে নিত্যানন্দের পিতামহকে দেখিয়াছিলেন। শ্রীনিতানন্দের পিতার সহিত পদ্মাবতীর বিবাহ বর্ণনা করিলেন। কিন্তু নিত্যানন্দের মাতামহের নাম করিলেন না। উক্ত বিবরণে একটি নৃতন সংবাদ পাওয়া যায় যে নিতাইয়ের একজন কনিষ্ঠ শ্রাতা ছিলেন (পৃত ৬৯১)।



#### আর কয়েকখানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ

ছাদশ তরক্তে আছে যে জীনিবাস নবছীপের অন্তর্গত মায়াপুরে ভ্রমণ করার সময়—

# আইসেন এক বৃদ্ধ বিপ্র ধীরে ধীরে॥ তাঁরে প্রণমিয়া অতি স্থমধুর ভাষে।

সেই আক্ষণ ঐতিতভাৱ জাবনা ও লালান্থলা বর্ণনা করিলেন। উক্ত বর্ণনা লইয়া ভক্তিরত্নাকরের ৭.০ হইতে ১০০০ পৃষ্ঠা পর্যান্ত লিখিত হইয়াছে। নরহরি-কথিত ঐতিচতভাৱ জাবনীতে এমন কোন তথা নাই যাহা মুরারি, বৃন্দাবনদাস ও কৃষ্ণদাস কবিরাজ লেখেন নাই।

কাটোয়ার ও খেতরার মহোৎসবে ঐতিতত্তের সমসাময়িক অনেক ভক্ত উপস্থিত ছিলেন বলিয়া "ভক্তিরত্নাকরে" বর্ণিত হইয়াছে। ঐ নামের তালিকা দেখিয়া অনেকে ঐতিতত্তের পরিকরগণের জ্বীবনকাল নির্দেশ করেন। কিন্তু কাটোয়া ও খেতরার মহোৎসব যখন হইয়াছিল, তখন কে কে উপস্থিত ছিলেন, তাহা কি কেহ লিপিবদ্ধ করিয়াছিলেন ? যদি এরূপ তালিকা হইতে নরহরি নাম-সংগ্রহ করিতেন তাহা হইলে তিনি উহা উল্লেখ করিতেন। যদি এরূপ তালিকা তিনি না পাইয়া খাকেন, তাহা হইলে ঐ বিষয়ে তাহার নিজের বর্ণনার উপর কতথানি নির্ভর করা যায় ? ঐনিবাসের জ্বীবনী-বর্ণনায় তিনি পরস্পর-বিরোধী উক্তি করিয়াছেন; তাহার দৃষ্টান্ত "প্রেমবিলাসের" বিচার-প্রসম্পে দিয়াছি। নরহরি চক্রবর্ত্তা শ্রীচতত্তের পরিকর-সন্বন্ধে যাহা বলিয়াছেন, তাহা কিংবদন্তী হিসাবে গ্রহণ করাই যুক্তিসঞ্জত।

নরহরি চক্রবর্ত্তী "নরোত্তমবিলাসে" নরোত্তম ঠাকুর মহাশয়-সম্বন্ধে এরপ অল্ল কথাই বলিয়াছেন, যাহা ভক্তিরত্নাকরে বর্ণিত হয় নাই। এই গ্রন্থ পাঠেও ধারণা জন্মে যে শ্রীনিবাস ও নরোত্তম শ্রীচৈতত্যের জাবনকালে জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন। শ্রীনিবাস দ্বিতীয় বার লালাচলে যাইবার পথে শ্রুনিলেন যে গদাধর পণ্ডিতের তিরোধান ঘটিয়াছে। তাহা শুনিয়া তিনি গৌড়দেশে ফিরিয়া আসিলেন। তারপর—

CENTRAL LIBRARY

236

#### শ্রীচৈততাচরিতের উপাদান

প্রভাতে বাকুল হৈয়া চলে গৌড় পথে।
তথা ভেট হৈল গৌড়দেশী লোক সাথে।
প্রভু নিতানন্দ অবৈতের সঞ্চোপন।
তা সভার মুখে শুনি হৈলা অচেতন।

—দ্বিতীয় বিলাস, পূ° ১২

এই বর্ণনা পাঠ করিয়া মনে হয় যে বৈক্ষব সমাজে কিংবদন্তী ভিল যে শ্রীচৈতভ্যের তিরোভাবের চুই-এক বৎসরের মধোই গদাধর পণ্ডিত, অধৈত ও নিত্যানন্দের তিরোধান ঘটে।

নরোত্তমবিলাসের ঐতিহাসিক মূল্য ভক্তিরত্নাকরের তুল্য।

#### অভিরাম লালামূত

এই গ্রন্থানি নিত্যানন্দের পার্ষদ অভিরাম রামদাসের জাবনী। ৪০৯ গৌরাব্দে প্রসরকুমার গোস্বামী নামক একজন উচ্চ ইংরাজি বিভালয়ের শিক্ষক ইহা সংকলন করেন। গোস্বামী মহাশয় অভিরামের শিষ্য রামদাসকে গ্রন্থের লেথকরূপে উপস্থিত করিয়াছেন; যথা—

> শ্রীচৈতন্ত অভিরাম পদে যার আশ। অভিরাম লালায়ত কহে রামদাস॥ পু<sup>০</sup> ১৬

প্রচলিত বৈঞ্চীয় রাতি-অনুসারে রামদাস বলিতেছেন—

অতএব যত লীলা করি যে বর্ণন।

আপনি লিখান মোকে করিয়া যতন॥ পুঃ ১৪

আবার নিতানন্দের স্বপ্নাদেশে গ্রন্থ লিখিবার কথাও আছে; যথা— অভিরাম দেহে সদা চৈত্য বিলাস। প্রভু নিত্যানন্দ মূথে শুনিমু নির্যাস।



# আর কয়েকথানি নাতিপ্রামাণিক গ্রন্থ এক দিন আমি গৃহে করিয়া শয়ন। আধ আধ নিদ্রা মোর কৈল আক্ষণ। হেনকালে নিত্যানন্দ কহেন আসিয়া। অভিরাম লীলা লেখ এখন উঠিয়া। পু<sup>°</sup> ২৪

প্রত্যের সম্পাদক কোন প্রাচীন পুথি পাইয়া প্রস্ত প্রকাশ করিয়াছেন কি না জানান নাই। লেখার ভঙ্গি দেখিয়া মনে হয় যে কতকগুলি কিংবদন্তী সংগ্রহ করিয়া তিনি নিজেই বইখানি লিখিয়াছেন। এইরূপ অনুমানের কারণ এই:—(১) যদি অভিরামের শিশ্ব রামদাস এই বই লিখিতেন তাহা হইলে তিনি নিজ গুরুর সহিত জয়দেবের সাক্ষাৎকারের কথা লিপিবদ্ধ করিতেন না (পূর্ণ ২৫)। (২) গ্রন্থখানিতে বর্ণিত আছে যে মালিনী যবনগৃহে প্রতিপালিত হইয়াছিলেন; অভিরাম তাহাকে স্নানের ঘাট হইতে তুলিয়া লইয়া আসিলেন (পূর্ণ ৩২)। শ্রীচৈতন্ত সকল বৈষ্ণবকে বুঝাইয়াছিলেন যে মালিনী অভিরামের শক্তি; যথা—

তথন চৈতন্ত পুন করেন বিনয়। অভিরাম শক্তি কন্তা জানিহ নিশ্চয়॥ পৃ° ৫১

এই কথা শোনার পর ছাদশ গোপাল ও চৌষট্ট মহান্ত মালিনীর হাতে থাইলেন। শ্রীচৈতন্তের সমসময়ে যে গাদশ গোপাল ও চৌষট্ট মহান্ত নির্ণীত হয় নাই তাহার প্রমাণ শ্রীচৈতত্তের পরিকরগণের পরিচয়-দান-প্রসঙ্গে দেথাইব।

(৩) বাঞ্চাল কৃষ্ণদাস নামে অভিরামের এক শিশ্য খোন্তালুকে গোপীনাথের সেবা প্রকাশ করেন। গোপীনাথের বেশ করাইবার ভার যে ব্রাক্ষণের উপর ছিল তিনি এক নারীকে দেখিয়া মোহিত হয়েন। তারপর—

> নারীপাশে গিয়া তেঁহ বলেন বচন। বিবন্ধা হইয়া তুমি দাঁড়াও এখন॥ পৃ° ৬৯



420

#### শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

নারীর নিরাবরণ রূপ দেখিয়া উক্ত বিপ্র স্বেচ্ছায় নিজের চক্ষ্ নেই করিয়া ফেলিলেন। এই কাহিনীটি স্থরদাসের গল্পের বিকৃত রূপ মাত্র।

(\*) অতৈত যখন পুরীতে শ্রীচৈততের নিকট ছিলেন সে সময়ে "অচ্যত িয়োগে সীতা সংশয় জীবন" ( পৃ ৬৮ )। শ্রীচৈততা বা অছৈতের জীবনকালে অচ্যতের তিরোধান ঘটে নাই; স্থতরাং এই উক্তি কাল্লনিক।

"অভিরাম লালায়তের" কোন কথার উপর সম্পূর্ণ আস্থা স্থাপন করা কঠিন। অভিরাম রামদাস ঐতিচতত্তের পরিকরগণের মধ্যে প্রাধাত্ত লাভ করিয়াছিলেন ও অলোকিক যোগবিভৃতিসম্পন্ন ছিলেন সন্দেহ নাই।

# GENT PALL LIBRARY

# পঞ্চদশ অধ্যায়

উড়িয়া ভততদের মুখে ঐটিচতন্য-কথা • প্রাক্-চৈতন্য যুগে উড়িয়ায় বৈষ্ণব ধর্মের ছুইটি ধারা

শীচৈতত্তের পুরী যাওয়ার পূর্বেও উড়িয়ায় বৈক্ষব ধর্ম্মের প্রচার ছিল।
তথায় প্রাক্-চৈতত্ত যুগের বৈক্ষব ধর্ম্মের তুইটি ধারার নিদর্শন পাওয়া যায়।
একটি রাধারুক্ষকে আশ্রেয় করিয়া বিশুদ্ধভক্তি ধর্মা, অপরটি বৃদ্ধরূপী
জগলাথের প্রতি জ্ঞানমিশ্রা ভক্তি। এই তুইটি ধারাকে শ্রীচৈত্ত্য
আত্মসাৎ করিয়া লয়েন; কিন্তু দিতীয় ধারাটি গৌড়ীয় বৈক্ষব ধর্ম্মের
অন্তর্ভুক্ত না হইয়া কিছুকাল স্বাতয়া রক্ষা করিয়াছিল। পরে শ্রীনিবাস,
নরোত্তমের সহচর শ্রামানন্দ ও তাঁহার শিয়্ম রসিকানন্দ ব্রক্ষমণ্ডলে উদ্ভূত
ভক্তিবাদ উড়িয়্যায় প্রচার করেন।

শ্রীচৈতত্তের নালাচলে গমনের পূর্বের উড়িয়ায় যে শ্রীকৃষ্ণ-উপাসনা প্রচলিত ছিল তাহার কয়েকটি নিদর্শন পাওয়া যায়। রেম্নার গোপীনাথের মন্দির উক্ত উপাসনার একটি প্রধান কেন্দ্র ছিল। মাধবেন্দ্রপুরী গোপীনাথকে দর্শন করিয়া ভাবাবিষ্ট হইয়াছিলেন। প্রতাপরুদ্রের পিতা পুরুষোভ্তমদেব-কর্তৃক লিখিত ছয়টি প্লোক শ্রীরূপ গোস্বামী পদ্বাবলীতে সঙ্কলন করিয়াছেন। ইহার মধ্যে একটি প্লোক উদ্ধার করিলেই দেখা যাইবে যে শ্রীচৈতক্যের পূর্বের গোপীপ্রেমের বার্ত্তা উড়িয়ায় অজ্ঞাত ছিল না। প্লোকটি এই:

পঞ্ম অধ্যাতে মাধৰ পট্টনাহকের উড়িল বই হৈতভবিদান আলোচন। করিল, দশম অধ্যাতে
ক্রিটেডেরে কথানুক্ত অভাত উড়িয়া বইতের আলোচনা করার কারণ ছইট, — অধ্যতঃ মাধবের এর নৌলক
কি অত্বান্ধ দে সক্ষেত্র নিঃসংশ্র হইতে পারি নাই; দ্বিতীয়তঃ লোচনের সহিত তুলনার ক্রিবার কল
মাধবের এক হৈতভ্যমত্বলের পরে আলোচনা করিলানি।



422

#### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

গোপীজনালিজিত-মধাভাগং বেণুং ধমন্তং ভূশলোলনেত্রম্। কলেবরে প্রস্কুট-রোমরুন্দং নমামি কুষ্ণং জগদেককন্দম্॥ ২৯৩

শ্রীচৈত্মচরিতামৃত হইতে জানা যায় যে শ্রীচৈত্মের রুপা পাওয়ার পূর্বেই রায় রামানন্দ বৈষ্ণবীয় সাধনতত্বে অভিজ্ঞ ছিলেন। তাঁহার "জগমাথবল্লভ নাটকে" শ্রীচৈত্যের প্রতি নমক্রিয়া বা বন্দনা কিছুই নাই। তাহাতে অন্মান হয় যে শ্রীচৈত্যের দর্শন পাওয়ার পূর্বেই তিনি ঐ নাটক লিখিয়াছিলেন। জগমাথবল্লভ নাটকে রাগান্ত্রগা ভক্তি ও শ্রীরাধার ভাববৈচিত্রা অশেষ নৈপুণ্যের সহিত বর্ণিত হইয়াছে। হতরাং সিদ্ধান্ত করা যাইতে পারে যে শ্রীচৈত্যের পূর্বের উৎকলে প্রেমধর্শ্যের একটি ধারা বর্তুমান ছিল।

রায় রামানন্দ ঐতিচতভাকে "পহিলহি রাগ নয়নভন্দ ভেল" গীতটি শুনাইয়াছিলেন। এইটি যে রায় রামানন্দের রচনা তাহা কবিকর্ণপূর মহাকাব্যে ও কুঞ্চদাস কবিরাজ চরিতামতে বলিয়াছেন। রায় রামানন্দের লেখা বজবুলির পদ দেখিয়া মনে হয় যে তিনি বিভাপতির পদাবলী পাঠ করিয়াছিলেন।

উড়িছার অনেক বৌদ্ধ হিন্দুধর্মের আশ্রয় গ্রহণ করেন; কিন্তু তাঁহারা বৌদ্ধপ্রভাব হইতে সম্পূর্ণরূপে মৃক্ত হইতে পারেন নাই। জগন্নাথদেবই বৃদ্ধদেব, এই বৃদ্ধিতে ইহারা জগন্নাথের শ্রীবিগ্রহে ভক্তিশীল হয়েন। ইহারা বলেন "ছক্তের দমনের জন্ম" শ্রীকৃষ্ণই বৃদ্ধরূপে জগন্নাথ নামে অধিষ্ঠিত হইয়াছেন। (জগন্নাথদাসের "দারুক্রক্র", ও অচ্যুতের "শৃন্মসংহিতা", ৩০ অধ্যায় দ্রন্টব্য।) ইহাদের গ্রন্থাদি পাঠ করিলে দেখা যায় যে ইহারা "যল্প"-সাহায্যে নিরাকার এবং "পিণ্ডব্রন্ধান্তিত" ব্রন্ধার উপাসনা করিতেন; কিন্তু তৎসঙ্গে রাধাক্ষের পূজা ও ব্রিশ্ব অক্রন মন্ত জপ্র করিতেন। এইরূপ মতবাদ জগন্নাথ-দাসের "রাসক্রীড়া," বলরামদাসের "বট অবকাশ" ও "বিরাট্ গীতা",



#### উড়িয়া ভক্তদের মূথে ঐটিচতশ্য-কথা

যশোরস্তদাসের "শিব স্বরোদ্য" এবং অচ্যুতের "অনাকার সংহিতা" ও "শৃত্য সংহিতা"য় প্রচারিত হইয়াছে। দিবাকরদাসের "জগরাথ-চরিতামতে" দেখা যায় যে জগরাথদাসের শ্রীমদ্ভাগবত পাঠ শুনিয়া প্রীচৈততা মুগ্ধ হইয়াছিলেন (বিতীয় অধায়ে)। তাহা হইলে প্রমাণিত হইতেছে যে ইহারা শ্রীমদ্ভাগবতকেও আদর করিতেন। এই সম্প্রদায়ের পাঁচজন ব্যক্তি প্রাধাত্য লাভ করিয়া পঞ্চসখা নামে পরি।চত হইয়াছেন। ইহাদের নাম—জগরাথদাস, বলরামদাস, অচ্যুতানন্দ, অনন্ত ও যশোবন্তদাস। ইহাদের প্রত্যেকই উড়িয়া ভাষায় গ্রন্থ লিখিয়া যশনী হইয়াছেন ও শ্রীচৈতত্তের কুপা পাইয়াছেন। যশোবন্তের প্রশিল্য স্থদর্শনদাস "চৌরাশী আজ্ঞা" নামক অপ্রকাশিত পুথিতে ' লিখিয়াছেন—

চৈত্ত বোলন্তি বচন পঞ্চ আত্মাক নাম শুন দ্বিতীয়ে বলরাম কহি চতুর্থে যশোবন্ত কহি মন দেই শুন রাজন। একে জগনাথ দাসেন। তৃতীয়ে অনন্ত যে হই। পঞ্চমে অচ্যুত বোলই।

—৪২ অধ্যায়

#### পঞ্সথা

অচ্যতানন্দ পঞ্চসথার সহিত শ্রীচৈতত্তের ঘনিষ্ঠতার কথা লিখিয়া-ছেন; যথা—

বৈক্ষবমণ্ডলী খোলকরতাল বজাই বোলন্তি হরি।
চৈত্ত ঠাকুর মহানৃত্যকার দণ্ডকমণ্ডুলুধারী।
অনস্ত অচ্যুত ঘেনি যশোবন্ত বলরাম জগলাথ।
এ পঞ্চ স্থাহিঁ নৃত্য করি গলে গৌরাস্কচন্দ্র সঙ্গত।
—শ্তাসংহিতা, ১ম অধ্যায়

সংগল্প-চরিতামৃতে উড়িয়া ভাগবতের লেখক অগলাধ্যাদের জীবনী বণিত হইয়ছে।

ই পুথি কটকের অধ্যাপক রায় সাহেব আর্ত্রনত মহাভির নিকট আছে।

তিনি আরও লিখিয়াছেন যে ঐাচৈতত্যের আজায় সনাতন গোস্বামী তাঁহাকে উপদেশ দিয়াছিলেন; যথা—

শ্রীসনাতন গোসাইকি চাহিণ আজ্ঞা দেলে শচীত্ত।
অচ্যুতানন্দক্ত তুম্বে উপদেশ কর হে যাই স্বরিত ॥
আজ্ঞা পাই শ্রীসনাতন গোসাই সঙ্গে স্থাথে ঘেনি গলে।
দক্ষিণ পারুণ বটমূলে বসি কর্ণ উপদেশ দেলে।

—শ্রসংহিতা, গ্রন্থারস্ত

এ সম্বন্ধে কৃষ্ণদাস কবিরাজ চরিতামূতে কোন বিবরণ লেখেন নাই। কিন্তু অচ্যতের নিজের কথা অবিখাস করিবার কোন কারণ দেখি না।

ঈশ্বরদাসের "চৈত্তভাগবতের" অপ্রকাশিত পুথিতে পাওয়া যায় যে জগরাথ দেব (বিগ্রহ) অচ্যুতকে স্বগাদেশ দিলেন যে তিনি যেন শ্রীতৈত্তের নিকট দীক্ষা গ্রহণ করেন; যথা—

> বোলন্তি প্রভু ভগবান তান্ধ চরণ সেবা কর এহি স্বরূপ প্রীচৈত্য চৈত্য গুরু অঙ্গ হই শোন অচ্যত মো বচন

বৌদ্ধরণমো চৈত্ত ভক্তিক পথত্ব আবোর এ পরমহংস দীক্ষা ঘেন নাম প্রকাশ করিবই চৈত্ত ঠারু দীক্ষা ঘেন ॥ শৃত্যসংহিতা, ৬ অধ্যায়

অচ্যতের শৃত্যসংহিতা ও ঈশ্বরদাসের "চৈতত্তভাগবত" মিলাইয়া পড়িলে
মনে হয় যে অচ্যত প্রথমে শ্রীচৈতত্তের নিকট দীক্ষা লইতে গিয়াছিলেন।
কিন্তু শ্রীচৈতত্ত তাঁহাকে সনাতন গোস্বামীর নিকট দীক্ষা লইতে বলেন।

অচ্যতানন্দের পিতার নাম দীনবন্ধু গৃঁটিয়া, মাতার নাম পত্মাবতী। ইঁহারা জাতিতে গোয়ালা। অচ্যত কটক জেলার অন্তর্গত ত্রিপুর প্রামে জন্মগ্রহণ করেন। গোপাল মঠ ইঁহার খারাই প্রতিষ্ঠিত হয়। উড়িয়ার গোয়ালা জাতির অধিকাংশই এই মঠের শিশ্য।



# উড়িয়া ভক্তদের মূথে শ্রীচৈত্য-কথা ৫২৫

ঈশরদাসের মতে বলরামদাস চক্ষপুরে জন্মগ্রহণ করেন। ভাঁহার পিতা সোমনাথ মহাপাত্র রাজার একজন পাত্র বা অমাত্য ছিলেন। শ্রীচৈত্ত সন্ন্যাস গ্রহণ করিয়া যাজপুর হইতে কটকে আসিবার পথে তাঁহার সহিত মিলিত হয়েন। বলরামদাস ঐতিচতত্তের নিকট দীক্ষা গ্রহণ করিয়াছিলেন; যথা-

শুনিণ বলরামদাস

রামতারক পরমত্রকা কহিলে কর্ণে ঐতিচত্তা। মনরে হোইল হর্য **॥** 

— ঈশরদাস, চৈ<sup>°</sup> ভা<sup>°</sup>, ৪৬ ও ৫৯ অধ্যায়

বলরামদাস জগমোহন রামায়ণ লিখিয়া হৃপ্রসিদ্ধ হইয়াছেন। দিবাকরদাস লিখিয়াছেন যে বলরাম অনুকণ জীচৈততের নিকট থাকিয়া প্রভুর সেবা করিতেন (জগরাপচরিতামূত, ২য় অধ্যায়)।

তিনি আরও লিখিয়াভেন যে জগরাথদাদের ভাগবত-পাঠ শুনিয়া শ্রীচৈত্য এতই আনন্দিত হইয়াছিলেন যে তাঁহার সহিত আড়াই দিন আলিন্সনে বন্ধ ছিলেন। প্রভু জগন্নাপদাসকে মন্ত্র দিবার জন্য বলরাম-দাসকে অন্তরোধ করেন। তখন জগলাথের বয়স চবিবশ বৎসর। স্তুতরাং জগরাথ প্রীচৈতত্যের প্রায় সমবয়সী। জগরাথ প্রাতঃকালে প্রভুর মুখ ধোয়াইয়া দিতেন ও সেবা করিতেন (তৃতীয় অধ্যায়)। জগল্লাথদাসের ভাগবত উড়িয়ার সর্বত্র আদৃত ও সমানিত হয়। ইনি পুরাতে স্বামিমঠ প্রতিষ্ঠা করিয়াছিলেন। ইহার প্রভাব-সম্বন্ধে তারিণীচরণ রথ "উৎকল সাহিত্যের ইতিহাসে" লিথিয়াছেন—"সেই ধর্মার স্থাপয়িতা ভক্ত কবি জগলাখদাস ও মহাত্মা ঐটিচততা অটস্তি। এ উভয় মিলি উৎকলবাসীস্ক হৃদয় প্রগাঢ় ভক্তি ও প্রেম রসর সংগার कति यांचे थिएनव।"

ঈশ্বরদাস বলেন যে অনন্ত মহান্তি (দাস) কোণারকে সূর্য্য দেবের নিকট স্বপ্নাদেশ পান যে তাঁহাকে শ্রীচৈতভ্যের নিকট দীকা লইতে হইবে। কোণারকেই তিনি শ্রীচৈতখ্যের দর্শন লাভ করেন ও



#### শ্রীচৈতহাচরিতের উপাদান

025

তাঁহার কুপা প্রার্থনা করেন। এটিচতত অনস্তকে দীক্ষা দিবার জত নিত্যানন্দকে অনুরোধ করেন; যথা—

> চৈত্র প্রভু আজ্ঞা দেই শুন নিত্যানন্দ গো ভাই। অনন্ত উপদেশ কর হরিনাম দীক্ষা সার॥

> > — ৪৬ অধ্যায়•

যশোবন্ত জগলাধ-বিগ্রহের স্বগাদেশ পাইয়া ঐতিচতত্তার নিকট দীকা গ্রহণ করেন (৪৬ অধ্যায়)।

পঞ্চসথা ঐতিচততার কুপা পাইয়াছিলেন, এ কথা সতা। ইঁহাদের সম্বন্ধে গোড়ীয় বৈষ্ণব সাহিত্যে কোন বিবরণ পাওয়া যায় না বটে, কিন্তু তাই বলিয়া এই পাঁচজন মহাপুরুষ ও তাঁহাদের শিয়োরা এ সম্বন্ধে মিথাা কথা বলিয়াছেন এরূপ সন্দেহ করিবার কোন হেতু নাই। ইহারা পূর্বের বৌদ্ধভাবাগর ছিলেন; ঐতিচততার কুপাপ্রাপ্তির পরও ব্রজের প্রেমধর্ম্ম সম্পূর্ণরূপে গ্রহণ করেন নাই। অচ্যুত তাঁহার মতবাদ নিম্নলিখিতভাবে প্রকাশ করিয়াছেন—

কহিলি মুঁ শৃত্যমন্ত যন্ত করতাস।
তপি মানে জয় জয় ফলে যে প্রকাশ।
দেখিলে যে শৃত্যবন্ধ স্থাং জ্যোতি হোই।
ঘটে ঘটে বিজে এহি শৃত্য কায়া গেহা।
শৃত্য কায়া শৃত্য মন্ত বিজে ঘটে ঘটে।
শৃত্য কায়া শৃত্য মন্ত বিজে ঘটে ঘটে।
শৃত্য কায়াকু যে নিরাকার যন্ত সার।
ভলা দয়াকলে দীর্ঘ জনক সাদর।

—শৃশ্বসংহিতা, ১০ অধ্যায়

১৯২০ খৃষ্টাব্দে আমি পুরীর মুক্তিমগুণ গ্রন্থাগারে "কুফ-প্রেমরসচন্দ্র-তত্ত্ব-ভক্ত-লহরী" বা "শ্রীচৈতত্ত্য-সার্ব্বভৌম-সংবাদ" নামক একথানি তম্ন



# উড়িয়া ভক্তদের মুখে প্রীচৈতগ্য-কথা

জাতীয় প্রন্থের পুথি পাই। পুথিখানি একমুঠা হস্তপরিমিত তালপাতায় লেখা; প্রতি পৃষ্ঠায় চার পঙ্ক্তি করিয়া লেখা আছে। ৮৫খানি পাতায় ও ১২টি প্রকরণে গ্রন্থখানি সমাপ্ত। ইহা উড়িয়া অক্ষরে সংস্কৃত ভাষায় লিখিত; কিন্তু ইহার প্রতি গ্লোকে অসংখ্য ভূল। পুথিখানি কলিকাতায় লইয়া আসিয়া আমি ডা দানেশচন্দ্র সেন, অম্ল্যচরণ বিছাভূষণ, রাখালদাস বন্দ্যোপাধ্যায় প্রভৃতিকে দেখাই। তাঁহারা প্রত্যেকেই বলেন যে পৃথির লেখা অন্ততঃ ২৫০ বংসরের প্রাচীন। ইহা কোন বৌদ্ধ-গন্ধা শ্রিচত্ত-ভক্তের রচনা বলিয়ামনে হয়। ইহার প্রথম করেকেট গ্লোকেই শ্রুবাদের কথা আছে।

সার্বভোম উবাচ —

ত্রকান্ত কিমরূপশু ত্রকো বা পরমোপর। ত্রকারূপ ন জানামিঃ কথয়ন্তি মহাপ্রভো॥

শ্রীচৈতহাচন্দ্র উবাচ—

ব্রক্ষ সর্বদেবত কিট ব্রক্ষ-সমানাচঃ।
তথাকি:ভদরূপতা সমুত্র সার্বভৌমঃ॥
শ্রব্রক্ষ যথা রবিঃ তদ্ধং শ্রিতপ্রভূ।
আত্মাদেহ সমানসঃ যুত্রাসং ভোবেত্রতাপি॥

ঐ গ্রন্থের অফীম প্রকারণে সার্ববিভৌম বলিতেছেন—

চৈত্তত্য সর্ববিদ্রন্ত চৈত্তত্য সর্ববিদ্রন্ত।

চৈত্তত্য সর্ববিদ্রন্থদং চৈত্তত্য সর্ববিদ্রন্তঃ।

এই পুথিখানির পাঠোদ্ধার করিতে পারিলে উৎকলে প্রচারিত শ্রীতৈত্যের ধর্ম্মনত সম্বন্ধে কিছু তত্ত্ব পাওয়া যাইতে পারে।

পঞ্চসথা প্রভৃতির মতের সহিত গৌড়ীয় বৈঞ্চব মতের কোনই সাদৃশ্য নাই। কিন্তু তাই বলিয়া ইহাদিগকে অবৈঞ্ব বলা যায় না।

এই পুলির গোক উদ্ধার করিতে ঘাইয়। ভাষা-দংশোধনের কোন চেপ্তা করি নাই।



026

#### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

ইহারা ঐতিচততকে বুজদেবের অবতার বলিয়া পূজা করিয়াছেন (শৃত্য-সংহিতা, ১০ম ও ১১শ অধ্যায় ও নিরাকারদাদের ঝুমরসংহিতা ২২শ অধ্যায়)।

#### ঈশ্বরণাদের চৈতহাভাগবত

কটকে ঈশ্রদাসের চৈত্যভাগবতের তুইখানি পুথি সংগৃহীত হইয়াছে। আমি কটক কলেজের অধ্যাপক রায় সাহেব আর্ত্তবল্লভ মহান্তি মহাশ্যের অমুগ্রহে "প্রাচী-সমিতি"র পৃথিশালায় রক্ষিত পৃথিখানি দেখিবার সুযোগ পাইয়াছি। ঈশরদাসের পুথিতে (৬৫ অধ্যায়) ছইটি গুরুপ্রণালী দেওয়া আছে। কিন্তু উহাদের মধ্যে কোনটিই ঈশরদাসের নিজের গুরু-প্রণালী কি না জানা যায় না। উহার একটিতে আছে-খ্রীচৈতত্ত-বক্রেশ্বর – গোপাল তুরু – ধাানদাস – রখীদাস – স্থামকিশোর – অনস্ত। শ্রীচৈতত্তের সমসাময়িক ভক্ত গোপালগুরু হইতে পঞ্চম অধস্তম শিশ্য হইতেছেন অনন্ত। বিতীয়টিতে আছে—মত্ত বলরাম — জগরাথ দাস — বিপ্র বনমালা - কেলিক্র দাস - পুরুষোত্তম দাস - কৃষ্ণবল্পত - কাঞ্চ দাস। শ্রীচৈতত্তের সমসাময়িক ভক্ত জগলাখদাস হইতে ষষ্ঠ অধস্তন শিশ্য কাহ্নদাস। প্রত্যেক গুরুর সময় ২৫ বৎসর করিয়া ধরিলে ও ঈশ্বদাসকে কাহ্নুদাসের শিশ্র ধরিলে তাঁহার চৈতন্মভাগবত শ্রীচৈতন্মের তিরোভাবের পর ১৫০।১৭৫ বৎসর পরে অর্থাৎ সপ্তদশ শতাব্দীর শেষের দিকে বা অফ্টাদশ শতাব্দার প্রথমে লিখিত হয়, মনে করা যাইতে পারে। শ্রীমান্ প্রভাতকুমার মুখোপাধাায় কোনরূপ কারণ না দেখাইয়া লিখিয়াছেন যে ঈশরদাস যোড়শ শতকের শেষ দিকের লোক (সাহিত্য-পরিষং-পত্রিকা, ১৩৪৩, ২য় সংখ্যা, পু<sup>০</sup> ৭৬)।

শ্রীচৈতক্তের জীবনের প্রধান প্রধান ঘটনা-সম্বন্ধে ঈশ্বরদাস যেরূপ অন্তুত অন্তুত কিংবদন্তীর উল্লেখ করিয়াছেন তাহাতে তিনি ষোড়শ শতক অপেক্ষা সপ্তদশ শতকের শেষের দিকের লোক বলাই অধিকতর যুক্তিসঞ্চ মনে হয়।



# উড়িয়া ভক্তদের মুখে নীচৈতগ্য-কথা

চৈতগুভাগবতের শেষে ঈশ্বরদাস নিজের নিম্নলিখিত পরিচয় দিয়াছেন-

> মাটা বংশে হেলি জাত তকুপা মতে যতুঁ কলে শ্রীগুরুরপেণ ভাবগ্রাহী তেমুটা ভরসা মোরে ভুক্তচরণ রেণু মতে মাগই দাস ঈশর মো ছার মোর তুর্মতি

দয়ালু প্রভু জগরাথ এযে শান্ত লেখনি বোইলে কহন্তি ত্রৈলোক্য গোসাই হুজনে দোষ মোর না ধর দয়া করিব হৃদ গতে উন্ধরি ধর নিরাকার মো ভক্তি রথ গিরিপতি ॥

"মাটী বংশে জাত" মানে পণ্ডিতবংশে বা গণককুলে জাত।

ঈশরদাস বলেন যে গ্রন্থ-রচনার পর তিনি যথন পুরীতে যান তথন তথায় শ্রীচৈতত্তার জগণাথের শ্রীবিগ্রহে লীন হওয়ার কথা আলোচিত হইতেছিল।

> গ্রীজগরাথ অঙ্গে লীন যে শাস্ত্র মৃক্ত মণ্ডপেণ বেমন্ত সময়রে মুহিঁ বাহুদেব তার্থ সন্মাসী তাঙ্ক ছামুরে পুন গ্রন্থ

তীর্থ যে কহস্তি মধুর পূৰ্বের যে শান্ত শুমুন নাহিঁ য়েবে যে শান্ত শুনিলই ভক্তি যোগর যেহুঁ কথা চৈত্রসম্পল বারতা শ্রিজগরাথ অজে লীন

দেখন্তি সর্বব বিস্তৃত্তন শুনন্তি সন্নাসী ত্রাক্ষণ ত্রীপুরুষোত্তম গলই আপে সরম্বতা প্রকাশি প্রকাশ কলে বৈষ্ণবন্ত

বোলন্তি শুন হে ঈশ্বর কাৰ্ভ লেখিল এ বচন।

ঈশরদাস ঐীচৈতশ্বকে সর্বতা বুদ্ধ অবতাররূপে বন্দনা করিয়াছেন। জগলাথই যে শ্রীচৈতত্ররূপে অবতীর্ণ হইয়াছেন সে কথাও বলিয়াছেন: যথা-

ত্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

000

ভক্তবংসল জগনাথ মত্যে মন্ত্র দেহ ধরি নদীয়া মত্রে অবতার অবায় অনাদি অচ্যুত অনাদি নাথ অবতরি গশুজনার কলে পার॥

-: ম অধ্যায়

ঈশরদাস শ্রীচৈতন্য ও তাঁহার পরিকরগণ-সম্বন্ধে কতকগুলি প্রান্ত সংবাদ দিয়াছেন। তাঁহার সময়ে শ্রীচৈতন্যের জীবনী-সম্বন্ধে যে কিরূপ অঙ্কুত মত উড়িগুার এক শ্রেণীর লোকের মধ্যে প্রচলিত ছিল তাহার দৃষ্টান্ত এই গ্রন্থখানি হইতে পাওয়া যায়। নিম্নে ঈশ্বরদাস-বর্ণিত যে ঘটনা-গুলির কথা লিখিতেছি তাহার সহিত শ্রীচৈতন্যের অন্তর্গ ভক্ত মুরারি গুপ্ত ও কবিকর্ণপূরের এবং নিত্যানন্দের প্রিয় শিশ্র রন্দাবনদাসের বর্ণনার একেবারেই মিল নাই।

- ১। ঈশরদাদের মতে জগরাথ মিশ্রের মধ্যম ভাতার নাম নীলকণ্ঠ ও কনিষ্ঠ ভাতার নাম আদিকন্দ। তাঁহার ভগিনীর নাম চক্রকান্তি (ছিতায় অধায়)। চৈত্যুচরিতায়তে জগরাথ মিশ্রের ছয় ভাইয়ের নাম কংসারি, পরমানন্দ, পল্লনাভ, সর্বেব্দর, জনাদ্দন ও ত্রৈলোক্যনাথ (১০০০ ৪-৫৬)। গৌড়ীয় বৈষণ্ব সাহিত্যে তাঁহার ভগিনীর নাম পাওয়া যায় না। জয়ানন্দ, চক্রকলা ও চক্রমুখী নামে ছইজন নারীর নাম উল্লেখ করিয়াছেন।
- ২। সুরারি গুপ্ত বলেন শচার পিতার নাম নীলাম্বর চক্রবর্তী; ঈশ্বর-দাসের মতে গৌতম বিপ্র ( দ্বিতীয় অধ্যায় )।
- ৩। মুরারি বলেন যে শচীদেবার আটটি কতা মৃত হওয়ার পর বিশ্বরূপ জন্মগ্রহণ করেন, তৎপরে বিশ্বস্তর জন্মেন। ঈশ্বরদাসের মতে শচীর পাঁচ পুত্র মৃত হওয়ার পর শ্রীচৈতত্ত অবতীর্ণ হয়েন (দ্বিতীয় অধ্যায়)।
- 8। ঈশ্বরদাস বলেন যে পুরন্দর মিশ্রের ভগিনী চন্দ্রকান্তির সহিত হারু মিশ্রের বিবাহ হয়। এই বিবাহের ফলে নিত্যানন্দ জন্মগ্রহণ করেন (১৭ অ<sup>০</sup>); অর্থাৎ চৈত্র ও নিত্যানন্দ মামাতো-পিসভুতো ভাই। কিন্তু হাড়াই ওঝা ছিলেন রাটা রাক্ষণ, আর জগরাণ মিশ্র পাশ্চান্তা বৈদিক রাক্ষণ। এই দুই শ্রেণীর রোক্ষণদের মধ্যে আদান-প্রদান চলিত না।



# উড়িয়া ভক্তদের মুখে শ্রীচৈতত্ত-কথা

৫। ঈশরণাসের মতে নিত্যান-দের শশুরের নাম অনস্ত চক্রবর্তী ও শাশুরীর নাম জমুবতী (৫৫ অ°)। গোড়ীয় বৈক্ষব সাহিত্যে পাওয়া যায় যে বস্থা ও জাহুবী সূর্যানাস সারখেলের ক্যা।

তথ্নির্ণয়-বিষয়ে ঈশ্বরদাসের মতের সহিত স্বরূপ-দামোদর তথা ক্বিকর্ণপুরের মতের পার্থকা স্থপ্সই। অবৈত শিবের অবতার বলিয়া গৌড়ীয় সাহিত্যে নিরূপিত হইয়াছেন। ঈশ্বরদাস তাঁহাকে রাধার অবতার বলিয়াছেন; যথা—গোলোকে কৃষ্ণ রাধিকাকে বলিতেছেন—

এমস্তে কহিণ গোঁসাই
রাধিকা দেখি হস হস
বৈলে শুন প্রিয়বতী
তুম্ভ হৈবে অবতার
আম্মা নগ্রে গোঁপাথিব

নিত্যকে বলে ভাবগ্রাহী অধর চুম্বে পীতবাস জন্ম হৈবো আন্তে ক্ষিতি অবৈতরূপে মনুয়ার মো জন্ম শুনিলে আথিব।

—দ্বিতীয় অধ্যায়

শ্রামানন্দ অম্বিকা-কালনার হৃদয়-চৈতত্তের শিশ্র বলিয়া উড়িয়া বৈঞ্চবদের নিকট অম্বিকা নামটি সুপরিচিত হইয়াছিল। তাই অবৈতকেও অম্বিকার অধিবাসী বলা হইয়াছে।

৬। ঈশ্বরদাসের মতে এটিতেন্য পুরীতে পৌছিয়া নিম্নলিখিত ভক্তদের সঙ্গে জগরাথ-মন্দিরে গিয়াছিলেন:

চৈতন্ত নিত্যানন্দ ঘেনি
উদ দত্ত যে শ্রীনিবাস
অন্দরানন্দ রামেশর
গৌরাঙ্গদাস যে পণ্ডিত
বক্রেশর যে বুন্দাবন
গদিদাস রাঘো পণ্ডিত
বলরামদাস গোপাল
রূপসনাতন যে তুই

আদিত্য ছরিদাস খেনি
অভিরাম শঙ্কর ঘোষ
পুরুষোত্তম বিশেশর
মুরারিদাস যে অচ্যুত
বাওদাস বংশীবদন
সার্বভৌম যে সঞ্চত
রামানন্দ যে সন্তমেল
সঙ্গেতে জগাই মাধাই

252

#### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

গহনে দীন কৃষ্ণদাস
সঙ্গতে সীতা ঠাকুরাণী
আদিতা পত্নীর গহন
উত্তর নানক সেবক
সঙ্গতে বলরামদাস
অনন্তদাস সঙ্গতর
এমস্তে চৈত্র গোঁসাই
ঐ লে প্রদক্ষিণ করে

নাগর পুরুষোত্রম পাশ

অঙ্গলি নন্দিনী এ বেণী
তিন শ স্ত্রী রন্দগণ
এ আদি গহনর লোক

যশোবন্ত অচ্যতদাস
চারি শাখাস্ক ধরি কর
ক্ষেত্র ডাহান বর্ত হই
সিংহ মুরলী নাদকুরে ॥

----৪৭ অধ্যায়

উল্লিখিত ভক্তগণের মধে। আদিতা = অধৈত; উদ দত্ত = উন্ধারণ দত্ত; বাহুদাস = বাহুঘোষ; গদিদাস = গদাধরদাস; রামানন্দ = রামানন্দ বতু।

কুঞ্ছাস কবিরাঞ্চ শ্রীকপের ও শ্রীজীবের সঙ্গলাভ করিয়াছিলেন; প্রতরাং রূপসনাতন-সম্বন্ধে তাঁহার কথা ঈশ্বরদাসের বর্ণনা অপেক্ষা অধিক প্রামাণিক। কবিরাজ গোস্থামীর মতে রূপসনাতনের সহিত শ্রীচৈতত্তের প্রথম সাক্ষাহকার ঘটে শ্রীচৈতত্তের সন্ন্যাসের পঞ্চম বর্ষে। ঈশ্বরদাসকর্তৃক উল্লিখিত রামেশ্বর, দীন কুঞ্চদাস ও নানকের সেবক উভত্তের নাম গোড়ীয় বৈক্ষব সাহিত্যে পাওয়া যায় না। নানকের একজন সেবক শ্রীচৈতন্তের অনুগত হইয়াছিলেন, এ সংবাদ একেবারে নৃতন।

এইরূপ আরও কয়েকটি নৃতন সংবাদ ঈশরদাস দিয়াছেন।

(ক) ঈশরদাসের মতে নানক শ্রীচৈতত্যের রুপা পাইয়াছিলেন; যথা—

> শ্রীনিবাস যে বিশ্বস্তর নানক সারত্ব এ ছই জগাই মাধাই একত্র

কার্ত্তন মধ্যে বিহার রূপ সনাতন ছই ভাই কীর্ত্তন করস্তি এ নৃতা ॥

—७३ व्यथाय



#### উড়িয়া ভক্তদের মূথে খ্রীচৈতগ্য-কথা

অভাত্র-

নানক সহিতে গ্ৰন সঙ্গেত মত বলরাম

নাগর পুরুষোত্তম দাস জললী নন্দিনী তা পাশ গোপাল গুরু সঙ্গ তেন বিহার নীলগিরি ধাম ॥

—৬৪ অধায়

নানকের জীবনকাল ১৪৬৯ হইতে ১৫৩৮ খুফ্টাব্দ পণ্যস্ত। স্তরাং তিনি শ্রীটেতত্তের সমসাময়িক। নানকের সহিত শ্রীটেতত্তের দেখা-সাক্ষাৎ হওয়া থুবই সম্ভব। কিন্তু সে সম্বন্ধে শিখদের ও গৌড়ীয় বৈক্ষবদের মধ্যে কোন প্রবাদ প্রচলিত নাই। এ ক্ষেত্রে ঈশ্বরদাসের বর্ণনা কত দূর সতা বলা কঠিন।

শ্রীচৈতভার সাতথানি জীবনীতে ও বৈঞ্ব-বন্দনাতে কেশব ভারতীর গুরুর নাম পাওয়া যায় না। ঈশ্বরদাসের মতে-

> নারদ শিশু মাধবানন তা শিশ্ব বাসব ভারতী পুরুষোত্তম তাঙ্কশিয়া শ্রীমন্ত আচার্য্য ত্রাহ্মণ সন্নাস দাকা সে খেমপ্তি নাম তা কেশব ভারতী নবদাপরে ত্রীচৈতগ্র

সন্মাসী পথে উচে চন্দ্র হরিশরণ দাক্ষা বেয়তি ভারতা নামৰ বিশাস পণ্ডিতগণে বিচক্ষণ কেশব নাম সে বছন্তি নন্দনবনে তাক্ষ স্থিতি আপে প্রত্যক্ষ ভগবান।

—৬৫ অধ্যায়

অসমীয়া ভাষায় লিখিত কৃষ্ণ ভারতীর সন্তনির্ণয় গ্রন্থে কেশ্ব ভারতীর গুরু প্রণালী নিম্নলিখিত রূপ প্রদত্ত হইয়াছে-

শঙ্করাচার্ঘা—সদানন্দাচার্যা— শ্রীশু ক্রাচার্যা— পর্মান্মাচার্যা - চতু ভূঞ্ক-ভারতা—( অতঃপর সকলের ভারতী উপাধি ) লক্ষণ — কমলোচন—বিজ্ঞ —

#### ত্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

রসিক—উন্ধান — শিবানন্দ—বিশ্ব —ভারতানন্দ—চকোরানন্দ — কাঞ্চনানন্দ —বালারাম—সূত্রানন্দ—লোকানন্দ—সবানন্দ—কেশবানন্দ — শ্রীচৈতন্ত ও নিতানন্দ।

ছইটি গুরুপ্রণালীর মধ্যে মিল নাই। আমার মনে হয় উভয় প্রণালীই কালনিক।

(গ) রুলাবনদাস লিখিয়াছেন যে ঐটেচতত যখন পুরীতে প্রথম বাঁর গমন করেন, তখন প্রতাপক্তর উৎকলে ছিলেন না: যধা—

> যুক্তরসে গিয়াছেন বিজয়া নগবে। অতএব প্রাভু না দেখিলেন সেইবারে।

> > — to o sto, olciese.

কিন্তু ঈশরণাসের বর্ণনা পাঠ করিয়া মনে হয় যে সেই সময় প্রতাপরত্র কটকে ছিলেন ও প্রীচৈতভাকে দর্শন করিতে আসেন; যথা—

> এমন্তে সময়ে রাজন কটকে বিজে করি থিলে সৈক্য সাজিলে নুপরাণ

208

প্রবেশ আসি সিংহছার সংগ্রাসবেশ বন্মালী চৈত্র আগে ভগবান নম্রতা হই নৃপসাই প্রতাপরত দেবরাণ চৈত্র বিজয় শুনিলে প্রবেশে নালাদ্রি ভূবন

দর্শন চৈতক্যঠাকুর দেখি চরণে রঙথালি রাজাকু কোড় সম্ভাষণ চৈতক্য ছামুরে জনাই ॥

—৪৭ অধায়ে

ঈশ্বদাসের মতে প্রতাপরত জগরাথ দেবের আজা পাইয়া সন্ত্রীক শ্রীচৈতত্যের নিকট দীক্ষা গ্রহণ করেন।



# উড়িয়া ভক্তদের মুখে ত্রীচৈতন্য কথা

কর্ণেন মহামন্ত দেলে। সমস্ত হরব হইলে।

শুনিল চৈত্ত গোঁসাই নুপতি কর্ণে দাকা কহি

—৪৯ অধাায়

ঈশরদাসের বইয়ের ঐতিহাসিক মূলা খুব বেশী বলিয়া মনে হয় না। কিন্তু উড়িয়া ভক্তের লেখা এটেচতত্তের জীবনীর বড়ই অভাব। সেই হিসাবে এথানি প্রকাশ করা কর্ত্তরা।

# দিবাকরদাসের "জগন্নাথচরিতামূত"

"জগন্নাথচরিতামূতের" এখন সাত অধ্যায়ে ঐটেচতত্ত্বের সম্বন্ধে কিছু বিবরণ আছে। ত্রীবৃক্ত কুমুদবন্ধু সেন মহাশয় বলেন যে দিবাকর জগলাথ-দাসের শিশ্য ( প্রবাসী, বৈশাখ ১৩৪১ )। কিন্তু উক্ত গ্রন্থের প্রথম অধ্যায়ে দিবাকর নিম্নলিখিতভাবে নিজের গুরুপ্রণালী বর্ণনা করিয়াছেন:

শ্রীতৈত্য-গোরীদাস-ভদ্যানন্দ - বলরাম- জগরাথ - বন্মালী-কেলিকৃষ্ণ - নবানকিশোর - দিবাকর। ঈশরদাস-প্রদত্ত গুরুপ্রণালাতে জগরাথদাস —বিপ্রবন্মালা ও কেলিকুল্ডদাসের নাম আছে। দিবাকর কেলিকুক্তের শিয়ের শিয়; আর ঈশরদাসের গুরু (१) কাজুদাস কেলিকুঞ্জের শিশ্য পুরুষোভ্রমদাসের শিশ্যের শিশ্য। এ হিসাবে দিবাকর ঈশ্বদাস অপেকা ছই পুরুষ পূর্বের লোক। দিবাকর ঐতিভয়ের সমসাময়িক জগরাথদাস হইতে চার পুরুষ দূরে। ওতরাং তিনি সপ্তদশ শতাক্ষার মধ্যভাগে বর্তমান ছিলেন বলিয়া ধরা যাইতে পারে।

দিবাকর বলেন ঐতিভত্ত জগলাধদাসের সেবায় তুষ্ট হইয়া তাঁহার মাথায় নিজের উত্তরীয় বাঁধিয়া দিয়াছিলেন : যথা-

> আপন ত্রীঅন্ন পাছোড়ি দাসত্ব শিরে বান্ধি দেখে অতি বৰ কথা কহিল

শ্রীকর খেলি আন্ত কাড়ি "অতি বড়" বোলি বোইলে তেও "অতি বড" হোইল।

—তৃতীয় অধ্যায় -

403

#### শ্রীচৈতত্ত চরিতের উপাদান

"জগনাথচরিতামূতের" চতুর্থ অধায়ে দেখা যায় যে ঐতিচততা সার্বভৌমকে জগনাথ-প্রসাদের মাহাত্মা বলিতেছেন ও মন্ত উপদেশ দিতেছেন। সপ্তম অধ্যায়ে আছে যে ঐতিচততা দিনে চারবার করিয়া জগনাথ-দর্শন করিতেন ও ছাদশবার দণ্ডবং প্রণাম করিতেন।

জগন্নাথদাসের সম্প্রদায়কে "অতিবড়া" সম্প্রদায় বলে। "অতিবড়" শব্দটি তাঁহার ভক্তেরা অত্যন্ত মহৎ অর্থে বাবহার করেন। কিন্তু পুরীর উড়িয়া মঠের মহান্ত আমাকে বলেন যে জগন্নাথদাস স্ত্রাবেশ গ্রহণ করিয়া প্রতাপক্ষরের অসুর্যাম্পান্যা রাণীদিগকে দাক্ষা দেন; এই কপটবেশ গ্রহণ করার জন্ম শ্রীচৈতন্ত তাঁহাকে ত্যাগ করেন। ঝাঝাপিয়া মঠের মহান্ত বলেন প্রতাপক্ষরের অন্তঃপুরে জগন্নাথদাস স্ত্রাবেশ গ্রহণ করিয়া ভাগবত পাঠ করিতেন। রাজার লোকেরা তাঁহাকে সন্দেহ করিয়া পরীক্ষা করিতে আসিলে তিনি স্ত্রারূপ প্রকট করেন। বৈষ্ণবগণের নারাভাবে হজন গৃহ কথা। জগন্নাথদাস সেই নারাভাবের রহস্ত প্রকাশ করিয়া দেওয়ায় শ্রীচৈতন্ত তাঁহাকে "অতিবড়" আখ্যা দিয়া ত্যাগ করেন।

দিবাকরদাস বলেন যে গৌড়ায় ভক্তগণ জগন্নাথদাসের প্রতি ইব্যাবশতঃ পুরা তাগি করিয়া রন্দাবনে চলিয়া যান। গৌড়ায় ভক্তদের ঐকান্তিক সেবা সত্ত্বেও প্রভু তাঁহাদিগকে "অতিবড়" বলিলেন না, কিন্তু জগন্নাথদাসকে ঐ প্রকার আখ্যা দিলেন, ইহা তাঁহারা সহ্য করিতে পারিলেন না। তাঁহারা শ্রীতৈতক্তকে উড়িয়াদের প্রভাব হইতে মুক্ত করিবার যথাসাধ্য চেন্টা করিলেন, কিন্তু কিছুতেই যথন তাহাতে কৃতকার্য্য হইলেন না, তখন পুরী ত্যাগ করিলেন। দিবাকরের মতে গৌড়ায় ভক্তেরা বলিতেছেন—

পুরুষোত্তম যেবে থিবা ওড়িয়া সঙ্গ ছড়াইবা বোইলে চৈতত্তকু চাহিঁ গয়া গঞ্চাসাগর স্নান এ বাকা শুনি ক্রীচৈতত এহি ভাষা সিনা শুনিবা।
গউড়দেশে চালি যিবা।
"যতি এক রাজ্যে ন রহি।
করহে তীর্থ প্র্যাটন।"
সেরূপে কহিলে বচন।



# উড়িয়া ভক্তদের মূথে শ্রীচৈতগ্য-কথা

জীয়ই অবা মরই

"মোহর মন বুদ্ধি ভাবে শরণ জগরাথ ঠাবে ৷ জগরাথুঁ মো অন্য নাহিঁ ॥"

গোড়ীয়া ভক্তদের সহিত উড়িয়া ভক্তদের যে বিরোধ ভিল, ভাহাতে সন্দেহ নাই। কিন্তু দিবাকর দাস জগরাথদাসের মাহাত্ম ঘোষণার জ্ঞ বে উপাখ্যান লিখিয়াছেন তাহা সত্য বলিয়া গ্রহণ করা যায় না: কেন-না ঐতিত গু-ভ ক্তগণ কথনই এরপ নাচ ছিলেন না যে একজনের প্রাধান্ত দেখিয়া তাঁহারা ঈর্যান্তিত হইবেন।

যাহা হউক, গোড়ীয় বৈষ্ণব সাহিত্যে যে সব ভক্ত ব্ৰঞ্জের ভক্তন-প্রণালী গ্রহণ করেন নাই সেই সব উড়িয়া ভক্তদের কথা লিখিত হয় নাই। এইরূপ সাম্প্রদায়িক ভেদ-বৃদ্ধির ফলে শ্রীতৈতক্তের প্রেমধর্ম-প্রচারের বিবরণ অসম্পূর্ণ রহিয়া গিয়াছে।

# ट्यांत्रकृत्कामग्र कावाम्

৪২৭ চৈততাকে বিমলাপ্রদাদ দিরাস্তসরস্বতী মহোদয় প্রীগৌরক্ষোদয় নামে একথানি সংস্কৃত কাবা প্রকাশ করেন। তিনি উক্ত গ্রন্থের ভূমিকায় জানাইয়াছেন যে গৌরশ্যাম মহাস্তি মহাশয় নয়াগড় রাজ্য হইতে ঐ গ্রন্থের পুথি সংগ্রহ করিয়া আনেন। আমি পুরীর উড়িয়া মঠে উহার আর একখানি পৃথি পাই। উভয় পৃথিতে প্রদত্ত পুপ্লিকা হইতে জানা যায় যে গ্রন্থগানি ১৬৮০ শকে আখিন মাসে কৃষ্ণা-তৃতীয়া তিথিতে রচিত হয়। লেথকের নাম গোবিন্দ দেব। সম্ভবতঃ তিনি উৎকল দেশীয় ও বক্রেশর পণ্ডিতের পরিবারভুক্ত।

"গৌরকুফোদয়" কৃঞ্জদাস কবিরাজের শ্রীচৈত্তাচরিতামূত অবলম্বন করিয়া লিখিত। চরিতামূতে যে ঘটনা যে ভাবে বর্ণিত হইয়াছে, গোবিন্দ দেবও ছুই-এক স্থান ছাড়া সর্বত্র সেই ঘটনা সেই ভাবে লিখিয়াভেন। তবে চরিতামৃতের বিচারাংশ তিনি বাদ দিয়াছেন।

#### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

400

প্রস্তের শেষে তিনি ইন্সিতে চরিতামূতের নিকট ঋণ স্বীকার করিয়াছেন; যথা—

শ্রীগৌরচক্রচরিতামৃতসারসিন্ধাঃ
সংস্থা কিঞ্চিদিহ মে হাদি বিন্দুমাত্রম্।
যদ্বর্ণিতং লঘুতয়া সহসাহসন্তঃ
সম্ভোহি সম্ভ শরণং ছিতরেণ তত্র ॥ ১৮।১৩

বিশ্বস্তব জন্মগ্রহণ করিয়া তিন দিন পর্যান্ত মাতৃত্ততা পান করেন নাই;
পরে অবৈত আচার্য্য আসিয়া শচীদেবাকে দীকা দিলে তিনি স্তত্ত পান
করিলেন এরূপ কোন কথা চরিতামূতে নাই। কিন্তু গোবিন্দ দেব এই
ঘটনাটি বর্ণনা করিয়াছেন (২।২৪-২)।

তিনি অন্তম সর্গে লিখিয়াছেন যে গোপীনাথ আচাগ্য সার্বভোমের নিকট বলিতেছেন যে শ্রীতৈতন্তের ভগবতার প্রমাণ বায়ুপুরাণে আছে (৮।২৩)। বাঁকীপুর পাটনা হইতে ৪ মাইল দূরবর্তী গাইঘাট নামক স্থানে শ্রীচৈতন্তের একটি প্রাচীন মন্দির আছে। ঐ মন্দিরে রক্ষিত বছ্ত-সংখ্যক পুথির মধ্যে একথানির নাম "বায়ুপুরাণোক্তম্ শ্রীচৈতত্তাবতার-নিরূপণম্ সটীকম্।" ইহা হইতে প্রমাণিত হয় যে ১৭০৮ গুটান্দের পূর্বেই কোন কোন বৈষ্ণব শ্রীচৈতন্তের ভগবত্তা-বিষয়ক শ্লোক রচনা করিয়া পুরাণের মধ্যে ঢুকাইয়া দিবার চেন্টা করিয়াছিলেন।

শ্রীচৈততা পুরীতে বিশ বংসরকাল থাকিয়া অসংখ্য ব্যক্তিকে কুণা করিয়াছিলেন। অথচ গোবিন্দ দেব উড়িয়া হইয়াও শ্রীচৈতত্তার উড়িয়া ভক্তদের সম্বন্ধে চরিতামতে প্রদত্ত বিবরণ ছাড়া অতা কিছুই বলিলেন না, ইহা বিশায়জ্ঞনক ব্যাপার।

উড়িয়া ভক্তের লেখা এটিচততের জাবনা-বিষয়ে নিম্নলিখিত গ্রন্থগুলির নাম ও সন্ধান পাইয়াছি; কিন্তু এগুলি সংগ্রহ করিতে পারি নাই। (২) কানাই খুঁটিয়ার "মহাপ্রকাশ"। কানাই খুঁটিয়া প্রীচৈততের অন্তর্ম ভক্ত ছিলেন; তাহার লেখা বই ঐতিহাসিকের নিকট অত্যন্ত মূলাবান্। কিন্তু গ্রন্থানি কোন আমেরিকান্ ভ্রমণকারী কিনিয়া লইয়া গিয়াছেন;



শুনিলাম। ত্ররন্ধীর রাজার প্রস্থাগারে উড়িয়া ভাষায় লেখা (২) চৈতত্ত্ব-চন্দ্রোদয়, (৩) চৈতত্ত্ব-চন্দ্রোদয়কোমুদী, (৪) চৈতত্তভাগবত, (৫) চৈতত্ত্ব-সম্প্রদায়, (৬) চৈতত্ত্বপূজামন্ত্র, (৭) ভক্তিচন্দ্রোদয়, (৮) স্থাদাসকৃত বৈষ্ণবসারোদ্ধার, (৯) গোবিন্দ ভটুকৃত চৈতত্ত্ববলী, (১০) চৈতত্ত্ব মহাপ্রভুকু মুলনছন্দ, (১১) সরন্ধী শ্রীরাধাকান্ত মহাপ্রভুকু মহিমাসাগর নামক প্রস্থার প্রাপ্তির পুথি আছে। (১২) সদানন্দ "মোহনকল্লভা" নামক পুথির শেষে লিথিয়াছেন যে, তিনি "ব্রহ্মাগুমন্ধল" নামক প্রস্থার শোলীলা বর্ণনা করিয়াছেন। শুনিয়াছি শ্রীযুক্ত কুমুদবকু সেন মহাশয় "ব্রহ্মাগুনন্দ্রলের" পুথি সংগ্রহ করিয়াছেন। অনুসন্ধান করিলে শ্রীচৈতত্ত্ব-সম্বন্ধীয় আরও অনেক পুথি উড়িয়ায় পাওয়া যাইতে পারে। এক জনের চেন্টায় ও অর্থবায়ে এই কার্য্য সম্পন্ন হওয়া কঠিন।

materials about the transfer that have not appropriate

THE PROPERTY OF STREET STREET

CONTRACTOR OF THE STATE OF

医乳球医韧带 新山 自141年的东西

COM SECUL SECULO SELECTION SELECTION

THE RESERVE THE PARTY OF THE PROPERTY OF THE PROPERTY OF THE PARTY OF

# CENTRAL LEBRARY

# ষোড়শ অধ্যায়

# অসমীয়াগ্রন্থে ঐটেডতন্য ও তাঁহার পরিকরগণের কথা

আসামের মহাপুরুষ শঙ্করদেব শ্রীচৈতন্তের প্রায় সমসাময়িক। শঙ্করদেবের ধর্মমতের সহিত গৌড়ীয় বৈঞ্চব ধর্মের অনেক সাদৃশ্য দেখা যায়।
উভয় সম্প্রদায়েই শ্রীমন্তাগবতের প্রতি অগাধ শ্রন্ধা ও নবধা ভক্তির সাধন
দেখা যায়। শঙ্করদেব ও শ্রীচৈতন্ত উভয়েই কীর্ত্তনের দারা ধর্ম প্রচার
করেন, উভয়েই শ্রীকৃষ্ণকে একমাত্র উপাস্তরূপে স্থাপন করিয়াছেন। কিন্তু
শ্রীচৈতন্ত শ্রীকৃষ্ণকে মধুর রসে উপাসনা করিয়াছেন, আর শঙ্করদেব
দাস্তভক্তির মহিমা প্রচার করিয়াছেন। শ্রীচৈতন্ত হরেকৃষ্ণ হরেকৃষ্ণ
ইত্যাদি যোড়শ নাম ও শঙ্করদেব চার নাম গ্রহণের উপদেশ দিয়াছেন।

শঙ্করদেবের সহিত অবৈত প্রভুর সম্বন্ধ

অসমীয়া শঙ্করদেবের নাম স্পফ্টভাবে কোন গোড়ীয় বৈঞ্চব গ্রন্থে উল্লিখিত হয় নাই।

ভক্তিরত্নাকরে এক শঙ্করের কথা আছে; যথা—

অবৈতাচার্য্যের শাখা শঙ্কর নামেতে।
জ্ঞানপক্ষে তাঁর নিষ্ঠা হৈল ভাল মতে ॥
অবৈত শঙ্কর প্রতি কহে বারে বারে।
মনোরথ সিদ্ধি মুই কৈলু এ প্রকারে॥
ছাড় ছাড় ওরে রে পাগল নম্ট হৈলা।
তেহোঁ না ছাড়ে তারে অবৈত ত্যাগ কৈলা।



# অসমীয়া গ্রন্থে এটিচত গুও তাঁহার পরিকরগণের কথা ৫৪১ মহাবহি মুখ বাজ করিল রোপণ। ক্রমে বৃদ্ধি হইব জানিল বিজ্ঞগণ॥

—বাদশ তরত্ন, পৃত ৮৪৫

এথানে শঙ্করকে জ্ঞাননিষ্ঠ বলা হইয়াছে। অসমীয়া শঙ্করদেবও জ্ঞান-মূশ্রা ভক্তি প্রচার করিয়াছেন। তিনি "কীর্ত্তনঘোষা"র প্রথমেই লিথিয়াছেন—

> প্রথমে প্রণমো ত্রহ্মরূপী সনাতন। সর্বব অবভারর কারণ নারায়ণ॥

শকর যে জ্ঞাননিষ্ঠ ধার গঞ্জার ভক্ত ছিলেন তাহা লক্ষ্মীনাথ বেজবরুয়া মহাশয়ও তাঁহার "শঙ্করদেব" প্রস্থে স্বাকার করিয়াছেন (অফ্টাদশ অধ্যায়)। ঐতিচত্যচরিতামূতে অভৈতশাখা-নির্ণয়ে শক্ষরদেবের নাম নাই। তাহার দারা বিশেষ কিছু প্রমাণিত হয় না; কেন-না শক্ষর যদি অভৈত-কর্তৃক পরিত্যক্ত হইয়া থাকেন, তাহা হইলে তাঁহার নাম কুঞ্চদাস কবিরাজ উল্লেখ করিবেন না।

কাল-বিচার করিলে দেখা যাইবে যে অদৈত ও শক্ষর উভয়ে সমসাময়িক এবং ছুই জনই আসামের লোক। শঙ্করদেবের তিরোভাবের তারিখ দেতাারি ঠাকুরের মতে ১৪৯০ শক। রামচরণ ঠাকুর বলেন—

> ভান্ত মাহত শুক্লা বিতীয়া তিথি ভৈলা। সেহি দিনা গুৰু নৰ নাটক এড়িলা॥

> > —শঙ্করচরিত, ৭ম খণ্ড, ৩৮৩৪ পয়ার

তাহা হইলে ১৫৬৮ খৃষ্টাব্দে শঙ্করদেবের তিরোধান হইয়াছিল জানা গেল। গেট্ সাহেব প্রবাদের উপর নির্ভর করিয়া আসামের ইতিহাসে লিখিয়াছেন—

"He is said to have been born in 1449 and to have died in 1569. The latter date is probably correct, so the former must be about thirty or forty years too early." "আসাম বান্ধব" পত্রিকাতে (১৩১৮ বৈশাথ, কাব্যবিনোদ) ও "শঙ্করদেব" গ্রন্থে বেজবরুয়া কেন যে ১৪৯০ শক ভাত্র মাসকে ১৫৬৮ থুফীবুদ না বলিয়া ১৫৬৯ থুফীবুদ ধরিয়াছেন তাহা বুঝা গেল না।

শক্ষরের আবির্ভাবের ভারিথ লইয়া তিনটি বিভিন্ন মত প্রচলিত আছে।
লক্ষ্যানাথ বেজবরুয়া মহাশয় বরদোবায় প্রাপ্ত গভে-লেখা "গুরুচরিত্রে" ১০৭১ শক, ১৪৪৯ খুন্টাব্দ শঙ্করের জন্ম-তারিথ বলিয়া উল্লেখ
পাইয়াছেন। শাক্ষাম বান্ধবা পত্রিকার পূর্বেবাক্ত সংখ্যায় রামচরণ
ঠাকুরের "শঙ্করচরিত" হইতে শঙ্করের জীবনকাল-সম্বন্ধে নিম্নলিখিত
বাক্য খুত হইয়াছে—"তের বর্ষ মন্দ আয়ু ভৈলা ছয় কুরি।" ইহার
অর্থ করা হইয়াছে এই ২২০—১৩=১০৭ বৎসর। অর্থাৎ ১৫৬৮ য়ৢ অ
য়তুয়র তারিখ। ১০৭ বৎসর জীবন কাল; স্কুতরাং ১৬৬১ য়ুন্টাব্দে জন্ম।
উদ্ধৃত বাক্যটি কিন্ত হলিরাম মহন্ত-কর্তৃক প্রকাশিত গ্রন্থে নিম্নলিখিত
রূপে পাওয়া যায়—

ডের বছরর মন্দ আরু ছই কুরি। তেবে চলি গৈলা গুরু নরদেহা এরি॥

—রামচরণ ঠাকুর-কৃত শঙ্করচরিত, ৩৮৩৫ পয়ার

যদি 'ভ' স্থানে 'ভ' পাঠই ঠিক হয়, তাহা হইলে শহরের জন্ম : ৪৪৯ গুট্টাব্দেই হয়।

অনিরুদ্ধ 'শঙ্করচরিত' পুথিতে লিখিয়াছেন যে শঙ্কর "বান বায়ু নয়ন চন্দ্রমা শক চারি, অর্থাৎ ১৩৮৫ শকে, ১৪৬০ খৃফ্টাব্দে জন্মিয়াছিলেন ও ১০৫ বংসর জীবিত ছিলেন। বেজবরুদ্ধা মহাশয় বলেন যে যে হেতু অনিরুদ্ধের বই ১৬৭৪ শক, ১৭৫২ খুফ্টাব্দে রচিত সেই হেতু ইহার

<sup>া</sup> বেলবলনা গুলচরিত্র-সথজে লিখিরাছেন, "এই পুথিধন শক্ত দেবর আধিস্থান বরবোবা দত্তত আতি বজেরে রক্ষিত; তাত লিখা আন কোনো কোনো বিবহত সন্দেহ করিলেও জন্ম তারিধটোত ন করাই ইচিত; কারণ বরকোবাই তেঁওর জন্মস্থান" (প" ১৮৪ "শক্ষরদেব")। কিন্ত তিনি নিজেই ঐ পুথিতে উলিখিত অভ্যান্ত সময়-নিশ্ম মানিরা সংখন নাই (ঐ, পা ২১৬-১৭)।

অসমীয়া এতে ত্রীচৈত ছাও তাঁহার পরিকরগণের কথা ৫৪০ প্রাণিকতা রামচরণের প্রস্থ অপেক্ষা কম। আমার মনে হয় যে "গুরু-চরিত্র" পুথির অনেক কথাই যখন প্রামাণিক নহে এবং রামচরণের প্রস্থে যখন প্র্যান্তঃ জ্বন্ম-শকের উল্লেখ নাই ও তাহার পাঠ লইয়া মতভেদ আছে, তখন অনিরুদ্ধের দেওয়া ১০৮৫ শক বা ১৪৬০ গুরুদ্ধি শঙ্করের জ্বন্মন্থ ধরাই অধিকতর সম্পত্ত। ১০৫ বৎসর জীবন যতটা যুক্তিযুক্ত ১৯ বৎসর জাবন ততটা নহে। বিশেষতঃ পরে দেখা যাইবে যে আসামে প্রচলিত প্রবাদ-অনুসারে শঙ্করদেব যখন বিত্রীয় বার তার্থভ্রমণ-উপলক্ষে পুরীতে ছিলেন তখন প্রীতেশ্যের তিরোভাব হয় (১৫০০ খৃন্টান্দ)। শঙ্করের জন্ম যদি ১৪৪৯ খৃন্টান্দে হয়, তাহা হইলে ঐ সময়ে তাহার বয়স্ত ৪ বংসর হয়। ঐ বয়সে যে তিনি তার্থভ্রমণে বাহির ইইয়াছিলেন তাহা বিশ্বাস করা কঠিন। অনিরুদ্ধের কথা মানিয়া লইলে তখন তাহার বয়স্ হয় ৭০ বৎসর।

অত্তৈত প্রীচৈততা অপেকা বয়সে অনেক বড় ছিলেন। বিশ্বস্তরের বয়স্
যথন তেইশ বৎসর তথন তিনি অবৈতকে জ্ঞানবাদ-প্রচারের জন্ত দণ্ড
দিতে শান্তিপুরে গমন করেন। বুন্দাবনদাসের মতে সেই সময়ে অত্তৈ গল্পী সীতা বলিয়াছিলেন—

বুঢ়া বিপ্র বুঢ়া বিপ্র রাথ রাথ প্রাণ। কাহার শিক্ষায় এত কর অপমান॥

—टेंड छा॰, शाकारकप

শক্ষর যদি ১৪৬০ খৃষ্টাব্দে জন্মন ও প্রীচৈতন্য অপেক্ষা ২০ বৎসরের বড় হয়েন, তাতা হইলে উক্ত ঘটনার সময় শক্ষরের বয়স্ ৪৬ বৎসর হয়। তখন অদ্বৈতের বয়স্ ৪৬ অপেক্ষা বেশী ছিল, তাহা না হইলে সাতাদেবী অদ্বৈতকে বুঢ়া বিপ্র বলিতেন না। ইহা হইতে অনুমান হয় যে অহৈত শক্ষর অপেক্ষা বয়সে বড়। বেজবরুয়া মহাশয় অনেক যুক্তি-তর্কের অবতারণা করিয়া দ্বির করিয়াছেন যে শক্ষর ৩২ বংসর বয়সের পূর্বের তীর্থভ্রমণে বাহির হয়েন নাই। শক্ষর প্রথমবারে দ্বাদশ বংসর তার্থ ভ্রমণ করিয়া ছিলেন বিলয়া প্রবাদ। তাহা হইলে, শক্ষরের জন্ম ১৪৬০ খৃণ অংশ ৩২ বংসর

বয়সে তার্থভ্রমণ আরম্ভ + ১২ বংসর ভ্রমণ = ১৫০৭ খৃষ্টাব্দে বা ভাষার কাছাকাছি সময়ে অবৈতের সহিত শব্ধরের সাক্ষাৎকার হইতে পারে। শ্রীচৈতভ্যের ভাবাবেশ আরম্ভ ১৫০৯ খৃষ্টাব্দে।

উমেশচন্দ্র দে মহাশার লিখিয়াছেন যে কন্সার বিবাহ ও পত্নীর মৃত্যুর পর শঙ্কর ৪৪ বংসর বয়সে তীর্থভ্রমণে বাহির হয়েন এবং বার বংসর ভ্রমণান্তে অহৈতের নিকট উপস্থিত হয়েন। তিনি অহৈতের নিকট ভাগবত পাঠ করেন। দে মহাশয়ের মতে ১৪০০ শকে বা ১৫০০।৯ খুফ্টাব্দে শঙ্করের সহিত অহৈতের মিলন হয়।

এই সব যুক্তি-বলে আমি আপাততঃ সিদ্ধান্ত করিতে চাই যে অঘৈতের নিকট শকরের জ্ঞাননিষ্ঠ ভক্তির উপদেশ পাওয়ার কাহিনী ভিত্তিহীন না হওয়াই সম্ভব। অঘৈত শ্রীচৈতত্যের ভক্ত হওয়ার পর শক্ষরকে মাধুয়ারদে আনয়নের চেন্টা করেন; কিন্তু তাহাতে সফল হয়েন নাই। সেই জন্ম অঘৈতশাখায় শক্ষরের নাম পাওয়া যায় না বেজবরুয়া মংশিয় যে সিদ্ধান্ত করিভাছেন যে শক্ষরের উপর শ্রীচৈতত্যের কোন প্রভাব পড়ে নাই, তাহার সহিত আমার সিদ্ধান্তের কোন বিরোধ নাই।

# শ্রীচৈতত্ত্বের কথা আছে এমন অস্থীয়া গ্রন্থের কালনির্পয়

বেমন বাঙ্গালা ভাষায় প্রীচৈততাকে লইয়া তেমনি অসমীয়া ভাষায় শক্ষরদেবকে লইয়া অনেক গ্রন্থ রচিত ইইয়াছিল। শক্ষরের শিশুদের মধ্যে মাধ্ব ও দামোদর প্রধান ছিলেন। কায়ন্থ মাধ্বদেবের অনুগত দল মহাপুরুষীয়া ও আঞ্চন দামোদরের শিশুরো বামুনীয়া বা দামোদরীয়া সম্প্রদায় নামে পরিচিত। মহাপুরুষীয়াগন প্রীচৈততাকে মানেন না। শক্ষর ও মাধ্ব-রচিত ধর্মগ্রন্থে, কীর্তনে ও ঘোষায় প্রীচৈততার নামগক্ষও নাই। কিন্তু দামোদরীয়াগন চৈততাকে অবতার বলিয়া স্বীকার করেন (রঙ্গপুর সাহিত্য-পরিষৎ-পত্রিকা—১০১৮ সাল, প্রথম সংখ্যা, পৃত ১)।

রামচরণ, দৈত্যারি ঠাকুর ও ভূষণ ম্বিজকবি মহাপুরুষীয়া সম্প্রদায়ের অনুগত লেখক। রামচরণ ঠাকুর মাধব দেবের ভাগিনেয় (বঙ্গীয় সাহিত্য-



অসমীয়া এত্তে শ্রীচৈততা ও তাঁহার পরিকরগণের কথা ৫৪৫ পরিষৎ-পত্রিকা, ১০২৭০, পৃত ৭৬)। উমেশচন্দ্র দে বলেন শকরের শিত্রা গয়াগানি বা রামদাস। রামদাসের পুল্ল রামচরণ ও রামচরণের পুল্র দৈত্যারি ঠাকুর। হলিরাম মহান্ রামচরণের "শক্ষরচরিতের" ভূমিকায় লিখিয়াছেন যে রামচরণ ঠাকুর 'মাধব দেব পুরুসর ভাগিন আরু রামদাস আতৈর পুত্র। এওঁ শ্রীশ্রীলগঙ্করদেবতকৈ প্রায় ৪০ বছর মানে সক্র। এনে হলত প্রায় সমসাময়িক বুলিলেও অত্যক্তি করা ন হব।" দৈত্যারি ঠাকুর উক্ত রামচরণের পুল্ল। তিনি মাধবের শিত্র গোবিন্দ আতৈ ও পিতা রামচরণের নিকট হইতে উপাদান সংগ্রহ করিয়া শক্ষর-চরিত লিখিয়াছেন।

ভূষণ বিজক্বি একখানি শঙ্করচরিত লিখিয়াছেন। তিনি নিজের পরিচয়ে বলিয়াছেন যে শঙ্করের শিশু চক্রপাণি।

হেন চক্রপাণি মহামানী আছিলন্ত।
তাহান তনয় পাচে বৈকুঠ ভৈলন্ত॥
অভাপিও লোকে যাক প্রশংসা করয়।
ভকতি ধর্মাতনিষ্ঠ বৃদ্ধি অতিশয়॥
তান পুত্র মূকথ ভূষণ শিশুমতি।
শঙ্কর-চরিত্র পদে সম্প্রতি বদতি।

—পৃ<sup>০</sup> ১৮৩, তুর্গাধর বরকটকী-সম্পাদিত।

দামোদরীয়া সম্প্রদারভুক্ত ব্যক্তিদের মধ্যে দামোদরের শিশু রামরায় বা রামকান্ত বিজ "গুরুলীলা" প্রস্থে শঙ্কর-চৈত্তের মিলনের কথা লিখিয়াছেন। "গুরুলীলা"র অন্তা খণ্ডের একখানি পুথি ১৭৬৬ খুন্টাব্দে নকল করা হইয়াছিল। উহার চতুর্থ পত্রে চিত্র আছে। তাহাতে দেখা যায় যে চৈত্ত, শক্কর, দামোদর, মাধব, গোপাল, বলদেব, প্রমানন্দ,

উমেশচল্ল বে লিখিবাছেল যে তিনি বিজন্বণ-কৃত শ্বরচ্বিত এছ ৯০ পৃঠার পৃথিব আকারে
মুক্তিত পেবিহাছেল। উহার পৃথি তিনশত বংসরের অধিক আচীন এবং উহা দরল মেলার হলেবরের
মৌলালার মহাধর ভূঞার নিকট আছে। বে মহাশার বলেন যে ভ্রণের এছ-রচনাকালে শ্বরের পৌক্র
চতুল্লির বিভূপুর সত্তে বিভ্যান হিলেন ( রক্ষুর লাহি তা-পরিবং-পত্তিকা, ১৬১৯; \*)।

## শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

485

বন্দালী, এবং মিশ্রের ছবি লিখিতামুক্রমে আছে। ক্রেডির আদিব বামদিকে মুখ করিয়া বসিয়া আছেন; শঙ্কর প্রভৃতি অপরের দৃষ্টি তাঁহার দিকে নিবন্ধ" (রঞ্জপুর সাহিত্য-পরিষ্থ-পত্রিকা, ১৩১৮।১)।

কৃষ্ণ ভারতী নামে দমোদরের এক শিশ্ব "সন্তনির্ণয়" নামক একথানি গ্রন্থে শ্রীচৈতত সম্বন্ধে অনেক কথা লিখিয়াছেন।

ভট্টদেব নামে একবাক্তি 'সংসম্প্রদায় কথা' লিখিয়াছেন। তিনি
কৃষ্ণ ভারতীর সংগ্রহ দেখিয়া গ্রন্থ লিখিয়াছেন বলিয়া প্রকাশ। আসামের
পুরাতত্ত্বিদ্ হেমচন্দ্র গোস্বামী বলেন যে দামোদর-শিশ্য ভট্টদেব ১৭৬০
হইতে ১৬৬৮ খৃষ্টাব্দের মধ্যে জীবিত ছিলেন। তবে এই ভট্টদেবই
"সংসম্প্রদায় কথা"র লেখক কি না সন্দেহ। কৃষ্ণ ভারতীর "সংনির্ণয়"কে
আমি কেন প্রমাণিক মনে করি না তাহা পরে বলিব।

কৃষ্ণ আচাহ্য "সন্তবংশাবলী" প্রন্থে "নৃসিংহকৃত্য" নামে একথানি প্রন্থ হইতে চৈতল্য-সন্থম্ধে কিছু কথা উদ্ধৃত করিয়াছেন। নৃসিংহ কোন্ সময়ের লোক তাহা নির্ণয় করিতে পারি নাই। "দীপিকাচান্দ" নাকে একথানি নাতিপ্রামাণিক প্রন্থেও শ্রীচৈতল্যের কথা আছে। হেমচক্র গোস্বামীর মতে উহা ১৭৭১ শকে, ১৮৪৯ খুক্টান্দে নকল করা হয়। মহামহোপাধ্যায় পদ্মনাথ বিভাবিনোদ বলেন যে ঐ গ্রন্থ আধুনিক (বঙ্গীয় সাহিত্য-পরিষৎ-পত্রিকা, ১৩১৯) )।

# শ্রীতৈতভার সহিত শঙ্করের মিলন

মহাপুরুষীয়া সম্প্রদায়ের তিনখানি প্রাচীন বইয়েতেই আছে যে শঙ্কর যখন বিতীয়বার তীর্থজমণে যান, তথন পুরীতে তাঁহার সহিত শ্রীচৈতভার সাক্ষাৎকার হয়; কিন্তু পরস্পরের মধ্যে কথাবর্তা হয় নাই। রামচরণ ঠাকুর লিখিয়াছেন—

কৃষ্ণর কার্ত্তন করি ভকতর সঙ্গে। তীর্থ ক্ষেত্র করিয়া ফুরস্ত মন রঙ্গে। চৈত্ত্য গোঁসাই গ্রামে স্থান করিলস্ত। সেই পথে আসিয়া ভাহান্ধ দেখিলস্ত॥



# অসমীয়াগ্রন্থে শ্রীচৈতত ও তাঁহার পরিকরগণের কথা ৫৪৭ ছইকো ছই মুহূর্ত্তেক চাহি আছিলন্ত। সম্ভাবণ নকরিয়া চলিয়া গৈলন্ত। ৩১৩৯-৪০ পরার

# দৈত্যারি ঠাকুর লিখিয়াছেন—

প্রভাতে উঠিয়া নিতো গমন করন্ত। কৃষ্ণ-চৈত্ত্যর গৈয়া থানক পাইলস্ত । পথত চলতে শিক্ষা দিলন্ত লোকক। ন করিবা কেহোঁ নমস্কার চৈতত্তক ॥ যিটোজনে নমস্বার করে চৈতত্তক। উল্টায়া তেঁহো প্রনামস্ত সিজনক ॥ মনে নমস্কার তাঙ্ক করিবা এতেকে। এহি বুলি শিথাইলম্ভ লোক সমন্তকে। কৃষ্ণ-চৈত্তত্য আছা মঠর ভিতর। ব্রন্সচারী কহিলন্ত আসিছা শঙ্কর॥ শক্ষরর নাম শুনি কৃষ্ণ চৈত্তগুর। মিলিল আনন্দ বাজ ভৈলন্ত মঠর॥ চুৰার মুখতরহি আছিলন্ত চাই। कृत्या नयनत्र नीत्र धीत्त विश् यारे ॥ भक्त त्रा नद्रनत्र नीत वर्ष्ट शास्त्र । পথ হত্তে নির্থিয়া আছন্ত সাদরে॥ कराकारण इटेरका इटे ठाँटे ट्यम मरन। পশিলা মঠত গৈয়া শ্রীকৃষ্ণ-চৈতত্তে । ना माजिला इटेरका घटे निषिला उउत्र। পরম হরিষ মনে চলিলা শক্ষর॥

—বেজবরুয়া-কৃত শঙ্করদেব গ্রম্থের পৃ<sup>০</sup> ২০০-০১

ভূবণ বিজকবি লিখিয়াছেন—

বুন্দাবনো যাই সবে ক্ষেত্রে আসিলন্ত। জগন্নাথ ক্ষেত্রে কভো দিন বঞ্চিলন্ত॥



485

## খ্রীচৈতশুচরিতের উপাদান

চৈতত্ত গোঁসাঞি তথা ভৈলা দরিশন। ছুইকো ছুই চাহিলা নাহিক সম্ভাষণ। মুহূর্ত্তেক মান ছুই চাহি আছিলগু। নিব্যিয়া আসি বাসাঘরে আসিলন্ত।

—শঙ্করদেব, ৫৭৮-৭৯ পয়ার

দামোদরের শিশ্ব বিজ্ঞরাম রায় "গুরুলীলা"য় লিথিয়াছেন-

কণ্ঠভূষণর মুখে শুনিছে শঙ্কর।
কৃষ্ণ চৈততা হুয়া হৈছে অবতার॥
ব্রহ্মানন্দ আচার্য্যেও কহিছে পূর্বত।
ব্রহ্মহরিদাসে পাছে কৈলা শঙ্করত॥
সেই কথা স্থমরি শঙ্কর মৌন ভৈলা।
রাম নাম গুরুনামে উচর চাপিলা॥
অবনত হুয়া ছুই নামিলা সাক্ষাৎ।
পূর্ব্বাপর পুছিলন্ত কথা যত যত॥
শঙ্কর আগে না মাতিলা মহাজ্ঞানা।
কমগুলু জল ঢালি বুঝাইলা আপনি॥
শঙ্করেও বুঝিলন্ত সেই অনুমানে।
একযে শরণ ধর্ম্ম চৈততার স্থানে॥

—রঙ্গপুর সাহিত্য-পরিষৎ-পত্রিকা, ১৩২১ সাল, পৃ° ৬৩

বেজ্ববরুয়া মহাশয় বরদোবার 'গুরুচরিত্র' পুথি হইতে শক্ষর-চৈতভ্যমিলনের যে বিবরণ উদ্ধৃত করিয়াছেন, তাহাতে দেখা যায় যে জগলাথের
নাট মন্দিরে বসিয়া জীটেতভা ও শক্ষরদেব নটার নাচ দেখিতেছিলেন।
সেই সময় তাঁহাদের সামাভা কিছু কথাবার্তা হয়। "এই প্রকারে ঈশ্বর
পুরুষ ছইজনা সদালাপ করি কিছুদিন আছে, ক্ষেত্রন্থানর পরা বৃন্দাবনলৈ
যাবর ইচ্ছা হোবাত কোনো এদিন ভকতসকল সহিতে চৈতভা গোঁসাইর
মান্দরলৈ যাবলৈ সাজুহৈ মাধব দেবত কৈছে।" সেই দিন নিত্যানন্দ



#### অসমীয়াগ্রন্থে শ্রীচৈত্ত ও তাঁহার পরিকরগণের কথা ৫৪৯

শঙ্কর-শিশ্য বলরামকে জিজ্ঞাসা করিলেন—"কোন্ দেশর বৈরাগী কোন্ দেশে যায়। কোন্ মুখে ভিকা মাগি কোন্ মুখে খায় ?" বলরাম উত্তর দিলেন—"পূর্বর দেশর বৈরাগী পশ্চিম দেশে যায়। গুরুর মুখে ভিকা মাগি নিজ মূথে থায়।" তারপর নিত্যানন্দ বলিলেন —"কোন্ দেশর বৈরাগী কি বুলি কাড়িছে রাও, সকলো জগৎ হরিময় দেখোঁ কতদি আহিলা পাও ?" বলরাম বলিলেন - "পূব দেশর বৈরাগী রাম বুলি কাঢ়িছে রাও। হৃদয়-মাঝে ঈশ্বর কুঞ আপুনি বিচারি চাও॥" সেই দিন জগন্নাথপ্রসাদ-সম্বন্ধে ঐীতৈতক্তের সহিত শঙ্করের কিছু কথাবার্তা হয়। তৎপরে "গৌরাপ প্রভূরে দেখি শঙ্করদেবক ঈশ্বর-শক্তি বুলি প্রশংসা করি অতি সমাদরে বিদায় দিছে" পু<sup>©</sup> ২২৯-৩»।

দৈত্যারি ঠাকুরের বর্ণনা অপেক্ষা এই বিবরণের উপর বেজবরুয়া মহাশয় অধিকতর আন্থা স্থাপন করিয়াছেন। কিন্তু আমি ইহা কাল্লনিক মনে করি। প্রথমতঃ ঐতিচত ভা জগরাথের নাট মন্দিরে বসিয়া দেবদাসীর নৃত্য দর্শন করিবেন ইহা সম্ভব মনে হয় না। দ্বিতীয়তঃ শঙ্কর প্রীচৈতত্ত্বের তিরোভাবের অল্ল দিন পূর্বের পুরীতে যান। সে সময় নিত্যান ল গৌড় দেশে থাকিয়া ধর্মা প্রচার করিতেছিলেন। সেই জন্ম মনে হয় যে মাধবের সম্প্রদায়ভুক্ত রামচরণ ঠাকুর, দৈত্যারি ঠাকুর ও ভূষণ শ্বিঞের বর্ণনাই অধিকতর বিশ্বাসযোগ্য। ঐীতৈতভার জীবনের শেষ বার বংসর কেবল ভাবের আবেশে কাটিয়াছে। সে সময় যদি শঙ্করের সহিত শ্রীচৈতত্তের সাক্ষাৎকার হইয়া থাকে ভাহা হইলে কেবলমাত্র পরস্পরের প্রতি ভাকাইয়া দেখাই অধিকতর সম্ভব।

কুষ্ণ ভারতীর "সন্তনির্ণয়ে" শক্ষর-চৈত্ত-মিলনের বর্ণনা কৌত্হলো-দ্দীপক। সেই জ্বল্য উহার থানিকটা উদ্ধৃত করিতেছি—"গল্পা-সান করি জগলাথ দরশন করি পাছে চৈততা গোসাঞির মঠর ছারক লাগ পাইল। যায়। ব্রহ্মহরিদাসক লাগ পাইল। পাছে ব্রহ্ম পুছিল তোরা কথাএ থাক, কিবা নাম। তাত রামরাম কহিল, আমি পূর্বব দেশী রাক্ষণ, এই শঙ্কর গোমস্তা জগরাথ দেখিতে আসিছে, চৈতত্ত গোসাঞি কো দেখিতে চায়। পাছে ত্রন্ধ হরিদাসে ত্রীচৈততা গোসাতিত কহিল। চৈততে

## শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

000

বুলিল, আমি জানি রামরাম আকাণ শকর কায়ত্ব ছুইজন আহিচে। এখন আমাক দেখা পাইবার নয়। আমি শুদ্রর মুখ না দেখি। এহি কথা রামরাম শঙ্কর গোমস্তাত কহিলেক। শঙ্করে স্থান বিস্তার মনচুখ্ করি ত্রকা হরিদাসক বুলিল, আমি কেন মতে চৈতন্য প্রভুক দেখা পাঁয়। তেবে ত্রহ্ম হরিদাসে বোলে যদি তোমরত কিছো বিত্ত থাকে, তবে তাক ভাঙ্গি কার্ত্তন আরম্ভ করা। হরিধানি শুনিলে কার্ত্তন-লম্পট চৈতত্ত আপুনি মঠের বাহির হয়। নৃত্য করিবাক যাইবেক তাতে দেখা পাইবা। এছি কথা স্থানি ধন কড়ি ভাঙ্গি কীর্ত্তন আরম্ভিল। ভবসুইপরেত কীরনধানি শুনি চৈত্ত মঠহতে বাহিরায়া ছই দণ্ডমান নৃত্য করি দেখ নে দেখ বেশে অলকিতে পুনরায় জায়াছিল। চৈত্য প্রভুকতো দেখা ন পাইল। পাছে হরিদাস বুলিল মহাপ্রভু তোমার কীর্তনেত নৃত্য করি পুনর্বার মঠের ভিতর আসিল। তুমি কেনে দেখা না পাইলা। তাত শঙ্করে বুলিল পূর্বের কোনদিন নঞি দেখি দেখি এতেকে চিনিবাক না পারিলো। যদি আগে দেখি চিনো হেন্তে তেবে চিনিবাক পারি। কহা প্রভুর কি বর্ণ, কি রূপ। এহি কথা স্থনি হরিদাসে বোলে, আমি প্রভুর রূপ কছো। গৌরাক তনু, আজাবুলন্বিত ভুজ, মৃণ্ডিত মুণ্ড, হত্তে জপমালা, দক্ষনেত্রে সদা খেমধারা বছে। গলায়ে নামমালা ভোলমুখে সদা কীৰ্ত্তন রোল। কটিত কপিন। সদা পুলক বলিত তনু। এই লকণে চৈত্ত মহাপ্ৰভু।

ভাল প্রভুক ন চিনিলা, আমি চিনায়া দিবো। রাত্রি চারি দণ্ড থাকিতে আসিবা। জে সম জগলাথর জলশভার বাছা হয়, সেই সময় প্রভু চৈতলা সমুদ্র প্রানক জায়; সেই বেলা মঠের দার মেলে। তোরা ছইজনে সেই বেলা দেখা পাইবা। এহি কথা শুনি চুয়োজনে চারিদণ্ড থাকিতে মঠের ছারেক গৈল ব্রক্ষহরিদাস বুলিল মহাপ্রভুক দণ্ডবত না করিবা এহি কথা শুনি শঙ্কর একদিসে রহিল। রামরাম পুরুমঠের হারত দণ্ডবত করিয়াছিল। সেই বেলা জগলাথের জলশভা বাছা হইল, তাকু শুনি চৈতলা মহাপ্রভু মঠর বাহির হয় সমুদ্র প্রানেক চলিল। অহি বাইতে রামরাম শুরুর সক্রত চরণ উঝাটি



## অসমীয়া গ্রন্থে শ্রীচৈততা ও তাঁহার পরিকরগণের কথা ৫৫১

লাগিল। ঈশরের চারি অক্ষরে নাম উচ্চারণ করিয়া সমুদ্র সানকে নড়িল। সেই চারি নামক রাম রাম মল বুলিল। শক্ষরে প্রভুক দেখি মনে দণ্ডবত করি খোজতে দণ্ডবত করিলা। পাছে হরিদাসেক বুলিলা তোমার প্রসাদে মহাপ্রভুর দরশন হৈলো। আমি ভোমাক কি দিম। আমিয়ো তোমার। আর প্রভুত পুছিবা কলিত ভক্তি কাহাত রহিবেক। আমাক কি আজ্ঞা হৈবেক। আমাকে প্রসাদ দিবে কে। এই কথা সকল কহিবা। হরিদাসে বুঝিল এ সকল কথার মহাপ্রভু ভ আজ্ঞা লয়া দিবো। তোরা স্নান করি আসিবা।

এহি স্থানি রামরাম শঙ্কর চুই জনে সমুদ্র স্নান পঞ্চীর্থ স্নান করিবেক। চৈতন্য প্রভুয়ো সান করি মঠের ভিতর ঘাইতে ব্রহ্ম হরিদাসে দণ্ডবতে পড়ি কথা কহে হে মহাপ্রভু চুইটি থিবেয়ে পোছে কলিত ভক্তি কাহাত রহিবেক, আমার কি গতি হৈবেক আমাক কি আজা হৈবেক, আমার প্রসাদ পাইবাক লাগে। এহি কথা তুনি প্রভু মনি-করত্বর জল ঢালিল, স্বারত ত্রকা হরিদাসে বুলিল। উচেত ভক্তি না রহে, হিনত ভক্তি রহিবেক। আর রামদেব শর্মাক শঙ্কর দাসক তুইখানি দেবলার মালা দিব। তুই জনেক আর জগতপতি জে নাম নামমালিকা পুস্তক সাত শত লোকের করাইবে তাক শহরদাসেক দিবা, সে দেশত প্রচারোক আর শঙ্কর দাসে ভাগবত জ্নিবেক আর রামদেব শর্মাকে শরণ ভজন হরি নামের প্লোক সকল দিবা, যেহি চার নাম পাইলো দেহি ব্লহ্মপুত্রেক তিনি নাম দিবেক। ব্রাহ্মণেক চারি নাম দিবেক। আর দামোদর আক্ষাণ পুষ্পাদণ্ড পারিষদ আহিছে আঞােকে সব ভঙ্গনের প্লোক দিব।" (বঙ্গায় সাহিত্য-পরিষৎ-পত্রিকা, ১७२१; ७, १९ : 05-02)।

নিম্নলিখিত কারণে এই বর্ণনা বিশ্বাসযোগ্য মনে হয় না। (১) উক্ত বর্ণনায় দেখা যায় যে শ্রীচৈতত্ত বলিতেছেন যে তিনি শুদ্রের মুখ দেখেন না। তাঁহার অনেক শুদ্র ভক্ত ছিল। তাহাদের সহিত তিনি ঘনিষ্ঠভাবে মিশিতেন। (২) প্রীরূপ, প্রবোধানন্দ, রঘুনাথদাস গোস্বামী প্রভৃতি প্রত্যক্ষদর্শীরা ঐতিচতত্ত্বের গলায় হরিনামের মালা থাকার কথা

বর্ণনা করেন নাই। যে সমস্ত গ্রন্থে শ্রীচৈতভাকে মালাতিলকধারী বলিয়া বর্ণনা করা হইয়াছে, সেগুলি পরবর্তীকালের। (৩) শঙ্করদেব যদি শ্রীচৈতভারে উপদেশ গ্রহণ করিয়া শ্রীমন্তাগবত রচনা করিতেন, তাহা হইলে তাহাতে শ্রীরাধার নাম থাকিত। শঙ্করের "দশমকার্তন" প্রভৃতি কোন গ্রন্থে রাধার নাম নাই। (৪) শ্রীচৈতভা ব্রাহ্মণের জভা একপ্রকার হরিনাম ও শ্রের জভা অভ্যপ্রকার হরিনাম উপদেশ দিবেন, ইহা একেবারেই সম্ভব মনে হয় না।

কৃষ্ণ ভারতীর সন্তনির্গাকে কেছ কেছ খুব প্রামাণিক মনে করেন। তারাপ্রসন্ন ভট্টাচন্ত্র মহাশয় বলেন যে সন্তনির্গয় খুঠীয় বোড়শ শতাব্দীর শেষভাগে রচিত হইয়াছিল; কারণ ভট্টদেব ঐ গ্রন্থ দেখিয়া "সংস্প্রান্য কথা" লিখিয়াছেন। কিন্তু আমার মনে হয় ঐ গ্রন্থথানি বেশী দিনের প্রাচীন নহে; কারণ উহাতে ভবিন্তপুরাণ, পন্মপুরাণ, গরুড়-পুরাণ, বহুলারদীয় পুরাণ প্রভৃতি হইতে প্লোক তুলিয়া প্রমাণ করা হইয়াছে যে শ্রীচৈত্ত্য ভগবান স্বয়ং। সনাতন, শ্রীজীব, গোপাল ভট্ট, কবিকর্ণপুর ও কৃষ্ণদাস কবিরাজ ঐ সমস্ত পুরাণ হইতে অনেক প্লোক উদ্ধার করিয়াছেন। যদি ঐ সমস্ত পুরাণে সতাই শ্রীচৈতত্যের ভগবতার কথা থাকিত, তাহা হইলে তাহারা শুধু শ্রীমন্তাগবতের ও মহাভারতের অস্পন্ট প্রমাণ তুলিয়া শ্রীচৈতত্যের ভগবতার হুগবতা স্থাপন করিতেন না। ঐ সমস্ত প্লোক পরবর্ত্তীকালে জাল করা হইয়াছিল।

সন্তনির্ণয়ে আরও পাওয়া যায় যে ঐতিচ্ছা জন্মগ্রহণ করিয়া তিন দিন পর্যান্ত মাতৃত্তা পান করেন নাই। পরে আছৈত আচার্যা আসিলে স্তনপান করেন। অভৈত আচার্যাই তাঁহার নাম চৈত্যা রাথেন। এইরূপ কথা অভৈতের প্রক্রিপ্ত জীবনীগুলিতে পাওয়া যায়। অভৈতের এক পুত্র আসামে যাইয়া প্রীচৈতন্তের ধর্মা প্রচার করিয়াছিলেন বলিয়া

চৈতজনগ্ৰেহং দুট্টা সংগ্ৰহং কৃষ্ণভাৱতে:। বুসিংহকুত্যমালোক্য কথ্যামি কথামিমাম্।

<sup>&</sup>gt; छड्डेटम्ब बटलन---

२ जन्मगाटबाई निमाहेरबाद नाम टेक्किक इब नाई। मह्मारमा ममय के नाम किनि अहन कविवाधिरणन।



অসমীয়াগ্রন্থে ঐাচৈতভা ও তাঁহার পরিকরগণের কথা

aa:

প্রবাদ আছে (রঞ্জপুর সাহিত্য-পরিষৎ-পত্রিকা, ১০১৯, পূ ১৮০)।
সম্ভবতঃ অবৈতের বংশধরদের নিকট কিংবদন্তী শুনিয়া কেহ কৃষ্ণ
ভারতীর নাম দিয়া সন্তনির্ণয় লিখিয়াছেন। স্বরূপ-দামোদরের কড়চার
কথা কৃষ্ণদাস কবিরাজ লিখিয়াছেন, কিন্তু বাজারে ঐ নামের একখানা
সহজিয়া বই পাওয়া যায়। সেইরূপ কৃষ্ণ ভারতীর নাম দিয়া কেহ
হর্মত ঐ গ্রন্থ রচনা করিয়াছেন। শ্রীতৈত্যচরিতামূতের বহু পরে
"সন্তনির্ণয়" রচিত হইয়াছিল বলিয়া আমার সন্দেহ হয়।

# শ্রীচৈতভার আসাম-ভামণ

শ্রীচৈতত কোন সময়ে আসামে গিয়াছিলেন বলিয়া প্রবাদ আছে। কয়েকথানি অসমীয়া, সংস্কৃত ও বালালা গ্রন্থে এইরূপ বর্ণনা আছে। কিন্তু শ্রীচৈতত্তের সাতথানি প্রাচীন জীবনীতে এ বিষয়ে ইঙ্গিত পর্যান্তও নাই।

ভট্টদেব তাঁহার "সৎসম্প্রদায় কথা"য় (পৃ° ৩০) ঐতিতভ্যের আসামভ্রমণ-সম্বন্ধে নিম্নোক্ত বর্ণনা দিয়াছেন—"পাছে মহাপ্রভূ তৈর পরা আসি
করতিয়ার তারে রহিলা। পাচে বেখন রাজা নরনারায়ণ এই উপর
দেশর পরা অনেক লোকক নমাই আনি শক্ষরক গোমোন্তা পাতি
রাজ্য বসাইবে দিছে মাত্র, তেখনে চৈতভ্যভারতী প্রভূ মাধনদর্শনে
মনিকৃটে আসিনা। বরাহক্তর উপরে গোঁকাত রহি মাধন দর্শন হৈল।
পাচে রত্নেশ্বর বিপ্রক শরণ লগাই ভাগবত পঢ়াই রত্নপাঠক নাম দি
মাধবর ভারত ভাগবত পঢ়িবে দিলা, আর যাত্রা মহোৎসব সঞ্চার্তন কর্মকো
মাধবরভারা প্রবর্তাইলা, পাচে মহাপ্রভূ পরশু কুঠারে যাই নামর নির্গয়
লিখি ব্রহ্মকৃত্তত স্নান করি উলটি আসি সেই গোঁকাতে রহিলা। পাচে
মাগুরির কন্টভূষণক আরু কবিশেখরক, কন্টহার কন্দলীক শরণ লগাই
ভাগবত পঢ়াইলা। পাচে হাতে বানা ধরি গাই নারদর শ্রেণ্ঠা দেখাইলা।
সেই বেলা দানোদরে মাধব দেখিতে মণিকৃটে যাই তাক্ষ দেখি ত্র্লভ

#### শ্রীচৈতগ্রচরিতের উপাদান

448

কিছে। আশীষ মাগোঁ। চৈত্য বোলে, কেনমতে তুমি দরিদ্র ভৈলা।
দামোদরে বোলে "স্বদেশের পরা নামি আহস্তে তাঁতীমরাত নৌকা বুরি
সর্বস্ব উটিল। তিনটি প্রাণী ঝাঁজিত ধরি দিগন্ধরে তরিলোঁ। পাতে
শক্ষরে বন্ত্র তিনধানি পরিধান করাই নিকটে রাখিছে। পাতে চৈত্য
বোলে, হে দামোদর নশ্বর বস্তুত খেদ ন করা। তুমি ঈশ্বরের পার্ষদ।
লক্ষ্মার কোপে গোঁতমর বংশত জ্বিছা। পুন তান করে তিনি পীঠত
পূজ্য তুই নিজ ঐশ্বর্যকে পাইবা। এই রহস্ত কহি তাক তথ্পান দি
উড়েষাক গৈলা।"

এই বিবরণে বিশাস না করিবার প্রধান কারণ এই যে গেট্ সাহেবের
মতে ১৫ ৩৪ খুক্টাব্দে ও গুণাভিরাম এবং রবিন্সনের মতে ১৫২৮ খুক্টাব্দে
রাজা নরনারায়ণ সিংহাসনাধিরোহণ করেন। গেট্ সাহেব বলেন যে
নরনারায়ণ ১৪৬৮ শক বা ১৫৪৬ খুক্টাব্দে আসাম আক্রমণ করেন।
শ্রীচৈতত ১৫৩০ খুক্টাব্দে তিরোধান করেন। স্থতরাং নরনারায়ণের
আসাম-আক্রমণের পরে শ্রীচৈতত্তের আসাম ভ্রমণ করা অসম্ভব হয়।

কৃষ্ণ ভারতীর "সন্তনির্ণয়ে" ঐতিচতত্ত-সন্ধন্ধে অনেক অপ্রামাণিক উক্তি আছে তাহা পূর্বেই দেখাইয়াছি। ঐ গ্রন্থে ঐতিচতত্ত্বর আসামন্ত্রমণ-সন্ধন্ধে আছে যে ঐতিচতত্ত্ব রন্দাবন হইতে কামরূপে মাধব দর্শন করিতে আগমন করেন। "ইতি কামরূপ দেশত যেমতে চৈতত্ত্য গোসাই প্রবর্তনি সম্প্রদায় ঈশ্বর ভক্তি পিণ্ড, শরণ, ভজন, হরিনাম, ভাগবত, গীতা, জাত্রা, মহোৎসব প্রবর্তিলা তাহান্ধ হ্বনা। এহি কামরূপদেশ প্রায় জন্ধল আছিল। আগাণ সজ্জন ন ছিল। পাছে নরনারায়ণ চিলা রায় ছভাই কামরূপর রাজা হইল। মাধবর থানর মঠ বান্ধেল। পাছে কামরূপ উক্ত দেখিরই তাতে মণিরামণ্বর কৈল্যাণপুর ব্রণ্যা ব্রক্ষপুর বেদর বরদ্যা এই সকল দেশর ব্রাহ্মণ, কায়ন্ত, কুলীন ভাতি মগি সকলক বসাইলেক। সেই বেলা রাম দামোদর, শঙ্কর, মাধব, হরিদেব কামরূপক

<sup>্</sup> বাজা নরশারায়ণ মাধনের মন্দিরের সমূখের যার্ট ১০০০ গুরাকো নির্মাণ করাইয়াছেন।
—সোনারাম চৌধুরী লিখিত "কামজলত কোচ রাজার কীন্তি চিন্" প্রবন্ধ, "চেণ্না" মাসিক পঞ্জিকা,
কান্তন ১৮৪০ শক্, ১৯২৪ গুরাধা।



অসমীয়াগ্রন্থে শ্রীচৈত্ত ও তাঁহার পরিকরগণের কথা

থাসিলা, দেব দামোদরের সত্রে তাতি মারাং নায় চুরি, সর্বাপ নষ্ঠ হইল, চারি প্রাণী মাত্র ঝাজিত ধরি রহিল। পাছে শঙ্কর রাম রাম গুরু মাধ্ব দরশন করিবাক আসিল। তাতে রত্ন পাঠকর মুখে ভাগবত শুনি রত্ন পঠকত স্থালা। হে গুরু কোন শাস্ত্র পড়া। পাছে রত্ন পাঠকে কহিলেক বোলে এই তো শ্রীভাগবত আমারই দেশত শ্রীচৈত্যা গোসাঞি প্লচারিল। আমাক কৃপাকরি মাধব ছ্য়ারে পাঠ করিবাক আজ্ঞা করিল। এতেকো আমি পড়ো। এহি কথা শুনি পুনু শঙ্করে গোমস্তায়ে সোধেবোলহ গুরু চৈত্য গোসাঞি কোন ঠায় থাকে আমি তঞ্জক দেখা পাঞো। এহি শুনি রত্ন পাঠকে বোলে চৈতন্ত গোসাঞি এই মাধবর মণিকৃটর গোফাতে আছিল। এখন জগলাথক গৈল। এহি কথা শুনি শঙ্কর গোনস্তা রাম রাম গুরু ছুই জনে আলচি বোলে গুরু চলা গঞা সান করি জগলাথ দরশন করি চৈত্য গোসাঞিক সেহি থানতে লগে পাইব।" মাধবের মন্দিরের সন্মুখের ঘর যদি রাজা নরনারায়ণ ১৫৫০ খুফাব্দে নির্মাণ করিয়া থাকেন ও তাহার পর শঙ্করের সহিত রত্ন পাঠকের কথাবার্তা হয়, তাহা হইলে এই সময়েরও পরে শঙ্কর কি করিয়া পুরীতে শ্রীচৈতভার দর্শন পাইবেন ? শ্রীচৈতভা ১৫৩৩ খৃষ্টাব্দে তিরোধান করিয়াছেন।

কৃষ্ণ আচার্য্য "সন্তবংশাবলী"তে নৃসিংহকুত্য নামে একথানি বইয়ের উপর নির্ভর করিয়া নিম্নলিখিত পদ লিখিয়াছেন। ইহাতে শ্রীচৈতত্যের আসাম-জমণের কথা পাওয়া যায়, কিন্তু তিনি কখন আসামে গিয়াছিলেন তাহা জানা যায় না।

তেব হন্তে প্রভু কামরূপে গৈয়া
মণিকৃট গীরি পাইলা।
বরাহ কুণ্ডর উপর গোঁফাত
টৈতভা প্রভু রহিলা।
রত্ন পাঠকক শরণ লগাই
ভাগবত পাঠ দিলা॥

শ্রীচৈত্রচরিতের উপাদান

440

মাগুরী গ্রামর কঠ ভূষণক
কঠহার কন্দলীক।
কবিচন্দ্র থিজক কবি শেখরক
চৈতন্ম নাম দিলেক॥
যাঞামনোসের সংকীর্তন ধর্ম্ম
মনিকৃটে প্রবর্তাই।

তৈর পরা আসি মৌন হয়া রৈলা ওড়েয়া নগর পাই॥ ৯৫-৯৫

কৃষ্ণ আচার্য্যের উক্তির সহিত সন্তনির্ণয়ের বর্ণনার মিল আছে। উভয় গ্রন্থেই পাওয়া যায় যে প্রীচৈতল বরাহকুণ্ডের উপর রত্নেশরকে 'শরণ' দেন, কণ্ঠভূষণকে ভাগবত পাঠের উপদেশ দেন ও কণ্ঠহার কন্দলিকে কুপা করেন। তারপর কবিশেখর ব্রহ্মাকে নামধর্ম দান করিয়া তথা হইতে উড়িল্যায় গমন করেন।

প্রত্যক্ষমিশ্র নামক কোন ব্যক্তির লেখা বলিয়া কথিত "এক্স-চৈতভোদয়াবলী" নামক সংস্কৃত গ্রন্থে আছে যে এটিতভা সন্ন্যাস-গ্রহণের পরেই শান্তিপুর হইতে এইটে গমন করেন।

এই বিবরণ সতা নহে; কেন-না শিবানন্দ সেন ও বাহুদেব ঘোষ শান্তিপুরে উপস্থিত ছিলেন ও তাঁহারা পদে লিথিয়াছেন যে ঐটচতশ্য শান্তিপুর হইতে সোজা নীলাচলে যান। ঐটচতশ্বের সমস্ত চরিতগ্রন্থেও শান্তিপুর হইতে নীলাচলে যাইবার কথা আছে।

আধুনিক অসমীয়া লেখক লক্ষ্মীনাথ বেজ্বরুয়া ভাঁহার "শ্রীশঙ্করদেব আরু শ্রীমাধবদেব" নামক প্রস্তে লিখিয়াছেন, "শ্রীচৈতক্সই দক্ষিণ প্রদেশত ধর্ম প্রচার করি তার পরা এবার মণিপুর লৈ আহি, ভাতো ধর্ম প্রচার করি সন্ধাসী বেশেয়ে আসমলৈ আহি হাজোতে কিছু

১ এই বিবরণ অচ্যত্তরণ তথানিথি মহালয় সতা বলিয়া মানিয়। লইয়াছেন। কিন্ত তিনি
"বীবোরাকের প্লাকল পরিবনণ" নামক এবে লিখিয়াছেন যে লীতেতল গ্রাম অধ্যাপকরপে নীতটো
বিয়াছিলেন, তথান চতী লিখিয়া দিয়াছিলেন—স্ল্যানের পর নহে।

অসমীয়া গ্রন্থে প্রীতৈত্তা ও ভাঁহার পরিকরগণের কথা ৫৫৭

দিন আছিল" (পৃ :২·)। দক্ষিণ-ভ্রমণের পরই শ্রীচৈতত্ত ভারতের পূর্ব্ব প্রান্তে স্থিত আসামে গিয়াছিলেন, এ কথার প্রমাণ কোন প্রাচীন গ্রন্থে পাই নাই বলিয়া ইহা বিশ্বাস করিতে পারিলাম না।

আমার মনে হয় ঐতিভত্ত কোন সময়ে আসামে গিয়াছিলেন। তিনি यपि उथाय একেবারেই না याইতেন, তাহা হইলে এতগুলি কিংবদন্তীর স্প্তি হইতে পারিত না।

হেমচক্র দেব গোসামী মহাশয় লিখিয়াছেন, "কামরূপ বিভাগে হাপে। অঞ্চলে মহাপ্রভু আদিয়াছিলেন এই জনশ্রুতি। হাজোতে মণিকুট নামে একটি ছোট পাহাড় আছে এবং তাহার শিখরদেশে হয়গ্রীব মাধবের দেবালয় প্রতিষ্ঠিত আছে। পাদদেশে একটি গহরর আছে এবং তাহার স্থিকটে বরাহক্ত। এই গহররটিকে লোকে 'চৈডল্য ধোপা' বলিয়া থাকে এবং চৈতল্পদেব কিয়ৎকাল এই গহবরে বাস করিয়াছিলেন বলিয়া নির্দেশ করিয়া থাকে" (বঙ্গায় সাহিত্য-পরিষৎ-পত্রিকা, ১৩২২; ৪, % २83-86) 1

শীটেততা যদি কোন সময়ে আসামে যাইয়া থাকেন, ভাহা হইলে বুন্দাবন হইতে ফেরার পথে তথায় যাওয়াই অধিক সম্ভব; কেন-না তাঁহার অভাভ সময়ের ভ্রমণের অনেকটা নির্ভরযোগ্য বিবরণ পাওয়া যায়: কিন্তু বুন্দাবন হইতে ফেরার পথে বারাণসীতে চুই মাস থাকার পর (চৈ° চ', ২া২৫)২ অর্থাৎ চৈত্র মাস পর্যান্ত থাকার পর তিনি কোন্ সময়ে পুরীতে ফিরিলেন তাহা জানা যায় না। ঐ সময়ে তাঁহার একবার আসামে যাওয়া অসম্ভব নহে।

# কবির ও ঐীচৈতহা

রামচরণ ঠাকুর লিখিয়াছেন যে যথন কবিরের মৃতদেহ লইয়া তাঁহার হিন্দু ও মুসলমান শিশুদের মধ্যে বিবাদ বাধে তখন শ্রীচৈততা আসিয়া ঐ শব কাঁধে করিয়া গঞ্চার জলে ভাসাইয়া দেন ; যথা-

> চৈত্তত্য গোসাই হেন কথা শুনিলন্ত। শীঘ্র বেগ করি তেঁহো খেদি আসিলন্ত ॥



400

#### শ্রীচৈতগাচরিতের উপাদান

কবিরর শব তুলি কান্ধত লইলন্ত। চৈত্ত গোসাই তান্ধ ভাসালা গন্ধাত॥ যবনর রাজা সুর্থান মহামতি। শুনিলম্ভ হেন যিটো কথাক সম্প্রতি ॥ চৈতত্ত্বক নিয়া পাছে স্থাধলন্ত কথা। কবিরর শব কিক বইলা তুমি তথা ॥ হেন শুনি বুলিলে চৈত্ত মহাবীর। কিছু ভাগৰত কথা শুনায় মহা ধীর॥ ব্রাহ্মণ ক্ষেত্রিয় আমি নহোঁ চারি জাতি। দশো দিশে গৈল দেখা আমার বিহাতি । চারিয়ে আশ্রমি দেখা মুহি কোহোঁ আমি। নোহে। ধর্মশীল দান ব্রত তীর্থ গামি॥ দৈৰকীর পুত্র যিটে। গোপী ভর্তা স্বামী। তাহার দাসর দাস দাস ভৈলোঁ আমি॥ \* শার্রমত দেখাই নৃপতির আগে কৈলা। অনন্তরে আপুনার ঘরে চলি গৈলা॥ ৩২৪৪-১৮ পয়ার

- ত্রগান—ফ্লডান
- ং উদ্ভূত অংশ নিমলিখিত সংস্কৃত লোকের অধুবাদ—

নাহং বিজ্ঞান চ নরপতিনাপি বৈছে। ন শুরো নো বা বণীন চ গৃহপতিনো বনছো যতিবা। কিন্ত আছেরিবিল-প্রমানল-পূর্ণাস্তাকে-গোলীভর্ত্ত পদক্ষলভোগাসবাদান্দান:। প্রভাবলী ১৪

এই লোকটি পভাবলীর ইণ্ডিয়া আফিনের পুথিতে, এনিঘটিক দোনাইটিতে ব্লিড ছুইগানি পুথিতে ও চাকা বিশ্ববিভালয়ের ০০২৮ সংখ্যক পুথিতে শীহৈতজ্ঞের রচনা বলিয়া উলিখিত হুইয়াছে। কিন্তু ডা" পুশীল-কুমার বে মহালয় উহার বচনিতা অজ্ঞাত বলিচাছেন। (ডা" দে, পভাবলী, ১৪ সংখ্যক প্লোক প্লোক ও তাহার পার্যটার।) জয়ানন্দ, ৮০ পূ", উহা শীহৈতজ্ঞ-কর্ভুক কথিত বলিয়াছেন। প্রাচীন অসমীয়া প্রস্তেও উহা শীহৈতজ্ঞের উক্তি বলিয়া পাওছা থাইতেছে। নেই অস্ত্র এটিকে কুফ্যান করিবাল শিকাইকের মধ্যে না ধরিকেন্ত শীহৈতজ্ঞের বচনা বলিয়া অনুমান করি।

অসমীয়াগ্রন্থে শ্রীচৈতত ও তাঁহার পরিকরগণের কথা ৫৫৯ কবির ১৫১৮ থুন্টাব্দে পরলোকে গমন করেন বলিয়া কথিত হয়। শ্রীচৈততাচরিতামূতের বিবরণ (২০১১২৭৯ ও ২০১৭২) বিশাস করিলে বলিতে হয় যে শ্রীচৈততা তাঁহার সন্নাসের ষষ্ঠ বর্ষে অর্থাৎ ১৫১৫ গৃষ্টাব্দে

শরৎকালে বৃদ্ধাবন অভিমুখে যাত্রা করেন ও ১৫১৬ খৃষ্টাব্দের কাল্পন ও চৈত্র মাসে কাশীতে ছিলেন। ১৫১৬ ও ১৫১৮ খৃষ্টাব্দের মধ্যে ব্যবধান বেশী নহে। চরিতামতের বিবরণ অথবা কবিবের মৃত্যুর তারিখ-নির্দ্ধেশে তুই-এক বংসর এদিক ওদিক হওয়া বিচিত্র নহে। স্তরাং কাল-হিসাবে

এ ঘটনা ঘটা অসম্ভব নহে।

শ্রীতৈতত্ত্বের কাশী-জমণের তারিখের সহিত কবিরের মৃত্যুর তারিখ ও শ্রীতৈতত্ত্বের স্থাসিক একটি উক্তির সহিত রামচরণ ঠাকুর-বার্ণত শ্রীতৈতত্ত্বের কথার মিল পাওয়া যাইতেছে। রামচরণ ঠাকুর ঘটনাটিকে সত্য প্রমাণ করার জন্ম বলিয়াছেন—

> মাধব দেবর মুখে যিমত শুনিলোঁ। তান বাক্য পালি মই তেহুয় লিখিলোঁ॥ ৩২৬৩ পয়ার

রামচরণ ঠাকুরের শঙ্করচরিত হইতে সেকালের ভ্রমণ-বুরান্ত-সম্বন্ধে একটি প্রয়োজনীয় তথা পাওয়। যায়। গয়া হইতে দশ দিন হাঁটিয়া শঙ্কর গঙ্গা-তারে পৌছিয়াছিলেন; গঙ্গাতার হইতে একুশ দিনে শ্রীক্ষেত্রে গিয়াছিলেন (১৮৩১ পদ)। ইহা হইতে শ্রীচৈতক্তের গমনাগমনে কত দিন লাগিয়াছিল ভাহার একটা ধারণা করা ঘাইতে পারে।

# রূপ-সনাত্ন-সম্বন্ধে নৃত্ন কথা

উক্ত লেখক রূপ-সনাতন-সম্বন্ধে কয়েকটি নৃতন কথা বলিয়াছেন।
শঙ্কর যথন প্রথমবার ভীর্থভ্রমণে যান, তখন শ্রীক্ষেত্র হইতে আড়াই
মাস চলার পর ভাহার সহিত রূপ-সনাতনের দেখা হইয়াছিল।

শ্রীটেডন্সচরিতের উপাদান 400

সে সময়ে দুই ভাইয়ের হাতে মন্দির। (বাছায়ন্ত) ছিল। শক্ষর বলিতেছেন—

তোরা হুই ভাই আইলা কিবা লই

হাতত মন্দিরা আছে।

কিবা ধর্ম্ম তোর। সকলে আচর।

কৈয়ে। মোক সাঁছে সাঁছে॥

রূপ বোলে চাই কি কৈবে৷ গোসাঁঞি

তুমি জগতর নাথ।

ছন্ম রূপ ধরি আসিছা শ্রীহরি

ন করা মোক অনাথ।

—রামচরণ ঠাকুর, ১৯২১

শঙ্করের সহিত সাক্ষাংকারের বলেই দুই ভাই সংসার ত্যাগ করেন; যথা---

প্রভাততে পাছে লরিল শঙ্কর

ত্রই ভায়ো এডিলা ঘর।

রূপের যে ভার্য্য। পর্মা হুন্দরী

করন্ত বহু কাতর॥ ১৯২৫

শঙ্কর কুপা করিয়া রূপের ভার্যাকেও সঙ্গে লইলেন। তিনি বলিলেন—

আনাসহি কগা

এন্তে মহাধ্যা

শান্তি মাঝে অগ্রগণী।

রক্স হয়৷ চাই আসিবে ও ভাই

মাতিলন্ত হেন শুনি॥

আসোক বুলিয়া তান নিজ জায়৷

পাছে লগ করি নিল।।

পরম কৌতুকে শ্রীমন্ত শঙ্কর

উত্তম তীৰ্থ দেখিলা। ১৯২৭-২৮



অসমীয়া এতে ঐতিচতত ও তাঁহার পরিকরগণের কণা ৫৬১
শঙ্করের সঙ্গে রূপ-সনাতন সীতাকুণ্ডে গিয়াছিলেন। কয়েকটি তীর্থ-ভ্রমণের
পর শঙ্করদেব রূপ-সনাতনকে বিদায় দেন; যথা—

বিদায় করিয়া রূপ-সনাতন গৈল। শক্তরর চরণর ধূলা মুটি লইল॥ ১৯৫৫ পয়ার

ভূমণ বিজ্ঞকবি যে ভাবে রূপ-সনাতনের প্রসন্থ লিখিয়াছেন, তাহাতে মনে হয় না যে শক্ষর তাঁহাদিগকে কুপা করিয়াছিলেন। ভূষণ বলেন যে আলিনগরে এক সন্ন্যাসী শক্ষরকে রূপ-সনাতনের কথা বলিয়াছিলেন; যথা—

ছইকো ছই আপুনার নাম কহিলন্ত।
সন্মাসী বোলন্ত মোর শুনিও রুক্তান্ত॥
আছা রূপ সনাতন পরম ভকত।
বৈরাগ্য তেজিলা রাজ্যভোগ আছে যত।
বুন্দাবনে আনন্দে আছন্ত ছই ভাই।
হাতত মন্দিরা কুফা-লীলা গুণ গাই॥
কেবল ভক্তির ভাগ কহিলা যুগুতি।
অনন্তরে শঙ্করে পুছিলা তাঙ্ক মাতি॥
৫৬১-৬০ প্যার

রূপ ও সনাতন তাঁহাদের গ্রন্থাদিতে ঐতিতত্তকে বন্দনা করিয়াছেন;
শঙ্করের কথা কোথাও প্রথম করিয়া বলেন নাই। ঐরপের বিদশ্ধনাধব নাটকের প্রস্তাবনায় সূত্রধার বলিতেছেন—"অভাহং প্রপ্রান্তরে
সমাদিটোহিন্ম ভক্তাবতারেণ ভগবতা ঐশঞ্জরদেবেন।" ভক্তাবতার
ভগবান শঙ্করদেব স্বপ্নে আদেশ দিয়াছেন যে মুকুন্দের লীলাকাহিনী
বর্ণনা করিয়া বিভিন্ন দেশ হইতে সমাগত ভক্তদের প্রাণ রক্ষা কর।
"ভক্তাবতার শঙ্করদেব" বাক্য দেখিয়া মনে হয় এখানে আদামের
মহাপুরুষ শঙ্করদেবকেই বুঝি লক্ষা করা হইয়াছে। কিন্তু টাকাকার
বিশ্বনাথ চক্রবর্তী উদ্ধৃত অংশের ব্যাখ্যায় বলিয়াছেন—"ঐশঞ্করদেবেনেতি
অক্ষকুণ্ডতীরবর্ত্তিনা গোপীশ্বরনাম্না।" বিদশ্ধমাধ্যে মাধুর্যা রস ফুটাইয়া

442

#### শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

তোলা হইয়াছে; শঙ্করদেব জ্ঞানমিশ্রা ভক্তির উপদেশ্টা, দাস্থ ভক্তির উপাসক; তিনি যে এইরূপ নাটক লিখিতে আদেশ দিবেন সে সম্ভাবনা অল্ল।

রামচরণ ঠাকুর ও ভূষণ ঐর্কাবনধামবাসী একজন র্কাবনদাসের নাম করিয়াছেন। শঙ্কর মাধবকে র্কাবন ঘাইতে বলিয়া বলিতেছেন—

> রন্দাবনদাস আছে তাহাক দেখিবা। তইমুই মোর কথা প্রমাণ করিবা। কেবল ভক্তির ভাব কহিয়াছো আমি। হোবে নহে তাক গৈয়া স্থাধি চাইয়ো তুমি।

> > —রামচরণ, ৩১৩১ পথার

ভূষণ বলেন—

আসা একে লগে সবে যাঞো বৃন্দাবন।
আছা বৃন্দাবনদাস হইবো দরিশন॥
যি সব ভক্তির ভাব করিবোঁ বেকত।
তই মুই পুছি তান্তে লৈবোঁহো সম্মত॥

ভূষণ, ৫৭৩-৭৪ পয়ার

এই বৃন্দাবনদাস শক্ষরের অপেকা বয়োজ্যেষ্ঠ ও বৃন্দাবনবাসী, শুতরাং ইনি ঐতিচতভাগবতের লেখক হইতে পারেন না। ঈশ্বরদাসের চৈতভা-ভাগবতে আছে যে ঐতিচতভার পুরী যাওয়ার পরেই একজন বৃন্দাবনদাস হস্তীকে হরিনাম দিবার জভা মন্ত বলরামকে অন্মরোধ করিয়াছিলেন (৪৭ অধ্যায়)। সম্ভবতঃ ঐতিচতভার পরিকরগণের মধ্যে ঐতিচতভা-ভাগবতের লেখক ভিন্ন অন্ত একজন বৃন্দাবনদাস ছিলেন।



# সপ্তদশ অধ্যায়

# সতীক হিন্দী ও বাঞালা ভক্তমাল নাভাজী ও প্রিয়াদাস্জী

রামানন্দী সম্প্রদায়ের অন্তর্ভুক্ত অগ্রদাস স্বামীর শিশু নাভাদাসজী হিন্দী ভাষায় অতান্ত সংক্ষেপে ভক্তমাল গ্রন্থ প্রণয়ন করেন। তিনি নিজে বুন্দাবনবাসী প্রিয়াদাসজীকে ঐ গ্রন্থের টাকা লিখিতে বলেন। প্রিয়াদাসজী লিখিয়াছেন যে তিনি যখন প্রীচৈতন্ত মহাপ্রভুর চরণ ধ্যান করিয়া নামগান করিতেছিলেন তখন নাভাজী আসিয়া তাঁহাকে ভক্তমালের টাকা লিখিতে আজ্ঞা দেন; যথা—

মহাপ্রভু কৃষ্ণ চৈত্ত মনহরণজুকে
চরণকো ধ্যান মেরে নাম মুখ গাইয়ে।
তাহী সময় নাভাজু নে আজ্ঞা দই
লই ধারি, টাকা বিস্তারি ভক্তমালকী স্থনাইয়ৈ॥
—লক্ষেমী নওলকিশোর প্রেস সংকরণ, পৃত ৪

প্রিয়াদাসাজী লিখিয়াছেন যে তিনি ১৭৬৯ সংবতে অর্থাৎ ১৭১৩ খুফ্টান্দে ঐ টাকা সমাপ্ত করেন (পৃ° ৯৪১)। তাঁহার সহিত যদি নাভাজীর সাক্ষাৎকার হইয়া থাকে, তাহা হইলে নাভাজী সপ্তদশ শতান্দার মধ্য বা শেষ ভাগে গ্রন্থ লিখিয়াছিলেন বলিতে হয়। গ্রিয়ারসন্ সাহেব বলেন যে ভক্তমাল সপ্তদশ শতান্দার প্রথম ভাগে লিখিত হইয়াছিল (J.R.A.S., 1909, p. 610)। সপ্তদশ শতান্দার প্রথম ভাগে গ্রন্থ লিখিত হইলে অফ্টাদশ শতান্দার প্রথমে নাভাজীর পক্ষে প্রিয়াদাসকে টাকা লিখিতে আদেশ দেওয়া সম্ভব হয় না।



প্রিয়াদাসজীর উলিখিত উক্তি হইতে বুঝা যায় যে তিনি শ্রীকৃষ্ণচৈতন্তের ভক্ত ছিলেন ও তাঁহার গুরুর নাম ছিল মনোহর। ১৬৯৬
থুকীকে যে মনোহরদাস "অনুরাগবল্লী" শেষ করেন তিনিই সম্ভবতঃ প্রিয়াদাসজীর গুরু। এরূপ অনুমানের কারণ ছুইটি। প্রথমতঃ প্রিয়াদাসজীর
টীকায় পাওয়া যায় যে তাঁহার গুরু কবি ছিলেন (পৃ ৯০৯) ও বৃদ্দাবনে
বাস করিতেন। অনুরাগবল্লীতেও দেখা যায় যে মনোহরদাস কবি ও
বৃদ্দাবনবাসী। দিতীয়তঃ বাদালা ভক্তমালের লেখক কৃষ্ণদাস বা লালদাসজী বলেন যে প্রিয়াদাসজী শ্রীনিবাস আচার্য্যের পরিবারভুক্ত ছিলেন
(বহুমতী সংকরণ, বাদালা ভক্তমাল, পৃ ৩)। মনোহরদাস নিজেকে
শ্রীনিবাস আচার্যের শালক রামচরণ চক্রবর্তীর প্রশিশ্য ও রামশরণ
ভট্টাচার্য্যের শিশ্য বলিয়া প্রকাশ করিয়াছেন (অনুরাগবল্লী, অন্তম মঞ্জরী,
পৃ ৪৯)। একই মুগে, একই স্থানে শ্রীনিবাস আচার্য্য-পরিবার ভুক্ত
মনোহর নামে ছইজন কবি থাকার সম্ভাবনা অল্ল বলিয়া আমার মনে হয়
যে অনুরাগবল্লীর লেখক ঐ প্রিয়াদাসজীর গুরুত।

হিন্দী ভক্তমালে শ্রীকৃষ্ণ-চৈত্র ও তাঁহার পনের জন পরিকর ও শ্রামানন্দের শিশ্র রসিকমুরারির নাম ও গুণ বর্ণিত আছে। নাভাজীর মূল প্রন্তে বিষ্ণুপুরী, রঘুনাথ গুদীই, নিত্যানন্দ, শ্রীকৃষ্ণ-চৈত্র, শ্রীরূপ, সনাতন ও শ্রীজীবের নামে ছপ্লয় আছে, আর গোপাল ভট্ট, লোকনাথ, মধু গুদীইজী, কৃষ্ণদাস ব্রন্থচারী, কৃষ্ণদাস পগুতি, ভূগর্ভ, কাশীশ্রর, প্রতাপরুদ্র ও প্রবোধানন্দ সরস্বতীর নাম মাত্র উল্লেখ আছে। প্রিয়াদাসজী উল্লিখিত প্রত্যেক ভক্তেরই মহিমা বর্ণনা করিয়াছেন।

নিত্যানন্দ ও শ্রীকৃষ্ণ-তৈতগ্র-সম্বন্ধে নাভাজী লিখিয়াছেন:

নিত্যানন্দ কুষণচৈতত্ত্ব কী। ভক্তি দশোদিশি বিস্তরী॥ গৌড়দেশ পাখণ্ড মেটিকিয়ৌ ভক্তনপরায়ণ। করুণাসিন্ধু কুতজ্ঞ ভয়ে অগণিত গতিদায়ন॥



# সটাক হিন্দা ও বালালা ভক্তমাল

050

অবতার বিদিত পূরব মহা উভে মহত দেহা ধরা। নিত্যানন্দ কুষ্ণচৈত্ত কা ভক্তিদশোদিশি বিস্তরী॥

-90 aco

# লালদাসজী ইগার ভাবার্থ লইয়া লিখিয়াছেন :

নিতানন্দ শ্রীকৃষ্ণ-চৈতন্ত ভক্তিরসে।
দশদিক্ নিস্তারিয়া অনঙ্গল নাশে ॥
কৃষ্ণভক্তিহীন গৌড়দেশ যে পাষ্ড।
দলন করিল দিয়া ভক্তি তীক্ত দণ্ড॥
সবাই ভক্তনপরায়ণ মতি হইল।
করণাসাগর অগতির গতি ভেল॥
দশরস ভাবাক্রান্ত মহান্ত সক্তনে।
চরণ উপাসে ভিক্তে প্রেম-বরিষণে॥
কৃষ্ণ আর শ্রীকৃঞ্জ-চৈতন্ত নাম লৈতে।
মুক্ত হৈল সভে ভবরগতি হৈতে॥

-30 >0

নাভাজা শ্রীকৃষ্ণ-চৈতত্যকে পূর্বেদেশে বিদিত অবতার বলিয়াছেন। কিন্তু প্রিয়াদাসজী তাঁহাকে "যশোমতীসূত সেই শচীসূত গৌর ভয়ে" ব লয়া শ্রীকৃষ্ণের সহিত অভিন্নরূপে বর্ণনা করিয়াছেন।

নাভাজী বিষ্ণুপুরীর গুণ-বর্ণনা-শ্রসঙ্গে শ্রীটেতত্যের নাম করেন নাই (পৃত ১৮৪)। বাজালা ভক্তমালেও বিষ্ণুপুরীর সহিত শ্রীটেতত্যের সম্বন্ধ বর্ণিত হয় নাই। কিন্তু প্রিয়াদাসজী লিখিয়াছেন:

> জগন্নাথ ক্ষেত্রএ মাঝ বৈঠে মহাপ্রভুজু বে চহুঁ ঘোর ভক্তভূপ ভার অতি ছাই হৈ। বোলে বিষ্ণুপুরী পুরী কাশী মধ্য রহৈ জাতে জানিয়ত মোক্ষ চাহনীকী মন আইহৈ।

455



#### খ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

লিখা প্রভু চিটা আপু মণিগণ মালা এক দিজিএ পঠাই মোহি লাগতা হুহাই হৈ। জানি লই বাত, নিধি ভাগবত রত্নাদাম দই পঠৈ আদি ভুক্তি খোদিকৈ বহাই হৈ॥ পৃ° ৩৮৫

প্রিয়াদাসের টিপ্লনীকার সীতারামশরণ রূপকলাজী মহাপ্রভু অর্থে শ্রীকৃষ্ণচৈতন্ত বুঝিয়াছেন। লালদাস মহাপ্রভু অর্থে জগলাথ বুঝিয়াছেন।
হয়ত কবিকর্ণপূরের গৌরগণোদ্দেশদীপিকায় বিষ্ণুপুরীকে জয়ধর্মের
শিশ্বরূপে বর্ণিত দেখিয়া লালদাস ঐরূপ অর্থ করিয়াছেন। তাঁহার
অনুবাদ যে ক্ষকল্পনাপ্রসূত তাহা নিম্নোদ্ধত অংশ হইতে বুঝা যাইবে:

পুরুষোত্তমে জগন্নাথ হয়ে মহারক্ষী। শ্লেষ করি পুরী প্রতি কৈলা এক ভঙ্গী॥ সেবকগণেরে প্রভু আদেশ করিলা। বাঙ্গ কিছু পুরী প্রতি কহিতে কহিলা॥

জ্ঞানাথবিগ্রহ-সেক্তদের দ্বারা বিষ্ণুপুরীকে ব্যঙ্গ করাইবেন ইহা অপেকা শ্রীতৈতভাদেব বিষ্ণুপুরীকে পত্র লিখিবেন ইহাই বেশী সম্ভব।

নাভাজীর গ্রন্থ হইতে জানা যায় যে রঘুনাথদাস গোস্বামীকে উৎকল-বাসীরা "গরুড়জী" বলিতেন, কেন-না তিনি জগলাথের অগ্রে গরুড়ের হ্যায় দাঁড়াইয়া থাকিতেন (পৃ° ৫৫৭)। এই কথাটি গৌড়ীয় বৈষ্ণব সাহিত্যে পাওয়া যায় না। প্রিয়াদাসজী বলেন যে দাসগোস্বামী শ্রীচৈতক্তের আজ্ঞা পাইয়া বুন্দাবনের রাধাকুণ্ডে বাস করিতে আরম্ভ করেন।

ভক্তমালের মূল ও টাকায় রূপ, সনাতন ও শ্রীজীব-সন্থরে বিশেষ কিছু নৃতন সংবাদ নাই। প্রিয়াদাসজী লিখিয়াছেন যে কবিকর্ণপূর ওঁসাই বৃন্দাবনে শ্রীরূপের সহিত সাক্ষাৎ করিতে আসেন। তাঁহার গায়ে যখন শ্রীরূপের নিংখাস পড়িতেছিল তখন মনে হউতেছিল যে আওনের হল্ক। দিতেছে। প্রেমবশেই শ্রীরূপের নিঃখাসবায় এরূপ উত্তপ্ত হইয়াছিল (পু ৬০০)।



#### স্টাক হিন্দা ও বাঞ্চালা ভক্তমাল

প্রিয়াদাসকা লিখিয়াছেন যে লোকনাথ গোস্বামী ভাগবতগান কার্ত্রন করিতেন ও ভাগবত-পাঠককে প্রাণতুলা মনে করিতেন (পূ ৬২৩)। ভূগর্ভ গোস্বামী রুদ্দাবনের গোবিন্দ-কুঞ্জে বাস করিতেন (পূ ৬২৩)। কানীখর গোস্বামী শ্রীচৈতত্যের আজ্ঞা পাইয়া নীলাচল হইতে রুদ্দাবনে আসিয়াছিলেন ও গোবিন্দের সেবার অধিকার পাইয়াছিলেন (পূ ৬৪০)। প্রভাপরুদ্র-সম্বন্ধে প্রিয়াদাস লিখিয়াছেন যে রাজ্ঞা যখন কিছুতেই শ্রীচৈতত্যের কুপা পাইলেন না, তখন একদিন প্রভুর রখাগ্রে নৃত্যের সময় তিনি তাঁহার চরণে পতিত হইলেন। প্রভু তাঁহাকে উঠাইয়া বুকে ধরিলেন ও প্রেমসমুদ্রে নিয়য় করিলেন (পূ ৬৫৬)।

নাভাজী শুধু প্রবোধানন্দ সরস্বতীর নাম করিয়াছেন। প্রিয়াদাস তাঁহাকে চৈতক্তচন্দ্রের কাপাপ্রাপ্ত ও বৃন্দাবনবাসী বলিয়াছেন। প্রবোধা-নন্দের গ্রন্থ শুনিয়া "কোটি কোটি জন রন্ধ পায়ো" (পুটি ৮৯৯)।

কিন্তু বাজালা ভক্তমালে প্রবোধানন্দকে প্রকাশানন্দের সহিত অভিন বলা হইয়াছে; যথা—

> প্রকাশানন্দ সরস্বতী নাম তাঁর ছিল। প্রভুই প্রবোধানন্দ বলিয়া রাখিল॥ পৃ<sup>০</sup> ৩০ ৭

প্রকাশানন্দ যদি প্রবোধানন্দ হইতেন তাহা হইলে সে কথা কবিকর্ণপূর, বৃন্দাবনদাস, কৃষ্ণদাস কবিরাজ প্রভৃতি উল্লেখ করিতেন। বোধ হয় অফ্টাদশ শতাব্দার মধ্যভাগে গৌড়ীয় বৈষ্ণব সম্প্রদায় কেশব কাশ্মীরী ও বৈদান্তিক প্রকাশানন্দ সরস্বতীকে স্বসম্প্রদায়ভুক্ত প্রমাণ করিবার চেফ্টা করিয়াছিলেন। তাহার ফলেই বাঙ্গালা ভক্তমালে ঐরপ উক্তি স্থান পাইয়াছে।

#### লালদাদের ভক্তমাল

বাঙ্গালা ভক্তমাল হিন্দী ভক্তমালের কিয়দংশের মাত্র অনুবাদ। বাঙালা ভক্তমালের লেখক কুফদাস বা লালদাস। ঐ গ্রন্থকার ১৬৮৪ শকে বা

#### ঐতিভভাচরিতের উপাদান

১৭৬২ গুষ্টাব্দে উপাসনাচক্রামৃত রচনা করেন (উপাসনাচক্রামৃত, পৃ<sup>2</sup>১৯০)। তিনি নিজের গুরুপ্রণালী নিম্নলিখিতভাবে দিয়াছেন

গোপালভট্ট— শ্রীনিবাস আচার্য্য – গোবিন্দ চক্রবর্ত্তী—তৎপত্নী গৌরাঙ্গ বল্লভা –কিশোরা ঠাকুরের পত্নী শ্রীমতী মঞ্জরী—নয়নানন্দ চক্রবর্ত্তী— লালদাস ( ঐ, পু<sup>2</sup> ২ )।

লালদাস তৃতীয় মালায়, গৌরাজ-পার্যদগণের তত্ত ও গুরুপ্রণালী বর্ণনা করিয়াছেন। ইহা মূল ভক্তমালে নাই। তিনি হরিদাস বৈরাগী (পূ ১৭৭), গোবিন্দ কবিরাজ (পূ ২২৩), চান্দ রায় (পূ ২২৬), ভাইয়া দেবকীনন্দন (পূ ২২৭), রামচন্দ্র কবিরাজ ও পুঁটিয়ার রাজা রবীন্দ্রনারায়ণ রায়ের জীবনচরিত নিজে লিখিয়াছেন, উহা মূলে বা টীকায় নাই।

# পাঞ্জাব, মূলতান ও গুজরাতে শ্রীচৈতন্মের প্রভাব

মূল ভক্তমালে (পূ" ৬৬২) গুপ্তামালী নামে একজন বৃন্দাবনবাসী ভক্তের কথা আছে। কিন্তু বাঙ্গালা ভক্তমালে কৃষ্ণদাস গুপ্তামালী নামে একজন পাঞ্জাবী ভক্তের কথা আছে। খ্রীচৈততা যথন বৃন্দাবনে গমন করেন তথন পাঞ্জাবী কৃষ্ণদাস তাঁহার খ্রীচরণ দর্শন করেন। প্রভু তাঁহাকে নিজের গলা হইতে গুপ্তামালা প্রদান করেন ও তাঁহার নাম দেন গুপ্তামালী।

क्कनाम खळागाली -

প্রথমে মূলতান গিয়া সেবা প্রকাশিয়া। লোক নিস্তারিল ক্ষডক্তি প্রচারিয়া।

চৈতত্ত ভজ্যে লোক তাঁর উপদেশে। প্রভুর দোহাই যে ফিরিল দেশে দেশে॥

মূলতান হইতে তিনি গুজরাতে যাইয়া "শ্রীচৈততা বিগ্রহ তথায় প্রকাশ



#### সটাক হিন্দা ও বাঙ্গালা ভক্তমাল

করিল।" গুজরাতে প্রভুর গাদি বড় গৌড়ীয়া নামে পরিচিত হয়।
তারপর অন্তৈত প্রভুর শাখাভুক্ত চক্রপাণি আর এক স্থানে সেবা প্রকাশ
করেন এবং সেই গাদির নাম হয় ছোট গৌড়ীয়া। গুজরাত হইতে
গুঞামালী পাঞ্জাবে আদেন ও ওলন্ধা গ্রামে সেবা প্রকাশ করেন। তথা
হইতে সিন্ধুদেশে যাইয়া

হিন্দু ত যতেক ছিলা বৈক্ষৰ করিলা। মোছলমান যত ছিল হরিভক্ত কৈলা।

তারপরে পাঞ্জাব মূলতান গুজরাত।
স্থরত আদি দেশে প্রভু চৈতন্য ভকত॥
ক্রমে ক্রমে দিল সব শ্রীচৈতন্য দায়।
নিত্যানন্দ প্রভুর সন্তানের শিশ্র হয়॥
কথোক শ্রীপণ্ডিত গোস্বামী পরিবার।
শ্রীঅন্তৈত পরিবার হয়ে বহুতর॥
তবে গুঞ্জামালী সর্ব্ব বিষয় তেজিয়া।
বুন্দাবনে বাস কৈলা একাকী হইয়া॥

কুঞ্চদাস গুঞ্জামালার প্রেমধর্ম-প্রচারের এই বিবরণের ঐতিহাসিক সত্যতা কতদূর তাহা নির্ণয় করা চরহ। এরূপ একজন ভক্তের নাম ও প্রচার-কার্য্যের কথা কোন চরিতগ্রন্থ ও বৈশ্বব-বন্দনায় না থাকা খুবই বিশ্বয়ের কথা। তবে ইহাও ঠিক যে প্রীচৈতগ্রের সাতথানি প্রাচীন চরিতগ্রন্থে অ-বাঙ্গালা ভক্তদের কথা খুব অল্লই আছে। গুঞ্জামালার প্রচারকার্যা-বর্ণনায় লালদাস অতিশয়োক্তির আশ্রয় লইলেও লইতে পারেন; কিন্তু এ কথা জাের করিয়া বলা চলে যে অফ্টাদশ শতাব্দার মধ্যভাগে যখন বাঙ্গালা ভক্তমাল লিখিত হয়, তখন মূলতান, পাঞ্জাব, সিন্ধুদেশ ও গুজরাতে বহু ব্যক্তি গৌড়ায় বৈক্ষব সম্প্রদায়ের শিশ্ব হইয়াছিলেন। তাহা না হইলে ঐ গ্রন্থে এরূপ বিবরণ স্থান পাইত না।

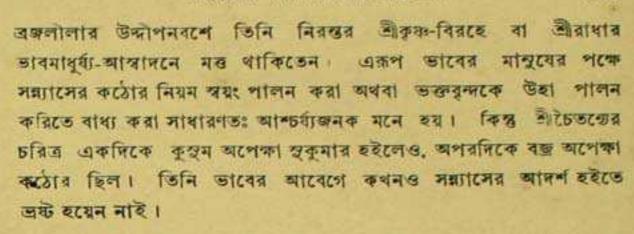
# অফ্টাদশ অধ্যায়

# সভাবের আদর্শ-রকায় ঐটেচতব্য

প্রাক্-ব্রিটিশ যুগে শ্রীচৈত্য-সম্বন্ধে যে সকল প্রামাণিক গ্রন্থ লিখিত হইয়াছিল ভাহাতে ত্রীচৈততা মহাপ্রভুকে সন্নাসের কঠোর ব্রভ রক্ষায় নিয়ত যতুবান দেখা যায়। কৃষ্ণদাস কবিরাজের শিশ্য বলিয়া পরিচিত মুকুন্দ বৈঞ্ব সহজিয়া সম্প্রদায়ের অন্ততম প্রতিষ্ঠাতা। তিনি তাঁহার "সিদ্ধান্তচন্দোদয়" প্রন্থে বিঅমঙ্গল, জয়দেব, রায় রামানন্দ প্রভৃতিতে পরকীয়া সাধন আরোপ করিলেও, এীচৈততা মহাপ্রভুর নির্মাল চরিত্রের উপর কোনরূপ কটাক্ষ করিতে সাহসী হন নাই। কিন্তু পরবর্তী যুগের কয়েকথানি অজ্ঞাত, অখ্যাত বইয়ে দেখা যায় যে সহজিয়ারা শ্রীচৈতত্ত মহাপ্রভুকেও রেহাই দেয় নাই।<sup>3</sup> এই সকল বইয়ের লেখকদের নাম পাওয়া যায় না ; ঐগুলির রচনার তারিখ স্থির করাও অসম্ভব। ভাষা দেখিয়া মনে হয় ঐগুলি গত একশত বৎসরের মধ্যে রচিত হইয়াছে। এরপ বইয়ের বর্ণনার সহিত জীচৈতভ্যের সমসাময়িক গ্রন্থের বর্ণনার বিরোধ দেখা গেলে উহাকে অবশাই অগ্রাহ্ম করিতে হয়। ঐীচৈতব্যের প্রামাণিক জীবনীসমূহে তাঁহার সন্নাস-নিষ্ঠা কি ভাবে চিত্রিত হইয়াছে ভাহার পরিচয় দিলেই পূর্বেলাক্ত অবলাচীন ও অপ্রামাণিক বইগুলির অশ্লীল ও অনিষ্টকর ইঞ্চিতের প্রকৃষ্ট খণ্ডন হইবে।

শ্রীচৈত্ত ভাবের মাসুষ। ভাবের আবেগে তিনি সমুদ্রকে যমুনা মনে করিতেন, বালুকাস্থপকে গিরিগোবর্দ্ধন ভাবিতেন, গোচারণের মাঠে রাথাল-বালকদিগকে দেখিয়া অঞ্জের গোপ বলিয়া আলিক্ষন করিতেন।

<sup>&</sup>gt; বিবর্জ-বিলাস প্রস্ক, বৈজব ও ককির সম্মান্তের নিগৃত তথাবদী—শীক্ষিকুক ভটাচার্য কর্ত্তক সংশোধিত (পুটা ১০৭-১০৮)। "রসভাব প্রাথ্য" প্রস্ক (সাহিত্য-পরিবৎ-পঞ্জিকা, ১৩২৬, তৃতীয় সংখ্যা, পু" ১৯৩-এ উদ্ধৃত )।



#### পরমেশ্বর মোদকের কথা

শ্রীচৈততা সন্নাসের নিয়ম অটুট রাখিবার জতা দ্রীলোক হইতে সর্বর্দা দ্রে থাকিতেন। ভক্তিমতা রক্ষাগণ তাঁহাকে দর্শন করিতে আসিলেও তিনি তাহাদিগকে নিজের কাছে ডাকিয়া বসাইতেন না। একবার রখের সময়ে গৌডদেশের যাত্রীদের সহিত পরমেশ্বর মোদক নামে একবাক্তি তাঁহার স্ত্রীকে লইয়া পুরীতে আসিলেন। পরমেশ্বর প্রভুর নবন্ধীপের প্রতিবেশী। ছেলেবেলায় প্রভু পরমেশ্বরের দোকানে যাইতেন, পরমেশ্বর মোদক তাঁহাকে "হ্তম্বত্ত, মোদক" প্রভৃতি দান করিয়া কৃতার্থ হইতেন। এখন প্রভু সন্নাসী হইয়া পুরীতে রহিয়াছেন, ভারতের বিভিন্ন প্রান্ত হইতে সহস্র সহস্র লোক তাঁহাকে দেখিতে আসিতেছে, তাঁহাকে দর্শন করিয়া ভগবান্ বলিয়া পূজা করিতেছে, এই সব শুনিয়া পরমেশ্বর বড় আশা করিয়া সন্ত্রীক প্রভুর কৃপা পাইবার জত্য আসিয়াছেন। করিরাজ্ব গোস্বামী লিখিয়াছেন—

প্রভূ-বিষয়ে স্নেছ তার বালককাল হৈতে।
সে বংসর সেছ আইল প্রভূকে দেখিতে।
পরমেশ্বরা মৃঞি' বলি দশুবৎ কৈল।
তারে দেখি প্রীতে প্রভূ তাহারে পৃছিল।
পরমেশ্বর কুশল হয় ? ভাল হৈল আইলা।
'মকুন্দের মাতা আসিয়াছে' প্রভূরে কহিলা। (এ)২)

প্রভু কিন্তু মুকুন্দের মাতা অর্থাৎ পরমেশরের দ্রীর আগমনের কথা শুনিয়া বিরত হইয়া পড়িলেন। পাড়ার লোক, ছেলেবেলায় তাঁহার কাছে কত মেহযক্ত পাইয়াছেন, ইচ্ছা হয় তাঁহাকে কাছে বসাইয়া ছদও কুশল প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করেন; কিন্তু তাহাতে পাছে সন্ন্যাসের আদশ্চাতি ঘটে, তাঁহার নিয়মের শিধিলতা দেখিয়া অন্য দ্রীলোকেরাও তাঁহার কাছে আসিতে চায়, এই ভয়ে প্রভুর মন সঙ্কৃচিত হইল; যথা—

মুকুন্দের মাতার নাম শুনি প্রভুর সঙ্কোচ হইলা। তথাপি তাহার গ্রীতে কিছু না বলিলা॥

কবিরাজ গোস্বামী স্পষ্ট লিখিয়াছেন যে প্রীলোকেরা প্রভুকে দূর হইতে দর্শন করিতেন—

> পূর্ববং কৈল প্রভু সবার মিলন। জীসব দূর হৈতে কৈল প্রভু-দরশন। (৩)১২)

শ্রীতৈত গণেব-সম্বন্ধে তাঁহার সমসাময়িক ভক্তেরা বলিয়াছেন যে তিনি "আপনি আচরি ধর্ম জীবেরে শিখায়।" তিনি কেবলমাত্র মুখে উপদেশ দিতেন না, যাহা করণীয় তাহা নিজে করিয়া দেখাইতেন। তাই মুকুন্দের মাতা বৃদ্ধা হইলেও তাঁহার সম্বন্ধে প্রভু ঐরপ সতর্কতা অবলম্বন করিয়াছিলেন।

#### ছোট ছরিদামের বিবরণ

ছোট হরিদাস নামে একজন কীর্ত্তনীয়া প্রভুব অনুগত জক্ত ছিলেন।
তিনি একদিন ভগবান্ আচার্যাের আদেশে প্রভুকে নিমন্তণ করিয়া শিথি
মাইতীর রক্ষা ভগিনী পরমন্তক্তিমতী মাধবীদেবীর নিকট হইতে মিহি চাল
ভিকা করিয়া আনিয়া আচার্যাকে দিলেন। প্রভু অন্ন দেখিয়া থুব সন্তুট্
হইয়া জিজ্ঞাসা করিলেন, আচার্যা কোধায় এমন ভাল চাল পাইয়াছেন।

ভগবান্ আচাগ্য প্রকৃত বৃত্তান্ত বলিলে প্রভু নিজ সেবক গোবিন্দকে আজ্ঞা দিলেন—

আজি হৈতে এই মোর আজ্ঞা পালিবা।
ছোট হরিদাসে ইহাঁ আসিতে না দিবা॥
দার মানা—হরিদাস ত্রুগা হৈলা মনে।
কি লাগিয়া দার মানা কেহু নাহি জানে॥

- CEO EO SIS

হরিদাসের প্রতি সহামুভূতিসম্পন্ন হইয়া স্বরূপ-দানোদর প্রভৃতি প্রভূর অন্তরন্ধ ভক্তবৃন্দ তাঁহাকে হরিদাসের কি অপরাধ হইয়াছে জিজাসা করিলেন। তাহার উত্তরে শ্রীচৈত্য মহাপ্রভূ যাহা বলিয়াছিলেন তাহা আজিকার দিনে প্রত্যেক সন্ন্যাসী ও বৈঞ্চব সম্প্রদায়ের স্মরণ রাধা কর্ত্তবা।—

প্রভু কহে বৈরাগী করে প্রকৃতি সম্ভাষণ।
দেখিতে না পারি আমি তাহার বদন॥
দুর্বার ইন্দ্রিয় করে বিষয় গ্রহণ।
দারু প্রকৃতি হরে মুনিজনের মন।

প্রভূ শান্তের শ্লোক উদ্ধার করিয়া বলেন - "মাতা ভগিনী এবং কন্তার সহিত সন্ধার্ণ আসনে উপবেশন করিবে না যে হেতু বলবান্ ইন্দ্রিয়বর্গ বিশ্বান্ ব্যক্তিকেও আকর্ষণ করে।" প্রভূর এই উপদেশ শুনিয়া ভক্তবৃদ্দ নারবে মাথা নত করিয়া ফিরিয়া গেলেন। কয়েক দিন পরে আবার তাহারা ছোট হরিদাসের হইয়া প্রভূর নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করিতে আসিলেন। তাহারা বলিলেন—

অল্ল অপরাধ প্রভু করহ প্রসাদ। এবে শিক্ষা হইল — না করিবে অপরাধ।

কিন্তু ইহাতেও প্রাভূ নিজের সূদৃঢ় সংকল্প হইতে বিচলিত হইলেন না।
প্রভূ কহে মোর বশ নহে মোর মন।
প্রকৃতি-সম্ভাষী বৈরাগী না করে দর্শন॥

498

#### এটেড অচবিতের উপাদান

নিজ কাথ্যে যাও সবে ছাড় রুখা কথা। পুন: কহ যদি আমা না দেখিবে হেখা॥

প্রভুর এরণ কঠোর সংকল্প দেখিয়া ভক্তগণ "স্বপ্নেও ছাড়িল সবে জীসদ্বায়ণে।" আর হতভাগা ছোট হরিদাস ত্রিবেণীতে গিয়া গঙ্গাযমুনার সঙ্গমে প্রাণত্যাগ করিলেন।

#### গোবিদের সতর্কতা

একবার প্রভু যমেশ্বর টোটায় যাইতে যাইতে সহসা গুড়ারাগে "গীতগোবিন্দের" গান গুনিয়া মোহিত হইলেন। গানের গরে মুখ্য হইয়া প্রভু কে গাহিতেছে—ক্রী না পুরুষ তাহা বিবেচনা না করিয়াই যে স্থান হইতে গীতধানি আসিতেছিল সেই দিকে ছুটিয়া চলিলেন। এ দিকে তাহার বিশ্বস্ত সেবক গোবিন্দ তাঁহাকে সংবরণ কবিবার জন্ম পিছু পিছু ছুটিলেন।

ধাঞা যায় প্রভু প্রী আছে অল্ল দূবে।
প্রী গায় বলি গোবিন্দ প্রভু কৈল কোলে।
প্রীনাম শুনিতেই প্রভুর বাহা হৈলা।
পুনরপি সেই পথে বাহুড়ি চলিলা।
প্রভু কহে গোবিন্দ আজি রাখিলে জীবন।
প্রীম্পর্শ হৈলে আমার হইত মরণ॥
এ ঋণ শোধিতে আমি নারিব তোমার।
গোবিন্দ কহে জগন্নাথ রাখে মুক্তি কোন ছার॥
প্রভু কহে ভূমি মোর সঙ্গেতে রহিবা।
যাহা তাহা মোর রক্ষায় সাবধান হৈবা।

- to 00 0150

# কড়চার সাহত চরিতামতের বর্ণনার বিরোধ

এই সকল ঘটনাই কুফদাস কবিরাজ তাঁহার ঐীচৈত্যচরিতামূতের অন্তালীলায় লিখিয়াছেন। তাঁহার প্রস্তের অ্যান্য থণ্ডের প্রামাণিকতায় কিছু সন্দেহ থাকিলেও, অন্তালীলার অধিকাংশ ঘটনাই যথার্থ বলিয়া মানিয়া লইবার যথেন্ট কারণ আছে। তিনি রঘুনাথদাস গোস্বামীর প্রিয়ণাত্র ছিলেন। রঘুনাথদাস গোস্বামী একাদিক্রমে যোল বংসরকাল মহাপ্রভুর নিকটে ছিলেন। তাঁহার নিকট হইতে ক্রুম্বাস কবিরাজ শ্রীতৈতন্তের জীবনের শেষ যোল বংসরের যে বিবরণ শুনিয়াছিলেন ভাহা সত্য বলিয়া না মানিয়া পারা যায় না। ক্রুম্বাস কবিরাজ কর্তৃক বর্ণিত উল্লিখিত ঘটনাগুলি যদি সত্য হয়, তাহা হইলে বলিতে হয় যে প্রভুর প্রিয় সেবক গোবিন্দ প্রভুকে সর্বাদা এমনভাবে রক্ষণাবেক্ষণ করিতেন যে প্রভু কথনও ভাবের আবেগেও স্লৌলোকের ক্রিমীমানায় যাইতেন না। ঐ গোবিন্দই যদি কড়চাকার গোবিন্দ কর্মকার হন, তাহা হইলে তিনি নিজে নিম্নলিখিত ঘটনা কিরূপে লিখিলেন ?

বটেশ্বর শিবের স্থানে একদিন একজন ধনী ব্যক্তি লক্ষ্মী ও সত্যবালা নামে গ্রহজন পতিতা রমণীকে আনিয়া প্রভুর মন পরীক্ষা করিতেছিল। প্রভু সত্যবালাকে মা বলিয়া সম্বোধন করিলেন। তারপর—

> নাচিতে লাগিলা প্রভু বলি হরি হরি। লোমাঞ্চিত কলেবর অশ্রু দরদ্বি॥

সত্যের বাহুতে হাঁদি বলে বল হরি। হরি বল প্রাণেশ্বর মুকুন্দমুরারি।

—গোবিন্দদাসের করচা, পু<sup>©</sup> ২৪-২৫

প্রভুর যে অনুগত সেবক প্রভুকে সর্বত্র ভাষাবেগের আতিশ্য হইতে রক্ষা করিতে যতুবান্ ছিলেন, তিনি যে সভাবালাকে লইয়া প্রভুকে নৃত্য করিতে দিবেন ইহা ভাষা যেমন অসম্ভব, শ্রীচৈতত্যের চরিত্রের সহিত এই ঘটনার সামঞ্জে গুঁজিয়া পাওয়াও তেমনি কঠিন। আমার মনে হয় জয়গোপাল গোস্বামী মহালয় "গোবিন্দদাসের করচা" নামধ্যে যে টুকরা টুকরা নোট বা সংক্ষিপ্ত বর্ণনা পাইয়াছিলেন, তাহা হইতে তিনি নিজের ভাবের আবেগে অনবধানতাবশতঃ ঐ পঙ্জি কয়টি রচনা করিয়া ঘটনাটির সংযোজনা করিয়াছেন।

....

# উনবিংশ অধ্যায়

গৌড়ীয় বৈশ্বৰ ধর্মের আদিমুগ-সম্বন্ধে বিবিধ তথ্য শ্রীটেতভার ভাবাবেশের পূর্বে ভক্তগোষ্ঠী

ঐতিহাসিকের নিকট বাঙ্গালা দেশে ঐতিচততের আবির্ভাব আকস্মিক ঘটনা নহে। ঐতিচততের অপূর্বব প্রেমান্মাদ আস্বাদনের জভ বাঙ্গালা দেশ বহুশতাকী ধরিয়া ধারে ধারে প্রারে প্রস্তুত হইতেছিল। দামোদরপুরের চতুর্থ লিপি হইতে জানা যায় যে ৪৪৭-৪৮ গু° অ° গোবিন্দ স্থামীর মন্দিরের বায়নিকাহার্থ ভূমি দান করা হইয়াছিল (Ep. Indi., Vol. XV, p. 113; Vol. XVII, pp. 193, 345)। পাহাড়পুরের খননকালে যে যুগলমূর্ত্তি পাওয়া গিয়াছে তাহা রাধাক্ষের মূর্ত্তি বলিয়া অনেকে বিশ্বাস করেন (R. D. Banerji, The Age of the Imperial Guptas, p. 121)।

বিক্রমপুরের শ্রামল বর্দ্মণের পুত্র ভোজ বর্দ্মণ বেলাবা ভাত্রলিপিতে "গোপীশত-কেলিকার:" শ্রীক্ষের কথা লিথিয়াছেন। পালরাজ্যণের রাজ্যকালের অসংখ্য বিক্রুমৃত্তি বাঞ্চালা দেশের নানাস্থানে দেখিতে পাওয়া যায়। তাহার অনেকগুলি রাজ্যনাহীর বরেন্দ্র অনুসন্ধান সমিতির গৃহে ও কলিকাভায় সাহিত্য-পরিষহ-মন্দিরে রক্ষিত আছে। তুর্গ্রাম্ব ঐতিহাসিক রাখালদাস বন্দ্যোপাধ্যায় মহাশয় বলেন—"Throughout the length of the dominions of the Palas, i.e., throughout the modern provinces of Bengal and Behar and part of the U. P., images of the various forms of Vishnu have been found in very large numbers. In fact, they outnumber any other



# গৌড়ায় বৈক্ষৰ ধর্ম্মের আদিযুগ-সম্বন্ধে বিবিধ তথ্য

class of images that have been found (Eastern Indian School of Mediæval Sculpture, p. 101) |

খৃষ্টীয় ছাদশ শতাফীতে বাঙ্গালা দেশে রাধাকৃষ্ণ উপাসনা বহু বিস্তৃত হইয়াছিল। জয়দেবের গীতগোবিন্দ রচনাকালে উমাপতি ধর, গোবর্জনাচার্যা ও স্বয়ং সমাট্ লক্ষ্মণ সেন শ্রীরাধাকৃষ্ণের লীলা-বর্ণনা করিয়া ক্ষেক ভক্তিমূলক শ্রোক রচনা করিয়াছিলেন। ২০৫ খৃষ্টান্দে শ্রীধরদাস "সম্বজ্বিকণিয়তে" বহু ভক্তিরসাত্মক কবিতা সংগ্রহ করেন। আনুমানিক চতুর্দশ শতাক্ষার কবি অনস্ত বহু চণ্ডাদাসের "কৃষ্ণকীর্ত্তন" হইতে বুঝা যায় সে যুগে সাধারণ বাঙ্গালী কি ভাবে কৃষ্ণলীলা আন্থাদন করিত।

শ্রীরূপ গোস্বামী বাঙ্গালা দেশে প্রাক্টিতত্ত-যুগের প্রেমধর্ম আলোচনার ইতিহাস অবগত ছিলেন। তিনি "পভাবলী"তে লক্ষন সেন, উমাপতি ধর প্রভৃতির শ্লোক সঙ্কলন করিয়াছেন। ইতিহাস জ্ঞানিয়াও তিনি লিখিয়াছেন যে দিটেততা যে ভক্তিরত্ব প্রকাশ করিলেন, তাহা বেদে, উপনিষদে বা ভগবানের অতা কোন পূর্ববাবতারে প্রচারিত হয় নাই (স্তবমালা, তৃতীয় অইক, তৃতীয় শ্লোক)। শ্রীরূপ গোস্বামীর ভায় সূক্ষ্মভাবদর্শী ভক্ত ও পণ্ডিত শ্রীটেতত্তের প্রেম-প্রচারের মধ্যে এমন কিছু অভিনব ভাব দর্শন করিয়াছিলেন যাহার জন্ম ঐরূপ কথা লিখিয়াছেন।

গৌড়ীয় বৈষ্ণব সাহিত্যে মাধবেন্দপুরীকে প্রেমধর্ম্মের আদি প্রচারক বলা হইয়াছে। প্রীচেতগচরিতায়তে মাধবেন্দ্র পুরীর নিম্নলিখিত তেরজন শিষোর নাম করা হইয়াছে—ঈশ্বর পুরী, পরমানন্দ পুরী, কেশব ভারতী, ব্রহ্মানন্দ পুরী, ব্রহ্মানন্দ পুরী, কেশব পুরী, ক্ষানন্দ পুরী, নৃসিংহ তীর্থ, ক্থানন্দ পুরী, অধৈত, রম্ন পুরী ও রামচন্দ্র পুরী (১৯৯১-১২, হা৯১২৯৮, ৩৮১৯)। গৌরগণোদ্দেশদীপিকায় এই তেরজন ছাড়া পুগুরীক বিভানিধিকে (৫৬) মাধবেন্দ্রের শিশ্ব বলা হইয়াছে। জ্যানন্দ মাধবেন্দ্রের আর চারজন শিশ্বের নাম করিয়াছেন, যথা—র্যুনাথ পুরী, অনন্ত পুরী, অসর পুরী, গোপাল পুরী (পূ<sup>ত</sup> ৩৪)। প্রীজীব বৈশ্বব-বন্দনায় নিত্যানন্দের গুরু সম্বর্ধণ পুরীকে মাধবেন্দ্রের শিশ্ব

496

#### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

বলিয়াছেন (২৯০)। তাহা হইলে মাধবেক্ত পুরার ১৯ জন শিয়্যের নাম পাওয়া গেল। শ্রীজীব বলেন

মাধবেন্দ্রতার বছবঃ শিষ্যাধরণি-বিস্তৃতাঃ। পৃ<sup>০</sup> ২৮৯

উক্ত ১৯ জন শিষ্যের মধ্যে শীতেত্তার সহিত ঈশ্বর পুরীর গয়ায় বা জয়ানন্দের মতে রাজগীরে, পরমানন্দ পুরীর সহিত য়য়ভ পর্বাত্ত (মাত্রা জেলায়) ( তৈ চ হ , হা৯১৫২ ), এবং পাঙ্পুরে বা পাতারপুরে (শোলাপুর জেলায়) শ্রির পরার সহিত (তৈ চ হ , হা৯১৫৮) দেখা হইয়াছিল। বিষ্ণুপুরী ও পরমানন্দ পুরীর ত্রিছতে জন্ম। ইত্তাতের শ্রীহট্টে এবং পুওরাক বিভানিধির চট্টগ্রামে ভন্ম। তাহা হইলে দেখা য়াইতেছে যে ভারতের দক্ষিণ প্রান্তে পরমানন্দ পুরী, পশ্চিম প্রান্তে শ্রীর পুরী, পূর্বর প্রান্তের পুওরীক বিভানিধি ও অবৈত এবং উত্তর ভারতে ঈশ্বর পুরী মাধ্যেন্দ্র-প্রবৃত্তিত প্রেমধর্ম্ম প্রচার করিয়াছিলেন। অভাগ্র শিক্সও নিশ্চয়ই বিভিন্ন স্থানে প্রচার-কার্য্য চালাইতেছিলেন। মাধ্যেন্দ্র ও তাহার শিয়্যদল শ্রীতৈত্ত্যের জন্ম ক্রে প্রত্তে করিয়া রাখিয়াছিলেন।

বিশ্বস্তর মিশ্রের গয়া হইতে প্রত্যাবর্তনের পূর্বেই য়াহারা কৃষ্ণভক্ত ছিলেন তাঁহাদের মধ্যে প্রধান প্রধান কয়েক জনের নাম জানা যায়। মুরারি গুপ্তের কড়চায় (১৪৪) মাধবেন্দ্র পুরী অলৈত, চক্রপেথর, শ্রীবাস, মুকুক, হরিদাস, নিত্যানন্দ, ঈশ্বর পুরী ও শুরাম্বরের নাম; শ্রীচৈতত্ত-চন্দ্রোদয় নাটকে (১০৮) পুগুরীক বিভানিধি, বাহ্নদেব, নৃসিংহ, দেবানন্দ, বজ্রেশ্বর ও শ্রীকান্ত, শ্রীপতি, শ্রীরাম নামক শ্রীবাসের তিন জাতার নাম পাওয়া যায়। শ্রীচতত্তভাগরতে

> নিগৃঢ়ে অনেক আর বৈসে নদীয়ায়। পূর্বেবই অন্মিলা সভে ঈশ্বর আজ্ঞায়॥ শ্রীচন্দ্র শেখর, জগদীশ, গোপীনাথ। শ্রীমান, মুরারি, শ্রীগরুড়, গলাদাস॥

> > भाराद्र

গৌড়ীয় বৈক্ষব ধর্ম্মের আদিযুগ-সম্বন্ধে বিবিধ তথ্য ৫৭৯ সদাশিব, মুরারি, শ্রীমান শুরুদম্বর। মিলিলা সকল যত প্রেম অমুচর। ২০০১৪২

রত্নগর্ভ আচার্যা বিখ্যাত তার নাম। প্রভুর বাপের সঙ্গী জন্ম একগ্রাম॥ তিন পুত্র তার কৃষ্ণ পদ মকরন্দ। কৃষ্ণানন্দ জীব যদুনাথ কবিচন্দ্র॥ ২।১।১৫১

শেধরের পদ হইতে জান। যায় যে নরহরি সরকার ঐতিতন্তের জন্মের পূর্বের ব্রজরস গান করিয়াছিলেন (গৌরপদতরজিণী, পূ ৩০২)। এতখাতীত কুলীনগ্রামবাসী মালাধর বত্ন গুণরাজখান ঐতিতন্তের জন্মের পাঁচ বৎসর পূর্বের ঐমন্তাগবতের কিয়দংশ অমুবাদ করিয়াছিলেন।

এই বিবরণ হইতে দেখা যায় যে ঐচৈতক্তের ভাবাবেশের পূর্বের বাঙ্গালা দেশে ভাগবতের আলোচনা বিরল ছিল না। দেবানন্দ পণ্ডিত, রত্নগর্ভ আচার্যা, মালাধর বত্ত প্রভৃতি ভক্তগণ শ্রীমন্তাগবত পঠনপাঠন করিতেন। কিন্তু থুব সত্তব মাধবেন্দ্র পুরীর ও তাঁহার শিক্ষাগণের প্রচারের ফলেই এই ক্ষুদ্র ভক্তগোষ্ঠী গড়িয়া উঠিয়াছিল।

এরপ অনুমান করিবার কারণ এই যে মুরারি গুপ্ত, কবিকর্ণপুর ও বুদ্দাবনদাস বিশ্বস্তবের ভাবাবেশের পূর্বের যে সকল ভক্তের নাম করিয়াছেন তাঁহাদের মধ্যে অনেকের উপরই মাধ্বেন্দ্র পূরীর প্রভাব লক্ষ্য করা যায়। ত্রীচৈতগুচরিতামৃত (২৯) হইতে জানা যায় যে মাধ্বেন্দ্র ত্রীরত্ব পূরীর সহিত একবার নবদ্বীপে আসিয়া জগল্লাথ মিশ্রের আতিথা গ্রহণ করিয়াছিলেন। জগল্লাথ মিশ্রের বন্ধু রত্বগর্ভ আচার্য্য, হিরণ্য ও জগদীশ, নবদ্বীপনিবাসী শুরাম্বর এক্ষচারী, গঞ্চাদাস এবং সদাশিব পণ্ডিত মাধ্বেন্দ্র পূরীর কিকট হইতে প্রেমধর্ম্ম পাইয়া থাকিবেন। ঈশ্বর পূরী কৃমারহটের



# শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

লোক; শ্রীমান পণ্ডিতের বাড়ীও কুমারহটো। কুমারহট হইতে হুগলি জেলার আক্না বেশী দূর নহে। জয়কুফোর মতে

> আক্নায় গড়ুর আচার্যা সভে কহে। কাশীশ্বর বক্রেশ্বর পণ্ডিতহো তাহে।

200

ঈশ্বর পুরীর প্রভাবে গরুড়, পণ্ডিত, বক্রেশ্বর প্রভৃতির বৈষ্ণব হওয়া অসম্ভব নহে। বর্দ্ধমান জেলার কুলানগ্রাম মেমারী ষ্টেশনের নিকটে স্থতগাং কুমারহট্রের নিকটে। ঈশ্বর পুরীর প্রভাব কুলীনগ্রামের মালাধর বহুর উপর যে পড়ে নাই তাহা জোর করিয়া বলা যায় না।

শ্রীকৈতভার বয়োজ্যেষ্ঠ পশ্চিম বঙ্গীয় ভক্তদের উপর মাধবেন্দ্র ও ঈশ্বর পুরীর প্রভাব সম্ভাবনামূলক হইলেও, পূর্ববঙ্গের ভক্তদের উপর ঐ প্রভাব স্পান্ত। অহৈত শ্রীহট্টের লোক এবং মুরারি গুপু, শ্রীবাসেরা চার ভাই এবং চক্রশেখরও শ্রীহট্টিয়া। অহৈত মাধবেন্দ্রের শিশ্ব এবং নবদ্বীপে তাঁহারই সভায় বা বাড়ীতে উক্ত ভক্তগণ মিলিত হইয়া কার্তন ও ভাগবত পাঠ করিতেন।

পুগুরীক বিভানিধির বাড়ী চটুগ্রাম জেলার চক্রশাল গ্রামে। বাস্থদেব দত্ত, মুকুন্দ দত্ত, গোবিন্দ দত্ত ঐ গ্রামের লোক। সনাতন গোস্বামী রহৎ- বৈশ্ববভোষণীর মজলাচরণে গৌড়দেশে অবস্থিত ভক্তগণের মধ্যে নিজের গুরুবর্গ, অধৈত, নিত্যানন্দ, শ্রীবাস, গদাধর বাতীত কেবল মাত্র বাস্থদেব দত্তাদি তিন ভাইকে বন্দনা করিয়াছেন। মুকুন্দ দত্ত নবদ্বীপের টোলে পড়িতেন। মুকুন্দ নিমাইয়ের ফাঁকি জিজ্ঞাসার ভয়ে দূরে পলায়ন করিতেন। ইহা

দেখি জিজাসয়ে প্রভু গোবিন্দের স্থানে।

এ বেটা আমারে দেখি পলাইল কেনে।

চৈ ভা ১।৭।৭৮

ঐ গোবিন্দ গোবিন্দ দত্ত; কেন-না, এক ভাইয়ের কথা অন্য ভাইয়ের কাছে জিজ্ঞাস। করাই সম্ভব। তাহা হইলে গোবিদ দত্তও নবদ্বীপে

## গৌড়ীয় বৈষ্ণৰ ধর্ম্মের আদিযুগ-সম্বন্ধে বিবিধ তথ্য

460

থাকিতেন জানা গেল। মুকুন্দ অবৈতের সভাতে শ্রেষ্ঠ কার্টনীয়া ছিলেন।
পুওরীক বিভানিধি মাঝে মাঝে নবজীপ আসিতেন। তিনি গদাধর পণ্ডিতের
পিতা মাধব মিশ্রের বৃদ্ধু ছিলেন। কবিকর্ণপূর গৌরগণোদ্দেশদীপিকায় মাধব
মিশ্রকে "তৎ প্রকাশবিশেষ" বলিয়াছেন (৫৭)। গদাধরের আবাল্য ভক্তি পিতার সংসর্গ-জাত।

শীতৈতভার ভাবাবেশের পূর্বের যে সকল ভক্ত কৃষ্ণকথা আলোচনায়
রত ছিলেন তাঁহাদের অধিকাংশের উপরই মাধবেশ্র পুরী ও তাঁহার
শিশ্যগণের প্রত্যক্ষ বা পরোক্ষ প্রভাবের নিদর্শন পাওয়া গেল। এই
ক্ষয়েই শীতৈতভাভাগবতে (১।১।৬৯) আছে—

ভক্তিরসে আদি মাধবেন্দ্র সূত্রধার। গৌরচন্দ্র ইহা কহিয়াছেন বার বার ॥

শ্রীজীব গোস্বামীও এই জন্ম বৈষ্ণব-বন্দনার শেষে গৌড়ীয় বৈষ্ণব সম্প্রদায়কে "মাধব সম্প্রদায়" বলিয়াছেন; যথা—

> এতবৈক্ষব-বন্দনং স্থকরং সর্বার্থ-সিন্ধিপ্রদং। শ্রীমন্মাধব-সম্প্রদায়-গণনং শ্রীকৃষ্ণভক্তি-গ্রদম্॥

## শ্রীতৈতত্তার সম্প্রদায়-নির্ণয়

মাধবেন্দ্র পুরী তথা ঐতিচতত্ত কোন্ সম্প্রদায়ভুক্ত ছিলেন তাহা লইয়া গুরুতর মতভেদ আছে। ডা স্থালকুমার দে "গৌরগণোদ্দেশদীপিকা"য় ও বলদেব বিভাভ্যণের গোবিন্দ-ভাত্তের প্রথমে ও "প্রমেয় রত্বাবলী"তে ঐতিচতত্তকে মাধ্ব সম্প্রদায়ভুক্তরূপে বর্ণিত দেখিয়া লিখিয়াছেন—

"Barring the two passages referred to above, there is no evidence anywhere in the standard works of Bengal Vaisnavism that Madhavendra Puri or his disciple Isvara Puri, who influenced the early religious inclinations of Caitanya, were in fact Madhva ascetics (Festschrift Moriz Winternitz, Pre-Caitanya Vaisnavism in Bengal, p. 200).

তিনি উক্ত প্রন্থের ১৯৯ পৃষ্ঠার পাদটীকায় গৌরগণোদ্দেশদীপিকার গুরুপ্রণালীকে লক্ষা করিয়া লিখিয়াছেন—''This list is quoted with approval in the Bhaktiratnākara (18th century). It could not have been copied from Baladeva Vidyabhusana's list, but was probably derived from the same source.''

শ্রীযুক্ত সত্যানন্দ গোপামী মহাশয়ও বলেন, "শ্রীমঞ্চাদেব বিছাভূষণের উক্তি ভিন্ন শ্রীপাদ মাধবেক্স পুরী প্রভৃতির মধ্বাচার্য্য সম্প্রদায়ভূক্তির অপর কোন প্রমাণ দেখিতে পাই না" (শ্রীভাগবতসন্দর্ভের ভূমিকা)। শ্রীযুক্ত সভ্যেক্সনাথ বহুও ডা° দের মতের অমুরূপ মত প্রকাশ করিয়াছেন (বহুমতী, ১৩৪২, পৌষ, পৃ° ৪৫৩)।

আমি যে সকল গ্রন্থে মাধবেক্স পুরীর মাধ্ব সম্প্রদায়ভূক্তি থাকার কথা পাইয়াছি তাহা নিম্নে কালানুসারে সাজাইয়া দিতেছি।

- ১। গৌরগণোদ্দেশদাপিকা (২১-২৫) ১৫ ৭৬ গ্র<sup>০</sup> অ০
- ২। গোপালগুরু-কৃত পছ (ভক্তিরত্নাকর, পু<sup>্</sup> ৩:২-১৩ ধুত)
- एनवकीनम्मन, वृहद-देवक्छव-वन्मनात्र भूषि
- ৪। বিখনাথ চক্রবর্তী, ত্রীগোরগণস্বরূপ-তত্তচন্দ্রিকার পুথি
- ৫। অনুরাগবল্লী (১৬৯৬ খুণ অা) (পুণ ৪৮-৪৯)
- ৬। ভক্তিরত্নাকর (পু<sup>o</sup> ৩০৮-১১)
- ৭। গোবিন্দভায়া
- ৮। প্রমেয়রত্বাবলী
- ৯। লালদাস-কৃত ভক্তমাল (পৃ ২৬-২৭, বহুমতী সংস্করণ)। এই-গুলি ছাঙা নাতি-প্রামাণিক "মুরলী-বিলাস" (পৃ ৪১৭-১৯) ও "অবৈতপ্রকাশেও মাধ্ব সম্প্রদায়ভুক্ত হওয়ার কথা আছে। প্রেবাক্ত নয়খানি গ্রন্থে প্রকৃত প্রস্তাবে প্রথমোক্ত দুইটি গুরুপ্রণালীর শ্লোক বা তাহার অমুবাদ ধৃত হইয়াছে।



# গৌড়ীয় বৈষ্ণৰ ধৰ্ম্মের আদিযুগ-সম্বন্ধে বিবিধ তথ্য গোপালগুরুর পছের শেষে আতে:

ততঃ শ্রীকৃষ্ণচৈতগুঃ প্রেমকল্লজমো ভূবি। নিমানন্দাথায়া যোহসো বিখ্যাতঃ ক্ষিতিমণ্ডলে ॥

औरिक्डरचात्र नाम त्य निमानम हिल देश त्मवकोनम्मन श्रीकात्र करत्रन नार्ड, সেই জন্ম বৃহৎ-বৈদ্যব-বন্দনায় ইহার অমুবাদ দেন নাই। গোপালগুরুর পছে মাধবেন্দ্র ও ঈশ্বর পুরীর "পুরী" উপাধি লিখিত इय नाहे - वलामत विष्ठाकृष्ण अहे त्रोठि असूवर्तन कतियारहन। গোপালগুরু বজেশ্বর পণ্ডিতের শিশু বলিয়া দেবকীনন্দনের "রুছৎ-বৈঞ্চব-বন্দনায়" ও "ভক্তিরত্বাকরে" (পু<sup>°</sup> ৩১২) বর্ণিত হইয়াছেন। অমৃতলাল পাল "বক্তেশ্ব-চরিতে" গোপালগুরুকে পুরীর রাধাকাস্ত মঠের প্রতিষ্ঠাতা বলিয়াছেন। গোপালগুরু হইতে ১৩০৭ সাল পর্যস্ত ১৬ জন মহাস্তের নামও তিনি দিয়াঙেন। তিনি বলেন, "বুন্দাবনের গোপাল-গুরুর শিয়োরা 'নিমাই সম্প্রদায়ী' এবং 'স্পান্টদায়ীক' বলিয়া অভিহিত" (পু ১১৭)। গোপালগুরুর কথা যে সহসা উড়াইয়া দেওয়া যায় না ভাহা দেখা গেল।

উপরে লিখিত বিচার হইতে পাওয়া গেল যে শ্রীটেতভার কুপাপাত্র ও তাঁহার অপেকা বয়সে ছোট সমসাময়িক ছুই ভক্ত-কবিকর্ণপুর ও গোপাল গুরু—মাধবেক্স পুরীকে মাধ্ব সম্প্রদায়ের অন্তর্গত বলিয়া বর্ণনা করিয়াছেন। কিন্তু অমরচন্দ্র রায় (উদ্বোধন, ৩০৬ চৈত্র, পু' ১০৬-৪৮; ১৩৩৭ বৈশাখ, পু' ২৮৪-৫০), ডা' স্থশীলকুমার দে ও সত্যেন্দ্রনাথ বহু বলেন যে মাধ্ব সম্প্রদায়ের প্রামাণিক গুরু-প্রশালার সহিত ও ঐতিহাসিকভাবে নির্ণীত কালের সহিত কবিকর্ণপুরাদ-

১ জীয়ান আভাতকুমার মুবেগগায়ায় লিবিয়াছেন বে জীচৈতভের সহসাময়িক অচুতোনকা উহোর "এক্ষবিভা তব্জান" নামক প্রকাশিত সংস্কৃত এছে নিয়লিখিত ওঞ্লানালী বিয়াছেন : হথা— महानावादन, मावादन, अन्तान, लच्ची, बका, मादन, मश्लाहादा, लदाबाक, नवश्वि, माध्यतम পूबी, इक ভারতী, হৈতভ থেব, সাহস্ত ঘোৰ, ভাষ ঘোৰ ( দাহিত্য-পরিবৎ পঞ্জিকা, ১৩৪০,২ )।



#### ত্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

বর্ণিত গুরু প্রণালীর মিল নাই। প্রীযুক্ত সত্যেন্দ্রনাথ বস্তু মহাশয়-কর্তৃক প্রকাশিত উদীপি মঠের গুরুপ্রণালী ও কবিকর্ণপূর-প্রদত্ত প্রণালী পাশাগাশি সাজাইয়া বিচার করা যাউক।

| গৌরগণোহন্দেশকী শিকার<br>ত্যালিকা |                   | উণীপি-মঠে রকিত তালিকা :<br>মূল শাবা |                          | উদীপি-মঠে হকিত তালিকা: আন্ত শাৰা (আবৈতদিছিৰ ভূমিকা, পৃ' ৪৭ ও বহুমতী, ১৩৪২ পৌৰ) |
|----------------------------------|-------------------|-------------------------------------|--------------------------|--|
| > 1                              | মধ্বাচাৰ্য্য      | >1                                  | মধ্ব ১০৪০ শক             |  |
| 21                               | পর্যাভ            | 31                                  | পল্নাভ ১১২০ শক           |  |
| 01                               | ন্রহ্রি           | 91                                  |                          | College College  |
| 8 1                              | माध्य विव         | 8 1                                 | Disable and the second   |  |
| a.                               | অক্ষোভ            | 2.1                                 | অক্ষোভা ১১৫৯ শাক         |  |
| 91                               | জয় তীৰ্থ         | 91                                  | জঘতীর্থ ১১৩৭ শক          |  |
| 11                               | জানসিশ্ব          | 9.1                                 | বিভানিধি বা              |  |
|                                  |                   |                                     | বিভাধিবাজ ১১৯০ শক        |  |
| 81                               | মহানিধি           | 61                                  | কবীন্দ্র ১২৫৫ শক         | রাজেজ তীর্থ  |
| >1                               | বিভানিষি          | > 1                                 | বাণীশ ১২৬১ শক            | বি জয়ধ্ব জ  |
| >=1                              | बाटकस             | 501                                 | বামচন্দ্র ১২৬৯ শক        | পুক্ষোত্তম   |
| >> 1                             | क्रथर्थ           | >> 1                                | বিভানিধি ১০৯৮ শক         | মুব্ৰন্থণা   |
| 150                              | ব্ৰহণঃ পুৰুষোত্ৰ: | 150                                 | হথুনাথ ১০৬৬ শক           | ব্যাসরাজ বা বাাসরায়   |
| 201                              | ব্যাগভার্থ        | 501                                 | রঘুবর্ষ ১৪২৪ শক          | DE NOTE OF STREET  |
| 184                              | লক্ষীপতি          | 381                                 | द्रचुख्य ১৪৭১ শক         |  |
| >4 1                             | माध्यस            | >41                                 | বেদব্যাসভীর্থ<br>১৫১৭ শক |  |

শ্রীযুক্ত রাজেন্দ্র ঘোষ "গ্রায়ামৃতের" গ্রন্থকারের সময় ১৯৪৬ হইতে ১৫৩৯ খুন্টাব্দ লিখিয়া বলিয়াছেন যে তিনি "মতান্তরে ১৫৪৮ হইতে ১৫৯৮ খুন্টাব্দ পর্যান্ত উদীপির উত্তর বাড়ীর মঠের অধ্যক্ষ ছিলেন"

a+8



#### গৌড়ীয় বৈষ্ণব ধর্ম্মের আদিযুগ-সম্বন্ধে বিবিধ তথ্য ৫৮৫

(অবৈতসিন্ধির ভূমিকা, পৃ<sup>০</sup> ৪৭-৪৮)। উপরের তালিকা হইতে দেখা याहेरव त्य वामित्राच त्रचूनारथेत ममश्वीारयत त्लाक। त्रचूनारथेत मंशिषिश হওয়ার তারিথ ১০৬৬ শক বা ১৪৪৪ খটাবদ হওয়াই সম্ভব। বাঁহারা বাসরায়ের তারিখ ১৫৪৮ গৃফীব্দ ধরিয়াছেন, তাঁহারা বোধ হয় রঘুত্যের শিয়া বেদব্যাসতীর্থের সহিত ব্রহ্মণোর শিয়া ব্যাসরায়কে অভিন ভাবিয়াছেন। সায়ামতে ব্যাসতার্থ ব্রহ্মণ্যকেই গুরু বলিয়াছেন; যথা—

## সদা বিষ্ণুপদাসক্তং সেবে ত্রহ্মণ্য-ভাস্করম্। ১।৫

শ্রীতৈতভার জন্ম ১৪৮৬ খুন্টাব্দে, ঈশ্বরপুরীর নিকট দীক্ষা ২০ বৎসর বয়সে অগ্রহায়ণ বা পৌষ মাসে, অর্থাৎ ১৫০৮ খুন্টাব্দের শেবে বা ১৫০৯ খৃফ্টাব্দের প্রথমে। ব্যাসতীর্থ যদি ১৪৪৬ খৃফাব্দে গুরু হন, তাহা হইলে ১৫০৯ খুফাব্দ পণাস্ত সময়ের সহিত তাঁহার গুরু হওয়ার সময়ের ৬০ বংসর ব্যবধান পাওয়া যায়। ঐ ৬০ বংসরের মধ্যে বাসিতার্থের নিক্ট লক্ষ্মীপতির, লক্ষ্মীপতির নিক্ট মাধ্বেক্সের ও মাধবেন্দ্রের নিকট ঈশ্রপুরার দীক্ষা লওয়া অসম্ভব নহে; কেন-না উদীপির মঠের তালিকায় দেখা যায় যে ১২৫৫ হইতে ১২৯৮ শক-এই ৪৩ বৎসরের মধ্যে চারজন গুরু হইয়াছেন।

কবিকর্ণপূরের তালিকার সহিত উদীপির মঠের তালিকার ষষ্ঠ গুরু জয়তীর্থ পর্যান্ত মিল আছে, তারপর মিল নাই। কিন্তু ঐ মঠেই রকিত অন্য শাখা বলিয়া উল্লিখিত তালিকায় কবিকর্ণপূর-প্রদত্ত রাজেন্দ্র, পুরুষোত্ম, স্ত্রহাণ্য, ব্যাসরায় নাম পাওয়া যায়; কেবল কবিকর্ণপূর প্রদত্ত জয়ধর্ম-স্থানে উহাতে বিজয়ধ্বজ নাম আছে। জয়ধর্মের নামান্তর বিজয়ধ্বজ হওয়া অসম্ভব নহে। উদীপির তালিকার শাখান্তরে রাজেন্দ্রের গুরুর নাম বিভানিধি আছে. কবিকর্ণপুরের মতেও রাজেন্দ্রের গুরু বিভানিধি। কবিকর্ণপূরে জয়তীর্থের পর জ্ঞানসিজু ও মহানিধি-এই ছুইটি নাম পাওয়া যায়, উদীপির তালিকায় জয়তীর্থের পরই বিভানিধি। ষোড়শ শতাব্দার বইয়ে লেখা তালিকার সহিত যদি ১৮৮৬ গুটাবদ প্রাস্ত রক্ষিত কোন মঠে লেখা তালিকার এই সামাত্য গ্রমিল দেখা

#### april

#### শ্রীচৈতক্সচরিতের উপাদান

যায়, তাহা হইলে যোড়শ শতাব্দীর বইকে ভুল বলা সঙ্গত হয় না; কেন-না কোন কারণবশতঃ মঠের তালিকায় জ্ঞানসিকু ও মহানিধির নাম বাদ পড়িতে পারে।

মঠের তালিকায় লক্ষ্মীপতি, মাধবেক্স ও ঈশ্বরপুরীর নাম নাই। তাহার হুইটি কারণ হুইতে পারে। প্রথম কারণ হয়ত লক্ষ্মীপতি মাধ্ব-সম্প্রদায়ভুক্ত সন্ন্যাসী ছিলেন, কিন্তু মঠাধীশ হন নাই—মঠে • শুধু মঠাধীশদেরই নাম আছে। তিতীয় কারণ এই যে কবিকর্ণপূর মাধ্ব-সম্প্রদায়ের গুরুপুণালী দিলেও, মাধবেক্তকে প্রেমধর্ম্মের প্রবর্তক বলিয়াছেন। মাধবেক্ত বিভিন্ন সম্প্রদায়ের সন্ন্যাসী ও গৃহীদের লইয়া এক নৃতন সম্প্রদায় স্বপ্তি করেন বলিয়া তাঁহার নাম ও তাঁহার গুরুলক্ষ্মীপতির নাম মাধ্বগুরুপ্রণালী হইতে পরিভাক্ত হওয়া সম্ভব। প্রবোধানন্দ তাঁহার প্রশিশ্ব হিত হরিবংশকে আশ্রেয় দিয়াছিলেন বলিয়া তাঁহার নাম যেমন চৈত্বচরিতামতে দেওয়া হয় নাই, তেমনি মাধবেক্তের গুরু বলিয়া লক্ষ্মীপতির নাম মাধ্ব-সম্প্রদায় হইতে কাটিয়া দেওয়া বিচিত্র নহে।

শ্রীযুক্ত সত্যেক্রনাথ বহু লিখিয়াছেন. "যাহা হউক, মধুস্দনের অলৈড-সিন্ধি রচনার পূর্বের যখন ব্যাসরাজের 'ভায়ায়ত' লিখিত হয় এবং মধুস্দনের অলৈডসিন্ধি-রচনা শেষ হইলে যখন ব্যাসরাজ নিজে বার্দ্ধকাতেতু অসমর্থ বলিয়া তাঁহার শিশ্র ব্যাসরাজকে ' ঐ গ্রন্থ থণ্ডন করিবার অনুমতি প্রদান করেন, তথন ব্যাসরাজ যে শ্রীচৈতভাদেবের তিরোভাবের পরও বছকাল জীবিত ছিলেন, এ বিষয়ে আর সন্দেহের অবকাশ থাকে না।" সভোশ্রবারু এখানে যে ঘটনার উল্লেখ করিয়াছেন, তাহা রাজেক্রনাথ ঘোষ মহাশয়ের অভৈডসিন্ধির ভূমিকা হইতে লওয়া। ঘোষ মহাশয়ের লিখিত মধুস্দন সরস্বতার জীবনী যে কিংবদন্তী অবলম্বনে রচিত তাহা তিনি নিজেই স্বীকার করিয়াছেন ( অলৈডসিন্ধির ভূমিকা,

<sup>্</sup> এইপানে "বহুমতী"র মূতাকর অমাদ দেখা যাইতেছে। প্রকৃতপকে ওকর নাম ব্যাসরাজ বা ব্যাসরাহ, শিশ্বের নাম ব্যাসরাম ( অবৈতসিভিত ভূমিকা, পু" ১৬৭ )।



### গোড়ীয় বৈষ্ণব ধর্ম্মের আদিযুগ-সম্বন্ধে বিবিধ তথ্য

পৃ<sup>০</sup> ১১৬)। এ সকল কিংবদন্তা যে পরস্পর-বিরোধী ভাহার একটি প্রমাণ দিতেছি। ঘোষ মহাশয় স্থির করিয়াছেন যে মধুসূদন সরস্বতীর জন্ম ৫২৫ খুফাব্দের সন্নিহিত সময় (ঐ, পু<sup>া</sup> ১২৬)। কিন্তু ১৩২-১৩৬ পৃষ্ঠায় তিনি লিখিয়াছেন যে ভাদশ বর্ষ বয়সে মধুসূদন "নবছাপে ভগবান্ কুষ্ণতৈতভার আবির্ভাব হইয়াছে" শুনিয়া নবদ্বীপে গমন করেন। ঐতিতভা ১৫50 খুটাব্দের প্রথমেই নবদ্বীপ ত্যাগ করিয়া নালাচলে যান। ১৫২৫ + ১২ = ১৫৩१ थ्रकोटक यथन मधूमृतन नवहोट्य यान विलया अवात, তথন ঐতিচতভার তিরোভাবের পর চার বৎসর অতীত হইয়াছে। সত্যেনবাবু "মধুদ্দনের জন্ম সময় ১৫২০ খুফাবদ বা তাহার ২।, বংসর পুনের" নির্দেশ করিয়া উক্ত প্রবাদের সহিত ঐতিহাসিক ঘটনার সামঞ্জ করিতে চাহিয়াছেন। কিন্তু ৫ ৮ খুফাকে মধুসূদনের জন্ম ধরিলেও, তাঁহার বার বৎসর বয়সে অর্থাৎ ১৫৩০ খৃষ্টাব্দে নবদ্বাপে এটিচতন্যদর্শনে আসা সম্ভব হয় না। শ্রীচৈত্য তথন নীলাচলে গম্ভীরার মধ্যে প্রেমাবেশে में इंटिलन ७ कथा वाकाला (मर्गित जकत्लेरे कानिएन, आंत्र मधूमूमन कि জানিতেন না ? এই জন্ম বলিতে হয় যে সামান্ম প্রবাদের উপর নির্ভর করিয়া বোড়শ শতাব্দীর লেখক কবিকর্ণপূর ও গোপালগুরুকে ভ্রাস্ত মনে করা স্থবিবেচনার কাজ নহে। পরস্তু "অধৈতসিদ্ধি"র ভূমিকায় ঘোষ মহাশা যে সব তারিখ দিয়াছেন, তাহা নিভিল নহে। তিনি লিখিয়াছেন (পু ৪১) যে বল্লভাচাণ্য ১৫৮৭ থুন্টাব্দে পরলোক-গমন করেন। কিন্তু বল্লভাচার্য্য প্রকৃতপক্ষে ১৫৩১ খুফাব্দে তিরোধান করেন (Z. D. M. G., 1934, p. 268) I

শ্রীতৈতত্তার সমসাময়িক কবিকর্ণপুর ও গোপালগুরুর মত সহজে উড়াইয়া দেওয়া যায় না, কিন্তু পুরী উপাধিয়ুক্ত মাধবেক্র কি করিয়া তার্থ উপাধিয়ারী মাধ্ব সম্প্রদায়ের শিশ্র হইলেন তাহাও বুঝা কঠিন। কিন্তু যোড়শ শতাকীতে সকল পুরী-ভারতীই শঙ্কর-সম্প্রদায় ভুক্ত ছিলেন না। অনেক গৃহী বাক্তির উপাধিও পুরী, ভারতী প্রভৃতি ছিল; মুঝা অসমীয়া শঙ্করদেবের বংশপরিচয়ে দেখা যায় গন্ধবি গিরির পুত্র রামগিরি, রামগিরির পুত্র হেমগিরি, তাহার পুত্র হরিহর গিরি

প্রভৃতি (লক্ষ্মীনাথ বেজবরুয়া-কৃত "শঙ্করদেব", পৃ'৯)। শান্তিপুরের অবৈত-বংশীয় গোন্ধামীরা অবৈতের পূর্ববপুরুষদের যে পরিচয় দেন, তাহাতে পাওয়া যায় জটাধর ভারতীর পুত্র বাণীকান্ত সরস্বতী, তৎপুত্র সাকৃতিনাথ পুরী (Dacca Review, March, 1913)। প্রাণতোষিণীত্রে আছে—

জ্ঞাত-তত্ত্বেন সম্পূর্ণঃ পূর্ণতত্ত্বপদে স্থিতিঃ। পরব্রহাপদে নিত্যং পুরি-নামা স উচাতে॥

এই হিসাবে যে কোন জানা ব্যক্তির উপাধি পুরী হইতে পারে।

এরপ অনুমান করা যাইতে পারে যে মাধবেন্দ্র বিজয়কৃষ্ণ গোস্বামী ও ব্রহ্মবান্ধব উপাধাায় প্রভৃতির ভায় কয়েকবার ধর্মমত পরিবর্তন করিয়াছিলেন। হয়ত প্রথমে তিনি পুরী সম্প্রদায় ভুক্ত সন্মাসী হন, তারপর অন্ধেতবাদে বাতশ্রদ্ধ হইয়া চরম দ্বৈতবাদা মাধ্ব সম্প্রদায়ের নিকট দাক্ষা গ্রহণ করেন। কিন্তু ব্রহ্মবান্ধব উপাধাায় যেরূপ খৃষ্টান হইয়াও নৃতন নামে পরিচিত হন নাই, সেইরূপ মাধবেন্দ্র পুরী-উপাধিতেই পরিচিত রহিয়া গেলেন। পরে মাধ্ব সম্প্রদায়েও প্রেমধর্ম্মের যথেষ্ট ক্রম্ব না দেখিয়া নিজে এক সম্প্রদায় গঠন করেন।

মাধ্ব সম্প্রদায়ের সহিত গৌড়ীয় বৈক্ষব সম্প্রদায়ের যে সাধ্য-সাধন-বিষয়ে মিল নাই তাহা ১৩০৫ সালে কটকের রাসবিহারী মঠের অধ্যক্ষ রাধারুক্ষ বস্তু প্রমাণ করিয়া দেখান (বীরভূমি, ১৩০৫ সাল, ৯০৪, পৃত ১৮৮-৮৯)। এইরূপ অমিল দেখিয়াই কবিকর্ণপূর মাধ্ব সম্প্রদায়ের গুরুপ্রণালী দিয়া তন্মধ্যেই মাধ্বেক্সকে নৃতন ধর্ম্ম-প্রবর্ত্তক বলিয়াছেন।

শ্রীজীব ও ক্রুদাস কবিরাজ স্বীকার করেন না যে শ্রীচৈততা মাধ্ব সম্প্রদায়ভুক্ত। শ্রীজীব ক্রুমসন্দর্ভের প্রারম্ভে শ্রীচৈততাকে "স্বসম্প্রদায়-সহস্রাধিদৈবং" বলিয়াছেন। কবিরাজ গোস্বামী শ্রীচৈততার সহিত উদীপির মাধ্ব সম্প্রদায়ীদিগের বিচার বর্ণনা করিয়াছেন (২১৯২২৯-৫১)।



গৌড়ীয় বৈঞ্চৰ ধর্মের আদিযুগ-সম্বন্ধে বিবিধ তথ্য ৫৮৯ তিনি মাধ্বগুরুর মুথ দিয়া সাধ্য-সম্বন্ধে বলাইয়াছেন, "পঞ্চবিধ মুক্তি পাঞা বৈকুঠে গমন" (হা৯া২৩৯)। তিনি চাতা১৬ পয়ারে লিখিয়াছেন—

> সাষ্ট্রি, সারূপ্য, আর সামাপ্য, সালোক্য। সাযুজ্য না লয় ভক্ত, যাতে ত্রহ্ম ঐক্য।

মাধ্ব মতে সাষ্টির অর্থ ভগবানের ঐশগ্য ও সাযুক্তা অর্থে ব্রহ্ম ঐক্য নহে। পরানাভ "মাধ্বসিদ্ধান্তসারে" "তত্তকং ভার্মে" বলিয়া নিম্নলিখিত শ্লোক তুলিয়াছেন—

> মুক্তাঃ প্রাপ্য পরং বিষ্ণুং তন্তোগলেশতঃ কচিৎ। বহিষ্ঠান্ ভুঞ্জতে নিতাং নানন্দাদীন্ কথকন॥

অর্থাৎ "মুক্তপুরুষেরা পরমপুরুষ বিষ্ণুকে প্রাপ্ত হইয়া তাঁহার ভোগলেশ হইতে কোন স্থলে বহিঃন্থিত কিঞ্চিৎ ভোগ নিতা উপভোগ করে, কিন্তু বিষ্ণুর সম্পূর্ণ আনন্দাদি ভোগ করিতে পারে না।" ডক্টর ঘাটে The Vedanta নামক গ্রন্থে (Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, 1926) মাধ্ব মতের পরিচয় দিতে যাইয়া লিখিয়াছেন—" Even in Moksa, Jiva cannot be one with Brahma. Bhoktr, Bhogya and Niamaka are eternally distinct and equally real." উদীপি মঠের মাধ্ব সম্প্রদায়ের গুরু যে নিজের সম্প্রদায়ের মতবাদের প্রধান কথাই জানিতেন না এ কথা কল্পনা করা অসম্ভব। সেই জন্ম সন্দেহ হয় যে কবিরাজ গোস্থামী শ্রীতৈতক্তের সহিত মাধ্ব সম্প্রদায়ের গুরুর বিচারটি যথাযথভাবে লেখেন নাই।

#### সিদ্ধান্ত-

মাধবেন্দ্রপুরী মাধ্ব সম্প্রদায়ের আনুগতা অন্ততঃ কিছুকালের জন্ম করিয়াছিলেন। তাহা না হইলে কবিকর্ণপুর ও গোপালগুরুর তায় শ্রীচৈতন্তের সমসাময়িক লোক ঐরূপ কথা লিখিতে পারেন ন —লিখিলেও বৈষ্ণব সমাজ উহা স্বীকার করিয়া লইতেন না। শ্রীজীব কোথাও স্পন্ট

#### ঐতিভক্তচরিতের উপাদান

করিয়া বলেন নাই যে মাধবেক্রের সঙ্গে মাধ্ব সম্প্রদায়ের কোন সম্বন্ধ ছিল না। কিন্তু মাধবেক্রের প্রবৃত্তিত প্রেমধর্ম্মের সহিত মাধ্ব মতের গুরুতর পার্থক্য দেখিয়াই তিনি বৈফ্রব-বন্দনায় গৌড়ীয় বৈফ্রব সম্প্রদায়কে মাধ্ব সম্প্রদায় বলিয়াছেন। এই মত থুবই সমীচীন ও যুক্তিসকত।

#### শ্রীতৈতভার ভগবতা-ঘোষণা

#### (ক) ঈশর-ভাবে আবেশ

মুরারি গুপ্তের কড়চা হইতে জানা যায় যে শৈশবকাল হইতেই মাঝে মাঝে বিশ্বস্তুরের অলৌকিক বিভূতি প্রকাশ পাইত এবং তিনি ভাবাবিষ্ট হইয়া নানারূপ উপদেশ দিতেন। মুরারি গুপ্ত এইরূপ ঘটনার কারণ-নির্দ্দেশ করিতে যাইয়া বলেন—

জনত ভগবদ্বানাৎ কীর্ত্তনাৎ প্রবণাদপি।
হরেঃ প্রবেশো হৃদয়ে জায়তে স্থ্যহাত্মনঃ।
তত্তামুকারং চক্রে স তত্তেজস্তৎপরাক্রমঃ॥
ভক্তদেহে ভগবতো হাত্মা চৈব ন সংশয়ঃ॥ ১৮৮২-৩

পরবর্তী কোন চরিতকার মুরারি গুপ্তের ভায় যুক্তিসহত কারণ দেখান নাই। কবিকর্ণপুর তৈতভাচরিতামূত নহাকাব্যে একাদশ সর্গ পর্যান্ত মুরারিকে দৃঢ়ভাবে অনুসরণ করিলেও উদ্ধৃত বাকোর প্রতিধান করেন নাই। ইহা হইতে বুঝা যায় যে পরবর্তী ভক্তদের নিকট জন্মকাল হইতেই শ্রীচৈতভা ঈশ্বরূরণে প্রতিভাত হইয়াছেন।

চরিতগ্রন্থ গুলির এবং পদাবলীর তুলনামূলক বিচার করিলে দেখা যায় যে গয়। হইশে প্রতাবির্তনের পূর্বেব বিশ্বস্তুর ভক্তগণ-কর্তৃক সমবেত-ভাবে ঈশ্বর বলিয়া পূজিত হয়েন নাই। তৈথিক ব্রাহ্মণ, দিখিজয়ী প্রভৃতি বিদেশী লোক নবলাপে আসিয়া বিশ্বস্তারের ঈশ্বরত্বের প্রমাণ পাইয়াছিলেন বলিয়া বৃন্দাবনদাস বর্ণনা করিয়াছেন বটে, কিন্তু তিনি একথাও লিখিয়াছেন

000

গৌড়ীয় বৈষ্ণৰ ধর্মের আদিযুগ-সম্বন্ধে বিবিধ তথা ৫৯১ যে বিশ্বস্তুরের পাণ্ডিতা দেখিয়া নবন্ধীপের কুদ্র ভক্তগোষ্ঠী সর্বদা আক্ষেপ করিতেন—

> মনুষ্যের এমন পাণ্ডিতা দেখি নাঞি। কৃষ্ণ না ভঞ্জেন সভে এই দুঃখ পাই॥ ১৮৮৩

্বীবাস নিমাইকে বলেন—

কৃষ্ণ না ভঞ্জিয়ে কাল কি কাৰ্য্যে গোঙাও। রাত্রি দিন নিরবধি কেন বা পড়াও। ১৮৮৯১

তেইশ বংসর বয়সের পূর্বের বিশ্বন্ধরের ভগবতা স্বীকৃত হওয়ার বা ভক্ত হওয়ার কোন প্রমাণ মুরারি গুপ্ত দেন নাই। স্কুতরাং বৃন্দাবনদাসের এই চুইটি বর্ণনা যথাখ বলিয়া মানিয়া লওয়া যাইতে পারে। গয়া হইতে প্রত্যাগমনের পরই বিশ্বস্তরের ভক্তজনোচিত ব্যবহার ও ঈশ্বররূপে আবেশ দেখা যায়। বাহুঘোষের পদে ও জয়ানন্দের চৈতয়মহলে বিশ্বস্তরকে বাল্যকাল হইতে ভক্ত বলিয়া বর্ণনা করা হইয়াছে। এরূপ বর্ণনা কি ইতিহাসের দিক্ দিয়া, কি মনস্তর্বের দিক্ দিয়া সম্ভব মনে হয় না।

গ্যায় ঈশ্রপুরীর নিক্ট দীক্ষাগ্রহণের পর বিশ্বস্তর সম্পূর্ণ নৃতন মানুষ হইয়া গেলেন। নবদ্বীপের ভক্তগোষ্ঠী দেখিলেন উদ্ধতের শিরোমণি নিমাই পণ্ডিত

> কচিচ্ছু হা হরেনাম গাঁতং বা বিহবলঃ ক্ষিতোঁ। পততি ক্রতিমাত্রেণ দণ্ডবৎ কম্পতে কচিৎ। কচিদ্ গায়তি গোবিন্দ ক্ষা ক্ষেতি সাদরম্। সন্নকণ্ঠঃ কচিৎ কম্পরোমাঞ্চিত-তমুভূ শম্।

> > -- मूत्राति, २१३२१०-२७

ভক্তগোষ্ঠী বিশ্বস্তরকে সাদরে গ্রহণ করিলেন। শ্রীবাসের গৃহে মহানন্দে গৃত্যগীত চলিতে লাগিল। মুরারি গুপ্তের কড়চাকে বিশ্বাস করিলে বলিতে হয় যে বিষ্ণুপ্রিয়া দেবীই সর্বপ্রথমে তাঁহাকে ভগবান্ বলিয়া ঘোষণা করেন। ঘটনাটি এই—একদিন বিশ্বরর স্বগৃহে বসিয়া প্রেমাতিবিহবলভাবে আক্ষেপ করিতেছেন—"হরিতে আমার মতি হইবে কিরূপে ?" তাহা শুনিয়া দেবা (বিফুপ্রিয়া) বলিলেন—

হরেরংশমবেছি হুমাত্মানং পৃথিবীতলে।
অবতীর্ণোহসি ভগবন্ লোকানাং প্রেমসিদ্ধয়ে।
থেদং মা কুরু যজ্ঞোহয়ং কীর্ত্তনাখ্যঃ কিতৌ কলো।
তংপ্রসাদাৎ অসম্পন্ধো ভবিশ্বতি ন সংশয়ঃ।
এবং শ্রুহা গিরং দেব্যা হর্ষযুক্তো বভূব সং॥ ১।২।৭-১০

শ্রোকে উল্লিখিত দেবী (গিরং দেবা) খুব সম্ভব বিফুপ্রিয়া দেবী। ঐ শব্দে শচীমাতা বুঝাইলে তাঁহার নাম স্পায়্ট বলা হইত। অন্যান্য স্থানে সেইরূপই করা হইয়াছে।

উদ্ধৃত অংশের ভাব লইয়া লোচন লিখিয়াছেন—

এককালে নিজ্বরে আছে প্রোমভোরা।
রোদন করয়ে আঁথে সাত পাঁচ ধারা॥
কি করিব কোথা যাব কেমন উপায়।
শীক্ষকে আমার মতি কোন্ উপায়ে হয়॥
ইহা বলি রোদন করয়ে আর্ডনাদে।
কাতর বচন শুনি সর্বজন কান্দে॥
হেন কালে দৈববাণী উঠিল সাদরে।
আপনে ঈশর তুমি শুন বিশ্বস্তরে॥
প্রেম প্রকাশিতে মহা কৈলে অবতার।
নিজ্ঞ করণায় প্রেমা করিবে প্রভার॥
ধর্ম্ম সংস্থাপন করি করিবে কার্ডন।
থেদ দূর করি কার্য্য করহ আপন॥

এতেক বচন যবে দেবমুখে শুনি। অন্তর হরিষ কিছু না কহিলা বাণী॥ মধ্য, পৃত ৩-৪



#### গোড়ীয় বৈষ্ণৰ ধৰ্ম্মের আদিযুগ-সন্ধন্ধে বিবিধ তথ্য

cas

কড়চায় মুদ্রিত "এবং শ্রুহা গিরং দেবা।" পাঠটি ঠিক মনে হয়; কেন-না উহার মধ্যে অলৌকিক কিছু নাই-সামীর প্রেমভাব দেখিয়া জী তাঁহাকে ভগবানের অংশ বলিয়া স্থির করিলেন ও তাঁহাকে সেই কথা বলিয়া তাঁহার প্রাক্তঞ-বিরহে সান্তনা দিলেন। লোচন প্রীচৈতক্তকে "হরেরংশ" বলিতে চাহেন না। তাঁহার মতে এটিচতল পূর্ণ ভগবান্। তহি তিনি ঐ অংশটি অনুবাদ করেন নাই। মুরারির কড়চা পড়িয়া মনে হয় যে শ্রীচৈতভাকে প্রথমে ভক্তগণ গরির অংশই বলিয়া নিরূপণ করিয়াছিলেন, পরে তাঁহাকে পূর্ণ ভগবান্ বলিয়া ঘোষণা করা হয়। পেবী—বিশ্বস্তরকে ভগবান্ বলিলেন ইহা অপেকা বিশ্বস্তর দৈববাণীতে উহা শুনিলেন বর্ণনা চমকপ্রদ। তাই লোচন ঐ ভাবে ঘটনাটিকে বর্ণনা করিয়াছেন। লোচনের অনুবাদে এরূপ সংযোজনা অনেক আছে। লোচনের বর্ণিত দৈববংণী ঠিক মনে না করার একটি কারণ এই যে শ্রীকুষ্ণ-বিরহে কাতর বিশ্বস্তর যদি দৈববাণীতে শুনেন যে তিনিই ভগবান, তাহা হইলে তাঁহার "অন্তর হরিষ" হইবার কোন সম্পত কারণ নাই— যদি দৈববাণীতে নিজের ভগবতার কথা শুনিয়া বিশ্বস্তর খুসা হইয়া থাকেন, তাহা হইলে তাঁহার গৌরব বৃদ্ধি পায় না। কিন্তু নিজের তরুণী স্ত্রী তাঁহাকে হরির অংশ বলিয়া জনিয়া তাঁহাকে কাইনে উংসাহিত করিতেছেন ইহা দেখিয়া তাঁহার যথার্থ ই আনন্দিত হইবার কথা; কেন-না যে বিষ্ণুপ্রিয়াকে অবছেল। করিয়া তিনি কীর্ত্তন করিয়া নিশাযাপন করেন, সেই বিষ্ণুপ্রিয়াই তাঁহাকে কীর্ত্তন প্রচার করিতে বলিতেছেন। যাহা হউক যদি বিষ্ণুপ্রিয়া দেবী বিশ্বস্তরকে ভগবান্ বলিয়া জানিয়াও থাকেন, তাহা হইলেও তিনি বাহিরে ভক্তদের নিকট ইহা প্রকাশ করিয়াছিলেন বলিয়া মনে হয় না।

উক্ত ঘটনা বর্ণনা করার পর মুরারি গুপু লিখিতেছেন যে একদিন বিশ্বস্তুর বরাহ-ভাবের আবেশে তাঁহার দেবগৃহে প্রবেশ করেন এবং ঈশ্বরভাবে মুরারিকে উপদেশ দেন। ইহার পরে তিনি প্রায়ই ঈশ্বর-

ভাবে আবিষ্ট হইতেন; যথা—

কচিদীশভাবেন ভৃত্যেভাঃ প্রদদৌ বরান্।

—মৃ০, ২া৪া৪; মহাকাবা, ৬া২৬



৫৯৪ 🔄 টেডভাচরিতের উপাদান

অবৈতের গৃহে যাইয়াও ঐরূপ ভাবাবেশ হইয়াছিল—

স্বয়ং শান্তিপুরং গতা দৃষ্টাতৈত-মহেশ্রম্। ঐশর্যাং কথয়ন্ কৃষ্ণপূর্ণাবেশো বভূব হ।

—मृ°, २१०१३8

এইরূপ অপূর্ব ও অলৌকিক আবেশ দেখিয়া ভক্তদের মনে দৃঢ় বিখাস জন্মিতে লাগিল যে বিখন্তর স্বয়ং ভগবান্। ভক্তগণসহ বিশ্বস্তরের আনন্দলীলার কথা নবনীপের অনভিদ্রের কুলাইয়ের বাহুঘোযাদি— তিন ভাইয়ের, শ্রীখণ্ডের নরহরি, রলুনন্দনের, অধিকা-কালনার গৌরীদাস পণ্ডিতের, কুমারহট্রের জগদানন্দের, কুলীনগ্রামের রামানন্দ বহু প্রভৃতির, খানাকুলের অভিরামদাসের কাণে এই সময়েই পৌছিয়াছিল বলিয়া মনে হয়। ইহার পূর্বের কোন ঘটনা-উপলক্ষে কোন পদে বা চরিতগ্রন্থে ইহাদের নাম নাই। ইহারা নিত্যানন্দ প্রভুর নবনীপে আগমনের কিছু দিন পূর্বের বা পরে আসিয়া বিশ্বস্তরের সহিত মিলিত হইলেন। ভক্ত-গোষ্ঠী বৃদ্ধি পাইতে লাগিল।

## (খ) ভক্তগণ-কর্তৃক ঈশররূপে পূজা

নিত্যানন্দ প্রভু ভারতের প্রায় সকল তীর্থ ভ্রমণ করিয়া এবং বহু সাধুর সঙ্গলাভ করিয়া নবদীপে আসিলেন। তাঁহার বহুবিধ ও বিচিত্র অভিজ্ঞতা ও অনুভূতির দ্বারা বুঝিলেন যে বিশ্বস্তরের মধ্যে যে ভাব প্রকাশ পাইয়াছে তাহার তুলনা কোথাও মেলেনা। তিনি বিশ্বস্তরের ষড়্ভুজ মূর্ভিও দেখিয়াছিলেন বলিয়া মুরারি গুপু বর্ণনা করিয়াছেন (২৮৮২৭)। ইহার পর শ্রীবাস পণ্ডিত অবৈতকে শান্তিপুর হইতে ভাকিয়া আনিলেন। বিশ্বস্তরের ঈশ্বরাকেশ ক্রমেই বৃদ্ধি পাইতে লাগিল। তিনি একদিন শ্রীবাসের দেবালয়ে সিংহাসনের উপর বসিলেন।

শ্রীবাস-দেবালয়-মধ্যগো হরি-র্বরাসনম্বঃ সহসা ররাজ ॥

—মৃ<sup>০</sup>, ২৯১৮; মহাকাব্য, ৭৩০

## গৌড়ীয় বৈক্ষৰ ধৰ্ম্মের আদিযুগ-সন্ধক্ষে বিবিধ তথ্য

0 20

শ্রীনিবাস পণ্ডিতের ঘরে মহাপ্রভূ। দেবতার ঘর মধ্যে বসি হাসে লছ। দিবা বীরাসনে প্রভূ বসিয়াছে স্থাব।

— त्नांहन, मधा, 9° २०

আচার্য্যের আগমন জানিএগ আপনে।
ঠাকুর পণ্ডিত গৃহে চলিলা তথনে।
প্রায় যত চৈতগ্রের নিজ ভক্তগণ।
প্রভুর ইচ্ছায় সব মিলিলা তথন॥
আবেশিত চিত প্রভু সভেই বুঝিয়া।
সশঙ্গে আছেন সভে নীরব হইয়া॥
ভঙ্গার করয়ে প্রভু ত্রিদশের রায়।
উঠিয়া বসিলা প্রভু বিকুর খট্টায়॥

চৈ ভা°, হাল ৯০

সেই দিন অবৈত তাঁহাকে ভগৰৎরূপে "তুলসীমঞ্চরী দিয়া পূঞ্জিল চরণ" (লোচন)। "চন্দনে ডুবাই দিবা তুলসীমঞ্চরী। অর্ঘ্যের সহিত দিলা চরণ উপরি। (চৈ ভা , ২০১১৯৪; মুরারি, ২০৯১৯-২০; কবি-কর্শপুর মহাকাব্যে ৭০২-৩৫ অনুরূপ বর্ণনা করিয়াছেন।)

এই ঘটনার পূর্বে বিশ্বভরকে পূজা করা হইয়াছে এরূপ কোন বিবরণ কোন প্রামাণিক পদে বা চরিতগ্রন্থে নাই। প্রীচৈতত্ত্যের ভগবতা-ঘোষণার এই প্রথম পর্বব।

## (গ) ভক্তগণ-কর্তৃক ঈশ্বররূপে অভিধেক

শ্রীতৈতন্তার ভগবতা-ঘোষণার দ্বিতীয় পর্বে হইতেছে মহা-প্রকাশাভিষেক। মুরারি ঐ ঘটনা সংক্ষেপে ও রুন্দাবনদাস বিস্তৃত ভাবে বর্ণনা করিয়াছেন। মুরারি বলেন যে একদিন শ্রীবাসের গৃহে বিশ্বস্তুর নানাক্ষণ ভাববিকার প্রকাশ করিয়া—

ররাজ সহসা দেবঃ সহস্রাচ্চিঃসমপ্রভঃ।

460

তিনি ভাবাবিষ্ট হইয়া বলিলেন-

देनः त्वरः विकानोहि मिकिनाननम् व्यम् ॥

তথন ভক্তগণ পুলকিত হইলেন। শ্রীবাস তাঁহাকে গঞ্চাজলে সান করাইয়া পূজা করিলেন। নিত্যানন্দ ছত্র ধারণ করিলেন, গদাধর মুখে তাপুল দিলেন, কেছ কেছ চামর ব্যক্তন করিতে লাগিলেন। সকল ভক্ত মিলিয়া সঙ্কার্তনরসে মগ্র হইলেন (মুরারি, ২০১২০১২-১৭; লোচন, মধ্য, পুটান )। এই অভিযেক-দিবসে বিশ্বস্থারের ভাবাবেশ কতক্ষণ ছিল তাহা মুরারি বলেন নাই। রন্দাবনদাস বলেন যে প্রভু ঐ দিন সাত প্রছর ধরিয়া ভাবাবিন্ট ছিলেন। ঐ দিনের ঘটনার বৈশিন্ট্য ক্রির ভাষায় বলিতেছি—

অগ্ন অগ্ন দিন প্রভু নাচে দান্ত ভাবে।
কণেক ঐথ্যা প্রকাশিয়া পুন ভাগে॥
সকল ভক্তের ভাগ্যে এদিন নাচিতে।
উঠিয়া বসিলা প্রভু বিষ্ণুর খট্টাতে॥
আর সব দিনে প্রভু ভাব প্রকাশিয়া।
বৈসেন বিষ্ণুর খাটে যেন না জানিয়া।
সাত প্রহরিয়া ভাবে—ছাড়ি সর্বব মায়া।
বিসলা প্রহর সাত প্রভু ব্যক্ত হৈয়া॥

আজ্ঞা হৈল বোল মোর অভিষেক গীত। শুনি গায় ভক্তগণ হই হর্মিত।

এই সাতপ্রহরিয়া ভাবের দিন-

সর্বাত্তে শ্রীনিত্যানন্দ জয় জয় বলি। প্রভূর শ্রীশিরে জল দিয়া কুত্হনী। অবৈত শ্রীবাস আদি যতেক প্রধান। পঢ়িয়া পুরুষস্কু করায়েন স্থান। চৈ° ভা°, ২া৯া২১৯



পৌড়ীয় বৈষ্ণৰ ধৰ্ম্মের আদিযুগ-সম্বন্ধে বিবিধ তথ্য স্থানাভিষেক করার পর অবৈতাদি প্রধান প্রধান পার্যদগণ—

429

দশাক্ষর গোপাল মন্তের বিধিমতে। পূজাকরি সভে স্তব লাগিলা পঢ়িতে॥

- (5° 51°, 212122°

কবিকর্ণপুর প্রীতৈতভাচরিতামৃত মহাকাব্যে (৫।১৮-১২০) অভিষেক্রের বর্ণনা করিয়াছেন। কবি এখানে বলিয়াছেন যে প্রভুর ভাবাবেশ একাদশ প্রহর ধরিয়াছিল (৫।১১৪)। কবিকর্ণপুর একটি নৃতন সংবাদ দিয়াছেন। তিনি বলেন যে বিশ্বস্তর শচীদেবীকে কুণা করিয়া তাঁহার মস্তকে পাদ অর্পণ করিয়াছিলেন (৫।৮৮); এবং শচী কুণা পাইয়া আনন্দে নৃত্য করিয়াছিলেন। প্রীতৈতভাচন্দ্রোদয় নাটকে বর্ণিত হইয়াছে যে ভাবাবেশ অক্টাদশ প্রহর কাল বর্তমান ছিল (১।৬০, বহরমপুর সং)।

অভিষেক-কালে শ্লীদেবীর উপস্থিতির কথা "গোবিন্দমাধব বাস্তু" ভণিতাযুক্ত একটি পদে পাওয়া যায়; যথা

তামূল ভক্ষণ করি বসিলা আসনে।
শচীদেবী আইলেন মালিনীর সনে।
পঞ্চপ্রদীপ জালি তেঁহ আরতি করিলা।
নারজেন করি শিরে ধানদূর্বা দিলা।

ल्याविन्म त्यात्यत्र शरम तमथा याय-

সচন্দন তুলসীপত্র গোরার চরণে দিয়া আচার্য্য কৃষ্ণায় নমঃ বলে।
—গৌরপদতরঞ্জিণী, পূ° ১৫০, ২য় সং

চরিতগ্রন্থসমূহ ও সমসাময়িকদের লিখিত গদ হইতে জানা যায় যে অভিষেকের দিন নিম্নলিখিত ভক্তগণ উপস্থিত দিলেন—অখৈত, নিতানিন্দ, হরিদাস, গদাধর, শ্রীবাস, শ্রীরাম, শ্রীপতি, শ্রীনিধি, গোবিন্দঘোষ, মাধব ঘোষ, বাস্থ ঘোষ, নরহরি সরকার, মুকুন্দ, জগদীশ, নারায়ণগুগু, গোবিন্দানন্দ, বক্রেশ্বর, শ্রীধর, ম্রারিগুপ্ত, শচীদেবী, মালিনী, নারায়ণী, ছঃখী। কবিকর্গপুর মহাকাবো (৬।৭৯) বলিয়াছেন যে উক্ত চারজন নারী বাতাত আরও বিপ্রপত্নীরা উপস্থিত ছিলেন। উক্ত ভক্তগণের মধ্যে আনেকেই বিশ্বস্তরের বয়োজ্যেষ্ঠ ও ভক্তি-শাস্ত্রে পণ্ডিত। ইহারা প্রত্যেকে সে দিন বিশ্বস্তরকে শ্রীকৃষ্ণ বলিয়া শুধু যে স্বীকার করিলেন তাহা নহে, পুরুষসূক্ত পড়িয়া তাহাকে শভিষিক্ত করিলেন ও দশাক্ষর গোপাল মস্তেপুজা করিলেন। ইহা প্রত্যক্ষদর্শী সাক্ষীর রচনা হইতে পাওয়া যাইতেছে। বিশ্বস্তরের বয়স্ ভখন ২০২৪। এইরূপ একজন তরুণ মুবককে যে প্রবীণ পণ্ডিতগণ, এমন কি বিশ্বস্তরের মাতৃদেবী, স্বয়ং ভগবান বলিয়া পূজা করিলেন ইহাই শ্রীচৈতন্তের ভগবন্তার প্রেষ্ঠ প্রমাণ। তথাক্ষিত শারীয় স্লোকের ভবিশ্বৎ অবহার-বর্ণনা কত দূর প্রামান্ত বলিতে পারি না, তবে বিশ্বজ্ঞান অনুভূতিই যে আধুনিক জনের নিকট শ্রেষ্ঠ প্রমাণ বলিয়া স্বীকৃত, এ কথা স্থানিচত। অভিষেকের দিন হইতে নবজীপে সমবেত অন্তর্গ্ব ভক্তগোষ্ঠী বিশ্বস্তরকে স্বয়ং ভগবান্ বলিয়া পূজা করিতে লাগিলেন। সর্বসাধারণের সমক্ষে তথনও তাহার ভগবতা ঘোষিত হয় নাই।

#### (ঘ) সর্বসাধারণের নিকট ঐীচৈতভ্যের ঈশ্বরছ-ঘোষণা

অভিবেকের কয়েক মাস পরেই বিশ্বস্তর মিশ্র কেশব ভারতীর নিকট সন্নাস গ্রহণ করিয়া 'শ্রীকৃঞ্চতৈত্যু' নামে পরি চিত হইলেন। বাল্যকাল হইতে তাঁহার ঈশ্বর-ভাবের আবেশ প্রকাশ হইত, কিন্তু সন্নাস-গ্রহণের পর আর তাঁহার উক্তরূপ আবেশের কোন বিবরণ পাওয়া যায় না। সন্নাস-গ্রহণের পর তিনি অধিকাংশ সময়েই শ্রীকৃষ্ণ-বিরহে আকৃল হইয়া থাকিতেন। কচিৎ কদাচিৎ কোন ভাগ্যবান্ ভক্ত তাঁহার চতু ভুজ বা ষড়ভুজমূর্ত্তি দেখিতে পাইতেন বলিয়া প্রকাশ। কোন ভক্ত তাঁহাকে ভগ্রান্ বলিলে তিনি লজ্জিত ও বিরক্ত হইতেন; যথা—

নিরবধি দাক্ত ভাবে প্রভুর বিহার। মুক্তি কৃষ্ণদাস বই না বোলয়ে আর ।

# গৌড়ীয় বৈষণৰ ধর্মের আদিযুগ-সন্বন্ধে বিবিধ তথ্য ৫৯৯ হেন কার শক্তি নাহি সম্মুখে তাহানে। ঈশ্বর করিয়া বলিবেক দাস বিনে। ৩।: ০।৫০৬

মুরারি গুপ্তের কড়চা হইতে জানা যায় যে অদৈত প্রভু পুরীতে রথযানার সময় ভক্তগণসঙ্গে শ্রীকৃষ্ণচৈতগ্য-সংকীর্ত্তন করিয়াছিলেন (৪।১০।১৬-২০)। এই ঘটনা বৃন্দাবনদাস বিস্তৃতভাবে বর্ণনা করিয়াছেন (৩)১০।৫০৪-০৭।) অদৈত প্রভু একদিন সকল ভক্তকে বলিলেন—

শুন ভাই সব এক কর সমবায়।

মুখ ভরি গাই আজি শ্রীচৈতক রায়।

আজি আর কোন অবতার গাওয়া নাঞি।

সর্বব অবতার মম চৈতক গোসাঞি।

কীর্ত্তনের ধ্বনি শুনিয়া শ্রীচৈতন্ত স্বয়ং আসিয়া উপস্থিত হইলেন। শ্রীচৈতন্তকে কেহ ঈশ্বর বলিলে তিনি বিরক্ত হয়েন জানিয়াও —

সাক্ষাতে গান সভে চৈত্য বিজয়।

প্রভূ ইহা শুনিয়া লজ্জিত হইয়া চলিয়া গেলেন। কীর্ত্তনাত্তে ভক্তগণ যখন শ্রীতৈত্যকে দর্শন করিতে আসিলেন, তখন প্রভূ বলিলেন—

অয়ে অয়ে শ্রীনিবাস পণ্ডিত উদার।
আঞ্চিত্রমি সব কি করিলা অবতার।
ছাড়িয়া ক্ষেত্র নাম ক্ষেত্র কীর্ত্তন।
কি গাইলা আমারে ত বুঝাহ এখন॥

ভক্তগণ কহিলেন, "প্রসূ! হাত দিয়া কি সূর্য্য ঢাকা যায় ? তুমি স্বাকাশ, কিরূপে লুকাইয়া থাকিবে ?" তাঁহারা এইরূপ কথাবার্তা বলিতেছেন এমন সময়—

> সহস্র সহস্র জন —না জানি কোথায়। জগনাথ দেখি আইল প্রভু দেখিবার॥



#### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

কেহো বা ত্রিপুরা কেহো চাটীগ্রামবাসী।
শীহট্টিয়া লোক কেহো কেহো বঙ্গদেশী।
সহস্র সহস্র লোক করেন কার্ত্তন।
শীচৈতগ্র অবতার করিয়া বর্ণন।
জয় জয় শীকৃষ্ণচৈতগ্র বন্মালী।
জয় জয় দিজভক্ত রস কৃতৃহলী।

কবিকর্ণপূর শ্রীচৈত্যচরিতামূত মহাকাব্যে লিখিয়াছেন যে গৌড়ীয় ভক্তগণ পুরীতে আসিবার সময় শ্রীতৈত্য-কীর্ত্তন করিয়াছিলেন।

> অথ তে শ্রীলগৌরাঞ্চরণ-প্রেম-বিহবলাঃ। তত্তিব গুণানামাদি কার্ত্তয়স্তো মুদং বযুঃ॥

উল্লিখিত বর্ণনাত্রয় পড়িয়া মনে হয় কোন এক বংসর অধৈত রথ-যাত্রার সময় শ্রীচৈতত্তের সর্দেশ্বরত্ব সর্বসাধারণের মধ্যে কীর্ত্তন করিয়া ঘোষণা করিয়াছিলেন। পুরীতে রথযাত্রার সময় ভারতবর্ধের বিভিন্ন প্রদেশের অসংখ্য ভক্তের সমাবেশ হয়। সেই সময় শ্রীচৈতত্ত-কীর্ত্তন করার অর্থ ই হইতেছে জনসাধারণের মধ্যে শ্রীচৈতত্তের ভগবতা-ঘোষণা।

জনসাধারণের মধ্যে শ্রীচৈতলের ভগবন্তা-ঘোষণায় বাঁহারা নেতৃত্ব
করিয়াছিলেন, তাঁহাদের নাম মুরারি গুপ্ত ও বৃন্দাবনদাস লিথিয়াছেন।
ঐ প্রসঙ্গ বর্ণনার পূর্ণের যে সকল ভক্ত গোড় হইতে পুরীতে
যাইতেছেন তাঁহারা এবং পুরীর যে সকল ভক্ত তাঁহাদিগের সহিত
মিলিত হইলেন বলিয়া মুরারি ও বৃন্দাবনদাস লিথিয়াছেন, তাঁহারা ঐ
দিন নেতৃত্ব করিয়াছিলেন বলিয়া ধরিয়া লওয়া যাইতে পারে। মুরারির
মতে গৌড়ীয় ভক্তদের মধ্যে (১) অবৈত (২-৫) শ্রীবাসাদি চারভাই
(৬) চক্রশেখর (৭) পুণ্ডরিক বিভানিধি (৮) গঙ্গাদাস পণ্ডিত (৯)
বক্রেশ্বর (১০) প্রত্যান্ধ প্রক্ষাচারী (১১) হরিদাস ঠাকুর (১৫) দিবানন্দ সেন
দাস (১০) বাহ্নদেব দত্ত (১৪) মুকুন্দ দত্ত (১৫) শিবানন্দ সেন
(১৬) গোবিন্দ ঘোষ (১৭) বিজয় লেখক (১৮) সদাশিব পণ্ডিত

900

#### গোড়ায় বৈষ্ণৰ ধৰ্মের আদিযুগ-সম্বন্ধে বিবিধ তথ্য

(১৯) পুরুষোত্তম সঞ্জয় (২০) শ্রীমান্ পণ্ডিত (২১) নন্দন আচার্য্য (২২) শুরাম্বর ব্রহ্মচারী (২০) শীধর (২৪) গোপীনাথ পণ্ডিত (২৫) শ্রীগর্ভ পণ্ডিত (২৬) বনমালী পণ্ডিত (২৭) জগদীশ (২৮) হিরণ্য (২৯) বৃদ্ধিমন্ত খান (৩০) পুরন্দর আচার্য্য (৩১) রাঘব পণ্ডিত (৩: ) মুরারি গুপ্ত (৩০) গোপীনাথ সিংহ (৩৪) গরুড় পণ্ডিত (৩৫) নারায়ণ পণ্ডিত (৩৬) দামোদর পণ্ডিত (৩৭) রযুনন্দন (৩৮) মুকুন্দ (৩৯) নরহরি (৪০) চিরঞ্জীব (৪১) স্থলোচন (৪২) রামানন্দ বস্ত (৪০) সতারাজ খান। ইহাদের সহিত মিলিত হইয়াছিলেন পুরীবাসী (৪৪) নিত্যানন্দ (৪৫) গদাধর (৪৬) পরমানন্দ পুরী (৪৭) সার্বভৌম ভট্টাচার্যা (৪৮) জগদানন্দ পণ্ডিত (৪৯) কাশী মিশ্র (৫০) স্বরূপ দামোদর (৫১) শঙ্কর পণ্ডিত (৫২) কাশীশ্বর গোস্বামী (৫০) ভগবানাচার্য্য (৫৪) প্রত্যুদ্ধ মিশ্র (৫৫) পরমানন্দ পাত্র (৫৬) রামানন্দ রায় (৫৭) গোবিন্দ ঘারপাল (৫৮) ব্রহ্মানন্দ ভারতী (৫৯) রূপ (৬০) সনাতন (৬১) রঘুনাথদাস (৬২) রঘুনাথ বৈছা (৬০) অচ্যতানন্দ (৬৪) নারায়ণ (৬৫) শিখি মাইতি (৬৬) বাণীনাথ ( Nº, 8159 ) 1

বৃন্দাবনদাস উলিখিত ভক্তদের মধ্যে অনেকের নাম লিখিয়াছেন (৩৯)। হইটি তালিকায় আশ্চর্য্য রকম মিল আছে। মুরারির কড়চায় মুরারির নাম লেখা হইয়াছে—

## বৈভসিংহমুরারিকঃ।

ু চৈতন্তভাগবতে—"বৈছাসিংহ চলিলা মুরারি।" মুরারি গুপু কি নিজেকে বৈছাসিংহ বলিবেন ?

সন্দেহ হয় যে পরবর্তীকালে ঐতিতক্সভাগবত দেখিয়া কেহ সংস্কৃতে ঐ তালিকাটি লিখিয়া মুরারির কড়চায় জুড়িয়া দিয়াছেন। ভক্তিরত্নাকরে মুরারির কড়চায় চতুর্থ প্রক্রমের দশম সর্গ পর্যান্ত বর্ণনা স্থানে স্থানে উক্ত ছইয়াছে (মুরারি, ৪। ০)১ শ্লোক, ভক্তিরত্নাকর, ২৫৯ পৃষ্ঠায় ধৃত)। চতুর্থ প্রক্রমের দশম সর্গের পর ১৬টি সর্গ অকৃত্রিম কি না তাহা জ্ঞানা যায় না।

#### 402

শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

যাহা হউক বৃদ্যাবনদাসের তালিকাও অপ্রামাণিক নহে। উক্ত ভক্তগণের মধ্যে বহু কবি, গ্রন্থকার, ভক্ত ও স্থবী ব্যক্তি ছিলেন। তাহারা সকলে মিলিয়া শ্রীচৈত্যকে ঈশ্বর বলিয়া ঘোষণা করিলেন। এই সময় হইতে শ্রীচৈত্য-সঙ্কার্ত্তন প্রবর্ত্তিত হইল।

অফাদশ শতাকাতে নরহরি চক্রবর্তী যথন ভক্তিরতাকর লেথেন, তথন ভক্তগণের ধারণা জ্বিয়াছে যে ঐতিতত্তের জ্বের পূর্বব হইতেই তাহার ভগবতার কথা তাহার পরিকরদের নিকট স্থবিদিত ছিল। তাই ভক্তিরতাকরে (খাদশ তরক্ষ) আছে যে নবখাপ-লালার সময়েই প্রবিদ-গৃহে প্রকৃষ্ণতৈতত্ত-সন্ধার্তন হইয়াছিল; যথা—

নিতানন্দাকৈত দোঁহে সন্ধার্তন রক্ষে। বিলাসয়ে শ্রীবাসমুরারি আদি সঙ্গে॥ একদিন শ্রীবাস অগনে সর্বব জন। আরম্ভিলা শ্রীকৃষ্ণচৈতন্য-সন্ধার্তন॥

নবদীপ-লীলার সময় শ্রীকৃষ্ণটৈতত্ত-সঙ্কীর্ত্তন হওয়া অসম্ভব, কেন-না তথনও বিশ্বস্থর মিশ্রের নাম শ্রীকৃষ্ণটৈতত্ত্ব হয় নাই। যদি গৌরাষ্ণ, নিমাই বা বিশ্বস্থরের নাম লইয়াও কোন কার্ত্তন হইত তাহা হইলে মুরারি গুপু বাস্থ ঘোষ প্রভৃতি সমসাময়িক লেখক তাহার উল্লেখ করিতেন। আর ঐরপ ঘটনা নবহাপেই অনুষ্ঠিত হইলে বুন্দাবনদাস নালাচলে শ্রীটৈতত্ত্ব কীর্ত্তনের কথা ওরপভাবে বর্ণনা করিতেন না। অতএব সিদ্ধাস্ত করা যাইতেছে যে অন্থৈতই পুরীতে সর্বজনসমক্ষে শ্রীটৈতত্ত্বর ভগবতা ঘোষণা করেন। সেই জতাই হয়ত অন্ধৈতের আহ্বানে স্বয়ং ভগবান্ শ্রীটৈতত্ত্বরূপে অবতার্শ হইয়াছিলেন, এই ধারণা লোকের মনে জন্মিয়াছিল।

শীতৈত নত্যানন্দকে গৌড়দেশে প্রেমধর্ম প্রচার করিবার জন্ম প্রেরণ করেন। নিত্যানন্দ প্রভু প্রেমধর্ম-প্রচারের সঙ্গে সঙ্গে শীতৈতন্তের ভগবন্তা প্রচার করিয়াছিলেন; যথা—

> চৈতত্ত সেব, চৈতত্ত গাও, লও চৈতত্ত নাম। চৈতত্তে যে ভক্তি করে, সেই মোর প্রাণ॥

# গৌড়ীয় বৈষণ ধর্মের আদিযুগ-সম্বন্ধে বিবিধ তথ্য এইমত লোকে চৈতহাভক্তি লওয়াইল। দীন হীন নিন্দকাদি সভাৱে নিস্তারিল।

- (5° 5°, 21)128 20

শীতৈত থকে যে তাঁহার সমসাময়িকগণ কিরূপে ভগবান্ বলিয়া স্বীকার করিয়াছিলেন ও তাঁহার ভগবতা প্রচার করিয়াছিলেন তাহার বিবরণ সমসাময়িকদের রচনা হইতে উদ্ধৃত করিলাম। এত প্রমাণ সত্তেও যদি কেহ বলেন যে শ্রীতৈত থ তাঁহার সমসাময়িকগণ-কর্তৃক ভগবান্ বলিয়া পৃক্ষিত হয়েন নাই তাহা হইলে তাঁহার উক্তি অজ্ঞতাপ্রসূত্র বলিতে হইবে।

#### শ্রীচৈতভার বিগ্রহ-স্থাপনা ও অর্চনা

শ্রীচৈতত্যের জাবনকালেই কোন কোন ভক্ত তাঁহার মৃত্তি প্রতিষ্ঠা করিয়া পূজা করিতে আরম্ভ করিয়াছিলেন। মুরারি গুপ্তের মুদ্রিত কড়চার চতুর্থ প্রক্রমের চতুদ্দশ সর্গ যদি অকুত্রিম হয়, তাহা হইলে বলিতে হইবে যে বিষ্ণুপ্রিয়া দেবাই সর্ববপ্রথমে শ্রীচৈতত্যের মৃত্তি প্রতিষ্ঠা করেন; যথা—

প্রকাশরপেণ নিজপ্রিয়ায়াঃ
সমীপমাসাভ নিজং হি মূর্ত্তিম্।
বিধায় তত্যাং স্থিত এষ কৃষ্ণঃ
সা লক্ষ্মীরূপা চ নিষেবতে প্রভূম্॥ মূ্^, ৪।১৪।৮

এই মৃত্তি-স্থাপনের প্রায় সমকালেই গোরাদাস পণ্ডিত গোর-নিতাই মৃত্তি প্রতিষ্ঠা করেন (মৃ°, ৭।১৪।১২-১৪)।

চৈতত্যের পিতামহ উপেন্দ্র মিশ্রের বংশধরগণ শ্রীহট্টের ঢাকা দক্ষিণে যে শ্রীচৈতত্য বিগ্রহ পূজা করেন, ঐ বিগ্রহ শ্রীচৈতত্যের সন্ন্যাস-গ্রহণের বংসরেই স্থাপিত বলিয়া প্রবাদ। প্রত্যন্ত্র মিশ্রা নামধেয় কোন ব্যক্তির রচিত "শ্রীকৃষণটৈতত্যোদয়াবলী" নামক সংস্কৃত গ্রন্থে ও তাহার অমুবাদ

#### ৬০৪ শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

"মনঃসন্তোষিণী" প্রভৃতি গ্রন্থে আছে যে শ্রীচৈততা সন্ন্যাস-গ্রহণের পর শান্তিপুর হইতে সোজা শ্রীহট্টে চলিয়া যান। তথায় যাইয়া পিতামহের বংশধরদের প্রতিপালন করিবার জত্য নিজের মূর্ত্তি স্থাপন করান। এই উক্তি বিশ্বাস্থা নহে, কেন-না সমস্ত সমসাময়িক লেখকের মতে শ্রীচৈততা শান্তিপুর হইতে বরাবর নীলাচলে গিয়াছিলেন। "শ্রীকৃষ্ণতৈততোদয়াবলী" গ্রন্থ যে জাল তাহা আমি "ব্রক্ষবিভা" পত্রিকায় ১০৪০ সালের বৈশাখ-সংখ্যায় সপ্রমাণ করিয়াছি।

ভক্তিরত্নাকর পাঠ করিয়া আর তিনটি স্থানে শ্রীগোরাপ্স-বিগ্রহ-প্রতিষ্ঠার বিবরণ পাওয়া যায়। কাশীশ্বর পণ্ডিত রুন্দাবনে গোবিন্দের পার্শ্বে শ্রীগৌরাঙ্গ মূর্ত্তি স্থাপন করেন।

কাশীশ্বর অন্তর বুঝিয়া গৌরহরি।

দিল নিজ স্বরূপ বিগ্রহ যত্ন করি॥
প্রভু সে বিগ্রহ সহ অরাদি ভুঞ্জিল।
দেখি কাশীশ্বের প্রমানন্দ হৈল॥
শ্রীগৌর গোবিন্দ নাম প্রভু জানাইলা।
ভারে লইয়া কাশীশ্বর বৃন্দাবনে আইলা॥ পৃ° ৯১

নরহরি সরকার ঠাকুর শ্রীগোরাঙ্গের মূর্ত্তি স্থাপন করিয়াছিলেন। রখুনন্দন শ্রীখণ্ডে নরোত্তম ঠাকুরকে ঐ মূর্ত্তি দর্শন করান; যথা—

> তেঁহো মহাপ্রভুর অন্ননে লইয়া গেলা। ভুবনমোহন গৌরচন্দ্রের দর্শনে। প্রেমাবেশে নরোত্তম প্রণমে প্রাক্ষণে। পুত ৫৫৫

নরোত্র ঠাকুর গদাধর দাস-স্থাপিত গৌরাজমূর্ত্তি কাটোয়ায় দর্শন করিয়াছিলেন।

দাস গদাধরের জীবন গোরাচান্দে। নিরখিয়া নরোত্তম ধৈর্য্য নাছি বান্ধে॥ পু°০৫৬ গৌড়ীয় বৈষ্ণব ধর্মের আদিযুগ-সম্বন্ধে বিবিধ তথা ৬০৫ নরহরি সরকার ঠাকুর ও গদাধর দাস আঁচৈতত্তের জীবনকালে মূর্ত্তি প্রতিষ্ঠা করিয়াছিলেন কি না জানা যায় না। প্রবাদ যে মুরারি গুপ্ত

প্রতিষ্ঠা করিয়াছিলেন কি না জানা যায় না। প্রবাদ যে মুরারি গুপু জীচৈততের একটি বিগ্রহ সেবা করিতেন। ঐ বিগ্রহের পাদপীঠে মুরাহির নাম ক্ষোদিত আছে। ঐ মূর্ত্তি বীরভূমে আবিস্কৃত হয়েন এবং একণে বৃদ্ধাবনে সেবিত হইতেছেন।

• এটিচতত্তার তিরোভাবের অনেক বংসর পরে নরোত্তম ঠাবুর মহাশয় থেতরীতে বিষ্ণুপ্রিয়া সহ প্রিগৌরাঙ্গনৃতি স্থাপন করেন; যথা—

> শ্রীকৃষ্ণবিগ্রহ পঞ্চ কৈলা প্রিয়া সহ। প্রাপ্ত হৈল প্রিয়া সহ শ্রীগৌর বিগ্রহ। —ভক্তিরত্নাকর, দশম তরত, পূ° ৬২২

## এটিততা ও কীর্ত্তন-গান

দক্ষিণাপথের আলবার ভত্তগণ কীর্ত্তন গান করিতেন বলিয়া জানা যায়। শ্রীমদ্ভাগবতে সন্ধীর্তনের কথা আছে। হরপ্রসাদ শাত্রী মহাশয় "বৌদ্ধ গান ও দোহা"র ভূমিকায় দেখাইয়াছেন যে পরবর্তী বৌদ্ধগণের মধ্যে কীর্ত্তন-গান প্রচলিত ছিল। কীর্তন-গান শ্রীচৈতত্তের বহু পূর্বব হইতে প্রচালত থাকিলেও বৃন্ধাবনদাস শ্রীচৈতত্ত-নিভানন্দকে "সন্ধীর্তনৈক পিতরোঁ" বলিয়াছেন।

জ্ঞীরূপ গোসামী কীর্তনের সংজ্ঞায় লিখিয়াছেন—

নামলীলাগুণাদীনামুচৈডভাষাতু কীওনন্।

— ভক্তিরসায়তসিকু, পূর্ববলহরী, ৬০

প্রীক্ষীব গোস্বামী ক্রমসন্দর্ভ-টাকায় বলিয়াছেন—
বহুভির্মিলিয়াতদ্গানস্থং শ্রীকৃষ্ণকীর্ত্তনমিতি।

প্রীরূপ কার্ত্তনকে তিন ভাগে বিভক্ত করিয়াছেন; যথা—নামকার্ত্তন, লালা-

#### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

কার্ত্তন। তিনি "হরয়ে নমঃ কৃষ্ণ যাদবায় নমঃ" প্রভৃতি বলিয়া নাম কার্ত্তন করিতেন। তিনি "হরে নমঃ কৃষ্ণ হাদবায় নমঃ" প্রভৃতি বলিয়া নাম কার্ত্তন করিতেন। তিনি "হরে কৃষ্ণ হরে কৃষ্ণ" প্রভৃতি বিরোশ অক্ষর মহামন্ত কার্ত্তন করিয়াছেন বলিয়া কোথাও স্পষ্টতঃ বর্ণিত হয় নাই। সেই জন্ম এক দল ভক্ত বলেন যে এরূপ নামকার্ত্তন করা অশান্ত্রায়। কিন্তু নিম্নলিখিত কারণবশতঃ তাহাদের উক্তি অযৌতিক মনে হঁয়। (ক) শ্রীরূপ গোস্বামা ব্রক্ষাণ্ড পুরাণ হইতে বহু প্লোক উন্ধার করিয়াছেন। তাহাতে স্পন্টতঃ হবিনাম উচ্চৈঃস্বরে সংখ্যা না করিয়া কার্ত্তনের ব্যবস্থা আছে (ব্রক্ষাণ্ডপুরাণ, উত্তর খণ্ড, ষষ্ঠ অধ্যায়, ৫২-৬০ প্লোক, নন্দকুমার করিবত্ব সংস্করণ)। (স) শ্রীরূপ লঘুভাগবতামূতের মঙ্গলাচরণে লিখিয়াছেন

# শ্রীটৈত অমুখোদগার্ণা হরেকুফোতিবর্ণকা:। মঙ্গুমন্তো জগৎপ্রেম্মি বিজয়ন্তাং তদাহবয়া:॥

এথানে শ্রীচৈতত্যের মুখোদগীর্ণ হরিনামে জগৎ প্রেমে নিমজ্জিত হইয়াছিল বলা হইয়াছে। তাহা হইলে বুঝা যায় যে প্রভু সংখ্যা না করিয়াও উচ্চৈঃস্বরে হরে কৃষ্ণ নাম করিছেন। সংখ্যা করিয়া নাম করায় বিধি-পালন ও অবশ্য-কর্তব্যতা বুঝায়, কিন্তু সংখ্যা ভিন্ন কীর্ত্তন করায় নিষেধ বুঝায় না। হরেরুক্ষ নাম কেবল মাত্র জপ্য যাঁহারা বলেন, তাহারাও এ কথা বলেন না যে ইহা গোপ্য। তাহা হইলে দশে মিলিয়া মহামত্র কীর্ত্তন করায় দোষ কি ? (গ) হরে কৃষ্ণ নামের অফ্টপ্রহর কীর্ত্তন ব্রুক্তাল হইতে প্রচলিত আছে। গোপাল ভট্ট গোস্বামীর ও

নামকীওঁনের বিভিন্ন প্রকার-সথকে নিম্নলিবিত স্থান এইবা ,—
 তৈতজ্ঞভাগৰত— বাহ্বতাক্থ্য-বদ ; বাসাহত ; বাদাহত সুরারির কল্পা—কাহার, তালার, আলার, আলাহদ
 তৈতজ্ঞভালের নাটক—স্থামার।

400

## গৌড়ীয় বৈঞ্চৰ ধর্ম্মের আদিযুগ-সম্বন্ধে বিবিধ তথ্য

লোকনাথ গোস্বামীর তিরোভাব উপলক্ষে বুন্দাবনে হরেকৃষ্ণ নামের অইপ্রহর কীর্ত্তন হইয়া থাকে এ কথা রাধারমণ মন্দিরের ও রাধাবিনেদের মন্দিরের বর্তমান দেবাইতেরা স্বীকার করিয়ছেন (ভূবনেশ্বর সাধু-কৃত "হরিনাম-মঙ্গল গ্রন্থ," পূ০ ৫২)। (খ) বাঙ্গালা দেশের সর্পত্র মৃত্যুকালে হরেকৃষ্ণ নাম শোনানো হয়। সে সময় কেহই সংখ্যা রাখেন না, আত্মায়-সক্জনে মিলিয়া মুমুর্বর কাণে হরেকৃষ্ণ নাম শোনাইয়া থাকেন। "সক্ষার্তন-রীতিচিন্তামণি"র আধুনিক লেখক বলেন যে হরেকৃষ্ণ নাম কার্ত্তন করিলে "প্রভূশিক্ষার বিপরীত আচরণে প্রভূ-আজ্ঞাজ্ছেদন-ফলে বৈক্ষবহনাশ স্চিত হইতেছে। স্কৃতরাং তাদৃশ দুর্বিরপাকে আচারস্থাই, মতিনাই দশা কিছুই আশ্চয়্য নহে" (পরিশিষ্ট, পূ০ ৩)। হরেকৃষ্ণ নাম প্রচার করিতেই শ্রীচৈতন্তের আবির্ভাব, সেই নাম কীর্ত্তন করিলে বৈঞ্চবহ্ব নাই হইবে কেন ভাহা আমাদের সাধারণ বুদ্ধির অগোচর।

শ্রীচৈততা প্রথমে যে গুণ-কার্ত্তন করিয়াছিলেন, তাহা বৃন্দাবনদাস আমাদিগকে উপহার দিয়াছেন—

> তুয়া চরণে মন লাগত রে। সারজধর তুয়া চরণে মন লাগত রে॥ চৈতভাচন্দ্রের এই আদি সঙ্গতিন। ভক্তগণ গায় নাচে শ্রীশচীনন্দন॥

> > — চৈ° ভা°, হাহতাত ৯

ভাঁহার আর্ত্তি ও আনন্দসূতক কার্তনের কণা শ্রীচৈত্রচরিভায়তে (২০০০৮-১৯, ০০০৬৫, ২০০০১১) বর্ণিত হইয়াছে। উক্ত প্রস্থে প্রভূব শ্রীলা-কার্তন করার বর্ণনাও আছে; যথা—

চণ্ডীদাস বিভাপতি রায়ের নাটক গীতি কর্ণামূত জ্রীগীতগোবিন্দ। স্বরূপ রামানন্দ সনে যহাপ্রভু রাতি দিনে গায় শুনে প্রম আনন্দ॥ ২।২

#### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

পরবর্তীকালে নরোত্তম ঠা র মহাশয় কার্ত্র-গানে নৃত্র সংযোজনা করিয়া উহা জনপ্রিয় করেন ( "ভারতবর্ষ", ১৩৩ ভাদ্র, অধ্যাপক খগেন্দ্র-নাথ মিত্রের "রসকীর্ত্রন"-নামক প্রবন্ধ দ্রষ্ট্রা )।

#### ত্রীতৈ তেখার ভক্তগণ

"ঐতিতভাচরিতায়তের" আদিলালার নবম পরিভেদে মাধবেক্রপুরী ও তাহার ১০জন শিয়ের নাম: দশম পরিচেছদে শীচৈতত্ত-শাখায় ১৫१-জনের নাম; একাদশ পরিচ্ছেদে নিত্যানন্দ-শাখায় (প্রীচৈতন্ত-শাখায় যাঁহাদের নাম আছে তাঁহাদিগকে বাদ দিয়া ) ৭:জনের নাম এবং ভাদশ পরিচ্ছেদে অত্তৈত-শাখায় ৪০জন ও গদাধর-শাখায় ৩৩জনের—একুনে ৩১০জন ভক্তকে শ্রীচৈতক্সের সমসাময়িক বলিয়া বর্ণনা করা হইয়াছে। এই তালিকা নিভিন ও সম্পূর্ণ নহে। বৃন্দাবনদাসের "প্রীচৈত গভাগবতে" (৩।৭) নিত্যানন্দ-ভক্ত বলিয়া ৩৮জন ভক্তের নাম উল্লেখ করা হইয়াছে। যত্নাথদাসের "শাখানির্থামূতে" গদাধবের শিশুরূপে ৫৭জন ভক্তের নাম ও রামগোপালদাসের নরহরি সরকার ও রঘুনন্দনের শিশ্য-"শাখা-বর্ণনে" ৩২জনের নাম পাওয়া যায়। কবিকর্ণপুর ১৫৭৬ খৃষ্টাব্দে "গৌরগণোদ্দেশদীপিকা"য় ২১৭জন ভক্তের নাম করিয়াছেন। সব মিলাইয়া একুনে প্রীচৈতত্তের সমসাময়িক পরিকরের সংখ্যা হইয়াছে ৪৯০। এতহাতীত জয়ানন্দ ২৭জন এমন স্ত্রীলোক ভক্তের নাম করিয়াছেন যাঁহাদের কোন পরিচয় পাই নাই। উক্ত ৪৯০জন ভক্তের মধ্যে অবশ্য শ্রীচৈতত্মের পরিবারভুক্ত ব্যক্তি ও গুরুবর্গের নামও আছে।

#### ভক্তদের জাতি

অনেকের ধারণা আভে যে ইচিততের ধর্ম বোড়শ শতাবলতে নিম্নতর জাতির মধ্যে গৃহীত হইয়াছিল; আক্ষণাদি জাতি উহা গ্রহণ করেন নাই।

40b



# গৌড়ায় বৈক্ষব ধর্মের আদিযুগ-সম্বন্ধে বিবিধ তথ্য ৬০৯ কিন্তু আমি পরিশিন্টে ভক্তদের জাতি, বাসস্থান প্রভৃতির যে পরিচয় দিয়াতি তাহা হইতে নিম্নশিখিত বিবরণ পাওয়া যায়:—

| ব্ৰাক্ষণ                    | ২৩৯ |
|-----------------------------|-----|
| কায়স্থ                     | 25  |
| বৈভ                         | তপ  |
| স্থৰণৰণিক্                  | 3   |
| <b>ड्रॅ</b> हेमानि          | >   |
| <i>স্</i> ত্রধর             | 5   |
| কর্মকার                     | ,   |
| <b>ट्यां</b> क              | >   |
| হাজরা উপাধি (জ্ঞাতি অজ্ঞাত) | >   |
| <b>মুসলমান</b>              | 2   |
| জাতি অজ্ঞাত                 | 26  |
| সন্মাসী                     | ¢8  |
| পাৰ্শি                      | 3   |
| রাজপুত                      | >   |
| ব্রাহ্মণেতর উড়িয়া         | ২৬  |
|                             | 8৯0 |

ইহা-ছারা স্পায় বুঝা যাইবে যে যোড়শ শতাব্দীতে ঐ চৈতভের প্রেম-ধর্ম উচ্চবর্গ-কর্তৃক গৃহীত হইয়াছিল। ঐ সপ্রাদায়ের নেতৃত্ব করিয়াছিলেন আহ্মণ, বৈছা ও কায়ত্ব। উক্ত তালিকার মধ্যে ১৬-জন জীলোক আছেন, তা ছাড়া জয়ানন্দ আরও ২৭জন জীলোকের নাম করিয়াছেন।

#### সন্ন্যাসি-পরিকরগণ

শ্রীচৈতত্ত্বের সম্প্রদায়ের যে বিবরণ চরিতগ্রন্থসমূহে আছে তাহাতে শ্রীচৈতত্ত্বের সহিত সন্ন্যাসীদের ঘনিষ্ট সম্বন্ধের পরিচয় পাওয়া যায় না। কিন্তু গৌরগণোদ্দেশদীপিকা ও বৈষ্ণব-বন্দনা প্রভৃতি হইতে ৫৪জন

#### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

সল্লাসার নাম পাওয়া যায়। তাঁহারা কোন্ কোন্ সম্প্রদায়ভুক্ত ছিলেন তাহার বিবরণ নিম্নে দেওয়া গেল:—

| পুরী            | 2. |
|-----------------|----|
| তীর্থ           | ь  |
| অরণ্য           | 2  |
| গিরি            | a  |
| ভারতী           | a  |
| আনন্দ উপাধিধারী | 8  |
| সরস্বতী         | ٠  |
| আশ্রম           | 2  |
| যতি             | ,  |
| অবধৃত           | •  |
| অজ্ঞাত          | 2  |
|                 | 48 |

330

শ্রীচৈত্য ঈশরপুরীর নিকট দীক্ষা ও কেশব ভারতীর নিকট সন্ন্যাস লইলেও গিরি, তীর্থ, অরণ্য প্রভৃতি উপাধিধারী সন্ন্যাসিগণ তাঁহার কুপা পাইয়াছিলেন।

#### ভক্তগণের পাণ্ডিত্য ও কবিত্ব

উক্ত ৪৯০জন পরিকরের মধ্যে ৬৬জন লেখক ছিলেন; অর্থাৎ শতকরা ১৩'৫জন ভক্ত কবিহগুণসম্পন্ন ছিলেন। রূপদক্ষ ও নৃত্যগীতাদি কলাকুশলী ব্যক্তিগণ জীতৈতত্ত মহাপ্রভু-প্রবৃত্তিত ধর্ম্মের প্রতি সমধিক আকৃষ্ট হইয়াছিলেন। উক্ত ৬৬জনের মধ্যে কবিকর্ণপূর, রঘুনাথদাস প্রভৃতি কয়েকজন বাঙ্গালা পত্ত, সংস্কৃত পত্ত ও গ্রন্থ রচনা করিয়াছিলেন। ইহাদের নাম সতজভাবে হুই বা তিন বার উল্লেখ করিতেছি—কিন্তু মোট সংখ্যা-গণনার সময় এক বারই ধরিয়াছি।

যাঁহাদের পদ পদকলতক ও গৌরপদতরঙ্গিতি ধৃত হইয়াছে এরূপ পদকর্তা ৩২জন; যথা—অনস্ত আচার্য্য অনস্তদাস, উদ্ধবদাস, কবিকর্ণপূর,



## গোড়ীয় বৈক্ষৰ ধর্মের আদিযুগ-সম্বন্ধে বিবিধ তথ্য

কান্ত ঠাকুর, গোপাল ভট্ট, গোবিন্দ আচার্যা (ইহার পদ কোন গ্রন্থে ধৃত হয় নাই কিন্তু গোরগণোদ্দেশদীপিকায় ইহাকে "গীতপভাদিকারকঃ" বলা হইয়াছে, ) গোবিন্দ ঘোষ, গোরীদাস, চন্দ্রশেষর, ধনপ্রয় পণ্ডিত, নরহরি সরকার, নয়ন মিশ্র, পরমানন্দ গুপু (প্রয়ানন্দ বলেন ইনি "গোরাঙ্গবিজয়" গীত লিখিয়াছিলেন), পরমেশ্রবদাস, পুরুষোত্তমদাস, বলরামদাস, বাস্ত ঘোষ, বংশীবদন, রুন্দাবনদাস, মাধ্বানন্দ ঘোষ, মুরারি গুপু, যছ, যছনাথ চক্রবর্তী, বছনাথ, রঘুনাথদাস, রামানন্দ রায়, রামানন্দ বস্তু, শঙ্কর ঘোষ, শিবানন্দ সেন, গুলোচন ও হরিদাস বিজ্ঞ।

যাঁহাদের রচিত শ্লোক শ্রীরূপ গোস্বামি-কৃত প্রভাবলীতে সংগৃহীত হইয়াতে এরূপ ১৮জন; যথা—ঈশ্বরপুরী, কবিকর্ণপূর, কবিরত্ব, কেশবছত্রী, গোপাল ভট্ট, চিরঞ্জীব, জগদানন্দ, জগলাথ সেন, বিষ্ণুপুরী, ভবানন্দ, মনোহর, মাধবেন্দ্র পুরী, রঘুনাথদাস, রঘুপতি উপাধ্যায়, শ্রীগর্ভ, শ্রীমান, স্থাদাস ও যন্তাবর।

গ্রন্থক :৮জন: যথা --

| গ্রন্থকার     | গ্ৰন্থের নাম            | मखना                                |  |
|---------------|-------------------------|-------------------------------------|--|
| >। ঈশ্বপূরী   | শ্ৰীঞ্ঞলীলামূত          | পাভয়া যার না।                      |  |
| ২। কবিকৰ্ণপূর | <b>ী</b> হৈতন্তচন্দ্রেশ | জীনিবাস আচাৰ্য্য শাখা-              |  |
|               | নাটক                    | ভূজ কর্ণপুর কবিরাজ "ভনি             |  |
|               | <b>নী</b> তৈভয়চরিতামৃত | তার কাবা কেহে৷ উহতে                 |  |
|               | মহাকাৰ্য                | নারে স্থির" (ভজ্জিরডাকর,            |  |
|               | গোরগণোদ্দেশদীপিকা       | পৃ <sup>০</sup> ৬১৯ ) অক্ত ব্যক্তি। |  |
|               | অনহার-কৌন্তত            |                                     |  |
|               | শার্যাশতক               |                                     |  |
|               | আনন্দবুন্দাবনচম্পূ      | DI-MAN IN                           |  |
| ০। কবিচন্ত    | ভাগৰতামৃত               |                                     |  |



# ঐতিতভাচরিতের উপাদান

| এছকার                  | গ্ৰন্থেৰ শাখ   | মন্তব্য   |
|------------------------|--|---|
| ৪। কানাই খুঁটিয়া      | মহাভাবপ্রকাশ<br>-  | পুথি পাওয়া যায় না।<br>তাঁহার বংশধরের নিকট<br>হইতে আমেরিকার একজনু<br>টুরিস্ট লইয়া গিয়াছেন। |
| ৫। গোপাল শুক           |  | ইহার ক্লত বহু প্লোক<br>ভক্তিরত্বাকরে গ্রত হইরাছে,<br>কিন্তু গ্রন্থ পাওয়া বার না।             |
| ৬। গোপান ভট্ট          | হরিভজিবিশাস<br>কৃষ্ণকূণামূতের টাকা   | শ্রীজীব ষট্সকর্তের প্রথমে<br>বলিয়াছেন ইনি দর্শন-সম্বদ্ধ<br>একথানি বই লিখিয়াছিলেন।           |
| ৭। গোৰিক কৰ্মকার       | <b>₹</b> 961   | ভাপা কড়চা অকুতিম<br>নহে।   |
| ৮। জগরাধনাস<br>উড়িয়া | উড়িয়া ভাগবতের<br>লেথক  |   |
| ৯। বলরামদাস<br>উড়িয়া | উড়িয়া ভাষায় ছগাঁ-<br>জতি, তুলাভিনা, ভক্তি-<br>রসামৃতসিজ, রামায়ণ<br>প্রভৃতি |   |
| ২০। জয়ানক             | হৈতভামজন   |   |
| ১১। শ্ৰীজীৰ গোস্বামী   | গ্রন্থতালিকা ভক্তিরত্না-<br>কর, পৃ° ৫৯-৬১ ড্রন্টবা ;<br>ঐ তালিকা সম্পূর্ণ নহে  |   |
| ১২। পরমানক প্রী        | জ্ঞানক বলেন,<br>"সংক্ষেপে করিলেন ভিঁহ<br>গোবিক বিজয়।"                         | এই গ্ৰন্থ পাওয়া যায় না।   |



# গৌড়ীয় বৈষ্ণৰ ধশ্মের আদিযুগ-সম্বন্ধে বিবিধ তথ্য ৬১০

| প্রস্থকার                   | অভের নাম                                    | সক্তব্য                           |
|-----------------------------|---|-----------------------------------|
| ১৩। প্ৰবোধানন্দ             | হৈতভচন্দ্ৰণমূত                              |                                   |
|                             | বুনাৰনশতক                                   |                                   |
| ১৪। বিফুপ্রী                | ভক্তির্থাবলী                                | ত্ৰীচৈতজ্ঞের কিছু পূৰ্ব্ববৰ্ত্তী। |
| ১৫। বুন্দাবনদাস             | <b>্ৰীটেড</b> ন্তভাগৰত                      |                                   |
| ১৬। রঘুনাগ<br>ভাগবভাচার্য্য | কুষাপ্রেমন্তরন্ধিণী                         |                                   |
| ১৭। মাধবাচার্য্য            | প্রীকৃষ্ণমঙ্গল                              |                                   |
| ১৮। মুরারি শুপ্ত            | প্রিক্ষ-হৈতভঃরিতম্<br>(কড়চা)               |                                   |
| ১৯। বঘুনাধদাস<br>গোস্বামী   | মুক্তাচরিত্র, গুৰাবলী,<br>দানকেলি-চিস্তামণি |                                   |
| ২০। রাঘব গোস্বামী           | ভক্তিবদ্বপ্ৰকাশ                             |                                   |
| ২১। রামানন্দ রায়           | জগরাথবল্ভ নাটক                              |                                   |
| ২২। এরপ গোঝামী              | ভক্তিবত্বাকর, পৃ" ৫৬-<br>৫৭, তালিকা স্কটবা  |                                   |
| ২০। লোকনাথ                  | ভাগবতের টাকা                                |                                   |
| २८। जीनाव                   | ভাগৰতের টাকা                                |                                   |
| ২৫। সনাতন                   | ভজিবছাকর, পূ° ৫৭,<br>ভালিকা দ্রপ্তবা        |                                   |
| २७। नाक्दकीय                | সারাবলী, সমাসবাদ<br>প্রভৃতি ভাষের গ্রন্থ    |                                   |
| ২৭ ৷ স্থরপদামোদর            | তম্বনিরূপণস্চক<br>কোন গ্রন্থ                | পাওয়া যায় না।                   |
| ২৮। নরহরি সরকার             | <u>বীরক্ষভবনামৃতম্</u>                      | the little that we design         |

438

#### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

এই সব লেখক ভিন্ন ভগবান্ আয়াচার্যা, বিজ্ঞানিধি, বিজ্ঞাবাচস্পতি প্রভৃতি পণ্ডিভগণ শ্রীচৈতত্যের ভক্ত হইয়াছিলেন; স্ত্রাং শ্রীচৈতত্যের ধর্ম ধুব বড় বড় পণ্ডিভ-কর্তৃক গৃহীত হইয়াছিল, দেখা যাইতেছে।

#### পরিকরগণের বাসস্থান বা শ্রীপাট

শ্রীচৈতত্যের পরিকরগণ যে যে স্থানে বাস করিতেন, সে সে স্থান বৈষ্ণবধর্ম-প্রচারের কেন্দ্র হইয়াছিল। এখন ঐ সব স্থান তার্থ বলিয়া পরিগণিত। বাঙ্গালায় নবন্ধীপ, উৎকলে পুরী ও যুক্ত-প্রদেশে বৃন্দাবন শ্রীচৈতত্যের ধর্মমত-প্রচারের সর্ববপ্রধান কেন্দ্র হইয়াছিল।

#### क। वान्नालारमभ

বে সমস্ত ভক্তের জন্মস্থান বা বাসস্থানের বিবরণ পাওয়া গিয়াছে তাহা হইতে জানা যায় যে ঐতিচতত্ত্যর প্রধান প্রধান পরিকরগণ নদীয়া, বর্জমান, হুগলী, ২৪-পরগনা ও যশোহর জেলায় বাস করিয়া প্রেমধর্ম প্রচার করিয়াছিলেন। নবদীপ ও তরিকটবর্তী বড়গাছি, দোগাছি, মাউগাছি, কুলিয়া, পাহাড়পুর, চাঁপাহাটি, সালিগ্রাম প্রভৃতি গ্রামে বহু ভক্ত বাস করিতেন। বিহার প্রদেশে জাত কৃষণাস বোধ হয় ঐতিচতত্ত-নিত্যানন্দের সঙ্গ-লোভে বড়গাছি গ্রামে বাস করিতেছিলেন।

ফুলিয়া প্রাক্-চৈতত্ত-মুগেই যথেন্ট প্রসিদ্ধিলাভ করিয়াছিল। তথায় শ্রীচৈতত্তের কয়েকজন প্রধান পার্মদ জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন। জয়কুঞ্চ-দাস বলেন—

> ন্ত্রীব মিশ্রের জন্ম ফুলিয়া প্রামেতে। গোবিন্দ শিবানন্দ পণ্ডিত হো তাথে। কাশীখর মিশ্র জীব পণ্ডিত হো আর। তপন আচার্য্যের হয় তথাই প্রচার।

শান্তিপুরে অবৈত বাস করিতেন ও তথায় মুকুন্দ রায়, উদ্ধারণ দত্ত এবং কৃষ্ণানন্দ জন্মিয়াছিলেন।



#### গৌড়ীয় বৈষ্ণব ধর্মের আদিযুগ-সম্বন্ধে বিবিধ তথা

কলিকাতা হইতে ই. বি. আরের রাণাঘাট ও ই. আই আরের গুপ্তিপাড়া পর্যন্ত গলার ছই তীরবর্তী স্থানসমূহে বহু ভক্ত বাস করিতেন। গলার এক পারে বরাহনগর, স্থাচর, পানিহাটী, এঁড়েদহ, খড়দহ, কাঞ্চনপল্লী ও কুমারহট্ট, এবং অপর পারে আক্না, মাহেশ, তড়া আটপুর, জিরাট ও গুপ্তিপাড়া বৈফ্ষবধর্মা প্রচারের কেন্দ্র হইয়াছিল।

বর্জমান জেলার কুলানগ্রাম, কালনা, দাইহাট, কুলাই, কাটোয়া, শীথও ও বেলগাঁ বৈফবসাহিত্যে অমর হইয়া রহিয়াছে।

একচাকায় নিতানন্দ প্রভুর জন্মস্থান হইলেও ঐতিতত্তের জাবন-কালে বারভূম বৈষ্ণবধর্ম্মের কেন্দ্র হয় নাই। তাঁহার তিরোভাবের কিছুকাল পরে ময়নাডাল, মঙ্গলডিহি, কাঁদড়া প্রভৃতি স্থান কীর্ত্তন ও বৈষ্ণবশান্ত্র-আলোচনার কেন্দ্র হইয়াছিল। বাঁকুড়া জেলার কোন সমসাময়িক ভক্তের নাম পাই নাই।

যশোহরের বোধখানা, যশড়া ও বুড়ন (জয়ানন্দের ভাটকলাগাছি গ্রাম ভাটলী ও কেরাগাছী গ্রামখয়) শ্রীপাট বলিয়া প্রসিদ্ধিলাভ করিয়াছে।

ঘোড়াঘাট রাজসাহীতে গোকুলানন্দ ও বনমালীদাস বৈভ জন্মিয়া-ছিলেন; নাটোরের কাছে নন্দিনী (পুং) নামক সীতার শিশু বাস করিতেন।

মালদহে রূপ-স্নাত্ন থাকিতেন। জ্বলী (পুং) সীতাঠাকুরাণীর নিকট মল্ল লইয়া জ্বলীটোটা নামক স্থানে বাস করিতেন।

পাবনা জেলার সোনাতলায় কালা কৃষ্ণদাসের প্রীপাট আছে।

ফরিদপুর, বরিশাল, ময়মনসিংহ, কুমিল্লা, নোয়াথালি, বগুড়া, রংপুর, দিনাজপুর, জলপাইগুড়ি, কুচবিহার প্রভৃতি স্থানে (জেলায়) জীচৈতত্ত্বর প্রকটকালে কোন কেন্দ্র স্থাপিত হইয়াছিল বলিয়া প্রমাণ পাই নাই।

চট্টগ্রামে পুণ্ডরীক বিছানিধি, বাহুদেব দত্ত ও গদাধর পণ্ডিতের পিতা মাধব মিশ্র জন্মিয়াছিলেন। চট্টগ্রামে বৈষ্ণবধর্ম প্রবল না হইলেও অনেকে ইহা গ্রহণ করিয়াছিলেন। মুন্সী আবহুল করিম চট্টগ্রামে বহু বৈষ্ণব পুথি আবিন্ধার করিয়াছেন। ত্রিপুরার কোন ভক্ত শ্রীচৈত্যা-

#### শ্রীচৈতনাচরিতের উপাদান

গোষ্ঠীতে প্রাধান্য লাভ করেন নাই, কিন্তু তথায় যে শ্রীচৈতন্যভক্ত ছিলেন তাহার প্রমাণ শ্রীচৈতন্যভাগবত হইতে পাওয়া যায়। যে দিন অছৈত পুরীতে রথযাত্রা-উপলক্ষে শ্রীচৈতন্য-কার্ত্তন করিয়া জগৎ-সমক্ষে শ্রীচৈতন্মের অবতারত্ব ঘোষণা করিলেন—সে দিন ত্রিপুরা, চট্টগ্রাম, শ্রীহট্ট ও ঢাকা জেলার লোক উহাতে যোগ দিয়াছিল; যথা—

কেহো বা ত্রিপুরা কেহো চট্টগ্রামবাসী।

ত্রীহট্টিয়া লোক কেহো কেহো বঙ্গদেশী॥

সহস্র সহস্র লোক করেন কর্তিন।

ত্রীচৈতন্ম-অবতার করিয়া বর্ণন॥

'বঙ্গদেশী' শব্দের ছোতনা-ব্যাপক, তবে ঢাকা নিশ্চইই উহার অন্তর্গত।

শীতৈতভার জীবনকালে রাড় ও পুণ্ডু প্রদেশে তাহার ধর্মমত ব্যাপক-ভাবে প্রচারিত হইয়াছিল। পূর্ববঙ্গে এখন যে বৈফবধর্মের প্রাবল্য দেখা যায় তাহা প্রধানতঃ অধৈত, নিত্যানন্দ, গদাধর ও বিফুদাস কবীক্ষ-বংশীয় গোস্বামীদের প্রচারের ফলে।

#### থ। আসাম

শীহটে অবৈতের পিতার ও শীতৈততার পিতামহের বাসস্থান। মুরারি গুপু, শীবাস, চক্রশেখর প্রভৃতি শীহটে জন্মিয়াছিলেন। শীহটিয়ারা গৌড়ীয় বৈষ্ণবধর্মের স্থাপয়িতা বলিলে অত্যক্তি হয় না। কিন্তু শঙ্কর-দেবের প্রভাবনশতঃ শীতৈততার ধর্ম্মত তাঁহার জীবনকালে আসামে স্থপ্রচারিত হইতে পারে নাই।

#### গ। উৎকল ও অফাত প্রদেশ

মহামহোপাধ্যায় হরপ্রসাদ শাত্রীর স্থায় স্থবিজ্ঞ লেখকও বলেন যে শ্রীতৈতক্তের সকল ভক্তই বাঙ্গালী ছিলেন —''Himself a Bengali, his associates were all of the same nationality'' (J.B.O.R.S., Vol. VI., pt. 1, p. 62). কিন্তু একপ উক্তি বিচার-সহ নহে।

250



গৌড়ীয় বৈষ্ণৰ ধর্মের আদিযুগ-সম্বন্ধে বিবিধ তথ্য ৬১৭ ৪৯০জন পরিকরের মধ্যে যে সকল অবাঙ্গালীর জন্মস্থানের বিবরণ পাওয়া গিয়াছে তাঁহাদের মধ্যে—

| উড়িয়া         | 88                      |
|-----------------|-------------------------|
| <b>ভাবি</b> ড়ী | ৭ + সনাতন, রূপ, শ্রীজীব |
| গুজরাটা         | 3                       |
| মারহাটা         |                         |
| রাজপুত          | 8                       |
| অজ্ঞাত          | > (গোপাল সাদিপুরিয়া)   |
|                 |                         |

বোড়শ শতাব্দীতে মেদিনীপুর জেলার অনেকটা অংশ উৎকলের অন্তর্ভুক্ত ছিল। সেই জন্ম বৈষ্ণব সাহিত্যে বাঁহাদিগকে উড়িয়া ভক্ত বলিয়া জানা যায়, এমন অনেকের জন্মস্থান মেদিনীপুরে; যথা—জয়ক্ত

> কাশীনাথ মিশ্র মধুপণ্ডিত হো আর। তুলসী মিশ্র হো তমলুকে পরচার॥

ষোড়শ শতাব্দার প্রথমভাগে পুরীতে হিন্দুদের সকল সম্প্রদায়ের লোক তীর্থযাত্রা ও তীর্থবাস করিত। পুরীতে বাস করার জন্ম ভারতবর্ষের বিভিন্ন প্রদেশের ভক্ত শ্রীচৈতন্মের কুণালাভের স্থাোগ পাইয়াছিলেন। শ্রীচৈতন্মের দ্রাবিড়া ভক্তগণ বুন্দাবনে বাস করায় উত্তর-পশ্চিম-অঞ্চলে প্রেমধর্ম্ম প্রচারিত হইয়াছিল বটে, কিন্তু দ্রাবিড় দেশে প্রচারকার্যা চালাইবার স্থবিধা হয় নাই।

# পঞ্চত্ত্ব, দ্বাদশ গোপাল, চৌষট্ট মহান্ত প্রভৃতি পঞ্চত্ত্ব

কবিকর্ণপূরের গৌরগণোদ্দেশদীপিকা হইতে জানা যায় যে, স্ক্রপ-দামোদর ঐতিচতত, অহৈত, নিত্যানন্দ, গদাধর ও শ্রীবাসকে পঞ্জর বলিয়া নিরূপণ করিয়াছিলেন (৯-১২)। সনাতন গোস্বামী রহং-বৈষ্ণব-তোষণীর প্রারম্ভে যে ভাবে নমক্রিয়া করিয়াছেন, তাহাতে বৃথিয়া 426

# শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

উঠা যায় না যে তিনি পঞ্চতত্ত্ব মানিতেন কি না। তিনি প্রীকৃষ্ণচৈতত্তকে প্রণাম করার পর মাধবেন্দ্রপুরী, শ্রীধরস্বামী, সার্বভৌম ভট্টাচার্য্য, বিভাবাচম্পতি, বিভাভূষণ, পরমানন্দ ভট্টাচার্য্য, রামচন্দ্র এবং বাণীবিলাসকে বন্দনা করিয়াছেন। তৎপরে লিথিয়াছেন—

> নমামি শ্রীমদক্ষৈতাচার্যাং শ্রীবাসপণ্ডিতম্। নিত্যানন্দাবধৃতঞ্চ শ্রীগদাধর-পণ্ডিতম্॥

লোচন এই পাঁচজনের সঙ্গে নরহরিকে সমান আসনে বসাইয়াছেন;
যথা—

জয় জয় শ্রীকৃষণটৈততা নিত্যানন্দ। জয় জয় অধৈত আচার্য্য হুখানন্দ॥ জয় জয় শ্রীপণ্ডিত গদাধর নরহরি। জয় জয় শ্রীনিবাস ভক্তি-অধিকারী॥ সূত্রখণ্ড, পৃ° ৭

#### ছয় গোসামী

কুফদাস কবিরাজ লিখিয়াছেন—

শ্রীরূপ সনাতন ভট্ট রঘুনাথ।
শ্রীজীব গোপাল ভট্ট দাস রঘুনাথ।
এই ছয়জন গুরু শিক্ষা-গুরু যে আমার।
তাঁসভার পাদপদ্মে কোটা নমস্বার॥ ১।১।১৮-১৯

উক্ত ছয়জন ভক্ত ছয় গোস্বামী নামে পরিচিত। শ্রীনিবাসাচার্য্য ছয় গোস্বামীর "গুণলেশসূচকম্" নামে সংস্কৃতে একটি স্তোত্র রচনা করিয়াছেন। ছয় গোস্বামীর মধ্যে প্রত্যেকেই রন্দাবনে বাস করিতেন। ইহাদের প্রয়ন্ত্রে ও সাধন-বলে রন্দাবন গোড়ীয় বৈষ্ণব ধর্ম্মের প্রধান কেন্দ্রে পরিণত হয়। ইহারা সম্প্রদায়ের মূলস্তম্ভ বলিলে অত্যক্তি হয় না। ছয় গোস্বামীর মধ্যে রয়ুনাথ ভট্ট বাতীত অপর পাঁচজন স্থপ্রসিদ্ধ গ্রন্থকর্ত্তা। রয়ুনাথ ভট্ট ভাগবত পাঠ করিতেন। ছয় গোস্বামীর মধ্যে অন্ততঃ তিনজন শ্রীচৈতন্তের ভক্তদের পুত্র বা ভাতুপ্রক্র; যথা—শ্রীজীব রূপসনাতনের



গৌড়ীয় বৈষ্ণৰ ধৰ্ম্মের আদিযুগ-সম্বন্ধে বিবিধ তথ্য জাতুষ্পুত্র, রঘুনাথ ভট্ট তপন মিশ্রের পুত্র এবং গোপাল ভট্ট প্রবোধানন্দের ভাতুপুত্র বলিয়া প্রসিদ্ধ। রঘুনাথদাস গোস্বামীও শীচৈতন্য অপেকা

বয়সে অনেক ছোট।

শ্রীচৈতভাচরিতামত-রচনার পূর্বের যে সমস্ত চরিতগ্রন্থ রচিত হইয়াছিল তাহাতে "হয় গোস্বামী" শব্দটিই নাই—কারণ উক্ত শব্দটি ঐ সমস্ত চরিতগ্রন্থ-রচনার পরে স্ফ হইয়াছে। মুবারি গুপ্তের কড়চায় গোপাল ভট্ট, রঘুনাথদাস ও শ্রীজীবের নাম নাই। কবিকর্ণপূরের চৈতভাচরিতামৃত মহাকাব্যে ও বৃন্দাবনদাসের শ্রীচৈতভাভাগবতে রূপ-সনাতন ছাড়া আর কোন গোস্বামীর নাম নাই। ঐতিচতভাচন্দ্রে নাটকে গোপাল ভট্ট, রঘুনাথ ভট্ট ও শ্রীঞ্চীবের নাম নাই।

জয়ানন্দ চৈত্যমন্তলে লিখিয়াছেন-

গ্রীকৃষ্ণচৈততা রহিলেন কৃতৃহলে। দবির খাস সুই ভাই গেলা নীলাচলে ॥ দবির থাসে ঘুচাইলা সংসার-বন্ধন। ছুই ভাইর নাম হৈল রূপ সনাতন । পু° ১৪৯

জয়ানন্দ রূপ-সনাত্র-সম্বন্ধে কিছুই জানিতেন না এবং ফার্সি ভাষায় অজ্ঞ ছিলেন। তাই তিনি দবির থাস (Private Secretary) উপাধিকে দবির এবং খাস—এই তুই পদে বিভক্ত করিয়া রূপ ও সনাতনের নাম ভাবিয়াছেন। লোচন "ঐাচৈতভামন্সলের" প্রারম্ভে "রূপসনাতন বন্দো পণ্ডিত দামোদর"কে বলিয়াছেন, অন্ত কোন গোস্বামীর কথা বলেন নাই।

গৌরগণোদ্দেশদীপিকায় ছয়জন গোস্বামীরই নাম আছে, কিন্তু একস্থানে নাই। প্রথমে রূপ-সনাতন, তারপরে শিবানন্দ চক্রবর্ত্তী, তারপরে গোপাল ভট্ট, রঘুনাথ ভট্ট ও রঘুনাথদাসের নাম (১৮০-৮০), পরে ২০০ শ্লোকে জীজীবের নাম। সেই জন্ম মনে হয় ১৫৭৬ খুফীকেও "ছয় গোশ্বামী" শব্দটির প্রচলন হয় নাই।

450

# শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান দাদশ গোপাল

কোন্ কোন্ ভক্ত দাদশ গোপালের অন্তর্ভুক্ত তাহা লইয়া মতভেদ আছে। লোচনের চৈতন্তমঙ্গলের পূর্বের "দাদশ গোপাল" শব্দটি কোন চরিতগ্রন্থে বাবহৃত হয় নাই।

> রামদাস গৌরীদাস ঠাকুর স্থন্দর। কৃষ্ণদাস পুরুষোত্তম এ কমলাকর॥ কালা কৃষ্ণদাস আর উদ্ধারণ দত্ত। ভাদশ গোপাল ত্রজে ইহার মহতঃ॥

> > —সূত্রথণ্ড, পু<sup>০</sup> ৩১ ৩৪

লোচন "ছাদশ গোপাল" বলিলেও এখানে মাত্র আটজনের নাম করিয়াছেন।

গৌরগণোদ্দেশদীপিকায় প্রদন্ত পনের জন গোপালের মধ্যে সাত জনের নাম সকলেই স্থীকার করেন। উহারা হইতেছেন অভিরাম, ফুন্দর, ধনঞ্জয়, গৌরীদাস, কমলাকর পিগুলায়ি, উদ্ধারণ দত্ত ও মহেশ পণ্ডিত। ছাদশ গোপালের আর পাঁচ জন কে তাহা লইয়া মতভেদ আছে। পাঁচটি গোপালের পদের জন্ম চৌদ্দ জন ভক্তের দাবী উপস্থিত করা হইয়াছে। যে সব বইয়ে দাবী সমর্থিত হইয়াছে তাহাদের নীচে পরবর্তী তালিকায় "ঐ" শব্দ লিখিলাম, আর যেখানে দাবী সমর্থিত হয় নাই সেখানে × চিহ্ন দিলাম।



# গোড়ীয় বৈষ্ণব ধর্মের আদিযুগ-সম্বন্ধে বিবিধ তথ্য

| शांदीशांटबब नाम                              | শ্ৰক্ষসন্ত<br>অন্তন্যহিতা | मुक्का | मुख्डिकिक प् | बन्ता छट्डिब<br>धामन त्यांगांन | আভিরাম দাদের<br>পাট-পরিক্রমা | श्रीकर<br>गङ्गिका | त्रोड़ीय यह<br>विश्वीयुक्त |  |
|--|---------------------------|--------|--------------|--------------------------------|------------------------------|-------------------|----------------------------|--|
| ३। शूक्रव्यक्तिमान<br>ट्यो. श. मी. ३०॰       | AT.                       | AI     | M            | Ħ                              | P                            | AT                | M                          |  |
| २। नामत्र शुक्रण्यास्त्र<br>ल्मी. म. मी. ३०३ | *                         | A      | ,Ay          | *                              | ei                           | M                 | AT                         |  |
| ा नदमश्रमात्र<br>टमी. स. मी. ३०६             | A                         | FI     | M            | M                              | वहें नात्म <u>क</u> ्षम      | শ                 | A                          |  |
| हा क्षिड्रियमात्र<br>(मी. म. मी. ३०२         | AJ                        | ei     | AI           | A                              | AI .                         | ×                 | €1                         |  |
| c) \$193<br>cm, 1, 8, 300                    | Aj                        | ×      | AI           | P                              | Per                          | A                 | A)                         |  |
| ा हमानुस<br>टबी. मू. मी. ३०४                 | AT                        | ×      | ×            | 51                             | ×                            | ×                 | ×                          |  |
| 11 कृत महिठ<br>ली, १, मी, ३०६                | *                         | ×      | *            | *                              | *                            | ×                 | ×                          |  |
| रा कुन्शनम् पछिड<br>लो. १ मी. ३०६            | *                         | ×      | *            | *                              | ×                            | ×                 | *                          |  |
| 3-1 4CPE                                     | ×                         | *      | *            | ×                              | *                            | . ×               | ×                          |  |
| 3+1 Misspell                                 | *                         | rs.    | ×            | ×                              | ×                            | ×                 | ×                          |  |
| ३३। कष्ट्रियेषु                              | ×                         | ×      | *            | *                              | ×                            | A                 | *                          |  |
| ३३। दबमाती छश                                | ×                         | ×      | *            | ,                              | ×                            | ×                 | ×                          |  |

11.11.7 Luis

622

#### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

অনস্তসংহিতা ও চৈত্ত্বসঞ্জীতা প্রাচীন গ্রন্থ নহে। অভিরামদাস
"পাট-পর্যাটনে" ছইজন পরমেশ্বর দাসের নাম করিয়াছেন। কিন্তু পরমেশ্বর
মোদকের কথা ছাড়িয়া দিলে, বৈশ্বর সাহিত্যে পরমেশ্বর দাস একজনই।
সেই জন্ম অভিরামের বর্ণনাও প্রামাণিক মনে হয় না। কবিকর্পপুর-কর্তৃক
উল্লিখিত ১৫জন গোপালের মধ্যে যদি মাত্র ১২জনকে নির্বাচন করিতেই
হয় তাহা হইলে প্রথম বারজনকে লওয়াই ভাল। রাধানাথ কাবাসী
মহাশ্ব বৃহত্তকিত্বসারে এবং গৌড়ীয় মঠ তাঁহাদের চরিতায়তের
অমুক্রমণিকায় তাহাই লইয়াছেন। অম্লাধন ভট্ট মহাশ্ব অনস্তসংহিতার
উপর অতাধিক আশ্বা স্থাপন করিয়া নাগর পুরুষোত্তমকে বাদ দিয়াছেন
এবং হলায়ুধকে অন্তর্ভুক্ত করিয়াছেন। এইরূপ করার কোন সম্পত কারণ
দেখিতে পাই না।

গৌরগণোদ্দেশদীপিকার গোপাল পঞ্চদশ-সম্বন্ধে একটি মন্তব্য করা যাইতে পারে। নিত্যানন্দ-ভক্তেরা গোপাল-বেশ ধারণ করিতেন। কবিকর্ণপূর নিজেই লিখিয়াছেন "নিত্যানন্দ-গণাঃ সর্বেব গোপালা গোপবেশিনঃ" (১৪)।

বৃন্দাবনদাস লিখিয়াছেন—

নিত্যানন্দ স্বরূপের পারিষদগণ।
নিরবধি সভেই পরমানন্দ মন॥
কারো কোনো কর্ম্ম নাহি সঙ্কীর্ত্তন বিনে।
সভার গোপাল ভাব বাঢ়ে ক্ষণে ক্ষণে॥
বেত্র বংশী শিক্ষা ছাঁদদড়ি গুঞ্জহার।
তাড় খাডু হাথে পায়ে নূপুর সভার॥

—চৈ ভা , এডা৪৭৩

এইরপ বেশধারী যে ৩৭জন ভক্তের নাম বৃন্দাবনদাস করিয়াছেন (৩)৬)৪৭৩-৭৫) তাহাদের মধ্যে শ্রীধরের নাম নাই। ধোলা-বেচা শ্রীধর চৈতত্যেরই অনুগত ছিলেন। কৃষ্ণদাস কবিরাজ তাঁহার নাম শ্রীচৈতত্ত-শাখাতেই করিয়াছেন (১)১০)৬৫-৬৬)। অপর একজন শ্রীধরের নাম

# গৌড়ীয় বৈষ্ণৰ ধর্ম্মের আদিযুগ-সম্বন্ধে বিবিধ তথ্য

७२७

নিত্যানন্দ-শাথায় আছে (১)১)। উভয় প্রীধর এক ব্যক্তি না হওয়াই সম্ভব; কেন-না যখন একই ব্যক্তির নাম চুই শাখায় কবিরাজ্প গোস্বামী গণনা করিয়াছেন, তথন তাহা বিশেষভাবেই উল্লেখ করিয়াছেন। যদি নিত্যানন্দ-শাথাভুক্ত প্রীধর চৈতন্য-শাথার প্রাধর হইতে ভিন্ন হয়েন, তাহা হইলে কবিকর্ণপূর গোপালদের মধ্যে "খোলাবেচাত্যা থ্যাতঃ পণ্ডিতঃ শ্রীধর-দ্বিজঃ" কেন বলিলেন বুঝিলাম না।

বৈষ্ণবাচার-দর্পণে (পৃ° ৩৩৪) ও বৃহত্তক্তিসারে (পৃ° ১৩৬৮) নিম্নলিখিত হাদশ উপগোপালের নাম ও তাঁহাদের পাটের নাম আছে।

- (১) হলায়্ধ —রামচন্দ্রপুর, নবজীপ
- (২) রুদ্রপণ্ডিত—বল্লভপুর
- (৩) মুকুন্দানন্দ পণ্ডিভ-নবন্ধীপ ( বৃহন্ডক্তিসারে কুমুদানন্দ )
- (৪) কাশীখর পণ্ডিত বল্লভপুর
- (a) वनगानीमाम खवा-क्लााभाषा
- (৬) সন্ত ঠাকুর রুকুন্পুর
- (৭) মুরারি মাহাতী—বংশীটোটা
- (৮) গঙ্গাদাস—**নৈহা**টী
- (৯) গোপাল ঠাকুর—গৌরাম্বপুর
- (১০) শিবাই—বেলুন
- (১১) নন্দাই—শালিগ্রাম
- (১২) বিষ্ণাই-ঝামাটপুর

ইঁহাদের মধ্যে সন্ত ঠাকুরের নাম বৈষণৰ সাহিত্যের কোথাও পাওয়া যায় নাই।

#### टायिष गराख

আধুনিক বৈষ্ণবর্গণ মহোৎসবের সময়ে চৌষটি মহাস্তের প্রত্যেককে একথানি করিয়া মালসাভোগ নিবেদন করেন। "ভোগমালা-বিবরণ" (১১২, আপার চিৎপুর রোডত্থ মাণিক লাইব্রেরী হইতে প্রকাশিত) নামক বটতলার ছাপা পাঁচ পয়সা দামের বই দেখিয়া মহাস্তদের নাম ঠিক করা হয়। ঐ

বইয়ের সঞ্চলনকর্তা গণিত-বিভায় পারদর্শী; কেন-না তিনি এরপ, সনাতন, রঘুনাথ, জাব, গোপাল ভট্ট, রঘুনাথ, লোকনাথ, কৃষ্ণদাস কবিরাজ এই আটজনের নাম লিখিয়া মন্তব্য করিয়াছেন—"এই ছয় গোস্বামী।" আবার চৌষ্টি মহান্তের নাম লিখিতে যাইয়া ৭.টি নাম লিখিয়াছেন; কিন্তু ক্ষেকটি নাম একাধিক-বারও ধৃত হইয়াছে। একটি নাম একবার করিয়া ধরিলে ৫৮টি নাম পাওয়া যায়। স্তুতরাং ঐ তালিকা নির্ভরযোগ্য নহে।

রুহত্তক্তিতবুসারে চৌষ্টি (?) মহান্তের নাম নিম্নলিখিতভাবে করা হইয়াছে—

অফ প্রধান মহান্ত— স্বরূপ দামোদর, রায় রামানন্দ, সেন শিবানন্দ, রামানন্দ বহু, মাধব ঘোষ, গোবিন্দ ঠাকুর, গোবিন্দ ঘোষ ও বাহু ঘোষ; অফ প্রধান মহান্তের বামে পূর্ববমুখে চৌষট্টি মহান্ত।

সরপের পার্ষদ – চক্রশেখর আচার্যা, রত্নগর্ভ ঠাকুর, গোবিন্দ গরুড়, মুকুন্দ দত্ত, দামোদর পণ্ডিত, কুঞ্চদাস ঠাকুর ও কুঞ্চানন্দ ঠাকুর।

রামানন্দ রায়ের পার্ষদ—মাধবাচার্য্য, নীলাম্বর ঠাকুর, রামচন্দ্র দত্ত, বাহুদেব দত্ত, নন্দনাচার্য্য, শঙ্কর ঠাকুর, হুদর্শন ঠাকুর ও হবুদ্ধি মিত্র।

শিবানন্দ সেনের পার্যদ—শ্রীরাম পণ্ডিত, জগল্লাথ দাস, জগদীশ পণ্ডিত, সদাশিব কবিরাজ, রায় মুকুন্দ, পুরন্দরাচার্য্য ও নারায়ণ বাচস্পতি।

বহু রামানন্দের পার্যদ—মধু পণ্ডিত, মকরধ্বজ কর, ছিজ রঘুনাথ, বিফুদাস, পুরন্দর মিশ্র, গোবিন্দাচার্য্য, প্রমানন্দ গুপ্ত ও বলরাম দাস।

মাধব ঘোষের পার্যদ—মকরধ্বজ সেন, বিভাবাচস্পতি, গোবিন্দ ঠাকুর, কবিকর্ণপূর, ঐকাস্ত ঠাকুর, মাধব পণ্ডিত, প্রবোধানন্দ সরস্বতী ও বলভদ্র ভট্টাচার্য্য।

গোবিন্দ ঠাকুরের পার্ষদ—কাশী মিশ্র, শিখিমা হাতী, কালিদাস, শ্রীমান্ পণ্ডিত, কবিচন্দ্র ঠাকুর, হিরণ্যগর্ভ, জগন্নাথ সেন ও দ্বিজ্ব পীতাম্বর।

গোবিন্দ ঘোষের পার্যদ—পরমানন্দ গুপু, বল্লভ ঠাকুর, জগদীশ ঠাকুর, বনমালী দাস, খ্রীনিধি পণ্ডিত, লক্ষ্মণাচার্য্য ও পুরুষোত্তম পণ্ডিত।

বাহু ঘোষের পার্ষদ-রাঘব পণ্ডিত, রুদ্র পণ্ডিত, মকরধ্বজ পণ্ডিত,



গৌড়ীয় বৈষ্ণব ধর্মের আদিযুগ-সম্বন্ধে বিবিধ তথ্য ৬২৫ কংসারি সেন, জীব গণ্ডিত, মুকুন্দ কবিরাজ, ছোট হরিদাস ও কবিচন্দ্র আচার্যা।

"রহন্ত জিত বুসারের" সম্পাদক রাধানাথ কাবাসী মহাশয় এইরপভাবে সঞ্জিত তালিকা কোথায় পাইলেন উল্লেখ করেন নাই। এই তালিকায় ট্রাহাকে যাঁহার পার্যদ বলা হইয়াছে তাঁহারা পরস্পর ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধে আবদ্ধ ছিলেন কি না তাহাও বৈশ্বব সাহিত্য হইতে জানা যায় না। যেমন মাধব ঘোষের সঙ্গে প্রবোধানন্দ সরস্বতীর যে পরিচয় ছিল তাহার কোন প্রমাণ নাই। উক্ত তালিকায় যে সব নাম ধৃত হইয়াছে তাহাদের মধ্যে রামচন্দ্র দত্ত ও কবিচন্দ্র আচার্য্যের নাম বৈশ্বব সাহিত্যের কোথাও পাওয়া যায় না। মকরধ্বজ ও মকরধ্বজ করের নাম গৌরগণোদ্দেশদীপিকায় আছে; কিন্তু চৌষট্টি মহান্তের মধ্যে মকরধ্বজ কর, মকরধ্বজ সেন ও মকরধ্বজ পণ্ডিত এই তিনটি নাম আছে। যাঁহার নাম বৈশ্বব সাহিত্যের কোথাও উল্লেখমাত্র করা হয় নাই তিনি যে গৌরগণের মধ্যে প্রধান্য লাভ করিয়া মহান্তরূপে পৃঞ্জিত হইয়াছিলেন, এ কথা বিশ্বাস করা কঠিন।

কাটোয়ার মহোৎসব-বর্ণনা-উপলক্ষে নরহরি চক্রবর্তী "ভক্তিরত্নাকরে" নিম্নলিখিত চৌষট্টি জনের নাম মহান্ত বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন। (নামের পরে সংখ্যা আমার দেওয়া।)

প্রভূপ্রিয় প্রীপতি প্রীনিধি বিভাননাও।
বাণীনাথ বহু রামদাস কবিচন্দ্রও।
পুরুষোত্তন সঞ্জয় প্রীচন্দ্রশেথর ।
শ্রীমাধবাচার্য্য কীর্তনীয়া ষষ্ঠীধর ॥
শ্রীকমলাকান্ত বাণীনাথ বিপ্রবন্ধর ।
বিষ্ণুদাস বন্দপতিত পুরন্দর ।
শ্রীচৈতন্ম দাস কর্পপূর ওপের আলয় ॥
শ্রীগোপাল আচার্য্য গোপাল দাস আর ।
মুরারি বিভান্তনাস পরম উদার ॥

७२७

#### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

त्रधूनाथ देवछ উপाधायिः भातायगः । বলরাম দাস " আর দাস সনাতন "। বিপ্রকৃষ্ণদাস<sup>\*</sup> শীনকড়ি<sup>\*</sup> মনোহর<sup>\*</sup>। হরিহরাননদ<sup>্দ</sup> শ্রীমাধব<sup>\*</sup> মহীধর<sup>\*</sup>। রামচন্দ্র কবিরাজ° বসন্ত° লবনি°°। শ্রীকানুঠাকুর<sup>্</sup> শ্রীগোকুল গুণমণি<sup>্</sup>। श्रीमाधवां हार्याः त्रामाद्रमनः नारमानतः । জ্ঞানদাস<sup>\*</sup> নর্ত্তক গোপাল<sup>\*</sup> পীতাপর<sup>\*</sup> ॥ क्रमुन । शोबाक्रमाम । कृश्यी ब क्षीवन । নৃসিংহ \* \* তৈত গুদাস দাস বৃন্দাবন \* \* ॥ বনমালী দাস" ভোলানাথ" প্রবিজয়"। শ্রীহৃদয়নাথ সেন" <sup>২</sup> গুণের আলয় ॥ লোকনাথ পণ্ডিত \* শ্রীপণ্ডিত মুরারিং । শ্রীকামু পণ্ডিত<sup>ে হ</sup>রিদাস ত্রক্ষচারী <sup>• ।</sup> শ্ৰীঅনন্ত দাসং কৃষ্ণদাসং জনাৰ্দ্দনং । প্রীভক্তিরতন-দাতা দাস নারায়ণ<sup>ে ।</sup>। ভাগৰভাচাৰ্য্য \* বাণীনাথ ব্ৰহ্মচারী \* ?। চৈতগ্ৰবল্লভ দাস • ভক্তি অধিকারী॥ প্রীপুপাগোপাল " প্রীগোপাল দাস" আর। শ্রীহর্ষ \* শ্রীলক্ষ্মীনাথ দাস \* পণ্ডিত উদার ৷ কহিতে কি মহাতগণের ন হি অন্ত। নেত্র ভার দেখয়ে সকল ভাগাবন্ত॥

— নবম তরজ, পূ<sup>o</sup> ৫৮৮-৮৯

নরহরি চক্রবর্তী মহাশয় চৌষট্ট জন মহান্তের নাম করিলেও সংখ্যা করিয়া একুনে চৌষট্ট জন বলেন নাই; বরং বলিয়াছেন যে "মহান্তগণের নাহি অন্ত।"

কবিকর্ণপুর গৌরগণোদ্দেশদীপিকায় বলিয়াছেন যে এটিচভন্ম,

# গোড়ীয় বৈষ্ণব ধর্মের আদিযুগ-সন্বন্ধে বিবিধ তথ্য

429

নিতানিক ও অংঘতের পার্যদর্গ মহান্ত বলিয়া থাত। "এষাং পার্যদর্গা যে মহান্তাঃ পরিকার্তি হাং" (১)। তাঁহাদের মধ্যে নবদ্বীপ-লালার পরিকরগণ মহরম, নালাচল-লালার সঙ্গারা মহতর ও দক্ষিণাদি দেশে বাঁহাদের সহিচ মহাপ্রহার বঙ্গ হাছিব উহরো মহান্ত নামে পরিচিত। এই প্রান্তে কবি ফর্বির স্বরূপ লামোন্ত্রের মহর উর্ভ করিয়া নিজের বক্তবের সমর্থন করিয়াতেন; যথা—

অতঃ স্বরূপ-চরগৈরুক্তং গৌর-নিরূপণে পঞ্চ-তত্ত্ব সম্পর্কাৎ যে যে খাতো মহন্তমাঃ তে তে মহান্তা গোপালাঃ স্থানাকৈ, ষ্ঠাদি-বাচকাঃ। (১৭)

তাহা হইলে আমি চৈতত্তের পরিকর বলিয়া যে ৪৯০ জন ভক্তের নাম করিয়াছি তাঁহাদের মধ্যে পঞ্চত্তের জনক, জননা প্রভৃতি এবং অনৈত, নিত্যানন্দ, শ্রীবাস ও গদাধরকে বাদ দিয়া আর সকলকেই মহান্ত বলা কর্ত্তব্য । ইহাদের মধ্য হইতে মাত্র ৬৪জনকে বাছিয়া লইলে, স্বরূপ দামোদর ও কবিকর্ণপূরের ভায়ে সম্প্রদায়ের আদি আচার্যাদের মতের বিপক্ষে চলা হয়। নবলীপের প্রাচানতম মহান্তব্য আমাকে বলিয়াছেন যে তাঁহারা কথনও চৌষট্র মহান্তের ভোগ দেন নাই। ঐ প্রথা আধুনিক। ভক্তিরত্বাকরে উল্লিখিত চৌষট্র নামের মধ্যে প্রত্যেক ব্যক্তিই শ্রীচৈতত্তের সমসাময়িক পরিকর বলিয়া বৈঞ্চব সাহিত্যে উল্লিখিত হইয়াছেন। কেবল ষদ্ধীধর কীর্ত্তনীয়ার স্থানে ষদ্ধীবর কীর্ত্তনীয়া ও লবনি-স্থানে নবনীহোড় হওয়া উচিত। এই তুইটি নাম সম্ববতঃ লিপিকর বা মুলাকর-প্রমাদে রূপান্তরিত হইয়াছে। যদি মহান্তের সংখ্যা ৬৪ করার কোন প্রয়োজন থাকে, তবে ভক্তিরত্বাকরে উল্লিখিত ৬৪টি জনকেই গ্রহণ করা উচিত।

শ্রীখণ্ড হইতে প্রকাশিত "শ্রীভক্তিচন্দ্রিকা" গ্রন্থ নরহরি সরকার ঠাকুরের কথিত উপদেশ-অনুসারে তাঁহার শিশ্য লোকনাথ আচার্য্য-কর্তৃক লিখিত হইয়াছিল বলিয়া উক্ত গ্রন্থের সম্পাদক প্রকাশ করিয়াছেন (ভূমিকা, পৃ<sup>©</sup> ১০)। ঐ গ্রন্থে গৌরান্ধদেবের উপাদনা-বিধি লিখিত হইয়াছে। তাহাতে আছে যে যন্ত্র-পদ্মকর্ণিকার "বহির্ভাগে যে ষট্কোণ

### শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

426

লিখিত আছে তাহার মধ্যে শ্রীভগবানের দক্ষিণ ও বাম ভাগে যথাক্রমে বাস্থদেব দত্ত ও শিবানন্দ সেনকে পূজা করিবে। ইহারা প্রত্যেকে প্রেমবশতঃ শ্রীমন্মহাপ্রভুর শ্রীমুখপন্ম-দর্শনকারী, পুলকব্যাপ্ত-সর্বাঙ্গ এবং দিবা-মালাযুক্ত কর-পঙ্কজ —এই ভাবে যথাবিধি পূজনীয়।

সেই ষট্কোণের বহির্ভাগে ইহাদিগের যথাবিধি পূজা করিবে। তথাধে। পূর্বাদিক্রমে অগ্রকেশরে জগৎপতি শ্রীনিত্যানন্দ, শ্রীমদ্ অঘৈতাচার্য্য, মুরারি, শ্রীবাস, মাধবেন্দ্র পূরা, পরমানন্দপুরা, রক্ষানন্দ, নৃসিংহানন্দ, সানবিভাবিশারদ কেশবভারতী, গোবিন্দানন্দ, গোবিন্দদাস, বক্রেশর; তদমন্তর সঙ্গীত-তৎপর হরিদাস, মুকুন্দ, রাম এবং বিজ-শ্রেষ্ঠ হরিদাস। ইহারা সকলে চন্দন ও মাল্য-ধারী। কেহ বা হরিনাম-রত, কেহ বা কৃষ্ণচৈত্র নাম গানে তৎপর। সকলেই প্রেমাঙ্কুরযুক্ত এবং প্রেমাগ্রপূর্ণ নামনের দ্বারা সমুক্ষল।

কেশরের বহির্ভাগে পত্রমধ্যে পূর্বাদিক্রমে প্রথমে সার্বভৌম, তাহার পর, প্রদক্ষিণক্রমে বল্লভ, জগদানন্দ, মুকুন্দ, রঘুনন্দন, জগলাথমিশ্র, শচীদেবা, গোবিন্দঘোষ, কাশীখর, ক্ষ্ণদাস, শ্রীরাম দাস, স্থানান্দ, আদিপরমেশর দাস, পুরুষোত্তম দাস, গোরী দাস ও কমলাকর—এই ষোড়শ জনের পূজা করিবে। ইহারা সকলে দিবা অনুলেপন ও ব্রযুক্ত এবং বসাকুলচিত্ত—এইরূপে ধ্যেয়।

তরহির্ভাগে দলাত্রে পূর্বের ন্থায় প্রথমে জ্ঞানানন্দ, তদনন্তর বাহুদেব ঘোষ, প্রতাপরুদ্র, রামানন্দ, রাঘব, প্রহান্ধ, শ্রীস্থদর্শন, বাণীনাধ, বিষ্ণুদাস, দামোদর, পুরন্দর, আচার্যাচন্দ্র, ভগবান, চকুর্শেখর, চন্দনেশ্বর ও ধনপ্রম পণ্ডিত—এই বোড়শ জন পূজনীয়। ইহারা সকলেই পরম জাগবত, গৌরাঙ্গপ্রেমে ব্যাকুল-চিন্ত, হরিনাম-সন্ধীন্তনে তৎপর ও করকমলে দিব্যমালা-ধারী—এই রূপে ধ্যেয়" (চতুর্থ পটল, ২১ হইতে ২৪ শ্লোকের অনুবাদ, পৃত ১২১ হইতে ১২৬)।

উক্ত গ্রন্থ সতাই নরহরি সরকার ঠাকুর-কর্তৃক কথিত হইয়াছিল কি না তাহা বলা যায় না। উহার উল্লেখ প্রামাণিক বৈঞ্চব সাহিত্যের কোপাও পাই নাই। নরহরি নিজে উহার বক্তা হইলে মাধবেক্রপুরী,



# গৌড়ীয় বৈষ্ণৰ ধর্ম্মের আদিযুগ সম্বন্ধে বিবিধ তথ্য

নিতানন্দ ও অবৈতের পূর্বেই নিজের নাম করিয়া নিজের পূজার বাবস্থা দিবেন, ইহা সম্ভব মনে হয় না। তারপর আরও লক্ষা করার বিষয় এই যে শ্রীচৈতন্তের সমসাময়িক পরিকরদের মধ্যে জ্ঞানানন্দ নামে কোন ভল্কের নাম পাওয়া যায় না। যাহার নাম কোথাও উল্লিখিত হয় নাই তিনি কি করিয়া এমন প্রধান ব্যক্তি হইতে পারেন যে শ্রীচৈতন্তের সহিত তাহার পূজার বিধান নরহরি সরকার দিবেন ? এই গ্রন্থথানির প্রামাণিকভার নিদর্শন না পাওয়া পর্যান্ত ইহার উক্তি গ্রহণ করা যায় না।

#### ছয় চক্রবর্ত্তী ও অফ কবিরাজ

শ্রীনিবাস আচার্যা ও নরোত্তন ঠাকুরের পরে বৈষ্ণব সমাজে "ছয় চক্রবর্তী" ও "অফ কবিরাজ" বলিয়া ছুইটি শব্দ প্রচলিত হইয়াছে। "কর্ণানন্দ" গ্রন্থে ইহাদের নাম করিয়া ছুইটি শ্লোক ধৃত হইয়াছে; যথা—

# (ছয় চক্ৰবৰ্তী)

শ্রীদাসগোকুলানন্দে শ্রামদাসস্তথৈব চ। শ্রীবাাসঃ শ্রীলগোবিন্দঃ শ্রীরামচরণস্তথা। ষট্ চক্রবর্ত্তিনঃ খ্যাতা ভাক্তগ্রস্থানুশীলনাঃ। নিস্তারিভাখিলজনাঃ কৃত-বৈঞ্চব-সেবনাঃ।

#### (অন্ট করিরাজ)

শ্রীরামচন্দ্র-গোবিন্দ-কর্ণপূর-নৃসিংহকা:।
ভগবান্ বল্লবীদাসো গোপীরমণ-গোকুলো ॥
কবিরাজ ইমে খ্যাতা জয়স্তাফৌ মহীতলে।
উত্তমা ভক্তিসদ্রস্থ-মালাদানবিচক্ষণা:॥

## জীচৈতন্য-পরিকরগণের ভজন-প্রণালীর বিভিন্নতা

ঈশরপুরা মধুর রসের উপাসক ছিলেন (গোরগণোদ্দেশদীপিকা, ২৩)। বুন্দাবনে গোস্বামিগণ মধুর রসের উপাসনা প্রচার করেন। কিন্তু

#### ত্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

শ্রীচৈতত্তের সমসাময়িক পরিকরগণের মধ্যে অনেকে স্থা, বাৎসলা ও দাস্থ রণের ভক্ত ছিলেন।

নিত্যানন্দ-শাখাভু জ ব্যক্তিগণ সখ্য রসে উপাসনা করিতেন। সেই জন্ম ঐ শাখার যে যে ভক্তের নাম গৌরগণোদ্দেশদীপিকায় উল্লিখিত হইয়াছে, তাঁহাদিগের তত্ত এজের কোন গোপাল বা স্থা রূপে নির্ণীত হইয়াছে। ইহার ছইটি মাত্র বাতিরেক পাওয়া যায়: গদাধর দাস ও মাধব ঘোষ<sup>®</sup>। কিন্তু এই দুইজন ভক্তকে শ্রীচৈত্য ও নিত্যানন্দ উভয় শাথাতেই গণনা করা হইয়াছে। কুফ্রদাস কবিরাজ বলেন-

> নিত্যানন্দের গণ যত-সব ব্রঞ্জের স্থা। শিক্ষাবেত্র গোপবেশ—শিরে শিথিপাখা ॥ ১৷১১৷১৮

অবৈত দাক্ত ও স্থা এই উভয় রসের ও রক্ষপুরী বাংসলা রসের উপাসনা প্রভার করেন (গৌরগণোদ্দেশদাপিকা, ২৪)। কৃঞ্দাস কবিরাজ যাঁহাদের নাম এটেততা ও গদাধর-শাখায় উল্লেখ করিয়াছেন, তাঁহারা সকলেই মধুর রসের উপাসক ছিলেন। কবিকর্ণপুর তাঁহাদের তত্ত্ব ব্রঞ্জের স্থা, স্থী ও মঞ্জরীরূপে উল্লেখ করিয়াছেন।

বৃন্দাবনের গোস্থামিগণ নিজেদের স্থীর অনুগতা মঞ্জরী ভাবিয়া সাধনা করিতেন। সাধক ভক্তের সাধ্য হইতেছে স্থীদের ও প্রধান প্রধান মঞ্জরীদের অনুগত হইয়া শ্রীরাধাকুফের সেবা করা। নরোত্তম ঠাকুর মহাশয় বলিয়াছেন—

শ্রীরূপমঞ্চরী সার

990

শ্রীরতিমঞ্চরী আর

व्यनत्रमञ्जूषे मञ्जूलीला ।

শ্রীরসমঞ্জরী সঙ্গে

কন্তুরিকা আদিরক্তে

প্রেমসেবা করি কুতৃহলা।

এ সব অনুগা হৈয়া প্রেম সেবা নিব চাইয়া

ঈলিতে বুঝিব সব কাজ।

রূপ গুণে ডগমগি সদা হব অনুরাগী

বস্তি করিব স্থী মাঝ ॥

গৌড়ীয় বৈষ্ণৰ ধর্ম্মের আদিযুগ-সম্বন্ধে বিবিধ তথ্য

চতুদ্দিকে স্থীগণ

वृन्म।वरन छूटे अन

मगय वृक्षिया तमस्य ।

স্থীর ইঞ্নিত হবে

চামর ঢুলাব কবে

তাম্ল যোগাব চাদমুখে ॥ ১

—প্রেমভক্তিচন্দ্রিকা, ৫১-৫৩

কিন্তু বৃশ্দবিদের গোস্বামীদের ও তদমুগত শ্রীনিবাস-নরোন্তমাদির গ্রন্থাদিতে কোথাও দেখা যায় না যে পুরুষ-সাধক নারীর বেশ ধারণ করিতেন। তথাপি শ্রীচৈতন্তের সমসাময়িক পরিকরগণের মধ্যে কেই কেই যে নারীবেশ ধারণ করিয়া সাধনা করিতেন তাহার প্রমাণ পাওয়া যায়। অভৈতপত্নী সাতা দেবার নন্দরাম সিংহ ও যজেশ্বর চক্রবর্ত্তী নামক তুই জন শিশু নারীবেশ ধারণ করিয়া যথাক্রমে নন্দিনী ও জঙ্গলী নাম গ্রহণ করেন। ইহাদের নাম গৌরগণোদ্দেশদীপিকায় পাওয়া যায় এবং ইহাদের শিশু-পরম্পরা আজ্ঞও বর্তমান। নবন্ধীপের চরণদাস বাবাজী মহোদয়ের "সমাজবাড়ী"র বর্তমান অধ্যক্ষ মহাশয় নদিনী-জঙ্গলীর শাখাপরিবারভূক্ত না হইয়াও, 'ললিতা সথী' নাম ও প্র বেশ ধারণ করিয়া সাধনা করিতেছেন।

শ্রীটেতন্তের অনুগত ব্যক্তিদের মধ্যে অনেকে রামচন্দ্রের উপাসক ছিলেন। কবিকর্ণপূর তাঁহাদের তথ্নির্দ্দেশ করিতে যাইয়া রামায়ণোক্ত পাত্রগণের নাম করিয়াছেন; যথা—

> মুরারি গুপ্ত — হতুমান্ রামচক্র পুরী — বিভীষণ।

১ নবোত্তম দাসে আরোপিত "রাগমালা" নামক এছে (জীগৌরভূবি পত্রিকা, ১০০৮, ১ম ৰঙে প্রকাশিত ) আছে—

আনক মন্তরী তার প্রধান জীকপ।
রক্তি আনক আদি তাতার থকপ।
এদর মন্তরী বিক প্রা পুপ্প হয়।
পুশ্প তৈথা করে নি এলীলার সহায়।
পুন: সেই পুস্সাব নামধ্যে মালা।
ক্রপমালা লবক্তমালা আর রতিমালা।



७७३

#### শ্রীচৈতন্যচরিতের উপাদান

শ্রীচৈতত্ত্বের সন্ন্যাসী ভক্তগণ সম্ভবতঃ জ্ঞানমিশ্রা ভক্তিপথের পথিক ছিলেন। সেই জন্ম "অফসিদ্ধি"—"জয়স্তেয়" প্রভৃতিরূপে তাঁহাদের তব্ব নির্দ্দেশ করা হইয়াছে। অবৈতের শিশ্র কামদেব নাগর জ্ঞানবাদ প্রচার করিয়াছিলেন। এই জন্ম গৌড়ীয় বৈক্ষব সমাজ-কর্তৃক তিনি ও তাঁহার অমুগত লোকেরা পরিত্যক্ত হইয়াছেন।

#### নকল অবতার

শ্রীচৈতত্তার ভগবতা প্রতিষ্ঠিত হইতে দেখিয়া কতকগুলি লোকের ভগবান্ হইতে সথ হইয়াছিল। তাঁহাদের কথা রন্দাবনদাস লিথিয়াছেন—

উদর ভরণ লাগি এবে পাপী সব।
লওয়ায় "ঈশ্বর আমি", মূলে জরদগব॥
গর্মভ শৃগাল তুলা শিশ্বগণ লৈয়া।
কেহ বোলে আমি রঘুমাথ, ভাব গিয়া॥
কুকুরের ভক্যদেহ—ইহারে লইয়া।
বোলায় "ঈশ্বর" বিষ্ণুমায়া মৃদ্ধ হৈয়া॥

-- হাহতাহত৯

কোন পাপী সব ছাড়ি কুঞ্চসন্ধীর্ত্তন।
আপনারে গাওয়ায় কত বা ভূতগণ।
দেখিতেছি দিনে তিন অক্সা যাহার।
কোন লাজে আপনারে গাওয়ায় সে ছাড়।
রাঢ়ে আর এক মহা ত্রহ্মানতা আছে।
অন্তরে রাক্ষস, বি প্রকাচ মাত্র কাচে॥
সে পাপিষ্ঠ আপনারে কোলায় গোপাল।
অতএব তারে সভে বোলেন শিয়াল।



# গৌড়ীয় বৈষ্ণব ধর্ম্মের আদিযুগ-সম্বন্ধে বিবিধ তথ্য উপাধি-বিজ্ঞাট

শ্রীটেতভার সমসাময়িক পরিকরদের পরিচয়-সংগ্রহে একটি প্রধান বাধা হইতেছে তাঁহাদের উপাধি। উপাধি না দিয়া তথু নাম লিখিলে জাতিকুলের পরিচয় জানা যায় না; আবার পিতার এক উপাধি, পুত্রের আর এক উপাধি লিখিলেও তাঁহাদের সম্বন্ধ-নির্ণয় করা কঠিন হয়। কতকগুলি দৃষ্টান্ত দিতেছি। এটিচতগুচরিতামূতে (এ২৮০-৮৮) দেখা যায় যে শতানদ থানের ছুই পুজের নাম ভগবান আচার্য্য ও গোপাল ভট্টাচার্য্য। এখানে পিতার উপাধি খান (মুসলমান সরকার-কর্তৃক প্রদত্ত উপাধি ), এক পুত্রের উপাধি আচার্য্য, অন্তের ভট্টাচার্য্য। আবার সদাশিব কবিরাজের পুত্র পুরুষোত্তম দাস, পুরুষোত্তম দাসের পুত্র কামু-ঠাকুর। তিন পুরুষের তিনটি উপাধি। মালাধর বহুর হুলতান-প্রদত্ত উপাধি ছিল গুণরাজখান, তাঁহার পুত্র লক্ষ্মীনাথ বহুর উপাধি সত্যরাজ-খান। শ্রীখণ্ডের নরহরি সরকার ঠাকুরের জ্যেষ্ঠ জাতা বৈঞ্চব সাহিত্যে মুকুন্দদাস বলিয়া পরিচিত। নিত্যানন্দের শহরের নাম সূর্য্যদাস, উপাধি সারখেল। সূর্য্যদাস সারখেলের ভাতাদের মধ্যে দামোদর ও গৌরী-দাসের উপাধি পণ্ডিত এবং অপর এক জন ভাতা শুধু নৃসিংহ চৈতন্যদাস নামে পরিচিত।

শ্রীচৈতন্মভাগণতে (২০১০১) দেখা যায় যে পিতার নাম রত্নগর্জ আচার্যা, পুজের নাম জাব পণ্ডিত। পণ্ডিত উপাধি যে-নামের সহিত সংযুক্ত পাইয়াছি, তাঁহাকে আমি ত্রাহ্মণ ধরিয়া লইয়াছি।

দত্ত উপাধি বৈছজাতিতেও পাওয়া যায়; যথা—বাহুদেব দত্ত, মুকুন্দ দত্ত; আবার স্থবর্ণবণিক্ জাতিতেও দত্ত উপাধি আছে; যথা—উদ্ধারণ দত্ত।

শ্রীচৈতত্যের পরিকরদের বংশধরদের মধ্যে এখন অনেকেই গোস্বামী উপাধি গ্রহণ করিয়াছেন। কিছুদিন পূর্বেও গাঁহারা চক্রবর্তী, চট্টোপাধ্যায়, মুখোপাধ্যায়, বহু, সেন প্রভৃতি উপাধিতে পরিচিত ছিলেন তাঁহারা কোন সূত্রে কোন বিগ্রহের সেবা পাইয়া বা ভাগবত-পাঠ-র্ত্তি অবলম্বন করিয়া গোস্বামী উপাধি ধারণ করিয়াছেন।



# পরিশিষ্ট (ক)

# दिक्थव-वन्मना ७ औरेठज्रात मगमागिक পतिकत्रत्रन

#### देवस्थव-वन्समा

শ্রীযুক্ত অতুলক্ষণ গোস্বামী মহাশয় দেবকীনন্দন (১) দাদের বাংলা "বৈক্ষব-বন্দনা" ও সংস্কৃত "বৈক্ষবাভিধান" এবং বৃন্দাবনদাস-নামধারী এক ব্যক্তির "বৈক্ষব-বন্দনা" সংগ্রহ করিয়া একত্রে প্রকাশ করিয়াছেন। বরাহনগর গ্রন্থমন্দিরে দেবকীনন্দনের "বৃহৎ বৈক্ষব-বন্দনার" (৮০১ সংখ্যক পুথি) ও শ্রীজীবের সংস্কৃত "বৈক্ষব-বন্দনার" (৪৪০ সংখ্যক পুথি) পুথি আছে। এই পাঁচধানি বৈক্ষব-বন্দনা ছাড়া ছোটখাট আরও অনেক বৈক্ষব-বন্দনার পুথি পাওয়া য়ায় (২)।

# বৈষ্ণব-বন্দনাসমূহে শ্রীচৈতগ্রচরিতের উপাদান

বৈশ্ব-বন্দনাসমূহে প্রীচৈত্রচরিতের অনেক ম্লাবান উপাদান পাওয়া যায়।
প্রীচৈত্র যে প্রী, গিরি, ভারতী, সরস্বতী প্রভৃতি উপাধিধারী সন্নাসীদিগের সহিত্
অত্যন্ত ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধ রাখিতেন, এই প্রয়োজনীয় তথাটী চরিত্রপ্রস্থে পাওয়া যায় না—
বৈশ্ব-বন্দনায় পাওয়া যায়। প্রীচৈত্রের পরিকরগণের সাধন-ভন্ধন ও প্রভাবপ্রতিপত্তি কিরূপ ছিল তাহা বৈশ্ব-বন্দনাগুলি ইইতে যেমন স্পইভাবে জানা যায়,
কোন চরিত্রপ্রস্থ ইইতে সেরূপ জানা যায় না। ক্ষেক্টী উদাহরণ দিতেছি।
অচ্যতানন্দ বাতীত অ্যান্ত অহৈত-পুর্কে একদল ভক্ত যে বর্জন করিয়াছিলেন, এই
সংবাদটী কেবল মাত্র প্রীজীবের বৈশ্ব-বন্দনায় পাওয়া যায়। অনন্ত আচার্যের বাড়ী
যে নবদ্বীপে ছিল, এই কথা প্রীজীব ও বন্দাবন দাসের বৈশ্ব-বন্দনায় আছে।
উদ্ধারণ দন্ত যে নিত্যানন্দের সঙ্গে সকল তীর্থে ভ্রমণ করিয়াছিলেন, এ কথা বৈশ্ববন্দনাগুলি ছাড়া অন্ত কোথাও পাওয়া যায় না। গোবিন্দ বিজ্ব নামে এক ভক্ত যে
"প্রভু লাগি মানসিক সেত্রক্ষ" রচনা করিয়াছিলেন, তাহাও কেবলমাত্র বৈশ্বব-

<sup>( ) ( ।</sup> त्वकीनन्द्रान्त नाम क्रानक वृत्त देश्वकीनन्द्रन झाणा इहेंबाह्य ।

<sup>(</sup>২) বহুনন্দনের বৈঞ্চব-বন্দনার পুথির বিবরণ রক্ষপুর সহিত্য পরিবং পতিকার ২য় ভাগ, ২য় সংখ্যা (১০১৪ সাল ) পৃঃ ৮০তে স্তর্বা। উহাতে মাত্র ১০ এন ভক্তের বন্দনা আছে। দ্বিল হরিদাস এক সংক্ষিপ্ত বৈঞ্চব-বন্দনা লিখিয়াছিলেন। উহা বুহস্তক্তি-তত্ত্বসারে ছাপা হইয়াছে।

# [ ? ]

বন্দনাত্রহেই পাওয়া হায়। নিয়লিথিত তথাগুলিও উরুপ বৈশ্ব-বন্দনাতেই পাওয়া ঘায়—অক্সর নহে। (১) গৌরীদাস পণ্ডিত অহৈছকে উৎকলে লইয়া গিয়াছিলেন। বোধ হয় অহৈছ জ্ঞানমিপ্রাভক্তি প্রচার করিয়া অনেককে স্বমতে লইয়া যাইতেছিলেন বলিয়া, প্রীচৈডক গৌরীদাস পণ্ডিতের হারা অহৈছকে নিজের কাছে ডাকাইয়া শইয়া গিয়াছিলেন। (২) ধনজয় পণ্ডিত "লক্ষকের গারিস্থ প্রভূপায় দিয়া, ভাওহাতে করিলেক কৌপীন পড়িয়া।" (৩) পরমেশ্বর দাসের কীর্ত্তন শুনিয়া পুগালেরাল সমবেত হইত। (৪) পুরুষোত্তম দাস কর্ণের করবী পুশ্পকে পদ্মগন্ধ করিয়াছিলেন। (৫) বৃদ্ধিয়া থান প্রভৃতি ছয় জন স্থপ্রসিদ্ধ ভক্ত বন্ধচারী ছিলেন। যথা, প্রীজীবের বৈশ্বব-বন্দনায়—

বলে সদাশিবং বিজানিধিং প্রীগর্ভমেবচ। প্রীনিধিং বৃদ্ধিসন্তং চ শ্রীল শুরাম্বরং পরং॥ ব্রহ্মচারিন এতান বৈ প্রেমিণঃ ধ্যাহাশ্যান্॥

এইরপ আরও অনেক ন্তন তথা বৈঞ্ব-বন্দনাসমূহে পাওয়া যায়।

বৈশ্বৰ বন্দনাসমূহে প্ৰদন্ত তথাগুলি কতটা বিশাস্থাগা, তাহা বিচার করিতে হইলে প্রভ্যেকথানি বৈশ্বৰ বন্দনার রচনা-কাল নির্ণয় করা প্রয়োজন। দেবকীনন্দনের বৈশ্বৰ বন্দনা স্থাপেক্ষা অধিক প্রচলিত; অনেক ভক্ত প্রাত্তকালে ঐ বন্দনা আর্ত্তি করেন। সেইজ্লা দেবকীনন্দন কোন্ সময়ে প্রাত্ত্তি হইয়াছিলেন, তাহা প্রথমে বাহির করিতে চেষ্টা করা যাউক।

ভক্তিরতাকরে দেবকীনন্দনের ছোট বৈক্ষব-বন্দনা (পৃ: ১০১৭) ও বৈক্ষবাভিধান (পৃ: ৯৮৬-৭) উদ্ধৃত হইয়াছে। ১৬৯৬ খৃষ্টাব্দে মনোহর দাস অহুরাগবলীতে, লিখিয়াছেন—

> শ্রীনিত্যানন্ধপ্রিয় জীপুক্ষোন্তম মহাশয়। শ্রীদেবকীনন্দনটাকুর তার শিশ্ব হয়। তিহো যে করিল বড় 'বৈঞ্চব বন্দন'। তাথে চারি সম্প্রদায় করিল লিখন॥" (পুঃ ৪৮)।

দেবকী-নন্দন নিজেও প্রণোত্তমকে গুরু বলিয়া বন্দনা করিয়াছেন। তাহা হইলে বুঝা ঘাইতেছে যে, দেবকীনন্দন ধ্যেছেশ শতান্ধীতেই বৈঞ্ব-বন্দনা লিখিয়াছিলেন। বন্ধীয় সাহিত্য পরিষদের পুথিশালায় দেবকীনন্দনের ছোট বৈঞ্ব-বন্দনার সাতাশখানি পুথি আছে (উহাদের সংখ্যা ৪৬০—৭২, ১৪৮১—৯১, ১৭৮৫, ১৮১৪, ২০৬৮, ২০৮৪, ২১০৭—৮)। ঐশুলির মধ্যে প্রাচীনতম পুথির (সংখ্যা ২০৮৪)



#### [ 0 ]

তারিধ ১০৬১ দাল বা ১৬৫৪ খুষ্টারু। ছাপা বৈক্ষর-বন্দনার সহিত ঐ পুথির প্রায় সর্বাচনে মিল থাকিলেও উহার শেষে আছে

> "বন্দনা করিব বৈঞ্চব মোর প্রাণ। শীকৃষ্ণ দাস কছে বৈশ্বৰ আগান।

ইতি বৈশ্বন-বন্দন। সমাপ্তা। লিখিতং শ্রীগদাধর দেবশন্দা। ১০৬১ সাল তারিখ মাহ জৈ। বিধা হয়, চরিতামূত-রচনার ০৯ বংসরের মধ্যেই অন্তের লেখা বই রুখ্যদাস করিবাজে আরোল করার চেষ্টা হইয়াছিল। তাহার ফলেই দেবকীনন্দনের বই রুখ্যদাশের ভণিতায় পাওয়া যাইতেছে। রাধানাথ কারাসী মহাশ্য "বৃহৎভক্তিত্বসারে" দেবকীনন্দনের যে ছোট বৈশ্বন-বন্দনা ছাপিয়াছেন, (১০০০ সালের সংশ্বরণ, ১১ হইতে ২৮ পুঃ) তাহাতে দেবকীনন্দনের আত্মকাতিনী বলিয়া ২৪টি প্যার আছে। ঐ প্যার কয়টী সাহিত্য-পরিষদে রক্ষিত সাতাশ্যানি পুথিতে নাই এবং অত্লক্ত্রু গোস্বামীও ছাপেন নাই। ঐ প্যার কয়টীতে আছে যে, দেবকীনন্দন বৈশ্বরগণকে সাধারণ মাথ্য বলিয়া নিন্দা করিয়াছিলেন।

"সেই অপরাধে মৃঞি ব্যাধিগ্রন্ত হৈছ"।

ভারপর

নাটশালা হইতে যবে আইসেন কিরিয়া। শান্তিপুর যান যবে ভক্তগোঞ্জী লইয়া॥ সেইকালে নম্ভে তৃণ ধরি দ্ব হৈতে। নিবেদিত্ব গৌরাঙ্গের চরণপদ্মেতে॥

তিনি নিবেদন করিলেন যে "অপরাধ ক্ষম প্রভু জগতের স্বামী"।
প্রভু আজা দিলা অপরাধ শ্রীবাদের স্থানে।
অপরাধ হয়েছে তোমার তার পড়হ চরণে।
প্রভুর আজায় শ্রীবাদের চরণে পড়িছ।
শ্রীবাদ আগে দে গৌরের আজা দমপিছ।
অপরাধ ক্ষমিলা দে আজা দিলা মোরে।
পুরুষোত্তম পদাশ্রয় কর গিয়া ঘরে।

নিয়লিখিত কারণে আমি মনে করি যে, ঐ ২৪টা প্যার কেছ ঐটেচতভাগবত অবলম্বন করিয়া লিখিয়া পরবর্ত্তী কালে লেবকীনন্দনের বৈঞ্চব-বন্দনা সংযোজন করিয়াছেন। কোন এক বৈঞ্চব নিন্দকের কাহিনী ম্রারি ওপ্ত তাঁহার করচায় লিখিয়াছেন (২০৩৬—১৭)। তাহাতে দেখা যায় যে, বৈঞ্চব-নিন্দক নবদীপের

লোক। শ্রীবাসের প্রতি ছেয় করায় তাহার কুর্মব্যাধি ইইয়াছিল। শ্রীবাসের অভরোধে বিশ্বতর ভাহাকে উভার করেন। লোকটার নাম কি, ভাহা মুরারি বলেন নাই কর্ণপুর মহাকাবো (৮١১-১=) এই ঘটনা লিখিয়হেন, কিন্তু তিনিও লোকটার নাম বলেন নাই। লোচন উহা বর্ণনা করিয়াছেন (মধাথও ৩৫ হইতে ৩৭ পৃষ্ঠা )। আলোচা ঘটনা মুরারি, কর্ণপুর ও লোচন নবছীপে সংঘটিত হইয়াছিল বলিয়া বর্ণনা করিলেও, বৃন্ধাবন দাস লিখিয়াছেন যে, এ ঘটনাটি প্রীচৈতয়োর স্থাস গ্রহণের পাঁচ বংসর পরে শান্তিপুরে ঘটিয়াছিল (ভা ৩৷৪৷৪৩৭—৩২ পৃ: ) i\* কিন্ত এস্থলে বুন্দাবন দাসের স্থান সহজে ভুল ধারণা ছিল। এরপ ভূল থবর তিনি আরও অনেক দিয়াছেন। যথা, কুলার কাহিনী বর্ণনা করিবার অব্যবহিত পূর্কে তিনি শান্তিপুরে মুরারি কর্ত্তক রামাইক পাঠ বর্ণনা করিয়াছেন। মুরারির সংশ্লিষ্ট ঘটনা-বর্ণনায় মুরারির নিজের লেখা বই বুন্দাবন দাদের বই অপেকা অধিক বিখাস্যোগা। মুরারি নিজে বলিয়াছেন যে, তিনি নবদীপে শ্রীবাসগৃহে রামাইক পড়িয়াছিলেন। মুরারি ও কর্ণপুরের সহিত বুন্দাবন দাসের এই পার্থকা কুফদাস কবিরাজের চোথ এড়ায় নাই। তিনি এই ভুই বিবরণের মধ্যে একটা সামখ্যা করিয়া দিয়াছেন। তাঁহার মতে গোপাল চাপাল নামক এক বিপ্র শ্রীবাদের নিকট অপরাধ করেন। তাহার ফলে তাহার কুইবাাধি হয়। তিনি রোগ সারাইয়া দিবার জন্ত বিশ্বস্থরের নিকট প্রার্থনা করিলেন। প্রভু দে প্রার্থনা অগ্রাফ করিলেন। তারপর

> সন্নাস করি প্রভূ যদি নীলাচলে গেলা। তথা হইতে যবে কুলিয়া গ্রামেতে আইলা।

তথন এই গোপাল চাপাল আবার প্রভুর শরণ লইলেন। তারপর প্রভু শ্রীবাদের অন্ধরোধে তাঁহার পাপভার মোচন করিলেন (চ ১)১৭।০০—৫৫)। চরিতগ্রস্থগুলির কোন স্থানে পাওয়া যায় না যে, ঐ গোপাল চাপালের নাম দেবকীনন্দন, এবং তিনি বৈক্ষব-বন্দনা করিতে আদিই হইয়ছিলেন। যিনি ঐ ২৪টা পয়ার জাল করিয়াছেন, তিনি বুলাবন দাদের চৈতয়ভাগবত ছাড়া আর কিছু পড়েন নাই মনে হয়। অয়ায় চরিতগ্রস্থ তাঁহার পড়া থাকিলে, তিনি কুলীর নাম দেবকীনন্দন বলিতেন না ও শান্ধিপুরে ঘটনাটি ঘটাইতেন না। এরপভাবে ২৪টা পয়ার রচনার উদ্দেশ্য এই প্রমাণ করা যে দেবকীনন্দনের বৈক্ষব-বন্দনাই স্ক্রাপেক্ষা আদি ও মৌলিক। শ্রীজীবের বৈক্ষব-বন্দনা যদি সভাই শ্রীজীবগোস্থানীর লেখা হয়, তাহা হইলে তাহাকে চাপা দেওয়ার অয়্য এরপ কাহিনী প্রচলন করার প্রয়োজন ছিল।

শ্রীতৈ তেতের সমসাময়িক পরিকরগণের যে পরিচয় পরে দিতেছি তাহার ২ », ২০, ৩৯, ৮৬, ১ • ৫, ১১৫ ১১৯, ১৩৫, ১৭২, ২ • ৯, ২১৩, ২৫৯, ২৭৭, ২৯৭, ৩৫২, ৩৮৬,



#### [ a ]

৪৫৪ সংখ্যক ভক্তদের সহয়ে শ্রীজীব ও দেবকীনন্দনের বন্দনা তুলনা করিয়া দেখিলে বুঝা যায় যে একজন অপরের বর্ণনা পড়িয়া বন্দনা লিথিয়াছেন। যদি শ্রীজীব দেবকীনন্দনের বই পড়িয়া বৈক্ষব-বন্দনা লিথিতেন, তাহা হইলে উহাতে নিত্যানন্দ, জাহ্নবী, বীরভন্ত, সীতা, অহৈত, অচ্যুত, নরহরি, রঘুনন্দন, বাহ্যদেব দৃশু, সদাশিব পণ্ডিত প্রভৃতির সহয়ে অমন স্থান্দর প্রাণশ্পশী বন্দনা থাকিত কিনা সন্দেহ। ঐশব পরিকর্বণরের বন্দনা লিথিতে যাইয়া দেবকীনন্দন কোনরূপ কবিহশক্তির পরিচয় দিতে পারেন নাই। কিন্তু এ কথাও স্থীকার করিতে হইবে যে দেবকীনন্দন শ্রীজীবের বৈক্ষব-বন্দনা দেখিয়া বন্দনা লিথিলেও, তিনি উহার অবিকল অন্থবাদ করেন নাই। তিনি নিজে অন্থসন্ধান করিয়া অনেক তথা সংগ্রহ করিয়াছিলেন।

দেবকীনন্দনের সংস্কৃত বৈঞ্বাভিধান কেবল মাত্র নামের তালিকা। ইহাতে
নিত্যানন্দ ও বারভন্ত ব্যতীত অন্ত কোন পরিকরের সম্বন্ধে কোনরূপ বর্ণনা নাই।
এমন কি দেবকীনন্দন নিজের গুরুর সম্বন্ধেও কেবল মাত্র লিখিয়াছেন—"পরম শ্রীল
পরমেশ্বর শ্রীপুরুষোত্তমঃ"। এরপ গ্রন্থ দেখিয়া যে শ্রীদ্ধীবগোস্বামী বৈক্ষব বন্দনা
লিখিয়াছেন, তাহা মনে হয় না।

দেবকীনন্দনের বৃহং বৈঞ্ব-বন্দনার যে পুথি বরাহনগর গ্রন্থাগারে আছে, তাহার অম্পুলিপি কাল ১৭১৯ শক। ইহাতে পুরাণোক্ত ভক্তদের এবং তিন সম্প্রদায়ের প্রতিষ্ঠাতাদের বন্দনা আছে। তারপর মধ্বাচার্যা হইতে মাধ্বেক্ত পুরী পর্যান্ত গুরুপ্রালী উল্লেখ করিয়া প্রতিচত্ত্য-বন্দনা আরম্ভ হইয়াছে। সেই স্থান হইতে শেষ পর্যান্ত ছোট বৈঞ্ব-বন্দনার সহিত প্রায় স্কাংশে মিল আছে।

# शकीरवत देवस्थव-वन्ममात उदकर्य

অতুলক্ষ গোস্থামী মহাশ্য বৃদ্ধাবন দাসের নাম দিয়া যে বৈক্ষব-বন্দনা ছাপিয়াছেন, তাহা এটৈততা ভাগবতের লেখক বৃদ্ধাবন দাসের লেখা নহে। কেননা, উক্ত বন্দনাতে এটিততা ভাগবতের প্রস্কার নারায়ণীর পুত্র বৃদ্ধাবন দাসের বন্দনা আছে। এই বন্দনা-লেখককে দ্বিতীয় বৃদ্ধাবন দাস বলা যাইতে পারে। ইনি কোন্ সময়ের লোক, তাহা নিশ্চিতভাবে বলা যায় না। পঞ্চদশ পরিচ্ছেদে এগীবের ও দ্বিতীয় বৃদ্ধাবন দাসের বন্দনা যেখানে যেখানে পাশাপাশি তৃলিয়া দিয়াছি, সেই সব স্থানে প্রায়শ দেখা যাইবে যে একটা অভাটার অহ্বোদ। উভয়ের মধ্যে পার্থকা রহিয়াছে প্রিচৈততা, স্বাহ্ববী, বীরভহ্ন, এবং ক্রপ্সনাতনের বন্দনায়। প্রিচৈতনা বন্দনা উক্ত অধ্যায়ে উদ্ধার করি নাই; এখানে করিতেছি। তাহাতে দেবকীনন্দন ও দ্বিতীয়

### [ 8]

বুন্দাবন দাস অপেক। শ্রীজীবনামান্ধিত বন্দনার কবিত্র যে কত শ্রেষ্ঠ, তাহা বুঝা ঘাইবে।

শ্রীজীব—বলে শ্রীগৌরচজং রসময়বপুষং, ধামকারুণারাশে
ভাবং গৃহন্রস্থিত্মিং শ্রীহরিং রাশিকায়াঃ।
ভাতের হীবসজ্যান্ কলিমলমলিনান্ সর্পভাবেন হীনান্
ভাতের যে বৈ অথাপং পরিজননিকরৈং শ্রীনবদ্ধীপ মধ্যে।

দেবকী-বন্দন— বন্দিব শ্রীমহাপ্রভূ শ্রীকৃষ্টেচতর।
পতিতপাবন অবতার ধরা ধরা ।

২ বু — একাস্ত ভকতি করি বন্দোগৌরচক্র হরি ভুবন মঞ্জ অবতার।

যুগধর্ম পালিবারে জন্মিলা নদীয়াপুরে সভীর্ত্তন করিতে প্রচার ॥

এইরপ পার্থকা জাহনী, বীরচন্দ্র, নিত্যানন্দ প্রভৃতির বন্দনাতেও দেখা যায়। সেইজন্ম সিদ্ধান্ত করি যে খিতীয় বৃন্দাবন দাসের বাংলা বন্দনা দেখিয়া শ্রীদ্ধীব বা ভাহার নাম দিয়া অন্ত কেই সংস্কৃত ভাষায় বৈক্ষব-বন্দনা লেখেন নাই। বরং শ্রীদ্ধীবের বন্দনা দেখিয়া দিতীয় বৃন্দাবন দাসের গ্রন্থ রচিত হওয়া অধিকতর সম্ভব।

জীজীবের বৈক্ষব-বন্দনার একখানি পুথি আমি আমার মাতামহ অদৈতদাস পণ্ডিত বাবাজী মহোদয়ের নিতাপাঠা জীমদ্রাগবতের মধ্যে পাই (১)। পুথিখানি তাহার নিজের হাতের লেখা। এই পুথিখানি পাওয়ার পর আমি বহস্থানে নিজে

বন্দোশী অবৈত দাস কীর্ত্তনীয়া কেট। পত্তিত বাবাজী থাতি শীমুকুন্দ প্রেট। বিবানিশি মন্ত বিহোকুক্ত গুণগানে। কীর্ত্তন শিখাইলা বিহোক্ত বহু ছাত্রগণে।

( বিকুলিয়া সৌরাজ পত্রিকা, অষ্টম বর্ষ, প্রথম সংখ্যা, পুঃ ৪২ )

<sup>(</sup>১) পতিত বাবালী মহোগয় নৈটক বৈক্ব ছিলেন। তিনি যে সে বই, বিশেষতঃ জাল বই সংগ্ৰহ কৰিবাৰ মত বোক ছিলেন না। তাহাৰ জীবনী বিশ্বকোষের দিতীয় সংস্করণে প্রকাশিত হইছাছে। ডাঃ দীনেশচন্দ্র দেন মহাশয় History of Bengali Language and Literature গ্রন্থে উছাকে জীবিত কীওনীয়ালের মধ্যে সর্কাশ্রেষ্ঠ বলিয়াছেন। রাহ্যবাহাত্ত্ব বংগঞ্জনাথ মিত্র মহাশ্য তাহার চরিত্র ও কীওন-গান সম্বন্ধে "ভারতবর্গ" পত্রিকায় (১০০০ ভান্ত, রগকীর্ত্তন প্রবন্ধ, পৃঃ ৩৮০) প্রবন্ধ বিভিয়াছেন। প্রীযুক্ত হরিদান গোগামী মহাশ্য তাহার "বৈক্ষব-বন্ধনা" গ্রন্থে লিথিয়াছেন

# GENTRAL LIBRARY

### [ 9 ]

যাইয়া ও সংবাদপত্তে ঘোষণা করিয়া অক আর একথানি অন্থলিপির অন্থসদান করি।

গুঁজিতে গুঁজিতে বরাহনগর গ্রন্থ-মন্দিরে ইহার অন্থলিপি পাই। শুনিয়াছি জান
দাগের পাঠ কাদড়ায় ইহার আর একথানি পুথি আছে। স্তরাং বইথানি যে

প্রাচীন, সে বিষয়ে সন্দেহ থাকে না। কিন্তু ভক্তি রক্তাকরে শীলীবের যে গ্রন্থলিকা

লিখিত আছে (পৃঃ ৫৯—৬১) তাহার মধ্যে "বৈঞ্চব-বন্দনার" নাম পাওয়া মায় না।

নরত্ত্বরি চক্রবর্তী যে সংস্কৃত প্রোক অবলগন করিয়া ঐ তালিকা লিখিয়াছেন,

তাহার শেষে "ইত্যাদয়ঃ" শন্দ আছে। অর্থাৎ ঐ তালিকাভুক্ত গ্রন্থ ছাড়া অন্যান্ত

গ্রন্থ শীলীব লিখিয়াছিলেন। ঐ তালিকাতে শীলীবের "সর্ব্যস্থাদিনীর" ক্যায়

য়প্রসিদ্ধ দার্শনিক গ্রন্থও বাদ পড়িয়াছে। স্ক্রাং ভক্তিরভাকরের অন্ধ্রেবের

উপর নির্ভর করিয়া আলোচ্য বৈঞ্চব-বন্দনাকে জাল বলা য়য় না।

আলোচ্য বৈক্ষব-বন্দনায় তিন্টী বিভিন্ন স্থানে শ্রীজীবগোস্বামী নিজের নাম উল্লেখ করিয়াছেন। যথা প্রথম প্লোকেই

> স্নাতন সমে। যক্ত জ্যায়ান্তীমান্ স্নাতন: । ত্রীবল্লভোহতুক্ত: সেহিসৌ জীরপো জীবসকাতি: ॥

উজ্জলনীলমণির টাকার শেষেও শ্রীজীব এই প্লোকটা লিখিয়াছেন। রূপসনাতনের বন্দনা প্রসঙ্গে বৈফ্রে-বন্দনায় আছে—

> যংপাদাভপরিমল গন্ধলেশবিভাবিত:। জীবনামামিধেবেয় ভাবিহৈব ভবে ভবে।

লঘুতোষণী দশমস্বজের টীকার অস্তেও শ্রীজীব ঐ ভাবে নিজের নাম লিখিয়াছেন—
"যা সংক্রিপ্তা ম্যা ক্ষুজ্ঞীবেনাপি তদাজ্ঞয়া"। ঐ টীকার শেষে তিনি লিখিয়াছেন—
"অথে। তদজিযুজীবেন জীবেনেদং নিবেজতে"। এইরূপ ভাবে শ্রীরূপসনাতনের
অন্ত্রগত বলিয়া নিজেকে পরিচিত করার ভঙ্গী শ্রীজীবগোস্বামীর নিজস্ব। স্থালোচা
বৈক্ষর-বন্দনার শেষে আছে "জীবেনৈব ম্যা স্মাপিত্মিদং কুছা তুপর্যপিতং।"

এখন প্রশ্ন হইতেছে এই যে, প্রীজীব বৃন্দাবনে বাস করিতেন; তাঁহার পক্ষে
গৌড়-উৎকলের অত ভজের, বিশেষতঃ নিত্যানন্দ-ভক্তদের যোগসিদ্ধ অলৌকিক
কার্যাসমূহের অত বিবরণ জানা সম্ভব কি? আমার মনে হয়, অসম্ভব নহে।
ভক্তিরভাকরে দেখা যায় যে, প্রীজীব নিত্যানন্দের কুপালাভের পর বৃন্দাবনে গমন
করেন। হথা—

প্রীজীব অধৈষ্য হইল প্রস্তুর দর্শনে। নিবারিতে নারে অঞ্ধারা ত্ নয়নে।

# CENTRAL LIBRARY

#### [ + ]

কর্মে যতেক দৈয় কহনে না যায়। লোটাইয়া পড়ে প্রান্থ নিত্যানন্দ পায়। নিত্যানন্দ প্রান্থ মহাবাংসলো বিহরণ। ধরিল শ্রীজীব মাথে চরণ যুগল। (৫০ পুঃ)

এই বর্ণনা হইতে জানা গেল যে, যে সময় নিত্যানন্দ প্রাচু গৌড়দেশে প্রেমদান করিতেছিলেন, সেই সময়ে শীজীবও তথায় ছিলেন। স্বতরাং তাঁহার প্রকে নিত্যানন্দ-ভক্তদের ঘনিষ্ঠ পরিচয় দেওয়া অসম্ভব নহে।

শীলীবের বৈক্ষব-বন্দনায় যত পুরী, ভারতী, সরস্বতী, উপাধিধারী ব্যক্তির নাম আছে, তাহা আর অলু কোন চরিত-গ্রন্থে নাই। রঘুনাথদাস গোস্বামী মহাপ্রভুর নীলাচল লীলার শেষ ১৫।১৬ বংসর পুরীতে ছিলেন। তাঁহার নিকট ঐ সব সল্লাদীদের কথা শুনিয়া শীলীব বৈক্ষব-বন্দনায় উহাদের নাম লিখিয়াছেন বলিয়া বোধ হয়।

শ্রীজীবের নাম দিয়া যদি অপর কেই ঐ বন্দনা-গ্রন্থ লিথিয়া থাকেন, তাহা হইলে তিনি একজন অধাধারণ কবি ও পণ্ডিত ছিলেন বলিতে হইবে। গৌড়ীয় বৈঞ্চবসম্প্রদায়ের প্রথম যুগে নিত্যানন্দ, অহৈত, নরহরি প্রভৃতির শিয়্বগণের মধ্যে এত বিবাদ বাধিয়াছিল যে অপর কোন বাক্তির পক্ষে শ্রীজীবের নাম দিয়া এরূপ বৈঞ্চব-বন্দনা লেখা অসম্ভব নহে। এই বৈঞ্চব-বন্দনায় আছে যে অচ্যুত ভিন্ন অহৈতের অভ পুলেরা বৈঞ্চবগণকর্ত্বক বক্ষিত হইয়াছিলেন। অহৈত-বংশকে লোকচক্ষে হীন করিবার অভিপ্রায়ে কেই শ্রীজীবের নাম দিয়া উক্ত বৈঞ্চব-বন্দনা চালাইয়া দিতে পারেন। ঐ বৈঞ্চব-বন্দনায় বীরচক্র বা বীরভন্তকে নিত্যানন্দের পুরে বলা হয় নাই—কেবল মাত্র জাহ্নবীর সেবক বলা ইইয়াছে। অন্তমান করা য়াইতে পারে যে, নিত্যানন্দ-বংশের প্রতি আক্রোশবশত্য কোন ব্যক্তি এইরূপ বৈঞ্চব-বন্দনা রচনা করিয়া শ্রীজীবের নামে আরোপ করিয়াছেন।

কিন্ত আলোচ্য বৈশ্বৰ-বন্দনার ভাব, ভাষা ও তথোর প্রাচুর্যা দেখিয়া আমার সন্দেহ হয় ইহা জীলীবগোস্থামীরই রচনা। এইরূপ বৈশ্বৰ-বন্দনাকে চাপা দিবার উদ্দেশ্যেই হয়তো দেবকীনন্দন ও দ্বিতীয় বৃন্দাবন দাস বৈশ্বৰ-বন্দনা লিখিয়াছিলেন। প্রীলীবনামান্দিত বৈশ্বৰ-বন্দনা সভাই জীলীবের লেখা কিনা ভাহার সম্বন্ধে যাবভীয় অন্তর্গ ও প্রতিকৃত্ব প্রমাণ এইছলে ও পরিকর-পরিচয়প্রসঙ্গে উপস্থিত করিলাম। কিন্তু এ সম্বন্ধে কোন সিভান্থে উপনীত হইবার ভার প্রিভবর্ণের হাতে দিলাম।



# [ a ]

# প্রীজীবের, দেবকীনন্দনের ও দ্বিতীয় বৃন্দাবন দাসের বৈষ্ণব-বন্দনার পরিকর-সংখ্যা-বিচার (১)।

শ্রীতি ২০০টা নাম ও দেতে ২১৪টা নাম 'আছে। এইরূপ পার্থকা কিরপে আসিয়াছিল, লিখিতেছি। শ্রীতে বল্লভাচার্যা, দে বল্লভাসন (পরবর্ত্তী কালে বল্লভাচার্যাকে বর্জন করা হইয়াছিল বলিয়া দে তাহার নাম উল্লেখ করেন নাই)। শ্রীতে বল্লেখর আচার্যা, দে নন্দন আচার্যা; শ্রীতে আচার্যা রক্ত, দে আচার্যা চক্ত। এই পার্থকোর দরণ সংখ্যার গরমিল হয় না। কিন্তু দেবকীনন্দনে নিম্নলিখিত ১১টা নাম বেশা আছে। (১°) দে শ্রীজীবগোশ্বামীকে বন্দনা করিয়াছেন, শ্রীজীবের বইয়ে অবহা শ্রীজীবগোশ্বামীর বন্দনা নাই। (২) শ্রীত ২৮০ পংক্তিতে নিসংহচৈততাদাসং আছে, দে ১০৫ পদ্মারে উহাকে ভাপিয়া ছুইটা নাম করিয়াছেন। যথা—"বন্দিব নুসিংহ আর শ্রীচৈততা দাস"। (৩) দে ৫৭ পদ্মারে একবার, শ্রীজার ১০৬ পদ্মারে রঘুনাথ ভট্টকে বন্দনা করিয়াছেন। রঘুনাথ ভট্ট যে ছুইজন ছিলেন তাহার কোন প্রমাণ নাই। দে র ১৬৫৪ ও ১৭০২ গুটাকের পৃথিতে ১০৬ সংখ্যক প্যারটী নাই। (৪—৮) দে র ছাপা বইয়ে নিম্নলিখিত পথার আছে, কিন্তু প্রাচীন পৃথিতে নাই—

শীপ্রছায়মিশ্র বন্দো রায় ভবানন্দ। কলানিধি, স্থানিধি, গোপীনাথ বন্দো।

কলানিধি, স্থগানিধি প্রভৃতি নাম চরিতামৃত ছাড়া অল কোন গ্রন্থে নাই। সেইজল মনে হয় কেহ চরিতামৃত পড়িয়া নামগুলি যোগ করিয়া দিয়াছেন। (২—১১) দে°র মুক্তিত গ্রন্থে নিম্নলিখিত প্যার আছে, কিন্তু প্রাচীন পুথিতে পাই নাই—

> চৈতভাদাস, রামদাস আর কর্ণপূর। শিবানদের তিন পুত্র বন্দিব প্রচুর।

তাহা হইলে দেখা যাইতেছে যে দেবকীনন্দনের বন্দনার প্রাচীন পুথিতে লিখিত পরিকর-সংখ্যা ও নামের সহিত উল্লিখিত ছয়টা স্থান ছাড়া অল সর্বায় প্রজীবের বৈক্ষব-বন্দনার মিল আছে। জীজীব ও দেবকীনন্দন মিলাইয়া ২১২টা নাম পাওয়া যায়।

<sup>(</sup>১) দেবকীনন্দনের বৈশ্বব-বন্দনা মানে এখানে অতুলকুক গোপামী-সম্পাদিত ছোট বৈক্বব-বন্দনা। এই বিচারে নিয়লিখিত সংগতগুলি বাবহার করিতেছি—লী—জীছাবের; লে—দেবকী নন্দনের; বু—দিতীয় বৃন্দাবন দাসের বৈশ্বব-বন্দনা।

# 1 30 1

শ্রীজীবের বৈক্ষর-বন্দনায় ২০০টা নাম, আর ছিতীয় রুশাবন দাসের বন্দনায় ১৯১টি নাম। শ্রীতে নাই এখন ছুইটা নাম রু উল্লেখ করিয়াছেন। (১) মনোরথ পুরী—শ্রী ই স্থানে চিদানন্দং স্থাচিত্তকং লিখিয়াছেন; (২) রুতে শ্রীজীবগোস্থামীর বন্দনা আছে, শ্রীতে নাই। রু শ্রীজীব পণ্ডিতকে বন্দনা করেন নাই।

প্রীতে আছে, বৃততে নাই এমন নাম ১৭টা। (১—২) রু ঈশানদাস পর্যন্ত বন্দনা করিয়া (শ্রী ১১০ পংক্তি, বু ৩৮ ত্রিপদীর পূর্কার্ছ) শ্রীর নিম্নলিখিত শ্রোকটা বাদ দিয়াছেন—

> শ্রীমানসহয়ে বন্দে বিনয়েন কুপাময়ে। প্রমানন্দলক্ষণে তৌ চৈত্তাপিত্যানসৌ।

(৩—৬) র° দামোদর পুরী পর্যান্ত অন্তবাদ করিয়া (শ্রী ১২৭ পংক্তির র° ৪৪ ত্রিপদী প্রথমার্ক ) নিয়লিখিত শ্লোক বাদ দিয়াছেন—

> বন্দে নরসিংহ তীর্থং স্থানন্দপ্রীং ততঃ। গোবিন্দানন্দ নামানং ব্রদানন্দ প্রীং ততঃ॥

( ৭— ১০ ) বৃ° বিষ্ণুপুরী পর্যান্ত অন্থবাদ করিয়া ( শ্রী" ১০২ পংক্তি, বৃ ৪৫ ) নিম্নলিখিত প্লোক ছাড়িয়া দিয়াছেন—

> ব্রদানন্দ স্করণঞ্চ ক্রফানন্দপুরীং ততঃ। শ্রীরাঘবপুরীং বন্দে ভক্ত্যাপরময়ামুদা।

(১১—১০) বৃ° ধনজয় পণ্ডিছ পর্যান্ত অহুবাদ করিয়া (জী° ২২৪, বৃ° ১১২) নিমলিপিত লোকার্ম ছাডিয়াছেন—

পণ্ডিতং শ্রীভ্গরাধমাচার্য্যলক্ষণং ততঃ।

- (১৪) ব্রী ২৬৯ পংক্তিতে জগরাথ তীর্থকে বন্দনা করিয়াছেন, বু" ঐ নাম বাদ দিয়াছেন।
- (১৫) বু°র ছাপা বইয়ে পুরুষোত্তম দাস নামটা বাদ পিয়াছে, যদিও অসংলগ্রভাবে তাহার ওপবর্ণনা অংশ মুক্তিত হইয়াছে।
- (১৬) খ্রী" বৈভ বিফুদাদের পর তাহার ভাতা বনমালীকে বন্দন। ক্রিয়াছেন,
  বু° ঐ নাম বাদ দিয়াছেন।
- (১৭) ব্রী° দ্বিজ হরিদাশকে বন্দনা করিয়াছেন, রু° ছাড়িয়া দিয়াছেন। মনে হয়, জীজীবের বৈক্ষব-বন্দনার যে পুথি দেখিয়া দিতীয় রন্দাবন দাস বাংলা করিয়াছিলেন, সেই পুথির দোধে রু°তে ঐ ১৭টা নাম বাদ পিয়াছে।

# GENTRAL LIBRARY

#### [ 55 ]

তাহা হইলে বৃ' প্রদত্ত ১৯১ নাম + ব্রী' তে আছে, বৃতে নাই ১৭ নাম – ২-৫ নাম।

বু°তে উলিখিত তিন্টি নাম বেশী হওয়ার কারণ নিমে লিখিত হইল।

- (১) বু° তে অবৃদ্ধিমিশ্র ভূইবার লেখা হইয়াছে।
- (২) কমলাকর পিথলায়ী একনাম হইলেও বু°ছুই ভারে বিভক্ত করিয়াছেন।
- (৩) বু' মধুপণ্ডিত ১৪ ও ১+১ প্রারে তুইবার ধরিয়াছেন। বু' র ১৪ প্রারে প্রদান মধুপণ্ডিত, শ্রী তে গোবিন্দ আচার্য্যের আখ্যা। তাহা হইলে দেখা যাইতেছে যে শ্রীজীব, দেবকীনন্দন ও দ্বিতীয় বৃন্দাবন দাদের বৈক্ষব-বন্দনার মধ্যে পরিকর্গণের নাম ও সংখ্যা লইয়া বিশেষ কোন পার্থকা নাই।

দেবকীনন্দনের বৃহৎ বৈফ্ব-বন্দনায় নিম্লিখিত নামগুলি আছে। অল কোন বন্দনায় নাই—

(১) মুজিত ছোট বন্দনার ৫৮ প্যারের পর
বন্দো বিফুস্বামী গোসাঞি বৃন্দাবনে বাস।
বিশ্বেরর বন্দো হিতহরিবংশদাস।
বন্দো স্বরদাস স্বর মদনমোহন।
মুকুন্দ গুছুরিয়া বন্দো হইয়া এক মন।

বিফুস্বামী গোঁসাই মানে বল্লভাচার্য। অন্ত সব ভক্তও বল্লভাচারী সম্প্রদায়-ভুক্ত। উহাদের বিস্তৃত বিবরণ "চৌরাশী বৈষ্ণবণ্কী বার্ছা" নামক হিন্দী এক্ষে জুইবা।

- (২) মৃত্রিত বন্দনার ৬৮ পয়ারের পর গোপাল ওরককে বন্দনা
- (৩) মৃক্তি প্রস্তের ৬১ প্যারের পর রহং বৈশ্বব বন্দনায় আছে—

  মৃক্ত সরস্বতী বন্দো সতা সরস্বতী ।

  গৌরান্ধ বিনে যার অক্ত নাহি গতি ॥

  বন্দো সরস্বতী আর প্রীমধুস্থান ।

  গৌরান্ধ সেবিল যেহ করিয়া যতন ।

  ক্রব সরস্বতী আর বন্দো দামোদর ।

  হৈতক্ত বল্লভ দোহে কুপার সাগর ॥

  পুরুষোত্তম সরস্বতী বন্দিব গোপাল ।

  ভক্ত প্রধান জীবে বড়ই দ্যাল ॥



লোকনাথ গোদাঞি বন্দো বিভাবাচস্পতি।
জীবিভাভ্যণ রামভত্তে কর মতি।
পরমানন্দ ভট্টাচার্য্য ভূগর্ভ ঠাকুর।
বাণীবিলাদ রুঞ্দাদ প্রণাম প্রচুর।
জীবভু ঠাকুর বন্দো আর কাশী দাদে।
মহাভক্তো বন্দো মারিঠা রুঞ্চ দাদে।

#### শ্রীচৈতক্তার সমসাময়িক পরিকরগণের বিবরণ সংগ্রহের প্রয়োজনীয়ত।

খোড়শ শতাকীতে অসংখ্য ব্যক্তি অতৈতভাৱ কুপালাভ করিয়াছিলেন।
তাহাদের মধ্যে যাহাদের কোন প্রকার প্রভাব বা বৈশিষ্টা ছিল, তাহাদের
নাম অতৈতভাৱ সাতথানি প্রাচীন চরিত-গ্রন্থে, তিনধানি বৈশ্বব-বন্দনায়, বা অভ কোন সংস্কৃত, বাংলা, উড়িয়া, অসমীয়া বা হিন্দী গ্রন্থে লিখিত হইয়াছে। ঐ সব গ্রন্থভিল তুলনা করিয়া পড়িয়া এই অধ্যায় লিখিত হইল। ইহাতে কেবলমাত্র সেই সব ভক্তেরই নাম আছে, যাহারা অতৈতভাৱ সমসাম্যিক ও তাহার কুপালাভ করিয়াছিলেন। চরিত-গ্রন্থে ছসেন শাহ, হিরণা ও গোবর্জন মজ্মদার প্রভৃতির নাম আছে, কিন্তু তাহারা অতিতভাৱে কুপালাভ করিয়া ভক্ত হন নাই বলিয়া তাহাদের নাম উল্লেখ করিলাম না। কিন্তু ভক্ত ও সমসাম্যক্তি না হইলেও অতৈতভা, নিত্যানন্দ গদাধর প্রভৃতির পিতৃপিতামহাদির নাম উল্লেখ করিলাম। তাহাতে বৈশ্বব ধর্ম্বের ইতিহাস রচনার স্থবিধা হইবে।

"তীতৈততারিতের উপাদান" গ্রন্থে এই অধ্যায়ের সার্থকতা কি, নিমে নির্দেশ করিতেছি। (১) তীতৈততার কপা কোন্ শ্রেণীর লোকে পাইয়াছিলেন, তাহারা প্রন্থ কোথায় কি ভাবে মিলিত হইয়াছিলেন, তাহাদের প্রভাব কিরপ ছিল, এই সব তথা জানিতে পারিলে তীতৈততার চরিত্র বৃঝা ঘাইবে। (২) এই অধ্যায়ের সাহায়ে গৌড়ীয় বৈক্ষব ধর্মের ইতিহাস রচনা সহজ হইবে। তীতৈততার সমসাময়িক ভক্তেরা কোথায় জন্মিয়াছিলেন ও কোথায় বাস করিয়াছিলেন জানিতে পারিলে ঘোড়শ শতানীর প্রথমার্দ্ধে এই ধর্মের প্রভাব কতদ্র বাাপ্ত হইয়াছিল বৃঝা ঘাইবে। এই অধ্যায় হইতে বৃঝা ঘাইবে যে কোন্ ভক্ত কি প্রকার উপাসনা-প্রণালী অবলহন করিয়াছিলেন ও কোন্ মৃত্তি পূজা করিতেন। (৩) পরবর্তী অন্তসন্ধানকারীরা

কোন পদ, শ্লোক বা গ্রন্থ আবিকার করিলে, তাহা উচৈতজ্ঞের কোন সম্পাম্যিক ভক্তের লেখা কিনা জানা সহজ হইবে। ধরা যাউক যে, কেহ জগদানন্দ নামক কোন বাক্তির রচিত কোন বৈক্ষব গ্রন্থ বা পদ পাইলেন। ঐ জগদানন্দ, মহাপ্রাকুর পার্বদ জগদানন কিনা, ভাহা এই অধ্যায়ে প্রদত্ত প্রমাণপঞ্জীর সাহায়ে। তিনি কতকটা ব্ঝিতে পারিবেন। খ্রীচৈতক্তরিতামতের গৌড়ীছ-মঠ-সংস্করণ ও শ্রীচৈতগুভাগবতের অতুলক্ষ গোস্বামীর সংস্করণ ছাড়া অগু কোন বৈক্ষব-গ্রাম্বের নির্ঘণ্ট (index) নাই। কোন্ ভক্তের নাম ও বিবরণ কোন্ বইয়ে পাওয়া যাইবে, তাহা অনায়াদে উক্ত প্রমাণপ্রী হইতে বাহির করা ঘাইবে। প্রমাণপঞ্জীতে যুত গ্রন্থহে প্রথমবার ঐ ভক্তের নাম কোথায় লিখিত ইইয়াছে, আমি ৩ধু তাহারই তালিকা দিয়াছি। চরিতামুতে শাধাগণনাতেই অনেকের নাম প্রথমবার উল্লেখ করা হইয়াছে বলিয়া অনেক স্থলে আর পুনরায় প্রমাণ (reference) দেই নাই। (৪) যোড়শ শতাব্দীতে পূর্ব্ব-ভারতের সমাজ ও সংস্কৃতি কিরুপ ছিল, তাহারও কিছু পরিচয় ইহাতে মিলিবে। পর্কো আমি এই বিষয়ে মন্তব্য প্রকাশ করিয়াছি। (৫) যোড়শ শতাকীতে লোকে ভগবানের নামে নাম রাখিত। সেই জন্ম কৃষ্ণদাস, জগলাথ, মাধব, গোবিন্দ প্রভৃতি নামধারী বহু লোকের কথা বৈষ্ণব সাহিত্যে পাওয়া যায়। জগবন্ধ ভত্ত, সতীশচন্দ্র রায়, মুগালকান্তি ঘোষ, অমূলাধন ভট্টবায় প্রভতি স্থপ্রসিদ্ধ বৈষ্ণব সাহিত্যকর্গণ সকলগুলি বৈষ্ণব গ্রন্থের তুলনামূলক বিচার করিবার স্থোগ পান নাই বলিয়া, অনেক স্থলে এক নামধারী ছুই বা ততোধিক বাজিকে এক ব্যক্তি মনে করিয়াছেন অথবা একই বাজিকে ছুইজন বাজি ভাবিয়াছেন। এক নামধারী ভক্তদের পরিচয় দিতে ঘাইয়া আমি একটি মূল নীতি অনুসরণ করিয়াছি। সেটা হইতেছে এই যে, পরিকর গণনা করিতে যাইয়া একই গ্রন্থকার ক্ষেক পদ বা প্যারের ব্যবধানে একই ব্যক্তির নাম ভূইবার বা তিন্বার লিখিতে পারেন না। কুফ্লাস কবিরাজ যেখানে এক ব্যক্তির নাম ছুই শাখায় গণনা করিয়াছেন, সেখানে স্পষ্ট বলিয়া দিয়াছেন যে ইনি ছই শাখা-ছুক্ত।

১৩৩১ সালে তীযুক্ত অম্লাধন ভট্টরায় "রহং জীবৈক্ষবচরিত অভিধান" নামক এক প্রম্বে অ হইতে চ প্রাপ্ত অক্ষরে ঘে সব ভক্তদের নাম যে কোন বৈক্ষব প্রম্বে আছে, তাহাদের বিষরণ লিখিয়া প্রকাশ করেন। গ্রন্থখানি ম্লাবান, কিন্ত ইহাতে তুইটা দোষ আছে। প্রথমত ইহাতে অহৈতপ্রকাশ, কর্ণানন্দ ও প্রেমবিলাসের প্রক্ষিপ্ত আংশ প্রভৃতি নাতি-প্রামাণিক গ্রন্থ হইতে বিবরণ সংগ্রহ করা হইয়াছে। যে ভক্তের নাম বৈক্ষব-বন্দনায়, গৌরগণোদেশদীপিকায়, সাত্থানি প্রাচীন চরিতগ্রন্থ, বা কোন প্রাচীন অসমীয়া, উড়িয়া, হিন্দী গ্রন্থে নাই, তিনি যে সতাই

শ্রীতৈতন্তের সমসামায়িক ছিলেন, তাহা প্রমাণ করা ছছর। আমি সমস্থ বৈক্ষব ভক্তের পরিচয় দিবার চেটা করি নাই—কেবল মাত্র শ্রীতৈতন্তের সমসামায়িক ভক্তদের পরিচয় লিখিয়াছি। ভটুমহাশয়ের প্রস্থের ছিতীয় দোধ এই যে, কোখাও তিনি প্রমাণপত্নী দেন নাই এবং বিভিন্ন প্রস্থের বিবরণের তুলনামূলক বিচার করেন নাই। বৈক্ষর-বন্দনায় যে সমস্ত সন্মাসী-ভক্তদের নাম পাওয়া যায়, ভটুমহাশয় তাহাদের মধ্যে অনেকের নাম বাদ দিয়া দিয়াছেন, যথা,— অভ্তবানন্দ, উপেন্দ্র আশ্রম, ক্ষমানন্দ পুরী। ভটুমহাশয়ের আরম্ভ কার্য সমাপ্ত করার জন্ম আমি এই অধ্যায় লিখিলাম।

#### সক্ষেত ব্যাখ্যা

- ১। অভি বা অভিরাম—সাহিত্য-পরিষদ পত্রিকার ১৩১৮ সালের খিতীয় সংখ্যায় প্রকাশিত অভিরাম দাসের "পাট-পর্যাটন"। ইহাতে পরিকরগণের জন্মস্থানের ও পাটের কথা পাওয়া যায়।
- ২। কা—কবি কর্ণপুরের শীচৈত্য চরিতামৃত মহাকাবা। ২০১২ অর্থাৎ দিতীয় সর্গের ১২ শ্লোক।
  - ा (शो. श. मो. कवि कर्नशृद्धत (शोतश्राम्भामी शिका)।
- ৪। গৌ. প. ত. বঞ্চীয় সাহিত্য পরিষদ হইতে প্রকাশিত গৌরপদতরদ্বিণীর
  ছিতীয় সংস্করণ।
- ৫। চ রাধাবিনোদ নাথ সম্পাদিত স্ত্রীচৈতক্ত চরিতামৃত। ১/২/৪ আদি
  লীলা, দিতীয় পরিচ্ছেদ, চতুর্থ প্যার, ২/০/৭ মধালীলা, তৃতীয় পরিচ্ছেদ, স্প্রম প্যার,
  ০/৪/৫ অস্তালীলা, চতুর্থ পরিচ্ছেদ, প্রুম প্যার। গৌড়ীয় মঠ, কালনা, ও মাধনলাল
  দাস বাবাজীর চরিতামৃতের সংস্করণ হইতে প্রমাণ উদ্ধার কালে ঐ সব সংস্করণের নাম
  উল্লেখ করিয়াছি। চরিতামৃতে স্থাচিতত্তের কুপাপ্রাপ্ত ব্যক্তিদের নাম থাকিলে, ঐ
  নামের পরে ছোট বন্ধনী, অথবা চ লিখিত হইয়াছে।
- ভ। ছোট বন্ধনী প্রতিতরচরিতামতের আদিলীলার নবম (মাধবেন্দ্র প্রীর শাখা), দশম (প্রতিতর শাখা), একাদশ (নিত্যানন্দ শাখা) ও দ্বাদশ (অদৈত ও গদাধর শাখা) পরিছেদে প্রদত্ত নাম। (চৈ ৭) দশম পরিছেদের সপ্তম প্রার। (স্ব ১২) দ্বাদশ পরিছেদের আদশ প্রার। এক নামের একাধিক ভক্ত বেখানে আছে, সেইখানে এইরপ সংখ্যা দিয়া কোন ভক্তকে নির্দেশ করিতেছি, তাহা জানাইয়াছি। যে ভক্তদের নাম ছই শাখায় লিখিত হইয়াছে, সেই ভক্তদের নামের

# GENTRAL LIBRARY

### [ 30 ]

পাশে বন্ধনীতে ছইটা অক্ষর আছে; যথা,—( হৈ, নি ) অধাৎ হৈতকা ও নিত্যানন্দ এই উভয় শাগাভুক্ত। কিন্তু ( গ, যত্ত ) অধাৎ ঐ ভক্তকে কৃষ্ণদাস কবিরাজ ও যত্তনাথ উভয়েই গদাধর শাথায় বর্ণনা কবিয়াছেন।

- া জ জয়ানদের চৈত্রমঙ্গল। জ ১২ জয়ানদের চৈত্রমঙ্গলের ১২ পৃষ্ঠা।
- ৮। জয়ক্ষ সাহিত্য পরিষদ পত্রিকার ১৩৩৭ সালের চতুর্থ সংখ্যায় প্রকাশিত জয়ক্ষদাসের "শ্রীচৈতত্ত-পারিষদ-জন্মস্থান-নির্ণয়"।
- ন। দে অতুলক্ষ গোস্বামীর সম্পাদিত বৈক্ষব-বন্দনা গ্রন্থের অন্তর্ভুক্ত দেবকী-বন্দনের বাংলা বৈক্ষব-বন্দনা। ইহার ক্ষেক্ত্বানি পুথি সাহিত্য পরিষ্ধে আছে। ঐ ওলির মধ্যে প্রাচীনতম পুথি হইতেছে ২০৮৪ সংখ্যক, উহার তারিও ১০৬১ সাল অর্থাৎ ১৬৫৪ খৃষ্টাক। অন্ত একথানির সংখ্যা ১৪৮২, উহার অন্থলিপিকাল ১০৮১ সাল, অর্থাৎ ১৬৭৪ খ্রীষ্টাক। ঐ পুথিওলি হইতে পাঠান্তর ধরার সময় পুথির তারিও উল্লেখ করিয়াছি। ছাপা বইয়ে সংখ্যা দেওয়া নাই। আমি ধুয়া বাদ দিয়া সংখ্যা দিয়া লইয়াছি।
- ১০। না কবি কর্ণপুরের আঁচৈত্ত চন্দ্রোদয় নাটক, নির্বয়দাগর প্রেস সংস্করণ।
- ১১। পদ্মাবলী ডাঃ স্থলীলকুমার দে সম্পাদিত ত্রীরূপগোস্বামীর পদ্মাবলী। প্রোক সংখ্যা ঐ সংস্করণের।
- ১২। ভা— অতুলক্ষ গোস্বামীর সম্পাদিত ঐতৈত্যভাগবতের দিতীয় সংস্করণ। ১৷৩৬— আদিলীলা, তৃতীয় অধ্যায়, ষষ্ঠ পৃষ্ঠা। ২৷৪৷২৭২ — মধ্যলীলা, চতুর্থ অধ্যায়, ২৭২ পৃষ্ঠা। ২৷৭৷৫০১ — অস্তালীলা, সপ্তম পরিচ্ছেদ, ৫০১ পৃষ্ঠা।
- ১৩। মৃ মুণালকান্তি ঘোষ সম্পাদিত মুরারি গুপ্তের শীক্ষাচৈতত চরিতম্, তৃতীয় সংস্করণ। ১।৪।৬ মানে প্রথম প্রক্রম, চতুর্থ সর্গা, যট শ্লোক।
- ১৪। যত্ যত্নাথ দাসের "শাথানির্বামৃতম্"। যত্ শুধু পদাধরের শিক্সদের নাম দিয়াছেন। ( গ, যত্ ) মানে ঐ ভক্তকে কুফদাস কবিরাজ ও যত্নাথ উভয়েই পদাধর শাথায় গণনা কবিয়াছেন।
- ১৫। রামগোপাল রামগোপাল দাসের "শাখা বর্ণনা"। ইহাতে নরহরি সরকার ও রখুনন্দনের শিহাদের নাম আছে। ৪২৪ চৈত্তাকে ঐ পুতিকা ঞীগও হইতে প্রকাশিত হইয়াছিল।

# CENTRAL LIBRARY

# [ 35 ]

১৬। লো—মুগালকান্তি ঘোষ সম্পাদিত লোচনের চৈত্ত মঙ্গলের বিতীয় সংস্করণ। লোচনের বই ম্রারির অত্বাদস্করপ বলিয়া স্থাত স্বতপ্রভাবে ইহার প্রমাণ উল্লেখ করি নাই।

১৭। বড়বন্ধনী — গৌরশণোদেশ দীপিকায় প্রদত্ত তত্ব। [মালাধর ১৪৪], ঐ বইয়ের ১৪৪ লোকে ঐ তত্ব লিখিত হইয়াছে।

১৮। বু — অতুলক্ষ গোস্থানী সম্পাদিত বৈক্ষব-বন্দনার অন্তর্ভুক্ত বিতীয় বুন্দাবন দাসের বৈক্ষব বন্দনা। ছাপা বইয়ে প্যার ও ত্রিপদীর সংখ্যা দেওয়া নাই। আমি ধুয়া বাদ দিয়া সংখ্যা দিয়া লইয়াছি।

১৯। শ্রী—আমি শ্রীজীবের নামান্ধিত যে সংস্কৃত বৈক্ষণ বন্দনার পুথি আবিভার করিয়াছি তাহাই। সংখ্যা প্লোকের নয়; ছন্দ অন্থসারে পংক্রি সাজাইয়াছি। সংখ্যা ঐ পংক্তির।

২০। সাময়িক পত্রিকার প্রমাণ উল্লেখ করিয়া অনেক স্থলে সংখ্যা দিয়া কোন বর্গের কোন সংখ্যার কোন পৃষ্ঠায় উহা আছে নির্দ্ধেশ করিয়াছি। যথা "গৌড়ীয়" অ৪।৭০ অর্থাৎ তৃতীয় বর্গ, চতুর্থ সংখ্যা, ৭০ পৃষ্ঠা।

#### আভিধানিক ক্রমে পরিবারগণের পরিচয়

১। অচ্যতানন্দ (চৈ, অ) [ অচ্যতা গোপী ] রাজগ—শান্তিপুর, নীলাচল। অবৈতের জোঠপুর। যত্নাথ মতে গদাধর শাথা।

শী ৭৭—৮০—তংশ্বানং হি মধ্যে তু যোহচাতানন্দসংজকঃ, তং বন্দে প্রমানন্দং ক্ষটেতভাবল্লভঃ।
যোহসৌ শীক্ষটেতভাতবজোহচাতসংজ্ঞকঃ,
শীগদাধরবীরকা সেবকঃ সদগুণান ব।
শীলাধৈতগণাঃ স্বতাশ্চ নিতরাং সর্বেধরত্বনহি,
শীটেতভাহরিং দ্যালুমভজন ভক্তাা শচীনন্দনং।
তে দৈবেনহভাহপরে চ বহবস্তালাডিয়ন্তেশ্বহি,
তে মমিছাবাচাতমতে ভাজামিয়োপেন্সিভাঃ॥

দে ১৬—অচ্যতানন্দাদি বন্দো তাহার নন্দন ১৬৫৪ ও ১৭০২ খৃঃ পুথিতে পাঠ "জ্বিচ্যতানন্দ বন্দো তাহার নন্দন।" ঐ ছই পুথিতে অচ্যত ছাড়া আর কোন অবৈত-পুত্রের বন্দনা নাই। CENTRAL LIBRARY

### [ 59 ]

র ২৪— তছুপ্রিয়ত্তবন্দো প্রায়ত অচ্যুতানন্দ শিশুকালে বাহার বৈরাগা।

অধৈতের অক্ত কোন পুরের বন্দনা নাই।

म् जाउनाउन, खा राजाउनर, क ३६५, हें राउजावता

নীচৈত্যভাগ্ৰত হইতে প্লাই ব্ঝা যায় যে অবৈতের কোন কোন পুত্র শীচৈত্যকে ঈথর বলিয়া খীকার করেন নাই (৩।৪।৪৩০ পুঃ)। শীচৈত্যচরিতা-মৃতে অবৈতশাখায় অবৈতের পর কয়টা পুত্রেরই নাম শিখিত হইয়াছে। হয়তো ১৬১৫ খুইালে অবৈতের পৌত্রেরা শীচৈত্যাকে সর্কোধর বলিয়া খীকার করিয়াছিলেন; সেই জন্ম করিয়াজ গোস্বামী সর কয়জন পুত্রেরই নাম করিয়াছেন। কিন্তু তিনিও অবৈতশাখায় মৃত্তেদের উল্লেখ করিয়াছেন। যথা:

যে যে লইল প্রীন্সচাতাননের মত।
সেই আচার্যাের গণ মহাভাগবত॥
অচাতের যেই মত, সেই মত দার।
আর যত মত—সব হৈল ছার্থার॥ ১৷১২৷৭১-৭২
প্রেমবিলাসেও দেখা যায় যে সীতা বলিতেছেন—
কোন কোন পুত্র রহে অচ্যতের মতে।
নাগরের ছারে কেহ চলিলা বিমতে॥ ৪ বিঃ, পঃ ২৬

- ২। **অচ্যুতানন্দ** স্প্রনিক উড়িয়া গ্রন্থকার ও পঞ্চশবার অক্তম। গোয়ালা।
  - ৩। অক্রর-বহুনাথ মতে গদাধর শাখা।
- ৪। **অত্তিত (**মাধ্বেদ্র শিশ্ব) [সদাশিব] রান্ধণ—শীহট্ট-শাস্তিপুর শ্রী ৬৯-৭০ বন্দেহদ্বৈতং কুপালুং পরম করুণকং শাস্ত্রকং ধামদাক্ষাং। যেনানীতত্তপোভিঃ পরিকরসহিতঃ শ্রীশচীনন্দনোহত্র।
  - দে ১৫ আচার্যা গোসাঞি বন্দো অবৈত ঈথর। যে আনিল মহাপ্রত্ন ভূবন ভিতর।
  - রু ২২ বন্দো শাস্তিপুর পতি শ্রীমট্ছত মহামতি সদাশিব সম তেজ থার।

যাহার তপের বলে আনিঞা মহীমগুলে

পাতিল চৈতল্প অবভার।

সমত চরিতগ্রন্থে উলিখিত। ইনি শান্তিপুরে ম্দনগোপালের সেবা স্থাপন করেন।

#### [ 36 ]

- e। **অনন্ত আচার্য্য** উড়িয়া পঞ্চমথার অক্তম।
- ৬। **অনস্ত** (অ ৫৬) [ হলেরী ] আদ্ধা—নব্দীপ। ত্রী ২১৮ অনস্থমাচার্যামথো নব্দীপনিবাসিনং

C# 3+2

বু ৯০ অনন্ত আচার্য্য বন্দে। নবছীপ মাঝ পদকলভকতে ইহার রচিত একটি পদ ধৃত হইয়াছে।

- ৭। **অনন্ত আচার্য্য** (গ ৭৯, বহু আছন) বুন্দাবন—ছুইজন অনস্ত আচার্ট্রোর মধ্যে কাহাকে বৈক্ষব-বন্দনায় উল্লেখ করা হুইয়াছে বলা যায় না। গদাধর-শিশ্ব অনস্ত আচার্যা গোবিন্দের শেবাধিকারী হুইয়াছিলেন। অনন্তের শিশ্ব হুরিদাশ পণ্ডিত কুক্ষণাস ক্রিরাজকে চরিতামুক্ত লিখিতে আদেশ দেন (চ ১৮৮০ ১-৬১)।
- ৮। **অনন্ত চট্টোপাধ্যায় একণ্ঠাভরণ** (গ, যত্) [গোপালী] ব্রান্ধণ— চরিতামতে শুধু কণ্ঠাভরণ উপাধি আছে; গৌরগণোদেশ দীপিকায় নাম আছে।
  - »। **অনন্ত দাস** ( অ ৫৯ )—গৌরপদতর স্বিণীতে ইহার সাতটি পদ আছে।
- > । **অনন্ত পণ্ডিত**—রাগণ, আটিশারা। বৃন্দাবন দাস বলেন যে শ্রীচৈতন্ত সন্মাস লইয়া নীলাচলে ঘাইবার সময় ইহার বাড়ীতে অতিথি হইয়াছিলেন (অহাজন পুঃ)।

জগবন্ধ ভাল অনন্ত দাসকে অনন্ত পণ্ডিতের সহিত অভিন বলিয়াছেন (১)

- ১১। **অনন্তপুরী**—[ অট সিন্ধির একজন] বেলুনে (বর্জমান জেলা) বাস (অভিঃ)।
- প্রী ২৭১, দে ১০১, র ১০০। জয়ানন্দ বলেন যে ইনি মাধ্বেজ-শিয়া (৩৪ পুঃ)। অভ কোন চরিতগ্রন্থে ইহার নাম নাই।
- ১২। **অনুপমবল্লত** (চৈ) আজাণ। জীজীবের পিতা। ইনি রামচজ্ঞের উপাসক ছিলেন বলিয়া বোধ হয় গৌরগণোজেশ দীপিকায় ও বৈঞ্চব-বন্দনায় স্বতন্ত্র-ভাবে ইহার নাম দেওয়া হয় নাই।
  - ১০। **अनुভবानम** ही ১৩%, तम ४२, वृ ४७।
  - ১৪। অভিরাম ( চৈ, নি ) [ খ্রীলাম ] বাগল, খানাকুল, হগলি জেলা।

<sup>(</sup>২) প্ৰকল্পত ও গৌরপ্ৰত্যলিপতে অনন্ত, অনন্ত দাস, অনন্ত আচাৰ্য ও অনন্ত রায় ভণিতায় কতক্থলি প্ৰপৃত হইলাছে। শেৰোজ বাজি ছাড়া অপর তিন্তন্ত জীতৈতক্তের সমসাময়িক সন্দেক্ষা ঘাইতে পারে। কিন্তু উলিখিত ও জন অন্তের মধ্যে কোন্ তিন্তান প্ৰক্ষী তাহা নিশ্ম করা ক্ষিন।

#### [ 50 ]

ত্রী ১৯৯-২০০, দে ৮৩, বু ৭১-৭৪—তিন জনেই বলেন যে অভিরাম দাস "বহুডোলাং" (ত্রী) বা যোলসাঙ্গের কাঠ তুলিয়া তাহাকে বাঁশী করিয়া বাজাইয়াছিলেন।

জ-১৪৪ পৃ: মহাভাবগ্রস্ত হৈলা শ্রীরামদাস। যার ঘরে গৌরাক আছিল। ছয় মাস।

ুকোন সময়ে প্রীচৈত্য অভিবামের বাড়ীতে ছিলেন এমন কথা অৱ কোন জীবনচরিতে বা পদে নাই।

ভা তাধায়ধ্য, জ ৩, লো-সু ২

"অভিরাম লীলামৃত", "অভিরাম পটল," "অভিরাম বন্দন।" প্রভৃতি নাতি প্রামাণিক গ্রন্থে ইহার সহজে অনেক অলোকিক কথা আছে। থানাকুল রুক্ষনগরে গোপীনাথ মৃতি ইহার সেবিত বলিয়া প্রবাদ। অভিরামের মৃতিও এখানে পূজিত হয়। ইহার শক্তি বা পত্নী মালিনীকে "অভিরাম লীলামৃতে" (৩২ পৃঃ) যবনী ও ভক্তি রত্বাকরে (১২৭ পৃঃ) বিপ্রকল্যা বলা হইয়াছে।

২৫। **অমোঘ পণ্ডিভ**—(গ, যতু) দার্কভৌমের জামাতা। ব্যাহ্মণ—নীলাচল।

5 21541282-265

১৬। **অসরপুরী,**—মাধবেজ-শিষ্য

S 08

১৭। আচার্য্যচন্দ্র—নিত্যানন্দ শিষ্য—ব্রাহ্মণ (?)

ৰী ১৯৫- বন্দে আচাধারতঃ চ বিদিতপ্রেম**নর্থক**ং

८म १४─८शीत ८श्चमम् वत्नी श्रीमाठाग्रहकः

রু ৬৭ বন্দিব আচার্যাচন্দ্র, যে জানে প্রেমের ধর্ম, গুণধর্ম জগতে বিদিত।

ভা ৩,৬।৪৭৫ বন্দিব আচার্যাচক্র নিত্যানন্দ-গতি।

১৮। आठार्यात्रञ्ज—वाक्षण—नविष्ठीण

🗐 २०, ८५ २७, वृ २०

চন্দ্রশেপর আচার্যাকে চরিতগ্রন্থে আচার্যারত বলা হইয়াছে, কিন্তু বন্দরায় ভইজনকে পৃথক করা হইয়াছে। যথা

দে— জীচন্দ্রশেধর বন্দো চন্দ্র স্থশীতল। আচার্যারত বন্দো যার খ্যাতি নিরমল।

১৯। **ঈশার পুরী**— (মাধবেজশিষা) [সমর্থ সরপ বিষরণ ঈশবপুরীতে মহং স্থাপন করেন ৬০]

# [ 20 ]

জন্ম কুমার হট্ট (হালি সহর ) জয়ানন্দ মতে রাজগৃহে থাকিতেন।

ত্রী ১২১-২২ অথেখরপুরীং বন্দে যাং কুরা ওজনীখরঃ
আহ্মানং মান্যামাস ধরুং চৈতর্লসংজ্ঞকঃ।

দে ৪৩ গোসাঞি ঈশব পুরী বন্দে। সাবধানে। লোকশিকা দীকা প্রাভু কৈলা যার স্থানে।

বু ৪২ বন্দিব ঈশরপুরী প্রভূ মারে ওক করি আপনাকে ধন্ত হেন বাসি॥

মু ১/১৫/১৬, কা ৪/৫৬, ভা ১/১/১২, জ ২, লো২, চ ১/১০/৫২
পদ্মাবলীর ১৮, ৬২, ৭৫, শ্লোক ঈশ্বরপ্রীর রচনা। শ্রিকফ লীলামুত গ্রন্থ ইনি লেখেন; কিন্তু গ্রন্থানি পাওয়া যায় না। প্রী মার্কত্তেশ্বর সাহীধানার মধ্যে একটি কৃপ আছে—তাহা ঈশ্বরপ্রীর কৃপ নামে পরিচিত।

২০ | जिलान ( চৈ ) নবৰীপ—বিশ্বস্থ নিজের গৃহে ভূতা

থ্রী ১১০ বন্দে ঈশানদাসং শচীদেবীপ্রীতিভালনং চ
দে ৩৭ বন্দিব ঈশানদাস কর্যোড় করি।
শচী ঠাকুরাণী থারে ক্ষেহ কৈল বড়ি।
বু ৩৮ আইর কুপার পাত্র বন্দিব ঈশান মাত্র
আই তাঁরে করিল পালন।

डा शामार न, ह राउदाक्ष

২১। **ঈশানাচার্য্য**—[মৌন মার্কী] ব্রাধান—বুন্দাবন। ইনি জীরপের সহিত বুন্দাবন হইতে মথুবার গোপাল দর্শন করিতে গিয়াছিলেন (চ ২৮১৮।৪৬)।

২২। **উদ্ধব দাস**—(গ্, যত্) [চন্তাবেশ] বৃন্দাবন—কিন্ধ মাঝে মাঝে গৌড়ে যাইতেন (ভক্তিবতাকর ৪৮৫ পু:)।

> যত্নাথ "অতি দীনজনেপূর্ণ প্রেমবিত প্রদায়কং। শ্রীমত্ত্ব দাসাধ্যং বন্দেহং গুণশালিনং।

5 3136184

সতীশচক্র রায় ও মুণালকান্তি ঘোষ পদকর্তা উদ্ধবদাসকে রাধামোহন ঠাকুরের শিক্স বলিয়াছেন। কিন্তু গদাধর-শিক্ষ উদ্ধবও পদকর্তা ছিলেন। নবদীপের সংস্থান বিষয়ে উদ্ধবদাসের যে পদটা আছে তাহা সমসাময়িকের লেখা না হইয়া পারে না। কেন না ঐ পদে কাজী দলনের দিনে বিশ্বস্তর মিত্রের নগর-স্কীর্তনের পথের পুঞ্জান্তপুঞ্জ বিবরণ আছে। যথা—

GENTRAL LIBRARY

# [ 25 ]

পাইয়া আপন ঘাট মাধাই ঘাটে করি নাট নিকটেতে জীবাস ভবন। তাহার ঈশান কোণে বার কোণা ঘাট নামে যাহা হয় শুকাস্বরাশ্রম।

> ( ত্রীযুক্ত হরেকুঞ্চ মুখোপাধ্যায় কর্ত্বক উদ্ধৃত, ভারতবর্ষ, ১০৪১ কার্ত্তিক )

এই পদটা শীযুক্ত বজমোহন দাস বাৰাজী "নবদীপ দৰ্পণ" প্ৰস্থে যে ভাবে উদ্ধৃত করিয়াছেন, তাহার সহিত হরেকুফ বাবুর প্রদৃত পাঠের পার্থকা আছে।

২০। উদ্ধারণ দত্ত—(নি) [ হবাত ] হবর্ণ বণিক,—সপ্তথাম। জনক্ষ মতে শান্তিপুরে জন্ম, অভিবাম মতে হগলির নিকট কৃষ্ণপুর গ্রামে বাস। কাটোরার নিকট উদ্ধারণপুর নামে এক গ্রাম আছে, তথায় প্রতি বংসর ইহার উৎসব হয়।

শ্রী২৭৭—বন্দে উদ্ধারণং দৃত্তং যে। নিত্যানন্দ সঙ্গতঃ।
বন্ধাম সর্কাতীর্থানি পবিত্রান্থাহপপেককঃ ॥
দে ৯৮—উদ্ধারণ দত্ত বন্দো হঞা সাবহিত।
নিত্যানন্দ সঙ্গে বেড়াইল সর্কাতীর্থ।
বু ৮৪—পরম সাদরে বন্দো। দত্ত উদ্ধারণ।
নিত্যানন্দ সঙ্গে তীর্থ যে কৈলা ভ্রমণ।

মু ৪।২২:২২, ভা তাডা৪৭৪, চ তাডাড২, ভক্তিরত্বাকর ৫৩৯ পৃঃ, কাশীরাম দাদের প্রাতা গদাধর দাদ "অগলাথ মঙ্গলে"র চৈতক্ত-বন্দনায় লিখিয়াছেন।

"ভক্ত-উদ্ধারণ দত্ত পরম শাস্থেতে জ্ঞাত

সদা পোবিন্দের গুণগান।" (বঙ্গাহিতা পরিচয় ৮৯৬ পুঃ)

হরিদাস নন্দী ১০০২ সালে "উদ্ধারণ ঠাকুর" নামে এক বইছে ইহার জীবনী লিথিয়াছেন। তাহাতে তিনি বলেন হে উদ্ধারণ নিতাই-গৌরাঙ্গ বিগ্রহ প্রতিষ্ঠা করিয়াছিলেন (১৭ পৃঃ)। তিনি অপ্রকাশিত পদায়ত সমুদ্রের ৩০৪১ সংখ্যক পদ হইতে উদ্ধারণের নিয়লিখিত পরিচয় দিয়াছেন।

শ্রীকরনদান, দত্ত উদ্ধারণ, ভসাবতী গর্ভজাত। ত্রিবেণীতে বাস, নিতাইর দাস, শ্রীগৌরাস্থপদাখ্রিত।

### ২৪। উপেন্দ্র আশ্রম

🕮 २१०, तम ३०३, वू ३००

কর্ণপুর এক গোপেজ আত্মকে উল্লেখ করিয়া তাঁহাকে জয়ভেয় বলিয়া তব নির্ণয় করিয়াছেন।

- ২৫। **উপেন্দ্র মিশ্র** [পর্যায় ] শীর্চতর্যের পিতামহ, রাদ্রণ— শীহ্টু জয়ানন্দ ভুল করিয়া লিথিয়াছেন "পিতামহ জনাদ্দন মিশ্র মহাশয়" (৮৭ পুঃ)। চরিতামুতে উপেল্লের সাত ছেলের নাম কংসারি, প্রমানন্দ, প্রানাভ, সর্কেখর, জগলাথ, জনাদ্দন ও ব্রৈলোকানাথ (১০০৪৪—৫৬)।
- ২৬। কবি কর্ণপূর—(চৈ) শিবানন্দ সেনের পুত্র, প্রকৃত নাম প্রমানন্দ দাস সেন। বৈহু, কাঞ্চনপরী (কাচড়াপাড়া)। ওকর নাম জীনাথ (আনন্দ-বৃন্ধাবন-চম্পু, মম্বাচরণ)। দে ৭৩, কিন্তু ১৭০২ বৃঃ পুথিতে নাই।

স্থাসিক গ্রহকার। রচিত গ্রন্থ—আর্থ্যাশতক, অলহার কৌস্তভ, শ্রীটেততা-চরিতাম্বত মহাকাব্য, শ্রীটেততা চল্লোদ্য নাটক, গৌরগণোদ্দেশদীপিকা, আনন্দ-বৃন্দাবন-চম্পু। শ্রিকপ পদাবলীতে ৩০৫ সংগ্যক শ্লোক কর্ণপূরের কোন অজ্ঞাত গ্রন্থ ইতে উদ্ধৃত করিয়াছেন।

২৭। কবিচন্তা—( চৈ ) [মনোহরা] যতু, বনমালি ও ষ্টাবরের উপাধি কবিচন্দ্র। কিন্তু এই কবিচন্দ্র বোধ হয় স্বতন্ত্র নাম। কেন না জীজীব (২৫২) তথু কবিচন্দ্রকে বন্দনা করিয়াছেন।

দে ১২২ কবিচন্দ্র বালক রামনাথ

র ১১৬ বন্দিব বালক রামদাস কবিচন্দ্র

চরিতামুতে—রামদাস কবিচন্দ্র শ্রীগোপালদাস (১৷১০৷১১১)। এক কবিচন্দ্র-কত ভাগবতামুতে গ্রন্থ আছে।

- ২৮। কবি দত্ত (গ) [কলকটা] কুলিয়া পাহাড়পুর (অভি) গৌড়ীয় মঠ সংস্করণ চরিতামত চৈতভশাখায় এক কবিদত্তের নাম আছে (১)১-১১১৬)। অভ কোন সংস্করণে নাই।
  - ২০। কবিরক্র (অইনিধির একজন) রামগোপাল দাসের "শাখানির্ণয়ে"— ঠাকুরের শাখা এক মিশ্র কবিরত। শীকুফসেবায় তার অতিশয় যত্ত্ব। এড়ুয়ার গ্রামেতে হয় তাহার বসতি। শিক্ত প্রশিক্ত অনেক আছমে থেয়াতি॥ (৬ পঃ)

হতরাং ইনি আহ্মণ, ও বৈছ নরহরি সরকারের শিষ্য বলিয়া জানা যাইতেছে। প্যাবশীর ৪০, ৪১, ৭৭, ৭৮ শ্লোক ইহার রচিত হওয়া সম্ভব।

৩ । কবিরাজ মিশ্র ভাগবভাচার্য্য

वि २५१, ८४ ५०२, व २०

৩)। কমল ( চৈ ) [ গদোঝাদা ] গণোদেশের কমল ও চরিতামুতের কমল-



# [ 20 ]

नयम अकहे वाक्तित नाम हहेटल शादत, अथवा कमन नयम माटन कमन छ नयम नाटम छुटे वाक्ति।

#### २२। कमलाकत मान

র ৮৮—তবে বন্দো ঠাকুর কমলাকর দাস। কৃষ্ণসংকীর্ত্তনে যার পরম উল্লাস।

তিও। কমলাকর পিথলোরী (নি) [মহাবল], ব্রাজণ, শ্রীরামপুরের ছই মাইল দকিণে আকনা মাহেশে জন্ম, জাগেখরে স্থিতি।

শী ২০৯-২০—পিপ্রিলায়িং ততো বন্দে বালাভাবেন বিহবলং
বন্দে সংকীর্ত্তনানন্দং কমলাকরদাসকং ॥
দে ৯৬—কমলাকর পিপিলাই বন্দো ভাববিলাসী।
যে প্রভুরে বলিল লহ বেত্র দেহ বাশী॥
ব ৮৭—পিপিলাই ঠাকুর বন্দো বালাভাবে ভোলা।
বালকের প্রায় যার সব লীলাপেলা॥

"পিঞ্চলাদ্" বা "পিঞ্চলায়ী" ব্রাহ্মণগণের এক হপ্রেসিক্ষ শাখা, কিন্তু কালনা সংস্করণ চরিতামৃতের দীকায় আছে "একদা শ্রবণ সময়ে নয়নে পিঞ্চলীচূর্ণ প্রদান করত অঞ্চ নিঃসরণ করায় মহাপ্রভূ ইহার নাম পিঞ্চলাই রাখিলেন। সেই হইতে ইহাকে কমলাকর পিঞ্চলাই বলে।" রাধাগোরিন্দ নাগও (১৷১০৷২১) অঞ্জপ ব্যাধ্যা করিয়াছেন। পিঞ্চলাই উপাধিধারী লোক সে মুগে বাংলা দেশে আরও অনেকে ছিলেন। ১৪১৭ শকে অর্থাৎ শ্রীচৈতক্তের ১০ বংসর ব্যুসের সময় বিপ্রদাস পিঞ্চলাই "মনসামৃত্বল" লেখেন। তিনিও কি চোধে পিপুল দিয়া কাদিতেন ?

প্রবাদ ধ্রবানন্দ ব্রন্ধচারী জগলাথমৃত্তি স্থাপন করিল। কমলাকরকে সেবার ভার অর্পন করেন। ঐ জগলাথের রথযাত্রা উৎসব এখন মাহেশের রখ নামে স্থাসিক।

৩৪। ক্**মলাকান্ত** ( হৈ ১১৭ ) নবদীপ ভা ১)৬।৫৬

শীম্বারি ওপ্ত, শীক্মলাকান্ত নাম।
কুফানন্দ আদি যত গোলীর প্রধান।
সভারে চালায় প্রভু কাঁকি জিজাসিয়া।
শিশুজানে কেই কিছু না বোলে হাসিয়া।

# 28 ]

৩৫। ক্ষ**লাকান্ত পণ্ডিভ**—যত্নাথ মতে গদাধর-শিক্স—আব্দান স্থগ্রাম ভা ৩।৬।৪৭৪— পণ্ডিভ ক্মলাকান্ত পর্ম উদ্দাম। বাহারে দিলেন নিজ্ঞানন্দ সপ্রগ্রাম।

৩৬) কমলাকান্ত বিশ্বাস (খ)

চরিতামতের ১০২২২৬—৫২তে ইহার সধকে অতার কৌত্হলোকীপক কাহিনী আছে। ইনি প্রতাপক্তকে এক পরে লিখিয়াছিলেন যে অবৈত ঈখর

কিন্তু তার দৈবে কিছু হইয়াছে ঋণ।
ঋণ শোধিবারে চাহে তছা শত তিন।
শীঠেতের এই পত্রের কথা শুনিয়া বুলিয়াছিলেন
প্রতিগ্রহ না করিয়ে কতু রাজধন।
বিষয়ীর অগ্ন খাইলে ছুই হয় মন।

দেখা যাইভেছে যে সপ্রদায়গঠনের আদি ফুগেও বড় লোকের কাছে টাকা আলায় করিবার কন্দী কোন কোন শিধোর মাধায় আদিয়াছিল।

তা। কমলানক (চৈ ১৪৭) নবদীপ—গৌড়ে জীচৈতলের প্রভৃতা। কর্পপ্রের মহাকাব্যে (১৩১২১) ও নাটকে (৮।৩০) দেখা যায় যে এক কমলানন্দ পচীকে দেখিতে নবদীপে আসিয়াছিলেন।

৬৮। কমলাবভী [বরীয়দী] প্রীচেতক্তের পিতামহী-ব্রাশ্বণী প্রীহট্ট।

৩৯। কলানিধি ( চৈ ) রামানন্দ রায়ের প্রাত। উড়িয়া, করণ।

দে ৬৬, কিন্তু ১৭=২ খু: পুথিতে নাই।

8 · । কানাই খুঁটিয়া—উড়িয়া

ত্রী ২২৭-২৮ কানাই খুঁটিয়াং বন্দে রুফ্তেমরসাকরং
মক্ত প্রত্তী জগলাগবলরামর্ভী ভভৌ।

পে ১=> কানাই খুঁটিছা বন্দোঁ বিশ্ব প্রচার।
জগরাথ বলরাম ভুই পুত্র গার।

র ২২-১০০ কানাই থুঁটিয়া বন্দো প্রেম রসধার।
প্রকৃতি সভাব ভাব যেন গোপিকার।
যার পুত্র জগলাথ দাস বলরাম।
ভার মহতের কিবা কৃতিব অন্থপাম।

ইনি 'মহাপ্রকাশ' নামে এক বই লিখিয়াছিলেন।

काच् ठीक्त (नि) देवमा, त्वाधथाना, शमकर्छ।।

# f sa 1

কাছদাদের একটি পদে আছে—কাছরাম দাস বলে কি বলিব আমি।

এ বড় ভরসা মোর কুলের ঠাকুর তুমি।

( গৌঃ, প, ড, ২৮৫ পুঃ )

অক ভুইটা পদে যথাক্রমে "রামরায় দেও প্রচরণ" ( পু: ৩০১ )

ভিজি সদা রামের চরণ (ঐপু: ৩০২) আছে দেখিবা মনে হয় প্রকর্তা কাছদাস রামানন্দ রায়ের অভুগত ছিলেন।

- ৪২। কা**নুপণ্ডিড** (অ) ব্রাপ্তণ
- ৪০। কামদেব চৈতল্যদাস (অ) রাজণ গছনহ কামদেব নামক এক পদক্রীর একটি পদ পদক্ষতকতে আছে।
  - ৪৪। কামাভট্ট (১৮) নীলাচল—নাম দেখিব। মনে হব ইনি মহারাষ্ট্র দেশীব।
- ৪৫। কালিদাস [পুলিন্দতন্য। মন্ত্রী] কারস্থ, সপ্তথাম। চরিতামুতে (৩০১৬) আছে যে রঘুনাথ দান গোপামীর জাতি থুড়ো কালিদাস ভূমিমালি জাতীয় ঝড়ুঠাকুরের চোষা আমের আঁটি বৈফবোজিট বলিয়া গাইয়াছিলেন। সেই জরুই কর্ণপুর তাঁহাকে পুলিন্দতন্যা বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন।
  - ৪৬ ৷ কালিনাথ বেলচারী—মহুনাগমতে গদাধর শাখা
- ৪৭। কাশীনাথ শ্বিজ [কুলক] বিফুপ্রিয়ার বিবাহের ঘটক—আহ্মণ—
  নববীপ।

ची ১১৯, दम **८२, वु ८**১

मू ১।১०।२, का ७।১२१, छ। ১।১०।১১०, छ २२, त्ला ४१

৪৮। কাশীনাথ মাহাতী [ সনকাদি ] উড়িয়া, করণ, তমলুক

बी २०४, ८९ ३३७, व ३०१

৪৯। কাশীপুরায়ণ্য জ ৮৮—শ্রীচৈতত্ত্বের সন্ন্যাস লওয়ার সময় কাটোয়ায় উপস্থিত ছিলেন।

কাশীমিশ্রা ( হৈ) [ সৈরিদ্বা ] রাম্বন, পুরী, জয়রুক্ষ বলেন—
কাশীনাথ মিশ্র মধুপণ্ডিত হো আর।
তুলদী মিশ্র হো তমলুকে প্রচার।

এ ১৬৩—৪ বন্দে কাশী মিপ্রবরম্ংকলয় স্থানির্দাল 
নক্ষাপ্রমে গোরহরিয়াসীয়ক্তিপ্রিক:

দে ৬৫, বৃ ৫৭ মু ০া১০া১, কা ১০া৬৫, না ৮া১, ভা ১া১া১১, জ ৪৭ লো, শেষ ১১১, চ ২া১া১২০

# [ 25 ]

- ৫১। কাশীনাথ রুদ্রে (১৮১৪) রাজণ, চাতরা (ত্রীরামপুরের নিকট) ইহার আতৃবংশ বিভ্যান। চাতরায় মহাপ্রভুর মৃতি দেবিত হন। কেহ কেহ কাশীনাথ ও কল্ল ছই নাম বলেন।
- ং । কাশীখর গোস্বামী (চৈ ১০৬) [শশিরেখা] রন্ধচারী—ঈশরপ্রীর শিষা। জয়ক্ষ দাস মতে ভাবিড় দেশে ভাত, বৃন্দাবনে বাস। ইনি গৌর-গোবিন্দ মৃত্তি প্রতিষ্ঠা করেন (ভক্তিবত্বাকর পৃঃ ১১—১২)।

बी ३६१, इस ६२, वृ ६४

সনাতন গোস্বামী বৃহৎ বৈক্ষবতোষিণীর মঞ্চাচরণে লিখিয়াছেন বৃন্ধাবন প্রিয়ান্ বন্দে শ্রীগোবিন্দপদাশ্রিতান্ শ্রীমৎ কাশীবরং বন্দে শ্রীকৃষ্ণ দাসকম্॥

হরিভক্তি বিলাদের মঞ্চলাচরণে ইহার নাম আছে। ভক্তি রত্বাকর-কাশীখর গোসাঞির শিধ্য মহা আঘা।

গোবিন্দ গোসাঞি আর শ্রীবাদবাচার্ঘ।" (পৃ: ১০২১)

কাশীশ্বর [ভূপার ] প্রভর প্রর ভূতা (গৌ, গ, দী)

খ্রী ১১৩, দে ৩৮, বু ৩৮-- গরুড় কাশীখর

নবছীপ লীলার স্থীর্তনাদিতে ও গৌড় হইতে পুরীর যাত্রীদের মধ্যে যাহার নাম পাওয়া যায় তিনি এই কাশীখর।

যু ৪।১।৪, কা ১৬।৩৩, না ৮।৩৩, ভা ২।৮।২০৯ ৫৪। কাশীখর মিশ্র—ত্রাগণ, ফুলিয়া,

- ং। কুমুদাননদ পণ্ডিত [গদ্ধর গোপ] যত্নাথ মতে গদাধর শাথা, আদ্ধা—
  চট্টগ্রাম—শাইহাট (বর্জমান)। কথিত আছে ইনি রসিকরাজ বিগ্রহ স্থাপন
  করেন। ঐ মূর্ভি এখনও শাইহাটে পুজিত হন।
- ৫৬। কুর্মা—রাম্বণ—দাব্দিণাতা ভ্রমণকালে শ্রীচৈত্ত ইহাকে রূপা করিয়া-ছিলেন। চ হাণা১১৮—১৩হ।

কৃষ্ণদাস — শ্রীজীব ও দেবকীনন্দন ছয় জন, বৃন্দাবন দাস পাঁচ জন কৃষ্ণ দাসের নাম করিয়াছেন। চ্রিতামুতে চৈত্ত শাখায়-২, অছৈত শাখায় ১ + কৃষ্ণ-মিশ্র, গদাধর শাখায় ১, নিত্যানন্দ শাখায় ৫ - ১ - কৃষ্ণদাস। চরিতামুতে নিত্যানন্দের পালিত শিশু কৃষ্ণদাসের নাম নাই। বৈষ্ণব-বন্দনায় যে ছয় জনের নাম আছে তাঁহারা প্রত্যেকেই নিত্যানন্দের শাখাভুক্ত। তাহা হইলে এগার জন কৃষ্ণদাসের নাম পাওয়া গেল। ইহা ছাছা নাটকে জগরাথের স্থাবিত্রধারী কৃষ্ণ-

# CENTRAL LIBRARY

# [ 29 ]

দাসের কথা আছে। ঐতিত্তভাগবতে (৩।১।৯৯১) শ্রীধরের বিশেষণ "অকিঞ্ন কৃষ্ণদাস চলিলা শ্রীধর"। চৈত্তভাগবতে শিশু কৃষ্ণদাসের নাম আছে। উল্লিখিত বার জন কৃষ্ণদাসের মধ্যে গৌ, গ, দী কালা কৃষ্ণদাস, অহৈত শাখার কৃষ্ণদাস ব্রহ্মচারী, অহৈতপুত্র কৃষ্ণদাস, ও অপর একজন কৃষ্ণদাসের কথা বলিয়াছেন। সেই কৃষ্ণদাসের তথ্ হইতেছে রত্তরেখা—হতরাং তিনি নিত্যানন্দ-শাখাভুক্ত না হইয়া শ্রীচৈত্ত শাখাভুক্ত হওয়া অধিক সন্তব। শ্রীচৈত্ত্ব-শাখাভুক্ত বান্ধণ কৃষ্ণ-দাস বিজ্ঞিত হইয়াছিলেন, সেই জন্ম রত্তরেখা বৈহ্য-কৃষ্ণদাসের তথ্।

৫৭। কুষ্ণদাস (নি ৩৩) আহ্নণ, আকাইহাট (কাটোয়া হইতে দেড় মাইলের মধ্যে)

ত্রী ১৯২-ত্রীকুষদাসং হরিপাদজাশং শাস্তং রূপালুং ভগবজনপ্রিয়ং।

দে ৭৯—আকাই হাটের বন্দ্যো কুঞ্চাদ ঠাকুর

व ७७—ठोक्त जिङ्गकाम याकाहे हार्टिए वाम ।

শাস্ত পরম অকিঞ্চন,

ভা ৩।৭।৪৭৪— রাড়ে জন্ম মহাশয় বিপ্রাকৃষ্ণদাস নিত্যানন্দ পারিষদে যাহার বিলাস ॥

রামগোপাল দাস "শাখা বর্ণনে" ইহাকে রঘুনন্দনের শাখা বলিয়াছেন—হথা, আকাই হাটে ছিলা কৃষ্ণদাস ঠাকুর বাড়ীতে বসিয়া পাইলা প্রভুর নুপুর॥

শ্রীযুক্ত অম্লা ভট্টরায় ইহাকেই কালা ক্ষণদাস বলিয়াছেন। কিছ চরিতামুতে ১০১১৩০ ও ১০১১৩৪শে উল্লিখিত তুই ক্ষণদাস বিভিন্ন ব্যক্তি।

৫৮। কুফ্রদাস (নি ৩৪) [লবক] কালিয়া রক্ষদাস—বোধ হয় খুব কাল
 ছিলেন। ইনি প্রায়শঃ উলক হইয়া পড়িতেন।

জমকুঞ-মামদাবাদে জন্মিলেন কালিয়া কুঞ্দাস।

পাবনা জেলার সোনাত্রায় শ্রীপাট কালা ক্রফদাস বংশীয় বিভাগ গোবিদ্দ গোস্বামীর প্রবন্ধ "বিফুপ্রিয়া গৌরাদ্ব" পত্রিকা ০১১১০ পৃঃ।

🗐 ২১২--- "কালিয়া কৃষ্ণদাসম্থে। বলে প্রেটেয়ব বিহবলং"

দে ৯৫ কালিয়া কৃষ্ণদাস বন্দোঁ বড় ভক্তি করি।
দিবা উপবীত বস্ত কৃষ্ণতেজাধারী।

বু ৯০- উন্নাদি বিনোদী বন্দে। কালা রুফানাস। প্রেমেতে বিভোল সদা না সম্বরে বাস।

ভা তাৰাঃগঃ, জ ১৪৪—"হাহার মন্দিরে নিত্যানন্দের বিলাস"

# [ 44 ]

ত্ব ক্ষেত্ৰ ক্ষান্ত (নি ১২)

ত্বী ২৪৮— কৃষ্ণনাম ততো বন্দে স্থাদাম চ পণ্ডিত:।

দে ১৩৫— গৌরীদাম পণ্ডিতের অহজ কৃষ্ণ দাম

৬-। কৃষ্ণদাস (নি ১৪) প্রাজণ—বিহার—বড়গাছি

ত্বী ২৫২—৬৫ ঠকুরং কৃষ্ণদাম চ নিত্যানন্দ পরায়ণ:

থোহরক্ষং স্বগৃহে নিত্যানন্দদেবং হি ভক্তিত:

গৌরীদাসত্ত গ্রা গৃহীজোত্বা নিজং প্রভুং।

স্মানয়ন্ততোহন্ত: ক্ষেত্রত: স্প্যাহিত:।

ত্বীকৃষ্ণদাস প্রোহাহি মহিমা কেন বর্গাতে।

থো নিত্যানন্দবিরহাং স্থ্যমাসাংক বাতৃল:।

পুন: সন্দর্শনং দত্বা তেনৈব স্কৃষ্ণরীকৃত:।

ক্যোনন্দে নিত্যানন্দে গাহার বিশ্বাস।

প্রান্দেশ নিত্যানন্দে গাহার বিশ্বাস।

#### 可 255--25日

বন্ধিব বেহারি রুঞ্চাস মহামতি। বড়গান্তি গ্রামেতে হাঁহার অবস্থিতি।

যে জন পিরীতি ফান্দে নিতাই চান্দেরে। বন্দী করি রাখিয়াছিলেন নিজ ঘরে।
পণ্ডিত ঠাকুর গিয়া বুকে দিয়া তালি। কোঁচে ধরি লৈয়া গেল মোর প্রভূ বলি।
নিত্যানন্দ বিরহে ঠাকুর রুঞ্চাস। পাগলের প্রায় গোডাইলা সাত মাস।
পুনরপি নিত্যানন্দ তার ঘরে গেলা। নিত্যানন্দ দরশন পাই সাম্য হৈলা।

৬১। কৃষ্ণদাস—শিশু কৃষ্ণদাস— নিত্যানন্দ কর্ত্ব পালিত—জয়কৃষ্ণ মতে উড়িয়া

শ্রী ২৭৫—৭৬—শিশু কৃষ্ণদাসস্ক্রং শ্রীনিভ্যানন্দপালিভং। বন্দে স্থময়ং পুণ্যং পবিরং যং কলেবরং॥

দে ১০০— বন্দনা করিব শিশু রুঞ্দাস নাম।
প্রভুর পালনে গার দিব্য তেজোধাম।

র ১৩২ — শিশু রুফ্লাস বন্দো গোপশিশু যহ । নিত্যানন্দ স্বহন্তে পালিলা যার তহ ।

৬২। কৃষ্ণদাস (নি ৪০) দেবানন্দ পণ্ডিতের ভাতা, রাহ্মণ—কুলিয়া। শ্রী ২৮০, দে ১১৯, র ১০৫

ভা তাগাওগত। ইনিই সম্বতঃ নিত্যানদোর সঙ্গে পুরী হইতে গৌড়ে আসিয়াছিলেন।

# CENTRAL LIBRARY

# [ 52 ]

- ४०। **क्रमाम** ( रेठ ১+१ ) [ तप्रदर्श ] रेवश
- ৬৪। রুফ্দাস (চৈ ১৪০) কর্ণপূর ও কবিরাজ গোস্বামীর মতে ঐতিভয়ের দাকিণাতা অমণের সঙ্গী।
- ৬৫। কুঞ্চদাস (অ১৬) [কার্ডিকেয়] অধৈতের বিতীয় পুত্র, রাজণ, শান্তিপুর।
  - .৬৬। কুফাদাস (গচত, মছ) [ইন্লেখা] বুনাবন

ভক্তিরত্বাকর (পৃ: ১০২১) জীমদনগোপাল দেবাধিকারী। সদাধরশিক্স কৃষ্ণ দাস বন্ধচারী। ইনি কাশীশ্বর গোপামীর প্রিয় ছিলেন।

- ৬৭। কুফাদাস (অ৬০)
- ७৮। कुरामान-डेफिया डाञ्चन, अन्नाथ विश्वद्द यर्न विद्यमाती। ना नारा
- ৬৯। কুঞ্**দাস হোড়**—রাপ্তণ, বড়গাছি—চরিতামতে আছে যে ইনি রমুনাথপ্রদত্ত চিড়ামহোৎসবে উপস্থিত ছিলেন।
- ৭০। কৃষ্ণদাস রাজপুত— চৈতর শাখার ইহার নাম নাই। তবে ম্বারি (৪।২।১১) ও কবিরাজ গোসামী ইহার কথা ২।১৮তে বলিয়াছেন। ইনি আঁচৈতরকে বুন্দাবন দেখাইয়াছিলেন।
- ৭১। কৃষ্ণদাস গুঞ্জামালী—লাহোরে বাড়ী, বাংলা ভক্তমাল মতে ইনি পাঞ্জাব, মূলতান, স্থরাট, গুজরাত প্রভৃতি স্থানে প্রিচৈতয়ের ধর্ম প্রচার করেন।
  - 12। কুষ্ণানন্দ ( ৈচ ) [ কলাবতী ] উড়িয়া

🖹 ১১৪, দে ৩৯, বৃ ৩৯

৭৩। কৃষ্ণানন্দ (নি) রাধ্বন্দনবদীপ। চৈত্যভাগবত (২০০০ ১)
মতে ইনি রত্বগর্ভ আচার্য্যের পুত্র ও যত্ কবিচন্দ্রের আতা। কেহ কেই ইহাকে
তত্মসার-প্রণেতা কৃষ্ণানন্দ আগমবাগীশ মনে করেন (নগেজনাথ বহু—বারেক্র
রাধ্বন বিবরণ, ১৫৭ পু:)। কিন্তু নগেজবাব্র উক্ত গ্রন্থের ১৬১ পুটার প্রনত্ত
বংশলতার দেখা বায় যে কৃষ্ণান্দ আগমবাগীশের পিতার নাম মহেশ বা মহেশর।
উক্ত বংশলতার আরও পাওয়া বায় যে "প্রাণতোহণী" তত্ম প্রণেতা রামতোহণ
বিভালদার কৃষ্ণানন্দ হইতে স্প্রম অধ্তন পুরুষ। রামতোহণের পুত্র রামর্মণ
১০০৪ সালে বাচিয়া ছিলেন। আট পুরুষে সাড়ে চারিশত বংসর কিছুতেই হয় না।

18। কৃষ্ণানন্দ পুরী ( মাধবেল শিছা ) [ দিকি ]

बी ১৩०, तम द॰

10। কেশব ছত্তী খাঁ—কায়ত্ব - গৌড

না ৯০১৬ কেশব বস্থ, ভা অভাগ্ৰহণ, চ ২০১১৭১

# [ 00 ]

. প্রাবলীর ১৫০ সংথাক প্লোক ইছার লেখা। ভক্তিরত্বাকর (পু: ৪৫) মতে ইনি রামকেনীতে প্রভুর চরণ দর্শন করিয়াছিলেন।

৭৬। কেশব পুরী (মাধবেন্দ্র শিয়া) [ সিন্ধি ] জী ১৩৫, দে ৫২, র ৪৬

৭৭। কেশব ভারতী (মাধবের শিয়) [সান্দীপনি ]
 দেহছে (বর্জমান জেলা) জয়।

বী ১২৩—৪ বীকেশব ভারতীং বৈ সন্নাসিগণপৃঞ্জিতাং বন্দে যদাকতঃ ক্রাসীক্সবর্গণ মহাপ্রভঃ।

দে ৪৪ কেশবভারতী বন্দো সান্দীপনীমূনি। প্রভূ থাবে নিজ গুরু করিলা আপনি।

বৃ ৪২ কেশব ভারতী প্রতি বন্দো নম হইয়া অতি যে করিল প্রভুকে সন্নাসী।

মুহাচদাণ, কা চচারর, নাভাহত, ভা হাহভাতভত জ হ, লো মধ্য ৪৭, চ চাচতারহা

চুঁচুড়ার রক্ষচারিগণ ও "নদীয়ার কলাবাড়ী, গোপালপুর ও মুর্নিদাবাদে, বাগপুরের সীমলায়ীগণ, মেদিনীপুরের ভট্টাচার্যগণ, গুপ্তিপাড়ার ভট্টাচার্যগণ, মাম-যোয়ানির ও কৃষ্ণনগরের সরকার গোটা কেশব ভারতীর বংশীয় সন্থান বলিয়া পরিচয় দেন" (অমূলা ভট্ট—বৈঞ্ব অভিধান, পৃ: ১০)

৭৮। কংসারি সেন (নি) [রতাবলী] বৈছ, কাঁচিমালি বা ওপ্তিপাড়া। জী ২৫০, দে ১২০, র ১১৭।

শুন্লা ভট্ট বলেন যে ইহার পুত্র সদাশিব কবিরাজ। কিন্তু ইহার প্রমাণ তিনি দেন নাই, আমিও কোথাও পাই নাই।

৭৯। ক্রমক পুরী জং

৮০। **গঙ্গা** [ গঙ্গা ] নিত্যানন্দ ক্যা—গ্রাহ্গী—ছিরাট,

শী ৫৫-৯০— নিত্যানন্দপ্রভুগ্নতাং রাধারুক্ষ জ্বাব্রিকাং।
মাধবাচার্য্য-বনিতাং সন্তিদানন্দর্রপিনীং।
শীপ্রেমমন্ত্রীমুখ্যাং জগ্নতাং মাতরং বরাং।
বন্দে গলাং প্রেমদানীং ভূবনত্রমপাবনীং।
শা গলা জাহ্নবীশিল্পা সহেশৈরপি পাবনৈং।
বিরিঞ্জোপস্থতাহান্ত পুনাতি ভূবনত্রয়ং।



# [ 05 ]

দেবকীনন্দন স্বত্যভাবে গলাকে বন্দনা করেন নাই। তাহার বৈষ্ণব-বন্দনার একেবারে শেষে গলার স্বামী মাধ্বাচার্য্যের নাম করিয়াছেন। "যথা,

> পরম আনন্দে বন্দো আচার্য্য মাধব। ভক্তি ফলে হৈলা গঙ্গাদেবীর বয়ভ।

গন্ধ। কে তাহাও এথানে বলা হইল না। কুঞ্চাদ কবিরাজ বীরভজের নাম করিয়াছেন, অথচ গন্ধার নাম করেন নাই। গন্ধাবংশ ও নিত্যানন বংশের মধ্যে আজও<sup>®</sup>যে বিবাদ দেখা যায় তাহার ক্রপাত কি চরিতাম্বত লেখার সময় হইতে গ

বু ১৮— রাধারক স্তবরূপ আছিল ব্রন্ধার কুপ তিনলোকে স্থিতি অগন্মাতা। স্তব্রন্ধ ভগবান গলাদেবী তার নাম বন্দো সেই নিত্যানন্দস্থতা।

৮১। **शङ्गामाস**—डाक्रग—अनामि निवासी

ই ২৬৭—অনাদিগদাদাসং চ পণ্ডিতং হি বিলাসিনং

(म ১২৯, द ১২৮—পণ্ডিত গলাদাস বন্দো অনাদিনিবাদী

৮২। গ্রাহ্মাস পণ্ডিত ( চৈ ) [ বশিষ্ঠ ] আম্বণ, নব্দীপ

এ ১০১—নবদীপকৃতবাসং গলাদাসং গুরুং পরং

CF 00, 3 08

ম্ ১ ৯০১, কা ৩০, ভা ১ ৯৮৫৫, জ ১৮ কর্ণপুর মহাকাব্যে লিখিয়াছেন যে বিশ্বস্থ বিষ্ণু ও অ্দর্শনের নিকট পড়িয়া "ততশ্চ বৈয়াকরণাৎ গশাদাসাদভ্ৎ প্রত্যন্ত্তবিছঃ।"

মুরারি বলেন যে বিশ্বস্থর "লৌকিক সংক্রিয়াবিধি" পড়াইতেন। কিছ গলাদাস যদি কেবলমাত্র বৈয়াকরণ হন, তাহা হইলে বিশ্বস্থর স্থতি পড়িলেন কাহার নিকট ? জয়ানক ইহার উত্তর দিয়াছেন—

নবদ্বীপের ভিতর পণ্ডিত গঙ্গাদাস। তাহার মন্দিরে কৈল বিভার প্রকাশ।
চন্দ্র সারস্বত নব কাবা নাটকে। স্বৃতি তর্ক সাহিত্য পড়িল একে একে।
(জয়ানন্দ ১৮ পৃঃ)

৮৩। **গঙ্গাদাস** (নি) [ হ্ৰ্বাসা] নন্দন আচাৰ্য্যের ভাতা, ব্ৰাহ্মণ, নবছীপ। জী ১১৩, দে ৩৯, বৃ ৩৯

ইহারই কথা কর্ণপূর নাটকে (৩)১৫) বলিয়াছেন "গঙ্গাদাসনামা ভাগবতঃ পরমাধ্যে ভূস্থরবরে। হারপাল্ছেন ক্রয়োজি"। গুরু গঙ্গাদাসকে বিশ্বর অভিনয়ের

# GENTRAL LIBRARY

# [ 02 ]

দিন নিশ্চয়ই ছারপালতে নিয়োগ করেন নাই। বৃন্দাবন দাস সম্ভবতঃ ইহার সম্বন্ধেই বলিয়াছেন যে প্রাভূ "কবে যায় গ্রালাস ম্বারির ঘরে" (২৮৮২-৬)। ইনিই বিশ্বস্তরের কীর্ত্তন-দলে ছিলেন (ভা ২৮৮২-১)।

# bs। शकामात्र निर्द्धाम ( रेंड ) नीलाइल

জ্যানন্দ কাটা গ্লাদাস ও ভগাই গ্লাদাস নামে ছই ভজের নাম উল্লেখ করিয়াছেন। নিমাই খেলার ছলে এক কুকুরের নাম গ্লাদাস রাধিষ্টুছিলেন (জ্যানন্দ পু: ২১)।

৮৫। গজামন্ত্রী ( গ ) ইহারই উপাধি হয়তো মাম্ঠাকুর ছিল (চ ১।১২।৭৯)। কোন কোন পুথিতে পাঠ গলামুত্রি। যত্নাথ গলামন্ত্রীকে মাম্ঠাকুর হইতে স্বতম ব্যক্তি বলিয়াছেন।

# bb। श्रामाधन माम ( देह, नि ) [ हल्कालि, श्रामिका ]

এড়িয়াদহ। কালনা সংশ্বরণ চরিতামুতের টীকায় কায়স্থ বলা হইয়াছে। কিন্তু এড়িয়াদহে শুনিলাম ইহার বংশধরেরা আগ্রণ।

- প্রী ১৭৫-৬—বন্দে গদাধর দাসং বৃধভাত্ত্তামিত। শীক্ষেনাভিন্নদেহাং মহাভাবস্ত্রপিকাং॥
- দে শ০— সম্প্রে বন্দিব আর গদাধর দাস।

  বন্দাবনে অতিশয় যাহার প্রকাশ।
- রু ৬০ রুখভাতুস্থতা নেই। গদাধর দাস তেই। এবে নাম করিল প্রকাশ। গৌরাস্থ্যল দেহ সন্দ না করিছ কেই

এইরূপ গ্লাধর দাস।

ভা তাং। ৪৫৯ — শ্রীবাল গোপাল মৃত্তি তান দেবালয়। আছেন পরম লাবণার সমৃত্য ॥

আমি এড়িয়াৰহে হাইয়া ঐ বালগোপাল মৃতি দর্শন করিয়াছি। ঐ বিগ্রহ এখন ভাগ অবস্থায় পড়িয়া আছেন—পূজা পান না।

ना ३०११, का शाराइड२, ला ३

৮৭। **গদাধর পণ্ডিত** (চৈ) [রাধা ও ললিতা] পিতার নাম মাধব মিশ্র, বাহ্মণ। জয়কুক মতে ইহার আদি নিবাস শ্রীহট্টে, কিন্তু প্রেমবিলাসের ২৪ বিঃ মতে চট্টগ্রামে। পরে ইহার পিতা নব্দীপে বাস করিয়াছিলেন।



### [ 00 ]

ত্রী ৩২-৩৪—দেবং গদাধরং যো হি শ্বিতীয়কায়মীশিতৃং
স চ বিভানিধেং শিক্তা প্রস্তু ভক্তি-রদাকর ।
সোহসৌ গদাধরো ধীরং সর্বভক্তজনপ্রিয়:

দে ৯, বু ১২ তবে বন্দোঁ। দেব গদাধর মতেক বৈক্ষবচয় তত প্রিয় কেছ নয

ষিতীয় চৈতক্ত কলেবর।

মু ২০০১ -, কা ৫০১২৮, না ১০৯, ভা ১০০১০, জ ২, লো ২
৮৮। গদাধর ভট্ট [রঙ্গদেবী] হিন্দী ভক্তমাল মতে হিন্দীভাষার কবি।
গোপাল ভট্টের শিশ্ব। শ্রীজীবের রুপা পাইয়া বুন্দাবনে বাদ করেন (ভক্তমাল
(৭৯৩-৮০০ পঃ)

৮**৯। গরুড়** [ কুম্ন ১১৬ ] গৌড়ে জাত।

গরুড় অবধুত [ জয়লেয় ১০১ ]

ত্রী ১৩১—বন্দে গরুড়াবধৃতংক্ষৃতপ্রেমশালিনং

८म ८४, वृ ८१-वटना शक्छ व्यवश्रु

যার প্রেম অদভূত চমংকার দেখিতে শুনিতে।

स १०

৯১। **গরুড় পণ্ডিত** (চৈ) [ গরুড় ১১৭ ] ব্রাহ্মণ—আকনা—নবৰীপ জয়রুফ্য—আকনায় গরুড় আচার্যা সভে কহে। কাশীখর ব্যক্ষের পণ্ডিত হো তাহে॥

म् ४।১१।১১, छा ১।२।১৮, नवबीत्भ वाकी।

৯২। গুণনিধি [নিধি]

২৩। গোকুল দাস (নি) ঘোড়াঘাটে পাট

৯৪। **গোপাল** (নি ৪৭)

৯৫। রোপাল (অ) অহৈত পুর—আগণ—শান্তিপুর না ১০।৪৯-৫১, চ২।১১।৭৭-১৪৬

৯৬। গোপাল আচার্য্য ( है )

২৭। **রোপাল গুরু—**উড়িয়া

দেবকীনন্দনের বৃহৎ বৈঞ্চব-বন্দনার ১৭১৯ শকের অন্থলিপির পুথিতে আছে
পরম সানন্দে বন্দে। প্রীগুরুগোপাল।
দীক্ষাশিকা পথে যেহ পরমদ্যাল।

# [ 08 ]

আপনে চৈত্ত যারে বড় রূপা কৈল। টীকা দিয়া নিজহত্তে অধিকারী কৈল।

२७। दशाशान माम ( देह ) [ शानी दशानी ]

>>। **গোপাল দাস**—যহুনাথ মতে গদাধর শাথা। ভব্তিবভাকর, পৃঃ ১-২১।

>==। গোপাল দাস ঠাকুর—নবছরি-শিঞ

রামগোপাল দাস লিখিয়াছেন-

ঠাকুরের শাখ। তি হ এত আকুমার। শিশ্ব প্রশিক্ষ যার ভ্বন বিস্তার। (শাখা-নির্ণয়, পৃ: ৪)

১=১। (शाशन मर्डक (मि eo) का ১১।co

১ = २ । **८भाभान भूत्री**—क्यानन ১७৪ शः

১০০। **গোপাল ভট্ট** (চৈ) [ অনসমগ্রী বা গুণমগ্রী] ভক্তিরতাকর (পু: ৬) মতে বেছটনন্দন। ব্রাহ্মণ, শ্রীরঙ্গ, বুন্দাবন।

প্রি ১৪৫-১৪৮, দে ৫৬, বু ৫৯

M DISEISE

প্রভাবলীর ৩৮ সংখ্যক শ্লোক ইহার রচনা। পদকল্পতকতে বোধহয় ইহারই রচিত ক্ষেক্টী অঞ্ভাষার পদ গ্রত হইয়াছে। ইনি বৃন্দাবনে রাধার্মণের সেব। প্রকাশ করেন (ভক্তিরভাকর পৃ: ১৪১)।

১-8। (शाशान मामिश्रुतिसा ( श, यह )

সাদিপ্রিয়া কোন্দেশী লোকের উপাধি স্থির করিতে পারিলাম না। ১০৫। গোপীকান্ত (১৮)

১০৭। গোপীনাথ আচার্য্য বা পণ্ডিত [বন্ধা] বান্ধ্য-নবদ্ধীপ। ভা সংযাসদ পৃঃ

ইনি নীলাচলে বাস করিতেন না, গৌড়দেশ হইতে পুরীতে যাইতেন।
যথা—গোপীনাথ পণ্ডিত আর শ্রীগর্ভপণ্ডিত।
চলিলেন ছই কক্ষ বিগ্রহ নিশ্চিত। ভা ৩।১।৪৯১
শ্রী ৮৭—গোপীনাথং ততে। বন্দে চৈতগ্রস্তাকারকং

দে ২১—গোপীনাথ ঠাকুর বন্দো জগতে বিখ্যাত। প্রানুধ স্বতি পাঠে দেই এক সাক্ষাত।

র ২৭— ঠাকুর ত্রীগোপীনাথ পদে কৈল প্রণিপাত

প্রভূরে যে কৈল বছ স্ততি।



# [ 00 ]

> । **গোপীনাথ আচার্য্য** ( চৈ ) [রত্বাবলী] সার্ব্যভৌমের ভগিনীপতি। আশ্বন্ধ ইনি নীলাচল বাস করিতেন।

म् ১।১।১२, का ১२।৪৫, ना ७।১৮, ५ २।७।১७—२+

গৌ. গ. দীতে হুই জন গোপীনাথ আচাহ্য পাওয়া যায়, বন্দনায় একজন।

১০৮ । **গোপীনাথ পট্নায়ক** ( চৈ ) রামানন্দ রাথের ভ্রাতা। উদ্হিয়া, করণ। দে ৬৬, কিন্তু ১৬৪৪ ও ১৭০২ খুঃ পুথিতে নাই।

১০৯। গোপীনাথ সিংছ ( হৈ ) [ অকুর ] কারস্থ

म् ८।३१।३ ३, छ। ।।३१८३३

১১০। রোবিন্দ ( হৈ, ইশ্বরপুরীর শিক্ষ ) [ভদ্ব ব্র প্রেক — নীলাচল।

म 81591२०, का उटाउठ०, मा 61501

১১১। গোবিন্দ কবিরাজ (নি)

১১২। গোবিন্দ কর্মকার

क ७७

এই গ্রন্থের ত্রয়োদশ অধ্যয় দুপ্তব্য।

১১০। বেগাবিন্দ আচার্য্য [পৌর্ণমাসী; গীতপঞ্চাদিকারক:]

দে ১**০৩**— গোবিন্দ আচাহ্য বন্দো সর্বাঞ্চশালী।

যে করিল রাধা কৃষ্ণের বিচিত্র ধামালী।

বু ৯৫— গোবিন্দ আচাহাপদ করিব বন্দন। রাধারুষ্ণের রহস্ত যে করিল বর্ণন।

১১৪। গোবিন্দ থোষ ( চৈ ) [কলাবতী ] কীর্ত্তনীয়া, পদকর্তা, কায়স্থ, কুলাই, কাটোয়ার কাছে। বাস্থ ও মাধবানন্দ ঘোষের ভ্রাতা। অগ্রম্বীপে পাট। চৈত্র কৃষ্ণ ত্রয়োদনীতে গোপীনাথ বিগ্রহকে কাচা পড়াইয়া গোবিন্দ ঘোষের প্রান্ধ করান হয়। মহারাজা কৃষ্ণচক্র নবকৃষ্ণের নিকট তিন লক্ষ টাকা ধার করেন। নবকৃষ্ণ ঐ টাকা না পাওয়ায় গোপীনাথ বিগ্রহ লইয়া যান। অবশেষে কৃষ্ণচক্র মোকর্দমা করিয়া এই মৃষ্টি উদ্ধার করেন ( Ward, History of the Hindus, Vol. I, P. 205-6).

এ ১৯৬, দে ৮০, বু ৬৮

म 813916, मा 3012, जा ादाहरह

পদকল্পতকতে ইহার রচিত ছয়টা পদ আছে—গৌ. প. ত. তে ৭টা পদ গুড হইয়াছে।

# GENTRAL LIBRARY

### [ ७৬ ]

১১৫। রোবিন্দ দত্ত (চৈ) [পুওরীকাক ] কীর্তনীয়া, বৈক্ষবাচারদূর্পণ মতে ইহার শ্রীপাট প্রথচরে (২৪ পরগণা জেলা; বড়দহ ও পাণিহাটীর মাঝে) ইনি সম্ভবত মুকুন্দ ও বাহুদেব দত্তের ভাই। সনাতন গোস্বামী বৃহৎ বৈক্ষব তোষণীর প্রারম্ভে এই তিন জনকে নম্ভার করিয়াছন।

क्षा राष्ट्रार ३, छ र

১১৬। **গোবিন্দ দ্বিজ**—নামান্তর স্থাীব মিশ্র

জী১৭১-৪ বন্দে তথীবমিখাং তং গোবিনাং দিলমূত্যং

যন্ত ক্রিয়োগমহিমা স্থাসিকো মহীতলে। প্রভাবের গমনার্থং হি শ্রীনবদীপভূমিতঃ আলৌডভূমি থেনৈব বন্ধং সেতৃপ্রনাময়ং।

দে ৬৯ বন্দিব হুগ্রীব মিশ্র শ্রীগোবিন্দানন্দ প্রভু লাগি মানসিক গার সেতৃবন্ধ।

রু ৫৯ বন্দিব স্ববৃদ্ধি মিশ্র১ শ্রীগোবিন্দানন্দ বিপ্র

याद मनमानमङ्गाला।

কুলিয়া নগর হৈতে গৌড় পর্যান্ত ঘাইতে প্রান্ত চলি গেলা কুত্তলে ॥

শ্রীচৈতরচরিতামতে অহরণ ঘটনা নৃসিংহানন্দ প্রহার রক্ষচারী সহক্ষে বলা হইয়াছে।

জয়ক্ষ — হুগ্রীব মিশ্রের জন্ম ফুলিয়া গ্রামেতে।
গোবিন্দানন্দ শিবানন্দ পণ্ডিত হো তাথে।

অভিরাম— কোডর হটে গোবিন্দানন্দ ঠাকুরের বাস।
ইন্দুরেখা স্থী পূর্কে জানিবা নির্যাস।

১১৭। **গোবিন্দানন্দ ঠাকুর** (চৈ) [হুগ্রীব] শ্রী ও বৃ. তে উড়িয়া ভক্তদের সহিত উল্লিখিত।

২৩১ — ২ গোবিন্দানন্দনামানং ঠাকুরং ভক্তিযোগতঃ
 বন্দে প্রভোনিমিতঃ হয়য়পেতৃত মানসঃ।

১। বু এখানে হ্রীবছানে হবৃছি মিত্র করিয়াছেন। তিনি ১-৩ এ আবার হবুছি মিত্রের বশনা করিয়াছেন। একজন হবৃছি মিত্রের কথাই অভাল গ্রছে পাওয়া মায়। হতয়াবুর হ্রীব য়ানে হবুছি করা ভুল ইইয়াছিল মনে হয়। CENTRAL LIBRARY

# [ 09 ]

বু ১০০ হৃত্যীৰ নামক গোৰিক্ষানন্দ ঠাকুর। প্রভু লাগি সেতৃবন্ধ করিলা প্রচুর।

ছুইবার গোবিন্দানন্দ ঠাকুরের নাম শ্রী ও বৃ. তে কেন উলিপিত হইল বুঝিলাম না।

১১৮। গোবিন্দানন্দ পুরী [সিজি]

তী ১২৯, দে ৪৭ গোবিন্দপুরী বলিয়া উলিখিত
১১৯। গৌরাজদাস (নি) "কুম্দ গৌরাদদাস ছংখীর জীবন"
ভক্তিরভাকর পৃং ৫৮৯

১২০। গৌরীদাস পণ্ডিত (নি) [হ্বল] নিতানিশের যুড়াশ্তর, পিতার নাম কংসারি মিশ্র, রাজণ, অধিকা, ভক্তিরস্থাকর সপ্রম তরত্ব মতে পুর্ক নিবাস শালিগ্রাম (মুড়াগাছা টেশনের নিকট)।

শ্রী ২০০—৬ বন্দে ত্রীগোরীদাসং চ গোপালং স্বলাখাকং
যরীতঃ পরমানন্দম্ংকলেহছৈতঠকুরঃ।
শ্রীচৈতভানিত্যানন্দম্তিঃ সাক্ষাং প্রকাশিতা।
যন্ত্রিদর্শনাং সভঃ কর্মবন্ধক্ষয়ো ভবেং।
দে ১১ গৌরীদাস পশুত বন্দো প্রভুর আজাকারী।
আচার্যা গোসাঞ্জিরে নিল উৎকল নগরী।

3 99-60

বন্দিব প্রীগোরীদাস পণ্ডিত ঠাকুর।
নিত্যানন্দ প্রিয়পাত্র মহিমা প্রচুর ।
প্রভু আজ্ঞা শিরে ধরি গিয়া শান্তিপুরে।
যে আনিল উৎকলেতে আচার্য্য প্রভুরে।
যাহারে বলি গোকুলের স্থবল গোপাল।
স্থানের ক্ষণ্ড ভিজশক্তি বিদিত জগতে।
পাবও পাতাল লাগি হৈল যাহা হৈতে।
যার ঘরে নিত্যানন্দ চৈতক্ত মূরতি।
যার ঘরে নিত্যানন্দ চৈতক্ত মূরতি।
প্রভু বিজমানে মৃতি করিল প্রকাশ।
যে মৃতি দেখিলে কর্মবন্ধের বিনাশ।

GENTRAL LIBRARY

### [ 06 ]

দিবামালা চন্দন বসন অলমারে। যে করিল বিভূষিত নিতাই চান্দেরে।

মু ৪।১।৪, ৪।১৪।১৩ (বিপ্রহেয় কথা ), না ১০ ৫, ভা ৩।৬।৪৭৪,

5 3133120-28

জয়ানন্দ ৩ পৃঃ গৌরীদাস পণ্ডিতের কবিত্ব স্থান্ত্রণী। সঙ্গীত প্রবদ্ধে বার পদে পদে ধ্বনি॥

ঐ ১৪৪ পৃ: "যার দেহে নিত্যানন্দ হইলা বিদিত ।" পদকলতঞ্তে ইহার তুইটা পদ ধৃত হইয়াছে।

প্রেমবিলাস পৃ: ৮৩—৮৪, ভজিরত্বাকর ৫০৮—৫১৫ পৃ:। অহিকাকালনায় নটবর দাস প্রণীত 'হ্বল মঞ্চল' নামে এক পুথি আছে। তাহাতে পাওয়া যায় যে গোরীদাসের মুখটা কুলে জন্ম—তাহার পিতার নাম কংসারি মিশ্র—পাচ ভাইয়ের নাম দামোদর, জগলাথ, হুর্যাদাস, রুক্ষদাস ও নৃসিংহ তৈতন্ত দাস। গৌরীদাস পতিতের শিষ্য হৃদয়তৈতন্ত্র। হৃদয়তৈতন্তের শিষ্য উৎকলের হুবিখ্যাত প্রচারক আমানক। "হ্বল মঞ্চলে" আছে যে গৌরীদাসের পৌত্রীকে হৃদয়তৈতন্তের পুত্র বিবাহ করেন। বর্ত্তমানে অহিকার গোস্বামীরা হৃদয়তৈতন্তের বংশধর। ইহাদের শিয়েরা স্থারসের উপসাক।

১२১। ज्ञानमात्र (नि)

১২২। **চক্রপাণি আচার্য্য** (অ) বাংলা ভক্তমাল মতে ইনি ওজরাতে ধর্মপ্রচার করিতে গিয়াছিলেন (কৃঞ্চাস ওজামালী প্রসঙ্গে উল্লিখিত)।

১২০। চক্রপাণি মজুমদার — নরহরি সরকারের শিষা
ঠাকুরের শাখা চক্রপাণি মজুমদার।
জনানন্দ নিতাানন্দ পুত্র যাহার।
চক্রপাণি মহানন্দ গেলা নীলাচল।
শ্রীগোরাম্ব নিবেদন করিলা সকল।
ভূমে পুত্র পৌত্র তব হইবে অনেক।

রামগোপাল দাস-শাথা নির্ণয় পৃ: ৫

১২৪। **চতুত্র পণ্ডিত**—গদানস পণ্ডিতের পিতা ভা আধারণর, জ ১৪৫ "নিত্যানন্দ স্বরূপের ব্লভ একান্ত" ১২৪। **চন্দনেশ্বর** —সার্কভৌমের পুত্র —ব্রাহ্মণ, পুরী [ ෙ ]

বী ২০৪, দে ১১২, বু ১১৪ নাভা২»

১২৩। **চন্দ্রশেশর আচার্য্য**—(চৈ) [চন্দ্র], রান্ধণ, শীহট্ট-নবদ্বীপ শ্রী ৮৯—৯০ শীচন্দ্রশেশরং বন্দে চন্দ্রবং শীতলং সদা শাচার্যারত্বং গোবিন্দগরুড়ং গৌরমানসম্॥

ু আচার্যারত্ব নামে দে. ও বৃ. উদ্ধার করিয়াছি।

মু ১।১।২১, ভা ১।২।১৬, জ ২৪, নাটকের "চক্রশেখর ইতি প্রথিততা স্মাধ্যতা ভবনে" (২।০০) হইতে জানা যায় যে পুরীতে ইহার বাসা ছিল। সম্ভবতঃ ইনি গৌরলীলাবিষয়ে কয়েকটী পদ লিখিয়াছেন (পদকল্লতক পঞ্ম খণ্ড, পুঃ ১০৮)

১২৭। **চন্দ্রশেখর বৈভা** ( চৈ ) বৈভা, প্রীহট্র—কাশী। গৌড়ীয় সংস্করণ চরিতামুতের অন্তন্দ্রশিকায় চন্দ্রশেধর লেখক বলিয়া গুত। মুগ্রা১১৮, চ ২০১৯১১২

:২৮। **চন্দ্রমূখী** – পর্যাদাসপতিতের কলা, জ ০

১২৯। চিদানন্দ ভারতী

बी द∘, ८म द२, वु ८७

ত্রী, ও দে, যাহাকে চিদানন্দ বলিয়াছেন, বু তাহাকে সফিদানন্দ বলিয়াছেন।

- ১৩-। **তিরঞ্জীব (** চৈ ) [ চক্রিকা ] রামগোপাল দাস মতে রঘুনন্দন শিক্স। বৈদ্য-শ্রীপণ্ড (বর্দ্ধমান) ভক্তিরত্বাকর (পৃঃ ১৭) মতে কুমার নগরে বাড়ী। শ্রীপণ্ডের দামোদর কবিরাজের কন্তাকে বিবাহ করিয়া শ্রীপণ্ডে বাস করিতে আরম্ভ করেন। পদ্মাবলীর ১৫৭ সংখ্যক শ্লোক ইহার রচনা। স্থপ্রসিদ্ধ পদক্তী গোবিন্দ্দাস কবিরাজের পিতা।
- ১৩১। **চিরঞ্জীব** ( চৈ ১১৭ ) "ভাগবতাচার্য্য চিরলীব শ্রিষ্নন্দন" ভাগবতাচার্য্য পৃথক নামও হইতে পারে, চিরলীবের উপাধিও হইতে পারে। কাদড়ার জয়গোপাল দাসের পিতার নাম চিরলীব (উত্তর রাটীয় কাম্ছ গও, ২য় গও, ১৬৪ পৃ:)। তিনিও ভক্তিমান ছিলেন।
- ১৩২। **টেভক্ত দাস** (চৈ) [ হৃদক শুকপকী ] শিবানদের পুত্র, বৈল, কাঞ্চন পলী।

म १७, ১१०२ थुः श्थिए नाहे। ह २।>७।२२

১৩০। **হৈত্ত দাস** (গ ৮৪) চ. অধিকাংশ সংস্করণে রঙ্গবাটী, গৌড়ীয় সংস্করণে বন্ধবাটী চৈত্তক দাস। CENTRAL LIBRARY

### [ 80 ]

যতুনাথ— বলবাট্যা: প্রীচৈতন্মদাসং বন্দে মহাশরং সদা প্রেমাক্রবামাঞ্পুলকাঞ্চিতবিগ্রহম্ ॥

ঢাকার লালমোহন সাহা শাঝনিধি নিজেকে বন্ধবাটী চৈত্ত দাসের দশ্য অধস্তন পুরুষ বলিতেন।

১৩৪। **তৈত্ত দাস** মত্নাথ দাস গ্লাধর শাখায় ত্ইজন চৈত্ত দাসের নাম করিয়াছেন। এই চৈত্ত দাস ও ১৩১ অভিন হইতে পারেন।

১৩৫। ছকজি—বংশী ঠাকুরের পিতা, আগগ, কুলিয়া। অয়ানন্দ ৩৮—
ছকজি চন্দ্রকলা গৌরচন্দ্রে গৃহ আনি।
পৃজিল পদার্বিন্দ অগ্রন্ধ জানি।

১০৬। জগদানকা (চৈ) [সত্যভাষা] রাজণ, কাঞ্নপলী শ্রী ৮৬ বন্দে বাণীম্ভিভেদং জগদানকাপণ্ডিতং দে ৬২ জগদানক পণ্ডিত বন্দো সাক্ষাং সরস্থতী। মহাপ্রভূ কৈলা থাবৈ পরম পিরীতি॥

> রু ২৭ বন্দির পরমানন্দ পণ্ডিত জগদানন্দ মৃর্ডিভেদে যেন সরস্বতী।

মু ৪।১৭।১৮, কা ১০।১২০, না ১।২০, ভা ২।১।১০৯ জ ২, লো ২, চ ২।১।৯১ পদ্যাবলীর ২৭১ সংখ্যক লোক ইহার রচনা।

১৩৭। **জগদীশ** (স) অধৈতপুত্র, ব্রান্ধণ, শান্তিপুর

১০৮। জগদীশ ( চৈ ) [ বজপত্রী ] আগ্রণ, নবদ্বীপ, জগ্রাথ মিশ্রের বৃদ্ একাদশীর দিন নিমাই ইহার অল খাইয়াছিলেন।

শ্রী ১১০, দে ৩৮, বৃ ৩৮, মৃ ৪।৭।১০, ভা ১।৪।৪১, চ ১।১৪।৩৬

ব্দ ১৪৫—ব্লগদীশ হিরণা ছই সহোদর। নিত্যানন্দ প্রিয় বড় নবদ্বীপে ঘর।
১০২। জগদীশ পণ্ডিত (নি) [চন্দ্রহাসনর্ভ্রক ১৪০]
নৃত্যবিনোদী রাহ্মণ, মণ্ডা
শ্রী ২৫৮ নর্ভ্রকং পণ্ডিতং বন্দে জগদীশাখাপণ্ডিতং
দে ১২৫ জগদীশ পণ্ডিত বন্দো নৃত্যবিনোদী
বু ১১২

চৈততাভাগবতে ছইজন জগদীশের কথা আছে মনে হয়। যাহার ঘরে নিমাই হরিবাসরে নৈবেল থাইয়াছিলেন, তিনি "জগনাথ মিশ্রসহ অভেদ জীবন"। আর থাঙাঃ ৪ এ উলিখিত



# [ 85 ]

জগদীশ পণ্ডিত পরম জ্যেতির্বাম। সপার্বদে নিত্যানন্দ থার ধন প্রাণ।

ইহাদের মধ্যে কে কাজীদলন দিবদে কার্ত্তনদলে ছিলেন নির্ণয় করা কঠিন।
"জগদীশ চরিত্র বিজয়" নামক অন্থমানিক ত্ইশত বংসরের পুত্তকে ইহার কথা
আছে। ১৮১১ খুঠানে ঐ গ্রন্থ মুদ্রিত হইয়াছিল (সাহিত্য পরিষৎ পত্রিকা ১০০৬)ত
মুণালকান্তি ঘোষ প্রদত্ত প্রাচীন পুথির বিবরণ)।

মন্তব্য — জগল্লাথ — চরিতামতে প্রীচৈতত্তের পিতা জগল্লাথ - নিপ্র ছাড়া চৈতত্ত শাখায় তিন্তন, নিত্যানন্দ শাখায় একজন, অহৈতশাখায় এক ও গলাধর শাখায় ছইজন, একুনে সাতজন এবং গ্রন্থখনো জগল্লাথ মাহাতির নাম আছে। বৈক্ষর বন্দনায় ঐ নয়জন ছাড়া জগল্লাথ সেনের নাম আছে।

১৪ · । জগরাথ (নি ) বাগাণ

১৪১। জগলাথ—কানাই খুটিয়ার পুত্র জী ২২৮, দে ১০৯, বু ১০০

১৪২। জগন্নাথ কর ( অ ) কারস্থ

১৪৩। জগল্পাথ তীথ ( চৈ ) [জনতেন ] শ্রী ২৬৯, দে ১৩০

১৪৪। জগন্ধাথ দাস (চৈ) উড়িয়া, চরিতামৃতে "শ্রীগালিম" বিশেষণ, সম্ভবতঃ ইনি পঞ্চ স্থার অন্তম। এই গ্রন্থের পঞ্চাশ স্তব্য।

শী ২২৮-২২৯—বন্দে হি জগরাথং যদ্গানাং তরবো হরুদন্ বিবশা ইব।
দে ১০৯-১১১—জগরাথ দাস বন্দো সঙ্গীত পণ্ডিত।
বার গানরসে জগরাথ বিমোহিত।

১৪৫। জগলাথ দাস কাৰ্চকাটা ( গ, বছ )

১৪৬। **জগল্প বিজ চক্রবর্তী** মামুঠাকুর (গ) [কলভাবিনী] টোটা গোপীনাথের দেবক।

১৪৭। জগলাথ পণ্ডিড (চৈ) [হর্কাসা] বাহ্নণ জী ২৪৭ দে ১৬২

১৪৮। জগল্লাথ মাহাতি, করণ, উড়িয়া

5 215812\*,

১৪৯। জগন্ধাথ মিশ্রা [ নন্দ ] শ্রীচৈতক্সের পিতা—রাদ্ধণ—শ্রীহট্ট—নবদীপ শ্রী ২৩, দে ৬, বৃ ১০ সমস্ত চরিতগ্রন্থে উলিখিত। ম্রারিতে "বাংজ গোত্রপ্রজ" (১)৬।৩০) বলা হইয়ছে। ঢাকা দক্ষিণের মিশ্রগণও বাংজ গোত্রীয়। কিন্ত নবদীপের মহাপ্রভুর সেবাইংগণ বিগ্রহের অভিযেকমন্ত পড়ার সময় "ভর্মান্ত গোত্র" বলেন। নবদীপের শশিভ্যণ গোত্রামী "প্রীচৈতনা তথ্দীপিকা" গ্রন্থে (পৃ: ৫০) জগ্রাথ মিশ্রকে ভর্মান্ত গোত্রীয় বলিয়ছেন।

১৫०। **जशशाथ (जन** [कमना] देवच बी २६১, ८५ ১२२, वु ১১৬

পছাবলী ৬৪ ও ০৬৫ সংখ্যক ক্লোক ইহরি রচনা। ডাঃ দে লিখিয়াছেন, "Several Jagannathas are known as contemporaries and immediate disciples of Chaitanya, but none of them appears to have the patronymic Sena of the Vaidya caste (Padyavali, p. 20)", "বৈক্ষব বন্দনা" পড়িলে ডাঃ দে দেখিতে পাইতেন যে জগনাথ সেন অপ্রসিদ্ধ ব্যক্তি।

১৫১। জগাই (১৮) [জয় ] রাজণ, নবদীপ, ভা ২০১১, জ ২, ৮ ১০১৭০৭ ১৫২। জগাই লেখক জ ৪৭

১৫০। জলনী (বিজয়া) সীতাদেবীর শিয়া; বুকানন হামিন্টনের পূর্ণিয়া বিপোর্ট (পু: ২৭০) মতে ত্রাহ্মণ গৌড়ের নিকটে বাস করিতেন। অধৈতমঙ্গল (৭২ পু) অহুসারে "পুরুষ শরীর স্থী প্রকট হইলা।" নবদ্বীপের লিলিতা স্থীর ক্রায় পুরুষ স্থী-বেশ ধারণ করিয়া স্থীভাবে ভজনা করার প্রথা হয়তো যোড়শ শতান্ধীতেই উহুত হইয়াছিল। কিন্তু বুলাবনের গোস্বামীরা এই মত স্থীকার করেন নাই। সেই জন্তই চরিত গ্রন্থে ও বৈক্ষর বন্দনায় জন্মনীর নাম পাওয়া যায় না। নপেক্রনাথ বহু বলেন, জন্মনীর পূর্ব নাম রাজকুমার বা যজেশ্বর চক্রবর্তী। তিনি সীতার নিকট দীক্ষা লওয়ার পর মালদহের অন্তর্গত জন্মলী টোটা নামক স্থানে যাইয়া সাধনা করেন (উত্তর রাটীয় কায়ন্থ কাও, তৃতীয় খণ্ড, পু: ১৮৫—১৮৭)।

১৫৪ ৷ জলার্দ্দল প্রাক্ষণ—উড়িয়া—জগরাথ সেবক, না ৮/২, চ ২/১০/৩৯

১৫৫। জनाम्मन मात्र (घ)

১০৬। জয়ানক — হবৃদ্দিনিশ্রের পুল— চৈত্র মঙ্গল রচয়িতা— যত্নাথ-মতে গদাধর শাখা।

১৫৭। **জানকীনাথ** (১৮) রান্ধণ, ভক্তিরতাকরে "শ্রীছানকীনাথ বিপ্র গুণের খালয়" (পৃ: ৫৮৮)।

১৫৮। জাত্ত্বী [রেবতী—খনদমন্তরী]

### [ 80 ]

B 80-e.

বন্দে আজাহ্বীদেবীং প্রপুরীশ্বর শিষ্যিকাং
অনন্দমন্ত্রীং নাম যাং বদন্তি রহোবিদঃ
তত্যাজ্ঞরা তংশ্বরূপং সংনত্তগক্ততঃ প্রভাঃ
দেবতে পরম প্রেয়া নিত্যানক্ষং দৃঢ়ব্রতা।
বিরহক্ষিতা নিতাং বৃন্দারণাং গতেশ্বরী
প্রোপীনাথং প্রষ্টুমনান্তরীবীং বিচক্ষ সং
আক্রন্ট নীবিকা দেবী তম্বাচ রসোদ্বং
আগমিধ্যামি শীঘং তে পদ্যোরন্তিকং পদং ॥

দে, ১২, — বস্থধা জাহ্নবা বন্দো ছই ঠাকুরাণী। থার পুত্র বীরভক্ত জগতে বাথানি॥

ত্ই জন নারীর গর্ভে অবহা এক ব্যক্তির জন্ম সম্ভব নছে।
ব ১৪—১৫ অনসমঞ্রী থেঁহ আহ্বা পোসাঞি তেঁহ
বারণী তাঁহার পূর্ব নাম।

সানন্দে পড়িয়া ভূমি বন্দো বহু জাহুবিনী বীরচন্দ্র যাহার নন্দন ॥

১৫৯। জিতামিত (গ, বছ) [ ভামমঞ্রী ]

১৬০। **জীবগোস্বামী** ( চৈ ) [বিলাসমন্ত্রী] স্থবিখ্যাত গ্রন্থকার—ব্রান্ধণ— বুন্দাবন।

দে (১৬৫৪ খৃ: পৃথিতেও আছে)

শ্রীত্মীব গোসাঞি বন্দো সভার সমত। সিদ্ধান্ত করিয়া যে রাখিল ভক্তিতত্ত।

বু— বন্দো জীব গোসাঞিরে সকল বৈক্ষব গারে জিজ্ঞাসিল "কোন তব্ব সার"

বিচারিয়া দর্ব্ব শাস্ত্র কহিলেন একমাত্র ভক্তিযোগ পর নাহি আর ॥

5 215169

বুন্দাবনে রাধা-দামোদরের সেব। প্রকাশ করেন ( ভক্তিরত্বাকর ১০৯ পৃঃ )। ১৬১। ঝড় ঠাকুর, ভূইমালি

চ—০।১৬তে ইহার মহিমার কথা আছে। ইনি ঐতৈচতত্তের দর্শন পাইয়াছিলেন কিনা নিশ্চিতরূপে জানা যায় না।

### [ 88 ]

১৬२। जभन आहार्या (८६) बाधन, फ्लिया-नीनाहन

১৬৩। **তপন মিশ্র** ( চৈ ) রাহ্মণ, কাশী

মু ৪।১।১৫, ভা ১।১০, ১০৬ ( সম্ভবত প্রকিপ্ত )

১৬৪। **তুলসী মিশ্র পড়িছা**, উড়িয়া ব্রাদ্ধণ, তমলুক,

बि २०४, तम ১১७, व ১०१

E SISSISES

১৬৫। **ত্রিমল্ল ভট্ট,** রাগণ, শীরদক্ষেত্র, প্রভু দাকিণাত্য ভ্রমণ কালে ইহার গুহে চাতুর্মান্ত করিয়াছিলেন।

म् ७।३६।३०, का ३०।८, ५ २।३।३३

১৬৬। **দমরন্তী** (চৈ) [গুণমালাদখী ] আন্ধণী, পাণিহাটী, রাঘব পণ্ডিতের ভগিনী।

১৬१। দামোদর দাস (নি) সম্ভবতঃ ক্র্যাদাস সার্থেলের ভাই।

১৬৮। मारमामत्र शिख्ड (हे ) [रेनवा।] मत्रवंदी।

উড়িয়া ব্রাহ্মণ। শহর পণ্ডিতের অগ্রহ্ম।

बी २६, तम २१, वु ७১

म् अराज्य, का अवाअ०४, मा अर॰

डा जाजाहरू, इ २८

১৬३। मारमामत्र श्रुती [ मिकि ]

बी ३२१, तम ८७, वृ ८८

তিন বন্দনাতেই দামোদর পুরীর ভাবের সহিত সভ্যভাষার ভাবের তুলনা করা হইয়াছে। গৌ. গ. দী. তে জগদানন্দ সভ্যভাষা

मारमामत अक्रथ-अक्राश्वम आठाश अहेवा।

১৭-। ভুল্লভ বিশ্বাস (অ)

১৭১। **দেবানন্দ পণ্ডিড** ( চৈ, নি ) [ভাগুরি মুনি ] আহ্মণ কুলিয়া, নবছীপ, ভাগবত পাঠক।

**ब** ১৯৪, रम १৮, वृ ७१

মু ৩।১৭।১৭ বক্রেশরের কুপাপাত্র, না ১।৪২, ভা ২, ৯।২২২

३१२। (प्रवानम (नि)

শ্ৰীচৈতত্ত্ব ভাগৰতে, "কুঞ্দাস দেবানন্দ হুই গুৰুমতি" ( তাৰা৪৭৫ )

উহার ছুই প্রার পরেই নিত্যানন্দ প্রিয় মনোহর নারায়ণ। ক্ষুদাস, দেবানন্দ এই চারিজন ॥



### [ 80 ]

জীচৈততা ভাগবতে ছইজন দেবানন্দের নাম আছে, কেন না একই কবির ছারা ছই প্যার ব্যবধানে এক ব্যক্তির নাম ছইবার লেখা সম্ভব নয়।

২৭০। **ধনজায় পণ্ডিড** (নি) [বজ্দাম] বৈভ (ণু) চটুগ্রাম—জাভ্গ্রাম ও শীতল গ্রাম (বর্জমান), সাঁচড়া পাচড়া।

শ্রী ২৪৪-৪৬ বন্দে যত্কবিচন্দ্রং ধনগ্রয়পত্তিতং দত্তবিত্তং প্রসিদ্ধং যক্ষ বৈরাগাং
সর্বাস্থং প্রভবেহপিতং গৃহীতে ভাওকৌপীনে পত্তিতেন মহাত্মনা।

দে ১১৮ বিলাদী বৈরাগী বন্দো পণ্ডিত ধনঞ্ছ।
সর্বান্ধ প্রভুৱে দিয়া ভাও হাতে লয়।

র ১১১ পত্তিত শ্রীধনপ্রয় করিব বন্দনা।
প্রানিদ্ধ বৈরাগ্য ঘার সংসারে ঘোষণা।
লক্ষকের গারিস্থ যে প্রান্থ পায় দিয়া।
ভাগু হাতে করিলেক কৌপীন পরিয়া।

ভা এভারণঃ, জ ১৪৪

পভাবলীর ৬৫ সংখ্যক স্নোক ইহার রচনা হইতে পারে।

১৭৪। প্রদানন্দ ব্রহ্মচারী (গ) [ ললিতা ]

মাহেশের জগরাথ ইনি প্রতিষ্ঠা করেন।

১৭৫ ৷ **নক**জি (নি)

১৭৬। **নকুল এক্সচারী**—গৌরাদের আবিভাব বিশেষ—অমুয়া মূলুক না মাত

299। नवनी (शंष् (नि)

১৭৮। নরহরি সরকার (১৮) [মধুমতী] বৈছ, শ্রীখণ্ড শ্রীক্ষভজনামুত্ম্" ও পদসমূহ ইহার রচনা। "ভক্তিচন্দ্রিকা পটল" নামক শ্রীধণ্ড হইতে প্রকাশিত গ্রন্থ ইহার উক্ত বলিয়া কথিত।

প্রী ১৮৭—৮ বন্দে ভক্তাা নরহরি দাসং চৈত্তাপিত ভাববিলাসং মধুমত্যাধাং পুণাং ধন্তং যো নো পশুতি রুফাদক্তং ।

দে ৭৫ তেমের আলয় বন্দো নরহরি দাস।
নিরস্তর যার চিত্তে গৌরাজ বিলাস।

বু বন্দিৰ শীনৱহরি দাস ধরা বলিহারি

চৈতন্ত বিলাস যার ঘটে।

ভক্তিরত্বাকরে (পৃ: ৭৭) শ্রীরূপ ও কর্ণপ্রকৃত তুইটা শ্লোকে নরহরি-বন্দন। দেখা যায়। কিন্তু ঐ শ্লোক্ষয় উক্ত গ্রন্থকার্থ্যের কোন প্রয়ে পাওয়া যায়না। ভক্তি রত্তাকর (পু: ১৯৭) মতে ইনি গৌরাজ মৃত্তি ত্থাপন করেন। মৃ৪।১৭।১৩, কা ১৩।১৪৮, না ৯ ১, জ ১৪৪, লো ৩, চ ২।১।১২৩। বুকানন্ আমিন্টন প্শিয়া রিপোটে (পু: ২৭২) বলেন যে পৃথিয়া জেলার দক্ষিণ পৃক্ষাংশে সরকার ঠাকুরের বংশধরদের বছ শিক্ত ছিল।

১৭৯। নয়ন মিশ্রে (গ, যছ) [নিতামজরী] রাজণ, ভরতপুর, মৃশিদাবাদ গদাবর পতিতের আতৃপুত্র। পদকর্তা। ভরতপুরের গোস্থামীরা একথানি গীতার পুথিতে ঐচৈতত্তের হাতের লেখা ছুইটা শ্লোক দেখাইয়া থাকেন।

১৮০। **নন্দন আচার্য্য** (চৈ, নি ) রাগ্ধণ—নবদীপ চতুর্জ্ পণ্ডিতের পুত্র দে ৩০

म् रामात्र, का ७।३३, छ। २।०।३९७, छ २२, ह २।०।३६३

১৮১। नन्मारे (नि)

১৮২। নন্দায়ি ( চৈ ) [ বারিদ ] শীচৈতভের দেবক পুরী

১৮০। **ন নিদনী** (আ) [আয়া] সীতার শিয়—কায়স্থ, নাটোর। গৌড়ীয় মঠের চরিতামুতের অহক্রমণিকায় ইহাকে কি প্রমাণ বলে অহৈতের ক্যা বল। হইয়াছে বুকিতে পারিলাম না। ১৮০২—১০ খুটাজে বুকানন্ হ্যামিল্টন লিখিয়াছেন

—In the territory of Gaur, at a place called Janggalitola is the chief seat of the Sakhibhav Vaishnavas, who dress like girls, and act as religious guides for some of the impure tribes. The order is said to have been established by Sita Thakurani, wife of Adwaita; but so far as I can learn, has not spread to any distance, nor to any considerable number of people. The two first persons who assumed the order of Sakhibhav were Jangali, a Brahman and Nandini, a Kayastha. Jangali was never married and it is only his pupils that remain in this district, and these are all Vaishnavas who reject marriage (Purnea Report, p. 273).

লোকনাথ দাসের সীতাচরিত্রে আছে

ক্ষেত্রিকুলে জন্ম এক নাম নন্দরাম। জীক্রক অন্তসঙ্গতে হয় গুণধাম।

নগেজনাথ বহু বলেন, এই নন্দরামের উপাধি ছিল সিংহ এবং তিনি উত্তর-রাটীয় কায়স্থ ছিলেন। নন্দিনী গোপীনাথের সেবা প্রতিষ্ঠা করেন। বগুড়া



### [ 89 ]

কলেকটরী হইতে গোপীনাথের দেবার জন্ম প্রতি বংসর ৭২৬/ দেওয়া হয়। (উত্তররাতীয় কামস্থকাও, তৃতীয় বঙ, দোড়শ অধ্যায়)।

১৮৪। **নারায়ণ** (নি) দেবানদের ভাই, রাজণ, নবদীপ ভা হাচাহত্র, চ হা১১।৭৫

১৮৫। **নারায়ণ** দামোদর পণ্ডিতের ভাই শ্রী ৯৫, দে ২৮, বু ৩১

১৮৬। নারায়ণ গুপ্ত—বৈছ, পানিহাটী

বী ১০০, দে ৩০, বু ৩০

জয়কফ-নারায়ণ গুপ্ত আর বৈছা গদাদাদ।
বৃদ্ধিমন্তথান পানিহার পরকাশ।
মু ২া৪া২৪, কা ৬া৪৪

১৮৭। **নারায়ণ দাস** (ম) জীরপের সজে গোপাল দর্শনে গিয়াছিলেন (চ২/১৮/৪৫)।

ভক্তিরত্বাকর পৃ: ৫৮৯ ১৮৮। **নারায়ণ পৈরারি** রাজণ শ্রী ২৮৪, দে ১৩৯, বু ১৩৮ নারায়ণ বাচম্পতি ( চৈ ) [ সৌর্সেনী ]

ৰা পণ্ডিত

নারায়ণ পৈরারি, পণ্ডিত ও বাচম্পতি এক ব্যক্তি মনে হয়।

১৮৯। नात्राम्रगी [ অধিকা স্থানে কিলিধিকা ] ত্রাহ্মণী, জীবাদের খ্যালিকা

শ্রী ৮২ শ্রীবাসং নারদং বন্দে মালিনীং প্রতি মাতরং ততো নারায়ণী দেবীমধরামুত সেবনীং।

দে ১৯ জীনারায়ণী দেবী বন্দিব সাবধানে
আলবাটী প্রভু গারে কহিলা আপনে।

বৃ ২৬ জ ২ "ধাত্রীমাতা"
১৯ । নারায়ণী—শ্রীবাদের আরুস্তা—বুন্দাবনদাদের জননী—আন্দানী
মু ২।৭।২৬, ভা ১।১।১১, জ ১৪৭, চ ১।১৭।২২৩
চরিতামৃতের শাথানির্গয়ে নারায়ণীকে স্বতন্ত্রভাবে উল্লেখ করা হয় নাই।
১৯১। নিত্যানন্দ [হলায়ধ]

ন্ত্রী (২৯০) মাধবেন্দ্র পুরীর শিশু সম্বর্গ পুরী, নিত্যানন্দ সম্বর্ণপুরীর শিশু।
নিত্রানন্দর পুরী-শিশ্বো নিত্যানন্দর প্রভূত স্বয়ং। কিন্তু ভক্তি-রত্রাকর (পৃঃ ৩২২)

# [ 85 ]

মতে মাধবেল প্রীর ওক লখীপতির নিকট নিত্যানন্দ দীক্ষা লইয়াছিলেন। এজপ হইলে নিত্যানন্দ শ্রীচৈতত্ত্বর পরম ওক্স্থানীয় হন এবং উভয়ের মধ্যে বন্ধু বাবহার চলে না। চৈত্ত ভাগবতের মতে মাধবেল নিত্যানন্দকে বন্ধুভাবে দেখিতেন, কিন্তু নিত্যানন্দ তাঁহার প্রতি ওক-বৃদ্ধি রাখিতেন।

প্রী ৩৭ বন্দে নিত্যানন্দদেবং বলভরং স্বয়ং প্রভুং
আনন্দকন্দমভয়ং লোকনিস্তারকং গুরুম্।
পুরুষঃ প্রকৃতিঃ সোহসৌ বাহ্যাভান্তরভেদতঃ
শরীর-ভেটদঃ কুক্তে শ্রীকৃষ্ণ সিধেবনম্।

দে ১১ সহার ঠাকুর বন্দো শীনিত্যানন্দ যাহা হৈতে নাটে গীতে সভার আনন্দ।

বু১৩ বন্দোপ্রভুনিত্যানন অভয় আনন কন যে কবিল সভার নিয়োর॥

সমস্ত চরিতগ্রন্থে উলিণিত। নিত্যানন্দ বংশের সংক্ষিপ্ত ইতিহাস বুকানন হামিন্টন নিজে অন্তস্থান করিয়া পুণিয়া রিপোর্টে লিপিবন্ধ করিয়াছেন (২৭০—৭২ পৃ:)। স্থার আর. জি. ভাণ্ডারকর তাঁহার Vaisnavism, Saivism etc. গ্রন্থে নিত্যানন্দকে শ্রীচৈতগ্রের সহাদের বলিয়া বড়ই ভূগ করিয়াছেন।

১৯২। **নীলাম্বর** (চৈ ১৪৬) নীলাচল—ইহার নামাংশ রঘু হইতে পারে, কেন না চরিতায়তে "তপন ভট্টাচার্যা আর রঘুনীলাম্বর" আছে।

১৯৩। **নীলাম্বর চক্রবর্ত্তী** (গর্গ) ত্রীচৈতক্তের মাতামহ, প্রভুর কোটা লিখিয়াছিলেন,

শ্রী ৯৭—৯৮, দে ২৯, বু ৩২ মু সাহাহ, কা হাসঃ, ভা সাহাহ৫

১৯৪। जुनिश्ह किमानन्त जीर्थ [ अवस्थव ]

১৯৫। **লৃসিংহটেডভা দাস** (নি) "জ্বল মদল" মতে গৌরীদাস পণ্ডিতের জাতা।

শী ২৮ - "নৃসিংহচৈতগ্রদাসম্" অর্থাথ একনাম, কিন্ত দে ১০৫ বন্দিব নৃসিংহ আর শীচৈতগ্র দাস বু ১০৫ এক নাম ১৯৬। **নৃসিংহাচার্য্য—**ব্রাজন, নবদীপ,

ना जाउ०



### [ 85 ]

১৯१। नृসিংহানন্দ তীর্থ (মাধবেন্দ্র শিশ্ব) [ জয়ভেয় ]

শ্রী ১২৮ নরসিংহ তীর্থ ( নরসিংহ – নৃসিংহ )

CH 89 3

১৯৮। নৃসিংহানন্দ ভারতী (१)

শ্রী ১৩০ নুসিংহানন্দ নামানং সতানন্দং চ ভারতীম্ দে ৪৮ সত্যানন্দ ভারতীর সহিত নুসিংহ পুরীর উল্লেখ

• বু ৪৪ নৃসিংহানক আসী

म् ०। ১ १। ७, मा । १२०, छ । ৮

প্রভাষ বন্ধচারী স্তব্য

১৯৯। নৃসিংহ যতি—জ ৮৮

२००। गात्राहार्या

না ৯।২ প্রতি বংগর ঐতিচতত দর্শনার্থ নীলাচলে যাইতেন
না ৯।৩ আর একজন তায়াচার্যোর কথা আছে। যথা "ভগবরাম তায়াচার্যান্ত পুরুষোত্তম এব ভগবজৈততা—দর্শনাকাজ্জী যাবজ্জীবং স্থিত:"।

২০১। প্রাবতী-নিত্যানদের মাতা-ব্রাহ্মণী-একচাকা

औ ७६, ८म ১०, व ১०

जा अक्षाक्त व र

२०२। श्रेत्रभानम अवश्रु (नि)

🗐 २७७, ८४ ३२४, वू ३२१

২০৩। পরমানন উপাধ্যায় (নি) ভা ৩।৬।৪৭৪, জ ১৪৫

२०४। अतुमानम कीर्जनीया-काशी

চ ২ ২৫।০, চক্রশেশর বৈভের সঙ্গী

२०१। शतमानक ७७ (नि) [ मङ्ग्मा ]

बी २०५, ८४ ५२२, तु ५५७

51 515189¢

জ ০ "সংক্ষেপে করিলেন তিই পরমানন্দ গুপ্ত।
গৌরাঙ্গ বিজয় গীত শুনিতে অভুত।"

২০৬। পরমানন্দ পণ্ডিত - ঐতিত্তের সতীর্থ।
যত্নাথ মতে পরমানন্দ ভট্টাচার্যা, গদাধর শাখাভূক।

বি ১৯০ বন্দে প্রভূ সতীর্থা বৈ পরমানন্দ পণ্ডিতা
বি ৬৬

9

স্নাতন বৃহৎ-বৈক্ষব-তোষণীর প্রারম্ভে "বন্দে পর্মানন্দং ভট্টাচাইছং রসালয়ম্" বলিয়াছেন। পর্মানন্দ ভট্টাচাইট ও পণ্ডিত এক ব্যক্তি হওয়াই স্ভব ।

ভক্তির ছাকর (১৯ পৃঃ) মতে ইনি বুন্দাবনে বাদ করিতেন ও মধু পভিতের প্রতি ক্ষেহনীল ছিলেন।

২০৭। পরমাননদ পুরী (মাধবেজ শিশু, চৈ ) [উদ্ধব ] তৈতেল ভাগবত (১৬ পৃঃ) ও জয়কুফ-মতে অহিতে জন—নীলাচলে বাস শী ১২৬, দে ৪৬, বু ৪৩

মু আ১৫।১৯, কা ১০।১৪, না ৮।৪, ভা ১।১।১১, জ ২, লো ২, চ ২।১।১০২
জ ৩ শ্রীপরমানন্দ পুরী মহাশয়।

मः एकरण कतिरत्न जिंह शाबिन विक्य ।

২=৮। পরমানন্দ মহাপাত্র ( চৈ ) উড়িয়া।

5 RIS=188

২০৯। পরমেশ্বর মোদক—মোদক, নবছীপ।
চ তাওহাত

২১=। পরমেশ্বর দাস ঠাকুর (নি) [ অর্জন ] বৈছা

অধক্ষ-মতে গড়দহে পাট, অভিরাম-মতে তড়া আটপুর ( হগলি )।

তী ২=৭—৮ পরমেশ্বরং ততো বন্দে ঠকুরং স্বপ্রকাশকং

থো নৃতান্ প্রবিধামাস হরিনাম শৃগালকান্।

পরমেশ্বর দাস হারের স্বিক্তির স্বর্ণনাল

পরমেশর দাস ঠাকুর বন্দিব সাবধানে। শুগালে লওয়ান নাম সঙীর্ভন স্থানে॥

শ্রীজীব বলেন পরমেশর দাশ শৃগালকে হরিনাম শুনাইয়াছিলেন, দেবকী বলেন যে তিনি শৃগালকে হরিনাম লওয়াইয়াছিলেন। দেবকী একটু আলৌকিকভার প্রক্ষেপ করিলেন।

ভা তাং।৪৪৯ পৃ: — পুরন্দর পণ্ডিত পরমেখর দাস। যাহার বিগ্রহে গৌরচন্দ্রের প্রকাশ।

জ ১৪৪ পৃঃ— প্রসিদ্ধ পরমেশ্বর দাস মহাশয়। নির্বাধি নিত্যানন্দ যাহার হৃদয়॥

ভক্তি রত্তাকর মতে ( ১২৬ পৃঃ ) ইনি নিত্যানন্দের তিরোভাবের পর খড়দহে ছিলেন।

গৌরপদতরশ্বিণীতে ইহার ছইটা পদ আছে।

# [ 05 ]

২১১। পীতাম্বর (নি) [কাবেরী] দামোদর পতিতের আতা—উড়িয়া আহ্মণ।

बी कर, दम २१, वु ०३

২১২। পুণ্ডরীক বিজ্ঞানিধি ( চৈ ) [ মাধবের শিয়া, ৫৬, বৃষভাছ ] ব্রাহ্মণ, চট্টগ্রাম জেলার চক্রশাল ( ভক্তি রত্তাকর পু: ৮৩১ )

. बी ১००, तम ३७, वृ ७०

मु ८। ১ १। ०, मा ३। ३२, छ। ३। २। ३७, छ २, ८ना २, ५ २। १। २८३

২১০। পুরন্দর আচার্য্য (১৮) ব্রাহ্মণ, নবদীপ, চ "পিতা করি বারে বোলে গৌরাঙ্গ ঈশব।"

ओ ১৯১, CF १৮, वृ ७€

म् हाऽ१।১०, ना ৮।७०, छा ७।६।८६४, छ १०, ५ २।১১।१८

২১৪। **পুরুদ্দর পণ্ডিড** (নি) [অসদ ২১] খড়দহ (ভক্তিরত্বাকর পু: ১৭২)।

ত্রী ১৬১ বন্দে পুরন্দরং সাক্ষাদম্পদেন সমং বিহ ষল্লাস্থলং সংদদশ গৃহে কশ্চিছিজোত্তম: ॥

দে ৬৪ পুরন্দর পণ্ডিত বন্দো অঙ্গদ বিক্রম। সপরিবারে লাজুল গাঁর দেখিলা ব্রাহ্মণ।

বু ৫৬ বন্দো মূর্ত্তি মনোহর ঠাকুর শ্রীপুরন্দর
ফেন দেই অঙ্গদ ঠাকুর।
এক বিপ্র লয়ে তাঁরে অতিথি করিল ঘরে
গোটা সহ দেখিল লাঙ্গুল।

ভা তারা৪৪৯

জ ১৪৪ রাঢ়ে গৌড়ে প্রসিদ্ধ পণ্ডিত পুরন্দর। নিত্যানন্দ স্বরূপের প্রাণের দোশর।

२३१। श्रुक्रटसांडम ( हे १४) क्नीनधाम।

२১७। **शुक्रटसाखम** ( रेठ ১১० ) উड़िया।

২১৭। পুরুষোত্তম আচার্য্য ( চৈ ) [বিশাখা] স্বরূপ দামোদরের পূর্ব্ব নাম, আল্লণ, নব্দীপ। যত্নাথ মতে গদাধর শাখা।

ভা ৩।১১।৫১৫ পূর্কাশ্রমে পুরুষোত্তমাচার্য্য নাম তান। প্রিয় সধা পুরুষীক বিভানিধি নাম। CENTRAL LIBRARY

# [ @2 ]

চ ২।১০।১০০—১১৬ প্রভুর সন্মাস দেখি উন্মন্ত হইবা। সন্মাস গ্রহণ কৈল বারাণদী পিয়া।

শ্রী ১০০, দে ৫= সমস্ত চরিতগ্রন্থে উল্লিখিত।

२১৮। शुक्रद्याख्य जीर्थ [ क्यर्ट्य ]

খ্রী ২১১, খ্রী ২৬৯, ভ্রজন পুরুষোত্তম তীর্থ ছিলেন বোধ হয়। রু ৮৯, বু,১২৯

२३३। श्रुक्त खांडम मञ्

জ ১৪৫ পুরুষোত্তম দত্ত দে কেবল উদার। যাহার মন্দিরে নিত্যানন্দের বিহার।

২২ । পুরুষোত্তম দাস বা নাগর পুরুষোত্তম (নি ৩৫) [দাম] বৈছ, অধ্যাগর, বোধধানা ( ধণোহর )

শ্রী ১৯৭ পুরুষোত্তমাধ্যং দাসং বৈ বন্দে ঐথর্যাশালিনং।
কর্ণয়োঃ করবীপুপাং পদাগন্ধং চকার থং॥

CR 69-28

इंद्रेप्तव वत्मा श्रीभूक्ष्याख्य नाम। কে কহিতে পারে তার গুণ অমুপাম। স্ক্রণ্ডণহীন যে ভাহারে দয়া করে। আপনার সহজ করণা শক্তি বলে। সপ্তম বংসরে থার শীক্তঞ্চ উন্মান। ভূবনমোহন নৃত্য শক্তি অগাধ। গৌরীদাস কীর্ত্তনীয়ার কেশেতে ধরিয়া। নিত্যানন্দ গুৰ করাইলা নিজশক্তি দিয়া। शनाध्य मात्र आत श्रीतशाविक त्याय । যাহার প্রকাশে প্রভু পাইল সম্ভোষ। যার অষ্টোত্তর শতঘট গঙ্গাঞ্জলে। অভিষেক, সর্বজ্ঞতা থার শিশুকালে। করবীর মঙ্গরী আছিল যার কানে। পদ্মগদ্ধ হইল তাহা সভা বিভয়ানে ॥ यात नाटम क्रिस इय देवकव नकन। मृडिमच ध्यमञ्च गांत्र करनवत ॥



### [ 00 ]

বৃ'তে পুক্ষোত্তম দাস বাদ গিয়াছে—বোধ হয় আদর্শ পুথির পাঠ বিকৃত ছিল, তাহা না হইলে একপ অর্থহীন ত্রিপদী থাকিত না—

> গদাধর দাস বন্দ বাহ্নদেব ঘোষ সঙ্গ দোহারে বন্দিব সাবধানে। করবী মঞ্জী কলি আছিল কর্ণের পরি পদাগন্ধ হৈল সভা স্থানে॥

(300)

করবী মঞ্জী কাহার কর্ণে ছিল ?

চরিতামুতে নাগর পুরুষোত্তম নামে কোন ভক্ত নাই। পুরুষোত্তম দাস সংক্ষে আছে—

শ্রীপুরুষোত্তম দাস তাঁহার তনয়।
শ্রীপুরুষোত্তম দাস তাঁহার তনয়।
শ্রাজন নিমগ্র নিত্যানন্দের চরণে।
নিরস্তর বালালীলা করে কুঞ্সনে। (১)১১।৩ঃ—৩৬)

কিন্ত গৌরগণোদ্দেশদীপিকায় সদাশিব কবিরাজের পুত্রের নাম নাগর পুক্ষোত্তম। হথা—

সদাশিব হুতো নামা নাগর: পুরুষোত্তম: (১৩১)

শ্রীচৈতর ভাগবতে (৩,৬।৪৭৪) সদাশিব কবিরাজের পুরের নাম পুরুষোত্তম দাস। কিন্তু গৌরগণোন্দেশে নাগর পুরুষোত্তম ও পুরুষোত্তম দাস ছই বিভিন্ন ব্যক্তি।

২২১। পুরুষোত্তম পশুত (নি) [ভোকরফ] রাদ্রণ—নবদ্বীপ

দে ৯৭ রত্বাকর হতে বন্দে। পুরুষোত্তম নাম।

নদীয়া বসতি যার দিবা তেজোধাম।

ভা ৩।৬।৪৭৪ পণ্ডিত পুরুষোত্তম নবদীপে জন্ম।

নিত্যানন্দ স্বরূপের মহাভূত্য মর্ম ॥

B 388, 5 3133100

२२२। श्रूकृरवाद्यम् शिक्ष ( च ७३)

দে > • পুরুষোত্তম পণ্ডিত বন্দো বিলাসী স্থলান।

প্রভূ থারে দিলা আচার্য্য গোসাঞির স্থান।

ছা ২ পুরুষোত্তম আদি সে অবৈত পার্বদ।

থার নামে বাঢ়ে প্রেমভব্তিতে সম্পদ।

# २२०। श्रुकत्याख्य श्रुती

দে ১৩ । ত্রী ২৬৯ ও র ১২৯ এ যাহাকে পুরুষোত্তম তীর্থ বলিয়াছেন, দে, ১৩ এ তাহাকেই পুরুষোত্তম পুরী বলিয়াছেন।

২২৪। পুরুষোত্তম তালাচারী ন ৬০ কাচিশালি। খ্রী ২৪০, দে ১১৬, র ১০৯

२२४। श्रुक्तरस्वम मञ्जस (१६ १०) जाकन, नवबीन, श्रवृत हाता।

ভা ১।১ । ১ ০ ৯ জনেক জন্মের ভূত। মূকুল সহয়।

পুক্ষোত্তম দাস হেন যাহার তন্য।

ভা ২।১।১৪৪ পুরুবোত্তম সহয়ের প্রভূ কৈলা কোলে। সিঞ্জিলেন অঞ্চ তান নয়নের জলে।

কিন্ত চরিতামুতে পুক্ষোত্তম ও সহয় বলা হইয়াছে। যুখা প্রকৃর পঢ়ুয়া ছই পুক্ষোত্ম সহয়। ব্যাকরণে মুখা শিল্প ছই মহাশ্য।

म् ४१५५।५, व २४, ५ २१५५।५३

२२७। श्रूञ्जाशान (१, १६)

২২৭। প্রতাপ রুজে (চৈ, যত্) [ইজহায়] উড়িয়ার রাজা। পিতা পুরুষোত্তমদেব, মাতা বিজয়নগরের রাজক্তা পদাবতী (J. B. O. R. S Vol. V, ১৪৭—৮ পৃঃ)।

মাদলা পঞ্জীতে আছে যে প্রতাপকর ক্রীচেতক্তের তিরোছারের তিন বংসর পূর্ব্দে পরলোকে গমন করেন। কিন্তু চৈতক্ত চল্লোদর নাটকের প্রস্তাবনার দেখা যায় যে, প্রতাপকর প্রীচৈতক্তের বিয়োগে শোকাকুল হইয়াছেন। এই জন্ত মনে হয়, মাদলা পঞ্জীর প্রমাণ এক্ষেত্রে বিখাস্তা নহে। রাজেন্দ্রলাল মিত্র, মনোমোহন চক্রবর্ত্তী ও রাখালদাস বন্দ্যোপাধ্যার প্রতাপকরের রাজ্যাবসানের কাল ১৫৪০—৪১ খুটান্দ স্থির করিয়াছেন। ভক্তিরত্বাকরে (পৃঃ ১১০—১১১) আছে যে প্রতাপকর প্রভূর বিয়োগের পর "নিরন্তর ময় প্রভূ চরিত্র কীর্জনে।"

প্রতাপকর বীচৈতভের কুণা পাইবার পূর্কো "মুরস্বতী বিলাস" নামে একখানি স্থতির এম্ব রচনা করেন।

নেলোর জেলার উদধ্যিরি লিপি হইতে জানা হায় যে ১৫১৪ খুষ্টাজে তিনি বিজয়নগরাধিপতি রুক্ষদেব রায় কর্তৃক পরাজিত ও তাহার মাতৃল তিরুমলপ্প রায় বন্দীকত হন। এই সময়েই দক্ষিণে তাহার রাজাহানি ঘটে। তংপ্রের সম্ভবতঃ ১৫১২ খুষ্টাজে তিনি শ্রীচৈতজ্ঞের কুপা প্রাপ্ত হন।



শ্রীযুক্ত কুমুদবন্ধ সেন মহাশয় প্রমাণ করিতে চাহিয়াছেন যে, প্রীচৈতভের নিকট প্রেমধর্ম লাভ করার ফলে উডিয়া জাতির রাজনৈতিক অধাপতন হয় নাই। কেন না, উড়িয়াম তংপুর্বেও বৈঞ্চব ধর্ম ছিল। উড়িয়াদের রাজনৈতিক অধ্যপত্নের কারণ গৌড়ের পাঠানেরা, বিজয় নগরের রুফদেব রায়, বাহমনী রাজ্যের কুতব সাহী, আদিল সাহী প্রভৃতি মুসলমান নরপতিবৃন্দ ও গৃহশক্ত গোবিন্দ বিভাধর। তিনি মাদলাপঞ্জীর উপর নির্ভর করিয়া লিখিয়াছেন, "প্রতাপকত যথন বিজয়নগরে যুদ্ধ যাত্রায় যান, ত্রথন গোবিন্দ বিভাধরের উপরেই রাজ্যের ভার অর্পণ করেন। এই স্থযোগে গোবিন্দ বিভাধর গৌড়ের পাঠানরাজ হুদেন সাহের সহিত যভ্যন্ত করিয়া ভাহাদের উৎকল-আক্রমণে সাহায়। করিয়াছিলেন। গৌডের পাঠানের। কটকে শিবির ফেলিয়া কটক জয় করে এবং পুরীতে গিয়া শ্রীমন্দির কলুষিত করিয়া সমস্ত দেববিগ্রহ চুর্ব বিচ্প করিয়াছিল। মাদলাপঞ্জী বলে "যেতে পিতৃলমানে খিল।, সব খুন কলে" অর্থাৎ যত দেবমুর্তি ছিল, সব নষ্ট করিল। ত্রীমৃতিগুলি পাঠানদের ত্রীক্ষেত্রে প্রবেশ করিবার পুর্বেই নৌকাযোগে চিন্ধান্তদের চড়াই গুহা পর্যতে অপসারিত করা হইয়াছিল। প্রতাপকত ইহা শুনিয়া বিজয়নগরের সহিত ক্ঞালানে সন্ধি করিয়া জত পদে আসিয়া পাঠানদের আক্রমণ করেন। পাঠানেরা দে প্রবল বেগ সহা করিতে পারে নাই, তাহারা গৌড়াভিমুথে হটিয়া চলিল। অবশেষে উভয় দৈল গড় মন্দারণ পথ্যস্ত আসিলে গোবিন্দ বিভাধর পাঠানদের সঙ্গে স্পষ্টভাবে যোগ দিল। রাজা প্রভাগরুত্র विश्वाधतरक विकामितन, "काशांक ताका कतिरुक् ?" त्यार पूर्व शावित्यत মধাস্থতায় দাবাত হইল গৌডরাজা বালেখরের কতকাংশ পর্যান্ত বিভূত হইবে এবং গোবিন্দ বিভাধর প্রকৃত পক্ষে রাজকার্যা নির্কাহ করিবেন। প্রতাপক্ষর তথন প্রায় পুরী বাদে থাকিয়া ধর্মকর্মে মনোনিবেশ করেন। তারপরের ইতিহাস- প্রতাপক্ষরের পুরুদের হত্যা করিয়া গোবিন্দ বিভাধর বাজপদে প্রতিষ্ঠিত হইলেন" ( ব্রন্ধবিভা, ভারা ১৩৪৩ সাল পঃ ২২৭ )।

এই বিবরণ সত্য বলিয়া স্বীকার করিয়া লইলেও উড়িয়ার রাজনৈতিক অধঃপতনের পরোক্ষ দায়িত্ব হইতে ঐতিচতগ্যকে মৃক্ত করা যায় না। তাহার সঙ্গের প্রভাবে রামানন্দ রায় বিভানগরের ঘাট ছাড়িয়া পুরী আসিলেন—প্রতাপকর স্বয়ং কটক ছাড়িয়া পুরীতে বাস করিতে লাগিলেন। বুন্দাবন দাস লিথিয়াছেন যে ঐতিচতগ্য রাজাকে উপদেশ দিলেন

প্রভূ বোলে "কৃক্ডজি হউক তোমার।
কৃষ্ণ কার্যা বিনে তুমি না করহ আর ।
নিরম্ভর গিয়া কর কৃষ্ণ স্কীর্তন।
তোমার বৃক্ষিতা—বিষ্ণু চক্র স্থাপনি ।" (৩)৫।৪৫৩ পৃঃ)।



# [ 00 ]

এই উপদেশ-অন্তসারে কাজ করিলে কেহ রাজ্য রক্ষা করিতে পারেন না। ইটিচতত্ত প্রেমিক—রাজনৈতিক নেতা নহেন। প্রেমধর্ম ও রাজনীতি এক সঙ্গে চলে না।

खी २२२, CF 30¢, वृ ३१

म् ८१३७१, का ३७११४, मा ११३, ७१ ३१३१३३, छ २, ४ २१३१३२७

২২৮। প্রস্তুত্মগিরি জ ৮৮

২২০। প্রান্ত মিশ্রা ( চৈ ) রান্ধন, উড়িয়া, পুরী দে ৬৬, কিন্ত ১৭০২ খৃঃ
পুথিতে ঐ পরার নাই। না ৮.২ যে দেখা যায় যে সার্কভৌম ইহাকে ঐচৈতভোর
সহিত পরিচয় করাইয়া দিতেছেন। তৃতরাং ইনি শ্রীহট্টের মিশ্র বংশান্তব শ্রীচৈতভোর
ভাতি লাত। হইতে পারেন না। "শ্রীকৃষ্ণ চৈতভোদয়াবলী" নামক সংস্কৃত পুরিকা
ইহার নামে চালাইয়া দেওয়া ইইয়াছে। ভা ৩০৪০২, চ ২০০০২০

প্রত্যয় রক্ষচারী – নৃশিংহানন্দ ( গোবিন্দ হিজ উইবা ) ভা ৩।২।৪২১ চলিলা প্রত্যয় রক্ষচারী মহাশয়। সাক্ষাতে নৃসিংহ যার সনে কথা কয়।

B 213138€

২০০। প্রবোধানন্দ [ তুপ বিছা ] শ্রীরন্ধ, রাঞ্চণ, সন্নাসী শ্রী ১৫৫-৬ প্রবোধানন্দ সরস্বতীং বন্দে বিমলং য্যা মুদা। চন্দ্রামুতং রচিতং যংশিয়ো গোপালভট্টঃ ।

बु ६०

ইনি চল্লামুত্যের ১৩২ লোকে "গৌর নাগরবরো" শব্দ ব্যবহার করিয়াছেন। বুলাবন দাস বলেন "অতএব মহামহিম সকলে। গৌরাপ নাগর হেন শুব নাহি বলে।" সম্ভবত এইজন্মই বুলাবন দাস ও কঞ্চদাস করিরাজ ইহার নাম উল্লেখ করেন নাই। মহাত্মা শিশির কুমার ঘোব লিখিয়াছেন যে, হিত হরিবংশ একাদশীর দিন পান খাওয়ায় তাঁহার গুরু গোপাল ভট্ট তাঁহাকে বজ্জন করেন। প্রবোধানন্দ হরিবংশকে আপ্রয় দেন। এই জন্ম প্রবোধানন্দ এক্যরে হন (বিফুপ্রিয়া পত্রিকা, ৪০৭ চৈতন্তান্দ বৈশাগ সংখ্যা)। হরিভক্তি বিলাসের মন্দলাচরণে গোপালভট্ট ইহাকে গুরু বলিয়া প্রথম করিয়াছেন। ইনি প্রকাশানন্দ নহেন।

২০১। **প্রহরাজ মহাপাত্র** রাধণ উড়িয়া

না ৮া২ "পরম ভগবদভক্ত:"

২০২। ভগবান আচার্য্য ( চৈ ১০৪-যত্ ) গৌরের অংশ, শতানন্দ খানের পুত্র ও গোপাল ভট্টাচার্য্যের আতা।

কা ১৩.১৪৭, ভা ৩:৩।৪=১। ইনিই হয়তো নাটকের ৮।২ অংশে উলিখিত ভগবান কাষাচায়।



#### [ 49 ]

চ ২।১•১১৭ রামভলাচাধা আর ভগবান আচাধা। প্রভূপাশে রহিলা দোহে ছাড়ি অঞ কাধা।

২০০। ভগবান কর ( অ ) গৌড়ীয় সংস্করণ চরিতামুতে ভবনাথ কর ২০৪। ভগবান পণ্ডিত ( চৈ ৬৭ )

म काइनाइ

ভা ৩৯।৪৯১ চলিলেন লেথক পণ্ডিত ভগবান। যার দেহে কৃষ্ণ হইয়াছিলা অধিষ্ঠান।

২৩৫। ভগবান মিশ্র (টে ১০৮)

২০৬। ভবানশ ( চৈ ) [পাণু ] রামাননের পিতা, করণ, উড়িয়া বে ৬৬, কিন্তু ১৭০২ খু: পুথিতে নাই; কা ১২০০০, না ৮০২, চ ২০১০।৪৬, প্যাবলীর ৩০ ও ৮৯ প্লোক বোধ হয় ইহার রচনা।

২৩৭। ভবানন্দ গোস্বামী—বহুনাথ মতে গদাধর শাখা ভজিরত্বাকর ১০২১ পৃঃ, শ্রীমধু পণ্ডিতের সতীর্থ ভবানন্দ। গোপীনাথ সেবায়ে যাহার মহানন্দ।

মন্তব্য:—ভাগবতাচার্য।—চরিতামুতে চারিজন—ঘণা চৈতক শাখার ভাগবতাচার্যা সারদ দাস (১১১), ভাগবতাচার্যা চিরঞ্জীব (১১৭), অইছত শাখার ভাগবতাচার্যা (৫৬), গদাধর শাখার ভাগবতাচার্যা (৭৮)। মনে হয় প্রথম ছই ভাগবতাচার্যাের নাম যথাক্রমে সারদ্দাস ও চিরঞ্জীব, তৃতীয় ভাগবতাচার্যাের কথা কিছু বলা যায় না; চতুর্য ভাগবতাচার্যা বরাহনগর নিবাসী।

২৬৮। ভাগবভাচার্য্য (অ ৫৬)

২০৯। ভাগবভাচার্য্য রঘুনাথ (গ, বহু) [বেত মঞ্রী], আগণ, বরাহ-নগর ভা অংগ৪৪৯-৫+

গৌ, গ, দী, নির্মিতা পুতিকা যেন ক্ষপ্রেম-তরন্ধিনী।
ত্রীমন্তাগবতাচার্যা গৌরাঙ্গাতান্তবলভঃ।
যত্নাথ বন্দে ভাগবতাচার্যাং গৌরাঙ্গ-প্রিয়-পাত্রকম্।
যেনাকারি মহাগ্রন্থো নায়া প্রেমতরন্ধিনী।

রঘুনাথ ভাগবতাচাহ্য নিজের পরিচয় বলিয়াছেন—
পণ্ডিত গোসাঞি শ্রীযুত গদাধর নামে।
হাহার মহিমা ঘোষে এ তিন ভ্বনে।
ক্ষিতিতলে রূপায় কেবল অবতার।
অশেষ পাতকী জীব করিতে উদ্ধার।

GENTRAL LIBRARY

# [ ab ]

বৈকুঠ নায়ক কৃষ্ণ চৈতন্য মূরতি।
তাহার অভিন্ন তেঁহ সহজে শক্তি।
মোর ইইদেব গুরু সে ডুইচরণ।
দেহ মোর বাক্যে মোর সেই সে শরণ।
(কৃষ্ণ প্রেমতরঙ্গিনী ২ পৃঃ)।

২৪০। ভাগবভদাস (গ, বছ ) বুনাবন

২৪১। ভার্গব আচার্য্য— জ ৮৮

২৪২। ভার্গব পুরী—জ ২

২৪০। ভাক্ষর ঠাকুর [বিশ্বকর্মা] প্রধর, দাইহাট (বর্দ্ধমান)

🔊 ২৫৪ "ভান্ধরং চ ততো বন্দে বিশ্বকর্মপরণকং"

८म ১२७, व ১১१

২৪৪। ভূগর্ভ গোসাঞি (গ, যহ ) [প্রেমন্লরী] ব্রাগ্রণ, র্ন্দাবন

ची ses, दम eb, यु et, 5 राउठाव-

২৪¢। ভোলানাথ দাস (অ)

২৪৬। মকরধ্বজ [ হকেশী ]

২৪৭। মকরধ্বজকর ( হৈ, রাঘব পণ্ডিত শাখা ) [ চন্দ্রম্থ নট ] কায়স্থ।

শী ২: ৫ মকরধ্বজং ততো বন্দে গুণৈকধামস্থলরং য: করোতি সদা রুফ কীর্ত্তনং প্রভু সরিধৌ

८म ১०১, वृ ३२

का ३६।३०७, ना ३०।६, छा ०।६।८५३, छ ३६।

২৪৮। মজল বৈষ্ণৰ (গ) ইনি ময়নাভালের মিএঠাকুরদের আদিপুক্ষ
নুসিংহ বল্লভকে দীক্ষা দেন। কাদভায় (বীরভূম) মঙ্গলবংশীয় শিশ্বগণ আছেন। এই বংশের কালাটাদ ঠাকুর মনোহর সাহী গানের তাল মান প্রকাশ করিয়া বিখ্যাত হন। প্রভাবলীর ১০- সংখ্যক শ্লোক মঙ্গলবৈষ্ণবের রচনা হইতে পারে।

মধুপণ্ডিত— শ্রী ২১৯, অনন্ত আচার্য্যকে বন্দনা করিয়া "মধ্বাধ্যং পণ্ডিতং বন্দে গোবিন্দাচার্য্যনামকং।"

দে ১০২ শ্রীমধুপণ্ডিত বন্দো অনস্ত আচার্যা

রু ৯৩-৪ অনস্ত আচার্যা বন্দো নবদ্বীপ মাঝ ।

তবেত বন্দিব মধু পণ্ডিত চরণ।

বৈক্ষব পাণ্ডত যারে বোলে সর্বাজন ।

# [ 00 ]

শ্রীজীব সম্ভবত গোবিন্দাচার্য্যের ও দেবকীনন্দন অনস্তাচার্য্যের আখ্যারূপে
মধু পণ্ডিত শব্দ ব্যবহার করিয়াছেন। বু. তাহাকে স্বতম ব্যক্তি বলিয়াছেন।

২৪৯। মধু পণ্ডিভ—যত্নাথ মতে গদাধর শাখা, তমলুক, বুন্দাবন

ত্রী ২৪০ পুরুষোত্তম ব্রন্ধচারিমধাক্ষা পণ্ডিতাবুভৌ

८म ३३७, व ३०३

ভক্তি-রতাকর (পৃ: ২৪) মতে বৃন্দাবনের গোপীনাথের প্রথম দেবাধিকারী

ঐ পৃ: ১০২১ শ্রীগোপীনাথাধিকারী শ্রী মধু পণ্ডিত।
 গদাধর পণ্ডিতের শিয়্ম এ বিদিত।

২৫ । মধুসুদন ( চৈ ) কালনা সংস্করণ চরিতামুতে পাঠ-

"মহেশ পণ্ডিত, কর শ্রীমধুস্থদন" নাথের সংস্করণ; "মহেশ পণ্ডিত শ্রীকর শ্রীমধুস্থদন" রামগোপাল দাস "শাখা বর্গনে" (পু: ৬)

> মধুস্দন দাস বৈছা কীর্তনের বাএন। নীলাচল সম্প্রদায়ে আছয়ে লিখন।

রামগোপাল দাসের মত মানাই বৃক্তি সঙ্গত। মধুস্থদন তাহা হইলে বৈছা হন, এবং কর উপাধী নহে, জীকর একটি স্বতন্ত্র নাম।

२६५। मरनात्रथश्रुती क ४४, वृह७

২৫২। মনোহর (নি ৪০) দেবানন্দের ভাতা, বাধাণ, কুলিয়া

डा ७।५:८१०

ইনি প্যাবলীর ২৭৪ ও ২৭৫ সংগ্যক প্লোকের রচয়িতা হইতে পারেন। ১ ২৫৩। মনোহর (নি ৪৯) পদকলতকতে এক মনোহর কত ৬টা পদ গুড

श्हेगारक। २०४१ मशीसत (नि ४०)

া ভা: দে "পদ্মাবলীর" কবি পরিচয়ে লিবিয়াছেন "Two Monoharas are known in Bengal Vaisnava literature: (1) Monohara, mentioned in C.-C. (Adi XI, 46, 52) as follower of Nityananda and (2) Baba Aul Manohara Dasa, also of the Nityananda Sakha mentioned in Premvilasa. As they belong to a somewhat later period they can scarcely be identified with our poet." চরিতামুতের আদি একামনে (নাথ সং ৪০ ও ৪৯, গৌড়ীয় সং ৪৬, ৫২ ) ছই বিভিন্ন মনোহবের নাম আছে। এক ব্যক্তির নাম ছয় পয়ার বাবধানে ছইবার লেখার সার্থকতা নাই। দেবানলের আতা মনোহবেন "somewhat later period" বলা বায় না। ভগরত পাঠক দেবানলের আতার পক্ষে লেখা অসম্ভব নহে।

২৫৫। মহেশ পণ্ডিত (নি ২০) [মহাবাছ] যশভার জগদীশ পণ্ডিতের ভাই। আজন পালপাড়া (নদীয়া জেলার চাকদহ ষ্টেশনের নিকট) প্রথমে স্থসাগরের নিকট যশিপুর গ্রামে থাকিতেন। সভবত শীহুট্রে আদি বাস।

শ্রী ১৫৭ মতেশ-পণ্ডিতং বন্দে ক্রফোরাদ সমাকুলং

CH ३२६, च ३३≥

ভা তাভারণর, জ ১৪৪

২৫৬। মহেশ পণ্ডিড ( চৈ ১০৯)

২৫१। মহেল গিরি জ ৮৮

२०४। माध्य (नि)

২৫৯। **মাধব আচার্য্য** (নি) [শান্তহ ] নিত্যানন্দের জামাতা, রাধ্বণ, জিরাট।

জি ৬১-৬৬ ছিজকুলতিলকং কুতাবতারং গদাং গৃহীতুকামাবতীর্ণাং
মাধবং মাধবরূপং রসময়তম প্রেমাথাং
স ইবর-পুরী-শিক্ষা সর্বা-পারকা

বিষ্ণুভজ-প্রধানশ্চ সদা ুণাবলী ভৃষিত:। বিচার্যাতেযু মতিমান্ কশ্জান-পরাকিপন্।

ক্লফ প্রেমতত্তং নিনির্ণায় দ্যানিধিঃ।

দে ১৩৮ পরম আনন্দে বন্দো আচার্য্য মাধ**ব**।

ভক্তিফলে হৈলা গদাদেবীর বল্লভ ৷

রু ১৯ লোবিদের প্রেমধাম আচার্য্য মাধব নাম

প্রেমানন্দময় তত্ত্বানি।

জ্যেড় করি পদম্ব বন্দো সে পদারবিন্দ

शक्रारमवी यादात शृदिनी ॥

পুনরায় র ১৩৭ মাধব আচার্য্য বন্দো ছিজকুলমণি।
নিত্যানন্দ স্থতা গদা যাহার গৃহিণী।

২৬ । **মাধবানন্দ** ( চৈ ) [ মাধবী ] ইনি বাংলায় "রুফ্ মঙ্গল" ও সংস্কৃতে "প্রেমরতাকর" গ্রন্থ লেখেন।

তী ২৭৯ বন্দে শীমাধবাচার্যাং ক্লঞ্চমঙ্গলকারকং দে ১৩৪ মাধব আচার্যা বন্দো কবিত্ব শীতল।

থাহার রচিত গীত শীক্ষমদল।



#### [ 63 ]

बु ५७७-५७8

শীক্ষণাদ কত ক্ষ-মন্ত্ৰে আছে

মাধব আচাৰ্য্য বন্দো কৰিছ শীতল। যাহার রচিত গীত শীকৃষ্ণ মঙ্গল। (পু: ৫)

চান্দ্যার গোস্বামীরা মাধবাচার্যোর বংশধর (বীরভূমি ৮ম বর্ব, ৩য় সংখ্যা পৃ: ৩৪)। "ময়মনসিংহ, মালদহ, ত্রিপুরা, ঢাকা, জীহট প্রভৃতি জেলায় এই গোস্বামিগণের অসংখ্যা শিল্প আছেন" (কিশোরগঞ্জ বার্তাবহ, ৭ই মাল ১৯৩০ সাল) ছাঃ দীনেশচন্দ্র সেন লিখিয়াছেন যে ভাগবতকার মাধবাচার্যা প্রীচৈতক্তের ছালক ও ছাত্র। কিন্তু নবন্ধীপের মহাপ্রভূব সেবাইতেরা বলেন যে বিফুপ্রিয়ার ভাতার নাম যাদব—শশিভূষণ গোস্বামী ভূল করিয়া মাধব লিখিয়াছিলেন। বিশ্বভরের টোলে মাধব নামে কোন ছাত্র ছিল বলিয়া জানা যায় না।

২৬১। **মাণব দাস**—কুলিয়া, গৌড় অমণকালে শ্রীচৈত্ত ইহার বাড়ীতে ছিলেন। না ২০১৩, চ ২০১৬।২০

२७२। माध्य शहेनाञ्चक छेड़िया, करन

बी २७६, तम ३३८, तु ३०६°

২৬৩। মাধব পণ্ডিড (অ)

২৬৪। **মাধব মিশ্রে** [পুণ্ডরীকের প্রকাশ ] গদাধর পণ্ডিতের পিতা

छा राषार००

ख २१

২৬৫। **মাধবানন্দ হোষ** ( চৈ, নি ) [রসোলাসা ] বাস্ত্যোষের ভাই। কাহস্ব, কুলাই। গায়ক ও পদকর্তা।

🖹 ১३७, ८४ ५५, तु ७४

'का अवाहत्व, अ 588, 5 राउठातत

২৬৬। **মাধবী দেবী** ( হৈ ) [কলাকেলী ] শিখি মাহিতীর ভগিনী, করণ, উড়িয়া

本 20120, E 0131200

২৬৭। **মাধবেন্দ্র পুরী**— শ্রীচৈতত্ত্বের পরস্থক

প্রি ৬৭-৬৮ যতি-কুলতিলকং পুরাণং মুনীক্রমাদিগুলীশভক্তক বন্দে শ্রীমাধবেক্রং বাস্কাং চকার হরিভক্তিং যা।

দে ১৪ সাবধানে বন্দো আগে মাধবেন্দ্র পুরী। বিষ্ণু ভক্তিপথের প্রথম অবতরি। GENTRAL LIBRARY

#### [ 42 ]

রু ২১ বন্দো শ্রীমাধবপুরী অবনীতে অবতরি বিফু ভক্তি যে করিল ব্যক্ত প্রাচীন যে আদিশুক করণাকলপতক থেই মহাপ্রভুর আদি ভক্ত॥

সনাতন গোপামী রহং-বৈঞ্ব-ভোষণীর প্রারম্ভে লিপিয়াছেন শ্রীমাধবপুরীং বন্দে ষতীক্তং শিক্সসংযুত্ম। লোকেশ্ব ছুরিতো যেন ক্লফ ভক্তিস্বরাঙ্গ্রিপং॥ মু ১া৪া৫, কা ২০১১১, না ১া৬, জ ২, লো ২, চ ১ালচ্চ চ হালাব্দ-চ

শ্রীমাধবপুরীর সঙ্গে শ্রীরঙ্গপুরী।
পূর্বে আসিয়াছিল নদীয়া নগরী।
জগরাথ মিশ্রখরে ডিক্ষা যে করিল।
অপুর্বে মোচার ঘণ্ট তাহাতে থাইল।

२७৮। माधारे ( कि ) [ विख्य ] बाक्षन, नवदील, बगाहेरधव छाहे

২৬৯। মামু ঠাকুর (গ, বছ ) উড়িয়া

২৭ । **মালাধর ত্রজাচারী** জ ৭৩, নবদীপ লীলা প্রসঙ্গে উল্লিখিত।

२१)। भानिनी [ अधिका ] श्रीवामभन्नी, बाध्वनी, नवदीभ

चि ৮১. त्म ১৮, व् २०। चा अनाऽत्रक, छ २. Б आऽवाऽ०त्र

২৭২। **মীলকেতন রামদাস** (নি) [নিশঠ ও উল্ক]

ঝামাঠপুরে রুঞ্চনাস কবিরাজের গৃহে গিয়াছিলেন।

২৭০। মুকুন্দ ( চৈ ) চরিতামৃতের মতে জীচৈতত্তার অগ্রন্ধ বিশ্বরূপ সরাসী হইয়া শঙ্করারণা নাম গ্রহণ করেন। তাঁহার ছই শিষ্যের নাম মৃকুন্দ ও কানীনাথ কর (১।১০।১০৪)। ইহারা হয়তো পরে জীচৈতত্তার চরণাশ্রয় গ্রহণ করিয়াছিলেন—তাই মৃকুন্দকে চৈত্তাশাখায় গণনা করা হইয়াছে।

২৭৪। মুকুল (নি ৯৫) নগেন্দ্র নাথ বস্থ বলেন "বল্লভ ঘোষের নয়টী
পুত্র—বাহুদেব, গোবিল, মাধব, জগরাথ, দামোদর, মুকুল, দহুজারি, কংসারি ও
মীনকেতন। প্রথম ছয় জন সয়াসি গ্রহণ করেন। তয়ধো বাহুদেব, গোবিল,
মাধব, মুকুল এই চারিজন মহাপ্রভূ চৈতভাদেবের পার্মদ ও পদকর্তা বলিয়া বিখ্যাত"
(উত্তর রাটীয় কায়স্থ বিবরণ)। ২৭৪ বা ২৭৫ সংখাক মুকুল বাহুঘোষের ভাই
হইতে পারেন।

#### [ 60 ]

২৭৫। মুকুন্দ (নি ৪৯) ২৭৬। মুকুন্দ কবিরাজ (নি ৪৮) বৈছ শ্রী ২৭২, দে ১০২, বু ১৩১

২৭৭। মুকুন্দ দত্ত ( চৈ ) [মধ্রত ) প্রীচৈতত্তের সহাধাারী ও কীর্ত্তনীয়। ।
শস্তবত বাহুদেব দত্তের ভাতা। বৈহু, চটুগ্রাম-নবদীপ-কাঞ্চনপলী।

্লী ১২ বন্দে মৃকুন্দলতাং চ কিল্লা স্থ্যমানকং দে ২৫, বৃ ২১

म् २।८। ३२, का ७।०१, ना ३।३२,

ভা ১।১।১०, २, ला क २, ४ ১।১०।२

২৭৮। **মুকুন্দ দাস** ( চৈ ) [ বুন্দাদেবী ] বৈহু, শ্রীখণ্ড শ্রী ১৮১-৮৪—শ্রীমুকুন্দদাস-ভক্তি রহ্মাপি গীয়তে জনৈঃ

ন সংস্কৃত্য বাৰ্ত্ত বংশন বিভাগ বাৰ্তত বংশন বিভাগ বিদ্যালয় কৰু প্ৰেমবিক্ষিতঃ।
সভো বিহিৰলতাং প্ৰাপ্তঃ প্ৰমানন্দ-নিবৃতঃ
বাহ্যবৃত্তীৰজানংক প্পাতাধো মহাপদাং॥

দে ৭৪— বন্দিব মুকুল দাস ভাবে ভ্রুচিত।

ময়ুরের পাথা দেখি হইলা মুক্তিত।

রু ৬২-৬০ মুকুন্দলাসের ভক্তি অকথাক্রফের শক্তি অভাবধি বিদিত সংসারে। ময়রের পাথা দেখি চঞ্চল হইল আঁথি

বিহ্বলে পড়িলা প্রেমভরে 🛚

ম্ ৪।১৭।১০ অক্তান্ত গ্রন্থের উল্লেখ নরহরি সরকার প্রসঙ্গে দেইবা। ২৭৯। **মুকুন্দ মোদক**—পর্মেশ্বর মোদকেরপুত্র। নবদীপ, চ ০।১২।৫ ২৮০। **মুকুন্দ রায়** 

জয় কৃষ্ণ "শান্তিপুরে জনমিলা রায় মৃকুন্দ"।

প্রী ১১৪, দে ৩২, বৃ ৩২

দেবকীর মৃদ্রিত পাঠ "শ্রীরামমূক্ল বন্দো", কিন্তু ১৭০২ খুটাবের পুথির পাঠ
"শ্রীরায় মৃকুল বন্দো", ইনি নিত্যানন্দ শাখাভুক্ত কোন এক মৃকুল হইতে পারেন।

২৮১। **মুকুন্দ সঞ্যা**—রাজণ নবদীপ, ইহার বাড়ীতে প্রভুটোল খুলিয়া ছিলেন।

ভা ১।१।१७, **ब** २८

২৮২। **মুরারি গুপ্ত** (চৈ)[হত্মান]বৈত, শীংট্র—নবদীপ। স্প্রসিদ্ধ করচাকার ও পদক্তা।

জী ৮৮, দে ২২, র ২৮ সমত গ্রন্থে উল্লিখিত।

২৮৩। মুরারি চৈত্ত দাস (নি) রাগণ

শ্রী ২৫ - মুরারি চৈতল্পদাসং যমাজগর খেলকং

८म ১२১ म्वाबि छिज्यमान वत्ना नावशास्त ।

আক্র্যা চরিত্র থার প্রহলাদ সমানে।

व ১२० भ्वाति देठल्या माभ विमाव यल्या ।

यात नौनारथना अङ्गंत मर्भ मरन ॥

মহা অজগর দর্প লই নিজ কোলে।

निर्ज्य हेठ ज्या माम थाक कुज्र हा ॥

ভা ৩।৫।৪৬২ যোগ্য ঐতিচতগুদাস মুরারি পণ্ডিত।

যার বাতাদেও কৃষ্ণ পাইয়ে নিশ্চিত।

ঐ ৩।৫।৪৭০ প্রসিদ্ধ চৈতন্তদাস মুরারি পণ্ডিত।

শার খেলা মহাসর্প ব্যাদ্রের সহিত ।

জ ২৪, জ ১৪৪—"বার খেলা মহাদর্প ব্যাদ্রের সহিত"

মুণালকান্তি ঘোষ বলেন, "বর্জমান জেলার গলসী রেলটেসন হইতে এক জোশ দূরে সরং বুন্দাবনপুর প্রামে ম্রারি চৈততা দাসের জন্ম। নবদীপধামের অন্তর্গত ঝাউগাছি প্রামে আসিয়া ইহার নাম শার্ক (শার্ক) ম্রারি চৈততা দাস হইয়াছিল। ইহার বংশধরেরা আজও সরের পাটে বাস করেন"। কালনা সংস্করণ চরিতামুতে লেখা আছে "ইহার নিবাস খড়দহে।" শী্জীব, দেবকীনন্দন ও দিতীয় বুন্দাবন দাস সারক্ষ দাসকে ম্রারি চৈততা দাস হইতে পুথক ভাবে বর্ণনা করিয়াছেন। চরিতামুতেও উভয়ের নাম স্বতম্ব ভাবে লিখিত আছে। সেইজভা মুণালবাবুর মত মানিতে পারিলাম না। সারক্ষ দাস ভাইবা।

২৮৪। **মুরারি পণ্ডিত** (আ) রাজণ চ ১৩।১৯।৯

২৮৫। **মুরারি মাহাতি** ( চৈ ) কায়স্ক, উড়িয়া, শিথিমাহিতীর ভাই কা ১৩১৯, চ ২১১১৪১

২৮৬। **যত্ন কবিচন্দ্র** (নি) ররগর্ভ আচার্যোর পুত্র, রান্ধণ, শ্রীহট্ট-নবদীপ শ্রী ২৪৪, দে ১১৭, বু ১১০



#### [ 50 ]

ভা ২০১০ই১—্যত্নাথ কবিচন্দ্র প্রেমরসময়।
নিরবধি নিত্যানন্দ যাহারে সদয়।
পদকল্পতকতে যত্ ভণিতায় ১৪টা পদ সংগৃহীত হইয়াছে।
২৮৭। যতু গাঙ্গুলী (গ. যত্ ) আন্ধণ

যতুনাথ মতে যত্নশন চক্রবর্তী। ভক্তি রহাকরে "যে রচিল গৌরাঙ্গের অভূত চরিত"।

• २५५। यञ्चनमन ( है )

২৮৯। **যতুনন্দন আচার্য্য** (অ) ইনি রখুনাথ দাস গোস্বামীর দীকাওক

২৯০। যতুনাথ ( চৈ ) কুলীনগ্ৰাম

बी २७৮, मामः बीगङ्गाधाधाः वत्म मधुत्रिक्षकः

CH 3२2, व 3२b

মন্তব্য: —পদকলতকতে বহুনাথ ভণিতার ১৬টা পদ ধৃত হইয়াছে। এওলির বচয়িতা এই বহুনাথ কিনা বলা যায় না। জগবদ্ধ ভল ও সতীশ চন্দ্র রায় পদকর্তা বহু, বহুনাথ ও বহুনন্দনকে গোবিন্দ লালামতের অহুবাদক বহুনন্দন স্থির করিয়াছেন। কিন্তু কি প্রমাণের বলে তাঁহারা বহু ও বহুনাথ ভণিতার পদ বহুনন্দনে আরোপ করেন ব্রাং ধার না। আমার মনে হয় ইহারা স্বতম্ব বাক্তি।

২৯১। **যশোবন্ত**—পঞ্চনথার অক্সতম। ২৯২। **যাদব দাস** (আ) ২৯৩। **যাদবাচার্য্য**—যত্নাথ মতে গ্লাধর শাথা চ ১৮৮২৬ যাদবাচার্য্য গোদাঞি শীরূপের সদী।

চৈতক্রচরিতে তেইো অতি বড় বঙ্গী।

নবধীপের মহাপ্রভূর সেবাইতগণ ইহার বংশদর বলিয়া পরিচয় দেন ও বলেন যে ইনি বিফুপ্রিয়ার ভাতা।

২৯৪। **রঘুনন্দন** (১৮ ১১৭) ইনি আর্ত্ত রঘুনন্দন নহেন বলিয়া মনে হয়। তাহার জ্যোতিষতত প্রস্থে ১৪৮৯ শকের অর্থাৎ ১৫৬৭ পুটাকের উল্লেখ আছে। ঐ গ্রন্থই তাহার শেষ রচনা বলিয়া কিম্বদস্থি।

২৯৫। **রঘুনন্দন** ( হৈ ৭৬ ) [প্রহায় ] বৈছ, শীগও শ্রী ১৮১ ৮২, ১৮৯ ৯০

> মুকুলদাসং তং বন্দে যং স্থতো রঘুনলন:। কামো রতিপতিলভিদ্ধ যো গোপালমভোজ্যত ॥

স চ বঘুনন্দন এখ ববেশো।
নবহরি-শিয়া হুকুতীমাক্ত:।
বাল্যাবধিত: সাধুচরিত্রে।
ভক্তি বিশোধিত চিত্ত-পবিজঃ ॥
দে ৭৬ মধুর চরিত্র বন্দো শ্রীরঘুনন্দন।
আকৃতি প্রকৃতি যার ভ্রন মোহন ॥
বু ৬৪ বন্দো রঘুনন্দন মুরতি মদন সম
ভগত মোহিত যার নাটে।

মু ৪।১।৫, কা ১৩।১৪৮, না ৯।১, জ ১৪৪, লোচন সর্বাত্ত ২৯৬। রঘুনাথ (অ) রঘুনাথ (গ) ভাগবতাচাথ। এইবা। ২৯৭। রঘুনাথ তীর্থ শ্রী ২৭০, কিন্তু দে. ও বু. তে বঘুনাথ পুরীর বন্দনা। জ ১৪৫—আচাথ্য বৈফবানন্দ পর্ম উদার। পূর্বের বঘুনাথ পুরী নাম ছিল জার।

চ ১১১।০৯ ঐরপ।

২৯৮। রঘুনাথ ভট্ট (চৈ) [রাগমঞ্জী] কাশীবাসী তপন মিশ্রের পুত্র।

ত্রী ১৫০ বন্দে রঘুনাথ-ভট্টং শ্রীভাগবভাধ্যাপকং বিনয়েন

দে ৫৭ রঘুনাথ ভট্ট গোসাঞি বন্দিব এক চিত্তে।

বুন্দাবনে অধ্যাপক শ্রীভাগবতে।

বৃ ৫১ বন্দো বঘুনাথ ভট্ট ক্ষণপ্রেমে উনমত বৃন্দাবনে বজবাসী সঙ্গে। ভাগবত পঢ়েন যবে প্রেমে অঙ্গ আউলায় তবে মধুকণ্ঠ ধরেন প্রসঙ্গে।

মু ৪।১।১৭, চ ২।১৭।৮৬

২০০। রঘুনাথ দাস (চ) [রসময়রী বা রতিময়রী]
কাহস্থ—নীলাচল—বুন্দাবন

তী ১৪০-৫০ বন্দে রঘু ।থালাসং রাধারুও-নিবাসিনং
চৈতত্ত-সক্ষতব্জং তাজ্ঞাতভাবমূত্তমং ।
দে ৫৫ রঘুনাথ দাস বন্দো রাধারুও বাসী



# [ 69 ]

加州村

র ৪৯ - শীরাধাকুভেতে বাস বন্দো রঘুনাথ দাস বে জন চৈতক্ত মর্ম জানে।

म् ४।১१।२১, का ১৫।১०७, ना ১०।०, ह २।১।२७३

ইনি তবাবলী, মৃকাচরিত্র ও ও দানকেলি চিস্তামণি ( গ্রন্থ ) লিখিয়াছেন। প্রভাবলীর ১০১, ২১২ ও ০০১ সংখ্যক প্লোক ইহার রচনা। পদক্ষতকতে ইহার রচিত তিন্টি পদ আছে।

#### ৩ - । রঘুনাথ দাস

🗐 ১৯১, ८म ११, वृ ७०

৩০১। রঘুনাথ বিপ্র [বরাখনা] উড়িয়া ভক্তদের সহিত উল্লিখিত।

খ্ৰী ২২৩, দে ১০৬, বৃ ১৮

७०२। त्रधूनाथ देवछ ( हे ५२८ ) देवछ, नीनाइन

म कार्रावर

৩০৩। রঘুনাথ বৈছা উপাধ্যায় (নি) বৈছা

প্রীচৈত্যাভাগবত মতে নিত্যানন্দের স্থপ্রসিদ্ধ ভক্ত।

🌣 🛚 । त्र भू नीला अत ( देठ ) नीलाठल

৩০৫। র**মুপতি উপাধ্যায়**—চরিতামৃত ২।১৯৮৫

ইনি কাশীতে শ্রীচৈতত্তের সহিত মিলিত হন। যথা-

হেন কালে আইলা রঘুপতি উপাধ্যায়।

তিরোহিতা পণ্ডিত বড় বৈক্ষব মহাশ্য।

চরিতামুতে ইহার রচিত যে তিনটা লোক উদ্ধৃত হইয়াছে তাহা যথাক্রমে পদ্মাবলীর ১২৬, ৯৮ ও ৮২ লোক। এই তিনটা ছাড়া পদ্মাবলীর ৮৭, ৯৭, ও ০০১ লোকও ইহার রচনা। ইনি ও নিত্যানন্দ শাখাভুক্ত রঘুনাথ বৈছ উপাধ্যায় ভিন্ন বাক্তি। ইনি "পুরুষার্থকৌম্দী" নামক বেগান্ত গ্রন্থের রচ্মিতা হইতে পারেন। (রাজেন্দ্র লাল মিত্র Notices, VII, No. 2377, PP. 143-4)

৩০৬। রঘুমিশ্রে (গ) [কর্প্র মঞ্রী]

৩-৭। রত্নাকর পণ্ডিত [নিধি]

৩০৮। রত্তগর্ভ পণ্ডিত-আগ্রণ, নবদীপ

ভা ২/১/১৫১ - রত্তগর্ভ আচার্য্য বিখ্যাত তার নাম।

প্রভুর বাপের সঞ্চী, জন্ম এক প্রাম।

ইহার তিন পুত্রের নাম ক্লফানন্দ, জীব ও ধছনাথ কবিচল । ইনি ভাগবত পাঠ করিতেন।



# [ 40 ]

ত । রক্সাবতী [বুখভাছ পদ্মী] মাধ্য মিত্রের পদ্মী ও গদাধর গোস্বামীর মাতা।

৩১ । **রাঘব গোস্বামী** [ চম্পকলতা ] ব্রান্ধণ, স্রাবিড়—গোর্জন।

গৌ. গ. দী. ভজি রত্বাকাশাখা-গ্রন্থো যেন বিনিমিতঃ

জী ১৫১-২ গোন্ধামিনং রাধ্বাখাং গোর্জনবিলাসিনং বন্দে ভাববিশেধেণ বিচরতং মহাশ্রং।

म वब बाघव शामािक वत्ना शावकन विलामी

রু ৪৯ রাঘব গোসাঞি তবে বন্দো বড় ভক্তি ভাবে থাহার বিলাস গোবর্জনে।

জয় রুঞ্চ— প্রাবিড়ে গোপাল ভট্ট রাঘব গোসাঞি। কাশীখর হরিভট্ট প্রকাশ তথাই।

৩১১। রাঘৰ পণ্ডিত ( চৈ, নি ) [ ধনিষ্ঠা ] ব্রাগ্লণ, পানিহাটী।

বী ১৫৮-৬ ততক রাঘবাননং নিত্যাননাত্তাবিনং
বীমান্ পদাবতীস্ত্থধেশনি কুত্হলী।

ধাড়িখ-বৃক্ষ-নীপক্ত পুপাং বৈ সমধোজয়ং।

দে ৬০ মহাঅন্তব বন্দো পণ্ডিত রাঘব।
পানীহাটী গ্রামে বার প্রকাশ বৈভব।

রু ৫৫ ় বন্দিব রাঘবানন্দ যার ঘরে নিত্যানন্দ অঞ্ভাব করিল বিদিত। বাজীর জাধীর গাছে কদথ ফুটিয়া আছে সর্ব্ব লোক দেখিতে বিশ্বিত।

রাঘব পণ্ডিতের নামান্তর যে রাঘবানন্দ তাহা ভা এল।৪৫৫ পৃ: হইতে ভানা যায়।

মু ৪।১।৪, কা ২=।১২, না ৮।৩=, ভা তার।৪৪৮, জ ৭৩, লো ৩, চ ২।১=।৮২ রাঘবের ঝালি হপ্রসিদ্ধ।

৩১২। রাঘবপুরী [সিছি]

€ 108, CH C=

৩১৩। **রাজীব পণ্ডিভ**—ব্রাদ্মণ, নবদ্বীপ

वी २१२, व ३०३

०) श जांदबस्य (रेह)

# [ ৬৯ ]

চ ১।১০।৮০ তার মধো রূপ সনাতন বড় শাখা অনুপম জীব—রাজেরাদি উপশাখা।

৩)৫। রামগিরি জ ৮৮

৩১৬। রামচন্দ্র কবিরাজ (নি) ইনি নরোভ্য ঠাকুরের বর্, রামচন্দ্র কবিরাজ নহেন। গৌড়ীয় মঠ সংস্করণ মতে ইনি চিরজীব সেনের পুত্র। এই মত মুণালকুন্তি ঘোষ মহাশয় স্বীকার করেন নাই (গৌং পং তঃ ভূমিকা ২০৪ পুং) রামগোপাল দাস "শাখা বর্ণনে" রঘুনন্দনের এক শিল্পের নাম রামচন্দ্র বলিয়াছেন।

৩১৭। **রামচন্দ্র খান**, ভা তাহাও৮৩-৫ ইনি প্রভুকে ছত্রভোগ হইতে নীলাচলে ঘাইতে সাহায়া করিয়াছিলেন।

৩১৮। রামচন্দ্র দ্বিজ—রাজণ, উৎকল

ত্রী ২৮০, দে ১০৭, র ১১০

জয় কৃষ্ণ—উৎকলে উড্ডা বলরাম দাস।

নাথ দাস আর তথাই প্রকাশ।

শিশু রুষ্ণ দাস দ্বিজ রামচন্দ্র আব।

মাধব নায়ক পট্ট তথাই প্রচার।

৩১৯। রামচন্দ্র পুরী [বিভীষণ+জটিলা] চরিতামৃত ৩.৮১৯শে কবিরাজ গোস্বামী ইহাকে মাধবেল পুরীর শিশু বলিয়াছেন, কিন্তু ১০৯ পরিচ্ছেদে উপেকা করিয়া ইহার নাম করেন নাই।

শী ১২৫ সদা প্রভূ বশাং বন্দে রামচন্দ্র পূরীং ততঃ
দে ৪৫ বন্দিব শীরামচন্দ্র পূরীর চরণ।
প্রভূ যারে কহিলেন শীরামের গণ।
বৃ ৪০ বন্দে রামচন্দ্র পূরী যাহার বিক্রম হেরি
নিবর্ত্ত করিল প্রভূ সব।

গৌ. গা. দীতে (২০) আছে যে হেতু রামচক্র পুরীতে জটিলা প্রবেশ করিয়াছিলেন, সেই হেতু ইনি প্রভুর ভিক্ষা সম্বোচাদি করিয়াছিলেন। চরিতামুতে ০৮১৬ য়ে রামচক্র পুরীকে "সর্কা নিন্দাকর" বলা হইয়াছে। এরপ হইলে বৈশুব বন্দনায় ভাঁহার নাম থাকিত কিনা সন্দেহ।

৩২=। রামতীর্থ শ্রী ২৬৯

৩২১। রামদাস-চরিতামৃত ২০১৮০১৯৭। পাঠান বিজ্লি থানের ভূতা (২০৮০১৯৮)। কিন্তু ২০১৮০১৭৫ হে ইছাকে "কালবস্ত্র পরে সেই লোকে কহে পীর"

#### [ 90 ]

বলা হইয়াছে। পার কথনও চাকর হইতে পারে না। যাহা হউক প্রভু ইহাকে বৈক্ষব করিয়া রামদাশ নাম দিয়াছিলেন।

৩২২। রামদাস ( চৈ ) (বিচক্ষণ শুক্পকী ) শিবানন্দ সেনের পুত্র, বৈছা, কাঞ্চন পলী।

দে ১৩, কিন্তু কোন প্রাচীন পুথিতে বন্দনা নাই।

৩২০। রামদাস কবিচন্দ্র (চৈ) (কুরদাকী) শ্রী ১০৬, দে ৩৩, বৃ ৩৬

७२८। রামদাস বালক

**बी २४२, ८म ১२२** 

়ুব্ধ। রামদাস বিপ্রা—১ ২।১।১০০, ২।১।১৯৫ দকিণ মণুরার আদ্ধণ। আঠিচতর কুর্মপুরাণের শ্লোক দেখাইয়া ইহাকে প্রবোধিত করেন।

৩২৬। **রামদাস বিশ্বাস**, কায়স্থ, "মহাপ্রভু অধিক তাঁরে কুপা না করিলা" (চ্জাম্লাভ-১৮)।

> দর্ক শাত্তে প্রবীণ কাব্যপ্রকাশ অধ্যাপক। পরম বৈক্ষব রঘুনাথ উপাদক।

ইনি পট্টনায়ক গোষ্ঠাকে কাব্য প্রকাশ পড়াইতেন ( ৩।১৩।১১০ )।

ত্ব। **রামানন্দ,** জ ৭০ "গোসাঞির মামা রামানন্দ সংসারে পৃঞ্জিত"। গোসাঞি অর্থে গদাধর পণ্ডিত।

৩২৮। রামানন্দ রায় ( চৈ ) [ অজ্ন+ অজ্নীয়া+ ললিতা] ভবানন্দের পুত্র, উডিয়া, করণ—

শী ১৬৬-৮ রামানন্দং ততো বন্দে ভক্তি লক্ষণ সঙ্গান মজাননাদমূলাকিটেতজেন কপালুনা সভক্তিসিদ্ধান্ত চরণামুডং ব্যতিং ভূবি

দে ৩৭ রায় রাখানন্দ বন্দো বড় অধিকারী। প্রভূ বারে লভিলা তুলভি জ্ঞান করি।

র এ৮ বন্দোরায় রামানন্দ শার সঞ্চে গৌরচন্দ্র বিচারিলা ভক্তির লক্ষণ।

মু আহলাহ, কা ২২।২০=, না ৭।০, ভা আলাহতে, জ ২, লো ২, চ ২।১।৯৫। জগনাথ-বলভ-নাটক রচয়িতা। পভাবলীর ১০ সংখ্যক লোক ইহার রচনা। ইহার সম্বন্ধে ভারিণীচরণ রথ

#### [ 95 ]

( J. B. O. R. S. Vol VI Pt. III, P 448) একটি প্ৰবন্ধ প্ৰকাশ করিয়াছেন।

৩২৯। **রামানন্দ বস্তু** (১৮) [ স্থক্ষী ] 'গুণরাজাবর' (না না২) অর্থাৎ কুলীন আমের মালাধর বস্তু গুণরাজ খানের পুত্র।

ত্রী ২৩৯ বস্থ-বংশাগ্রগণাং রামানদং স্বগোষ্ঠাকং

(म ১১৫ वद्ध वः श्वांशानम विभव यख्ता।

যার বংশে গৌর বিনা অয় নাহি ভানে ॥

র ১০৮ বহু বংশের তিলক বন্দিব রামানন্দ। যার গোষ্ঠী ভ্রমর পদারবিন্দ।

मू ८ १११७, मा भार, ह राउनामन

৩৩ । রামনাথ [ চতু:সনের অক্তম ]

০০১। রাম ভজ (নি ৫٠)

৩৩২। রাম ভট্টাচার্য্য ( হৈ ) ব্রাঞ্চণ, নীলাচল

5 213 +1399

৩৩०। রাম সেন (नि ৪৮) বৈছ

৩৩৪। রামাই (চৈ) [প্রোদ] নীলাচলে প্রভুর ভূতা

৩০৫। রুজ পণ্ডিত [বর্ণপ গোপাল] রাহ্মণ, বল্লভপুর । হগলি জেলার মাহেশের ১ মাইল উত্তরে )।

৩৩৬। রূপ গোস্বামী ( চৈ ) [রপমন্তরী ] ব্রাহ্মণ, বুন্দাবন

প্রী ১৩৬—৪২ বন্দে তৌ প্রমানন্দৌ প্রভূ রূপসনাতনৌ। বিরক্তোচ রূপাল্চ বৃন্দাবন-নিবাসিনৌ।

যং পাদাজ-পরিমলগদ্ধলেশ-বিভাবিত:।

জীবনামা নিষেবের তাবিহৈব ভবে ভবে।

গ্রীরূপ: সর্ব্ধ শাস্তাণি বিচার্য প্রভূ-শক্তিমান ।

कृष-८ ध्य भद्रः उद्यः निर्मिशं कृभानिधिः ॥

দে es বন্দে রূপ সনাতন ছই মহাশয়।

বুন্দাবন ভূমি ছুঁহে করিলা নির্ণয়।

রু ৪৭ বন্দো রূপ স্নাতন বস্তি জীর্ন্দাবন

পরম বিরক্ত উদাসীন।

রাজ্ঞাপদ পরিহরি ভিক্কের বেশধরি

যে লইল করত কৌপীন।

# GENTRAL LIBRARY

# [ 92 ]

সমস্ত বৈক্ষৰ গ্ৰন্থে উলিধিত। গৌড়ীয় বৈক্ষৰ সম্প্ৰদায়ে যে উপাসনা প্ৰণাণী প্ৰচলিত আছে, ভাহা ইহাৰ দাবা উদ্ধাবিত।

০০৭। লক্ষণ আচার্য্য

€ 289, CF 552

৩০৮। লক্ষ্মীনাথ পণ্ডিড (গ, যহ ) [রদোরাদা]

৩৬৯। লক্ষীপ্রিয়া—বিবস্তর মিত্রের প্রথমা স্বী

बी ०५, तम २, व ३२

3 46

সমস্ত চরিত গ্রন্থে উলিখিত।

৩৪-। লোকনাথ [ চতুঃসনের অগুতম ] বছনাথ মতে লোকনাথ ভটু।

৩৪১। **লোকনাথ পণ্ডিড** (আ) [লীলামগ্রী] তালখেড়া (খণোহর) নিবাসী পদ্মনাভ চক্রবর্তীর পুত্র (ভক্তি রহাকর পুঃ ২১) ব্রাহ্মণ, বুন্দাবন।

A .es, CH eb, 7 e2, 5 21:6180

অছৈতের আদেশে লোকনাথ ভাগবতের দশ্ম স্বচ্ছের এক টীকা লেখেন (Calalogue of Sanskrit Mss. by M. M. H. P. Sastri, Vol V, Purana No. 3624)।

ত । বতে শ্বর ( চৈ ) [ অনিক ছ ] যতুনাথ মতে গদাধরের শিশু, রাজণ, আকনা ( হুগলী )। কালনা সংস্করণ চরিতামুতে জন্মস্থান সেটেরি লেখা হুইয়াছে।

জী ১৬৯—৭০ ভতো বজেশবং বন্দে প্রভৃচিতং সূত্র ভং

যশ্বিন্ প্রেমাননভয়া কীর্ত্তনং কুতবান্ প্রভূ:।

দে ৬৮ বক্রেশর পণ্ডিত বন্দো দিব্য শরীর।

অভ্যন্তরে ক্লাতেজ গৌরান্থ বাহির। বন্দিব শীবজেশ্বর নাহার নৃত্যে বিশ্বস্তর

महानत्म कविना कीर्यन ।

নবদীপ লীলায় বক্রেশর একজন প্রধান পরিকর ছিলেন। যথা নাটকে (віь)
বক্রেশরে নৃত্যতি গৌরচক্রো গায়তামন্দং করতালিকাভিঃ
বক্রেশরো গায়তি গৌরচক্রে নৃত্যতাগৌ তুল্য-স্থামূভূতিঃ

মুতা১৭৷১৭, কা ১৩৷১৪৫, না ১৷২০, ভা ২৷১৷১৩৯, জ ২, লো ২, চ ২৷১৷২৩৮

না ৮।০০ যে সার্কভৌম বলিতেছেন যে তিনি শ্রীবাস, বক্রেশ্বর, আচার্যা রক্ত ও পুওরীককে বাল্যে দেখিয়াছেন। ইহার দারা বুঝা যায় যে বক্রেশ্বর শ্রীচৈত্ত অপেকা ব্যুসে অনেক বড়। বক্রেশ্বর বৈক্ষব সমাজে খুব প্রভাবশালী ছিলেন। বরাহ



# [ 90 ]

নগর পাট বাড়ীতে গোপালগুরু বিরচিত "বক্রেখরাইকে"র তুইথানি (১৪ - সংখ্যা দেবনাগর অক্ষরে, ও ৬৭৭ সংখ্যা বাংলা অক্ষরে লিখিত) পাতড়া আছে। তাহার বিতীয় শ্লোক হইতে জানা যায় যে দক্ষিণ ও পশ্চিম ভারতে বক্রেখর শ্রীচৈত্ত্যের ধর্ম প্রচার করিয়াছিলেন। যথা—

> কর্ণাট-লাট-মরহট্ট-কলিশ্ব-রাষ্ট্র সৌরাষ্ট্র কোতু-মলয়ালয়-গুর্জ্জরেষ্। যক্ত প্রভববিভবে। বিভনোতু ভক্তিং বক্তেশ্বরং ভমিহ সংপ্রবরং নমামি।

১০০৭ সালে অমৃতলাল পাল 'বক্রেশ্বর চরিত' নামে একথানি বই লিখিয়া প্রকাশ করেন। তিনি বলেন যে ইহার শিশ্ব গোপাল গুরু রাধাকাস্ত মঠের প্রতিষ্ঠাতা।

৩৪০। বনমালি আচার্য্য [বিখামিত্র ১৮] লক্ষীর বিবাহে ঘটক। খ্রী ১১৯-২০, দে ৪২, বু ৪১

म् अल्ले, का ७१३२, जा अनावत, क ०७, ५ अव्यादक

৩৪৪। वनशानि कविष्ठल (अ)

৩৪৫। বনমালি দাস (আ) [চিত্রা ১০১] বিফুদাস বৈছের লাতা। রাম-গোপাল দাস "শাবা বর্গনে" বনমালি কবিরাজকে রঘুনন্দনের শিশু বলিয়াছেন। "বৈঞ্চব বন্দনা" হইতে যথন জানা যাইতেছে যে বনমালি দাস বিফুদাস বৈদোর লাতা, তথন ইহার উপাধি কবিরাজ হওয়া সম্ভব।

> বনমালি কবিরাজ আর শাখা হয়। ঘোড়ঘাটে করিলা তিঁহ সেবার আশ্রয়।

> > রামগোপাল

जी २२8, CF > 9

৩৪৬। বনমালি পণ্ডিড ( চৈ ) [ হংগামা] দরিত্র ভক্ত, রাগণ, নবধীপ। জী ১০৮, দে ৬৮, র ৩৭

म् २१३३१३, २१३८१२०, का ११९७, छा ७।३१८३३, ह ३१३११३३७,

৩৪৭। বনমালি পণ্ডিত [ মালাধর ১৪৪ ] গৌরবল্লভ

৩৪৮। বলদেব মাহাতি, উড়িয়া, কামস্থ

बि २७७, तम ३३8, व ३०¢

ত ১৯। বলভজ ভটাচার্য্য ( চৈ ) [মধুবেক্ষণা] রাক্ষণ, নীলাচল। জীচৈতত্ত্বের সহিত বৃন্ধাবনে গিয়াছিলেন।

৩৫ - । বলরাম (অ) অবৈত পুত



#### [ 98 ]

৩৫১। বলরাম ওড় উড়িয়া, মত্তবলরাম,

बी २००, CF ১১०, व ১०२।

৩৫২। বলরাম খুটিয়া—কানাই খুটিয়ার পুত্র, উড়িয়া

প্রী ২২৮, দে ১০৯, বু ১০০ ( দাস বলরাম )

৩৫০। বলরাম দাস (নি) বাদ্ধণ, দোগাছী (নবদ্বীপের নিকট)

🖹 ২৫৫- বন্দে বলরাম-দাসং সংগীতাচার্য্য-লকণং

সেবতে পরমানশং নিত্যানশ প্রভূং হি য়:।

দে ১২৪— সঙ্গীত কারক বন্দো শ্রীবলরাম দাস।
নিত্যানন্দ চন্দ্রে থার অকথা বিশ্বাস।

नु ३००

ইহার রচিত ৫০টি পদ গৌ. প. ত. তে আছে। ইহার বংশধরদের মধ্যে একজন হইতেছেন স্থপ্রসিদ্ধ বৈষ্ণব সাহিত্যিক হরিদাস গোস্বামী।

৩৫৩ ক। বল্লভসেন (চি) শিবানন্দ সেনের ভাগিনেয়,

देवण, कांिमानि।

Cम ३२७, ना bioo

৩৫s। বল্লভাচার্য্য [ জনক ] লম্বীর পিতা

ৰী ১১৫-৬, দে ৪০, ব ৩৯

म् ১।२।७, का ७।७, जा ১।१।१७, व २, ५ ১।১६।२६

৩৫৫। **বল্লভ আচার্য্য বা ভট্ট** (শুক্দেব) বল্লভাচারী সম্প্রদায়ের প্রতিষ্ঠাতা।

**ब** २०७, ह २।ऽ।२८३

উপেন্দ্রনারায়ণ সিংহ চরিতামুতের বন্ধত ভটুকে বন্ধভাচারী সম্প্রদায়ের প্রতিষ্ঠাতা বন্ধভাচার্যা বলিয়া স্বীকার করিতে চাহেন না ( বিষ্ণুপ্রিয়া গৌরাঙ্গ পত্রিকা বানংবং পৃঃ)। কিন্তু কবি কর্ণপূর যথন ইহাকে শুকদের বলিয়াছেন ও বন্ধভাচার্যা যথন ভাগবতের প্রবোধিনী টীকার লেখক বলিয়া জানা যায়, তথন উভয়ে এক ব্যক্তি হওয়াই সম্ভব। গ্রিয়ারসন সাহেব ( J. R. A. S. 1909. P. 610 পাদ টীকায় ) ইহাকে লম্মীর পিতা বন্ধভাচার্যাের সহিত এক বলিয়া ভীবণ ভ্রমে পতিত হইয়াছেন। দক্ষিণী ব্রাহ্মণদের সহিত বাংলার বৈদিক ব্রাহ্মণের আদান প্রদান চলে না। বন্ধভাচারী সম্প্রদায়ের সহিত গৌড়ীয় বৈক্ষব সম্প্রদায়ের এখন কোন প্রকার বিরোধ নাই। ১৩৩১ সালের ১২ই চৈত্র তারিখে কলিকাতা ক্লাইভ ষ্টাটস্থ "পুষ্টিমার্গীয় বৈক্ষব সঞ্জেব"

# [ 90 ]

চতুর্থ বার্থিক উৎসব উপলব্দে গৌড়ীয় মঠের গুরুদেব ও বিষ্ণুপাদ শ্রী লপর্মহংস ঠাকুর আহত হইয়া উপদেশ দিয়াছিলেন ( গৌড়ীয় ৩।৩২।১৪ পৃঃ )।

००७। बहुछ हे छ छ छ छ । ज

০৫৭। বল্লভ রলবাটী—কাশী

৩৫৮। বসন্ত (নি)

৩৫%। বস্ত্রধা (বারুণী) নিত্যানন্দের স্ত্রী-

🖹 ४५-४२, ८२ ३२, वू ५४

৩৬০। বাণীলাথ লায়ক ( হৈ ) রামানন্দ রাথের ভাতা, উড়িয়া, করণ

चि ১७१, त्म ७६, तृ ६१,

का ५०१५७७, मा भार, ह २१५०।४८

५५)। वागीनाथ वस्त्र ( रेठ ) कायक, क्लीन धाम

৩৬২। বাণী নাথ বিপ্রে (চৈ) [কামলেখা] ব্রান্ধণ, টাপাহাটা (নবদীপের নিকট)। ইনি যে গৌর-গদাধর মূর্তি স্থাপন করেন, তাহা আঞ্জ প্রিত হইতেছে বলিয়া স্থানীয় প্রবাদ।

म् ८। ११२२, का २०१७, ज २

७५०। वानीनाथ जन्महात्री (१)

७७८। वामात्रभा - क ४४

৩৬৫। বাস্তদেব—বান্ধণ, কৃত্মক্ষেত্র

म् ७१८८१७, को २२१५०७, मी ११७, क ७৮, ह २१५१३०

৩৬৬। বাস্তদেব দিজ—আগ্রণ, নবধীপ। নবধীপে অভিনধের দিন ইনি অভিনেতাদিগকে সাজাইয়া দিয়াছিলেন (না ৩১২)।

প্রী ১০৯, দে ৩৬ ( বাহ্নদেব ভাদর ), রু ৩৭।

৩৬৭। বাস্ত্রোষ ( চৈ, নি ) [গুণতুল ] পদকর্তা, কীর্ত্তনীয়া, কায়স্থ, কুলাই (বর্দ্ধমান )

**ब** ১৯७, ट्रिक्ट, व ७४

खा जाबाहरूर, त्ना ४, 5 २१३)१११

৩৬৮। বাস্তদেব তীর্থ [ জয়স্তেয় ]

- 2 295, CF 305, 3 300

#### [ 98 ]

৩৯৯। বাস্থদেব দত্ত ( চৈ ) [ মধুত্রত নামক গায়ক ] বৈছ, চট্টগ্রাম জেলার চক্রশীল গ্রামে জন্ম—নবজীপে ও পরে কাঞ্চনপলীতে বাস। জ্য়ানন্দ ( পৃঃ ৭০ ) মতে মুকুন্দ দত্তের ভাই।

শ্রী ৯৩—বন্দে বাজ্বদেব দত্তংমহত্তৈঃ পরিপুরিতং।

যক্তাঙ্গবামুম্পর্শেনসভঃ প্রেমমুতোভবেং।

দে ২৬ বাহুদেব দক্ত বন্দো বড় গুছভাবে। উৎকলে থাহাবে প্রভু রাখিলা সমীপে।

কবি কর্ণপ্রের মহাকাব্য ও চরিতামৃত পাঠে মনে হয় নাথে ইনি উৎকলে বাস করিতেন। ক্লফদাস কবিরাজ লিখিয়াছেন যে প্রভূ শিবানন্দ সেনকে আদেশ করেন থে তিনি যেন বাহুদেব দত্তের সাংসারিক ব্যাপার তথাবধান করেন।

न ७०

বন্দো বাস্থদেব দত্ত যাহার নিগৃত তত্ত মহস্ততা কহনে না যায়।

গাঁহার অঙ্গের বায়ে

কৃষ্ণ প্রেম ভক্তি হয়ে

উপমা কি দিব আর তার।

মু ৪।১৭।৫, কা ১০।১৪৬, না ৮।০০, ভা ১।২।১৬, জ ২, লো ২, চ ২।১২।৭৯ কবি কর্ণপুর মহাকাব্যে ( ১৭।০২ ) ইহাকে "ভিষগৃষভ" বলিয়াছেন

৩৭০। বিজয় দাস (অ)

৩৭১। বিজয় পণ্ডিড (অ)

৩৭২। বিজয় লেখক (চৈ) [নিধি]ইনি প্রভূর পুথি লিখিয়া দিতেন। প্রী ১০৭, দে ৩৩, বৃ ৩৬ (লেগক বিজয়ানন্দ)

म् ४। ५१। १। । २। २। २०२

পদক্ষতকতে গৃত বিজয়ানন ভণিতা মৃক্ত একটি পদ ইহার রচনা বলিয়া জগহরু ভজ ও সভীশচন্দ্র রায় অহমান করিয়াছেনে।

৩৭৩। বিজুলিখান—পাঠান রাজকুমার— চ ২০১৮১৯৭ প্রীচৈতন্ত ইহাকে বৈঞ্চব করেন।

৩৭৪। বিভানন্দ ( চৈ ) রামগোলাল দাদের "শাখা বর্ণনে" ( পৃ: ৮ ) বিদ্যানন্দ পণ্ডিত নাম পণ্ডিত অকিঞ্ন। গদাধর ঠাকুরের হন কুপার ভাজন॥

क्लीन छाम।

৩৭৫। বিভানত আচার্য্য-মহুনাথ মতে গদাধর শাখা

#### [ 99 ]

# ্তণ্ড। বিভানিধি [নিধি ১০০ ] শী ১০০

০৭৭। বিজ্ঞাবাচপ্পতি [ স্বধ্রা ] সাধিভৌমের আতা; রাজণ, কুলিয়ার নিকট। জয়ানন্দ মতে পিরলা। গ্রামে বাড়ি। পিরলারে বর্ত্তমান নাম পাকলীয়া মু ৩০১৭০৪, ভা ১০১১১, জ ১২, চ ২০১১৪০

 গৌড়ে পুনরাগমনের সময় ঐতিহত্ত ইহার বাড়িতে ছিলেন। স্নাতন গোস্বামী রহংবৈঞ্বতোষণীর মঙ্গলাচরণে ইহাকে গুরুবর্গের মধ্যে উল্লেখ করিয়া বন্দনা করিয়াছেন।

৩৭৮। বিপ্রদাস—উডিয়া

ত্রী ২২৫, দে ১০৬, বু ৯৬ ( বিপ্রদাস উৎকলিয়া )

৩৭৯। বিশ্বরূপ [বলদেব ] প্রীচৈতব্যের অগ্রঞ্জ-

বী ২৫-২৬ অথ বন্দে বিশ্বরূপং সংক্রাসি-গণ-ভূপতিং শঙ্করারণা-সংজ্ঞা তং চৈতকাগ্রজমন্ততং ॥

দে ৭ বন্দনা করিব বিশ্বপ ধরা ধরা তৈতির অগ্রজ নাম শ্রীশঙ্করারণা

বু তবে বন্দে। বিশ্বরূপ ঠাকুর সলাসীভূপ শ্রীশঙ্করারণ্য ধল্লনাম।

म् अशक, का शरक, जा अअल, ज अअ, ठ अवहार

৩৭৯। বিশ্বেশ্বরা**নন্দ আচার্য্য** [ দিবাকর ]

ओ ১৩0, CF €5, वृ 8७

৩৮০। বিষ্ণাই হাজড়া (নি)

৩৮১। বিষ্ণুদাস-ব্রাহ্মণ, নবদীপ, বিশ্বভরের অধ্যাপক।

খ্রী ১০২, দে ৩৪, বু ৩৪

म् ऽ। २ ३, का णर

७५२। नियूष्माम ( रेक्ट ১৪৯)

নিলোম গদাদাস আর বিফ্দাস এ সভার সঙ্গে প্রভুর নীলাচলে বাস।

দক্ষিণ রাড়ীয় কায়স্থ — পিতা সদাশিব। ইনিই কবীক্র বিফুদাস নামে খাত। কিম্বদন্তি এই যে ইনি মহাপ্রভুর আদেশে ঢাকা জেলার সানোরাগ্রামে যাইয়া বাস করেন। ইহার সহিত কপীক্র সম্প্রদায়ের কোন সমন্ধ নাই। "কবীক্র পরিবারের

# [ 95 ]

গোস্বামীদের দ্বারা গাড়ো ভ্রাতির অনেক লোক বৈষ্ণব হইয়াছেন" (বীরভূমি ৮০, পু: ৪০)। ভক্তিরভাকরে কিন্তু এক কবীন্ত্রকে পাপির্চ বলা হইয়াছে।

যথা— স্বমত রচিয়া দে পাপিন ছ্রাচার ক্র্যে ক্রীন্ত বন্ধদেশেতে প্রচার ॥ (১০৪৫ পুঃ)

७৮०। विकूमाम आहार्या (नि) वालन, नवधीन, नमन आहार्यात छाहे।

अ**० 8 । विकुश्माम देवछ** —

শ্ৰী ২২০ বন্দে রঘুনাথ বিপ্রং বৈখাং শ্রীবিফ্লাসকং

CR 300, व क्रम

৬৮৫। বিষ্ণুপ্রিয়া [ ভূ ] বিশ্বস্তর মিশ্রের বিতীয়া পত্নী

খ্রী ৩১, দে ৯, র ১২

সমত বৈক্ষৰ প্ৰছে উলিখিত

মু ৪।১৪,৮ বিফুপ্রিয়া কর্তৃক প্রীচৈতক্সের মৃতি স্থাপনের কথা আছে।

৩৮৬। বিষ্ণুপুরী (চরিতামৃত মতে মাধবেল পুরীর শিয়া, কিন্ত গৌ. গ. দী. মতে জয়ধর্মের শিয়া; বিহত। ভক্তি-রত্বাবলীর লেথক।

শ্রী ১৩২ ততো বিষ্ণু-পুরীং বন্দে ভক্তি-রত্বাবলীকৃতিং

দে ৪৯ বিফুপুরী গোসাঞি বন্দো করিয়া বতন বিফু ভক্তি রতাবলী থাহার গ্রন্থন ॥

বু বন্দিব শ্ৰীবিফুপুরী বিফুভক্তি রণ্ণাবলী যে করিল লোক নিজারিতে।

হরপ্রদাদ শান্তী (Catalogue of Sanskrit Mss, Vol. V. Purana P. (XXXIII) বলেন যে বিফ্পুরী ১০০০ শকে, ১৬০০ খুষ্টান্দে ভক্তি রত্বাবলী গ্রন্থ সমাপ্ত করেন। এই কথা সতা হইলে বিফ্পুরী জীচৈতক্তের একশত বংসর পরবর্তী হন। Egglingএর India Office Catalogue (Vol. VI, P. 1272-73) হইতে জানা যায় যে ভক্তি-রত্বাবলীর পুথি ১৫৯৫ খুষ্টান্দে নকল করা হইয়াছিল।

ভাঃ স্থাল কুমার দে বিফুপ্রীকে প্রীচেতক্তের বহু প্রাব্রী বলিয়া স্থিব করিয়াছেন (পভাবলী Notes on Authors P. 232)। অসমীয়া ভাষায় লিখিত দৈত্যারি পণ্ডিতের শহর চরিতে আছে যে শহর দেব কণ্ঠভূযণের নিকট হইতে বিফুপ্রীর ভক্তিরত্বাবলী পাইয়াছিলেন। যথা—

রত্বাবলী গ্রন্থ বারানদী হল্তে আনি।
শঙ্কর দেবক দিয়া বুলিলন্ত বাণী।



विकृश्वी नारम এक मन्नामी आहिल। ইতে। গ্রন্থখানি বাপু তেঁছো বিরচিল।

অসমীয়া "গুরুচরিত্র" পুথিতেও ঐরপ কথা আছে। অসমীয়া বিবরণ হইতে মনে হয় যে ভাঃ দের অভ্যান সভা।

কিন্তু বিফুপুরী যে ঐতিচততার সমসাময়িক ছিলেন ভাহার চারিটা প্রমাণ পাওয়া যায় (১) চরিতামুতে তাহাকে মাধবেল পুরীর শিয়া বলা হইয়াছে। (২) হিন্দী "ভক্তমালের টীকাকার প্রিয়াদাস্থী লিখিয়াছেন যে মহাপ্রভুর পত্র পাইয়া বিকুপুরী ভক্তিরতাবলী সঙ্গন করিয়া পাঠান ( পৃ: ৫৫৪ )। (৩) বুকানন ফামিলটন ১৮০২ খুষ্টাব্দে পূর্ণিয়ায় শুনিয়াছিলেন যে তিনশত বংসর পূর্বে বিষ্ণুপুরী নামে এক विधान मधारी किलान - जिनि भारत विवाह करतन (भूगिया तिरभाई, २१९ भू:)। ১৮০৯ এর তিনশত বংসর পূর্ব্ব মানে ১৫০৯ খুষ্টাব্দ, শ্রীচৈতন্মের বধন ২০ বংসর বয়স। রামচরণ ঠাকুর অসমীয়া ভাষায় শহর চরিত গ্রন্থে লিখিয়াছেন যে বিফুপুরী "শৃদার স্থক তেবে ভার্যাক থুজিল" ( ৩২৯৬ প্রার )। (৪) জ্বানন্দ ('পৃ: ১২৬') ও লোচন (পৃ: २) বিষ্ণুপুরীকে ঐচৈতল্পের গণমধ্যে গণনা করিয়াছেন।

সম্ভবত বিষ্ণুধী জয়ধর্মের শিশ্ব ছিলেন। কিন্তু তিনি অত্যন্ত দীর্ঘজীবী ছিলেন বলিয়া মাধবেক পুরী এবং ত্রীচৈতনোর রূপা পাইয়াছিলেন।

৩৮৮। বীরচন্দ্র বা বীরভজ (নি) (সম্বর্ণ) ব্রাহ্মণ বড়দহ

@ 43-48

বীরচন্দ্রং প্রভুং বন্দে প্রীচৈতল্প-প্রভুং হরিং

ক্লত-বিতীয়াবতারং ভ্রনত্রয়-তারকং।

বেদধর্ম-রতং তত্র বিরতং নিরহয়তং

निर्मे अक्ष मञ्जार का क्षेत्री (भवकः विरु ॥

CF 32-30

वक्षा काइवी वत्मा कहे ठाकुवानी। যার পুত্র বীরভন্ত জগতে বাখানি।

শ্ৰীবীরভদ্র গোসাঞি বন্দিব সাবধানে।

সকল ভূবন বশ থার আচরণে ।

সানন্দে পড়িয়া ভূমি বন্দো বহু জারুবিনী व ३४-३१

वीत्रहस याहात नमन।

वन्मिव ठाकूत्र वीत

ভঙ্গ গঞ্জীর ধীর

যার গুণে ভরিল ভূবন। নীলাচলে গৌর হরি নিত্যানক সঙ্গে করি নিভূতে কহিল যুক্তি সার।

তাহার কারণ এই বীরচন্দ্র প্রন্থ সেই
পৌরাপ আপনি অবতার।

সন্দেহ না কর ইথে স্তীচৈত্ত্ত্য ভাগবতে
লিখিলেন বৃন্দাবন দাস।

এই সব অভত্তব অভিরাম জানে সব

প্রণমিয়া করিল প্রকাশ।

শ্রীচৈতন্ত ভাগৰতে বীরচন্দ্রের নাম নাই। কবি কর্ণপূর গৌ. গ. দী তে লিবিয়াছেন—

স্থাধণস্তা যে। বৃহেঃ পয়োধিশায়ি-নামকঃ। সূত্র বীরচক্রোহভূজৈতভাভিন্ন বিগ্রহঃ।

চরিতামুতের ১।১১।৫-৯ এ বীরভদ্রের উল্লেখ আছে। অথৈত প্রত্ব প্রদের নাম করিবার সময় প্রত্যেককে অধৈতনন্দন বলিয়া রুঞ্চনার করিবাজ পরিচয় দিয়াছেন। কিন্তু বীরভদ্রের কথা লিখিতে যাইয়া তাঁহাকে নিত্যানন্দের পুত্র বলেন নাই। ইহা হইতে অনেকে মনে করেন যে বীরভদ্র নিত্যানন্দের পুত্র নহেন—শিশ্ব। জ্যানন্দ বীরভদ্রকে নিত্যানন্দের পুত্র বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন—

বস্থতে প্রকাশ গোসাঞি বীরভন্ত। জাহ্বীনন্দন রামভন্ত মহামদি। (১৫১ পৃঃ)।

ভক্তি-রত্বাকরেও বীরভন্তকে নিত্যানন্দ পুত্র বলা হইয়াছে ( পৃঃ ৫৮৯ )।

বীরভদ্র প্রতিত নার প্রকটকালেই অন্মিয়াছিলেন, তাহা না হইলে গৌ. গ. দী-তে ও বৈক্ষব বন্দনাসমূহে তাঁহার নাম থাকিত না। শ্রীচৈততা-ভাগবত রচনা কালে বীরভদ্র বালক ছিলেন বলিয়া বোধ হয় বৃন্দাবন দাস তাঁহার নাম উল্লেখ করেন নাই।

কথিত আছে বীরভন্ন বার শত নেড়ানেড়ীকে বৈক্ষব করেন। বোধ হয় ঐ সব নেড়ানেড়ী বৌদ্ধ সহজিয়া ছিলেন।

গৌড়বঙ্গে বীরভন্ন বৈক্ষব সম্প্রদায়কে স্থাংবদ্ধ ভাবে গঠন করেন। শ্রীনিবাস আচার্য্য ও নরোত্তম ঠাকুর বীরভদ্রকে সম্মান করিতেন। বীরভন্তের নিয়োদ্ধত পত্রধানি হইতে বৈক্ষব সমাজের উপর তাঁহার প্রভাব বুঝা যায়

"ভবদীয়াবশ্রমারণীয় খ্রীবীরচপ্রদেব: প্রেমালিখন প্রাকং নিবেদয়তি

শ্রীল শ্রীনিবাসাচার্যা! বং শ্রীশ্রীদ মহাপ্রজাঃ শক্তিং, অতএব একয়া শক্তা।
প্রভূশক্তি রূপাদি—শ্রীমজপ-গোস্থামিছারা গ্রন্থ প্রকাশিতং, অপরয়া শক্তা। গৌড়
মগুলে মহাজন-সংসদি গ্রন্থবিতারং করোবি, ইতি ভবতোহস্কিক মদীয়-বার্তাং
প্রের্থামি। জয়াগোপাল-দাসেন মংপ্রসাদোলক্ষমং কৃতং, তক্ত জগতি বিদিতমিতিহ

# GENTRAL LIBRARY

# [ +5 ]

তেন সার্দ্ধং মদীয়-জনেন কেনাপালাপাদিকং ন কর্ত্তবামিতি (ভক্তি রত্তাকর পু: ১০৪৭)।

কাদড়া নিবাসী কাষস্থ জয়গোপাল দাস বিভাগর্কে গুরু বীরচজকে অবহেলা করিয়াছিলেন বলিয়া বীরচজ তাঁহাকে সামাজিক ভাবে একঘরে করিয়াছিলেন। ইহাতে জয়গোপাল দাসের সহিত কেহ আলাপ করিতে পাইবে না এই আদেশ দেওয়া হয়।

জ্মগোপাল দাস একজন সামাত ব্যক্তি ছিলেন না। ইনি নিত্যানন্দের অন্তচর ক্ষমরানন্দ ঠাকুরের কুপা প্রাপ্ত হন। জ্মগোপাল সংস্কৃত ভাষায় হরিভজিনরতাকর, ভক্তিভাব প্রদীপ, কৃষ্ণবিলাস, মনোবৃদ্ধি সন্দর্ভ, ধর্ম সন্দর্ভ ও অন্থমান-সমন্ধ্য এবং বাংলা ভাষায় গোপাল-বিলাস গ্রন্থ লেখেন (উত্তর রাটীয় কায়স্থ কাতের বিতীয় খণ্ড, পৃ: ১৬৪—৮)। জ্মগোপাল দাসের কাহিনী হইতে বুঝা যায় যে বীরচন্দ্রের বিক্তমে একটি দল গঠিত হইয়াছিল।

নিত্যানন্দের পরিকরের। গোপবেশ ধারণ করিয়া মাধায় চূড়া পরিতেন। বীরচন্দ্র চূড়া ধারণ নিষেধ করেন। এক বাক্তি তাহা মানেন নাই বলিয়া বীরচন্দ্র তাহাকেও পরিত্যাগ করেন। ঐ বাক্তির সম্প্রদায় এখন চূড়াধারী সম্প্রদায় নামে পরিচিত।

৩৮৯। বুজিমস্ত খান (১৮) বিক্পিয়া সহ বিশ্বতরের বিবাহের সমত বায় ভার বহন করিয়াছিলেন (ভা ১০১০)১১১ পৃঃ) ব্লচারী ছিলেন (স্লাশিব পণ্ডিত অইবা)

মূ ৪।১৭।১০, ভা ১৮৮৪, জ ১৪০, চ-২।০।১৫১ ৩৯০। বুল্দাবন দাস (নি) (বেদব্যাস + কুন্তমাপীড়) শ্রীচৈতর ভাগবতের লেখক

জ্ঞী ৮৩—৮৪ বন্দে নারায়নী-স্বস্থং দাসং বৃন্দাবনং পরং। জ্ঞীনিত্যানন্দ-চৈতন্ত-গুণ-বর্ণন কারিণং।

দে ১২৬ নারায়নী হতে বন্দো বৃন্দাবন দাস।
চৈত্ত মঞ্চল থেছ করিল প্রকাশ।

বু ১২০—১ নারাখনী স্থত বন্দো বৃন্দাবন দাস।
সর্ব্ব ভক্ত খাহারে বোলেন বৃন্দাবন দাস।
শ্রীচৈতন্ম ভাগবত খাহার গ্রন্থন।
ধ্যে গ্রন্থ মোহিত কৈল এ তিন ভ্বন।

জয়ক্ষণ দাস বলেন যে বৃন্দাবন দাসের জন্ম কুমারহটে ও ১১

# [ 64 ]

মামগাছীতে বাস। তিনিও পদ-কর্তা উদ্ধব দাসের ন্যাও লিখিয়াছেন "শৈশবে বিধবা ধনী নাঙায়নী ঠাকুবানী।" সংহিতা পরিষদের পৃথিশালাও ১৬৯১ সংখ্যক পৃথি বুন্দাবন দাসের চৈতন্য-ভাগবতেও সংস্কৃত অহবাদ।

শ্রীচৈতনোর সমসাম্যিক বাজ্লেবের সপ্তম অধ্তন পুরুষ নৃসিংহ বৃন্ধাবন দাসের গ্রন্থ অব্লয়ন করিয়া সংস্কৃতে "চৈতনা-মহাভাগবত" লিখিয়াছিলেন যথা—

> প্রতং আপ্রমবাগীশাৎ ভাষা বৃন্ধাবনক চ। প্রকার বেদাগমং জাতা চকার গ্রন্থমম্।

শ্রীযুক্ত চিক্তাহরণ চক্রবর্তী সাহিত্য পরিষদে রকিত পুথি অবলখন করিত। এই গ্রন্থের পরিচর দিয়াছেন [ সাহিত্য পরিষদ পত্রিকা ১০৪২।২, পৃঃ ৮৯] এই গ্রন্থের আর একগানি পুথি নবখীপের হরিষাদ গোস্থামী দক্ষিণ গণ্ডের ঠাকুরদের নিকট হইতে আনাইতা রাখিতাছেন।

৩৯০। বৃহচ্ছিশু [পত্ৰক]

৩৯১। বংশীবদন [বংশী] বাগ্না পাড়ার গোসামীদের আদি পুরুষ। ছক্তি চট্টোপাধাাহের পুত্র কৃলিয়া, আসাণ।

बी २८२, ८५ ৮७, वू ३३६

পদকলতকতে বংশীদাস ভণিতার ১৭টা ও বংশীবদন ভণিতার ২৫টা পদ রুত হইরাছে। সতীশবাবু উভয়কে অভিন্ন মনে করেন। "ম্রলী বিলাস", "বংশী শিক্ষা", "বংশী বিলাস" প্রভৃতি নাতি-প্রামাণিক গ্রন্থে ইহার কথা আছে। ভক্তি বস্তাকর (পৃ: ১২২-২০) হইতে জানা যায় যে ইনি বিফুপ্রিয়াকে রক্ষণাবেক্ষণ করিতেন।

৩৯২। ব্রেক্ষগিরি ছ ৮৮

ত্রত। ব্রহ্মানন্দ ঐতিচতর ভাগবতে দেখা যায় যে এক ব্রহ্মানন্দ ঐবাসের গৃহে বিশ্বররের সহিত কীর্ত্তন করিতেন [২৮/২৪০], গিয়াছিলেন অভিনয়ের দিন করিবীর স্থী সাজিয়া ছিলেন [২/১৮/২৮০], শান্তিপুর হইতে প্রভুর সহিত নী 15লে গিয়াছিলেন। (২/২৬/০৮২)। ইনি মাধ্বেন্দ্রপুরীর শিক্ষ ব্রহ্মানন্দ পুরী বা ব্রহ্মানন্দ ভারতী নহেন বলিয়া মনে হয়। যত্নাথ দাস শাখা "নির্ণয়ে ইহাকে" গদাধর প্রিতের শিক্ষ বলিয়াতেন।

৩৯৪। ব্রহ্মা**নন্দ ভারতী** (মাধবের শিশু হৈ )

ৰী ১০০, মু ৪।১৭।২০, না ৮।১৫, ভা ০ ন।৪৯০, চ ২।১০।১৪৬

৩৯৫। ব্রহ্মা**নন্দ পুরী** (মাধ্যের শিয়া)

ी ১२≥, द<del>म ४</del>१

### [ 00 ]

ভা ১।৬।৬৯ ঈশবপুরী বজানকপুরী আদি বত। সর্বা শিধা হইলেন নিত।।নক্ষে রত॥

०३५। देवस्थानाथ ( व )

৩৯৭। শঙ্কর ( চৈ ) কুলীন গ্রাম

৩৯৮। শক্ষর (নি)

শক্ষরতোষ [মুদগী প্রধাকর] ভব্দবাদা বিশারদ। ইহার রচিত
 একটা পদ গৌরপদ তরন্ধিনীতে আছে।

बी २४४, ८म ४०१, व ४०७

৪০০। শক্ষর পণ্ডিত (চৈ) [ভজা] দামোদর পণ্ডিতের ভাই, বান্ধণ, পুরী।

बि ≥€, ८म २४, वु ७)

মু ৪।১।৪, না ১।২০, ভা ৩।৩।৪০৯

৪-১। শঙ্করানন্দ সরস্বতী চ অভারদর, বুন্দাবন হইতে গুলামালা ও গোবর্জন শিলা আনিয়া শীচৈতভাকে দেন।

৪০২। শচী [ যশোদা ] প্রীচৈতরের মাতা।

প্রী ২৩, দে ৬, বু ১০

সমস্ত চরিত গ্রম্থে উলিখিত

৪০০। শিখি মাহিতী (চৈ) (রাগলেখা) উড়িয়া, করণ, না ৮।২ লেখনাধিকারী

मु ४।১१।२२, का ১०।৮৯, ভা ।।।४३७, ह २।১०।४०

8 · 8 ৷ শিবাই (নি)

৪=৫। শিবানন্দ ওড় ( চৈ )

৪০৬। শিবানন্দ চক্রবর্ত্তী (গ, যছ ) [লবঙ্গ মঞ্জী ] ছলিয়া, বৃন্ধাবন শ্রী ২৮৪, দে ১৩৯, বৃ ১৩৮

৪০৭। **শিবানন্দ পণ্ডিত**—উড়িয়া ভক্তদের সহিত উলিপিত শী ২৩৪, জ ২ই

৪-৮। শিবালন্দ দক্তর (১চ) নীলাচল। দপ্তর উপাধি পাশিদের মধ্যে দেখা যায়।

৪০৯। শিবানন্দ সেন (চৈ) [বীরাদ্তী] পদকর্তা ও কবি কর্ণপূরের পিতা। বৈহু, কাঞ্চনপলী।

# [ bs ]

প্র ১৭৯-৮» বন্দে শিবানন্দ-সেনং নিষ্টাশাস্তি পরায়ণং ।

যোহসৌ প্রভু পাদাদরুৎ নহি জানাতি কিঞ্ন।

দে ৭২ প্রেমময় তত্ত্বলো সেন শিবানন্দ।
ভাতি প্রাণ ধন বার গোরা পদম্বন্ধ।

বু ৬২ বন্ধো সেন শিবানন্দ চৈত্ত প্লারবিন্দ বিহু যার নাহিক ভাবন।

मु ४।५२।७, का ५०।५२१, ना ५।६, जा ०।६।४४६, ५ २।५।५२२।

চরিতামুতের ৩।২ অধাায়ে দেখা যায় যে শিবানন্দ "চত্রক্ষর গৌরগোপাল
ময়ে" উপাসনা করিতেন। ১৮২১ শকের চরিতামুতের সংস্করণে মাথমলাল দাস
বাবাজী পাদটীকায় ঐ মন্ত্র কি লিখিয়া গিয়াছেন। উহা "ক্লী কৃষ্ণ ক্লী"। কালনাসংস্করণের পাদটীকায় গৌরগোপালের ধাান এই—

শ্রীমং কল্পজ্ম-মূলোদগত-কমল-লসং-কণিকো সং সিং তোর গুছোখা লম্বি পদ্মোদর বিসরদ সংখ্যাতরত্বাভিষিক্ষঃ।

হেমাভঃ স্প্রভাভিত্তিভূবনম্থিলং ভাস্থন্ বাস্থদেবঃ। পারাছঃ পায়সাদোহ নবরতন্বীন অমৃতাশী বলিশঃ।

এই গৌর গোপাল মত্তে জীচৈতক্তের নাম গন্ধ নাই।

৪১০। শুক্লাম্বর ত্রহ্মচারী ( চৈ ) [ যজ পত্রিকা ] কুমার হট্ট, নবছীপ

थी > = 8, दम ७२, यू ०¢

म् राठार॰, का ७.७, ना ३१२०, जा ३१३७०, ज ७७, ५ ३१३११२०

৪১১। শুদ্ধসরস্বতী

बी ३६१, दर ७०, वृ ६६

B 66

৪১২। **শুভানন্দ দ্বিজ** ( হৈ ) [ মালভী ]

5 212010b

৪১০। **শেখর পণ্ডিড** (১৮) রামগোপাল দাস ইহাকে রঘুনন্দন শিক্ষ বলিয়াছেন যথা—

> আর এক শাখা হয় কবিশেপর রায়। যার গ্রন্থ পদ অনেক বিদিত সভায়।

পরবর্তী মুগের পদক্তী চন্দ্রশেখরের সহিত শেখর ভণিতা প্রদানকারী কবিকে এক মনে করা কর্তব্য নহে।



#### [ 60]

৪১৪। 🗐 [ যোগমাখা ] অহৈত-পত্নী

8>৫। 

একর ( হৈ ১০৯) রাজন, কাচিদালি, কালনা সংস্করণ চরিতামুতে 
"কর শ্রীমধুস্দন" পাঠ নাথের সংস্করণে "শ্রীকর শ্রীমধুস্দন পাঠ"; নাথের পাঠই তছ,
কোননা জয়কৃষ্ণ দাস শ্রীকর বলিয়া একজন ভক্তের জন্ম কাচিসালিতে হইয়াছিল
বলিয়াছেন।

औ २८७, ८४ ३३१, व ३३०

8১৬। **শ্রীকান্ত**—না ১৷১৮ মতে শ্রীবাসের ভ্রাতা। কিন্ত চরিতামুত মতে শ্রীবাসের ভ্রাতুগণের নাম শ্রীরাম, শ্রীপতি ও শ্রীনিধি। জ্ঞ ৪৭

৪১৭। **শ্রীকান্ত সেন** (চৈ) [কাত্যায়নী ] শিবানন্দ সেনের ভাগিনেয়। বৈহু, কাঞ্চন পল্লী।

का ১६।১०७, मा ४।००, ह २।১১।१४

৪১৮। **এগর্জ** [নিধি] এবাস মন্দিরে কীর্তনের দলে ছিলেন। ব্রহ্মচারী, ব্যাহ্মণ, নবদীপ।

প্রী ১০৩, দে ৩১, বু ৩৫

म् १। ५१३, ७। २। ५।२=३, अ २४

পদ্মাবলীর ৮৪ সংখ্যক প্লোক ইহার কত।

৪১৯। এ পর (নি ৪৫)

৪২০। **জীধর** ( চৈ ৬৫ ) [ কুজুমাসব ] খোলাবেচা শীধর। আছণ, নবদীপ। শ্রী ১০৮, দে ০৪, বু ৩৬

म् ८। ५१७, जो ५। ५। ५०, ज २०

৪২১। শ্রীধর বেক্ষচারী (গ, যত ) [চল্রলতিকা]

৪২২। খ্রীনাথ পণ্ডিড ( হৈ ১০৫ ) ব্রাহ্মণ, কুমার হট্ট

চরিতামতে—শ্রীনাথ পণ্ডিত প্রভুর রূপার ভাজন।

यात कृष्ण रमवा रमिश्र वन जिल्ला ।

ইনি কর্ণপুরের গুরু, ভজ্জা ইহার তথ গৌ. গ. দী. তে লিখিত হয় নাই। না ১া৫।

হরপ্রসাদ শাস্ত্রী বলেন যে ইনি 'চৈতন্তমতচন্ত্রিকা' নামে ভাগবতের টাকা লেখেন।

৪২০। শ্রী**নাথ মিশ্রে** (চৈ ১০৮) [চিত্রাঙ্গী] উড়িয়া ভক্তদের সহিত উল্লিখিত, ব্রাহ্মণ, উৎকল।

बी २०१, ८४ ३३०, व ३०७

#### [ 60 ]

ses। **জ্রীনাথ চক্রবর্ত্তী** (গ ৮২, বছ্ ) [ চতুঃসনের অক্সতম ]

৪২৫। এ নিধি ( চৈ ৭ ) [ নিধি ] চরিতামৃত মতে শ্রীবাদের লাতা।

8281 बिनिश (रे5 200)

৪২৭। **এপিডি** ( হৈ ) ব্রাহ্মণ, শ্রীহট্ট, নবৰীপ কুমারহট্ট ; শ্রীবাসের প্রাতা। ভা বাবঃ, না ১১১৮

৪২৮। শ্রীবৎস পণ্ডিড ( অ )

sea। **শ্রীবাস** ( চৈ ) [ নারদ ] রাগণ, শ্রীহট্ট, নবদীপ, কুমারহট্ট

শ্রী ৮১, দে ১৭, বৃ ২৪ সমস্ত চরিতগ্রন্থে উল্লিখিত।

soo । **এমন্ত** (নি)

৪০১। **শ্রীমান পণ্ডিড** ( হৈ ৩৫ ) 'দেউটি ধরেন যবে প্রভু করেন নৃত্য' ( চরিতামৃত ১।১০।৩৫ )

ভা ১৷২৷১৮ নবধীপে বাড়ি ছিল

ओ ১১১, तम ए<del>८</del>

खा २।ऽ।ऽधः—८७, क २३, Б २।ऽ०।৮ऽ

সম্ভবতঃ ইনি প্যাবলীর ১৪০ সংখ্যক প্লোকের রচয়িতা

৪০২। **শ্রিমান সেন** ( হৈ ৫০) শ্রীমান সেন প্রভুর সেবক প্রধান। চৈত্র চরণ বিনা নাহি জানে স্মান ॥"

রামগোপাল দাস মতে রঘুনন্দনের শিয়া শ্রীকৃঞ্চ সেবাতে তার প্রীতি অভিশয়"

৪০০। **শ্রীরঞ্জ কবিরাজ** (নি) বৈছা

৪৩৪। **শ্রীরজ পুরী** (মাধবেন্দ্র শিশ্র ২০১২৫৮)। শ্রীচৈততা যথন দক্ষিণাপথ শ্রমণ করিতেছিলেন তথন শ্রীচৈতত্তার সহিত দেখা হয়। ইনি শঙ্করারণ্যের তিরোভাবের সংবাদ বলেন।

८०६। जाताम (रेठ ১-৮)

৪০৬। এরামতীর্থ [ জয়তের ]

८००, ८५ ३००, व ३२०

৪০৭। **শ্রীরাম পণ্ডিত** (হৈ,৬) [ম্নিশ্রের পরত] শ্রীবাদের প্রতা। শ্রী >•—শ্রীরামপণ্ডিতং বন্দে সর্বাভূতহিতেরতং

म् राराद, का दावर, जा रार १७, छ २३

৪০৮। শ্রীরামপণ্ডিড ( অ ৬০ )

৪৩২। এইরি আচার্য্য (গ) জ৮৩

৪৪০। এইরি পণ্ডিত ল ৭০

# GENTRAL LIBRARY

### [ 64 ]

৪৪১। **শ্রীহর্য** (গ, যড়) [স্থবেশিনী] যড়নাথ মতে মিশ্র উপাধি— স্থতরাং ব্রাহ্মণ।

৪৪২। সন্ধর্যণ পুরী-শ্রীভাবমতে মাধবেন্দ্র পুরীর শিক্ত (২৯০)

৪৪৩। **সঙ্কেভাচার্য্য** যতুনাথ মতে গদাধর শাখা

৪৪৪। সঞ্জয় ( চৈ ) চৈতনা ভাগবত মতে পুৰুষোত্তম সঞ্চ এক ব্যক্তির নাম, চরিতামৃত মতে তৃই বাক্তির। শ্রীজীব এক সঞ্চতে বন্দন। করিয়াছেন। যথা—

> প্রমান সঞ্জো বন্দে বিনয়েন কুপামথোঁ। প্রমানন্দ-লক্ষণো ভৌ চৈতন্যাপিত্যানসৌ ॥

रत ०५ वरना बननी जात जीमान महत्र

৪৪৫। সভ্যগিরি জ ৮৮

৪৪৬। সত্যরাজ খান (চৈ) [কলকটি] কাবস্থ, কুলীনগ্রাম, হরিদাস ঠাকুরের রূপা পাত্র। "ইনি মালাধর বহু গুণরাজ খানের দ্বিতীয় পুত্র ও রামানন্দ বহুর পিতা। প্রকৃত নাম লন্ধীনাথ বহু, সম্রাট প্রদত্ত উপাধি সভারাজখান" [কৌড়ীয় চতুর্থ বর্ষ, ১০সংখ্যা, ২০ পৃষ্ঠা)। কিন্তু চৈতন্য চল্লোদ্য নাটকে (১২) রামানন্দ বহুকে "গুণরাজাধ্য" বলা হইয়াছে।

म् ४। २१। २७, ह २। ३०। ५१

৪৪৭। সত্য<del>নন্দ</del> ভারতী [ জয়স্কেয় ]

খ্রী ১৩০, দে ৪৮, বু ৪৪

অভিরাম—গোপতিপাড়াতে সভ্যানন্দ সরস্বতী। বৃন্দাবনচন্দ্র সেবেন করিয়া পিরীতি।

৪৪৮। সদাশিব পণ্ডিত ( চৈ ) "প্রথমেই নিজ্যানন্দের থার দরে বাস ( চ ) ব্রাহ্মণ, নবদীপ

( ७ ) आयान, मयबान श्री ३०७, तत्म महाशिवः विमानिधिः श्रीगर्डस्मत्र

শ্রীনিধিং বৃদ্ধিমস্তং চ শ্রীল-শুক্লাম্বরং পরং ব্রহ্মচারিন্ এতান্ বৈ প্রেমিণঃ ধমহাশ্যান্।

**बि ১०७, हम ७३, वृ ७**६

म् ८। १११, ज ०। २।६२५

৪৪৯। সদাশিব বৈশ্ব কবিরাজ (নি) [চন্দ্রবলী ] পুরুষোত্তম দাসের পিতা, বৈদ্য, কাঞ্নপলী। CENTRAL LISSARY

# [ 66 ]

প্রী ১৭৭ বন্দে সদাশিবং বৈদ্যং যক্ত স্পর্শেন বৈ দৃষ্থ সভোহি স্থবভাং যাতি কিম্ভাক্তঃ সচেতনঃ। দে ৭১ সদাশিব কবিরাজ বন্দো একমনে।

नित्रस्त द्यामाम वास नाहि भारत ।

র ৬১ বন্দো স্লাশিব বৈদ্য ঘাহার প্রসাদে স্থা পাষাণ পলিয়া হয় পানি।

৪৫০। স্নাভন ( নি ) ভক্তি রত্বাকর ( পু: ৫৮৮ ) দাস স্নাভন

৪৫১। সনাত্তন গোস্বামী ( হৈ ) [ রতিমগ্রী ]

€ 285—8, CF €2, 3 85

স্নামধন্য গ্রন্থকার। বুল্লাবনে মদনমোহনের সেবা প্রকাশ করেন।

৪৫২। স্নাত্ন মিশ্র [স্বাজিত ] বিফুপ্রিয়ার পিত।

🖹 ১১१—১৮, तम ८১, वु ८०

म् ১/১৩/৩, का ७/১२/৮, ङा ১/১/১२, ज २

৪৫০। সারজদাস (চ) ভাগবতাচার্য ঠাকুর সারপদাস (চ) [নানীমুরী]
বুচ্ণ; অভিরাম মতে কুলিয়া; মেদিনীপুর জেলায় গড়বেতায় সমাধি মনির;
"বিফুপ্রিয়া গৌরাদ্ব" পত্রিক। ( ৭ম বর্ষ, ১০ম সংখাা, পৃ: ০৮৬) মতে ইহার জীপাট
জান্নগর অথবা মাউগাছিতে আছে।

बी २५७, तम ५०५, जु २५

বী ২১০— সারস্বঠকুরং বন্দে স্ব-প্রকাশিত বৈভবং যেন দ্রানি সর্পেভাঃ স্থানানি নিজ-বাসসি॥

দে ১০১ বন্দিব সারত্ব দাস হঞা একমন

র >> শ্রীদারঙ্গ ঠাকুর বন্দিব কর জুড়ি। গুধড়ীতে ছিল যার দর্প ছয় কুড়ি॥

৪৫৪। সার্বভৌম ( চৈ ) [রহল্পতি ] মহেশর বিশারদের পুর ও বিছা বাচম্পতির আতা। নবদীপের নিকট পিরলা। (বর্ত্তমান নাম পাঞ্লিয়া) গ্রামে বাড়ি—পুরীতে বাস।

খ্রী ২২১ ভতো বন্দে সার্বা-ভৌম-ভট্টাচার্যাং বৃহস্পতিং

দে ১০৪ সার্বভৌম বন্দো বৃহস্পতির চরিত্র। প্রভুর প্রকাশে থার অমুত কবিত্ব।

র ৯৬ বন্দো শার্কভৌম ভট্টাচার্য্য মহামতি। যাহারে বলিয়ে দেব গুরু বুহস্পতি।



# [ 60 ]

জ ০ চৈত্ত সহস্র নাম প্লোক প্রবন্ধে। সাক্ষভৌম রচিল কেবল প্রেমানন্দে॥

সমস্ত চরিত গ্রন্থে উলিখিত।

লোচন ছাড়া অক্ত কোন চরিতকার সার্ব্ধভৌগের নাম "বাপ্তদেব" লেখেন নাই। "উত্তরিল বাস্থদেব সার্ব্ধভৌম ঘবে" (লোচন শেষখণ্ড)

ভক্তি রত্তাকরে—"জয় বায়দেব সাক্ষভৌম ভট্টাচার্যা" (পুঃ ৩)
জয়ানন্দ বলেন বে মৃসলমানের অত্যাচারে উত্তাক্ত হইয়া
বিশারদ স্থত সার্ক্ষভৌম ভট্টাচার্যা।
সবংশে উৎকল গেলা ছাড়ি গৌড় রাজা। পুঃ ১১

কিন্ত মুণালকান্তি ঘোষ মহাশয় যথার্থই বলিয়াছেন "যদি মুদলমানদের অত্যাচারে সার্কভৌম ভট্টাচার্যা নবন্ধীপ ত্যাগ করিতে বাধ্য হইতেন, ভাহা হইলে তাঁহার ভ্রাতা ও অক্যান্ত পরিবারবর্গও অন্যত্র গমন করিতেন; কিন্তু তাঁহারা যে নবন্ধীপ ত্যাগ করেন নাই, তাহার প্রমাণের অভ্যাব নাই"—বিক্ষুপ্রিয়া গৌরাঙ্গ পত্রিকা, ষঠ বর্ষ, ষঠ সংখ্যা, ২০০ পূঠা)। লক্ষ্মীধর কৃত "অবৈত্যকরন্দের" টীকায় বাহ্মদেব সার্কভৌম নিজ পিতাকে, "বেদান্ত বিভ্যাময়" বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন। তাঁহার পিতা মহেশ্বর বিশারদ "প্রত্যক্ষমণিমাহেশ্বরী" নামে "তব্যচিন্তামণি" প্রস্থের এক টীকা লেখেন (গোপীনাথ করিরাজ Saraswata Bhavana Studies, IV, P. 60)। স্থতরাং সার্কভৌম বে মিথিলায় ঘাইয়া তব্যচিন্তামণি মুগত্র করিয়া আসিয়াছিলেন এই কিম্বদন্তি বিখাস করা য়ায় না। বস্তত খুলীয় নবম শতান্ধী হইতে বাংলাদেশে ন্যায়ের চর্চ্চা হইয়াছিল। ন্যায়কন্দলীর লেখক শীধর রাচের লোক। শীকৈতন্ত্র বা রঘুনাথ শিরোমণি যে সার্কভৌমের ছাত্র ছিলেন ভাহার কোন প্রমাণ নাই।

বাস্থদেব সার্কভৌম "সমাসবাদ" নামক ভারের গ্রন্থ (Aufrecht, I, 698A)
ও "সারাবলী" নামক তত্তভিভামণির টীকা রচনা করেন।

পক্ষার মিশ্রের ভ্রাতৃম্পুরেরও নাম বাহুদেব। তিনিও তত্তিস্তামণির টীকা লিখিয়াছেন। তাঁহার শেষে আছে "ইতি শ্রীক্তায়সিদ্ধান্তসারাভিক্ত-মিশ্রবর্ষ-পক্ষার-মিশ্র-ভ্রাতৃম্পুর-ক্তায়সিদ্ধান্ত-সারাভিক্ত-বাহুদেব-মিশ্র-বিরচিতায়াং চিন্তামণি-টীকারাম্" (India Office Catalogue, P. 632, No. 1939)। পক্ষার মিশ্র ১৪৫৪ খুরান্ধে বিষ্ণুপুরাণ নকল করিয়াছিলেন (History of Tirhut by Shyamnarayan Singh, P. 137)। স্থতরাং তাঁহার শ্রাতৃম্য শ্রীচৈতক্তের সমসাম্যিক।

#### [ 00 ]

নগেজনাথ বস্তু কুলজী শাস্ত্র হইতে সার্বভৌমের পরিচয়স্থচক একটি শ্লোক তুলিয়া বলেন যে বাস্থদেবের পিতার নাম নরহরি বিশারদ ও আতার নাম রত্নাকর (আহ্বণ কাণ্ড, ১ম ভাগ, পৃঃ ২৯৫)। কিন্তু সার্বভৌমের নিছের লেখায় ও আটিচত্ত ভাগবতে (২।২১) যথন তাহার পিতার নাম মহেশ্বর বিশারদ পাওথা যাইতেছে তথন নাতি-প্রামাণিক কুলজী শাস্তের কথায় বিশাস করিতে পারিলাম না।

শ্রীকৈতন্ত চল্ডোগয় নাটকে ও মহাকাব্যে দেখা যায় যে সার্কভৌম ছুইটা শ্লোকে
শ্রীকৈতন্তের তব লিখিয়াছেন। তাহার একটি শ্লোক সনাতন গোস্বামী রহং-বৈশিব-তোষণীর প্রারম্ভে উদ্ধার করিয়াছেন। তিনি শ্রীকৈতন্ত সম্বন্ধে অইক, শতক বা সহস্র নাম লিখিয়াছেন বলিয়া বোধ হয় না। বাজারে সার্কভৌমের নাম দিয়া শ্রীকৈতন্তের যে সব বন্দনা চলিত আছে, তাহা কোন মূর্য ব্যক্তির লেখা—অসংখ্য ভূলে পরিপূর্ণ।

৪৫৫। সিঙ্গাভট্ট ( হৈ ) নীলাচল—বোধহ্য মহারাষ্ট্র দেশীয়।

৪৫৬। সিংহেশর ( চৈ ) উড়িয়া ব্রাহ্মণ ( না ৮।২ )

बी २००, त्म ३३२, व ३०८

ना धार, ह रा३ । १८०

849। जिह्नाख काहार्या छ १०

৪৫৮। সীতা [ বোগমায়া ] অবৈত পত্নী, নৃসিংহ ভাত্রীর কলা

জী ৭১—৭২ কৈলাসস্ভাদি শক্তিং ত্রিভ্বন-জননীং তংগ্রিয়াং নাম দীতাং।

যক্ষাস্তষ্ট: প্রদানং ত্রিজগতি চ নদৌ শ্রীজগল্প আস ।

দে ১৬ সীতাঠাকুরাণী বন্দো হঞা একমন

রু ২০ কৈলাদের আন্ধার্শক্তি বন্দো দীতা ভগবতী

ভক্তি শক্তি সম তেজ যার।

থাহার প্রতিক্রা হৈতে

অবতীৰ্ণ জগনাথে

করিলা প্রসাদ পরচার।

সীতার চরণ ধুলি

বন্দিব মন্তকে তুলি

আপনাকে মানিয়ে শালঘা ॥

"সীতাচরিত্র", "সীতাওণ করম", "অহৈত মদল", "অহৈত বিলাস" প্রভৃতি নাতি প্রামাণিক গ্রন্থে সীতাদেবীর অনেক অলৌকিক কাহিনী আছে।

৪৫৯। **স্থানন্দ পুরী** ( মাধবেন্দ্র শিয়া ) [ সিজি ]

ी 325. CH 89

৪৬**০। স্থগ্রীব মিশ্র—**ফুলিয়া

#### [ 22 ]

শ্রী ১৭১— বন্দে স্থাীব-মিশ্রং তং গোবিলং বিজম্তমং

যন্তজি-বোগ-মহিমা স্প্রসিদ্ধো মহীতলে।

প্রভোবর্ষ গমনার্থং হি শ্রীনব্দীপ-ভূমিতঃ

আগৌড়-ভূমি বেনেব বন্ধ সেতুর্মনোময়ঃ।

দে ৬৯ বন্দিব হুগ্রীব মিশ্র শ্রীগোবিন্দানন্দ। প্রভু লাগি মানসিক থার সেতৃবন্ধ।

বৃ ৫৯ বন্দিব **স্থবুদ্ধি মিশ্র** শ্রীগোবিন্দানন্দ বিপ্র যার মনমানস জঙ্গলে। কুলিয়া নগর হইতে গৌড় পর্যান্ত যাইতে প্রভূ চলি গেলা কুতৃহলে।

প্রীচৈত্রচরিতামৃতে অহরণ ঘটনা নৃসিংহানন প্রহায় ব্রশ্বচারী সহক্ষে বলা হইয়াছে।

জয়ক্ক-স্থাীব মিশ্রের জন্ম ফুলিয়া গ্রামেতে। গোবিন্দানন্দ শিবানন্দ পণ্ডিত হো তাথে।

৪৬১। **স্থদর্শন**। [বশিষ্ট] শ্রীচৈতভ্যের অধ্যাপক

জী ১০২, দে ৩০, বৃ ৩৪

म् ऽ। । ), वा णर, क ১१

৪৬২। **স্থদামা ব্রহ্মচারী**— যতুনাথ মতে গ্রাধর শাখা

৪৬৩। স্থানিধি ( চৈ ) [ নিধি ] রামানন্দ রায়ের ভাতা, করণ, উড়িয়া।

८म ७७

৪৬৪। সুলারালল (নি) [ জ্লাম ] হাল্লা মহেশপুর ( যশোহর )

ত্রী ২০১ বলে হুনরাননং হুদাম-গোপাল-রূপিণং ।

যজ্ঞিয়ো শ্বিপিবর্গেড্যো হরিনাম দদাবিহ।

দে bs হুলরানল ঠাকুর বলিব বড় আশে।

कृष्टिल कमश्र कुल खबीरतव शांट्ड ॥

রু ac অজের হুদাম বন্দ ঠাকুর হুন্দর।

অগ্রিদম তেজ যার মৃতি মনোহর।

यात भारम थविया वरनत वाध व्यारन।

কোল দিয়া হরিনাম শোনায় তার কানে।

म् ४।२२।३३, स ६७, ला ७

# GENTRAL LIBRARY

#### [ 50 ]

ভা ৩।১ ৪৭৪ প্রেমরণ সম্<del>ড — স্করানক</del> নাম।

নিত্যানন্দ স্বরূপের পার্বদ প্রধান।

জ ১৪৪ অফুকণ ভাবগ্রন্ত তীমূন্দরানন।

তাহার দেহেতে অহুক্ষণ নিত্যানল।

৪৬৫। সুবুদ্ধি মিশ্র ( চৈ ) [ গুণ চূড়া ] রাগণ, অম্লাধন ভট্টের মতে বেলগা বর্জমানে পাট, কিন্তু জয়কুঞ্ বলেন গুপ্তিপাড়ার নিকট পাট।

ची २७९, टम ১১७, तु ১०७

জ ও "জয়ানন্দের বাপ হবুদ্ধি মিশ্র গোসাঞি" অধাপক ও গদাধর পরিতের শিয়া।

৪৬৬। **স্থবুদ্ধি রায়**—চ ২।২৫।১৪+ ঐতৈতত্তার দর্শন পাইয়াছিলেন কিনা জানা যায় না।

৪৬৭। স্থলোচন ( চৈ ) [চল্রশেখরা ] বৈছা, শ্রীখণ্ড

মু ৪।১৭।১৩, চ ২।১১।৮১। রামগোপাল দাস মতে রঘুনন্দনের শিষা। গৌরপদ-তর্দ্দিনীতে স্লোচনের একটি পদ আছে।

৪৬৮। স্থলোচন (নি)

८७३। मृश्य (नि)

৪৭০। স্থাদাস সারবেল (নি) [কক্রি] নিত্যানন্দের খণ্ডর, শালিগ্রাম আ ২৪৮, দে ১২০, বু ১১০ প্রাবলীর ২৭২ শ্লোক সম্ভবত ইহার লেখা।

৪৭১। **স্বপ্রেশ্বর দ্বিজ**—ব্রাগ্নণ, উড়িয়া শ্রীচৈতক্তকে রেমুণায় নিমন্ত্রণ করিয়াছিলেন।

का उवायण, ह साइकावव

এক স্থপ্রদাসকত "বৈক্ষব সারোদ্ধার" নামে উড়িয়া পুথি স্থরদীর মহারাজার গ্রন্থাগারে আছে।

अक्रम मारमामत [ विनाथा ] भूकरवासम अहेवा।

৪৭২। স্বরূপ (আ) অধৈত-পূত্র। চরিতামূতে "স্বরূপ শাখা", "সীতাগুণ কদংখ" "রূপস্থা"।

৪৭৩ ৷ যন্তীবর কীর্ত্তনীয়া কবিচন্দ্র ( চৈ )

প্রাবলীর ৩২১, ৩৪৯, ৩৬৭ লোক ইহার বচনা। সেইজ্ঞাই ইহাকে কবিচন্দ্র বলা হট্যাছে।

৪৭৪। **ইডিডপ পণ্ডিত** [বাহুদেব] নিত্যানন্দের পিতা—বাংলা বইয়ে হাড়াই পণ্ডিত। ব্রাহ্মণ, একচাকা।

#### [ 20 ]

€ 00, CF >=

গৌ. গ. দী. ও দেবকী নন্দনের ছাপা বৈক্ষব-বন্দনায় ইহার নাম মৃত্যু।
জয়কৃষ্ণ দাস ও দেবকী নন্দনের ১৭০২ খুটাব্যের পুথিতে নাম "প্রমানন্দ"। সম্ভবতঃ
ইহার ডাকনাম হাড়াই পণ্ডিত ও ভাল নাম মৃকুন্দ ছিল।

৪৭৫। হরি আচার্য্য [ কালাকী ] বছনাথ মতে গদাধর শাখা।

৪৭৬। হরিচরণ ( অ ) ইহাতেই "অবৈত মধল" এর আরোণিত হইয়াছে।

৪৭৭। হরিদাস ছোট ( চৈ ) কীর্ত্তনীয়া

৪৭৮। হরিদাস বড় ( চৈ ) [ রক্তক ১৩৮ ] কীর্ত্তনীয়া।

৪ १२ । इतिमाम ठाकूत ( हे ) [ आस्तम + बका ] बूछ्य, क्लिया, नीलाहल

ত্রী ৮৫ হরিদাসং ত্রন্ধাম হরিনাম প্রকাশকং

८म २०, वृ २७

म् अअस्र, का भावन, ना अवन, जा अववन, जर, त्ला २, ह आवन्य

জয়ানন — "বর্ণনদী তীরে ভাটকলাগাছি গ্রামে" জয়। বর্ণনদীর বর্তমান নাম সোনাই। ভাটলী ও কেরাগাছী নামে ছইটা গ্রাম বুঢ়ণ পরগণায় আছে। এই ছই মিলাইয়া ভাটকলাগাছি হইতে পারে (সাহিত্য পরিষং প্রিকা ১০১৮।২, পৃঃ ১০০)।

৪৮০। হরিদাস শ্বিজ ( হৈ ) উৎকলের ভক্তদের সহিত উল্লিখিত।

শ্রী ২২৫, বিপ্রদাস মুংকলস্থং হরিদাসং বিজং ততঃ যাভ্যাং প্রেয়াবশং নীতঃ শ্রীশচীনন্দনো হরি:॥

Cम ১०७, मू 815नाद

গৌ. প. ত. ইহার রচিত ত্ইটা ও পদকল্পতকতে ৪টা পদ আছে।

৪৮১। **হরিদাস লঘু** চ ২০১৮।৪৬, গোপালদর্শনে শীরূপের সঙ্গী; কিন্ধ ইনি শীকৈতক্তের দর্শন পাইয়াছিলেন কিনা জানা যায় না।

৪৮২। হরিদাস ত্রন্ধচারী ( অ )

৪৮০। হরিদাস ত্রক্ষচারী (গ, যহ)

868 | **इत्रिम्मी**—क 66

৪৮৫। হরিভট্ট-আগণ, জাবিড়

वी २०७, तम ३३८

না ৮।৩৩, চ ২।১১।৭৬ নীলাচলে আগত গৌড়ীয় ভক্তদের সহিত উল্লিখিত।

৪৮%। **হরিহরানন্দ** (নি)

चि २१०, CH ১७১, व ১००

869। इलाग्नुस [ अवन ] नवकोश



#### [ 28 ]

8 300, CF 05

জন্মকৃষ্ণ — নিত্যানন্দ প্রিম ঠাকুর হলামুধ নাম।
নবদ্বীপ রামচন্দ্রপুরে থার ধাম।

৪৮৮। হস্তিগোপাল (গ, বছ) [ হরিণী ]

৪৮০। হিরণ্যক (১৮) [বজপরী] জগদীশের ভাই জগরাথ মিশ্রের বন্ধ। ব্রাহ্মণ, নবদীপ।

GI 318183, \$ 38.

৪৯ । হৃদয়ালক ( চৈ ১০৯ ) যত্নাথ মতে গদাধর শিষ্য।

8>> । अम्मानम (अन ( अ ) देवश

"শীহদয়ানন্দ ওণের আলয়" ( ভক্তিরত্বাকর পৃ: ৫০৯ )

৪৯১-৫১৭। জয়ানন্দ বলেন বিশ্বস্থারের প্রাথাতার সময় নিম্নলিখিত ৩২ জন মহিলা উপস্থিত ছিলেন—

নারায়ণী, সর্বাণী, মালিনী, সীতা, জয়।
চিত্রলেখা, স্থলোচনা, মায়াবতী, ছায়।
স্থজা, কৌশল্যা, খেমা, মৃত্রিকা, জানকী।
চক্রকলা, রত্থমালা, উষা, চক্রমুখী ॥
নন্দাবৈশ্বনী, বিশ্বুপ্রিয়া, ভাগ্যবতী।
রাম্বণী আহ্বনী, গৌরী, সত্যভামা সতী ॥
সাবিত্রী, বিজয়া, লন্ধী, কয়িণী, পার্বাতী।
জাম্বতী, অরুদ্ধতী, চম্পা, সরস্বতী ॥
তাম্বল চন্দন মাল্য দিয়া গৌরচক্র।
কান্দিয়া প্রণতি স্ততি করিল প্রবন্ধ ॥

ইহাদের মধ্যে নারায়ণী, মালিনী, সীতা, চক্রমুখী ও বিফুপ্রিয়ার পরিচয় পাওয়া যায়। বাকী ২৭টা নাম নৃতন, তাঁহাদের কোন পরিচয় পাওয়া যায় না।



## পরিশিষ্ট (খ)

### যে সব গ্রন্থের উল্লেখ পাওয়া যায় অথচ কোন পুথি পাওয়া যায় না তাহার তালিক।

এই সমস্ত গ্রন্থের বিশেষ অনুসন্ধান প্রয়োজন।

- ১। **ঈশরপুরী—**শীকৃষণীলামত
- ২। কা**নাই খু'টিয়া**—মহাভাবপ্রকাশ
- গোপাল শুরু—লোকাবলী ( গ্রন্থের নাম পাওয়া বায় না কিন্তু ভক্তি-বত্রাকরে ইহার বহু লোক গুত হইয়াছে )
- ৪। গোবিশ কবিরাজ—সঙ্গীতমাধব নাটক (ভক্তিরত্বাকর ১৭, ১৮, ২০,
   ৩০ পৃষ্ঠায় উলিখিত )
  - গোপাল বস্তু চৈতল্রমঙ্গল ( জ্বানন্দ কর্তৃক উলিখিত )
  - ৬। গৌরীদাস পণ্ডিত—পদাবলী (ঐ)
  - গ। পরমানন্দ পুরী—গোবিন্দ বিজয় (এ)
  - ৮। **হরিদাস পণ্ডিতের শিশ্ব রাধাকৃষ্ণ গোস্বামীর**—সাধনদীপিক। (ভক্তিরত্বাকর ৮৯ ও ৯২ পৃষ্ঠায় গ্রন্থের শ্লোক উদ্ধৃত হইয়াছে।)
  - »। নৃসিংহ কবিরাজ—নবপভ
- ১০। সার্ক্রটোম ভট্টাচার্য্য— চৈতল সহল নাম ( জয়ানন্দ কর্ত্ব উলিখিত )

  মুবারি গুপ্তের লেখা "শ্রীকৃফ্টেচতল চরিতম্" বা করচার কোন পুথি পাওয়া
  য়ায় না। পুথি পাইলে মৃত্রিত গ্রন্থের সহিত মিলাইয়া অধিকতর নির্ব্রোগ্য সংস্করণ
  প্রকাশ করা য়ায়।

## পরিশিষ্ট (গ)

### রঘুনাথ দাস গোস্বামীর সংস্কৃতসূচক

আমি বরাহনগর গ্রন্থমনিবে ক্রফার্লাস কবিরাজগোস্থামিকত রঘুনাথ লাস গোস্থামীর একটি স্চক পাইয়াছি। উহার তিনধানি পুঁথি(\*) উক্ত গ্রন্থমনিবে আছে। তর্মধ্য ১০৫২ সংখ্যক পুঁথির কালি ও অক্ষর দেখিয়া মনে হয় উহা অস্কৃতঃ তিনশক বংসরের প্রাচীন। "বুহছক্তি তত্তাসারে" রাধাবল্লভ লাস কর্তৃক লিখিত



#### [ 26 ]

দাস গোস্বামীর যে বালালা সূচক ছাপা আছে তাহার সহিত কৃঞ্দাস কবিরাজের সংস্কৃত প্চকের তুলনা করিলে দেখা বাইবে বে রাধাবলভ দাদ কবিরাজ গোস্বামীর স্তকের বলাহবাদ মাত্র করিয়াছেন। সংস্কৃত ও বালালা স্চক লোক হিসাবে পর পর তুলিয়া দিতেছি —ইহাতে দেখা যাইবে যে সংস্কৃত রচনা কেমন করিয়া প্রাচীন বান্ধালা সাহিত্যের উপাদান জোগাইয়াছে।

> ত্রীচৈত্র হরে: কুপাসমুদ্যান্দারান গৃহান্ সম্পদঃ সদ্দেশাধিপত্যঞ্জ যা স্বমলবং তাকা পুরুশ্চর্যাচা। প্রাপ্ত: শ্রীপুরুষোত্তমং পদযুগং ভক্তাসিষেবে চিরং ভ্যাৎ ত্রীরঘুনাথ ইহ মে ভ্য়া স দৃগ্গোচর:॥ শ্রীচৈতন কুপা হইতে রঘুনাথ দাস চিতে পরম বৈরাগা উপজিলা।

দারাগৃহ সম্পদ

निक त्राका व्यक्तिभन

মল প্রায় সকল তাজিলা।

পুরশ্বর্ঘা রুঞ্চ নামে পেলা শ্রীপুরুষোভ্যম

भोतास्त्रत भनगुर्ग स्मरव ।

এই মনে অভিলাষ

পুন রঘুনাথ দাস

নয়ানগোচর কবে হবে ॥

রাধারুফ ইতি স্বনামদদতা গোবর্দ্ধনান্তে: শিলাং ওঞ্জাহারমপি ক্রমাৎ ব্রছবনে গোবর্জনে যং শ্বয়ং। রাধায়াঞ্চ সমপিতঃ করুণ্যা চৈত্র গোপামিনা ভূয়াং শীরঘুনাথ প্রভৃতি

গৌরাক দ্যাল হঞা রাধাকক নাম দিয়া

গোবর্জনের শিলা গুঞাহারে।

বজবনে গোবন্ধনে

শ্রীরাধিকার শ্রীচরণে

সমর্পণ করিলা ভাহারে॥ চৈতত্তেনিভূতং ব্ৰঞ্জ গতবতিছিলা কাচান্ যো ব্ৰঞ্জং প্রাপ্ততন্ বিরহাতুর: খকবপুর্হাত্রঞ গোবর্জনে। এটাং রূপদ্যাতনো কৃততন্ত্রাণশ্চ তাভ্যাং বলাং ভূয়াৎ প্রভৃতি

(১) বরাহনগর গ্রন্থনির পুঁথির সংখ্যা ৩৪১, ১০০৭, ১০৫২

GENT RALL LIBRARY

#### [ 29 ]

চৈতত্ত্বের অংগাচরে নিজ কেশ ছিঁড়ে করে বিরহে আকুল বজে গেলা।
দেহ ত্যাগ করি মনে গেলা গিরি গোবর্জনে

ছুই গোসাঞি তাহারে দেখিলা।

ধরি রূপ সনাতন রাধিল তার জীবন দেহত্যাগ করিতে না দিলা। ছই গোসাঞির আজা পাঞা রাধাকুও তটে পিয়া বাস করি নিয়ম করিলা॥

রাধাকুগুডটে বসন্ নিয়মিতঃ স্বভাত্রপাজ্ঞা বাসঃ কম্বলকৈঃ ফলৈত্রজ ভবৈগবৈশ্য বৃদ্ধিং দদং রাধাং সংস্কৃতিকীর্ত্তনৈ উজ্জি যা লানং বিসন্ধাং চরন্ ভূয়াং প্রভৃতি

ছেঁড়া কম্বল পরিধান বনফল গব্য খান অল্ল আদি না করে আহার।

তিন সন্ধ্যা স্থান করি শ্বরণ কীর্ত্তন করি

রাধাপদ ভজন থাহার॥

শ্রীচৈতত্তপদারবিন্দমধূপো যা শ্রীম্বরূপাশ্রিতে। রূপাধৈততত্ত্বং সনাতনগতির্গোপালভট্ট প্রিয়া। শ্রীরূপাশ্রিতসদ্গুণাশ্রিতপদো শ্রীবেহতিবাংসলাবান্ ভূয়াৎ প্রভৃতি

গৌরাজের পদাস্থাজ রাথে মনোভূজরাজে স্বরূপের সদাই ধেয়ায়।

অভেদ শ্রীরূপের সনে সতি ধার সনাতনে ভটুযুগ প্রিয় মহাশয়।

শীরূপের গণ যত তার পদে আশ্রিত অত্যস্ত বাৎসল্য থার জীবে।

সেই আর্ত্তনাদ করি কাদি বলে হরি হরি

প্রভুর কঞ্ণা হবে কবে।
পঞ্চাশদ্ ঘটিকাঃ সদান্ত্রদহোরাজক্ত বট্ সংযুতা
রাধাক্ষবিলাসসংখ্তিযুক্তঃ সদীর্ভনৈবন্দনৈ:।

# CENTRAL LIBRARY

#### [ 24 ]

যা শেতে ঘটিকাচতুইয় মিহাপ্যালোকতে স্বেশরে) ভূষাৎ প্রভৃতি ভাপার দণ্ড রাজি দিনে বাধারুফ গুণগানে

श्रवरंगटक मनाई दर्गाक्षय ।

চারি দণ্ড শুতি থাকে স্বপ্নে রাধারুফ দেখে এক তিল বার্থ নাহি যায়॥

প্রীকৃক্ষ স্থাপং শচীক্তমথো নানাবভারাংশ্য য:
প্রীমৃত্তীশ্চ নিশামিতা নিশমিতা যায়াশ্চ লীলাস্থলী:।
প্রত্যেকং নমতীহ বৈক্ষবগণান্ দৃষ্ট্যন্ প্রভান্ প্রভাহং
ভূয়াং প্রভৃতি

শ্ৰীচৈতন্ত শচী হ'ত

তার গণ হয় যত

অবতার শ্রীবিগ্রহ নাম।

ख्छ वाक नीनाइन

मृष्ठे अच्छ देवस्थ्य मय

সবাবে কর্যে পর্ণাম ॥
রাধামাধ্বযোবিয়োগবিধুরো ভোগানশেবান্ ক্রমাং
চৈত্ত্বস্ত সনাত্নক্ত চ রসান্ বট্ চাল্লমপ্যত্যজ্ঞং ।
ক্রিপ্ত জলং বিনা হরিকথাং বাচং স্বরূপক্ত যো
ভূষাং প্রভৃতি

রাধাকুঞ বিয়োগে ছাড়িল সকল ভোগে শুখকুখ অর মাত্র দার।

গৌরাঙ্গের বিয়োগে অর ছাড়ি দিল আগে ফল গবা কবিল আহাব।

সনাতনের অদর্শনে তাহা ছাড়ি সেই দিনে কেবল করয়ে জল পান।

রূপের বিজেদ যবে অল ছাড়ি দিল তবে রাধাকৃষ্ণ বলি রাথে প্রাণ ॥ হা রাধে ক স্থ কৃষ্ণ হা ললিতে ক বং বিশাথেইদি হা চৈতন্ত মহাপ্রভা ক স্থ ভবান্ হা হা স্বরূপ ক বা হা শ্রীরূপসনাতনেতাস্থদিনং রোদিতালং যং সদ। ভূয়াৎ প্রভৃতি



#### [ 66 ]

শীরণের অদর্শনে না দেখি তাঁহার গণে
বিরহে বাাকুল হঞা কাঁদে।
কুফকথা আলাপনে না শুনিয়া শ্রবণে
উচ্চস্বরে ডাকে আর্জনাদে।
হা হা রাধাকুফ কোথা কোথা বিশাখা ললিতা
কুপা করি দেহ দরশন।
হা চৈতক্ত মহাপ্রত্ব হা স্বরূপ মোর প্রত্

# পরিশিষ্ট (ঘ)

## শ্রীচৈত্তন্য চরিতামৃত ধৃত শ্লোকমালা ও পূর্ব্বাচার্য্যগণ-কর্ভূক তাহার ব্যবহার

নিম্নলিখিত শ্লোকগুলি ক্লফদাস কবিরাজের পূর্বে গৌড়ীয় বৈক্ষবসম্প্রদায়ের বিবিধ প্রথে উদ্ধৃত হইয়াছে। সেইজন্ত কবিরাজ গোস্বামী আকর গ্রন্থগুলি পড়িয়াছিলেন কিনা নিশ্চয় কবিয়া বলা যায় না। শ্লোকের প্রথম চরণের পরই যে সংখ্যা দেওয়া হইয়াছে, উহা চরিতামতের স্থান-নির্দ্ধেশক। পরে অন্তান্ত প্রথম গোকের উদ্ধারের স্থান নির্দ্ধেশ করিয়াছি।

### (১) পতাপুরাল

- (১) आवाधनानाः मर्क्यमम् २।১১।१, मिस् ১०১ पृः, नघ, छ, ८
- (২) ইতীদৃক্ থকলী-লাভিরানন্দ ২০১৯০০, হরি ভ: বি: ১৬০০১
- (৩) তদীয়ে শিতজেষ্ ভকৈ ২।১৯।৩৯, হরি ভ: বি: ১৬।৯৯
- (৪) তক্তাঃ পারে পরব্যোম ২।২১।১৪, লঘু পূর্ব্ব ৫।২৪৮
- (a) ছৌভূতসর্গে) লোকেহস্মিন্ ১।৩।১৮ (পরমান্ম-সন্দর্ভ পৃ: ৭৮, কিন্তু "ভতুক্তং বিষ্ণুধর্মান্তি-পুরাণয়োঃ)
- (৬) ন দেশ-নিয়মকত ন কাল ২।৬।১৭, হরি ভা বিঃ ১১।৩০২
- (৭) নাইমক যশ্ম বাচি শ্বরণ-পথ তাতাত, হরি ভ: বি: ১১/২৮৯
- (b) श्रधान-भत्रत्यादमातस्यत् २।२১।১७, नघू, भृ व।२८१

# GENTRAL LIBRARY

#### [ 300 ]

- (৯) বাামোহায় চরাচররা ২ ২০ ১৫, সিন্ধু দঃ ৪ ৭৩, হরি জা বিঃ ১ ৬৮, লঘু পু ২ ৫৩
- (১৬) যথা রাধা প্রিয়াবিকো: ১।৪।৪৬, ২।৮।২৪, ২।১৮।২ উজ্জল ১৬১ পৃ:,
  লঘু ১৮৪ পৃ:
- (১১) यञ्च मात्रायणः त्मवः २ ১৮।२, २.२४। ७.৪, इति छः विः २।१७
- (১২) হরৌ রতিংবহয়েষো ২৷২৩৷১৩৷ সিন্ধু ২০০ পৃঃ
- (১৩) রমস্তে যেমগিনোহনস্তে ২া≥া০, নাটক গা২১

### (২) আদিপুরাণ

- (১) বৈলোকো পৃথিবী ধরা ১।৪।৪১ সঘু উ ৪৬
- (২) মাহাত্মা-মথং-সপর্যাম্ ১া৪া৩৯, লঘু উ ০৯
- (৩) যে মে ভক্তজনা: পার্থ ২।১১।৪। সিকু ১৩৫, লঘু উ ৬

#### (৩) কুর্মপুরাণ

- (১) দেহ-দেহিবিভাগোহয়ং তাৰ ৰ লঘু পূ ৰাতঃ ২
- (২) পরীকাসময়ে বক্লিং ২।১।১৭ শ্রীচৈঃ চঃ মহাকাব্য ১৩।১৩
- (৩) সীভয়ারাধিকো বব্রি: ২০০১৬ মহাকাব্য ১৬০১২

#### (৪) গরুড়পুরাল

- (১) অর্থোহয় ব্রক্ষত্রানাং ২।২৫।৩৫, হরি ভ: বি: ১=।২৮০
- (২) পুরগ্গাণাং সামরূপ: ২।২৫।০৬॥ হরি ভ: বি: ১০।২৮৪

#### (৫) বহুলারদীয় পুরাণ

(১) হরেনীম হরেনীম ১াশত, ১া১শত হাভা১৯ চৈতক্ত চক্রোদয় নাটক ১া৫২, মুরারি ২া২া২৮

#### (৬) ব্রহ্মাণ্ড পুরাণ

- (১) महत्वनाचार भूगानार २।२।७, नघू भू ४।०४৪
- (২। সিদ্ধলোকস্ত তমদ: পারে ১।৫।৬, সিন্ধু ১।২।১৩৮, পৃ: ১৬৭

#### (৭) ক্ষন্দ পুরাপ

- (১) অহোধয়্যোহসি দেবই ২।২৪।৮৪, সিন্ধু ১৯৬
- (২) এতে নহদ্ভতাবাাধ ২।২২।৬৫, ২।২৪।৮৩, সিলু ১৫৯
- (৩) মতুলো নান্তি পাপাত্মা ২০১১-, সিন্ধু পু ২০৬৫, পৃঃ ১০৭

### (৮) রহদ্গৌতমীয় তন্ত্র

(১) দেবী রক্ষময়ী প্রোক্তা ১া৪।১৩, ২া২৩৷২৩, ষ্ট্সন্দর্ভ, প্রীতিসন্দর্ভ ৭৬১ পৃং, নিতাস্থরূপ ব্রশ্বচারী দেবনাগর সং

#### [ 5.5 ]

- (২) তুলদীদল-মাত্রেণ ১৩১৯, সিন্ধু ২৮৫, হরি ভ: বি: ১১।১১০ (৯) সাম্বতন্ত্র
- (১) বিফোন্ত শীনিরপাণি ১৫০১২, ২০২০৩১, বঘু পু ২০২ (১০) কাত্যাব্যন সংহিতা
- (১) বরং হতবহ-জালা ২৷২২৷৪২, সিন্ধু ৮৬, হরি ড: বিঃ ১৬৷২২৪ (১১) শারদ প্রশাস
- (১) অনক্রমমতা বিকৌ হাহতাঃ, সিকু ২১০ পুঃ
- (२) মনির্থা বিভাগেন ২। ১। ३६, लघु পু ৩.৮৬, হবি ভঃ বিঃ ১১।৩৮২
- (৩) সংশোপাবিবিনিম্জিং ২০১২২১, সিন্ধু ১০১১৬ (১২) বিস্থৃগুণ্ডব্যোক্তর
- (১) নাম চিন্তামণি: কৃষ্ণ: ২০১৭৫, হরি ভ: বি: ১১/২৬৯, সিন্ধু ১/২০১৬ (১৩) মহাভারত
- (১) अठिखाः थन् दय ভावाः ১/১৭/১०, मिक् मः श्रामि ভाव ४১
- (২) কৃষিভূ'বাচক-শকো ২৷৯৷৪, নাটক ৭৷২২
- (৩) স্থবর্ণবর্ণো হেমাক: ১৷০৷৮, ২৷৬.৫, ২৷১ ৫, নাটক ৮৷১৯
- (৪) তর্কোহপ্রতিষ্ঠ প্রতয়: ২০১৭০১, ২০২৫০২, চৈ: ভা: পৃ: ৫০৪ (১৪) রামার্ক
- (১) সরুদের প্রপল্লোয় ২।২২।১২ হরি ভ: বি: ১১।০৯৭

## পরিশিষ্ট (ঙ)

## গ্রীজীব গোস্বামীতে জারোপিত বৈষ্ণব বন্দনা

সনাতন সমোধত জাাধান্ তীমান্ সনাতন:।

ত্রীবলভোহত্তঃ সোহ সৌ ত্রীরূপো জীবসদগতি:।
সর্বাবভারত প্রতৈভগবান্ ত্রীশচীস্থত:।
অবতীর্ণ: কলৌ রুফ তত্তদ্ভাবপর: প্রত্য:।
রুফাবর্ণ: বিষাহকুফং সাম্বোপাদাস্তপার্থনম্।
যক্তৈ সাম্বীর্তনপ্রাধৈণ্ড তি স্থমেধ্য:।



#### [ 505 ]

একো দেখো কঞ্চলো মহীয়ান শোহয়ং কৃষ্ণচৈতভ্যনাম। দেবো নিত্যানন্দ এব স্বরূপো গদারীব বিধাত্মানং ক্রিয়ার: ?॥ অধৈতাদি প্রিয়ান্মাবৈ দিতীয়: ত্রীমজপাদাহনেক মুথাশক্তি: বিত্তীৰ্ণাত্মা প্ৰেমবৃক্ষ: শচীজ \*ছায়াং দভাত্তাপ তথেহধীশ: ॥ **उधन्मनः उर्द्यतगः मर्क्तमिक्षि विधायकम् ।** জীবেন কেন জীয়তে পৌর্বাপৌর্যামজানতা। অপরাধান কমধ্বং মে মহান্তঃ রুক্চেত্সঃ অদোষদশিন: সন্তা দীনাত্তগ্রহকাতরা: ॥ যে যথা হি ভবস্থোহত্র যুশান্ জানস্তি তত্ততঃ ভগবান্ তথা বাচয়তু তদাদেশপ্রবর্ত্তিতম্ ॥ वत्म गठीवशवादशे दगमाननक्तिरियो যয়োর্বিশ্বরূপ-বিশ্বস্তরদেবৌ স্থতাবৃত্তो ॥ অথ বন্দে বিশ্বরূপং সংক্রাসিগণভূপতিম্। শঙ্করারণ্য সংজ্ঞতং চৈত্ত্ব্যাগ্রভমন্ততম ॥ वत्म श्रीतिकतः, तमभगवश्रमः धामकाकनातात्म ভাবং গৃহন্ রদয়িতুমিহ শ্রীহরিং রাধিকায়া:। উদ্ধৰ্ত জীবসজ্যান্ কলিমলমলিনান্ সৰ্বভাবেন হীনান্ জাতো যো বৈ-স্থাপ: পরিজননিকরৈ: শ্রীনবদ্বীপমধ্যে। বন্দে লম্বীপ্রিয়াং দেবীং ততো বিফুপ্রিয়াং ততঃ। দেবং গদাধরং যে। হি ঘিতীয়া কায় ঈশিতঃ। স চ বিভানিধে: শিশ্ব: প্রভৃত্তির্গাকর:। সোহসৌ গদাধরো ধীর: সর্বভক্তজনপ্রিয়:। বন্দে পদাবতীং ভক্ষা: পতিং ইডিডপপণ্ডিতম। যয়েকৈ পুত্রতাং প্রাপ্তো নিভ্যানন্দো দয়াময়:॥

প্রথম সাত জোক পঞ্জিত বাবাজী মহাপরের থক্তিত পুথিতে নাই ; বরাহ-নগরের অভদ্ধ পুথিতে যেমন আছে, তেমনি দিলাম।



#### [ 500 ]

বলে নিত্যাননদেবং বলভদ্রং স্বয়ং প্রভূগে আনন্দকন্দমভয়ং লোকনিতারকং গুরুম্। পুরুষ: প্রকৃতি: সোহসৌ বাহ্যাভ্যস্তরভেদত:। भन्नोत्रर**्टिमः क्**कर् श्रीकृष्ण निरंश्वनम् ॥ वत्म श्रीवस्थारमवीः निज्ञानमञ्जूष्टिशास्। প্রীস্থ্যদাসতন্যামীশশক্তা প্রবোধিতাম্। বলে প্রীভ্রুবীদেবীং শ্রীপুরীশ্বশিষ্যিকাম্। असक्षमध्यतीः साम गार वप्तकि तरहाविषः। তস্তাজ্ঞয়া তং স্বরূপং সংক্রম্ম গচ্চতঃ প্রভোঃ সেবতে পরমপ্রেয়। নিত্যানন্দং দৃচব্রতা। বিরহাক্ষিতা নিতাং বুনারণ্যগতেখরী ८भाभीनाथः जहे मनाखनीवीः विष्कर्य मः। আকৃষ্টনীবিকা দেবী তমুবাচ রুগোদয়ম্। আগমিধ্যামি শীন্তং তে পদরোরস্থিকং পদম্। বীরচন্দ্রং প্রভুং বন্দে প্রীচৈতন্মপ্রভুং হরিম্। কুত্রিতীয়াবতারং ভ্রন্ত্র্যতারকম্। বেদধর্মারতং তথা বিরতং নিরহঙ্গরতম্। निम छः मध्यभ्यकः जारूवीस्मदकः विश् ॥ নিত্যাননপ্রভূত্তাং রাধারুক্তবাঝিকাম। মাধবাচাথাবনিতাং সচিচদানন্দরপিণীম্। প্রতিপ্রমান্তরীমুখ্যাং জগতাং মাতরং বরাম্। वत्म ग्रशः त्थ्रमहाजीः चृत्रन्वम् शावनीः ॥ সা গলা জাহুবীশিলা সহেইশ্রপি পাবনৈ:। বিরিঞাপজভাহাভঃ পুনাতি ভূবনএয়ম্। দ্বিজকুলতিলকং কুতাবতারং গলাং গৃহীতৃকামাবতীর্ণাম্। মাধবং মাধবরপং রসময়তভুং প্রেমাগাম্॥ द्रेवतभूती नियाः भक्त नर्गनभातकः । বিফ্ডকপ্রধানক সদ্গুণাবলীভূষিত: ॥ বিচার্যা তেখু মতিমান্ কর্মজানপরাকিপন্ কুফপ্রেমতত্বং নির্ণিনায় দ্যানিধি:।

विक्निक्तिकः भूतागः यूनीसमानिक्षनीयक्कमः। वत्म जीमाधरवतः वाकाः हकात इति उक्तः यः ॥ वत्मक्टेषण्डः कृशानुः शत्रयककृतकः माखवःश्राम माकार ষেনা নীতন্তপোভিঃ পরিকর্মহিতঃ তীশচীনন্দনোহত্র। কৈলাসজাদিশক্তিং ত্রিভূবনজননীং তংপ্রিয়াং নাম সীতাম্। যক্তান্তই: প্রসাদং ত্রিজগতি চ দলে প্রীজগরাথ আস । তৎ স্থতানাং হি মধ্যে তু ষোহচ্যতানন্দপজক **७: वत्म भव्रशाममः कृष्टेहरूमावहस्य ।** যোহসৌ প্রীরুষ্টেতক্ত-তথ্যজাহচাতদংজক: শ্রীগদাধরধীরত সেবক: সদ্গুণার্ণর: । প্রীলাছৈতগণা: স্থতাশুনিতরাং সর্বোধরত্বেন হি। श्रीटेठ जना हतिः प्रशान्य छक्न छक्ना भठीन सन्म ॥ তে দৈবেন হতা পরেচ বহুবন্তারাজিয়ন্তেশ্বহি। তে অমিজ্যাচাত মৃতে ত্যাক্ষাময়োপেঞ্চিতা:। श्रीवामः नावमः वत्म गानिनीः श्राचिमा उत्रम्। ভতো নারায়ণীদেবীমধরামৃতদেবনীম্। वत्म नावायनीष्ट्यः नामः वृम्नावनः প्रत्यः। वीनिज्ञानसटेठज्ञ धनवर्गनकातिनम् ॥ হরিদাসং ত্রন্ধাম হরিনামপ্রকাশকম্। वत्म वागीमृडिएकमः क्षत्रनामन्मणिकम् ॥ গোপীনাথং ততো বন্দে চৈত্রস্তব্জিকারকম। মুরারিগুপ্তক ততে। হতুমন্তং মহাশগম ॥ প্রীচন্দ্রশেখরং বন্দে চন্দ্রবং শীতলং সদা। व्याहायात्रवः त्यादिन्तर्थकः दशीवमानम् ॥ ব্রিক্ষ নির্মলগুণগানোরত: মহাশ্যম। বলে মুকুলদন্তং চ কিল্পরৈ:ত, য়মানকম্। বন্দে বাস্থদেবদন্তং মহবৈঃ পরিপুরিতম। যুক্তাঙ্গবাযুম্পর্শেন সভাপ্রেমযুগে ভবেং। मारमामत्रभी ভाषरत्रो अभवाशभकतमातायगार । পঞ্চ নির্কাসনান্ বৈবন্দে সাধুন্ মহাশয়াং ভান্।



#### [ 500 ]

প্রভু মাতা মহাধ্যাতিং নীলামর চক্রবর্ত্তিনংবলে। যে। লিখিতবান কোষ্টিং ভবিশ্বছনিসংযুক্তাম । শ্রীরাম পণ্ডিতং বন্দে সর্বাড়তহিতেরতম্। ওণৈক ধাম প্রীগুপ্ত নারায়ণ মহাশগ্ম। মবদ্বীপ কুতাবাসং গঞ্জালাসং গুৰুং পরম্। वटम खीविकुमामः हथी छम्मन मःक्रकम् ॥ वत्स मनाशिवः विद्यानिधिः जीगर्डरमवह । শ্রীনিধিং বৃদ্ধিমন্তং চ শ্রীল শুক্লাখরং পরম । ব্রজাচারিণ এতান বৈ প্রেমিন: যরাহাশ্যান্। শ্ৰীরামদাসং চ কবিচন্ত্রং চৈব রূপানিধিম। वत्म त्नथक विषयः उथाठायां ब्रायुश्वः ठ विमनम শ্রীধরমুদারং খ্যাতং তনয় সহিত বনমালিনংচ বৈ । इनायम-वास्ट्रास्ट्रो बैटिंड ज्यामानामी विभागी। বন্দে ঈশানদাসং শচীদেবীপ্রীতিভালনং চ। श्रीमानमधायो वटन विनयम कृषामध्यो । পরমানন্দলন্মণো তৌ চৈত্ঞাপিতমানদো ॥ গরুড় কাশীবরং জগদীশগদাদাবুডৌ क्रकानमः भ्रवदः वटम वायम्कुमः প्रमम्॥ বন্দে বল্লভমাচার্যাং লক্ষ্মীকলামনোরমাম্। যো দত্তবান্ শচীজায় বরায় গুণরাশিভি:।। व्यक्षा मनाजनः वत्म পश्चितः अनुगालिनम्। বিকুপ্রিয়া স্থতা খেন শচীজায় সমর্শিতা ৷ कानीनाथः विकः वत्मश्याहाशः वनशानिनश् नचौरमवीविवाहार्थः घर्षेनाः याम्रिष्टवर । व्यर्थाश्वत्रभूतीः वत्म यः कृषा छक्रमीश्वतः আত্মানং মান্যামাদ ধরুং চৈতনাদংজক:। শ্ৰীকেশৰ ভাৰতীং বৈ সংগ্ৰাদিগণ পৃত্বিতাম্। वटक ययाक्रजः नामी क्रजन्यां महाधानः ॥ সদ। প্রভু বশাং বন্দে রামচন্দ্রপুরীং ততঃ। श्री श्री भवगानम मुखवाशाः इतिश्रिम् ॥

পতাভামাসমাং বলে দামোদরপুরীং ততঃ। বন্দে নরসিংহতীর্থং স্থানন্দপুরীং ততঃ। গোবিন্দানন্দ নামানং ব্রহ্মানন্দ পুরীং ততঃ। নুসিংহানকনামানং সভ্যানকং চ ভারভীম ॥ বন্দে গরুভাবধৌতংহান্তত প্রেমশালিনং। ততো বিষ্ণপুরীং বন্দে ভব্তিরত্বাবলীকৃতিম । ব্রদানন্ত্রপঞ্চ কুফানন্ত্রীং ততঃ। প্রীরাঘবপুরীং বন্দে ভক্ত্যাপরমহামুদা। বন্দে বিশ্বেশ্বরানন্দং শ্রীকেশবপুরীং ততঃ। यत्मश्थास् ज्यानमः विमानमः स्विज्वकम् ॥ वत्म को भववानत्मो अञ्चल मनाज्यो। वित्रको ह कुभान ह वृत्सावन निवामित्नो ॥ যত্ পাদাবৃপরিমল গন্ধলেশবিভাবিত:। জীবনা মানিধেবেয়তা বিহৈব ভবে ভবে। প্রীরূপ: সর্বাশাস্তানি বিচার্য্য প্রভূ শক্তিমান। ক্ষাপ্রেমপরং তত্তং নিশিনায় কুপনিধি: ॥ সনাতনো ভক্ত কতাং গোপাল চটুনামত:। হরিভক্তিবিলাসাদি কতবান্ নিরপেক্ষক:।। স গোপালভট্:সনাতন নিকটবর্ত্তী হরিগুণরত:। দিবসরজনীং স্থাপেন যাপ্রামাস মতিমানিছ। তত্বিতংপ্রভূত্তপ গুণং নিশমা গোপালভট্ট: স্ততং ভি আত্মানং ধন্তং থলু মানয়ামাস পরিতোহি য:॥ वत्स तघुनाथमागः ताथाक्छनिवामिनः। চৈত্র সর্বত হল: ভাকারভাবমূরমম্। গোস্বামিনং রাঘবাখাং গোবর্জনবিলাসিনম। বলে ভারবিশেষেনং বিচরস্কং মহাশ্যম ॥ বন্দে রঘুনাথভট্ন: জভাগবভাগাপকং বিনয়েন। লোকনাথগোস্বামিনং ভূগর্ভ ঠকুরং বিমলম্। প্রবোধানন্দরস্বতীং বন্দে বিমলাং য্যামুদা। চন্দ্রামৃতং রচিতং যং শিয়োগোপাল ভট্ন: ।



#### [ 309 ]

ততঃ কাশীখরং বন্দে ততঃ শুদ্ধ-সরস্বতীম্। ততক রাঘবানকং নিত্যানকাঞ্ভাবিনম্। শ্রীমান পদ্মাবতী স্তর্থধেশানি কৃত্ত্লী। माफिश तृत्य मीलक श्रूला देव ममरवासवर ॥ वटन भूतन्तवः माकानकरम् ममः विरु। यद्याञ्जलः সংদদর্শ গুহে কশ্চিবিজোত্তমः। वत्म कानीभिधवत्-भू कनष् स्निर्भनभ्॥ যস্তাপ্রমে গৌরহরিরাসীং তম্ভক্তিপৃঞ্জিত:। বাণীনাথং ততো বন্দে জীজগল্প জীবনম্। রামাননাং ততো বন্দে ভক্তিলক্ষণসংস্থলম্। যক্তাননাদম্ দান্ধি চৈতক্তেন রুপালুনা। স্বভক্তি দিদ্ধান্তচয়সমূতং বৰ্ষিতং ভূবি। ততো বক্তেশ্বং বন্দে প্রভূচিত্তং স্বর্জ ভম্। যশ্মিন প্রেমানন্দতয়া কীর্ত্তনং কুতবান্ প্রতুঃ। বন্দে স্থাীবমিশ্রং তং গোবিন্দং দিজমূভমন্। -যদ্ভক্তিযোগমহিম। ক্সপ্রসিদ্ধো মহীতলে॥ প্রভোক্তি গমনার্থ: হি জীনবদ্বীপভূমিত:। चारशोक्षक्रि रहरेनव वक्षः स्मृज्यस्नामग्रः ॥ বন্দে গদাধরং দাসং বৃষভাত্ স্থতামিহ। শ্রীকুঞ্নোভির দেহাং মহাভাব স্কৃপিকাম্। वत्म महानिवः देवछः एख न्लार्मन देव ह्वर । সভোহি স্তৰতাং যাতি কিম্তান্তে সচেতনাঃ ॥ दस्म विवानमध्यतः निष्ठांशास्त्रि भतायगम । যোহসৌ প্রভূপদাদন্ত নহি জানাতি কিঞ্ন। भूक्ननामः ७१ वटन वश्क्रा वधूनननः। কামো রতিপতির ডডুং যো গোপাল-মভোজনং। শ্রীমুকুন্দদাসভক্তিরভাপি গীয়তে জনৈ:। দৃষ্ট্র মন্ত্রপুক্তং যা ক্ষাপ্রেম-বিক্ষিতা। সজো বিহবলতাং প্রাপ্তঃ পরমানন্দনিবৃতঃ। বাহ্বভীরজানংক প্পাতাধো মহাপদাং।

বন্দে ভক্ত্যা নবহরিদাসং চৈত্তাপিত-ভাববিলাসম। মধুমত্যাধ্যং পুণাং ধরুং যো ন পশুতি রুষ্ণাদরুম্। স চ রখনন্দন এব বরেপ্যো নরহরিশিয়া: স্কৃতিমান্ত:। বাল্যাবধিত: সাধুচবিত্রো ভত্তিবিংশাধিত-চিত্তপবিত্র:। वत्मञ्चनामः त्रचुमाधमः अतुन्ततानाधामुनात्रत्तहेम् ॥ প্রিকুফ্দাসং হরিপাদজাশং শাস্তং রূপালুং ভগবজরপ্রিয়ম'। বন্দে প্রভু সতীর্থং বৈ পরমানন্দপণ্ডিতাম্ দেবানন্দ পণ্ডিতঞ্ প্রভাগবতপাঠকম বন্দে আচার্যারতঃ চ বিদিতপ্রেমমর্থকম্। र्গाविन्धाधवाननवाञ्चरघायान् ध्वाकतान् ॥ श्रुक्रायाख्यशाः मानः देव वत्म जेवर्यामानिनम्। কর্ণযোকরবীপুষ্পাং পদাগন্ধং চকার য:। वत्मञ्जितामः मागः देव यः जीमामाश्रमः जृति । বহুভোলাং কাঠমেকং বংশীং যোহকুতলীলয়া। वत्स शिक्क्सबानमः छनाम ल्यानक्रिनिः ষৎ শিক্ষোদ্বিপবর্গেড়ো হরিনাম দলবিহ। वत्म वीरगीतमामः ह रगामानः खवनाथाक्य। যন্নীত পরমানলং মুৎফলেইছৈতঠকুর:॥ প্রীচৈত্যানিত্যানন মৃত্তিঃ সাক্ষাৎ প্রকাশিতা। यम् विमर्गनाः मणः कर्षवस्य दशक्तरः। পরমেশবং ততো বন্দে ঠকুরং সপ্রকাশকম। যো নৃতান্ আব্যামাদ হরিনাম শুগালকান । পি খিলাহিং ততো বন্দে বালা ভাবেন বিহবলম। वत्स मःकीर्खनानसः कप्रनाकत-मामकप्र॥ পুরুষোত্তমাধ্যং তীর্থং বন্দে রসিকশেধরম। कालिशक्तकामगरभा वत्म ८ अदेशवविद्दलम् ॥ শারদ-ঠকুরং বন্দে স্বপ্রকাশিত-বৈভবং। খেন দ্ভানি সপেঁভাঃ স্থানানি নিজ্যাসানি। মকরধ্বজং ততো বন্দে ওণৈকধামপুলরম। यः करत्राजि मनाकृष्णकीर्तनः आकृमतिरशे ।



#### [ 500 ]

ততো ভাগবতাচাগ্যং শ্রীকবিরাজমিশ্রকম্। व्यवस्थान्याभाषा नवद्योशनिवाभिनः ॥ মধ্বাখাং পণ্ডিতং বন্দে গোবিন্দাচার্যানামকম্। রাধাকুফুরহজা যে। বর্ণমামাস তভাপরা ॥ ততো বন্দে দার্কভৌমভট্টাচার্যাং বৃহস্পতিম্। ততঃ প্রতাপকত: চ যংদৃষ্টা: প্রত্-বড়ভূজা: ॥ वस्म त्रधूमाथविक्षः विकाः श्रीविक्षुनामकम् । পরশ্র ভ্রাতরং বন্দে দাসং তু বনমালিনম্। বিপ্রদাসমুংকলস্থং হরিদাসং ঘিজং ততঃ যাভাাং প্রেম্বাবশং নীতঃ প্রশচীনন্দনোহরিঃ। कानाइेथ्रियाः वत्स कृष्ण्ट्यमत्रमाकत्रम् । यक भूरको अभवाधवनवारमावृत्को छटको । বন্দেহি জগল্লাথং যদ্গানাং তরবো কদন্ বিবশা ইহ। বলরাম মোডিনং কঞ্বং যদ্দৌবল্ডগরাথী চ। গোবিন্দানন নামানং ঠকুরং ভক্তিযোগতঃ। বন্দে প্রভোমিমিতং যদ্বদ্ধংসেতৃশ্চ মানসং। ততঃ কাশীখরং বন্দে শ্রীসিংহেখরসংজকম্। শিবাননং পণ্ডিতং চ ততক চন্দনেশ্রম্। वटन পরমভাবেন মাধবং পট্টনায়কম্। হরিভট্রং ততো বন্দে মহাতিং বলদেবকম্। স্বৃদ্ধি-মিখাং চ ততঃ খ্রীনাথং মিখ্রম্ব্যম্। বন্দে প্ৰতুলদীমিশ্ৰং কাশীনাথং মহাতিকম্ ॥ वस्त्रवाधनगर वामाननः मरनाष्टिकम्। পুরুষোত্তমব্রন্ধচারিমধ্বাখা-পণ্ডিতাবুভৌ ॥ শ্রীচৈতত্ত-প্রভোড় তো) দয়ালু চ মহাশয়ে। মহাকাঞ্দিকা এতে সর্বত্ত নিরপেক্ষকা:। বন্দে ঘিজরামচক্রং শ্রীধরপত্তিতং চ গুণৈরুদারম্। বন্দে যত্ত কবিচক্রং ধনঞ্য পণ্ডিতং দভবিভদ্। প্রসিদ্ধং যক্ত বৈরাগাং সর্বাস্বং প্রভবেহপিতম্। গৃহীতে ভাও কৌপিনে পণ্ডিতেন মহাত্মনা।



#### [ >> ]

পণ্ডিত: শ্রীজগরাথমাচার্যাং লক্ষণং ততঃ। কুফাদাসং ততো বন্দে স্থাদাসং চ পণ্ডিতম্। ততো বনে क्रक्षवः नैः वः भीवमन ठेक्त्र । মুরারিটেতভ্রদাসং হমাজগ্রথেলকম্॥ वत्म अभवाशस्माः भवभानमञ्ज्यकम्। বালকং রামদাসাধ্যং কবিচল্রং ততঃপরম্। বন্দে ত্রীবল্পভাচার্যাং ততঃ কংসারি সেনকম্। ভাশবং চ ততো বন্দে বিশ্বকর্মপ্রকপক্ষ্ ॥ বন্দে বলরামদাসং গীতাচার্য। লক্ষণম্। সেবতে পরমানকং নিত্যাচার্যপ্রভংহি য:। মহেশপণ্ডিতং বন্দে ক্ষোন্মাদসমাকুলম্। নর্ত্তকং পণ্ডিতং বন্দে জগদীশাখ্যপণ্ডিতম্ ॥ ঠকুরং কুঞ্-দাসং চ নিত্যানন্দপরায়ণম্। যোহরকং স্বগৃহে নিত্যানন্দদেবং হি ভক্তিত:। গৌরীদাস তত গতা গৃহীতোক্তা নিজঃ প্রভূম। সমান্যভতোহন্তঃ কণ্ডস্তভঃ স্থ্যামাহিতঃ। শ্ৰীকৃঞ্দাস প্ৰেয়োহি মহিমা কেন বৰ্ণাতে। যো নিত্যানন বিরহাৎ সপ্তমাসাংক বাতুল:। পুন: সংদর্শনং দত্বা তেনৈব স্থান্থিরীকুত:। यटमञ्थावरशोखवदः भद्रमानम मः अक्म ॥ অনাদি-গদাদাস: চ পণ্ডিত: হি বিলাসিনম্। দাসং শ্রীষত্নাথাথাং বন্দে মধুরচিতকম্। বন্দে প্রপুরুষোত্তমং তীর্থং জগরাথং রামসংজ্ঞং চ। রঘুনাথ-তীর্থ: ভ্রতগমাশ্রমমূপেক্র: হরিহ্রানন্দম্ ॥ वत्म वाञ्चलवः छीर्थः जीनामच भूतोः-छएः। মুকুন্দকবিরাজ্য চ ততোরাজীব পণ্ডিতম । প্রীজীবপণ্ডিত: বন্দে সর্বাসঘূণশালিনম। শ্রীচৈতবাচন্দ্রপদেউক্তি যশ্র স্থনির্মাণা। শিশুকুফরাস সংজ্ঞ: শ্রীনিত্যানন্দপালিতম । वत्म ऋथमग्रः भूगाः भविकः यः करणवत्रम् ॥



#### [ 555 ]

বন্দে উদ্ধারণং দত্তং যে। নিত্যানন্দসম্বতঃ। বভাম সর্বতীর্থানি পবিত্রাস্থাহনপেক্ষক:। বন্দে শ্রীমাধবাচার্যাং রুক্তমঙ্গলকরিকম । নুসিংহতৈভৱদাসং কৃষ্ণদাসং ভতঃ পরম্। বলে প্রীশত্তকরং ঘোষমকিঞ্চনবরং শুভম। ডক্ষবাছোন যে। দেব: শচীস্থতমতোষয়ং॥ श्रुनः श्रुनवहर वत्म देवकवम् इ छ १ भनान्। চক্রবভিশিবাননং শ্রীনারায়ণসংজকম্। প্রত্যেক: বন্দন: চৈধা: তল্পামোজারণ: তথা। वित्यव्यक्षिश्चानानवञ्चल्यानिनाम् ॥ ম্যাবিদিততবানাং বৈঞ্বানাং মহাত্মন।ম্। তীর্থপাদনামতুলাং নৈর্মলো কারণং পরম্। মাধ্বেক্স বহব: শিক্ষা ধরণীবিস্তৃতা:। व्यदेवजम्थाः छङ्नाः महर्यनभूतीम्थाः ॥ অথেশ্বর পুরীম্থ্যা গোবিন্দান্তাশ্চ কেচন। পুরীপ্রিমানন্দম্থাকা লোকপাবনা:। অথেশ্বরপুরীশিয়ে। গৌরচন্দ্রক জাহুরী। সঙ্কর্ষণপুরীশিয়ে। নিজ্যানন: প্রভ: স্বয়ম্। যে যে চৈতত চন্দ্ৰত পূৰ্বভক্তা অবাতরন্। তে সর্বে ছারত: কেন মাধ্বেক্সকুপায়িকা:। মাধবেক্রপুরীসংজ আদিউক্তো ওকতথা। তদ্ওণাঃ কৃষ্ণচৈতক্তসেবক। ভক্তিদাবকাঃ। অবৈত্ত্বারতঃ কেচিৎ সীতাদারাচ কেচন। পদাৰতী স্তবারা ছাহ্বী বারতস্থা। কেচিং গদাধরছারাং শীরপদারতথা। কেচিৎ সনাতনধারা হরিদাসেন কেচন। রঘুনাথদাসতঃ কেচিং কেচিংবক্রেশরেণচ। কাশীখরেণ কোচিত তথা নরহরেরপি। রামানন্দেন কোহপিই সার্ব্ধভৌমেন কেচন। এবমজেচ বৈ ভক্তা অল্ডৈং সেবকাইছ।

### [ >>< ]

অত: প্রিরুফটেতভাং সর্বারাধ্যং জগদগুরুম। তত্ত্তপ্ৰময়ং সাক্ষাৎ তমেব শরণং গতা:। যেহতাবভাবিভাভজাঃ ক্ষেণ নিভাসন্ধিনঃ। প্রযোগন বিশেষৈশ্চ বন্দিত। যে চ কীর্ত্তিতাঃ। দাসাল্ড শক্তমুন্ডাপি তথাং শোল্ড স্বরূপকাং। এষাং বিশেষে৷ বিজেয়: জীলভাগবভামুভাং ৷ ক্রেমে। বিভরণং দৃষ্টা লুকা যেহএ সমাষ্যু:। তেহপি বন্দাঃ পরেশক্ত ভক্তিস্পর্শবিশেষিতাঃ। এতহৈফববন্দনং স্থকরং সর্বার্থসিদ্ধি সিদ্ধিপ্রদং শ্রীমরাধ্বিকসং প্রদায়গণনং শ্রীক্রয়ভব্তিপ্রদম খ্রীচৈতরা মহাপ্রভো ওঁণমনং তম্ভকবর্গানর জীবেনৈব ময়া সমাপিতামিদং কুখাতুপাদাপিতম্। ইতি শীলীব গোস্বামি বিরচিতা মাধ্বসংপ্রদায়াত্র-সারিণী চৈততভক্ত বৈফ্ব-বন্দনা সমাপ্তা। শ্রীহৈতভাচন্দ্রায় নম:। শ্রীনিত্যানলচন্দ্রায় নম:। প্রতিষ্ঠিত চল্লায় নম: ॥

## পরিশিষ্ট (চ)

### বৈষ্ণব সাময়িক পত্রিকার ইতিহাস ও সংগ্রহ

• বাঙ্গলাদেশে সন্দর্ভম্পক গ্রন্থের চাহিদা অতান্ত অয়। বিচারায়্মক প্রবদ্ধ বা গ্রন্থ কেই রচনা করিলে কোন প্রকাশক নিজর ধরচে উহা ছাপিতে সহজে রাজী হয়েন না। অল্লান্ত কারণের মধ্যে এই জাতীয় গ্রন্থ রচিত না হইবার ইহা একটি প্রধান কারণ। প্রবন্ধ যদি আকারে বড় না হয়, ও সাধারণ পাঠকদের মধ্যে উহাতে কৌতৃহল্টজনীপক কিছু থাকে, তবে সাম্মিক পত্রিকাদির সম্পাদক তাহা ছাপিয়া খাকেন। সেইজ্লভ বাঙ্গালাদেশে ওকতর বিষয় লইয়া যাহা কিছু উনবিংশ ও বিংশ শতালীতে লেখা হইয়াছে তাহার অধিকাংশই সাম্মিক পত্রিকাদির মধ্যে নিবন্ধ আছে। বাঙ্গলাদেশ সম্পর্কে কোন বিষয় লইয়া প্রেষণা করিতে গেলে ঐ সব প্রবন্ধ আগে পাঠ করা প্রয়োজন। এই হিসাবে প্রমুক্ত রজেজনাথ বন্দ্যোপাধায় মহাশয় সংবাদপত্রে সেকালের কথা ছইথও, "বাঙ্গলা সাম্মিক পত্রের ইতিহাস" ও বঙ্গায়-সাহিত্য-পরিষদ গ্রন্থাগারে ১০০১ বঙ্গার পয়্যন্ত সংগৃহীত বাঙ্গলা সাম্মিকপত্রের তালিকা প্রকাশ করিয়া বাঙ্গলার সমাজ ও সংস্কৃতির ইতিহাস চর্চার বিশেষ স্থবিধা করিয়া দিয়াছেন।

এদেশে ব্যবসা হিসাবে সাময়িক পত্র চালাইতে হইলে উহাকে পাঁচ মিশেলী করিতে হয়। কোন একটা বিশেষ বিষয় লইয়া তাহারই গভীর ও হল আলোচনার জন্ম পত্রিকা চালাইলে আর্থিক ক্ষতি অবগ্রন্থাবী। এই জন্মই "বিজ্ঞান দর্পণ", "ইতিহাস ও আলোচনা", "ঐতিহাসিক চিত্র" প্রভৃতি পত্রিকা স্থায়িত্ব লাভ করিতে পারে নাই। "ব্রাহ্মণ সমাজ", "কায়ত্ব পত্রিকা", "তিলি বান্ধব", "উগ্রক্তিয় পত্রিকা", "ক্তিয় বান্ধব" প্রভৃতি জাতিত্বমূলক পত্রিকা কোনক্ষপে জাতিহিতৈষণার বলে টিকিয়া আছে। বিশেষ কোন বিষয় আলোচনার জন্ম যে সব পত্রিক। প্রকাশিত হইয়াছে, তাহার মধ্যে বৈষ্ণৰ সাময়িক পত্রিকার নাম বিশেষভাবে উল্লেখযোগা। বৈষ্ণবধ্য যে বাঙ্গলার সমাজ জীবনে কতথানি স্থান অধিকার করিয়া আছে তাহা বৈষ্ণব সাময়িক পত্রের সংখ্যা দেখিলে সহজেই বুঝা যাহ।

"বঙ্গীয়-সাহিত্য-পরিষদ গ্রন্থাগারে সংগৃহীত বাঞ্চলা সাম্যাক পরের তালিকা"য ২৯ গানি বৈষ্ণব সাম্যাক পরের নাম অকারাদি ক্রমে দেওয়া চইয়াছে। প্রীণুক্ত হরিদাস গোস্বামী মহাশ্য ১৩০০ সালে "প্রীশ্রীবিকৃপ্রিয়া গৌরাস পজিকা"র প্রথম বর্ষের দশম সংখ্যায় বার্থানি লুগু ও আটখানি প্রচলিত বৈশ্বব পত্রিকার নাম দিয়াছিলেন। ঐ পজিকার দিতীয় বর্ষের প্রথম সংখ্যায় আরও সাতথানি লুগু পজিকার নাম প্রকাশিত হয়। মোটের উপর গোস্থামী মহাশ্য সাতাশধানি পজিকার নাম দিয়াছেন। তল্মধ্যে ১৪ থানির নাম সাহিত্য-পরিষদের তালিকায় আছে ও তেরখানির নাম নৃত্ন। আমার জানা পজিকাগুলির কালাহ্যায়ী একটি তালিকা নিম্নে দিতেছি। এই সব পজিকার প্রথম প্রকাশের হে তারিখ দিতেছি, তাহাতে কোন কোন স্থানে এক বংসরের ভূল থাকিতে পারে। কেন না প্রটেচতল্যান্সকে বল্পানে পরিণত করিবার সময় আমি আমার নোট বইয়ের উপর নির্ভর করিয়াছি; পজিকাদি প্ররায় দেখিবার স্থযোগ পাই নাই। পজিকাদি যদি একস্থানে সংগৃহীত থাকিত তবে একপ ভূলের সপ্তাবনা থাকিত না।

১। নিত্যানন্দদায়িনী পত্রিকা ( ত্রৈমাসিক )—ইহার এক সংখ্যা মাত্র সাহিত্য পরিষদ্ গ্রন্থাপারে আছে, কিন্তু তালিকায় উহার প্রকাশের তারিধ দেওয়া নাই। শ্রীযুক্ত হরিদাস গোস্বামীর তালিকায় ইহার নামই নাই। শ্রন্থেয় শ্রীযুক্ত মুণালকান্তি ঘোষ মহাশ্য ইহার অনেকগুলি সংখ্যা সংগ্রহ করিয়াছেন ও আমি ঐগুলি তাহার নিকট হইতে ধার করিয়া আনিয়াছি। ৪০৫ গৌরান্দে, ১২৯৮ বঙ্গান্দে, "বিফুপ্রিয়া পত্রিকার" প্রথম বর্ষের ৪৭ পৃষ্ঠায় প্রবীণ বৈক্ষব সাহিত্যিক হারাধন দক্ত লিখিয়াছিলেন ঘে, সর্ব্যপ্রমা বৈক্ষব পত্রিকা হইতেছে "নিত্যানন্দদায়িনী"; উহা "২০ বংসর পূর্ব্বে স্থাই হয়", অর্থাৎ ১২৭৮ বঙ্গান্দে প্রথম প্রকাশিত হয়। আমার কাছে ঐ পত্রিকার "২য় সাহ্থংসরিক, ২য় গণ্ড, সন ১২৭৯ সাল প্রথম ভাগ" আছে। এই পত্রিকা নিত্যানন্দদায়িনী সভার মুখপত্র ছিল ও যোডাসাকো যন্তীতলা গলির শ্রিশীভরাধাকান্ত জীউর ব সংখ্যক ঠাকুর বাটী হইতে প্রকাশিত হইত।

শহরমপুরের রামনারায়ণ বিভারত ও বুলাবনের নিতাপ্তরপ ব্রন্ধারী বৈক্ষর গ্রন্থ প্রকাশ করার পূর্বে এই পত্রিকাতে প্রাচীন বৈক্ষর গ্রন্থমূহ বঙ্গ প্রকাশিত হইত। বৈক্ষরগ্রন্থ প্রচারের ইতিহাসে পত্রিকাথানির নাম চির্পার্ণীয় থাকিবে। নিত্যানন্দ-দায়িনী পত্রিকায় নিয়লিখিত গ্রন্থমূহ প্রকাশিত হইয়াছিল—

(২) বাগাবন্ত চল্লিকা, (২) যুগলকিশোর সহস্রনাম ও তরাহান্তা, (৩) ভ্য-গোস্থামীর স্বচক ও জীলীভাষ্টেত চরিত্র, (৪) জীমন্তাগবভ মাহান্তা, (৫) জীচৈতন্ত-চল্লামত গ্রন্থ মূল, চীকা, ভাষাত্রবাদ সভিত, (৬) জীউদ্ধায়ায় সংহিতা, (৭) ঐতরেয়োপনিবহ, (৮) জীরাধারুফরসকল্পবন্তী, (১) জীলীবিক্ষত্রের অভ্যন্তি, (১০) কবিকর্ণপ্রের স্থানন্দর্লাবনচম্পু কাবা, (১১) ইশান সংহিতা, (১২)

# GENTRAL LIBRARY

### [ 350 ]

শ্রিকফাটেডভামহাপ্রভুব সহস্র নাম ভোত্রং, (১৩) শ্রীগণ্ডবাসী শ্রীনরহরি সরকার ঠাকুর কৃত প্রিগদাধর পত্তিত গোস্বামীর জন্মকর্মাদিলীলাগুণ বর্ণনা, (১৪) প্রীদনাতন গোখামী বিনিমিত: শ্রীগদাগর পণ্ডিত গোখামাইকং, (১৫) শ্রীন্যনানন্দ গোখামী বিনিমিত: এইগোর গদাধরাইক: (১৬) গ্রিজপগোস্বামী, লোকনাথ গোস্বামী, স্বরূপ গোস্বামী ও শিবানন্দ চক্রবর্তি-কৃত চাবিটা গ্লাধরাষ্ট্রক, (১৭) শ্রীরূপ গোস্থামীর শীরুঞ-চৈতভাষ্টক ৩টা, (১৮) রঘুনাথ দাসগোস্থামীর চৈতভান্তবকল্পরক্ষ; (১৯) শ্রীবৈঞ্বদাস বাবাজীকত শ্রীকফ্টেড্রার্টক, (২০) বিশ্বনাথ চক্রবজীর শ্রীশ্রীগোরাঙ্গের অষ্টাকালীয় লীলাশ্বরণমঙ্গল স্থোত্ত:, (২১) যতুনাথ দাস কত গদাধর পতিত গোস্বামীর শাথানির্ণয়ামৃত, (২২) নরহরি দাস কত নব্মীপ পরিক্রমা (এই গ্রন্থ ১২৮০ বলালে নিত্যাননদায়িনী পরিকায়, ১২৯৫ বলালে ভজিরতাকরের মধ্যে ও তাহার পরে অনর্থক সাহিত্যপরিষদ্ হইতে ছাপা হইয়াছে )। (২৩) কুঞ্দাস কবিরাজ কুত বৃন্দাবনপরিক্রমা, (২৪) কুঞ্দাস কবিরাজের স্বরূপ বর্ণন, (২৫) মুকুন্দের রাগান্থগা বিবৃতি ( সংস্কৃত ) বান্ধালা অন্থবাদ সহ। উক্ত পত্রিকার ২য় গণ্ডের বিজ্ঞাপনে জীবুন্দাবনচন্দ্রোদয় নাটক প্রকাশিত হইবে বলিয়া ঘোষিত হয়। আমি এই নাটকের নাম পর্যান্ত ভনি নাই। "নিত্যানক্দায়িনী"র সম্পাদক ছিলেন রাধাবিনোদ দাস বাবাজী।

- ২। নিতাধানগত কেদারনাথ দত্ত ভক্তিবিনোদ ঠাকুরের "সজ্জনতোষিণী"
  দিতীয় বৈশ্বৰ সাময়িক পত্রিকা। ১২৯১ বঙ্গান্দে ইহা প্রথম প্রকাশিত হয়। শিক্ষিত সমাজে বিশুদ্ধ বৈশ্বৰশ্ব প্রচারে এই পত্রিকা প্রথম উন্থোগী হইয়াছিল। সাহিত্য-পরিষদে ইহার ১, ১০, ১৮, ১৯, ২০ থণ্ড ছাড়া আর সব খণ্ড সংগৃহীত হইয়াছে। পরিষদের কর্ত্বপক্ষ সামাল চেষ্টা করিলে গৌড়ীয় মঠ বা অলু কোন স্থান হইতে ঐ কয় থণ্ড সংগ্রহ করিতে পারেন। পত্রিকাথানি নবা-বঙ্গের ধর্ম-আন্দোলনের ইতিহাস সৃষ্টি করিয়াছিল বলিয়া ইহার স্বণ্ডলি থণ্ড সংগ্রহ করা উচিত।
- ত। স্থগীয় হারাধন দত্ত মহাশয় "বিফ্প্রিয়া প্রিকা"র প্রথম বর্ষ ১২৯৮ বিদাসে লিখেন যে, "প্রেম-প্রচারিণী" বৈষ্ণব সমাজের তৃতীয় সাময়কি প্রিকা। এই প্রিকা আমি দেখি নাই; উল্পিতি তৃইটা তালিকাতেও ইহার নাম নাই।
- ৪। ১২৯৩ বন্ধান, ৪০০ চৈতভালে প্রকাশিত "বৈষ্ণব"; সম্পাদক, জহব-লাল দাস।
- ১২৯৮ বদ্ধান, ৪০৫ হৈত্তালে "বিফুপ্রিয়া পজিকা" মহাত্মা শিশিরকুমার
   ঘোষের উদ্যোগে প্রকাশিত হয়। ইহার এক সংখ্যাও সাহিত্য-পরিবদে নাই।

#### [ 226 ]

পতিকাথানি ২০ বধ কাল ধরিয়া যোগাতার সহিত পরিচালিত হইয়া সমাজের প্রভৃত উপকার সাধন করিয়াছে। অনেক অপ্রকাশিত পুথির বিবরণ ইহাতে আছে। শ্রীযুক্ত মুণালকান্তি ঘোষ মহাশয়ের নিকট ইহার সম্পূর্ণ সেট্ ও নব্ধীপের শ্রীযুক্ত হরিদাস গোস্থামীর নিকট অধিকাংশ বও আছে।

- ৬। ৪০৬ চৈত্তাকে, ১২৯৯ বন্ধাকে "শ্রীচৈত্ত্যযতবাদিনী", কালনা বিশ্বস্থর প্রেস হইতে বাহির হইতে আরম্ভ হয়।
  সম্পাদক রাধিকাপ্রসাদ ভাগবতরত্বাকর ও শরংচন্দ্র তপস্থী। ইহার একখণ্ডও সাহিত্য-পরিষদে নাই। আমার নিকট ইহার প্রথম ও বিতীয় বর্ষের অধিকাংশ সংখ্যা আছে।
  গৌরপারমাবাদের ইতিহাস ও তৎসম্প্রকিত বাদাত্বাদ বিষয়ে এই পত্রিকার যথেষ্ট আলোচনা হইয়াছিল।
- ণ। প্রভূপাদ মদনগোপাল গোস্বামী ও শশিভ্যণ বন্দ্যোপাধ্যায় সম্পাদিত "আচার্যা" নামক পত্রিকা। বহরমপুর হইতে "ভক্তিরসামৃতসিদ্ধু" প্রকাশের পূর্বের এই পত্রিকায় ক্রমণঃ প্রকাশিত হইতেছিল। আমি এই পত্রিকা দেখি নাই, স্বতরাং ইহার প্রকাশের কাল দিতে পারিলাম না। তবে মদনগোপাল প্রভূর নাম দেখিয়া ইহাকে সপ্তম স্থান দিলাম।
- ৮। ১০০৪ "পদ্মীবাসী"। শশিভ্যণ বন্দ্যোপাধ্যায় সম্পাদিত। এখন তাঁহার পুত্র শীষুক্ত গোপেন্দুভ্যণ সাখ্যাতীর্থ ইহা বাহির করিতেছেন। সাহিত্য পরিবদে ইহার একখণ্ডও নাই। গোপেন্দুবার্ও ইহার সম্পূর্ণ সেট্ বাধাইয়া রাখেন নাই। কালনায় পুরাতন ফাইল আছে।
- ১। ১০০৬, 'বীরভূমি পত্রিকা', সম্পাদক যথাক্রমে চণ্ডীদাসের পদসংগ্রাহক নীলরতন মুপোপাধাায়, জিতেজনাথ বন্দ্যোপাধাায় ও কুলদাপ্রসাদ মল্লিক ভাগবতরত। শেষোক্ত সম্পাদকের হাতে ইহা বৈক্ষরধর্মের higher criticism এর মুখপত্র হয়।
- ১০। ১৩-৬, "ঐগোড়েশর বৈক্ষব" বৃন্ধাবন হইতে ললিতমোহন গোস্বামীর সম্পাদনায় প্রকাশিত।
  - ১১। ১৩×१, 'शोदविक्शिया'।
  - ১২। ১০০৭, 'প্রিগোরাস্থ পত্রিকা', সম্পাদক, যতীক্রচন্দ্র মিত্র।
- ১৩। ১৩০৮, 'গৌডভূমি পতিকা', সম্পাদক, রামপ্রসর যোব; পুটপোষক কাশিমবাজারের মহারাজা মণীক্র চক্র নন্দী।
  - ১৪। ১৩০৯, 'ভক্তি', সম্পাদক দীনবন্ধু বেদান্তরত্ব, পরে দীনেশচন্দ্র ভট্রাচার্য্য।

# CENTRAL LIBRARY

### [ 259 ]

প্রথমে ভাগৰতধন্মপ্রচারিণী সভার মুখপত্ররূপে হাওড়া হইতে ও পরে আন্দ্রবৈড়িয়া হইতে প্রকাশিত।

১৫। ১০১৬, "বৈক্ষব স্থিনী", এলেটা, ২৪ প্রগণা হইতে মধুস্দন অধিকারী কর্ক সম্পাদিত। এই পত্রিকায় অনেক অপ্রকাশিত বৈক্ষবগ্রন্থ প্রকাশিত হুইয়াছিল। বৈক্ষব গ্রন্থের প্রকাশক হিসাবে রামনারায়ণ বিভারত্ব ও নিতাশ্বরূপ ব্যক্ষাচারীর প্রই অধিকারী মহাশ্যের নাম ক্রিতে হয়।

্
১৬। ১৩১০, 'বৈফাব সন্দৰ্ভ' নিভাশ্বরপ ব্রশ্বচারী সম্পাদিত।

১৭। ১৩১৫, 'জীগৌরাঙ্গ পত্রিকা', সম্পাদক, যোগেল মোহন ঘোষ, চট্টগ্রামের দীতাকুওস্থ সপ্তথাম হইতে প্রকাশিত।

১৮। ১৩১৭, 'বৈঞ্বদেবিকা', সম্পাদক, হরিমোহন দাস, কলিকাতা।

১৯। ১৩:৮, 'পৌরাজদেবক', সম্পাদক, যথাজ্যে ললিত মোহন বন্দ্যোপাধায়, রসিকমোহন বিভাভ্যণ ও অমূলাচরণ বিভাভ্যণ। অনেক গবেষণামূলক প্রবদ্ধ ইহাতে প্রকাশিত হইয়াছিল। কাশিমবাঞারের স্বর্গীয় মহারাজা বাহাছর ইহার বায়-নির্কাহ করিতেন।

२०। ১৩১৮, देवकवन्त्रं প्रकाव, मण्यानक, इक्ट्रिय शाचामी (मानकत्र)

২১। ১৩১৯, 'চৈতভাচ ক্রিকা', সম্পাদক, রাধাচরণ গোস্বামী, বুন্দাবন।

২২। ১৩১৯, 'বৈঞ্বধর্ম প্রচার', সম্পাদক একহরি গোস্বামী, মানকর, বর্জমান।

২৩। ১৩১৯, 'জীজীকৃষ্টেচতক্স তরপ্রচারক' (সাপ্তাহিক), সম্পাদক, প্রিয়নাথ নন্দী কলিকাতা।

২৪। ১৩২০, 'নিত্যানন্দ্সেবক', সম্পাদক, পূর্ণচন্দ্র রায়, সন্নাসীভাষা, মুশিদাবাদ।

২৫। ১৩২১, 'আচাঘা', সম্পাদক, বালকৃফ গোস্বামী, বৃন্দাবন।

২৬। ১৩২১, 'বিশ্ববৃদ্ধ', সম্পাদক, বিধুভূষণ সরকার, বাসগুা, বরিশাল।

২৭। ১৩২১, 'হরিদাস', সম্পাদক, গোবিন্দচক্র ম্থোপাধায়ে, সৈদাবাদ, মুশিদাবাদ।

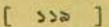
২৮। ১৩২১, 'আনন্দ', সম্পাদক, মহেশচক্র ভট্টাচাহা, সাধ্যাই, মৈমনসিংহ।

২৯। ১৩২৪, 'বৈফ্রসমাজ', সম্পাদক, রাসবিহারী সাম্ব্যতীর্থ ও বিশ্বস্থবানন্দ দেব গোস্বামী।

৩০। ১৩২৫, 'প্রেমপুপ' সম্পাদক, বদিকমোহন বিছাভ্যণ ও গোবর্জনলাল গোস্বামী, কলিকাতা।

#### [ 356 ]

- ৩১। ১৩২৬, 'দেবা,' যোগেজমোহন ঘোষ সম্পাদিত।
- ৩২ । ১৩২২, 'গৌড়ীয়', জন্মরানন্দ বিভাবিনোদ সম্পাদিত। পাণ্ডিতাপূর্ণ অনেক প্রবন্ধ ইহাতে প্রকাশিত হইয়াছে।
  - ৩৬,। ১৩২৯, 'বিফুপ্রিয়া গৌরাম্ন', হরিদাস গোস্বামী সম্পাদিত ; নবদ্বীপ।
- তর। 'শ্রীকৃষ্ণ', সম্পাদক ক্ষীরোদচন্দ্র গঙ্গোপাধ্যায়—১৩০০ এর 'বিফুপ্রিয়া গৌরাঙ্গে' উল্লিখিত। আমি পত্রিকা দেখি নাই।
- ৩৫। 'নিবেদন', ভক্তিবিনোদ ঠাকুরের পুত্রগণ সম্পাদিত , ১৩০০এর 'বিফ্-প্রিয়া গৌরাঙ্গে' উল্লিখিত। আমি পত্রিকা দেখি নাই।
- ৩৬। ১৩২২, 'মাধুকরী', সম্পাদক, স্প্রসিদ্ধ অধ্যাপক ভূষণচন্দ্র দাস, পরিচালক বামাচরণ বস্থ,' বহরমপুর।
- ৩৭। ১৩৩০, 'সোনার গৌরাঙ্গ', সম্পাদক যোগেজনাথ দেব, সায়েস্তাগঞ্জ, শ্রিহট্ট।
  - ০৮। ১৩০-, 'গৌরাত্র প্রিয়া', সম্পাদক, কুঞ্জলাল গোস্বামী, নবদীপ।
  - ৩৯। ১৩৩১, 'মহা উদ্ধারণ', সম্পাদক নবদীপচন্দ্র ঘোষ, ঢাকা।
  - ৪০। ১৩৩২, 'ভক্তি পত্রিকা', সম্পাদক, স্থচাকভূষণ ঘোষ।
  - ৪১। ১৩৩৩, 'সাধনা', সম্পাদক, অধ্যাপক রাধাগোবিন্দ নাথ, কুমিলা।
- ৪২। ১৩৩৩, সজ্জন সেবক, সম্পাদক, সতীশচন্দ্র চট্টোপাধ্যায়, রাজা জীবনপুর মেদিনীপুর।
- ৪০। ১০০৪, 'গৌরাঙ্গ মাধুরী', সম্পাদক হপ্রসিদ্ধ বৈঞ্বাচার্যা রাখালানন ঠাকুর, শীখত, বর্জমান।
- ৪৪। ১০০৪, 'ভক্তি প্রভা', সম্পাদক প্রভূপাদ সত্যানন্দ গোস্বামী (প্রের 'বৈফব সন্ধিনী' নাম ছিল)।
- ৪৫। ১০০৫, 'দাত্ত পত্রিকা,' দেবেজনাথ দাদ অধিকারী সম্পাদিত। গৃহস্থ বৈকবদের মুখপত্র।
  - ৪৬। ১৩০৫, 'ভক্তিলতা', সম্পাদক, গৌরগোবিন্দ বিভাভ্যণ।
- ৪৭। ১০০৫, 'পূণিমা', সম্পাদক, শশিভ্যণ হোম চৌধুরী, আট্ঘরিয়া ময়মনসিংহ।
  - ab । ১৩৩৬ 'देवक्षव'. मन्नामक देवकवाठाका तमिकरमाञ्च विशाक्ष्म ।
  - ৪৯। ১৩৩৭, 'আছিনা' সম্পাদক গোপীবন্ধ দাস, ফরিদপুর।
  - e । ১৩০৮ 'খ্যামস্থলর', সম্পাদক প্রভূপাদ সভ্যানন্দ গোস্বামী।
  - ইহার পর যে সকল বৈক্ষব সাময়িকপত্র প্রকাশিত হইয়াছে, ভাহার সংবাদ



আমার জানা নাই। এই তালিক। সম্পূর্ণ নহে বলিয়াই আমার ধারণা। বৈক্ষব-সাহিত্যের অহারাসী সাহিত্যিকগণ একটু চেষ্টা করিলেই তালিকাটি সম্পূর্ণ করিতে পারেন।

কিন্তু তালিকা সম্পূর্ণ করা অপেক্ষাও বড় কাঞ্জ হইতেছে সমন্ত পৃত্রিকাগুলি একটা কেন্দ্রীয় স্থানে সংগ্রহ করা। সাহিত্যপরিষদ্ এবিষয়ে অনেক কাঞ্জ করিয়াছেন। যদি পরিষদের কর্ত্তৃপক্ষ একটু কই স্বীকার করিয়া স্থানে স্থানে চিঠিপত্র লেখেন ও লোক পাঠান, তাহা হইলে সমন্ত বৈক্ষর পত্রিকা সংগ্রহ করা কঠিন হয় না। নবদীপে প্রভূপাদ হরিদাস গোস্থামী বছ বৈক্ষরপত্রিকা সংগ্রহ করিয়াছেন। তাহার সহিত কথাবার্ত্তায় ব্রিয়াছি সাহিত্য পরিষদ্ চেষ্টা করিলে ঐ সর অম্লা পত্রিকা বিনাম্লা তাহার নিকট হইতে পাইতে পারে। পরিষদের অভ্তম সহকারী সভাপতি শ্রিয়ক্ত মুণালকান্তি ঘোষ মহাশয়ও ইচ্ছা করিলে অনেক পত্রিকা জোগাড় করিয়া দিতে পারেন।

আর একটি প্রতিষ্ঠান এই সব পত্রিক। সংগ্রহে উন্মোগী হইতে পারে ও অল্প চেষ্টাতেই কৃতকার্যা হইতে পারে। সেটী হইতেছে বরাহনগরের 'গ্রন্থ মন্দির'— নিছক বৈষ্ণব প্রতিষ্ঠান। ইহার অল্লতম প্রতিষ্ঠাতা প্রীযুক্ত অম্লাধন রায়ভট্ট মহাশয় নিদর্শন হিসাবে করেকথানি করিয়া উল্লিখিত তালিকায় প্রনন্থ অধিকাংশ বৈষ্ণব পত্রিকা সংগ্রহ করিয়া রাখিয়াছেন। তাহাতে কৌতৃহল পরিত্থ হইতে পারে, কিন্তু ইতিহাস লেখার উপাদান পাওয়া যায় না।

উল্লিখিত তালিকা হইতে বুঝা যায় যে, বৈক্ষব-পত্রিকা বাঙ্গলা দেশে অনেক জেলা হইতে, এমন কি শ্রীহট্ট হইতেও প্রকাশিত হইয়াছে; এবং ক্ষু ক্ষু গণ্ডীর মধ্যে নিবন্ধ থাকায় থুব অল্ল সংখ্যক পত্রিকাই দীর্ঘন্তীবন লাভে সমর্থ হইয়াছে। যেমন রাষ্ট্রজগতে তেমনি ধর্মজগতে বাঙ্গালীকে ব্যক্তিস্বাতয়াবোধ একট্ ক্মাইয়া, ক্ষু গণ্ডীর নেতৃত্বের লোভ সম্বন্ধ করিয়া, সন্ধাবন্ধ ভাবে বৃহত্তর কেল্ডীয় প্রতিষ্ঠান গঠন করিতে হইবে। ভাহা না করিতে পারিলে বারভ্ঞার অন্থবিরোধম্য ইতিহাস বার বার দেখা দিবে।



## নির্ঘণ্ট

ত [ পরিশিষ্টে গৃত কোন শব্দের নির্ঘণ্ট করা হইল না, কেন-না পরিশিষ্টের প্রধান অংশ আভিধানিক রীতিতে সাজানো হইয়াছে। ]

### (ক) ঐতিত্তস্থের জীবনীর প্রধান প্রধান ঘটনার কালানুযায়ী সৃচি

গোত্ৰ ৪২৮ পূর্বাপুরুষ ২৩৮-৪১, ৪২৮-৩০ উডিয়া কি ? ২৩৮-৩১ গৰ্ভবাস ৩৪৫-৪৬ क्याकान ১१-२२ ভ্ৰাতা ও ভগিনী ২৬৯, ৪৫০, ৪৬৯-৭০ পিতার অবস্থা ২৩২ खोबनकांन २२-२७ CMMA 220-500, 505, 500-02, 500-02 ख्रथम चारवर्ग ५७, २०२, ७८७-८१ —ও চৌর্ঘয় २०৫ खेलनग्रन २१५, ४४२ বিদ্যাশিকা ২৩২-৩৩, ৩৪৭-৫০, ৪৪৩, ৪৮৮ অধ্যাপনা ২৫, ৪৪৩ প্রথম বিবাহ ২০২-০০ मिथिकवि-भवाख्य ১৮७, २०७-১०, २१० প্ৰবন্ধ-ভ্ৰমণ ২০৩ গাৰ্হস্তাজীবন ২৩ দিভীয়বার বিবাহ ২৬৭ গদ্মা-যাজার সঙ্গী ২৩৩ देवश्वनाद्यं २८८ রাজগিরে ২৩৩ मगर्ध २०० গ্ৰায় প্ৰাদ্ধ ৭৭-৭৮ দীক্ষাগ্ৰহণ ২০৪

ভাবপ্রকাশ ২৬, ২২২ ভজগণের সমাবেশ ৩৯ बर्बाङ खाँब ১৫-১७, २०८, २१১-१२ নিত্যানদের সহিত মিলন ৪৫১-৫২ लगाह-गाधाह-उकाद २१८ আম থাওয়া ৩১৬-১৮ বলদেব ভাব ২০৪ ভক্তগণের বস্তবরণ ৪-৫ श्रथम श्रुषा ६३६ সাতপ্রহরিয়া ভাব ৫৯৬ विध्यक ८४, ४४-६२, २०४, ४३८-२४ —ও মুরারি ৬৫-৬৮ উদ্ধাম ভাব ১৯৫-৯৬ প্রথম করিন ৬০৭ काकोनम्म २००-०० অভিনয় ২০৪ ব্ৰাধাভাৰ ও কুফভাৰ ৪৮-৫১ শুক্লাম্বরের প্রতি কুপা ২০৪ শ্রীবাসের প্রতি কুপা ২০৪ **জীবাসের মৃতপুত্র ২০৫** সর্গাসের সংক্র ২৮৫-৮৬ সন্যাদের পূর্বারাত্রে ২৮৩-৮৪, ২৯১ आदिम ६२०-३8 -- ७ मही २३०-३३ সন্নাসগ্ৰহণ ২৫-২৭, ৩৫১

#### ১২২ শ্রীচৈতন্মচরিতের উপাদান

সন্ন্যাসগ্রহণের ভারিখ ২৭, ৪১৮
সন্নাসের সময় উপস্থিত লোক ২৪১
সন্নাস-জীবন ২৫, ২১৩-১৫
সন্ন্যাস-রূপ ১৪৪, ১৭০-৭২
কাটোয়া হইতে রাচ্-ত্রমণ ২৮-২৯, ২৪৫,

২৮৭-৮৮, ৩৫১-৫২
শান্তিপুরে গমন ৩০-৩২, ২৪৫-৪৭, ২৯২-৯৩
পুরী-গমন ৩২, ৩৫২-৫৮
পুরী বাত্রার সঙ্গী ১৩-১৫, ৪১৮
দশুভঙ্গ ৩৫৪-৫৫
জগচাধ-দশুন ৩৫৬-৫৮

- —ও সার্বডৌষ ৮৬, ১০১-০২, ৩৫৮-৬৬ তীর্থ-ভ্রমণের কাল-নিরূপণ ৩২-৩৮
- ও রামানন্দ ৯-১০, ৩০৩-৩৭, ৩৬৮ চাতুর্মান্ত ৩৫ বৌদ্ধ বড়যন্ত ৩৬৯ দক্ষিণ-ভ্রমণ ৩৬৬-৭৮, ৪২১
  - —ও কৰিকৰ্ণপূর ৮২-৮৫ —ও প্রজাপকৃত্র ৮৬, ৯২, ৩৭৮-৮৩

নিত্যানককে গৌড়ে প্রেরণ ৩৮৬-৮৭ গৌড়ে আগমন ২১৫-২১, ৩৮৮-৯১ নব্যীপে পুনরাগমন ৬০-৬১, ১৪৭

- —ও সনাতন ১১৬-৩৭, ৩৯৮-৪১০
- —ও হরিদাস ৪০৪-০৬
- ও কুঠবোগী ২৭২-৭০ আমাইপুরার ২১৭ বুন্দাবন-শ্রমণ ৭৩-৭৪, ৩৮৯-৯০

বারাণগীতে ৩৪২-৪৩

- छ कवीत १६१-६२
- —ও প্রকাশানন্দ ৩৪১-৪৫ আসাম-ভ্রমণ ৪৩০-৩১, ৫৫৩-৫৭
  - —ও রমুনাধদাস গোস্বামী ১০৫-০৬. ৩১৯

গুণ্ডিচা-মার্জন ৩৮৩ রধাগ্রে নস্তন ৩৮৫

- । भारताच ००१
- —ও শহরদেব ৫৪৬-৫৩
- ও নামক ৫৩২
- —ও বল্লভ ভট্ট ৪০৬-০৮
- —ও পঞ্চপথা ৫২২-২৬
  উপারত-ঘোষণা ৫৯৮-৬০৩
  কৃশ্মাকৃতি ১১২-১৩
  ভাববিকার ৬১-৬২, ১১১-১৪, ২৯৯
  সমুদ্রে পতন ৪০৮-১০
  ভিরোধান ২৫, ২৭৬-৭৯, ৫২৯
- —ও শার্তপথ ১০৬
  গ্রন্থ নিবিয়াছিলেন কি দু ২০৩, ৪৪৫
  চতুত্ব সৃত্তি ৭৮, ৮০, ২০৫, ৩৭৮
  বড় কুল সৃত্তি ৭৮, ২৩৬, ৩৮২
  অইডুল সৃত্তি ২০৬-৩৭
  জন্মভিটা ৪৯৪-৯৫
  নাম-প্রচার ৬০২-০৩
  গুরুপ্রনাদী ৫৩৩, ৫৮১-৯০
- —ও মাধবেক্ত ২৩৪ শিক্ষাষ্ট্ৰক ৪০৯-১০

### (খ) সাধারণ নির্ঘণ্ট

ठ्य

অগ্রদান স্বামী ৫৬৩ অচ্যুত ২৯, ৩১, ৫২৩

- **一名李 84**名
- ──養刑 808, 80%
- -- मक द२७

—वद्म् 889-8b

অচ্যতানক ২২৬, ২৪১, ২৭৯, ৪৬৬, ৫২৪ অতিবড়ী সম্প্রদায় ৫৩৬ অধৈত ৮, ৩৩, ৫৯, ৬৫, ১৯৩, ৫৭৭-৭৮, ৫৮০, ৬০০, ৬৩০

- -अधालना ४४)
- ঈশর্ষ ২০৪, ৪৯১-৯২, ৫৯৫-৬**০**৬

—डेभामना e •

—চতুত্ৰ ও বড়ভুৰ মৃত্তি ৪৪৬

—ও চৈত্তৱ্য ৪৭৬

—রচিত চৈতভাগীতি ২৭০

-জীবনকাল ৪৩৭

—পাণ্ডিতা ৪৪৪

\_ ভ প্রতাপকর ২৪১

—মন্ত্ৰদান ৪৪২

--- **अक्ट्रान्द** ६८०-८८

—সম্প্রদায় ১৮৭

वर्ष कुकी छात्र ०००

व्यक्तिय > 8 व

व्यथाप्रदर्गा ७३

অনস্ত ২৩৯

অনম্ভ আচাৰ্য্য ৪১

व्यन्छ मात्र ४०, ७२७

व्यत्य भूद्रो १११

व्यनस्य महास्ति ६२६

व्यनिक्ष ৫৪२

অমুপম ১১৮, ৪০১

অরক্ট গ্রাম ৩৯৩

অভিনয় ২০৪

थाखित्राम ७०, २२৫, ৫১৮-२०, ৫৩১, ৫৯৪,

620, 622

व्याच ७৮१, ४१८

অভিকা-কালনা ২২১

অরাজকতা ২৪ •

অক্সভতি ২৫০

व्यत्नोकिक्छा ১১-১२, २४, ४०->>

অবধ্ত দাস ৩৯৫

व्यवध्र द्वांग ३३३

অষ্ট কৰিৱাজ ৬২৯

ष्मप्रत भूती १११

ত্যা

আই ২৯, ২১৮, ২৩৯ আকৃনা ৫৮০ আচাৰ্য্য ঠাকুর ৬৩ আটার্যা রত্ন ২৩০ আটার্যা ২৪৫ আটিগারা ২৪৫

"আত্মারাম" লোকের ব্যাখ্যা ৩৫৯, ৩৬৯,

450

আদিতা = অবৈত ৫০১
আধুনিক সহজিয়া ৫৭৫
আমাইপুরা ২১৭
আলাবাটী ২৪০
আবির্ভাব ৩৫, ৮০, ১৫৪
আগামে চৈত্ত ৫৫৩-৫৭, ৬১৬

क्र

উশান ৩৯৩ উশ্বরপুরী ১২৯, ২৩২, ৫৭৮-৭৯, ৫৮৪, ৫৯১, ৬০১ —শিশ্ব গোবিন্দ ৪২২

8

উজ্জ্বনা ২৪০
উপনা ৬৯, ৪৬১
উদদন্ত ৫৩১-৩২
উদীপি মঠ ৫৮৪
উপ্তত্ত ৫৩২
উদ্বেগ ২৯৮
উদ্ধাবন দক্ত ৫৩১-৩২, ৬২০, ৬৩০
উড়িয়া ভক্ত ৫২২-৩৯, ৬১৭
উড়িয়া ভক্ত ৫২২-৩৯, ৬১৭

0

একাদশ প্রহরিয়া ভাব ২০৪

9

ওঢ়ন ষ্টা ৭৫

বচ

কর্ণপুর কবিরাজ ৬২৯ কমলাকর ৬২০

#### 528

#### ঐতিভক্তচরিতের উপাদান

কমলাকর দাস ২৫০ কমলাকান্ত ৬২৫ কম্লাক ৬৬ কবিচন্দ্র ৬২১ কবিচন্দ্ৰ আচাৰ্য্য ৬২৪ কবিচন্দ্র ঠাকর ৩২৪ কবি ভূপতি ৩০২ कवित १११-१२ কম্বরিকা মঞ্জরী ৩১৯ काकीमन्त्र ३२७, २००-५०, २१० কাঞ্চনপলা ৩৯ कारहादा २१, ७३ कानाहे थूँ हिंद्रा ६०४, ७>२ कास ठाकुत 85, ७२७, ७०० কারু পণ্ডিত ৬২৬ कामाथा। (मवी ১२२ কার্যাাবভার ৭৯ कालां क्रक्षमांग ४२०, ७२० কাশীনাথ মিশ্র ৬১৭ कानीश्रवाद्रगा २८১ कानी मिल ১১১, ७११, ७२8 কাশীশর ২৫৪, ৫৬৪, ৫৮০ কাশীৰর গোস্বামী ৩২১ কাশীৰৰ পণ্ডিত ৬২৩ किर्मात्रीएका मन ६१8-१६ কার্তন ৬০৫ কার্তনারম্ভ ৩১ কুবের পণ্ডিড ২৭৬ कुमाब्रहाडे १८, २३७ क्म्म ७२७ কলনগর ৮৭ कुनाई खाम 85 कलियां २०৫, २०१ কুলীন গ্রাম ৩৯ কুটা বাস্থদেব ৩৬৭ কুৰ্ত্ম ৩৬৭ क्रकादकिन २०৮ कुक्षरेठ ज्ञामको र्जन ४ २ २

कुक्कमांत्र ১००, ७२०, ७२७ কুফাদাস অধিকারী ৩৯৫ कुश्वमान श्रवामानी १४४-४३ क्रकारांग ठाक्त्र ७२8 ক্ষাদাস পণ্ডিত ৫৬৪ क्रकामाम विश्व ७२७ ক্ষাদাস ব্ৰহ্মচারী ৫৬৪ क्रकनाभी ४४२ ক্ষাদেব বায় ৩৭৭ কুষ্ণ ভারতী ৫৪৬ क्रकांनन ६१३ কুফানল ঠাকুর ৬২৪ क्रकानम श्रुवी ७११ কেশ্ব কাশীরী ২০৯, ৫৬৭ কেশব ছত্ৰী ৩৮৮ কেশব পুরী ৫৭৭ কেশব ভট্ট ২০৯ কেশব ভারতী ২৪১, ২৮৯, ৫৭৭ কোগ্ৰাম ২৫০ কংসারি সেন ৬২৪ ক্ষীরচন্দ্র ২৪১

리

খেতরীর মহোৎসৰ ৫১৭

গ

গঙ্গাদাস ৪৩৭, ৫৭৮, ৬০০, ৬২৩
গঙ্গাদাস পণ্ডিত ৬৭
গজ্জে-মোক্ষণ ৩৭৫
গণেশ ৪৭৪, ৪৭৭
গদাধর ১৩, ৪৮, ৪৯, ৫৫, ১৯৩, ২২৪,
২৩৩, ২৬২, ২৮২
গদাধর-তত্ত্ব ৩৩০
গদাধর দাস ২০৯, ৬০৪
গদাধর সম্প্রদায় ১৮৭
গদাধরের সেবানিষ্ঠা ৫৬
গজীরা লীলা ৬১-৬২, ৭০, ১১১-১৪, ২৯৯
গরুড় ৫৭৮, ৫৮০



#### নিৰ্ঘণ্ট

গ্ৰুড়াবধুত ২৪১ **बाहेघा**छे ७०४ জ্ঞানমিশ্ৰা ভক্তি ৬৩২ গীতাপাঠী ব্ৰাহ্মণ ৩৭০-৭২ खझावां जो ३२३ গুজরাটী ভক্ত ৬১৭ গুণিচা-মার্জন ৩৮৩ গোকুল ৬২৬ গোকল কবিরাজ ৩২৯ গোকুল দাস ৬২৯ গোদাবরা তীর ৩৫ গোপকুমার ১৩৭ গোপবেশ ৫৯ গোপাল ৩০৮, ৩৮৪ গোপাল আচার্য্য ৬২৫ গোপাল গুরু ১৯, ৫৪৮, ৬২৬ গোপাল ঠাকুর ৬২৩ (बालानमात्र ०३०, ७२६-२७ लाभान भूतो २४०, ७११ গোপাল বিগ্রহ ৩৯১-৯৮ গোপাল ভট্ট ৪১, ৪৩, ১০৫, ১৩৩, ১৫৬-60, 569, 020, ces গোপাল ভট্টাচার্য্য ৬৩৩ গোপাল মঠ ৫২৪ গোপীনাপ ২১৮, ২৩৩ (जाशीनाथ व्याहाया ०११, ०७०, ११४ গোপীরমণ কবিরাজ ৬২৯ গোৰিল ১৪, ৩৭, ৪৯, ২৩৩ পোবিন্দ আচার্যা ৪১ र्शाविक कवित्रांक १७४, ७२३ গোবিন্দ গরুড় ৬২৪ গোবিন্দ গোস্বামী ৩২১, ৩৯৩ त्शाविन द्यांत 85, 8%, ७०, २०४, ७२० গোৰিন্দ চক্ৰবৰ্ত্তী ৬২৯ গোবিন্দ ঠাকুর ৬২৪ **लाविना मख ६४०** গোবিনা দেব ৫৩৭ গোবিন্দ ভক্ত ৩৯৩

গোবিন্দ ভারতী ২৪১ ८शाविनाहाया ७२8 গোবিলানল ২৩ঃ গোবিদের মন্দিরনির্মাণকাল ৩২২ গোস্বামী উপাধি ৬০৩ গৌর-গদাধর উপাসনা ৫০, ৬৪ (शोत-शंनाधत नोना 8° গৌর গোপাল ১২৮ গৌর গোণাল মন্ত ৬৭ গোর গোবিন্দ মৃত্তি ৩০৪ গৌর নাগরী ভাব ৫২ গৌর-নিজ্যানল উপাসনা ৫০ (श्रीत-शांत्रमायाम ७१, ১०७, ১२৮, ১৭৩-१८ গৌরপ্রিয়া ঠাকুরাণী ৫০৯ গৌরমন্ত ৬৭, ১০৩, ৪৫৯-৬৫ গৌরাঙ্গ, উপায় ও উপেয় ১০৩ গৌরাঙ্গ নাগরবাদ ১৭০, ১৮৭ भोत्री नाम 85, ¢०, ¢२, २२5, ¢28, ७००, 620, 650 रत्नोफरनम ७२, ७७, ১১¢

5

চট্টপ্রাম ৩৯
চল্লকলা ২৩৬
চল্ডপ্রহণ ১৮-১৯
চল্ডমুখী ২৩৯
চল্ডপ্রের ৪১, ২৮৯, ৫৭৮, ৬০০, ৬২৪,
৬২৫
চাল্যায় ৫৬৮
চিরঞ্জীব ৪৪
চীরনদ ২৪১
চৈত্ত

- —আবির্ভাবের কারণ ১০১
- —উপাক্ত ১৫»
- —গায়ত্রী ৪৮৭
- —গোষ্ঠী ৬৮
- -ST >>8, >>V, >00, >60
- —ধর্মতের মৌলিকতা ১৪¢

#### 220

#### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

- —ভগবন্তা ৯২, ১০১, ৩৬১-৬৬, ৪৩১-৩১
- —ভবিশ্ব পুরাবে ২৫৬
- **利服 8**৮9
- ─判層 225, 600-06
- —যুগাবভার ২৫৬
- —লীলার কৃঞ্লীলার ছাপ ১৮৮, ১৯৭-৯৮
- -विद्याधिमण १
- —বুদ্ধের সহিত অভিরম্ব ৫২৯
- —সন্ন্যাসগ্রহণের কারণ **৮**
- —সল্লাসিপরিকরবুল ৩০৯-১**০**

হৈতভ্ৰদাস ২৫, ৩২১, ৬২৫ হৈতভ্ৰবল্লভদাস ৬২৬ চোৱাৰয়ক ২৪২ চৌষটি মহাস্ত ৫৬, ৬২৩-২৬

#### 10

ছক ড়ি চট্টোপাধ্যার ৬৩ ছর গোস্থামী ৪২, ৪৩, ৫৬, ১০৩, ৬১৮, ৬১৯ ছর চক্রবর্ত্তী ৬২৯ চোট হরিদাস ৬২৪

#### GT

অগদানন ৩১, ৩৪, ২০০, ২৪৮, ৪৯২, ৫৯৪, ৬১১
অগদীশ ৫৭৮, ৫৭৯, ৫৯৭
অগদীশ ঠাকুর ৬২৫
অগদীশ পণ্ডিত ৬২৪
অগহাথ দাস ৫২২, ৫২৫, ৫২৮, ৬১২
অগহাথ মিশ্র ২০২, ২৪১, ৩৪৬, ৪২৯
— শ্রাভা ও ভাগিনী ৫০০
অগহাথ বাজ্ব ৮৮
অগহাথ সেন ৬২৪
অগাই ৫৫.
অগাই-মাধাই-উদ্ধার ২৭৪

जन्मी ८৮%, ७०১
जनार्षन ७२७
जनार्षन १८४
जनार्षन मिर्च २०१, २८১
जनार्षन २०१
जन्म ३००
जानकी नाथ ७२६
जानिक उलाशान २२७-२१
जारूरी ४৯१, ६२७
जीवलाशामी ७ देठउछ ১८१
जीव लखिड ६१२, ७२८

21

ঝাটপাল ৪৮০ ঝামটপুর ৩০৩ ঝাড়খণ্ড ২৪৪

6

টোটাগ্রাম ২৭৬ টোডরমল ৩৯৫

ত

তপন মিশ্র ৬১৯
তুদ্ধবিভা ১৬৫
তুদ্ধবিভা ১৬৫
তুদ্ধী মিশ্র ৬১৭
ত্রিমল্ল ভট্ট ১৫৬
ত্রিবেশী এ৪
ত্রিযুগ ১৫৫

#### प्र

मकिनानास वार्षित व्यवहां ०७४-७३

नख-छन्न ०१८-१६

नवित्रधान ১२०, ७১৯

ननामी मक्वानाय ১७৮

ननाकत स्त्रानामय १३, ১२৯, २००

नास्मानत २४, ०১, ७२७, ७००

नास्मानत निक्षित १२, १६, २১६, ७२६

नस्मानत नुष्ठित १२, १६, २১६, ७२६

नस्मानत नुष्ठित १२, १६, २১६, ७२६



#### নির্ঘণ্ট

দামোদরীয়া সম্প্রদায় ৫৪৪
দাস্তরদের উপাসক ৩০০
দ্রাবিড়ৌ ভক্ত ৬১৭
দ্রাবিড়ে চৈতস্তধর্ম ৩৬৭-৭৮, ৬১৭
দাদশ উপগোপাল ৩২০
দ্রাদশ গোপাল ৫৬, ৬২০, ৬২১
দ্রাদশ বন ৭০
দ্রিভিন্নি-পরাভব ১৮৬, ১৯৮, ২০৬-১০,
২৭০
দিবাসিংহ ৪৫২

দিবাসিংহ ৪৫২
দীনবন্ধ পুঁটিয়া ৫২৪
দীক্ষা ও পুরশ্চরণ ১৩০
হুর্গাচরণ জগদ্ধেব রায় ২৮১
হুঃখী ৫৯৯
দেবানন্দ-উদ্ধার ২১৭
দেবানন্দ পণ্ডিত ৫৭৯
বৈপায়নী ৩৭৬

2

ধনপ্রর ৬২০ ধনপ্রয় পণ্ডিত ৪১ ধনপ্রয় মিশ্র ২৪১ ধ্রজমণি পট্রমহাদেবী ৫০৭ ধামালী ৪১

=

নকল অবতার ৬০২
নকজি ৬২৬
নকুল ব্রন্ধচারী ৪০৪
নদীয়া নাগরী ভাব ৫০
নদ্দ পণ্ডিত ৬২৫
নদ্দাই ৬২০
নদ্দনাচার্য্য ৬২৪
নদ্দরাম সিংহ ৬০১
নদ্দনী ৪৮৬, ৬০১
নরসিংহ ৪৮০

मदहदि अदकाद ८, ४०, ४১, ४८, ८२, 226, 240, 493, 438, 439, 604, 624-22, 600 —प्ट टेंड डब्र २७५, २७८ --- ও শচী ২৬৪ নরেক্ত সরোবর ৬৬ নবোৰ্ম ঠাকুর ৪৩, ৬৩০-৩১ নলিনী পণ্ডিত ১৭৬ নবদীপ ২৯ প্রভৃতি নবছাপ-লালা ৪৩ নবনী হোড় ৬২৭ নবহট ১২৫ नयन मिल 83 নাগর গৌরাজ ২৫৯ নাগর ভাব ৪৫ নাগরী ভাবের উপাসনা ২৬৬ নানক ৫৩২-৩৩ নারদ ১৩৭ নারায়ণ ৬২৫ নারায়ণ গুপ্ত ৪১, ৫৯৭ নারায়ণ দাস ৩৯৩, ৬২৬ নারায়ণ বাচম্পতি ৬২৪ नातायंगी ১१६, ১१४, ১৮५-৮१ 260-68, 626 নারায়ণী ধাত্রীমাতা ২৪০ নিভালীলা ১২ निजानम ১०, ১৪, २৮, २৯, ०১, ৪৫, 28, 250, 280, 250, 200, 668, @9b. 602-00 -वारमण >>>

—গৌডভ্ৰমণ ৭৫

—জন্ম ২৩৯, ৪৩৮

—जीवनकाल **১৮**১

—ভগবত্তা ১৮৯

—পাদোদক পান ২·৪

—ও প্রতাপকর ২৪১

—खखरमञ् र्जाभरवर्ग ७२२

—বর্ণনার প্রমাণিকতা ১৯৪

#### 254

#### শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

—খণ্ডর ৫৩১

—সন্ন্যাস ২৩২

—বিষেষি-সম্প্রদায় ১৮৭

—ও নিমানল ৫৮৩

নালাচল ৩০

—যাত্রার সঙ্গী ১৪

-नीना १०

নীলাম্বর চক্রবর্ত্তী ৩৬ -, ৪২৯
নীলাম্বর ঠাকুর ৬২৪
নৃসিংহটেডজ্ঞদাস ৬২৬, ৬৩৩
নৃসিংহ ভীর্থ ৫৭৭
নৃসিংহ ভারতী ২৪১
নৃসিংহ যতি ২৪১
নৃসিংহানন্দ ৩৫, ৯৩
নেত্রোংস্ব ৩৮৫

2

পঞ্জত্ব ৫০, ২৬১, ৬১৭ —মধ্যে নরহরি ২৬১

পঞ্চসথা ৫২৩

পদ্মনাভ ৫৮৯

পদাৰতী ২০৯

পরকীয়াবাদের দলিল ৫৭২

পর্মহংসদেব ৮

পর্যানন ২১৪

পর্যানন্দ গুপ্ত ৪১, ২৩+, ৬২৪, ৬২৫

**अंत्रयांनम मांग 85, ४२, ३३** 

পরমানন পুরী २১৪, २৪১, ৩৭२, ৫৭৭, ৬১२

পর্যানন্দ ভট্টাচার্যা ৫১

প্রমেশ্র ২৩৫

**পর্মেশ্র** দাস ৪১, ২৫৪

পরমেশ্র মোদক ৬২২

পশ্চিমা সেবক ১৬০

পাঁচ গোস্বামী ৪২

भागेना २८२

পানিহাটা ২১৬

পাহাডপুর ৫৭৬

लिइन मा २३३

পীতাম্বর ৬২৪ পীতাম্বর দিজ ৬২৪ পুন্পুন ২৪২ পুণ্ডরীক বিভানিধি ৭৫, ২৭৩, ৩২৯, ৫৮০-৮১, ৬০০

প্ওরাকাক ৩৯৩

পুরস্র ৬২৫

পুরন্দর মিশ্র ৬২৪

পুরন্দরাচার্য্য ৬২৪

পুরশ্চরণ ১২৩-২৪

পুরী উপাধি ৫৮৮

भूबी मान ७२

—ও কৃষ্ণদাস কবিরাজ ৮৫
পুরুবোত্তম ৩০, ৫০১, ৬২০
পুরুবোত্তম আচার্য্য ৩৭, ৫৭, ৩২৮
পুরুবোত্তম দাস ৪১, ৬৩৩
পুরুবোত্তম পণ্ডিত ৬২৫
পুরুবোত্তম সঞ্জয় ৬২৫
পুরুবোত্তম সঞ্জয় ৬২৫
পুর্নার্যার ৪১৯
প্রকট লীলা ৩, ১২

প্রকাশানন ১০

—উদ্ধার ৩৪১-৪৫

প্রতাপক্স ৮৬, ৮৯, ২১৪, ২৫৭, ৩৩৪-

०१, १७८, १७८

—উদার ২৩৬-৩৭, ৩৭৮-৮৩

—মৃত্যুকাৰ ৮১

প্রহাম গিরি ২৪১

व्यक्षाम विवा २३८, ४२७

প্রহাম ব্রন্মচারী ৪২৭

প্রেমী ক্ষুদাস ৩২২

প্রবোধানন সরস্বতী ৯৮, ৫৬৪, ৫৬৭, ৬২৪

—ও প্রকাশানল ১৬৯-৭»

智

কিরিঙ্গি ২৫০ ফুলিয়া ২৯, ২৪৫, ৬১৪



## নিৰ্ঘণ্ট

4

বভগাছী ১৮২ বভ গৌড়ীয়া ৫৬৯ बन्छन्न छहे। हाथी ७२८ वनदायनाम ४२, ६२२, ६२६, ७७२, ७३६ বল্লভাচারী সম্প্রদায় ৩৯৬ বাষ্টল মত ৫০৫ वाक्ना ठक्क दोन ১२० বাঘনাপাড়া ৪৯৫ বাস্নিয়া সম্প্রদায় ৫৪৪ वांत्रकांशांघाउँ ७०, २२> वाद्यवाय ५१, ५२, ८५, ८५, ८३, ८६, ७-, 085, 628 বায়ড়া ২১৭ বাঙ্গালায় বিফুম্র্টি ৫৭৬ वीनमा २०१ বিজ্ঞালি খাঁ ৩৯৭ বিঠঠগেশ্বর ৩৯৩ বিষ্ণাই ৬২৩ वीववन ००० বৃদ্ধ ৮ व्यक्तिनी जनमाथ १२> ব্ৰহ্মগিৰি ২৪১ ব্ৰহ্মানন্দ ১৪ बन्धानसभूतो २०२, २८১, ६११ ব্রজাননভারতী ৫৭৭

3

ভক্তদল, প্রাক্টেড্ড ৫৭৮-৭৯
ভক্তদের জাতি ৬০৮-০৯
ভক্তদের তথনিরূপণ ১৮৫
ভক্তদের বিবসন করা ৪
ভক্তদের সংখ্যা ৬১৭
ভগবান্ ১৩৭
ভগবান্ জাচার্যা ২১৪, ৬৩০
ভগবান্ কবিরাজ ৬২৯
ভগবান্র সংজ্ঞা ১১

ভট্নারী ৩৭৩
ভাইরা দেবকীনন্দন ৫৬৮
ভাগবত আচার্যা ৬২৬
ভাগবতপাঠক, প্রাক্টেতক্স ৫৭৯
ভাগব সরস্থতী ২৪১
ভাটকলাগাছী ২৪০
ভাবার লীলা প্রকাশ ৪০
ভূগর্ভ ৩২২, ৩৯৩, ৫৬৪, ৫৬৭
ভোলানাধ ৬২৬

=

मकत्रस्त्रक कत्र ७२॥ মকরধ্বজ পত্তিত ৬২৪ मक्द्रश्वक (भन ७२8 मध्येत्री ४०, ६२, ७०० मखवान, लोएड ए उएक २५ মতি ২৯৮ মদনযোহনের সেবা ৩৯৬ यधुरशासामी ०७८ यथुनिखंड ७३१, ७२8 गधुमाजी हरू মধুর ভাব ৪৩ মধুর রসের উপাসক ৬২৯-৩৽ यस्यम्म अज् >०६ মধুস্দন বাচস্পতি ১৫১ মধুস্দন সরস্বতী ৫৮৬-৮৭ यथानीना ०६०-६३ महस्रष्ट्र २२० भनतंत्रण २ > १ मचखत १२ মনোহর ২৪০ मत्नाहत नाम ৯৯, ৫७৪ মলিকাৰ্ক্ন তীৰ্থ ৩৭৫ মহা অভিষেক ২•৪ महारमय बाका 80% महास ७३७ মহাপুক্ষীয়া সম্প্ৰদায় ৫৪৪

## শ্রীচৈতগুচরিতের উপাদান

মহাপ্রকাশ ৫৩৮ মহাপ্রভু ২৭৭ गहांखांव >84 मशीवत ७२७ মহেন্দ্র গিরি ২৪১ মহেশ পণ্ডিত ৬২০ गांगी वर्ग वरव মাধৰ ৩৯৩, ৬২৬ माध्य (चाय 85, ७२8 মাধৰ পণ্ডিত ৬২৪ মাধ্ব মলিক ৪৭ माधवाडाया ७२८-२७ भाषवी देवस्थवी 808 यांधरवत्त भूती ६५, ১२৯, २०२, २०८, 025, 885, 885, ¢25, ¢99-95, ebs, ebs, ebs, 955 — শিশ্বাদল ৫৭৮

মাধাই ৫৫ মাধ্ব সম্প্রদায় ৪৪০

— खद्र व्यवानी २२, २००, ८৮৪-৮৬
मामशाकी २৮२
मादराष्ट्री क्ष्य ७२९
मानमा (क्षांश ७२९
मानमा (क्षांश ७२९
मानमो ८৮
माम्राप्द ६२৪
माम्राचानो २७३
मोनरक्ष्यत दामनाम ०००
मुक्त २०, ३६, ६७, ३२८, २००, ०००,

-- অপরাধ ৩৫

মুকুল কবিরাজ ৬২৪

মুকুল চক্রবর্তী ৩২২

মুকুল দত্ত ২৯০, ৬২৪, ৬৩৩

মুকুল দাস ৬৩৩

মুকুল রায় ৬২৪

মুকুলানল পণ্ডিত ৬২৩

মুকুল ৪০৭

মুক্তি ৪০৭

মুক্তি ও ভিজি ৩৬১

মুরলীমোহন গোস্থামী ৪৭৪-৭৫
মুরারি ২৩০, ২৯৯, ৫৭৯, ৫৮০, ৬০৫
মুরারিটেডগুদাস ৬২৫
মুরারি পণ্ডিত ৬২৬
মুরারি দামোদর-সংবাদ ৭৫
মুরারি মাহাতি ৬২৩
মুরারির রামদাস উপাধি ২৭২
মুরারির রামদাস উপাধি ২৭২
মুরারির রামন্তব ২০৪
মুক্তি-নিম্মাণবিধি ১৬২

### T

ৰজেশ্বর চক্রবর্তী ৬০১
বহু ৪২
বহুনন্দন আচার্যা ১০৭, ১১৫, ৪৫০
বহুনাথ ৪২
বহুনাথ কবিচন্দ্র ৫৭৯
বহুনাথ চক্রবর্তী ৪২
বন্ধ্র ৫২২
বশোবস্ত ৫২০, ৫২৬
বাদবাচার্য্য ৩২২, ৩৯৩
ব্যক্তবাদ ৩১৬
ব্যুগাবভার ৭৫, ৭৯

## র

রঘুনন্দন ৪৪, ২৬২
রঘুনাথ দাস গোস্থামী ৩, ১৫, ৪২, ৪৩,
৪৭, ৬১, ৮৭, ৩০২, ৩১৯, ৩৩১, ৩৪০,
৩৯০, ৫৬৪
—প্রতি চৈতজ্যের কুপা ১০৫
—ও স্থরপ-দামোদর ১০৭
রঘুনাথ ছিল ৬২৪
রঘুনাথ প্রী ২৪১, ৫৭৭
রঘুনাথ বৈল্প ৬২৫
রঘুনাথ বৈল্প ৬২৫
রঘুনাথ বৈল্প ৬২৫
রঘুনাথ বৈল্প ৬২৫



## নিৰ্ঘণ্ট

রঙ্গপুরী ৩৭৪, ৫৭৭, ৬৩০ বুদুগর্ভ আচার্য্য ৫৭৯ রত্নগর্ভ ঠাকুর ৬২৪ রথমাত্রা ৩৪, ৩৭, ৯০, ১৪৪, ৩৮৫ রমাকান্ত সেন ৪৭ त्रवीत्रमात्रायम त्राय ७७५ ব্যালকভা ৪১৯ রাগামুগা ভক্তি ১০২ রাঘৰ পণ্ডিত ২১৮, ৬২৪ व्राच्य-मिनव २>७ রাজগির ২৪২ রাছগ্রাম ৭৩ রাজপুত ভক্ত ৬১৭ রাজা ভামর ২৩৮ রাধাভাবের বিরহ ৫১ ब्रोधां याजा २৮३ वाधाक्रक मृद्धि ৫१७ রাধামৃত্তি ১৬৩ রামক্ষ দিখিজ্য ২৪১ वामटकिन ১১७, २১৫-১७, २১৮ রামগিরি ২৪১ वामहत्त कविवास ७२७, ७२२ ब्रोमहत्त्र पख ७२८ वामहत्त श्रुवी २८०, ६११ রামচন্দ্রের উপাসক ৬৩১ রামভীর্থ ৩৪৫ द्रामहाम ३६, २०६, २८४, ७२० রামদাস কবিচন্ত ৬২৫ রামভন্র ৫১ রাম সেন ৬২৬ वामाहे ६०० ब्रोमोनन बोब २, ১०, ०७, ८२, २১৪, ७०२-०२, ७७४, ६२२, ७२8 त्रामानम वस 8>, ७२8 दायानकी मल्लामाय १७० ब्राटमव वांग ১२०

রামেখর ৫৩১

ब्रामाहेक २०५

রাসক্রীড়া ৫২২
রাচ্-ভ্রমণ ২৮
রুদ্র পণ্ডিত ৬২০-২৪
রূপগোস্বামী ৩, ১৫, ১৮, ৪৩, ৪৭, ৬১,
৬০, ৭৯, ৮৬, ১৬৮, ১৪৫, ২৫৪, ৩৯০,
৫৬৪, ৫৭৭
—ও রুদ্রাধ ১০৭
রূপ-সনাতনের জাতি ৫৫৯-৬১
রূপায়গত ভঙ্কন ১২৯
রেম্পা ২১৭, ৩৫২, ৫২১
রোদনী ২১৭, ২২০

### ক্ৰ

লক্ষণ সেন ৫৭৭
লক্ষণাচাৰ্য্য ৬২৫
লক্ষ্মী দেবী ২০২০০০
লক্ষ্মীনাথ দাস ৬২৬
লক্ষ্মীনাথ বাবু ৬০০
লক্ষ্মীনাথ বাব

### <

বক্তেশ্বর ১৭১, ২৩০, ২৪৮, ৫২৮, ৫০১
বক্তেশ্বর প্রাম ২৪৫
বনমালী দাস ৬২৫-২৬
বনমালীদাস ওঝা ৬২৩
বরাহনগর ১৫, ৪৭, ২১৬
বরাহভাব ৬৬, ১৮৮

## শ্রীচৈতন্যচরিতের উপাদান

वमख ७२७ वर्षमान २>१ बहाकठाकुत्र ७२० ব্রভাচার্য্য ১৪৯, ২০৯, ৩৯১, ৩৯৩, ৪০৬-০৮ बहाबीमाम कविश्रांक ७२३ বাণীরক্ষ দাস ৩৯৩ वागीविनाम ৫> वानीमार्थ ७२० वांगीनाथ वस्र ७२० বাণীনাথ ব্ৰন্মচারী ৬২৬ वामात्रण २४১ বালগোপাল উপাসনা ৩৯২, ৪০৭ वांद्राप्त पद १६, ४८, ३४२, ८६०, ७००, 8 8. 600 বাৎস্থ গোত্ৰ ২৫৫ ৰাৎসলা রসের উপাসক ৬৩১ विक्य ७२७ বিভানন ৬২৫ বিছানিধি ১৯৩ विश्वाल्यन ৫> বিন্তালভার ১০৮ विश्वावाहल्लां ७०, ১२१, २०६, २०१, 4028 বিভীষণ ৭৩ বিত্তপাক্ষ ২৪১ বিশারদ ২৪০ विष्णुबी २८३ বিশেখন ৫৩১ বিফুদাস ৪২৩, ৪৮০, ৬২৪ विकृश्ती ८७৪-७७, १११ विकृश्यिम ७०, ১৯०, २১৮, २४৮, २७१, 290, 200-68, 826, 622-22, 600 বিষ্ণু মিশ্ৰ ৪৩৭ बोदाख्य २७३, ७०६, ८८७, ४३१ ৰীর হামীর ৩২৩-২৫ বৃদ্ধিষ্ঠ থান ২১৮ বুলাবন্দাস ও প্রীচৈতক্ত ১৭৯-৮০

বুলাবন-ভ্ৰমণ ৩৪, ৩৮৯-৯ ৽

বেছট ভট্ট ১৫৬, ৩৭৬
বৈকুঠ দাস ১৭৭
বৈজ-প্ৰভাব ৬৭
বৈষী ভক্তি ১০২
বংশীবদন ৪৯৬
ব্যাভিচারী ভাব ২৯৮
ব্যঞ্জরস গান ৪৭

100

महत्र (चांच ४२, ৫०) भक्षत्र ठोक्त्र ७२६ भाइत (नव e8°, e8), e88-8e, e86-e9 শঙ্কর পণ্ডিত ৭২, ২৩৪ শঙরাচার্যা ১৩৮ नैक्ब्रांब्रगा २८১ महोदमवी २२, ००, ६४, २२०-३३, ६२१ — मोका 895-9**२** শচীনন্দন গোস্বামী ৪৯৬-৯৭ শভানন থান ৬৩৩ শান্তিপুর ২৮, ৩১, ২১৬ শালগ্রাম পূজার অধিকার ১০৬, ১৬২ শিथि माहाजी २३८, ७२८ শিবাই ৬২৩ শিবানন্দ চক্রবত্তী ৩২২, ৬১৯ শিবানন্দ সেন ৪, ৩৫, ৩৭, ৪১, ৪৬, 82, 69, 62, 66, 22-20, 080, 800, 600, 628 - মত ১১ শিবের গারন ২ 08 শুক্লাখর বন্দচারী ২০৪, ৩৪৮, ৫৭৮, 493. 603 ভদানল সরস্বতী ২৪১ খ্রামদাস ৬২৯ ভাষিল বৰ্মণ ৫৭৬ श्रामानन ४२), ४०) ত্ৰীকাম্ভ ৩৫, ৮৪ শ্রীকান্ত ঠাকুর ৬২৪



**बीकुमाब ১२**१ প্রীপশু ৩৯, ৪৪, ৫৭ শ্ৰীক্ষেত্ৰ ৩৩ শ্রীগর্ভ ৬১১ शिषद्र कार, ७२२ ত্রীনাথ ১৮, ৩৯৪-৯৮ बीनाथ जात्रामी 885 **ब्रामिथि ६१४, ६३१, ७२६** শ্ৰীনিবাস আচাৰ্যা ৪৩, ৬৩, ১০৩, ১৬১, 220, 006, 020, 032, 638, 663 শ্রীপতি ৫৭৮, ৫৯৭, ৬২৫ শ্রীপাট ৬১৪-১৬ শ্রীমন্তীমাতা ২৮১ ত্রীয়ান পণ্ডিত ৫৭৮, ৫৮৯, ৫৯৮, ৬০১, 655, 628 ত্রীরঙ্গকেত্র ৩৫ প্রীরাম চক্রবর্ত্তী ৫৭৮, ৫৯৭, ৬২৪ জীবাস ৬০, ৭৫, ৫৭৮, ৫৮০, ৫৯১, ca9, 50. —হৈতত্ত্বের কুপা ১৯২, ২**০**৪ —ভাইয়েদের নাম ১৭৬-११ —वाफी ३३२ শ্ৰীব্যাস ৬২৯ জীহট্ট ৬৭, ৫৮০ —হৈত্ত মূৰ্ত্তি ৪৩১ ब्रीहर्ष ७२७ चत्रश्री २४)

=

ষট্কোণ ৬২৮ ষ্টাধ্য কীৰ্ত্তনীয়া ৬২৫ ষড় ভুজ ৭৮ ষাট ৫৭৪

571

সন্ধর্গ পুরী ৭৭৭ সভ্য গিরি ২৪১ সভ্যরাজ থান ৬০০ मनानम कविद्राह्म ७२8 महानमी २०० সদাশিব ৫৭৯ भनाजन (शासामी ১०, ১১, ६०, ७०, PB, 338-06, 248, 448 一四四百百 428 —গাইস্থাজীবন ১২৩ —হৈতন্তের কুপাপ্রাধির পুর্বে >>8-39 হৈতভাগোষ্ঠাতে ১১৩ — চৈতত্তের সহিত্ত সাক্ষাৎ ১১<del>৬</del>-—পাণ্ডিকা ১২৬-২৭, ১৩১ -- শিক্ষা ৩৪, ৩৯৮-৪co স্নাতন দাস ৬২৬ সম্ভ ঠাকুর ৬২৩ 'अवारिभव अभव २७, २१ मध्याम > • द সমসাময়িক পদকর্তা ৩৯-৬৪ সমাজ বাড়ী ৬৩১ সমুদ্রগড়ি ২৪৪ সরকার ঠাকুর ৪৪ সরস্বতী সম্প্রদার ১৬৮ সহজিয়া গুরু প্রশালী ৫৭৩ সহজিয়া মত ৫৭০-৭৫ সাকর মল্লিক ১৪৩ भाको (शांभान २८१, ७६७ সাধ্যসাধন-নির্ণয় ৩৩৪-৩৭ मार्काकीय कड्डांडांचा es, ৮৬, ১১¢, 303, 309, 238, 234, 429, 498 —উद्धाद २१४, ०१४-७७ সিম্বলিয়া ২১২ मोजादनवी ४०४, ५०३ মুখানন্দ ২৪১ ख्यानम भूबो ६११ স্থদর্শন ঠাকুর ৬২৪ মুনার ঠাকুর ৬২০ खन्तवानन २०१, १०)

## জীতৈভভাচরিতের উপাদান

সুৰ্জি মিশ্ৰ ২২০, ৬২৪
স্বলোচন ৪২
স্বলোচনা ২১৮
স্থ্যদাস সারখেল ৬০০
সেতৃবজ ০২, ৩৫
সেতৃ ফ্রান্সিস্ ১
সোমনাথ মহাপাত্র ৫২৫
স্কল-দামোদর ৫৭, ৭২, ৮৬, ২১৪, ৬২৪
—মত ১৮

2

হরিদাস ঠাকুর ২০০, ২৪৫, ২৭০, ২৯০, ৪০৪-০৬, ৪০৭, ৪৪১, ৫৪৮, ৫৭৮ হরিদাস বিজ ৪২ হরিদাস পণ্ডিত ৩২১ হরিদাস, ববু ৩৯৪, ৪০৪

হরি নিদা ২৪১ হরিনাথ গোস্বামী ৪১৪ হরিরাবোড়ি ২৪৪ হরিহরানল ৬২৬ रदक्काम जना कि कोईनीय ? ७०७-इलागुम ७२२, ७२७ ट्रांटका ददन চারাধন দত্ত ৫০৯ হাড়াই পত্তিত ৪৬৮-৬৯ हिन्ना ११२ হির্ণাগর্ভ ৬২৪ इरम्म भाइ ১১, २১७, २१०, ७४४, ४२२ क्षम्बनाथ स्मन ७२७ হেমলতা ঠাকুরাণী ৩০৭ হেমাভ গোপাল ৪৬৩-৬৪ হোড়া পঞ্চমী ৩৮৬

# (গ) গ্রন্থ ও গ্রন্থকারদের নামের নির্ঘণ্ট

[বিশিষ্ট প্রবন্ধ-লেথকদের নামও ইহাতে ধৃত হইয়াছে। ঐতিচতভের সাতধানি প্রাচীনতম জাবনার উল্লেখ প্রায় প্রতি পৃষ্ঠাতেই আছে বলিয়া ঐ সব গ্রন্থের বিস্তৃত নির্মণ্ট মেওয়া হইল না।]

94

অচ্ত তথনিব ৬, ১৮০, ১৮৬, ৪২৫, ৪০০, ৪৭০
অত্লক্তম গোস্থামী ১৮২, ২৪৫, ৪০০
অবৈতের জীবনী ৪৯০-৯৫
অবৈতপ্রকাশ ৪০০-৬৫
অবৈতপ্রকাশ ৪০০-৬৫
অবৈতপ্রকাশ ১৪৯, ৫৮৫-৮৭
অনস্ত বছু চণ্ডীদাদ ৫৭৭
অনস্ত সংহিতা ৪৭৮, ৬২২
অনাকার সংহিতা ৫২০
অনুরাগবলী ৯৯, ১৫৬, ১৬৭, ৫১৫ অপ্নয় দীক্ষিত ৩৪৫
অফ্রেট্ ৮৯
অভিরাশ লীলামৃত ৫১৮-২৩
অমরচন্দ্র রায় ৫৮৩
অমরচন্দ্র রায় ৫৮৩
অমুল্য ভট্টরার ৬২২
অমুলাচরণ বিভাভ্যণ ৪৭৪, ৪৮০, ৫২৭
অমৃতলাল পাল ৫৮৩
অমৃতলাল লীল ৪১৭
অমৃতলাল নীল ৪১৭
অম্বার-কৌস্তভ ৬, ১৭



### ত্যা

আর্ত্রবল্লভ মহান্তি ২৮১ আনন গিরি ৫৭১ আনন্দচন্দ্রিকা টাকা ১০০ व्यानसमादायन देशक ১०৮, ৫১৫ আনন্দরত্বাবলী ৩০৩ वानसर्मायन हल्ला २४, ३०२ আপ্তের অভিধান ৩২ • আবছল করিম মুন্সী ৫৮ व्याख्यामधाख हत्सामग्र ००२ আসাম বান্ধৰ ৫৪২

উশান নাগর ৪৩৩-৬৫, ৪৮৯ ইশান সংহিতা ৪৬১-৬২ छेबंद मांग २१३, ৫२४-७৫

## 8

উজ্জননীলমণি ১৩৯, ৩०७ — जिका ३६२ উদয়ন পত্রিকা ৯ उद्भव माम 85, ४४, ३१४, ०३३, ०३० উদ্ধবদূত ১০০ উদ্ধৰ-সন্দেশ ১৩৯ উদাহতত্ব ৩০৫ উপেন্দ্রমোহন গোস্বামী ৪৬২ উমাপতি ধর ৫৭৭ **खेटम**निक्स दम ६८८ उत्मनहन्त्र बढेवाान १ উৎকলিকাবলা ১৩৯

উদ্ধায়ায় সংহিতা ৪৬২

9

একাদশীত্ব ৩০৫

কণানন্দ ৩২৫ कविकर्वभूत ह, २०, २১, २०२-००, १६७, 628, 624

—কবিরাজ গোপ্রামীর সহিত্ত लार्थका ००२-८५, ०५८-५५ কবিবান্ত গোস্বামী ৫, ১৫, ১৮ প্রভৃতি

-- मेक्रा ०२०

-- ও বুন্দাবনদাস ৩২৬-২৭

— ७ चक्रण-मारमामन ०२≥-०२

কাঞ্চিকাবেরী ৩৮০ কালিদাস নাগ ১০ কালিদাস নাথ ২২৩, ৪১৭ কালীপ্রসর ওপ্ত ২৫৫ কীৰ্ত্তন ঘোষা ৫৪১ কীর্তিলভা ৪৫২ क्म्मवस् रमन ८०६, ८०३ कुनमाञ्चनाम मलिक > 8 কুর্মা পুরাণ ৩৭২ কুষ্ণকৰ্ণামৃত ৩৮০ কুফাজনাতিথি বিধি ১৪০ কুষ্ণপ্রেমরসচন্দ্র তত্তভক্তিলহুরী ৫২৬ কুম্ববল্লভা টাকা ১৬০ क्रकार्का मीलका ১৫२ কেদারনাথ দত্ত ৮ **८क्शवहता दशन ५** ক্রমসন্দর্ভ ১০, ১৫১ कीरवामठख कोधुवी २५३

=1

थरशक्तनाथ मिळ ३, ०४४, ६१२

91

शायबोकाय जिका ३६२ গিরিশচন্দ্র ঘোষ ৬ নাতলোবিন ৫৭৭ গীতাবলী ১৩৩-৩৫

## শ্রীচৈতভাচরিতের উপাদান

গুণরাজ খান ৫৩৩ গুৰুচবিত্ৰ ৫৪২ खक्नीना ६८६ গেট সাহেৰ ৫৪১ গোপাল গুরুর পদ্ম ৫৮২ त्शालान हल्लू ३०२, ३८२, ३४२, ७०३ গোপাৰতাপনা টাকা ১৫২ গোপাল বস্তুর চৈতন্তমঙ্গল ২৩০ গোপীকান্ত দাস ১৩৫ आविक कर्षकात bo, 8२०-२० **ट्याबिम एवंट्स्ट्र अम् ७३** গোবিনাদানের কড়চা-রহস্ত ৪১৫ **लाविन्मकांग्रा** १५० গোবিন্দলীলামূত ২০৯, ৩০২ (शाविन विक्रमावणी ১৩৯, ১৫२ भीतक एकामग्र कावा २, e७१-७३ (जीव्हार्तात्क्रमहीिका 80, 29-208, 459, 400

গোরগুণানন্দ ঠাকুর ৪৭ গোরপদতরন্ধিণী ৬, ১৯, ৪২, ৪৮, ৫৪,

গৌরস্থনর ২১
গৌরস্থনর দাস ১০৫
গৌরাঙ্গবিজয় গীত ২০০
গৌরাঙ্গবিজয় গীত ২০০
গৌরাঙ্গমাধুরী প্রকাশ ৬
জানদাস ১৫২, ৬২৬
গ্রিয়ারসন্ ৫৬০
গ্লামেনাপ্ ৩৯২, ৩৯৭

2

चारहे १४३

B

চক্রপ্রভা ৪৭ চারুচক্র প্রীমানী ৩৭৬, ৪১৭ চিন্তাহরণ চক্রবর্তী ৯৪, ১৩১ চির্ত্তীব শর্মা ৬ চেষ্টারটন্ ১ চৈতন্তচন্দ্ৰামৃত ৯৮, ১৬৫-৭০ হৈতন্তচরিতামৃত ৫ প্রভৃতি চৈতন্তভাতক ২১ চৈতন্তভাগৰত ৫ প্রভৃতি

- —শেষ তিন অধ্যায় ১৯৫
- —চরিতামৃতের সহিত পার্থক্য ২০৮, ২১১-১২, ২১৯
- ক্রমভঙ্গ দোব ১৯৯-<del>২</del> •
- —পৌরাণিক রীতি ২···›

চৈতন্ত্ৰমঞ্জল ২৫৮-৬১ ভৈতন্ত্ৰমতবোধিনা ৯৭, ৪৫৯ ভৈতন্ত্ৰ-সঙ্গীতা ২১, ৬২২ ভৈতন্ত সহস্ৰ নাম ২৩০ ভৌৱালী বৈহাবন্কী আজ্ঞা ২০৯, ৩৯৪, ৫২৩

豆

ছনোহষ্টাদশকম্ ১৩৪, ১৩৯ ছানোগ্য উপনিষদ্ ৫৭০

का

জগধনু ভন্ত ১০০, ১৮৬, ৪১৭
জগরাধচরিতামৃত ৫০৫
জগরাধবরভ নাটক ৫২২
জরগোপাল গোস্থামী ৪১৩, ৪২০-২১
জরদেব ৫৭৭
জরানন্য ২২০-৪৯

- —व्यदेवस्थवीय ब्रीक्ति २२४-२७
- जग्रज्य २२१-२৮
- —গানের পালা ২২৯

দেহতত্ব ২২৬
জীবগোস্থামী ১০, ১৩, ৪৩, ৬৩, ৭৯,
১১৫, ১৪৬-৫২, ৩৯৩, ৫৬৪
কৈমিনি ভারত ২৫৭

6

ঢাকা বিভিউ ৪৭৯



তত্ত্বসন্দর্ভ ১৫৬ তারিণীচরণ রথ ২৩৮

प्त

দানকেলীকৌষ্দী ১০৯, ১৩৯

—টাকা ১৫২

দানকেলীচিস্থামণি ১০৮

দানচরিত ১০৯

দারু ব্রহ্ম ৫২২

দারু মুবারি ৫৪

দিগ্দশিনী ১৩২

দিবাকর দাদ ৫২৩, ৫৩৫

দীনেশচল্ল সেন ৯, ৭০, ৭৭, ১২১, ১৮১, ১৮৯, ২২৫, ২৫৫, ২৭৭, ৩০৩, ৩১৪, ৩১৭, ৩২৫, ৪১৩, ৪৪৫, ৪৭৯, ৫২৭, ৫৪৬

দেবকীনন্দন ৪১

4

ধাতু-সংগ্ৰহ ১৫২

নগেন্দ্রনাথ বস্থ ২২৩, ৪৭৪ নরহরি চক্রবর্ত্তী ১৮, ৫১৫-১৮

=

নরহরি সরকারের পদ চিনিবার উপায়

৫৪

নলিনীকান্ত ভট্টশালী ৪৭৪, ৪৭৭

নলিনীনাথ দাশগুপ্ত ৩২২

নরোভ্য ঠাকুর ১৩৮, ৩০৮

নরোভ্যবিলাস ৫১৭-১৮

নাটক-চক্রিকা ১৩৯

নাটক ও মহাকাব্যের তুলনা ৯৩

নাটকের রচনাকাল ৮৯

নাভাজী ৫৬২-৬৮

নিখিলনাথ রায় ৩২৫, ৫১৩

নিত্যানন্য-চরিত ২১

নিত্যানন্দ দাস ৫০৬-১৮
নিত্যানন্দদায়িনী পত্রিকা ১৪১
নিশিকান্ত সান্তাল ৬
নীলমণি গোস্বামী ৪৬০
নৃদিংহ কবিরাস ৬২৯
নৃদিংহকুতা ৫৪৬

9

পদকলতক ৪২ পদ্মাবলী ১০, ৬৩, ১০৯, ১৩৯ **পর্মানন্দ গেনের পদ ৬**০ পহি লহি রাগ পদ ৩৩৪ প্রকৃত্বর সরকার ৬ প্রভাতকুষার মুখোপাধায়ে ৫৮০ প্রভাসচন্দ্র সেন ৪৭৬ **अमर्थ** (ठोधूबो ७३१ व्यासम्बद्धावनी वर्ध्य প্রযুক্তাখ্যাতচন্ত্রিকা ১৪• পাট-পর্যাটন ৬২২ প্রিয়াদাসজী ৫৬২-৬৮ भूक्षरू<del>ख</del> ६३ পুরুষোক্তম দেব ৫২১ পুলিনবিহারী দাস ৫১২ প্রেম্পাস সিদ্ধান্তবালীশ ৮৭ প্রেমেন্দু সাগরাদি গুব ১৩৯ প্রেমবিলাস ৫০৬-১৮ প্রেমবিবর্ত ৪৯২-৯৫

25

क्रिकृत्व मख २५-२२

3

বগুড়ার ইতিহাস ৪৭৬
বন্ধবিহারী বিভালত্বার ১০৫
বন্ধভাষা ও সাহিত্য ১ প্রভৃতি
বন্ধরত্ব ১৮০
বন্ধবাণী মাসিক পত্রিকা ৪৭৪
বন্ধত্রী মাসিক পত্রিকা ৭০

## ত্রীচৈতক্রচরিতের উপাদান

वजीव कवि २०० বট অবকাশ ৫২২ ৰলদেব বিভাভূবণ ৭৯, ৯৯, ১৩৪ বলরাম দাস ৬২৬ বসস্তক্ষার চট্টোপাধ্যায় ১২৩ বস্তুমতী মাসিক পত্রিকা ৯৭ বাল্যলালাস্ত্রম্ ৪৭৩-৮০ वास ट्यारथंद्र भम ६७, २४8 বিজয়ক্তক গোস্বামী ৮ विमध्यमाध्य बाउँक ১०२, ১৩३, ৪०১ বিজ্ঞাপতি ২৫১-৫২, ৪৪১ বিনোদবিহারী গোস্বামী ৪৯৮ বিশিন্বিহারী দাসগুর ৩৭৭, ৪১৭ বিমলাপ্রদাদ সিদ্ধান্তসরস্বতী ৫৩৭ विदाएं गीजा धरर विश्वनाथ ठक्कवखी २२, १२, २२, ६३६, 492

বিফুদাস ৬২৫ বিফুধশোতর ১৫৫ বিফুপ্রিয়া পত্রিকা ৭০ বীর্জন শিক্ষামূল কড়চা ৩০৯ বুন্দাবনদাস ৫, ১৭, ৬২৬ প্রভৃতি

- -পরিচয় ১৭৫-৭৭
- —পাণ্ডিতা ১৮৩
- —ও বেদব্যাস ১৮৪
- —ভথ্য-সংগ্রহ ১৯২-৯৫

বুলাবনদাস (২) ৬৬২
বৃহৎগণোদ্দেশনীপিকা ১৪০
বৃহস্কজিতবসার ৬২২, ৬২৪-২৫
বৃহস্কাগৰতামৃত ১০, ১২৬, ১২৮, ৩৫৭
বৃহৎ বৈক্ষবতোষণী ৬১৭
বৃহৎ বৈক্ষব-বন্দনা ৫৮২
বেলাস্ক-সিভাস্ত-মুক্তাবলী ৩৪৪
বৈক্ষবন্দনা ১৪৯
বৈক্ষবন্দনা ১৫২
বোলদেব ৫৭১
বংশী-লালাম্ভ\_১৮

বংশীবিলাস:৫০৩
বংশীশিকা ৬০, ৫০৪
বঙ্গনাথ বিভারত ৬
ব্রহ্মসংহিতা টাকা ১৫২
ব্রহ্মসান ৪৭৮

0

ভক্তমাল, বাঙ্গালা ৫৬৭-৬৮
ভক্তিচন্দ্ৰিকা ৬২৭
ভক্তিবজাকর ৪, ৫১৫-১৮
ভক্তিবসামৃতসিদ্ধ ১০, ১০৯, ৩০৬
—টাকা ১৫২
ভগবডক্তিবিলাস ১৩২
ভট্টদেব ৫৫২-৫৪
ভরত কাব্য ৯৪
ভরত কাব্য ৯৪
ভরত মন্নিক ৪৭
ভাগবতকুমার শাস্ত্রী ৪৯৭
ভাগবতকুমার শাস্ত্রী ৪৯৭
ভাবতবর্ধ মাসিক পত্রিকা ৯
ভাবার্থস্টকচম্পু ১৫২
ভূবনেশ্বর সাধু ৬০৭
ভূবন বিজ কবি ৫৪৪-৪৫
ভোগমালা-বিবরণ ৬২৩

=

মতিলাল ঘোষ ৪১৫
মন্ত বলরাম ৫২৮
মথুবা-মহিমা ১৩৯
মদনগোপাল গোস্থামী ৮০
মধুস্দন গোস্থামী ৬৯
মধুস্দন সরস্বতী ১৫০
মণীক্রচক্র রায় ৪৪
মণীক্রমোহন বস্ত ৫৭৩
মনোহর দাস ১৫৭
মন:শিক্ষা ১০৭
মহাকাবা ৪, ৯৫-৯৬
—ও মুরারির কড়চা ৯৫-৯৬
মাধব ঘৌষ ৬৩, ২৫৪
মাধব পট্টনায়ক ২৮১-৮২



—। ए लाइन २४२-३२ यांधव-मरहादभव ১८१, ১৫२ माधुकती ১৪১, ৫৭৫ মাধ্বসিদ্ধান্তসার ৫৮৯ यानाध्य वस्र ६१२, ७०० মুক্তাচবিত্ৰ ৩০২ মুরলীবিলাস ৬৩, ৪৯৫-৫-৪ मुवाबि खर्थ ६८-६६, २:৮

— ও লোচন २७৮-५७ —ও বুন্দাবন্দাস ২০১-১৩ मुताविकाल व्यथिकावी ১৪৯, ১৭৯, ১৮० मुगानकाखि (चांव ७२, १०, ४४, २००, 830, 800 गाथ वार्ने ३

=

যত্নকান দাস ৩০৭ যতনাথ সরকার ৪১৯ যশোদানন্দন তালুকদার ৫০৭ যোগবাশিষ্ঠ ৩৫ যোগসার গুবের টাকা ১৫২ বোগেদ্রমোহন বোষ ৪১৭ ट्वार्टशंलिंडेस ब्रांब ३४-३৯, ७२०-२३

अधूनाथमात्र (शाखायी >> 0-> ७

- —বাৰ্দ্ধকা ১০৮
- —ও নৱছরি সরকার ১১১
- —ও নিত্যানন্দ ১১০-১১
- —ও বুলাবনদাস ১১৬

রসামৃতশেষ ১৫২ রসিকমোহন বিভাতৃষণ ৬, ১০৫, ১৩০ दाथानमाम बरमाां भाषाय 898, ६२१, 293

রাগমালা ৬৩০ ব্যক্তবল্লভ ৪৯৫ রাজীবলোচন দাস ২৬৭ ब्रांट्स्ट्रेस दर्शन ३८२, ६४८ वाधारगाविन नाथ २5, २8, ४०, ५०६, 33b, 300, 020, 028 बाधानाथ कावानी ७२२ রাধানোহন ঠাকুর ৮৮ द्रांधाविद्याम नाम वावाकी ১৪% রাধিকানাথ গোপামী ১১৭-১৮,৪৬= রামগতি ভাররত্ব ৫৪১, ৫৪৪, ৫৪৫, রামনারায়ণ বিভারত ৭১ রাম প্রসন্ন ঘোষ ১৮ রামযোহন রায় ৭, ৮ রামেল স্থল্য ত্রিবেদী ৪১৩ রামধাদৰ বাগচি ৬ রাপবিহারী সাল্যভার্থ ১৭ রামদেশথর ৪৭ রূপ গোস্বামী ৩, ১৫, ১৮, ৪৩, ৪৭, 65, 60, 92, 65, 50F, 58E, 248, 020, 488, 499 রেনেলের ম্যাপ ২১৯

### কৰ

नक्तीमार्थ दबक्दक्यां ६७२, ६८७, ६६७ नवुश्वादम्भाभिका >80 नपुर्लावनी >>? >२७ লঘুভাগৰভায়ত ৭৯ मनिल्माध्य ১०৯, ১৫२, ४०० नाडिज्या कुक्कनाम ४१०-৮० नानमाभ ১०० नोनास्टव ১৩৩ লোকনাথ ৬৭, ৩৯৩, ৫৬৪, ৬১৩ লোচনের চৈত্রমঙ্গল ২৫০-৮০

- -পাণ্ডিতা ২৫১
- —ও বুনাবনদাস ২৫৮-৬১
- —রামানল রায় ২৫৩

26

শিবস্থরোদয় ৫২০ शिवानम रमरनद्र लम ७४-७७

## ত্রীচৈতক্মচরিতের উপাদান

শিশিরকুমার বোষ ৬, ৮, ৬৯, ৪১৪
শ্রুসংহি চা ২৭৮, ৫২২
খামলাল গোস্বামী ৬, ২১
শ্রুক্টেডভোল্যাবলী ৪২৫-৩৩
শ্রুক্টেডভোল্যাবলী ৪২৫-৩৩
শ্রুক্টেডভোল্যাবলী ৪২৫-৩৩
শ্রুক্টেডভাল্যাবলী ৪২৫-৬৩
শ্রুক্টেডভাল্যাবলী ৪২৫-৬৩
শ্রুক্টেডভাল্যাবলী ৪২৫-৬৩
শ্রিক্টের প্রাচীন বৈক্টব ২৫৮
শ্রীধ্রন্থামী ৫১, ৪৬৬
শ্রীনাথ ৬১৩
শ্রীনাথ ৬১৩
শ্রীনাথ ৪১৩

=

बहुँगमार्छ १२,১६२, २६१ ट्रिंगनार्छन् ४२१

380

হন

সম্মকরবৃক্ষ ১৫২
সজনতোষণী ৯৫
সভোজনাথ বস্ত ৪৮২
সদাশিব মিশ্র ৯২
সম্বজ্ঞিকর্ণামূত ৫৭৭
সনাতন গোপামী ১০২
সর্বসংবাদিনী ১৫০
সপ্রদায়প্রদীপ ২০৯
সাহিত্য-দর্শন ২০৯
সীতাওপকদম্ব ২১, ৪৮০-৮০
সীতাচরিক্র ৪৮৪-৯৬

স্কুমার সেন ৬১, ৭০, ১৭৬, ১৮১,
১৮৬, ২২৫, ৩০০, ৩৩০, ৪৬০, ৪৬৫
স্থলন দাস ২২৩
স্থাকর ছিবেদী ৩২০
স্থোধিনী টীকা ৩৯২-৯৩
স্থানকুমার দে ১০, ১২২, ১৬১, ৩১০,
৩২১, ৩২৮-২৯, ৩৪৫, ৩৪৮, ৫৫৪,

স্ত্রমালিকা ১৫২
সোনার গৌরাঙ্গ পত্রিকা ৯৭
সংক্ষিপ্ত ভাগবভামৃত ১৩৯
স্বরূপ-দামোদরের কড়চা ৩২৮-২৯
স্বরূপ-বর্ণন-প্রকাশ ৩-৭
স্থনিয়ম-দশক ১০৭
স্তবমালা ১৩৩, ১৩৯

1

হরপ্রসাদ শান্তী ৪৫, ৪১৫, ৫৭১ হরিচরণ দাস ৪৬৫ হরিদাস গোস্বামী ৬, ৪২৫ হরিনামামৃত ব্যাকরণ ১৫২ হরিভজিবিলাস ১৩২, ১৬০-৬৪, ৩৯৯-

হরিমোহন মুখোলাধ্যার ১৮০
হরিলাল চট্টোপাধ্যার ১৮০
হরেক্ষ মুখোপাধ্যার ৮৮
হেমচন্দ্র গোস্থামী ৫৪৬
হংসদৃত্ত ১০১, ১৩১